॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

भक्तमाल.

रामरसिकावली.

जिसको

सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज सर्वविद्यासम्पन्न सर्वगुण-
अलंकृत कुलभूषण श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारी
समरविजयी श्रीमहाराजा रघुराजसिंहजूदेवने
परममनोहर ललित सुगम कविता छन्द-
प्रबंधमें वर्णन किया.

जिसमें
आदिसे अंतपर्यंत सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुगके हरिभक्त संत
महंतोंकी कथा विस्तारपूर्वक वर्णित है।

वही हरिभक्तोंके उपकारार्थ
श्री महाराजाधिराज रीवांधिपति श्री १०८ श्रीवेंकटेश-
रमणसिंहदेवजू बहादुरजीकी आज्ञानुसार.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापेखानेमें
मैनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयीने
छापकर प्रसिद्ध किया.

संवत् १९७१, शके १८३६.

कल्याण—मुंबई.

Register *Act XXV of 18*

ण श्र

I, कल्या

धन्यवाद ।

सहस्रशः धन्यवाद महाराजाधिराज रीवांधिपति प्रजावत्सल श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारी श्री १०८ श्रीरघुराजसिंहदेवजू बहादुरजीको है कि जिन्होंने लोकोपकार विचार अतीव मनभावन काव्यमें हरियश प्रेमियोंके चित्त विनोदार्थ अनेक ग्रंथ रचना किये भगवद्भक्त इन महाराजा साहबका यश प्रताप दान धर्म भरा जीवनचरित्र सभी छोटे बडोंको विदित है । उन्हीके पुत्र श्री १०८ श्रीमहाराजाधिराज साहब बहादुर रीवांधिपति श्रीमहाराजा साहब श्रीवेंकटेश रमणसिंहदेवजू बहादुरजीकी आज्ञानुसार यह ग्रंथकी तृतीयावृत्ति उत्तरचरित्र तथा बघेलवंशागमनिर्देश वर्णन समेत प्रकाश किया जाता है । अब महाराजा साहब इस वर्ष बडे शुभ अवसरसें राज्यसिंहासनपर सुशोभित हुये हैं इस महाराजासाहबकी उदारता गुणग्राहकता प्रजावत्सलता दान धर्म अपने पूर्वजोंकी भांति अपार है, हम वडी प्रसन्नतासे ईश्वरसे चाहते हैं कि दिन २ महाराजकी लक्ष्मी कीर्ति आयु अगाध हो ॥

सज्जनोंका कृपाभिलाषी-
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

Banasthali Vidyapeeth
Acc. No. 0
Date...
Library
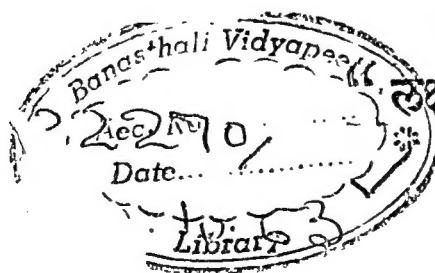
भक्तमालान्तर्गत भगवद्भक्तोंकी संख्या ।

युगनाम	भक्तसंख्या	
सत्ययुग	६४	
त्रेतायुग	२२	
द्वापरयुग	३०	
कलियुग पूर्वार्ध	२०	इन भक्तोंके सिवाय औरभी अनेक भक्तोंकी सूक्ष्म कथा हैं ।
,, उत्तरार्ध	१४०	
उत्तरचरित्रके भक्त और बघेलवंशवर्णनान्तर्गत अनेक कथा हैं ।	३०	

इति भक्तमालान्तर्गत भगवद्भक्तोंकी संख्या समाप्त ।

विष्णु श्र

कल्य

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ।

दक्षहस्तकृताश्लेषां वामेनालिङ्ग्य राधिकाम् ॥
कृतनाट्यो हरिः कुञ्जे पातु वेणुं विनादयन् ॥ १ ॥

भगवानपि ता रात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः ॥
वीक्ष्य रन्तुं मनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः ॥ २ ॥

तदोडुराजः ककुभः करैर्मुखं प्राच्या विलिम्पन्नरुणेन शन्तमैः ॥
स चर्षणीनामुदगाच्छुचो मृजन् प्रियः प्रियाया इव दीर्घदर्शनः ॥ ३ ॥

दृष्ट्वा कुमुद्वन्तमखण्डमण्डलं रमाननाभं नवकुंकुमारुणम् ॥
वनं च तत् कोमलगोभिरञ्जितं जगौ कलं वामदृशां मनोहरम् ॥ ४ ॥
निशम्य गीतं तदनङ्गवर्धनं व्रजस्त्रियः कृष्णगृहीतमानसाः ॥
आजग्मुरन्योन्यमलक्षितोद्यमाः स यत्र कान्तो जवलोलकुण्डलाः ॥ ५ ॥
दुहन्त्योऽभिययुः [illegible] गेहं हित्वा समुत्सुकाः ॥
पय [illegible] यापरा ययुः ॥ ६ ॥
परि [illegible] न्त्यः शिशून् पयः ॥
शुश्रूषन्त्यः [illegible] न्त्योपास्य भोजनम् ॥ ७ ॥

प्रस्तावना.

कोटि कोटि धन्यवाद उस सच्चिदानंद आनंदकंदपरब्रह्म, परमेश्वर, सर्वव्यापक, सर्व प्रकाशक, त्रयतापविनाशक, परमात्मा, परमरूप सुंदरस्वरूप, अखिलवपुनिराकार, साकार, सगुण, निर्गुणको है कि, जिनके स्मरणमात्रसेही यह क्षणभंगी मोहभ्रमसंगी शरीर, जन्म ससारके बंधनसे छूट जाता है जिनकी अपार महिमाका भेद शिव चतुरानन वेदपुराणनेभी नहीं पाया. ऋषि मुनि निरंतर ध्यान लगाया, शेष सहस्र फणनसे गाया तबभी एक अंश नहीं पाया जिनका स्वरूप मन बुद्धि इन्द्रियोंसे बाहर है ऐसी प्रभुता और ईश्वरता परभी दयालुता करुणा नम्रता तो ऐसी है कि, निज भक्तोंके दुःखनिवारणार्थ साक्षात् अवतार ले दुष्ट दनुजोंको मार सुर नर मुनि सन्त हितकारक अपार लीला करते हैं जिनकी अपार लीलाओंकी अपार पुस्तकें इस असारसंसारमें प्रचलित हैं जो बडे बडे ऋषीश्वर मुनीश्वर व्यास वशिष्ठ शुकदेवादि महर्षियोंकी भणित हैं उन्हींका सार उत्तम विचार कलिनरसन्तहितकार श्रीमन्महाराजाधिराज समरविजय सर्वविद्यासम्पन्न शूरवंशोद्भव श्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राधिकारी सिद्धि श्रीमहाराजामान्यवर श्रीरघुराजसिंहजी देवने सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुगके सम्पूर्ण हरिभक्तसंतोंकी कथा अत्युत्तम परम मनोहर रमणीक सरल कवित्त, दोहा, चौपाई, छंद, सोरठा, छप्पय इत्यादिछंद प्रबंधसे बनाया जो सद्गृहस्थ हरिभक्त साधु महात्माओंने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर अनंत सुखको भोग परमपदके भागी [illegible] इस बार छपनेमें औरभी रोचक कथा बढाई गई हैं जिसमें अनेक साधु महा[illegible]ओंके परमपावन सुभग चरि[illegible] विस्तारपूर्वक लिखे गये हैं नाम उसका उत्तर चरित्र है यह कविता ऐसी मनभावन परमसुहावन पावन है कि जिसने एकवार इसमें गोता लगाया इस संसारमें अत्यंत सुख उठाया और अंतको उन्हीं श्रीसच्चिदानंद आनंदकंदके कृपाकटाक्षसे परमपदको सिधाया।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना कल्याण-मुंबई

अथ भक्तमालकी अनुक्रमणिका ।

इति सत्ययुगखण्ड समाप्त ।

इति भक्तमालकी अनुक्रमणिका समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, 'लक्ष्मीवेंकटेश्वर' छापाखाना,
कल्याण—मुंबई.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीमहाराज रघुराजसिंहदेवजू बहादुरकृत

भक्तमाला

अर्थात्

रामरसिकावली ।

मंगलाचरण ।

श्लोकः—नमो नलिननेत्राय वेणुवाद्यविनोदिने ॥
राधाधरसुधापानशालिने वनमालिने ॥ १ ॥
नमस्तुभ्यं भगवते पुरुषाय महात्मने ॥
वासुदेवाय कृष्णाय सात्वतां पतये नमः ॥ २ ॥
स्वच्छंदोपात्तदेहाय विशुद्धज्ञानमूर्तये ॥
सर्वस्मै सर्वबी[illegible]पाय सर्वभूतात्मने नमः ॥ ३ ॥

कवित्त—महाराज जयसिंह जयमें सिंहके समान निरयान समय जासु गंग लीन्ही भगवान ॥ तासु तनय विश्वनाथ महाराज विश्वनाथ-सम सीयनाथको अनन्य सांचो भक्तिमान ॥ ज्ञानवान गुणवान यश-वान धर्मवान जाहिर प्रतापवान भो न सरि जाके आन ॥ तासु पूत महाराज रघुराज मृगराज कहै युगलेश भो सवाई ताहुते जहान ॥

दोहा—यशप्रतापमंदिर करचो, विश्वनाथमहराज ॥
तापर कलसा ताहिको, धरचौ भूप रघुराज ॥ १ ॥
रच्यो रामरसिकावली, सो चौखंड विराज ॥
सतयुग त्रेता द्वापरो, औ कलिखंड दराज ॥ २ ॥
पूर्वारध उत्तारधे, जान लेउ कलिखंड ॥
तामें आचारिन कथा, नाभाकृत उद्दंड ॥ ३ ॥

और एक उत्तरचरित, कथाभक्त यहिकाल॥
रहे साधुसेवी बड़े, लहे दरश रघुलाल॥ ४॥
श्रीकबीर भाषितअरु, जो आगम निरदेश॥
ग्रंथ रच्यो युगलेशसों, जामें कथा नरेश॥ ६॥

ग्रंथस्तुति।

कवित्त घनाक्षरी—जप तप नेम व्रत संयम अचार बहु चाहै करे एको नाहिं वेदलै बतावहीं॥ तीरथ अनेक मुक्तिदाता हैं विख्यात जग आलसी जे कबहूं न तिनमें सिधावहीं॥ ज्ञानते विहीन वेश भक्तिको न लेश जिन्हें सांची युगलेश यह सबको सुनावहीं॥ रामरसिकावली या पढै सुनै आठों याम बिन श्रम राम निज धामको पठावहीं॥

छप्पय—जगत विषयसुख विषय मानि विषयी ना त्यागैं॥
परम अभागे कबहुँ सीख संतन नाहिं पागैं॥
महापातकी जेउ करत पातक महि वागैं॥
हरि हरिजन जहँ कथा होइ तहँते उठि भागैं॥
ते कबहु रामरसिकावली पढैं सुनैं जो भाग्य वश॥
युगलेशते ह्वै करि शुद्धमन बसैं परेश निवेशलसि॥

ग्रंथाशीर्वाद।

सवैया—भूधर धारन कीन्हे धरा औ धारको धरे सरसौं सम शेष है॥
शेषको कच्छप कोल धरे अरु लोमश आयुष जौलौं विशेष है॥
वेष सुरापगाधार है जौ लगि जौलौं अकाश निशेश दिनेश है॥
तौलौं नरेश कथाको प्रचार हमेश रहै करतो युगलेश है॥

इति मंगलाचरण।

अथ ग्रंथारम्भः।

सो०—जय वसुदेवकुमार, मनवच इंद्रियकर्मपर ॥
सब संतनआधार, अतिकोमलकरुणायतन ॥ १ ॥
हरबर हरत सँभार, निजशरणागतजननको ॥
भाषत अहौं तुम्हार, करतअभय संसारते ॥ २ ॥
जानत जो नहिं आहि, ताहि जनावतउरप्रविशि ॥
जाने देत निबाहि, को कृपालु यदुनाथसम ॥ ३ ॥
यह जगमें है सार, भगत औरहू भागवत ॥
बिनभागवतविचार, मिलतनभगवतपदकतहुँ॥४॥
जयजय संतसमाज, जेहि सेवत सुधरत सकल ॥
शरण परचो रघुराज, लाज तिहारे हाथ है ॥ ५ ॥
शारदघनइव ज्योति, जयजयमातुसरस्वती ॥
जाहिकृपातव[illegible]े, सोइउतरतकविताजलधि ॥६॥

स०—जानौं नहीं कछु छंदनकी गति साज साहित्यकी और न चीन्ह्यों॥
न्यायव्याकरणादिक शास्त्र नहीं इनमें कबहूं मन दीन्ह्यों ॥
तेरे भरोस भरो जगदंब कछू रचनागति हौं गहिलीन्ह्यों ॥
है अब तोहिं सँभार सबै रघुराजके लाजको रक्षण कीन्ह्यों ॥

दोहा—सहसबयालिस ग्रंथ जो, आनँद अंबुधिनाम ॥
मोरसनामें बैठिकै, कियोमातु मतिधाम ॥ ७ ॥
तथा रामरसिकावली, चहौं चरण तोहिं ध्याइ ॥
मोरसनामें बैठिकै, दीजे मातु बनाइ ॥ ८ ॥

छप्पय—विघनहरन जनशरन वरनसुख दरनदारिद्रन ॥
नरन करन आभरन ज्ञानत्रवरनहु शूद्रन ॥
हरन सकल भवभीति जगतपूरण संचारन ॥
करुणाटरन अपारसुदासन विपति विदारन ॥

तनुश्वेतवरन मतिछतिछरन श्रेयधरन तारनतरन ॥
रघुराजयुगलवंदितचरनजयगजमुखअशरनशरन ॥
सो०–तुमहिं सुमिरि सब काज, सिद्धि होत सुकवीनके॥
रचत कछुक रघुराज, विघन विगर पूरण करहु९॥
सत्यवतीसुत चरण मनाऊं ❀ जेहि प्रसाद सुंदर मति पाऊं ॥०
जो वेदन विभाग विस्तारा ❀ अष्टादश पुराण करतारा ॥
वंदौं तासु सुवनपद कंजन ❀ जो विरागभाविक मनरंजन ॥
लिहेहुँ सकलजगमांहिं निहारी ❀ नहिं दीसत शुकसम उपकारी ॥
परम धर्म मर्यादा राखत ❀ को भागवत भूपसों भाखत ॥
यदपि सप्तदश सुखद पुराणा ❀ औरहु भारत लक्षप्रमाणा ॥
कीन्ह्यो व्यासदेव मतिखानी ❀ पै नहिं मनकी गई गलानी ॥
जब भागवत कियो निर्माना ❀ तब पायो अतिमोद महाना ॥
वंदौं वाल्मीकि मुनिचरना ❀ रामरसिक उर आनँद भरना ॥
भन्यो जो चौविस सहस रामयश ❀ जन्महरण सिय निधन वदनदश॥
कोमल पद प्रसाद गुण तामें ❀ अर्थ गँभीर व्यंग्य बहु जामें ॥
रघुपतिभक्त शिरोमणिज्ञाता ❀ कविन सुमतिदायक अवदाता ॥
दोहा–नमौं सुतीक्षणचरण मैं, रामभक्तिआधार ॥
अपनेते जिनको मिले, कोशलनाथकुमार ॥ १० ॥
अब वंदौं दशरथ महराजा ❀ उदित भानुकुलभानुदराजा ॥
वंदौं अवधपुरी अतिपावनि ❀ रामरसिक अतिआनँदछावनि ॥
वंदौं सरयूसरित सुहावनि ❀ जासु वानि यशराममिलावनि ॥
वंदौं अवध प्रजा सुखबोरे ❀ रामचंद्र मुखचारु चकोरे ॥
वंदौं कौशल्या महरानी ❀ राम इंदुदिशि इंदुसमानी ॥
नमो कैकयी पद बहु वारन ❀ भै भूभार हरणको कारन ॥
वंदौं लपण शत्रुहनमाता ❀ सुतनसहितजनुभक्तिविख्याता ॥
वंदौं त्रिशत पचासकु रानी ❀ नेह अर्थ हारि श्रुतिसम जानी ॥
वंदौं भरत चरण सुखदायक ❀ राम सनेह जौन्ह निशिनायक ॥

वंदौं लषण हरण अवसेरू ❀ रामचरण सेवन महिमेरू ॥
नमो शत्रुसूदन छविछाजा ❀ रामरसिक गृहमधि गृहराजा ॥
मारुति नमो जोरि कर दोई ❀ रामश्यामघन चातक जोई ॥
दोहा—वंदौं कपिनायकचरण, रामसखा बलवान ॥
सीताशोकसमुद्रको, रघुपतिसेतुसमान ॥ ११ ॥
अज्ञ विमोचन नमो बिभीषण ❀ रामविजयवन घन अस दीखन ॥
वंदौं अंगद बालि कुमारा ❀ दबे असुर अरि जेहि बलभारा ॥
नमो सकलकपि नथि रणसागर ❀ प्रगट्यो हरियश सुधाउजागर ॥
अब वंदौं वसिष्ठ कर जोरी ❀ मति साठी रघुवर रँगबोरी ॥
वंदौं गृही अगस्त्य ललामा ❀ जिनके अतिथि भये श्रीरामा ॥
वंदौं विश्वामित्र मुनीशा ❀ राम शस्त्रप्रद रत्न नदीशा ॥
वंदौं अत्रि और अनुसूया ❀ हरिपदपंकज अलि बिन सूया ॥
जय शरभंग सुमति बड़भागा ❀ दरशि रामरवि तमतनु त्यागा ॥
वन्दौं गीध सुमति मखदेनी ❀ रामकाज तनु तज्यो त्रिवेनी ॥
वन्दौं शबरी प्रीति [illegible]गा ❀ राम सुरति जलराशि तरंगा ॥
वन्दौं गुह निषाद मतिवाना ❀ राम दीनहित वेदप्रमाना ॥
वन्दौं ऋषितिय आयसु आसू ❀ रामचरणरज पारस जासू ॥
दोहा—वन्दौं विदित विदेह पद, सीतासुरतिसोहाइ ॥
महिमानसते प्रगटिकै, लगी रामतन जाइ ॥ १२ ॥
प्रगटी मिथिला मानसर, मिलीलषणनिधिनीर ॥
जयजय सरयू उर्मिला, हरिणिहारभवभीर ॥ १३ ॥
वन्दौं माता मांडवी, श्रुतिकीरति सहुलास ॥
मनुनिष्ठारतिदोउलसै, सांतदास रसपास ॥ १४ ॥
वन्दौं कुमुद जनक पुरवासी ❀ रघुपति राकापतिहि उपासी ॥
वंदौं चरण जनकदुहिताके ❀ कहि न जात गुण जासु कृपाके ॥
मिथिलामंजुल बाग सोहायो ❀ बीजदेव कारजमहि आयो ॥

जनक सुकृत अंकुरशुचिजयऊ ❁ लहि सेवत जल बाढत भयऊ ॥
सुछविसुपल्लव भये अनेका ❁ लगे करुण गुण कुसुम विवेका ॥
धनुषभंग प्रण मांडव रोपी ❁ माली मिथिलाधिप अतिचोपी ॥
दशरथ लालन मालहि पाई ❁ दियतनया लतिका लपटाई ॥
वन्दौं रघुपति चरण सरोजू ❁ जेहि भरोस मोहिं बाढतरोजू ॥
मुनि मनमानस मंजुमराला ❁ मंडनहिय महेश मणिमाला ॥
सुरसरि मौलि रतन उडुगणके ❁ द्युतिदायक मयंक क्षणक्षणके ॥
संसृत सागर पारक पोतू ❁ विधि उरनीद निवास कपोतू ॥
दुखदारिद दावानल मेहू ❁ वर्द्धक विधुवारिधिजन नेहू ॥

दोहा—मुनिन मनोरथ कामतरु, मनुजन मालवदेश ॥
मदमत्सरमातंगके, मर्दनमहामृगेश ॥ १५ ॥

वन्दौं रामनाम अरु धामा ❁ लीलारूप जगत प्रदकामा ॥
द्वै अक्षर सब अक्षरराई ❁ जपत जीव मिस श्वास सदाई ॥
लायक सज्जन सदा नेहके ❁ नयन सरिस दोउ मनुजदेहके ॥
वस्तु प्रकाशत तीनिधामके ❁ रविशशिसम युगवरणरामके ॥
कारज कारक जग निशिदिनसे ❁ उष्णदुरित हर शशी तुहिनसे ॥
जिय जानकि भवविपिनसहायक ❁ जैसे सदा लषण रघुनायक ॥
मनु वसुदेव विमोह कंससे ❁ मोचक माधव दुविदध्वंससे ॥
उरसरसुख जलपूरक कैसे ❁ मास सुसावन भादव जैसे ॥
स्यंदननेम निदाहक सोई ❁ चक्रसरिस वर आखर दोई ॥
परम धरम तनकृत व्यापारू ❁ युग करसम युग वरण उदारू ॥
श्रीपति संत परमप्रिय कैसे ❁ चतुरानन पंचानन जैसे ॥
मोहिं अतिहितकर नितपारायण ❁ जिमि भागवत और रामायण ॥

दोहा—अब वंदौं साकेतपुर, जेहि सम दुतिय न कोय ॥
जहँ विलसत रघुवरसिया, नित मुदमंगलमोय ॥ १६ ॥
अवध और अपराजिता, सांतानक साकेत ॥
नामअयोध्याकेसकल, वरणहिंबुद्धिनिकेत ॥ १७ ॥

एक अंश विरजा यहि वारा * तामें है ब्रह्मांड अपारा ॥
विरजा पार उतै सुखराशी * तीनि पाद थल परम प्रकाशी ॥
एक दिशा वैकुंठ सुहावन * एकदिशा साकेतहु पावन ॥
एकदिशा गोलोक विराजा * यहिविधि हरिपुर और दराजा ॥
मत्स्य कूर्म आदिक प्रभुकेरे * विपुलधाम अभिराम घनेरे ॥
नारायण सुंदर भुजचारी * वसहि विकुंठहिं सदा मुरारी ॥
तिमि गोलोक कृष्णप्रभु राज * सकल सखनयुत सब सुखसाजें॥
तिमि साकेतनगर श्रीरामा * विलसहिं सियासहित सुखधामा॥
तहँ प्रमोदवन परमसुहावन * करहिं विहार सदा मनभावन ॥
उत्तर दिशि सरयू सरि सोहै * रामकृपा लहि जेहि जन जोहै ॥
सज्जन रघुपतिरूप उपासी * वसहिं नगर नित आनँदरासी ॥
कहि न सकत छवि वदन हजारा * तौ किमि कहि पाऊ म पारा ॥

दोहा—अब वंदौं प्रभुरूपको, करि न्योछावरकाम ॥
युगुलबाहुषोडशवयस, सुंदरतनु घनश्याम ॥१८॥

जो वरनो उपमा जगहेरी * तौ जानौ जड़ता हठि मेरी ॥
जन्म अनेकन तप वन कीन्हें * कबहुँ न स्वाद कामकर चीन्हें ॥
विषय विलोपक साधन साधे * यहि हित अवशि ईश अवराधे॥
ज्ञान विराग योगमहँ पूरे * रसगाथा निशिदिन हिय झूरे ॥
ऐसे मुनि दंडक वनवासी * लखि रघुपति सरूप छबिरासी॥
करी विहार करन अभिलाखा * नेकहु धीरज रहा न राखा ॥
गुनि मुनिमन प्रभु दियो नियोगू * यहि अवतार विहार अयोगू ॥
लहिहैं हम यदुकुलअवतारा * तब गोपी है कियो विहारा ॥
पुनि मानुष आमिषआहारिनि * अतिशय वृद्धकरालविकारिनि ॥
आई भक्षण हित अपनेके * कबहुँन नेह जान सपनेते ॥
सो रावण भागिनी शूर्पणखा * हिंसातरु प्रगटानि नितकुनखा ॥
निरखि मनोहर रघुवर रूपा * अपनो नायक होत निरूपा ॥

दोहा—असअनूपप्रभुरूपको, मैं वरणो केहि भांति ॥
जिहि वरणत सुकविनगये, अबलोंबहुदिनराति १९॥

रघुवरकी लीला ललित, मैं वंदौं शिर नाय ॥
जेहि गावत गोपदसरिस, जनभवनिधिलँघिजाय२०

सोउ वर्णत कोउ लह्यो न पारा ❀ विधि शारद शिव शीश हजारा ॥
वाल्मीकिमुनि जग कवि चोटी ❀ रामचरित वरण्यो शतकोटी ॥
और देवपुर आदिक गयऊ ❀ चौविस सहस रहत महि भयऊ ॥
सोइ रामायण अघम उधारा ❀ रघुपति रूप रसिक आधारा ॥
उक्ति युक्ति बहुतुंगतरंगा ❀ भरयो रामयश छीरअभंगा ॥
रामरसिक चकवाक मराला ❀ निवसहिं तटकरि पानरसाला ॥
अर्थ अनूप अनेकनिभांती ❀ विलसहिं विपुलरतनकी जाती ॥
छंद अनेकन परम सुहावन ❀ ते जलचर विचरत जगपावन ॥
रघुपति कथा प्रबंधविशाला ❀ श्वेतद्वीप सोइ लसत रसाला ॥
लक्ष्मीनारायण सियरामा ❀ रामसखा पारषद ललामा ॥
लषण सेव सोइ अहिपतिसेजू ❀ निवसत सुखित नाथअतितेजू ॥
भरत शत्रुसूदन अतिरूरे ❀ राजत शंख चक्र नहिं दूरे ॥

दोहा–यमकअनेकनभांतिके, विलसत वारिजवृंद ॥
मुख्यप्रगटशृंगाररस, उदितसुपूरणचंद ॥ २१ ॥

तहँ त्रिकूट सोइ लसत त्रिकूटा ❀ सुखद सरोवर लंक अटूटा ॥
साधु बिभीषण वस तेहिमाहीं ❀ दशगल ग्राह ग्रस्यो तेहिकाहीं ॥
बाण चक्रते दशमुख मारी ❀ रघुपति श्रीपति लियो उधारी ॥
सीयसुधा हित अतिश्रमधारी ❀ वानर निशिचर सुरहु सुरारी ॥
तिन संगर मंदर अतिभारी ❀ विक्रम मंथन लेहु विचारी ॥
सीता शोक हलाहल जाना ❀ किय मारुति महेश तेहि पाना ॥
कुंभकरण वध कौस्तुभभासी ❀ लियो राम वैकुंठ विलासी ॥
रावण मल्लयुद्ध गजराजू ❀ लियो सुरेश ताहि कपिराजू ॥
विजय इंद्रजित वारुनि ताको ❀ लियो असुर राक्षस कारिसाको ॥
कहुँ कहुँ विजय निशाचर कीन्हा ❀ सोइ बाजी रावण वलि लीन्हा ॥
कीरति कटी अपसराकेती ❀ बादर विबुध लियो तहँ तेती ॥
रचव सेतुको सुयशप्रकाशा ❀ सोइशशिउदितत्रिलोकअकाशा ॥

दोहा–मारुति औषधिल्याइजो, ब दरलियोजिआइ ॥
बढ्योसुयशसोशंखहै, सुनिधुनिशत्रुपराइ ॥ २२ ॥
श्रवणकामतरु सोहत नीको ❀ पूरणकरत मनोरथ जीको ॥
दियो अगस्त्यधनुष हरिकाहीं ❀ सोइधनुकढ्योविदितचहुँ धाहीं ॥
सीताहिं सीख दियो सुखदानी ❀ सो त्रिजटा सुरधेनु बखानी ॥
विजै रमा निकसी छबिधामा ❀ बरयो विशेष मुकुंदहि रामा ॥
जनकपुरुष लै सीयसुधाको ❀ निकस्यौविमलसुयशजगजाको ॥
रावण असुर छीन लै गयऊ ❀ रघुपति मोहनि गवनत भयऊ ॥
वालि राहु तहँ कछु छल कीन्यो ❀ रामरमापति तेहिशिर छीन्यो ॥
सीयसुधा रघुपति लै आयो ❀ कपिनिशिचरसुर असुरलड़ायो ॥
करि अशोक कपिविबुधसमाजू ❀ दीन विभीषण इंद्रहि राजू ॥
वैनतेय चढि पुहुप विमाना ❀ कियो अवध वैकुंठ पयाना ॥
जैजै रामायण पयसागर ❀ मज्जत भक्ति मुक्तिपद नागर ॥
वाल्मीक प्रिय व्रत मतिस्यंदन ❀ चालितकरि विरच्यो जगवंदन ॥
दोहा–रामायण सत वेदवपु, रघुपतिपद दातार ॥
दीरघशरणागतिसुखद, मोसमअधमउधार ॥ २३ ॥
हरि अवतार अपारहैं, तिनमें कछू न भेद ॥
जहँजहँयश हरिजनचह्यो, भेतहँतसकहइ वेद २४ ॥
जोन भक्त राच्यो जिहिरूपा ❀ सोइ उपासक तासु अनूपा ॥
पै सब रूपनते जगमाहीं ❀ रामकृष्ण लीला अधिकाहीं ॥
ताते रघुपतिके पद वंदी ❀ अब यदुपतिपद नमो अनंदी ॥
जय यदुनाथ अनाथन नाथा ❀ जिहि नसाथकेउतिहिंतुमसाथा ॥
दीनन सुरतरु ऋषितनधारी ❀ धर्मनिधर्म वाटिका वारी ॥
बूड़त भवनिधि नावनिबाहक ❀ निर्गुणिनके तुमहीं गुणगाहक ॥
संत सरोजनि सूरज सांचे ❀ अधम उधार लीक त्रैवांचे ॥
गो द्विजतृणपालक घनश्यामा ❀ दीन मीन सागर अभिरामा ॥
द्वेष दोष दुख तूल वयारी ❀ विघन गहन वनदीह दवारी ॥

मन रसीलके सुधा सरूपा ❀ आमय पीन हीन रसभूपा ॥
भक्ति विराग ज्ञान तरुके फल ❀ दयासलिल ढारक अखंडनरु ॥
कंचन मानस गंडकि पाहन ❀ मोहिंसम पंगुनके निरबाहन ॥

दोहा—अब वंदौं प्रभुकृष्ण वपु, लीला नामहुँधाम ॥
जिहिसुमरतवरणतजपत, वसत नशतजगकाम ॥ २५ ॥

रूपमाधुरी यदुपति केरी ❀ कोटिनकाम सुछबि जेहिचेरी ॥
शारद नारद शेष महेशा ❀ व्यासादिक मुनि और अशेषा ॥
वरणत कोउ पायो नाहिं पारा ❀ नितनित नवनव कियो विचारा ॥
होत न जड़ पषाणते कोऊ ❀ पायेलि उठत परसत पद सोऊ ॥
तिमि तरुगण जड़ वेद बखाने ❀ परसत फूलि फले हरियाने ॥
गवनतनिकट रुकति सरिधारा ❀ मोहतमृग जोवत जिहिबारा ॥
पामर जाति अहीरि अयानी ❀ महामोह माया लपटानी ॥
कबहुँ न श्रवण करी श्रुतिगाथा ❀ रह्यो न कोउ सज्जनकहुँ साथा ॥
ते यदुपतिकर रूप निहारी ❀ भ्रात मातु पति पुत्र विसारी ॥
क्षुधा तृषा नींदहु तजि दीन्ही ❀ अनिमिष नैन पान छबि कीन्ही ॥
जाति गवांरि भोजकी दासी ❀ कुबरी भई रूपकी आसी ॥
पतिव्रता माथुर दुजनारी ❀ तेउ निरखत तन सुरतविसारी ॥

दोहा—सुरनरमुनिजापरपर्यौ, कृष्णरूपको जाल ॥
फँसेमीनमानससकल, कढे न कौनेउ काल ॥ २६ ॥
वन्दौंश्रीनँदलालकी, लीलाललितविशाल ॥
गाइगाइतरिहैंमनुज, यहिहितकरीकृपाल ॥ २७ ॥

तासु अंत कोऊ नहिं पायो ❀ शेष शंभु सहसनयुग गायो ॥
रच्यो पुराण सप्तदश व्यासू ❀ उपपुराण तिमि कियो प्रकासू ॥
औरहु देवसिद्ध ऋषिनाना ❀ विरच्यो स्मृतिविविध पुराणा ॥
सवालक्ष भारतकिय व्यासा ❀ तदपि न पूरी मनकी आसा ॥
तब नारद उपदेशहि आई ❀ रच्यो भागवत अतिहरषाई ॥
कियो निरूपण परमधर्मको ❀ त्याग बखान्यो प्रवृतिकर्मको ॥

जब हरि किय यदुकुलसंहारा ❀ श्रीबैकुंठको गवन विचारा ॥
बैठ अकेले तरतरु राई ❀ तब मित्रासुत निकट सिधाई ॥
कीन्ह्यो विनय दुखित करजोरी ❀ बारबार यदुपतिहि निहोरी ॥
जानचहो तुम अब निजपुरको ❀ धारी कौन धर्मते धुरको ॥
परम धरमको को उपदेशी ❀ हमहिं अधार कहा अरिकेशी ॥
तब यदुपति बोले मुसकाई ❀ ग्रंथरूप हम रहब सदाई ॥

अथ भागवतको कृष्णरूपवर्णन ।

दोहा-यहभागवतस्वरूपमम, मित्रानंदसुजानु ॥
यातेअधिक न औरकछु, मुक्तिमार्गकोमानु ॥ २८ ॥

वंदौं श्रीभागवत अनूपा ❀ जो मुरारिको अहै सरूपा ॥
प्रथमहि प्रथमस्कंध लसंता ❀ चरण युगलते जानु प्रयंता ॥
नखश्रेणी अध्याय सुहावन ❀ रोमसुखद अस लोकसुपावन ॥
नारद व्यास कथा तलपादू ❀ तिमि अँगुरी अवतारअयादू ॥
गुल्फ सुनारद कथा जनमकी ❀ ऐसी कथा सुपांडुसुतनकी ॥
उभै चरण नूपुर छबि टेरी ❀ अस्तुति कुंती भीषमकेरी ॥
और परीक्षित कथा सुहाई ❀ हरिको पादपीठिसो भाई ॥
ऊरूते अरु कटि परयंता ❀ वर्णतहै द्वितिय मतिवंता ॥
हरिको भक्ति विधान जो गायो ❀ सो पीतांबर शुभ पहिरायो ॥
नारद अरु विरंचि संवादा ❀ क्षुद्रघंटिकाप्रद अहलादा ॥
तहँ भागवत अनुष्टुपचारी ❀ वर्णरतनयुत गुच्छउचारी ॥
नाभी है तृतीयअस्कंधू ❀ रोमावली विदुर परबंधू ॥

दोहा-पुनिश्रीयदुकुलकी कथा, जानु यज्ञ उपवीत ॥
कथाविश्वउत्पत्तिकी, त्रिवलीवेदप्रणीत ॥ २९ ॥

पुनि वराह अवतार सुवादा ❀ कपिल देवहूती संवादा ॥
उभयपार्श्व जानहु प्रभुकेरे ❀ उदर चौथ अस्कंध निवेरे ॥
पँचरंगकुसुम तुलसि वनमाला ❀ दक्षप्रजापतिकथा रसाला ॥
उत्तरीयपद ध्रुव आख्याना ❀ प्रभु पृथुकथा मुक्तिजग जाना ॥

कथा प्रचेतन परम सुहाई ❀ मधिनायक शोभा अधिकाई ॥
उरपंचमदिय निगम निवेरी ❀ प्रियव्रतकथा लता भृग केरी ॥
ऋषभकथा कौस्तुभ निरधारो ❀ भरतकथा श्रीवत्स उचारो ॥
भू खगोलको कथन महाना ❀ प्रभु युगलस्तन मंडलजाना ॥
पुनि छठवां स्कंध सुहावन ❀ वर्णत कंठनाथको पावन ॥
कंठाभरण अजामिलगाथा ❀ वृत्रकथा कंठी धृतनाथा ॥
चित्रकेतुकी कथा सोहाई ❀ सो मल्लिका माल छबिछाई ॥
सप्तम लसत वदन प्रभुकेरो ❀ हरिणकशिपुवध दंतनिवेरो ॥

दोहा-वर्णन वर्णाश्रमनको, प्रभुरसनाहै सांच ॥
नयनपर्यंतहिजानिये, अष्टम अतिमनरांच ॥ ३० ॥

गजमोचन नासिका सोहावन ❀ कथमन्वंतर त्रिकुटीपावन ॥
कच्छपवपु वर्णन हगवामा ❀ दक्षिण वामनकथन ललामा ॥
प्रभुकटाक्ष देवासुर संगर ❀ बरुनी वर्णन मत्स्यरूपकर ॥
भ्रुकुटी कर्ण कपोल पर्यंता ❀ भनत नवमस्कंध सुसंता ॥
इलाकथा प्रभु वाम कपोला ❀ अंबरीषकी दछिनअमोला ॥
रघुकुलकथन भ्रुकुटिप्रभु एकू ❀ तिमि द्वितीय निमिवंश विवेकू ॥
यकश्रुति पुरूरवाकी गाथा ❀ द्वितीय ययातिकथा सुखसाथा ॥
यक कुंडल पुरु अनुको वंशा ❀ द्वितियसुरूप यदुवंश प्रशंसा ॥
दशमअंग दशमहिको जानो ❀ बालचरित तहँ भाल बखानो ॥
रास विलास तिलक प्रभुकेरो ❀ कथाविरहव्रज अलक निवेरो ॥
उत्तरार्द्ध प्रभु मुकुट बखाना ❀ बहुलीला बहुरतन महाना ॥
अस्तुति वेदशिखा प्रभुकेरी ❀ एकादश मन लेहु निवेरी ॥

दोहा-योग विराग विज्ञान अरु, भक्तिकथा मनहारि ॥
येही जानहु नाथके, हैं भुज सुंदर चारि ॥ ३१ ॥

दशइंद्रिय निग्रह सविधाना ❀ सो प्रभुकी अंगुली प्रमाना ॥
तेते इंद्रिय विषय विहाई ❀ मन हरिमहँ रत पानि गनाई ॥
विद्या और अविद्या भाषन ❀ प्रभु अंगद ध्यावहु अभिलाषन ॥

भिक्षुक गीता दिव्य विभूती ❋ नाथमूदरी मोद प्रसूती ॥
पुनि द्वादश आतम प्रभु केरो ❋ तहँ ऐसो करिलेहु निवेरो ॥
कदन कलुष कलि चक्र प्रचंडा ❋ गदा सुनृप उपदेश अखंडा ॥
सर्पसत्र जनमेजय केरो ❋ हैं भगवान कृपानति वेरो ॥
मार्कंडेय कथा जो गाई ❋ पांचजन्यसों लीजै ध्याई ॥
भानुकथा अरु कथन पुराना ❋ प्रभुशारंग करहु अनुमाना ॥
यहिविधि श्रीभागवत अनूपा ❋ वन्दौं शिर धरि यदुवररूपा ॥
तुमहीं हौ सतभांति अधारा ❋ तुमहिं विना को करी उधारा ॥
मेधा देहु मोहिंप्रभु विमली ❋ रचहुं रामरसिकनकी अवली ॥
दोहा-अब वंदौं यदुनाथको, कृष्ण नाम अभिराम ॥
जाहिमनतलहिहैं लहत, लहेकृष्णको धाम ॥ ३२ ॥
सकृतहु आनन कृष्ण निकारत ❋ तापर पण अस कृष्ण उचारत ॥
भेदि सलिल जिमि कढ़त सरोजू ❋ ऐंचहु जनन नरकते रोजू ॥
कहत कृष्ण उरअंतर आवै ❋ जन्मकोटि वासना नशावै ॥
कृष्णनाम जगमें सुखसारू ❋ संत समाज वृक्षफल चारू ॥
सुकृत सुमंदिर कलशअनूपा ❋ बहु साधन नृप मधि मनुरूपा ॥
दानव कलुष चक्र गोविंदा ❋ सज्जन कुमुद सुशारद चंदा ॥
पापिन पावन सुरधुनिधारा ❋ कुमति दारुकहँ तीक्षण आरा ॥
हरि रति अंकुरवर्द्धकनीरा ❋ मोहमवास विमर्दक वीरा ॥
विविध भक्तिसम सुभग परागा ❋ जातरूप मद लोभ सोहागा ॥
मनमहेश वाटिका विहंगा ❋ काम क्रोध तम तोनपतंगा ॥
मायाकंस विधंस मुरारी ❋ दारिद वारिद प्रबल बयारी ॥
हरि निष्ठा तियभूषण भारी ❋ मुक्ति भवनसो पान उचारी ॥
दोहा-जेती पापनदहनकी, शक्तिनाममें होइ ॥
तेती करि नहिं सकत है, पाप पातकी कोइ ॥ ३३ ॥
अब वंदौं यदुनाथके, धामपरम अभिराम ॥
ध्यावत निवसतहोतहठि,जनमनपूरणकाम॥३४॥

वन्दौं श्रीवृंदावन जादू ❀ हरिहिं न जान देत यक पाहू ॥
वन्दौं श्रीयमुना सुखदाई ❀ गोपुर विधिमुख श्रुतिकढ़िआई ॥
वन्दौं मधु मधुपुरी सुहावनि ❀ पंकज पुहुमि मध्यलस पावनि ॥
वन्दौं द्वारावति मानस गिरि ❀ विलसतदिनकरयदुवरफिरिफिरि ॥
वन्दौं गोपुर शशिसुखसारा ❀ कृष्ण सार जहँ कृष्णविहारा ॥
वन्दौं ब्रजधरणीकी धूरी ❀ भव रुज वश कहँ जीवनमूरी ॥
वन्दौं ब्रजवनिता छविभूरी ❀ माधव मत्त मयूरम पूरी ॥
वन्दौं नंदयशोमति दोऊ ❀ जिनसमान धनि धरणि न कोऊ ॥
वन्दौं पुहुप सकल ब्रजकुंजें ❀ जहँ माधव मधुकर नित गुंजें ॥
वन्दौं वृन्दाविपिनि कुरंगा ❀ हरिछवि छके कुरंगिनि संगा ॥
वन्दौं खग ब्रज विपिन निवासी ❀ ब्रजपति रूप राशिके आसी ॥
वन्दौं श्रीनँदनलालसखनको ❀ जिन उछाहनितकृष्णलखनको ॥

दोहा—वंदौंक्षीराधिदेवकी, जहँ प्रगटचो हरिचंद ॥
फैली कीरति कौमुदी, रसिककुमुद आनंद ॥३९॥

नमो विटप वसुदेव ललामा ❀ फरचो सुफल यदुपति बलरामा ॥
जयति रोहिणी सीपसुहाई ❀ उपज्यो अमल मुकुतबलराई ॥
जय वसुदेव अठारह रानी ❀ श्रुति सम अर्थ गदादिकदानी ॥
जय उद्धव यदुनायक साजन ❀ ज्ञान विराग भक्ति जल भाजन ॥
जयति अक्रूर मान सर भारी ❀ पूरित हरिसनेह वरवारी ॥
जय कूबरी दूबरी दुखकी ❀ श्याम तमाल लतासमसुखकी ॥
जय सरोज मथुरा नरनारी ❀ परफुल्लितलखि कृष्णतमारी ॥
जय सांदीपिन विशद बजारू ❀ विद्यारतन विलास अपारू ॥
दै गुरुमृत सुत मोलमहाना ❀ भये रतनग्राहक भगवाना ॥
जयवायक विसुकरमा सांचो ❀ निज निपुणता कृष्ण अँगराचो ॥
जय जय उग्रसेन सुख बाढ़ा ❀ कंस नक्र हनि हरि जेहि काढ़ा ॥
नौमि नौमि नभ मास सुदामै ❀ सुमन माल धनु दिय घनश्यामै ॥

दोहा—अब वंदौं बलरामको, धरणि धर्म आधार ॥
कुंदइंदुपारदप्रभा, सकुची अँगुलिअकार ॥ ३६ ॥

दुवनमत्त दंती मृगराजा * पुहुप अंड धारण गजराजा ॥
डोलधराधर शील निधाना * ज्ञान विज्ञान विधान पुराना ॥
दानव अचल विदारन गाजू * सुजन मोदकर संतसमाजू ॥
यदुकुल नखत निशा कर पूरण * द्विविद वालि रघुवर करचूरण ॥
नाग नगर पाणिनि दलवाऊ * बलबल खल अपमान पसाऊ ॥
राम भरा जिव गहन तुषारू * आदिति रोहिणी वामन चारू ॥
सुकृत सुफल शरणागत केरे * दीन मीन जलराशि निवेरे ॥
विजय प्रकाश करणदिनराजू * अहि खल खंडन कर खगराजू ॥
वैष्णव मत सुर धुनि विधि लोकू * नारद हरण अज्ञानज शोकू ॥
सुमति सृष्टि करनिपुण विधाता * विपन नशोहर विमल प्रभाता ॥
रेवति युक्ति अधार कवीशा * भक्ति उमा भूषित गिरिईशा ॥
पालन पैज प्रजा पृथुराऊ * जय बलभद्र अभद्र दुराऊ ॥

दोहा—अब वंदौं प्रद्युम्न प्रभु, सुंदर कृष्णकुमार ॥
जेहिंमिलि मेट्यौ अतिदुसह, शंभुशापकौमार ॥३७॥

वीर धीर धनुधर शिरताजू * जय रतिरमण रूप रसराजू ॥
वज्रनाभ महिभार मुरारी * शंबर प्रबल त्रिपुर त्रिपुरारी ॥
बहुरि करों अनिरुद्धहि वंदन * यदुनंदन नंदनको नंदन ॥
यदुकुलकटक सुविजै पताका * मदनलाडिलो शूरन साका ॥
वंदौं श्रीसात्यकी अनोखो * दारुण दुवन विदारण चोखो ॥
नाथ मनोरथ रथवर चाका * कृष्णसखा धृति धुरधरधाका ॥
यदुकुलसागर नमौ उजागर * बढतानिरखि यदुनाथ निशाकर ॥
वंदौं कुंडिन कंतकुमारी * विश्वअखिलछबिनिशिउजियारी ॥
वसुधाधिप विदर्भपति सागर * सृज्यो सुधारुक्मिणी उजागर ॥
असुर देव पन्नग सब भूपा * हरणहेतु तहँ जुरे अनूपा ॥
द्विजकद्रू अनुशासन पाई * पन्नगारि गमन्यो यदुराई ॥
भूप सुरासुर गर्व उतारी * हृन्यो सुधा भीषमक कुमारी ॥

दोहा–सतिभामा वंदनकरौं, सतिभामा सम नाहिं॥
विजयदेवद्रुमहरलता, भूरिप्रकट जगमाहिं॥३८॥

वंदौं कालिंदीपद दोई ❀ तपगुणगहिवश किय प्रभु जोई॥
वंदौं अवध अधीशकुमारी ❀ दैविक्रम वसु वऱ्यो विहारी॥
जय भद्रा यदुपति महरानी ❀ पतिव्रत सुखद रतनकी खानी॥
नौमि जांबवति पदरज पावनि ❀ सांब सोप मणि सीपसुहावनि॥
नमो लक्ष्मणापद अरविंदा ❀ नृपमदमोदि हऱ्यो यदुचंदा॥
नमो मित्रविंदा महरानी ❀ यदुपतिचरण सेव रँग सानी॥
वंदौं श्रीरेवतिपदकंजू ❀ रोहिणितनय मोदप्रद मंजू॥
षोडशसहस्र नाथ महरानी ❀ वंदन करौं जोरि युगपानी॥
औरहु यदुकुल सती मनाऊं ❀ जिन प्रसाद सुंदरिमति पाऊं॥
बाल युवा वृद्धहु यदुवंशी ❀ वंदन करहुँ सकल सुरअंशी॥
यहविधि यादवकुलहि प्रणतिकरि ❀ औरहु वंदन करउँ मोदभरि॥
दायक ज्ञान विराग निदेशू ❀ वंदौं शिरधरि गौरि महेशू॥

दोहा–अब वंदौं करजोरिकै, जग सिरजक करतार॥
राम कृष्ण पद कमल युग, जाको सदा अधार॥३९॥

जाको करि भरोस रघुराजू ❀ वंदन भवकी भक्तसमाजू॥
राचत रामरसिकनकी अवली ❀ चाहत पावनमति अतिअमली॥
सन्तसमाज सुधा जगमाहीं ❀ जावत कालिमलमृतक न काहीं॥
सन्तसमाज विदित सुरसरिता ❀ रघुपति भक्ति वारिवर भरिता॥
सन्तसमाज विकुंठनिसेनी ❀ गमनत जाहिं मुमुक्षुनि श्रेनी॥
सन्तसमाज देवतरु साँचो ❀ याचत करत विशेषि अयाचो॥
सन्तसमाज वरन तरुमूला ❀ निगमागम जिहिं शाखअतूला॥
सन्तसमाज रूप यदुपतिको ❀ सुमरत सेवत दायक गतिको॥
सन्तसमाज कृपाण करेरी ❀ करतविजयकालिमल अरि केरी॥
सन्तसमाज सुधाकर जानी ❀ रतविज्ञान भक्तिकी दानी॥
सन्तसमाज शरद उजियारी ❀ पातक तिमिर तोम अपहारी॥
सन्तसमाज सजीवन मूरी ❀ नमौं तासुपद धरि शिर धूरी॥

दोहा-भवनिधि सुखद जहाज सोइ, केवट केशव तासु ॥
मोसम अधम अनेकजन, तरणचहत अनयासु ॥४०॥

भगवत और भागवत दोऊ * कहत समाज सुमति सबकोऊ ॥
वेद पुराण संहितन माहीं * कहत समाज सुमति सबकोऊ ॥
बिना संतपद सेवन कीन्हे * कोउ नाहिं हरिस्वरूपसाति चीन्हे॥
जहँ जहँ जाको मिले मुरारी * हेतुसंतपद सेव विचारी ॥
ताते भगवत भक्तिहु तेरे * संतभक्ति वरवेद निवेरे ॥
दलमाधि पारथसों हरि भाषा * करत जोमोहिंमिलनअभिलाषा॥
साधन करत जन्म बहु बीतें * लहत परमगति जगत अभीतें ॥
पै यक जन्महिं महँ बहुतेरे * मिले मोहिं जग सुयश उजेरे ॥
सो सब साधु सेव परभाऊ * राममिलन नाहिं आन उपाऊ ॥
यह साधन अति सरल विचारो * कहहुँ सकल जो सुनो हमारो ॥
प्रथम करै सज्जनका संगा * तब कछु रँगत रामके रंगा ॥
होति तबहिं हरि नामहिं प्रीती * जपै निरंतर तजि जग भीती ॥
नाम प्रभाव कथा रुचि होई * जेहि जानत यदुपति सब कोई॥

दोहा-कथा सुधा श्रुति अंजली, करत पान दिन रैन ॥
लीला धाम स्वरूपहू, जानत है मति ऐन ॥ ४१ ॥

तब सर्वस जानत मन माहीं * साधु समान और कोउ नाहीं ॥
तन मन धनते संत समाजू * सेवत जानि आपनो काजू ॥
निष्ठा दया शांति सब होवै * जन्म अनेकनि पातक खोवै ॥
तब हरियश वर्णत दिन राती * सुरत लगाति हरि महँ सब भांती॥
बाढत अधिक अधिक अनुरागा * कहवावत जग महँ बड़ भागा ॥
जगत सुरति छूटति क्षण माहीं * कामादिक शठ चोर पराहीं ॥
बाढत सज्जन संग प्रभाऊ * मिलत धाय तोहि यदुकुलराऊ ॥
यह विधि सहज परम गति पावै * पुनि न कबहुँ संसृत महँ आवै ॥
यही सत्य करि लेहु विचारा * बिन हरि सन्तन कबहुँ उबारा ॥
भगवत चरित कथन अति सोहा * पै न मिटत मानस कर मोहा ॥

दोहा-सतिभामा वंदनकरौं, सतिभामा सम नाहिं ॥
विजयदेवद्रुमहरलता, सूरिप्रकट जगमाहिं ॥ ३८ ॥
वंदौं कालिंदीपद दोई ❀ तपगुणगहिवश किय प्रभु जोई ॥
वंदौं अवध अधीशकुमारी ❀ देविक्रम वसु वर्‌यो विहारी ॥
जय भद्रा यदुपति महरानी ❀ पतिव्रत सुखद रतनकी खानी ॥
नौमि जांबवति पदरज पावनि ❀ सांच सोप मणि सीपसुहावनि ॥
नमो लक्ष्मणापद अरविंदा ❀ नृपमदमोदि हर्‌यो यदुचंदा ॥
नमो मित्रविंदा महरानी ❀ यदुपतिचरण सेव रँग सानी ॥
वंदौं श्रीरेवतिपदकंजू ❀ रोहिणितनय मोदप्रद मंजू ॥
षोडशसहस नाथ महरानी ❀ वंदन करौं जोरि युगपानी ॥
औरहु यदुकुल सती मनाऊं ❀ जिन प्रसाद सुंदरिमति पाऊं ॥
बाल युवा वृद्धहु यदुवंशी ❀ वंदन करहुं सकल सुरअंशी ॥
यहाविधि यादवकुलहि प्रणतिकरि ❀ औरहु वंदन करउँ मोदभरि ॥
दायक ज्ञान विराग निदेशू ❀ वंदौं शिरधरि गौरि महेशू ॥
दोहा-अब वंदौं करजोरिकै, जग सिरजक करतार ॥
राम कृष्ण पद कमल युग, जाको सदा अधार ॥ ३९ ॥
जाको करि भरोस रघुराजू ❀ वंदन अबकी भक्तसमाजू ॥
राचत रामरसिकनकी अवली ❀ चाहत पावनमति अतिअमली ॥
सन्तसमाज सुधा जगमाहीं ❀ जावत कालिमलमृतक न काहीं ॥
सन्तसमाज विदित सुरसरिता ❀ रघुपति भक्ति वारिवर भरिता ॥
सन्तसमाज विकुंठनिसेनी ❀ गमनत जाहिं मुमुक्षुनि श्रेनी ॥
सन्तसमाज देवतरु सांचो ❀ याचत करत विशेषि अयाचो ॥
सन्तसमाज वरन तरुमूला ❀ निगमागम जिहिं शाखअतूला ॥
सन्तसमाज रूप यदुपतिको ❀ सुमरत सेवत दायक गतिको ॥
सन्तसमाज कृपाण करेरी ❀ करताविजयकलिमल अरि केरी ॥
सन्तसमाज सुधाकर जानी ❀ रतविज्ञान भक्तिकी दानी ॥
सन्तसमाज शरद उजियारी ❀ पातक तिमिर तोम अपहारी ॥
सन्तसमाज सजीवन मूरी ❀ नमौं तासुपद धरि शिर धूरी ॥

दोहा-भवनिधि सुखद जहाज सोइ, केवट केशव तासु ॥
मोसम अधम अनेकजन, तरणचहत अनयासु ॥४०॥

भगवत और भागवत दोऊ ❋ कहत समाज सुमति सबकोऊ ॥
वेद पुराण संहितन माहीं ❋ कहत समाज सुमति सबकोऊ ॥
विना संतपद सेवन कीन्हे ❋ कोउ नाहिं हरिस्वरूपसाति चीन्हे ॥
जहँ जहँ जाको मिले मुरारी ❋ हेतुसंतपद सेव विचारी ॥
ताते भगवत भक्तिहु तेरे ❋ संतभक्ति वरवेद निवेरे ॥
दलमाधि पारथसों हरि भाषा ❋ करत जोमोहिंमिलनअभिलाषा ॥
साधन करत जन्म बहु वीतें ❋ लहत परमगति जगत अभीतें ॥
पै यक जन्माहिं महँ बहुतेरे ❋ मिले मोहिं जग सुयश उजेरे ॥
सो सब साधु सेव परभाऊ ❋ राममिलन नाहिं आन उपाऊ ॥
यह साधन आति सरल विचारो ❋ कहहुं सकल जो सुनो हमारो ॥
प्रथम करै सज्जनका संगा ❋ तब कछु रँगत रामके रंगा ॥
होति तबहिं हरि नामहिं प्रीती ❋ जपै निरंतर तजि जग भीती ॥
नाम प्रभाव कथा रुचि होई ❋ जेहि जानत यदुपति सब कोई ॥

दोहा-कथा सुधा श्रुति अंजली, करत पान दिन रैन ॥
लीला धाम स्वरूपहू, जानत है मति ऐन ॥ ४१ ॥

तब सर्वस जानत मन माहीं ❋ साधु समान और कोउ नाहीं ॥
तन मन धनते संत समाजू ❋ सेवत जानि आपनो काजू ॥
निष्ठा दया शांति सब होवै ❋ जन्म अनेकनि पातक खोवै ॥
तब हरियश वर्णत दिन राती ❋ सुरत लगाति हरि महँ सब भांती ॥
बाढत अधिक अधिक अनुरागा ❋ कहवावत जग महँ बड़ भागा ॥
जगत सुरति छूटति क्षण माहीं ❋ कामादिक शठ चोर पराहीं ॥
बाढत सज्जन संग प्रभाऊ ❋ मिलत धाय तेहि यदुकुलराऊ ॥
यह विधि सहज परम गति पावै ❋ पुनि न कबहुँ संसृत महँ आवै ॥
यही सत्य करि लेहु विचारा ❋ विन हरि सन्तन कबहुँ उबारा ॥
भगवत चरित कथन आति सोहा ❋ पै न मिटत मानस कर मोहा ॥

जो भागवत चरित्र बखाना ❋ माया मोह तुरंत पराना ॥
सकल शास्त्र सिद्धांत यही हैं ❋ लोकहु महँ यह प्रगट सही हैं ॥
दोहा-सोइविचारिहरिगुरुकृपा, मतिमोरिहु अति थोरि॥
लगी कृष्णगाथा कथन, कविउक्तिन कहँचोरि ॥ ४२ ॥
श्रीभागवत कृष्ण कर रूपा ❋ देवगिरा गुरु परम अनूपा ॥
रच्यो तासु भाषा परबंधू ❋ औरहु कछुक कथा सम्बंधू ॥
भयो बयालिस सहस सुहावन ❋ सादर सुनत रसिक जन पावन ॥
सो सब जानहु मोरि ढिठाई ❋ चढ कि पिपील मेरु शिर जाई॥
पै सन्तनपद रज धरि शीशा ❋ बारहिं बार बन्द जगदीशा ॥
सन्त चरण कछु भाषण चाहौं ❋ मति अनुसार ताहि निरवाहौं ॥
प्रथम साधु महिमा अब ताते ❋ भाषण चहौं मिटै भ्रम जाते ॥
साधु करत सबको उपकारा ❋ साधु सरिस न कोऊ संसारा ॥
दोष कछुक नहिं मोको दे हैं ❋ बिगरहु मम सुधार सति ले हैं ॥
साधु चरण रज शिर मैं धारी ❋ विरचौं संतचरित सुखकारी ॥
मंगल रूप मंगला चरणा ❋ यही हेतु मैं हूं यहि वरणा ॥
महिमा संतनकी जग माहीं ❋ वरणि पार गवनै कोउ नाहीं ॥
सो०-शिष्टाचार विचारि, मानि मोद मंगल प्रदै ॥
हरि गुरु चरण सँभारि, हरि गुरुकोवंदनकरौं ॥४३॥
दोहा-गुरु हरि रूप मुकुंद पद, वंदौं बारहिं बार ॥
जाकै बल उतरन चहौं, यह दुस्तर संसार ॥४४॥
म्वहिं अधार दूसर कछु नाहीं ❋ नैननयक गुरु पद दरशाहीं ॥
गुरु पद सरिस न द्वितिय दयाला ❋ विपुलकपकलकलुष कालिकाला॥
म्वहिं सम अधम अयान अयोगू ❋ पायो राम नाम सुख भोगू ॥
होत न महि मुकुंद अवतारा ❋ तो मोसम मतिमंद गँवारा ॥
तारक कोन जलधि जग घोरा ❋ कौन सुझावत नंदकिशोरा ॥
हरि गुरु श्रीमुकुंद गुण गाथा ❋ आगे कछु कहिहौं सुख साथा ॥
अब हरि गुरु पितु पद नति करहूं ❋ जासु भरोस सदा उर धरहूं ॥

सुमति सुमंगल मुद करतूती ❀ शील साहिबी शरम सपूती ॥
इनको मूल पिता नति जानो ❀ मोर निहोर कछू नहिं मानो ॥
जस करतूति सुदान सुभाऊ ❀ धर्म वीरता भक्ति प्रभाऊ ॥
रचन काव्य आदिक गुण जेते ❀ औ सन्मान गान गुण केते ॥
रहे अपूरव मो पितु केरे ❀ लाज होति वर्णत मुख मेरे ॥
दोहा-पै वसुधामें विदित सो, ताते कहत न लाज ॥
करिहौंमैं आगे कथन, जहँ कलि भक्त समाज ॥४५॥

रामरसिकावलीग्रंथके नियम ।

रामरसिक अवली महँ सोहा ❀ द्वादश चौपाई वर दोहा ॥
कहुँ कहुँ छंद मनोहर रीती ❀ आदि अंत साधुनपर प्रीती ॥
चारि खंड ग्रंथहि परमाना ❀ कृत त्रेता द्वापर कलि जाना ॥
युग युगके भक्तन आख्याना ❀ युग युग खंडन लिख्यो विधाना ॥
यक यक भक्तन कथा प्रयंता ❀ विमल सकल अध्याय लसंता ॥
कहुं विशद कहुँ लघु विस्तारू ❀ जस जेहि भक्त कथा सुख सारू ॥
भक्तमाल नाभाजू केरी ❀ प्रियादास कृत टीका हेरी ॥
तामें जो संक्षेप बखाना ❀ सो कछु विस्तर करौं प्रमाना ॥
भक्तमाल वर्णत मुखमाहीं ❀ अपर कथा जे संत कहाहीं ॥
लिखि हौं तेऊ मैं यहि माहीं ❀ पूछि पूछि सब संतन पाहीं ॥
भये संत जेऊ यहि काला ❀ कहिहौं तिनहुँन चरित विशाला ॥
देखी सुनी जौन है मेरी ❀ कहहुँ ग्रंथमहँ सकल निबेरी ॥
दोहा-संवत उनइससै चतुर, दश सावन सितपर्व ॥
रचन रामरसिकावली, कियो अरंभ अगर्व ॥४६॥
नाभा निर्मित यदपि विशाला ❀ अहै अनूप भक्तकी माला ॥
कछु न प्रयोजन यहि निर्माना ❀ तदपि कियो मैं अस अनुमाना ॥
ग्रंथ प्रपन्नामृत मनहारी ❀ चरित सुदिव्य सूरि सुखकारी ॥
औरहु भार्गव जौन पुराना ❀ तिनमें संतन चरित बखाना ॥
ते समग्र नहिं भक्तमालमें ❀ भनित रहे जे वहि कालमें ॥
नाभासरिस न कोउ जगमाहीं ❀ वरण्यो साधुचरित्रनि काहीं ॥

जय नाभा गुरु बुद्धि विशाला ❀ मोपर कृपा करहु यहिकाला ॥
नाभा चरण धूर शिर धरिकै ❀ वरणों साधुसरित सुख भरिकै ॥
जय जय प्रियादास गुरुचरणा ❀ भक्तमाल टीका जिन वरणा ॥
करहु दया मोपर प्रियदासू ❀ कथन करौं कछु संत विलासू ॥
जीव चराचर भुवन निवासी ❀ वंदौं सकल कृष्ण जिन वासी ॥
नित्यानंद भये यक साधू ❀ संतचरित सो रच्यो अगाधू ॥

दोहा–तिनहुनको मत लै कछुक, विरचौं संतचरित्र ॥
पूर्वाचार्यनकी कृपा, मानि सकल जगमित्र॥१७॥

इति सिद्ध श्रीमहाराजाधिराजसीतारामचंद्रकृपापात्राधिकारीमहाराज बांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारी श्रीरघुराजसिंहजूदेवविरचितायां श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे वंदनावर्णनं प्रथमोऽध्यायः॥१॥

अथ सत्ययुगके भक्तोंकी कथा।

दोहा–भक्तिरूप रसपंच विधि, प्रियादास जो कीन ॥
भक्तिरसामृत सिंधुमें, सो विस्तृत कहि दीन ॥ १ ॥

औरहु जेसे भक्ति प्रकारा ❀ द्वादश नवरस पंच विचारा ॥
नौ सत्ताइस और इक्यासी ❀ भक्ति भेद जे आनँदरासी ॥
यहि विधि औरहु वस्तु विचारो ❀ भक्तिरसामृत सिंधु निहारो ॥
अरु भक्तनके लक्षण जेते ❀ लिख्यो भागवत महँ पुनि तेते ॥
सो मैं एहिं इत कियो उचारा ❀ जानि भीति ग्रंथहि विस्तारा ॥
केवल भक्त चारि युग केरे ❀ तिनके जे हैं चरित घनेरे ॥
सोई मात्र कथौं यहि माहीं ❀ कछुक कथा उपयोगिन काहीं ॥
सतयुग भक्तन प्रथमहि गाऊं ❀ तिनमें विधिको प्रथम गनाऊं ॥

अथ ब्रह्माजीकी कथा।

एक समय विधि आसन माहीं ❀ बैठ रहे ध्यावत प्रभुकाहीं ॥
तहँ नारद मुनि तुरत सिधारे ❀ धातहि ध्यावत नैन निहारे ॥

तब मनमें अति विस्मय कीन्हो ❀ इनहिं जगतपतिहमाचित चीन्हो॥
ये अब करत कौनकर ध्याना ❀ असविचारि पूछौ मतिवाना॥

दोहा-ध्यावतजगततुमहिंसकल, तुमध्यावहुकेहिकाहि।
देहु बताइ विशेषि मोहिं, बूझि परत कछु नाहिं॥१॥

सुनि नारदके वचन सुखारे ❀ तजि समाधि विधि नैन उघारे॥
बोल्यो विहँसि सुनहु मुनिराई ❀ जेहि हम ध्यावहिं ध्यान लगाई॥
वाहीके माया वश जीवा ❀ कहत जगद्गुरु मोहिं अतीवा॥
म्वहिंसमविधिशिवसहसविलोचन ❀ प्रगटत पालत नाशत रोजन॥
ईश एक सोइ और अनीशा ❀ भजों ताहि मैं पद धरि शीशा॥
अस कहि नारदसों बहु भांती ❀ हरि उपदेश दियो बहुशाती॥
करि नारदकी विदा विधाता ❀ सोचन लग्यो फेरि विख्याता॥
भ्रमवशजन मोहिं जानत स्वामी ❀ जानत नाहिं स्वामी खगगामी॥
अस सोचत यदुपतिकहँ ध्याई ❀ दियो विरंचि समाधि लगाई॥
बैठ समाधि बित्यो बहुकाला ❀ भई तहां नभगिरा रसाला॥
तप तप सुन्यो शब्द बडभागा ❀ चौंकि चहूंकित चितवन लागा॥
देख्यो कोऊ कहुँ कित नाहीं ❀ तासु अर्थ सोच्यो मनमाहीं॥

दोहा-करत महातप विपिनमधि, चलो गयो करतार॥
तहँ अखंड लागी सुरत, यथा तैलकी धार॥२॥

तहँ भावना करत मनमाहीं ❀ पूजत हरिपद पंकज काहीं॥
प्रगट भयो हरिधाम समेता ❀ कमला संयुत कृपानिकेता॥
मिले सप्रीति बहोरि बहोरी ❀ कह्यो नाथ आज्ञा करु मोरी॥
रह्यो जगत पूरब तस कीजै ❀ यथाभाग लोकन करि दीजै॥
विधि कहँ प्रभु विचरत बहुकाया ❀ ज्ञान घटी बाढी तब माया॥
किहि विधि होइ मोर उद्धारा ❀ का अनुशासन होत तुम्हारा॥
कह्यो मुकुंद मंद मुसकाई ❀ जनत जगत तोहिं भ्रमन सताई॥
धरि मेरो शासन निजशीशा ❀ रचहु जगत परजनके ईशा॥
कृष्ण शिषापन धरि शिर धाता ❀ रच्यो जगत जस पूरबख्याता॥

पुनि जब बढ्यो भूमि कर भारा ❀ तासु उतारन कृष्ण विचारा॥
लीन्हो यदुकुल महँ अवतारा ❀ लगे चरावन वत्स अपारा॥
विहरत ब्रजमहँ निरखि मुरारी ❀ ग्वाल बाल सँग परम सुखारी॥
दोहा–अवलोकन लीला ललित, आयो नभ करतार॥
निरखि सांवली माधुरी, मूरति रसिकअधार॥३॥
ग्वाल बाल हरि सखा पियारे ❀ वेणु विषान लकुट कर धारे॥
विहरत यमुना पुलिन मझारी ❀ हरि बांसुरी बजावत प्यारी॥
खेलत हरिसँग खेल अनेका ❀ स्वामी सेवक कौन विवेका॥
जक्यो विरंचि गन्यो धनिभागा ❀ पुनि उपजो अतिशय अनुरागा॥
मनमहँ लग्यो विचारन भूरी ❀ हम शिव जेहि पद धारहिं धूरी॥
सो प्रभु खेलत गोपन माहीं ❀ इनसम कोउ धरणी धनि नाहीं॥
महाभागवत गोकुल गोपा ❀ हरिहित जगतनेह किय लोपा॥
गोप वत्स पदरज शिर धारहुँ ❀ कौनेहु भांति धाममें ढारहुँ॥
धामसहित तौ मैं धनि होऊं ❀ जनमअनेक दुरित द्युति खोऊं॥
अस विचारि मन परम प्रवीना ❀ विरचो तृण तेहि विपिन नवीना॥
चरत चरत बछरा कढि दूरी ❀ चरण लगे सोइ तृण सुख भूरी॥
तब यदुपति निज भोजन त्यागी ❀ ल्यावन हित बछरा अनुरागी॥
दोहा–ल्याऊं बछरन सखनढिग, लिहेपाणिमें कौर॥
फेरन हित कछु दूरिलौं, कीन्हो यदुपति दौर॥४॥
सोई अंतर विरंचि तहँ पाई ❀ हरयो बाल बछरा सुखछाई॥
लै अपने पुर पद रज झारयो ❀ पुरजनसहित शीश निजधारयो॥
पुनि देख्यो इत हरि कहँ आई ❀ तैसे बाल वत्स समुदाई॥
ब्रजवासी बछरा अरु बालक ❀ तिनकीपदरजअतिभ्रमघालक॥
सो सप्रीति विधिशिरधरिलीन्हो ❀ तासु प्रभाव प्रगट हरि कीन्हो॥
अपनी दिव्य विभूति दिखाई ❀ कोटिन जन्म जो ध्यान न आई॥
बालक वत्स रहे तहँ जेते ❀ चारु चतुर्भुज सोहत तेते॥
नारायणके रूप विशाला ❀ रमा सहित शोभित तिहिंकाला॥

पुनि जब येक रूप प्रभु भयऊ * तब धाता समीप चलि गयऊ ॥
अस्तुति कीनी विविध प्रकारा * नायो पद शिर बारहिं बारा ॥
दीन्हो बालक वत्स बहोरी * कह्यो पूर आशा भै मोरी ॥
यदुपति सम को कृपानिधाना * मोहिं दरशायो रूप महाना ॥
दोहा-यहि विधि विधिके बहुतहैं, चरित पुराणन माहिं ॥
सो केहि विधि मैं लखिसकौं, वर्णननाहिंसिराहिं ॥ ६ ॥

इति श्रीसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपा-
पात्राधिकारश्रीरघुराजसिंहजूदेवविरचितायां श्रीरामरसिकावल्यां
सतयुगखंडे ब्रह्मचरितवर्णनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ नारदकी कथा ।

दोहा-अब वर्णौं नारद कथा, महाभागवत जोइ ॥
जासु पुराणनमें चरित, प्रगट कहत सबकोइ ॥ १ ॥
यक हरि भक्त विप्र मतिवाना * रह्यो कौनहूं विपिन महाना ॥
तहँ आषाढ़ मास नियराान्यो * वर्षागम सबको दरशान्यो ॥
तब विहरत वसुधा सुख छाये * सनकादिक तेहि कुटी सिधाये ॥
तिनको करि सतकार सुधारी * राख्यो विप्र मासहू चारी ॥
रही एक पूरबते दासी * ताको पुत्र रह्यो मतिरासी ॥
सो सनकादिक सेवन माहीं * विप्र लगायो बालक काहीं ॥
सेवत मुनिन सुनत हरिगाथा * बालक नितहिं नवावत माथा ॥
मुनि विलोकि बालक सेवकाई * देह जूंठ नित ताहि बुलाई ॥
संत उछिष्ट खात तेहि केरी * बढ़ी भक्ति मुद मंगल ढेरी ॥
राम चरण युग प्रेम महाना * दिन दिन दून दून अधिकाना ॥
करिकै कृपा मुनीश सुतंत्रा * दियो बालकहि माधवमंत्रा ॥
वर्षा गई शरद ऋतु आई * चले मुनीश कृष्ण गुण गाई ॥
दोहा-जबते मुनि गवने अनत, तबते बालक सोइ ॥
गोविंद गुण गावत बितत, निशिदिनविहँसत रोइ ॥ २ ॥

एक समय रजनी अँधियारी ❀ डस्यो व्याल बालक महतारी ॥
जननी जब सुरलोक सिधारी ❀ तब बालक अति भयो सुखारी ॥
निकसि चल्यो गोविंद गुण गावत ❀ विपिन अकेले अति सुख पावत ॥
विकसित वारिज रह्यो तड़ागा ❀ तेहि तट बैठ्यो भरि अनुरागा ॥
श्रीरघुवीर चरण अरविंदा ❀ निज मानस करि दियो मिलिंदा ॥
जब प्रभु अपनो रूप दिखायो ❀ चितचकोर शशि सुछविछकायो ॥
पुनि कीनो वपु अंतर्ध्याना ❀ तब बालक अतिशय अकुलाना ॥
व्याकुल बुद्धि निमेष उधारा ❀ गगनगिरा भै सुखद अपारा ॥
मिलिहौं द्वितिय जन्म महँ तोहीं ❀ तैं बालक अतिशय प्रिय मोहीं ॥
यह सुनि विरह विवश मति धीरा ❀ तज्यो तुरत आपनो शरीरा ॥
पुनि विधि गोदहिं ते प्रगटान्यो ❀ नारद नाम जासु जग जान्यो ॥
महा भागवत दीन सनेही ❀ हरि उपदेश कियो नहिं केही ॥

दोहा—देखि दशा हरिजननकी, प्रेमविवश भरि कंठ ॥
देन उरहनो आसुहीं, गवनत भयो विकुंठ ॥ ३ ॥

कह्यो नाथसों दोउ कर जोरी ❀ सुनु चित दै विनती प्रभु मोरी ॥
तेरो गुण गावत सुख सारा ❀ मैं प्रति दिन विचरौं संसारा ॥
मनुज उपासक देवन केरे ❀ सुख संपति युत लख्यो घनेरे ॥
जे जन जौनहिं देव उपासैं ❀ ते सुर तासु विपति दुख नासैं ॥
ह्वै प्रत्यक्ष अस करहिं बखाना ❀ मनवांछित मांगहु वरदाना ॥
जोइ मांगत सोइ पावत आसू ❀ तिय सुतधन महिविभवविलासू ॥
पै प्रभु जो अनन्य तोहिं ध्यावैं ❀ कबहुँनते तोसों कछु पावैं ॥
दीनमलीन हीन सब भांती ❀ मांगत भीख फिरत दिन राती ॥
यह अचरज मोहिं देखि न जावैं ❀ दुनी दीन तुव दास कहावैं ॥
तेतो त्रिभुवन केर अधीशा ❀ मिटत सकलदुख नावत शीशा ॥
सुनि नारदके वचन सुहावन ❀ बोले विहँसि पतितके पावन ॥
यह स्वहिंको नारद दुख भारी ❀ जौन कही तू बुद्धि विचारी ॥

दोहा-सब देवनके दास जे, ते सुख संपति पूर॥
मोर दास मम आशकरि, रहत जगत् रस झूर॥४॥

कहा करौं नारद नहिं दोषू * देव चहौं तिय सुत महि कोशू॥
भल भल कहों मांगु मन जोई * पै मांगत मोसों नहिं कोई॥
बिन मांगेहु वरवस जो देहूं * तो नहिं लेत भांतिते केहू॥
कहा करौं यह असि पछिताऊं * नारद तुमहिं उपाय बताऊं॥
सुनत मुनीश कह्यो मुसकाई * यह कत कहहु बात यदुराई॥
जो तुम देहु तो कस नहिं लेहीं * सुख आशा जगमें नहिं केहीं॥
वचन मोर जो मृषा विचारो * देन हेत किन तुरत सिधारो॥
दीन्हेहु पै न लेहि जो दासा * छुट्यो तुम्हार दोष अनयासा॥
प्रभु कहँ चलि मुनि देहु बताई * चलि हौं मैं तुम सँगु अतुराई॥
तब मुनिनाथहिं तुरत लेवाई * आये व्रजधरणी महँ धाई॥
निरखि साधु यक कह मुनि राई * देखु दास अपनो यदुराई॥
कुंजगली बिच बैठ मलीना * वीन्यो शिलाक्षुधावश छीना॥

दोहा-पंथाके कंथा किते, अपने हाथ बटोरि॥
लै कांटा पुनि पुनि सिअत, फटत बहोरि बहोरि॥५॥

देखि नाथ ऐसो निजदासू * तासु समीप गये चलि आसू॥
पीतांबर दिय ताहि वोढाई * चौंकि उठ्यो चितयो यदुराई॥
परम माधुरी मूरति प्यारी * गदा चक्रधर असि धनुधारी॥
युग अवलंब लंब भुजचारी * वदन कोटि शशि प्रभा पसारी॥
नवनीरद तनु श्याम सुहावन * मंदहास आनंद उपजावन॥
भूरि विभूषण भूषित अंगा * नारद खडे नाथके संगा॥
कह्यो मुकुंद मंद मुसकाई * मांगहु साधु तुमहि जो भाई॥
जो मांगि हो तौ नहिं देहैं * विन दीन्हे इतते नहिं जैहैं॥
हरिके वचन सुनत सुखदाई * बोल्यो साधु मंद मुसकाई॥
लाला तुम मांगे नहिं दैहो * जानि परत मोसों नटि जैहो॥
भाषहु जो प्रण रोपि त्रिवारा * तौ मनवांछित सुनहु हमारा॥
देव देव हम देवविशेखी * कह्यो नाथ मन अचरज लेखी॥

दोहा-कह्यो साधु कर जोरिके, यही देहु घनश्याम ॥
यह झगरामें मतिपरो, मति आवहु तजि धाम ॥ ६ ॥

चिरकुट सियत देखि तेहि नाथा ❋ धरि दीन्हो पीतांबर माथा ॥
यहू गहब हम नहिं अस भाषो ❋ दियो फेंकि चिरकुट मनभाषी ॥
साधु दशालखि कृपानिधाना ❋ नारद ओर ताकि भगवाना ॥
कह्यो कहहु का हम यहि दीजे ❋ दीन्हेहु पै न लेत का कीजै ॥
दशा कृष्ण दासनकी हेरी ❋ मति मुद उदधिमगनमुनि केरी ॥
ताहि साधु कहँ बहुत बखाना ❋ पुनि यदुपति सँग कियो पयाना ॥
जब गोविन्द निजधाम सिधारा ❋ मुनि विचरन लाग्यो संसारा ॥
वीन बजावत हरिगुण गावत ❋ निशि दिन रामरूप रति भावत ॥
करत अनेकन जन उपदेशा ❋ प्रेम मगन विचरत बहु देशा ॥
माया मोहित मनुज विशखी ❋ उपदेशहु पै ज्ञान न देखी ॥
गयो बहुरि वैकुंठधामको ❋ जहँ निवास नित सिया रामको ॥
कह्यो जोरि कर सुनहु खरारी ❋ तुव माया वश जीव दुखारी ॥

दोहा-देखतनहिं संसारमें, व्याल सरिस यह काल ॥
नहिं उपाय कछु करत जेहि, मिटै जगत जंजाल ॥७॥

यह दुख मोहिं लागत अतिभारी ❋ देहु उपाय बताय विचारी ॥
कह्यो नाथ मोहित मम माया ❋ तजन जीव चाहत नहिं काया ॥
यह अनादि सम्बन्ध विचारो ❋ संतसेव गुरुहेत उधारो ॥
मृषा मानु तौ चल जग माहीं ❋ जगत तजन कहियो कोउ काहीं ॥
कह मुनि सत्य कहहु यदुराया ❋ हमहूं लखन चहैं तुव माया ॥
जाहु देवऋषि देखन सोई ❋ मम माया कौतुक जो होई ॥
चल्यो मुनीश मही महँ आयो ❋ विचरन लाग्यो अतिसुखछायो ॥
फिरतफिरत इक नगरसिधार्‌यो ❋ वनिक वृद्धयक तहां निहार्‌यो ॥
रहे तीन सुत अरु षट नाती ❋ तिमि धन धाम विभव सब भांती ॥
नात कुटुंब और परिवारा ❋ पूरण रहे अनेक प्रकारा ॥
गुणि तेहि बनिक वृद्ध मनमाहीं ❋ करहिं अनादर सब तेहि काहीं ॥
सांझ चना चाबन कहँ देहीं ❋ सुत सुतवधू न तासु सनेही ॥

दोहा—फटे पुराने वसनतेहि, देहिं विते बहुवार ॥
ताकन हित बैठाइ तेहि, राखहिं घरके द्वार ॥ ८ ॥

नैन मंद पग चलि नहिं जावे ❀ आवत जात नारि गरि आवे ॥
करहिं बाल सिरतलहि प्रहारा ❀ कहहिं याहि यमराज बिसारा ॥
बनिक दशा इमि निरखि मुनीशा ❀ कियो विचार सुमिरि जगदीशा ॥
यहि सम दुखी न कोउ जगमाहीं ❀ यह तजिहै निजते जगकाहीं ॥
असविचारि तेहि निकट सिधारी ❀ वनिक बुझावत गिरा उचारी ॥
बूढ भये कर पद दृग मंदा ❀ देहि सकल कुलके दुख दंदा ॥
हम ले चलहिं विकुंठहि तोको ❀ तोहिं देखि दाया भै मोको ॥
बनिक सुनत नारदके बैना ❀ बोल्यो माषि लाल करि नैना ॥
जाहु जाहु तुमही मुनिराई ❀ हम का करब विकुंठहिं जाई ॥
घर ताकिहैं को जो हम जैहैं ❀ कहँ सुत सुततिय सुत सुत पैहैं ॥
वनिक वचन सुनि फिरे मुनीशा ❀ कह्यो धन्य माया जगदीशा ॥
वनिक मर्‌यो पुनि लहि कछु काला ❀ भयो ताहि घर महिषविशाला ॥

दोहा—भूरि भारि भरगोनिमें, तासु पुत्र तेहिलादि ॥
गवनहिं दूरि विदेशकहँ, देहिं न तेहि अन्नादि ॥ ९ ॥

श्रमित चलैं नहिं तब अति कोहैं ❀ अरइं तासु नितंबै पोहैं ॥
कहुँ उठि चलत गिरत पथ माहीं ❀ क्षुधा तृषावश निशिदिनजाहीं ॥
ऐसी दशा देखि तेहि केरी ❀ नारद आइ कह्यो पुनि टेरी ॥
अबहूं चलु विकुंठ मतिमंदा ❀ अहै तोहि अब कौन अनंदा ॥
महिष योनि भारित अतिभारा ❀ तापर ताडत तोर कुमारा ॥
कह्यो महिष तब मुनिसों कोपी ❀ हम नहिं हैं विकुंठके चोपी ॥
जो हम अब विकुंठको जैहैं ❀ सुत कोहि लादि विदेश सिधैहैं ॥
फिरे वचन सुनि अस मुनिराई ❀ मरिगो महिष काल कछु पाई ॥
भयो श्वान पुनि तेहि घरकेरो ❀ द्वारे बीतत सांझ सबेरो ॥
पुत्र पौत्र जब निकसत खाई ❀ टूका दैदेवैं दुरिआई ॥
कबहुं प्रवेश करत घर जबहीं ❀ मारहिं नारि लुकेठन तबहीं ॥
देखि दशा अस पुनि मुनिराई ❀ जाइ श्वान ढिग गिरा सुनाई ॥

दोहा-अबहुँ चलो वैकुंठको, अब दुख बाकी कौन ॥
क्षुधा छामतनु कंडुबहु, कस नहिं छांड़हु मौन॥१०॥

नहिं जैहौं विकुंठ का श्वाना ❀ मोहिं महादुख तजत मकाना ॥
आवहिं राति चोर घर मेरे ❀ चारौं पहर करौं घर फेरे ॥
भूंकि भूंकि निज सुतन जगाऊं ❀ यह विधि आपन ऐन बचाऊं ॥
जो हम अब विकुंठको जैहैं ❀ चोर चोराइ सबै धन लैहैं ॥
नारद फिरे फेरि मुसकाई ❀ श्वान मीच कछु दिनमहँ पाई ॥
भयो तासु नरदाको कीरा ❀ भक्षत मलहु मूत्र नहिं पीरा ॥
तब नारदमुनि तहँ पुनि आये ❀ कछुक कोप अस वचन सुनाये॥
तोहिं धिग धिग पामर मतिमंदा ❀ अबहु न छोड़त जगकरफंदा ॥
भयो कीट मलको सुखहीना ❀ तदपि होत नहिं मोहविहीना ॥
अबहू चलु विकुंठको पापी ❀ तोहिं करौं मैं आसुअतापी ॥
कह्यो कीट तब म्त्राहिं सुखभारी ❀ जीवहुँ निज परिवार निहारी ॥
सुनत वचन पद घसि मुनिराई ❀ लैगो तिहि विकुंठ बरियाई ॥

दोहा-मैं जगते इक जीवको, मायाबंधन छोरि ॥
ल्यायो नाथ समीप तुव,अस कह मुनि कर जोरि ११

नाथ कह्यो निजते नहिं आयो ❀ तुम हत्या करि बरबस ल्यायो ॥
माया मोहित जीव अनेकू ❀ जगत तजन चित चहत न नेकू॥
भाग्यवशात पाय सतसंगा ❀ सुधरत सकल होत जग भंगा ॥
यहि विधि नारद कथा अपारा ❀ वरणि कौन पायो कवि पारा ॥
सदा प्रसन्न साधु सब पाहीं ❀ कोपहु मंगल हेतु सदाहीं ॥
विहरत धनदकुमार तड़ागा ❀ निकस्यो तहँ नारद बड़भागा ॥
नारी देख पहिरि पट लीन्हो ❀ धनदपुत्र नहिं कछुचित दीन्हो ॥
जड़ता जोहि दीन्ह मुनि शापा ❀ होहु विटप ब्रजके बिन तापा ॥
हरि लैहैं यदुकुल अवतारा ❀ करि हैं अवशि तुम्हार उधारा ॥
नारद शाप प्रगट परभाऊ ❀ तिन उधार कीन्हो यदुराऊ ॥

सो प्रसिद्ध भागवत पुराना ❀ ताते मैं संक्षेप बखाना ॥
नारदचरित पुराणन माहीं ❀ वर्णहिं सिद्ध मुनीश सदाहीं ॥

दोहा-ताते कह्यो न मैं बहुत, कथा अनोखी दोइ ॥
लिख्यो राम रसिकावली, समुझि संत सुख होइ॥१२॥

इति श्रीराम० स० खं० नारदकथावर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः॥३॥

अथ शिवजीकी कथा ।

दोहा-भनों बहुरि शिवकी कथा, सकल पुराण प्रसिद्ध ॥
भक्ति शिरोमणि जाहि नित, नवहिं देव मुनि सिद्ध॥१॥

शिव सम कौन दीन हितकारी ❀ परहित पियो हलाहल भारी ॥
ज्ञान विराग भक्ति अरु योगू ❀ करत सदा जनहित उत योगू ॥
जगमंगल हित बड़ तप करहीं ❀ राम नाम निशि दिवस उचरहीं॥
धन्यो सती सीताकर रूपा ❀ तेहि त्याग्यो यदि प्रिया अनूपा॥
एक समय गौरी शिव दोऊ ❀ चढे वृषभ सँग गण सब कोऊ ॥
चले करत पुहुमीकर फेरा ❀ देख्यो एक ठाम युग खेरा ॥
उतरि तुरत नंदीते ईशा ❀ कियो प्रणाम धारि महि शीशा ॥
पुनि चढि नंदी चले पुरारी ❀ पाणि जोरि तब शैलकुमारी ॥
अतिशंकित बोली अस बैना ❀ केहिं प्रणाम कीन्हों सुख ऐना ॥
भन्यो शंभु मंदहि मुसकाई ❀ सुन जेहि कियो प्रणत शिरनाई ॥
यहि थल विते सहस दशशाला ❀ भयो एक हरिभक्त विशाला ॥
दुती खेरमहँ सुनहु पियारी ❀ ह्वैहैं कृष्ण भक्त रतिधारी ॥

दोहा-ताते दूनहुँ खेरको, सादर कियो प्रणाम ॥
कृष्णभक्तको भक्तमैं, सत सेवन मम काम ॥ २ ॥

इति श्रीरा० सतयुगखंडे शिवचरित्रवर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ सनकसनंदसनातनसनत्कुमारकीकथा।

दोहा-जय भागवत प्रसिद्धजन, सनकादिक जिननाम ॥
मंत्र हरिस्मरणं सदा, जपत रहत वसु याम ॥ १ ॥

विधि मनते सनकादिक जाये ❀ तुरतै यहि विधि वचन सुनाये॥
सृष्टि करो जग पूरण हेतू ❀ मानहु मम शासन मतिसेतू ॥
तब सनकादिक वचन उचारो ❀ मायाफंद गले नहिं डारो ॥
करि हैं हम हरि भजन सदाहीं ❀ मनिहैं तिहरो शासन नाहीं ॥
अस कहि परम धर्म अनुरागे ❀ पंच वर्षकी वय बड़ भागे ॥
विचरहिं जग उपदेशहिं कारन ❀ कबहुं न जात धनिनके द्वारन ॥
पै पृथुको गुणि राम सनेही ❀ आये कहन दशा जस देही ॥
कह्यो बुझाय सुनाय सभाको ❀ परम धर्म सब भन्यो सदाको ॥
सनकादिक सम कोउ नाहिं भयऊ ❀ कबहुँ न मायावश मन गयऊ ॥
यदपि कृष्ण प्रेरण वश ज्ञानी ❀ जय विजयहिं दिय शाप महानी॥
तदपि नाथसों पुनि अस भाष्यो ❀ नरक हमहिं इनको बदि राखो ॥
बार बार प्रभुसों पछिताने ❀ तब हरि कारण सकल बखाने ॥

दोहा-और प्रसिद्ध पुराणमें, सनकादिककी गाथ ॥
मैं कहँलों वर्णन करों, पुनि पुनि नावहुँ माथ ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे सनकादिकचरित्र-
वर्णनं नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ कपिलदेवकी कथा।

दोहा-अब मैं वर्णन करतहों, कपिलदेव इतिहास ॥
देवहूतिसों प्रगट है, कीन्हो सांख्य प्रकाश ॥ १ ॥

केवल परहित जिन अवतारा ❀ अवनि अनेकन अधम उधारा ॥
कह्यो मातुसों ज्ञान विरागा ❀ नाहिं संसार मांह मन लागा ॥
कर्दम तप कृत भोग विलासा ❀ सुर दुर्लभ छोड़्यो अनयासा ॥

अवलों गंगा सेवन करहीं ❀ जन उधार हित अति श्रम भरहीं ॥
सगर यज्ञको तुरँग चुराई ❀ बांध्यो कपिल निकट सुरराई ॥
सकल सगर सुत साठि हजारा ❀ हय हेरन हित जबहिं सिधारा ॥
कपिलहि जानि चोर द्रुति धाये ❀ मुनि मन हर्ष विषाद न लाये ॥
अपनेहि पाप भये जरि छारा ❀ सगर सुवन जे साठि हजारा ॥
साधुद्रोह जे ठानहिं प्रानी ❀ तिनहिं होत पावक इव पानी ॥
जरहिं पतंग सरिस अनयासू ❀ साधु सदा बिन सोच हुलासू ॥
कपिलदेवको देखि प्रभाऊ ❀ दियो सुथल निजते हरि राऊ ॥
भगवत भक्तन कहँ जग माहीं ❀ जडहु करहिं सत्कार सदाहीं ॥

दोहा—दशों दिशा मंगल लहै, जड़ चेतन अनुकूल ॥
सब थल देखै नाथनिज, लखै न कोउ प्रतिकूल॥ २॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे कपिलदेवचरित्रवर्णनं
नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ मनुराजाकी कथा।

दोहा—मैं बरण्यों संक्षेप यह, कपिलदेव इतिहास ॥
अब यह मनु महराजकी, कहों कथा सहुलास १॥

ब्रह्मतनय भे मनु महराजा ❀ राम भक्त निज सहित समाजा ॥
उदय अस्त निज शासन फेरयो ❀ पाप प्रचंड दण्डसे पेरयो ॥
धरयो धर्म धुर धरणि मझारी ❀ मातु समान तक्यो परनारी ॥
एक समय विचरत महि माहीं ❀ गयो सुकर्दम भवन जहाहीं ॥
देवहूति सँग रही कुमारी ❀ शतरूपा रानी छबि वारी ॥
लखि आदर अति कर्दम कीन्हा ❀ कंद मूल भोजन हित दीन्हा ॥
हरि शासन गुणि मुनि तप धारी ❀ देखो देवहूति सुकुमारी ॥
अति लज्जित अस गिरा उचारी ❀ देहु मोहिं महराज कुमारी ॥
नृपदुहिता मुनि व्याह अयोगू ❀ पै गुणि मुनि कर भूप नियोगू ॥
दियो सुता नहिं अनुचित देख्यो ❀ द्विजहित निज सर्वस गुणलेख्यो॥

देवहूति हरि भक्त महानी ❀ पति मूरति हरि मूरति जानी ॥
पति सेवत कृश तनु है गयऊ ❀ तदपि न कछु विषाद उर भयऊ ॥
दोहा-अस्थि चर्म भरितनु रह्यो, रहिगे केवल श्वास ॥
तदपि न पतिसेवन करत, तनको घट्यो हुलास ॥२॥
देवहूति सम नाहिं कोउ नारी ❀ यह जगमें पतिसेवनकारी ॥
दे दुहिता मुनिको सुख छाये ❀ लौटिभूप निजसदन सिधाये ॥
नृपके भे सुत युगल धर्मरत ❀ लघु उत्तानपाद गुरु प्रियव्रत ॥
प्रियव्रत होतहिं नारद आये ❀ परमारथ उपदेश बुझाये ॥
मुनि उपदेश तीरसम लाग्यो ❀ जगतमृगयगुणिप्रियव्रत भाग्यो ॥
मंदर कंदर रह्यो दुराई ❀ राम कृष्ण मुखते रटलाई ॥
सुतवियोग लखि मनु महराजा ❀ वृथा जानि अपनो सब काजा ॥
गये विरंचि समीप सिधारी ❀ कह्यौ पौत्र तुव भो तपधारी ॥
सुनत भूप भाषित चतुरानन ❀ चले चटिक प्रियव्रत जेहि कानन ॥
मनु विधि नारद प्रियव्रत चारी ❀ परमारथकी गिरा उचारी ॥
मनुकह जग यह अजित अराती ❀ समिटि लरैं हम तुम सब भांती ॥
गृह गढ धारि लरौ तुम जाई ❀ हम विरक्त मैदान लराई ॥
दोहा-यहिविधि हम दोउ जितब जग, है कछु संशय नाहिं ॥
जो विरक्त अबहीं भये, किमि जितिहो जगकाहिं ३॥
हैहौ अबहिं विरक्त जु प्यारे ❀ तौ हैहैं सब प्रजा दुखारे ॥
नीति सनातन यह श्रुति गाई ❀ सुतहि राज्य दे पितु वन जाई ॥
तुमहुं सुतहि दे राजकुमारा ❀ वन गवनहु लहिकै सुखसारा ॥
हम तुम्हारबादि वनमहँ ऐहैं ❀ तुम ऐहौ तव परपुर जैहैं ॥
याहि विधि कह्यो विधातहु ताको ❀ प्रियव्रत भो तव प्रभु वसुधाको ॥
मनु महराज करन तप लागे ❀ रामचरण अतिशय अनुरागे ॥
तेइस सहस्र वर्ष जब बीते ❀ तबहुँ न तपसों भूपति रीते ॥
देव देन वरदान सिधाये ❀ मनु महराज न कछु मनलाये ॥
तब निजजन प्रण पूरण हेतू ❀ रामसिया युत कृपानिकेतू ॥

खड़े भये मनु सन्मुख आई ❋ भूपति गयो सुकृत फलपाई ॥
कह्यो नाथ मांगहु वरदाना ❋ नृपति कह्यो हे कृपानिधाना ॥
होहु नाथ तुम पुत्र हमारे ❋ बालचरित हम लखहिं तिहारे ॥
दोहा-एवमस्तुकरुणायतन, कह्यो माथ धरिहाथ ॥
सोइ दशरथ भूपति भयो, यहिविधि मनुकी गाथ॥३॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ प्रल्हादकी कथा।

दोहा-अब वर्णों प्रल्हादकी, कथा मनोहर जोइ ॥
जासु सरिस नहिं भक्त कोउ, कहहिं संत सबकोइ १
दितिसुत दैत्य उभयबलवाना ❋ हिरनकशिपुहिरणाक्ष महाना ॥
कानन कियो जाइ तप भारी ❋ ह्वै प्रसन्न भाष्यो मुखचारी ॥
मांगु मांगु दानव वरदाना ❋ तुम सम किय न कोउ तपआना॥
अस कहि छिरकि कमंडलुनीरा ❋ कियो तासु अति पुष्ट शरीरा॥
मांग्यो वर असुरेश विचारी ❋ तुव कृत सृष्टि न मीचु हमारी ॥
एवमस्तु तब विधि कहि दयऊ ❋ दानव जीति सकल सुर लयऊ ॥
जब दानव निकल्यो तपहेतू ❋ तब सब सुर बांध्यो असनेतू ॥
दानव निलै लूटि सब लीन्हे ❋ असुरन हानि निकासि सब दीन्हे॥
हिरणकशिपुकी जो इक नारी ❋ लै सुरपति तेहि चल्यो सिधारी॥
नारद मिले आइ मगमाहीं ❋ गर्भवती देख्यो तियकाहीं ॥
का करिहो पूछ्यो मुनिनाथा ❋ कह्यो सुरेश जोरि युगहाथा ॥
याके गर्भ माहिं रिपु मोरा ❋ ताको वध करिहौं यहि ठोरा ॥
दोहा-मुनिहि दया उपजी अतिहि,सुरपतिको समुझाय॥
लै गमन्यो निज संगतिय, निज आश्रममें आय॥२॥
नारिउदर भागवत जानी ❋ किय उपदेशहि ज्ञान विज्ञानी ॥
जब तप करि लौट्यो असुरेशा ❋ तब पुनि जाय तुरंत निवेसा ॥
पुत्र सहित नारी कहँ दीन्हो ❋ असुर अदोष मानि लै लीन्हो ॥
महाभागवत सोइ प्रलहादा ❋ सज्जनको दायक अहलादा ॥

त्रिभुवन जीति असुर जब आयो ❀ बालक निरखि परम सुख पायो॥
कविसुत असुर वंशगुरुआमा ❀ षंडामर्क रह्यो अस नामा ॥
कह्यो असुरपति तिनहिं बुलाई ❀ मों बालक कहँ देहु पढाई ॥
षंडामर्क बोलि प्रहलादै ❀ लगे पढावन आसुरवादै ॥
पढै न बाल रटै मुख रामा ❀ करै गुरू शिक्षन वसु यामा ॥
नीतिशास्त्र जब गुरू पढावै ❀ तब प्रहलादहि ताहि सिखावै ॥
नीतिशास्त्र मन तुमहुँ न देहू ❀ करहु राम पद पंकज नेहू ॥
विहँसे गुरु सुनि बालक बानी ❀ सिखवै मोहिं शिष्य जनु ज्ञानी॥

दोहा-कह्यो वचन तब शक्रसुत, असन पढहु सुखलेखि॥
जो सुनि है दानव अधिप, तौ कोपि है विशेषि॥३॥

अस कहि आसुर विद्या केरो ❀ दियो पाठ गुरु सहित निवेरो ॥
गयो अनत गृहकारज हेतू ❀ बालक बोलि तबै मतिसेतू ॥
लग्यो सुनावन कृष्ण प्रभाऊ ❀ नवधा भक्ति सुधर्म स्वभाऊ ॥
बहुरि बालकन कह्यो कुमारा ❀ स्वप्नसरिस जानहु संसारा ॥
बिन हरिभक्ति न मंगल होई ❀ सत्य सत्य जानहु सब कोई ॥
छीजति छन छन आयुदाया ❀ कोटिन दिये न पुनि कोउ पाया॥
जे क्षण कृष्ण भजनमय जैहैं ❀ तेई सकल सफल हठि हैहैं ॥
हरिके होहु अनन्य उपासी ❀ तब पैहौ बालक सुखराशी ॥
न तौ जियत भोगिहो कलेशा ❀ मरे पायहो दंडविशेषा ॥
रामकृष्ण गोविंद मुरारी ❀ रसना रसनि यही सुखकारी ॥
कालव्याल वागत सब शीशा ❀ परै न जानि करत का ईशा ॥
मायामोहित जीव अनेका ❀ करत न कछु जगमाहिं विवेका ॥

दोहा-जो सुख संपति साहिबी, करण चहौ दुहुँ लोक ॥
तौ अनन्य रघुबरवचन, भजहु बाल बिन शोक॥४॥

सुन प्रलहादवचन भ्रमघालक ❀ राम भजन लागे सब बालक ॥
षंडामर्क बहुरि पुनि आये ❀ देखि दशा अतिशय दुख पाये॥
बोले सकल बालकन भाषी ❀ यह का पढहु सबै मुखभाषी ॥

कौन सिखायो तुम्हें कुनीती ❀ मानहु नाहिं मोहिं कछु भीती ॥
बोले बालक एकहि बारा ❀ हमहि सिखायो भूपकुमारा ॥
तब प्रल्हादहि कह्यो रिसाई ❀ यह विद्या तोहिं कौन सिखाई ॥
तब प्रल्हाद कह्यो मुसकाई ❀ राम प्रसाद गुरू हम पाई ॥
तुमहुँ भजो हरि दीनदयाला ❀ वृथा परे जगके जंजाला ॥
बहुरि कह्यो गुरु जो हरि कहिहै ❀ तो परचंड दण्ड शिशु लहिहै ॥
कह्यो सकल बालकन बहोरी ❀ जो हरि कहो त्रास तेहि मोरी ॥
अस कहि गृहकारजहित गयऊ ❀ पुनि प्रलहाद कहत अस भयऊ ॥
करहिं गुरू विद्याहित त्रासा ❀ तुमहि न दंड देनकी आसा ॥

दोहा-जो करिहौ तुम हरि भजन, तौ प्रसन्न गुरु होइ ॥
मोसों कह्यो एकांतमें, अस जानहु सब कोइ ॥५॥

कृष्ण भजत पावहु जो दंडा ❀ तो हम जामिन हैं बरिबंडा ॥
गुरु अभिलाष मोरि अरिजानी ❀ तुमहि अयान गुणत गुरु ज्ञानी ॥
सुनि प्रलहाद वचन यहि भांती ❀ लगे भजन पुनि हरि दिन राती ॥
गुरू आइ अस दशा निहारी ❀ हाय हाय कहि भयो दुखारी ॥
गहि प्रलहाद पाणि तेहि काला ❀ लै गमन्यो जहँ असुरभुवाला ॥
देखि पुत्रको दानवराई ❀ लीन्हो मुदित अंक बैठाई ॥
कह्यो पढ़हु जो पढ़हु कुमारा ❀ तबै वचन प्रलहाद उचारा ॥
कृष्णभक्ति पितु पढ़ा हमारी ❀ जो भवकानन दहन दवारी ॥
शत्रु मित्र है कोउ जग नाहीं ❀ व्यापित राम सकल जगमाहीं ॥
कठिन कराल अहै संसारा ❀ बिन हरि भजे न होत उबारा ॥
पिता त्यागि तुमहूं जग आसा ❀ होहु राम पदपंकज दासा ॥
बालवचन सुनि दानवराई ❀ मानि मृषा मन हँस्यो ठठाई ॥

दोहा-षंडामर्कहिं पुनि कह्यो, कोउ मम रिपुजन आय ॥
सिखयो मेरे पुत्रको, एकांतहि लैजाय ॥ ६ ॥

लै बालक गमनहु गृहकाहीं ❀ सावधान अब रहहु सदाहीं ॥
कोउ बालकहि न सिखवन पावै ❀ करि छल हरि निज दूत पठावै ॥

नृपति वचन सुनि गुरु गहि बाले ❀ गये बहुरि मोदित निज आले ॥
लगे पढावन आसुर विद्या ❀ जाहि वेद सब कहत अविद्या ॥
सुनि गुरुपाठ कहै मुसकाई ❀ रामकृष्ण यदुपति यदुराई ॥
सुनि अस वचन गुरू अतिमाषैं ❀ काह बकत रे शिशु अस भाषैं ॥
गृहकारजहित जब गुरु गवने ❀ कहहिं शिशुन सुमिरो सियवरने॥
पावहिं पढन न आसुर ज्ञानू ❀ तम नहिं प्रविशअछत जिमि भानू ॥
यहि प्रकार बीत्यो कछु काला ❀ देखि दशा गुरु भये बिहाला ॥
अतित्रासित करि कह प्रल्हादे ❀ रे शठ तोहिं भयो उन्मादे ॥
अब हम तोहिं नाहिं नेकु पढैहैं ❀ मारि कसा नृप ढिग लैजैहैं ॥
असुरनाथ हमको अनखाहीं ❀ निज सुत ढंग जानते नाहीं ॥

दोहा—अस कहि कसा प्रहार किय, सो प्रल्हाद शरीर ॥
कुसुमसरिस अतिसुखद भै, नेकु भई नहिं पीर ॥७॥

पकरि बाहु भूपति ढिग आये ❀ षंडामर्क कोप अति छाये ॥
आशिष दे अस वचन उचारा ❀ यह बालक कुल चहत उखारा ॥
मानत नहीं नेकु मम भीती ❀ करत न कछु पाठनपर प्रीती ॥
बरबस बकत विष्णु करनामा ❀ जो तुम्हरो बैरी दुखधामा ॥
लेहु लाल अपनो महराजा ❀ हम नहिं करब गुरू करकाजा ॥
हमहीं कहँ तुम दोष लगैहो ❀ बालक कहँ नहिं त्रास देखैहो ॥
सुनत हिरणकश्यप गुरुबानी ❀ बैठायो निज अंकहि आनी ॥
कहहु कहहु सिखयो गुरु जोई ❀ हमरेहु सुनन लालसा सोई ॥
तब प्रल्हाद कह्यो मुसकाई ❀ जय रघुनाथ राम रघुराई ॥
गुरू गिरावत म्वहिं भवकूपा ❀ कैसे गिरहुँ जानि मैं भूपा ॥
जिनके उर न रामपद प्रीती ❀ ते नहिं जानत नीति अनीती ॥
कुमती करहिं मनोरथ नाना ❀ स्वप्नसरिस सो सकल बिलाना ॥

दोहा—सुख संपति अरु साहिबी, बिना भजे रघुनाथ ॥
मिटत बारिबुल्ला सरिस, मरे न लागत हाथ ॥ ८ ॥

सुनत पुत्रकी अनुपम बानी ❀ कोपित भयो असुर अज्ञानी ॥
पटाके अंकते बारकक्राहीं ❀ बोल्यो वचन कठोर तहाहीं ॥
रे सुत शठ यह कौन पढायो ❀ तासु नाम नहिं मोहिं बतायो ॥
मेरो लघुभ्राता बधकारी ❀ ताहि भजन भय छोड़ि हमारी ॥
कबहुँ राम हरि जो मुख कहिहै ❀ जीवनघात आसु तै लहिहै ॥
मोहिं डारि जो कछु रह्यो लुकाई ❀ ताहि लियो तैं नाथ बनाई ॥
लै गुरु जाहु भवन शिशु काहीं ❀ कहन न पावै हरि मुख माहीं ॥
अब जो कही दंड मैं देहौं ❀ पुनि नहिं बालक माने बचैहौं ॥
कह प्रल्हाद सहज बिनभीती ❀ सुनहु पिता याकी अस रीती ॥
इंद्रिय सब है जीव अधीना ❀ जीवनाथ रघुनाथ प्रवीना ॥
सजन ईशकर दास अनीशा ❀ जपत हरिहि सुनु दानवईशा ॥
यामैं कछु मोरा नहिं दोषू ❀ जनक करहु तुम नाहक रोषू ॥

दोहा-जो जानै यह भेदको, तो तेहि जगत हेराइ ॥
जो नहिं जनै भेद यह, ताहि नजगत सिराइ ॥९॥

सुनत कुपित कह शठ अस बानी ❀ मोहिं सिखवत विज्ञान अज्ञानी ॥
टारहु मम दृगपथ यहि काहीं ❀ नातो मीचु होत क्षणमाहीं ॥
तब गुरु गहिकर भवन सिधारे ❀ तेहि बुझाइ अस वचन उचारे ॥
निजकुल धर्म तजहु नहिं ताता ❀ जहै बिगरि बनी सब बाता ॥
कह प्रल्हाद मोर नहिं बिगरी ❀ तुम देखहु निज बिगरी सिगरी ॥
गुरु सकोप तब पुनि नृप पाहीं ❀ कह्यो आय शिशु मानत नाहीं ॥
तुरत असुर प्रल्हाद बोलायो ❀ बारबार दृग लाल देखायो ॥
दियो भटन कहँ हुकुम सुरारी ❀ गजदंतन शिशु डारहु मारी ॥
सुनि भट तुरत पकरि प्रल्हादै ❀ ठाढ कियो चौहट करिनादै ॥
महामत्त मातंग मँगाई ❀ दीन्हो सन्मुख तासु चलाई ॥
दंती दंत दियो उर कैसे ❀ दंड एरंड पषाणहि जैसे ॥
टूटे दर करि रव मुख मोरा ❀ प्रल्हादहि सुख दुख नहिं थोरा ॥

दोहा—अचरज मान्यो असुर सब, घाय हन्यो तेहि शूल
टूटिगये सब लोहलगि, जैसे मूलकमूल ॥ १० ॥

पुनि सब असुर कोप अतिकीन्हे ❀ बांधि तुरत प्रल्हादहि लीन्हे ॥
कहे सकल धरणी खनि डारो ❀ गाड़ि देहु यहि विधि यहि मारो॥
खनिकै गहिर गर्त तेहि काला ❀ डारयो कुँवरहि असुरकराला ॥
तोप्यो उपर मृत्तिका भूरी ❀ दियो पषाण उपरते पूरी ॥
मारि प्रल्हाद गयो अस जाने ❀ सोये रैनि सुचित सुखमाने ॥
देखन हेतु भोर लहि पैठे ❀ निरखे प्रल्हादहि तहँ बैठे ॥
असुर सबै तब अचरज माने ❀ विस्मय हर्षहीन तेहि जाने ॥
पुनि प्रल्हादहि सकल सुरारी ❀ लै निज संगहि चले सिधारी ॥
रह्यो एक गिरिशृंग उतंगा ❀ दीन्हो ताहि चढाय उछंगा ॥
बहु योजनकी रही उँचाई ❀ तहँते दिय हरिजनहि गिराई ॥
दै करताल मरो तेहि मानी ❀ हरि चरित्र शठ कोउ नहिं जानी॥
भै महिफूल तूलके तूला ❀ हरिप्रभाव सपनेहुँ नहिं शूला ॥

दोहा—देखि अछत असुरेश सुत, अचरज असुर विचारि
लगे कहन यहि भांतिसों, केहि विधि डारिय मारि ॥११॥

सकल अंग पुनि जकरि जँजीरा ❀ डारयो नीरधि नीर गँभीरा ॥
सागर तेहि तरंगमहँ लीन्हो ❀ मंद मंद तटमहँ धारि दीन्हो ॥
यह विधि किये अनेक उपाई ❀ हरिजन मरण हेतु बरियाई ॥
पै न विथा नेकहु तनुव्यापी ❀ राख्यो निजकर कृष्ण प्रतापी ॥
जिहि रक्षत जगमें भुज चारी ❀ द्वै भुज सकत ताहि किमि मारी॥
असुर ल्याइ दानवपति आगे ❀ लज्जितवदन कहन अस लागे ॥
कानहु विाध शिशु मरै न मारा ❀ काह करिय अब नाथ विचारा ॥
कह्यो दैत्यपति वारुण पासा ❀ बांधि जाहु ले गुरुके पासा ॥
सुधरै शठ सब विधि नहिं तबलौं ❀ आवै गुरू न भार्गव जबलौं ॥
शठ प्रल्हादहिं तैसहिं कीन्हे ❀ गे गुरुभवन ताहि सँग लीन्हे ॥

वारुण पाशहिं अंगन बांधी ❀ राख्यो ताहि कोठरी धांधी ॥
गुरुको अंतर लहि प्रल्हादा ❀ बोलि बालकन किय संवादा ॥
दोहा–लखहु कृष्ण परभाव अस, म्वहिं मारनके हेत ॥
कीन्हे असुर उपाय बहु, पै न लग्यो कछुनेत ॥ १२ ॥
तुमहुं जो कृष्ण भक्ति अस करिहौ ❀ कबहुं न कालपाशमें परिहौ ॥
बालक लखि प्रल्हाद प्रभाऊ ❀ सत्य मानि भे मृदुल स्वभाऊ ॥
राम कृष्ण मुखभाषण लागे ❀ गुरुके वचन त्यागि भय त्यागे ॥
षंडामर्क फेरि तहँ आये ❀ लखि बालक दृग लाल दिखाये ॥
जरत बरत भूपति ढिग जाई ❀ कह्यो नाथ रावरी दुहाई ॥
अबहुं न मानत बालक पापी ❀ राउरत्रास नेकु नहिं व्यापी ॥
सुनि सुरारि भो तामसरूपा ❀ लोचन प्रलयानल अनुरूपा ॥
कह्यो पुत्र पापी प्रल्हादू ❀ पढे अवशि यह जालिम जादू ॥
विविध भांतिते मरे न मारा ❀ ताते मैं अस कियो विचारा ॥
बोलि सभामधि अपने हाथा ❀ लै करवाल काटि हौं माथा ॥
जाहु ले आवहु खल सुत काहीं ❀ अब विलंब कीजे क्षण नाहीं ॥
असुर अधिपके सुनि अस वैना ❀ धाये भट आये गुरु ऐना ॥
दोहा–करी तुरत प्रल्हादको, ल्याये सभामझार ॥
सहज सुभाव गोविंद जन, नहिं कछुहर्षखँभार ॥ १३ ॥
बोल्यो हिरणकशिपु विकराला ❀ बालक आइ गयो तुव काला ॥
की मेरो अब शासन मानै ❀ की यमपुरको करै पयानै ॥
करि छल बची बहुत दिन काया ❀ अब नहिं लागी राउरि माया ॥
हो जो तुम प्रभु ताहि बुलावै ❀ देखौं केहि विधि तोहिं बचावै ॥
करिसि दुष्ट जाको गुण गाना ❀ सो मेरो रिपु छली महाना ॥
करि छल हरयो मोर लघुभ्राता ❀ मोहिं डरि दुरयो न कहुँ दरशाता ॥
व्यापित जन भरोस अस तोको ❀ क्यों नहिं दरशावत इत मोको ॥
नाचत काल तोर तुव शीशा ❀ आइ न कस रक्षत तुव ईशा ॥
सुमिरु सुमिरु अपने प्रभुकाहीं ❀ जियन उपाय राख अब नाहीं ॥

तब सहजाहि हँसि कह प्रल्हादा ❀ पिता तोहिं भो अति उनमादा॥
केहि सुमिरों अरु काहि बुलाऊं ❀ मो प्रभु तो दीसत सब ठाऊं॥
अस कौनहुँ थल पितु नाहिं दीसा ❀ जहँ नाहिं मोहिं दीसत जगदीशा॥

दोहा—जो समता जगमें करौ, ह्वै अनन्य हरिदास॥
तौ तुमहूँको लखि परै, सब थल रमानिवास॥ १४॥

कवित्त—सुनि प्रल्हाद वाद कोप मर्याद मोरि परमप्रसाद भरो नाद करि बोल्यो बैन॥ अब यह बात कही चली नाहिं तोरी छल छली विष्णु होइ बली रोकै गली कोऊ है न॥ रघुराज सकल समाज मध्य भाषौं आज देव शिरताज तेरी लाज काज आवै क्यों न॥ शुंभ और निशुंभ जंभ जोरदार वीर बीच परिहरि दंभ काहे खंभहीते प्रगटै न॥ १॥ असुरकुमार कियो विहसि उचार ऐसो हेरचो बारबार होन हेर्यो अस ठोर है॥ जहां न देखायो मोहिं करुण समुद्र छायो अति मनभायो रूप देवकी किशोर है॥ रघुराज रसा दिवि निशा दिन दिशा वसु खाली नाखधारि सो विचार अस मोर है॥ करि अनुकंपाको अरम्भ यह खंभहीमें दीसत है ईश मोहिं कैसो ज्ञान तोर है॥ २॥ सुनि प्रल्हाद बैन धर्म मर्याद भरे नाके मर्याद कोप कीन्हो असुरेश है॥ घोर सोर कैके भारि दीन्हो महि चार्यो ओर उठचो अतिजोरकै कषायकै निवेश है॥ फरके उदंड दोरदंड जे अखंड वोज अमित घमंड भो प्रचंड कालवेश है॥ त्रास दै निदेश नखतेश अमरेशहूको मार्यो दुष्टि मुष्टि मध्यखम्भके प्रदेश है॥ ३॥ मुष्टके हनत हेम कश्यपके खम्भमध्य निकसी अवाज गजराज कोटि गाजकी॥ डोल उठे गिरिराज असुरसमाज भाज सुध तजि लाजकी॥ मुरगो मिजाज त्योंहीं दुरिगो दराज वोज बाज भई वीरताहु दैत्य शिरताजकी॥ उछल्यो उदधिराज नि-छल्यो ग्रहनराज ध्यानकी धमारि भूरि भूली भूतराजकी॥ ४॥ राखत सुपंथनको भाषत कुपंथनपै रघुराज भाषत अनंद जग छायो है॥ दरत सुरेश दुख हरत कलेश सुख पूरण करत सब संत चित्त चायोहै॥

दीननपै दायाको देखावत दुनीमें तेज छावत दिशाननमें आननको भायो है ॥ दास प्रलहादको विश्वासको बढावत तुरंग फारि खंभको नृसिंह कढि आयो है ॥ ५ ॥ पक्ष सितवार शनि आध सांझ चौद-शिको दुष्टदल दीह वारि बुल्लासों बिलाइगो ॥ धाई धाक धूलो जय सोर नाक भूलो मचो सुर उर आनंद उदधि उमगाइगो ॥ रघुराज ब्रह्मा बैन सत्यहेतु अंधकारि फारिकै उदर हरि शोणित अन्हाइगो ॥ दुतही दलानमें दिगीशनके देखत दराज दैत्यराज वीर दीपसों बुताइगो ॥ ६ ॥

दोहा–दासकाज यदुराजप्रभु, धारि रूप मृगराज ॥
मारचो असुरदराजको, सारचो सब सुरकाज ॥ १५ ॥

बैठचो सिंहासन मधिजाई ❀ ज्वालामाल दिशानन छाई ॥
सकत न कोउ नरहरि कहँ देखी ❀ भयो भयावन रूप विशेषी ॥
लै सुर भागे सकल विमाना ❀ सहिन सके प्रभुतेज महाना ॥
कह्यो विरंचि रमाकहँ आई ❀ निज पतितेज शांति करु जाई ॥
रमा कह्यो अस प्रभुकर रूपा ❀ देख्यो सुन्यो न कबहुँ अनूपा ॥
नहिं जैहैं यहि काल समीपा ❀ निरखि भयावन रूपप्रतीपा ॥
विधि तब कह प्रलहाद बुझाई ❀ करहु शांति प्रभुको तुम जाई ॥
नातो जरन चहत सब लोका ❀ उपज्यो अति सबके उर शोका ॥
तब प्रलहाद मंद मुसकाई ❀ सहज अभीत समीप सिधाई ॥
लाग्यो अस्तुति करन नाथकी ❀ सन्मुख अंजलि जोरि हाथकी ॥
नरहरि लियो अंक बैठाई ❀ शीश सूंघि दृग वारि बडाई ॥
निज रसनासों चाटत जाहीं ❀ चूमत मुख करुणामिति नाहीं ॥

दोहा–पुनि तेहि दानव अधिपकरि, सौंपि सुरन सुरथान ॥
दास विश्वास दिखाइ अस, भे हरि अंतर्ध्यान ॥ १६ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ यमराजकी कथा।

दोहा-अब वर्णौं यमराजकी, कथा मनोहर जोइ ॥
जाहि सुनत जन पातकी, तजहिं कुमतिसबकोइ॥१॥
मनु सनकादिक देवऋषि, मैथिल कपिल स्वयंभु ॥
बलिभीषम प्रह्लाद शुक, धर्मराज अरु शंभु ॥ २ ॥

महाभागवत द्वादश माहीं * लिख्यो वेद यमराजहु काहीं ॥
ताते यमकी कथा बखानो * अहै अनेक प्रसिद्ध पुरानो ॥
नेसुक कहौं तासु मैं गाथा * धरि हरिभक्त पद्मपद माथा ॥
द्राविड देश सुयज्ञ नरेशा * बाढे तासु शत्रु बहु देशा ॥
कियो युद्ध भूपति कहँ गेरी * मारु मची दुहुँ ओर घनेरी ॥
राजा वीर धीर अति रहेऊ * समर बीचसों मीचुहि लहेऊ ॥
तासु तनय तिय अरु परिवारा * भूप मरन सुनि करत पुकारा ॥
रोवत समरभूमिमें आये * नृपशरीर लखि अतिदुख पाये ॥
मच्यो जहां तहँ आरत सोरा * काहुके तनु सँभार नहिं थोरा ॥
देखि दशा तिनकी यमराजा * भक्तिमान भे दया दराजा ॥
सहि न सक्यो दुख तिनकर देखी * द्रुतादिल भ्यो अपन असलेखी ॥
भय मानिहैं प्रगट जो खाऊं * ताते वपु छिपाइ समुझाऊं ॥

दोहा-अस विचार यमराजतहँ, धारि बालककी रूप ॥
आये संगरमेदिनी, पर्‌यो मृतक जहँ भूप ॥ ३ ॥

कह्यो कौन हित करहु विलापा * मोरे जान वृथा संतापा ॥
जियहि जो रोवहु मरेहु सो नाहीं * जो तनुहित तौ पर्‌यो इहाहीं ॥
जो रोवहु मनमानि वियोगू * तौ बहुबार वियोग संयोगू ॥
जेहि हरि राखत सो बनमाहीं * हरणहार ताको कोउ नाहीं ॥
जापे रूठत रमानिवासू * कुलिश कोठरिहु तासु विनासू ॥
ताते वृथा करहु दुखभारी * मोहलेहु दुखहेतु विचारी ॥
तजे मोह सुख दुख नहिं व्यापत * कौनिहुँ ताप न तनुमहँ तापत ॥

मोहिं घरके निकासि सम दीन्यो ❀ तबते मैं सुख दुख नाहिं मान्यो ॥
बाघ वृका मोहिं सके न खाई ❀ फिरौ अभयवन नगर सदाई ॥
यहिप्रकार बहुविधि समुझाई ❀ सबको दियो कलेश मिटाई ॥
नगरनारि नर निज घर आये ❀ मोह त्यागि हरिपद चितलाये ॥
ऐसी हरिभक्तनकी रीती ❀ परदुख मेटहिं करि अतिप्रीती ॥
दोहा–परदुखमें अतिशय दुखी, परसुखमें सुखवान ॥
निज दुख सुख कछु गणत नहिं, जे हरिभक्तप्रधान॥४॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ कृष्णकेजयविजयपार्षदोंकी कथा।

दोहा–षोड़श पार्षद कृष्णके, जय अरु विजय प्रधान।
तिनकी मैं कछु कहतहौं, कथा संत सुखदान॥१॥
एक समय सनकादिक चारी ❀ गे विकुंठ जहँ बसत मुरारी ॥
समय शयन जय विजय विचारी ❀ रोक्यो मुनिन छरी करधारी ॥
हरिप्रेरणवश मुनिकर कोपा ❀ दीन्हीं शाप मोदकरि लोपा ॥
जोरि पाणि दोउ किये प्रणामा ❀ शिवधर शाप लई मतिधामा ॥
तनक भयो तनुमें नहिं रोषा ❀ दीन्हो तनक न तपस्विन दोषा ॥
असुर निशाचर नृपत्रय जनमा ❀ पावत भये परमदुख तनमा ॥
शाप देनमें यदपि समर्था ❀ तदपि भयो मानहु असमर्था ॥
यही रीति हरिदासन केरी ❀ तकै न साधु वंक दृगहेरी ॥
कोपेहु साधुक्षमै सब काला ❀ दोषहु देहि न दीनदयाला ॥
क्रोध कढ़े नहिं कौनहु रोमा ❀ तौ पुनि कहँ ज्वाला करजोमा ॥
यदपि कह्यो सनकादि बहोरी ❀ मेटहु शाप मोरि यहि खोरी ॥
जे जय विजय न कछु उर लाये ❀ धर्यो शीश जो प्रथमहिं गाये ॥
दोहा–कृष्ण पार्षदकी कथा, और अनन्त पुराण ॥
अति विस्तर भय ग्रन्थते, मैं नहिं कियो बखान २
इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखण्ड दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथ श्रीलक्ष्मीजीकी कथा।

दोहा-अब वर्णौं कमला कथा, प्रथित पुरातन माहिं॥
जो मानत निज पुत्र सम, सब हरिदासन काहिं १

एक समय हरि निकट सोहाई * बैठी रही रमा सुखदाई॥
कलि आगम देख्यो जगमाहीं * किमि उधार ह्वै है जन काहीं॥
अस गुणि उर उपजी अतिदाया * कह्यो कन्त हे कृपा निकाया॥
जगमें जेहि विधि जीव उधारा * कहहु नाथ मोहिय दुख भारा॥
हरिकह कोउ कोउकलियुग माहीं * मोहिं भजिहै ऐहै मोहिं पाहीं॥
ह्वै हैं नास्तिक अधम अपारा * तिनको नाहिं छूटी संसारा॥
करहु यतन जो तव मन भावै * जामें जीव निकट मम आवै॥
पति शासन सुनि अति मुदमानी * विष्वक्सेन निकट निज आनी॥
दियो ताहि शरणागत मन्त्रा * कहेहु उधारहु जनन स्वतन्त्रा॥
सो शठ कोपहिं किय उपदेशा * श्रीसंपदा चली शुभ वेशा॥
तबते श्रीवैष्णव कहवाये * जिनहिं जाहिं यम दूत पराये॥
तरे तुरत तरिहैं बहु जीवा * श्रीसंपदा पाय सुख सीवा॥

दोहा-कोकृपालु कमला सरिस, जनन उधारन हेत॥
प्रगटि आपनी सम्पदा, कियो मुक्तिकर नेत॥ २॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखण्डे एकादशोऽध्यायः॥ ११॥

अथ गरुडजीकी कथा।

दोहा-हरिवाहन विहँगाधिपति, तासुकथा अठयेकु॥
मैं वर्णहुँ अति माधुरी, प्रथित पुराण अनेकु॥ १॥

एक समय हरि दीनदयाला * लखि नाशत जीवनकहँ काला॥
भई दया कहँ गरुडहि आनी * करहु यतन जीवहिं चिर प्रानी॥
जीहैं सुधा पाइ चिरकाला * अस विचारि खगनाथ उताला॥
सुधाहरण हित गयो पताला * अहि सहाय हित गो सुरपाला॥

पन्नग गँधरव सुरहु मुरारी ❀ किय सब मिल खगपतिसों रारी॥
खगपति येक सकल कहँ जीतो ❀ ल्यायो प्रथित पियूष अभीतो॥
पन्नगारि कह अजय विचारी ❀ सुरहु असुर सबनिकट सिधारी॥
जीवन जियन हेतु चिरकाला ❀ सुधा हर्‌यो बल बुद्धि विशाला॥
देहु हमहिं खैहैं सब बांटी ❀ यह चिरकाल जियन परिपाटी॥
दया लागि खगपतिसों दीन्हों ❀ करि प्रणाम सुर असुरहु लीन्हों॥
देव असुर बांटन जब भाषे ❀ होत प्रहोति असुर दोउ माषे॥
सुधाकलश लै क्षीराधि बोरयो ❀ करि रण देवनको मुख मोरयो॥

दोहा-जीति सुरासुर हरि सुधा, परहित दियो खगेश॥
हरिदासनकी रीति यह, जीवन द्रवहिं हमेश॥ २॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे द्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

अथ ध्रुवकी कथा।

दोहा-श्रीध्रुव धरा अधीशकी, वर्णौं कथा विधान॥
रीझि गये षटमासमें, जापर श्रीभगवान॥ १॥

भयो चक्रवर्ती महराजा ❀ नाम उतानपाद सुख साजा॥
अहे प्रियव्रतको लघु भाई ❀ राज्य कियो पथ धर्म चलाई॥
भूपतिके सुंदर द्वै रानी ❀ सुरुचि सुनीति नाम छबिखानी॥
सुरुचि तनय उत्तम अस नामा ❀ सुत सुनीतिको ध्रुव मतिधामा॥
सुरुची सोहागिनि रही नरेसै ❀ नाहिं सुनीतिपर प्रीति विशेसै॥
एक समय नृप विशद अगारा ❀ सचिव समेत बैठ दरबारा॥
सुरुचि सुवन उत्तम तहँ आयो ❀ नृप सह मोद गोद बैठायो॥
इत सुनीति निज सुवन बोलाई ❀ करि मज्जन भूषण पहिराई॥
पहिरायो पुनि वसन रँगीला ❀ दीन्हो भाल डिठौना नीला॥
छोटि ढाल छोटि तरवारी ❀ छोट धनुष अरु छोटि कटारी॥
सुतहि साजि यहि भांति पठायो ❀ ध्रुव दरबार पिताके आयो॥
किय प्रणाम चलि चटक तहाहीं ❀ पिता अंक लखि उद्यम काहीं॥

दोहा-बैठन हित पुनि चलत भो, आयहु पितुके अंग ॥
पंचवर्षको बाल ध्रुव, नोखो निपट निशंक ॥ २ ॥

कह्यो सुरुचिकरिअरुणविलोचन ❀ बैठहु मति पितुअंक सकोचन ॥
जन्म लियो नहिं उदर हमारे ❀ जनक गोद नहिं बैठन हारे ॥
मेरे उदर जन्म जो लेइत ❀ तो हम बैठनको कहि देइत ॥
तपकरि मोर पुत्र तुम होहू ❀ जनक अंक कहँ तब अवरोहू ॥
सुरुचि वचन ध्रुव हृदय विशाला ❀ भये कुलिशसम दुतहिदुशाला ॥
फिरयो तुरत जननी ढिग आयो ❀ रोवन लग्यो महा दुख छायो ॥
जननी कह्यो वत्स कस रोवहु ❀ अपनो दुख मोसों नहिं गोवहु ॥
कहे बाल संगको खिलवारी ❀ सुरुचिजोन विधिवचन उचारी ॥
अतिकलेश भरि कह्यो सुनीती ❀ पुत्र करहु रघुपतिपद प्रीती ॥
जो न अभागिनिके सुत होते ❀ तो काहे दुख पोतेहु ओते ॥
विनहरि कोउ नहिं संकट नासी ❀ भजहु जाइ सुत अवधविलासी ॥
जननि वचन सुनिध्रुव ततकाला ❀ निकसि चल्यो सुमिरतनँदलाला ॥

दोहा-जब आयो पुरबाहिरे, दशा देवऋषि देखि ॥
आय कह्यो ध्रुवसों वचन, अति अचरज चितलेखि ३

रे बालक घर तजि कहँ जाता ❀ कहहु सत्य जीकी सब बाता ॥
ध्रुव सिगरो वृत्तांत सुनाई ❀ बहुरि कह्यो भजिहों यदुराई ॥
नारद कह्यो विहँसि रे बालक ❀ विपिन जीव बहु मानुषपालक ॥
कृष्णभक्त नहिं सहजहिं होई ❀ कोटिनमहँ निवृत्ति कोइ कोई ॥
सहजहिं मिलहिं नयदुकुलपालक ❀ बीतत भजत जन्म बहुबालक ॥
वृथा वसै नृप सुवन गमावै ❀ यह प्रण छोडि लौटि घर जावै ॥
सुनि मुनि वचन कह्यो नृपनंदन ❀ मुनिवर कृपासिन्धु यदुनंदन ॥
की रघुपति पद दुर्लभ दैहैं ❀ की अब प्राण अवशि मम लैहैं ॥
बात तीसरी अब न मुनीशा ❀ आज्ञा देहु धरो पद शीशा ॥
बालक वचन सुनत मुनि राई ❀ गद्गद कण्ठ दृग वारि बहाई ॥
ह्वै प्रसन्न निज अंक उठाई ❀ ऋषि वचन अस गिरा सुनाई ॥
धन्य धन्य बालक मति धीरा ❀ तोहिं मिलिहैं विशेषि यदुवीरा ॥

दोहा-पंचवर्षकी बैस तुव, कीन्हो अगम पयान ॥
अतिशय अटपट होतहै, क्षत्री कोप कृशान ॥ ४॥

अस कहि ध्यान विधान बतायो * द्वादश अक्षर मंत्र सुनायो ॥
ठोंकि पीठि पुचकारि बहोरी * कीन्हो विदा सिद्धि कहि तोरी ॥
मुनिवर पदमहँ धरि ध्रुव शीशा * पाश्रम चल्यो सुमरि जगदीशा ॥
जौन विधान मुनीश बतायो * सोई करन लग्यो चितचायो ॥
करै यमुन सादर अस्नाना * पूजै हरिकहँ सहित विधाना ॥
तीनि तीनि दिन माहँ कुमारा * कैथा बदरी करै अहारा ॥
प्रथम मास यहि भाँति बितायो * द्वितियमासपुनि हरिचितलायो ॥
षटषट दिनमें पत्र पुराने * किय अहार महि झरे झुराने ॥
तृतिय मास नव नव दिन माहीं * किय केवल अहार जल काहीं ॥
द्वादश द्वादश दिवस बिताई * मारुत भख्यो भजत यदुराई ॥
यहि विधि चौथो मास बितायो * मास पांचवों जब पुनि आयो ॥
तब दश द्वार इंद्रियन रोकी * हृदय मुकुंद रूप अवलोकी ॥

दोहा-खड़ो भयो इक चरणसों, अचल रोंकि निज श्वास
हृदयकमलमहँ थापिकै, मूरति रमानिवास ॥ ५ ॥

कृष्णदास जब श्वासहि रोका * रुकी श्वास तबही त्रैलोका ॥
पुहुमीभार पाय ध्रुव पाऊ * दबी येक दिशि जिमि गजनाऊ ॥
सुर नर नाग उठे अकुलाई * काहुहि भेद न पर्यो जनाई ॥
कृष्णशरण गे त्रिभुवनवासी * कहे पुकारि त्राहि अविनाशी ॥
त्रिभुवन भयो श्वास अवरोधा * नाशत त्रिभुवनको अस योधा ॥
देववचन सुनि कृपानिधाना * कह्यो भेद हमरो सब जाना ॥
भूपति तनय नाम ध्रुव जासू * भजन करत मेरो मम दासू ॥
तेहि तपतेज रुद्ध जग श्वासा * किये कुमार मिलन मम आसा ॥
हौं तो जाय दरश अब देहौं * तासु सकल मन सोक नशैहौं ॥
अस कहि महामुदित मनस्वामी * सहित पारषदगण खगगामी ॥
आयो दिशा प्रकाश बढ़ावत * रह्यो भूप बालक जहँ ध्यावत ॥
अचल खड़ो हिय हरिवपु देखै * हरि बिन और कछू नहिं लेखै ॥

दोहा-खड़े भये सन्मुख हरी, लख्यो तिन्हैं सुकुमार ॥
तब अतिअचरज मानि उर, लागे करन विचार ॥६॥

धन्य धन्य नृपबालक येहा ❀ किये निरंतर मम पद नेहा ॥
मम मूरति अपने मन राखी ❀ देखत सोइ खोलत नाहिं आंखी ॥
अस विचारि ध्रुव उर निजरूपा ❀ अंतर्हित हरि कियो अनूपा ॥
चौंकि उठ्यो चट चखन उघारयो ❀ सोइ वपु सन्मुख खरो निहारयो ॥
बहन लगी दृगते जलधारा ❀ महामोद महँ मगन कुमारा ॥
अनमिष चितवत कृष्ण स्वरूपा ❀ मानत भयो भुवनकर भूपा ॥
मुखते सकत न गिरा उचारी ❀ छक्यो सुछबि मूरति मनहारी ॥
उतरि गरुड़ते यदुपति धायो ❀ ध्रुव उठाइ निज हिये लगायो ॥
शीश सूंघ मुख चूमि मुरारी ❀ बोल्यो वचन बहावत वारी ॥
भूपतनय मम प्राण पियारो ❀ तैं अनन्य है दास हमारो ॥
माँगुमाँगु मनको वरदाना ❀ तोर मनोरथ पूर निदाना ॥
सुख वश ध्रुवहिं सकल सुध बिसरी ❀ कछुक बात मुखते नाहिं निसरी ॥

दोहा-स्तुति चाहत करत कछु, पंचवर्षको बाल ॥
पै न बनत रचना करत, यह जानी गोपाल ॥७॥

पांचजन्य प्रभु शङ्ख अमोला ❀ दीन्हो परस कराइ कपोला ॥
शङ्खहिं परसत वेद पुराने ❀ सकल शास्त्र ध्रुव हृदय समाने ॥
लाग्यो स्तुति करन कुमारा ❀ कहँलग करिय तासु विस्तारा ॥
करि स्तुति किय दण्ड प्रणामा ❀ पुनि करजोरि कह्यो मतिधामा ॥
अपनो मैं सरवस प्रभु पायो ❀ यह मूरति छबिहौं दृग छायो ॥
और न आश कछू मनमाहीं ❀ यह मूरति हिय बसै सदाहीं ॥
तुमहिं पाय यांचत संसारा ❀ यो प्राणी मतिमंद गँवारा ॥
विहँसि कह्यो तब कृपानिधाना ❀ लेहु भूप तुम अस वरदाना ॥
छत्तिस सहस वर्ष महि काहीं ❀ शासन करहु मुदित जगमाहीं ॥
पुनि मैं निज पार्षदन पठैहौं ❀ यान चढ़ाय विकुंठ बुलैहौं ॥
धर्मधुरंधर धरणि अधीशा ❀ नैहै तोहिं सुरासुर शीशा ॥
मेरो रूप चक्र शिशु मारा ❀ जामें सकल बँध्यो संसारा ॥

दोहा—सो तेरे करपर रही, हैहै तासु अधार ।
सबके ऊंचे धाम जो, तापर वास तुम्हार ॥ ८ ॥

अस कहि औरहु दै बरदाना ❋ प्रभु विकुंठको कियो पयाना ॥
ध्रुवहु भवन निज चल्यो सुखारी ❋ सुमिरत रमारमण गिरिधारी ॥
जब प्रयाग कहँ ध्रुव नियरान्यो ❋ पै न उतानपाद नृप जान्यो ॥
दूत दौरि यक रह्यो भुवाले ❋ निकरि गयो आवत सो बोले ॥
सुनि नृप ताहि दियो मणिमाला ❋ चल्यो लेन आगू तेहि काला ॥
सुरुचि सुनीति चली दोउ रानी ❋ चल्यो उत्तमहुं अतिसुखमानी ॥
निरखि ध्रुवहिं भूपति द्रुत धायो ❋ ललकि लपटि निज हृदय लगायो
भयो मोद मन मिटी गलानी ❋ लही फणिक मणि मनहुँ हिरानी॥
प्रथम सुरुचि कहँ ध्रुव शिरनायो ❋ सकुचि सो सादर हिये लगायो ॥
पुनि उत्तमहिं कियो परणामा ❋ मिल्यो सोउ भरि भुजनि ललामा॥
वंद्यो बहुरि जननिपद काहीं ❋ ताकर मोद जात कहि नाहीं ॥
हरिदाहिन दाहिन सब ताके ❋ हरिविमुखी विमुखी वसुधाके ॥

दोहा—यहिविधि मिलि ध्रुव पितुसहित, आयो अमल अवास
पुरजन परिजन ध्रुव निरखि, माने पूरी आस ॥ ९ ॥

ध्रुव गृह बसत बित्यो कछु काला ❋ तब उत्तानपाद महिपाला ॥
शील स्वभाव बुद्धि बलवेषा ❋ अनुपम ध्रुव कुमारके देखा ॥
परिजन पौर सचिव सरदारा ❋ येक समय बोल्यो दरबारा ॥
भूपति कह्यो चौथपन आयो ❋ कानन गवन मोर चितचायो ॥
उत्तम ध्रुव कुमार मम दोई ❋ संमति करै जाहि सब कोई ॥
ताकर राज तिलक करि देऊ ❋ सुनहु मोर मनको अस भेऊ ॥
बुधि वीरता विवेक बडाई ❋ सकल भांति ध्रुवकी अधिकाई ॥
ध्रुव सब भांति राज्यके योगू ❋ यहि विधि जानहु मोर नियोगू ॥
भूप वचन संमत सब कीन्हे ❋ राज तिलक ध्रुवको करि दीन्हे ॥
भूप गये कानन तपहेतू ❋ ध्रुव किय राजसमाज समेतू ॥
जापर दाहिन राम कृपाला ❋ दाहिन ताहि जगत् सब काला ॥
उत्तम चढि इक समय तुरंगा ❋ मृगया हित गो शैल उतंगा ॥

दोहा–मिल्यो यक्ष इक विपिनमहँ, ताते भो संवाद ॥
सो उत्तम कहँ बधकियो, जिमि लघु अहि उरगाद १०

लौटि भवन उत्तम नहिं आयो ❋ जननी तासु महादुख पायो ॥
हेरन गई विपिनसुत काहीं ❋ जरी दवानल माहिं तहांहीं ॥
ध्रुवसो कह्यो देवऋषि आई ❋ यक्ष हाथ हतिगो तुव भाई ॥
सुनत कियो ध्रुव कोप कराला ❋ चढ्यो तुरत रथ रुचिर विशाला ॥
चल्यो अकेल यक्षपुर जीते ❋ रामकृपा ध्रुव परम अभीते ॥
अलकापुरी निकट जब आयो ❋ समरउछाही शंख बजायो ॥
कोटि यक्ष सो सुनि २ धाये ❋ ध्रुवपै अमित अस्त्र झरिलाये ॥
यक्ष सहाय रुद्रगण जेते ❋ लगे करन ध्रुवसों रण तेते ॥
कियो तहां संगर अतिघोरा ❋ अगणितयक्ष येक नृपछोरा ॥
धर्मधुरंधर धरणि अधीशा ❋ ध्रुव करि दियो सबन विनशीशा॥
हाहाकार करत सब भागे ❋ माया करन फेरि बहु लागे ॥
शस्त्र मारि मूंद्यो ध्रुवकाहीं ❋ हरि बल ध्रुव शंका किय नाहीं ॥

दोहा–तब नारायण अस्त्रको, ध्रुव कीन्हो संधान ॥
जारि यक्षकोटिन तबै, भरयो प्रकाशदिशान ॥ ११ ॥

रण तजि भगे जरत जे बांचे ❋ पुनि न समर कहँ ते मन रांचे ॥
यक्षनाश नहिं मनु महराजा ❋ ध्रुवहिं आय कह सहित समाजा ॥
अब नहिं यक्षनको वध कीजे ❋ नाती भवन गवन मन दीजे ॥
पुनि धनेशकह ध्रुवसो आई ❋ तुमपै हम प्रसन्न नृपराई ॥
यक्षन हन्यो तोर बडभ्राता ❋ नहिं यक्षनतैं कियो निपाता ॥
जीवन मरण कालवश जानो ❋ आन हेतु याको नहिं मानो ॥
मांगहु मनवांछित वरदाना ❋ तुमपर है प्रसन्न भगवाना ॥
विहँसि कह्यो ध्रुव सुनहु नरेशा ❋ हम नहिं मांगत छोडि रमेशा ॥
मांगहु तुम जो होइ अभिलाषा ❋ हम पूरण करिहैं मुखभाषा ॥
जो वर देहु मोहिं बरियाई ❋ हरिपद मम उर वसै सदाई ॥
एवमस्तु कहि गयो धनेशा ❋ ध्रुव आयो वश पाय निवेशा ॥
छत्तिस सहस वर्ष किय राजू ❋ भाइन भृत्यन सहित समाजू ॥

दोहा-इहि प्रकार हरिभजनमें, तत्पर ध्रुव बडभाग ॥
सेवक साधु बिते दिवस, नित नव २ अनुराग ॥ १२ ॥

जानि वृद्ध पन सुत दै राजू * गवन्यो विपिन भजत यदुराजू ॥
तब पार्षद द्वै नंद सुनंदा * ध्रुवहिं लेन पठयो गोविंदा ॥
ले भासित विमान दोउ आये * ध्रुवहिं नाइ शिर वचन सुनाये ॥
चलो भूप तोहिं नाथ बुलायो * सुनिध्रुवतिनहिंसुखिताशिरनायो ॥
चढो विमान बजाइ निसाना * हरषित कियो विकुंठ पयाना ॥
मारगमें कह दासन पाहीं * मम माता रहिगे महिमाहीं ॥
विन मोहिंको ताको लै जैहै * विन हरिको संसार छुटै है ॥
विहँसि कह्यो हरिदास नरेशै * मति कीजै ऐसो अंदेशै ॥
जाके तुम सम भयो कुमारा * ताको कौन उधार विचारा ॥
देखहु आगे आंखि उठाई * चढी विमान जाति तुव माई ॥
आगे जाति निरखि निज माता * ध्रुव वंद्यो हरिपद जलजाता ॥
जहँ जहँ ध्रुव गमनत सुरधामा * तहँ तहँके सुर करत प्रणामा ॥

दोहा-यहि विधि गयो विकुंठ जब, हरि आगे चलिलीन ॥
अचलधाम वैकुंठको, उत्तर द्वारो दीन ॥ १३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

अथ चित्रकेतुकी कथा।

दोहा-चित्रकेतुकी अब कहौं, कथा परम रमनीय ॥
नारद जेहि उपदेश करि, कियो संत गणनीय ॥ १ ॥

शूरसेन इकदेश अनूपा * उपज्यो चित्रकेतु तहँ भूपा ॥
ताके रहीं लाख शत रानी * विभवतासुकिमि जाइ बखानी ॥
काहूके नहिं रह्यो कुमारा * यहि हित भूपति दुखी अपारा ॥
बैठ्यो नृप इक समय सभामें * आये द्वै ऋषीश तहिं जामें ॥
भूप प्रणति करि किय सतकारा * मुनिन देखि नृपको दुखभारा ॥
पूछ्यो कौन शोक नृप तेरे * कहहु जो जानन लायक मेरे ॥

सकुचि भूप कछु कही न बानी ❀ सचिवसकलकरि विनयबखानी ॥
राज कोश दल गृह परिवारा ❀ अहै फीक सब बिना कुमारा ॥
दया कियो सुनि मुनि अवदाता ❀ कह कोई सुत सुख दुख दाता ॥
अस कहि अंगिर नारद दोऊ ❀ अंतर्हित भे लख्यो न कोऊ ॥
कृतिदुति नाम रही यक रानी ❀ ताके पुत्र भयो सुखदानी ॥
जबते कृतिदुतिके सुत भयऊ ❀ तबते अति सोहाग बढि गयेऊ ॥

दोहा–सवति सोहागन सह मकी, दै विष डारयो मारि ॥
सुतहि मृतक लखि दुख भयो, सो किमि जाय उचारि २ ॥

लाग्यो भूपति करन विलापा ❀ परिजन पुरजन अतिसंतापा ॥
रोदन सोर भुवन मधि छायो ❀ पुनि नारद अंगिरयुत आयो ॥
लग्यो बुझावन भूपहि ज्ञानी ❀ पै सुतशोकन मिटी गलानी ॥
तब नारद तपबल सुत जीवा ❀ आन्यो तुरत ज्ञानकी सीवा ॥
प्रविशि पुत्र तनमें हँसि भाष्यो ❀ ममता कौन मोहिमहँ राख्यो ॥
कबहुँ पुत्र तुम भये हमारे ❀ कबहुँ पुत्र हम भये तिहारे ॥
रीति परस्पर यह चलिआई ❀ यह माया जानहु रे भाई ॥
नहिं कोउ सुत नहिं पितु कोउ केरो ❀ वृथा सोच वश करहु घनेरो ॥
जीववचन सुनि भूप जुडान्यो ❀ नारदसों अस वचन बखान्यो ॥
गयो सोच मैं लह्यो विवेका ❀ दीजै मंत्र मनोरथ एका ॥
हरषि देवऋषि मंत्र सुनायो ❀ ज्ञान विराग भक्तिविधि गायो ॥
जप्यो मंत्र भूपति दिन साता ❀ तासु प्रभाव तेज अवदाता ॥

दोहा–है प्रसन्न तेहि शेष प्रभु, दीन्हो कामग यान ॥
तेहि चढि तीनों लोकमें, फिरे भूप हरषान ॥ ३ ॥

भयो अधिप विद्याधर केरो ❀ मंत्रप्रभाव प्रकाश घनेरो ॥
यदि तनु गयो शेषके लोका ❀ प्रभुहि निरखि मेट्यो जगशोका ॥
ह्वै पार्षद सो विचरन लाग्यो ❀ विनयशील दाया रस पाग्यो ॥
विचरत विचरत सो इक काला ❀ गयो जहां गौरी शशिभाला ॥
शंभु दिगंबर मुनिन समाजा ❀ गौरी अंक लिये छबि छाजा ॥

सनकादिकन करत उपदेशा ❀ चित्रकेतु अस लख्यो महेशा ॥
विसमित ह्वै बोल्यो अस बानी ❀ महादेव कीरति जग जानी ॥
बैठि दिगंबर लै तियअंका ❀ लज्जा रहित होति यह शंका ॥
मर्यादा पालक त्रिपुरारी ❀ मुनि समाजमहँ लाज बिसारी ॥
चित्रकेतुके सुनि अस बैना ❀ हर्ष विषाद न कियो त्रिनैना ॥
मुनिहु मौन सब रहे तहाहीं ❀ पै सहि सकी शिवा सो नाहीं ॥
जग उपदेशक शिव श्रुति गायो ❀ तेहि उपदेशक शठ यह आयो ॥

दोहा–याहिबिधि कहि तेहि नृपतिको, गौरी दीन्हो शाप ॥
दैत्य देह दुर्मति लहै, यही तोर फलपाप ॥ ४ ॥

शिवाशाप सुनि सो नृपज्ञानी ❀ कियो प्रणाम जोरि युगपानी ॥
लियो शीश धरि शाप कराला ❀ भयो न कछु दुख सुख तेहि काला ॥
हरिदासनकी है असि रीती ❀ करहिं न सुख दुख हरि परतीती ॥
सोई दैत्य वृत्रसुर भयऊ ❀ जीति शक्रयुत देवन लयऊ ॥
भजन प्रताप सुरति नहि भूली ❀ कह्यो समर महँ बात अतूली ॥
हनहु शक्र हमको यहि काला ❀ अब मोहिं लगत जगत जंजाला ॥
नहिं कल बिना शेषपद देखे ❀ बिन प्रभु जगत सून मम लेखे ॥
अस कहि दीन्हो शीश नवाई ❀ सुमिरत शेष चरण मनलाई ॥
लेकर कुलिश कुलिशधर आसू ❀ काटन लग्यो शीश तहँ तासू ॥
काटत बीत गयो यक साला ❀ तब ताको शिर कट्यो बिसाला ॥
फेरि शेष पार्षद ह्वै गयऊ ❀ अक्षय निवास रमापुर भयऊ ॥
सो भागवत माहँ विस्तारा ❀ मैं कीन्हों संक्षेप उचारा ॥

दोहा–भूलत भजन प्रताप नहिं, लहहु कर्मवश योनि ॥
अपनो जन हरि जानिकै, मेटत सब अनहोनि ॥ ५ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंड चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ निमिराजाकी कथा।

दोहा–अब सुनिये निमिराजकी, कथा विख्यात पुरान ॥
जासु वंशमें सब भये, नृप भागवत महान ॥ १ ॥

यज्ञ करन लाग्यो निमि राजा * बोलि वसिष्ठ लियो सुरराजा ॥
पुनि मुनि शक्रहिं यज्ञ कराई * आयो बहुरि जहां निमिराई ॥
लख्यो गौतमहिं यज्ञ करावत * कियो कोप अस वचन सुनावत ॥
द्वितियपुरोहित किय मोहिं त्यागी * नाश लहै यहि हेतु अभागी ॥
नृपहु शाप तैसहिं तेहि दीन्हो * गुरु गुणि मन गलानि अतिकीन्हो ॥
नृपहु मुनिहुँ कर भो तनुपाता * यह गुणि कीन्हो सोच विधाता ॥
दियो वशिष्ठहिं तनु घटतेर * आय निमिहुँ कह तनुहित टेरे ॥
निमि कहकरि बहु यतन मुनीशा * जो न त्यागि पावत जगदीशा ॥
सो मोहिं सहज मिल्यो जगमाहीं * अब तनु लहन आश मोहिं नाहीं ॥
तब प्रसन्न ह्वै विधि अस भाष्यो * तोर बास पलकन महँ राख्यो ॥
तबते येक अंश पलमाहीं * निवसत निमिनृपनाथ सदाहीं ॥
येक अंशते राम समीपा * सेवत सरसिज चरण महीपा ॥

दोहा—अजर अमर तेहि काय भै, पायो पार्षद रूप ॥
अचल बस्यो वैकुंठमहँ, रामप्रताप अनूप ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

अथ नवयोगेश्वरकी कथा।

दोहा—अब नौयोगेश्वरनकी, कहौं कथा चितलाय ॥
जिनके वचनविचारिकै, तृणसम जगत जनाय ॥ १ ॥

सत कुमार भे ऋषभदेवके * सकल धर्म हरि कर्म सेवके ॥
तिनमें जे सुत रहे इक्यासी * भये विप्र द्विज वंश प्रकाशी ॥
जेठ सबनते भरत उदारा * महाभागवत धर्म अधारा ॥
दश भाइहिंसो निज लीन्हो * नौ भ्राता हरिपद मन दीन्हो ॥
जनमहिंते त्याग्यो संसारा * समुझि ज्ञानबलसार असारा ॥
अजर अमर भे भजन प्रभाऊ * जग उपदेशत शीलस्वभाऊ ॥
येक समय जहँ निमि महराजा * बैठ सभामाधि सहित समाजा ॥
नौ योगेश्वर तहँ चलि आये * करि सतकार भूप शिरनाये ॥

पूछन लगे भूप अनुरागे * उत्तर देन लगे बड भागे ॥
सो भागवत माहिं विस्तारा * वर्णत इत संक्षेप उचारा ॥
बहु विधि करि भूपति उपदेशा * विचरत रहे सिद्ध सब देशा ॥
जो जो संग कियो तिनकेरो * सो नर बहुरि संसारहि हेरो ॥
दोहा-कवि हरि पिपलायनचमस, करभाजनहु प्रबुद्ध ॥
आविर्होत्रहु द्रुमिल अरु, अंतरिक्ष अतिशुद्ध ॥२॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथ अंगराजाकी कथा ।

दोहा-ध्रुवके वंशहिमें भयो, अंग भूप मतिवान ॥
ताकी गाथा मैं कछुक, वर्णों विदित पुरान ॥ १ ॥
भयो चक्रवर्ती महराजा * जासु विभूति सरिस सुरराजा ॥
पुत्रहेतु भूपति मख कीन्हो * दैव मृत्यु अंशहिं सुत दीन्हो ॥
नाम वेणु जन्महिते पापी * ताहि निरखि नृप भो संतापी ॥
राज कोश दल भवन बिहाई * अर्द्धराति निकस्यो नृपराई ॥
कानन जाइ भज्यो यदुराई * माया और डीठि नहिं आई ॥
वनमें करहिं साधुकी सेवा * साधु छोडि मानहिं नहिं देवा ॥
कोउ यक साधु कह्यो नृपपाहीं * कुटी देहु मेरे घर नाहीं ॥
कुटी सहित सर्वस दै राख्यो * पुनि ताकी सेवा अभिलाख्यो ॥
साधुप्रसंग कह्यो अस बानी * मिलहिं तोहिं नृप सारँगपानी ॥
भूपति कह्यो न अस मोहिं आसा * तेहि तजिचहौं न रमानिवासा ॥
आये नृपकहँ लेन विमाना * साधु त्यागिसो किय न पयाना ॥
हरि पार्षद तब संत चढाई * लैगे नृपहिं विकुंठ छिवाई ॥
दोहा-वैकुंठहिंमहँ अंगनृप, साधुचरण रति कीन ॥
विभवभोगि पार्षदसरिस, यदपि कृष्ण बहुदीन ॥ २ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अथ प्रियव्रतराजाकी कथा।

दोहा–भूप प्रियव्रतकी कथा, अब बरणौं चितलाय ॥
मनुको सुत उत्तानपद, जासु भयो लघु भाय ॥ १ ॥
बालक रह्यो प्रियव्रत जबहीं ❋ नारद भवन गवन किय तबहीं ॥
दरशायो अति जगत विभीती ❋ उपजायो हरिपद परतीती ॥
प्रियव्रत चल्यो देवऋषि संगा ❋ रँग्यो रुचिर रघुपति रतिरंगा ॥
मंदर कंदर बैठ्यो जाई ❋ विभव विलास आश बिसराई ॥
विधि मनु दोउ समुझावन आयो ❋ नृपमन अचल न चल्यो चलायो ॥
तब नारदहिं कह्यो मुख चारी ❋ बिन प्रियव्रतको जगत सुधारी ॥
तब नारदहि कह्यो अस बानी ❋ करहु राज्य हरिकारज जानी ॥
गुरुशासन गुणि पुनि घर आयो ❋ किये राज्य रघुपतिपद ध्यायो ॥
ग्यारह अर्बुद वर्ष नरेशा ❋ महिमंडलमहँ कियो निदेशा ॥
प्रेममगन बीत्यो सब काला ❋ कार्य सुधार्यो कृष्णकृपाला ॥
यदपि न माया मोह निराना ❋ तदपि मौन तेहि दुखदादिखाना ॥
तिय सुत राज्य कोश परिवारा ❋ छोड़ि प्रियव्रत गहन सिधारा ॥
दोहा–तहँ भजि यदुपतिकमलपद, यह प्राकृततनुत्यागि
गवन कियो गोलोकको, कृष्णचरण अनुरागि ॥ २ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

अथ शेषमहाराजकी कथा।

दोहा–वैष्णवमत सुरसरिसुखद, तासु हिमाचल शेष ॥
तासु कथा रजकन कहौं, वर्णित वेद अशेष ॥ १ ॥
ईश्वर सृष्टि करन जब राचो ❋ क्षिति जल तेज अनल नभपांचो ॥
भे जीवनकी धरणि अधारा ❋ तासु अधार न परै निहारा ॥
तब मुनि शेषसमीप सिधारो ❋ पाणि जोर अस वचन उचारो ॥
जीवन हेतु शेष भगवाना ❋ धरौ धरणि प्रभु कृपानिधाना ॥

विन धरणीके धरे तिहारे * रहिहैं कहँ जगजीव बिचारे ॥
दयानिधान सुनत मुनि वानी * पैठे प्रभु पताल सुखदानी ॥
चौदह भुवन सहित ब्रह्मंडा * येक शीश सर सबसममंडा ॥
दीनन हित धारे प्रभु धरणी * परहित सकल साधुकी करणी ॥
शेष सरिस को परहितकारी * जो वैष्णवमत रीतिप्रचारी ॥
जौन रीति गहि जगके प्राणी * भेटहि भुजभरि शारँगपाणी ॥
सदा कराहिं सिद्धन उपदेशा * सोइ मुनि उपदेशहिं सब देशा ॥
जो कोइ चहै तरण जगसागर * भजै शेषपद सुमतिउजागर ॥

दोहा-सहसाननकेचरितइमि, अगणितभणितपुरान ॥
यकमुखसोमतिमंदमैं, केहिविधिकरौंबखान ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

दक्षके पुत्र प्रचेतनकी कथा।

दोहा-कहौं प्रचेतनकी कथा, सुतबरहीप्राचीन ॥
जे यह जगमें आइकै, भये न जगमें लीन ॥ १ ॥

वर्धनकरन हेतु संसारा * प्राचेतन सिरज्यो करतारा ॥
कह्यो पिता तप करहु कुमारा * विन तप नाहिं सिरजनअधिकारा ॥
सुनि पितुवचनसिद्धि सर काहीं * चले प्रचेता अति मुदमाहीं ॥
मारगमें नारद मुनि आये * संसृत सार असार दिखाये ॥
सृष्टि करन यह संसृत मूला * विषयादिक याहीके फूला ॥
जेतो श्रम संसृत हित कीजै * कस नाहिं तेतो हरि मन दीजै ॥
सुनि नारदके वचन कुमारा * भजन लगे वसुदेवकुमारा ॥
तब प्रसन्न ह्वै दीनदयाला * चढे गरुड प्रगटे तेहिं काला ॥
करिकै कृपा धाम पठवायो * यह सुधि दक्षप्रजापति पायो ॥
दशसहस्र सुत भे विज्ञानी * केहिविधि सृष्टि फेरि हम ठानी ॥
अस विचार मन सहसकुमारा * विरच्यो बहुरि दक्ष यक वारा ॥
आयसु सृष्टि करन कहँ दीन्हो * तपहित सकल गवन वन कीन्हो ॥

दोहा—आइ देवऋषि पुनि तिन्हैं, समुझायो बहुभांति ॥
तेउ संसृति रति तजि भये, बिरतिनिरत दिन राति ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

अथ शतरूपाकी कथा।

दोहा—महाराज मनुकी भई, महरानी छबिखानि ॥
शतरूपाकी अब कथा, मैं कछु कहौं बखानि॥१॥

वामनछंद—कीन्हो विपिन तप जाय। हित मिलन श्रीरघुराय॥
बीत्यौ नहीं चिरकाल। भे प्रगट दशरथ लाल॥
कह मांगुरीवरदान। तब हृदय सुखन समान॥
कर जोरि बोली बैन। अभिलषित अब हौ मैंन॥
यहिते अधिक अब काह। देहौ हमैं सुरनाह॥
अब मोरि पूजी बास। लहि वदन वनज सुबास॥
मांगहुँ यही वरदान। नित लखौ कृपानिधान॥
तब है प्रसन्न दयाल। कह बचन अस तेहि काल॥
हम होब तुव सुत मातु। सुख देवजग विख्यातु॥
मम बालचरित अपार। तैं लख लहै सुखसार॥
अस भाष श्रीभगवान। भे तुरत अंतर्धान॥
सोइ भई दशरथ रानि। किय प्रगट जानकि जानि॥

दोहा—कौन तासु महिमा कहौं, जासु सुवन श्रीराम॥
बिना काम सब कामप्रद, सहित काम नहिं काम॥२॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

अथ देवहूतिकी कथा।

दोहा—देवहूति मनुकी सुता, दियो कर्दमहिं व्याहि ॥
पतिसेवन तजि जगत सुख, लग्यो नीक नहिं ताहि१॥

पाते सेवत भो कृशतनु ताको * गह्यो धर्म सग पतिव्रताको ॥
कियो विभव मुनि योग प्रभाऊ * पतिसेवन तजि तेहि नउराऊ ॥
पति समीप इक समय सिधारी * पूछ्यो मुक्त होब संसारी ॥
कर्दम जानि तासु अधिकारा * कह्यो कृष्णसुत होइ तुम्हारा ॥
सोइ प्रभु करिहैं सकल बखाना * अस कहि कानन कियो पयाना॥
देवहूति करि कृपा महाई * कपिलदेव प्रगटे यदुराई ॥
योग विराग भक्ति अरु ज्ञाना * कियो बखान कपिल भगवाना ॥
पुनि गंगा सागर गवनतभे * करत जीव उपदेश वसतभे ॥
देवहूति तहँ करि दृढ नेमा * करि सिय पिय पद पूरण प्रेमा ॥
रही कपिल आश्रम कछु काला * लग्यो न तेहि संसृत जंजाला ॥
कछुक काल जब तहां सिराना * आयो विमल विकुंठ विमाना ॥
तेहि चढि देवहूति सुखछाई * गै वैकुंठ निसान बजाई ॥

दोहा-आकूती ताकी भगिनि, दुती प्रसूती और ॥
यहि विधि तिनकी जानिये, भक्ति रीति सब ठौर॥२॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

अथ सुनीतिकी कथा।

दोहा-नृप उतानपदकी रहीं, रानी सुमति सुनीति ॥
ध्रुव समान जाके तनय, कियो कृष्ण पद प्रीति ॥ १ ॥

ध्रुव अपमान सुरुचिते पाई * आइ मातु कहँ दियो सुनाई ॥
मातु कह्यो तब अब सुनु ताता * भजहु जाइ हरिपद जलजाता ॥
श्रीहरि संकट काटन हारे * दुती न रक्षक और तिहारे ॥
छोडि भवन वन गवन कीजिये * कृष्ण चरणरतिरंग भीजिये ॥
पंच वर्षको बालक येकू * कियो न तेहि त्यागत दुखनेकू ॥
जब ध्रुव कृपा पाइ यदुराजू * छत्तिस सहसवर्ष किय राजू ॥
कानन तप करि पाइ विमाना * कियो सुखित वैकुंठ पयाना ॥
जननि सुरति करि तब हरिदासन * पूछ्यो कहा मात हितशासन ॥

तब हरि पार्षद कह्यो बुझाई ❀ सौंप्यो शिशु सुनीति यदुराई ॥
हरि भरोस करि कियो न मोहू ❀ पंच वर्ष बालक तजि छोहू ॥
सोई पुण्य प्रभाव सुजाना ❀ गवनत आगू तासु विमाना ॥
ध्रुवहु लख्यो निज नैन उठाई ❀ गवन करत आगू निज माई ॥
दोहा-यहि विधि गयो विकुंठको, सहित कुमार सुनीति॥
सो यहि विधि भवनिधि तरत, करत जो निहचल प्रीति ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखण्डे त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

अथ प्राचीनबर्हिकी कथा।

कवित्त-भये भक्त प्राचीन बर्हिष नरेश एक विधिके निदेशते पुत्र जन्यो दश हजार ॥ तिन्हैं दीन्यो नारद विराति भये मुक्त सबै फेरि सुत सहस जन्यो तेऊ तज्यो संसार ॥ नृप कोप्यो मुनिपै मुनीश देखरायो यज्ञ पशु चोखे शृंगनके ठाढे नभपै अपार ॥ भीति मानि भूपति निकरि वन तप करि, भजिकै मुकुंद भयो संसृत जलधिपार ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

अथ सत्यव्रतकी कथा।

दोहा-सत्यव्रत संध्या करन, गवन सिंधुतट कीन ॥
अर्घ्य देत अंजलि गिरयो, लघु अद्भुत इक मीन ॥ १ ॥
त्यागन लग्यो भूप जलमाहीं ❀ कह्यो मीन नृप दाया नाहीं ॥
खैहैं मोहिं बली जलचारी ❀ तब नृप लियो कमंडलु डारी ॥
भयो कमंडलु भरि सोइ मीना ❀ तब नृप बृहद कुंभ महँ कीना ॥
भये कुंभ भरि तज्यो तडागा ❀ सरभरि होत वार नहिं लागा ॥
तब नृप तज्यो सिंधुमें ताको ❀ जान्यो कौतुक कंत रमाको ॥
मीन कह्यो नृप दिवस सप्त महँ ❀ बोरि देइगो सिंधु जगत कहँ ॥
नृप सप्तर्षि सहित मतिधीरा ❀ बैठ रहे सागरके तीरा ॥
सतयें दिन रवि द्वादश उये ❀ निजकर अगिनि जारि जग दये॥
सात समुद्र तजी पुनि वेला ❀ कियो सलिल संसारहिं रेला ॥

तबहिं नरेश निकट इक तरणी * आवातिभै अद्भुत हरि करणी ॥
सहित सप्तऋषि चढ्यो नरेशा * लै ओषधि उर सुमिरि रमेशा ॥
प्रगटे तबहिं मीन भगवाना * तनु योजन दश लाख प्रमाना ॥
दोहा-लै हरिवासुकि नागको, नाव शृंग निज बांधि ॥
प्रलयजलधि विचरन लगे, नृपकारज अवराधि ॥ २ ॥
प्रलय जलधि जल जब छट्यो, वस्यो अवनि तबभूप ॥
यहि विधि राख्यो नृपतिको, कमलाकंत अनूप ॥ ३ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखण्डे पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

अथ रहूगणकी कथा।

दोहा-भयो रहूगण राज इक, देश सिंधु सौवीर ॥
योग भक्ति ज्ञानहु विरति, लहन चह्यो मतिधीर १॥
पावन सो उपदेश विचार्यो * कपिलदेवके निकट सिधार्यो ॥
चल्यो चपल चढि विमलपालकी * सुरति करत वसुदेवलालकी ॥
मारगमें थकि गो इकवाहक * तब हेरन पठयो परिचारक ॥
तहँ जडभरत खेत उक ताके * रहे रामरस रंगहिं छाके ॥
देखि पुष्ट पकर्यो तिनकाहीं * ल्याय लगायो शिबिका माहीं ॥
जीव बचाय भरत पग धरहीं * शिबिका हिलत भूप मनु गिरहीं ॥
तब नृप कह करि कोपविशेषी * तजहु विषमगति वाहक तेषी ॥
वाहक कहे न दोष हमारा * विषम चलत यह नयो कहारा ॥
तब भूपति जड भरतहिं भाष्यो * वाहक बहुत वचन कटु भाष्यो ॥
जो चालि है शठसम गति नाहीं * तोहिं ताडन करि हैं क्षण माहीं ॥
तब जडभरत कह्या मुसकाई * ताडक कोउ नाहिं परै लखाई ॥
हम तुम सब हैं काल कलेऊ * मोहिं न जानि परत यह भेऊ ॥
दोहा-महिपर पद पद पर ऊरू, तापर कटि पुनि कंध ॥
तापर शिबिका फेरि तुम, मोहिं न भार सम्बन्ध ॥२॥

सुनत वचन जडभरतके, भयो भूपके ज्ञान ॥
कूदि तुरत पगमें परयो, त्राहि त्राहि भगवान ॥ ३ ॥
करि तिनकी प्रस्तुति बहुत, निज अपराध क्षमाय ॥
उतरनकी पूछत भयो, जो भवसिंधु उपाय ॥ ४ ॥
योग विज्ञान विराग मति, भरत कियो उपदेश ॥
भूप कृतारथ नाइ शिर, लौटि गयो निजदेश ॥ ५ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

अथ ऋभुकी कथा।

सवैया—द्विजको सुत येरु रह्यो ऋभुनामक सो शिवमंदिर है निकस्यो ॥
लखि चीकन रूप धरयो इक फूल कह्यो शिव मांगु वरै हुलस्यो ॥
तुमसों जो बडो सो दिखावो हमैं ऋभुपालक यों तहँ भाषि लस्यो ॥
हर वैनके पूरण हेतु हरी प्रगटे ऋभुको जगजाल नस्यो ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

अथ इक्ष्वाकुराजाकी कथा।

सवैया—जबते महिभूप इक्ष्वाकु भये हरिलील रचै शिशुसंगनमें ॥
रतिभाव विलोकिकै तासु हरी कह्यो मांगु रँगे रतिरंगनमें ॥
रघुराज कह्यो जस खेलत है तुमहू तस खेलो उमंगनमें ॥
मुसकाइ कह्यो हरि तेरइ वंशमें खेलिहौं औधके अंगनमें ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे अष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

अथ पुरूरवाकी कथा।

दोहा—बुधको नंदन होत भो, पुरूरवा महराज ॥
ताकी छबि वर्णन कियो, नारद देव समाज ॥ १ ॥
तहँ उर्वशी सुनत मन मोही * कह्यो मनहि कब देखों वोही ॥
उतरि स्वर्गतें नृपढिग आई * राजहु देखि रह्यो ललचाई ॥
प्रीति समान भई दुहुँकेरी * तब उर्वशी गिरा अस टेरी ॥

तुमको नग्न देखि जब लैहैं * तब हम त्यागि तुम्हैं दिवि जैहैं ॥
अस कहि रहन लगी नृप नेरे * उतै शक्र गंधर्वन प्रेरे ॥
रहे उर्वशीके युग छागा * किये रही तिनपै अनुरागा ॥
तिनहिं हरे आदँव निशिमाहीं * तब उर्वशी कह्यो नृपपाहीं ॥
हरत छाग गंधर्व हमारे * भूप नपुंसक बल न तुम्हारे ॥
परो नग्न तैसहिं नृप धायो * तब गंधर्व बिजुलि चमकायो ॥
देखि उर्वशी नग्न नरेशै * जात तुरंत भई दिवि देशै ॥
विना उर्वशी भूप दुखारी * फिरन लग्यो कटि महीमँझारी ॥
एक समय कुरुक्षेत्रहि आयो * तहां उर्वशी दर्शन पायो ॥

दोहा-पकरि चरण रोवन लग्यो, कही नाइ शिर बात ॥
रे पापिनि अब का करति, मेरे जियको घात ॥ २ ॥

तब उर्वशी कही मुसकाई * गँधरव यज्ञ करहु नृपजाई ॥
मिलिहों त्वहिं गंधर्व देशमें * हैहौ अवशि उधार शोकमें ॥
फिरचो भूप प्राणहि अस पाई * गँधरव यज्ञ कियो मनलाई ॥
गयो जबहिं गंधर्व अगारा * मिली उर्वशी प्राण अधारा ॥
बहुत दिवस दोउ रमें सुखारी * काल विषम गति दियो विसारी ॥
पुण्य क्षीणते पुण्य जननकी * पुनिपुनिगतिहै अवनिपतनकी ॥
भई गिलानि भयो पुनि ज्ञाना * त्राहि कहत सुमरचो भगवाना ॥
तुरत उर्वशी कहँ नृप त्यागी * निदरयोनिजकहँजानि अभागी ॥
सुरसमान सुख सकल विसारचो * बारबार अस वचन उचारचो ॥
नारिनेहमें जो नर छाको * नश्यो लोक परलोकहु ताको ॥
फाँस्यो जाहि फंदमें नारी * होत ताहिकी दशा हमारी ॥
असकहि है अनन्य हरि ध्यायो * निहछल जानि कृष्णअपनायो ॥

दोहा-रमारमणपुर गवन किय, पुरूरवा महाराज ॥
ऐसहि रे नृपकी कथा, जानहिं संतसमाज ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

अथ गयराजाकी कथा।

कवित्त–मनु महाराज वंश भयो गयो राज कोई चक्रवर्ती शासन चलायो चारों ओर है॥ कीन्हो यज्ञ ऋत्विग्जन दीनो भाग देवनको विना हरि आये नृप मान्यो ना निहोर है॥ पर्‍यो व्रत तीन दिन हरि-की लखन आश रह्यो टक लाई जैसे चंदको चकोर है॥ मंडन महीपति मनोरथके मखमें दयालु दौरि आयो दशरथको किशोर है॥ १॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे त्रिंशोऽध्यायः॥ ३०॥

अथ देवल उतंग और हरिदासकी कथा।

दोहा–देवल और उतंकहू, अरु अमूर्ति हरिदास।
जन्महितेई तीनि जन, करी न जनकी आस॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे एकत्रिंशोऽध्यायः॥ ३१॥

अथ नहुषराजाकी कथा।

कवित्त–इंद्र ब्रह्म हत्या भीति भागे कंजनाल डर्‍यो नहुषे मुनीश इंद्रपद बैठायो है॥ शचीके समीप चल्यो मुनिन लगाय यान सर्पके कहत मुनि सर्पही बनायो है॥ हिमगिरि कंदरामें गिरिके बितायो काल ताके भाग विवश युधिष्ठिर सिधायो है॥ जानि पूर्व पुरुष गलानि है विज्ञान दीन्हो पाछे अपवर्ग शाप स्वर्गको छुडायो है॥ १॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे द्वात्रिंशोऽध्यायः॥ ३२॥

अथ मान्धाताकी कथा।

कवित्त–भयो मान्धाता भूप धातासों जगतबीच ताके दरबार ऋषि सौभरि सिधायो है॥ मांग्यो येक कन्या भूप कह्यो तुम्हें बरे जोई सोई लेहु सुनि मुनि तरुण है आयो है॥ नृपके पचासो

कन्या मुनिने पचासो वरचो भूपति पांच सौ दियो रामरति छायो है ॥ लखि निहकाम दान दीरघ दयालुनाथ रघुराज मानधाते जगते छुड़ायो है ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

अथ पिप्पलायनकी कथा।

कवित्त-ऋषिपिप्पलायन शमीक माया दर्शे तसे पुलह पुलस्त्य और च्यवन ऋचीक है ॥ अंगिराहू लोमशादि औरहू मुनीश जेते भये महाभागवत कीन्हो ध्यान ठीक है ॥ अष्टकुली नागशेष चरण लगायो चित्त जमदग्निकी पुराणनमें नीक है ॥ कहौं मैं कहानी कहा कश्यपकी जाते भई सुरासुर सृष्टिपै न माया गै नजीक है ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

अथ सगरकी कथा।

कवित्त-सगर नरेश साठि सहस लह्यो जे सुत अश्वमेध वाजी संग तिन्हैं भेजि दीन्हो है ॥ हरचो शक्र वाजीको न पायो हेरे खन्यो मही कपिल शराप देके भस्म तिन्हैं कीन्हो है ॥ सगरनरेश केरे भयो ना विषाद कछू त्याग्यो असमंजसको पापी चित्त चीन्हो है ॥ नाती अंशुमानको नरेश रचि देकै राजि रघुराज आप रामपुरपथ लीन्हो है॥१॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे पंचत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥

अथ वसिष्ठऋषिकी कथा।

दोहा-मुनि वशिष्ठकी मैं कथा, कहौं कौन मुखलाय ॥
जिनको श्रीरघुवंशमणि, लीन्हो गुरू बनाय ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

अथ भृगुऋषिकी कथा।

दोहा–सरस्वति तट शंका उठि, मध्यमुनीन समाज॥
विधि हरि हरमें को बडो, यह जाननके काज॥१॥

सकल मुनिन संमत करिदीन्हों ❋ भृगु पयान जानन हित कीन्हो॥
प्रथम विरंचि समीप सिधाये ❋ विधिहि निरखि नहिं शीश नवाये॥
कियो कोप भृगुपै मुखचारी ❋ भृगु कैलासहि गये सिधारी॥
मिलनहेतु शिव उठे मुनीशै ❋ तब भृगु कोपि कह्यो अस ईशै॥
रे निर्लज्ज भसम अँगधारी ❋ तोहिं न छुवन मति होति हमारी॥
यह सुनि शिव सकोप लै शूला ❋ धाये भृगुहिं करन निर्मूला॥
शिवहिं क्षमा तब उमा करायो ❋ भृगु तुरंत वैकुंठहि आयो॥
द्वारपाल कीन्हे नहिं वारन ❋ निकसि गये भृगु सातो द्वारन॥
मणिमंदिर सोहत विधि नाना ❋ श्रीसहित सोवत भगवाना॥
प्रभुउर किय भृगु चरणप्रहारा ❋ उठे नाथ मुनिनाथ निहारा॥
निज कर गहि मुनि पद अनुरागे ❋ बार बार हरि मीजन लागे॥
कठिन कुलिशते हृदय हमारो ❋ कमलहु कोमल चरण तिहारो॥

दो०–क्षमा करहु अपराध यह, कियधनिमोहिं मुनिराज
रमा वसन लायक भयो, मेरो उर यह आज॥२॥

भई पुनीत आज सब भांती ❋ परसत पद राउर यह छाती॥
जेहि तन परहि विप्रपग धूरी ❋ पूरव पुण्य कियो सोइ पूरी॥
लखि सुशीलता भृगु प्रभु केरी ❋ वारिधार दृग बही घनेरी॥
पुलकित तनु कछु कहि नहिं आयो ❋ चल्यो लौटि मुनि अति सुख पायो
आयो सरस्वती सरि तीरा ❋ जहँ बैठे सब मुनि मतिधीरा॥
विधि हरको वृत्तांत बखाना ❋ बहुरि कह्यो जो किय भगवाना॥
सबते बडो हरिहिं मुनि जाने ❋ दयानिधान न दूसर आने॥
पूरण प्रीति रीति परतीती ❋ भजन लगे हरिकहँ मन जीती॥
क्षमा दया रति शील सनेहू ❋ हरि तनु किये रहे सब गेहू॥
दूजो को हरि सरिस दयाला ❋ लखत दीन ह्वै जात बिहाला॥

जो न होत हरि दीन सनेही ❀ भाषहु संत भजत पुनि केही ॥
उभयलोक जो चहहु सुपासू ❀ तौ चाहहु चित रमानिवासू ॥
दोहा-योग विज्ञान विरागरति, कठिन जानि यदुनाथ ॥
सरल उपाय कह्यो सबन, धरहु संतपदमाथ ॥ ३ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥

अथ दालभ्यमुनिकी कथा।

दोहा-अरु दालभ्य मुनीशकी, कथा पुराणप्रसिद्ध ॥
जासु कथित वर्णत वदन, होत कार्य सब सिद्ध ॥ १ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे अष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

अथ उत्तानपादराजाकी कथा।

दोहा-नृप उत्तानहुपादकी, कहौं कथा केहि रीत ॥
भयो जासु ध्रुवसो सुवन, कियो कुटुंब पुनीत ॥ १ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे नवत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥

अथ दक्षकी कथा।

दोहा-दक्षकथा भागवतमें, वर्णित युत विस्तार ॥
ताते मैं यहि ग्रंथमें, कीन्हो नाहिं उचार ॥ १ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे चत्वारिंशोऽध्याय ॥ ४० ॥

अथ सौभरिकी कथा।

दोहा-यमुनामें निरखत भयो, सौभरि मीनविलास ॥
मान्धाता नृपसों सुता, ल्याये मांगि पचास ॥ १ ॥
रच्यो विभव निज योग प्रभाऊ ❀ वसन अमल आभरण जराऊ ॥
पृथक् २ मणिमंदिर सोहे ❀ निरखत सुर सुंदरि गण मोहे ॥
कियो बहुत दिन भोग विलासा ❀ तदपि काम पूरी नहिं आसा ॥

निरखि अनित्य जगतकी रीती ॥ संसृति सुखपर भई अप्रीती ॥
बार बार मन महँ पछिताई ॥ निकसि चले सब विभव विहाई ॥
हरि अनुरागहिं जगत विरागा ॥ उभय भांति मुनि कर मन लागा ॥
मान्धाताकी सुता पचासा ॥ लखि पतिरीति तजी जगआसा ॥
भजन लगीं यदुनंदन काहीं ॥ बसि २ विपिन एकांतनमाहीं ॥
अचिरकाल महँ श्रीभगवाना ॥ निज हित मिलन नेम दृढ जाना ॥
मिले मुनिहिं अरु नृपतिकुमारी ॥ सबको कियो रमापुर चारी ॥
कियो न कन्या तरण उपाऊ ॥ मिले कृष्ण सतिसंग प्रभाऊ ॥
जिमि रीझत सतसंग मुरारी ॥ तिमि नहिं याग याग तप भारी ॥
दोहा—योग अचल मनज्ञान सम, जगको त्याग विराग ॥
बिना भक्ति नहिं सिद्धि त्रय, भक्ति संत सतलाग २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे एकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४१ ॥

अथ कर्दमकी कथा ।

दोहा—कहों बहुरि कर्दमकथा, देवहूतिको कंत ॥
जाको योग विराग लखि, रीझि गये भगवंत ॥ १ ॥

कर्दम भये प्रजापति नंदन ॥ विधिकह सृष्टि करहु कुलचंदन ॥
सृष्टि करब गुणिजग जंजाला ॥ बसे विपिन कर्दम तेहि काला ॥
लवहु मात्र जग चित नहिं लागा ॥ छनछन बढ्यो कृष्ण अनुरागा ॥
भे प्रसन्न प्रभु कर्दम पाहीं ॥ आये द्रुत तिन आश्रम माहीं ॥
कर्दम कियो दंड परणामा ॥ बोलि न आयो लहि सुखधामा ॥
हरिकह इत ऐहैं मनुभूपा ॥ देहैं तुमको सुता अनूपा ॥
ताके मैं लैहौं अवतारा ॥ करिहौं योग विज्ञान प्रचारा ॥
सृष्टिकरनहितदिय विधिशासन ॥ मोहि तु सृष्टि करउ भयनाशन ॥
अंतरहित हरि भे कहि ऐसो ॥ प्रभु जस कह्यो भयो सब तैसो ॥
देवहूति पति सेवन लागी ॥ निज तनु सब सुपास सुख त्यागी ॥
लगि दया मुनि विभव बनायो ॥ जो सुख लखि सुरपति ललचायो ॥
भोग विलास फेरि मुनि त्यागी ॥ कानन चले राम अनुरागी ॥

दोहा-देवहूतिहि अस कहत भे, ह्वैहैं हरि सुत तोर ॥
करि उपदेश सो छोरि हैं, तुव भवबंधन घोर ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥

अथ मांडव्यमुनिकी कथा।

दोहा-रहे येक मांडव्यमुनि, रँगे राम अनुराग ॥
मायावन वीरुध विषे, सुख सुमवासन लाग ॥ १ ॥

यक नृप भवन गये कोउ चोरा * मूस्यो मुक्तमाल चितचोरा ॥
चले जबहिं लै सीपजमाला * सोर राजगृह भो तेहिकाला ॥
चोरन पकरन हित भट धाये * यह सुनि सोर चोर भय पाये ॥
लख्यो न आपन बचब पराई * मिल्यो मार्ग मांडव मुनिराई ॥
तिनके गले डारि मणिमाला * चोर पराय गये तेहिकाला ॥
पाछे दूत दौर तहँ देखे * मुनि मांडव्य चोर करि लेखे ॥
मुनिहिं पकरि लै चले तुरंता * ल्याये नृपति निकट बलवंता ॥
नृपकहँ देहु चोर कहँ सूरी * संतभेष यह चोर कसूरी ॥
तुरत दूत पुर बाहिर लाई * सूरीमहँ दिय मुनिहिं चढाई ॥
प्रेममगन मुनि भयो न भाना * हरिप्रभाव निकसे नहिं प्राना ॥
सूरी चढे बिते दिन साता * मरे न मुनि आश्चर्य अघाता ॥
खबरि नरेश सकल यह पाई * मुनि समीप महँ आयो धाई ॥

दोहा-चीन्ह मुनीशहिं त्राहिकहि, कीन्हों दंडप्रणाम ॥
क्षमहु मोरअपराधप्रभु, मैं कियअनरथकाम॥२॥

सूरीते लिय तुरत उतारी * बारबार दीनता उचारी ॥
मुनि दयालु कह दोष न तोरा * यह यमराज दोष अतिघोरा ॥
अस कहि नृपहिं प्रबोध मुनीशा * गये जहां संयमनी ईशा ॥
यम लखि कियो बहुत सतकारा * मुनि सकोप अस वचन उचारा ॥
रे यमको न भयो अपराधा * जाते मोहि दीन्हि यह बाधा ॥
यम डेराय बोले अस बानी * पूर्वजन्म अस किय मुनि ज्ञानी ॥

बालक रहे समय इक आपू ❋ खेलत यक जीवहिं दियतापू ॥
गहि फरफुंदा तेहि गुद माहीं ❋ डारयो सींक दया भै नाहीं ॥
सोइ अपराध लह्यो तुम सूरी ❋ गुदते शिर ह्वै निकसी दूरी ॥
मुनि सकोप तप कह असवानी ❋ मैं तौ रह्यो बाल अज्ञानी ॥
कृत अज्ञान अपराध हमारा ❋ तैं न कियो यह मूढविचारा ॥
ताते शूद्र होहु तुम जाई ❋ औरहु कछु हौं देत सुहाई ॥
दोहा—चौदह वर्ष प्रयंतलौं, बालक रहत अज्ञान ॥
करत नीक नेवर नहीं, पाप पुण्य कर भान ॥ ३ ॥
ताते चौदहि वर्षलगि, पाप पुण्य नहिं होइ ॥
ऊरध ताके फल लहै, करणीको सब कोइ ॥ ४ ॥
अस कहि मुनि गवनत भये, हरिपद चित्त लगाय
नृपविचित्रवीरजभवन, भये विदुरयमआय ॥५॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

अथ पृथुमहाराजकी कथा ।

दोहा—वर्णौं पृथु महराजकी, कथा कथित सुपुरान ॥
याके सम भव भूमिमें, भयो भक्त नहिं आन॥१॥
भयो वेणु भूपति अति पापी ❋ परजनको अतिशय संतापी ॥
भस्म कियो तेहि मुनि दै शापा ❋ मिटयो पुहुमिते पूरण पापा ॥
पुहुमीपति विन पुहुमि अनाथा ❋ यहि लखिकै सिगरे मुनिनाथा ॥
मंथन कीनो वेणु शरीरा ❋ तेहिते पृथु प्रगटे मतिधीरा ॥
ज्ञानमान पुनि परम सुजाना ❋ भक्तिमान भवभूतिनिधाना ॥
देवन सहित विरंचि सिधाई ❋ पृथुहिं सिंहासनमहँ बैठाई ॥
निज २ वस्तु देव सब दीन्हे ❋ बंदीगण अस्तुति अति कीन्हे ॥
निजस्तुति सुनि पृथु महराजा ❋ कह्यो काहु अनुचित यह काजा॥
मृषा प्रशंसन निंदन होतो ❋ जिमि प्राची विन भानु उदोतो॥
जामें जेतनो गुण लखि लीजै ❋ तेतनो तासु प्रशंसन कीजै ॥

येक गुण है नहिं मोमाहीं * प्रस्तुति करब उचित अब नाहीं ॥
सुनि पृथुवचन विरंचि सुखारी * बंदिनसों अस गिरा उचारी ॥
दोहा-करहु प्रशंस भविष्य सब, पृथु भूपतिको सर्व ॥
यहिसम कोउ न होइगो, गैहै यश गंधर्व ॥ २ ॥
बंदी वचन मानि बिधि केरो * भने भविष्य प्रशंस घनेरो ॥
प्रस्तुति करि गवने दिगपाला * यहिविधिबीति गयो कछुकाला ॥
परयो जगत दुर्भिक्ष महाना * प्रजा भूप ढिग कियो पयाना ॥
अति दुर्भिक्ष जनित दुखपाये * पृथु धरणीकर दोष लगाये ॥
जोपै धरणि अन्न उपजावति * तो नहिं प्रजा मोरि दुख पावति ॥
अस कहि चल्यो शरासन धारी * अवनी उपर कोप करि भारी ॥
इक शर हनन चह्यो महिकाहीं * तासु तेज सहि सकी सो नाहीं ॥
जगती तहां महा भय मानी * गऊरूप धरि तुरत परानी ॥
सातहु लोक भूमि फिरि आई * सक्यो न राखि कोऊ सुरराई ॥
पुनि पृथु सन्मुख भइ महि ठाढी * त्राहि त्राहि बोली भय बाढी ॥
धर्मधुरंधर पृथु महराजा * नारि वधत कत लगहि न लाजा ॥
पृथु कह प्रजा दुखत जो कोई * ताहि वधे कछु पाप न होई ॥
दोहा-कह्यो धरणि परजाहि तै, दुहहु मोहिं महराज ॥
यह उपाय ह्वैहै सकल, सिद्धि सबनको काज ॥ ३ ॥
धेनुरूप धरणी तब राजा * दुहन लग्यो परजनके काजा ॥
अन्न अनेकन जब दुहि लीन्हो * पुनि औरन कहँ आयसु दीन्हो ॥
सिद्ध सुरासुर मुनि गंधर्वा * दुहहु जौन भावै जोहिं सर्वा ॥
पृथुशासन सुनि सकल सिधारे * दुहे धरणि जग जीव अपारे ॥
भयो सकल त्रिभुवनकर काजा * कहैं सबै जय पृथु महराजा ॥
पुनि पृथुराज राज बहु कीन्हो * सबै प्रजनको आनँद दीन्हो ॥
अश्वमेध नवनवति प्रचारा * सुनहु भयो जो सतयें बारा ॥
सतयें बार यज्ञ महराजा * जोरी सुर नर सिद्ध समाजा ॥
वामदेव विधि आदिक देवा * आये सकल करन पृथुसेवा ॥
येक पुरंदर भरि नहिं आयो * अपने अतिघमंड महँ छायो ॥

यज्ञविध्वंसन हितचित चोपी * चल्यो पुरंदर पृथुपै कोपी ॥
हरचो यज्ञ बाजी मख आई * लै गवन्यो निजरूप छिपाई ॥
तबै अत्रिमुनि दियो बताई * हरत यज्ञ बाजी सुरराई ॥

दोहा—दिक्षितराजा यज्ञमें, उठयों न शरधनु धारि ॥
जेठे अपने पुत्रको, कह्यो प्रचारि प्रचारि ॥ ४ ॥

मेरे मखको पूजित बाजी * लीन्हे जात पुरंदर पाजी ॥
सुनि पृथुशासन सुतवरिबंडा * चल्यो चढाइ चपउ कोदंडा ॥
जाय निकट वासवहिं प्रचारा * हरे चोर कत घोर हमारा ॥
पृथुसुतकाहिं कालसम देखी * भग्यो पुरंदर अतिभय लेखी ॥
भागेहु बचब न जानि सुरेशा * धरयो तुरत दंडीकर वेशा ॥
पृथुपुत्रहि भ्रम भयो विलोके * धर्म विचार शरासन रोके ॥
पूछन लग्यो शक्रकेहिं ठोरा * हरि लै गयउ तुरंग जो मोरा ॥
शिरकंपन करि सो किन नाहीं * नृपसुत भयो निराश तहाहीं ॥
लौटयो जब तब अत्रि मुनीशा * कह पुकार करि तैनहिं दीशा ॥
दंडीरूप घोरको चोरा * सोइ वासव वैरी है तोरा ॥
सुनि बहुरयो पृथु पुत्र रिसाई * लै बाजीकहँ वासव जाई ॥
भाग्यो सुरपति सबै दिशानन * प्राणजात नृप नंदन वानन ॥

दोहा—जब जमुकयो कछु पृथुतनय, तब तुरंग तहँ छोडि
भयो पुरंदर अलखडर, सक्यो न सन्मुख बोडि ॥ ५ ॥

लै बाजी आयो मखशाला * पृथुनरेश सुत वली विशाला ॥
सब मुनीश अति पाय हुलासू * नाम धरयो ताकरविजितासू ॥
बहुरि पुरंदर हरयो तुरंगा * जिमि मुनि मानसविषयनसंगा ॥
चल्यो सकोप बहुरि विजितासु * करन शक्र बिन प्राणहिं आसु ॥
लख्यो शक्र निजरिपु मनु काला * जानि अंत निज भयो बिहाला ॥
धरयो अघोरी वेष तुरंता * खरो भयो मगमहँ छलवंता ॥
भयो फेरि विजिताश्वहि धोखो * तज्यो न बाण हननहित चोखो ॥
लौटि चल्यो तब अत्रि पुकारो * सोइ अघोरी शत्रु तिहारो ॥

तुरत फिर्यो संधानत सायक * अब न बची कैसेहु सुरनायक ॥
कालु जानि अपनो असुरारी * बाजि विहाय भग्यो भय भारी ॥
लै तुरंग आयो मखशाला * दियो मुनिन कहँ मोद विशाला ॥
जौन जौन वासव वपु धार्यो * सोइ २ पुहुमि पखंड प्रचार्यो ॥
दोहा-निरखि शक्रशठता सपदि, कोपित पृथुमहाराज ॥
संध्यानो कुशबाण इक, करन अंत सुरराज ॥ ६ ॥
संधानत सायक विकराला * उठीं ज्वालदशदिशि तेहि काला ॥
त्रिभुवन माच्यो हाहाकारा * शक्रनाश सब कियो विचारा ॥
भुवन होत विन वासव केरो * गुणिविधि शोकित भयो घनेरो ॥
आयो पृथु महीप मखमाहीं * बैठ्यो लहि सतकार तहाहीं ॥
कह्यो वचन हे भूपशिरोमनि * धर्माधारधरणि धनि धनि धनि ॥
तुम यदुनाथ अनन्य उपासी * नाहिं मम सिराजितलोकविलासी ॥
शतमख करत जगतमहँ जोई * लहत पुरंदरपद भरि सोई ॥
नशत सोउ लहि नेसुक काला * यह नहिं भक्त महत्व विशाला ॥
ताते यज्ञ रहन अब दीजे * यदुपति प्रेम सुधारसपीजे ॥
सुनि विधिवचन भूप हरि दासा * एवमस्तु कहि लह्यो हुलासा ॥
सकल कर्म पृथु कियो अकामा * रही आश लखिहैं कब श्यामा ॥
करत ध्यान बैठो निज आसन * धारत धर्मधुरंधर शासन ॥
दोहा-पृथुकी जो मन कामना, ताहि जानि यदुराज ॥
धायो तुरत विकुंठते, चढि वाहन खगराज ॥ ७ ॥
मारग माहिं गुन्यो मनमाहीं * इंद्र बचत अब कैस्यो नाहीं ॥
मम जन द्रोह जनित अपराधा * करी विशेषि वासवहिं बाधा ॥
ताते लै वासव सँग जाऊं * पृथु नृप शरणागत करवाऊं ॥
अस कहि हरि हरि लिहो हकारी * आये शंख चक्र करधारी ॥
सुर नर मुनि सब हरिहिं विलोकी * जय जय कहि भे सकल विशोकी
तेहि क्षणको पृथुको आनंदा * मैं किमि वरणि सकों मतिमंदा ॥
तृषित लहै किमि सुरसरिधारा * देइ मृतक जिमि जियकरतारा ॥

उठ्यो नरेश दौरि हरि आगें ❀ दंडसमान गिरयो अनुरागे ॥
उठ्यो बहुरि कछुकहि नाहिं आयो ❀ बार बार हगवारि बहायो ॥
प्रेम मगन मन पुलकित गाता ❀ करत पान छबि नाहिं अघाता ॥
अचल खरो बीत्यो यक जामा ❀ वारयो तन मन जन धन धामा॥
भे प्रसन्न प्रभु पृथुहिं निहारी ❀ बार बार तेहिं मिले मुरारी ॥

दोहा—प्रभुहिं मिलत सकुचत नृपति, धनि२ मानत भाग॥
प्राकृत मोर शरीर यह, प्रभु अंगनमहँ लाग ॥८॥

धरे गरुड गल प्रभु इक हाथा ❀ इक कर फेरत पंकज नाथा ॥
प्रभुसों भन्यो मांगु वरदाना ❀ तोहिंसम भक्त भयो नहिं आना॥
त्रिभुवन माहिं पदारथ जेते ❀ तोहिं देत लागत लघु तेते ॥
तब पृथु कह्यो जोरि कर दोई ❀ जो मांगो पाऊं प्रभु सोई ॥
प्रभु कह जौन अहै कछु मोरे ❀ नहिं अदेय नृपनायक तोरे ॥
पृथु कह संत कथित यश तेरो ❀ द्वै श्रुति सुनि न तृपित मन मेरो॥
दश हजार दीजै मोहिं काना ❀ सुनहुँ रावरो सुयश महाना ॥
सुनत अलौकिक नृपकी वानी ❀ करि कृपालु तेहि कृपा महानी॥
बोले वचन मंद मुसकाई ❀ हमहु तोहिं याचैं नरराई ॥
करहु क्षमा वासव अपराधा ❀ नहिं ह्वैहै याको अब बाधा ॥
यह शरणागत होत तिहारे ❀ क्षमा सिंधु तुम भूप उदारे ॥
श्रवण सहस्र दश तैं नृप पैहै ❀ तदपि न मो यश सुनत अघैहै ॥

दोहा—पृथुकहँ वासव प्राणप्रिय, मोहिं सदा यदुनाथ॥
अस कहि वासव कहँमिल्यो, नृप पसारि युगहाथ९

जापर कृपा नाथ तुव होई ❀ तेहि अप्रिय मानै किमि कोई ॥
येक अरज मेरी भगवाना ❀ सो सुनिकै पुनि करहु पयाना ॥
चरणतुलसि मैंही अब लैहौं ❀ मातु रमाकहँ मैं नहिं दैहौं ॥
यह माता सह पुत्र विवादा ❀ राखिहौं तुम्हें नाथ मर्यादा ॥
देखि अलौकिक पृथुकी प्रीती ❀ भे प्रमुदित प्रभु जानि प्रतीती ॥
ह्वै सवार तब पक्षिनाथपर ❀ चलन चह्यो प्रभु चक्र हाथपर ॥

बहुरि परयो पृथु पांयन जाई * कह्यो नाथ मुहिं लेहु लेवाई ॥
तुमहि पाय संसृत महँ रहिबो * रत्न पाय पुनि कंकर गहिबो ॥
कह प्रभु चारि संत इत ऐहैं * महिमा संतन तोहिं सुनैहैं ॥
तोहिं बाकी इतनो अब काजा * मुनि मिलहै तोहिं सहित समाजा ॥
असकहि भे हरि अंतर्धाना * पृथु पायो परमोद महाना ॥
बीत्यो कछुक काल यहि भांती * देखत संत पंथ दिन राती ॥
दोहा-एक समय दिनकर सरिस,द्युति छावतदिशिचारि
आइ गये पृथुके भवन, चारि संत सुखकारि १०॥
देखत पृथु मनु सर्वस पायो * दौरि द्रुतहिं सकल शिर नायो ॥
चरण धोइ तनु अरु गृह सींचो * मनहुँ सकल सिधिउदधि उलीचो॥
करि पूजन षोडश उपचारा * कनकासन संतन बैठारा ॥
चापत चरण कह्यो असबानी * मोहिं मिले अब सारँगपानी ॥
मैं सर्वस निज तुमहिं चढाऊं * संतसरोज चरणरति पाऊं ॥
सनकादिक करि कृपा महाई * संतनकी महिमा सब गाई ॥
बहुरि कह्यो हरिपुर पगु धारो * यह प्रभु शासन चित्त विचारो ॥
अस कहि अंतर्हित भे चारी * पृथु कहि चल्यो कृष्णरतिधारी ॥
बदरी वन पहुँच्यो जब जाई * चारि पारदष द्रुत तहँ आई ॥
पृथुहि चढाय विमान महाना * कृष्णनगर कहँ कियो पयाना ॥
रमानिवास निवास निवासा * करत भये पृथुसहित हुलासा ॥
पृथुचरित्र कछु कियो उचारा * और भागवतमें विस्तारा ॥
दोहा-पृथुमहरानी जो रही, सो दहि दहन शरीर ॥
भई सिंधुजाकी सखी, छूटि गई भइ पीर ॥ ११ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंड चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः॥४४॥

अथ गजेंद्र अरु ग्राहकी कथा।

दोहा-अब गजेंद्र अरु ग्राहकी, अतिशय कथा अनूप ॥
सो विस्तृत भागवतमें, वर्णौं मति अनुरूप ॥ १॥

कवित्त–गेरिकै ग्रस्यो है गजराज गोड गाढ्यो ग्राह गाढिम गंभीर नीर चाहै सो गिरायो है ॥ रह्यो नाहिं जोर थोर चितयो सो चान्यो ओर काहूके निहोर नाहिं जीवन देखायो है ॥ कहै रघुराज सो करिंद ताजि फंद सब कर अरविंद लै गोविंद गोहरायो है ॥ कैधौं करि कंह-हीते करि करहीते किधौं कमलते कमलाको कंत काढि आयो है ॥ १ ॥

दोहा–मांग्यो मोचन ग्राह गज, भवमोचनहूं दीन ॥
थक यांचत बकसत दुगुन, श्रीयदुनाथ प्रवीन॥२॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे पंचचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥

अथ अंबरीषराजाकी कथा ।

दोहा–अंबरीष महाराजकी, कहौं कथा अवदात ॥
जाहि सुनत सब भक्तके, उर आनँद उमगात॥१॥

नृप नाभाग तनय गुणवाना ❀ अंबरीष भागवत प्रधाना ॥
बालहिंते हरिसेवन प्रीती ❀ बाढी सकल साधुजन रीती ॥
जब नाभाग गयो परलोका ❀ अंबरीष कछु कियो न शोका ॥
राजतिलक जबतें नृप पायो ❀ ठौर ठौर अस रव सुनवायो ॥
जो द्विज साधु ईश नहिं मानी ❀ लही प्रचंड दंड सो प्राणी ॥
आप कृष्ण मंदिर बनवायो ❀ ताकी रचना विविध करायो ॥
कृष्ण रुक्मिणी मूरति राखी ❀ सेवन लग्यो नाथ मुख भाखी ॥
शक्र सरिस वैभव विस्तारा ❀ स्वप्न सरिस निज कियो विचारा ॥
जेहि धन मद वश जीव नशाहीं ❀ तासु विकार लग्यो तेहि नाहीं ॥
पंडितहू यह संपति पाई ❀ लोभ विवश निज देत नशाई ॥
तासु रंग नहिं लग्यो भुवाला ❀ कारण तासु कहूं यहि काला ॥
हरि महँ अरु हरि भक्तन माहीं ❀ लख्यो भेद भूपति कछु नाहीं ॥

दोहा–सोइ प्रभावते लोठ सम, लख्यो लोभ विस्तार ॥
पेख्यो पूरण सकल थल, श्रीवसुदेवकुमार ॥ २ ॥

यदुपति पद अरविंद न तेरे * चुम्यो चित्त पुनि फिरयो न फेरे ॥
रसना कथत कृष्ण गुण गाथा * कियो न और कथाकर साथा ॥
झारत यदुपति मंदिर मंजू * छाले परे तासु करकंजू ॥
बिना कृष्ण कीरतिके साने * परे न और वचन नृपकाने ॥
माधव मूरति काहिं बिहाई * अनत भूपकी डीठि न जाई ॥
परस्यो सानु चरण नृप देहू * और परस पायो नाहिं केहू ॥
बिन हरि अरपित सुमन सुगंधू * भयो न तेहि नासा सनबंधू ॥
कृष्ण निवेदित अन्न अपारा * भूपति प्राण अधार अहारा ॥
गवनत हरि धामन पद ताके * कबहुँ उपानह सुख नहिं छाके ॥
छोडि येक प्रभु यदुकुल ईशा * क्षितिय देवको नयो न शीशा ॥
विभव विलास लह्यो नृप जेतो * अरप्यो यदुपति पदमहँ तेतो ॥
निज शरीर सुख हितनहिं कीन्हों * सकल कृष्णके काजहि चीन्हो ॥

दोहा–साधु चरणमें नेह अति, बाढै जौन उपाव ॥
सोइ करनको भूपके, बाढ्यो दून उराव ॥ ३ ॥

अवनिप अंबरीषके ज्ञानी * रहीं परम सुंदर शत रानी ॥
तिनसों कियो न विषय विलासू * हरि सेवत न लह्यो अवकासू ॥
कोउ इक भूपति भयो प्रतीची * बढी विभूति नीति रस सीची ॥
भै हरि भक्ति सुता इक ताके * लागी राम नाम रट जाके ॥
भूप विवाह करन अभिलाष्यो * कन्या वचन जनकसों भाष्यो ॥
वरिहौं अंबरीष महराजै * और भूपसों मोर न काजै ॥
सुता वचन सुनि नृप सुख मानी * परम भाग कन्याकी जानी ॥
कह्यो वचन तैं धन्य कुमारी * अंबरीष पति लियो विचारी ॥
कोउ नाहिं अंबरीष सम आजू * सुमति चक्रवर्ती महराजू ॥
कृष्ण अनन्य उपासक साधू * कृष्ण चरण महँ प्रेम अगाधू ॥
निशिदिन कृष्ण नाम सुख लेही * यही सबन उपदेशहिं देही ॥
साधु विप्र तन मन धन मानै * हरि तजि और देव नहिं जानै ॥

दोहा–असकहि विप्र बोलाय इक, तेहि बुझाय ततकाल ॥
अंबरीष महराज पै, पठवायो महिपाल ॥ ४ ॥

अंबरीष पुर द्विजवर आयो ❀ नृपहिं निरखि अति आनँद पायो॥
भूपति अति आदर तेहि कीन्हों ❀ करि सतकार धोइ पद लीन्हो॥
करि प्रणाम नृप कह्यो बहोरी ❀ आज्ञा कहा विनय यह मोरी॥
विप्र कह्यो नृपसुता सोहाई ❀ तुमहिं चहति निज पति नृपराई॥
तासु मनोरथ पूरण कीजे ❀ अवनिप अनुपम यह यश लीजे॥
विप्र वचन सुनि कह्यो नरेशा ❀ मोहि न विवाह आश कर लेशा॥
दिवस रैन महँ नाहिं अवकाशू ❀ सेवत प्रभु पद जगत निराशू॥
हैं घरमें मेरे शत नारी ❀ तेऊ मोहि न कछु सुखकारी॥
ताते जाहु विप्र घरमाहीं ❀ यह विवाह करि है हम नाहीं॥
यह सुनि विप्र लौटि घर आयो ❀ कन्या कहँ वृत्तांत सुनायो॥
सुन कन्या बोली अस वैना ❀ द्वितिय कंत करि हौं नहिं मैना॥
की तो अंबरीष पति ह्वै है ❀ प्राण पयान पापकी लै है॥

दोहा—यह सुनि कन्याको पिता, मानि परम संदेह॥
पठवायो द्विजको बहुरि, अंबरीषके गेह॥ ५॥

द्विजवर अंबरीष ढिग आई ❀ बोल्यो वचन बहुत पछिताई॥
धरणि धुरंधर धर्म अधारा ❀ भयो न तुम सम भूमि भुवारा॥
पै इक लागत नाथ कलंका ❀ ताते कहौं वचन बिन शंका॥
जो लेहो नहिं व्याहि कुमारी ❀ तो तजि हैं जिय आश तिहारी॥
उऋण भयो कहिकै अब जाहू ❀ आगे तुव विचार नृपनाहू॥
कन्या प्राण तजन सुनि काना ❀ भूपति भूरि हृदय भय माना॥
भन्यो भूप अस जो प्रण ताको ❀ तौ करि हौं विवाह हठि वाको॥
मैं हरि सेवन तजि नहिं जै हौं ❀ खड़गनाथके संग पठै हौं॥
असकहि साजि बरात विशाला ❀ धरि शिबिका पठयो करवाला॥
भयो विवाह खड्ग महँ ताको ❀ दियो विदाकर नृप दुहिताको॥
अंबरीष मंदिर महँ आई ❀ रानी लही विभूति महाई॥
जबै दिवस दश पांच व्यतीते ❀ नयन नृपति दरशनते रीते॥

दोहा—तव पतिको आह्निक सकल, रानी पूंछि तुरंत॥
लागी करन उपाय अस, केहि विधि देखौं कंत॥ ६॥

भूपति चारि दंड निशि बाकी * उठत रहे हरिपद मति छाकी ॥
दंतधावनादिक कर कर्मा * करि स्नान शीघ्र शुभ धर्मा ॥
मंदिर झारि बहारत लहेऊ * पार्षद धोइ परम सुख लहेऊ ॥
येक दिवस सो यह सब जानी * पहर निशा बाकी उठि रानी ॥
करि स्नान पहिरि शुचि सारी * आई हरिमंदिर द्युतिनारी ॥
गए भूप मज्जनहित जबहीं * मंदिर झारन लागी तबहीं ॥
झारि बहारि पार्षद धोई * पूजन साज साजि मुद सोई ॥
भूपति आगम समय विचारी * रानी तुरत निवास सिधारी ॥
अंबरीष मंदिर पगु धारो * निरख्यो सकल बहारो झारो ॥
पूजन साजु सजी सब देखी * नृप उर शंका भई विशेषी ॥
को भयो हरिसेवन बड भागी * भागी है मोहिं कियो अभागी ॥
कछुक काल नृप है संदेही * पुनि हरिसेवन लग्यो सनेही ॥
दोहा-पुनि जब दूसर दिन भयो, नृपति करन स्नान ॥
कढिआयो बाहर तबै, रानी कियो पयान ॥ ७ ॥
करि हरिसेवन प्रथम समाना * पुनि कीन्ही निजभवन पयाना ॥
राजा बहुरि तैसही देख्यो * अतिशय अचरज मनमहँ लेख्यो।
तीजे वासर निशा व्यतीते * राजा उठ्यो पहर त्रय बीते ॥
रह्यो भवनमें छिपि यक ठाऊं * जन न कह्यो कहियो नहिं नाऊं॥
चारिदंड बाकी निशि रानी * आई हरिमंदिर मतिखानी ॥
लगी पखारन झारन जबहीं * भूपति वचन कह्यो अस तबहीं ॥
कौन होति हरिसेवन भागी * अनुपम भई कृष्ण अनुरागी ॥
तब कर जोरि कही मतिखानी * अहौं नवीन नाथकी रानी ॥
भई कृष्णसेवन अभिलाषा * मैं मंदिर झारि न करि राखा ॥
तब बोल्यो भूपति मुसकाई * जो अस प्रीति हियेमहँ आई ॥
तो दूसर मंदिर बनवावो * हरिस्वरूप सुंदर पधरावो ॥
मेरे कर्म होति कत भागी * होहु अनन्य कृष्ण अनुरागी ॥
दोहा-सुनि प्रीतमके वचन तिय, मानि सीख सुखदानि ॥
कह्यो करौंगी ऐसही, है है बातन आनि ॥ ८ ॥

अस कहि लौटि भवनकहँ आई ❀ दीन्हो सचिवन हुकुम सुनाई ॥
हरिमंदिर सुंदर बनवावो ❀ राधारमण स्वरूप मँगावो ॥
सुनत सचिव तैसहि सब कीन्हो ❀ हरि उत्सव रानी करि लीन्हो ॥
राधा मोहन तहँ पधराई ❀ लै कर बीन प्रेम रस छाई ॥
गान करन लागी हरि आगे ❀ तनुते कोटि जन्म अघ भागे ॥
रँगी प्रेमरँग सो नृपरानी ❀ तजी लाज अरु डर कुल कानी॥
हरिपूजन निशिदिन तेहि जाहीं ❀ सावकाश इक क्षणभर नाहीं ॥
बोलि सकल पुरके हलवाई ❀ लगी रचावन ढेरि मिठाई ॥
प्रतिदिन हरिको लागत भोगू ❀ आवैं सकल नगरके लोगू ॥
पावहिं कृष्ण सकल परसादा ❀ गावहिं सुयश सहित अहलादा ॥
पुनि डौंडी पुरमहँ पिटवाई ❀ आवै इत पुरजन समुदाई ॥
जो ऐहैं सो भोजन पैहैं ❀ विमुख कोउ इतते नहिं जैहैं ॥

दोहा—यह सुनि पुरजन दिवस प्रति, हरिदरशनको लैन ॥
रानीमंदिर आवहीं, पावहिं अतिशय चैन ॥ ९ ॥

अस को रह्यो न तेहि पुरमाहीं ❀ रानी भगति भन जो नाहीं ॥
चलत चलत यह बात सुहाई ❀ अंबरीष काननलों आई ॥
अंबरीष सुन अति सुख पायो ❀ रानी दरशनको ललचायो ॥
एक दिवस संध्याकी वेला ❀ करि हरिपूजन भूप अकेला ॥
मंद मंद रानी गृह आये ❀ कह्यो न अस द्वारपन सुनाये ॥
जाइ लख्यो रानी कहँ राजा ❀ बैठी सन्मुख श्रीयदुराजा ॥
लै कर बीन कृष्ण पद गावै ❀ बार बार हगवारि बहावै ॥
प्रेम मगन नहिं लख्यो नरेशै ❀ अनमिष देखति रूप रमेशै ॥
रानी दशा निरखि महिपाला ❀ भयो प्रेमवश तुरत बिहाला ॥
बैठ्यो भूप समीप क्षिधारी ❀ तब रानी नृप ओर निहारी ॥
भई जोरि कर सन्मुख ठाढी ❀ रानी उभै मोद रस बाढी ॥
भूप कह्यो जो हमको चाहो ❀ तौ मेरो शासन निरवाहो ॥

दोहा—जैसे गावति प्रथमही, रही सहित अनुराग ॥
तैसहि बीन बजायकै, गावो तुम बड भाग ॥ १० ॥

लहि शासन पतिको हरिप्यारी ❀ गावन लागी सुरन सुधारी ॥
यहि विधि तहँ रानी अरु राजा ❀ बितये निशि भूल्यो सब काजा ॥
ब्रह्म मुहूरत जानि नरेशा ❀ आयो निज यदुनाथ निवेशा ॥
भयो सोर अंतःपुर माहीं ❀ राजा चहत नई तिय काहीं ॥
कियो सबनते अधिक सुहागा ❀ यह शत रानिन नीक न लागा ॥
तब सब कीन्हो मनहि विचारा ❀ रीझो जेहि हित कंत हमारा ॥
हमहूं सकल करैं सोइ कर्मा ❀ दियो ठीक सिगरी यह धर्मा ॥
लागीं सब मंदिर बनवावन ❀ पृथक् पृथक् प्रभुको पधरावन ॥
यकते अधिक एक हरि भोगू ❀ कियो लगावन हेतु नियोगू ॥
मच्यो सोर यह सब थलमाहीं ❀ मिलि २ सब पुरजन तहँ जाहीं ॥
पुरजनहू लखिके यह रीती ❀ यथायोग किय हरिपद प्रीती ॥
यथा योग मंदिर बनवाये ❀ यथा योग ठाकुर पधराये ॥

दोहा—राममई ह्वैगो नगर, मिटिगो नरक पयान ॥
यक रानी परभावते, भक्ति विभव दरशान ॥ ११ ॥

शतरानी नृप रीझन हेतू ❀ रच्यो विमल बहु कृष्ण निकेतू ॥
है हरिभक्ति करत सब केरो ❀ भयो हृदय हरिभक्ति उजेरो ॥
यह हरिभक्ति प्रभाव विचारो ❀ तामें इक इतिहास उचारो ॥
रह्यो साहु यक इक पुर माहीं ❀ तासु सुता इक रही तहाहीं ॥
सकल अंग सुंदरि सब भांती ❀ लख्यो ताहि भंगी यक राती ॥
कामविवश सो विह्वल भयऊ ❀ पर्यो भवनमहँ मनु मरि गयऊ ॥
देखि दशा पूंछ्यो तेहि नारी ❀ भई कौन पति तुमहिं बिमारी ॥
कह्यो डोम नहिं रुज मोहिं येको ❀ जौन रोग सो घटै न नेको ॥
अहै कछुक नहिं तासु उपाई ❀ ताते मोरि मीचु नियराई ॥
तब हठ परी डोमकी नारी ❀ तहां डोम अस बात उचारी ॥
देख्यो साहसुताको जबते ❀ भूख प्यास भूली मोहिं तबते ॥
लिख्यो न विधि मिलिबे तिहि मोही ❀ प्राण जई विधवापन तोही ॥

दोहा—सुनत डोमातिय सोच भरि, काल कौनहू पाइ ॥
साहसुताके कानमें, दिय वृत्तांत सुनाइ ॥ १२ ॥

साहसुता सुनिकै करि दाया * कहत भई रघु तैं अस माया ॥
बाहरनगर तोर पति जाईं * बैठे रामनाम रटलाईं ॥
भोजन पान तजे सब काला * सोर होइ पुरमाहिं विशाला ॥
साधु जानि जब पुरजन जैहैं * तब हमहूं दरशन मिसि ऐहैं ॥
निज पति प्राणदान सुनि सोई * पतिसों कह्यो सकल मुदमोई ॥
सुनत डोम लहि जीवनमूरी * तुरत लगाइ सकल तनु धूरी ॥
पुर बाहिर बैठ्यो इक ठामा * रसना रटै रामकर नामा ॥
बीते पांच सात दिन राती * मच्यो सोर पुरमहँ यहि भांती ॥
आयो साधु अनूपम एकू * रटै राम भोजन नहिं नेकू ॥
सुनि पुरजन दरशन हित जाहीं * फिरि फिरि इक एकन बतराहीं ॥
साहसुता तब कह्यो पिताको * कहो तो दरश करैं हम ताको ॥
साह कह्यो तुम जाहु कुमारी * साधु दरश लीजै सुखकारी ॥

दोहा—साहसुता गमनी तहां, विशद कनात लेवाइ ॥
चारिहु वीर लगायकै, कह्यो एकली जाइ ॥ १३ ॥

जाके हित यह स्वांग बनाई * सो मैं तेरे हित इत आई ॥
अस कहि कीन्हीं चरण प्रहारा * डोम तबै नहिं नैन उघारा ॥
प्रथम स्वांग करि सो तहँ बैठ्यो * जपत नाम प्रेमांबुधि पैठ्यो ॥
नाम प्रभाव सत्य सो भयऊ * विषय मनोरथ मन मिटि गयऊ ॥
दरशन लह्यो राम कर रूपा * देखि परचो दुखप्रद भव कूपा ॥
देखि मौन तेहि साहकुमारी * मैं वोही पुनि गिरा उचारी ॥
कह्यो डोम तब कन्या पाहीं * तै वोही पै मैं वह नाहीं ॥
जाहु सुता तुम लौटि निवासा * अब मोहिं राम मिलनकी आसा ॥
वचन सुनत फिरि गई कुमारी * डोम लियो निज जनम सुधारी ॥
देखो राम नाम प्रभुताई * स्वांगहु करत सांच ह्वै जाई ॥
स्वांगहु करै जो प्रभुके हेतू * ताहि करत निज कृपा निकेतू ॥
सुरतरु राम नाम रे भाई * जपहु सकल जग काज विहाई ॥

दोहा—नहिं प्रयास नहिं खरच कछु, बकत २ बनिजाइ ॥
ऐसी वस्तु विसारिवो, कौनि चातुरी आइ ॥ १४ ॥

रहै शूद्र इक कालू नामा * मारन मीन चल्यो तजि धामा ॥
नदी तीर जब मारन लाग्यो * देख्यो जनसमूह तहँ भाग्यो ॥
बहुरि सुन्यो दुंदुभी अवाजू * औरहु रथ गज तुरँग गराजू ॥
डरप्यो आवत सैना जानी * बोझ ढोवैहै यह अनुमानी ॥
सकल साजु तहँ जलमहँ बोरी * मूंदि नैन रज लेपि बटोरी ॥
बैठ्यो अचल सरित तटमांहीं * कढ़न लगी नृप चमू तहांहीं ॥
जानि साधु सब करहिं प्रणामा * भेंट देहिं धन वसन ललामा ॥
जब कढ़िगै सिगरी नृप सैना * मंद मंद खोल्यो तब नैना ॥
देख्यो रजत कनक पट ढेरी * गुणि अचरज पुनि चहुँदिशि हेरी॥
लै धन सो मनमाहिं विचारयो * साधु वेष क्षणभरि मैं धारयो ॥
जनम प्रयंत धरौं जो वेषू * तो मिलिहै धन मोहिं अलेषू ॥
अस विचार धारे सो रूपा * फिरन लग्यो द्वारन बहु भूपा ॥

दोहा–मिलन लग्यो तेहि धन अमित, कछुककालमहँफेरि
मिटी वासना चित्ततें, डरप्यो निज अघ हेरि॥१५॥
भजन कियो धनलोभ तजि, हरिसों तज्यो दुराव ॥
साधु वेषको जानियो, ऐसो प्रगट प्रभाव ॥ १६ ॥
साधुवेष हरिनामको, छै इतिहासन माहिं ॥
वर्ण्यो नेकु प्रभाव मैं, ताकी मति कछु नाहिं ॥१७॥

अंबरीष भो भक्त महाना * जान्यो नहिं विवाह भगवाना ॥
राज करत बीत्यो बहु काला * पायो प्रजा न नेकु कसाला ॥
कबहुँ न राजकाज नृप कीन्हो * निशि दिन हरिसेवन मन दीन्हो॥
जानि अनन्य उपासक राजे * हरि शासन दिय चक्र दराजे ॥
नृप मम सेवन निरत निशंका * तकत न आपन सुयश कलंका॥
ताते तुम ताकर सब काजू * रहौ सुधारे नासि अकाजू ॥
तबते चक्र काज सब करतो * मित्रन मोद अमित्रन दरतो ॥
यहि विधि बीति गयो बहु काला * नृपहि न लग्यो जगत जंजाला ॥
समय एक भो कार्तिक मासा * भूप अवध तजि सहित हुलासा॥

मज्जन हित मथुरा महँ आयो ❀ विधियुत कातिक मास नहायो ॥
जब प्रबोध एकादशि आई ❀ राजा हरि उत्सव मन लाई ॥
करि उत्सव निर्जल व्रत कीन्हो ❀ जागि बिताइ शर्वरी दीन्हो ॥
दोहा-पुनि द्वादशी विचारि नृप, षट अर्बुद गोदान ॥
सालंकार सविधि दयो, पंडित दीन द्विजान ॥१८॥
गो द्विज हरिपद पूजन करिकै ❀ पारन करन चह्यो सुख भरिकै ॥
तेहि समय दुर्वासा आये ❀ शिष्य सहस दश संग सोहाये ॥
मुनि आगमन सुनत नृप धायो ❀ बारबार चरणन शिर नायो ॥
लाय विशद आसन तेहि दीन्हो ❀ पूजन करि परदक्षिण कीन्हो ॥
हाथ जोरि पुनि विनय सुनाई ❀ आज्ञा कहा होत मुनिराई ॥
मुनि कहँ करति क्षुधा मोहिं बाधा ❀ भोजन देहु भूप यह साधा ॥
नृप कहँ भोजन सकल तियारो ❀ शिष्यन युत मुनि क्षुधा निवारो ॥
मुनि प्रसन्न ह्वै कह्यो भुवाले ❀ मध्यदिवस संध्याकर काले ॥
संध्या करिहौं यमुन नहाई ❀ पुनि करिहौं भोजन इत आई ॥
अस कहि गे यमुना मुनिराई ❀ लागे संध्याकरन नहाई ॥
भै विलम्ब बेला कछु चलिगै ❀ तब द्वादशी दंड यक रहिगै ॥
तब पंडितन बोल नृपराई ❀ अपनी शंका सकल सुनाई ॥
दोहा-दंडमात्र है द्वादशी, पारन विधि तेहि माहिं ॥
नेवतो द्विज आयो नहीं, उचित अशनहू नाहिं ॥१९॥
उभय प्रकार धर्म संकेतू ❀ रहे धर्म बुध बोधहु नेतू ॥
तब सब पंडित कियो विचारा ❀ वसुधापतिसों वचन उचारा ॥
एकादशी सविधि व्रत करई ❀ पारनको न द्वादशी टरई ॥
जो द्वादशी करै न आहारा ❀ तौ व्रतफल नाहिं वेद उचारा ॥
दंडहु भर द्वादशी जो पाई ❀ करै अशन तेहि फल नाहिं जाई ॥
द्वादशि दंडमात्र अवशेषा ❀ तातें अस निरधार विशेषा ॥
विप्र निमंत्रित विना जिवाये ❀ ह्वैहैं दूषण भोग लगाये ॥
जलको पान कहत श्रुति सोऊ ❀ अहै अभोजन भोजन दोऊ ॥

तातें चरणामृत करि पाना ❀ परिखहु द्विजकह भूप सुजाना ॥
तब राजा चरणामृत लीन्हो ❀ बैठ्यो मुनि आगम मन दीन्हो ॥
उत दुरवासा यमुन नहाई ❀ करि संध्या मध्याह्न तहांई ॥
आयो सपदि भूप घरमाहीं ❀ निरख्यो अंबरीष नृपकाहीं ॥
दोहा-योगविवश करि ध्यान तहँ, नृप चरणामृत लेव ॥
दुर्वासा लिय जानि सब, मान्यो मन दुरभेव॥२०॥
भयो कोप मनु काल कराला ❀ निकसी सकल वदनते ज्वाला ॥
बोल्यो भूपहि वचन कठोरा ❀ रे शठ भाषिन मंत्र न मोरा ॥
तैं भोजन लीन्हे करि काहे ❀ दहत कोप तनु विन तोहिं दाहे ॥
करत रहत निशि दिन पाखंडा ❀ उचित तोहिं दीबो अब दंडा ॥
ऋषिके वचन भूप सुनि काना ❀ जोरि पाणि अस वचन बखाना ॥
विप्रकाज लागें मम प्राना ❀ यातें अहै धर्म नहिं आना ॥
अस कहि रहो जोरि कर ठाढो ❀ अतिशय आनँद मनमहँ बाढो ॥
दुर्वासा निज जटा उखारी ❀ पटकी महि नृप नाश विचारी ॥
पटकत जटा तहां भयकारी ❀ कृत्यानल निकस्यो तनुधारी ॥
पांव उतंग ताल सम जाके ❀ श्याम स्वरूप लंब भुज ताके ॥
निकसे रद ठाढे शिर बाला ❀ अरुणनयन मनु पावकज्वाला ॥
लंबनासिका जीह निकारी ❀ पावक बढत दहत दिशि चारी ॥
दोहा-उभय हस्त काढे खड्ग, मनहु प्रलयको रुद्र ॥
शासन होत कहा हमैं, अस कहि मुनिसूं क्षुद्र २१॥
मुनिकह अंबरीषकहँ दाहू ❀ यह अतिशय पापी नरनाहू ॥
सुनि मुनि वचन सोरकरि घोरा ❀ कृत्यानल धायो नृपओरा ॥
हाहाकार मच्यो पुरमाहीं ❀ भूपहि हर्ष शोक कछु नाहीं ॥
तब हरि जोन कियो रखवारो ❀ चक्र सुदर्शन तेज अपारो ॥
जानि न कछु नृपकर अपराधा ❀ वृथा करत कृत्यानल बाधा ॥
धायो कोटिन भानु प्रकाशा ❀ भासत भूरि भास दस आशा ॥
दुर्वासा कृत्यानल काहीं ❀ कीन्हो भस्म येक पल माहीं ॥

रामदासकर जानि विरोधा ❀ दुर्वासा पर करि अति क्रोधा ॥
धायो ताहि जरावन हेतू ❀ भगे शिष्य जीवनकरि नेतू ॥
सह्यो न चक्र तेज दुर्वासा ❀ जानि आपनो तेहि क्षण नासा ॥
भागे परम भयाकुल वोऊ ❀ कीन्हो रगदि सुदर्शन सोऊ ॥
दोहा–भागे बचव नहीं दिख्यो, कीन्हो तब सिद्धेश ॥
मंदर कंदर अंदरै, बंदर सरिस प्रवेश ॥ २२ ॥
चक्रतेज पावक गिरि लागी ❀ जंतु जमाति नादकरि भागी ॥
भइ तेहि गुहा आंच अधिकाई ❀ दुर्वासा कढि चल्यो पराई ॥
पूरव दक्षिण पश्चिम उत्तर ❀ बच्यो न कहूं चक्रते मुनिवर ॥
पैठि गयो सागर जल माहीं ❀ चक्र धस्यो करि तेज तहांहीं ॥
लाग्यो जुरन सिंधुकर नीरा ❀ तहँते पुनि भाग्यो तजि धीरा ॥
सात लोक पुनि घुस्यो पताला ❀ दानव जानि चक्र निजकाला ॥
लिये दंड वारन तेहि कीन्हे ❀ बचिहो नाहिं भागहु कहि दीन्हे ॥
भाग्यो पुनि तेहिते दुर्वासा ❀ मिटति जाति जीवनकी आसा ॥
इंद्र वरुण यमलोकन माहीं ❀ मुनिवर गवनत जहां जहांहीं ॥
तहँ तहँ देव देवाइ किवांरा ❀ नाहिं बाचिहो अस करत उचारा ॥
त्रिभुवन माहिं परयो आतंका ❀ मानै सबै चक्रकी शंका ॥
स्वर्गलोकमहँ बचव न देखी ❀ विधिपुर गयो त्राण निज लेखी ॥
दोहा–आवत दुर्वासै निरखि, विधि कर बंद किंवार ॥
टरहु टरहु अस वचनकह, इति नहिं रक्षनहार ॥ २३ ॥
भगवतदास विरोधी काहीं ❀ मोरि शक्ति राखनकी नाहीं ॥
जो करिहौं तुम्हारि रखवारी ❀ मोहि युत लोक चक्र हठि जारी ॥
अस कहि कर पकराइ निकारयो ❀ दुर्वासा कैलास सिधारयो ॥
मोर अवशि शिव रक्षन करि हैं ❀ अंश जानि अपराध विसरि हैं ॥
जाय गिरयो शंकरपद माहीं; ❀ त्राहि त्राहि त्राता कोउ नाहीं ॥
शिव कह निकरहु निकरहु इतते ❀ जाहु जाहु आये मुनि जितते ॥
रक्षा करन मोरि गति नाहीं ❀ साधु विरोध कुशल कहु काहीं ॥

यह कैलास भसम है जैहै * गणनसहित मोहिं चक्र जरै है ॥
तब मुनि कह्यो बहुरि शिर नाई * नाहिं रक्षहु तो कहहु उपाई ॥
कह्यो शंभु वैकुंठहि जाहू * रक्षन करी रमाकर नाहू ॥
शंभुवचन सुनि भग्यो मुनीशा * गयो विकुंठ जहां जगदीशा ॥
गिरयो पाहि कहि चरणन मूला * होहु नाथ मोपर अनुकूला ॥

दोहा-मैं जान्यो नहिं रावरे, दासनको परभाव ॥
तातें अब नहिं देखियतु, अपनो कहूं बचाव २४॥

प्रभु कस दया न लागति तोहीं * चक्र सुदर्शन दाहत मोहीं ॥
प्रथम रहे तुम परम कृपाला * कस अस निठुर भये यहि काला॥
रह्यो मोर अति कोप स्वभाऊ * ताको यह देख्यो परभाऊ ॥
हे हरि अंबरीश तुव दासा * देन चह्यो मैं ताकहुँ त्रासा ॥
सो अपराध मिटै प्रभु जैसे * मोपर करौ अनुग्रह तैसे ॥
नरकहु परे लेत तुव नामा * कटत शोक पावन सुखधामा ॥
मैं तो गिरयो शरण तुव आई * अब काहे नहिं देहु बचाई ॥
आरत वचन सुनत यदुराई * बोले मंद मंद मुसक्याई ॥
हम तो भक्तनके आधीना * मेरो कछू होत नाहिं कीना ॥
मेरो हियो भक्त हरि लीनो * तन मन सकल समर्पन कीनो ॥
ताते भक्तनके अपराधा * नहिं बल मोर जो मेटहुँ बाधा ॥
मोर भक्त मोहिं प्राणपियारे * तिमि मानत मोहिं भक्त हमारे ॥

दोहा-बंधु सखा कमला अहिप, अरु वैकुंठहु प्राण ॥
संतनते नहिं मोहिं प्रिय, जानु मुनीश प्रमाण॥२५॥

हमें अहे सर्वस मुनि जिनके * सहि अपराध सकै किमि तिनके॥
जे धन धाम धर्म सुत नारी * तज्यौं ताके लिय शरण हमारी ॥
उभय लोक आशा सब त्यागी * भये चरण मेरे अनुरागी ॥
तिनको हम कैसे तजि देहीं * छोंडि कौनके होहु सनेही ॥
मम पग बांधि प्रेमकी डोरी * मोहिं अपने वश किय बरजोरी ॥
जैसे पतिव्रता कोउ नारी * निजपति वशकरि होहि पियारी॥
संत मोर सेवा कहँ छोडी * कबहुँ न आश औरकी ओडी ॥

तब पुनि और विभव कहँ रहतो ❋ जाको संत चोपि चितचहतो॥
मैं संतनहिय बसूं सदाहीं ❋ संत बसै मेरे हिय माहीं॥
मोहिं छोडि ते और न मानैं ❋ तिन्हैं छोडि हम और न जानैं॥
पै हम देहिं उपाय बताई ❋ जाते तोर त्रास मिटि जाई॥
चहै जो करन साधु अपराधा ❋ उलटि होति ताहीको बाधा॥

दोहा-यदपि न यम दम तप जपहु विद्या व्रत युत धर्म॥
तदपि कोप वश कुमति द्विज, लहत कबहुँ नहिं शर्म२६॥

ताते अंबरीषके पासा ❋ गवन करहु आसुहि दुर्वासा॥
क्षमा करावहु निज अपराधा ❋ तबहीं मिटी तुम्हारी बाधा॥
विप्र न बचिहो आन उपाई ❋ चक्र सुदर्शन तोहिं जराई॥
अस जब दिय शासन यदुराई ❋ चक्रतेज तापित मुनिराई॥
अंबरीषके पास सिधारयो ❋ नृप ढिग अपनो बचन विचारयो॥
श्वास लेत मुनि बारहिं बारा ❋ खुली जटा नाहिं देह सँभारा॥
मुरि मुरि तकत चक्रकी वोरा ❋ चलो सुदर्शन आवत घोरा॥
शिथिल भये पग सकत न भागी ❋ चलन प्रस्वेद धार तनु लागी॥
गिरत परत उठि भँवत मुनीशा ❋ मानो निर्विष भयो फनीशा॥
आयो अंबरीषके पासा ❋ दूरिहिते लखिकै दुर्वासा॥
गिरयो निकट महँ भूपति केरे ❋ बिसुधि नृपतिकी वोर न हेरे॥
पकरन चरण करन पसराई ❋ बोल्यो मुनि दृग आंसु बहाई॥

दोहा-चक्रतेजते जरत हौं, ठौर न और देखाइ॥
विधि हरि हर रक्ष्यो नहीं, लीन्हो तोहि तकाइ२७॥

महाराज अब मोहिं बचावो ❋ दीनहि देख दया उर लावो॥
देखि दशा दुर्वासा केरी ❋ नृपके दाया भई घनेरी॥
पकरि पाणि लीन्हो मुनि केरो ❋ कह्यो न गहहु चरण प्रभु मेरो॥
मैं तो अहौं रावरो दासा ❋ यह अनुचित करिये दुर्वासा॥
पुनि नृप लख्यो चक्रकी वोरा ❋ मनहुँ उदित दिननाथ करोरा॥
अंबरीष तब दोउ कर जोरी ❋ चक्रहिं प्रस्तुति कियो निहोरी॥

करहु क्षमा द्विजकर अपराधा * यदुपति आयुध कृपा अगाधा ॥
मोहिं कलंक यह लागत भारी * जो तुम दियो विप्र कहँ जारी ॥
जो कछु होइ सुकृत प्रभु मोरी * तो द्विज बचै तापते तोरी ॥
जो द्विज पद सेवक कुल मोरा * तो द्विज होइ दुखी नहिं थोरा ॥
जो सुर सब मोपर अनुकूला * द्विजहि होहु तौ नहिं प्रतिकूला ॥
मोहिं ब्रह्मण्य कहै जो कोई * तो सुनाभ शीतल हठि होई ॥

दोहा–तन मन औरहु वचनते, होहुँ जो मैं हरिदास ॥
मोपर होहि प्रसन्न हरि, तो मुनि होय अत्रास ॥ २८ ॥

यहि विधि विनय भूप जब कीन्हो * तब सुनाभमुनि कहँ तजि दीन्हो ॥
दुर्वासा लहि अति अहलादा * राजहिं दीन्हो आशीर्वादा ॥
पुनि नरनाथहि लग्यो सराहन * तुम समानको द्विज दुखदाहन ॥
महिमा हरिदासनकी भारी * लियो आजु मैं आँखि निहारी ॥
क्षमा योग नाहिं मम अपराधा * तदपि भूप मेटी मम बाधा ॥
धन्य धन्य हो धरणि अधीशा * पूरे कृपापात्र जगदीशा ॥
सुनि दुर्वासाकी अस बानी * मुनिपद गह्यो भूप दोउ पानी ॥
मुनिहिं भवन महँ गयो लेवाई * शिष्य सहित भोजन करवाई ॥
बारबार पद महँ धरि शीशा * कियो मुनीशहिं विदा महीशा ॥
चक्रत्रास भागत दुर्वासे * बीत्यो येक वर्ष युत त्रासे ॥
तबलों रह्यो भूप तहँ ठाढो * सोइ चरणामृत लै मति गाढो ॥
जब दुर्वासा सुखित सिधारा * अंबरीष तब कियो अहारा ॥

दोहा–अंबरीषकी यह कथा, वरण्यो मति अनुरूप ॥
अंबरीषसों भागवत, भयो न भुविमें भूप ॥ २९ ॥
अंबरीषको कहतहूं, पुरब जन्म इतिहास ॥
रह्यो विप्रवर येक कोउ, वेद शास्त्र अभ्यास ॥ ३० ॥

नृपकी नई नारि जो आई * रही येक द्विजसुता सुहाई ॥
रजवश भई सुता इक काले * सोइ वेद गवन्यो तेहि आले ॥
भई कामवश परसत नारी * कछू कालमें मरी कुमारी ॥

फेरि वैद्य यमलोक सिधारा ❋ बहुरि भयो सो आइ सोनारा ॥
गणिका भै सो विप्रकुमारी ❋ भै सोनार वेश्याकी यारी ॥
वारवधू धन संचित कीन्हो ❋ शिव मंदिर सुन्दर रचि दीन्हो ॥
सो सुनार वैष्णव कछु रहेऊ ❋ शिव मंदिर कलशा रचिलयऊ ॥
चढि मंदिरमें कलश लगाई ❋ उतरत गिरयो मरयो महिआई ॥
गणिका जरी संग महँ ताके ❋ आये गण हरि हर ब्रह्माके ॥
निज निज लोक चहे लै जाना ❋ झगरो माचि रहो विधि नाना ॥
तब विधि आइ कह्यो अस न्याऊ ❋ स्वर्णकार है है नृप राऊ ॥
गणिका है है ताकरि रानी ❋ पतिव्रता सुशील मतिखानी ॥

दोहा-तब दोउ जवने देवके, है हैं भक्त अनन्य ॥
तौन आपने लोकको, लै जै है दोउ धन्य ॥३१॥
स्वर्णकार सोइ होत भो, अंबरीष महराज ॥
गणिका सोइ रानी भई, हरिपुर गे सुखसाज॥३२॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥४६॥

अथ रंतिदेवराजाकी कथा।

दोहा-वर्णौं बहुरि अनूप नृप, रंतिदेव इतिहास ॥
याचक जाके भवनते, कबहु न गयो निरास॥१॥

रंतिदेव नृप भयो उदारा ❋ जो मांगै सो तेहि दे डारा ॥
देत देत कछु रह्यो न घरमें ❋ पै न नेह छूट्यो यदुवरमें ॥
सुत सुतवधू और प्रिय नारी ❋ आपु सहित निकसे नृप चारी ॥
निवसे कानन कुटी बनाई ❋ वृत्ति अकाश गही नृपराई ॥
भोजन हेतु अन्न मिलि जावै ❋ दै डारहिं जो याचक आवै ॥
अडतालिस दिन यहि विधि बीते ❋ पै नृप तज्यो न व्रत निज हीते ॥
क्षुधा तृषाते कंपत अंगा ❋ भोजन करन चह्यो सुतसंगा ॥
ताही समय अतिथि इक आयो ❋ भूखे हौं अस वचन सुनायो ॥
ताहि क्षुधा आतुर नृप जानी ❋ निज भोजन दीन्हो मतिखानी ॥

अतिथि अघाय जात जब भयऊ * तब जो कछु भोजन रहिगयऊ ॥
सुत सुतवधू नारि सँग लैके * भोजन करन चहे मुद ह्वैके ॥
आयो एक शूद्र तेहि काला * कह्यो क्षुधित हौं मैं महिपाला ॥
दो०—अतिथि अनंत स्वरूप गुणि, सुततिय क्षुधित विचारि ॥
चारि भाग करि भोजनै, दियो भाग निज टारि ॥ २ ॥
करि भोजन जब शूद्र सिधारयो * भोजन करन नरेश विचारयो ॥
तब दूजो पुन कियो पयाना * लीन्हे संग माहँ द्वै श्वाना ॥
रंतिदेवसों कह्यो पुकारी * मोहिं क्षुधावश दुखित विचारी ॥
श्वान सहित नृप भोजन दीजे * निजते अधिक क्षुधितगुणिलीजे ॥
तब सुत२तिय निजतिय भागा * दैदीन्हो तेहि भरि अनुरागा ॥
करि पूजन प्रदक्षिणा दीन्हो * हरि स्वरूप गुणि वंदन कीन्हो ॥
जब जल भरि बाकी रहि गयऊ * पान करनको नृप मन दयऊ ॥
तब आयो पुनि इक चंडाला * कह्यो देहु जल दान भुआला ॥
सुनि ताकी अति आरत वानी * देख्यो प्राण जात विन पानी ॥
तब अतिशय करुणारससाने * सुततियसों अस वचन बखाने ॥
अष्ट ऋद्धि युत मुक्तिहु काहीं * ये नहिं मैं मांगहुँ हरिपाहीं ॥
पै यक वस्तु लहनकी चाहा * सो बकसै कमलाकर नाहा ॥
दोहा—जेते जगके जीव हैं, ते सब लहैं अनंद ॥
सिगरेनको दुर्भोग फल, मैं भोगौं दुख द्वंद ॥ ३ ॥
क्षुधा तृषा श्रम मोह विषादा * शोक दीनता अघ अपवादा ॥
ये सब करि हैं तुरत पयाना * प्यासे कहँ दीन्हे जलदाना ॥
अस कहि सहि निजतृषा महानी * चांडालहिं दीन्हो नृप पानी ॥
चांडालहि जल देत तुरंता * प्रगट भयो कमलाकर कंता ॥
देखि भूप उठि कियो प्रणामा * नहिं याच्यो कछु नृप मतिधामा ॥
मांगु मांगु कह रमानिवासा * नृप कह नाथ नहीं कछु खासा ॥
यातें अधिक काह अब पैहौं * जो न याचना तुमहि सुनैहौं ॥
अति प्रसन्न ते भे भगवाना * प्रगटायो यक विमल विमाना ॥

सुत सुतवधू नारि नृप काहीं * तुरत विमान चढाय तहाहीं ॥
लैगे श्रीपति श्रीपतिलोकू * यहि विधि हरत दास हरि शोकू॥
रंतिदेव धनि धरनि अधीशा * धनि दासन दाहिन जगदीशा ॥
को अस धीरज राखनहारा * को अस दास उधारनवारा ॥
दोहा-रंतिदेव इतिहास मैं, वर्ण्यो मति अनुरूप ॥
जो अस प्रणधारण करै, सो न परै भवकूप ॥ ४ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥

अथ रुक्मांगदराजाकी कथा।

सो०-रुक्मांगद महिपाल, भयो येक भगवानप्रिय ॥
ताकी कथा रसाल, मैं वर्णौं संक्षेपते ॥ १ ॥

राजा रुक्मांगद मतिवाना * होत भयो तेहि विभव महाना ॥
रची वाटिका यकसो भूपा * आनंदनहित नंदन रूपा ॥
तामें कुसुम अनेक लगायो * मंजु निकुंज पुंज रचवायो ॥
येक समय नभमारग ह्वैके * यक अपसरा मोदरस स्वैके ॥
जात रही सोइ राजसभाको * उपवन पवन परस भो ताको ॥
सुरभि पाय सो देखन हेतू * नृपवाटिका गई सुखसेतू ॥
तहां मनोहर कुसुम निहारी * तोरन लागे विचारि कियारी ॥
लै सुम गई शक्र दरबारा * यहि विधि करै रोज संचारा ॥
येक निशा कहुँ विचरत माहीं * भाटो कांटो लगो तहांहीं ॥
क्षीणपुण्य भै परसत ताके * उडनशक्ति रहिगै नहिं वाके ॥
सोचत भयो ताहि भिनुसारा * माली जन तेहि जाय निहारा ॥
कह्यो आइ भूपतिसों धाई * प्रभु यक नारि अपूरव आई ॥
दोहा-सुनत गयो नृपवाटिका, लख्यो उर्वशीकाहिं ॥
कामवासना भै नहीं, पूछत भो अस ताहिं ॥ १ ॥
कौन अहो तुम सुंदरि नारी * कौन हेतु वाटिका सिधारी ॥
तब उर्वशी कही अस बाता * मैं हौं स्वर्गनारि अवदाता ॥

नाम उर्वशी देखि अरामा ❀ मैं आई फूलनके कामा ॥
भांटो कांट परस पग पाई ❀ पुण्य क्षीण भै सकों न जाई ॥
भूपति येक करो उपकारा ❀ जो एकादशि तज्यो अहारा ॥
ताहि खोजि तुरतै बोलवावो ❀ मोको ताको पुण्य देवावो ॥
लग्यो खोजावन नृप पुरमाहीं ❀ मिल्यो कोउ व्रत कारक नाहीं ॥
यक कोउ रही वणिककी दासी ❀ वणिक हन्यो तेहिं लकुटन त्रासी॥
दियो न दिनभर ताहि अहारा ❀ तेहि दुख जगत भयो भिनुसारा॥
अस कोउ दूत कह्यो नृप पाहीं ❀ सुनि उर्वशी मुदित मनमाहीं ॥
ताहीको नृप देहु बुलाई ❀ अस राजासों गिरा सुनाई ॥
तुरत बुलाइ भूप तेहि लीन्हो ❀ तब उर्वशी वचन कहि दीन्हो ॥

दोहा–सुनो वणिककी दासिका, तुम ऐसो कहि देउ ॥
एकादशी व्रत जागरण, फल मेरो तुम लेउ ॥ २॥

तैसहि कही वणिककी दासी ❀ गै उर्वशी स्वर्ग छबिरासी ॥
लखि एकादशिव्रतपरभाऊ ❀ अति अचरज मान्यो नृपराऊ ॥
तबते रुक्मांगद पुर प्रानी ❀ तजे एकादशि अन्नहु पानी ॥
पुरमहँ नृप डौंडी पिटवाई ❀ जो हरिदिवस अन्न जल खाई ॥
जो जागरण करो नहिं कोई ❀ अवशि दंड भागी सो होई ॥
यमपुर गवन करै नहिं कोई ❀ दिये कोटि जन्मन अघ खोई ॥
यहि विधि गयो काल बहु बीती ❀ दिन २ दून २ हरिप्रीती ॥
रही एक रुक्मांगद कन्या ❀ कृष्णभक्त जगमें अतिधन्या ॥
येक काल ताकर पति आयो ❀ हरिवासर तेहि दिन बुध गायो ॥
नृप किय ताहि वचन सतकारा ❀ पै नहिं पूछ्यो करन अहारा ॥
तब निज सासु समीप गयोसो ❀ भोजन कछु नहिं ताहि दयोसो ॥
भूपसुता ढिग तब सो गयऊ ❀ तिय गुनि भोजन मांगत भयऊ ॥
कन्या कही एकादशिकाहीं ❀ करै अन्न जल कोउ इत नाहीं ॥

दोहा–पशु पक्षी नर नारि सब, हरिवासरको कंत ॥
अशन करै जो मम पिता, देतो दंड तुरंत ॥ ३ ॥

तब कन्याको पति दुख पाई ❀ सोइ रह्यो निशिकै मुरझाई ॥

क्षुधा विवश छूटे तेहि प्राना * गो हरिपुर चढि रुचिर विमाना ॥
ताको करि आदर हरि लीन्हो * सो हरिसों विनती अस कीन्हो ॥
कियो जन्मभर मैं प्रभु पापा * ताको मोहिं भयो संतापा ॥
आयो तुमरे सुरपुर राऊ * यह सब मेरी तिय परभाऊ ॥
ताते तेहि बुलाइ इत लीजे * नातो मोहि विदा उत कीजे ॥
तब प्रभु दूतन दियो पठाई * ल्यावहु याकी नारि लेवाई ॥
दूत आइ कह नृप दुहिताको * तुमहि बुलायो कंत रमाको ॥
तब नृपदुहिता कही बुझाई * बिनु पितु शासन सकौं न जाई ॥
बहुरि दूत पूंछ्यो हरिपाहीं * हरिकह ल्यावहु राजहु काहीं ॥
जाइ दूत राजहु सो गायो * तुमहिं सुतायुत कृष्ण बुलायो ॥
तब दूतनसों भूप बखाना * करिहैं हम युत प्रजा पयाना ॥

दोहा-राजाको वृत्तान्त सब, दूत कह्यो हरि पाहिं ॥
हरि कह जेहि जे नृप कहै, तेही ल्याउ इहांहिं ॥ ४ ॥
दूत लेवाइ विमान बहु, रुक्मांगदपुर आय ॥
पशु खगपुर जनयुत नृपहिं, हरिपुर गये लिवाय ॥ ५ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

अथ हरिश्चन्द्रनरेशकी कथा।

दोहा-अब हरिचंद नरेशकी, कथा कहूं मनरंज ॥
जाहि सुनत हरिभक्तको, विकसत मानस कंज ॥ १ ॥

भयो एक हरिचंद भुवाला * धर्मध्वजा फहरात विशाला ॥
जासु धर्मकीरति विधि नाना * फैल रही कौमुदी समाना ॥
विष्णु विरंचि शंभु दरबारा * महा महा मुनि करहिं उचारा ॥
एक समय औरहु सब कोऊ * विश्वामित्र वशिष्ठहु दोऊ ॥
कियो विवाद स्वयंभु सभामें * इक हरिचंद यशी वसुधामें ॥
कह कौशिक जो लिये परीक्षा * रही धर्म तौ सही समिक्षा ॥
अस कहि कौशिक मुनि भुवि आयो * लेन परीक्षा योग लमायो ॥

येक समय हरिचंद नरेशा * अटन करन गवन्यो कोउ देशा ॥
तहँ कौशिक निज वेष छिपाई * तपबल कन्या पुत्र बनाई ॥
दूरिहिंते भूपहिं गोहरायो * सुनि तुव नाव अतिथि हो आयो॥
कन्यापुत्र विवाहन काजा * महादान दीजै महराजा ॥
कहो जौन विधि मैं इनकाहीं * करौ तौन विधि व्याह इहांहीं ॥

दोहा—कह्यो भूप शिर नाइकै, जेहि विधि शासन देहु ॥
तेहि विधि होइ विवाह इत, यामें नाहिं संदेहु ॥ २ ॥

कह कौशिक नृप साजहु साजू * देहु याहि पदवी महराजू ॥
छत्र चमर आदिक यहि दैकै * करहु विवाह सकल दुख छैकै ॥
एवमस्तु हरिचंद उचारयो * महाराज करि विभव सँवारयो ॥
तब कौशिक पुनि वचन सुनायो * महाराज तुम याहि बनायो ॥
होइ न भूप विना महि केहू * ताते निज समान महिदेहू ॥
होहु जो सत्यवचन महराजा * तौ अब कीजे ऐसहि काजा ॥
निज समान नृप कहुँ न निहारयो * आपनि राज्य सकल दै डारयो ॥
मुनि कौशिक तहँ कह्यो बहोरी * यह नृप भयो राज करतोरी ॥
अब मोको भूपति कछु दीजै * हेम बीश मन दै यश लीजै ॥
कह नृप हम सुवरन कहँ पैहैं * पै तन बेंचि तुमहि अब दैहैं ॥
अस कहि नारी सुत सँग लीन्हो * भूप गवन काशी कहँ कीन्हो ॥
अति सुकुमार घाम तनु लागे * प्यासे भे तीनहुँ बडभागे ॥

दोहा—पाय कूप नृप येक कहुँ, करन लग्यो जलपान ॥
रानि कह्यो हम नाहिं पियत, बिन दीने द्विजदान ३

गये फेरि तीनहुँ जन काशी * विप्रदान पूरणके आशी ॥
रह्यो वणिक इक धनी महाना * तासों ऐसो वचन बखाना ॥
तुम लीजे यह सुत यह नारी * दीजे यहि वेतन निरवारी ॥
वणिक लियो दोउ दै धन भूपा * कछु न मोह किय नृपति अनूपा ॥
रह इक श्वपच कालिया नामा * तेहि समीप गो नृप मतिधामा ॥
ताके चाकर भयो महीपा * रहन लग्यो तेहि सदा समीपा ॥

लिये डोम सो रहै इजारा ❀ मृतक जरावन गंग किनारा ॥
जो न पंच मुद्रा लै आवै ❀ सो नहिं मृतक जरावन पावै ॥
इहै काम सौंप्यो नृप काहीं ❀ रहैं घाटपर बैठ सदाहीं ॥
तब करिके कौशिकमुनि माया ❀ डस्यो सर्प ह्वै नृपसुत काया ॥
मर्यो भूप सुत तब लै रानी ❀ दाहन लगी गंगतट आनी ॥
तब सुत चरण पकरि नृप टेरो ❀ जारहु यहि दैकै कर मेरो ॥

दोहा-तब रोवन लागी तिया, कह नृप सुवन तुम्हार ॥
नृप कह कर दीन्हे बिना, नाहिं ह्वैहै निरधार ॥ ४ ॥
दोउके करत विवाद इमि, बीति गई अधरात ॥
तब हरिसों रहि ना गयो, प्रगट भये मुसकात ॥ ५ ॥
विश्वामित्रहु प्रगट भे, कह्यो धन्य धरणीश ॥
तुम समान को धर्मधर, कृपापात्र जगदीश ॥ ६ ॥
यह सब माया हम कियो, धर्म परीक्षा लेन ॥
करहु राज्य अपनी नृपति, रानी सुत सह सेन ॥ ७ ॥
हरिकह जबलगि तुमजियो, तबलगि भोगहु भोग ॥
अंतकाल मम धाममें, बसिहौ हत सब सोग ॥ ८ ॥
पुनिनृपकहँ सुततियसहित, मुनिनृप पुरमहँ लाइ ॥
सकल साहिबीसहित दिय, नृप आसन बैठाइ ॥ ९ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सत्युगखंडे एकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ४९ ॥

अथ शिबिराजाकी कथा।

दोहा-अब वर्णौं शिबिभूपकी, कथा परम रमनीय ॥
शरणागत पालन कियो, दै निज तनु कमनीय ॥ १ ॥

देशसिंधु सौवीर अधीशा ❀ भयो चक्रवर्ती धरणीशा ॥
जाकी धर्मधुजा फहरानी ❀ त्रिभुवन विदित भयो नृप ज्ञानी
तीनि लोकलौं कीरति छाई ❀ अचरज गुण्यो देवसमुदाई ॥

बैठे देव शक्र दरबारा * कियो परस्पर वचन उचारा ॥
धर्म धुरंधर शिबि नृप सुनहीं * सति अरु असति ठीक नहिं गुनहिं
तब वासव अस गिरा उचारी * लेव परीक्षा हम पशुधारी ॥
अस कहि चल्यो बाजवपु धरिकै * अरु कपोत पावकको करिकै ॥
रगड़्यो बाज कपोतहिं कोपी * भज्यो सो जीव बचावन चोपी ॥
लागी रहै तासु दरबारा * सिंहासनपर बैठ भुवारा ॥
घुस्यो कपोत सिंहासन नीचे * तेंहि छन सेनहु गयो नगीचे ॥
तब कपोत बोल्यो भयभारे * मैं शरणागत भूप तिहारे ॥
लेहु शत्रुसों मोहिं बचाई * कीरति आप जगतमें छाई ॥

दोहा—कह्यो सेनसों तब नृपति, देहु कपोत बचाइ ॥
आयो यह बहुदूरिते, मेरी शरण तकाइ ॥ २ ॥

सेन कह्यो यह मोर अहारा * तुम कस वारण करहु भुवारा ॥
यही भक्ष विधि निर्मित हमको * वारण करब अयश अति तुमको ॥
कह्यो सेनसों तब महिपाला * यह मम शरणागत यहि काला ॥
लोभ ईर्षा भय वश होई * शरणागत पालक नहिं होई ॥
सकल पापको फल सो पावै * ताते किमि कपोत है जावै ॥
राज विभव महि तनु परिवारा * अहैं धर्मके हेतु हमारा ॥
तब कह सेन येक जिय राखी * बहु जिय नाशहु यश अभिलाषी॥
मम कुलयुत कपोत कहँ खैहैं * बिन कपोत सिगरे मरि जैहैं ॥
जौन धर्मते होइ अधर्मा * तौन धर्म नहिं धर्म सुकर्मा ॥
तब राजा बोल्यो अस बाणी * शरणागत पालन प्रण ठानी ॥
सकल धर्म जेहैं जगमाहीं * जीव अभयप्रदान सम नाहीं ॥
पुनि शरणागत तजब विशेषी * सकल धर्म कर नाश परेषी ॥

दोहा—पै विधि निर्मित भक्ष तुव, सोऊ खंड न होत ॥
ताते राखहु धर्म मम, जेहिते बचै कपोत ॥ ३ ॥

कह्यो सेन है एक उपाई * जो कपोतको तुला चढ़ाई ॥
तासु तोल निज तनु कर मासू * मोहिं देहु नृप सहित हुलासू ॥

बचै कपोत धर्म रहि जाई * यहि ते भूप न अपर उपाई ॥
सेन वचन सुनि शिबिनृपराई * सुखी भयो मनु सर्वस पाई ॥
बहुरि बाजसों भूपति बोले * पल मम लेहु कपोतहि तोले ॥
अस कहि तुला तुरत मँगवाई * दिय कपोत इक ओर चढाई ॥
येक ओर निज तनु पल काटी * दियो चढाय भूप जिमि माटी ॥
भयो कपोत गरू तेहिं काला * येक ओर तब बैठ भुवाला ॥
तौलावन लग्यो नृपराई * तब प्रकटे पावक सुरराई ॥
कर गहि भूप उतारि तुलाते * कह्यो वचन नायक वसुधाते ॥
सत्य धर्म धुर धारक आपू * बढै भूप तुव दुगुण प्रतापू ॥
हम इत सेन परीक्षा आये * जैसो सुन्यो देखि तस पाये ॥
दोहा–जीवत भोगो अतिविभव, तनु तजि हरिपुर जाइ ॥
पान करोगे प्रेमरस, पुनरागवन विहाइ ॥ ४ ॥
अस कहि अगिनिहुँ अमरपति, अपने अपने धाम ॥
आवत भे शंसत शिबिहि, शिबि तनु भयो अछाम ५॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

अथ दधीचिऋषिकी कथा ।

दोहा–इक दधीचिद्विज राजकिय, अनुपम पर उपकार ॥
तासु कथाको मैं करौं, अब नेसुक विस्तार ॥ १ ॥
बाढ्यो इक वृत्रासुर जबहीं * गे हरि शरण देव सब तबहीं ॥
हरि तब दियो उपाय बताई * द्विजदधीचिको अस्थिहिं ल्याई ॥
रचहु वज्र तब वृत्र विनाशा * तब सुर गे दधीचिके पासा ॥
कह्यो विप्र तुम पर उपकारी * तनुते रक्षा करहु हमारी ॥
कह दधीचि मम धन्य शरीरा * परउपकार लगै नहि पीरा ॥
सुर कह अस्थि देहु हम काहीं * और उपाय होत हित नाहीं ॥
तब तुरतहि करि कर करवाला * काटन लग्यो अंग तेहि काला ॥
तनकहु विथा नहीं मन मान्यो * परउपकार न तनु प्रिय जान्यो ॥

देवन दै यहि भांति शरीरा ॥ आप मिल्यो भुजभरि यदुबीरा ॥
को दधीचिसम और जहाना ॥ परहित कियो न तनुकर दाना ॥
देव दधीचि अस्थि लै आये ॥ विशुकरमासों पवि बनवाये ॥
तेहिते इंद्र वृत्र कर शीशा ॥ काट्यो कृपा पाइ जगदीशा ॥
दोहा-मनुजजन्म जो पाइकै, कियो न परउपकार ॥
शूकर कूकरके सरिस, जीवत भूकर भार ॥ २ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे एकपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

अथ मंदालसाकी कथा।

दोहा-भयो भूप इक होतभै, तासु कुमारी येक ॥
तासु नाम मंदालसा, सो किय ऐसो टेक ॥ १ ॥
जौन जीव मम गर्भहिं आवै ॥ जन्म मरण सो पुनि नहिं पावै ॥
दियो ठीक मन राजकुमारी ॥ निज पितुसों अस गिरा उचारी ॥
मेरे निकट पुरुष जो आवै ॥ सो पुनि क्षिती निकट नहिं जावै ॥
ताके सँग मम होइ विवाहा ॥ यह प्रण मोर पिता नरनाहा ॥
तेहि पितु कह्यो सुता भलभाषी ॥ ह्वैहै तस जसतैं अभिलाषी ॥
अस कहिकै हित ब्याह महीपा ॥ पठये चतुर चार सब दीपा ॥
खोजत खोजत काशी आये ॥ तहां प्रतर्दन नृपति सोहाये ॥
तिनसों सादर ते अस भाष्यो ॥ जस कन्यामन प्रणकरि राख्यो ॥
भूप प्रतर्दन गिरा उचारी ॥ करिहैं हम जस कही कुमारी ॥
दूत बहुरि कन्या पितु पाहीं ॥ कह्यो प्रतर्दनके प्रणकाहीं ॥
भूप प्रतर्दन मदालसाको ॥ भयो विवाह परम सुखछाको ॥
भयो व्यतीत काल कछु जबहीं ॥ मंदालसा जन्यो सुत तबहीं ॥
दोहा-बालहिपनतें पुत्रको, किया ज्ञान उपदेश ॥
एकादशयें वर्षमें, सो कढिगयो विदेश ॥ २ ॥
भजन कियो हरिको बनमाहीं ॥ जगतभीति रहिगे तेहि नाहीं ॥
मंदालसा जन्यो सुत दूजो ॥ सोऊ तेहि विधि हरिपद पूजो ॥

पुनि ताके तीजो सुत भयऊ * लहि उपदेश विपिन सोउ गयऊ॥
कियो प्रतर्दन मनहि विचारा * केहि विधि चलिहै वंश हमारा ॥
मंदालसै तबै सन्मानी * प्रिय प्रिय वस्तु दीन तेहि आनी॥
एक समय अति मुदित कराई * मंदालसै कह्यो नृपराई ॥
हम तो बहुत दियो तुमकाहीं * तुम हमको दीन्ह्यो कछु नाहीं ॥
मंदालसा कही नृप नेही * जो मांगो सो तुमको देही ॥
कह्यो प्रतर्दन असकी जोई * होय सुवन दीजै मोहि सोई ॥
मंदालसा मानि सो बैना * कह्यो पियहिं तकि तिरछे नैना ॥
मैं प्रण कीन्ह्यो पूरब ऐसो * जो सुत होइ देहुँ नहिं कैसो ॥
पै मांगहु तुम कंत निहोरी * ताते देन भई मति मोरी ॥

दोहा—अस कहिकै जब सुत भयो, तबनिज पतिकहँदीन
ताहि सिखाइ नरेश किय, राजकाजपरवीन ॥३॥

तासु अलर्क नाम पितु कीन्हा * मदालसा भई लखि दीना ॥
यह सुत लही अवशि संसारा * अस गुनि पतिसों वचन उचारा॥
भयो समर्थ पुत्र सब भांती * चलि वन भजहु कृष्ण दिनराती॥
अस कहि तेहि भूपति कहँ लैकै * यंत्र येक रचि सुत कहँ दैकै ॥
तामें लिखिकै यह श्लोका * गये विपिन पति सुत हत शोका॥

श्लोक—संगः सर्वात्मना त्याज्यः स चेद्धातुं न शक्यते ॥
स सद्भिः सह कर्तव्यः संगः संगारिभेषजम्॥१॥

जेहि वन करहिं भजन सुत तीनो * तेहि वन दंपति चहि तप कीनो॥
जननी निकट पुत्र पगु धारी * भये दुखित लखि तासु दुखारी ॥
कह्यो सोच जननी जो तोरा * सो कहु नाशहु मैं तप जोरा ॥
मंदालसा कही तब बानी * भए तीनि सुत तुम विज्ञानी ॥
तुमको है न जगतकी भीती * इक सुत गह्यो रजोगुणरीती ॥
जनम मरण सो अवशि लहैगो * पुनि पुनि संसृत शोक सहैगो ॥
ताको ल्यावहु इतै निकारी * तौ पूजै अभिलाष हमारी ॥

दोहा–मातु वचन सुनि जेठसुत, मातुलभवन सिधारि ॥
कह्यो जेठ हम सबनते, ताते राज्य हमारि ॥ ४ ॥

सेना देहु हमैं तुम मामा ❀ जीतब हम अलर्क धन धामा ॥
मातुल दीन्हो सैन घनेरी ❀ लिय अलर्क पुर चहुँदिशि घेरी ॥
पर्‍यो अलर्क काहि संकेतू ❀ लग्यो विचार करन मतिसेतू ॥
तब मनमें अस ठीक विचार्‍यो ❀ मातुपिता जब विपिन सिधार्‍यो ॥
तब मोहिं यंत्र येक रचि दीन्हौं ❀ पुनि ऐसो संभाषण कीन्हौं ॥
जब अति परै तोहि संकेतू ❀ बांचि यंत्र तब बांच्यो नेतू ॥
अस विचारि सो यंत्र उघार्‍यो ❀ तासें अर्थ यही निरधार्‍यो ॥
करै न संग कबहुँ केहु केरो ❀ करै तौ संतहि संग घनेरो ॥
ऐसो अर्थ जानि महिपाला ❀ पुरतै कढ्यौ निशीथहि काला ॥
विचरण लग्यो दूरि वन जाई ❀ देख्यो दत्तात्रय मुनि राई ॥
कियो प्रणाम सिधारि समीपा ❀ मुनि पूंछ्यो कहँ रह्यो महीपा ॥
तब अलर्क कह अतिदुख पायो ❀ करन हेतु सतसंग सिधायो ॥

दोहा–मुनि कह जो सतसंगकी, होइ चित्तमें आस ॥
राजकाज सब छोंड़िकै, बैठहु मेरे पास ॥ ५ ॥

नृपकह राज्य सकौं मैं त्यागी ❀ सो न तजै पीछे मम लागी ॥
मुनि कह मिलौ वृक्षकहँ जाई ❀ तौ पुनि देहुँ बताइ उपाई ॥
तब नृप दौरि मिल्यौ तरुजाई ❀ पुनि तजि बैठ्यो मुनि ढिग आई ॥
मुनिकह तुम यौं मिले महीजै ❀ यौं तरु मिल्यो तुमहिं कह दीजै ॥
नृपकह मिल्यो महीं तरु काहीं ❀ पूरुह मिलौ मोहिं मुनि नाहीं ॥
मुनि कह ऐसेहि करहु विचारा ❀ तुमहि मिलौ न मिलै संसारा ॥
सुनि मुनिवचन लह्यो नृपज्ञाना ❀ भजन करन वन कियो पयाना ॥
जेहि वन मातु पिता त्रैभाई ❀ बस्यो अलर्क तेहिं वन जाई ॥
सुनि अलर्क किय विपिन पयाना ❀ जानि अलर्क पुत्र मतिवाना ॥
अग्रज जोन सैन लै आयो ❀ सो ताहीको भूप बनायो ॥
गयो आप फिरि जननि समीपा ❀ बैठो तहँ अलर्क महीपा ॥
जननि कह्यो तैं किय उपकारा ❀ सकल भांति मम प्रण निरधारा ॥

दोहा-ऐसी सो मंदालसा, कृष्णभक्त शिरताज ॥
पति सुत तारण भव उदधि, आपहिं भई जहाज ॥६॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे द्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५२ ॥

अथ जड़भरतकी कथा ।

दोहा-अब वर्णौं जड़भरतकी, कथा मनोहर जोइ ॥
जो मृगसँगते लहत भो, जनम जगतमें दोइ ॥१॥
ऋषभपुत्र सो भरत भुवाला * भोग्यो राज्यसरिस सुरपाला ॥
पुनि दे जेठ सुवन कहँ राजू * गमन्यो आप विपिन तप काजू ॥
करत तपस्या भरत भुवाला * दिये बिताइ तहां बहु काला ॥
इक दिन अर्घ दान दे धीरा * बैठ रह्यो गंडकि सरि तीरा ॥
इक हरिणी आई तेहि ठामा * गर्भवती पीवन जलकामा ॥
तहँ कीन्हो यक सिंह गराजा * मृगी भगी जिय रक्षण काजा ॥
दरी दरी महँ गिरी दुखारी * गिरयो गर्भ मरिगै मृगनारी ॥
सो शावक मिलि गंडकि धारा * बहि आयो जहँ भरत उदारा ॥
लगी दया नृप लै तेहि अंका * आये कुटी मृत्युकी शंका ॥
पाल्यो ताहि करत अतिप्रीती * तेहि वश भूल गई तप रीती ॥
जो कहुँ चरत चरत कढ़ि जातो * तौ तेहिं बिन नृप अतिपछितातो
यहि विधि अति असक्त मृगमाहीं * तजन लग्यो जब नृप तनु काहीं॥
दोहा-तब मनमें मृग लग रह्यो, ताते भरत भुवाल ॥
भयो कलिंजरमें मृगा, मनगतिको यह हाल॥२॥
पै तपबल तेहिं सुरति न भूली * भै गलानि मनमाहिं अतूली ॥
मुक्तक्षेत्र पुनि कियो पयाना * करि अनशनव्रत तजि दिय प्राना॥
तपप्रभावसों द्विजकुल माहीं * लियो जन्म भूली सुधि नाहीं ॥
हरिपद पंकजमें मन लाग्यो * नेकु न जगत माहिं अनुराग्यो ॥
कुलतें अलग रहे सब काला * फिरै नगर मानहुँ मतवाला ॥
तब घरके लखि करत न कामा * ताको धरयो जडभरत नामा ॥

पठवै करन खेत रखवारी * चूत देत तौ ताहि उजारी ॥
खनन कहै तौ कूप बनावै * पूरन कहै तौ शैल उठावै ॥
जहँ बैठतहै बैठे रहतो * जौन वानि गहतो सोइ गहतो ॥
रह्यो तहां यक शूद्र नरेशा * करै चंडिकाभक्त हमेशा ॥
सो देवीमंदिर महँ जाई * कह्यो पुत्र जो दे मोहि माई ॥
तौ मैं तोहि मनुजबलि देहौं * विविध भांति पूजन करवैहौं ॥
दोहा-कछुक कालमें शूद्रके, प्रगट्यो येक कुमार ॥
आयो तब देवी भवन, लिये अमित उपहार॥३॥
नरबलि देन हेतु महिपाला * पूरवते इक मानुष पाला ॥
देवी भवन लग्यो लै जाना * सो आपन वध जानि डेराना ॥
गवनत मगमहँ राति अँधेरे * भागि गयो सो मिल्यो न हेरे ॥
दूत सबै निजनाथ डेराई * खोजन लागे चहुँ दिशि धाई ॥
खोजे मिल्यो न नरबलि जबहीं * दूत सकल शंकित है तबहीं ॥
चले भूपपहँ करत विचारा * मगमहँ जडभरत निहारा ॥
पीन परम अनाथ गुणि ताको * बलि लायक यह अति मंदाको ॥
अस कहि पकरि जडभरत काहीं * लै आये तुरते नृपपाहीं ॥
कह्यो भूप वह गयो पराई * खोजत दूरि गये हम धाई ॥
खोजे मिल्यो नहीं निशि माहीं * तब लाये हम इत याहि काहीं ॥
यह स्थूल अहै बलि लायक * याके कोउ न अहै नृपनायक ॥
सुनि प्रसन्न है शूद्र भुवाला * लै तेहिं अर्द्ध रातिके काला ॥
दोहा-देवी मंदिरमें गयो, चहुँ कित बारयो दीप ॥
जडभरतहिं नहवायकै, ल्यायो देवि समीप॥४॥
भरतहिं अरुण वसन पहिराई * चंदन रक्त ललाट लगाई ॥
मानि मनुज बलि पूजन कीन्हे * बहु निवेद आगे धरि दीन्हे ॥
तब जडभरत कियो अति भोजन * हर्ष विषाद विगत मन मोजन ॥
तबहि पुरोहित देवी केरी * प्रस्तुति लाग्यो करन घनेरी ॥
शूद्र कह्यो सुत दीन्हो माई * मैं नरबलि दीबो सुख पाई ॥

हे नरशालि करु कृपा विशेषी * मोहिं अपनो सेवक अवरेषी ॥
अस कहि काढि कृपाण कराला * दियो पुरोहित पाणिभुवाला ॥
पणव मृदंग तूर सहनाई * बाजे बाजि रहे सुरछाई ॥
देवी सन्मुख सो हरिदासा * बैठ रह्यो नाहिं नेसुक त्रासा ॥
जबै पुरोहित तेग उबाहै * द्विजके कंठ चलावन चाहै ॥
महाभागवतको अपचारा * सहि न सक्यो वसुदेवकुमारा ॥
तहँ प्रगट्यो द्विजतेज तुरंतै * देवी उचटि परी कहुँ अंतै ॥
दोहा—जरन लग्यो काली वपुष, तब करि कोप अपार॥
प्रगट भई मूरति मति, अतिभयंकरअकार॥८॥
उपरोहितको पाणि मुरेरी * लियो छोडाय कृपाणि करेरी ॥
भृकुटी वंक लंक अतिखीनी * कुटिल दंत रसना बडि कीनी ॥
अरुण नयन अरु वदन भयावन * मानहुँ चहति जगत कहँ खावन॥
काट्यो प्रथम पुरोहित शीशा * हन्यो बहोरि शूद्र अवनीशा ॥
पुनि सब शूद्रनको शिर काट्यो * हरिदासापराध फल बांट्यो ॥
जो कोउ करै संत अपकारा * ताको यह फल करहु विचारा ॥
जडभरतहिं कछु पर्यो न जानी * लीला जौन चंडिका ठानी ॥
निशि दिन लगो रहत हरि ध्याना * का जानै कहा होत जहाना ॥
यदपि शूद्र शिरमंद बनाई * देख्यो काली चहुँ कित धाई ॥
भई न जडभरतहिं कछु भीती * यही सत्य संतनकी रीती ॥
जिनकी हृदय ग्रंथि सब छूटी * सब इन्द्रिय हरिपद महँ जूटी ॥
ते अनन्य दासन यदुनाथा * रक्षा करहिं आपने हाथा ॥
दोहा—जे कोई जन करतहैं, हरिजनको अपराध ॥
ताहीको पुनि होतिहै, उलटि जीवकी बाध ॥६॥
रह्यो सिंधु सौवीर अधीशा * नाम रहूगण जन जगदीशा ॥
लहन हेतु सो ज्ञान विज्ञाना * कपिलदेव ढिग कीन पयाना ॥
है सवार इक सुभग पालकी * सुरति करत वसुदेव लालकी ॥
आयो भूप सिंधु सौवीरा * इक्षुमती सरिताके तीरा ॥

तहां येक वाहक थकि गयऊ * लै शिबिका चलि सकत न भयऊ
तब वाहक खोजन जन धाये * कहुँते जडभरतहिं लै आये॥
मोट अरोगित तनु ठहराये * आपू तेहिं पालकी लगाये॥
भरत विषाद हर्ष नहिं कीनो * शिबिका बास कंध धरि लीनो॥
लै शिबिका जब चल्यो खिधारी * नांघत पथमहँ जीव निहारी॥
तब पालकी विषम ह्वै जाती * धक्का लगत भूपकी छाती॥
तब अतिकोप भयो महिपालै * कह्यो पालकी कत अतिहालै॥
तब डेराय वाहक सब बोले * चलहि सीध हम हैं नहिं भोले॥
दो०—पै नवीन वाहक लग्यो, धरत कूद पथ पाउँ॥
तातें डोलति पालकी, लगत हमारो नाउँ॥ ७॥
तब भूपति झुकि वक्र निहारी * जडभरतहि अस गिरा उचारी॥
रे शठ मोट निरोगित देहू * निर्बल जानि परत नहिं केहू॥
चलत विषम गति कत मग माहीं * मोरि भीति लागति तेहि नाहीं॥
विषम चाल चलि है अब जोतें * दंडप्रचंड लहैगो मोतें॥
तब जडभरत मौन रहि गयऊ * लै पालकी चलत मग भयऊ॥
भई विषम गति जीव बचाये * धक्का लगे भूप दुख पाये॥
पुनि कोपित ह्वै कह्यो नरेशा * शुणे न रे शठ मोर निदेशा॥
लहे दंड यमदंड समाना * अहै अभीति भरो अभिमाना॥
अस कहि कह्यो कटुक बहु बैना * सिंधु भुवाल लाल करि नैना॥
मनमें तब जडभरत विचारयो * नृप धोखे कटुवचन उचारयो॥
जो मोहिं देहै दंड भुवाला * तौ ह्वैहै शूलहि सम हाला॥
यदपि सहूंगो मैं अपराधा * पै प्रभु मेरो कृपाअगाधा॥
दोहा—भक्तिविरोध न सहि सकी, देहै नृपकहँ दंड॥
तातें देहुँ बुझाय मैं, भूपहि ज्ञान अखंड॥ ८॥
अस कहि विहँसि भूपकी वोरा * तक्यो उलटि अंगिरसकिशोरा॥
भूपवचन जे सकल उचारे * ते यद्यपि हैं सत्य तिहारे॥
पै भारा जो कोहु पर होतो * तो ताको दुख होत उदोतो॥

महिपर पग पगऊपर जानू * तेहिपर कटि कटिपर घर थानू ॥
करपर कंध पालकी तापे * तापर तू भारा कहु कापे ॥
दंड योग अरु दंड प्रदाता * कोउ नहिं जगमहँ मोहिं दिखाता॥
तुम अज्ञानवश वचन उचारो * तापर नहीं कछु जोर हमारो ॥
औरौ कहे वचन बहुतेरा * नृपहिय ह्वैगो ज्ञान उजेरा ॥
जानि भागवत भूप डेराई * कूदि पालकीते द्रुत धाई ॥
गिर्‍यो जड़भरतचरणन माहीं * त्राहि त्राहि रक्षहु मोहि काहीं ॥
मैं नहिं जान्यो आप प्रभाऊ * रह्यो मोर अभिमान स्वभाऊ ॥
क्षमा करहु मेरो अपराधा * वसति सन्ति उर दया अगाधा ॥

दोहा-दयासिंधु मुनिवर तहां, जानि रहूगणदास ॥
करत भये हरिभक्ति युत, ज्ञान विज्ञान प्रकाश ॥९॥
भवाटवी वर्ण्यो बहुरि, भटकत जन जेहिमाहिं ॥
पुनि उदघाट कह्यो सकल, जेहिते जन दुख नाहिं १०॥
जौन दियो जड़भरतमुनि, रहूगणौ उपदेश ॥
सो आनँद अंबुधि कियो, मैं विस्तार विशेष ॥ ११॥
कपिलदेवके निकट नृप, जात रह्यो जेहि हेत ॥
सो पायो मगबीचही, गवन्यो लौटि निकेत ॥ १२॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे त्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५३ ॥

अथ अजामिलकी कथा।

सोरठा-कथा अजामिल केरि, जो प्रसिद्ध भागवतमें ॥
नारायण अस टेरि, लग्यो पार भव जलधिके॥१॥

विप्र अजामिल यक कोउ रहेऊ * धर्मपंथ नितहि सो गहेऊ ॥
सदाचार महँ कियो सनेहा * सरित नहाय प्रात तजि गेहा ॥
यहि विधि बीतिगयो बहुकाला * येक समय सो विप्र उताला ॥
ईंधन लेन गयो वनमाहीं * शूद्र येक हग लख्यो तहाहीं ॥

लै दासी गणिका बहुतेरी * तिनमें करिकै प्रीति घनेरी ॥
विहरत रह्यो विविध विधि जहँवा * पहुँच्यो जाय अजामिल तहँवा ॥
देखत ताहि नीक अति लाग्यो * कछु क्षण ठाढ रह्यो अनुराग्यो ॥
लग्यो कुसंग दोष तेहि काहीं * कह्यो अजामिल जब तेहि पाहीं ॥
जेतनी अहैं तुम्हारी दासी * हमैं देहु यक लै धनरासी ॥
मान्यो शूद्र अजामिल वानी * दियो एक दासी छबिखानी ॥
दै धन लै दासी गृह आयो * निजघरते घर भिन्न बनायो ॥
निज नारीको भूषण लैकै * दिय दासी कहँ आदर दैकै ॥

दोहा-पुनि गृहकी संपति सकल, दियो फूकि तेहि हेत ॥
ब्याही तिया निकारिकै, दासिहि दियो निकेत ॥ १ ॥

जब नहिं संपति रहिगै थोरी * लग्यो करन तब पुरमहँ चोरी ॥
मगमहँ लागि करैं जनघाता * औरहु किय अनेक उतपाता ॥
यहि विधि बीते वर्ष सतासी * भयो जबै आरंभ अठासी ॥
भाग विवश कोउ संत सिधारे * उयत हेतु घरमें बैठारे ॥
दै भोजन घर माँह बसायो * तिनके पास कछू नहिं पायो ॥
ताही निशा अजामिल दासी * जन्यो येक सुत पितु सुदरासी ॥
संतहु भोन भीति रहि आये * नारायण सुत नाम धराये ॥
संत गये पुनि देशन काहीं * फेरि अजामिल तेहि सुतमाहीं ॥
कियो प्रीति अतिशय सुखछाके * यदपि रहे नव सुत शठ वाके ॥
लहुरे सुत कहँ रोज खेलावै * ता मुख चूमि मोद अतिपावै ॥
दशो पुत्र ठग चोर महाना * करहिं पाप नहिं जाय बखाना ॥
यहि विधि बीत्यो वर्ष अठासी * आयो काल अजामिलनासी ॥

दोहा-रोगविवश अतिविकल भो, भये शिथिल सब अंग ॥
लग्यो चलन ऊरधपवन, भये नैन बदरंग ॥ २ ॥

तब यमदूत तीनि भयरासी * आवत भे लीन्हे कर फांसी ॥
परे अजामिल कहँ ते देखी * भई तासु उर भीति विशेखी ॥
डारे तुरत कंठमहँ फांसी * मारि दंड लीन्हे जिय गांसी ॥

ताकी सुरति पुत्रमहँ लागी ❀ मरणकाल महँ सोइ सुधि जागी॥
तब करि बल सुतकहँ गोहरायो ❀ जब नारायण मुख कढि आयो ॥
तब चारिहु अक्षरते चारी ❀ हरिके दूत कढे दुखहारी ॥
तोरि कंठते ताकरि फांसी ❀ अतिशय यमदूतन कहँ त्रासी ॥
लै तेहि यान चढे हरिलोका ❀ तब यमदूत कहे भरि शोका ॥
अहो कौन तुम रोकनवारे ❀ धर्मराजको शासन टारे ॥
याको कारण वेगि बतावहु ❀ तब यह पापी कहँ लै जावहु ॥
तब हरिदूत वचन अस टेरे ❀ हम किंकर नारायण केरे ॥
यह अति पुण्य कियो जगमाहीं ❀ ताते लै जैहैं प्रभु पाहीं ॥

दोहा—तब बोले यमदूत पुनि, यह अबलों मरजाद ॥
पुण्यवान पापी लहत, स्वर्ग नरकको स्वाद ॥३॥

दुष्ट अजामिल अतिशय पापी ❀ दासीरत ठग चोर सुरापी ॥
ताते नरक योग यह सांचो ❀ याते पाप येक नहि बांचो ॥
तब बोले हँसिकै हरि दूता ❀ तुम मूरख लिगरे यमदूता ॥
कौन सुकृत करिबेको राख्यो ❀ जब नारायण मुख यह भाख्यो ॥
कोटि जन्म अघ अवलि बिलानो ❀ येक जन्मकी कहां कहानी ॥
तुमरो धर्म अधर्म न जाना ❀ वृथा भरे अपने अभिमाना ॥
सोवत जागत बैठत पागत ❀ खांसत खलत हँसत अरु भागत॥
येक व्याज अरु बकत बिसूरी ❀ पीवत खावत खंडहु पूरी ॥
कहै वदनते जो हरिनामा ❀ तौ अघ जरत लहत हरिधामा ॥
जेते अघ जग अहैं घनेरे ❀ प्रायश्चित्त कहै तिन केरे ॥
प्रायश्चित किये पुनि पापा ❀ उपजत लही वासना प्रतापा ॥
पै हरिनाम कहे मुख माहीं ❀ सहित वासना पाप नशाहीं ॥

दोहा—ताते सगरे दुरितको, प्रायश्चित्त प्रधान ॥
है हरिनाम उचारिबो, वेदपुराणप्रमान ॥ ४ ॥

कवित्त—पौन ज्यों जलधपर वज्र ज्यों महीधपर क्रोध जिमि सिद्धिपर भानु तमदापपै ॥ ज्ञान ज्यों अज्ञानपर मान अपमानपर कुयशपै दान ज्यूं कृपाण शत्रुतापपै ॥ कुलपै कुपूत ज्यों सपूत ज्यों

कुपूतपर जैसे पुरुहूत दनुपूतन कलापपै ॥ रघुराज रावणपै गंग ज्यूं अपावनपै दावनपै दाव तैसे रामनाम पापपै ॥ १ ॥ कृष्ण भोजराजपर भीम कुरुराजपर जैसे रघुराज भृगुराज हैहैराजको ॥ सिंह गजराजपर शंभु रतिराजपर पान जिमि लाज अस कंद गिरिराजको ॥ शांतरस राजपै अनीति क्षितिराजपर क्रोध सिद्धकाजपर गाज तृणराजको ॥ पापन समाजपर जोर यमराज जैसे पापनपै तैसे कृष्ण नाम व्रजरा-जको ॥ २ ॥ कीटनपै भृंग जैसे भृंगपै विहंग जैसे विपुल विहंगपै ज्यों बाज जोरवार है ॥ बाजपै ज्यों मारजार मारजारपै ज्यों श्वान श्वानपै तरक्षु तापै गज मतवार है ॥ गजपर सिंह जैसे सिंहहूपै शार्दूल शार्दू-लहूपै जैसे शरभ उदार है ॥ शरभपै जैसे नरसिंह भाष रघुराज पापनपै तैसे हरिनामको उचार है ॥ ३ ॥

दोहा—गयो कंठको छूटि जब, पाश अजामिल केर ॥
उठ बैठ्यो चैतन्य ह्वै, चौंकि चितै चहुँफेर ॥ ५ ॥
हरिदूतन यमभटनको, सुन्यो सकल संवाद ॥
अति गलानि मनमें भई, छूट्यो सकल प्रमाद ॥ ६ ॥

हाय वृथा मैं जन्म गँवायो ❋ जीवनको फल कछू न पायो ॥
कबहुँ न होत मोर उद्धारा ❋ स्वप्न विषे जग झूठहिं हारा ॥
मैं आरत ह्वै सुतहिं पुकारा ❋ नारायण मुख भयो उचारा ॥
सोइ प्रभाव प्रभु दूत पठाये ❋ जलते यमकी पाश छुड़ाये ॥
ऐसो प्रभु तजि दीनदयाला ❋ आन भजौं तौ होहुँ बिहाला ॥
अस विचारि तजि गृह परिवारा ❋ गयो अजामिल द्रुत हरिद्वारा ॥
तहँ हरिभजन कियो कछु काला ❋ गयो त्यागि तनु यदुपति आला ॥
अरु यमदूत बहुरि यमपासा ❋ आवत भे मन परम उदासा ॥
यमसों कह्यो न करिहैं कामा ❋ पापिहु जान लगे हरिधामा ॥
भेद बताय देहु हम काहीं ❋ कोहि ल्यावैं ल्यावै कोहि नाहीं ॥
अबलौं तुमहिं नाथ हम जाने ❋ कब हमको यदुनाथ देखाने ॥
अबलौं लख्यो न शासन तेरा ❋ अब तौ बीच परत बहुतेरा ॥

दोहा-निज दूतनके वचन सुनि, यमकरिकै तहँ ध्यान ॥
बोल्यो वचन सप्रीति अति, करि प्रणाम भगवान॥७॥

कवित्तघना०-समदर्शीजे साधु हरि अनुराग रँगे तिनके सुयशको सुरेश सिद्ध गावै हैं ॥ रक्षित गोविंदकी गदाते वे सदाई रहैं उनके निकट काल कर्म नाहिं जावै हैं ॥ भाषै रघुराज मानो मेरी कही बात सांची जोर न हमारो कछु तिनमें बतावै हैं ॥ धोखहूमें तिनके समीप नहीं जइयो दूत बार बार तुमको विशेषकै बुझावै हैं ॥ १ ॥ रसना न जाकी एक बारहू उचारयो कृष्ण चित्त रघुराज यदुराज पद ध्यायो ना ॥ कृष्णचंद्र चरण सरोजमें न नायो शीश येको रोज संत संग सोजि मन लयायो ना ॥ दुनियामें आय हरिदासनाम पायो नाहिं केशवकी सेवामें शरीरको लगायो ना ॥ ऐसे महापापिनको दूनो दीह दंड देहु दिलमें दयाको करि कबहूं बचायो ना ॥ २ ॥ रोज रोज जाय जग खोज खोज पापिनको ल्याय ल्याय नरक निवेशनमें नाइयो॥ जाको जैसो अपराध ताको तैसो दैकै दंड यही भांति पापिनको पावन बनाइयो ॥ भाषै रघुराज राखो हुकुम हमारो अस येक बात मेरी कही केहु ना भुलाइयो ॥ धोखे अनधोखे दूतो बात यह धोखे रहो राम-कृष्णदासनके पास नहिं जाइयो ॥ ३ ॥

सवैया-जे निज पाप छोडावन हेतु अनेकन कर्म करैं हरि छोडी ॥
तौ नहिं कर्मनते उपजै अघ है तिनकी मति सांचि निगोडी ॥
पातक ताहि नहीं नियरात कहै रघुराज सही जन ओडी ॥
भक्तिसों भाउ अनेकनको करि जे भजि राधिका माधवजोडी॥

घनाक्षरी-यमको निदेश सुनि अति मजबूत दूत तबते हमेश ताहि असत विचारै ना ॥ वागै ठौर ठौर हाथ लीन्हे पाश महा घोर हरि विमुखिन डारि नरक निकारै ना ॥ भाषै रघुराज रोज रोज ऐसो काज करै ईश अपनेको काज कबहूं बिगारै ना ॥ पै गोविंद दासनको दूरहीते देखतही दूतही दुराय जात हगते निहारै ना ॥ ४ ॥

दोहा-कथा अजामिलकी कह्यो, कछु हरिनाम प्रभाव ॥
पार न पावै जो कहैं, सहस सहस अहिराव ॥८॥

शक्ति जिती हरिनाममें, पाप दहनकी होइ ॥
ते तो पातक पातकी, करि न सकत जग कोइ ॥ ९ ॥

इति श्रीसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीसीतारामचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीविश्वनाथसिंहजूदेवात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीरामचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजुदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां सतयुगखंडे चतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५४ ॥

इति सतयुगखंडः समाप्तः।

अथ त्रेतायुगके भक्तोंकी कथा।

सो०—यह हरिपदअरविंद, सत उर सर रति रस लसत ॥
मन रघुराजमिलिंद भ्रमत सुयश मधुपान करि ॥ १ ॥
जयति गिरा गणनाथ, जयति संत पद रज सुखद ॥
जय जग[त] पितु विश्वनाथ, जय मुकुंद हरि गुरुचरण २

दोहा—सुभग रामरसिकावली, सतयुगखंड बखानि ॥
बरणौं त्रेताखंडके, संत सुयश सुखदानि ॥ १ ॥

अथ हनुमान्‌जीकी कथा।

दोहा—संत शिरोमणि जानिकै, प्रथम पवनसुत नाथ ॥
वर्णहुँ मति अनुसार कछु, नाइ तासु पद माथ ॥ १ ॥

जबै राम रावण संहारी * आये अवधपुरी सुखकारी ॥
महाराजको तिलक उछाहू * होत भयो परजन सबकाहू ॥
एक समय तहँ सहित समाजा * श्रीरघुकुल भूषण महराजा ॥
सिंहासनासीन छबि छाये * सीयसहित तहँ सरस सुहाये ॥
लक्ष्मण भरत रि[पु]सूदन [बै]ठे * प्रभुमुखचंद्र बि सुधानिधि ऐठे ॥
आये देश देशके राजा * दै बाहि बैठे सहित समाजा ॥
तहँ बांदरन सहित कपिनाथा * आये बालिसुवन लै साथा ॥

दै बलि प्रभुपद महँ शिर नाई * बैठे प्रभु दक्षिण सुख पाई ॥
तहँ भट सहित निशाचरनायक * आवत भये सभा रघुनायक ॥
निरखि सभा शोभित प्रभुकाहीं * गयो छाकि अनुपम छबिमाहीं ॥
वामदिशा मिथिलेश कुमारी * लषण लसत दक्षिण धनु धारी॥
वाम भरत भरतानुज दोऊ * शोभित साजित शरासन सोऊ ॥

दोहा–प्रभुपद पंकज कंजकर, दाबत पवनकुमार ॥
सिंहासन आगे लसत, राम प्रेम आगार ॥ २ ॥

यह छबि निरखि निशाचरनाथा * पुनि पुनि नाय नाथ पद माथा॥
लिये अमोल कनक मणिमाला * दीन्हो प्रभुहि नजर तेहि काला ॥
सो माला प्रभु लै कर माहीं * सभासदन निरखे चहुँघाहीं ॥
पुनि प्रभु मनमें लियो विचारी * लहन योग मिथिलेशकुमारी ॥
दई माल मिथिलेश सुताको * सोऊ गुण्यो देहुँ मैं काको ॥
सब विधि जानि माल अधिकारी * दई पवनसुतके गल डारी ॥
रामप्रेममहँ मगन कपीसा * चितयो चौंकि मालगल दीसा ॥
तुरतहि सो मणिमाल उतारी * इक इकमणि निजदंत विदारी ॥
फोरै पुनि देखै तेहिं माहीं * मानहु ताहि मिलत कछु नाहीं ॥
यह चरित्र लखि मारुति केरो * निशिचरपति विसमय ह्वै हेरो ॥
प्रभु प्रसाद फोरयो कस भाई * याको हेतु देहु समुझाई ॥
कह्यो पवनसुत तब अस बानी * मैं मणिके अंतर यह जानी ॥

दोहा–रामनाम ह्वै है लिखो, जो सबविधि गति मोरि ॥
सो नहिं पायो मणिनमें, ताते डारयो फोरि ॥ ३॥

तब लंकेश व्यंग्य कह बानी * तुम तो रामतत्वके ज्ञानी ॥
रामनाम तुम्हरे तनु माहीं * ह्वै है लिखो शंक कछु नाहीं ॥
ताते धारण किये शरीरा * और कार्य नाहिं सुवन समीरा ॥
व्यंग्य वचन सुनि पवनकुमारा * निज नखसों निजवपुष विदारा॥
देखत सब कपीश जहँ जहँवां * रामनाम निकसत तहँ तहँवां ॥
सकल सभासद अचरज माने * रामभक्त अनुपम तेहि जाने ॥

बिहँसि कह्यो तब पवनकुमारा * परम गोप्य मैं करहुँ उचारा ॥
मंत्रबीज पुनि प्रभु कर नामा * पुनि नमामिको अरथ ललामा ॥
राममंत्र मन करै उचारा * बीतै जब यहि बिधि बहुबारा ॥
जिह्वाते न नाम तब लेई * रोकि श्वास पुनि तजि तेहि देई ॥
दोहा-जब सोवतमें बिन सुरति, रसना निकसै नाम ॥
तब बैठे आसन सहित, कहुँ एकांत जो ठाम ॥४॥
मनते मंत्र उचारन करई * ताको स्वर सिगरे तनुभरई ॥
घंटानाद सरिस तेहि रूपा * क्रमसों थिर तेहि करै अनूपा ॥
फेरि श्वासमहँ बीजहि दैकै * ऊरध श्वास लेइ सुधि कैकै ॥
फेरि चतुर्थी अरुण मकारा * छोंडत श्वासहि करै उचारा ॥
यहि बिधि तनुकी सुधि बिसरावै * जब मनु श्वासहि आवै जावै ॥
तब पुनि करै भावना ऐसी * तजै वृत्ति सब ओर अनैसी ॥
साठ लाख अरु तीनि करोरा * तनुमहँ रोमछिद्र चहुँ ओरा ॥
तिनको करै बिकासित सोई * लेइ बदन तिनते तनु जोई ॥
ऊरध श्वास बीज उच्चरई * घंटानाद सरिस मनुकरई ॥
तजत श्वास निकसै झंकारा * सब रोमन मुख मंत्र उचारा ॥
यहि बिधि साधन करत सदाहीं * कढै बीज रोमन मुख माहीं ॥
साधन यही सिद्धि ह्वै जावै * तब सनकादिक सरिस सोहावै ॥
दोहा-अंगुलचारिक बाहिरे, भीतर अंगुल चारि ॥
श्वासा आवै जाय जब, तब नहिं लगै बिकारि॥५॥
अजर अमर होवै सब काला * बसै निकट श्रीदशरथलाला ॥
मही ओर बैकुंठ प्रयंता * ताकी गति होवै मतिवंता ॥
प्रलयकाल ताकर नहिं नाशा * यह साधन लहि व्याजप्रकाशा ॥
सिद्धि होइ अस साधन जबहीं * रामनाम अंकित तनु तबहीं ॥
यह हनुमानकथा मैं गाई * और कहां लगि जाइ गनाई ॥
सुनि कपीशकी सुंदरि बानी * निशिचरनाथ लियो सतिमानी ॥
हनुमततेज बिदित जगमाहीं * तेहि सम रामभक्त कोउ नाहीं ॥

खंड किंपुरुष महँ सब काला ❀ जहँ ठाकुर है कोशलपाला ॥
तहँ गंधर्वन सहित कपीशा ❀ नाइ नाइ नित प्रभुपद शीशा ॥
करि पूजन नित नव अनुरागा ❀ निवसत पवनतनय बडभागा ॥
तहँ तुंबुर आदिक गंधर्वा ❀ आवहिं सहित समाजन सर्वा ॥
महामधुर बहु बाज बजाई ❀ गावहिं रामायण सुरछाई ॥
दोहा-सुनहिं पवनसुत सर्वदा, आंखिन अंबु बहाइ ॥
छकत रामपद प्रेम महँ, सकल सुरत बिसराइ ६॥
अरु जहँ जहँ रघुपति कथा, सादर बांचत कोइ ॥
तहँ तहँ धारि शिर अंजली, सुनत पुलकतनु सोइ ७
इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ जाम्बवानकी कथा।

दोहा-जाम्बवानकी कछु कथा, मैं वर्णौं मन लाइ ॥
त्रिजग योनिहू पाइकै, लाग्यो हरिपद जाइ ॥ १॥
जबहिं त्रिविक्रम विक्रम कीन्हों ❀ तीनि चरण महि बलिसों लीन्हों॥
फेरि नाथ तहँ वपुष बढायो ❀ त्रिभुवनमहँ द्वै पद भरि आयो ॥
ऋक्षराज यह चरित निहारी ❀ पुनि न मिलौ अस समय विचारी॥
पुलकित गवन्यो लैकर भेरी ❀ करन लग्यो विराटप्रभु फेरी ॥
दियो प्रदक्षिण प्रभु को साता ❀ त्रिभुवनमहँ भाषत यह बाता ॥
लियो जीति प्रभु असुरन काहीं ❀ दियो राज इंद्रहि छिन माहीं ॥
अस प्रभु विजय सकल गोहराई ❀ फेरि गिरचो वामनपद आई ॥
प्रभुपद धोय सलिल विधि लीन्हो ❀ हर्षित आप पान सोइ कीन्हो ॥
तब वामन प्रसन्न ह्वै गयऊ ❀ इच्छामरण ताहि प्रभु दयऊ ॥
मम सखत्व रघुपति अवतारा ❀ तुमपै हो यह वचन उचारा ॥
परचो चरणमहँ निशिचरनाथा ❀ बोल्यो वचन जोरि जुगहाथा ॥
रामभक्त तुमही जगमाहीं ❀ और कहैं ते अहैं वृथाहीं ॥
त्रेता महँ सोइ वचन प्रमाना ❀ भयो रामभंत्री सतिमाना ॥
रामचरण भो प्रेम अनूपा ❀ रही न परम भीति भव कूपा ॥

दोहा-राम भक्ति परभाव धनि, तिरजग योनिहु जोइ ॥
करै ताहि संसारकी, कबहुँ भीति नहिं होइ ॥ २ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ सुग्रीवकी कथा।

दोहा-कहौं कथा सुग्रीवकी, रामसखा दृढनेम ॥
प्रभुसेवन करिकै सदा, यह मान्यो निजक्षेम ॥ १ ॥
पावक बीच शपथसो कीन्हो * प्रभुहित निज कुटुम्ब तजि दीन्हो
राम काज सर्वस्व लगायो * जब सुवेलपर कपिदल आयो ॥
तब लखि रावणको नटखारा * सहि न गयो रिपुकर अहँकारा ॥
प्रभु सन्मुख लखि तासु मिजाजा * तहँते तुरत तराकि कपिराजा ॥
सिंहासनते दियो गिराई * वानरपति विक्रम दरशाई ॥
आय परयो प्रभु पांयन माहीं * को सुग्रीव सरिस जगमाहीं ॥
पुनि जब रघुकुलकमलदिनेशू * जान लगे साकेत निवेशू ॥
तब परिवार राज्य दिय त्यागी * आयो अवध राम अनुरागी ॥
प्रभुसूं कह्यो न छनभरि छड़िहौं * निज मानसमणि प्रभुपद जड़िहौं
देखि अलौकिक प्रीति सखाकी * लियो नाथ निजसंग सुख छाकी॥
इक सुकंठ सतसंग प्रभाऊ * कोटिन रीछ कीश कपिराऊ ॥
भये विमल साकेत निवासी * रहे न बहुरि जगतके आसी ॥
दोहा ऐसो श्रीरघुनाथको, सख्यभाव परभाव ॥
यहि विधि आठो भक्तिको, कीन्हो वेदन गाव ॥ २ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ बिभीषणकी कथा।

दोहा-कहौं बिभीषणकी कथा, सुनहु संत चितलाय ॥
जाको देखत दौरिकै, राम लियो उरलाय ॥ १ ॥
रह्यो वणिक यक कोउ पुरमाहीं * चल्यो वनिजहित दक्षिणकाहीं ॥

है संपति चढि येक जहाजा ❀ गयो सिंधु जब दूरि दराजा ॥
पवन प्रसंग तरंगन पाई ❀ बोहित भ्रमण लगी चहुँघाई ॥
बूड़न शंक सबै अकुलाने ❀ कोउ पंडित सो वचन बखाने ॥
केहि विधि नाव लगै अब पारा ❀ सो विधान अब करहु उचारा ॥
द्विज कह अब जो नर बलि दीजै ❀ तौ ह्वै पार सबै जन जीजै ॥
तब इक पुरुषहिं सबै ढकेले ❀ मिलि थाह तेहि भयो अकेले ॥
नाव लागि चलि सागर पारा ❀ तेहि जन राक्षस आइ निहारा ॥
ताहि निकासि हर्षि घरि लंका ❀ लेगे तुरत निशाचर लंका ॥
निरखि बिभीषण नाथ अकारा ❀ ताको बहुत किये सत्कारा ॥
षोडश विधि पूजत करि ताको ❀ मनहुँ मिल्यो सुत कौशल्याको ॥
ठाढो सन्मुखसो कर जोरे ❀ राम प्रेम सागर मन बोरे ॥

दोहा—बहुरि कह्यो आज्ञा कछुक, होय करौं मैं तौन ॥
तब डेराय बोल्यो पुरुष, मोहिं पहुँचावौ भौन ॥ २ ॥

केहि विधि जैहौं सागरपारा ❀ यह अतिशय मोहिं लगत खँभारा ॥
कह्यो निशाचरपति सुसकयाई ❀ सिंधुतरणकी सहज उपाई ॥
अस कहि तेहि ललाट सुखधामा ❀ लिखि दीन्ह्यो द्वौ अक्षर रामा ॥
विविध भाँति जे रत्न अमोला ❀ दीन्ह्यो बहुत अमोल निचोला ॥
कीन्ह्यो बिदा नाइ पद माथा ❀ थल सम चल्यो पाथनिधिपाथा ॥
आयो पुनि ताही थल माहीं ❀ फिरी नाव जेहि थल चहुँ घाहीं ॥
सोइ महाजन करि व्यापारा ❀ मिल्यो ताहि थल सिंधुमझारा ॥
ताहि चीन्हि लिय तरणि चढाई ❀ सो आपनी कथा सब गाई ॥
सुनिके राम नाम परभावा ❀ वणिक तासु पद मह शिरनावा ॥
कह्यो चलहु मेरे घरमाहीं ❀ कह्यो सो जन पैदर हम जाहीं ॥
अस कहि कूद्यो सिंधु मझारी ❀ भयो पार प्रभुनामहि धारी ॥
तेहिसँग बस वणिकहु लहि ज्ञाना ❀ दियघर संपति साधुन नाना ॥

दोहा—औरहु सकल जहाजमहँ, रहे जे जन असवार ॥
रामनाम परभाव लखि, तेउ तजिदिय परिवार ॥ ३ ॥

रामरसिक ह्वैगे सकल, छोडे जगत सँभार ॥
सागर इव भवसागरहुँ, भये तुरंतहि पार ॥ ४ ॥
श्रीरघुनंदन कपिनकों, बिदा करी जेहि काल ॥
पाइ बिदा तहँ आपनी, कह्यो निशाचरपाल॥ ५ ॥

जो प्रसन्न मोपर प्रभु होहू ✻ तौ वर देहु यही कर छोहू ॥
क्षणभर होहु न आप वियोगू ✻ यही कृपा करि साधहु योगू ॥
जान अलौकिक प्रीति खरारी ✻ लंकापतिसों गिरा उचारी ॥
रंगनाथ कुलदेव हमारे ✻ तिनहिं लेहु तुम सखा पियारे ॥
होइ कबहुँ न मोर वियोगू ✻ रंगनाथ मेटिहैं सब सोगू ॥
तब विभीषण सबर पाई ✻ चल्यो रंगपति लै शिरनाई ॥
कावेरी तट महँ जब आयो ✻ रंगनाथ तब स्वपन दिखायो ॥
थापहु मोहिं कावेरी तीरा ✻ नित पूजन आवहु मतिधीरा ॥
जो हमको लंकहि लै जैहौ ✻ तौ इक तुमहीं भर फल पैहौ ॥
कलिमें जो मम दरशन करिहैं ✻ बिन प्रयास भवसागर तरिहैं ॥
भरतखंड जन लंक न जैहैं ✻ तौ केहि विधि मम दर्शन पैहैं ॥
ताते करहु जगत उपकारा ✻ याहि थल मंदिर रचहु उदारा ॥

दोहा-रंगनाथकी वाणि सुनि, जागि निशाचरपाल ॥
विश्वकर्माको तेहि थलै, बुलवायो ततकाल ॥ ६ ॥

तुरत महामंदिर बनवायो ✻ तामें रंगनाथ पधरायो ॥
लंकाते निज पूजन हेतू ✻ आवन लग्यो निशाचर केतू ॥
यहिविधि बीति गयो बहु काला ✻ भयो इतै कोऊ नरपाला ॥
रंगनाथके मंदिर माहीं ✻ राखो कोउ इक पूजक काहीं ॥
सो पूजक अंगन इक राती ✻ उपटी लख्यो चरणकी पांती ॥
इक इक पद इक इस करकेरे ✻ तिहि अचरज लाग्यो दृग हेरे ॥
छिपि बैठ्यो ताकनके काजा ✻ सो तहँ लख्यो निशाचर राजा ॥
पूछ्यो कौन अहो तुम देवा ✻ करियत रंगनाथकी सेवा ॥
कह्यो विभीषण मैं लंकेशा ✻ मेरे इष्टदेव रंगेशा ॥

तुम हो सेवक मम प्रभु केरे * ताते चलहु विप्र घर मेरे ॥
अस कहि विप्रहिं कंध चढाई * गवन्यो भवन निशाचर राई ॥
तहँ बहु माणि दै पूजन कीन्हो * पुनि पहुँचाय रंगढिग दीन्हो ॥
दोहा-तबते अंतर्ध्यान है, आवत नित लंकेश ॥
रंगनाथके पूजिपद, फिरि फिरि जात निवेश ॥७॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ शबरीकी कथा।

दोहा-अब वर्णौं शबरी कथा, राम प्रेमको रूप ॥
पायन चलि ताको मिले, निजते कोशलभूप ॥१॥
रहे को मुनि दंपति वनमें * करहिं सुतप हरि ध्यावत मनमें ॥
गे कहुँ कर मूल फल हेतू * तिहि दिन भयो पुत्र सुख सेतू ॥
जब वनते मुनि भवन सिधारचो * तब मुनितिय उठि चरण पखारचो॥
पूजन करि मुनि भोजन कीन्हो * निज सुत जन्म नहीं सुनि लीन्हो॥
रोय उठ्यो जब सुत तिहि काला * मुनि पूंछ्यो यह काकर बाला ॥
तिय कह आजु भयो यह मेरे * सुनि मुनि तियपै नैन तरेरे ॥
अरी अशौच न मोहिं बतायो * कस पूजन भोजन करवायो ॥
शबरी होसि महावन जाई * सुनि पतिशाप महादुख छाई ॥
रोवन लगी कंतके आगे * दया देखि मुनि कह अनुरागे ॥
कीन्हों तैं पातिव्रत धर्मा * ताते तैं है है शुभ कर्मा ॥
तै करि है संतनकी सेवा * ऐहैं तुव घर रघुकुल देवा ॥
अस कहि मुनि गे कानन काहीं * तिन तनु तज्यो कछुक दिनमाहीं॥
दोहा-सो शबरी भै आइकै, दंडक विपिन विशाल ॥
सेवा संतनचरणकी, करन लगी सब काल ॥२॥
जाति आपनी नीच विचारी * मुनिसन्मुख नहिं सकै सिधारी ॥
काटि काटि तरु ईंधन जोरी * बोझन बांधि निशाकरि चोरी ॥
मुनि आश्रमन फेंकि नित आवै * कोउ मुनिजन जानन नहिं पावै ॥

अरु पंपासर पथमहँ जाई ❀ कंकर कंटक देइ बराई ॥
नित लावे ईंधन मारग झारे ❀ मुनि मोदित मन सकल विचारे ॥
यह उपकार करै जन जोई ❀ तेहि जानन चाहैं सब कोई ॥
मुनि मतंग निज शिष्य बोलाई ❀ कह्यो धरहु निशि वेष छिपाई ॥
शिष्य सकल रजनी महँ डाटे ❀ पकरचो शबरिहिं झारत कांटे ॥
दरशाये मतंग ढिग लाई ❀ शबरी मनमहँ अतिहि डेराई ॥
मुनि मतंग कह हे उपकारिणि ❀ लै धन दे ईंधन सुखकारिणि ॥
वृथा न ईंधन लेहैं तोरा ❀ कबहुँ लह्यो तैं धन बहु थोरा ॥
सो डेराइ कछु कही न बाता ❀ खरी जोरि कर कंपत गाता ॥
दोहा-शबरी सुकृत सराहिकै, अंबक अंबु बहाइ ॥
मुनिमतंग करिकै दया, लिय आश्रमाहिं टिकाइ ॥ ३ ॥
जानि भक्त सो अतिमन भाई ❀ रामनाम दिय कर्ण सुनाई ॥
ताकर पूर्वजन्म गुण गाथा ❀ योगप्रभाव जानि मुनिनाथा ॥
करन लगे अतिशय सत्कारा ❀ तब जे मुनि अभिमान अपारा ॥
तब मतंग निंदन बहु करहीं ❀ शबरी दोष ताहि शिर धरहीं ॥
जानहिं नाहिं हरिभक्ति प्रभाऊ ❀ जातिभेदमहँ राखहिं भाऊ ॥
जातिभेद वैष्णव जो कीन्हो ❀ सो सब पाप शीश धरि लीन्हो ॥
जेहि मुख दृढ नाम सिय पीको ❀ श्वपचहु सो ब्राह्मणते नीको ॥
तपी व्रती द्विजभक्ति विहीना ❀ सो श्वपचहुते अहैं मलीना ॥
यह नाहिं जानहिं तप अभिमानी ❀ जानिय तिनहिं पूर अज्ञानी ॥
मुनि मतंग अरु शबरी काहीं ❀ बीते कछुक काल वनमाहीं ॥
नित मग झारै लैकर झारू ❀ लगै न कंकर मुनिपग चारू ॥
कबहूं यक दिन झारत माहीं ❀ कोउ मुनि परस भयो तिहि काहीं ॥
दोहा-नीच जाति तिहि जानिकै, मुनि कीन्हो अतिकोप ॥
गारी दै मारन उठे, कह्यो धर्म भो लोप ॥ ४ ॥
शबरी भागि भवन कहँ आई ❀ मुनि बहोरि पंपासर जाई ॥
मज्जन लगे तबै सरनीरा ❀ शोणित भयो परे बहुकीरा ॥

तब सिगरे मुनि गये दुलारी ❀ तासु हेतु नहिं परै बिचारी ॥
सिगरे मनमहँ किये विचारा ❀ जब ऐहैं अवधेशकुमारा ॥
पूंछि लेब संदेह निवारी ❀ पद परसत ह्वैहै शुचि वारी ॥
यह अभिलाषा सबके भारी ❀ ऐहैं हाठ प्रभु कुटी हमारी ॥
मुनि मतंग पुनि कछु दिन माहीं ❀ कुटी सौंपि निज शबरी काहीं ॥
कह्यो इतै ऐहैं भगवाना ❀ यह मानै मनमांह प्रमाना ॥
अस कहिगे सुरलोक सिधारी ❀ गुरुवियोग शबरिहि दुखभारी ॥
पै रामागम मनहिं विचारी ❀ शबरी निवसत भई सुखारी ॥
नित उठ भोर पंथ चलि आगे ❀ निरखै प्रभु आगम अनुरागे ॥
नितहिं दूर लगि कानन जाई ❀ ल्यावै टोरि सुफल समुदाई ॥

दोहा—चीखि चीखि तिन खलनको, जे अति मीठे होइ ॥
तिनहिं कुटी धरि राखती, प्रभुहित अतिसुख मोइ ॥ ५ ॥
याहि विधि बीते बहुत दिन, देखत राम पयान ॥
दून दून दिन दिन बढ्यो, रामसनेह महान ॥ ६ ॥
इतै खरादिक खलन हनि, लहि कबंधसों खोज ॥
पंपासर आवत भये, जेहि चाहति तिय रोज ॥ ७ ॥
शबरी काननमें सुन्यो, रघुपति आवत आज ॥
पऱ्यो मृतक मुख मनु सुधा, छोडि तुरत सब काज ८
पंथ विलोकत ध्यावती, तनु सुध सकल बिसारि ॥
दूरिहिंते देखत भई, कोशलनाथ खरारि ॥ ९ ॥

कवित्त—माथेमें जटा मुकुट मंडित अखंडित उदंडित कोदंड दोर्दंड अंडपारमें ॥ लहलही इंदीवर श्यामता शरीर सोही डहडही चंदन की रेख राजे भारमें ॥ कटिमें निषंग बाण फेरत अनुज संग गुंजरत मंजुल मिलिंद बन मालमें ॥ बैननमें बोलनिकी चाह भरे रघुराज शबरी निहारनकी नैनन विशालमें ॥ १ ॥ पथिकन पूंछत सप्रेम प्रभु पेखि पेखि शबरी हमारी प्यारी बसै केहि ठौर है ॥ कौन वाको ग्राम इहां कौन वाको नाम कहै कौन वाको धाम जासों काम एक मोर है ॥

कौन घरी ऐहै जामें नयननि निहारिहौं मैं खैहौं फल स्वाद सुधा सरिस अथोर है ॥ रघुराज जै छिन विलोकिना विलोचनसों बीतत पलक सम कलप कठोर है ॥ २ ॥ ज्ञान औ विराग योग साधन सुखाने तनु छूने जन खोजैं जाहि धारे श्वेत कबरी ॥ शंभू औ स्वयंभूजूके मनको भ्वासी सदा दासी भई सिंधुजा बढ़ाइ प्रीति जबरी ॥ जाको नाम लेत आवै लबारी नहिं लालचकी छूटी जाति पाप छाद लोप होति लबरी ॥ गोई रघुराज रघुराज पम्पा काननमें पूंछत फिरत कहां कहां मेरी शबरी ॥ ३ ॥ आगू चले राम आई आगू लेन शबरीहू चरण परन धाई मिलनको धाये हैं ॥ गिरिदंडही सो भुजदंडसों उठाइ लियो फेरिकै गिरी सो पुनि भुज पसराये हैं ॥ प्रेमदशा कही नाहिं जाति रघुराज दोऊ तन मन वचनकी सुधि बिसराये हैं ॥ भले आप मिले मोहिं भली मिली तेहूं यह कहत दुहूनके भकारे भरि आये हैं ॥ ४ ॥ तनुको सँभारि कारि ताको मिलि बार बार वारिज विलोचनानि प्रेम वारि ढारिके ॥ कर कोप कारि तासु ताहीकी कुटीको चले रघुराज राम मुनिमंडली बिसारिकै ॥ पुनि पुनि पूछे प्रभु तेरी कुटी केती दूरि जामें हौं बसौंगो ओघ आनंदको वारिकै ॥ कोइ लाते मिथि- लातें कमलानिवासहूतें पायो मैं सनेह सुख तोहीको निहारिकै ॥ ५ ॥

सवैया—आइ गये शबरीकी कुटी प्रभु नृत्य नचीसी करें जहँ प्रीती ॥ टूटी फटी कट दीन्ही बिछाइ विदाके दई मनो विश्वकी भीती ॥ मोसों कछू कहि जात नहीं यो बखान करौं शबरी परतीती ॥ यो मैं बखान करौं जस राखत रंकनसों रघुराज जु रीती ॥ ६ ॥ दूरवसों रघुराजको आगम जानिकै काननमें नित जाई ॥ तोरिकै चीखिकै मीठे विचारि धरचो फल जे प्रभुके हित लाई ॥ ते फल दोननमें भरिकै प्रभु आगे धरचो अतिलाजहिं छाई ॥ ते फल हाथ लिया रघुराज मनो गये आपन सर्वस पाई ॥ ७ ॥ कोटिन सिद्ध सुकोटिन वर्षलों पावन चाहत जोर नहीं चले ॥ शम्भु स्वयंभु सुरेशहू शेष सदा ललकैं नहीं आंखिनमें रलै ॥ वेद पुराणहू वैभव जासु बखानिके नेति निबाहनहीं फलै ॥ ते प्रभुके पदको शबरी अपने घरमें अपने करसों मलै ॥ ८ ॥

लै वरसों शबरी फलको प्रभु खान लगे हैं मिठाय मिठाई ॥ लक्ष्मणको बकसे कछु चाखि सुभाषिकै माधुरीया अधिकाई ॥ सिद्ध सुरासुर भूपनि जागनि भगनितों प्रभु जो न अघाई ॥ सानुज सो गो अघात अघाय सुखे शबरी बदरी फल खाई ॥ ९ ॥ बारहिं बार कहै लखनै जननी पय पान जो मोहिं करायो ॥ नेशत साठि सुभात सुभोजन भांति अनेकनि रोज खवायो ॥ मंदिरमें मिथिलेशजूके रघुराज सुव्यंजन आनन्द आयो ॥ पायो नहीं अस स्वाद कहूं जस मैं शबरी बदरीफल पायो ॥ १० ॥ फेरि कह्यो शबरीसों सियापति तेरिये प्रीतिसों प्रीति मैं पाई ॥ और कहूं अस मोहिं मिल्यो नहिं ऐसो अपूरब आनँद दाई ॥ यह बदरी फलको बदलो न तुलै तिहुं लोक विभूति बडाई ॥ ताते न मेरे कछू तोहिं देनको रैहौं ऋणी यश तेरोई गाई ॥ ११ ॥

दोहा-मुनि अस मन कीन्हे रहे, प्रभु ऐहैं मम धाम ॥
सुने सबै ते आइगे, शबरीके घर राम ॥ १० ॥

ज्ञान विराग जाति गुण गर्वा ❀ दूरि कियो दंडक मुनि सर्वा ॥
निज २ आश्रमते सब धाये ❀ शबरी धाम राम ढिग आये ॥
प्रभु उठि कीन्ह्यो सबन प्रणामा ❀ दे आशिष भे पूरण कामा ॥
लागि गई मुनि सभा सोहावन ❀ प्रभुसों बोले सब मुनि पावन ॥
रहे सकल हम दरशन आसी ❀ भये तुमहिं लखिकै सुखराशी ॥
इहां नाथ इक अनरथ घोरा ❀ भयो कछुक दिनतें सुखचोरा ॥
पंपासर जल रुधिर समाना ❀ भयो नाथ कृमिजंतु नाना ॥
विना सलिल नहिं धर्म निबाहू ❀ मुनिजन मनहिं दुसह दुखदाहू ॥
परसहु जो निज पद रघुवीरा ❀ तो शुचि अमल होइ सरनीरा ॥
प्रभु कह हम क्षत्रिय लघु लोगू ❀ तुम ब्राह्मण विज्ञान रत योगू ॥
तुव पद परस अमल नहिं होई ❀ तो मम परस शुद्ध नहिं सोई ॥
तब मुनि बहुरि कही अस बाता ❀ बिन परसे प्रभुपद जलजाता ॥

दोहा-पंपासर निर्मल नहीं, ह्वैहै कौनिहुं भांति ॥
ताते प्रभु धारिय अबाशा, करिय मुनिन सुखशांति ॥ ११ ॥

प्रभु प्रगटी तुव पद ते गंगा ❀ करति त्रिलोक पाप हठि भंगा ॥
यह पंपा जल केतिक बाता ❀ दिनकर कुल दिनकर अवदाता ॥
तबहिं देन निज दास बडाई ❀ पंपासर गमने रघुराई ॥
पंपासर जब हिले खरारी ❀ भयो दून शोणित सर वारी ॥
दून परे क्रामे अति दुरवासा ❀ मुनि न बहुरि प्रभु वचन प्रकाशा ॥
हम तो प्रथम कही यह बाता ❀ मोतें नाहिं ह्वैहै अवदाता ॥
तब मुनि शंकित वचन उचारे ❀ जल पवित्रता पाणि तिहारे ॥
देहु उपाय बताय खरारी ❀ जाते होइ शुद्ध सरवारी ॥
प्रभु कह कथा सुनी अस मोरी ❀ सो कहि हौं मानेहु जनि खोरी ॥
प्रथमहिं कोउ पंपासर माहीं ❀ भक्तिरीति जान्यो कछु नाहीं ॥
जब मतंग सुरसदन सिधारे ❀ शबरी बसी आश्रम धारे ॥
मज्जनहित इक दिन सर गवनी ❀ मुनिजनहित झारत मग अवनी ॥

दोहा–झारत मग कोउ मुनिन तनु, परी अवनि उडि धूरि ॥
शबरीका गुणि दोष मन, कियो कोप मुनि भूरि ॥ १२ ॥

सो पराइ निज आश्रम आई ❀ ते मुनि जब पंपासर जाई ॥
मज्जनहेतु हिलै जब नीरा ❀ भो जल रुधिर परे बहु कीरा ॥
महा भागवत कर अपराधा ❀ मिटत न कीन्हेहु यतन अगाधा ॥
ताते शबरी जो इत आवै ❀ पंपासर अपनो पद नावै ॥
तो अस जानि परत मुनिराया ❀ होई सपदि सलिल सुखदाया ॥
अस सुनि सब मुनि प्रभुकी बानी ❀ अपनी भूलि सकल विधि जानी ॥
जोरि पाणि बोले इक बारा ❀ क्षमहु नाथ अपराध हमारा ॥
पुनि शबरी समीप सब आई ❀ पग परि तिहि लै गये लिवाई ॥
शबरी सकुचि सलिल पग डारी ❀ तुरतहिं भो निर्मल सरवारी ॥
यह देख्यो मुनि भक्ति प्रभाऊ ❀ भक्त भेद पुनि कियो न काऊ ॥
तप विराग विज्ञानहु योगू ❀ इनते सरस भक्ति रस भोगू ॥

दोहा–शबरी सीतानाथको, यह सुनि सुखद प्रसंग ॥
जो न करै रति रामपद, सो सति पशु बिन शृंग ॥ १३ ॥

जब रिपु जीति राम घर आये * राजतिलक लै जन सुख छाये ॥
राज्य करत बीते कछु काला * एक समय तब सभा कृपाला ॥
सानुज बैठ रहे सुख छाई * गुरु वशिष्ठकी भई अवाई ॥
सादर सानुज उठि शिर नाये * कनकसिंहासन पर बैठाये ॥
तब वशिष्ठ यह बात चलाई * तुव पदप्रीति सकल सुखदाई ॥
प्रीति रीति सोइ भरत बिज्ञाता * अस द्वितीय मम हग न दिखाता ॥
जस तुव प्रीति भरत निरबाही * तस जो होइ कहहु तुम ताही ॥
नाथ कह्यौ तब जो गुरु भाखौ * सो अपने मनहीं महँ राखौ ॥
यहि अवसर यह कहत प्रसंगू * होइहि अवशि सभा रसभंगू ॥
सुनि अति अचरज मानि मुनीशा * कह्यो बहुरि भाषहु जगदीशा ॥
यह सुनते शबरी सुधि आई * प्रेम मगन ह्वैगे रघुराई ॥
रोमन प्रति सुप्रीति रसधारा * निकसी जनु जल यंत्र हजारा ॥

दोहा-शिथिल अंग सब ह्वै गये, छूटि गयो तनुभान ॥
मुरछि सिंहासनते गिरे, रामभानु कुलभान ॥ १४ ॥

प्रभुकी दशा देखि दरबारी * उठे विकल तनु सुरति बिसारी ॥
कोऊ बिजन डोलावन लागे * कोउ सींचे जल अति अनुरागे ॥
कोउ कर पद मींजहिं कर दोऊ * यह प्रसंग जानै नहिं कोऊ ॥
गुरु वशिष्ठ तब अंक उठाई * चिंतन लगे रूप रघुराई ॥
भरत मृदुल लै पानि अँगोछी * चितत बार बार मुख पोंछी ॥
घरी द्वैक महँ रघुकुलराऊ * भये फेरि जस रह्यो स्वभाऊ ॥
तब मुनि कह प्रभु कारण कहहू * जो मोको प्रिय जानत अहहू ॥
प्रभु कह प्रीति रीति तुम पूछी * त्रिभुवन सृष्टि परी लखि छूछी ॥
पूछत प्रीति शबरि सुधि आई * सो सुधि होत शिथिलता छाई ॥
कहि न सक्यो शबरी कर नामा * प्रीति रीति नहिं दूसर ठामा ॥
जो अब तासु कथा चलवैहौ * तौ मुनिनाथ बहुरि पछितैहौ ॥
अस सुनि रामवचन मुनिराई * अति अचरज गुणि रहे चुपाई ॥

दोहा-भरतादिक भ्राता सबै, औरहु सकल समाज ॥
लगे प्रशंसा करन धनि, शबरी धनि रघुराज ॥१९॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखण्डे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ जटायुकी कथा ।

दोहा-गृध्रराजकी अब कहौं, कथा भक्त चित चोर ॥
जो संगर करि तनु तज्यौ, सीताराम निहोर ॥ १ ॥

कवित्त-मारिचको मायामृग विरचि पठाइ दूरि दोऊ बंधु करवाइ रूपको छिपायके ॥ जानकी हर्‍यो सो जानहीके जान देन हेत कीन्ह्यों गौन आसमान वेगको बढ़ायके ॥ रघुराज राम राम लषण लषण मोहि लखन न पायो हर्‍यो राक्षस विधायके ॥ बैठ्यो गिरिकंदरके अंदरमें मंदरसों गृध्रराज कानमें अवाज परी जाइके ॥ १ ॥

दंडक-उठ्यो चट चौंकि चहुँ ओर चितवन लग्यो चित्तचिंता चुभी चैन चोरिगो ॥ आज यहि ठाम सुखधाम श्रीरामकी वामको बोल आरत हृदय फोरिगो ॥ पर्‍यो केहि ज्ञान महिमान जम कोन भो कौनके घाट घट घोर विष घोरिगो ॥ करत सुविचार खग महा विकरार धरणी धराकार दुर्धर्ष नभ घोरिगो ॥ २ ॥ निरखि रावण भयावन अपावन महा जानकी हरण करि चलो शठ जात है ॥ भन्यो अतिकोप करि हतनकी चोप करि लोप करि धर्म अब क्यों न ठहरात है ॥ जानि शठ सून नृप सून रमणी हरी करी करणी कठिन अब न बाचिजात है ॥ अनल गाढ आय चाहसि न जरि जाय कुल अब न कोउ शरण तोहिं मरण नगिचात है ॥ ३ ॥ धर्मको मित्र रघुवंशको मित्र पुनि रामको मित्र तोहि हतन ऐनात है ॥ वृद्ध मोहिं जानि नहिं कानि लंकेशकरि जानको जान रिपुजाय जनि घात है ॥ क्षुधा चिरकालते मिलो भखहालते पक्षि विकरालते तोरि तव गात है ॥ सीय रघुभानको तृप्ति जिमि जानको कित्ति कुलभानको देहु अवदात है ॥ ४ ॥ परम खर वचन शर प्रहारिखर अग्रजहि प्रहरतोहि रमसखर

खारि पर चरणपर ॥ गगन चर प्रवर साहि अघरघर शरनिकर नखर भर मारि दुरदिशा शिर शिरनपर ॥ समरकरि जबर खर संग चर प्राणहरि धनुष शरसुसरथर तोरि रथ तर डपर ॥ सुमिरि रघुबर खिवर अंबरहिं प्रवरपर भरचो जस अमरघर निकर फर फरसपर ॥ ५ ॥ रथ चरनखरन अनुचरन संघरन लखि चरण अरुकर विदीरन रुधिर विक्षरन ॥ अंबरन आभरण परन तिमि धरणि रण शरन संहरन खग लरन भइ निज मरन ॥ शरण हरिचरण गुणे समर सागर तरण तरणिसम तेगकरि करन अरि भै भरन ॥ करत विचरन रणाजिर अरिसुरन रन सरिस भूधरण युग हल्यो खग बरपरन ॥ ६ ॥

सो०—हरकरवाल प्रभाव, गृध्रराज विन पर भयो ॥
ऐसहि संतस्वभाव, मर्यादा राखत सदा ॥ १ ॥

दोहा—गिरत गीध गिरिपै कह्यो, राम राम रघुराज ॥
पाय गयो सैं जन्मफल, लगे प्राण प्रभुकाज॥२॥

दंडक—देव दुख भो नयो शोच सिय शशि छयो भानु पांडुर ठयो असुर गण अतिचयो ॥ कीश सुख छियव्यो निरति कुलसुख नयो भानुकुल यश जयो मुनिन मुखहू तयो ॥ विश्व अचरज छयो काल बढयो रयो सिंधु शंका भयो द्विजन जप तप गयो ॥ कहै रघुराज यो धनुष लक्षण लयो राम परगति दयो गीध उतरिन भयो ७॥

सवैया—मारि मरीचहि आये कुटी प्रभु सूनी विलोकि भये सुख सूने॥
मृग कुरंग विहंग नदी वन पूंछत जानकी जोही कहूंने ॥
श्रीरघुराज कछू चलि आगे महा अनुरागे प्रियाते विहूने ॥
गीधको देखि दयानिधि दोऊ दमारि दहेसे दहे दुख दूने ॥ १ ॥
गृहवास विनाशत्यो नाश पिता बिछुरी सिय शोकमें नाहिं हटे ॥
पितुसों प्रियप्राणसों रघुराज विहंग विषादमें जैसे सटे ॥
दृग ढारत बारहिं बारहिं वारि निहारि बखाने दुखी निपटे ॥
द्रुत देखत नाथ दयानिधि दूरिते दौरिके गीध गरे लपटे ॥ २ ॥
बाण उखारत आपने हाथ विहंगके अंगनके तृण टारत ॥

बारह बार निहारत घाउ बहारत शोणितधार न आरत ॥
ढारत आंसु उचारत हाय शरीरमें फेर न पाणि पसारत ॥
श्रीरघुराज गरीब निवाज जटायुकी धूरि जटानिसों झारत ॥ ३ ॥
घनाक्षरी—प्रभु पद पंकज विलोकिके विहंगवर मेदिनीमें माथ धैके
वचन कह्यो भलो ॥ नाथ मिथिलेशजाको पंचवटी आइ दुष्ट लंकापति
रावण हर्यो है करिके छलो ॥ जानकी पुकार सुनि धायो मैं गिरायो
ताहि शम्भु करवाल लैके उभै पखको दलो ॥ आश मेरे जानकी त्यों
नाश निज जानकी त्यों जानकीको लैके दिशि दक्षिण गयो चलो ॥८॥

दोहा—कहु २ कछु प्रभुमुख भन्यो, खग कह रहु २ राम ॥
चित दै श्यामशरीरमहँ, गीध गयो परधाम ॥ ३ ॥

मृतक गीध तनु राम विलोकी ❋ रुदन करन लागे अतिशोकी ॥
दशरथ मरण भयो दुख आजू ❋ मोहिं तजि अनत गयो खगराजू ॥
करि विषाद इमि तहँ दोउ भाई ❋ अपने हाथन लियो उठाई ॥
गोदावरी तीर लै जाई ❋ इंधन विनि तहँ चिता बनाई ॥
निजकर अगिनि तासु मुख दीन्ह्यो ❋ पुनि सरितामहँ मज्जन कीन्ह्यो ॥
लैकर जल प्रभु वचन उचारो ❋ जो खग परसाति नेह हमारो ॥
तो यह गीध योगि गति जोई ❋ अरु जो किये विराग बड़ोई ॥
अरु जो ज्ञानवान गति पावे ❋ भक्तिमान जिहि धाम सिधावे ॥
शूर समर तनु तजि जहँ जाहीं ❋ कीन्हे यजन याग जपकाहीं ॥
अरु जहँ जात मोर अनुरागी ❋ तहँ गवनै विहंग बड़भागी ॥
संचित सुकृत होइ मम जोई ❋ तो मम वचन सत्य हठि होई ॥
अस कहि पुनि प्रभु कियो विचारा ❋ यह लघु लागत प्रति उपकारा ॥

दोहा—दियो तिलांजलि भाषि अस, गीधहिं रघुकुलराज
को रघुनायकसरिस है, दुती गरीबनिवाज ॥ ४ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखण्डे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ जनककी कथा ।

दोहा—अब वर्णौं मिथलेशकी, कथा सुंदरी सोय ॥
जेहि सुनिके दासन हिये, दृढ विश्वास हठि होय ॥ १ ॥

प्रथम भये तेहि कुल निमिभूपा * ज्ञानमान यशमान अनूपा ॥
नवयोगेश्वर तेहि गृह आये * देखत नृप तुरतहि उठि धाये ॥
सादर सदन आनि पग धोई * बैठायो आसन सुदसोई ॥
करन लग्यो नृप प्रश्न अनेका * ज्ञान विराग सुभक्ति विवेका ॥
अशन पानि आदिक जगकाजू * भूलि गये सिगरे निमिराजू ॥
जबलों जीवन रह्यो नरेशा * तबलग लह्यो न जगत कलेशा ॥
भये जे तेहि कुल भूप सुजाना * महाभागवत धर्म प्रमाना ॥
मैथिल जनकहु और विदेहू * भये नाम सबके हरिनेहू ॥
भये सीरध्वज पुनि कुल तेही * महाभागवत रामसनेही ॥
तिहिगृह लियो रमा अवतारा * सीता नाम संतआधारा ॥
तिहि ब्याहनहित रघुपति आये * धनुषभजि सबको सुख छाये ॥
कथा सकल रतन सुखदाई * वाल्मीकि तुलसी सब गाई ॥

दोहा—मै वर्ण्यौं नहिं याहिते, रामब्याह विस्तार ॥
और कथा कछु कहत हौं, मैथिलकी सुखसार ॥ २ ॥

जनकराज किय राज महाई * पाल्यो प्रजन सधर्म सदाई ॥
अंतकाल सीरध्वज भूपा * चल्यो विष्णुपुर परम अनूपा ॥
पार्षद चारि चतुर नृप संगा * भूरि विभूषण भूषित अंगा ॥
यमपुर है जब कढ्यो विमाना * करत प्रकाशित दशो दिशाना ॥
अहैं अनेकन नरक महाना * भोगहि पापी तहँ दुखनाना ॥
देहिं दंड यमदूत कठोरा * चीतकार मचि रह्यो अथोरा ॥
गयो विमान सरोवर तबहीं * चीतकार मिटिगो कछु जबहीं ॥
चीतकार सुनि प्रथम नरेशा * भयो बंद तब गुणि अंदेशा ॥
पूंछ्यो हरिपार्षदन नरेशा * कौन लोक यह कहहु सुरेशा ॥
चीतकार कस होत अपारा * कौन हेतु मिटिगो यहि बारा ॥

बोले विष्णुदास यह बानी * यह यमलोक लेहु नृप जानी ॥
देहिं दंड यमके भट घोरा * करहिं नारकी आरत शोरा ॥
दोहा-आप अंगके पवनको, नेक परसको पाय ॥
सकल नारकी जीव ये, लहि सुख गये जुडाय॥३॥
देखि नारकिन दशा दुखारी * नृपके उर करुणामय भारी ॥
नयनवारि ढारत विज्ञानी * बोल्यो हरिदूतनसों बानी ॥
जो मम अंग पवन कहँ पाई * सबै नारकी गये जुडाई ॥
तो हम यमपुर रहब हमेशा * नहिं जैहैं अब विष्णु निवेशा ॥
इनकी यदि हम सहब यातना * हरिपार्षद अब आन बातना ॥
जेहि लोकहि हमको लै जाऊ * तहँ निरई जीवन पहुँचाऊ ॥
रोकहु मम विमान हरिप्यारे * अस कहि तहँते नृप न सिधारे ॥
शोर मच्यो यमनगर मझारी * सुनत भयो यमराज दुखारी ॥
गयो महीप समीप तुरंता * कह्यो वचन यहि विधि मतिवंता॥
आप निवास योग थल नाहीं * जइये जनक जनार्दन पाहीं ॥
कह्यो जनक रहि हैं हम इतहीं * जाहि नारकी हैं हरि जितहीं ॥
देखि नारकिन अति दुख छाये * मोर चरण नहिं चलत चलाये ॥
दोहा-तब बोल्यो यम जोरि कर, तुम तौ हौ हरिदास ॥
बाँधी हरि मर्यादसों, उचित न करब विनास ॥ ४ ॥
जो तुम इत रहिहौ मिथिलेशा * होइ यमपुर झूठ हमेशा ॥
तुम इन जीवनपर किय दाया * तातें नृप अस करहु उपाया ॥
प्रातकाल उठिकै नृपराई * कहत रहे मुख राम सदाई ॥
फल इक बार उच्चारण केरो * इन उधारको अहै घनेरो ॥
पाणि पानि कुश लै नृप देहू * जाहिं नारकी हठि हरिगेहू ॥
यहिविधि नृप दोउ विधि सधि जाई * तरहिं जीव नहिं नरक नशाई ॥
सुनि यमवचन मुदित मिथिलेशा * लै कुश पाणि पानि तेहि देशा ॥
रामउचार बार यक केरो * दीन्ह्यो फल जो कह्यो सबेरो ॥
तुरत हि हरिपुरते विधि नाना * आये कोटिन बृहत विमाना ॥

सबै नारकी दिव्य स्वरूपा * धरि धरि चढे विमान अनूपा ॥
जय जय कहत जनककी सगरे * केशव नगर डगर महँ डगरे ॥
निज आगू सब जीव चलाई * चले जनक सुमिरत रघुराई ॥
दोहा—यहि विधि जीव उधार, गयो विष्णुपुर राउ ॥
नरक सून भौ काल तेहि, रामनाम परभाउ ॥ ८॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ विश्वामित्रकी कथा ।

दोहा—गाधि परम भागवत भो, है प्रसन्न हरि जाहि ॥
कौशिकसो सुत देत भे, मिले राम हठि ताहि ॥१॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ रघुराजाकी कथा ।

दोहा—गाथा रघुमहराजकी, मैं वर्णौं चितलाइ ॥
द्विजको सर्वस दान दे, बस्यो विष्णुपुर जाइ ॥ १॥
भयो भूमि महँ रघु महिपाला * रहे डिराय ताहि दिगपाला ॥
नवौ खंडमें तासु प्रभाऊ * तेहि वश सब महिके महिराऊ ॥
महाचक्रवर्ती रिपु जेता * नित नित परमारथ कृत नेता ॥
कियो सुवाड काल बहुराजू * येक समय तहँ यक द्विजराजू ॥
आयो अन्तहपुरके द्वारा * यक चेरी कोउ ताहि निहारा ॥
कह्यो तुरत रानीसो जाई * यक अतिथि आयो द्विजराई ॥
रानी तुरतहि ताहि बुलायो * पूजि सविधि भोजन करवायो ॥
द्विज कह कौन सुकृत वशभूपा * लह्यो तोहिंसी नारि अनूपा ॥
रानि कह्यो शिर शिवहि चढायो * तब यहि जन्म मोहिं नृप पायो ॥
द्विज कह शिवहि शीश होंदैहौं * जाते तोहिं सम नारी पैहौं ॥
अस कहि विप्र गह्यो पथकाशी * आइ गये तहँ रघु मतिराशी ॥
कह्यो द्विजहि कस जाहु रिसाई * तब द्विज सगरी दशा सुनाई ॥

दोहा–भूप कह्यो लघु काज हित, शीश चढावहु नाहिं ॥
यह नारी तुम लेहु प्रभु, धन्य करौ मोहिं काहिं ॥२॥

द्विज कह का करिहौं लै नारी ✽ हौं गरीब नाहिं रोज अहारी ॥
रघु कह सत्य कह्यो महिदेवा ✽ को करि है दंपतिकी सेवा ॥
राजकोश लीजै सब मेरो ✽ तब पूरण ह्वैहै सुख तेरो ॥
अस कहि दै द्विज कोशहु राजू ✽ निकसि चल्यो गृहते महराजू ॥
बस्यो विपिन यक तरुतर जाई ✽ बसे विहंग तहां युग आई ॥
इंद्रसभाते यक फल ल्याये ✽ रघुहिं निरखि पक्षी नहिं खाये ॥
रघुहिं दियो रघु कह यह का है ✽ तब विहंग बोले नरनाहै ॥
भोजन करै जो यह फल कोई ✽ तुरतहि वृद्ध युवा तनु होई ॥
रघु मन गुण्यो न लायक मेरे ✽ यह फल अहै योग द्विजकेरे ॥
वृद्ध विप्र पायो तिय राजू ✽ भोगि है भोग युवा सुख साजू ॥
अस गुणि लौटि नगर नृप आये ✽ द्विजहिं दियो फल फलहु सुनाये ॥
गुण्यो विप्र नृपछल यह कीन्हो ✽ राजनारिहित विष मोहिं दीन्हो ॥

दोहा–अस विचार करि विप्र फल, दियो पंथमहँ डारि ॥
रंक कोड रोगी रह्यो, सो फल गह्यो निहारि ॥३॥

क्षुधा विवश खायो फल काहीं ✽ भयो तरुण ताही क्षण माहीं ॥
फलप्रभाव लखि द्विज पछिताना ✽ कीन महीप समीप पयाना ॥
कह्यो महीपाहिको फल देहू ✽ नातरु भूप जीव मम लेहू ॥
भूप कह्यो धीरज उर धरहू ✽ हम फल देब शंक जन करहू ॥
अस कहि सोइ तरुतर नृपजाई ✽ वसे विप्रकारज मनलाई ॥
आये निशा विहँग जब सोई ✽ नृप कह फल दीजै पुनि सोई ॥
नभचर कह्यो इंद्र दरबारा ✽ हम पायो फल भूप उदारा ॥
तब नृप कह इंद्रहि पहँ जाई ✽ अवशिदेव विप्रहि फल ल्याई ॥
अस कहि गये इंद्र दरबारा ✽ लखि सुरेश कीन्हो सतकारा ॥
मांग्यो फल तब शक्र सुनायो ✽ सो फल हम ब्रह्मपहँ पायो ॥
ब्रह्मसभा गे भूप तुरंता ✽ कहे हवाल आदि अरु अंता ॥
विधि कह हम हरिपहँ फल पायो ✽ रघु भूपति हरि पुरहिं सिधायो ॥

दोहा-आवत लखि रघु नृपतिको, करि आदर भगवान॥
निकट ताहि बैठाइ कह, कीन्हे कहां पयान॥ ४॥

दियो भूप वृत्तांत सुनाई * रमानाथ बोले मुसकाई॥
तेरे बाग केर फल सोई * फिरहु भूप तुम खोजत जोई॥
तादृश बहुत फरे फल बागा * खाहु बसहु इत नृप बड़भागा॥
नृप कह विप्र हेतु हम चाहैं * और काज मेरे कछु नाहैं॥
हरि कह नरक परयो द्विज सोई * द्विज है राजगृहन किय जोई॥
यह सुनि भूपहिं भयो विषादा * हरिसों कह मम भो अपवादा॥
करहु जो प्रभु मोपर अनुरागा * द्विजहि बुलाइ देहु यह बागा॥
भे प्रसन्न प्रभु सुनि रघुबानी * कह्यो न नरक परी द्विज मानी॥
करहु राज्य तुम आपन जाई * मम पुर बसी आइ द्विजराई॥
हरि अनुशासन मानि नरेशा * आयो लौटि आपने देशा॥
सो द्विज तुरतहिं हरिपुर गयऊ * राजा राज्य करत निज अयऊ॥
बहुत कालमहँ तनु तजि राऊ * गये कृष्ण पुर भरे उराऊ॥

दोहा-पर उपकारी दानिहूं, रघुसम भयो न कोइ॥
जासु वंशमें अवतरे, रघुपति श्रीपति सोइ॥५॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे नवमोऽध्यायः॥ ९॥

अथ दिलीपराजाकी कथा।

दोहा-महा महीप दिलीप भो, सप्त द्वीप किय राज॥
एक बार रावण तहां, आयो रणके काज॥ १॥

पूजन करत रह्यो नृप जहँवां * विप्ररूप धर आयो तहँवां॥
पूजन करि यक कुशकर लैके * फेंक्यो दिशि दक्षिण जल छैके॥
तब रावण करिके संदेहू * पूंछेहु नृपहिं देखावत नेहू॥
कह्यो दिलीप धेनु वनमाहीं * चरत रही नाहर तिन काहीं॥
धरन लग्यो तिनहित मैं बाना * फेंक्यो करिकै मंत्रविधाना॥
बाण बाघ हनि धेनु बचाई * कहँ यक लंका है तहँ जाई॥

तहँ इक द्विज रावण अस नामा * पावक दिय लगाइ तेहि धामा ॥
तिहि बापुरो भवन जरि जैहै * मम फेंको जल पाइ बुझैहै ॥
यह सुनि रावणकरि अतिशंका * देख्यो जाइ धेनु अरु लंका ॥
यथा दिलीप कह्यो तस देख्यो * अपने मन अचरज अति लेख्यो ॥
पुनि न बहुरि संगरहि आयो * नृपहिं मनहिं मन सदा डरायो ॥
ऐसो भो दिलीप महराजा * त्रिभुवन महँ यश जासु दराजा ॥

दोहा-गंगा आनन हेतु नृप, जानि लोक उपकार ॥
करि तप कानन तनु तज्यो, कोविद अस बडयार ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथ निषादकी कथा ।

दोहा-अतिशयकारि अहलाद मम, गह निषादकी गाथ ॥
करौं तासु मैं बाद शुचि, चरण सुमिरि सियनाथ ॥ १ ॥

घनाक्षरी-पितुको वचन पालिबेके हेतु दयानिधि ऐश्वरज इंद्र कैसो तृणसों विहाइकै ॥ संग लै लषण सीता परम पुनीता देवसरिता उतरिबेकी आज्ञा चितलायकै ॥ छाडि पुरवासिनको आये शृंगवेरपुर खबरि निषादराजै कोऊ कही जाइकै ॥ डूबि दुख सिंधु दह्यो कोप बडवानलसों प्रेमसों उमँगि सियराइ आयो धायकै ॥ १ ॥

सवैया-आयो निषादको नायक नेसुक दूरिते नाथ निहारि तुराई ॥
आसु उठे असुवानिको ढारत भास्यो सिया लषणे सुखपाई ॥
देखो सखा रघुराज हमारो शिकार खिलाय जो संग सदाई ॥
यों कहि सो न परै पग पायो लियो गुहको गरे माहिं लगाई ॥ २ ॥
जाको सदा शिव धारत ध्यान सदा शिवहेतु सुमानस आनी ॥
ब्रह्म बिलोकिबेको नित चाहत ब्रह्म बखानत नीतिको ठानी ॥
सिद्ध मुनींद्र तपै तप जाहित कोटिन कल्प न जानत ज्ञानी ॥
सो रघुराज भुजा गल मेलि मिलो गुहसो बिसरी बिलगानी ॥ ३ ॥
नेसुक सो निज देह सँभारि कह्यो कछु कोपित ह्वै न हैं कांचो ॥
धारिये पांव धरै अब काल लवै तब शत्रुघ्न शीशपे नांचो ॥

संपति साहिबी सैन सबै मम देहहु गेहहु रावरे पाचो ॥
जो अभिषेक कराऊं न आजु तौ मैं रघुराज सखा नाहिं सांचो ॥ ४ ॥
जानि सखाकी अलौकिक प्रीति बुझाइ लेवाइकै संग सिधारे ॥
देवनदीतट आइ कह्यो सखा आनिकै नाव उतारहु पारे ॥
नाव मँगाइको पार उतारै यहै सुनि नैननि नीर पनारे ॥
भूमि गिरयो मुरझाय कह्यो सुख हा प्रियनाथ वनै पगु धारे ॥ ५ ॥
रामरजाइ विचारिकै केवट कोई तहां तरणी इक आनी ॥
तापर नाथ अरोहन चाहे कह्यो तब सो युग जोरिकै पानी ॥
ठाढे रहौ सुनि लेहु कछू मैं सुनी अस आपने कान कहानी ॥
रावरे पांयनकी रज राज करै महिपाहन ते ऋषि रानी ॥ ६ ॥
जो अस होइ कहूं इतहूं तौ कहौ पुनि क्यों परिवार जिआइहौं ॥
रावरेकी करनीको बखानि कहां तरणी तरुणीको पठाइहौं ॥
ताते कहौं रघुराज मैं सांची विना पग धोये न नाव चढाइहौं ॥
जानिकै जाहिर ऐसी दशा रोजिगार न धूरिते धूर कराइहौं ॥ ७ ॥
युक्ति सुने सुनि केवट वैन सखागुह संग प्रभाव विचारी ॥
ताकर पांयनको मुखराइ तरे प्रभु संग सहानुज नारी ॥
संग सखाहू गयो तहँलौं रघुराज मिले अस वैन उचारी ॥
लक्षणपै जोहै प्रीति हमारी सो देहु सखा उतराइ तिहारी ॥ ८ ॥

घनाक्षरी—करिकै निषादु विदा विनाहि विषाद राम शृंगवेर पुरते प्रयान जब कीनो है ॥ ता क्षणते और रूप देखिहौं न प्रणकरि पट्टी निज आंखिनमें गुह बांधि लीनो है ॥ काननते आये रघुराज सुख पाये देखि हियेमें लगाये परकांसि मोद दीनो है ॥ गुहसों न आन भक्त रसिक जहान भयो भक्ति रस सागरमें जासु मन मीनो है ॥ ९ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अथ भरद्वाजमुनिकी कथा ।

दोहा—भरद्वाज मुनिकी कथा, कथन करौं कथनीय ॥
पुहिते चलिकै मिले, राम लषण युत सीय ॥ १ ॥

घनाक्षरी—जानि भरद्वाज अभिलाष लाख लखिवेकी आयगे प्रयाग प्रभु गंगाको उतरिकै ॥ नवो द्वार बंद करि साधिकै समाधि बैठ्यो देखत त्रिभुज रूप ध्यान उर धारिकै ॥ प्रणत कियेहू परमान नाहिं ताको भयो कीन्हो रघुराज कला मोद उर भरिकै ॥ करि लीन्हो अंतर्हित अतरको रूप तासु चौंकि उठ्यो चितयो सुचित्त चिंता करिकै ॥ १ ॥ देखत रह्यो है जैसो रूप उर पंकजमें सुंदर स्वरूप सोइ सोहे सांवरो खडो ॥ लोचन सुनेकु लाल बाहु त्यौं विशाल युत कटि करवाल जटाजूट शिरपै मडो ॥ रघुराज राजत निषंग दोऊ कंधनपै येक करकंड त्यौं कोदंड येक पै जडो ॥ बडो है विरदवारो विश्वको उधारवारो अवध अधीशको दुलारे दानिया बडो ॥ २ ॥ चीन्हि निज नाथ भूमि माथ धारि जोरि हाथ कह्यो धनि आज मोहिं धरणि [illegible] आयो है ॥ जानकी लषणयुत मान कीन्हो मेरा प्रभु मेरे नाहिं [illegible] मो दृग देखायो है ॥ रघुराज रावरेको बहुत न ऐसो कछु नीति नीति कहत विरद वेद गायो है ॥ दीनको दयालु दूजो कौन है दुनीमें ऐसो दीननके हेतु आपुहीते चलि आयो है ॥ ३ ॥

सो०—यह बिनती प्रभु मोरि, देहु दयानिधि दानि द्रुत ।
मेरे हियको चोरि, मेरे हियमें नित बसो ॥ १ ॥
जो मांग्यो मुनिराइ, दानि शिरोमणि अवधपति ॥
सो दीन्हो अधिकाइ, लषण जानकीते सहित ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथ वाल्मीकिकी कथा।

दोहा—वाल्मीकिकी अब कथा, कहौं ठीक अरु नीक ॥
रामनामको जाहि मैं, है महात्म्य रमणीक ॥ १ ॥

मित्रा वरुण येक मुनिराई ❋ कीन्हो महाविपिन तप जाई ॥
महाकठिन तप लखि सुरभूपा ❋ पठयो तहँ अप्सरा अनूपा ॥
निरखि ताहि मुनि कांपित गाता ❋ ह्वैगो तहां रेतको पाता ॥

विप्र जानि औरे बन जाई * करन लगे तप अति मनलाई ॥
महत्तेज तिहि रेत निहारी * लै उर्वशी कुंभमहँ डारी ॥
ताहि कुंभते द्वै मुनि जाये * नाम अगस्त्य वसिष्ठ कहाये ॥
रेत शेष रहिगो कुशमाहीं * ताते यक शिशु भयो तहांहीं ॥
ताहि किरातिनि लै घर आई * अपनी विद्या सकल पढाई ॥
हिंसा चोरि करन प्रवीना * भयो बाल पातकमहँ लीना ॥
कियो विवाह जानि नहिं चीन्ही * यक पथकेरि लूट तिहि दीन्ही ॥
तिहि थल लगि पंथिन कहँ लूटै * लहै जो धन नाहिं तौ तिन कूटै ॥
यहि विधि कियो बहुत दिन घाता * यम कागज तिहि अघ न समाता ॥

दोहा–तेहि मारग है यक समय, कढे सप्त ऋषि आइ ॥
तिहि के मारन हेतुसों, गयो तुरंतहि धाइ ॥ २ ॥

कह्यो देहु जो होइ तिहारे * नातो सबै जाहुगे मारे ॥
तब सप्तर्षि कह्यो हँसि बानी * यह किरात भल बात बखानी ॥
है लूटे मारे अतिपापा * लहत लोक यमघर संतापा ॥
सो यमकी नहिं राखहु भीती * मारग लागि करहु अनरीती ॥
बात किरात बहोरि बखानी * यहि उद्यम जीवहि मम प्रानी ॥
जो नहिं मारि वित्त लैजैहैं * क्षुधाविवश बालक दुख पैहैं ॥
तब मुनि मुनि अस गिरा सुनाई * पूंछु किरात जात घर जाई ॥
जो करि पाप वित्त हम ल्यावैं * तुमको सबको बांटि खवावैं ॥
तौन पाप कर यमघरमाहीं * होइहि दंड अवशि हम काहीं ॥
ताके तुम भागी की नाहीं * देहु बताइ ठीक हम पाहीं ॥
अस पूछो घर जाइ किराता * कहैं जो घरके ऐसी बाता ॥
बांटि लेब यमदंड तिहारो * तौ तुम पापहेतु धनुधारो ॥

दोहा–जो कुलके यमदंडमें, भागी होइ न कोइ ॥
तौ कत कीजय पाप हठि घोर दंड जिहि होइ॥३॥

सुनि मुनि बात किरात सिधारी * पूंछ्यो बोलि भ्रात सुत नारी ॥
जो यमदंड हमैं उत होई * ताके तुम भागी सब कोई ॥

सुत तिय उत्तर दियो प्रचंडा ❀ हम न होब भागी यमदंडा ॥
पाप पुण्य नहिं हेतु हमारा ❀ तुम ल्यावहु सो करहिं अहारा ॥
सुनि कुटुम्बके वचन किराता ❀ मुनिसमीप गो सोच अघाता ॥
कह्यो कुटुंबकथित सब बानी ❀ मुनि कह तुमहिं लेहु अब जानी ॥
धनभागी कुल नहिं अघभागी ❀ तिन हित अघ करिबो पथलागी ॥
तुमहिं किरात न उचित सुजाना ❀ करहु उपाय मिलहि निरवाना ॥
सुनत सप्तऋषि वचन प्रमाना ❀ भयो किरातहि तुरत विज्ञाना ॥
त्राहि त्राहि कर गिरो चरणमें ❀ तुम समरथ उधार हरणमें ॥
दया लागि मुनि कह्यो उपाई ❀ मरा मरा जपियो रटलाई ॥
मम आगम प्रयंत इत जपियो ❀ अस मरा निशि वासर जपियो ॥

दोहा—अस कहिके सप्तर्षि जब, बैठो तहां किरात ॥
मरा मरा निशि दिन रटत, भो बमोट तेहिगात ४ ॥

बहुत काल बीते मुनि आये ❀ खोजे ताहि कहीं नहिं पाये ॥
योगदृष्टिकरि जब मुनि देखे ❀ लगी बमोट तासु तनु पेखे ॥
तब तेहि निज हाथनते खींची ❀ तुरत कमण्डलुते जल सींची ॥
तासु शरीर पुष्ट अति कीनो ❀ वाल्मीकि अस नामहिं दीनो ॥
दीन्हो राममंत्र उपदेशा ❀ भजन करन कहँ दियो निदेशा ॥
सो तमसासरिता तट आई ❀ तप करि दिय बहु काल बिताई ॥
एक समय नारद तहँ आये ❀ मुनि आदर करि तिहिं बैठाये ॥
कह्यो जोरिकर सुनहु ऋषीशा ❀ तुमहि कौन सबते बड दीसा ॥
को यह लोक माहिं यहि काला ❀ तेजवान गुणवान विशाला ॥
शील समुद्र विश्व हितकारी ❀ को समर्थ विद्या व्रतधारी ॥
इन्द्रियजित प्रिय दर्शन को है ❀ को विजयी दारुण जग को है ॥
प्रभावंतको द्वेष विहीना ❀ केहि रणमहँ सुर डरत मलीना ॥

दोहा—ऐसो जन जो होइ जग तासु सुननकी चाह ॥
सो जन जानन योग तुम, वर्णन करु मुनिनाह ॥५॥

वाल्मीकिके वचन सुहाये ❀ सुनि नारद मुनि हर्षित गाये ॥

ये सब गुण दुर्लभ जगमाहीं * पै हम कहैं बसें जिहि पाहीं ॥
नृप इक्ष्वाकु वंश अभिरामा * भाषत लोग नाम जेहि रामा ॥
आतमजित विक्रम अतिभारी * तेजमान सम कोटि तमारी ॥
इंद्रियजित वरबुद्धि विधाता * महाचतुर अरु नीति विज्ञाता ॥
समर शत्रु सूदन कर तारा * जिहि छबि विजित अनंग अपारा ॥
वृषभ कंध युग बाहु विशाला * कंबु कंठ हनु सुभग सुभाला ॥
उर आयत कर चाप महाना * जत्रुअंग अतिपुत्र बखाना ॥
अनघपीन भुज शशि समआनन * विक्रममें मानहु पंचानन ॥
सबमें सम समसुंदर अंगा * निबिड नील नीरद तनुरंगा ॥
पृथुल वक्ष तिमि अक्ष विशाला * महाप्रतापवान सब काला ॥
लक्ष्मीवान धर्मधुर धारी * सत्यसिंधु परजन हितकारी ॥

दोहा-महायशी विज्ञान युत, भक्तनके परतंत्र ॥
सदाचार धारक सदा, दिनकर वंश स्वतंत्र ॥ ६ ॥

जिन रिपु जिते न लौटनहारो * सब संसारहिं प्राणन प्यारो ॥
विधि समान जग पोषक सोई * जिहि सम दयावान नहिं कोई ॥
एक विश्वको रक्षण कर्ता * धर्म पर्वतकको इक भर्ता ॥
महि अधर्म हर धर्म प्रचारी * सुहृद सुजन सेवक हितकारी ॥
वेद वेदांग तत्त्वको ज्ञाता * धीर धनुर्धर धरणि विख्याता ॥
सर्व शास्त्रको जाननवारो * सभाचतुर श्रुत धर्मतिवारो ॥
सब जीवन प्रिय तिहिं प्रिय जीवा * अति अदीन दीनन प्रिय सीवा ॥
परमसाधु सब बात विचक्षण * वसे ताहि महँ सकल सुलक्षण ॥
सदा समीपी साधु समाजा * जिमि सरिता गण युतसरिराजा ॥
सबते कोमल बोलत वाणी * सबको जानत जनु निज प्राणी ॥
रूपरिपुहु कहँ रुचित निहारी * तौ मित्रनका कहिय विचारी ॥
श्रीकौशल्या उदर सिंधु शशि * सब गुण रहे ताहि तनमें बशि ॥

दोहा-सिंधु सरिस गंभीरता, धीरज सम हिमवान ॥
चंद्र सरिस अहलाद कर, विक्रम विष्णु समान ॥ ७ ॥

कालानल सम क्रोध कराला * क्षमाक्षमासम जासु विशाला ॥
धनद लजत लखि जिहिंधनदाना * सत्य वचन महँ धर्म समाना ॥
सो नृप दशरथ जेठ कुमारा * तिलक करन कर कियो विचारा॥
कैकेयी नृप तीसर रानी * सो पतिसों अस गिरा बखानी ॥
दियो पूर्व मोहिं द्वै बरदाना * सो दीजै अब वचन प्रमाना ॥
राम जाहिं वन भरतहिं राजू * भयो नृपहि सुनि शोक दराजू ॥
दिय बनवास भूप रघुनाथे * चले जानकी लक्ष्मण साथे ॥
गंगा उतरि प्रयागहिं आये * चित्रकूट निवसे सुख छाये ॥
रामशोक नृप स्वर्ग सिधारे * रामहिं भरत लिवावन आये ॥
दै पादुका विदा प्रभु कीन्हो * आप अत्रि कहँ दर्शन दीन्हो ॥
हनि विराध सरभंग समीपा * आइ मुक्ति दिय रघुकुलदीपा ॥
फेरि सुतीक्षण आश्रम आये * पुनि अगस्त्य आतहिं सुख छाये॥

दोहा-पुनि अगस्त्यको दरश दै, पंचवटी बसि राम ॥
करि विरूप रावण भगिनि, मारयो खरसंग्राम॥८॥

रावण सुनि मारीच पठायो * रामहिं सो लै दूरिहिं आयो ॥
हरयो दशानन जनककुमारी * गीधहिं राम कियो तहँ तारी ॥
हति कबंध शबरी फल खाई * कीन्ही पुनि सुग्रीव मिताई ॥
सत ताल हनि बालि सँहारयो * मारुत पठै लंक प्रभु जारयो ॥
सीता सुधि लहि सागर सेतू * बांधि तरे कपिकटक समेतू ॥
सकुल दशानन समर सँहारी * सीय लषणयुत अवध सिधारी ॥
महाराज अभिषेक कराई * राजे राज करत रघुराई ॥
वाल्मीकि सुनि नारद वानी * बार बार मुनिपतिहि बखानी ॥
शिष्य सहित पुनि पूजन कीन्हो * नारद तुरत गगनपथ लीन्हो ॥
वाल्मीकि पुनि मज्जन हेतू * तमसा तीर गये मतिसेतू ॥
तासु शिष्य भरद्वाजहि नामा * तेहि लखिनिकट कह्योमतिधामा॥
पंक रहित यह घाट सुहावन * भरद्वाज मन मुद उपजावन ॥

दोहा-सज्जन चित्त प्रसन्नकर, अतिरमणीय सुनीर ॥
कपटरहित जिमि पुरुषकर, मनहारक हियपीर॥९॥

धरहु कलश वल्कल मम देहू * हुत मज्जनहित बढ्यो सनेहू ॥
भरद्वाज वल्कल तुम दीन्हो * लै वल्कल विचरन मुनिकीन्हो ॥
तहँ विचरत बनमहँ मुनिराई * युगलकरांकुल परे दिखाई ॥
कामातुर आनँद रसभीने * आयो बधिक येक धनु लीने ॥
हन्यो विहंगहि सो जियघाती * बची विहंगी अति बिलखाती ॥
वाल्मीकि खगघात निहारी * दयाविवश अस गिरा उचारी ॥
अरे बधिक बहुकाल प्रयंता * लहै प्रतिष्ठा नहिं अघवंता ॥
क्रौंच काम मोहित ते मारयो * धर्म अधर्म न कछू विचारयो ॥
भनत कढ्यो अश्लोक अतूला * सकल छंद रत्नाकर मूला ॥

श्लोक-मा निषाद प्रतिष्ठांत्वमगमः शाश्वतीः समाः ॥
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥ इति॥

यह कहि मुनि मुनि मनहिं विचारयो * शोकविवशयहकहाउचारयो ॥
चिंतत मुनि आये सरितीरा * कह्यो भरद्वाजहि मतिधीरा ॥
चारि चरण अक्षर बत्तीसा * तंत्री लै युत छंदमुनीसा ॥

दोहा-मेरे मुखते कढत भो, शोकरूप अश्लोक ॥
भरद्वाज सुनि मुनिवचन, कंठ कियो मतिओक १०

मुनि मज्जन करि चिंतत ताहीं * आये मुनि निज आश्रम माहीं ॥
भरि घट भरद्वाजहु आछे * आये गुरु आश्रम महँ पाछे ॥
शिष्य सहित बैठे मुनिराई * कथा कहत हरिध्यान लगाई ॥
आयो तौन काल मुख चारी * उठ्यो महा मुनि ताहि निहारी ॥
जोरि पाणि किय दंड प्रणामा * बैठायो आसन अभिरामा ॥
विधिकहँ पूजि पूछि कुशलाई * आपहु बैठ्यो शासन पाई ॥
चित्त लग्यो श्लोकहि माहीं * बधिक विहंगहि वध्यो वृथाहीं ॥
क्रौंचिहि विलपत भे भारि शोकू * कह्यो जौन सो भोऽश्लोकू ॥
यह चिंतत मुनिके मुखचारी * अतिप्रसन्न ह्वै गिरा उचारी ॥
कढो जो तेरे मुखते बानी * सो श्लोक लेहु सति जानी ॥
सो जानहु यह मोर प्रभाऊ * ताते सुनहु वचन मुनिराऊ ॥
धर्मात्मा गुणगृह मतिवंता * वीर शिरोमणि कोशलकंता ॥

दोहा–सो रघुपति कर चरित मुनि, तुम वर्णहु यहि रीति ।
नारद मुखते जस सुन्यो, छंदबंध बिन भीति ॥ ११ ॥

प्रगटित गोपित रामचरित्रा * अरु सिय लषणचरित्र विचित्रा ॥
कर राक्षसकुल केर विनाशा * रघुवर तिलक अवधपुर वासा ॥
जो कछु तुव जानो नहिं होई * हैहै विदित तुमहि मुनि सोई ॥
रावर काव्य माहिं मुनिराई * हम वरदान देत हरषाई ॥
येकहु अक्षर मृषा न हैहै * हैहै सुखी सुकावे जो ग्वैहै ॥
महामनोहर रघुवर गाथा * छंद बद्ध रचहू मुनिनाथा ॥
सरित महीगिरि रहिहै जौलौं * तव कृत काव्य चली जग तौलौं ॥
रामचरित जोलौ कृत आपू * चलि है जगमहँ परम प्रतापू ॥
तौलौं तुव मम लोक निवासा * पुनि जैहो जहँ रमानिवासा ॥
अस कहि अंतरहित भे धाता * शिष्य सहित मुनि सुखी विख्याता ॥
सोई श्लोक शिष्य सब गावैं * बारबार तिहिं प्रीति बढावैं ॥
सो कहिओ श्लोक सुहावन * चारि चरण सम अक्षर पावन ॥

दोहा–वाल्मीकि मुनिके मनहिं, आई ऐसी नीति ॥
छंदबद्ध रघुवरचरित, रचहुँ दोष सब जीति ॥ १२ ॥

कवित्त–बांचत सरल असरल है विचार कीन्हे उत्तम सगुण धुनि धारित अनोपमा ॥ रस त्यों मनोहर मनोहर वरण वृंद सुभग पदावलीहू जमक जडो समा ॥ रघुराज भूषण समास संधिरीति वृत्ति लक्षणहू लक्षणा सुछंद है समोसमा ॥ नारायण रूप हरि पारायण जीवनको सुरामायण सत्य रामायण मनोरमा ॥

दोहा–नारद मुख सुनि वस्तु सब, रामचरित मनलाइ ॥
रच्यो प्रथम संक्षेप मुनि, सूचन कथा बनाइ ॥ १३ ॥
पूर्व अग्र जिन दर्भको, बैठि सुखासन ताहिं ॥
जोरि पाणि करि आचमन, शिरधरि हरिपद माहिं १४
रामायणके रचनको किय़ो अरंभ मुनीस ॥
आदि अंत रघुवर चरित, ज्ञान दृष्टि तब दीस ॥ १५ ॥

राम लषण सीता सहित अरु दशरथ महाराज ॥
रानिनयुत अरु राजको, जौन चरित्र दराज ॥१६॥
गवनित भाषित हसित थिति, अरुकपिनिशिचरसारि
हस्तामलक समान तेहि, सिगरो परो निहारि॥१७॥
वेद रूप पै ललित अति, धर्म अर्थ सब ठौर ॥
रत्नाकरइव रत्न युत, सब शास्त्रन शिरमौर ॥१८॥

प्रथम जन्म वर्णो रघुपतिको ❁ विक्रम अनुकूलता सुमतिको ॥
क्षमा शील सरलता सुनायो ❁ विश्वामित्र समागम गायो ॥
तिहि निशि कथा अनेक बखानी ❁ धनुभंग वर्ण्यो सुख खानी ॥
कह्यो वरणि जानकी विवाहू ❁ रमाविवाद संग भृगुनाहू ॥
पुनि कीन्ह्यो रघुपति गुणगाना ❁ प्रभु अभिषेक समाज विधाना ॥
कैकेयी कृतशो रसभंगा ❁ रामनिवास अनुजतिय संगा ॥
नृपविलाप पुनि स्वर्ग पयाना ❁ वर्ण्यो प्रजव विषाद महाना ॥
प्रजा विसर्जन गुहसंवादू ❁ पुनि सुमंत आगम कियवादू ॥
गंग तरण दर्शन भरद्वाजू ❁ चित्रकूट निवसन रघुराजू ॥
कुटी रचन पुनि भरत पयाना ❁ रघुपति पाणि पिता जलदाना ॥
ले पादुका भरत फिरि आवन ❁ नंदिग्राम निवास सुहावन ॥
दीवो अनुसूया अंगरागू ❁ पुनि शरभंग दरश अनुरागू ॥
दोहा—फेरि सुतीक्षणको मिलन, पुनि अगस्त्य गृहवास
करन [illegible] राक्षसी, खर दूषणको नास ॥ १९ ॥
बहुरि कह्यो दशकंठ अवाई ❁ वध मारीच कथा पुनि गाई ॥
कह्यो फेरि वैदेही हरना ❁ रामविलाप गीध कर तरना ॥
पुनि कबंध दर्शन मुनि गायो ❁ पुनि जिमि प्रभु शबरी फल खायो
सिया विरह वश राम विषादू ❁ बहुरि कह्यो हनुमत संवादू ॥
ऋष्यमूक पुनि राम अवाई ❁ कह्यो बहुरि सुग्रीव मिताई ॥
पुनि सुग्रीव वालि कर युद्धा ❁ वालिवधन कृत रघुवर क्रुद्धा ॥
कह्यो विलाप कीन जिमि तारा ❁ पुनि सुग्रीव तिलक जिमि सारा ॥

वर्षाकाल प्रवर्षण वासू * पुनि सुकंठपर कोप प्रकासू ॥
पुनि बांदरीसैन आगमनू * वर्णन पृथ्वीकर दुख शमनू ॥
पुनि मुद्रिका दीन हनुमानै * गे जिमि कपि चारिहू दिशानै ॥
स्वयंप्रभा बिल दर्शन गायो * सो जिमि सागर तट पहुँचायो ॥
पुनि अनशन व्रत कीशनकेरो * जिमि संपाति कीशदल हेरो ॥
दोहा-पुनि मारुतसुत गिरि चढब, लंघन सिंधु बखान ॥
दर्शन पुनि मैनाकको, सुरसा कपट विधान २०॥
पुनि सिंहिका निधन मुनि गायो * लंकापार कीश जिमि आयो ॥
कपिको लंका निशा प्रवेशा * पुनि देखिवो नगर सब देशा ॥
कह्यो लख्यो जिमि पुष्पविमाना * पुनि अशोक वाटिका पयाना ॥
सीता दरश मुद्रिका दाना * पुनि सीता संवाद विधाना ॥
पुनि राक्षसी सकल जिमि पेख्यो * त्रिजटा स्वप्न जौन विधि देख्यो ॥
चूडामणि जिमि लै हनुमाना * कीन्ह्यो भंग भवन तरु नाना ॥
बर्ण्यो सकल राक्षसिन त्रासा * असीसहस्र किंकर कर नासा ॥
मंत्री सुतन विनाश बहोरी * सेनपपंच निधन बरजोरी ॥
ग्रहण पवनसुतको पुनि गायो * पुनि लंका जेहि भांति जरायो ॥
कूद सिंधु आगम यहि पारा * पुनि मधुवन जिमि कीशउजारा॥
राम निकट आगम पुनि गायो * चूडामणि जिमि कीश देवायो ॥
रामसहित कपिसैन पयाना * मिलब सिंधुकर दै मणि नाना ॥
दोहा-कह्यो विभीषण आगमन, सो जिमि कह्यो उपाय॥
सिंधुसेतु रचिबो बरणि, बसब सुबेलहि जाय॥२१॥
कह्यो लंक घेरन चहुँ ओरा * कीश निशाचरको रणघोरा ॥
वर्ण्यो कुंभकर्ण संहारा * लक्ष्मण मेघनाद जिमि मारा ॥
कह्यो बहुरि दशकंठ विनाशा * मिलब मैथिली कीन प्रकाशा ॥
तिलक विभीषणको पुनि गायो * पुनि जिमि पुष्पविमान मँगायो ॥
फेरि अवधि आगमन उचारा * बहुरि मिलब कैकयीकुमारा ॥
रामतिलक बर्ण्यो मुनिराई * पुनि कीशन जिमि कियो बिदाई ॥

भजन आनंद तजन वैदेही * वर्ण्यो पुनि रघुनाथ सनेही ॥
इतनो भूतचरित मुनि गायो * आगे और भविष्य गिनायो ॥
तीन काव्यको उत्तर नामा * रच्यो भविष्य चरित मतिधामा ॥
याते रामायण षट कांडा * सतयों उत्तरकांड अखंडा ॥
जहँते पुनि भविष्य मुनि गायो * सो अठयों कांड छबि छायो ॥
अहैं कांड द्वै उत्तर ताते * यहि विधि आठ कांड गणि जाते॥

दोहा-रामायण षट कांडई, उत्तर भविष्य मिलाइ ॥
आठ कांड वर्णहिं सुकवि,अस परकरन लगाइ२२

करत रहे जब रघुपति राजू * रामायण विरच्यो मुनिराजू ॥
चौविश सहस्र सुखद श्लोका * तथा सर्ग शतपंच अशोका ॥
रच्यो प्रथम षट्कांड उदारा * पुनि कीन्हो उत्तर विस्तारा ॥
फेरि भविष्य चरित मुनि गायो * आठ कांड यहि भांति गनायो ॥
बहुरि कियो मुनि मनहिं विचारा * केहि यहि सिखवनको अधिकारा॥
ताहि समय मुनि निकट सिधाई * गहे चरण कुश लव दोउ भाई ॥
मधुररूप मैथिली कुमारा * शील सुयश धृतिधर्मअगारा ॥
कोकिलकंठ सुआश्रम वासी * तालराग सुरशास्त्र विलासी ॥
बुद्धिवान वरवेद विज्ञाता * तिनहिं निरखि लहि मोद अघाता ॥
श्रीरामायण वेद स्वरूपा * तिनहिं पढायो परम अनूपा ॥
रामायण सियचरित प्रधाना * कहु पुलस्त्यकुलनिधन बखाना ॥
पाठ गान महँ मधुर महाना * द्रुत विलंब मधि तीनि प्रमाना ॥

दोहा-सात जाति सुरकीशहित, तंत्री लै युत सोइ ॥
और गान उपकरण लै, तासु गान हठि होइ ॥२३॥
करुण हास्य शृंगार अरु, रौद्र भयानक वीर ॥
बीभत्सादि रसनयुत, रच्यो काव्य मुनिधीर२४॥

ऐसो रामायण मुनिराई * दोउ भाइन दिय गाय पढाई ॥
शुभ लक्षण स्वरूपके राशी * मनहुँ राम तनु द्युतिय प्रकाशी ॥
सकल मूर्छना गति जति ज्ञाता * गानशास्त्रमहँ परम विख्याता ॥

कुश लव रामायण पढि लीन्हे * करि अभ्यास कंठगत कीन्हे ॥
मुनिन निवासनमहँ नित जाई * साधुसमाजमांह सुख छाई ॥
कुश लव रामायण नित गावें * मुनिमानस बहु भांति लोभावें ॥
सुनि सुनि रामायण मुनिराई * पुलकित तनु दृग बारि बहाई ॥
रामायण अरु कुश लवकेरी * सुखित प्रशंसा कराहिं घनेरी ॥
प्रति श्लोक सुनत छकिजाहीं * महामधुर अस दूसर नाहीं ॥
सुनत सुखद रामायण काना * रामचरित प्रत्यक्ष समाना ॥
है प्रसन्न कोउ कलशहिं दीनो * कोउ वल्कल दीन्हो सुखभीनो ॥
मुनिकृत अतिअद्भुत रामायण * कविजन कहँ आधार रामायण ॥
दोहा—आयुष पुष्टि प्रकाश कर, श्रुति समान अतिमंजु ॥
सुधाधार सम श्रवण महँ, रसिक मधुप मनकंजु ॥२५॥
येक समय कुश लव दोउ भाई * गावत रामायण सुखछाई ॥
विचरत विचरत मुनिन निवासू * आये अवध नगर सहुलासू ॥
कोशलपुरमहँ खोरिन खोरी * गान करत विचरें शुभ जोरी ॥
जेहि सुनत तेई छकि जावें * सादर सदन दुहुँन लै आवें ॥
पूजन करि भोजन करिवाई * आदर अति करि करें विदाई ॥
येक समय साजि सैन अपारा * भाइन युत रघुनाथ उदारा ॥
खेलन चले सिकार सुखारी * मधि बजार कुश लवहिं निहारी ॥
वीणाकर शिरजटा सुहावन * वल्कलवसन आजिनअतिपावन ॥
महामनोहर सुंदर रूपा * मानहु सुछबि प्रजा दोउ भूपा ॥
नाथ देखि आपन अनुहारी * तुरतहि दूतन कह्यो हँकारी ॥
ये मुनिबालक वेग बुलाई * दीजे सपदि सदन पहुँचाई ॥
अस कहि लौटि रामगृह आये * सुवरण सिंहासन छबि छाये ॥
दोहा—लषण भरत रिपुदवन तहँ, बैठे प्रभु कहँ घेरि ॥
सचिव सुहद सामंत सब, हर्षित प्रभु कहँ हेरि ॥२६॥
यथायोग्य सब सभा सुहाये * पुरजन प्रभु दर्शन हित आये ॥
तहँ इक प्रतीहार कर जोरी * विनयकरी बहुबार निहोरी ॥

जे मुनिबालक प्रभु बुलवाये ❀ ते दोउ द्वार देश महँ आये ॥
प्रभुकहँ ल्यावहु तुरत लिवाई ❀ शासन सुनत दूत द्रुत धाई ॥
कुश लव कहँ ले गयो लिवाई ❀ रहे बंधुयुत जहँ रघुराई ॥
माने नाथ मुनि बालक दोऊ ❀ पूजन कियो नम्यो सब कोऊ ॥
रामरूप अनुहार निहारी ❀ सकल सभासद मनहिं विचारी ॥
ये क्षत्रिय मुनि बालक वेखा ❀ आय सभा सुख दियो अलेखा ॥
सभासदन रुख जानि खरारी ❀ सियासुवन कुश लवहिं विचारी॥
कह्यो लषण भरतहि रघुनंदन ❀ ये दो मुनिबालक कुलचंदन ॥
अस मम शासन देहु सुनाई ❀ सुनत लषण कुश लव ढिगआई ॥

दोहा-गावहु जो गावत रहे, अवधनगरकी खोरि ॥
जोपै रघुवर रीझि हैं, संपति मिली अथोरि ॥२७॥

लषण वचन सुनि तहँ दोउ भाई ❀ वीणाके सुर सकल मिलाई ॥
बैठे राम सन्मुख सुखछाई ❀ सभासदन आनंद बढाई ॥
प्रभु मुख निरखि महासुखपागे ❀ श्रीरामायण गावन लागे ॥
छके सुनत सब निश्चल काया ❀ मोहे मनहु मोहिनीमाया ॥
कनकसिंहासन अतिहि उतंगा ❀ सुनि नहिं परयो गानरसरंगा ॥
तब रघुपति अस मनहिं बिचारा ❀ मोरे उठत उठी दरबारा ॥
कोलाहल वश सुखहत होई ❀ जाउँ समीप उठै नहिं कोई ॥
अस विचार प्रभु मंदहि मंदा ❀ सिंहासनते रघुकुल चंदा ॥
उतरे आतुर बैठेहि बैठे ❀ मानहु मोद महोदधि पैठे ॥
आये रघुपति शिषन समीपा ❀ उठे न कोउ सामंत महीपा ॥
सुनन लगे अपनो यशनाथा ❀ विंशति सर्ग रोज सो गाथा ॥
जब समाप्त रामायण भयऊ ❀ प्रभु निज उर अति अचरजठयऊ

दोहा-सहस अठारह हेमको, मुद्रा तुरत मंगाइ ॥
दियो दुहुंन बालकनको, मुनिसुत गुणि शिर नाइ२८
लियो न सो अस वचन कहि, हमहिं गुरूकह दीन ॥
सबहिं सुनायो गीत यह, लियो न कोहुकर दीन२९॥

अस कहि कुश लव है विदा, अद्भुत आनंद छाय ॥
वाल्मीकिके आश्रमहिं, आये बहुरि सुहाय ॥ ३० ॥
वाल्मीकिकी यह कथा, कुश लवको आख्यान ॥
मैं प्रसंग वश कहि दियो, रामायण सविधान ॥ ३१ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथ अत्रिऋषिकी कथा ।

दोहा—कहौं अत्रिऋषिकी कथा, परमभक्त तपधाम ॥
जाके आश्रममें बसे, सीता लक्ष्मण राम ॥ १ ॥

येक समय ऋषि कानन जाई * कीन्हो तप जल अन्न बिहाई ॥
मुनिकी प्रीति रीति रुचि देखी * भये प्रसन्न मुकुंद बिशेषी ॥
शिव बिरंचि ले संग सिधारे * मुनिसों मोदित बचन उचारे ॥
मांगहु वर तीनहु हम आये * तब मुनि कह्यो तिनहिं शिर नाये ॥
दरश पाय पूज्यो मनकामा * याते अधिक कौन वर आमा ॥
तब प्रभु बोले विनय बिचारी * ऐसी रुचि मुनिनाथ हमारी ॥
तीनों होब पुत्र हम तेरे * अब नहिं दूसर मानस मेरे ॥
असकहि हरि दत्तात्रय भयऊ * शंकर दुर्वासा है गयऊ ॥
भयो चंद्रमा तहँ करतारा * ये मुनि तीनहु जगत उदारा ॥
फेरि महेंद्राचलगिरि माहीं * बसे अत्रि मुनि सुखित तहांहीं ॥
तपबल मंदाकिनि महि ल्याई * निज आश्रम तर दियो बहाई ॥
पुनि उपजी मुनि कहँ अभिलाखा * चाखहुं राम दरश सुखदाखा ॥

दोहा—निजजन आश बिचारिकै, सीय लषण सँग लीन ॥
अनुसूया अरु अत्रिके, आश्रम आगम कीन ॥ २ ॥
मुनि आगू चलिकै प्रभुहिं, आये आश्रम माहिं ॥
सादर करि सतकार बहु, स्तुति करी तहाहिं ॥ ३ ॥
अनुसुइया आभरण बहु, अंबर अमल अमोल ॥
पहिराया सियको सुखद, चूमत चारु कपोल ॥ ४ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

शरभंगऋषिकी कथा।

दोहा-अब वरणों शरभंगकी, सुखद कथा रसरंग ॥
जाहि सुनत हरिजननको, उपजत अमित उमंग १

सतयुगमें शरभंग मुनीशा ❁ कियो कठिन तप सहस बरीशा ॥
कढो शीशते पावक ज्वाला ❁ डरपि उठ्यो मनमहँ सुरपाला ॥
पठयो विश्वावसु गंधर्वै ❁ करहु भंग ऋषिको तप सर्वै ॥
विश्वावसु आश्रममहँ आई ❁ तपनाशन हित कियो उपाई ॥
पै ऋषिको तप भंग न भयऊ ❁ वासव कामहि शासन दयऊ ॥
काम आइ तहँ रच्यो वसंता ❁ चहुँकत सरवन विहँगन दंता ॥
कीन्हो कोटिन काम उपावा ❁ मुनिमानस नाहिं चल्यो चलावा ॥
तब लै कुसुम धनुष संधान्यो ❁ नहिं मुनि चितयो अमरष आन्यो॥
लै कुश तज्यो कामकी ओरा ❁ तपबल तासु सफल शर फोरा ॥
जबते ऋषि कीन्हो शरभंगा ❁ तब ते नाम पर्यो शरभंगा ॥
पुनि मुनि प्रण कीन्ह्यों सियरामैं ❁ लखिहौं तनु तजिहौं तेहि जामैं ॥
सोइ मुनि आश मनहि प्रभु जानी ❁ आये मुनि आश्रम धनु पानी ॥

दोहा-सीता लषण समेत प्रभु, निरखि मुदित शरभंग ॥
प्रेम मगन पूजन कियो, भयो सकल दुखभंग॥२॥
निरखत तीनहुँ रूप छबि, नाइ चरणमहँ शीश ॥
कियो भंग शरभंग तनु, लह्यो अमल पुर ईश॥३॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ सुतीक्षणकी कथा।

सवैया-कानन बैठो रह्यो थिर ह्वै कब ऐहैं मुकुंद यही अवसेर ॥
जानि सुतीक्षणके मनकी प्रभु आये सियानुज संग सवेरे ॥
दौरि पर्यो पदपंकजमें पग धोइ धुन्यो अघ जन्मनि केरे ॥
श्रीरघुराजसों मांग्यो यही निवासौ नित माधव मानस मेरे॥१॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

अथ सुदर्शनऋषिकी कथा।

कवित्त–जैसेइ आइके बैठो अगस्त्यको पंथु मैं दीनको बंधु निहारिहौं ॥ कांधे सुकंठ निषंग उभय दयासिंधुपै त्यों तन औ मन वारिहौं ॥ दास मनोरथ पूरण हेतु कह्यो प्रभु जाइ तुम्हैं भवतारिहौं ॥ प्रेम भरो परो पांयनसों कह्यो या छबिहौं हियते नहिं टारिहौं ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथ अगस्त्यऋषिकी कथा।

दोहा–बर्णौं बहुरि अगस्त्ययश, अद्भुत कथित पुरान ॥
कह्यो सुन्यो जासों विमल, रामतत्त्व हनुमान ॥ १ ॥

तबते महि मुनीश प्रगटाना ❀ रामतत्त्व तजि और न जाना ॥
रामतत्त्व कुंभजऋषि पाहीं ❀ आये शंभु सुनन सुखमाहीं ॥
लंका जीति राम जब आये ❀ तब कुंभजऋषि अवध सिधाये ॥
मुनिपद परशुराम कर जोरी ❀ पूछ्यो रावण कथा अथोरी ॥
वरण्यो मुनि त्रिकालको ज्ञाता ❀ जानत यदपि नाथ अवदाता ॥
बढत विंध लखि रोकत भानू ❀ वारण करि मुनि कियो पयानू ॥
आवन अवध जानि मुनि भीती ❀ तज्यो महीधर वर धनरीती ॥
नाम सुयज्ञ द्रविड नरनाहा ❀ रह्यो राम पूजत सउछाहा ॥
गये अगस्त्य उठ्यो नहिं देखी ❀ प्रभुपूजन मन दियो विशेषी ॥
मुनि कह गज सम उठत न राजा ❀ जानि परत ह्वैहै गजराजा ॥
पै हरिपूजन निरत महीशा ❀ तरिहैं ताते त्वहिं जगदीशा ॥
भयो सो गज मुनिवचन प्रमाना ❀ ग्राहग्रसित तार्‌यो भगवाना ॥

दोहा–आतापी वातापि शठ, छलकरि मुनि भखि लीन ।
सो अगस्त्यसों छल कियो, मुनि पाचन तेहिं कीन २
भयो येक दानी नृपति, दान विविध विध कीन ॥
धरणि धाम सुवरण रतन, अन्नदान नहिं दीन ॥ ३ ॥

तनु तजि गयो विरंचिपुर, कह्यो ताहि करतार ॥
कियो दान बहु अन्न बिन, करु निज देह अहार॥४॥
चढि विमान अप्सरन युत, गावत गंधरवभीर ॥
यक सर नित आवत रह्यो, जहँ तेंहि पऱ्यो शरीर ५
महाक्षुधित निज देहको, करि भोजन पुनि जात ॥
येक समय कुंभजमिले, मारग महँ अवदात ॥ ६ ॥
पूछयो मुनिसों सब कह्यो, रोइ पऱ्यो मुनिपाय ॥
कंकन दियो उतारि युत, कहितारहु मुनिराय ॥७॥
अन्नदान फल मुनि दियो, भयो तासु उदघाट ॥
मुनियश वर्णत सो लियो, ब्रह्मलोककी वाट ॥ ८ ॥

येक समय अगस्त्य मुनिराई ❋ सूर्य निकट कहँ गये सिधाई ॥
तिन्हैं निरखि नाहिं उठे दिनेशा ❋ तब मुनिमन अतिभयो कलेशा॥
सुरि मुनीश शेषाचल माहीं ❋ बैठे आगे धरि पटकाहीं ॥
कह्यो वचन उर राखि रामको ❋ जो विश्वास मोहि रामनामको ॥
होहुं जो मैं सति रघुवर दासा ❋ तौ पट होइ कोटि रवि भासा ॥
भाषण मुनिके वचन प्रमानू ❋ भयो भास पट कोटिन भानू ॥
सूरज तेज मंद परिगयऊ ❋ तबविधिके अति विस्मयभयऊ॥
चलि अगस्त्यकी स्तुति कीन्हो ❋ मुनि निज कोप शांत करिलीन्हो॥
येक समय अगस्त्यभगवाना। ❋ शेष निकटकहँ किये पयाना ॥
तहँ ब्रह्मर्षि सुरर्षि अपारा। ❋ बैठ रहे अहिपति दरबारा ॥
कुम्भज सबकी मति गति जानी ❋ शेषहिं कह्यो जोरि युगपानी ॥
रामतत्त्व सुनिवेकी चाहा ❋ सब मुनिके मोरेहु अहिनाहा ॥

दोहा—तब धरणीधर अस कह्यो, मैं पीडित भूभार ॥
कोन भांति वर्णन करौं, द्वितीय न धरणि अधार १

कुम्भज कह्यो कृपा अस कीजै ❋ मेरे दंड धरणि धरि दीजै ॥
अस कहि दंड खडो मुनि कीन्हो ❋ सुमिरि रामपद अस कहि दीन्हो॥

जो विश्वास मोहिं रामनामको * करै दंड क्षण शेष कामको ॥
धऱ्यो धरणिधर धरणि दंडपर * डोल्यो दंड नेकु नहिं तेहिपर ॥
कह्यो शेष तब सबन सुनाई * देखहु राम नाम प्रभुताई ॥
कछु नहिं रामनाम सम दूजो * सकृतहु कहत सुकृति सब पूजो ॥
लखि मुनि रामनाम परभाऊ * गये गेह निज निज भरि चाऊ ॥
येक समय कुंभज ऋषिराई * संध्या करत सिंधुतट जाई ॥
मज्जन करन लगे धरि चीरा * जाननहित प्रभाव निधि नीरा ॥
दियो तरंगनि वसन बहाई * कोपित भयो कछुक मुनिराई ॥
रामनामको सुमरि प्रभाऊ * लियो पान करि सिंधु सुभाऊ ॥
देव आइ सब स्तुति कीन्हे * मोचि महोदधि मुनि तब दीन्हे ॥

दोहा—तबहिंते सागर सलिल, होत भयो अतिखार ॥
पै अगस्त्यपरभावते, भयो न अशुचि विचार ॥ १० ॥
कुंभज यश कहुलौं कहौं, जाहिर जगत पुराण ॥
मानि गुरूजेहिं सदन महँ, सिययुत गे भगवान ॥ ११ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अथ शृंगीऋषिकी कथा।

दोहा—शृंगीऋषिकी अब कथा, मैं वर्णौं सुखदानि ॥
जाहि सुनत श्रीहरिरसिक, मति गति अति हुलसानि ॥ १ ॥

रहे विभांडक इक मुनिराई * राम भजन बहु काल बिताई ॥
बसे विपिनमहँ विरचि सुवासा * हरि विहाय नहिं दूसरि आसा ॥
शृंगी ऋषि भो तासु कुमारा * जो तजि विपिन न क्षितिय निहारा
रोमपाद कोउ रहे नरेशा * बसे अंगनामक शुभ देशा ॥
तासो नृप दशरथ सुजानकी * रही प्रीति जिमि जलज भानकी ॥
शांता सुता अवध नृप केरी * रही परम सुंदरी निवेरी ॥
मित्रभावते अंग भुवाला * मांग्यो दशरथसों इक काला ॥
शांता सुता देहु नृप हमको * कछु दिनमें हम देहैं तुमको ॥

सुता दियो नृपमान मिताई ❀ शांतहि अंग नृपति घर ल्याई ॥
मित्रसुता निज सुता समानी ❀ मान्यो अंगनरेश विज्ञानी ॥
येक काल सोइ नृपके देशा ❀ महाअवर्षण कीन सुरेशा ॥
पूंछ्यो नृपति ज्योतिषिन काहीं ❀ जल बरसै घन किमि महि माहीं ॥

दोहा—कह्यो वचन दैवज्ञ सब, तनय विभांडक जोइ ॥
शृंगीऋषि है नाम जेहिं, तेहिं आगम जो होइ ॥२॥

बरसै मेघ मिटै दुर्भिक्ष्या ❀ होइ रावरो राज सुभिक्ष्या ॥
रोमपाद कह केहिं विधि आवै ❀ तोहि लेवावनको अब जावै ॥
जिहिं सो कहैं भूप ऋषि आनै ❀ सो अति शापभीति डर मानै ॥
वारवधू नृप कह्यो बुलाई ❀ आनहु करि उपाय ऋषिराई ॥
गणिका कही अवशि हम लैहैं ❀ करि उपाय ऋषिशाप बचैहैं ॥
अस कहि गईं सबै वनमाहीं ❀ यह चरित्र जान्यो ऋषि नाहीं ॥
पिता विभांडकसो ऋषि केरो ❀ कियो लेन फलको कहुँ फेरो ॥
तब आश्रम गणिका सब आईं ❀ पहिरि वसन भूषण छबिछाईं ॥
ऋषिन लख्यो कबहूं पुरवासी ❀ रह्यो जन्मते विपिन निवासी ॥
भेद नारि नरको नहिं जान्यो ❀ वारवधूगणको मुनि मान्यो ॥
शृंगी ऋषि आगू चलि आयो ❀ गणिकनको मुनि गुनि शिर नायो ॥
लै आयो निज आश्रम माहीं ❀ अतिथि जानि पूज्यो तिनकाहीं ॥

दोहा—कंद मूल फल भेट दिय, सो गणिका लै लीन ॥
अति प्रसन्न बोली वचन, अति आदर तुम कीन ३॥

लीजे फल मुनि कछुक हमारे ❀ ल्यायो तुम हित मीठ अपारे ॥
अस कहि मोदक मुनिकहँ दीन्हो ❀ फल गुनि मुनि भक्षण द्रुतकीन्हो ॥
महामीठ गुणिकहँ तिन पाहीं ❀ ये फल होत कौन वनमाहीं ॥
गणिका कह्यो जहां मम धामा ❀ तहँ येई फल केर अरामा ॥
अस कहि तासु पिता भय मानी ❀ कियो पयान तुरत छबिखानी ॥
मुनि मन लालच बढो अपारा ❀ करिहौं कबते फलन अहारा ॥
दूजे दिवस विभांडक जबहीं ❀ गये कहूं फल आनन तबहीं ॥

श्रृंगीऋषिके आश्रम माहीं * आये तिय चितवत चहुँघाहीं ॥
श्रृंगीऋषि आगू पुनि लीन्हो * पुनि फलप्रद अति आदर कीन्हो ॥
गणिकनको दीन्हो फल मूला * गणिका वचन कहेउ अनुकूला ॥
हम तुरतावश फल नाहिं ल्याये * मुनि चाहहु जो ते फल खाये ॥
तौ हमरे आश्रम पगु धारो * निज रुचिके फल विपुल अहारो ॥

दोहा-श्रृंगीऋषि सुनिके वचन, मधुर फलनके आस ॥
गणिकन सँग गवनत भयो, त्यागि पिताकी त्रास ४

लै गणिका श्रृंगी ऋषि काहीं * आइ रोमपाद पुर माहीं ॥
पुनि पद परत जलद बहु वर्षे * भयो सुभिक्ष प्रजा सब हर्षे ॥
चलि आगू ऋषिको नृपल्यायो * निजमंदिर महँ वास करायो ॥
नृप पुर प्रजा नारि नरकाहीं * मुनिसम मान्यो मुनिमनसांहीं ॥
सचिव कह्यो भूपति पै जाई * नाथ तुरत ब्राह्मण बुलवाई ॥
श्रृंगीऋषि कहँ शांता दीजै * गृहमहँ विधिवत व्याह करीजै ॥
नातो जबहिं विभांडक ऐहैं * सपुर तुमहिं करि कोप जरैहैं ॥
मीत तुम्हार अवध नरनाहा * लहिहैं सुख सुनि सुताविवाहा ॥
सुनि नृप तुरत तैसही कीन्हो * शांता श्रृंगीऋषिकह दीन्हो ॥
कुपित विभांडक जब गृह आये * सुत सुतवधू निरखि सुखछाये ॥
पुनि श्रृंगी ऋषिकहँ मुनिराई * दियो नारि नर भेद बताई ॥
तिहि श्रृंगीऋषिकहँ अवधेशा * ल्यायो पुत्रहेतु निज देशा ॥

दोहा-वाजिमेध करवाय ऋषि, करवायो सुतयाग ॥
तब दशरथके चारि सुत, भये उदित भो भाग ॥५॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

अथ विश्वामित्रकी कथा।

दोहा-विश्वामित्र महर्षिकी, भनो मनोहर गाथ ॥
जाहि आपनो गुरु कियो, लषणसहित रघुनाथ ॥१॥

विश्वामित्र रह्यो इक राजा * पाल्यो पुहुमी सहित समाजा ॥

गयो कबहु इक समय शिकारा ❀ तहँ वशिष्ठ आश्रमहिं निहारा ॥
दर्शनहित नृप निकट सिधारयो ❀ आदरयुत मुनि ताहि हँकारयो ॥
विश्वामित्र मुनिहिं शिर नायो ❀ कुशलप्रश्न मुनि नृपहिं सुनायो ॥
मुनिकह देहुँ निमंत्रण आजू ❀ भोजन कीजे सहित समाजू ॥
नृपकह रावरि कृपा महाई ❀ याते कौन और फलदाई ॥
शासन देउ भवन अब जाहीं ❀ भोजनकी कछु इच्छा नाहीं ॥
पुनि पुनि नृपहिं निमंत्र्योमुनिवर ❀ मान्यो नृप तब शासनमुनिकर ॥
सबला नामक धेनु सुहाई ❀ ताके निकट गये मुनिराई ॥
कह्यो देहु परिपूरण साजू ❀ राख्यो नेवति नरेशहिं आजू ॥
सबला तब सिरज्यो पकवाना ❀ सुधासरिस जे चारि विधाना ॥
सेनसहित भोजन करवायो ❀ जो जाके मन सो सब पायो ॥

दोहा—जौन जौन मुनि मांगहीं, सबलासों कर जोरि ॥
तौन तौन सिरजैं सुरभि, वस्तु अपूर्व अथोरि॥२॥

सेनसहित परिपूरण भूपा ❀ मान्यो सुरभिहि सुरतरुरूपा ॥
धरणि रत्न यह अहै अमोला ❀ अस विचारि नृपमुनिसों बोला ॥
लेहु चतुर्दश सहस मतंगा ❀ शत दासी सुंदर जिन अंगा ॥
दशसहस्र स्यंदन युत साजू ❀ लेहु ग्राम शत तुम मुनिराजू ॥
औरहु मन वांछित मुनि लीजै ❀ पै सबला सुरभी मोहिं दीजै ॥
सुनि वसिष्ठ भूपतिकी बानी ❀ कह्यो वचन अति अनरथ मानी ॥
मास मास मम यज्ञ निवाहू ❀ जानहु सबलाते नरनाहू ॥
कौन भांति सबला हम देहीं ❀ अस मांगव अनुचित नहिं केहीं ॥
सुनि मुनि वचन नरेश रिसाई ❀ लियो जोरसों धेनु छुडाई ॥
जब लै चले धेनु कहँ भूपा ❀ सबला भई क्रोधको रूपा ॥
विराझि बेझिजन बंधन टोरी ❀ मुनि समीप आई दुख बोरी ॥
रोवत कह्यो दुखित मुनि पाहीं ❀ केहि कारण त्याग्यो मोहिं काहीं ॥

दोहा—मुनि कह हम नहिं त्याग कियो, राजा बली महान
बरिआई तोको हरयो, करि मेरो अपमान ॥ ३ ॥

अबलु विप्र हम का अब करहीं * कौन भांति नृपसों अपहरहीं ॥
धेनु कह्यो बलु विप्र महाना * मोहिं शासन दीजे भगवाना ॥
कह्यो वसिष्ठ करौ जस चाहौ * तुम समरथ सब कारज माहौ ॥
सुनि मुनि शासन धेनु तुरंता * सिरज्यो यवन महाबलवंता ॥
भयो तहां संगर अति घोरा * यवन हने नृप भटन करोरा ॥
विश्वामित्र पुत्र शतधाये * यमन मारि शर सबन पठाये ॥
सृज्यो बहुरि सुरभी बलवाना * शेख सैद अरु मुगल पठाना ॥
प्रतिरोमन सुरभी तनु तेरे * निकसे म्लेच्छ करोर करेरे ॥
हुत नृपके शत सुत तिन मारे * स्यंदन सिंधुर सुभट संहारे ॥
विश्वामित्र पराजय पाई * वनमहँ कियो महातप जाई ॥
शम्भु प्रसन्न अस्त्र सब दीन्हें * कौशिक पुनि आगम तहँ कीन्हें ॥
कौशिक पावक अस्त्र चलायो * मुनि वसिष्ठ आश्रमहिं जरायो ॥

दोहा-ब्रह्मदंड कर करि तहां, कौशिक सन्मुख आइ ॥
खरो भयो प्रलयागि सो, वरवशिष्ठ मुनिराइ ॥ ४ ॥

अस्त्र शस्त्र जितने शिव दीन्हें * नृप वसिष्ठपर मोचन कीन्हें ॥
ब्रह्मदंड महँ शांति भये सब * यथा दवानल पाइ बारि जब ॥
धिग धिग कहि क्षत्रिय बलकाहीं * ब्रह्मतेज सम है कछु नाहीं ॥
ब्रह्मतेज तपकरि मैं लैहौं * नातौ यह तनु तजि हठि दैहौं ॥
अस कहि कियो महातप जाई * विधिसों तब महर्षि पद पाई ॥
कावेरी दक्षिण तट माहीं * करन लग्यो तप कठिन तहांहीं ॥
इते त्रिशंकु अवधपुर राजा * बोलि वसिष्ठ कह्यो यह काजा ॥
नाथ मोहिं अस यज्ञ करावहु * यह शरीर तें स्वर्ग पठावहु ॥
मुनि कह यह अशक्य जग माहीं * तब नृप गो गुरु पुत्रन पाहीं ॥
कह अभीष्ट अपनो शिर नाई * सुनि गुरुसुत बोले मुसक्याई ॥
जोन कियो गुरु सो केहि भांती * हम करिहैं भूपति अरिघाती ॥
कह्यो नृपति करि कोप महाना * कागुरु मिलौ न मोकहँ आना ॥

दोहा-लखि त्रिशंकुको गर्व अति, गुरुसुत दीनो शाप ॥
होहु भूप चंडाल तुम, पावहु अति संताप ॥ ५ ॥

होत विहाल त्रिशंकु नरेशा * होत भयो चंडालहि भेषा ॥
श्यामवसन आयस आभरणा * अतिशय रौद्र श्याम तनु वरणा ॥
चल्यो नगरते जरत शरीरा * कोउ नहिं देखि परयो हरपीरा ॥
भ्रमत भ्रमत कौशिक मुनि पासू * गिरयो आय भूपति भरित्रासू ॥
त्राहि त्राहि शरणागत तोरे * जानहु नाथ नाथ नहिं मोरे ॥
गुरु गुरुपुत्र कथा सब गाई * लगी दया मुनि लियो टिकाई ॥
जानि त्रिशंकु आश मन केरी * विश्वामित्र वानि अस टेरी ॥
मुनिन बोलि अस यज्ञ करैहौं * यहि तनुते तोहिं स्वर्ग पठैहौं ॥
शिष्य पठै पुनि मुनिन बुलाये * तहँ वशिष्ठके सुत नहिं आये ॥
तिनहिं शाप दै कौशिक जारा * विरच्यौ यज्ञ सहित संभारा ॥
यज्ञ अंत तप बल दरशायो * तनुयुत स्वर्ग त्रिशंकु पठायो ॥
लखि त्रिशंकु कहँ गुरु अपकारी * वारण कियो वज्रको धारी ॥

दोहा—पत पत वासव जब कह्यो, लागो गिरन नरेश ॥
त्राहि त्राहि कह कौशिकहि, रोकत मोहिं सुरेश ॥६॥

विश्वामित्र कोप तब कीन्हो * तिष्ठ २ अस मुख कहि दीन्हो ॥
पुनि हरिभजन प्रभाव दिखायो * स्वर्ग द्वितीय रचन मन लायो ॥
विरच्यो देव नक्षत्र अनेका * फल तरु योनि अन्न सविवेका ॥
रचत द्वितीय मुनिहि संसारा * लखि आये तहँ देव अपारा ॥
करि स्तुति मुनिकोप छुडाये * बार बार मुनि कहँ समुझाये ॥
मुनि कह ममकृत नखत अपारा * करैं सदा दक्षिण उजियारा ॥
जोन जोन मैं वस्तु बनायो * सो सब सत्य होइ मम गायो ॥
बसै स्वर्ग महँ सहित शरीरा * यह त्रिशंकु सुरसम अतिधीरा ॥
एवमस्तु कह सब असुरारी * दक्षिण रही त्रिशंकु सुखारी ॥
ऊरधपद अध शिर गुरुद्रोही * दक्षिणदिशा गगनमहँ सोही ॥
अस कहि गये देव निज लोका * विश्वामित्र भये बिन शोका ॥
पुनि दक्षिणते अनत सिधारी * इक सर बैठि कियो तपभारी ॥

दोहा—येक समय तहँ मेनका, आई मज्जन हेत ॥
तिहि लखि विश्वामित्रको, भूल गयो सब चेत ॥७॥

मुनि दशवर्ष मेनका संगा ❀ किय विहार मुनि विवश अनंगा ॥
दशयें वर्ष खबरि पुनि आई ❀ तहँते कौशिक चल्यो पराई ॥
वर्षसहस्र कठिन तप कीनो ❀ तब सुरनाथ महाभय भीनो ॥
पठयो रंभाको सुरराजा ❀ कौशिक तप खंडनके काजा ॥
दीन शाप रंभे मुनिराई ❀ होहु पषाणमहा दुखपाई ॥
एहैं कबहुँ वशिष्ठ उदारा ❀ होइ तोर तबहिं उद्धारा ॥
अस कहि तेहि उत्तर दिशि आये ❀ सहस वर्षलों तप मनलाये ॥
सहस्रवर्ष अंतहि मुनिराई ❀ भोजन करन लगे कछु ल्याई ॥
तहां इंद्र द्विजवपु धारि आयो ❀ यांचो अन्न तुरत सो पायो ॥
तहँते कौशिक फेरि सिधारे ❀ शैल हिमालय महँ व्रतधारे ॥
सहस वर्ष वीत्यो जब काला ❀ शिरते कढी तपानलज्वाला ॥
जरन लग्यो त्रिभुवन तेहि माहीं ❀ सुर पराइ गे विधिपुर काहीं ॥

दोहा-विनय कियो मुख चारिसों, जो मांगै सो देहु ॥
विश्वामित्र तपानलै, होत भुवन सब खेहु ॥ ८ ॥

तब विधि मुनि समीप चलि आये ❀ विश्वामित्रहि वचन सुनाये ॥
तुम ब्रह्मर्षि भये तपकरिके ❀ मांगहु और सबै दुख हरिके ॥
तब कौशिक बोल्यो विधिपाहीं ❀ और आश मेरे कछु नाहीं ॥
रामभक्ति दीजै मुखचारी ❀ उरते कबहूँ टरै न टारी ॥
विधि प्रसन्न ह्वै सो वर दीन्हो ❀ गवन भवन कहँ तुरते कीन्हो ॥
कौशिक भजन पुंज सोइ जागे ❀ संग संग रघुपति वनबागे ॥
पूर्वजन्म महँ द्विजसुत रहेऊ ❀ सेवन संत बानि सो गहेऊ ॥
ह्वै प्रसन्न सेवन लखि साधू ❀ कोउ कह वचन आनंद अगाधू ॥
जस तुम करहु सन्त सेवकाई ❀ तस तुम्हरी करिहैं रघुराई ॥
साधुवचन सुनि उपज्यो ज्ञाना ❀ तजि दीन्हो संसारमहाना ॥
भजन करत बहुदिवस बितायो ❀ पुनि जब काल तासु नियरायो ॥
मगमहँ पर्‌यो कह्यो तहँ भूपा ❀ भूप होन मन चह्यो अनूपा ॥

दोहा-सोइ वासनाके विवश, कुशल लिये अवतार ।
तासु चरण चापे दोउ, कौशलराजकुमार ॥ ९ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

अथ गौतमऋषिकी कथा ।

दोहा-अब बरणों गौतम कथा, संत श्रवण सुखदानि ॥
गौतमऋषि विधिको सुवन, होत भयो गुणखानि ॥ १ ॥

नारी मिली अहल्या नामा ❀ शील रूप गुण पतिव्रतधामा ॥
गौतमको सेवन बहु कीन्हों ❀ सब विधिते निज वश करि लीन्हों
येक समय पुनि अस वर मांग्यो ❀ देहु सुवन सुत कर्महि जाग्यो ॥
गौतम कह्यो संत सेवकाई ❀ करिहौ सुत पैहौ सुखदाई ॥
तबसे सेवन लगी संतपद ❀ नाव अहल्या सहित प्रीति पद ॥
सेवन करत गयो चिरकाला ❀ येक समय कोउ साधु दयाला ॥
कह्यो मांगु तियवर हम देहीं ❀ तुम सेवा वश करें न केहीं ॥
कह्यो अहल्या सुत मोहिं दीजै ❀ जासु सुयशरस त्रिभुवन भीजै ॥
संत कह्यो वांछित सुत पैहैं ❀ जो निमिकुल आचारज ह्वै हैं ॥
जो करिहौ पतिको अपकारा ❀ शिला होहुगी तुम जरि छारा ॥
सुखदायक फल संत कृपाके ❀ शतानंद प्रगट्यो सुत ताके ॥
सो वासवसों किय व्यभिचारा ❀ अघवश भई शिलाकी छारा ॥

दोहा-रघुपति आइ उधार किय, सोइ अहल्यानारि ॥
निमिकुल उपरोहित भयो, शतानंद तपधारि ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

अथ सुमंतादिकनकी कथा ।

दोहा-श्रीदशरथ महाराजके, मंत्री आठ सुजान ॥
तिनकी गाथा मैं कहौं, सुमंतादि मतिवान ॥ १ ॥

एक समय भूपति दरबारा ❀ गये धर्म श्रुति शिव सकुमारा ॥
निज वपु गोइ विप्र वपु धारे ❀ उठे भूप तनु तेज निहारे ॥
करि प्रणाम आसन बैठाये ❀ लषण कुमारको द्विज गाये ॥
बोलि कुमार नृपति दरशाये ❀ ते मनहीं मन पद शिर नाये ॥
गे निज निज गृह द्विज मतिधीरा ❀ हृदय राखि चाल्यो रघुवीरा ॥
तब मंत्रिनसों भन्यो नरेशा ❀ ये द्विज कौन रहत केहि देशा ॥
रामरूप मंत्री उर राखी ❀ दीन्हे नाम यथारथ भाषी ॥
तब कुमार दर्शनके काजू ❀ अपनो रूप गोय महाराजू ॥
शंभु धर्म कृत्तिका कुमारा ❀ चारों वेद गणेश उदारा ॥
आये सभा आपके नाथा ❀ पुत्रन लखि ह्वै गये सनाथा ॥
मंत्रिनकी लखिकै चतुराई ❀ परम प्रसन्न भये नृपराई ॥
तिनको यह अचरज कछु नाहीं ❀ लखहिं राम छवि छन माहीं ॥

दोहा–सुमंतादि जे सचिव वसु, तिनके त्रिविध चरित्र ॥
जो सुमिरै इकवारहू, नशैं अनेक अमित्र ॥ २ ॥
त्रेतायुग हरि जननकी, मैं वरण्यों कछु गाथ ॥
अहैं अमित कहँलों कहौं, संतन पद मम माथ३ ॥

इति सिद्धश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीसीतारामचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीविश्वनाथसिंहजूदेवात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां त्रेतायुगखंडे एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

इति त्रेताखंड संपूर्ण ।

अथ द्वापरयुगके भक्तोंकी कथा ।

सो०–जय शत पंकज भान, चरण देवकीलालके ॥
वर्णित वेद पुराण, अभयदानिकी बानि हठि ॥१॥
जयति साधुपद कंज, दारण दारुण दुख दुसह ॥
शरणागत मनरंज, भववारिधि बेरो विशद ॥ २ ॥

दोहा–जय गौरीसुत गजवदन, येकरदन गणनाथ ॥
विघनकदन आनँदसदन, ध्याऊं धारि महिमाथ १ ॥
जय वाणीवर्धन सुमति, हरण कुमति जगमातु ॥
दारुण विपति विदारिणी, कारणि सिद्धि विख्यातु २
हरि गुरु जयति मुकुंद पद, वंदौं बारहिं बार ॥
मोसम अमित अधीनके, करन आसु उद्धार ॥ ३ ॥
जयति जानकीजानिके, कृपापात्र पदकंज ॥
जनकनाम विशुनाथ मम, सुमिरत कर दुखभंज ४ ॥
सतयुग त्रेताके सकल, भन्यो संत इतिहास ॥
अब द्वापरयुग संतकी, करियत कथा प्रकास ५ ॥
वर्णत श्रुति शुकदेवको, मुक्तजीव जग सोइ ॥
वामदेव हैं धौंनहैं, यह नहिं जानै कोइ ॥ ६ ॥

अथ शुकदेवजीकी कथा।

दोहा–ताते प्रथमहि मैं कहौं, श्रीशुकदेव चारित्र ॥
जेहि मुख निर्गत भागवत, कीन्हो जगतपवित्र १ ॥

गौरी सहित शैल कैलासा ❀ येक समय बैठे कृतवासा ॥
आये तहँ नारद मुनिराई ❀ बैठे दंपतिको शिरनाई ॥
कह्यो गौरिसों बहुरि मुनीशा ❀ कहन चहौं जो सुनै न ईशा ॥
विहँसि कह्यो हर रहसि सिधारी ❀ सुनो जौन भाषै तपधारी ॥
शिवा मुनीशहिं संग लिवाई ❀ बैठी कछुक दूरिमहँ जाई ॥
मुनिकह कहत बनत नहिं मोसों ❀ राखत शंभु कपट कछु तोसों ॥
तोहिं न अपनो तत्त्व उचारैं ❀ तुव मुंडनमाला उर धारैं ॥
मृषा मातु तौ पूंछु भवानी ❀ वकसे जनम मरणकी हानी ॥
उमा तुरत उठि हरढिग आई ❀ कीन्ही विनय चरण शिर नाई ॥
नाथ येक संदेह निवारहु ❀ काकर मुंडमाल उर धारहु ॥

विहँसे हर नारद कृत जानी * कह्यो वचन अस सुनहु भवानी ॥
प्राणहुँते प्रिय हो तुम मोरे * पहिरौं मालमुंड कर तोरे ॥
दोहा—जब जब तुम तनु त्यागहूं, तब तब लै शिर तोर ॥
मैं अपने उर धारहूं, ऐसो प्रण है मोर ॥ २ ॥
बहुरि जोरि कर कह्यो भवानी * जन्म मरण हरु करुणाखानी ॥
गौरिवचन सुनि तब त्रिपुरारी * बोले वचन सुखित सुनु प्यारी ॥
रामतत्त्व करिकै उपदेशा * हरिहौं तव जग जन्म कलेशा ॥
अस कहि लै सँग शिवा इशाना * महाविपिन कहँ कियो पयाना ॥
तहँ पुनि डमरु बजावन लागे * वनके जीव भभरि भय भागे ॥
जिहि तरुतर हर डमरु बजाये * तासु निकट वनजीव न आये ॥
पै तेहि तरुमहँ कोटर रहेऊ * शुकशावक अपक्ष तहँ ठयऊ ॥
सोइ तरुतर ढिग गौरि बुलाई * भाषण लगे तत्त्व गिरिराई ॥
रामतत्त्व सुनि शैलकुमारी * देनलगी सब समुझि हुँकारी ॥
दियो हुँकारी किंचित काला * नींद विवश पुनि हैगे बाला ॥
सो शुकशावक श्रवणप्रभाऊ * भयो ज्ञान नहिं भयो अघाऊ ॥
दोहा—लग्यो हुँकारी देन सोइ, कथित शंभुके ज्ञान ॥
कछुक कालमहँ नींदवश, जानि गौरि भगवान॥३॥
तिहिं जगाय कह वचन पुरारी * कौन देत इत रह्यो हुँकारी ॥
हम नाहिं जानहिं शिवा कह्यो तब * कौन हुँकारी देत रह्यो अब ॥
तब सकोप शिव डमरु बजायो * शुक शावक ह्वै सपक्ष परायो ॥
पीछे धाये शिव धनुधारी * कहत जात अस वचन पुकारी ॥
रामतत्त्व छिपि शुक सुनि लीन्हो * जैहै कहां खोरि अति कीन्हों ॥
भगत भगत शुक बच्यो कहूं ना * नहिं थल लख्यो शंभुते सूना ॥
अवलोक्यो यक विमल तडागा * विकस रहे पंकज चहु भागा ॥
तिहि सर माहिं व्यासकी नारी * मज्जन करत रही सुकुमारी ॥
तिहि छन तिहि आई जमुहाई * तासु उदर प्रविश्यो शुक जाई ॥
पीछे पहुँचे तहां इशाना * कह्यो चोर तव उदर लुकाना ॥

तब भय मानि व्यासकी नारी ❀ सुमिरयो पति नहिं गिरा उचारी॥
विनय कियो तहँ व्यास सिधारी ❀ शुणि आवी फिरिगे त्रिपुरारी॥
दोहा–व्यासनारिके उदरमहँ, द्वादशवर्ष निवास॥
करत भयो शुक मानिकै, हरिमायाकी त्रास॥४॥
तहँ नारायण तुरत सिधारे ❀ शुकहिं बुझावत वचन उचारे॥
तजहु गर्भ माता दुख होई ❀ कह्यो गर्भते तब शुक रोई॥
माया लेहु अकेलि मुरारी ❀ तब मैं ऐहौं जगत मझारी॥
हरि कह मम माया नहिं लागी ❀ तुम ह्वैहो अनन्य अनुरागी॥
तब शुक निकसि गर्भते आयो ❀ निरखि मातु पितु सभय परायो॥
लीन्हो व्यासदेव पछिआई ❀ बारहिं बार पुकारत जाई॥
पुत्र पुत्र हे पुत्र पियारे ❀ फिरहु फिरहु कत जात सिधारे॥
वचन न व्यासदेवते देखी ❀ प्रविश्यो शुक तरुगणन विशेखी॥
तरुगण उतर दियो मुनिव्यासे ❀ फिरहु फिरहु मम छोडहु आसे॥
सुनि अस वचन उलटि मुनि आये ❀ बारबार मन अचरज लाये॥
उते गये जब शुक कछु दूरी ❀ मनमहँ हरिमायाभय भूरी॥
मिले आय सुरगुरु पथमाहीं ❀ लगे बुझावन मुनि सुतकाहीं॥
दोहा–ज्ञानभक्ति रत जगरहित, अनुपम व्यासकुमार॥
पै बिन गुरु कीन्हे सकल, जानो वृथा विचार॥५॥
ताते करहु योग गुरु जाई ❀ सो माया भय सकल मिटाई॥
कह्यो तहां शुकको जगत्यागी ❀ को अनुपम यदुपति अनुरागी॥
किहि माया विकार नहिं लागे ❀ काके उर दुख सुख नहिं जागे॥
कही बृहस्पति मुनि अस बानी ❀ है अस जनक भूप विज्ञानी॥
ताहि करौ गुरु तुम मुनिनायक ❀ सो सब विधि उपदेशन लायक॥
सुरगुरु वचन मानि मुनिराई ❀ चल्यो जनकपुर कहँ अतुराई॥
गयो जनकपुर प्रथम दुवारा ❀ तब यह कौतुक तहां निहारा॥
रूपवती युवती इक नारी ❀ अनुपम अभरण अंबरधारी॥
पुरुष ताहि द्वै ताडन करते ❀ नेकु दया उरमें नहिं धरते॥

ताहि निरखि शुक गिरा उचारी * दया छोडि कित ताडहु नारी ॥
कह्यो पुरुष तब हे मुनिराई * पूंछि लेहु भूपति सन जाई ॥
सुनि शुकदेव चले पुनि आगे * तहँ अस कौतुक देखन लागे ॥
दोहा—तैसेहि पुनि इक नारिके, द्वै नर करत प्रहार ॥
तिनहुंपै शुक कहत भो, पहुँचि दूसरे द्वार ॥ ६ ॥
तेऊ कह्यो पूंछि नृपपाहीं * करहु असंशय निज जिय काहीं ॥
करत गलानि मुनीश सिधायो * महापाप नगरी महँ आयो ॥
जब पहुँच्यो नृप तीसर द्वारा * तहां येक आश्चर्य निहारा ॥
येक पुरुष कहँ नृप भट दोई * कसा हनैं निरखै सब कोई ॥
पूंछ्यो व्यास सुवन तिनपाहीं * कत ताडहु सुन्दर नरकाहीं ॥
तेउ कह पूछहु मुनि महिपालै * नहिं जानै हम नेकु हवालै ॥
मुनि धरि मौन महीप समीपा * चलो गयो शंकित कुलदीपा ॥
शुक कहँ तकत जनक उठि धाये * बारबार चरणन शिर नाये ॥
कीन्हो कनकासन आसीना * सादर सविधि सुपूजन कीना ॥
पूंछि कुशल पंकज कर जोरी * कह्यो भागि धनि २ मुनि मोरी ॥
जौन हेतु प्रभु कियो सिधारण * कहहु कहनके योग जो कारण ॥
मुनि कह बहुरि कहै निज बाता * बहु अनरथ तव द्वार दिखाता ॥
दो०—अस कहि जो जो मुनि लख्यो, सो सब कह्यो बखानि
जनक कहन लागे सकल, हेतु जोरि युगपानि ॥ ७ ॥
प्रथम नारि निरख्यो मुनि जोई * ताहि कहै तृष्णा सब कोई ॥
जो सिगरो संसार नचावै * सो ताडन मेरे पुर पावै ॥
जो निरख्यो मुनि दूसरि नारी * तासु नाम माया दुखकारी ॥
बन्धन पाय परी मम द्वारा * ताको इतै न कछु संचारा ॥
ताडन लहत पुरुष जो देख्यो * जानहु मनसिज बली विशेख्यो ॥
यह सिगरे जगको दुखदाई * ताते लहत दंड मुनिराई ॥
जनक वचन सुनि तव शुकदेवा * जान्यो कृपापात्र यदुदेवा ॥
बहुरि कह्यो मैथिल शिरनाई * बसहु मुनीश वाटिका जाई ॥

सुनत सुखित मुनि गयो अरामे * विटप भौन नलिनी अभिरामे ॥
तहि निशि मनहारी बहुनारी * भूपति भेजी तुरत सिधारी ॥
पुनि बहुरतन अमोल महीपा * भेजि दियो शुकदेव समीपा ॥
फेरि अनेक यज्ञ संभारा * भेज्यो शुक ढिग नृपति उदारा ॥

दोहा—यों विधान अनेक पुनि, साधन अमित विराग ॥
पठयो पुनि शुकदेव ढिग, जानत हित अनुराग ८॥
प्रथम पहर नारी गई, रत्न दूसरे याम ॥
यज्ञ वस्तु तीजे पहर, चौथे विरति अकाम ॥ ९ ॥

अर्थ धर्म कामहु औ मोक्षा * कियो न शुक चारिहुकी इक्षा ॥
गये जनक जब भयो प्रभाता * देखि दशा आनँद न समाता ॥
परचो चरण पंकज महाराजा * गुण्यो मुनीश रूप रघुराजा ॥
कह्यो देहु आयसु शुक मोहीं * मैं न सिखावन लायक तोहीं ॥
कह्यो मुनीश देहु उपदेशा * यहि कारण आयो तुव देशा ॥
नृप कह अब कछु रह्यो न बाकी * तुम मति तो यदुपति रस छाकी ॥
आपहिं मोहिं देहु उपदेशा * मेरे शिर सब नाथ निदेशा ॥
तब प्रसन्न शुक वचन उचारा * तुव कुल है हरिभक्त उदारा ॥
अस कहि है प्रसन्न मुनिराई * चल्यो तहांते अनत सिधाई ॥
जितने काल धेनु दुहि जाती * तितने काल सुमुनि दिन राती ॥
भिक्षा देहि कहत अस वानी * ठहरत गृही न गृहन विज्ञानी ॥
विचरत जगत जगत नहिं लागत * सोन भगत तिहि लखि जग भागत

दोहा—सुखइव संतसमाजको, विषय न करन विषाद ॥
वरणों मैं संक्षेपसों, शुक रंभा संवाद ॥ १० ॥
व्यास परीक्षा लेनहित, रंभहि शुकै समीप ॥
पठयो सो आवत भई, बोली वचन प्रतीप ॥ ११ ॥

सवैया—कंचन कुंभ उरोज अनूपम अंगनि चन्दन चारु लगाई ॥
चंद्रमुखी मृगनैनि सुधाते सुमीठि महा मुसकानि मिठाई ॥

श्रीशुकदेव सुनो चित्त दै रघुराज यही मोहिं सांच देखाई ॥
जो ललना न लगाय हिये जनसो हिय जन्म वृथाहिं बिताई ॥१॥
दोहा-प्रेम लपेटे अटपटे, सुनि रंभाके बैन ॥
कह्यो वचन शुकदेव हँसि, कियो जगतकी भैन १२
सवैया-रूप अनूप अचिंत प्रभाव निरंजन जासु दयाकि बडाई ॥
विश्वकु सिर्जन पोषण सोचन जाकु बसै हठि हाथ सदाई ॥
कान दे रंभ बखान सुनो रघुराज सुदीन दुनीकु गुसांई ॥
मूढ भज्यो नहिं जो यदुराज सुदीयत जन्म वृथाहि बिताई॥२॥
रंभोवाच-मैनमवासिन मोदकी मूरति सोनजुहीकि लतासि सुहाई ॥ बिंबसमान बसै अधरानि सुधारस हास प्रकाश जुन्हाई ॥ व्यासके नंदन सांची कहो रघुराजसु अंग तरंग निकाई ॥ जो युवती न लगाय हिये असि सो दिय जन्म वृथाहिं बिताई ॥ ३ ॥ शुक उवाच ॥ चारि सुबाहु विशाल गदादिक आयुध शत्रुन भीतिके दाई ॥ प्रीति बढै उरम वनमाल सुकौस्तुभ राजै छटा क्षितिछाई ॥ दंभ विहाइके रंभ सुनो रघुराज दयानिधि श्रीयदुराई ॥ जो नहिं ध्यान धरचो अस मूरति सो दियो जन्म वृथाहिं बिताई ॥ ४ ॥ रंभोवाच ॥ आगकि रेख अलेख अनंदको बेष भरी नवयौवनताई ॥ आनन जासु सुवासु निवासु कपोलनि आरसीकी ललिताई ॥ मानस दैकै मुनीश सुनो जन जो करसों करिकै मुसक्याई ॥ चुंबन कीन्ह न चारु कपोलनि सो दिय जन्म वृथाहिं बिताई ॥ ५ ॥ शुक उवाच ॥ पंकजनैन सबै प्रभुके प्रभु हार विहारकी शोभ महाई ॥ अंगद बाहु करै कटके पग नूपुर पूरे प्रभा चहुँ धाई ॥ श्रीरघुराज सुनो सुर सुंदरि श्रीयदुराजसु नेह लगाई ॥ जो नहिं ध्यान धरचो अस रूपहिं सो हिय जन्म वृथाहिं बिताई ॥ ६ ॥ रंभोवाच ॥ माधुरि बैनकि बोलनिहारि सुकंचन कांति रही तनुछाई ॥ नाभिलुँहार विहार करै सुविहारमें कोककला निपुणाई ॥ हे शुकदेव सदैव धरो मुख मेरो कही रघुराज मिठाई ॥ जो न भयो तियके रसके वश सो दियो जन्म वृथाहिं बिताई ॥ ७ ॥ शुक उवाच ॥ भालमें क्रीट सुकानन कुंडल वाहन

जासु अहै खगराई ॥ उद्धव सात्यकि संग सखा अरु अग्रज वीर बडो बलराई ॥ रंभ सुनो परहूते अहै परशंभु स्वयंभू करै सेवकाई ॥ ता पद प्रीतिमें जो न पग्यो जन सो दियो जन्म वृथाहिं बिताई ॥ ८ ॥ रंभोवाच ॥ फूलन वेणि गुही अहिनीसी लसे अतरानिकि सौरभताई ॥ अंगनिमें अंगराग अनेकनि ओंठनिमें तिमि बिंब ललाई ॥ श्रीरघुराज कहौं गुणिके मुनि जो न हेमंतमें नारि सुहाई ॥ शंभु उरोज सरोज हियो दिय सो दिय जन्म वृथाहिं बिताई ॥ ९ ॥ शुक उवाच ॥ विश्व भरैया विज्ञान मयो वपुहै जग व्यापि परेश सदाई ॥ दिव्य अनेक गुणानि प्रकाशक राजाधिराज अहै रघुराई ॥ रंभ न ताके सनेह सन्यो नाहिं दास बन्यो यशको सुखगाई ॥ ले जगजन्महिं मानुष आकृति सो दिय जन्म वृथाहिं बिताई ॥ १० ॥ रंभोवाच ॥ काह कहो तुम व्यासके नंदन जो नाहिं नारिसुं प्रीति बढाई ॥ बारनभार सुलंकलचीलि करी करसों नहि जो ललचाई ॥ अंजन रंजित खंजन नैन निहारि न नैननिसों टकलाई ॥ जो न हिमंतमें लाइ तिया उरसों दिय जन्म वृथाहिं बिताई ॥ ११ ॥ शुक उवाच ॥ जो सब देवको देव अहै द्विज भक्तिमें जाकी घनी निपुणाई ॥ दासनको सिगरो सुखदात प्रशांत स्वरूप मनोहरताई ॥ ऐसे दयालु सुसाहिबके हियते न गयो हाठि हाथ बिकाई ॥ है बिन पूछ विषाण करो पशु सो दिय जन्म वृथाहिं बिताई ॥ १२ ॥ रंभोवाच ॥ वेणि विशाल महा अभिराम मनोजाकि ओजको रोज प्रदाई ॥ आनँदखानि अनूप स्वरूप सुकोक कलानिकी भूपतिताई ॥ श्रीरघुराज सुनो शुकदेवजु जीवनमूरि तिया मन भाई ॥ जो उतकंठित कंठ कियो नाहिं सो दिय जन्म वृथाहिं बिताई ॥ १३ ॥ शुक उवाच ॥ आदि अनंत अनादि अखंडित नाम अरूप न जात गनाई ॥ है तो अबोध प्रबोध करावत आपनि शील स्वभाव बडाई ॥ रभ सुनो जन जो नाहिं जानि मुकुंदसों ठाकुरकी ठकुराई ॥ है जग कूकर शूकरके सम सो दिय जन्म वृथाहिं बिताई ॥ १४ ॥ रंभोवाच ॥ शुद्ध शृंगार विनोदकि बोलि बहारकि वस्तु विरंचि बनाई ॥ को वरणे कहिके

बिबिके डरुनानिकि डीलनिकी ललिताई ॥ श्रीरघुराज सुनो मुनि-नायक लायक लाभ न और दिखाई ॥ जो ऋतुराज रम्यो रमणी नहिं सो दिय जन्म वृथाहिं बिताई ॥ १५ ॥ शुक उवाच ॥ योगकि व्याधि प्रमोह समाधि सुधर्मकि आधि अगाध गनाई ॥ गोपिनि भक्ति बिलोपिनि ज्ञानकि तोसि विरागपै कोपिनि गाई ॥ रंभ अधर्म अरंभकुँ खंभ खरी अघरंभ सदंभ सदाई ॥ जो जडजाय कियो परिरंभन सो दिय जन्म वृथाहिं बिताई ॥ १६ ॥ रंभोवाच ॥ काह भयो इक ग्रामको ठाकुर काह भये पुनि भूपतिताई ॥ काह भये भए भूपति भूप कह्या भये यद्यपि भे सुरताई ॥ काह भये जु लह्यो मघवापद काहु भयो जु लह्यो विधिताई ॥ काह भयो शिवहूजु भयो नहिं नारिके नेह गयो जु समाई ॥१७॥ शुक उवाच ॥ राजनको सुख-शाहनको सुख शाहनशाहकी सौखमहाई ॥ इंद्र विभूति पतालकि भूति तथा करतूति विरंचिकि गाई ॥ शंभुकि शंभुता शेषकि शेषता श्रीघुराज सुनो चितलाई ॥ तुच्छ गनै हरिदास सदा जु गये यदुना-थके हाय बिकाई ॥ १८ ॥ रंभोवाच ॥ फूलनसेज न सोयो कहूं नाहिं मीठे पदारथको लियो खाई ॥ भूषण अंबर धार्‌यो न अंगनि याग किये सुखको गये पाई ॥ कीजत जेती विरागमें प्रीति सुतेती करे हममें चितलाई ॥ जीवनको तबहीं फल पाइहो क्यों दियो वैस वृथाहिं बिताई ॥ १९ ॥ शुक उवाच ॥ आमिष आस्थि व चामको आनन ठीवन तामें भरो अधिकाई ॥ त्यों मल मूत्र भयो उदरौ दुर्गंधि प्रस्वे-दकी पूरणताई ॥ मेद औ मज्जा सनी सब अंगनि मूरति मोह खरी निठुराई ॥ नष्ट जो नारिको नेही भयो लियो सो जन नर्क निवास बनाई ॥ २० ॥ रंभोवाच ॥ यज्ञ औ दान महातप तीरथ धर्म सुकर्म-नकी फलताई ॥ स्वर्ग है लोकहु वेद कहे तहँ नारि बिना नहिं पूरण-ताई ॥ को अस योगी भयो रघुराज जो नारिके नेह न जाति बिकाई ॥ व्यासके नंदन निंदन तासु करो जेहिंते जगजन्म सदाई ॥ २१ ॥ शुक उवाच ॥ जो फल रूप कहै अरि स्वर्गको स्वर्गसो नर्क समान लखाई ॥ शोक जरा दुख चिंता तृषा क्षुधा निद्रा नगीच जहां नाहिं

जाई ॥ सो हरिके पदके हम लालसी मायाकि है न जहां प्रभुताई ॥ श्रीरघुराज करो हठ सो तुम नाहक नारि सनेह बढाई ॥ २२ ॥

रंभोवाच ॥ सुनि शुकदेवबैन चैनसों चतुरि बोली देह दुर्गंधि तिय तुम जो उचारो है ॥ सो तो मुनि मानो मृषा केहूं सति जानो येक नैनन निहारि देखो चरित हमारो है ॥ रघुराज ऐसो कहि देवसुंदरी तुरंत आपनो उदर निज नखनि विदारो है ॥ फैलिगै सुबास दशयो-जनलौं आसपास वसुमति ह्वै गई वसंतको अगारो है ॥ २३ ॥ कौ-तुक विलोकि मुनि विहँस्यो ठठाय तहां बारबार रंभाको सराहि बैन भाष्यो है ॥ मोहि रह्यो धोखो अत आजलौं न देख्यो कहूं ॥ वेद औ पुराण नारि निंद कारि राख्यो है ॥ रघुराज ऐसो बिना जाने मैं बरष बहु नाहक जननिको उदर दुख चाख्या है ॥ सौरभ समोयो स्वच्छ उदर परेखि तेरो जनेको बहोरि मेरो मन अभिलाष्यो है ॥ २४ ॥

दोहा—हारि मानि शुकदेवसों, रंभा शीश नवाय ॥
बहुरि गई सुरसदनको, गुणिअचरज पछिताय॥ १३॥

को वर्णै शुकदेव प्रभाऊ ❀ वर्णत जासु न होत अघाऊ ॥
षोडश वर्ष वेस तनुश्यामा ❀ हरिप्रिय परमहंस सर नामा ॥
बैठ्यो अनसन व्रत करि तबहीं ❀ शापित भयो परीक्षित जबहीं ॥
तहँ ब्रह्मर्षि सुरर्षि अपारा ❀ गये महीप समीप उदारा ॥
करि सतकार भूप बहु भांती ❀ दिय वर आसन अति मुदमाती ॥
मुनि समाज गंगाके तीरा ❀ लागि गई जहां नहिं जगपीरा ॥
व्यास पराशर आदिक योगी ❀ बैठे बहु विरागके भोगी ॥
तहँ कर जोरि परीक्षित राजा ❀ कीन्हो प्रश्न मुनीश समाजा ॥
जासु मरण दिन सातकमाहीं ❀ का करतव्य होत तिहिकाहीं ॥
कोउ वाच्यो तहँ योगविधाना ❀ कोऊ मुनि वैराग्य बखाना ॥
कोउ तीरथ कोउ धर्म अचारा ❀ कोउ व्रत कोउ मखदानअपारा ॥
परचो न ठीक येकमत काहू ❀ किय अतिशय संशय नरनाहू ॥

दोहा—ताही क्षण तिहि थल तुरत, प्रगट भयो शुकदेव ॥
देख परयो नरदेवको, आवत जनु यदुदेव ॥ १४ ॥

धूरि उड़ावत बालक नारी ✻ पछिआये डगरैं दै तारी ॥
देखत शुकहिं मुनीश समाजा ✻ उठी तुरंत सहित महराजा ॥
देखि दशा यह बालक नारी ✻ महापुरुष तेहि भाग्य विचारी ॥
आयो मध्यसमाज मुनीशा ✻ सबै नवायो तिनको शीशा ॥
आगू चलि कहि अपनो नामा ✻ भूपति कीन्हो दंड प्रणामा ॥
कनकासन तुरंत मँगवायो ✻ तापर शुकदेवहि बैठायो ॥
सादर पूजन कियो भुवाला ✻ जोरि पाणि बोल्यो तिहि काला ॥
मोरि दशा मुनि जानत अहऊ ✻ मोहिं उचित अब सो प्रभु कहऊ॥
तब शुक हँसि अस गिरा उचारी ✻ सात दिवसकी अवधि तिहारी ॥
सोहै बहुत बनावन हेतू ✻ जो बांधे परमारथ नेतू ॥
इक खट्वांगराज ऋषि भयऊ ✻ असुर विजय हित सो दिवि गयऊ
जीत्यो असुरन तब कह देवा ✻ मांगहु हम प्रसन्न नरदेवा ॥

दोहा—भूप कह्यो हमरो मरब, दीजै देव बताय ॥
बाकी द्वै घटिका अहै, अस कह सुरसमुदाय १६॥

नृपकह देहु भवन पहुँचाई ✻ यह तुमसों मांगै सुरराई ॥
देव तेहि छिन तिहिं पहुँचायो ✻ नृप अनन्य हरि ध्यान लगायो ॥
द्वै घटिकामें सब सधि गयऊ ✻ नृप खट्वांग मुक्त तब भयऊ ॥
अहै अवधि यह सात दिनाकी ✻ का संशय भूपति अपनाकी ॥
अस कहि शुक सप्ताह सुनायो ✻ भूपति कहँ हरिपुर पहुँचायो ॥
संत संग देखहु रे भाई ✻ सातहिं दिनमें नृप गति पाई ॥
और अनेक पुराणन याहीं ✻ सन्त संग सुधरचो कोउ नाहीं ॥
येक समय यदुपति रथ चढिके ✻ चले जनकपुर अति मुदमढिके ॥
मारग महँ शुकदेवहि पाई ✻ लिये आपने रथहि चढाई ॥
तदपि न ताहि भयो कछु हरषा ✻ गुण्यो न कछु अपनो उत्कर्षा ॥
को दूजो शुकदेव समाना ✻ कहँलौं करौं चरित्र बखाना ॥
नित भागवत नित्त शुकदेवा ✻ विचरत भुवन करत हरिसेवा ॥

दोहा—जय२श्रीशुकदेव मुनि, जिहिं मुख कथित पुराण ॥
श्रीभागवत अनेक अघ, नाशत जिमि तम भान १६ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ राजा परीक्षितकी कथा ।

दोहा—कहौं परीक्षित भूपकी, कथा करन कमनीय ॥
जेहिं मिसि भगवत भागवत, भानु विभासित कीय ॥ १ ॥

रही उत्तरा गर्भवती जब ❀ पांडव वंश विनाश करन तब ॥
तज्यो ब्रह्म शर द्रोणकुमारा ❀ जासु न कबहूं होत निवारा ॥
सो उत्तरा गर्भमहँ आयो ❀ महाप्रलय सम आगि लगायो ॥
आरत पाहि पाहि कहि धाई ❀ यदुपति चरण गिरी कुम्हिलाई ॥
द्रोणतनय कृत जानि मुरारी ❀ प्रवशि उत्तरा गर्भ मँझारी ॥
गदा गहें परीक्षित चहुँवोरा ❀ भ्रमण लग्यो देवकी किशोरा ॥
गदा बिदारि ब्रह्मशर नाथा ❀ परीक्षितको रक्ष्यो निज हाथा ॥
सोइ परीक्षित भो महराजा ❀ भगवतभक्तनमें शिरताजा ॥
लख्यो गर्भमें जो हरिरूपा ❀ सोइ निरख्यो सब थलमहँ भूपा ॥
जहँ २ पांडव कर नहिं पाये ❀ तहँ २ ते परीक्षित लै आये ॥
येक समय नृप गयो शिकारा ❀ तहँ अचरज यहि भांति निहारा ॥
येक वृषभ सुरभी इक दीना ❀ रुदन करत ठाडे भयभीना ॥

दोहा—येक शूद्र तिहि वृषभको, ताड़न करत प्रचंड ॥
ताको रक्षक कोउ नाहिं, देखि परयो नवखंड ॥ २ ॥

लखि भूपति करवाल निकासी ❀ बोल्यो वचन शूद्र कहँ त्रासी ॥
को यह वृषभ धेनु यह कोहै ❀ को तैं ताडन नाहिं मोहिं जोहै ॥
धेनु कह्यो मैं हौं प्रभु धरणी ❀ वृषभ धर्म है हत निज करणी ॥
शूद्र स्वरूप जानु कलिघोरा ❀ ताडत यहि भय करत न तोरा ॥
तीनि चरण याके हति डारो ❀ येक चरणते खरो विचारो ॥
तप अरु सत्य दया अरु दाना ❀ चारि धर्मके चरण प्रमाना ॥

तीनि चरण तोऱ्यो कलि घोरा ❀ दान रह्यो तिहिं चाहत तोरा ॥
ऐसा सुन्यो महीपति जबहीं ❀ कलिको केश पकरि लिय तबहीं ॥
काटन चह्यो शीश असि कोरे ❀ तब कलि कह शरणागत तोरे ॥
देहु वास मोहिं भूप बताई ❀ तहँ मैं बसौं अभय तुम पाई ॥
तब नृप असति थुवा मद पाना ❀ अरु नारी कलिवास बखाना ॥
तब कलि कह्यो मोहिं संकेतू ❀ येक और दीजै नृपकेतू ॥

दोहा-तब भूपति कंचन दियो, कलिको वास बताइ ॥
कंचन देतहिं सकल थल, गयो क्रूर कलिछाइ ॥ ३ ॥

दीन जानि छोड्यो कलि काहीं ❀ भूपति लौटि गयो गृहमाहीं ॥
जौलों रह्यो परीक्षित राजा ❀ तौलों चल्यो न कलिको काजा ॥
भागवशात् शाप नृप पायो ❀ तब हर्षित गंगातट आयो ॥
मरण शंक कीन्हो नहिं नेकू ❀ तहँ ब्रह्मर्षि सुरर्षि अनेकू ॥
आवत भे भूपति ढिग माहीं ❀ कीन्हो प्रश्न नृपति सब पाहीं ॥
तेहि क्षण श्रीशुकदेव सिधारे ❀ नृपसों श्रीभागवत उचारे ॥
सतयें दिन तक्षक मिसि राजा ❀ गंगातट मधि मुनिन समाजा ॥
प्राकृत तनु ताजि दिव्य शरीरा ❀ पाइ बसत भो ढिग यदुवीरा ॥
कोन परीक्षित सरिस भुवाला ❀ ह्वैहै कलिघालक कलिकाला ॥
नृपति परीक्षितके यदुराई ❀ जात कर्म किय निज कर आई ॥
यदपि पांडवनको अति मानो ❀ किय भोगादिक निजहि समानो ॥
तदपि परीक्षितके यदुराई ❀ तिनहूंते दिये भक्त बड़ाई ॥

दोहा-भूप परीक्षितकी कथा, कहँलों करौं उचार ॥
भारत अरु भागवतमें, अहै सहित विस्तार ॥ ४ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ भीष्मकी कथा।

दोहा-भीष्मदेवकी कहत हौं, मैं गाथा विस्तार ॥
सुनत श्रवण समुझत मनहिं, आनँद होत अपार ॥ १ ॥

जेहि विधि भीषम जन्म भयो है * व्यास सुभारत वरणि दयोहै ॥
जन्महिते साधुन सँग रोच्यो * भूलेहु नाहिं धर्म मग मोच्यो ॥
येक समय भीषम मतिवाना * मुनि पुलस्त्य ढिग कियो पयाना ॥
धर्मशास्त्र कर सकल विधाना * पूछि प्रश्न पाढिलियो प्रमाना ॥
अर्थशास्त्र सीख्यो सुरगुरसों * कबहुँ न कार्य कियो आतरसों ॥
रह्यो विचित्रवीर्य बड भ्राता * तासु विवाह न कियो विधाता ॥
सालुराज निज सुता स्वयंवर * करण लग्यो तहँ जुरे भूपवर ॥
भीषमदेव सुरति यह पाई * चल्यो यान चढि शङ्ख बजाई ॥
जित्यो एक रथ सब नर पालन * हनि हनि अतिकराल शरजालन ॥
जीति नृपति ले नृपति कुमारी * आयो गृह जगविजय पसारी ॥
अंबालिका दियो बड़भ्राते * द्वितिय द्वितिय भ्राते अवदाते ॥
रह्यो देवव्रत ऊरध रेता * ताते कियो न नारी नेता ॥

दोहा—निराकरन जब भीषम किय, तब अंबिका उदास ॥
लौटि गई अपने भवन, सालु भूपके पास ॥ २ ॥

सालुभूप राख्यो गृह नाहीं * आई लौटि सु भीषम पाहीं ॥
कह्यो भीष्म सों तुमरे हेतू * रहन दियो नाहिं पिता निकेतू ॥
ग्रहण करो शंतनुसुत मोको * ना तौ अयश देउँगी तोको ॥
दोष तुम्हार लगाइ पिता मम * दिय निकारि अब जाइ कहां हम ॥
कह्यो भीष्म मैं तज्यो विवाहू * नारिग्रहण नहिं होत उछाहू ॥
बहुत कही अंबिका बुझाई * पै त्याग्यो भीषम वरियाई ॥
सो तपकरन गई वन माहीं * परशुराम तेहि मिले तहांही ॥
विने कियो सब कह्यो हवाला * भे प्रसन्न द्विजराज कृपाला ॥
परशुराम भगवान उदारा * अस्त्र शस्त्र जे जगत अपारा ॥
पूरव भीषम काहिं सिखायो * ताते तिनके मन अस आयो ॥
मोर शिष्य भीषम मतिवाना * करिहै वचन मोरि नाहिं आना ॥
अस विचार कह सुनहु कुमारी * हम भीषमसों कहव सिधारी ॥

दोहा—तोहि ग्रहण करिहैं अवशि, करी ग्रहण जो नाहिं ॥
तेरे देखत तासु शिर, कटिहों संगर माहिं ॥ ३ ॥

अस कहि कुपित परशुधर वीरा * कुरुक्षेत्र आयो रणधीरा ॥
भीषम सुनि भृगुनाथ अवाई * विनसन गयो लेन अगुवाई ॥
करि दंडवत पूजि पद दोऊ * कह्यो नाथ मोहिं आयसु होऊ ॥
राम कह्यो अंबिकाकुमारी * ग्रहण करो मम वचन विचारी ॥
भीषम कह्यो सुनहु भगवाना * याके हित मैं अस प्रण ठाना ॥
करिहौं तोहिं ग्रहण मैं नाहीं * जबलौं रहे प्राण तनुमाहीं ॥
राम कह्यो मम वचन जो टरिहौ * तो निज शीश कंध नहिं धरिहौ ॥
किय निक्षत्र मैं इक्कइस बारा * लैकर अपनो कठिन कुठारा ॥
भीषम कह्यो सुनहु भृगुनाथा * विनती करौं जोरि युगहाथा ॥
क्षत्री जाति युद्ध नहिं मरई * डरै तो अवशि नरकमहँ परई ॥
कियो निछत्र जबहि भृगुरामा * रह्यो भूमि नहिं भीषमनामा ॥
दिहेहु न शाप यही डर मोरे * किइहु युद्ध जस बल भुज तोरे ॥

दोहा—राम उठ्यो लैविशिष धनु, इत शंतनहु कुमार ॥
चढि स्यंदन गवनत भयो, दै धन द्विजन अपार ॥ ४ ॥

राम चढ्यो रथ वेदतुरंगा * अकृत व्रण सारथी अभंगा ॥
तेइस दिवस भयो संग्रामा * जीति सक्यो नहिं भीषम रामा ॥
तब बोल्यो अंबिका बुलाई * मोते भीषम जीति न जाई ॥
जस भावै तस करहु कुमारी * अस कहि रामहि गये सिधारी ॥
भीषम लौटि नागपुर आयो * विजयी विजय बाज बजवायो ॥
पुनि जब कौरव पांडव केरो * भयो विरोध अनर्थ घनेरो ॥
धर्म भूप कहँ जुवा खिलाई * जीत्यो शकुनि सभा छल छाई ॥
द्वादश वर्ष दियो वनवासा * पांडव भे तब राज्यनिराशा ॥
वर्ष चौदहें कटक समेटी * लरन चले कुरुपति लघुसेटी ॥
तब भीषम बहुविधि समझायो * पै कुरुपतिके मनहि न भायो ॥
जानि देवव्रत संगर ठीका * बैठ्यो सभा भूप भट टीका ॥
द्रोणाचार्य आदि भट जेते * बैठे सभा मध्य सब तेते ॥

दोहा—तब बोल्यो आनंद भरि, सभासदनि सुनाइ ॥
दुर्योधन मेरो वचन, सुनिये चित्त लगाइ ॥ ५ ॥

पद-जो मैं सुरसरिसुवन कहाऊं तौ प्रण सभामध्य अस गाऊं ॥
कौरव पांडव बीच दुहूं दल हरिपूजन अस ठाऊं ॥ १ ॥
शोणित कण नहवाइ नाथको रण रज वसन उढाऊं ॥
पांडव सैन मारि गोविंद अँग चंदन कोप चढाऊं ॥ २ ॥
विविध वरणको विपुल विकाशित विशिषमाल पहिराऊं ॥
सन्मुख शत्रु संहारि सहसन कीरति सुरभि सुधाऊं ॥ ३ ॥
तबहिं त्रिविक्रमको तुरंत तहँ विक्रम दीप दीखाऊं ॥
पारथ सखा समीप जायकै प्राण निवेद लगाऊं ॥ ४ ॥
सकल जगतते खैंचि प्रीतिकी बीरी आजु खवाऊं ॥
विजययान चल वायु समर महँ जय दक्षिणा दिवाऊं ॥ ५ ॥
रथसों रथ मिलाय माधवको ध्वजचामरहिं चलाऊं ॥
नख शिख निरखत रूप अनूपम नैन निराजन लाऊं ॥ ६ ॥
बार बार ध्वनि दंड प्रत्यंचा धनुषहि बाज बजाऊं ॥
रथमंडल करिदै परदक्षिण उर आनँद उपजाऊं ॥ ७ ॥
यदुवर करसों आज अवशि मैं चक्र प्रसादहि पाऊं ॥
अर्जुन शरपंजर जंजर ह्वै गिरि सन्मुख शिर नाऊं ॥ ८ ॥
यहि विधि रण प्रभुको करिपूजन त्रिभुवनमें यश छाऊं ॥
श्रीरघुराज कृपा हरिकी लहि बरबस हरिपुर जाऊं ॥ ९ ॥ १

कुरुपति हमहुं सुन्यो अस कान ॥
यदुपति तुमसों अस प्रण कीन्हो हम न धरब धनुबाण ॥ १ ॥
तातें मैं गोहराइ कहत हौं ऐसो वचन प्रमाण ॥
हरिको आयुध अवशि धरै हौं ठानि घोर घमसान ॥ २ ॥
श्रीरघुराज सदा दासनको राखत आये मान ॥
मेरी बार विरद बिसरैहै कैसे कृपानिधान ॥ ३ ॥ २ ॥

चलु चलु अब न करहु नृप देरी ॥
बहुत दिननकी हग अभिलाषा आजु पूजि है मेरी ॥ १ ॥
पीतवसन वनमाल विराजत मुकुट मयूष घनेरी ॥
यक कर ताजन बाग येक कर अर्जुन बाजिन केरी ॥ २ ॥

चहुँ दिशि चलत चलावत स्यंदन इमि यदुनंदन हेरी ॥
श्रीरघुराज आजु धनि हैहौं धुनिधुनि बाणन टेरी ॥ ३ ॥ ३ ॥

दोहा-अस कहिकै कुरुपति सहित, कुरुक्षेत्रमहँ आइ ॥
जुरयो पांडवनसों बलि, समरशंख धुनि छाइ ॥६॥
सहित सखा यदुपति निरखि, मोदमगन कुरुवीर॥
कह्यो सारथीसों वचन, लै शर धनु रणधीर ॥७॥

पद-सारथि अस अवसर नहिं पैहौ ॥
दान मान मम कृत उपकारहिं आजु उऋण ह्वैजैहौ ॥ १ ॥
जो अतिचपल चलाय तुरंगन हरिसमीप पहुँचैहौ ॥
तौ अपनो अरु हमरो जगमें अतिअनुपम यश छैहौ ॥ २ ॥
येक ओर यदुवीर विराजत येक ओर तुम ठैहौ ॥
यह सुतते नहिं और अधिक सुख अब न जगत जन ह्वैहौ॥३॥
यह सांवरी माधुरी मूरति देखत जो मरिजैहौ ॥
तौ रघुराज अलभ योगिन जो सो विकुंठपुर लैहौ ॥ ४ ॥ ४ ॥
सारथि आवत पांडुकुमार ॥
आगे बैठो तुरंग बाग धरि जेहिं वसुदेवकुमार ॥ १ ॥
क्षण क्षण रणमें रथहि धवावत धुरत धूरिकी धार ॥
पारथ हनत हजारन सायक कटत वीर बलवार ॥ २ ॥
शंतनुसुत विनको हरिसन्मुख भट ह्वै यहिवार ॥
को रिझाइ है आजु नाथको हनि शर समर मझार ॥ ३ ॥
लै चलु लै चलु तुरत तुरंगन नहिं करु कछू खभार ॥
श्रीरघुराज श्याम सुंदर पद मोको आजु अधार ॥ ४ ॥ ५ ॥

दोहा-तहँ बुलंद दल देखि दोउ, श्रीमुकुंद सानंद ॥
मंद मंद मुसकाइकै, बोले वचन अमंद ॥ ८ ॥

पद-भीषमको लखि यदुपति भाष्यो ॥
परिहै कठिन आजु संगरमहँ मोपर भीषम मारख्यो ॥
पारथ अब तुम अपनो विक्रम नहिं छिपाइ कछु राख्यो ॥

कोउ भट भयो न अस जो भीषम भुजबल जलनिधि नाख्यो
विजय तुमहुँ बहु समरसिंधु मधि विजय सुधारस चाख्यो ॥
श्रीरघुराज दुहुँनमें को वर हमहुँ लखन अभिलाष्यो ॥ ६ ॥
पारथ लखु दल सागर घोर ॥
भरो वीररस वारि ग्राह गज ढाले कमठ कठोर ॥
धनुष मीन करवाल मकर भट सिंहनाद बहु शोर ॥
उठहिं अनेकनि विविध भांतिकी शरतरंग चहुँ वोर ॥
वीर रतन बहु रतन विराजत समर सेवार हिलोर ॥
धर्मसुवन अरु नृप दुर्योधन वणिक बने साजि भोर ॥
तुम भीषम भुजबल जहाज-चढि चहत जान वहिवोर ॥
पावत पार कौन धों याको यह तौलत मनमोर ॥
पार सोई रघुराज होइगो तेहि नाविक वरजोर ॥ ७ ॥

दोहा—भई देवव्रत बाणसों, व्यथित पांडवी सेन ॥
तब यदुपति लै पार्थ कहँ, आयो सन्मुख सैन॥९॥

छंद—जुरे दोउ समरमहँ कोप सरसायके इते शर समर आँधयार चहुँदिशि भरत दरत भट प्रबल पारथ प्रबल आयके ॥ उते भीषम सुभट समर भीषमा महा भानु ग्रीषम सरिस झिल्यो सरसायके ॥ चले दुहुँ वोरते घोर शर चंड अति छिपत प्रगटत उभै वेग दरशा-यके ॥ सखाअर्जुन इते भक्त भीषम उते दुहुँनकी प्रीति हिय तौलि हरि ध्यायके ॥ गयो चढि चित्त कछु सरस शंतनुसुवन निरखि अर्जुन वदन रहे मुसक्यायके ॥ मोर पण रहै धों आजु गंगेयको दुहन गुण धन्यो अस ठीक उर ठायके ॥ भक्त सति हेतु मोहिं असति ह्वैबो उचितं अवाशि रघुराज रणप्रणहि विसरायके ॥ ८ ॥

कियो कुरु पितामह परम विक्रम तहां ॥ झारि शर शूर शिरताज तेहि समयमहँ लस्यो दल मध्य मनु प्रलय अंतक महा ॥ रुकत नहिं बनत तहँ हनत नहिं शस्त्रभट जनत नहिं रोस हठि गुणत निज मीच है । चटक भट हटत सब बढत नाहिं मढत दुख कढत मुखहाय

कोउ परे पङ्कीचहै ॥ मत्तसुचितुंड मद्दु झुंड विवशुंड है रुंड अरु मुंड गिरि कुंड शोणित भरचो ॥ भये तनु जंजरन लाग मनु खंजरन धर्मे नृप सकल दल बाण पंजर परचो ॥ दिसति नहिं दिशा मनु भई भादँव निशा महाधुरलों किसा चलि रही वीरकी ॥ धीर ताजे वीर लहि पीर अति जी है भीरलै भागिगे भीर गणि तीरकी ॥ नकुल सहदेव भट भीम सुविराट नृप द्रुपद औ द्रुपदसुत आदि जेते रहे ॥ कोउ नहिं धनुष सन्मुख सरुष जात भो रोम मुख मुखनि शर मुखनि लगि दुख लहे ॥ धर्मनृप हारि हियहारि सुविचारि लिय टारि धीरज चहे पनहिं तजि रारि है ॥ भटन परचारि कहु विरद उचारि मुखयें रुकिलके भट भगे धनु डारिहै ॥ झिले कौरव सकल हनत आयुध प्रबल करत गलबल चपल मच्यो खलभल खरो ॥ कहां पारथ प्रबल कहां सात्यकि सुभट कहां यदुनाथ प्रभु खरो गहि अवसरो ॥ विजयस्यंदनहिंकी आड गहि सात्यकी खरो निज कुल-विरदसुरति करिकेबलो ॥ बारही बार मुख करत उच्चार अस फिरहुरे फिरहु भट समर मरिबो भलो ॥ प्रलयदिय पारि दलपांडवी दलन कारि गंगसुत जंग रँग अंग उमगायके ॥ देवकी सुवनको सहित कुंती सुवन सरथ सहवाजि लिय शरनसों छायके ॥ सिंहरव भरतकोदं-मंडल करत चहूं दिशि संचरत भटक चितचायके ॥ भनत रघुराज यदुराज सुमिरत चरण तकत तिरछोहँ मुखमंद मुसकायके ॥ ९ ॥

दोहा–भीषम शर लागि अति व्यथित, हैगो पांडुकुमार॥
धनुष धरणको करन में, रह्यो न नेकु सँभार॥ १०॥

पद–पारथ ताकये समर मझारी ॥
गहत बनत नाहिं धनुष विशिष कर सूरख्यो मुख श्रमभारी ॥
भीषम शरपंजर महँ परिके निज विक्रमहिं बिसारी ॥
भयो अचल निज रथ पर पारथ मानि लई हिय हारी ॥
कांपत वदन वचन नहिं निकसत आंखि न सकत उघारी ॥
भूली पूरबकोरि प्रतिज्ञा जो निज वदन उचारी ॥

विजयलाभ दुर्लभ उपज्यो मन सब विधि भई लचारी ॥
श्रीरघुराज अधार येक अब देखि परत गिरिधारी। १० ॥
भीषम शर क्षण क्षण अधिकात ॥
मूंदे पारथ सारथि रथयुत तुरँग नहीं दरशात ॥
बार बार हरि टारत रथको तबहुँ उडो जनु जात ॥
ताजनहू नाजन तनु लागत पैन वेग सरसात ॥
बागहु छूटि गई हरिकरसों नहिं कपिध्वज फहरात ॥
मूर्छित परे चक्ररक्षक दोउ लहे विशिष बरघात ॥
करत बनत नाहिं तहँ प्रभुसों कछु कौरव सब मुसकात ॥
श्रीरघुराज भक्त प्रणपालन मानहु कछु न बसात ॥ ११ ॥
यदुपति फिरि फिरि हाथ पसारी ॥
बार बार अर्जुनहिं डोलावत भाषत वदन उचारी ॥
धीमरि गये किधौं जीवतहो बोलहु आंखि उघारी ॥
कहत रहे अस वचन सभामहँ मैं गांडीवहि धारी ॥
दंडद्वैकमहँ कौरवदलको डरिहौं अवशि सँहारी ॥
सो प्रणकी सुधि भूलि गई अब कत दीन्हो धनुडारी ॥
उठहु उठहु अब चेत करहु तनु तेरी बहु बडवारी ॥
आजु पांडुकुलकी मर्यादा लागी तोहिमहँ सारी ॥
धर्म भूप तुव बल चढिआयो दै दुंदुभी प्रचारी ॥
होत शिथिल अब तोहिं समरमहँ को करिहै रखवारी ॥
कादर सरिस शिथिल निरखत तोहिं विलखत बुद्धि हमारी ॥
कैसेके अस विक्रममहँ जग कीरति चली तिहारी ॥
सखा सांच हमसों तुम भाषहु भलके मनहिं विचारी ॥
किधौं विजय अभिलाष अहै कछु किधौं मानिलिय हारी ॥
जामें जीति होइगी तिहरी सोइ मति करन हमारी ॥
श्रीरघुराज तोहिं सम मेरे कौन मीत हितकारी ॥ १२ ॥
हरि हर वर सुअवसर जानि ॥
तज्यो पारथको तुरत रथ चुकत दल निज मानि ॥

देवव्रत पर द्रुतहि दौरत छबि न जाति बखानि ॥
भोगि भोग समान भुज ऊरध उठ्यो छबिखानि ॥
परम परकाशित सुदर्शन लसत मंजुल पानि ॥
मनु सनाल सरोज पर रवि बैठ आसन ठानि ॥
बजत मृदु मंजीर पद प्रिय पीतपट फहरानि ॥
समर रज रंजित रुचिर कछु अलक मुख बिथुरानि ॥
छोनिलों पट छोर छहरति गहत युगल भुजानि ॥
मनहुँ माधव हरत महिकी भूरिभीर गलानि ॥
मरयो भीषम मरयो भीषम कढित दोउदल बानि ॥
तजत नहिँ कोउ वीर शर धनुरहे निज निज तानि ॥
नैन नेसुक अरुणराजत मंदगति दरशानि ॥
जात ज्यों गजराज पर मृगराज अमरष आनि ॥
कौन द्वितिय दयालु जनहित तजै जो निजबानि ॥
कृष्णपै रघुराज मतिगति बार बार बिकानि ॥

धावत आवत सन्मुख हरिको भीषम निरखि परमसुख पाग्यो ॥
तजिबो विशिष वृन्द करिदीन्हो अनिमिष सुखमा निरखन लाग्यो ॥
दोउ कर जोरि हुलसि बोल्यो प्रभु धन्य धरामहँ मोहिँ कर दीन्हो ॥
निज जन जानि दयानिधि निजप्रण टारि मोर प्रण पूरण कीन्हो ॥
आवहु आवहु अब न रुको कहुँ मारहु चक्र अवशि मोहिंकाहीं ॥
बिते सातसै संवत जगमें अस अवसर हौं पायो नाहीं ॥
समर मरण अस पुनि तुव सन्मुख पुनि तव चक्रहिंते जो पाऊं ॥
तौ सुर असुर चराचर देखत हौं वैकुंठ निसान बजाऊं ॥
योगी यती नाहिं सुर नर मुनि कोटि यतन करि कबहुक पावैं ॥
सो मोहिं हननहेतु महि धावत को मोसम अब धन्य धरामैं ॥
पूरण काम दीन जन वत्सल पूरण कीन्हो मम मन कामा ॥
वीर शिरोमणि यह तव मूरति वसै सदा मेरे उरधामा ॥
जै पारथ सारथि यदुनायक जनप्रण पूरक बानि तिहारी ॥
मोसम अधम दीन दासनको दूजो नाहिं कोउ सकै उधारी ॥

हे सारथि सहि दुसह घातशर निज प्रण तजि पूरचो प्रण मेरो ॥
जय रघुराज नाथ देवकीसुत अस स्वभाव त्रिभुवनमहँ तेरो ॥ १३ ॥
हरि सुनि शंतनुसुतकी बात ॥
तकत तनक तिरछे भीषमपै मन्द मन्द मुसकात ॥
कह्यो वचन प्रभु यह रण कारण तेहीं स्वहि दरशात ॥
जो बरजत्त प्रथम कुरुनाथै तौ न होत कुलघात ॥
बोल्यो भीषम बहुरि जोरिकर यह सत यदपि जनात ॥
कंसहि कुलके बरज्यो सो नहिं मान्यो कहा वशात ॥
हरि कह तव यदुकुल महँ अस कोउ रह्यो न वीर विख्यात ॥
जैसे तुम त्रिभुवनमहँ धनुधर धर्म निरत अवदात ॥
भीषम कह्यो जो समर न होतो तो केहिहित तजि क्षात ॥
मोहिं अधमहि धनि धरणि बनावन होतहु देवकिजात ॥
यहि विधि भाषत वचन परस्पर जस जस हरि नियरात ॥
तस तस श्रीरघुराज भीषमहिं आनंद उर अधिकात ॥ १४ ॥
रथ तजि दौरत हरिको हेरी ॥
पारथ रथ तजि दौरचो द्रुत हानि जानि निज कीरति केरी ॥
भुज विशालसों भुज विशाल गहि लपटि गयो रोकन बरजोरी ॥
मनु युग नव नीरद मारुत वश मिले गगनमहँ शोभ अथोरी ॥
पेलि चल्यो लै सखा सांवरो भीषम वोर वीर रस बाढो ॥
तब पद रोकि पुहुमि प्रभु पद गहि रोक्यो विजय वचन कहिगाढो ॥
पूर पितामहको प्रणकीन्हो अपनो प्रण आयुध गहि टारो ॥
लौटि चलौ स्यन्दन यदुनंदन हौं कन्दन करिहौ दलसारो ॥
तव प्रत प कछु दुर्लभ है नहिं कीजत वृथा रोष कतभारी ॥
राखहु नाथ मोरि मर्यादा तुम समरथ सब भांति मुरारी ॥
सखा वचन सुनि विहँसि मन्द मुख मन्द मन्द निज स्यंदन आई ।
श्रीरघुराज नाथ देवकिसुत राजत वाजिन वाग उठाई ॥ १५ ॥
दोहा—अंत भयो भारत समर, भाइन सह रणधीर ॥
बैठ्यो नृप आसनै धर्म नृपहिं यदुवीर ॥ ११ ॥

राती निशा नरेश सुखारी * सैन कियो निज भवन हतारी ॥
चाको निशा याम नृप जाग्यो * यदुपति चरणन सुमिरन लाग्यो ॥
पहुरि विचार कियो मनमाहीं * याहि क्षण हरि दरशन हित जाहीं ॥
चल्यो अकेल नृपति हरिपासा * शयन करत जहँ रमानिवासा ॥
बैठ रह्यो सात्यकि तहँ द्वारा * देखि नृपहिं उठि कियो जुहारा ॥
पूंछ्यो भूप कहां है नाथा * सात्यकि कह्यो जोरि युगहाथा ॥
मोहिं नाथ द्वारे बैठाई * काहु करै नाहिं परे जनाई ॥
भूपति मंद मंद सानंद * गे जहँ यदुकुल कैरवचंद ॥
प्रभु उठि सेज किये प मासन * ध्यान करत निश्चल अरिनाशन ॥
प्रभुको कौतुक लखि नृपराई * विस्मित है ठिठुक्यो तेहिं ठाई ॥
ठाढो रह्यो दंड द्वै राजा * बोल्यो कमलनयन यदुराजा ॥
देखि नृपहिं उठि मिल्यो मुरारी * बैठायो निज सेज मझारी ॥

दोहा—भूपति मन विस्मित तुरत, प्रभु सो कह करजोरि ॥
यह शंका वारण करहु, नाथ कृपाकरि मोरि ॥ १२ ॥

जगत जीव जड चेतन ना । * नाथ करै तिहरो पद ध्याना ॥
कीजत ध्यान कौन कर आपू * देहु बताय प्रचंड प्रतापू ॥
भूपति बैन सुनत मुसक्याई * बोले वचन मधुर यदुराई ॥
मोहिं ध्यावत सब जग कहि नाऊ * मैं निज दासनको नित ध्याऊं ॥
यहि अवसर शूरसेन सुखारी * भोपम परचो महाधनुधारी ॥
ताकर ध्यान करौं यहिकाला * द्वितिय न प्रिय तेहिं सम महिपाला ॥
होत उत्तरायण दिनराई * तजि है तनु मेरो पद ध्याई ॥
मेरे मन उपजति यह शंका * यह मोहिं लागन चहत कलंका ॥
यदुपति कृपा कियो नृप धरमें * पै न बनायो कछु शुभकरमें ॥
धर्म कर्म तप योग अचारा * ज्ञान विज्ञान विराग विचारा ॥
राजनीति अरु अर्थहु कामा * साधन योग सकाम अकामा ॥
विधि निषेध जहँलों संसारा * सबको भीषम [illegible]ाननहारा ॥

दोहा—भीषमके तनु तजतमें, सकल [illegible] होंगे अस्त ॥
को पुनि तुमहिं बताइ है, भूपति धर्म समस्त ॥ १३ ॥

कह्यो जो प्रभु उपदेशहु मोहीं * तौ मैं कहौं सत्य नृप तोहीं ॥
जेतो भीषम जानत अहई * तेतो नहीं अपर को कहई ॥
ताते चलहु संग लै भाई * मैंहूं चलिहौं सपदि तहांई ॥
पूंछो जो जो तुम मनभाई * भीषम देहैं सकल बताई ॥
मैंहूं सुनिहौं तुम्हरे संगा * अस पुनि मिली न कबहुँ प्रसंगा ॥
हरिमुख सुनि भीषम परभाऊ * धन्य पितामह मान्यो राऊ ॥
कह्यो जोरि कर चलहु मुरारी * ऐसहि है अभिलाष हमारी ॥
अस कहिके भाइन बुलवायो * रथ मातंग तुरंग सजायो ॥
चढे येक रथ पाइ मुरारी * इकरथ भूप धर्म धुरधारी ॥
सात्यकि नकुल और सहदेवा * चले करत यदुपतिकी सेवा ॥
पहुंचे कुरुक्षेत्र महँ जाई * जहां परयो भीषम भटराई ॥
चरण वंदि कौरव कुलदीपा * बैठ पितामह शीश समीपा ॥

दोहा–बैठे सन्मुख जगत प्रभु, पास सु चारिहु भाइ ॥
सुनन हेतु भीषम वचन, आये मुनि समुदाइ ॥ १४ ॥

पूंछ्यो भीषम सब कुशलाता * उत्तर दियो कृपा तुव ताता ॥
यदुपति चरण वोर भये ठाढे * भीषम निरखि महासुद बाढे ॥
प्रभुहि पितामह कियो प्रणामा * जय जयजय आनँदघनश्यामा ॥
कह्यो पितामह सो यदुराई * आये इतै धर्म नृपराई ॥
करैं प्रश्न सो उत्तर देहू * शिशुन सिखाइ महायश लेहू ॥
कह्यो देवव्रत प्रभु यह नीकी * पै शंका यह वारहु जीकी ॥
तुम्हें अछत कत पूंछत मोसो * स्वाहिं तुम्हार सब भांति भरोसो ॥
वचन देवव्रत सुनि मुसकाई * सभा सुनाइ कह्यो यदुराई ॥
तुमसम तुमहि पितामह ज्ञाता * अब न और कोउ दीसत ताता ॥
कथन शक्ति तुम्हरी है जैसी * जानहु शक्ति मोर नहिं तैसी ॥
तव मुख निर्गत धर्म अपारा * हमहु सुननहित इत पगु धारा ॥
कह्यो देवव्रत हे यदुराई * तुम निजदासन देहु बडाई ॥

दोहा–प्रभु निज पंकज पाणि अब, कीजै मेरे शीश ॥
कथन सकल सत धर्मकी, शक्ति देहु जगदीश ॥ १५ ॥

शरसंघात घात तनुपीड़ा * तुव ढिग कहत होति अतिव्रीडा ॥
भीषम वचन सुनत यदुनाथा * बोले तासु माथ धरि हाथा ॥
करत भास नहिं भानु लजाहीं * धर्म कथत तोहिं लाज वृथाहीं ॥
हरिकरकमलपरस कहँ पाई * गई पीर छिगरी सुधि आई ॥
यदुपति पदकर परसि प्रवीरा * कह्यो नृपहि पूंछहु मतिधीरा ॥
धर्म भूप तब पूछन लागा * वर्णहु राजधर्म कति भागा ॥
वर्ण्यो राजधर्म विस्तारा * सहित अंग इतिहास अपारा ॥
विधि निषेध पुनि बहुविधि गायो * अर्थशास्त्र पुनि सकल बुझायो ॥
स्वर्गद नर्कद कर्म अनंता * साधन सकल कह्यो मतिवंता ॥
वर्ण्यो आपद धर्म अनेका * जगत जनम सत असत विवेका ॥
मोक्षधर्म पुनि भाषण लागा * ज्ञान विज्ञान विशिष्ट विरागा ॥
पृथक पृथक कहुँ कहुँ समुदाई * भक्तिमार्ग वर्ण्यो कुरराई ॥

दोहा—परमधर्म वर्ण्यो सकल, दानधर्म विस्तार ॥
निर्गुण सगुण उपासना, लक्षणसाधु अपार ॥ १६॥

तीरथ साधु महातम गायो * बिच बिच बहु इतिहास सुनायो ॥
जो जो पूछ्यो धर्मभुवाला * सो सो सकल कह्यो तेहिकाला ॥
रह्यो न कछु बाकी जगमाहीं * जौन युधिष्ठिर पूंछ्यो नाहीं ॥
पूंछ्यो पर विस्तार समेतू * वर्ण्यो सकल वस्तु मतिकेतू ॥
भीषम कथित चुके किमि गाये * जहँ श्रोता व्यासादिक आये ॥
सबकहि दोउ पुनि पाणि उठाई * कह्यो पितामह अस गोहराई ॥
सकल शास्त्रको है यह मूला * रहै साधुजनसों अनुकूला ॥
पर उपकार करै तनुधारी * होय अनन्यदास गिरिधारी ॥
राखे सब जीवन परदाया * रँगै न रंग मोह अरु माया ॥
सबसों शीलधर्म परप्रीती * सत्यधर्म अरु कालविभीती ॥
यह है सकल धर्म कर सारा * धरहु सदा उर पांडुकुमारा ॥
मुख हरिनाम हृदयमहँ दाया * जो धारै तेहि लगै न माया ॥

दोहा—यहिविधि कहि जहँ देवव्रत, लियो धारि व्रत मौन ॥
लगे सराहन सकल तब, मुनि मुकुंद मतिभौन १७

गगन गिरा तहँ भई उताला ❀ भयो उत्तरायण अब काला ।
तब सुद मानि महा मनमाहीं ❀ जोरि पाणि कह यदुपति पाहीं ॥
सुनहु नाथ विनती इक मोरी ❀ बाकी बात रही अब थोरी ॥
दोउ खरे सन्मुख चख मेरे ❀ बनत मोरि माया दृगहेरे ॥
हरि उठि भीषम पदढिग माहीं ❀ खरे भये निरखत सुखकाहीं ॥
तहँ ब्रह्मर्षि देवऋषि सर्वा ❀ चारण सिद्ध यक्ष गंधर्वा ॥
सिगरे कौतुक देखन लागे ❀ कहहिं सकल भीषम बड भागे ॥
चारि बाहु सुंदर घनश्यामा ❀ लसत पीतपट अति अभिरामा ॥
मुकुट मनोहर कुंडल चारू ❀ चंद्रवदन मारहु मद मारू ॥
अनिमिष नख शिख यदुपति रूपा ❀ निरखत स०ल नयन कुरुभूपा ॥
तहँ नारद पर्वत अरु व्यासा ❀ कौशिक भरद्वाज हरिदासा ॥
परशुराम कश्यप सुखदेवा ❀ औरहु सब निरखत यदुदेवा ॥
दोहा–कहहिं परस्पर वचन वर, कौन श्रेष्ठ यहिकाल ॥
धौं सेवककी सेवना, कैधौं कृपाकृपाल ॥ १८ ॥
जासु नाम शंकर कहि काशी ❀ जीवन्मुक्ति देत अविनाशी ॥
जासु नाम मुख करत उचारा ❀ पुनि नहिं जन जन्मत संसारा ॥
मरण समय जेहि सुमिरण आवत ❀ कोटिजन्म अघ आसु जरावत ॥
सो प्रभु भीषम चरण समीपे ❀ लकसत खरो भुक्ति कुलदीपे ॥
धन्य देवव्रत कुरुकुल माहीं ❀ जेहि सम त्रिभुवनमें कोउ नाहीं ॥
निरखि अनूप रूप हरि केरो ❀ मनहि कराइ चरणमहँ डेरो ॥
इंद्रिय सकल यकाग्रहि कैके ❀ सजलनैन पुलकित तनु ह्वैके ॥
जोरि पाणि कुरुवंश प्रधाना ❀ कह्यो वचन सुनु कृपानिधाना ॥
संवत सुखद सत सत बीते ❀ कबहुँ न जगकारजसों रीते ॥
कियो जन्म भरि मैं अघ कर्मा ❀ स्वप्नेहु नहिं जानेहु शुभकर्मा ॥
कौन सुकृत रीझो यदुराई ❀ नाथ परत नहिं मोहिं जनाई ॥
सकल मुनिन पद मोर प्रणामा ❀ अब मोहिं यक दीसत घनश्यामा ॥
दोहा–अस कहिकै क० जोरिकै, मंद मंद मुसकाइ ॥
लग्यो करन प्रस्तुति विमल, हरिकी चित्त लगाइ १९ ॥

कवित्त-प्रजापति ईश आदि देवनके ईश जेते ईश तिनहूको त्यो अनीशहूको ईश है । करनाविहार लै अनेक अवतार कियो असुर संहारि ध्यावैं हजार शीश है ॥ आनंदको कंद रघुराज करु-णाको सिंधु सिद्ध वृंद नावत पदारविंद शीश है ॥ देइगति सोई आज मोहिं यदुवंशराज खरो जो समाज मध्यआगे जगदीश है ॥ १ ॥ नवल तमालतनु आयुध विशाल बाहु परमरसाल पट राजै बिन माल है ॥ कालहुको काल लोकपालनको पाल जाहि ध्यावै सब काल सुरपाल चंद्रभाल है ॥ मुखउडपालपै विराजत अलकजाल अधर प्रबाल उर मंजु वनमाल है ॥ रघुराज ऐसे काल सोई सुधि लेन बाल दीनको दयालु येव देवकीको लाल है ॥ २ ॥ तरल तुरंगनकी बाग एक पाणि लीन्हे येक पाणि कीन्हे कसा विजयविजयसारथी ॥ रण रज रंजित अलख मुख डोलै बान रथको धवावत सुधर्मको यथारथी ॥ झरै श्रम स्वेद बिंदु मेरे शर पंजरसों जंजर कवच यदुकुलको महारथी ॥ बसै रघुराज ऐसी मूरति हियेमें आज दीननको स्वारथी सो पारथको सारथी ॥ ३ ॥ धर्मरूप हेतु धर्मरारवन धरानिकेत कारि कुनजारि हरी आय कुमतीनकी ॥ बंधु वध अघसों विचारिकै भीत भीत भीत हरयो गीता गाइ पारथ प्रवीनकी ॥ मम कृप द्रोण आदि वीर विशिखा-वलीजे वरन कियो है मीच आपने अधीनकी ॥ रघुराज आज यदु-राजहीसों मेरो काज तारणकी बानि जाकी जाहिर है दीनकी ॥ ४ ॥ धर्म क्षितिपालकी उछिन्न छिन्न सैना देखि दासनके हेत निज प्रण विसरायो है ॥ मेरो प्रण पूरण करिवेको रथ रोकि तहां टेरि सात्यकीको भगवंत यों सुनायो है ॥ जानदे परान कादरानको न मारोवीर ऐसी भाषि मेरे मारिवेको चित्त चायो है ॥ रघुराज सोई प्रभु बसैं उर मेरे आज स्यंदनको छोडि यदुनंदन जो धायो है ॥ ५ ॥ करमें अनेक भान सो विराजमान चक्र यानको विहाइ बान छाइ दलचारयो बोर ॥ ममशरविद्ध अंग अंग जंग अंगनमें अंग अंग शोणितके बिंदु सुख मान थोर ॥ सन्मुख फरात पीतपट द्युति छहरात मानहु नवारनकी बात विजय बरजोर ॥ मूरति बसै सो आज मेरे उर रघुराज मोहिं

सब भांतिते भरोसो देवकीकिशोर ॥ ६ ॥ धर्मराज राजसूय राजन समाज मधि बोल्यो कटु वचन अज्ञानि चेदिराज है ॥ कोटिन्हदराज-सों विराजमान चक्रसों उतारि शीश कीन्हो जगदीश भक्ति भाज है ॥ कीन्हो उतपात देवराजके दराज कोप गहि गिरिराज राख्यो व्रज व्रजराज है ॥ रघुराज वीर शिरताज जनकारी काज आज यदुराज-जूके हाथ मेरी लाज है ॥ ७ ॥

दोहा–असकहिकै करजोरिकै, निरखत अनिमिष रूप ॥
गह्यो देवव्रत मौनव्रत, करि मन अचल अनूप ॥ २० ॥
ऐंचि अनिल पुनि नाभितें, हृदयाकाश विहाइ ॥
कियो बंद करि द्वार नव, कृष्ण कृष्ण मुख गाइ ॥ २१ ॥
ब्रह्मरंध्रसों निकसिकै, पार्थिव छोडि शरीर ॥
सन्मुख ठाढो सांवरो, भयो लीन कुरुवीर ॥ २२ ॥

बजे विपुल दुंदुभी अकाशा ❀ जय जय ध्वनि छाई दश आशा ॥
धन्य धरामहँ कुरुकुल वीरा ❀ बोलि उठी सिगरी मुनिभीरा ॥
जरो बसन सम भयो शरीरा ❀ परस्यो माथ हाथ यदुवीरा ॥
कोउ नाहिं भीषमसम भुवि भयऊ ❀ प्रभुहिं ठाढकरि तनु तजि दयऊ ॥
मृतककर्म पांडव सब कीन्हो ❀ यदुपति ताहि तिलांजलि दीन्हो ॥
सुमिरत भीषम वचन प्रमाना ❀ आये भवनसहित भगवाना ॥
बैठि सभामधि नृपहि बुलाई ❀ कह्यो बुझाइ वचन यदुराई ॥
भीषम जो जो तुमहिं सुनायो ❀ सो कोउ सुन्यो न अरु कोउ गायो ॥
मोरहु नहिं जानो यतनोई ❀ कहे यदपि जग माहिं बडोई ॥
जो अधीन करिवो म्वहिं चाहै ❀ भीषम वचन सिंधु अवगाहै ॥
शासन श्रुति सिद्धान्त सदाहीं ❀ भीषम भाषित भूरि भवमाहीं ॥
और न कोउ अस मोकहँ प्यारो ❀ यथा पितामह भूप तिहारो ॥

दोहा–अस कहिकै यदुनाथ प्रभु, गवन द्वारका कीन ॥
धर्मभूप भीषमभाणित, सकलभांति महि लीन ॥ २३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ क्षत्ताकी कथा।

दोहा–अब वर्णौं मैं अतिविमल, क्षत्ताको इतिहास ॥
जाति सुने हठि होत हिय, श्रीहरिप्रेमप्रकाश॥ १॥

मुनि मांडव्य नाम इक रहेऊ * अभय जगत विचरण सो गहेऊ ॥
एक समय विचरत जगमाहीं * लख्यो अनूप भूप पुरकाहीं ॥
पुर बाहिर किय निशा निवासा * तहँ कोउ चोर भूरिधन आसा ॥
राजकोश निशि प्रविशो जाई * ले मणिमाल भये भयपाई ॥
पाछे दौरे द्वार प्रचारी * भयो कोलाहल नगरमँझारी ॥
चोर बचब आपनो न देख्यो * मुनि मांडव्य समीप परेख्यो ॥
मुनि गल डारि तुरत मणिमाला * छिपे चोर आये पुरपाला ॥
पहिरे माल लख्यो मुनि काहीं * घेरयो चोर कहत चहुँचाहीं ॥
मुनि कहँ पकरि भूपढिग लाये * धरयो चोर अस वचन सुनाये ॥
भूपति कह्यो सूरी दे देहू * यासों कोउ नहिं कियो सनेहू ॥
भट मुनिकहँ पुरबाहिर लाई * दीन्हो सूरीमाहिं चढाई ॥
गुदसों शिरलौं प्रविशी सूरी * मुनिकहँ व्यथा भई नहिं भूरी ॥

दोहा–भयो भोर तब नगरजन, जीवतमुनिकहँ देखि ॥
जाइ कह्यो नरनाथसों, अतिशय अचरज लेखि॥

राजहु देखन कहँ तहँ आये * मुनिकहँ देखि महादुख पाये ॥
जानि महामुनि मन हिं महीपा * गिरयो त्राहि कहि चरणसमीपा ॥
सूरीतें मुनि तुरत उतारी * कह्यो नाथ मोहिं लेहु उबारी ॥
मोसों भयो महा अपराधा * पैहौं यमपुर दंड अगाधा ॥
तब नृपसों मुनि वचन उचारा * अहै न नृप अपराध तिहारा ॥
तुम तो चोर जानि दिय बाधा * यह सिगरो यमको अपराधा ॥
अस कहि गे यमसदन मुनीशा * देखत यम नायो पद शीशा ॥
मुनिकह कौन पाप मम देखी * दियो दंडते मोहिं विशेषी ॥
यमकह रहे बाल तुम जबहीं * यक फरफुंदाके गुद तबहीं ॥
सींक डारि तुम ताहि उडायो * सोइ अपराध दंड यह पायो ॥

तब सुनि कोपि कह्यो यमकाहीं * कछु विचार तोरे उर नाहीं ॥
धर्म अधर्म बाल नहिं बोधू * ताते वृथा तासु परकोधू ॥
दोहा—वर्षचतुर्दश जन्मते, बाल करे जो कर्म ॥
पुण्य पाप नहिं होइतिहि, यही सनातनधर्म ॥३॥
बिना विचार दियो तैं दंडा * देहुँ शाप मैं तोहि प्रचंडा ॥
शूद्र योनि पावै यमराजा * तेरो काम करै दिनराजा ॥
सोइ मुनि शाप विवश यम आई * भयो विदुर सब गुण सुखदाई ॥
नृप विचित्रवीरज सुतदासी * प्रमुख भागवत जगत निरासी ॥
रह्यो सुखित हस्तिनपुर माहीं * ध्यावत निशिदिन यदुपतिकाहीं ॥
जब पांडव करिकै बनवासा * बसि विराटपुर लहे सुपासा ॥
तब सुणि कौरव दु[illegible] संहारा * आयो तहँ देवकी कुमारा ॥
दुर्योधनहिं बुझावन हेतू * गयो नागपुर यदुकुल केतू ॥
सुनि यदुपतिकी नगर अवाई * कौरव गये लेन अगुवाई ॥
लाय प्रभुहिं दुःशासन मंदिर * दीन्हो वास सुपासहु सुंदर ॥
सुनि यदुपति आगम द्रुतधाई * विदुर परचो चरणन शिर नाई ॥
रह्यो न तन कर तनक सम्हारा * आँखिन बही आसुकी धारा ॥
दोहा—सिंहासनते उठि हरि, लियो विदुर उरलाय ॥
कहि न सके कछु प्रेमवश, अंबक अंबु बहाय ॥४॥
विह्वल भये प्रेमवश दोऊ * दंड द्वैक पूछ्यो नहिं कोऊ ॥
पुनि हरि पूंछि तासु कुशलाई * प्रीति रीति बहु भांति दिखाई ॥
पुलकित प्रेम मगन मतिवंता * अनिमिष निरख[illegible] छवि भगवंता ॥
भनत वचन विरच[illegible] सेवकाई * विदुर दियो सब निशा बिताई ॥
भयो भोर मज्जन हित गयऊ * यदुपतिहू मज्जन करि लयऊ ॥
भूषण बसन शृंगार सँवारी * परिकर जित निज आयुध धारी ॥
गये सुयो[illegible]न सभा मझारी * उठी सभा यदुनाथ निहारी ॥
यथा योग्य मिलि सब कहँ नाथा * वृद्धन कहँ नायो पुनि माथा ॥
[illegible]ये कनक आसन आसीना * बैठे भीषम आदि प्रवीना ॥

प्रभु सुयोधने बहुत बुझायो ❀ पै नहिं ताके मन कछु आयो ॥
सूची अग्र भूमिमें नाहीं ❀ देहौं नाथ पांडवन काहीं ॥
जुवाजीति पायो हम सिगरो ❀ नहि देहौं तो का मम बिगरो ॥
दोहा–करहु वचन श्रम हरि वृथा, भोजन भयो तयार ॥
खान पान द्रुत कीजिये, सहित सकल परिवार ॥८॥
तब हरि कहुक कुपित कह बानी ❀ दुर्योधन तुम अति अभिमानी ॥
छलकरि पांडुसुतनसों जीते ❀ कबहुँ न पापकर्म सों रीते ॥
हम न भुवन तुव भोजन करिहैं ❀ पापी अन्न उदर नहिं धरिहैं ॥
उठे सभाते अस कहि नाथा ❀ नाइ वृद्ध भीष्मादिक माथा ॥
तुरत विदुरके सदन सिधारे ❀ विदुर नारिसों वचन उचारे ॥
हम भूखे भोजन कछु देहू ❀ तुम पर मेरो सत्य सनेहू ॥
रही नहात विदुरकी नारी ❀ कनक पीठपर वसन उतारी ॥
प्रभुके वचन सुनत सुख पाई ❀ तनु सुधिगई तुरत उठि धाई ॥
प्रेममगन दृग ढारत नीरा ❀ बिसरि गयो पहिरब तनुचीरा ॥
घर भीतर तिहि नग्न निहारी ❀ हरि निज पीतांबर दिय डारी ॥
पहिरि प्रभुहिं भीतर लै जाई ❀ आसुहि कनक पीठि बैठाई ॥
खोजि सदन कदली फल ल्याई ❀ छीलि २ छीलिका अतुराई ॥
प्रेम विवश सुधि नाहिं सब भांती ❀ छिलका प्रभुहि खवावति जाती ॥
दोहा–यदुपतिहूको प्रेमवश, रही न कछु सुधि देह ॥
छिलका भोजन करत प्रभु, अद्भुत निरखि सनेह ९
विदुर सुन्यो प्रभु ममगृह गयऊ ❀ तुरत सभाते धावत भयऊ ॥
आइ भवनसो कौतुक देख्यो ❀ निज तिय मूरखको करि लेख्यो ॥
सतफेकाति छिलकानि खवावति ❀ बार बार दृग अंबु बहावति ॥
बैठी लखि प्रभुके अतिनेरे ❀ विदुर वचन तब अस तेहि टेरे ॥
रे निलज्जि सब भांति अचेती ❀ सतहि फेकि छिलिका कस देती ॥
बैठी बिन सुधि प्रभु ढिग कैसी ❀ कबते भई तोरि मति ऐसी ॥
पतिहि विलोकि लाज अति लागी ❀ करते दिये छिलकको त्यागी ॥

विदुर बुलायो तुरत सुवारा ❀ बनवायो छप्पनहु प्रकारा ॥
निजकरसों प्रभु चरण पखारी ❀ सो जल लियो शीश निज धारी ॥
सींच्यो सिगरो भवन सुजाना ❀ कियो कोटिकुल पूत महाना ॥
पुनि अंगनि अंगराज लगायो ❀ सुमनमाल सुंदर पहिरायो ॥
यहि विधि कर षोडश उपचारा ❀ विदुर करायो पुनि जेंवनारा ॥
दोहा—कह्यो विदुरसों तब हरी, ये छप्पन पकवान ॥
मीठ मोहिं लागत नहीं, वे छिलका समान ॥ ७ ॥
बोले विदुर पाणि युग जोरी ❀ प्रीति रीति ऐसे प्रभु तोरी ॥
दीननपै हठि द्रवहु कृपाला ❀ दीन्ह दयानिधि देवकि लाला ॥
प्रेम मग्न पुनि बोलि न आयो ❀ उठि यदुनाथ विदुर उरलायो ॥
पुनि रथ चढि पांडवन समीपा ❀ सुखित गवन किय यदुकुलदीपा ॥
विदुर बहुरि दुर्योधन काहीं ❀ समुझायो सो मान्यो नाहीं ॥
तब धरि धनुष द्वार हरिदासा ❀ निकरि गयो गुणि कुरुकुलनासा॥
तीरथ करत बहुत दिन बीते ❀ भक्तिप्रभाव जनत भय जीते ॥
फिरत फिरत मधुपुरी सिधारे ❀ तहँ उद्धव भागवत निहारे ॥
दौरि लियो उर लपकि लगाई ❀ मानहु गयो कृष्ण कहँ पाई ॥
दीजे जानि प्रीति भरपूरी ❀ पूंछि कुशल शिरधरि पग धूरी ॥
तब उद्धव सब कह्यो हवाला ❀ फेरि कह्यो पुनि नहिं यहि काला॥
प्रेषित नाथ बदरि वन जैहों ❀ तहँ तनु तजि प्रभु निकट सिधैहों॥
दोहा—नाथ विरहवश येक क्षण, बीतत कल्प समान ॥
तुम मित्रासुतसों सकल, पूंछि लियो विज्ञान ॥ ८ ॥
अस कहि उद्धव तुरत सिधारा ❀ आये वि॰र सपदि हरिद्वारा ॥
तहँ मैत्रेय समीपहिं जाई ❀ परयो चरण पुलकित शिरनाई ॥
पूजि प्रमोदित वचन उचारा ❀ तुम मित्रासुत बुद्धि उदारा ॥
दीजे मोहिं ज्ञान विज्ञाना ❀ सत होतहै कृपानिधाना ॥
तब मैत्रेय कह्यो अस बानी ❀ कृष्ण रीति तुम्हरी सब जानी ॥
कहो कौन वि॰ तुमहि सिखावै ❀ जिनके हरि अपने ते आवै ॥

पै जबलों यह रहै शरीरा ❋ तबलों हरि यश गावउ धीरा ॥
यही सार है किये विचारा ❋ रामनाम संसारहि सारा ॥
अस कहि हरि गुण गावन लागे ❋ उभय भागवत हरि अनुरागे ॥
विदुरहि पनि हरि विरह सतायो ❋ निज शरीर सुरसरी बहायो ॥
गयो कृष्ण पुर हेत निशाना ❋ विदुर महाभागवत प्रधाना ॥
यह मैं विदुरकथा कहु गाई ❋ भारत भागवतहुकी पाई ॥

दोहा–भारत अरु भागवतमें, यह गाथा विस्तार ॥
ग्रंथबृहदके भीतितें, मैं नाहिं कियो उचार ॥ ९ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ दानपतिकी कथा।

दोहा–कहौं दानपतिकी कथा, अब मैं चित्त लगाय ॥
जाहि सुनत सब रसिकजन, जात परम सुखपाय ॥ १ ॥

जब केशी कर भयो विनाशा ❋ सुनत कंस पायो अतित्रासा ॥
तुरत दानपति काहँ बुलायो ❋ ताहि मनोरथ सकल सुनायो ॥
जाहु दानपति गोकुल काहीं ❋ तुम सम कोउ हितकर मम नाहीं ॥
ल्यावहु राम कृष्ण दोउ भाई ❋ धनुषयज्ञकी बात सुनाई ॥
सुनि नृपवचन दानपति काना ❋ शोक हर्ष उर भयो समाना ॥
कहत नाथकी ल्यावन बाता ❋ चाहत करन तासु इत घाता ॥
केशवके मम सन्मुख जैहौं ❋ घात करावन मैं इत लैहौं ॥
पै इक मोहिं अपूरब लाभा ❋ लखिहौं राम श्याम तन आभा ॥
यह शठ समरथ मारन नाहीं ❋ ह्वैहै नाश अविशि यहि काहीं ॥
अस विचारि सुफलकको नंदन ❋ गोकुलओर चल्यो चढि स्यंदन ॥
यदुपति चरणकमलरति गाढी ❋ दीह दरश लालस उर बाढी ॥
महाभागवत मारगमाहीं ❋ मनमें मुदित विचारत जाहीं ॥

दोहा–कौन पुण्य पूरब कियो, दियो कौन मैं दान ॥
जेहि प्रभाव इन नयनसों, लखिहौं कृपानिधान ॥ २ ॥

जे पद दुर्लभ योगिनकाहीं * तिनहिं परसिहौं मैं कर माहीं ॥
पतितशिरोमणि विषयविख्याता * अवनि अर्घगण अघम अघाता ॥
ऐसे म्वाहिं दरशन हरिकेरो * यह अचरज सब कहौ घनेरो ॥
ह्वैहै जग जंजाल पराजै * निरखत नवनीरद यदुराजै ॥
कोन कंससम मम हितकारी * जो पठयो लखन गिरिधारी ॥
इन आँखिनसों हरिपद कंजन * लखिहौं ललकि मुनी मनरंजन ॥
तेहि नखकी द्युतिमंडल देखी * अंबरीष आदिक सुखलेखी ॥
तीक्षणतम संसार नशाई * भये मुक्त बैकुंठ सिधाई ॥
यदपि काज कारनके करता * तदपि अहंकार नहिं धरता ॥
निज तेजहिं अज्ञान भ्रम नाशी * निज मायाकृत जगत प्रकाशी ॥
सखन सहित वृंदावन याहीं * रमाकंत विलसत सदाहीं ॥
हरिगुण लीला लवलित बानी * नाशहिं कोटि अघनकी खानी ॥
दोहा—जगशुचिकर शोभनकर, जीवन जीवनदानि ॥
हरियश बिन बाणी सोई, लेहु मृतकसम जानि ॥३॥
जे पद पूजहिं विधि त्रिपुरारी * कमला अरु मुनि प्रीति पसारी ॥
जे पद भक्तन आनँद दाई * सुमिरत भवरुज देत मिटाई ॥
जे पद गोवन पाछे पाछे * विचरत व्रज धरणीमें आछे ॥
व्रजनारी कुच कुंकुम अंकित * ते पद गहिहौ आजु अशंकित ॥
जेहि मुखमें युग अमल कपोला * कुंडल मंडल लोल अमोला ॥
जेहि मुखमें अति सुभग नासिका * मंदहँसनि आनँद प्रकाशिका ॥
वारिज अरुण विलोचन चारू * चितवनि तिय उपजावनि मारू ॥
जेहि मुखअलक कुटिल छबि छाजन * चितवतही चख चित्तचुरावन ॥
सो मुकुंद मुखमें चलि आजू * देखहुँ गोमधि ग्वालसमाजू ॥
हरण हेतु हरि भूकर भारा * व्रजमें लियो मनुज अवतारा ॥
त्रिभुवनकी सब सुंदरताई * नंदकुँवरके तनु दरशाई ॥
नँदनंदन छबि नैन छकैहौं * याते अधिक कौन फल पैहौं ॥
दोहा—मेरे रथको दाहिनो, दैदै जाहिं कुरंग ॥
होत सुमंगलप्रण शकुन, करन अमंगल भंग ॥४॥

निजमर्याद पाल असुरारी * श्रीहरि तिनके मंगलकारी ॥
लीन्हो यदुकुलमहँ अवतारा * हरण हेतु प्रभु भूकर भारा ॥
निज यश विस्तारत व्रजमाहीं * निवसत करत चरित बहुकाहीं ॥
मंगलकरन सुयश जग केरो * गावत सरलहि मोद घनेरो ॥
सो सज्जनके गति गिरिधारी * त्रिभुवनके गुरु दुखनहारी ॥
नहिं त्रिभुवन अस सुंदर कोई * कमला रही मोहि जोहि जोई ॥
सो छवि इन दृगकरि अनुरागा * करिहौं पान आजु धनि भागा ॥
भयो आजु मोहिं सुखद प्रभाता * देखिहौं कृष्णचरणजलजाता ॥
जब देखिहौं राम घनश्यामें * रथ तजिहौं तुरतै तेहि ठामें ॥
गिरिहौं दौरि चरणमहँ जाई * लेहौं पदरज नैन लगाई ॥
जेहि अंघ्रिन बुधबुधि धरि ध्याना * पावहिं आशु मनोरथ नाना ॥
तेई चरण करनसो गहिहौं * पुनि नहिं कबहुँ योग अस लहिहौं ॥
दोहा–जो कोउ देख्यो कृष्णको, सपनेहु माहिं नजीक ॥
ताके नयननमें नितै, त्रिभुवन लागत फीक ॥ ५ ॥
रामश्याम पद वंदि ललामा * पुनि करिहौं सब सखन प्रणामा ॥
धनि व्रज धाम धन्य व्रजधरणी * धनिव्रजतरु धनि व्रजधरवरणी ॥
जो करकाल भुजंग भय मेटत * शरणागत भवरुज लघु मेटत ॥
जो कर पूज इंद्रपद छायो * यह त्रिलोकको इश्वरज पायो ॥
त्रिभुवन दैके जिहि कर माहीं * बलि निजवश कीन्हो तिनकाहीं ॥
जो कर व्रजबालन मधि रासा * परसतही विहार श्रमनासा ॥
सरसिज सौरभ है जिहिं करकी * हरत विथा व्रजनारिन नरकी ॥
सोकर ताकि दया दृग कोरे * धरि हैं नाथ माथ महँ मोरे ॥
यदपि कंसको पठयो जातो * बारहिं बार मने पछितातो ॥
तदपि वैर बुद्धी मोहिं माहीं * करिहैं कबहुँ दयानिधि नाहीं ॥
वे सबके घट घटके वासी * जानहि जियकी जगत प्रकासी ॥
तिहिक्षण कोटि जन्म अघ बोघा * जरिहैं मम अमोघ है मोघा ॥
दोहा–जब मैं धरिहौं दौरिके, यदुपति पद निजमाथ ॥
तब विशेष प्रभु शीश मम, करि हैं पंकजमाथ ॥ ६ ॥

विना अवधिका आनंद पैहौं * निजसम जग मैं कोउ गनैहौं ॥
सुहृद जाति कुलदेव हमारे * करिके कृपा भुजानि पसारे ॥
धाय मिलैंगे मोकहँ आई * देहैं मम तन पूत बनाई ॥
कर्मबंध छूटी ततकाला * ह्वै जैहौं सब भांति निहाला ॥
मिलि प्रणाम करि पुनि करजोरी * खडो होहुँगो जबहिं निहोरी ॥
तब कहि हैं वसुदेवकुमारे * खुशी कका अक्रूर हमारे ॥
तब हम सकल जनमफल पैहैं * पुनि नहिं कछु बाकी रहिजैहैं ॥
जो करि भक्ति न हरि प्रिय भयऊ * तेहि धृग वृथा जन्म विधि दयऊ॥
जैसे सुरद्रुमढिग सब जावै * जो जस याचै सो तस पावै ॥
खडे होउँगो जब कर जोरी * रामहु देखि दीनता मोरी ॥
मिलिहैं मोहिं मंजु मुसकाई * गहि युग कर मेरे बलराई ॥
लैजैहैं निज भवन लेवाई * करि सतकार मोर दोउ भाई ॥

दोहा—पगपरि ह्वैहौं ठाढ मैं, जब समीप कर जोरि ॥
तब मोतन तकिहैं तुरत, करिकै कृपा न थोरि ७॥
शत्रु मित्र प्रिय अरु अप्रिय, हरिकोहै कोउ नाहिं॥
पैजो जस हरिको भजत, तेहि तैसे दरशाहिं ॥ ८ ॥

किय जो कंस यदुन अपकारा * सो पुछिहैं मोहिं नंदकुमारा ॥
तब मैं देहौं सकल बताई * नेकहु नहिं राखिहौं दुराई ॥
यहि विधि मनमें करत विचारा * गमनत पथ गांदिनी कुमारा ॥
छुटी बाग घोरेनकी करते * अनत डगरते तुरंग डगरते ॥
सो मथुराते चल्यो प्रभाता * पहुँच्यो रवि अथवत व्रजताता॥
गोकुलके गैंडे जब गयऊ * हरिपद चिह्न लखत महि भयऊ॥
थल थल व्रज धरणी रजमाहीं * हरि बल चरणचिह्न दरशाहीं ॥
जो पदरजको सब असुरारी * निज निज मुकुट लेत नित धारी॥
भूतलके भूषणपद तेई * रहत सुखित जन जिनको सेई ॥
अंकुश अंबुज आदिकि रेखा * सोहि रहे जिनमाहिं विशेखा ॥
तहँ व्रजकी रजकी छबि छावनि * हरिपद अवली हिय हुलसावनि ॥
लखि सुफलक सुतलहि अहलादा * त्यागी तुरत लाज मर्यादा ॥

दोहा-कृष्णप्रेम सागर मगन, मुदित सुफल्ककुमार।
पंथ अपंथ तुरंगको, कछु नहिं करत विचार ॥ ९ ॥
रही तनक तनमें न सुधि, पुलकावलि सब गात॥
क्षण क्षण दृग जलजातसों, बहत विपुल जलजात १०॥

तुरत कूदि रथते अनुराग्यो ❀ ब्रजकी रजमें लोटन लाग्यो॥
बोलत गिरा प्रेमके हदकी ❀ यह रज है मेरे प्रभुपदकी॥
धन्य धन्य मैं हौं जगमाहीं ❀ भाग्यवंत मोसम कोउ नाहीं॥
लोटत रहेउ उठत नहिं भयऊ ❀ तब अनुचर चढाय रथ दयऊ॥
सन्मुख डगऱ्यो नंदनिवासा ❀ निरखत चहुँकित गोप अवासा॥
जनको जन्म लिहे जगमाही ❀ पुरुषारथ इतने सबकाही॥
मथुराते चलिकै अक्रूरा ❀ कियो जो मार्ग मनोरथ पूरा॥
इतने बीच दशा अक्रूरकी ❀ जो न भई है प्रेम पूरकी॥
सोई किये दंड नहिं पावैं ❀ जो पखंड सब भांति बचावैं॥
होय अनन्य दास हरि केरो ❀ करै तासु चित हरिपद डेरो॥
पुनि अक्रूर चलि चौकमझारी ❀ निरख्यो रामश्याम मनुहारी॥
अनिमिष नयन भये तिहिं काला ❀ भयो दानपति प्रेम विहाला॥

दोहा-उभय मनोहर माधुरि, मूरति चेटकचोट॥
कौन पुरुष लखि जगतमें, होतहु लोटनपोट॥११॥

सवैया-नील औ पीत पोशाक किये कल काननमें लसै कुंडल जोटा॥
शारद अंबुजसी अँखियां जेहि होतहै लोट लगे जिन चोटा॥
श्रीरघुराज सखानिके बीच विराजि रहे करकंचन सोटा॥
दोहनी लीन्हे खरे खरके दोउ दूध दुहावत नंदके ढोटा॥१॥
शारद सावन मेघसे मंडित श्रीके निवास सुबाहु विशाल है॥
पूरण चंद्रसे सुंदर आनन कानन फूल हिये वनमाल है॥
ज्वानी घमंड भरे रघुराज वितुंड विराजे मनो वियवाल है॥
दाहिने ओर खडे बलराम त्यों वाम विराजि रहे नँदलाल है॥२॥
कुलिशै धुज अंकुश अंबुज पांयन चिह्नसो अंकित भू ब्रजकी॥

निज शोभासों ताहि सलोनी करै मुखमें मुसकानि महासजकी ॥
दृगमें भरी दोउ दया रघुराज रसाल सुचाल मतंगजकी ॥
अस धीरको धीरन धूरि मिलै लखि मूरति मंजु बडे धजकी ॥ ३ ॥
हीरनहारपै मोतिनमाल सुमोतिन मालपै त्यों वनमाल है ॥
अंगनमें अँगराग रँगे किये मज्जन धारे दुकूल रसाल है ॥
विश्वके ईश दोऊ प्रगटे पुहुमीको उतारन भार विशाल है ॥
आनन भाससों नाशै दिशातम रोहिणी लाल यशोमतिलाल है ॥
है कलधौत कडे करमें कटिमें कलकिंकिणि राजति खासी ॥
बाहु विजायठ वेश बने पगनूपुर नील महाछबि रासी ॥
त्यों अंगुलीनमें शोभा भली मुदरीनकी श्रीरघुराज बिभासी ॥
नीलक औ रजताचल मानो सुकंचन दाममें बांधे प्रकासी ॥

दोहा-यहिविधि हरिको निरखिके, सो अक्रूर हरिदास ॥
आनँदसों विह्वलपरम, परयो प्रेमके पाश ॥ १२ ॥

रथते कूदि परयो तेहि ठामा * धायो हरिसन्मुख मतिधामा ॥
राम कृष्णके चरणन धाई * गिरयो दंडसम सुरति भुलाई ॥
बहत नयन आनँद जल धारा * रहि न गयो तनु तनक सम्हारा ॥
प्रगटी पुलकावली शरीरा * गदगद गर रहिगयो न धीरा ॥
कढि न सकति मुखते कछु बानी * प्रेमदशा किमि जाय बखानी ॥
लखि अक्रूरहि तहँ यदुराई * लियो दौरि द्रुत मुदित उठाई ॥
उभय भुजा भरि मिलि भगवाना * प्रेमविकल ह्वैगये समाना ॥
रामहु दौरि द्रुते अक्रूरे * मिलत भये अतिआनँद पूरे ॥
पुनि अक्रूर करते करको गाहि * लैगे भवन लिवाइ चलो काहि ॥
अक्रूरहिं सादर दोउ भाई * दिय पर्यंक कनक बैठाई ॥
पुनि मधुपर्क दियो करमाहीं * दियो धेनु दरशाय तहांहीं ॥
पुनि अक्रूर कहँ थके विचारी * चापन लगे चरण गिरिधारी ॥

दोहा-राम श्याम निज हाथसों, पुनि अक्रूरके पाइ ॥
धोवत भे अतिप्रीतिसों, सुरभि सलिल ढरकाइ १३

सादर पुनि प्रभु वचन उचारे ❀ रहेउ कुशल तुम कका हमारे ॥
प्रेममगन तेहितनु सुधि नाही ❀ बोलत नाहिं चितवत हरिकाही ॥
पुनि प्रभु कही गिरा सुखपागी ❀ तुमको कका क्षुधा अतिलागी ॥
ताते भोजन करहु विशेषी ❀ सकल भांति अपनो गृह लेखी ॥
अस कहि भोजन विविधप्रकारा ❀ लाये निजकर नंदकुमारा ॥
सादर दिये अक्रूर जेवाई ❀ विधि बहु व्यंजन नाम बताई ॥
पुनि बलहरि अचवन करवायो ❀ सादर रत्न पलँग बैठायो ॥
तब बलराम धर्मके ज्ञाता ❀ लै बीरा दीन्हो कहि ताता ॥
सुमनमाल पुनि दिय पहिराई ❀ बोलत भये आनँद अति पाई ॥
अति निर्दै है कंस महीपा ❀ किहिविधि जीवहु तासु समीपा ॥
जैसे अजा समीप कसाई ❀ सोइ अचरज जिहि दिन बचि जाई ॥
जो निज भगनी सुतन संहाऱ्यो ❀ यद्यपि देवकी दीन पुकाऱ्यो ॥
दोहा–नेकहुँ दया न तिहि भई, खल स्वभाउ नहिं जात ॥
ताके पुर तुम बसतहो, पूंछहिं का कुशलात ॥ १४ ॥
यहि विधि भाष्यो नंद जब, तब अक्रूर बुधराय ॥
मारगको श्रम दूरि जिय, अतिशय आनँद पाय १५ ॥
बैठे मोदित पलँगमें, लहि हरिकृत सतकार ॥
पूरयो मार्ग मनोरथै, सकल सुफल्ककुमार ॥ १६ ॥
बहुरि दानपति राम श्यामसों ❀ कह्यो कंस वृत्तांत कामसों ॥
होत प्रभात यान मँगवायो ❀ राम श्याम तापर बैठायो ॥
तिहि क्षण विरह उदधि व्रज बाढो ❀ पऱ्यो महा कसमस दुख गाढो ॥
व्रज सुन्दरी कृष्णकी प्यारी ❀ कहत हाइ हरिलाज बिसारी ॥
कोहुके तनु नहिं तनक संभारा ❀ बढी यमुन लहि आंसुन धारा ॥
कहहिं महाकटु वचन अक्रूरै ❀ निरदै करत कंतको दूरै ॥
गोपी विरह समुद्र अपारा ❀ गिरा पौरि को पावत पारा ॥
सूरदास आदिक कवि जेते ❀ वर्णन कियो यथामति तेते ॥
नेति नेति तेइ सुकवि बखाना ❀ तहँ लघु मो मति कौन ठिकाना ॥

गोपी विरह रसिक आधारा * बूडत मिलत पार संसारा ॥
गोपिन सरिस जगत महँ देही * कोउ न भयो यदुनाथ सनेही ॥
पति पितु सुत अरु तनु परिवारा * कोउ नाहिं हरिसम अहै पियारा ॥
दोहा–रसना अहिपति जीवमति, लेखक होहिं गणेश ॥
मसिसागर गोपी विरह, लिखि नाहिं सकै अशेष॥१७॥
रामश्याम कहँ सुफलकनंदन * लै गवन्यो मथुरै चढि स्यंदन ॥
निरखत सुखमा रामश्यामकी * भूलि गई सुधि ताहि यामकी ॥
नंदनगरते चल्यो सकारे * याम युगल पहुँच्यो अँधियारे ॥
लखि अबेर यमुनातट जाई * मज्जन करन लग्यो सुख पाई ॥
तब यदुपति अस मनहिं विचारा * यह लोट्यो व्रज धूरि मँझारा ॥
तासु प्रभाव प्रेम अधिकारा * रह्यो दानपति दास हमारा ॥
ब्रजरज परसि प्रभाव विशेषी * लेइ दानपति आजुहिं देखी ॥
अस गुणि जब अक्रूर यमुनामें * मज्जन करन लग्यो तिहि जामें ॥
तब हरि ताहि विकुंठ पठायो * आपन सकल विभूति दिखायो ॥
सो वर्णन भागवत मझारी * लिख्यो संतजन सकल विचारी ॥
तहँ अक्रूर अति पुलकित गाता * स्तुति कियो सुवचन विख्याता ॥
पुनि कढि जलते बाहर आयो * रामश्याम कहँ माथ नवायो ॥
दोहा–विनय कियो कर जोरकै, यदुपति कृपानिधान ॥
मोहिं कियो धनि धरणिमें, अधम अधीश प्रमान ॥ १८ ॥
अस कहि पुनि दोउ भ्रातन काहीं * रथ चढाय लायो पुर माहीं ॥
कह्यो नाथ मम सदन सिधारहु * पदजल कुल परिवारहु तारहु ॥
क्षणभरि तजिहों नाहिं तुमकाहीं * जीवन सफल और विधि नाहीं ॥
कह्यो नाथ तुम कका हमारे * मोको तुम प्राणहुते प्यारे ॥
ऐहैं हम गृह अवशि तुम्हारे * जैहैं जब पितुकेरि तुम्हारे ॥
प्रभु शासन शिर धरि सुख पाई * गयो दानपति सदन सिधाई ॥
तब मधुपुरी निकट अमराई * बैठे हरिसंयुत बलराई ॥
इतनेमें नंदादिक आये * हरिपुर निरखनहेतु सिधाये ॥

ग्वालबाल संयुत गोपाला * रामसहित रवि अथवत काला ॥
प्रविशे पुर देखनको शोभा * जाहि लखत मुनिजन मनलोभा ॥
पर्यो कोलाहल पुरी मँझारी * आये हलधारी गिरिधारी ॥
नगर नारि नर देखन धाये * खानपानको भानु भुलाये ॥

दोहा–रहे जे जस ते तस सकल, पट भूषण विपरीत ॥
दौरि दौरि उठि उठि सबै, लखन लगे गुणिमीत॥१९॥

कवित्त–साजिकै शृंगार संग रोहिणीकुमार सखा सोहै रघुराज भूरि मोदहिं भरत जात ॥ कारिकै कटाक्षनि मृगाक्षिनि छकावै छैल धाम धाम धूमधाम पुरमें करत जात ॥ केती भई कायल ते परी भूमैं घायलसी केती बालबायलक्षी जियरो जरत जात ॥ जौनही डगर ह्वैकै कान्हरो कढत तहँ तौनही डहरमें कहरसी परत जात ॥ १ ॥ निमिख नेवारि घनश्यामको निहारि चित्र पूतरीसी ठाढीं पुरनारि आनँदै भरी ॥ कान्हकी तकनि त्योंहीं हँसनि सुधाकी सींची पायकै सोहाग अनुराग युत हैं खरी ॥ रघुराज प्यारो प्रेम वेरी पाय नाय दीन्ही ताप हरिलीन्ही भई पुलक घरी घरी ॥ माधवकी मूरति मनोहरीको मथुराकी पलक कपाट दैकै धांध्यो उर कोठरी ॥ २ ॥

दोहा–कंसराजको रजक यक, वसन लिहे अवदात ॥
अनुचर युत मदमत्त अति, चलो रहै मगजात॥२०॥

तिहि प्रभु कह्यो कौन तुमयेहू * कछुक वसन हमहूं कहँ देहू ॥
रुषित रजक तब गिरा उचारा * रे अहीर मतिमंद गँवारा ॥
प्रथम विलोक वदन निज लेहू * कहौ फेरि पट मोकहँ देहू ॥
यह अमोल पट कंसराजके * अहैं न क्षुद्र न गोपकाजके ॥
तब करतल प्रहार हरि कीन्हों * धरतें भिन्न शीश करि दीन्हों ॥
पहिरे वसन सखन कछु वाटे * ढील ढाल तनु भये न साटे ॥
तहँ यक रहै धर्ममति दरजी * हरिबल गये सधावन गरजी ॥
आवत राम श्याम कहँ देखी * वायक उठ्यो भाग्य बड लेखी ॥

गिर्यो चरणमें चलि शिरनाई ❀ पुलकि प्रेम दृगवारि बहाई ॥
कह्यो जोरि कर आयसु दीजे ❀ जानि आपनो किंकर लीजे ॥
प्रभु कह वसन साधि मम देहू ❀ जो मनभावै सो तुम लेहू ॥
वसन साधि दीन्हो द्रुत वायक ❀ यदुपति कियो ताहि सब लायक॥

दोहा–दियो मुक्ति सारूप्य तेहि, जगमहँ विभव अतूल।
शोभा और शरीर बल, सुमति सकल सुखमूल ॥२१॥

आगे चले बहुरि दोउ भाई ❀ सखन सहित अति आनँद पाई ॥
मालाकार येक मतिवाना ❀ रह्यो मधुपुरी भक्तप्रधाना ॥
रह्यो सुदामा ताकर नामा ❀ तासु हाटमधि हाटकधामा ॥
ताके भवन गये दोउ भाई ❀ सो देखत अतिशय अतुराई ॥
पर्‌यो चरणगहि हे वनमाली ❀ मैं तुव दास जातिको माली ॥
करहु पुनीत गेह यदुराई ❀ अस कहि भीतर गयो लिवाई ॥
उत्तम आसनमें बैठायो ❀ अर्घ्य पाद्य आचमन करायो ॥
धूप दीप नैवेद्यहु दीन्हो ❀ चंदन प्रभु अँग लेपन कीन्हो ॥
जस हरिपूजन कियो सुजाना ❀ तैसहि सकल सखन सनमाना ॥
कह्यो जोरि कर हे यदुराजू ❀ पावन मोर कियो कुल आजू ॥
सब मैं हों समान भगवाना ❀ जे जस भज ताहि तस जाना ॥
देव पितर ऋषि ऋणहु हमारे ❀ आय नाथ तुम सकल उधारे ॥

दोहा–धन्य भाग्य तेहि पुरुषकी, तेहि सम धन्य न आन
जाके भवन पधारिये, ह्वै प्रसन्न भगवान ॥ २२ ॥

सुनि मालीके वचन मुरारी ❀ रहे मौन नहिं गिरा उचारी ॥
माली माधव मनकी जानी ❀ धन्य धन्य निजभाग्य बखानी ॥
महासुगंधित कोमल फूला ❀ तिनकी रच द्वैमाल अतूला ॥
रामश्यामके गल पहिराई ❀ औरो दीन्हो सखन सुहाई ॥
तहँप्रभु जानि ताहि निज दासा ❀ कह्यो मांगु जो होवै आसा ॥
नृपपद और शक्रपद भारी ❀ विधिपद शंकर पद सुखकारी ॥
अहै न कछु दुर्लभ तुम काहीं ❀ देहु आजु मैं यहि क्षणमाहीं ॥

मालाकार कह्यौ कर जोरी * अहै नाथ कछु चाह न मोरी ॥
देहु भक्ति अरु साधुन सेवा * याते कौन जगत महँ मेवा ॥
जानि अकाम भक्ति तेहि दीन्हीं * संपति अचल सनातन कीन्ही ॥
अरु शरीरबल सुयश जहाना * आयुष पूरण कियो प्रमाना ॥
हरि सम को दाता जगमाहीं * येक देत शत गुण ह्वैजाहीं ॥
दोहा—रामश्याम तहँते तुरत, सखनसहित अभिराम ॥
मंदमंद गवनत भये, लख्यो कूबरी वाम ॥ २३ ॥
करमें लीन्हे कनककटोरी * अहै कूबरी बैस किसोरी ॥
तामें चंदन कुंकुम घोरा * चितवत चली जाति चहुँ ओरा ॥
ताको निकट निहारि बिहारी * भूपलाई अस गिरा उचारी ॥
हमहि देहु सुंदरि अँगरागा * होहि तिहारो अचल सोहागा ॥
कुबरी कही सुनहु छबिरासी * मैं हौं भूप कंसकी दासी ॥
को तुमसी प्रिय है यदुनंदन * दैहौं जाहि रचो निज चंदन ॥
चितवन चलनि चारु मनहारी * मधुर हँसनि बोलनि सुकुमारी ॥
मोहि गई यदुपति कहँ देखी * कुबरी धन्य भाग्य निज लेखी ॥
लगी लगावन अँग अँगरागा * उमगत अंग अंग अनुरागा ॥
तब यदुपति अस मनहि विचारा * याहि दरशफल होहि हमारा ॥
अस विचार करि तहँ यदुराई * कर अंगुरी कै चिबुक लगाई ॥
पग अँगुठनसों पगन दबाई * बदन तासु दिय उपर उठाई ॥
दोहा—दृग खंजन भ्रुकुटी धनुष, मुख शशिभाल विशाल॥
रूप कूबरी लखि लजी, सुरललना तेहिकाल॥२४॥
भयो रूप गुण परम उदारा * हरि हेरत उपज्यो हिय मारा ॥
यदुपति कर पटुका कर छोरा * गहि बोली हँसिकै तिहिं ठोरा ॥
पीतम चलहु अवास हमारे * निकसत जिय अब तजत तिहारे॥
मैं न छोड़िहौं इकक्षण तुमको * दुतिय न प्रिय लागत कछु हमको
सुनि कुबरीकी विनय विहारी * गये सकुचि बलु बदन निहारी ॥
कह्यो भामिनी थली तिहारी * मैं ऐहौं सुरकाज सँवारी ॥

सुनि मुकुंद मुख मंजुल बानी * महामोद कुबरी उर मानी ॥
तजि पटुका गवनी निज गेहू * यदुपतिपै किय परम सनेहू ॥
धनुषभंग करि रंग भूमि पुनि * गजमल्लादिक सकल दुष्टधुनि ॥
व्रजको उद्धव काहु पठाये * प्रीति विवश कुबरी गृह आये ॥
मणिमंदिर सुंदर सब साजू * जाहि लखत ललचत सुरराजू ॥
कुबरी लखि पीतम कहँ आवत * लेन चली सुखसिंधु थहावत ॥

दोहा–करगहि भवन लेवाइगै, पुनि पर्यंक बैठाइ ॥
पुलकि कियो सतकार वर, धनि निज भाग्यगनाइ॥२५॥

रमासरिस प्रभु तिहि करि लीन्हों * दीनदयालु प्रगट गुण कीन्हों ॥
को कृपालु यदुनाथ समाना * हरहिं दीनदुख दुसह महाना ॥
कहां अनंत आदि अविनाशी * कहँ कूबरी कंसकी दासी ॥
लखि निहकपट समर्पत चंदन * मिले जाय निज ते यदुनंदन ॥
कृष्ण मिलनमहँ और न हेतू * सन्मुख होइ छोडि छलचेतू ॥
नहिं कुलजातिहु पांति बडाई * विद्या वैभव सुंदरताई ॥
मिले कृष्ण अविचल लखि प्रीती * वह दरबार केर यह रीती ॥
कृष्ण कूबरी मथुरा माहीं * करहिं निवास विलास सदाहीं ॥
बहुरि श्याम बलराम समेतू * चले सुखित अक्रूर निकेतू ॥
सुनि आगमन भवन अक्रूरा * मान्यो मोर मनोरथ पूरा ॥
जैसेहि रह्यो तैसहीं धायो * प्रेममगन तनभान भुलायो ॥
गिरयो कृष्णपद पंकज माहीं * कियो सनाथ नाथ मोहिं काहीं ॥

दोहा–प्रभुपदरज निज शीशधरि, रामहु पद शिरनाइ ॥
सखनवंदि पुलकिततवदन, चल्यो स्वसदन लिवाइ ॥२६॥

करगहि पुनि अक्रूर दोउ भाई * रत्नसिंहासन पर बैठाई ॥
कर करि चारु हेम करथारा * नाथ युगलपद कमल पखारा ॥
सो जल सींच्यो गृह चहुँवोरा * भयो उभयकुल पूत करोरा ॥
लग्यो करन पूजन हरिकेरो * गइभूलि विधि प्रेम घनेरो ॥
जस तस करि हरिपूजन प्रेमी * लियो अंकधरि हरिपद क्षेमी ॥
मंद मंद कर मरदन लाग्यो * पूरव पुण्यपुंज तेहि जाग्यो ॥

कढति न प्रेम विवश मुखवानी ❋ अनिमिष लखत रूप रसखानी ॥
पुनि सम्हारि सुधि वचन उचारा ❋ धन्य धन्य वसुदेव कुमारा ॥
मोसमान जग अघी न होई ❋ तुम समान पावन नहिं कोई ॥
रजकर मेरु मेरु रज करहू ❋ बानि विशेषि अधम उद्धरहू ॥
जो न होत यदुनाथ नाथ अस ❋ तौ मम सरिस दीनउधरत कस ॥
मंद विहँसि प्रभु वचन उचारे ❋ तुम सयान कुल कका हमारे ॥
दोहा-हम पालक भ्राता उभय, करेहु सर्वदा छोह ॥
गई गुणत शिशुकी नहीं, वृद्धक्षमा संदोह ॥ २७ ॥
जो वात्सल्य सदा सर राखिहौ ❋ तबहीं प्रेम सुधारस चखिहौ ॥
वात्सल्य रस सरिस न दूजो ❋ विधि शंकर कमला जिहि पूजो ॥
प्रभुके वचन सिखापन मानी ❋ सोई भक्ति दानपति ठानी ॥
को अक्रूर सम जग बडभागी ❋ वृंदावन रजको अनुरागी ॥
तिहि रज परस प्रगट परभाऊ ❋ दरशायो विकुंठ यदुराऊ ॥
आये अपने ते घर माहीं ❋ ब्रजरजमहिमा किमि कहिजाहीं ॥
कोटिजन्म मुनि यत्न कराई ❋ जे पद उर आवत कहुँनाईं ॥
ते पद धरचो दानपति अंका ❋ रही कौन जगकी तिहिशंका ॥
द्रवहिं दीनपर दीनदयाला ❋ जो विश्वास होहि सब काला ॥
दास विश्वास नाथकी दाया ❋ उभय भांति छूटे जगमाया ॥
अब न और कछु करौं विचारा ❋ रीझव प्रेमहि नंदकुमारा ॥
कोऊ करै यतन बहुनीका ❋ विना प्रेम लागत सब फीका ॥
दोहा-जप तप संयम नेमव्रत, ज्ञान विराग विवेक ॥
विना प्रेम यदुवंशमणि, रीझत कबहुँ न नेक ॥ २८ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ सुदामाकी कथा।

दोहा-परमसुंदरी रसभरी, संतनकी मनहारि ॥
कथा सुदामाकी सुखद, अब मैं कहौं उचारि ॥ १ ॥

रह्यो एक द्विज अति धन हीना * नाम सुदामा गुणन प्रवीना ॥
दंपति रहे वसत निज धामा * रह्यो उजेनपुरी ढिग ग्रामा ॥
रामश्याम जब कंसहि मारयो * गुरुकर विद्या पढन विचारयो ॥
सांदीपिनि मुनि येक विज्ञानी * रहै अवंतिपुरी गुणखानी ॥
तिनसों विद्या पढन विचारे * बलसमेत उज्जैन सिधारे ॥
सोइ सांदीपिनि मुनिके धामा * पढत रह्यो सो विप्र सुदामा ॥
तहां सुदामा अरु यदुराई * पढत पढत ह्वै गई मिताई ॥
जब हरि बहुरि मधुपुरी आये * सोउ द्विज गयो भवन सुखछाये ॥
यौवन बैस भई द्विजकेरी * तब दरिद्रता तेहि घर घेरी ॥
नहिं घर तासु अन्नकर खोजू * भिक्षाटन करि भोजन रोजू ॥
कांटन योजित फटे पुराना * दंपति वसन करै परिधाना ॥
करै न कौनहु उद्यम काहीं * जोन मिलै तोषित तेहिमाहीं ॥

दोहा—ज्ञानदृष्टिते विप्र सो, गुणो न कछु दुखदीह ॥
धर्म कर्म आचारमें, निपुण रटै हरिजीह ॥ २ ॥

एक दिवस द्विज रोज भरोसे * मांगन भिक्षा गयो परोसे ॥
मिली न भीख सांझ ह्वै आई * आयो भवन बहुरि श्रम पाई ॥
पुनि दूजे तीजे दिन गयऊ * मांगे भीख कोउ नहिं दयऊ ॥
कियो तीन व्रत जबहिं सुदामा * दंपति दुखित महाक्षुतछामा ॥
तिहि दिन जब बीती निशि आधी * दंपति दुखित दरिद्र उपाधी ॥
तबहिं सुदामाकी प्रियबामा * कह्यौ कंतसों वचन ललामा ॥
अब तौ क्षुधा सही नहिं जाती * जारत पिय दरिद्र नित छाती ॥
कौन कियो पूरव हम पापा * जाते लहत घोर संतापा ॥
कह्यो सुदामा तब मुसक्याई * भाग्य मोरि सम को जग पाई ॥
यह प्रसंग तिय तोर न जाना * मोर मीत यदुपति भगवाना ॥
सबके प्रिय सबके हितकारी * निज जन अघाशि सकल दुखहारी ॥
बसैं द्वारकामहँ यहि काला * त्रिभुवनपति दिगपालनपाला ॥

दोहा—दोउ मीत यक संगहीं, पढ्यो गुरूके पास ॥
तो न गर्व मेरे भये, अहै मीतकी आस ॥ ३ ॥

सो सुनि कही विप्रकी नारी * जो तुम्हरे हैं मीत मुरारी ॥
तौ कस मीत निकट नहिं जाहू * कस मनवांछित लेहु न लाहू ॥
येक मीत भोगै सुख भोगू * येक मीतको भोजन सोगू ॥
यह विपरीति कहो पिय कैसी * मीत मीतकी रीति न ऐसी ॥
कह्यो सुदामा तब सुनु प्यारी * भली बात यह मोहिं उचारी ॥
जैहौं भोर मीतके पासा * बहुत दिनाते देखन आसा ॥
पै यक होत मोहिं संदेहू * भेंट देनको नहिं कछु गेहू ॥
मीतहिं मिलब छूंछ नहिं रीती * मीत कहौ कैसी तुव प्रीती ॥
जो कछु होइ गेह महँ प्यारी * दीजै हमहिं बिलंब बिसारी ॥
लेब तुम्हार नाम उत जाई * दियो मीत तुम्हरी भौजाई ॥
तब पुनि कही विप्रकी नारी * घरमें कछु न ढूंढि हम हारी ॥
पै हम मांगि भीख घर चारी * ल्याउब वस्तु कछुक अति प्यारी ॥

दोहा—अस कहि उठि बाहिर गई, तुरत विप्रकी नारि ॥
लै आई घर चारिते, चाउर मूठी चारि ॥ ४ ॥

दियो कंत कहँ कहि अस बानी * मिल्यो मीतकहँ दै यह ज्ञानी ॥
पायो मूठी चाउर चारी * कह्यो विप्र कीन्हीं भल प्यारी ॥
सात परत करि चिरकुट चीरा * हढ़करि बांधि लियो मतिधीरा ॥
फटे वसन कसि कम्मर लीनो * टूटो बंश डंड कर कीनो ॥
बांधि शीश लघु वसन पुराना * नहिं जलपात्र न पद पदत्राना ॥
विप्र छिप्र द्वारका सिधारयो * मीत मिलौं किमि मनहिं विचारयो ॥
छपनकोटि यदुकुल विस्तारा * तासु नाथ है मीत हमारा ॥
किहि विधि मिलौं मीत मुहिं आजू * भाग्य छोटा अभिलाषत राजू ॥
चीन्हत येक मीत मोहिं सोई * और मोहिं जानै का कोई ॥
किहिविधि हैहौं सागरपारा * को पहुँचैहै मीत दुवारा ॥
यहि विधि करत मनोरथ पंथा * गवनत चरक सँभारत कंथा ॥
यहि विधि गयो सिंधुके तीरा * कह्यो नाविकनसों धरि धीरा ॥

दोहा—मुट्ठी चाउर येक लै, केवट देहु उतारि ॥
हमको यदुकुलनाथके, लीजे मीत विचारि ॥ ५ ॥

सुनि केवट सब हँसे ठठाई ❀ दीन्हो द्विज उतारि अतुराई ॥
उतरि विप्र आयो यहि पारा ❀ लख्यो चहूं कित पुर विस्तारा ॥
कनककोट गुर्जें अतिभारी ❀ सायुध करहिं वीर रखवारी ॥
पुर चहुँ कित उपवन अभिरामा ❀ बिच बिच बने सुखद आरामा ॥
कनककोट अरतालिस कोसू ❀ चारि द्वार चहुँ कित हत दोसू ॥
लागे कंचन कलित कपाटा ❀ द्वार विना नहिं दूसर बाटा ॥
नगर कोट द्वारहि द्विज गयऊ ❀ वारण कोउ न करत तेहि भयऊ ॥
भीतर गयो नगरमहँ जबहीं ❀ अवलोकी अद्भुत छबि तबहीं ॥
जक्यो तहां चहुँवोर निहारत ❀ चल्यो जात मग कोउ न निवारत॥
चहुँकित चितवत करत विचारा ❀ किमि मिलिहैं वसुदेवकुमारा ॥
कर न चहत वारण कोउ मोही ❀ लखि कुवेष अनजान बटोही ॥
हाटन हाटक भवन उतंगा ❀ बँधी विचित्र धुजा बहुरंगा ॥

दोहा—हय गय रथ संकुल सुपथ, धनिक धनेश समान ॥
सुर सुरतिय सम नारि नर, नितनवमोद महान॥६॥

किला कोट ढिग पुनि द्विज गयऊ ❀ गोपुर ऊंच लखत तहँ भयऊ ॥
शंकित धरत मंद पग विप्रा ❀ चितवत चकित चहूं कित छिप्रा ॥
प्रविशि गयो जब भीतर द्वारा ❀ निरख्यो तहँ नव लाख अगारा ॥
यदुवंशिनके मंदिर भारी ❀ कौन कहै कवि सुछबि उचारी ॥
बनी विशद तहँ हय गय शाला ❀ चौक चांदनी पुनि शशिशाला ॥
इंद्र वरुण यम धनद विभूती ❀ तैसे विश्वकर्मा करतूती ॥
यक यक यदुवंशिन गृह सोहै ❀ विरतियोग रत मुनिमन मोहै ॥
प्रविश्यो द्विज दूसर आवरणा ❀ लख्यो कुमार भवनसुखभरणा ॥
प्रद्युम्नादिक कुँवर छबीले ❀ बैठे जहँ तहँ वीर सजीले ॥
सोउ आवरण गवन किय जबहीं ❀ लख्यो राममंदिर द्विज तबहीं ॥
अति उतंग पूरित सब शोभा ❀ जिहि लखि करतारहु मनलोभा ॥
पुनि वसुदेव देवकी मंदिर ❀ चमकत चारु कोटिसम चंदिर ॥

दोहा-लख्यो सुदामा तहँ विमल, उग्रसेनको धाम ॥
स्वर्गसरिस विस्तार जिहिं, कामधामसम वाम ॥७॥

भयो चकित मन अति सन्देहा * कहँ है मोर प्रीति कर गेहा ॥
कवन भवन मैं अब चलिजाऊं * किहिविधि मीत मुकुंदहि पाऊं ॥
बहुत भई इतलों जो आयो * वारण कौनहु द्वार न पायो ॥
बिना मीत मुहिको पहिचानी * वारण करी रंक द्विज मानी ॥
हौं न जाउँ इतते अब आगे * मीत मिलव मिलिहैं नहिं मांगे ॥
बिना मिलेहु उपजत दुखभारी * का कहिहौं पुछिहै जब नारी ॥
करत विचार विप्र मनमाहीं * परत ठीक करतब कछु नाहीं ॥
पुनि हठकरि अस कियो विचारा * आगे जाहुँ और इक द्वारा ॥
अस गुणि मंद मंद पग धरतो * चकित चहूंकित चितवत डरतो ॥
चलो भवन भीतर भुवि देवा * जानि परयो नहिं मंदिरभेवा ॥
प्रविशि द्वार भीतर जब आयो * द्वारप वारण हेत न धायो ॥
षोडश सहस लख्यो तहँ मंदिर * कोटिन शशिसम भासित सुंदर ॥

दोहा-परत दीठि जहँ विप्रकी, तहँते टरति न फेरि ॥
ठाढो अनिमिष लखत तेहि, पहरन होती देरि ८॥

कछुक चलत बहुरत भयमानी * लखत चहूंकित अचरज आनी ॥
कहुं पग रहत उठाय तहांहीं * कहु पुनि धरत चिते चहुंघाहीं ॥
विस्मय हर्ष करत यहि भांती * विप्रहि वेला बीतत जाती ॥
षोडश सहस भवन अतिभारी * लघु बड़ परै न भेद विचारी ॥
जब तबके शंकित द्विजराई * द्वार देहरी गयो छिपाई ॥
लखत सकल मंदिरकी शोभा * विप्रहुको अतिशय मन लोभा ॥
हैहै कौने भवन मुरारी * कौन भौन महँ जाहुँ सिधारी ॥
धोखे कहुँ जो मंदिर जैहौं * तहँ जो नाहिं निज मीतहिं पैहौं ॥
तहँते जैहौं तुरत हटाई * बिना मीत मोहिं कौन बुलाई ॥
ताते अब आगू नहिं जाऊं * कछुक काल ठहरौं यहि ठाऊं ॥
मीतहि कोउ तौ खबरि जनाई * रंक बैठ द्वारे यक आई ॥
मीत श्रवण परि है जो बाता * तौ मोहिं अवशि आनिहै ताता ॥

दोहा—अस विचारकै विप्रतहँ, अंतः पुरके द्वार ॥
खरो रह्यो कछु काललौं, मनमहँ करत विचार९॥
सन्मुख यक मंदिर रहै, कोटिन भानुप्रकाश ॥
तहँ मणीन पर्यंकपै, निवसत रमानिवास ॥ १० ॥
रुक्मिणि संयुत अतिसुभग, सखीसहस चहुँवोर॥
वितरत विविध विलासतहँ, श्रीवसुदेवकिशोर ११॥

कवित्त—प्यारीको विलोकत ललौ है कंज लोयनसों प्यारी पान देन कर कमल उठायो है ॥ चितवत चारयो ओर औचकही आनि परे चारु चख द्वारपै सुदामा जहँ ठायो है ॥ भूलि गयो खान पान भूलि गई प्यारी नारि उठ्यो पर्यंकते अनंद अधिकायो है ॥ मेरो मीत आयो अरी मेरो मीत आयो अरी मेरो मीत आयो अस गाय मुख धायो है ॥

सवैया—कांपत गात न आवत बात समात न मोद हिये हरि हेरे ॥
आंखिनसों जल ढारत जात खसात विभूषण भूमि घनेरे ॥
बाहु पसारे कहैं रघुराज त्वरायुत धावत जातहैं नेरे ॥
औरनको गुहरावत आवहु आजु मिले मुहिं मीतजु मेरे ॥

घनाक्षरी—उर उर लाय नैन नैनसों मिलाई नैन नीरसों नहाइ भुज भुजिनि अरुझिगो ॥ जुवनते जूट जगतीसुरको जटाजूट बीझिगो किरीट जाको मोल नाहिं ऊझिगो ॥ चिरकुट चीरनमें लपटिगो पीत-पट मीतसों न प्यार दूजो नाथ अस बूझिगो ॥ चित्तकी कराही अनु-रागको अनल बारि प्रेमके सुपथमें शपथ देके सूझिगो ॥

दोहा—मिले सुदामै श्यामजू, छुटत छुटाये नाहिं ॥
भूलि गये तनुभानप्रभु, सो सुखतेन अघाहिं॥१२॥

कवित्त—भार बार वारिधार नैननि ढरत जात उठत न जात त्यों अनंद पुलकावली ॥ दोऊ उर लावैं नाहिं प्रीति सिंधु थाह पावैं जोश-रसों जूटिगे अमल अलकावली ॥ रह्यो ना सँभार तनु दोहनके ताही

बार टूटी तुलसीकि माल तैसे मुकुतावली ॥ रघुराज धन्य यदुराजसों न आजु कोई काकी अग्रगण्य है ब्रह्मण्य विरदावली ॥

दोहा-घरिक द्वैकमें छूटि प्रभु, गये चरण लपटाइ ॥
चकित बेवाई चरणरज, लीन्हो शीश चढाइ॥ १३॥

पुनि सँभारि बोले भरि आंसू ❀ आइ मीत मिलिगे अनयासू ॥
जान्यो भाग्य उदय अब मोरी ❀ मो घरमें आवन भै तोरी ॥
अस कहि यक कर गह यदुनाथा ❀ गह्यो येक रुक्मिणिद्विज हाथा ॥
लै गवने दंपति द्विजकाहीं ❀ निरखत सखा सकल मुसकाहीं ॥
मणिन जटित पर्यंक सुहावन ❀ गोरस फेन सेज सुखछावन ॥
द्विजहि दियो तापर बैठाई ❀ कनकथार रुक्मिणि जल ल्याई॥
द्विज दोउ पदधोवन चह प्यारी ❀ लीन्हो छीनि नाथ जलथारी ॥
धोवन लगे चरण यदुराई ❀ लीन्हो पद जल शीश चढाई ॥
लीन्हो छीनि थार हरि प्यारी ❀ बार बार द्विज चरण पखारी ॥
सो जल सींचि शीश गृह सींच्यो ❀ मनहु प्रेम रस सिंधु उलीच्यो ॥
पुनि रुक्मिणिअतिशयअनुरागी ❀ द्विज शिर चमर चलावन लागी ॥
तहँ सत्यभामा विप्र सुदामे ❀ लगी मंजु कर विजन चलामे ॥

दोहा-हरि द्विजके पद धोयकै, पोंछि पीतपट माहिं ॥
लियो धारि निज अंकमें, वदनविलोकत जाहिं १४

परम रूख तिमि समल शरीरा ❀ लेप्यो निजकर मलय उसीरा ॥
वसन बहोरि अमल निज हाथा ❀ पहिरायो विप्रहि यदुनाथा ॥
निजकर पंकज अतर लगायो ❀ सुमन सुगंध माल पहिरायो ॥
पुनि रुक्मिणी और सतिभामा ❀ विविध भांति रचि पाकललामा॥
ल्याईं धरि भरि कंचन भाजन ❀ लै लै नाम जेवायो साजन ॥
बहुरि सुरभिजल पान करायो ❀ निज हाथन कर चरण धुवायो ॥
दियो उकिसि बीरा यदुबीरा ❀ पथ श्रम हरि सींचो शुभनीरा ॥
धूप दीप पुनि सविधि देखायो ❀ प्रेमविवश विधि विभ्रम आयो ॥
पुनि आरती साजि यदुराई ❀ लगे उतारन आनँद छाई ॥

बहुरि चारि परिदक्षिण दीन्हीं ❀ शिर धरि भूमि दंडवत कीन्हीं ॥
रुक्मिणि विजन चलावन लागी ❀ चमर सत्यभामा सुखपागी ॥
यक पर्यंकहिं पुनि सुखधामा ❀ बैठिगये घनश्याम सुदामा ॥
दोहा—लसत परस्पर वदन दोउ, विहँसत बारहिं बार ॥
मूर्तिमान मानहुँ लसत, शांति और शृंगार ॥ १५ ॥
कवित्त—येक वोर जीगर जुबानि कोंहे जटाजूट येक वोर शोभा है मणिन मौलि माधकी ॥ चिरकुट पट पीत पट समताई जैसी कालित वेवाई कर तैसे कंजहाथकी ॥ बोलनि हँसनि तसे मिलन बरोबरकी बैठन दुहुँन पर्यंक येक साथकी ॥ धन्य प्रभुताई रघुराज यदुराजजूकी देखिये मिताई ऐसी दीन दीनानाथकी ॥
दोहा—अंतःपुरमें तुरतही, भयो शोर चहुँ ओर ॥
बैठायो पर्यंकमें, रंकहि सौरि किशोर ॥ १६ ॥
षोडश सहस कृष्णकी रानी ❀ देखन आई अचरज मानी ॥
देखि सुदामै औ घनश्यामै ❀ कहैं धन्य यह द्विज वसुधामै ॥
त्रिभुवनपति कर कंज लगाई ❀ चरण पखारयो कालित वेवाई ॥
कढे अस्थि अति मलिन शरीरा ❀ तिहि भरि भुजन मिलयो यदुवीरा ॥
चिरकुट पहिरे अतिशय रंका ❀ बैठायो समान पर्यंका ॥
हँसहि बरोबर बोलहि बाता ❀ मीत मीत कहि सुख न समाता ॥
दीनानाथ सत्य हरि अहहीं ❀ जे द्विजरंक मीत निज कहहीं ॥
कहँ त्रिभुवनपति श्रीयदुराई ❀ कहां रंक तिहि कियो मिताई ॥
असकहि चहुँकित देखहिं ठाढी ❀ माधो मीत मोद मन बाढी ॥
हरि कर पकरि सुदामा केरे ❀ भाष्यो वचन मीत सुनु मेरे ॥
बहुत दिननमें तुमहिं निहारे ❀ नैन सफल अब भये हमारे ॥
आवत रही सुरति नित तोरी ❀ होइ भेट कब मीतकि मोरी ॥
दोहा—मीत तुमहिं बिन जे बिते, निवसत गृह दिन याम ॥
ते मेरे अबलौं नाहिं, आये कौनहु काम ॥ १७ ॥
रहे करत कहुँ सुरति हमारी ❀ मीत सुरति धौं मोर बिसारी ॥

पढत रहे हम तुम गुरुपाहीं ❁ तबकी सुरति अहै की नाहीं ॥
हौं तो पढि मथुरा कहँ आये ❁ कहो कहां तुम फेरि सिधाये ॥
कहहु भयो की नाहिं विवाहू ❁ भई सुताको सुवन उछाहू ॥
देहु बताइ लुकावहु नाहीं ❁ नहिं अंतर हम तुम मनमाहीं ॥
मीत छुट्यो जबते सँग तेरे ❁ भोगत विपति गये दिन मेरे ॥
देखि नाथको शील सुभाऊ ❁ मनमें चकित भयो द्विजराऊ ॥
प्रेमविवश नहिं आवत टेरी ❁ देखत प्रीति रीति हरि केरी ॥
बहुरि कह्यो हरि सुनहु पियारे ❁ पढे शास्त्र सब संग तिहारे ॥
तासु रीति करियत दिन राती ❁ जगत विरक्त मीत सब भांती ॥
येक समै हम तुम गुरुगेहू ❁ पढत रहे जब सहित सनेहू ॥
लागि गयो जब सावन मासा ❁ बरख्यो घेरि मेह चहुँ आसा ॥

दोहा-गुरुगृहमें ईंधन चुक्यो, तब सब शिष्यन टेरि ॥
कह्यो गुरू अति प्रीतिसों, ल्यावहु ईंधन ढेरि १८॥

तब हम शिष्य सकल वनमाहीं ❁ ईंधन लेन गये चहुँपाहीं ॥
हम तुम रहे मीत यक ठोरा ❁ बरसन लगे तहां घनघोरा ॥
भई निशा अतिशय अँधियारा ❁ सूझि परै नहिं हाथ पसारा ॥
अति भयावनी भई यामिनी ❁ दमकिरही चहुँ दिशनि दामिनी ॥
हम तुम सकल शिष्य वनमाहीं ❁ भूलि पंथ यक तरुकी छांहीं ॥
बीती निशा भयो भिनसारा ❁ तब शिर धरि ईंधनकर भारा ॥
हम तुम गये सकल गुरुगेहू ❁ आय मिले गुरु सहित सनेहू ॥
सादर भीतर भवन हँकारी ❁ गुरू लग्यो पछितान दुखारी ॥
मेरे हित बरसत वन माहीं ❁ परचो कलेश शिष्य सब काहीं ॥
सबको आशिष अहै हमारी ❁ बिसरी विद्या नाहिं तिहारी ॥
हम सब शिष्य परे गुरुचरणा ❁ सो सुख मीत जाय नहिं वरणा ॥
यह सुधि अहे मीत धौं भूली ❁ मीत मीत सुख कहु नहिं तूली ॥

दोहा-तुम सम प्रिय मोहिं कोउ नहिं, मोहिं सम प्रिय तोहिं नाहिं
प्रीति परस्पर निरवधिक, यह जानहु मनमाहिं १९

हरिके वचन सुनत सुख पावत * कछु न सुदामहिं उत्तर आवत ॥
प्रेम विवश ढारत दृग आंसू * मानत मिल्यो विकुंठ निवासू ॥
ब्रह्मानंद परचो मैं आई * यहिते कौन भाग्य अधिकाई ॥
बहुरि कह्यो हरि सुनहु सुदामा * कहा बसत प्यारी तुम वामा ॥
जानिपरो नाहिं तासु सनेही * नाहिं धन चह्यो यथा सब देही ॥
मीत सुमतिको आशु समाना * इंद्रियजितयुग विरति विज्ञाना ॥
कराहिं गृहस्थधर्म गृह माहीं * कबहुँ अशक्त होत ते नाहीं ॥
विरत निरत त्यागत संसारा * कराहिं जगत कर कर्म अपारा ॥
गनाहिं न मनहिं लाभ अरु हानी * दैवाधीन सकल जग जानी ॥
हमको अरु तुमको सब काला * भूले नाहिं गुरुज्ञान विशाला ॥
जो गुरुसेवन करि जगमाहीं * भवनिधि उतरि सहज जनजाहीं ॥
मीत प्रथम गुरु पिता विचारो * गायत्री गुरुद्वितीय उचारो ॥

दोहा-उपदेशक जो ज्ञानको, सो तीजो गुरु होइ ॥
सो तो महीं प्रत्यक्ष हौं, यह जानै सब कोइ ॥ २० ॥

गुरुवपु मोर पाय उपदेशा * तरहि जे सहजहि भवसरितेशा ॥
तेई कवि कोविद जगमाहीं * चारि वरणमहँ श्रेष्ठ सदाहीं ॥
अपने ते साधन जे करहीं * भाग्यविवश भवसिंधु उतरहीं ॥
ते न समस्त प्रशस्त विज्ञानी * तीनकी बहुरनकी गति जानी ॥
तप जप याग नियम यम ज्ञाना * तिरथ धर्म योग विज्ञाना ॥
वन थिति ब्रह्मचर्य संन्यासू * औरहु साधन अमित प्रयासू ॥
अरु गृहस्थके धर्म अपारा * औरहु सकल धर्म संसारा ॥
ये सब मोहित सुखकर नाहीं * जस प्रसन्न गुरुसेवन माहीं ॥
यहिविधि भनहिं अनेकनिवानी * मीत मीत कहि सारँगपानी ॥
कछु नहिं वचन भरत महिदेवा * आनँद मगन लखत यदुदेवा ॥
एकउ सुरति द्विजवर विसराई * ब्रह्मानंद परचो जनु आई ॥
चितवत चकित चहूंकित शोभा * यदुपति सुछवि विप्र मनलोभा ॥

दोहा-पुनि तनु सुरति सँभारिकै, रोकि प्रेमकी धार ॥
मंद मंद बोल्यो वचन, यदुनंदनको यार ॥ २१ ॥

सुनहु मीत प्रभु प्राणपियारे ❀ कहो सकल सो सुरति हमारे ॥
बाकी कछु न सुकृत अब मोरे ❀ गुरुगृह भयो वास सँग तोरे ॥
त्रिभुवनपति सँग मोरि मिताई ❀ मो समान किहि भाग्य गणाई ॥
पै अचरज लागत मनमाहीं ❀ समाधान ताकर कछु नाहीं ॥
मूरति जासु वेद है चारी ❀ जगपालक सिरजक संहारी ॥
सो प्रभु लहन हेत कल्याना ❀ गुरुगृह निवसत पठन बहाना ॥
यह करुणानिधिकी करुणाई ❀ करत दीन सँग दौरि मिताई ॥
मील रही तुम्हरे नाहिं दारा ❀ अब दिखाहिं षोडशाहि हजारा ॥
कहहु मीत कुलकी कुशलाई ❀ सुता सुवन कांति मे सुखदाई ॥
हरि हँसि कह्यो मीत तुव दाया ❀ सकल कुशल सब विधि सुखपाया
जाके तुम सम मीत सुदामा ❀ सोई सब विधि पूरणकामा ॥
अस कहि मीत मीत सुखमाहीं ❀ बैठेहिं करि लीनो गलबाहीं ॥
दोहा—बहुरि कह्यो हरिमीतजू, यह अचरज मनमाहिं ॥
भौजाई हमरे लिये, कछू पठायो नाहिं ॥ २२ ॥
पै मम छोहवती भौजाई ❀ कछु भेज्यौ है है सुखदाई ॥
जो हमको भेज्यौ भौजाई ❀ सो नाहिं राखहु मीत लुकाई ॥
असकहि हरिकर कंजनचायन ❀ चिरकुट हेरन लगे सुभायन ॥
जस जस हरि पट हेरत जाहीं ❀ तस तस द्विज सकुचत मन माहीं ॥
चिरकुट चाउर बांधि जो नारी ❀ दियो मीतकहँ दियो उचारी ॥
सो गोवत द्विज कांख दबाई ❀ मनहिं विचारत अतिहिं लजाई ॥
मैं जगपति कहँ चाउर चारी ❀ देहुँ कौन विधि दियो जो नारी ॥
मीत कहत मोहिं त्रिभुवन नायक ❀ यह चाउर नाहिं दीवे लायक ॥
अतुलित विभव मीत गिरिधारी ❀ तिनहिं भेट का चाउर चारी ॥
अस विचारि द्विज कांख लुकावत ❀ चितै मीत मुख नाहिं बतावत ॥
हरि हेरत लखि कांख छिपानी ❀ पुटकी देखि परम सुखमानी ॥
कहन लगे यह काह लुकाये ❀ अबलौं मीत न हमहिं बताये ॥
दोहा—अस कहि बरबश हाथ निज, पुटकी लई छुडाइ ॥
यही भेट भौजी दई, यह भाष्यो यदुराइ ॥ २३ ॥

खोलन लगे पुलकि सुखछाये * खोलत खोलत तंदुल पाये ॥
तंदुल देखि वचन अस गाये * कहाँ मीत कस रहे लुकाये ॥
यह तंदुलसम कछु प्रिय नाहीं * भौजी भेजो है मोहिं काहीं ॥
मीत सुनहु चाउर इतनोई * सकल विश्वकर तोषक होई ॥
भूरि भाग्य भे भवन भलाई * भली भेट भेजी भौजाई ॥
अस कहि इक मूठी यदुराई * लियो तुरत अपने मुख नाई ॥
चाभत चाउर अतिहिं सराहत * प्रेम नीर निज नैन प्रवाहत ॥
दूसर मूठी लिये मुरारी * तब रुक्मिणि अस मनहिं विचारी
यक मूठी चाउर प्रभु लीन्हो * त्रिभुवन विभव विप्रकहँ दीन्हो ॥
अब तौ हमहिं गई रहि बाकी * देन चहत पिय तंदुल फाकी ॥
अस विचारि पियको गहि हाथा * रुक्मिणि कह्यो सुनहु यदुनाथा ॥
भेज्यो भेट जो मोरि जिठानी * हमहिं न देहु काह प्रिय जानी ॥

दोहा—का हम पावन योग नहिं, लीजै नीति विचारि ॥
भोगत बुध प्रिय वस्तुको, करि विभाग सुत नारि ॥२४॥
ऐसे पुनि प्यारीवचन, यदुनंदन मुसकाइ ॥
मंद मंद बोले वचन, आनँद उर न समाइ ॥ २५ ॥

कवित्त—व्रजमें यशोदा मैया मंदिरमें माखन औ मिश्री मही मोहन त्यों मोदक मलाई है ॥ खायो मैं अनेकवार तैसे मथुरामें आइ व्यंजन अनेक मोहिं जननी जिंवाई है ॥ तैसे द्वारिकामें यदुवंशिनके गेह गेह सहित सनेह पायो भोजनमें लाई है ॥ रघुराज आजलों त्रिलोकहूंमें मीत ऐसी राउरके चाउरते पाई ना मिठाई है ॥ १ ॥

सवैया—खायो अनेकन यागन भागन मेवा रमा करबागन दीठे ॥
देवसमाजके साधु समाजके लेत निवेदन नाहिं उबीठे ॥
मीतजु सांची कहों रघुराज इतेक सबै भये स्वादते सीठे ॥
पायो नहीं कतहूं अस मैं जस राउर लागत मीठे ॥ २ ॥

कवित्त—शंक्यो शंभु शैलजा समेत देत मेरो शैल शक्रपद हेत-हीं सशंक्यो सुरपाल है ॥ डगमग्यो ब्रह्म ब्रह्मसदन लहैगो किधौं

सगवशे लोकपाल पेखि यह हाल है ॥ पांचौ मुक्ति हाजिर हजूर हाथ जोरे खड़ी चाहती सुदामा करे कौनको निहाल है ॥ रघुराज परिगे त्यों गदरि गोलोकहूंलो विप्रचारि चाउर चवात नंदलाल है ॥ ३ ॥ आठौं सिद्धि निधि नव कोटिन ऋतुनफल भुवन विभूति भूरि भवन भरा-इगे ॥ विधि करतूति विश्वकरमा अकूति सबै औरहू विचित्रता विकुं-ठकी सुहाइगे ॥ इंद्र यम वरुण कुबेरकी विभूति कहा कामधेनु देवतरु बुद्धिहू सिहाइगे ॥ रघुराज चाउर चवात यदुराजजूके विप्र घर चंच-लाकी चञ्चला हेराइगे ॥ ४ ॥

दोहा-जिहि विधि माधवमीतसों, मिले मोद उरमानि ॥
सो विधि यक मुख कविनसों, केहि विधि जाय बखानि ॥ २६

कह्यो विप्र हरिसों मुसकाई * तुम सम तुमहिं अहौ यदुराई ॥
शासन देहु तो सदन सिधाऊं * अचल बैठि तिहरो गुण गाऊं ॥
तब हरि कह्यो प्रीति उरछाई * कैसे मीत मीत बिलगाई ॥
मीत मीतकर मीत वियोगू * याते और कौन दुखभोगू ॥
कैसे कहूं जान तुम काहीं * होत दुसह दुख मो मनमाहीं ॥
अस सुनि बोल्यो वचन सुदामा * नाहिं वियोग तुम्हरो घनश्यामा ॥
तुम तो मम हिय पंकज वासी * मम मति तुव पद पंकज दासी ॥
यह मूरति मम नयनानि माहीं * गई समाइ कढी अब नाहीं ॥
नेह रज्जु मम मन खग बांधी * राखहु पद पिंजर महँ धांधी ॥
अस कहि उठ्यो विप्र तजि सेजू * हरि कहँ लियो लगाइ करेजू ॥
मीत मीत मिलि मिलि मुदभीने * बार बार बहु रोदन कीने ॥
चले नाथ मीतहिं पहुँचावन * द्विज आनिवो भुवन दरशावन ॥

दोहा-द्वारे लौं पहुँचाइकै, मिलि मिलि बारहिं बार ॥
नाइ शीश कर जोरिकै, कह वसुदेवकुमार ॥ २७ ॥

कवित्त-जाइ निज धाम देखि प्यारी निज वाम ताहि मोरि यों प्रणाम है सुदामा तुम भाषियो ॥ सेवन करत अपचार है गयो जो होइ ताको माफ कीजियो न मीत मनमाषियो ॥ दार घर बार परि-

वार जे हमार तिन्है करिकै विचार है हमार अस आशियो ॥ रघुराज द्वारिका वसत यदुवंशी येक कृष्ण मेरो मीत ऐसी सुरतिको राखियो ॥ ६ ॥

दोहा-नाथ वचन सुनि विप्रजू, मोद मगन मनमाहिं ॥
बार बार प्रभु कहँ मिलत, वदत वचन कछु नाहिं ॥२८॥

जस तसकै तहँते महिदेवा ❀ चल्यो भवन सुमिरत यदुदेवा ॥
मनमहँ लाग्यो करन विचारा ❀ धन्य धन्य वसुदेवकुमारा ॥
महारंक मैं मलिन शरीरा ❀ तिहि निजभुवन मिल्यो यदुवीरा ॥
निज पर्यंक सुआसन दीन्हो ❀ इष्टदेव सम पूजन कीन्हो ॥
अवधि रहित किय अचल सनेहू ❀ को अस करी दीनपर नेहू ॥
प्यारी धनहित मोहिं पठायो ❀ सो यदुपतिसों कछु नहिं पायो ॥
मीत मोर हित मनहिं विचारी ❀ दीन्हो मोहिं न संपति भारी ॥
धनते होत अनर्थ अपारा ❀ कोह मोह मद अघ अविचारा ॥
संपति गर्व भरे मन माहीं ❀ पुनि सुमिरत कोउ हरिको नाहीं ॥
सदा सुशील होत धनहीना ❀ परमारथ महँ परम प्रवीना ॥
मोहिं लियो सब विधि हरिराखी ❀ होतेहुँ अंध विषयरस चाखी ॥
ऐसिहि मीत मीतकी रीती ❀ हरै हमेश शोक दुखभीती ॥

दोहा-रह्यो न बाकी मोहिं कछु, पावनको यहि काल ॥
जो इन नैननसों लिख्यो, सुन्दर देवकिलाल ॥२९॥

यहि विधि द्विजवर करत विचारा ❀ निकस्यो अन्तःपुरके द्वारा ॥
शोर भयो चहुँ ओर तहांही ❀ येई कृष्ण मीत कहवाहीं ॥
तहँ आगे चलिकै बलरामा ❀ करि प्रणाम पुनि मिले सुदामा ॥
मदन आदि पुनि कृष्णकुमारा ❀ कियो प्रणाम सनाम उचारा ॥
पुनि सात्यकि उद्धव यदुवंशी ❀ अरु अक्रूर आदिक मधुवंशी ॥
लैलै नामहिं कियो प्रणामा ❀ कृष्णमीत मानत मतिधामा ॥
जहँ जहँ राजमार्ग महँ आयो ❀ तहँ तहँ पुरजन सब शिरनायो ॥
निकस दुर्गते सागरतीरा ❀ आयो जबहिं विप्र मतिधीरा ॥

तब नाविक नावन ले धायो * द्रुतहि उतारि चरण शिर नायो ॥
चल्यो भवन गहि पंथ सुदामा * करत विचार मनहिं मतिधामा ॥
देहौं कहा नारि कहँ जाई * पै यह सुख नाहिं कहे बुझाई ॥
पूछिहै जबै ग्रामके वासी * दीन्हो काह मीत सुखरासी ॥

दोहा-तब मैं अनुपम हर्ष यह, कहिहौं सबसों जाय ॥
लाभ कौन यहिते अधिक, जेहैं सुनत अघाय ३०
यहिविधि द्विजवर मन गुणत, हर्षत लटपट पाय
चलत २ झटपट निपट, गयो ग्राम नजिकाय॥३१॥

कवित्त-नयननि उठाय देख्यो पूरब दिशाकी ओर देखि परचो कोटि मार्तंडको प्रकाश है ॥ तैसही हजारन निशाकर उदित मानो हिमिके हजारन पहारन विलास है ॥ शारदकी पारदकी शारद सुवारिदकी दीह द्युति गारद करत जाको भास है ॥ रघुराज भूते भानु मंडललों भासवान जागि रह्यो जगमें सुदामाको निवास है ॥ १ ॥ दूरिहीते देखि मन करन विचार लाग्यो दूसरो दिवाकर उदित उदयाचलै ॥ निशा तो है नाहिं पै निशाकर उदित कैसे धनददिशाते किधौं आयो कनकाचलै ॥ मोहींको किधौं है भ्रम कैधौं यह सत्य सब कौन उतपात यह मतिगति ना चलै॥ प्रलय करनकाज कैधौं रघुराज आज प्रगटी है पावक समाज सर्व आंच लै ॥ २ ॥

दोहा-कछुक दूरि आगे गयो, निरख्यो भवन विधान ॥
विप्रसुदामा मनहिं मन, करन लग्यो अनुमान ॥३२॥

कवित्त-कौनके हैं मंदिर मनोहर विराजमान कैधौं मघवान ल्यायो औनि अमरावती ॥ कैधौं अवनीतलते अति अकुलाय भोगी लाये भोगवती अवनीपै छवि छावती ॥ मदनसदन कैधौं मायाको वदन कैधौं रघुराज कैधौं है धनेशअलकावती ॥ आनंदविवश भयो मोहि भ्रम मारगको किधौं आयो फेरि मैंही मुरारिकि द्वारावती ॥

दोहा-और कछू नजिकायके, अपनो ग्रामनिहारि ॥
तहां अनूपम धाम लखि, बोल्यो वचन विचारि॥३३॥

कवित्त-रह्यो याही ठाउँ मेरो गांउ नांउ मेरहीको दीन्हो को निकारि मेरे निकट बसैयाको ॥ हाइ कोइ आइ इतै पापी क्षितिराइ लूटि लीन्हो मेरो ग्राम लाय तापी है मडैयाको ॥ विरचि निकेत इतै साहिबी समेत बस्यो कहा गईहैहैं कैसे पाऊं मैं लोगैयाको ॥ कौन फिरियादि सुनै कौन मेरी यादि करै कैसे गोहराऊं दूर द्वारिका कन्हैयाको ॥

दोहा-शंकित पथमहँ पगधरत, चितवत चारिहु वोर ॥
जाइ सुदामा भवनढिग, ठाढ भयो ठगि ठोर ॥ ३४॥

कवित्त-खासे आमखासनमें आसन अनेक सोहैं चौकनमें चंद चांदिनीसी चांदिनी तनी ॥ चंद्रशाला केलिशाला पानशाला पाकशाला अश्वशाला गजशाला हेमकी जडीमनी ॥ फटिक फरशपर फावित फुहारे फूल फूली फली लतिका वितान मानही तनी ॥ तोसागर अन्नागार रतनअगार केते रघुराज जाको पार पावै ना फनी भनी ॥ वासव विभूति वसुपतिकी विभूति सब देवनविभूति येक येक थछ राजती ॥ विधि करतूति विश्वकर्मा विभूति मन माया करतूति ठोर ठोर छबि छाजती ॥ चिंतामणि चित्रसारी कामतरु फुलवारी कामधेनु दूध देनवारी भूरि भ्राजती ॥ रघुराज मानो प्रगटाय सर्वस्व निज अचल इतैही भई रमा अस गाजती ॥

दोहा-परिचर्या करती रहीं, सखीसहस्र सुभाय ॥
वाम सुदामाकी नजर, पर्यो सुदामा आय ॥ ३५ ॥

कवित्त-दूरिहीते चीन्हि कह्यो आयो पिय द्वारिकाते आजिके सुदामा वाम उठी अतुराइकै ॥ उर्वशी तिलोत्तमासी पूर्वचित्ति मेनकासी सेवकी हजारन चली हैं संग चाइकै ॥ पानदानवारी केती पीकदानवारी चौरवारी पंखावारी पटवारी चलीं धाइकै ॥ रतनालिकासी रुंधतीसी रोहिणीसी रुचि रतिसी रमासी लसी अंगनमें आइकै ॥

दोहा-भवनद्वारते निकासिकै, आईं तिय पिय पास ॥
फैलि रह्यो दशहू दिशन, कोटिनचंद्र प्रकाश ॥ ३६॥

भयो सुदामाको भ्रम भारी * यह माया सूरति मनहारी ॥
सिगरो भवन अहै यहि केरो * उतरि स्वर्गके तिय महि डेरो ॥
अस कहि लाग्यो करन विचारा * तब लगि आइ गई द्विजदारा ॥
पकरि पाणि बोली मुसकाई * धन्य धन्य तुव मीत मिताई ॥
ठगेसरिस कस बोलहु नाहीं * जनि संदेह करहु मनमाहीं ॥
यह संपति तुव मीत पठायो * विश्वकर्मा क्षणमाहिं बनायो ॥
दानिशिरोमणि यदुकुलनायक * मीत तुम्हार पीय सब लायक ॥
करत दीनसों अमित सनेहू * बरसत द्विजन यथा महि मेहू ॥
हूं तुव दार सखी सब दासी * यह मानहु पिय बात विलासी ॥
सुनि निज नारि वचन द्विजराई * मानी सकल मीत प्रभुताई ॥
जो सुख हरि दरशनते पायो * सो सुख भवन देखि नहिं आयो ॥
मंद मंद किय भवन प्रवेशा * कछु नहिं भयो हर्ष अंदेशा ॥

दोहा–सत सत कृतकी साहिबी, यदपि लह्यो द्विजराइ ॥
तदपि भयो नहिं विषयवश, नहिं भूल्यो यदुराइ ॥ ३७ ॥
भोग्यो भोग अनेक द्विज, जबलौं रह्यो शरीर ॥
पैन गयो अभिमान यह, मोर मीत यदुवीर ॥ ३८ ॥
भोगि भोग बहुकाललौं, नहिं अशक्त मनलाइ ॥
तनु परिहरि यदुपतिनगर, गयो निसान बजाइ ॥ ३९ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ मैत्रेयकी कथा।

दोहा–वर्णहुँ अब मैत्रेयकी, कथा सुनहु मनलाइ ॥
गुरुभ्राता श्रीव्यासको, ज्ञाता शास्त्र निकाइ ॥ १ ॥

एक समय सनकादि मुनीशा * सुमिरण करत कृष्ण जगदीशा ॥
सुरधुनि धारहिं धार नहाते * शेष निकट गवने सुख माते ॥
निरखि अहीश रूप छवि धामा * कीन्ही पुलकित दंड प्रणामा ॥
कियो विनय भागवत पढावहु * हम सबके मन मोद बढावहु ॥

शेष कृपा करि दियो पठाई ❀ सनकादिक गवने शिर नाई ॥
देखन परयौ कोउ अधिकारी ❀ जाहि भागवत देहि उचारी ॥
ताही समय पराशर नामा ❀ व्यास पिता आये मतिधामा ॥
त्यों सुरगण गुरु अति सुखमानी ❀ आये सनकादिक ढिग ज्ञानी ॥
सुरगुरुसों सनकादिक प्रेमी ❀ भन्यो भागवत करि दृढनेमी ॥
कह्यो बृहस्पतिसों मुनिराई ❀ अधिकारी गुणि दयो पठाई ॥
तब सुरगुरु जग ढूंढन लागे ❀ को भागवत पढै अनुरागे ॥
तबहिं पराशर निकट सिधारयो ❀ जीवतासु अधिकार विचारयो ॥

दोहा-दियो पढाय सुभागवत, सुमति पराशर काहिं ॥
काहि पढावै अस सोऊ, किय विचार मनमाहिं॥२॥

श्रीभागवत केर अधिकारी ❀ जगमें तेहि नहिं परयो निहारी ॥
खोजत खोजत धरणि मँझारी ❀ मित्रासुत कहँ लियो विचारी ॥
तासु परीक्षाहित मुनिराई ❀ लाग्यो करन विशेष उपाई ॥
कह्यो मोहि सुवर्ण तुम ल्यावो ❀ तब मेरे पुनि शिष्य कहावो ॥
मित्रासुत गुरुशासन मानी ❀ सुवरण लेन चल्यो मतिखानी ॥
गमनत सुपथ गुणत मतिधामा ❀ सुवरण अहै हेमकर नामा ॥
पै नहिं कांचनमें सति सोहै ❀ याते होत कोह अरु मोहै ॥
अस विचारि उत्तरदिशि जाई ❀ जहँ गण्डकी नदी छबिछाई ॥
तहँकी लै इक शिला सोहावन ❀ गवन्यो जहां पराशर पावन ॥
आयो गुरुसमीप महँ जबहीं ❀ सुवरण लायो गुरु कह तबहीं ॥
तब सोइ शिला धरयो गुरुआगे ❀ शिला देखि गुरु भाषन लागे ॥
शिला अहै सुवरण है नाहीं ❀ ठगत शिष्य तैं कस मोहिं काहीं ॥

दोहा-तब मैत्रेय कह्यो वचन, सुवरण है भगवान ॥
हरि स्वरूप यह सतशिला, भाषत वेद पुरान ॥ ३॥

अहै उपाधि अनेक हेममें ❀ सो नहिं सोहत विरति नेममें ॥
जो सति सुवरण होइ मुरारी ❀ तौ प्रगटै मूरति भुजचारी ॥
जब मित्रासुत अस मुख गायो ❀ शिला प्रगट हरिको वपु आयो ॥

तब मित्रासुत कहँ सुखछाई ❀ लियो पराशर हिये लगाई ॥
जानि रसिकताको अधिकारी ❀ दिय पढाय भागवत विचारी ॥
सोइ मित्रासुत परम विज्ञानी ❀ गवन जानि पुर सारँगपानी ॥
ताहि समय द्वारिका सिधारचो ❀ पीपरतरुतर हरिहिं निहारचो ॥
निरखि नाथ स्वागत अतिकीन्हो ❀ गूढवचन मुनिसों कहिदीन्हो ॥
ज्ञान विवेक विराग विचारा ❀ तप जप नियम विधान अपारा ॥
पै हरि विरह ताप मुनिताये ❀ सुन्यो न नेकु नाथ जे गाये ॥
बार बार हरि ताहि बुझावत ❀ विरह विवश कछु मनहि न आवत
धरि धीरज पुनि कह्यो मुनीशा ❀ सुनहु कृपालु विनय जगदीशा ॥

दोहा-साधन ज्ञान विज्ञानके, तुले नहीं अनुराग ॥
देहु नाथ अनुराग मोहि, ताते करि अनुराग ॥४॥

हरि कहँ तुमहिं होय अनुरागा ❀ कहेहु विदुरसों ज्ञान विरागा ॥
कीन्हो संसारिन उपकारा ❀ तुमहिं न कबहुं लगी संसारा ॥
तब मैत्रेय कह्यो कर जोरी ❀ हरहु विछोह भीति प्रभु मोरी ॥
हरिकह कबहुं न मोर बिछोहा ❀ तुमहिं लगी नाहिं माया मोहा ॥
सुनिके मित्रातनय सुखारी ❀ करि प्रणाम ढारत दृगवारी ॥
हरिद्वारमहँ कियो निवासा ❀ नित निरखत हिय रमानिवासा ॥
उद्धव प्रेषित विदुर तहांहीं ❀ आयो शीश धरचो पद मांहीं ॥
विनय कियो दीजे मोहिं ज्ञाना ❀ जो तुमसों यदुनाथ बखाना ॥
तब मैत्रेय जानि अधिकारी ❀ कृष्णकथित सब दियो उचारी ॥
सो सुनि विदुर महामतिधीरा ❀ बदरीवनमहँ तज्यो शरीरा ॥
गयो विकुंठ सवार विमाना ❀ भयो पारषद कृपानिधाना ॥
यमको अंश गयो यमलोकू ❀ मित्रासुतहु तहां विनशोकू ॥

दोहा-करत अनेकनि भावना, यदुपतिकी सब काल ॥
यहि तनुते हरिपुर गयो, त्यागि जगत जंजाल ॥५॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ शौनककी कथा ।

दोहा-अब शौनक गाथा कथौं, रचिकै सुभग कवित्त ॥
जाहि सुनत सब संतके, बढै नित्त सुखचित्त ॥ १ ॥

कवित्त-विप्रवंश जन्म पायो न्हान हेतु प्राग आयो सुनै कृष्णकथा रोज प्रेमको बढाइकै ॥ संतनसमाज सेइ साधुनको जूंठ जेइ भई मति विमल त्यों विषम विहाइकै ॥ जानि सबै मुनि ताहि श्रोता अग्रगण्य कीन्हों नैमिष आरण्य वस्यो साधुगण ल्याइकै ॥ केवल कथाको रस-पान करि धाम पायो नाहिं फेरि जन्म रघुराज पाइकै ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ सूतकी कथा ।

दोहा-अब वर्णौं मैं सूतकी, परमपूत यह गाथ ॥
जाहि सुनत हियमें करत, निज निवास यदुनाथ ॥ १ ॥

दासी सुवन सूत कोउ भयऊ ❀ बालहिंते चंचल चित ठयऊ ॥
फिरत रह्यो पुर करत टवाई ❀ मान्यो नाहिं जो जननि शिखाई ॥
तासु मातु अतिसुजन स्वभाऊ ❀ होतरह्यो लखि साधु उराऊ ॥
ताके सदन संत यक काला ❀ आवत भे सुमिरत नँदलाला ॥
सूतमातु अति आदर कीन्हों ❀ भोजन दै निवास घर दीन्हों ॥
चंचलता वश सूत सिधाई ❀ साधुनभोजन लियो छुडाई ॥
साधु उच्छिष्ट खान तहँ लाग्यो ❀ तिहि क्षण सुता दुरित सब भाग्यो
भई विमलमति हरिपदप्रीती ❀ तबते चलन लग्यो शुभरीती ॥
कछुक कालमें मरिगै माई ❀ नैमिष वस्यो सूत सुखछाई ॥
तहँ ऋषिमुनि सब सहस अठासी ❀ वास कियो हरिदरश हुलासी ॥
साधु समाज सूत नित जाई ❀ कथा सुनै अतिशय मनलाई ॥
एक समय चलि व्यास समीपा ❀ विनय कियो हे मुनि कुलदीपा ॥

दोहा-दयाधारि मनमाप्रभु, मोहिं कछु देहु पढाइ ॥
गान करहुँ मैं कृष्णयश, संसृतिशोक सिराइ ॥ २ ॥

व्यास सुमति बालक जिय जानी ❀ दियो पढाय दया उर आनी ॥
ऐसी कृपा करी मुनि व्यासू ❀ भयो पुराणशास्त्र अभ्यासू ॥
पै नहिं भयो नेकु अभिमाना ❀ तब प्रसन्न ह्वै मुनि परधाना ॥
कहत भये वर मांगहु सूता ❀ तुम्हरी माति हरिसेवन पूता ॥
कह्यो सूत प्रमुदित कर जोरी ❀ है अभिलाष नाथ अस मोरी ॥
हरिको सुयश निरंतर गाऊं ❀ नैमिष क्षेत्र छोडि नहिं जाऊं ॥
सुनिकै व्यास दियो वरदाना ❀ कथा कथन सामर्थ्य विधाना ॥
तबते सूत बैठ व्यासासन ❀ कथनलग्यो हरिकथा हुलासन ॥
तहँ ऋषि मुनि सब सहस अठासी ❀ आये नैमिषक्षेत्र निवासी ॥
विरचे यज्ञ सुनै हरिगाथा ❀ प्रेम मगन सुमरैं यदुनाथा ॥
यहि विधि बीति गयो बहुकाला ❀ वर्णत सूतहिं कथा रसाला ॥
हरि यश सूत कथित रसवर्षण ❀ भयो मुनीन रोमको हर्षण ॥

दोहा—ताते मुनिजन करि कृपा, सूत पुराणिक काहिं ॥
नाम रोमहर्षण दियो, करि संमत सबमाहिं ॥ ३ ॥

भयो जबै भारत संग्रामा ❀ तीरथ गवनहेतु बलरामा ॥
आये नैमिषक्षेत्र अहीशा ❀ जहां अठासी सहस मुनीशा ॥
रही होति हरिकथा सुहावनि ❀ बैठी मुनि अवली अतिपावनि ॥
उठी समाज रामकहँ देखी ❀ सूत मनहिं भो मोद विशेषी ॥
सूत मनहिं अस लग्यो विचारण ❀ एई पुहुमि पतितके तारण ॥
इनके करते मैं मृत पाऊं ❀ तो वैकुंठ जाय ठहराऊं ॥
जबलौं रहिहै प्राकृत देहा ❀ तबलों नहिं हरिपुर महँ गेहा ॥
अब जगमहँ रहिबो नहिं नीको ❀ कब मरिहैं लखिहैं सियपीको ॥
जेहि विधि हनै मोहिं बलराई ❀ अब अवश्य सो करहुँ उपाई ॥
सूत ठीक दीन्हों मनमाहीं ❀ कियो मनहिं मन विनय तहांहीं ॥
रामश्याम अग्रज करुणाकर ❀ तुम पूरक निज जन मनसाकर ॥
पंचरचित मम हरहु शरीरा ❀ सहि न जाति अब जगकी पीरा ॥

दोहा—रामसूत मनको सबै, लियो मनोरथ जानि ॥
पठयो सूतहिं हरिनगर, प्राकृत तनुको भानि ॥ ४ ॥

राम कह्यो लखि मुनिगण शोकी ❀ सूत उच्यो नाहिं मोहिं विलोकी ॥
ताते नाश लह्यो यहि काला ❀ अब मुनि कोउ नाहिं होहु विहाला॥
याको पुत्र यही सम होई ❀ बहुते अधिक कही सब कोई ॥
कथा श्रवण होई नहिं भंगा ❀ दूनो बढी भक्ति रसरंगा ॥
अस कहि सूत सुवन कहँ आनी ❀ दे वरदान कियो बडज्ञानी ॥
बांचनशक्ति पुराणन केरी ❀ सूतहुते है गई बडेरी ॥
पुनि मुनिजनन बोलि तिहि देशा ❀ कीन्हो विविध ज्ञान उपदेशा ॥
मुनिजन कह्यो सुनहु बलरामा ❀ प्रायश्चित्त करहु यहि ठामा ॥
यदपि न लग्यो पाप तुम काहीं ❀ प्रायश्चित्त जो करिहौ नाहीं ॥
तो ऐसेहि करिहै संसारा ❀ कैसे चलिहै धर्म अपारा ॥
राम कह्यो जो देहु बताई ❀ प्रायश्चित्त करों यहि ठाई ॥
मुनिकह हे रोहिणीकिशोरा ❀ बल्वलदैत्य महा बरजोरा ॥

दोहा-पर्व पर्व महँ आइकै, करत उपद्रव दुष्ट ॥
ताहु नाश कीजे अवशि, वह दानव बलपुष्ट ॥ ५ ॥
राम तुरत लै हल मुशल, रणमहँ ताहि हँकारि ॥
बल्वलको संहारिकै, दियो मुनिन भय टारि॥ ६ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ मुचुकुंदकी कथा।

दोहा-अब मांधाता नृपतिको, सुवन भूप मुचुकुंद ॥
ताहु कथावर्णन करों, जेहि चलि मिले मुकुंद ॥ १ ॥

भो मुचुकुंद महामहिपाला ❀ ओज तेज बल बुद्धि विशाला ॥
विक्रमतासु निरखि असुरारी ❀ निज सहाइ हित लियो हँकारी ॥
दानवदैत्य कटक अतिभारी ❀ नृप मुचुकुंद कियो रण रारी ॥
इकरथ लियो सबनकहँ जीती ❀ मेटि दियो देवनकी भीती ॥
ह्वै प्रसन्न देवन कह वानी ❀ मांगहु वर भूपति बलखानी ॥
भूप नींद बिन वर्ष बितायो ❀ युद्ध करत अवकाश न पायो ॥

तातें अति उनींद अरिघाती ❀ मांग्यो देवनसो यहि भांती ॥
जो कोउ सोवत मोहिं जगावै ❀ तो मम दीठ परत जरि जावै ॥
एवमस्तु देवन कहि दीन्हे ❀ इक गिरि गुहाशरण नृप कीन्हे ॥
सतयुग त्रेता द्वापर अंता ❀ जब अवतार लीन भगवंता ॥
जरासंध मथुरै चढि आयो ❀ बार सप्तदश कृष्ण हरायो ॥
पुनि नृप अष्टादशईं बारा ❀ कालयवन रण हेत हँकारा ॥

दोहा—तीनि कोटि लै यवन दल, कालयवन रणधीर ॥
मथुराको कीन्हो गवन, शमन हेतु नृपधीर ॥२॥

इत मागध लै कटक अपारा ❀ मथुराको गवन्यो बलवारा ॥
उभय ओर दल आवत देखी ❀ राम श्याम मतिवान विशेषी ॥
कर विचार रामहि पुर राखी ❀ कढे निरायुध हरि मनमाषी ॥
कालयवन लखि हरिकहँ धायो ❀ आयो बहुत दूरि पाछि आयो ॥
सोवत रह्यो जहां मुचुकुंदा ❀ तौन दरीमहँ गयो मुकुंदा ॥
पीतांबर नृप काहिं वोढाई ❀ रह्यो ताहि द्रुत दरी दुराई ॥
कोपित कालयवन तहँ गयऊ ❀ कृष्णहि परो जानि अस लयऊ ॥
इतने दूर मोहिं दौराई ❀ तैं सोवत इत पद पसराई ॥
अस कहि कीन्होसि चरण प्रहारा ❀ उठ्यो भूप चहुँ ओर निहारा ॥
परतै दीठि यवन जरि गयऊ ❀ राजाके मन विस्मय भयऊ ॥
कढि आये तब तुरत मुरारी ❀ भूपति सुछबि अनूप निहारी ॥
जोरि पाणि बोल्यो अस बैना ❀ अहौ कौन तुम राजिवनैना ॥

दोहा—को जरिछार भयो इतै, करि मोहिं चरन प्रहार ॥
होइ विदित जो तुमहिं कह, तुमहीं करो उचार ॥३॥

जो पूछ्यो हमको छविवारे ❀ मांधाता पितु अहैं हमारे ॥
सूर्यवंशको अहौं भुवारा ❀ अहै नाम मुचुकुंद हमारा ॥
कौनेहु कारण वश इत आये ❀ शयन करत बहुकाल बिताये ॥
तीनि देवमें हो तुम कोई ❀ लोकपाल धौं तेज बडोई ॥
सुनि मुचुकुंद वचन यदुराई ❀ मंद मंद बोले मुसकाई ॥

जन्म कर्म मम अहै अपारा * कहि न सकत सब वदन हजारा ॥
यदुकुलमें प्रगट्यो यहि बारा * वासुदेव अस नाम हमारा ॥
यहि यवनेशहिं मैं इत लायो * आप दीठिते दहन करायो ॥
तुव चरित्र सिगरो मम जाना * भयो जौन विधि शयन विधाना ॥
तब मुचुकुंद मुकुंदहि जानी * कियो प्रणाम भाग्य बडमानी ॥
सुस्तुति कीन्हो दोउ कर जोरी * धन्यभाग्य मैं अब प्रभु मोरी ॥
देहु नाथ पदपंकज प्रेमा * अब नाहिं चहौं और कछु नेमा ॥

दोहा–तब हँसि हरि बोले वचन, लहिहौ प्रेम हमार ॥
पै मम शासन शीश धारि, कीजै यह उपचार ॥ ४ ॥

क्षत्रीधर्म विचारि भुवारा * जीवन मारे खेल शिकारा ॥
सो तपकरि मेटहु यह पापा * तब जैहौ मम पुर विनतापा ॥
सुनि हरिवचन भूप मतिधामा * प्रभुकहँ कीन्हो दंड प्रणामा ॥
गुहा निकसि देख्यौ संसारा * लघु भूरुह लघु मनुज अपारा ॥
गयो उत्तराखण्ड नरेशा * कछुक काल तप करि तेहिदेशा ॥
लह्यो ब्रह्मसुख पद निर्वाना * हरि पुनि मथुरा कियो पयाना ॥
यह शंका उपजै जनि भाई * हरिहि दरशि नृप मुक्ति न पाई ॥
अस्तुति करत महिं अस गायो * मैं तो परब्रह्म वपु ध्यायो ॥
सन्मुख खडे प्रत्यक्ष मुरारी * रूपमाधुरी दियो विसारी ॥
चारि बाहु सुंदर घनश्यामा * सो तजि भज्यो ब्रह्मसुख धामा ॥
सोइ अपराध कियो तप जाई * कछुक कालमहँ परगतिपाई ॥
हरि दर्शनको प्रगट प्रभाऊ * नरकहि नाहिं गयो नृपराऊ ॥

दोहा–रूपमाधुरी छोडिके, भजहिं ब्रह्मको रूप ॥
ते नर सुख पावत नहीं, परत ब्रह्मसुख कूप ॥ ५ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथ कृपाचार्यकी कथा।

दोहा–कुरुकुलको आचार्य इक, कृपाचार्य अस नाम ॥
महावीर रणधीर अति, कृष्णभक्त मतिधाम ॥ १ ॥

एक समय गौतमऋषिराई * कियो कठिन तप कानन जाई ॥
वासव देखि महाभय मानी * पठई रंभाको छल ठानी ॥
रंभहि निरखि ध्यान खुलि गयऊ * रेतपात तब मुनिको भयऊ ॥
मुंजाटवी गिरयो सो रेतू * कन्या पुत्र भये छविकेतू ॥
शंतनु भूप शिकार सिधारे * सुता और सुत तहां निहारे ॥
दयालागि ल्याये पुर माहीं * पालि समर्थ कियो दोउ काहीं ॥
कृपा आनि उरमें पुर लाये * नाम कृपी कृप तासु धराये ॥
युवा भयो तब कृप द्विजराई * धनुर्वेद पढिबो मतिलाई ॥
परशुरामढिग कियो पयाना * शस्त्र शास्त्रके पढ्यो विधाना ॥
शस्त्र शास्त्र पढिकै गृह आयो * तब अचार्य पदवी कहँ पायो ॥
हस्तिननगर बस्यो कछु काला * करन चह्यो तप बुद्धिविशाला ॥
बदरीवनकहँ गयो तुरंता * करन लग्यो तप सुमिरि अनंता ॥

दोहा–तासु परिश्रम निरखिकै, गौतम ऋषि तहँ आइ ॥
कह्यो मांगु वरदान सुत, जैसो जिय हुलसाइ ॥ २ ॥

करि दंडवत जोरि युगपानी * कृपाचार्य बोल्यो अस बानी ॥
वर मांगनकी मति नहिं मोरी * देउ सोइ जो पितु मति तोरी ॥
है प्रसन्न बोले मुनिराया * अजर अमर होई तुव काया ॥
बोल्यो कृप औरहु प्रभु देहू * कृष्णचंद्र पद अचल सनेहू ॥
जबलगि रहै शरीर हमारा * तबलगि निरखौ नंदकुमारा ॥
एवमस्तु गौतम कहि दीन्हो * सुनि कृप मुदित गवन गृह कीन्हो ॥
पुनि जब भारत संगर भयऊ * तब जहँ जहँ पारथ रथ गयऊ ॥
तहँ तहँ तासु सारथी देखी * वाग्यो कृप छवि छकत अलेखी ॥
करै युद्ध सब वीरन पाहीं * अनमिष लखत मुकुंदहि काहीं ॥
पुनि जब राज युधिष्ठिर कीन्हो * जन्म परीक्षितको हरि दीन्हो ॥
तब तेहि जाति कर्म करवाई * बस्यो एकांत विपिनमहँ जाई ॥
खान पान सेनहु तजि दीन्हो * कृष्ण आय निज कर शिर कीन्हो ॥

दोहा-यथा बिभोषण पवनसुत, बलि मुनि मार्कंडेय ॥
परशुराम अरु व्यास जे, तस तुव होहु अजेय ॥ ३ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वारखंडे एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अथ द्रोणाचार्यकी कथा।

दोहा-अब वर्णौं कुरुकुल गुरु, द्रोणाचारज गाथ ॥
जाहि तजत तनु सन्मुखै, खरे भये यदुनाथ ॥ १ ॥

एक समय मुनि भारद्वाजू * महाविपिन गवने तप काजू ॥
करत सुतप बीते बहुकाला * पुत्र होन हित कियो कसाला ॥
एक समय ताहीं पथ ह्वैकै * रंभा निकसि गई मुनि ज्वैकै ॥
रंभे लखत छूटिगो ध्याना * मुनि हिय मदन प्रभाव समाना ॥
रेत रुक्यो नाहिं तब मुनिराई * दियो द्रोणमहँ ताहि धराई ॥
सोइ सुत द्रोणाचारज भयऊ * लोक वेद महँ अनुपम ठयऊ ॥
कृपकी भगिनि कृपी मनभाई * तासु बिवाह कियो सुखछाई ॥
द्रोण पढन गुरु मनहिं विचारे * परशुरामके निकट सिधारे ॥
सकल शास्त्र कीन्हो अभ्यासा * फेरि गयो सुरगुरुके पासा ॥
वेद वेदांग तहां पढि लीन्हो * औरहु शास्त्र कंठगत कीन्हो ॥
बहुत दिनन महँ निज घर आयो * अश्वत्थामा सुत गृह जायो ॥
कृपी पयोधर नाहिं पय भयऊ * मांगन धेनु द्रुपदपहँ गयऊ ॥

दोहा-कह्यो द्रुपदनृपसों वचन, हम तुम यक गुरुगेह ॥
पढ्यो शास्त्र विद्या सकल, ताते बढ्यो सनेह ॥ २ ॥

हम तुम मित्र मित्र दोउ अहहीं * ताते एक धेनु हम चहहीं ॥
देहु दयाकरि भूप मँगाई * तब जानें हम सत्य मिताई ॥
द्रुपद कह्यो तब वचन रिसाई * कैसे भिक्षुक भूप मिताई ॥
द्वार द्वार तैं मांगनहारो * मैं नरेश जग यश उजियारो ॥
द्रोण कह्यो कूट नहिं आखी * सूधे भनहु भूप नहिं भाखी ॥
द्रुपदभूप तब कोपित वेशा * दियो द्वारपन तुरत निदेशा ॥

देहु निकारि पकरि भिखियारी ❋ जोरत निज मित्रता हमारी ॥
परिचारक गहि द्रोण निकारे ❋ चले द्रोण मुख मौनहिं धारे ॥
पुर बाहिर कढि कियो विचारा ❋ करौं भस्म नृप लगै न बारा ॥
पै ब्राह्मणहि क्रोध बड दोषू ❋ ताते करौं न नृपपर रोषू ॥
जाहुँ हस्तिनापुर यहि काला ❋ सकल पढाऊं कुरुकुल बाला ॥
तहँ दरशन पैहौं हरिकेरो ❋ होई पूर्ण मनोरथ मेरो ॥
दोहा–अस विचारि हस्तिननगर, आयो द्रोण सुजान ॥
रहे पढावत शिशुनको, कृपाचार्य मतिवान ॥ ३ ॥
कृपाचार्य अति आदर कीन्हो ❋ बहनोईको भोजन दीन्हो ॥
पठन गये शिशु भयो प्रभाता ❋ कंदुक भयो कूपमहँ जाता ॥
द्रोण मारि शर ताहि उठाला ❋ भये मुदित अचरज गुणि बाला ॥
सुनि भीषम द्रोणहिं ढिग आनी ❋ कह्यो पढावहु शिशुन विज्ञानी ॥
कृपहु कियो संमत सुख पागे ❋ द्रोण पढावन बालक लागे ॥
पांडव दुर्योधन आदिक सब ❋ पढ पढ सिगरे निपुण भये जब ॥
तब मांग्यो गुरुदक्षिण द्रोना ❋ शिष्य कह्यो लीजे बहु सोना ॥
द्रोण कह्यो गुरुदक्षिण येहू ❋ द्रुपद नरेश बांधि मोहिं देहू ॥
तब दुर्योधन आदिक वीरा ❋ चढे द्रुपद पर लै धनु तीरा ॥
द्रुपद महारण कीन्हो कढिकै ❋ जित्यो कौरवन सायक मढिकै ॥
तब पांचों पांडव द्रुत धाये ❋ द्रुपदहिं पकरि द्रोण ढिगल्याये ॥
भीषम देव छुडाइ नरेशै ❋ द्रोणहिं कियो अचार्य विशेषै ॥
दोहा–पुनि जब हिंसा पांडवन, दियो न कलि अवतार ॥
भीषम द्रोण बुझाइकै, मानि लियो हियहार ॥ ४ ॥
तबहिं द्रोण अस मनहिं विचारा ❋ अब देखब वसुदेव कुमारा ॥
होन लग्यो भारत संग्रामा ❋ द्रोण लखन लाग्यो घनश्यामा ॥
धृष्टद्युम्न हाथ निजमरणा ❋ जानि द्रोण सुमिरत हरिचरणा ॥
निजसुत विरह व्याज रणमाहीं ❋ बैठ्यो रचि शरशय्या ताहीं ॥
हाथ जोरि यदुपतिसों भाष्यो ❋ यहि दिनहित मैं श्रम करिराख्यो

चारिबाहु सुंदर तनु श्यामा * आवहु नाथ आज यहि ठामा ॥
धरहु शीश महँ निज करकंजू * करहु नाथ मेरो भवभंजू ॥
जानि अनन्यदास यदुराई * गये समीप प्रेम उरछाई ॥
द्रोण निरखि अनिमिष हरिरूपा * मान्यो बच्यो गिरत भवकूपा ॥
पुनि हरिके चरणन चितराखी * राम कृष्ण मुखमें अस भाखी ॥
तनु तजि भयो लीन हरि माहीं * यह प्रसंग जान्यो कोउ नाहीं ॥
द्रोण लह्यो पार्षद हरि रूपा * यहि विधि ताकर सुयश अनूपा ॥

दोहा—वीर शिरोमणि द्रोणद्विज, भो अनन्य हरिदास ॥
वीरभक्ति कीन्हीं विमल, छूटि गयो यमपास ॥८॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथ राजसूययज्ञकी कथा।

दोहा—सुनहु संत वर्णन करौं, अति अद्भुत यह गाथ ॥
जानि परत जिहि सुनत अस, दायानिधि यदुनाथ॥ १॥

धर्मसुवन एक समय सभ्राता * सभामध्य बैठ्यो अवदाता ॥
मनमहँ लग्यो करन विचारा * होइ सुयश किहि भांति अपारा ॥
राजसूय मख करौं महाना * मोर सहायक हैं भगवाना ॥
अब नाहिं जो करिहौं कछु नीको * तौ रहि जाइ मनोरथ जीको ॥
यहि विधि नृपहिं करत अनुमाना * नारद मुनि तहँ कियो पयाना ॥
उठी सभा नारद कहँ देखी * पांडव माने मोद विशेषी ॥
चलि आगे मुनिवरकहँ लीन्हे * आसन हित कनकासन दीन्हे ॥
पूज सविधि पग धोइ नरेशा * सो जल सींच्यो सकल निवेशा ॥
कुशल प्रश्न नृप पूंछि सुखारी * विनयसहित पुनि गिरा उचारी ॥
मम मन इक उपजी अभिलाखा * रहत मनोरथ हरिकर राखा ॥
जाहु द्वारिका वेग मुनीशा * जहँ निवसत यदुकुलकर ईशा ॥
मोरि विनय अस प्रभुहि सुनायो * तुमहि नाथ तुव दास बुलायो ॥

दोहा-राजसूयमख करनको, चाहत है तुव दास ॥
सो पूरण प्रभु करहु इत, आइ तुम्हारिहि आस॥२॥

सुनि नृपवचन मोद मुनि मानी ❋ कह्यो धर्म भूपतिसों बानी ॥
भले विचार कियो महराजा ❋ ऐहैं अवशि इतै यदुराजा ॥
अस कहि चल्यो सुरर्षि सुजाना ❋ गयो द्वारिके जहँ भगवाना ॥
लगी सुधर्मा सभा सुहाई ❋ बैठ्यो उग्रसेन नृपराई ॥
नृप दाहिने कनकासन माहीं ❋ राजत हरि हेरत चहुघाहीं ॥
हरि दक्षिण दिशि सात्यकि उद्धव ❋ पुनि अक्रूर कृतवर्म महाजव ॥
यहि विधि और बडे यदुवंशी ❋ लोकपाल सम शत्रुनध्वंशी ॥
उग्रसेन बांये दिशि रामा ❋ तेहि आगे प्रद्युम्न बलधामा ॥
सांबादिक पुनि कृष्णकुमारे ❋ बैठे सकल आयुधन धारे ॥
औरहु वृद्ध वृद्ध यदुवंशी ❋ बैठे निजमति वेदप्रशंसी ॥
गायकगण गावहिं गुण गाना ❋ नचै अप्सरा लै लै ताना ॥
तहँ नारद मुनि पहुँचे जाई ❋ उठे सभासद अति अतुराई ॥

दोहा-रामश्याम आगू लियो, सिंहासन बैठाय ॥
पूछ्यो कुशल बहोरि सब, बार बार शिरनाय ॥ ३॥

कहु मुनीश पांडव कुशलाई ❋ इतना सुनत भण्यो मुनिराई ॥
यदुवर राजसूय मख राजा ❋ चाहत करन धर्म महराजा ॥
सो पूरणहित तुमहिं बुलायो ❋ मैंही तुमहिं बुलावन आयो ॥
सुनि यदुनंदन अतिसुखभीने ❋ सैन सजावन शासन दीने ॥
सजी सैन चतुरंग अपारा ❋ चल्यो सदल वसुदेवकुमारा ॥
राम रहे पुररक्षण हेतू ❋ तैसे उग्रसेन मति सेतू ॥
आये इंद्रप्रस्थ मुरारी ❋ धाये पांडव परम सुखारी ॥
जे जस रहे ते तस उठि धाये ❋ अशन वसन बासन विसराये ॥
जे जैसहि पहुँच्यो चलि आगे ❋ तेहि तस मिले नाथ अनुरागे ॥
मिले नाथ कहँ पांचों भाई ❋ बारबार दृग वारि बहाई ॥
धर्मनृपति भीमहि करवंदन ❋ मिले बहुरि पार्थहिं यदुनंदन ॥

सानुज नकुलहि आशिष दीन्हे * पांडव पुनि हरिवंदन कीन्हे ॥
दोहा-इंद्रप्रस्थ लेवायकै, आये पांडुकुमार ॥
सानुज सदल सपुत्रनृप, कियो परम सत्कार ॥४॥
षोडश सहस्र कृष्ण महरानी * चढी पालकी सुमुखि सयानी ॥
तिनहिं भूप आपुइ चलि आये * निज अंतःपुर वास देवाये ॥
सुंदर सोरह सहस अगारा * बसीं मुदित यदुनंदन दारा ॥
पृथक् पृथक् कुँवरन कहँ राजा * दियो निवास वासके काजा ॥
औरहु जे यदुवंशी आये * तिनहिं कृष्ण सम मानि बसाये ॥
नित नवीन कीन्हों सत्कारा * वरणि जाइ किमि विभव अपारा ॥
एक समय तहँ सभा मँझारी * बैठे पांडव सहित मुरारी ॥
धर्मनरेश कह्यो कर जोरी * राजसूय मखकी मति मोरी ॥
पूरण करहु नाथ अभिलाषा * मम सर्वस वर राउर राखा ॥
नाथ कह्यो यह उत्तम काजू * करहु अवश्य धर्म महराजू ॥
अस कहि लै सँग अर्जुन भीमा * गये मगधदेशै बलसीमा ॥
भीम हाथ मागधै हतायो * तासु राज तिहि सुतहि देवायो ॥
दोहा-यह आनँदअंबुधि कियो, सकल कथा विस्तार ॥
अब संतो आगे सुनो, राजसूय संभार ॥ ५ ॥
पौरसचिव बंधन युत राजा * बैठ्यो सभामध्य छबि छाजा ॥
कनकासन आसित यदुराजा * कारक सकल पांडु सुत काजा ॥
तहँ अगस्त्य कौशिकमुनि व्यासा * गौतम वाल्मीकि विनआसा ॥
आसुरि गालव भार्गव रामा * गर्ग च्यवन लोमश तपधामा ॥
नारद सनकादिक मुनि ईशा * आये जहँ बैठे जगदीशा ॥
तहँ भूपति वसुदेव कुमारा * बैठायो करि बहु सतकारा ॥
भूपति मुनिनाथनसों भाषा * मम हिय राजसूय अभिलाषा ॥
पूरण करहु लेहु प्रभु वरणा * करवावहु नृप मख मुदभरणा ॥
मुनि तथास्तु कहि सुदिन विचारी * करवाई मखराज तयारी ॥
तहँ सुरर्षि ब्रह्मर्षि अपारा * दीक्षित भये मखेश अगारा ॥

भई भीर कछु बरणि न जाई ❀ राजा रंकनकी समुदाई ॥
योगी सिद्ध साधु महिदेवा ❀ आये सकल करन हरिसेवा ॥

दोहा—चारण विद्याधर पितर, गुह्यक सुर गंधर्व ॥
लोकपाल दिगपाल सब, ब्रह्माशिवादिक सर्व ॥६॥

कोउ न रह्यो त्रिभुवनमें बांकी ❀ लखन राज मख माति नहिं जाकी ॥
इन्द्रप्रस्थ पुरमें तिहिकाला ❀ आये देखन सब यदुपाला ॥
करिकै धर्मनृपहिं अनुरागा ❀ मखकारज हित कियो विभागा ॥
भीम पाकशाला अधिकारी ❀ बनवावे व्यंजन सुखकारी ॥
भयो सुयोधन कोशअधीशा ❀ धरै जौन बल देहि महीशा ॥
लै आवन धनको अधिकारा ❀ नकुल करै कारज निरधारा ॥
सहदेवहु पूजा अधिकारी ❀ विप्र भूप साधुन सत्कारी ॥
साधु विप्र सेवन अधिकारा ❀ करन लग्यो अर्जुन सुख सारा ॥
विप्र साधु पूजन अधिकारी ❀ भई यज्ञ महँ द्रुपदकुमारी ॥
साधु चरण धोवन अधिकारा ❀ लेत भयो वसुदेव कुमारा ॥
भयो कारण दानहिं अधिकारी ❀ भीषम विदुर मंत्रपद भारी ॥
यहि विधि होन लग्यो मख राजा ❀ दीक्षित भयो धर्म महराजा ॥

दोहा—तिहि औसर मुनिमंडली, उठ्यो परमसंदेह ॥
कोन अग्र पूजन लहै, कापर सबको नेह ॥ ७ ॥

तहँ देवर्षि महर्षि उदारा ❀ लगे करन यह काज विचारा ॥
बडे बडे भूपति जुरि आये ❀ कोउ नहिं यह संदेह मिटाये ॥
तब सहदेव कही यह बानी ❀ सुनिये सकल मुनीश विज्ञानी ॥
त्रिभुवन आधिप अहै यदुराई ❀ जगव्यापक जगते अलगाई ॥
अहैं अग्रपूजनके योगू ❀ यहि हित और न करिये सोगू ॥
इनहींके पूजे मुनि राई ❀ सकल विश्व पूजन ह्वै जाई ॥
यह तो संमत अहै हमारा ❀ पुनि जस होय विचार तुम्हारा ॥
सुनि सहदेव वचन मुनिराई ❀ कीन्हे संमत सब सुखपाई ॥
लहै अग्रपूजन यदुदेवा ❀ याते और न कछु हरिसेवा ॥

मुनिन वचन सुनि धर्मभुवाला ❋ मान्यो महामोद तिहि काला ॥
भूषण वसन अनेक मँगाई ❋ हरिकहँ सिंहासन बैठाई ॥
निज हाथन प्रभु चरण पखारयो ❋ भुवन पुनीत सलिल शिर धाऱ्यो ॥
दोहा—करि प्रभुको पूजन सविधि, भयो नरेश निहाल ॥
हरिपूजन लखि मंदमति, सहि न सक्यो शिशुपाल ॥८॥
मध्य समाज कह्यो कटुवानी ❋ सुनहु सबै मुनीश विज्ञानी ॥
किधौं बावरी भै मति सबकी ❋ भै विपरीति कालगति अबकी ॥
ऋषि परमर्षि सुरर्षि सुजाना ❋ धर्म धुरंधर भूपति नाना ॥
ब्रह्म रुद्र अरु लोकप देवा ❋ शंकर जेहि कोउ जानन भेवा ॥
ऐसे योग्यन ईशन छोडी ❋ सभासदनकी मति भइ भोडी ॥
यक अबुद्धि बालकके भाखे ❋ कोउ नहिं कछु विचार उरराखे ॥
योग मिल्यो नहिं सबको दूजा ❋ गोपहि दियो अग्र मख पूजा ॥
नंदगोप सुत अति अविचारी ❋ भाग्य विवश विभूति भै भारी ॥
सकल धर्मते रहित कुजाती ❋ कारो वपु निज मातुल घाती ॥
ताहि अग्र पूजन सब दीन्हो ❋ कहौ सकल यह कैसे कीन्हो ॥
सुनत नाथ निंदन हरिदासा ❋ हाइ हाइ बोले चहुँ पासा ॥
ऋषि मुनि विप्र दीन बलहीना ❋ निज कानन अंगुलि कर लीन्हा ॥
दोहा—हरि हरिजनकी जो सुने, निंदा अपने कान ॥
हनै बली जो होइ नतु, तहँते करै पयान ॥९॥
साधु विप्र यहि भांति उचारी ❋ कान मूंदि उठि चले दुखारी ॥
हरिनिंदा सुन पांडुकुमारा ❋ उठे शस्त्र लै कुपित अपारा ॥
विदुर भीष्म द्रोणादिक वीरा ❋ ❋ अमरषवश धारे धनु तीरा ॥
सबकहँ निरखि शस्त्र लैआवत ❋ उठ्यो चँदेरीपति अस गावत ॥
कहौ सकल तुम गोपसहायक ❋ यहि अघते तुम्ह हौ वधलायक ॥
अस कहि उठ्यो कुपित शिशुपाला ❋ करमें कारि कराल करवाला ॥
पांडुसुतन कहँ मारन धायो ❋ सभामध्य कोलाहल छायो ॥
जबलौं कह्यो आपने काहीं ❋ तबलौं प्रभु बोले कछु नाहीं ॥

जब दुःशासनकहँ मारन धायो * तब हरि उठि अस वचन सुनायो
बैठहु इत उत कोउ नहिं जाहू * पावत फल चेदिप नरनाहू ॥
अस कहि यदुपति चक्र चलायो * काटि तासु शिर धरणि गिरायो ॥
साधु सिद्ध मुनि जयध्वनि कीन्हे * प्रमुदित परिचर दुंदुभि दीन्हे ॥
दोहा-भगे सबै पापी नृपति, द्रोही हरिहरिदास ॥
धर्मनृपति अस्तुति करी, सकल मुनिन सहुलास १०॥
राजसूयमख होन लग्यो पुनि * छाइ रही चहुवोर वेद ध्वनि ॥
सिद्ध महर्षि देवऋषि ज्ञानी * सुर नर मुनि तप जप अभिमानी ॥
विप्र साधु सब जेहि मख आये * निज निज पूर मनोरथ पाये ॥
सो मखको अस रह्यो प्रमाना * पूर होइ तब यज्ञ विधाना ॥
पंचजन्य जब बजै आपते * सोइ पूरित कर्त्ता प्रतापते ॥
सो जगके सुर नर मुनि जेते * खाये पाये वांछित तेते ॥
पैनहिं बज्यो शंख तेहि काला * तब ह्वै गयो महीप बिहाला ॥
शंकित सभामध्य नृप जाई * पूछ्यो श्रीयदुनाथ बुलाई ॥
ऋषि मुनि सिद्ध देव द्विज नाना * विद्यमान तुम यदुकुल भाना ॥
भई तृप्ति मख सकलसमाजा * कारण कौन शंख नहिं बाजा ॥
को अस बाकी जो नहिं आयो * कौनहिं नाथ मनोरथ पायो ॥
बजै शंख जेहि कारण पाई * सो कहिये कृपालु यदुराई ॥
दोहा-सुनत युधिष्ठिरके वचन, सो कारण प्रभु जानि ॥
मंद मंद बोले वचन, विहसत सारँगपानि ॥ ११ ॥

कवित्त-ब्रह्म शिव इंद्र यम वरुण कुवेर आदि आये यज्ञ राजसूय देखन तिहारो है ॥ तैसे मुनि मनुज महर्षि देवऋषि परमर्षि राजऋषि विप्रगणहू अपारो है ॥ रघुराज रावरेके हाथ सतकार पाये पै न यज्ञ पूरणता कोई निरधारो है ॥ शंख नहिं बाजो ताको कारण यही है भूप आयो ना अनन्यदास एक वा हमारो है ॥ १ ॥ चाकर तिहारो द्वारे भवन तिहारो राज नगर निवासी हौं तिहारो चिरकालको ॥ यथालाभ तोषित न रोषित कोहूपै है अदोषित अनाख भक्त त्यागे

जगजालको ॥ साधुनको जूंठ खात खात भे विमल बुद्धि नेही नाहिं देह नेह बालकहू बालको ॥ जातिको श्वपच महिपाल वालमीकि नाम मोहिं प्राण प्यारो तुम्हें कारक निहालको ॥ २ ॥ केतऊ खवावो विप्र देवन रिझावो भूरि केतऊ लगावो मन भूप इष्टदेवमें ॥ केतो साधु सतकारो केतो करो उपचारो केत उपवारो धन राजा रंक भेवमें ॥ रघुराज सांची कहों सुनो धर्म महाराज हैहै ना कछूक काज कीनो देवलेवमें ॥ पूजिहै न यज्ञ केतो मुनिन समाज पूजे बाजिहै न शंख विन वालमीकि सेवमें ॥ ३ ॥ योग रह्यो जाइवो तिहारो ताहि ल्यायवेको दीक्षित हो यज्ञ मैं न ताते पगुधारिये ॥ भीमसेन पारथ तुरत जाय ताके भौन ल्यावैं तुव धामैं यह कामैं निरवारिये ॥ द्रौपदी बनावै निज-हाथन जेवावै आप आपनेहो हाथनसों चरण पखारिये ॥ रघुराज राजसूयपूरण तो ह्वै है तबै वालमीकि पद जल यज्ञ थल डारिये॥४॥

दोहा–सुनि करुणानिधिके वचन, अचरजमानि भुवाल ॥
मानि भक्तमहिमा प्रबल, शासन दीन उताल ॥ १२ ॥

भीमसेन पारथ तुम जाहू ❀ ल्यावहु जाहि कहत यदुनाहू ॥
भीमसेन अर्जुन दोउ धाये ❀ हेरत हेरत पुर नघि आये ॥
नगर छोर महँ रहे मडैया ❀ द्वारे वैठि तासु लो गैया ॥
अर्जुन पूछ्यो केकर वामा ❀ कहहै वालमीकिकर धामा ॥
कह तिय नाम लेहु प्रभु जासू ❀ तासु नारी मैं यह गृह तासू ॥
मेरो बडो भाग्य भइ आजू ❀ आये भवन आप केहि काजू ॥
अर्जुन भीम कही असवानी ❀ कहां तोर पति कहैं सयानी ॥
नारि कह्यो बैठे घर भीतर ❀ मैं लहों लेवाइ तुव पदतर ॥
अर्जुन कह्यो हमै तहँ जैहैं ❀ तेरे पतिके पद शिर नैहैं ॥
अस कहि भीम धनंजय वीरा ❀ गये जहां बैठो मति धीरा ॥
वालमीकि लखि अर्जुन भीमै ❀ कियो प्रणाम दौरि धरणीमें ॥
ते दोउ ताकहँ कियो प्रणामा ❀ देखे तासु रूप अभिरामा॥

दोहा–पहिरे ऊनवसन कारि, उर तुलसीकर माल ॥
सो हरिको पूजत रह्यो, ऊर्ध्व पुंड्र धृत माल ॥ १३ ॥

वाल्मीकि कह दोउ कर जोरी * कौन सुकृत जागी प्रभु मोरी ॥
भंगी भवन तुम्हार अँवांई * यह अचरज कछु कह्यो न जाई ॥
आयसु देहु नाथ का करहूं * तुव गृह झारि उदर नित भरहूं ॥
भीमसेन अर्जुन तब भाखे * नृप तुव दर्शनकी रुचि राखे ॥
चलिये यज्ञ पूर अब कीजै * धर्मनृपति कहँ दर्शन दीजै ॥
साधु शिरोमणि तुम हो सांचे * जापर जियते यदुपति राचे ॥
असकहि चरण धूरि धरि शीशा * लै गवने जहँ धर्म महीशा ॥
आयो वाल्मीकि जब द्वारे * नृपति सहित यदुपति पगु धारे ॥
धर्मनृपति धीरज तजि धोरी * परचो श्वपच पद दोउ कर जोरी॥
मिलत ताहि नृप बारहिंबारा * आंखिन बहत अंबुकी धारा ॥
यदुपति लियो हिये महँ लाई * वाल्मीकि पद परचो लजाई ॥
प्रेम विवश कछु बोल न आवत * साधु विप्र अचरज सब गावत ॥

दोहा-तासु एक कर कृष्ण गहि,यक कर गहि महिपाल॥
ल्याइ यज्ञशाला दियो, आसन परम विशाल॥ १४॥

मुनिमंडली विराजत जहँवां * बैठ्यो श्वपच शुभासन तहँवां ॥
तहँ आई पुनि द्रुपदकुमारी * धरे सलिल चामीकरझारी ॥
लीन्ह्यो भूप कनक कर थारा * लग्यो पखारन चरण उदारा ॥
श्वपच चरण नृप पोंछि सुखारी * पहिरायो पुनि पट जरतारी ॥
लेप्यो पुनि चंदन निज हाथा * सुमनमाल बांध्यो उरमाथा ॥
धूप दीप भूपति पुनि कीन्ह्यो * द्रुपदसुताकहँ आयसु दीन्ह्यो ॥
भक्तराजहित व्यंजन ल्यावहु * प्यारी पाणि परोसि खवावहु ॥
तब यदुपति बोले मुसक्याई * कृष्णा जहँलगि तव निपुणाई ॥
तहँलगि व्यंजन विरचि अनंता * ल्यावहु मम जन हेतु तुरंता ॥
पाक भवन चलिकै पांचाली * रच्यो विविध व्यंजनसुखशाली ॥
भरि भरि हाटक भाजन लाई * धरचो भक्त आगे सुखछाई ॥
पृथक् पृथक् व्यंजन करनामा * दियो बताइ जानि मतिधामा ॥

दोहा-सब व्यंजन जब धरि गये, वाल्मीकि उठि आसु ॥
अर्पण लाग्यो कृष्णको, नैन मूंदि सहुलासु ॥ १५॥

याहि विधि प्रभुहि निवेद लगाई * पुनि सो व्यंजन एक मिलाई ॥
एक कौर डारत मुखमाहीं * शङ्ख बज्यो इकवार तहांहीं ॥
वाल्मीकि खायो सब साजा * पै नहिं शङ्ख फेरि मखबाजा ॥
शङ्खे यदुपति ताडन दीन्ह्यो * तबहुँ न शङ्ख शोर कछु कीन्ह्यो ॥
तब हरि द्रुपदसुतासों भाख्यो * कारण कौन शङ्ख पुनि माख्यो ॥
तेरे मनधौ भयो विकारा * सो भामिनि सति करहु उचारा ॥
यदुपति वचन सुनत महरानी * नैन नवाय कही अस वाणी ॥
जो हम व्यंजन सब इत ल्याई * वाल्मीकि सब एक मिलाई ॥
भोजन कियो स्वाद नहिं जानी * यह मेरे मन भई गलानी ॥
रच्यो परिश्रम करि मैं सिगरो * जान्यो नहीं बन्यो अरु बिगरो ॥
तब हम कह्यो मनहिं मन कैसो * कहत भक्त याको सब कैसो ॥
तब यदुपति बोले हँसि वानी * अबलौं भयो न ज्ञान सयानी ॥

दोहा-जो जो तुम व्यंजन रच्यो, सो मोहिं अर्पण कीन ॥
जानो ताकर स्वाद मैं, म्वहिं न पूंछि कसलीन ॥ १६॥

मीठो मीठो याहि समाना * भामिनि मोर भक्त मतिवाना ॥
अस कहि सब व्यंजन कर स्वादू * गये सकुल करि यदुपति वादू ॥
द्रौपदि मनमहँ अचरज मानी * परस्यो वाल्मीकिपद पानी ॥
श्वपच चरण परसत द्रौपदिके * शङ्ख शोर किय अनगनतीके ॥
सुर नर मुनि यह अचरज देखी * मान्यो भक्त प्रभाव विशेखी ॥
मुनिवर द्विजवर नृपवर सुरवर * गहे चरण शिरनाइ श्वपचकर ॥
नाथहिं बारहिं बार सराहै * अमित आप भक्तन महिमाहै ॥
जय जय शोर मच्यो चहुँवोरा * कहहिं सबै धनि पांडुकिशोरा ॥
राजसूय तब पूरण भयऊ * वाल्मीकि यश दश दिशि छयऊ ॥
तहँ यक जन यक नकुलहि लीन्हे * आवत भयो न तेहिं कोउ चीन्हे ॥
सो पुकारि अस वचन सुनायो * मैं तीनिहुँ लोकन फिरि आयो ॥

मरुतराजके राजसूय महँ * गयो नकुल लै बहु मुनिवर जहँ ॥
दोहा-मुनि पद पर छालित सलिल, याको दियो लोटाइ ॥
आधो कनकशरीर भो, आधो रह्यो सुभाइ ॥ १७ ॥
राजसूय जहँ जहँ भयो, हौं पयान तहँ कीन ॥
नकुल लोटायो वारबहु,कोउ न कनक करिदीन॥१८॥
यदुपति तब बोले बिहँसि, श्वपचचरण जलमाहिं ॥
दे लोटाइ निज नकुलको, होत हेम कस नाहिं॥ १९ ॥
वाल्मीकिपद सलिलमें, नकुलहिं दियो लोटाइ ॥
सोउ आधो तनु कनकको, परचो तुरंत लखाइ ॥२०॥
औरहु अचरज मानि सब, कीन्ह्यो जयजयकार ॥
वाल्मीकिहरिभक्तकी, यह विधि कथा प्रकार ॥ २१॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

अथ यज्ञपत्नियोंकी कथा।

दोहा-सुनहुँ संत अब सुंदरी, कथा कृष्णरस भीन ॥
मातु माथुरानी सकल, प्रेम नेम जिमिकीन ॥ १ ॥
एक समय वृन्दावन चारी * यमुनाकूल निकुंज विहारी ॥
प्रातहिं उठि सब सखा बुलाई * चले धेनु लै वेणु बजाई ॥
रामश्याम मधि सखा समाजू * जिमि उडुमधि निशिकर दिनराजू
करत वेणुध्वनि आनँदपूरी * गे वृंदावनमें बहु दूरी ॥
तहां चरावन लागे गैया * सखन सहित बलराम कन्हैया ॥
जेठमास लागो तहँ रचऊ * आतपघोर गोपगण लहेऊ ॥
शीतल कुंजकदंबन छाहीं * जात जहां आतप तप नाहीं ॥
सखासहित तहँ राम कन्हाई * बैठ मुदित मंडली बनाई ॥
वृंदावन भूरुह अभिलाखन * वृंदावन महि परसत साखन ॥
छाजहिं छत्रसरिस छिति छाये * हरित पत्र फल फूल सुहाये ॥

तिनहिं निरखि सब सखन बुलाई * बोले मंजुल वचन कन्हाई ॥
ए तुलसीवनके तरु देखहु * बडभागी इनको अति लेखहु ॥
दोहा-हिम आतप वरषा सहत, पर उपकारहि हेत ॥
आप कछू नहिं लेतहै, अपनौ सर्वस देत ॥ २ ॥
जन्म सफल तिनको जग माहीं * जे सप्रीति बहु जीवन काहीं ॥
तन मन धन अरु वचन लगाई * परउपकारहि करहिं सदाई ॥
यहि विधि वृक्षन वर्णन करिकै * सखन सहित अतिआनँद भरिकै॥
तरुछाया छाया लै गैया * सखन सहित संयुक्त बलभैया ॥
गये यमुनतट प्रीति घनेरी * निरखत नमित साख अरु केरी ॥
तहँ गोवन पय पान कराई * अति शीतल सुगंध सुखदाई ॥
गोपहु सलिल पिये शीतल भल * आपहु पान कियो यमुनाजल ॥
कूल कलिंदी कानन माहीं * गौवें चरत लगीं तृणकाहीं ॥
शीतल इक कदंबकी छाया * बैठे तहां राम यदुराया ॥
तहँ विहरत दुपहर ह्वै आई * पठवायो ना भोजन माई ॥
क्षुधित भये तब सबै गुवाला * गये जहां बैठे नँदलाला ॥
सकुचत मुख निरखत करजोरी * विनय करी सब सखा निहोरी ॥
दोहा-राम राम हे अतिबली, खलखंडन नँदनंद ॥
हमको अति लागी क्षुधा, मेटत सबै अनंद ॥ ३ ॥
ताकी देहु उपाय बताई * अथवा भोजन देहु मँगाई ॥
सुनि ग्वालन बालनकी बानी * भक्त आपनी द्विजतिय जानी ॥
तिनपर कृपा करनके हेतू * आसु बांधि मनमें अस नेतू ॥
कह्यो सखन सो तहँ नँदलाला * यह उपाय कीजे सब ग्वाला ॥
मथुरानगरीके ढिग माहीं * इतते सो दूरी है नाहीं ॥
तहां ब्रह्मवादी द्विज आई * स्वर्ग गमनके हित मनलाई ॥
कराहिं आंगिरस यज्ञ सुहाई * जोरे अमित अन्न समुदाई ॥
सखा जाइ तहँ याचहु ओदन * औरहु व्यंजन स्वाद समोदन ॥
तिनको ऐसो वचन सुनायो * रामकृष्ण हमको पठवायो ॥

गऊ चरावन इत कढि आये * घरते भोजन नाहिं जन ल्याये ॥
इतते वृंदावन बहु दूरी * बाधति भूख सबनकहँ भूरी ॥
सुखद स्वाद भोजन बहु देहू * क्षुधा निवारि जगत फल लेहू ॥
दोहा-सुनत नाथके वचन अस, गोप यज्ञथल जाइ ॥
लखि विप्रन बोले वचन, बार बार शिर नाइ ॥ ४ ॥
तिनसों भोजन मांगन लागे * वचन विनीत क्षुधारस पागे ॥
सुनहुँ विप्र हम कृष्ण सखा हैं * पठयो राम न कहत मृषा हैं ॥
नंदकुँवरके शासनकारी * चित दै सुनिये विनय हमारी ॥
गऊ चरावत दूर गुपाला * कढि आये संयुत बहु ग्वाला ॥
इतते हैं बहु दूरिहु नाहीं * रामश्याम मधि ग्वालनमाहीं ॥
दुपहर भे अति भूख सतायो * घरते भोजन कछु नाहिं आयो ॥
ताते तुव समीप मतिसेतू * हमहिं पठायो भोजन हेतू ॥
जो द्विज श्रद्धा होइ तुम्हारी * तौ भोजन दीजै सुखकारी ॥
तुम तौ सकल धर्मके ज्ञाता * क्षुधित खवाये फल विख्याता ॥
यदपि ग्वाल बहु वचन बखाना * पै द्विज नेकु किये नहिं काना ॥
अस द्विज सब मन किये विचारा * अनुचित भाषत गोप गँवारा ॥
जे न होइ दीक्षित मखमाहीं * अनुचित यज्ञ अन्न तिन काहीं ॥
दोहा-शूद्रजाति यह यज्ञको, अन्न कबहुँ जो खाइ ॥
तौ विप्रनके यज्ञ महँ, अवशि विघ्न ह्वै जाइ ॥ ५ ॥
अस विचारि ते विप्र अज्ञाना * मौन रहे जनु सुने न काना ॥
ब्राह्मण क्षुद्र स्वर्गके आशी * यज्ञ करनमें परम प्रयासी ॥
न्याय और व्याकरण मीमांसा * पढै पढावत करत प्रशंसा ॥
हरिपद प्रीति रीति नहिं जानत * अपनेको पंडित वर मानत ॥
देश काल ब्राह्मण अरु मंत्रा * अग्निमंत्र देवता स्वतंत्रा ॥
धर्मयज्ञ औरहु यजमाना * इनमें सबमें हैं भगवाना ॥
परब्रह्म सो कृष्ण मुरारी * तिनको द्विज लिय मनुज विचारी ॥
करी याचना तिनको भंगा * मूरख रँगे यज्ञके रंगा ॥

हां नाहीं जब कछु न प्रकाशा * ग्वालबाल तब भये निराशा ॥
लौटि कृष्ण बलके ढिग आये * क्षुधित दीन ह्वै वचन सुनाये ॥
द्विज तो बोलतऊ भरि नाहीं * देवन देव कहा कहिजाहीं ॥
अब हम नाहिं मांगनकहँ जैहैं * मांगेते अपमानहिं पैहैं ॥
दोहा-ग्वाल गिरा गोविंद सुनि, कह्यो फेरि मुसकाइ ॥
सखा जाइकै फेरि तुम, अस कीजियो उपाइ ॥६॥
द्विजनारिनसों कह्यो बुझाई * बलयुत बैठे क्षुधित कन्हाई ॥
सुनते मोर नाम ते आसू * भोजन देहैं सहित हुलासू ॥
मेरे चरणप्रीति लवलीनी * द्विजनारी हैं परम प्रवीनी ॥
सुनत कृष्णके वचन गुवाला * गये फेरि आसुहि मखशाला ॥
द्विजनारिन कहँ कियो शृंगारा * बैठीं गृहमहँ लखे गुवारा ॥
ह्वै विनीत करि दंड प्रणामा * बोले वचन गोप छुत छामा ॥
वचन सुनहु द्विजनारि हमारे * इत समीप नँदकुँवर पधारे ॥
गऊ चरावत आये दूरी * ग्वालन युत भूखे हैं भूरी ॥
पठयो तुव समीप द्विजनारी * भोजन दीजै विलम विसारी ॥
जबते कृष्ण कथा सुनि राखी * तबते दरशनकी अभिलाखी ॥
पुनि समीप सुनि नाथ अवाई * तिनके मन किमि मोद समाई ॥
जैसहिं बैठ रहीं द्विजनारी * तैसहि उठीं त्वराकर भारी ॥
दोहा-भरि भरि भाजन विविधविधि, भोजन चारिप्रकार
हरि समीप गवनत भईं, जिमि सरि पारावार ॥७॥
तिनके निरखि कंत सुत भाई * रोकन लगे तिन्हैं बरिआई ॥
कृष्ण प्रीतिवश रुकीं न रोके * कढि आईं तिनको दै ठोंके ॥
आईं कान्ह कुँवरजहँ सोहत * निरखत जाहि अतन तन मोहत ॥
यमुना कूल अशोक निकुंजैं * मधुकर पुंज मंजु जह गुंजैं ॥
सुंदर श्याम सलोनो गाता * सोहत पीतवसन अवदाता ॥
उर सोहत मंजुल वनमाला * धातुरंग तनु रचे रसाला ॥
मुकुट मोरपख माथ मनोहर * नटवर वेष विश्व मनको हर ॥

कुंडल अमल अलक झलकाहीं * लहत प्रवाल अधर सम नाहीं ॥
यक कर कंधसखा आतिभावत * यक कर लै जलजात फिरावत ॥
झुरि झुरि सखन चितै मुसकाई * क्षण क्षण करत निहाल कन्हाई ॥
तैसहि तासु निकट बलरामा * शरद सलिलधरतनुअभिरामा ॥
सोहति सखामंडली कैसी * उडुअवली शशिचहुँदिशि जैसी ॥

दोहा-भोजन देहैं अवशि त्वहिं, द्विजनारी बडभागि ॥
रामश्यामके सखनयुत, मनहि आश अस लागि ॥ ८ ॥

सवैया-रूप गुण्यो प्रथमै सुनिकै हरि देखनकी अतिलालसा जागी ॥
आय प्रत्यक्ष लखी तिनको अपनेको गुनी जगमें बड भागी ॥
श्रीरघुराज अनूप स्वरूप हिये धरि मूंदि हगै अनुरागी ॥
मोहनको मिलिकै मनमें द्विजनारि बुझाइ दई विरहागी ॥ १ ॥

दोहा-सर्वस ताजि निज दरशहित, आई प्रीति बढाइ ॥
गुनिगोविंद यह लखि तिन्हैं, बोले मृदु मुसकाइ ॥ ९ ॥

हे बड भागिनि सब द्विजनारी * सिगरी तुम इत भलै सिधारी ॥
बैठहु द्रुतै समीपहि आई * कहो जो हम सब करहिं बनाई ॥
आई मम देखन यहि ठाई * उचितहि कियो यदपि बरियाई ॥
जे मतिवंत भक्ति रसपूरे * मम अनुराग रँगे अतिरूरे ॥
जे नहिं होय कबहुँ फल आसी * केवल तिन मति प्रेमपियासी ॥
तिनके हम प्राणहुंते प्यारे * प्राणहुँते प्रिय तेइ हमारे ॥
प्राणबुद्धि तन मन धन दारा * आतम योग होत अतिप्यारा ॥
ते आतमके आतम हम हैं * को प्रिय दूजो जग मोहिं सम है ॥
भले इतै आई द्विजनारी * हमहु दरश लै भये सुखारी ॥
धन्य जन्म तुम्हरो जगमाहीं * करियत पर उपकार सदाहीं ॥
तुम्हरे कुल तुमहीं बड भागिनि * भई सकल तजि मम अनुरागिनि ॥
तुव पति यज्ञ कर्म फल चाहैं * तुम बिन तिनको कछु फल नाहैं ॥

दोहा-जासु सबै मखभवनको, तुमहिं संग लै विप्र ॥
यज्ञ समापति करहिंगे, अति आनँदसों छिप्र ॥ १० ॥

सो०-तब बोलीं कर जोरि, द्विजनारी हरिछबि छकी ॥
बहुविधि हरिहिं निहारि, बैन विनय रसमें सने ॥ १ ॥

कवित्त-नंदके कुमार ऐसो करो ना उचार अब कोमल वदन बैन कठिन न सोहते ॥ एक बार भजै मोहि ताकू मैं तजहुँ नाहिं ऐसी निजवाणी सत्य करो कहा जोहते ॥ रघुराज रावरेके चरण शरण भईं ताजि कुलकानि कान्ह आपहीके मोहते ॥ पद अरविंदकी उतारी तुलसीको हमें शीश धारिवेको नाथ देह आति छोहते ॥ १ ॥ पति पितु भ्रात मातु नीत मित्र बंधु जेते राखैंगे न भौन यह दोषको लगायकै ॥ एनहींकी ऐसी दशा बाहिरकी कौन कहै सूझत न और ठौर तुमको विहायकै ॥ पद अरविन्द मकरंदकी पियासी दासी काहे दुख देहु निठुराई दरशायकै ॥ मनकी हरणहारी मूरति तिहारी त्यागी कौन दईमारेके समीप बसैं जाइकै ॥ २ ॥

दोहा-सुनि द्विजनारिनकी गिरा, जानि अलौकिक प्रीति ।
बोले प्रभु मंजुल वचन, दर्शावत अतिरीति ॥ ११ ॥

तुव पतिसुत पितु बंधुनवृंदा ❀ करि हैं नहीं तिहारी निंदा ॥
है मम रचित लोक सब जेते ❀ तहँके वासी देवहु तेते ॥
मम प्रसादते सबै तिहारी ❀ करिहैं मुदित प्रशंसा भारी ॥
हे द्विजतिय अँगसँग जगमाहीं ❀ सुख अनुराग हेत है नाहीं ॥
म्वहिंमहँ मनहिं लगाये रैहौ ❀ तौ मोकहँ आसुहि तुम पैहौ ॥
सुमिरण दरशन करु मम ध्याना ❀ अरु करिवो मेरो यशगाना ॥
इनते जस रति होति हमारी ❀ तस नाहिं निकट रहे द्विजनारी ॥
ऐसी जब हरि गिरा उचारी ❀ तब सुख मानि सबै द्विजनारी ॥
कियो गवन निजभवन तुरंता ❀ सुमिरत यदुपतिसहित अनंता ॥
प्रभुढिग प्रथमहिं आवत माहीं ❀ द्विज रोंके बरबस इकठाहीं ॥
सो जस हरिमूरति सुनि राखी ❀ सोइ धरि ध्यान मिलनअभिलाखी ॥
तनु तजि दिव्यरूप सो पाई ❀ हरिसो मिली प्रथमहीं आई ॥

दोहा-द्विजनारिन आनित सकल, अतिसराहि पकवान॥
यथायोग दै सबनको, भोजन किय भगवान॥१२॥

यहिविधि भक्त मनोरथ दाता * यदुपति व्रज विहरत अवदाता॥
लौटि भवन आई द्विजनारी * कछु न कहे द्विज तिनहिं निहारी॥
लै अपने सँग नारिन काहीं * कियो समापत मख सुखमाहीं॥
सुमिरि सुमिरि अपनो अपराधा * पावत भे मनमहँ द्विजबाधा॥
पुनि सिगरे अस मन अनुमाने * हरियाचना न कछु हम जाने॥
पुनि जस हरिमहँ नारिन प्रीती * तैसो निरखि न अपनी रीती॥
अपनेको निंदत द्विजराई * कहे वचन यहिविधि पछिताई॥
कृष्ण विमुख धिक् जन्म हमारा * धिक् धिक् शास्त्रहु पठन अपारा॥
धिग व्रत धिग सगरी चतुराई * धिग कुल धिग विज्ञान बडाई॥
हम मुनिजनके गुरू कहावें * सबको बहु उपदेश सुनावें॥
पै न भयो हमरे अस ज्ञाना * जाते है हमार कल्याना॥
हरिमाया योगी जन काहीं * मोह करति संशय कछु नाहीं॥

दोहा-हाय लखो इन तियनकी, यदुनंदनमें प्रीति॥
मिली कृष्णको जाइ तजि, लोकलाजकी भीति॥१३॥

भाग्यवंतिनी नारि हमारी * जे छबि छकीं निहारि विहारी॥
नहिं तप नहिं गुरुभवननिवासू * नहिं अचार विज्ञान प्रकासू॥
संस्कार नहिं कछु शुभकर्मा * नहिं कछु दान नेम नहिं धर्मा॥
केवल करि हरिके पद प्रीती * नारि निवारि दई भय भीती॥
संस्कार भे यदपि हमारे * तदपि हाइ हम हरिहिं विसारे॥
अति लोभी गृहकारज माहीं * स्वर्ग काम मख करें सदाहीं॥
इतनेहु पै हरि दीनदयाला * याचन मिसि पठवाय गुवाला॥
अपनी सुधि हमको करवाई * हाय तबहुँ हमरे नहिं आई॥
दया छांडि दूसर नहिं हेतू * हम तौ है अज्ञान अचेतू॥
श्री हरिको मारग हमपाहीं * नहिं कछु क्षुधा हेतु यहि माहीं॥
देश काल ब्राह्मण सिखिमंत्रा * देवकर्म यजमानहु तंत्रा॥
यज्ञ धर्म औरहु सब साजू * हरिमय जानहु सकल समाजू॥

दोहा-योगीपति यदु कुल प्रकट, सोई कृपानिधान ॥
भोजन मांग्यो भेजिकै, सखन सनेह सयान ॥ १४ ॥

सो हम सुने आपने काना ❀ पै मति मंद भयो नहिं ज्ञाना ॥
पै हमहूं धनि है जगमाहीं ❀ जिनकी नारि मिलीं प्रभुकाहीं ॥
जिनकी प्रीति नाथ पद लागी ❀ ते हमहूं कहँ किय बडभागी ॥
बार बार हरि तुम्हैं प्रणामा ❀ तुव माया मोहित वसुयामा ॥
भ्रमत करें हम कर्मन काहीं ❀ आप प्रभाव गुणन कछु नाहीं ॥
आदिपुरुष तुम अहौ सदाहीं ❀ तुव मायावश जीव भुलाहीं ॥
तुव मायावश लहि अति बाधा ❀ कियो नाम तुम्हरो अपराधा ॥
सो सब क्षमा करहु यदुराई ❀ करुणाकर अस आप बडाई ॥
अस द्विजपर निज चूक विचारी ❀ नमहिं मनाहिं मन चरण मुरारी ॥
हरि ढिग गवन करन मन कीन्ह्यो ❀ पुनि मनमें विचार अस लीन्ह्यो ॥
जो हम जैहैं नाथ समीपा ❀ तौ सुनिकै शठ कंस महीपा ॥
करिहै अवशि सकुल मम नाशा ❀ ताको नहिं कछु धर्मविश्वासा ॥

दोहा-अस विचारि द्विजवर सकल, गये न यदुपतिपास ॥
नारिनको वंदन करत, निवसे यज्ञ अवास ॥ १५ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ संजयकी कथा।

दोहा-भाषों संजयकी कथा, बुद्धिमान हरिदास ॥
व्यास शिष्य धृतराष्ट्रको, मंत्री धर्म विलास ॥ १ ॥

महा सत्यवादी अति ज्ञानी ❀ संतनको अतिशय सन्मानी ॥
संजयको मनते प्रण ऐसो ❀ मिलहिं संत ओरहिं जो कैसो ॥
करै समर्पण सर्वस ताको ❀ राखै नाहिं कछु पुत्र तियाको ॥
जाय जबै धृतराष्ट्र समीपा ❀ सज्जनता तिहि निरखि महीपा ॥
उतनोई बकसै तिहि राजा ❀ करै ताहिमें घरकर काजा ॥
संजयवृत्ति अनूपम देखी ❀ तापर भै हरि प्रीति विशेखी ॥

दियो नाथ ताको अधिकारा ❀ करे न वारण कोउ परिचारा ॥
बाहिर भीतर जहँ हरि होवै ❀ संजय चलि तहँ हरिको जोवै ॥
जब विराटपुर पांडुकुमारा ❀ प्रगट भये करि युद्ध अपारा ॥
द्वादशवर्ष किये वनवासा ❀ तेरहौ वर्ष अज्ञातहु वासा ॥
हारि लौटि आयौ दुर्योधन ❀ धर्म नृपति लायौ बहु गोधन ॥
तब विराटपुर गये मुरारी ❀ दोउ दल भै संग्राम तयारी ॥

दोहा–कुलकी क्षय अवलोकिकै, विदुर भीष्महि द्रोण ॥
संजयको पठवत भये, जानि महामति मोन ॥२॥

संजय चलि विराट पुरमाहीं ❀ बहुत बुझायो भूपति काहीं ॥
माननको मन कियो भुवाला ❀ द्रुपदी कह्यो सुनहु यदुपाला ॥
केशाकर्षण कियो दुशासन ❀ ताते जबलौं कुरुकुल नाशन ॥
तबलों हों बाँधि हों नाहिं केशा ❀ करे न युद्धहु धर्म नरेशा ॥
तब सँग लै पारथ पंचाली ❀ पारथगृह गवने वनमाली ॥
अर्जुन कृष्ण एक पर्यंका ❀ राजे रहे दोउ परम निशंका ॥
एक ओर बैठी सतिभामा ❀ एक ओर द्रोपदि छबिधामा ॥
सतिभामाके अंकहि माही ❀ धरे धनंजय चरण बताही ॥
तैसे द्रौपदि अंक मँझारी ❀ धरे चरण बलरात मुरारी ॥
तिहि अवसर संजय तहँ आये ❀ पद अँगुठामहँ दीठि लगाये ॥
संजयसों तब कह्यो मुरारी ❀ कह्यो जाइ करतूति हमारी ॥
दुर्योधनसों सबन सुनाई ❀ अस भाष्यो तुमको यदुराई ॥

दोहा–द्रुपदसुतै दरबारमधि, पट करष्यो तव भ्रात ॥
तिय पुकार शर हिय लग्यो, क्षति सोनित गदहात ३॥

पलटि जायँ वरु पांडुकुमारा ❀ हारें वरु डारे हथियारा ॥
पै हम तो करि कुरुकुल नाशू ❀ पोंछब द्रुपदसुताकर आंसू ॥
सुनि संजय प्रभुकी अस वाणी ❀ कह्यो सत्य कह सारँगपाणी ॥
पै हम नाहिं निजकुलके साथी ❀ गाडरि गहत छोडि कोउ हाथी ॥
अस कहि संजय करि परणामा ❀ आयो हस्तिनपुर अभिरामा ॥

यदुपति वचन दियो सतगाई ॐ सुनत सुयोधन दिय बिसराई ॥
अंधनृपति संजयसों भाषा ॐ युद्ध लखन हमरिउ अभिलाषा ॥
व्यास कह्यो हम करब उपाई ॐ समर कथा तोहिं परी जनाई ॥
अस कहि संजय निकट बुलाई ॐ दिय बरदान महा मुनिराई ॥
महासमर जो भारत हैहै ॐ सो चरित्र तोहिं सकल देखैहै ॥
संजय दिव्य दृष्टि तव होई ॐ तोसम कृष्णदास नहिं कोई ॥
संजय पाय व्यास बरदाना ॐ समरचरित सब कियो बखाना ॥
दोहा-संजयकी औरहु कथा, भारत मध्य बखान ॥
तातें नहिं यहि ग्रंथमें, कियो सविस्तर गान ॥ ४ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे पंचदशोऽध्यायः ॥ १५॥

अथ दुर्वासाकी कथा ।

दोहा-दुर्वासाकी कहत हौं, सुनहु कथा चितलाइ ॥
जाको कोप कराल जग, पावक ज्वाल दिखाइ १॥
कवित्त-दुरवासा मानसर कीन्हों है निवास तहां जाइ दश शीश इयामकमल उखारो है ॥ दीन्हीं मुनिशाप आजुते जो इयामकंज छ्वै है फटि जैहै शीश तेरे वचन हमारो है ॥ तबते न मानसर जात रह्यो दशमाथ तहँके मुनीश लह्यो आनँद अपारो है ॥ रघुराज संतजन काज जो करत कछु अपनो न हेतु हेतु पर उपकारो है ॥ १ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथ श्रुतदेव और बहुलाश्वकी कथा ।

दोहा-अब बरणौं द्वौ भक्तको, अतिविचित्र इतिहास ॥
द्विज श्रुतदेव सुजान तिमि, मिथिलापति बहुलास ॥ १ ॥
मिथिलापति भूपति बहुलासा ॐ यदुपति दरशन रह्यो पियासा ॥
विप्रभक्त तिमि यदुपति केरो ॐ नाम जासु श्रुतदेव निवेरो ॥
सो न और उर कछु अभिलाखै ॐ यदुपति दरशनकी रुचि राखै ॥

विषयभोग कबहूं नहिं चाहत ❀ बोलत मधुर वचन दुख दाहत ॥
सुकवि शांति अतिशीलस्वभाऊ ❀ यथालाभ तोषित द्विजराऊ ॥
रह्यो जनकपुर तासु अगारा ❀ करै सप्रीति संत सतकारा ॥
करै न उद्यम कछु निज हेतू ❀ बसै भवन महँ मोदनिकेतू ॥
तैसे जनकराज बहुलासू ❀ तनक न तनु अभिमान प्रकासू ॥
उभय भक्त अस मनहिं विचारे ❀ आवैं कब घर नाथ हमारे ॥
द्वारावती बसैं भगवाना ❀ सुनै यदपि दोऊ निज काना ॥
वे दरशनहित नहिं तहँ जाहीं ❀ भरे भरोस यही मन माहीं ॥
निजजन प्रणपूरक यदुनाथा ❀ करिहैं मोहिं विशेष सनाथा ॥
दोहा-दोउ भक्तनकी लालसा, जान्यो कृपानिधान ॥
दारुक सारथि बोलिकै, कर गहिकै भगवान ॥ २ ॥
ल्यावहु सूत साजि रथ मोरा ❀ जान चहूं मैं पूरव ओरा ॥
मिथिला नगर बसत बहुलासू ❀ अरु श्रुतदेव विप्र मम दासू ॥
दोउन दरश देहु तहँ जाई ❀ बैठे दोउ मम आश लगाई ॥
सुनि प्रभु वचन सूत सुख पाई ❀ लायो स्यंदन तुरत सजाई ॥
यदुनंदन चढि स्यंदन चारू ❀ चले जनकपुर मोद अपारू ॥
मनमहँ पुनि यदुनाथ विचारे ❀ चलहिं सकल मुनि साथ हमारे ॥
लियो बोलि सँग नारद व्यासू ❀ अत्रि च्यवन सुरगुरुसुत दासू ॥
वामदेव कौशिक भृगुरामा ❀ मित्रासुत वसिष्ठ अभिरामा ॥
विचरत रहे कहूं शुकदेवा ❀ लीन्हों रथ चढाइ यदुदेवा ॥
देशन देशन निवसत नाथा ❀ तहँके मुनिजन करत सनाथा ॥
आये जनकनगर नियराई ❀ तहँते दिय यक दूत पठाई ॥
दूत जाय मिथिलापुर माहीं ❀ कह्यो जनक श्रुतदेवहु पाहीं ॥
दोहा-जानि मनोरथ रावरो, तुमको करव निहाल ॥
आवत मुनिन समाज लै, नाथ देवकीलाल ॥ ३ ॥
भाग विवश चातक वदन, परै स्वातिको बुंद ॥
तिमि भूपति हर्षित भयो, आगम सुनत मुकुंद ॥ ४ ॥

नगर सुनायो सो प्रजन, साजि साजि सब साजु ॥
चलहु सकल यदुराजके, अगवानीके काजु ॥ ५ ॥
सुनत जनकपुरके प्रजा, वृद्ध बाल नर नारि ॥
लै लै मंगल साज कर, तनुकी सुरति बिसारि ॥६ ॥
जे जस रहे ते तस चले, देखत हेतु मुरारि ॥
यक एकन परख्यो नहीं, सर्वस लाभ विचारि ॥७॥

निरखि कृष्ण मुख अति सुखपाये ❀ विकसत वदन नैन जल छाये ॥
शिरपर धरि धरि अंजुलि धाई ❀ प्रभुकहँ किय प्रणाम हरषाई ॥
जे मुनीश प्रथमहिं सुनि राखे ❀ तिनको वंदन करि अस भाखे ॥
हमरे भाग्यनते इत आये ❀ हमको नाथ सनाथ बनाये ॥
इतनेमें धावत मगमाहीं ❀ तनुकी सुरति रही कछु नाहीं ॥
ढारत आंसुन आनँदधारा ❀ रोमांचित तन बारहिं बारा ॥
नहिं शिर वसन न पग पदत्राना ❀ यक क्षण बीतत कलपसमाना ॥
यहि विधि जनक भूप श्रुतदेवा ❀ आये जहँ ठाढे यदुदेवा ॥
दोउ प्रभु चरण गये लपटाई ❀ दुहुँन लिये हरि हिए लगाई ॥
पुनि सब मुनिन चरण महँ दोऊ ❀ परे दिये आशिष सब कोऊ ॥
दोउके मुख निकसति नहिं वानी ❀ आनँदवश सब सुरति भुलानी ॥
बहुत काल महँ सुरति सम्हारी ❀ विप्र भूप दोउ गिरा उचारी ॥

दोहा—नाथ पधारहु मम भवन, करहु कुटुंब पुनीत ॥
अहो नाथ त्रिभुवन धनी, सदा दीनके मीत ॥८॥

दोउ भक्त यक साथ उचारे ❀ प्रथम चलहु प्रभु भवन हमारे ॥
दोउन देखि बराबर प्रीती ❀ दोउनकी समान परतीती ॥
परयो नाथको तब संकेतू ❀ जांय कौनके प्रथम निकेतू ॥
दुस्सह मोहिं भक्त अपमाना ❀ भेद बुद्धि नहिं वेद बखाना ॥
अस विचारि हरिकौतुक कीन्हो ❀ मुनिन सहित द्वैवपु करि लीन्हो ॥
द्वै रथ द्वै सारथि द्वै सेना ❀ रहे संग पुरलोग उछैना ॥
गये बराबर दोउन धामा ❀ दोउन रुचि राखी घनश्यामा ॥

भूप विप्र कछु मर्म न जाने * मम घर आये प्रेमहिं माने ॥
प्रथमहिं करौं भूप घर गाथा * जेहि विधि मुनियुत गे यदुनाथा ॥
जबहिं विदेह गेह प्रभु आये * नृप सिंहासन शिर धरिलाये ॥
यहि विधि प्रभुकहँ आसन दीन्हौं * तैसे मुनिजनहूं कहँ कीन्हौं ॥
प्रथम मुनिनके चरण पखारयौ * पुनि हरिके पदमें जल डारयौ ॥

दोहा-भगवत अरु भागवतको, पद परछालित नीर ॥
सींच्यौ शिर अरु भवनमें, मिटी सकल भवभीर ॥ ९ ॥

निजकर चंदन अतर लगायो * भूषण बसन माल पहिरायो ॥
धूप दीप नैवेद्य देखायो * गोवृष शकुन हेत तहँ लायो ॥
तन मन धन पुनि अर्पण कीन्हौं * कृष्णचरणरज शिर धरि लीन्हौं ॥
पुनि प्रभुपद धरिकै निज अंका * मैथिल अघ अभिमानहु रंका ॥
मीजत मंद मंद पद दोऊ * बोल्यौ वचन सुनहु सब कोऊ ॥
सब प्राणिनके आतम आपू * जगसाक्षी विभु परम प्रतापू ॥
जो हम बहु दिनते करि राखा * सो प्रभु पूर करी अभिलाखा ॥
चरण कमलको दरशन पाई * आजु नयन गे मोर अघाई ॥
जो यह वेद पुराण बखाना * निज जन गृह गवनत भगवाना ॥
अपनो वचन करन सति सोई * यह घर धरचौ चरण निज दोई ॥
श्री अज शंकर शेष उदारे * हैं न मोहिं दासनते प्यारे ॥
यह जो तुम भाषहु यदुराई * सो सब जगमहँ प्रगट देखाई ॥

दोहा-ऐसे दीनदयालु प्रभु, तुम्हैं देवकीलाल ॥
त्यागि भजैं किमि और कहँ, को पुनि करै निहाल ॥ १० ॥

और भजैं जे तुम्हैं बिहाई * तिनकी गिरिपषाण समताई ॥
जे सज्जन तजि विषय विलासा * राखहिं तुव पदपंकज आसा ॥
तिनको प्रभु तुम कृपानिधाना * और काह दीजत निजप्राणा ॥
लै यदुवंश माहिं अवतारा * सुंदर यश दिगअंत पसारा ॥
दुखी जीवसागर संसारा * गाय गाय ते पावहिं पारा ॥
यदुपति सुयश मयंक तिहारो * हरनहार त्रिभुवन तम भारो ॥

ज्ञान रूप श्रीपति भगवाना ❀ नारायण ऋषि शांत महाना ॥
नाथ कृपाकरि मुनिनै समेतू ❀ बसहु कछुक दिन यही निकेतू ॥
ऐसी सुनि विदेहकी वाणी ❀ अतिप्रसन्न है सारँगपाणी ॥
बसे विदेह नगर कछु काला ❀ मिथिलापुर जन करन निहाला ॥
गेह सनेह अछेह विदेहू ❀ सेवत हरिकहँ सुधि तजि देहू ॥
धन्य धन्य मिथिला महराजा ❀ जिहि घर निवसत हैं यदुराजा ॥

दोहा-जिमि विदेहके गेहमें, मुनियुत कीन पयान ॥
तिमि श्रुतदेवहुके भवन, गवन कीन भगवान ११ ॥

लाये गृह लिवाय यदुनाथै ❀ नायो सकल मुनिनपद माथै ॥
द्विज श्रुतदेव परम अनुराग्यो ❀ पट फहरावत नाचन लाग्यो ॥
काठ कुशासन आसन माहीं ❀ बैठायो मुनि युत प्रभुकाहीं ॥
कुशल प्रश्न करि बहुरि उचारा ❀ भयो मनोरथ पूर हमारा ॥
अस कहि सहित नारि मुदमोयो ❀ मुनिन सहित यदुपतिपद धोयो ॥
सो जल लै अपने शिर धारा ❀ कोटि जन्म अघ आसहि जारा ॥
पतिते दुगुणो प्रेम तियाके ❀ दंपति कथा कहत कवि थाके ॥
निज करलै रस प्रभुहिं सुँघायो ❀ सुरभि मृत्तिका अंग लगायो ॥
हरि आगम प्रथमहिं ते जानी ❀ हेरि धरचो फल विप्र विज्ञानी ॥
ते अरप्यो द्विज लै निज हाथा ❀ लीन्हो सुधासरिस यदुनाथा ॥
प्रभु द्विज प्रीतिउदधि अवगाही ❀ खायो फलनि सराहि सराही ॥
पुनि द्विज शीतल जल लै आयो ❀ निजकर प्रभुकहँ पान करायो ॥

दोहा-अतिकोमल दलकमल युत, नवतुलसीदल माल ॥
प्रेम विकल अविरल विमल, मेल्यो गल ततकाल ॥ १२ ॥

यहि विधि हरिकहँ मुनियुत पूजो ❀ गुण्यो आपने सम नहिं दूजो ॥
पुनि अस मनहिं विचारन लागा ❀ कौन सुकृत मैं कियो अभागा ॥
परचो रह्यो जगअंध कूपमें ❀ लागिरह्यो मन कृष्णरूपमें ॥
सो हरि आपन विरद सँभारी ❀ दरशन दीन्हों भवन सिधारी ॥
जिन पदरज सब तीरथ मूला ❀ ते मुनियुत हरि भे अनुकूला ॥

अस विचार श्रुतदेव उदारा * अंबक अंबु उवाहत धारा ॥
निरखत यदुपति वदन मयंका * चापत चरण चारु धरि अंका ॥
मृदुल गिरा निज प्रभुहिं सुनाई * अहो मोहिं मिलिगे यदुराई ॥
सुनत कहत जे कथा तुम्हारी * पूजहिं वंदहि प्रीति पसारी ॥
तिनहिं ध्यानमहँ मिलहु मुरारी * पै कबहूं शशि भाग्य उजारी ॥
सो यदुवर मिथिला पगुधारी * मिले मोहिं निज भुजा पसारी ॥
नीक कर्म कबहू नहिं कीन्हो * कबहुँ न नाथचरण मन दीन्हो ॥
दोहा-ऐसे अधम अलालकौं, कीन्हौ आय निहाल ॥
सो नहिं करतब मोर कछु, तुमहो दीनदयाल १३॥
जे कपटी कुमती यती, विषय वासना पूर ॥
द्रवहु दुखी लखितिनहुँपर, यदपि रहो अतिदूर १४
जय जय भक्तन प्राण अधारा * जय निजजन तरुद्रोह कुठारा ॥
कारण और अकारण केरे * तुम हौं कारणवेद निवेरे ॥
जे तुम्हरे माया महँ मोहे * तुव दाया बिन ते नहिं सोहे ॥
तीनिहुँ ताप नशावन वारो * ऐसो है प्रभु दरश तिहारो ॥
मैं तो हौं लघु राउर दासा * विनय करूं अब है यक आसा ॥
प्रीति रीति प्रभु देहु बताई * करौं तैसहीं तव सेवकाई ॥
विप्रवचन सुनि कृपा निधाना * दीननके नाशक दुख नाना ॥
गहि निज हाथहिसों द्विजहाथा * बोले विहँसि वचन यदुनाथा ॥
तुमपर कृपा करनके काजा * आये मेरे संग मुनिराजा ॥
ये अनन्य मुनिजन मम दासा * भूरि भवन अघ करत विनासा ॥
और देव तीरथ हैं जेते * दरशत परसत सेवत तेते ॥
बहुत कालमहँ पावन करहीं * तऊ मोर जन जापर ठरहीं ॥
दोहा-जन्महिते सब जातिमें, विप्रजाति वर होइ ॥
ताहूपर जो तप कियो,तेहिसम द्विज नहिं कोइ १६
भई ताहुपे विद्या जाके * विन प्रयासते भवनिधि नाके ॥
तापर जो संतोषहु आने * ते द्विज सत्य विरंचि समाने ॥

तापर मोर भक्त जो होई ❀ त्रिभुवन ताके सम नहिं कोई ॥
यही चतुर्भुज रूप हमारो ❀ मोर दासते मोहिं न प्यारो ॥
सर्व वेदमय विप्र कहावै ❀ सर्वदेवमें मोहिं श्रुति गावै ॥
वैष्णव रूप मोर अति गूढा ❀ जानत नाहिं जनायहु मूढा ॥
मूरतिमें करि मोह महाने ❀ मम मूरति द्विजगुरु नहिं जाने ॥
जगकारण अरु जग मम रूपा ❀ जानहिं संतत संत अनूपा ॥
ताते मोते अधिक विचारे ❀ पूजहु मुनिन महीसुर प्यारे ॥
संतनके पद पूजत माहीं ❀ मम पूजन है जात सदाहीं ॥
म्वाहिं पूजै सन्तन तजि नेहू ❀ पूजन कबहुँ तासु नहिं लेहू ॥
यहि विधि निजजन महिमा गाई ❀ श्रुतदेवहिं रति रीति सिखाई ॥

दोहा—सुनि यदुपतिके वचनद्विज, मानिपरम आनंद ॥
पूज्यो यदुपतिके अधिक, नेहसहित मुनिवृंद ॥ १६ ॥
बहुरि विप्रसों है विदा, तिमि बहुलासहु पास ॥
गवन कियो मुनिसंगलै रमानिवास निवास ॥ १७ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अथ व्यासदेवकी कथा।

दोहा—अब मैं करहुँ प्रकाश कछु, व्यासदेव इतिहास ॥
पर्व सत्यवति शांश प्रगटि, कर पुराण तमनास ॥ १ ॥

रच्यो सप्तदश व्यास पुराना ❀ पुनि मनमें अस किय अनुमाना ॥
अतिशय अधम शूद्र अरु नारी ❀ अहै न वेदनके अधिकारी ॥
तरिहैं ज्ञान विना किहि भांती ❀ अस विचारकरि दयाअघाती ॥
भाषत भो भारत भगवाना ❀ छंद प्रबंध बंध विधि नाना ॥
तदपि न भयो ताहि सन्तोषू ❀ मिट्यो न दिलकर दीरघ दोषू ॥
विमन बैठि मुनि सुरसरि तीरा ❀ तहँ आयो नारद मतिधीरा ॥
क्यों उदास पूंछयो अस व्यासै ❀ वर्ण्यो व्यास सकल निज आसै ॥
रच्यो सप्तदश पूर पुराणा ❀ तैसहि भारतको निर्माणा ॥

पै न विमलमति भै मुनिराई ❀ कारण ताको देहु बताई ॥
नारद मुनि बोले मुसक्याई ❀ नहिं अनन्य हरिकीरति गाई ॥
नहिं भागवत चरित्रहु गायो ❀ ताते मन संतोष न पायो ॥
रच्यो व्यास भागवत पुराना ❀ हरि हरिजन यश रहै प्रधाना ॥
दोहा-धर्म कर्म विद्या विविध, यतन योग जपजोग ॥
स्वर्ग मार्ग विरचे अमित, भक्ति रंग नहिं लोग ॥ २ ॥
भयो अनर्थ एक जगमाहीं ❀ भक्तप्रधान कहब जेहि काहीं ॥
ते सब कहिहैं धर्मप्रमाना ❀ व्यासदेव तौ यही बखाना ॥
ताते व्यास सर्व पर जोई ❀ मारग भगति भनहु भव खोई ॥
मन गति शुद्ध न आन उपाई ❀ मिलहिं न विना प्रेम यदुराई ॥
अस कहि नारद कियो पयाना ❀ व्यास भन्यो भागवत पुराना ॥
यह देखहु सतसंग प्रभाऊ ❀ पायौ तोष व्यास मुनिराऊ ॥
ऐसेहिं व्यास अमित इतिहासा ❀ लघुमति कहँलौं करौं प्रकासा ॥
वेद पुराण संहिता देती ❀ व्यास कथाको जाने केती ॥
नारायण पारायण जेते ❀ व्यास अचारज मानत तेते ॥
कोउ नहिं व्यास सरिस उपकारी ❀ रचि पुराणजन जूह उधारी ॥
जो नहिं होत व्यास अवतारा ❀ तौ को करत पुराण प्रचारा ॥
तरत मंदमति जग केहि भांती ❀ मोहराति केहि भांति सिराती ॥
दोहा-पिता पराशर सुवन शुक, सत्यवतीसम मातु ॥
तासु सुयश वारिधि उतरि, को कवि पारहि जातु ॥ ३ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

अथ नंदादि गोपोंकी कथा।

दोहा-अब वृंदावनके सकल, नंदादिक जे गोप ॥
जिनकी गाथा कथन कछु, चलति मोर चित चोप ॥ १ ॥
पै कहँलौं किनकी कथा, कहौं सुनौ हो संत ॥
विहरत जिनके संग नित, वृंदावन श्रीकंत ॥ २ ॥

रूपमाला॥ अजते पिपीलकलों चराचर जीव जगत बसंत॥ सुर नाग मुनि गंधर्व किन्नर दनुज मनुज अनंत॥ निज सूक्ष्म वपु व्यापक सकल वपु थूल अंडकटाह॥ सनकादि ब्रह्माशिवादि ध्यावत तौन यदुकुलनाह॥ १॥ मचलत हरत नित नंद आंगन छांछ रोटी हेत॥ ब्रजधूरि धूसर अंग अमित अनंग छबि हरिलेत॥ रीझत रिझावत रोज रुचि खीझत खिझावत मात॥ रवि उदयते रवि उदयलों सेवन करत जेहिं जात॥ २॥ जेहि कहत माधव मुखहि नंदबबा हमैं कछु देहु॥ सो लेत ललकि उठाय हिये लगाय सहित सनेहु॥ यश जासु उचरत वेद सो नँदकी चरावत धेनु॥ वृंदाविपिन विहरत बजावत बार बारहिं वेनु॥ ३॥ सुत मातु पितु तिय नाथ भ्रातहु कुल कुटुंबहु देह॥ नंदादि सबते ऐंहि राख्यो कृष्णहीमें नेह॥ कोउ कहत सुत कहत कोउ कन्हुवा कहत कोऊ मीत॥ कोउ कहत पति कोउ कहत भ्राता कोउ गवावत गीत॥ ४॥ जो जग नचावत नयनलों ब्रजतिय नचावत ताहि॥ जो भयो वश नाहिं कबहुँ सो ब्रजगोपिका वशमाहिं॥ कहलौं कहाे ब्रजगोप गोपी धेनु धारन महिमा भूरि॥ मुख चारि तिमि त्रिपुरारि जिन पद चहत धूरि॥ ५॥

दोहा–वेद पुराण प्रमाण बहु, नंदादिकन चरित्र॥
सकल कहै रघुराज किमि, जासु भये हरिमित्र॥ ३॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंड एकोनविंशतितमोऽध्यायः॥ १९॥

अथ उद्धवकी कथा।

दोहा–शुद्धबुद्धि संतौ सुनौ, धरा धर्म आधार॥
कृष्ण सखा जेहि विधि रह्यो, उद्धव बुद्धिउदार॥ १॥

शिष्य बृहस्पतिको मतिवाना ❁ ज्ञाता विरति ज्ञान विज्ञाना॥
साधन योग समाधि अनेका ❁ उद्धव जानत विविध विवेका॥
रह्यो गर्भ उद्धव मनमाहीं ❁ ज्ञान विज्ञान रसिक कछु नाहीं॥
उद्धव जियकी यदुपति जान्यो ❁ सादर निज समीप महँ आन्यो॥

कह्यो वचन हे सखा पियारे * तुम हौ दोऊ नयन हमारे ॥
तुम मम सकलकार्यअधिकारी * जानहु मति गति गूढ हमारी ॥
जाहु सखा ब्रजकहँ यहि काला * मोरे विरहदुखी ब्रजबाला ॥
तिनहिं सुनायो मम संदेशा * कीन्ह्यो ज्ञान योग उपदेशा ॥
सुनि उद्धव अति अचरज माना * गोपी जानहिं काह विज्ञाना ॥
यह अचरज लागत मन मोरे * प्रभु जानत मोहिं भेजत भोरे ॥
अस विचार धरि शासनशीशा * चल्यो सखा सुमिरत जगदीशा ॥
आयो उद्धव ब्रजमें जबहीं * कृष्ण विरहमय देख्यो तबहीं ॥

दोहा-खोरि खोरि घर घर खरक, मुख मुख यही सुनात॥
हाय श्याम मिलिहौ कबै, तुम बिन छनयुगजात॥२॥

कवित्त-कुंजनमें भौंर पुंज गुंजरत श्याम श्याम बोलत विहंग त्यों कुरंग श्याम नाम है ॥ धेनु तृण मुख धरि श्यामई पुकारतींहै यमुन तरंग शोर श्याम सब याम है ॥ बैठतमें वागतमें सोवतमें जागतमें श्याम रट लागत न रागत विराम है ॥ कृष्णचंद्र विरह मवासी ब्रजवासी सबै रघुराज होर रहे श्याम श्याम श्याम है ॥ १ ॥

सवैया-उद्धव नंद यशोमतिके ढिग श्यामहि सों सतकारको पायो ॥
ज्ञान विराग विवेक विधान विशेषि तिन्है बहुभांति बुझायो ॥
पै नहिं टरो टरो मन प्रेमते सो कन्हुवा कन्हुवा गोहरायो ॥
उद्धव प्रेमको नेम विहाय त्यों ज्ञान विज्ञानको गर्व गवायो २॥
सांझ समय पहुँच्यौ ब्रज उद्धव रैन यशोमति बोधत बीती ॥
भोर भये जुरि आई सखी सब जानति प्रेमके नेमकि रीती ॥
श्याम सखा गुणिले यमुनातट पूंछन लागीं भई परतीती ॥
श्याम कहां मुख भाषत यों गिरि भूमि गई सिगरी मनबीती३॥
उद्धव गोपिनको नँदनंदनपै अनुरागको नेम निहारी ॥
ज्ञानविज्ञान विरागहु योग दियो मनते छन ताहि बिसारी ॥
दै परिदक्षिण पांय पऱ्यो रघुराज या वारहिं बार उचारी ॥
आज कृतारथहों है गयो अवलोकि तुम्है मानमोहनप्यारी४॥

दोहा-आयो मधुपुरको बहुरि, व्रजते उद्धव सोइ ॥
करि प्रणाम घनश्यामसों, विनय करत दिय रोइ॥३॥
सवैया-आजुलौं ज्ञान विज्ञान विरागको मोहिं गुमान रह्यौ गिरिधारी॥
रावरी भक्तिको लेश लह्यौ नहिं ज्ञानि सखाप्रिय सोई विचारी ॥
गोकुलको समुझावन व्याज पठायो हमें करिकै कृपाभारी ॥
प्रेम लह्यौ रघुराजहौं आज दियो करिछोह गुरुव्रजनारी ॥ ९ ॥
दोहा-सुनि उद्धवके वचन प्रभु, कह्यौ मधुर मुसक्याइ ॥
आजु भये सांचे सखा, व्रजातिय दरशनपाइ ॥४॥
व्रजातिय दरश प्रभावते, यात्रा समै मुरारि ॥
भक्तिरीति भाषी सकल, उद्धव निकट हँकारि॥५॥
एकादश अस्कंधमें, श्रीभागवत पुरान ॥
ममकृत आनँद अंबुनिधि, भाषाकियोबखान॥६॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे विंशतितमोऽध्यायः ॥ २० ॥

अथ घंटाकर्णकी कथा।

दोहा-अब वरणौं अद्भुत कथा, घंटाकरन पिशाच ॥
भयो दास यदुनाथको, शुद्ध भाव मतिसांच ॥ १ ॥
एक समय द्वारावति माहीं ❀ जहँ हरिरुक्मिणि वसतसदाहीं ॥
रुक्मिणि विनय करी करजोरा ❀ नाथ आश ऐसी अब मोरी ॥
देहु पुत्र यक त्रिभुवन जेता ❀ महाबली यदुकुलकर नेता ॥
शस्त्र शास्त्र महँ परम सुजाना ❀ त्रिभुवन जासु सरिस नहिं आना॥
रुक्मिणि वचन सुनत यदुराई ❀ बोले मधुर वचन मुसक्याई ॥
मम सम पुत्र होइगो तेरे ❀ अधिकहु जे गुण अहैं न मेरे ॥
मैं सुतहित कैलासहि जैहौं ❀ तपकरि शंकरदेव रिझैहौं ॥
करि प्रसन्न हर ले वरदाना ❀ देहौं तोहिं सुत आतम समाना ॥
असकहि शयन कियो घनश्यामा ❀ रही याम यक जबै त्रियामा ॥

तब उठि प्रात कर्म करिनाथा * सलिल पखारि चरण अरु हाथा ॥
मज्जन पूजन विधिवत कैकै * तेरह सहस धेनु द्विज देकै ॥
आये सभा सुधर्मा माहीं * बोलेउ उद्धव सात्यकि काहीं ॥
दोहा–पुरवासी सब आइकै, प्रभुकहँ कियो प्रणाम ॥
तहाँ सभा मधि कोटिशशि, सम आये बलराम ॥ २ ॥
उठी सभा बलरामहिं देखि * यदुपति उर भो मोद विशेखी ॥
कनकासन राजत बलरामा * दक्षिण दिशि सोहत घनश्यामा ॥
सभामध्य कृतवर्मा आयो * सात्यकि आइ प्रभुहि शिर नायो ॥
ताहि समय नकीबन शोरा * माच्यो सभा द्वार चहुँओरा ॥
आयो उग्रसेन महराजा * जेहि लखिलजितविभवसुरराजा ॥
उठे सुभट सब नृपहि जोहारे * बंद्यो दोउ वसुदेव कुमारे ॥
राजासन राज्यो महराजा * दाहिन राम वाम यदुराजा ॥
तेहि अवसर उद्धव तहँ आयो * कियो प्रणाम नाथ बैठायो ॥
जासु नीति बल सुरहु डेराहीं * यदुवंशी निवसैं सुख माहीं ॥
जासु बुद्धि बल हरिक्षिति शास्यो * दानव दुवन दुरासद नास्यो ॥
ऐसे उद्धवसों यदुराई * कह्यो वचन यादवन सुनाई ॥
मैं गमनहुँ तपहित कैलासा * शंकर लखन लगी उर आसा ॥
दोहा–अवशि और कारज कछू, सुनो सबै यदुवीर ॥
जौलों मैं आऊं नहीं, तौलों तुम धरि धीर ॥ ३ ॥
रक्षहु नगर सुभट सब भांती * सजग रह्यो संध्य दिन राती ॥
केशी कंस मल्ल मैं मार्‌यो * तिलक उग्रसेनहुंको सार्‌यो ॥
करी शत्रुता भूप घनेरे * नाश लहे लगि सायक मेरे ॥
ताते पौंड्रादिक शठभूपा * मानत वैर मोर बलरूपा ॥
मोहिं बिन सून जाने सब ऐहैं * करहिं उपद्रव छिद्र जो पैहैं ॥
सावधान ताते सब रहियो * निशि वासर आयुधको गहियो ॥
राखेहु खुलो एक दरवाजा * रहैं चारि दिशि वीर समाजा ॥
विना चक्र अंकित नहिं आवै * बिना चक्र अंकित नहिं जावै ॥

नाहिं जैयो तजि नगर सिकारे * सजग चमू राख्यो पुर द्वारे॥
पुनि सात्यकिसों कह्यो मुरारी * तुमहो वीर धीर धनु धारी॥
पहिरि कवचकुंडल दस्ताना * लेकर खड्ग गदा धनु बाना॥
रैन शयन कीजियो न प्यारे * करयो जो अग्रज कहैं हमारे॥
दोहा-सुनि यदुपतिके वचन अस, सात्यकि बोल्यो बैन॥
तुव प्रसाद तिहुँ लोकके, बीरन ते मोहिं भैन॥ ४॥
इंद्र वरुण यम धनद समेतू * जो आवहिं चढि वृष वृषकेतू॥
मोहिं जीवत पुर लखन न पैहैं * समर औंध शिरकरि सब जैहैं॥
क्षुद्र महीपति केतिक बाता * तुव प्रताप सब सरल जनाता॥
सोइ करिहौं कहिहैं जस रामा * रामप्रताप सहज सब कामा॥
पुनि बलभद्रहि प्रभु करजोरी * कह्यो विनय सुनु अग्रज मोरी॥
द्वारवती यदुवंश तिहारा * रक्षेहु प्रभु जस होइ विचारा॥
सुनत राम बोल्यो मुसक्याई * कौन हेतु शंकहु यदुराई॥
देखहु अस कोहुकी गति नाहीं * जो मम अछल लखै पुरकाहीं॥
उग्रसेनसों कह भगवाना * रह्यो भवन नहिं कियो पयाना॥
पुनि शासन यदुवंशिन दीन्ह्यो * अग्रज शासन सबविधि कीन्ह्यो॥
अस कहि उठि निज मंदिर आये * यदुपति खगपति तुरत बोलाये॥
तुरत तहां आयो उरगारी * पर्‍यो चरणकहि जय गिरिधारी॥
दोहा-हरि मिलि विनतासुवन कहँ, तापर भये सवार॥
चले धनद दिशिको हरी, सुमिरत शंभु उदार॥ ५॥
करहिं देव सुस्तुति नभ माहीं * पेखत प्रभुहि चले सँग जाहीं॥
बदरीवन कहँ गये मुरारी * जहँ सुरसरी वहति अघहारी॥
तहँ तप कियो वास बहु जाई * वृत्तवधन अघ दियो जराई॥
जहँ रघुपति रण रावण मारी * कियो महातप जन उपकारी॥
सिद्ध मुनीश देवऋषि नाना * करहिं महातप हित कल्याणा॥
सो बदरीवन तीर्थ अनूपा * पहुँच्यो जब तहँ यदुकुलभूपा॥
तहँके मुनि आगू चलि लीन्हे * बारबार प्रभु वंदन कीन्हे॥

सांझ समय पहुँचे यदुराई ❀ घेरलियो मुनीश सदुदाई ॥
मुनिमंडल प्रभु कियो प्रणामा ❀ लही आशिषा पूरणकामा ॥
कोउ मुनि चमरविजन कोउ धारे ❀ प्रभुकहँ सेवन लगे सुखारे ॥
मुनिन समाज देखि यदुराजा ❀ उतर्‍यो भूमि तज्यो खगराजा ॥
गवनत चरणकमल महि माहीं ❀ कुश कंकर कंटक द्रविजाहीं ॥
दोहा–बदरी विपिन प्रवेश किय, मुनि आश्रम यदुनाथ ॥
जहँ जहँ मुनिवर लखत प्रभु, तहँ तहँ नावत माथ॥६॥
कोउ मुनिजन दीपिका दिखावै ❀ कोउ प्रभु कहँ आश्रम लै जावै ॥
अर्घ पाद्य आचमन करावै ❀ भोजन कंद मूल फल ल्यावै ॥
अतिशै मुनिन करत सतकारा ❀ चले जात वसुदेवकुमारा ॥
अत्रि वशिष्ठ अगस्त्य उदारा ❀ गौतम भरद्वाज सुविचारा ॥
नारद वाल्मीकि मुनि व्यासा ❀ औरहु मुनि अनन्य हरिदासा ॥
जय हरि करत चहूंकित शोरा ❀ यथा निरखि नीरद कहँ मोरा ॥
जाय कछुक दूरी यदुराई ❀ निरख्यौ सुथल मनोहर ताई ॥
बैठे यदुकुल कमल दिनेशा ❀ आये सकल मुनिहुँ तेहि देशा ॥
हरिकहँ घेरि चहूंकित बैठे ❀ मानहुँ मोद महोदधि पैठे ॥
हरिकहँ सबै कुशासन दीन्हे ❀ वार वार विनती अस कीन्हे ॥
कहा करैं हम नाथ तिहारो ❀ है तुम्हरो सर्वस्व हमारो ॥
बोले वचन नाथ मुसकाई ❀ हम तो अहैं दास मुनिराई ॥
दोहा–शंभु प्रसन्न करावने, हम आये यहि देश ॥
तासु उपाइ बताइय, हियको हरण कलेश ॥ ७ ॥
बोले मुनिवर सुनहु मुरारी ❀ तुम महेशमानस संचारी ॥
जाको चहो बडापन देहू ❀ राखहु सदा दासपर नेहू ॥
हरि कह अब मैं यहि थल रैहौं ❀ साधि समाधि महा तप ठैहौं ॥
निज निज आश्रम जाहु सुखारी ❀ तुममें अतिशय प्रीति हमारी ॥
मुनि प्रणाम करि यदुपतिकाहीं ❀ आये निज निज आश्रम माहीं ॥
तब उतंग गंगाके तीरा ❀ बैठ्यो आसन करि यदुवीरा ॥

कह्यो गरुड कहँ जाहु खगेशा * फिरि सुमिरत आयो यहि देशा॥
पन्नगारि गवन्यो निजधामा * मन यकाग्र करि तहँ घनश्यामा॥
साधि समाधि उपाधि अबाधी * मनगति बांधि शंभु अवराधी॥
मूंदि नैन तनु अचल मुरारी * लाग्यो करन तहां तपभारी॥
देखि सबै सुर मुनि तहँ केरे * विस्मित भे वनमाहँ घनेरे॥
सकल जगत इनके पद ध्यावै * सो केहिहेत समाधि लगावै॥
दोहा-दीप शिखासम अचल जब, यदुपतिमनकरिलीन॥
प्रभु कौतुक सब जानि हर, विहँसे परम प्रवीन॥८॥
शंकरके गण अगनतहँ, रहे चारिहूं वोर॥
विना प्रयोजन हँसत हर, हेरि हिये भो भोर॥९॥
हरगण मध्य अनन्य उपासी * ईश त्यागि वियईश न आसी॥
घंटाकरण नाम तेहि साचा * रह्यो एक तहँ प्रबल पिशाचा॥
घंटा बांधे कानन माहीं * शिव तजि नाम सुनै श्रुतिनाहीं॥
धोखे कोउ कछु ताहि सुनावै * शिर कँपाइ तब घंट बजावै॥
सो लखि हर विन कारण विहँसत * बोल्यो वचन शंभुपद परसत॥
प्रभु मोसों यह होत ढिठाई * चूक क्षमहु अपनी करुणाई॥
विन कारण प्रभु हँसब तिहारा * यह संदेह टरत नहिं टारा॥
जो कछु होइ मोहिंपर छोहू * तौ बताइ दीजै तजि कोहू॥
सुनि पिशाचके वचन पुरारी * बोले वचन कृपा करि भारी॥
मोरनाथ बदरी वन आयो * मेरे हेतु समाधि लगायो॥
यह अचरज लागत मोहिं भारी * कौतुक करत कौन गिरिधारी॥
प्रभुमनकी गति जानि न जाती * किहे विचार न बुद्धि सिराती॥
दोहा-उनहींके हम दास हैं, करैं हमारो ध्यान॥
यह विचारि हम हँसि दियो, हेतु कछू नहिं आन॥१०॥
कह्यो पिशाच नाइ तब शीशा * अधिक कोउ तुमहूंते ईशा॥
शंभु कह्यो नहिं जानसि मूढा * मम प्रभु तत्त्व गूढते गूढा॥
हम न कहब तैं नाहिं अधिकारी * यही मानि ले बात हमारी॥

कही पिशाच तबै मुदमानी * देहु मुक्ति मोहिं डमरूपानी ॥
सेवन करत बहुत दिन बीते * ह्वै प्रसन्न बकसहु गति जीते ॥
हरिकहँ भजै जौन मोहिं देही * ताहि पदारथ हम सब देही ॥
मुक्ति देनकी शक्ति न मेरे * मुक्ति मिलत हरिके हग फेरे ॥
तेई हरिपिशाच मम स्वामी * सकल जगतके अंतरयामी ॥
तब पिशाच पुनि वचन उचारा * देहु बताइ जो नाथ तुम्हारा ॥
कहा बसहिं केहि विधि मैं पैहौं * कौन उपाय समीप सिधैहौं ॥
देहु विशेषि बताइ विधाना * जेहिविधि मिलै मोहि भगवाना ॥
सुनि पिशाच वाणी गौरीशा * बोले परसि पिशाचहिं शीशा ॥
दोहा-ममप्रभु पदरति तोरिभै, तोपर भै रति मोरि ॥
सुनु उपाइ जाते मिलैं, नाथ दूरिते दौरि ॥ ११ ॥
पर ते परे ईशके ईशा * मैं विधि जेहिपद नाऊं शीशा ॥
सो प्रभु हरण हेत भुवि भारा * लीन्ह्यो यदुकुलमहँ अवतारा ॥
देनहेत प्रभु मोहिं बडाई * सुत याचन बदरी वन आई ॥
बैठ्यो साधि समाधि अबाधी * जोहिं सुमिरत छूटइ सब व्याधी ॥
असकहि शंभु कृष्ण गुननामा * वरण्यो जस चरित्र वपुधामा ॥
चहो जो लेन मुक्तिकर लाहू * तौ पिशाच बदरीवन जाहू ॥
भजिहौ कपट त्यागि हरिकाहीं * मुक्ति मिली संशय कछु नाहीं ॥
मम प्रभुके यह नाहिं विचारा * नीच ऊंच तिमि गुणी गँवारा ॥
शुद्ध भावते भजै कृपालै * दीनदयालु द्रवैं तेहि हालै ॥
ऐसी सुनि शंकरकी बानी * घंटाकरण महामुद मानी ॥
करि परदक्षिण हर शिर नाई * चल्यो पिशाच जयति धुनिलाई ॥
लाखन संग पिशाच कराला * चले कूद कारि तबहिं उताला ॥
दोहा-जेहिनिशिहरिबदरीविपिन, बैठि समाधि लगाइ ॥
तेहिनिशि घंटाकरणतहँ, आयो अतिरवछाइ १२ ॥
श्वान हजारन तेहि सँग माहीं * छोडत व्याघ्र वराहन पाहीं ॥
धरहु धरहु अस भणत पिशाचा * घोर शोर यह कानन माचा ॥

पकरहु मृगन जान नहिं पावैं * असकहि तेहि पिशाचमहँ धावैं ॥
जातजात मृग छोडहु श्वाना * मीठ माछ पकरहु मृग नाना ॥
श्वानन छोडत जय हरि भाखी * हनत मृगा जय हरिदै साखी ॥
जय माधव मुकुंद यदुनंदन * असकहि भक्षत वनचर वृंदन ॥
जयजयजय देवकी किशोरा * यही सोर माच्यो चहुँ ओरा ॥
कोउ गहि मृगन कराहि अस्वादा * मिल्यौ मोहिं यह कृष्ण प्रसादा ॥
कोउ कह ये मृग हरिके योगू * करब निवेदन हरि हित भोगू ॥
कोऊ करहिं रुधिरकर पाना * हनत वदत जय जय भगवाना ॥
कोऊ मृतक मानुष तन खाहीं * आजु लखब हरि अस बतराहीं ॥
पकरें श्वान जबै मृग काहीं * जय हरि कहि मुखपोंछत जाहीं ॥

दो०—अस कोउ रह्यो पिशाच नहिं, क्षण क्षण जेहि मुख माहिं
राम कृष्ण गोविन्द हरि, गिरिधर निकसत नाहिं ॥ १३ ॥

भागत कूह करत करि जूहा * पीछे लगत पिशाच समूहा ॥
भर भर सोर मच्यो वनमाहीं * दौरत दिशन पिशाच देखाहीं ॥
घंटाकरण कहत अस वाणी * हेरहु सब मिलि सारँगपाणी ॥
शंभु वचन सत मृषा न होई * देखन चहत कृष्ण कहँ कोई ॥
बदरी वन यदुपति चलि आये * प्रभु पद लखन लागि हम धाये ॥
हेरत हरि कहँ सकल पिशाचा * वनमहँ श्याम राम रवमाचा ॥
खोजत यदुपति खेलि अखेटू * यही भूमि ह्वैहै भरिभेटू ॥
इतै कृष्ण काउ प्रेत पुकारत * सो सुनि एकहिं एक हँकारत ॥
तेहि वन रीछ मृगा वनराजे * करि चिकार चारों दिशि भाजे ॥
पशुन पिशाचन सोर महाना * भुवन भीति कर भरयो दिशाना ॥
आरत सोर सुन्यो यदुवीरा * लग्यो विचार करन धरि धीरा ॥
कौन उपद्रव वनमहँ भयऊ * को आयो जीवन दुख दयऊ ॥

दोहा—श्वान सोर इक ओर अति, तिमि पिशाच रव घोर ॥
बिच बिच कोउ जय जय कहत, लेत नाम पुनि मोर ॥ १४ ॥

तेहि औसर वन जीवन जूहा * नाथ लख्यो आवत करि कूहा ॥

आरत रव सुने दीनदयाला * रहि न सकी समाधि तेहिं काला॥
नैन खोलि भे सजग मुरारी * सहसन श्वान समूह निहारी॥
पीछे लगे पशुनके धावत * धरत लरत रव छावत आवत॥
श्वानन पीछे घोर पिशाचा * आवत धावत कहि यह साचा॥
मिलत नाथ हेरहु सब कोई * हम प्रभुके प्रभुके प्रभु सोई॥
भक्षत मांस रुधिर करि पाना * बोलत जय यदुपति भगवाना॥
कहुँ बाणनसे मृगन सँहारैं * बहुत पशुन श्वानहुँ धरि डारैं॥
यहि विधि प्रेत जाति पशुश्वाना * आये जहँ बैठे भगवाना॥
तिन प्रेतन पीछे वनमाहीं * देखिपरचो प्रकाश चहुँधाहीं॥
लिये पिशाच मसाल हजारन * उदित मनहुँ वन निशितमवारन॥
लिये मसाल प्रेत अस भाषैं * हे हरि तुव दरशन अभिलाषैं॥

दोहा—परम कराली दूसरी, लंबवान जिन केश॥
सहसन महा पिशाचिका, देखि परीं तेहि देश॥१५॥

किलकिलाहिं बालक ल अंका * वसनरहित धावहिं नहिं शंका॥
रोवत शिशु बोधहिं बहु भांती * मिलिहैं अवशि नाथ यहिराती॥
तीन पिशाचिनि मंडलमाहीं * लख्यो नाथ द्वै प्रेतन काहीं॥
मनमहँ हरि तब कियो विचारा * लेत नाम मम त्यागि अचारा॥
कोउ यह पाप पुण्य बड दोऊ * जिमि विष खायअमीपियकोऊ॥
वदन उचारत मोरहि नामा * केहि ढिगवसी मुक्ति यहि यामा॥
यहि विधि प्रभुकहँ गुणत तहाहीं * नियराने पिशाच क्षणमाहीं॥
मुखकराल अति लंबशरीरा * पीत लोम तिमि नैन गँभीरा॥
लंब केश रसना दोउ काढे * कृशतन तीनि ताल लगि बाढे॥
हाहा हीही बोलत बानी * मनुज भांति अंगन लपटानी॥
यककर नरतनु लै मुख खाहीं * रुधिर पान बहुवार कराहीं॥
मृतक मनुज तन बहु गुणबांधे * आवत चले कठोरत कांधे॥

दोहा—बानि वदत अनेक विधि, हँसत ठठाय ठठाय॥
दुहुँन जंघके वेगते, टूटत तरुसमुदाय॥१६॥

कटकटाइ रद अधरन चाटत * आमिष खाय और कहँ बाँटत ॥
नख अरु अस्थि चर्म तन माहीं * आमिष अंबर तनमहँ नाहीं ॥
यहि विधि दोउपिशाच हरि दासू * घंटाकरण अनुज पुनि तासू ॥
घंटाकरण कहत अस बाता * कृष्ण लखब कब दृग जलजाता ॥
कहँ निवसत बदरीवन स्वामी * केहि विधि लखबआजुखगगामी ॥
श्याम शरीर सुराजिवनैना * महा मनोहर करुणाऐना ॥
कहां बैठि प्रभु साधि समाधी * आजु होब हम हरि अवराधी ॥
कौन पाप हम पूरब कीन्ह्यो * योनि पिशाच विधाता दीन्ह्यो ॥
पै हम सम अघ को जगमाहीं * निरख बहुरि पदपंकज काहीं ॥
रुधिर पान अरु मांस अहारा * हमहित निरमान्यो करतारा ॥
हमते मनुज अधिक अज्ञानी * भजे न जे जग जानकि जानी ॥
लरिकाई लगि गै लरिकाई * तरुणी ताकत गै तरुणाई ॥

दोहा-बैस बुढाईकी भई, तब असमर्थ महान ॥
घरताकत मरिगो कबहुँ, भजो नहीं भगवान॥ १७॥

लह्यो न भजन केर अवकासू * भोगि नर्क लह गर्भनिवासू ॥
गर्भ सूत्र मलकुंडाहिं माहीं * दुखित दीन्ह दशमास सिराहीं ॥
भयो जन्म लाग्यो जंजाला * तीनौपन बीते तेहि हाला ॥
यहि विधि भ्रमत रहत जगमाहीं * बिना भजन उधरत कोउ नाहीं ॥
जानिहु कै जन ठानत पापा * यहि महिमा संसार अमापा ॥
राजहिं मारि करब हम राजू * कहत कहत नाशत यमराजू ॥
चोरकरी जोर वधन भूरी * यही कहत भै आयुष पूरी ॥
यहि डरवाइ लूटि धन लेवै * नारी सुत बंधुन कहँ देवै ॥
यही कहत सब उमिरि बितायो * कछु नहिं हाथ लग्यो न लगायो ॥
आशा गुण बांधे इमि प्राणी * करत जीव पीडा अभिमानी ॥
गृहको कार्य करत लगि प्रीती * कबहुं न मानत प्रभुपरतीती ॥
आनेके आमिष तन पोषैं * बार बार जीवनपर रोषैं ॥

दोहा-करत कबहुँ हरिभक्ति हूं, तऊ अर्थके हेत ॥
मरण सुरति बिसरायकैं, घरको बांधत नेत ॥ १८॥

करत अनेक मनुज रोजगारा ❀ मनहुँ आपही हैं करतारा ॥
द्रुत बल बूझत नाहिं बुझाये ❀ उदरहेतु बहु देशन धाये ॥
दासा सूर चतुर कहवाये ❀ ज्ञान विराग भक्ति विसराये ॥
मतिकुल बलकर तव अभिमाना ❀ कियो जन्मभरि तजि भगवाना ॥
यदपि कर्म भोगत यहि लोकू ❀ तदपि न तासु कहत कछु शोकू ॥
भाग्यविवश कोउ सुमति सिखावत ❀ तौ ताकेपर कोप देखावत ॥
ज्ञान विज्ञान विविध मुख भाखैं ❀ तातपर्य सब धनमहँ राखैं ॥
अजर अमर सम गुणत शरीरा ❀ जोरत धन दे प्राणिन पीरा ॥
यद्यपि न सुख दुख घटत घटाये ❀ तदपि उपाय चरत चितचाये ॥
असे ग्राह इव काल कराला ❀ सो न करत सुधि कौनेहुँ काला ॥
भवरुज रोजहि रीझति देहू ❀ तापर करत ताहि पर नेहू ॥
तनहूंते प्रिय सुत तिय लागे ❀ जे लखि मृतक दूरि ते भागे ॥

दोहा—यह जो मैं बरणन कियो, शंभु प्रसाद विराग ॥
ते औगुण मम तन भरे, विघन यथा बहु याग १९॥
घोर रोग संसार यह, छिन्न करत सब काल॥
विश्ववैद दूजो नहीं, विना देवकीलाल ॥ २० ॥
याहि विधी घंटाकरण, भ्रातसंग बतराइ॥
हेरत हेरत विपिन महँ, गयो नाथ नजिकाइ॥२१॥

लख्यो पिशाच बैठ गिरिधारी ❀ मानि मनुज अस गिरा उचारी ॥
अहो कौन तुम कहँते आये ❀ कौन हेतु इत ध्यान लगाये ॥
निर्जन वन संकुलित पिशाचा ❀ घोर श्वान वन जीवन सांचा ॥
नहिं पिशाच पेखत डर लागे ❀ तोहिं देखि मो मति अतिरागे ॥
राजिवनयन अंग सुकुमारा ❀ श्याम शरीर द्युतिय मनुसारा ॥
किधौं इंद्र यम वरुण कुबेरा ❀ धौं किन्नर गन्धर्व निवेरा ॥
कहो मनुज तुम सत्य बखानी ❀ नहिं भय मानु प्रेत पहिचानी ॥
घंटाकरण कह्यो यहि भांती ❀ तब बोले संतन दुख घाती ॥
हम क्षत्री जानहु यदुवंशी ❀ लोकनके रक्षक अरिध्वंसी ॥

शंकर निकट जाहिं कैलासा ❀ रजनी जानि कियो इत वासा ॥
कहो कौन तुम अहो भयंकर ❀ घों कोऊ हो किंकर शंकर ॥
कौन हेत बदरीवन आये ❀ कौन तुम्हैं मुनिवास बताये ॥
दोहा-परद्रोही नास्तिक शठ, इत आवत नहिं कोइ ॥
सेवित सिद्ध सुरर्षिगण, जात अघी अघ धोइ ॥२२॥
अब न पिशाच जाहु तुम आगे ❀ बैठ करत तप मुनि बडभागे ॥
खेलहु इतै न प्रेत शिकारा ❀ जीव भयाकुल भगत अपारा ॥
जो आगे जैहो लै श्वाना ❀ तौ हम हनब अवशि बहु बाना ॥
मुनिसेवक हमको तुम जानो ❀ बदरी वनके रक्षक मानो ॥
बैठहु प्रेत समीप हमारे ❀ जानन चहत हवाल तिहारे ॥
सुनत प्रेत प्रभुकी अस बानी ❀ बैठि गयो अचरज मनमानी ॥
यह मानुष नहिं मोहिं डेराता ❀ पूंछत सहज सनेहते बाता ॥
मम प्रभुको यह खोज बताई ❀ तहँ पुनि जाव उये दिनराई ॥
अस विचारि दोउ प्रेत सुजाना ❀ लगे करन वृत्तांत बखाना ॥
सुनहुँ मनुज अब कथा हमारी ❀ जय सच्चिदानंद गिरिधारी ॥
हम हैं घंटाकरण पिशाचा ❀ शंकर किंकर अधम नराचा ॥
यह सेना सब अहै हमारी ❀ श्वानहु जानहु मोर शिकारी ॥
दोहा-मैं बांध्यो घंटा श्रवण, सुनौं न जेहिं हरिनाम ॥
करि बहु सेवा शंभुकी, मांग्यो मुक्ति ललाम ॥२३॥
तब जो कह्यो मोहिं त्रिपुरारी ❀ सो वृत्तांत सुनहु तुम भारी ॥
अस कहि घंटाकरण सुजाना ❀ सुमिरण करन लग्यो भगवाना ॥
जय जय जगन्नाथ यदुनाथा ❀ जय हरि कृष्ण विष्णु शुचिगाथा ॥
घंटाकरण नाम वपु घोरा ❀ मांस अहार करहुँ चहुँ ओरा ॥
मृत्यु सरिस जीवन मैं मारों ❀ धनद अनुगमैं ग्रामन जारों ॥
मोर अनुज यह कालहु काला ❀ पैशाची मम सैन कराला ॥
क्षमहु मोर अपराध अपारा ❀ हे दयालु देवकी कुमारा ॥
यहि विधि सुमिरि नाथ पद ध्याई ❀ प्रभु पिशाच अस गिरा सुनाई ॥

शिवसों मुक्ति जबै हम याचे * शंकर कह्यो वचन मोहिं सांचे ॥
हैं हरि एक मुक्तिके दाता * अवदाता ज्ञाता जनत्राता ॥
तब मैं कह्यों बहुरि कर जोरी * किमि सुधि करिहैं हरि हर मोरी ॥
मैं बांधे घंटा श्रुतिमाहीं * हरिको नाम सुनौ जेहि नाहीं ॥
दोहा-करहुँ सर्वदा विष्णुकी, निंदा चित्त लगाय ॥
कौनी सेवा रीझिकै, देहै गति यदुराय ॥ २४ ॥
तब हर कह्यो मोहिं सुनु दासा * करुणानिधि हैं रमानिवासा ॥
जो छल छांडि भजैगो हरिको * तो प्रभु फेरिहैं दया नजरिको ॥
तब मैं कह कहँ हैं भगवाना * कह्यो बहुरि वन कियो पयाना ॥
मैं कह केहि विधि दरशन होई * हर कह जा तहँ श्रम इतनोई ॥
मैं कह नाम रूप अरु धामा * सो बताइये पूरणकामा ॥
तब हर कह्यो मोहिं यहि भांती * अज अनादि अच्युत अघघाती ॥
हरणहेत भूमंडल भारा * लियो नाथ यदुकुल अवतारा ॥
बसहिं द्वारिका नाथ हमारे * सिंधु तीर देवकी दुलारे ॥
तब मैं शंभु चरण शिर नाई * आयौं बदरी आश्रम धाई ॥
अब खोजो ह्यां हरिहि न पाऊं * कहा करौं मैं कित चलिजाऊं ॥
शंकर वचन मृषा नहिं होई * मोरे मन विश्वास इतनोई ॥
ताते अस विचार है मोरा * रजनी भई बसौं यहि ठौरा ॥
दोहा-हरिहिं हेरि सब ठौर इत, मनुज भये पुनि भोर ॥
जाइ द्वारिका लखन हित, श्रीवसुदेवकिशोर ॥२५॥
रोला छंद-ब्रह्मण्य सूर शरण्य श्रीपती करुण वरुण निवास ॥ कर्ता जगतहर्ता जगत भर्ता जगत सविलास ॥ आनंदकंद निरासद्वंद विलाश कर अरिवृंद ॥ स्वच्छंद रूप अमंद देखब आजु यदुकुलचंद ॥ सेवत खिराने वर्ष बहु शंकर सुपाद सरोज ॥ जालिम जगत जंजाल भोग्यो लग्यो सुकृत न खोज ॥ मोहिं दीन जानि महेश करि उपदेश दीन अनंद ॥ द्रुत दौरि दोऊ दृगन देखब आजु यदुकुलचंद ॥ मैं पतितपूर पिशाच तापित पाप पावक आंच ॥ नहिं याचहित

किय याचना खाचे रह्यो खेटक खांच ॥ मम सुकृत जागी भूरि भागी भयो विश्वबेलंद ॥ पद परसि पूरणकाम देखब आजु यदुकुलचंद ॥ हे मनुज जो तुम दनुज नाशन कहूं निरखे होय ॥ तौ देहु वेगी बताइ मम उपकार करूं इतनोय ॥ हम झपटि लपटब चरण दपटब दुरित तजि छलछंद ॥ अब जनम करबे सुफल अपनो लखत यदुकुलचंद ॥

दो०—यहि विधि कह्यो पिशाच जब, निरखितासुअभिलाष ।
मंद मंद मुसकाइ तहँ, रीझिगये प्रभुलाष ॥ २६ ॥

कह्यो पिशाच बहुरि हरिकाहीं ❀ मनुज जाहु अपने थल माहीं ॥
हम इत नित्य कर्म कछु करिहैं ❀ भोर भये पुनि अनत सिधरि हैं ॥
असकहि घंटाकरण पिशाचा ❀ रुधिर पानकरि अतिसुखराचा ॥
कीन्ह्यो आमिषविपुल अहारा ❀ नर आंतनको हार उतारा ॥
मज्जन कियो गंग महँ जाई ❀ बैठ कुशासन तहां बिछाई ॥
महि अभिमंत्र्यो सुरसरि बारी ❀ श्वान समूहन दियो निकारी ॥
आसन बांधि समाधि लगाई ❀ कियो अचलचित सुमिर कन्हाई ॥
नाथ मिलन मन करिअभिलाषे ❀ करिकै रचन वचन अस भाषे ॥
जय जय वासुदेव भगवाना ❀ शंख चक्र धर कृपा निधाना ॥
जय नारायण विष्णु मुरारी ❀ जय यदुनंदन अधम उधारी ॥
तुम्हरे सुमिरण मनशुचि होऊं ❀ अपनो जन्म जगत नहिं जोऊं ॥
तुव सेवक ह्वै बसों समीपा ❀ दहै चक्र मम काय प्रतीपा ॥

दोहा—जरामरण अति दुसह दुख, होइ न मोहिं संसार ॥
कोटि कामतरु सरिस तुम, अर्थनके दातार २७॥

करौं बहोरि विनय कर जोरी ❀ जो जो योनि देहु प्रभु मोरी ॥
तहँ तहँ होइ कंजपद प्रीती ❀ नहिं भूलै परभाव प्रतीती ॥
कर्म विवश जहँ जहँ मैं जाऊं ❀ निशि वासर तुव पद शिर नाऊं ॥
बार बार विनती सुनि लीजे ❀ मरण समय विसमरण न दीजे ॥
दिन दिन यामयाम क्षणक्षणमें ❀ रहै मोर मन पद कमलनमें ॥
पांवर पतित पिशाच विचारी ❀ दया न त्यागहु मोर मुरारी ॥

शरणागत मोको प्रभु जानो * पर पीडन सुभाव मम मानो ॥
तुमहीं समरथ दुतिय न कोऊ * महामूढहू जानत सोऊ ॥
शरण परयो द्वारिका विलासी * अब न होइ जामें मम हांसी ॥
राखव नाथ शरणकी लाजा * जेहि विधि राखि लियो गजराजा ॥
पुनि पुनि हाथ जोरि अस मांगों * सुखदुखमहँ अरु जहँ तहँ वागों ॥
बैठत खात पियत अनुरागत * सहज कठिन सोवत अरुजागत ॥
दोहा-कर्म विवश जहँ २ जगत, जाय मोरि यह देह ॥
तहां तहां अक्षय अचल, होइ नाथ पदनेह ॥ २८ ॥
अस कहि नरआंतनअँगधांधी * सुमिरत यदुपति साधि समाधी ॥
नासाअग्र अचल दृग कीन्ह्यो * लाग्यो जपन मंत्र हरदीन्ह्यो ॥
याहि विधि अचल समाधिलगाई * भयो अनन्य दास रघुराई ॥
भयो पषाण समान पिशाचा * छल बल छोडि राम रतिसाचा ॥
पेखि प्रेत कर कौतुक नाथा * भरि आयो आंखिन गहँ पाथा ॥
अचरज मनमहँ मानि मुरारी * सत्य कियो यह भक्ति हमारी ॥
सोवत जागत बैठ बनावहु * पीवत शोणित आमिष खावहु ॥
जगन्नाथ माधव नारायण * यदुवर रघुवर दीन परायण ॥
मेरो नाम जपत वसु यामा * मोर मिलन दूजो नहिं कामा ॥
कियो जन्म भरि जो यह पापा * छूट्यो सकल नामके जापा ॥
अंतःकरण शुद्ध है गयऊ * अविचल मोर प्रेम उर ठयऊ ॥
याहि आपनो अब रूप देखाऊं * अधम उधारण नाम कहाऊं ॥
दोहा-अस विचार यदुनाथ तहँ, प्रेत हियेमहँ जाइ ॥
अति अनूप अनुरूप निज, दीन्हों रूप देखाइ ॥ २९ ॥
चक्र गदाधर धनुष विराजत * कटि तुणीरते गुच्छ बिछावत ॥
पीतवसन सोहत बनमाला * मणिकिरीटकौस्तुभ छबिजाला ॥
श्याम जलद सम सुभग शरीरा * चारिबाहु सुंदर यदुवीरा ॥
मुख प्रसन्न खगपति असवारा * जीव चराचर पति संसारा ॥
ऐसो रूप निरखि हियमाहीं * गुण्यो कृतारथ अपने काहीं ॥
अचल समाधि पिशाच लगायो * हरिपदते नहिं चित्त डोलायो ॥

जबते दियो शंभु उपदेशा * तबते कीन्ह्यो यतन अशेशा ॥
अस सरूप नहिं कबहुँ देखाना * देख्यो यथा आज भगवाना ॥
मोपर भे प्रसन्न यदुराई * निज माधुरि मूरति दरशाई ॥
अब उघारिहों नैननि नाहीं * लखिहों रूप सदा हियमाहीं ॥
याते अधिक न और अनंदा * देखि परे हित यदुकुलचंदा ॥
प्रेम सिंधुमहँ मगन पिशाचा * ताको मलहारि मूरति राचा ॥

दोहा-बार बार दृग बहत जल, रोमांचित सब गात ॥
निरखि निरखि यदुपति सुछबि, आनँद उरनसमात ३० ॥

यहिविधि कियो पिशाच समाधी * बीति गयो इक याम अबाधी ॥
आनँद मगन न नैन उचारा * तब यदुपति उर दियो बिचारा ॥
मम स्वरूप जबलगि हियमाहीं * देखिहैं तबलगि बोलिहैं नाहीं ॥
काठ सरिस रहिहैं यहि ठाईं * हमसों उठब कठिन तबताईं ॥
ताते मैं निज रूप छिपाऊं * अचल समाधि पिशाच छोडाऊं ॥
अस गुनि प्रभु पिशाच उरमाहीं * गोपि लियो अपने वपुकाहीं ॥
हियमें नहिं हरिरूप निहारयो * उठ्यो चौंकि निज नैन उघारयो ॥
चकित चहूंकित चितवन लागा * मानहुँ चिर सोवत सो जागा ॥
चितमें गुणत महादुखरासी * कहां गयो हरि मोहिय वासी ॥
चितयो प्रेत परम अकुलाई * लख्यो बैठि आगे यदुराई ॥
जेहि विधि लिख्यो रूपहियमाही * तेहिविधिप्रभु सनमुखदरशाहीं ॥
जानि लियो येई यदुराई * इन्हहींको दिय शंभु बताई ॥

दोहा-द्वारावति वासी यई, मम हियवासी सांच ॥
यई देहैं मुक्ति मोहिं, यह सति जानिपिशाच ३१ ॥

उपज्यो सुखतन भालु भुलाना * बदरीवन मिलिगे भगवाना ॥
बार बार दृग बारि बहायो * प्रेम विवश कछु बोलि न आयो ॥
रह्यो दंड द्वै प्रेत अचेतू * प्रेम मगन मनु यदुकुलकेतू ॥
उठ्यो सँभारि फेरि मति धीरा * काहि जय जय जय जय यदुवीरा ॥
पायों पायों मैं प्रभु पायो * सफल जन्म आपनो बनायो ॥

अस कहि उठ्यो पिशाच तुरंता * नाचत लग्यो महामतिवंता॥
नाचत कूदत करि किलकारी * गावत गुण गोविंद गिरिधारी॥
देत प्रदक्षिण बारहिंबारा * अंबक चलति अंबुकी धारा॥
दंडप्रणाम करत बहुबारा * अंबक चलति अंबुकी धारा॥
लोटि जात कहुँ पुनि महिमाहीं * उठि बैठत पुलकत क्षण जाहीं॥
भयो पनसफल सरिस शरीरा * जन्म जन्मकी मिटिगै पीरा॥
प्रेम मगन कहुँ रुदत हँसतहै * हरि हरि हरि हिय हुलसतहै॥

दोहा–जसतसकै पुनि धीर धरि, हरि सन्मुख है ठाढ॥
जोरि पाणि अस्तुति करी, प्रेत प्रेम उर बाढ॥३२॥

छंद हरिगीतिका–जय कृष्ण विष्णु सहिष्णु विष्णु सखा मृषा तुव तुव बिन सबै॥ गोपाल परम कृपालु देवकिलाल मैं देख्यो अबै॥ जय चक्रधर सारंगधर जय गदाधर दरधारिणे॥ जय खड्गधर जय तूणधर जय सुरथ समर विहारिणे॥ १॥ जय सहस शिर जय सहस बाहु सहस्र पद सहसानने॥ जय विश्व करता विश्व भरता विश्व हरता जानने॥ प्रभु प्रलय पारावार मीन स्वरूप करत विहारहौ॥ विकराल दुष्ट संहार कारि तुम करत वेद उधार हौ॥ २॥ हे कृष्ण कमठाकार ह्वै धरि पृष्ट मंदर सुंदरे॥ मथि क्षीरनिधि रक्ष्यो सुरासुर प्रगटि कीरति चंदिरे॥ बाराह वपु प्रभु धारि धरणि उधारि दुवन सँहारिकै॥ कीन्हो अचल श्रुतिसंतपथ महिमा अमित विस्तारिकै॥३॥ बलिबाहु बल बारिधिहि वासव बूड वेगि विलोकिकै॥ वपुधारि वामन नापि विश्व त्रिपाद किय दुख रोकिकै॥ अति प्रबल हाटक कशिपु जब प्रह्लादपर अमरष कियो॥ प्रभु प्रगटि खंभ विदारि रिपुतन फारि नरहरि सुख दियो॥ ४॥ क्षत्री छली कुलछोलि मुनि भृगुकुल कमल दिनकर भये॥ कर एकविंशति बार पुहुमि निक्षत्र सब दुख हरिलये॥ दशरथलाल कृपालुरघुकुलपाल रूप रसालहैं॥ सबकाल सुर दुख जालहरि ततकाल करत निहालहैं॥ ५॥ जय अवध अधिप विदेह कन्याकंत हरधनु भंगकै॥ भृगुपति विमदकर पितुबचन पारयो

मुनिनगण संगके ॥ रघुवंश भूषण रहित दूषण निहत खरदूषण निहत्त कियो ॥ कविमित्र परम विचित्रसेतु पवित्र सागर रचिदियो ॥ ६ ॥ दशशिर सकुल खलदल सुसंकुल विशिष व्याकुलकरि दल्यो ॥ लंकेश अनुजहि सारि तिलक त्रिलोक यशभरि पुर चल्यो ॥ दुखघालि परजन पालि शत्रुन सालिकिय सुरकाजको ॥ महराज श्रीरघुराज चरण भरोसहै रघुराजको ॥ ७ ॥ यदुवंश भूषण देव भूषण हरण दूषण जननके ॥ वसुदेवनंदन योगिवृंदन चरण पंकजमननके ॥ वृंदाविपिन विहरण निपुण व्रजवधू मंडलमंडितै ॥ खखवृंददारुण धेनु चारण रासरास अखंडितै ॥ ८ ॥ गजकंसमल्ल प्रमल्ल केशी आदि दानवदारिनै ॥ दुख दूबरी किय कूबरी सुवधू बरी पुरचारिनै ॥ पांडवन आदिक सुहृदगण सब शोक शमन कृपालुजै ॥ द्वारावती विलसत वसत रुक्मिणि सहित सब कालजै ॥ ९ ॥

दोहा–कौनपुण्य पूरव कियो, ताको प्रगट प्रभाव ॥
अधम जाति यह प्रेतको, देखिपरे यदुराव ॥ ३३ ॥
सेवकाई मैं कह करौं, का अरपौं हरि काहिं ॥
मोते द्वितिय न धन्यकोउ, देखि लियो जगमाहिं ॥ ३४ ॥

असकहि पुनि पुनि नाचनलाग्यो ❀ गावतपुनिपुनि अति अनुराग्यो ॥
नाहिं समात आनँद उरमाहीं ❀ भनत मोहिसम धनिकोउ नाहीं ॥
लग्यो विचारन काह चढाऊं ❀ प्रभुकहँ केहिविधि आज रिझाऊं ॥
मोहिं दियो प्रभु योनिपिशाची ❀ मोरि तुष्टि आमिषमहँ सांची ॥
आमिष रुधिर पिशाच अहारा ❀ यह पूरुब विरच्यो करतारा ॥
जाको जौन अहारै होई ❀ निजप्रभु कहँ अरपै हठि सोई ॥
ताते मोहिं योग्य यहि काला ❀ अरपौं आमिष प्रभुहिं रसाला ॥
अस विचारि सो प्रेत सुजाना ❀ हरिअर्पणको कियो विधाना ॥
वैदिक ब्राह्मण आमिष आनी ❀ धोइ विमल करि सुरसरिपानी ॥
मूलमंत्र अभिमंत्रित कीन्ह्यो ❀ परमपवित्र पात्र धरिलीन्ह्यो ॥
लैकर घंटाकरण पिशाचा ❀ चल्यो कृष्ण सन्मुख मनसांचा ॥

जोरि पाणि पुनि वचन उचारा ॥ यह तुम रच्यो पिशाच अहारा ॥
दोहा-वैदिक ब्राह्मण मांसयह, परम पवित्रमुरारि ॥
तुमसम प्रभुके योग यह, ऐसो लेहु विचारि ॥३५॥
तापर मैं अभिमंत्रित कीन्हो ॥ नहिं प्राचीन अबहिं बधिलीन्हो ॥
मैं तो तुवपद दास मुरारी ॥ मोपर कृपा करी प्रभु भारी ॥
दासन अरपित वस्तु सदाहीं ॥ उचित ग्रहण करिबो प्रभुकाहीं ॥
ताते ग्रहण करहु यदुराई ॥ जो यामें नहिं दोष देखाई ॥
असकहि हुलसि हँसत बहुभांती ॥ आंसुन पांति बहति दृगजाती ॥
प्रेम मगन सुधि कछु न शरीरा ॥ आमिष पाणि लिये मतिधीरा ॥
प्रभुकहँ अर्पण चल्यो समीपा ॥ द्विज आमिष लै प्रेतमहीपा ॥
शुद्ध भाव ताकर प्रभुदेखी ॥ मनमहँ मोदित भये विशेखी ॥
तासु प्रेमलखि प्रभु मुसकाई ॥ पुलकित तन दृगवारि बहाई ॥
अति प्रसन्न प्रभुपरम कृपाला ॥ कह्यो वचन हे प्रेतभुवाला ॥
परम प्रीति कीन्ही मोहिं माहीं ॥ तोहि सम प्रिय मोको कोउ नाहीं
विप्र सर्वथा पूजन योगू ॥ होत दनुज आमिषकर भोगू ॥
दोहा-मोसमजे ब्रह्मण्य जग, तिनहिं न परसन योग ॥
पै नहिं तेरो दोष कुछ, यह पिशाचकर भोग ॥३६॥
तेरे तनमें है नहिं पापा ॥ कीन्ह्यों मोर नाम बहु जापा ॥
कपट विहीन करी मम प्रीती ॥ यही साधुकी संतन रीती ॥
तेरी प्रीति परेखि पिशाचा ॥ मोमन तोहीं महँ अति राचा ॥
प्रीति प्रतीति भाव मैं देखी ॥ लीन्ह्यों दास परम प्रिय लेखी ॥
प्रीति प्रतीति परेखि प्रेतकी ॥ जानि विनै प्रभु मुक्तिहेतकी ॥
रहि न गयो प्रभुसे तेहि काला ॥ उठे तुरंतहि दीनदयाला ॥
लपटि गये प्रेमहिं भगवाना ॥ को कृपालु यदुनाथ समाना ॥
प्रभुतन परसत प्रेत अपावन ॥ भयो रूप तेहि समै सोहावन ॥
सुमुख सुलोचन बाहु विशाला ॥ दीरघ कुंचित केश रसाला ॥
सजल सलिलधर श्याम शरीरा ॥ उर वनमाल पगन मंजीरा ॥

शीशमुकुट कर कटक विराजै * मानहुँ अपर देवपति भ्राजै ॥
बारबार मिलि ताहि मुरारी * बैठे आसन बहुरि सुखारी ॥
दोहा–ज्ञानवान बलवान अति, भक्तिवान रतिवान ॥
रूपवान सब शास्त्रको, भयो निधान सुजान ॥३७॥
कोटिन जन्म योग जप यागा * योग करहिं विज्ञान विरागा ॥
तदपि न तो न लहै अधिकारा * दियो जे प्रेतहिं विज्ञान विरागा॥
को अस दूसर दुनी दयाला * प्रीति करत करिदेत निहाला ॥
को अस पतित जगत अपकारी * होइ न प्रभुके शरण सुखारी ॥
लहि पिशाच पार्षदकर रूपा * ठाढो हरिढिग दास अनूपा ॥
बोले नाथ वचन मुसकाई * सुनहु सुमति मम गिरा सुहाई ॥
बासव बसै स्वर्ग जबताई * तबलों तुमहुँ इंद्रकी नांई ॥
बसहु स्वर्ग लगि विविध विलासा * तोहिं न कोउ दायक अब त्रासा ॥
जब यह अमरनाथ मरि जाई * तब ह्वैहै वासव तुव भाई ॥
तुम ऐहौ पुनि लोक हमारे * जहां बसत मम दास पियारे ॥
अविचल संग हमार तुम्हारा * है सर्वदा विकुंठ अगारा ॥
औरहु जो मनवांछित होई * मांगि लेहु पैहैं हम सोई ॥
दोहा–घंटाकरण प्रसन्न ह्वै, तब बोल्यो कर जोरि ॥
अब बाकी कछु ना रह्यो, कछू आस नहिं मोरि॥३८॥
यह वर मांगों जोरे हाथा * देहु कृपा करिकै यदुनाथा ॥
जो यह कथा हमारि तुम्हारी * पढै सुनै श्रद्धाकरि भारी ॥
ताहि भक्ति अपनी प्रभु दीजै * अपनो दास ताहि करिलीजै ॥
कलिमल रहै न तनमहँ ताके * नशैं पाप सिगरे मनसाके ॥
हरि प्रसन्न ह्वै वचन उचारा * सत्य होइगो भणित तुम्हारा ॥
पुनि जेहि ब्राह्मणको हति लायो * तेहि यदुनंदन तुरत जिआयो ॥
ताहि आपने धाम पठायो * दै आपनो वपु परम सोहायो ॥
देखि चरित यदुनंदन केरो * सुर मुनि आनँद मानि घनेरो ॥
बरषहिं गगन सुमन सुरवृंदा * जय मुकुंद जय कहैं गोविंदा ॥

घंटाकरण सवार विमाना * देवलोकको कियो पयाना ॥
नाचत जात संग सिध चारण * नाचहिं सँग अप्सरा हजारन ॥
यहि विधि पहुँचि देवपुरमाहीं * विलस्यो इंद्रसमान सदाहीं ॥
दोहा-गयो फेरि वैकुंठको, इंद्र भयो तेहिं ख्यात ॥
घंटाकरण पिशाचकी, कथा कही अवदात ॥२१॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

अथ श्वेतद्वीपवासियोंकी कथा।

दोहा-श्वेतद्वीपवासी सकल, रूप उपासी होइ ॥
तिनकी कछुक कथा करौं, सुनो संत सब कोइ॥१॥
एक समय नारद मुनिराई * मनमें कियो विचार भलाई ॥
गमनहुँ श्वेत द्वीप यहि काला * जहँ नारायण वसत कृपाला ॥
हरिपार्षद जे तहँके वासी * सकल होतहैं रूप उपासी ॥
ज्ञान विराग योग नहिं जानै * उपदेशौं चालि तिन लगि कानै ॥
अस विचारि मन देवऋषीशा * क्षीरधि चल्यो सुमरि जगदीशा ॥
श्वेतद्वीप पहुँच्यो जब जाई * निरख्यो नारायण मुनिराई ॥
किया दूरि ते दंड प्रणामा * नारद निरखि हँसे श्रीधामा ॥
नारद उर आशय प्रभु जानी * वरज्यो सैनानि सारँगपानी ॥
इहां देवऋषि का मन तोरा * विचरहु जगत और सब ठोरा ॥
इत उपदेश न राउर लागी * इतके सकल रूप अनुरागी ॥
ज्ञान विराग योग तप नेमा * नहिं जानत बूडे रस प्रेमा ॥
जानि देवऋषि हरिउर केरी * उरमें विषम बुद्धि किय फेरी ॥
दोहा-मैं आयो उपदेशहित, ज्ञान विवेक विराग ॥
हरिको ज्ञान विरागते, प्रेम अधिक प्रिय लाग ॥२॥
ये सब श्वेतद्वीपके वासी * मृषा किये मदरूप उपासी ॥
अस विचारि लौटे मुनिराई * गे वैकुंठहि बीण बजाई ॥
हरिसों सब वृत्तांत बखाना * बहुरि कह्यो अपनो अपमाना ॥

सुनु मुनीश कह हरि मुसकाई ❀ मैं चलिहौं निज संग लेवाई॥
अस कहि नारदको सँग लीन्ह्यो ❀ गवन श्वेतदीपहि प्रभु कीन्ह्यो॥
लख्यो एक तहँ सुभग तड़ागा ❀ बहु विहंग बोलहिं वन बागा॥
तहँ बक लख्यो बैठ सरतीरा ❀ अचल तृषित पीवत नहिं नीरा॥
मुनि शंकित पूछ्यो हरिपाहीं ❀ यह बक नीर पियत कस नाहीं॥
हरि कह यह बक रूप उपासी ❀ विन प्रसाद नहिं पीवन आसी॥
सहस्र वर्ष बीते बक काहीं ❀ विन प्रसाद पायो जल नाहीं॥
अचरज मानि देवऋषि बोले ❀ नाथ वदहु कत मानहु भोले॥
पक्षी भये कबैते प्रेमी ❀ नाथ कहौ प्रसादके नेमी॥
दोहा–तब हरि लै मुखमें सलिल, तेहिं आगे दिय डारि॥
सहस वर्षको तृषित बक, कियो पान तब वारि॥ ३॥
बकहि जानि मुनि हरि अनुरागी ❀ बार बार बंद्यो बड़भागी॥
पुनि नारद कहँ लै हरि आगे ❀ गवने लखत प्रेम रस पागे॥
जब हरिधाम निकट दोउ आये ❀ तेहि क्षण तहँके जन सब धाये॥
होति रहै आरति तेहिं काला ❀ जे पहुँचे ते भये निहाला॥
हरिप्रेमी पहुँच्यो इक नाहीं ❀ हैगै आरति बंद तहाहीं॥
मंदिरते कढि कोउ जन आयो ❀ हैगै आरति ताहि सुनायो॥
विन आरति देखे दुख भयऊ ❀ तेहिथलसो निज तनुतजिदयऊ॥
तासु पुत्र आये तहँ धाई ❀ बंद आरती सुनि दुखपाई॥
हाय न आरति देखन पायो ❀ अस कहि तनु जियतेबिलगायो॥
आयो दौरि तासु तहँ नाती ❀ सोउ तनु त्यागदियेतेहिभांती॥
औरहु जे पाछे तहँ आये ❀ भने आरती लखन न पाये॥
अस कहि प्रेम विवश तनु त्यागे ❀ प्रभुके रुचिर रूप अनुरागे॥
दोहा–नारद यह कौतुक निरखि, लीन्ह्यो मनहिं विचारि॥
रूप उपासक सत्यहै, श्वेतदीप नर नारि॥ ४॥
महाभागवत मानि मुनीशा ❀ कियो प्रणाम परसि महिशीशा॥
कह्यो वचन सुनिये यदुराई ❀ प्रेमा भक्ति महा इत पाई॥

जैसे श्वेतदीपके वासी ❀ अनुपम रूप अनन्य उपासी ॥
तब नहिं कौनेहुँ लोकन कोऊ ❀ ज्ञान विराग योग रत जोऊ ॥
मैं अनुराग अधिक गुणिज्ञाना ❀ किये रह्यों अबलों अभिमाना ॥
श्वेतदीप वासिन लखि प्रीती ❀ आजु भई प्रभु अचल प्रतीती ॥
इहां न कछु उपदेश प्रयोजन ❀ भयो कृतारथ मैं लखि हरिजन ॥
पै सुनि मोरि विनय यदुराई ❀ निज प्रेमिनको देहु जियाई ॥
तब प्रभु जल लै वचन उचारे ❀ श्वेतद्वीप जन मोर पियारे ॥
ये जस प्रेमी तस सब होवैं ❀ तौ उठि मृतक मोहिं द्रुत जोवैं ॥
यतना कहत जिये सब लोगू ❀ पायो अचल प्रेम कर भोगू ॥
बार बार नारद शिर नाई ❀ चल्यो तहांते वीण बजाई ॥

दोहा–ज्ञान विराग विवेक तब, योग याग जप नेम ॥
प्रेम अधिक सबते अहै, दायक क्षेमिन क्षेम ॥९॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

अथ कुंतीकी कथा।

दोहा–कहौं कछुक कुंती कथा, भक्तिशिरोमणि सोइ ॥
यदुपतिते प्रिय जगतमें, जाको रह्यो न कोइ ॥ १ ॥

कुंती कथा अपूर्व अपारा ❀ व्यास सकल भारत विस्तारा ॥
को वक्ता कवि अस जगमाहीं ❀ वर्णत कुन्ती कथा सिराहीं ॥
भागवतादि प्रसिद्ध पुराना ❀ कुंती गाथा विविध विधाना ॥
तदपि कहौं कछु मति अनुसारा ❀ सुनहु संत सुन्दर सुखसारा ॥
आनकदुन्दुभि भगिनि सयानी ❀ बारहिंते हरि प्रीति प्रधानी ॥
जबते पांडु भवन पगुधारी ❀ परम धर्म धारयो व्रतधारी ॥
संपति विपति विषाद भलाई ❀ जहँ जहँ पृथा भाग्यवश पाई ॥
तहँ तहँ हानि लाभ नहिं मानी ❀ कृष्ण प्रीति क्षण भरि न भुलानी ॥
भारत समर कराइ मुरारी ❀ भूमि भार प्रभु दियो उतारी ॥
पृथा पास पुरुषोत्तम आये ❀ अति विनीत है वचन सुनाये ॥

सही विपति सुत सहित सयानी * भाग्य विवश अब मिटी गलानी ॥
कहो तो द्वारावति हम जाहीं * अबतो त्वहिं कलेश कछु नाहीं ॥

दोहा—तब कुंती बोली वचन, जो प्रसन्न प्रभु होउ ॥
तौ मांगहुँ वर देहु सो, यदुवर जै सब कोउ ॥२॥

हरि कह त्वहिं अदेव कछु नाहीं * मांगु मांगु तैं यहिक्षण माहीं ॥
पाणि जोरि कह शूरकुमारी * देहु मोहिं वर यह गिरिधारी ॥
जोन विपति भै बारहिं बारा * बहुरि विपति सो होइ अपारा ॥
विपति परे तुम धारण ऐहो * कबहुं न द्वारवती ठहरैहो ॥
तब हम दरशन लहब तुम्हारा * और मनोरथ नाहिं हमारा ॥
परिहै विपति मोहिं जो नाहीं * दरशमिली कैसे मोहि काहीं ॥
तुव दरशनते अधिक न लाहू * विना दरश संतति दुख दाहू ॥
प्रभुलखि प्रीति अलौकिक ताकी * कह्यो बानि सुनि प्रेम सुधाकी ॥
दरश आश करिहैं जब मोरी * धुरिहौं मैं तब मनकी तोरी ॥
मोहिं तोहिं क्षण अंतर नाहीं * अधिक मातुते तैं मोहिं काहीं ॥
अस कहि द्वारवती प्रभु आये * कुन्ती उर अति आनँद छाये ॥
नाग नगर प्रभु बारहिंबारा * कुन्ती दरश हेतु पगुधारा ॥

दोहा—पृथा प्रेमके वशभये, यदुकुल अमल दिनेश ॥
वातसल्य रस कृष्णमें, कुन्ती कियो हमेश ॥ ३ ॥

यदुकुलको समेटि यदुराई * गये धाम संतन सुखदाई ॥
अर्जुन द्वारवती ते आयो * चकित महीप सभामहँ ठायो ॥
बार बार पूंछ्यो नृप धर्मा * मन उदास भाषहु निज मर्मा ॥
बहुत बार पूंछ्यो जब राजा * तब अर्जुन बोल्यो तजि लाजा ॥
यदुवर मोहिं छाँडि गे निज धामा * हम सब भये आजु दुख छामा ॥
इतनी विजय बदन सुनि बानी * खडी रही तहँ पृथा सयानी ॥
प्रेमविवश अतिशय अकुलानी * जस तसकै निकसी यह बानी ॥
हा हरि यदुपति प्राण अधारा * तुम बिन मोहिं शून्य संसारा ॥
इतना कहत निकसिकै प्राना * पहुँच्यो गोपुर जहँ भगवाना ॥

बसी नित्य परिकरमहँ जाई ✽ कुन्ती सम काहु न गति पाई ॥
पृथा सरिस को जगमहँ जायो ✽ हरि हित तन मन सकल लगायो ॥
बसी नित्य परिकर महँ यद्यपि ✽ वत्सल भाव गयो नहिं तद्यपि ॥
दोहा-यहू लोक गोलोकमें, राख्यो येकहि भाव ॥
कृष्ण सुछवि पीवत अमी, ताहि न भयो अघाव ॥ ४ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

अथ पांडवकी कथा ।

दोहा-कहौं पांडुसुतकी कथा, सूत भणित अतिपूत ॥
जासु सूत अरु दूतहु, भयो देवकी पूत ॥ १ ॥

पांडु रहे वनमहँ जेहि काला ✽ एक समय तेहि विपिन विशाला ॥
कोउ मुनि दंपति करि मृगरूपा ✽ कियो विहार जहां रहभूपा ॥
मानि मृगा शर हन्यो कठोरा ✽ मुनि तिय शाप दीन अति घोरा ॥
करत विहार हत्यो पति मोरा ✽ होई काल नारि रति तोरा ॥
पांडु भूप तब कर परितापा ✽ तज्यो मरण डर नारि मिलापा ॥
पृथा मंत्र बल पति रुख पाई ✽ धर्म पवन लिय इंद्र बोलाई ॥
तिन प्रसंग त्रय जन्यो कुमारा ✽ धर्म भीम अर्जुनहु उदारा ॥
माद्री कहँ सोइ मंत्र सिखायो ✽ सोइ अश्विनीकुमार बोलायो ॥
ताते भये नकुल सहदेवा ✽ जिनके इष्ट देव यदुदेवा ॥
मुनि तिय शापित पांडु भुवाला ✽ गयो स्वर्ग बीते कछु काला ॥
पांडुसुवन सुनि जन्म उदारा ✽ भीषम तुरत विपिन पगु धारा ॥
लायो गजपुर पांचहु नाती ✽ तिनहि देखि शीतल भइ छाती ॥
दोहा-तहँ दुर्योधन बंधु सत, धर्मबंधु युत पांच ॥
राजभवन खेलत रहत, प्रीति परस्पर सांच ॥ २ ॥

पांडुसुवनसों तहँ दुर्योधन ✽ राखत रह्यो कपट मन क्षणक्षण ॥
सबते करै मल्लयुध भीमा ✽ सबको जितै अतुल बल सीमा ॥
भीम हरावन कियो उपाई ✽ हरयो नहीं धर्म लघु भाई ॥

तब दुर्योधन बैर बिचारी ❁ बिरच्यो मोदक माहुर डारी ॥
करन सबै जब भोजन लागे ❁ दुर्योधन धरि भीमहि आगे ॥
कह्यो लेहु यह हरि परसादा ❁ मोदक मीठ मधुर मरयादा ॥
सविष भीम लिय यद्यपि जानी ❁ खायो हरिप्रसाद उर आनी ॥
नेकुहिं ताहि गरल नहिं लागा ❁ खेलत रह्यो न कोपहु जागा ॥
एक समय सब बालक आये ❁ सुरसरिता महँ सुखित नहाये ॥
तहँ दुर्योधन मंत्रिन बोली ❁ ल्यावहु अहिअसआशय खोली॥
मंत्री आसी विषगहि लाये ❁ भीमहि दुर्योधन कटवाये ॥
सो विष व्यापि अंगमें गयऊ ❁ भीम देव सरि बूडत भयऊ ॥

दोहा-कृष्ण कृपावश बूझिकै, गयो भीम पाताल ॥
परचो अमृतके कुंडमें, जेहिं ताके सब व्याल ॥३॥

काढ्यो ताहि व्यालरिपु जानी ❁ भई प्रथम दुखकी तब हानी ॥
कीन्ह्यो भीम अमीकर पाना ❁ बासुकि नाग हाल सब जाना ॥
लियो बोलि आपने समीपा ❁ जान्यो सुत यह पांडु महीपा ॥
बासुकि दियो ताहि वरदाना ❁ जुरी जो कोउ तुवसँग बलवाना ॥
आधो बल ताकर तोहिं ऐहै ❁ कुंड पतन प्रभाव सत ह्वैहै ॥
भीमसेन लहि यह वरदाना ❁ कुशल कियो गजनगर पयाना ॥
देखिभीम सब अचरज माने ❁ को यमलोकहि ते यहि आने ॥
यहि विधि पांडु सुतनहित मारन ❁ कियो सुयोधन बहु उपचारन ॥
बैस किशोर भई सब केरी ❁ शकुनि कर्णमिलिगे छल टेरी ॥
दिन दिन उदय पांडवन देखो ❁ दुर्योधन किय मंत्र विशेखी ॥
जबलौं जीहैं पांडुकुमारा ❁ तबलौं बिभव न होइ हमारा ॥
ताते कौनेहु विधिते मारी ❁ करी राज्य पुनि सदा सुखारी ॥

दोहा-अस विचारि मंत्री रह्यो, नाम पुरोचन जासु ॥
ताहि बोलायो अंधसुत, कीन्ह्यो बचनप्रकासु ॥४॥

जाहु वारनावति यक नगरी ❁ ताहि बसायो रहै न बिगरी ॥
तहां लाखके भवन बनावो ❁ अति विचित्र निपुणता देखावो ॥

महलु यथा हस्तिनपुर माहीं * तिनते भेद परै कछु नाहीं ॥
सो प्रभु शासन शिरधरि गयऊ * तैसे रचन करत तहँ भयऊ ॥
लाख महल लावन जिन मोला * लखि रचना भो विधिमनभोला ॥
इतै सुयोधन सभा बोलाई * पांडुसुतन अस गिरा सुनाई ॥
लेहु वारनावति निज हांसा * बसहु जाइ सुमिरत निमईसा ॥
भीषम द्रोण कृपादिक वीरा * यह छल नाहिं जानहिं मतिधीरा ॥
सुनि संमत सब उचित उचारे * तेहि क्षण विदुर सभा पगुधारे ॥
रह्यो चरित्र विदुर कर जाना * राज भीति नहिं खोलिबखाना ॥
अंध नृपतिसों मांगि बिदाई * चले जबै तहँ पांचहु भाई ॥
भाष्यो विदुर पारसी बानी * धर्म भूप लीन्ह्यों सब जानी ॥
दोहा–गये वारनावति पुरी, पांच पांडुके नंद ॥
कुंतीहू सँगमें गई, जान्यो नहिं छलछंद ॥ ५ ॥
आइ पुरोचन आगे लीन्ह्यो * कोष वाजि गज अर्पण कीन्ह्यो ॥
लाख महलमहँ गयो लेवाई * दीन्ह्यो थल थल सकल देखाई ॥
वसे पांडुसुत संयुत माता * सुमिरत कृष्ण चरण जलजाता ॥
तबहिं पुरोचन पठयो पाती * दुर्योधनके ढिग यहि भांती ॥
पांडव बसे लाखगृह माहीं * जस शासन तस होइ इहांहीं ॥
लिख्यो तासु उत्तर दुर्योधन * अनल लगाइ दह्यो पांचौ जन ॥
जेहि दिन चाह्यो आगिनि लगाई * तेहि दिन येक निषादी आई ॥
रहे पांच सुत ताहू केरे * बसे लाख गृह कालहि प्रेरे ॥
संध्या समय पुरोचन आई * दियो द्वारते आगि लगाई ॥
जरन लग्यो जब लाख अगारा * पुरमहँ माच्यो हाहाकारा ॥
जरे कुंति युत पांडुकुमारा * दुर्योधन किय छल उपचारा ॥
निरखि पांडुसुत पावकज्वाला * सुमिरण लागे कृष्ण कृपाला ॥
दोहा–गली येक मिलि गै तहां, गंगातट पर्यंत ॥
मातु सहित तहँ पांडुसुत, तहँते तुरत ब्रजंत ॥ ६ ॥
रही नाव लागी सरि तीरा * तामें चढि उतरे सब वीरा ॥

जरत द्वार प्रभाव जगदीशा ❀ गिऱ्यो तुरंत पुरोचन शीशा ॥
भयो भस्म जरि तुरत तहांही ❀ पांडुसुवन आंचहु लगि नाहीं ॥
आये भोरहि प्रजा विषादी ❀ पांच सुवन युत निरखि निषादी ॥
लीन्हे पांडव पृथा विचारी ❀ तथा पुरोचन मृतक निहारी ॥
दुर्योधनहिं लिख्यो सब हाला ❀ जरे पांडुसुत पावक ज्वाला॥
परी निषादी सुतन समेतू ❀ दुर्योधन विश्वासके हेतु ॥
पांडव वसे विपिन चिरकाला ❀ कियो स्वयंवर द्रुपद भुवाला ॥
यदुपति सैन सहित तहँ आये ❀ मीन बेधकर विजय कराये ॥
द्रौपदि अर्जुन काहँ देवायो ❀ इंद्रप्रस्थ विभाग करायो ॥
जाहि देखि सुर सकल सिहाहीं ❀ संपति दियो युधिष्ठिर काहीं ॥
रहहिं पांडवन संग मुरारी ❀ संगहि शयनी संग अहारी ॥

दोहा-येकहि सँग बोलब हँसब, येकहि संग शिकार ॥
प्रीति विवश पांडवनके श्रीवसुदेवकुमार ॥ ७ ॥

कवित्त-वनमें बसाइ मत्स्य देश प्रगटाय सैनयूहको जमाय तीर्थ अग्रज पठाइके ॥ भीष्मते बचाय पुनि द्रोणतें बचाय कर्ण शक्तिते बचाय द्रोणि अस्त्र बिलगायके ॥ संकट विकट काटि कोटिन अठाट ठाटि आप समुझाइ भीष्म मुख समझायके ॥ रघुराज धर्मराजै राज दीन्हों काज देवकीको पूत सूत दूत कहवाइके ॥ १ ॥

दोहा-और पांडवनकी कथा, भारतमें विस्तार ॥
ताते इत संक्षेपते, कीन्ह्यों कछुक उचार ॥ ८॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे चतुर्विंशतितमोऽध्यायः ॥ २४ ॥

अथ द्रौपदीकी कथा।

दोहा-द्रुपदसुताकी कहत हौं, कछुक कथा मनरंज ॥
संतसुयश मधि जासु यश, ज्यों तडागमें कंज ॥ १ ॥

भूप युधिष्ठिर विभव बडाई ❀ सहि न सक्यो दुर्योधन राई ॥
हरणताहि छल बलकर चाहीं ❀ द्यूत सभा विरची गृहमाहीं ॥

शकुनि सुयोधन कर्ण दुशासन * कीन्ह्यो मंत्र ठीक कुलनाशन ॥
बोलि पठायो धर्म महीपै * आप बैठ धृतराष्ट्र समीपै ॥
बरज्यो अर्जुनादि सब भ्राता * दूत निरत मान्यो नहिं बाता ॥
आये धर्मसहित निज भाई * बैठे अंध नृपहि शिरनाई ॥
तहां सुयोधन वचन उचारा * होइ जुवां नृप मोर तुम्हारा ॥
राजाको प्रण रह्यो सदाहीं * जुवां युद्ध कहुँ भागे नाहीं ॥
खेलन लग्यो युधिष्ठिर राजा * भीष्म द्रोण जहँ बैठि समाजा ॥
निजवदि शकुनि सुयोधन कीन्ह्यो * छल पासा चलाइ सो दीन्ह्यो ॥
क्रम क्रम तहँ नृप पांडुकुमारा * छल वश भूरि विभव निज हारा ॥
तब धृतराष्ट्र दया उर धारी * दियो देवाइ वस्तु सब हारी ॥
दोहा-तब दुर्योधन बिलखिके, पितहिं बहुत समझाय ॥
लग्यो द्यूत खेलन बहुरि, धर्म नरेश बोलाय ॥ २ ॥
प्रथमहिं अस प्रण राखि लगायो * हमहि जो विधि यहिबार जितायो ॥
होहुँ तो द्वादश वर्ष वनवासी * येक वर्ष अज्ञात निवासी ॥
जो अज्ञात वास हम जाने * बसहुँ विपिन पुनि ताहि प्रमाने ॥
धर्म नृपति संमत सोइ कीन्ह्यो * पांसा शकुनि फेंकि तब दीन्ह्यो ॥
छलवश हारि गयो महराजा * देखि उठी तब सकल समाजा ॥
कह्यो सुयोधन पुनि मुसकाई * होइ जौन कछु देहु लगाई ॥
धर्म कह्यो अब तो कछु नाहीं * है द्रौपदि हमरे घरमाहीं ॥
सो हम अबकी बार लगावें * जो हारें तो विपिन सिधावें ॥
पांसा डारि हारि गो सोऊ * महा अनर्थ कह्यो सब कोऊ ॥
कह दुर्योधन सुनहु दुशासन * मानहुँ अब हमार अस शासन ॥
जाहु द्रौपदी गहि लै आवहु * सभा मध्य सब काहँ देखावहु ॥
सुनत दुशासन भूपति बानी * अंतःपुर गवन्यो अघखानी ॥
दोहा-द्रुपदसुता ऋतुवंतिनी, रही येक पट धारि ॥
कह्यो दुशासन वचन अस, तुव पतिगो तुव हारि ॥ ३ ॥
बोल्यो सभा सुयोधन राजा * अब बिलंब कर कछू न काजा ॥

पांचाली सुनि अति अकुलानी ❀ बोली मृदुल मनोहर बानी ॥
हम ऋतुवती न जैबे लायक ❀ तुम समुझावहु चलि कुरुनायक ॥
दुःशासन कह तब कटु बानी ❀ लै जैहौं मैं गहि तुव पानी ॥
शंकित मौन भई पांचाली ❀ पूरब पुण्य मोर भे खाली ॥
दबति द्रौपदी देखि दुशासन ❀ जिमि बनमें लखि मृगी मृगाशन॥
रहो दूरि जनि आउ समीपे ❀ मोर कहा कहु जाइ महीपे ॥
भयो कुपित सुनि कुरुपति भ्राता ❀ धायो गहन केश दुखदाता ॥
श्रीविभूति आयुष कुलकेरी ❀ जारि अनल निज शुभ गति फेरी॥
कृष्णाकेश दुशासन पकरयौ ❀ मानहुँ कालकूट भषि अफरयो ॥
लै चल्यो द्रुपदिहि बरजोरा ❀ आरत शोर मच्यो चहुँ ओरा ॥
ल्यायो सभामध्य पांचाली ❀ जिमि गवास गहि गाइ बिहाली ॥

दोहा—सभामध्य द्रुपदी खड़ी, भइ सो नयन नवाइ ॥
तब दुर्योधन कटु वचन, कह्यो हरषि मुसकाइ॥४॥

नृपति युधिष्ठिर गे तोहि हारी ❀ अब तैं भई हमारी नारी ॥
हम अब तोहिं बनाउब दासी ❀ तू नहिं होइ पांडवन आसी ॥
अस कहि ऊरू ठोंक्यो राजा ❀ बैठी द्रुपदी इत तजि लाजा ॥
सभासदन तब बचन सुनाई ❀ कृष्णा कह्यो नीति दरशाई ॥
मैं तौ पांचौं पांडव नारी ❀ कैसे येक युधिष्ठिर हारी ॥
उत्तर सभासद देहु हमारो ❀ होइ जो उचित धर्म तुम्हारो ॥
रहे मौन सब जानि कुनीती ❀ तब दुर्योधन कह्यो कुरीती ॥
वाक्जाल तजु द्रुपदकुमारी ❀ हमहिं अछत को तोहिं उबारी ॥
कही कर्ण तब अनुचित बानी ❀ सुनहु दुशासन तुम बड ज्ञानी ॥
द्रुपदसुता कहँ सभा मँझारी ❀ बसन छोरि करि देहु उघारी ॥
यह मम शत्रुन परमपियारी ❀ लेहिं दशा निज आंखि निहारी ॥
नहि मानत भूपति करशासन ❀ बसन बिगत करि देहु दुशासन ॥

दोहा—सुनि सूतजके वचन अस, दुःशासन हरषान ॥
करन लग्यो तिय बिगत पट, हठि शठ नीति निदान५॥

धर्म धुरंधर धर्म नृप, भीम महाबलवान ॥
वीर सव्यसाची भुवन, जेता सुयश महान ॥ ६ ॥
तथा नकुल सहदेव दोउ, धीर धनुर्धर धाक ॥
धीर धर्म धनुधरनमें, भीष्म भूप भटनाक ॥ ७ ॥
धनुर्वेद अरु धर्मके, द्रोणाचार्य अचार्य ॥
चिरंजीव घन धर्मके, आचारज कृप आर्य ॥ ८ ॥
औरहु विदुरादिक रहे, सकल सभा सरवीर ॥
कोउ नहिं वारन करत भे, पांचालीकी पीर ॥ ९ ॥

कवित्त–सभासद सकल सयानपन सून देखि सारमेय मध्यमें मृगीसी भै बिहाल है ॥ भीमको भरोसो भाग्यो पारथ धनुष त्याग्यो यम को न जाग्यो निज विक्रम विशाल है ॥ रक्षक न कोई तहं तक्षकसे बैठे सबै पक्षिन अरक्षण प्रत्यक्ष पेखि हालहै ॥ रघुराज द्रौपदी विचारयो मेरो रखवारो दीनके दयालु आज देवकीको लाल है ॥ १ ॥ कोई ना सगैया कोई बात ना कहैया कोई गति ना पुछैया ओरहूको ना तकैयाहै ॥ वादिमे सहैया हाथ दैया ना गोसैयां कोई मुखको दखैया नाहिं सीखको दैयाहै ॥ द्रौपदी विचारै रघुराज आज जाति लाज सबहें धरैया पै न टेरको सुनैयाहै ॥ विपति हरैया मेरी पतिको रखैया एक द्वारिका बसैया बलभद्रजीको भैया है ॥ २ ॥

दोहा–अस विचारि मनमें बिलखि, दोऊ हाथ उठाइ ॥
कृष्ण कृष्ण पुकारती, कहां गये हरि हाइ ॥ १० ॥

कवित्त–देवव्रत द्रोण कृप विदुर विकर्ण आदि सकल सभासदन मेधा भई भोरी है ॥ उचित न भाषै नाहिं माषै इन पापिनपै राखै दुर्योधनकी भीति नाहिं थोरी है ॥ मेरे पति पांचौ पांडुपुत्रनको पेंच नाहिं त्राता नाहिं दीसे जौन राखे पति मोरी है ॥ रघुराज आज ह्यां तौ परी कुसमाज बीच लाज राखिवेकी यदुराज आश तोरी है ॥ ३ ॥ देवता दनुज मुनि मनुज उरग आधि वादिमे मनाये नेकु मो तन न

हेरी है ॥ कौनको पुकारें काकी शरण सिधारें दूजो द्दग ना निहारें सदा रावरेकी चेरीहै ॥ ऐंचत बसन दुर्योधन अनुज दुष्ट भीष्मादि वीरनको देव मति फेरी है ॥ होतिहै अपति वारे कौन मो विपति आज रघुराज राखो यदुपति पति मेरी है ॥ ४ ॥ रघुराज दूजो द्वार अबलों निहारयो नाहिं छोडि पदपंकज न कहू मति गईहै ॥ रावरेकी दासी रही प्रीति काहूकी न गही तेरे भुज छांहनके ठामहीमें ठईहै ॥ जानिके अनाथ मोहिं मूठ कुरुनाथबंधु सभामध्य मेरी पति चाह आजु लईहै ॥ पक्षिराज पक्षिनकी हेरुहा अपति करे हाय यदुनाथ ऐसी नई कहँ भईहै ॥ ५ ॥ गिरिगई गरुई गदा धौं गिरिधारी-जूकी कैधों कौनो जंगमें सरंग कहूं ह्वैगयो ॥ गोंठिलो ठयो है खड्ग भोथराके चक्र भयो कैधों गरुडासनको गरुडहू स्वैगयो ॥ येरे दई कैसी भई दया धौं विसारि दई मेरी ना पुकार गई नाथ काह ज्वैगयो ॥ रघुराज कैधों आज द्वारकाविलासीजूको विरद बखान हाय हांसी हेत ह्वैगयो ॥ ६ ॥ संकट सियाको सुनि सागरमें सेतु बांधि सकुल दशानन संहारि शोक टारयोहै ॥ ग्राहते ग्रसित गाढी गैयर गोहारि सुनि गरुड विहायके गोविंदजू उधारयो है ॥ रुक्मिणीकी लाज राखिबेके हेत रघुराज द्वारकाते दौरि सर्व राज गर्व गारयो है ॥ कौन अपराध परयो कहां करुणाको घरयो द्वारकाविलासी मेरी सुरति बिसाऱ्यो है ॥ ७ ॥ आरतकी आरति निवारत निहारत सभारत दुसह दुख देव तेरो बानई ॥ सेवकको सांकरो सहव नहिं रीति रही रघुराज सकल पुराणन प्रमाणई ॥ तेरही अछत मेरी अपति पतित करै विपति विनाशनकी वानि विसरा दई ॥ दीनबंधु सहज सनेहिन सनेहसिंधु करुणानिधा-न तेरी करुणा कहां गई ॥ ८ ॥ जानतीहूं जियमें जरूर मशहूर यह कुरु कुरु संतति विशेषि वधि जावैगी ॥ परम प्रचंड चक्र चपलचलाइ जीति देहो सब राज्य धर्मराजकी कहावैगी ॥ ऐहो दौरि द्वारकाते द्वारकाविलासी वेगी रघुराज पांडुपुत्र कीर्ति क्षिति छावैगी ॥ फेरी पछितैहो मोहिं बहुत बुझैहो यदुराज लाज गये पुनि लाज नाहिं आवैगी ॥ ९ ॥

दोहा-शाल्व समर हित गवन किय, जब वसुदेवकुमार ॥
सिंधुतीर यदुवीर श्रुति, द्रुपदी परी पुकार ॥ ११ ॥
जान्यो द्रुपदीको हरि, हरत दुशासन चीर ॥
सभा मध्य अनरथ महा, दौरयोद्रुतयदुवीर ॥ १२ ॥

कवित्त-कृष्णाको कलेश काटिवेको कपटीन कृत कैगयो प्रवेश पटद्वासनको सोंपदी ॥ खैंचत दुशासन बसन बाढ्यो बेप्रमाण कीन्ह्यों निजदासीको समुद्र दुख गोपदी ॥ कौतुक विलोकैं सबै सभासद् रघुराज पांडुपुत्रनारीको बिहारी सारी गोपदी ॥ द्रौपदीकी दुपटीकी दुपटीकी द्रौपदी है द्रौपदी न दुपटीकी दुपटी न द्रौपदी ॥ १० ॥ प्रथम सुरंग रंग कहूं पुनि पीतरंग श्वेत श्यामरंग पट निकसन लाग्यो है ॥ दोऊ कर कर्षत दुशासन दुकूल दुष्ट रुष्ट बल पुष्ट तऊ तनक न खाग्यो है ॥ सभा मध्य पटको पहार लाग्यो रघुराज भीष्मादि वीर उर अच-रज जाग्यो है ॥ भभरि भ्रमाति हारि श्रमित लजाइ जाइ बैठ्यो दूर क्रूर मनो सरवस त्याग्यो है ॥ ११ ॥

दोहा-तब भीषम बोल्यो वचन, सुनहु सबै मतिहीन ॥
द्रुपदी पति राख्यो हरी, पतितनकी पतिलीन ॥ १३ ॥

तब द्रुपदिहिं लै पांचौ भाई * चले विपिन अमरष उरछाई ॥
बारहिं वर्ष बसे वनमाहीं * सहत कलेश लेश सुख नाहीं ॥
सोई द्रुपदी कर अपराधा * कौरव कुल भो नाश अगाधा ॥
रहे न पांडु पुत्र वन योगू * पै देखत द्रुपदी दुख भोगू ॥
रक्षा कियो न धर्म विचारी * हरिजन रक्षन दियो बिसारी ॥
ताते रहे यदपि वध लायक * द्रुपदी दुख विचारि यदुनायक ॥
कियो पांडवनको वध नाहीं * दियो वास तिनको वनमाहीं ॥
सरव धर्मते भगवत धर्मा * यह जानहु हरिको हठि मर्मा ॥
भीष्म द्रोण कृप कर्ण प्रवीरा * धनुर्वेदधारक रणधीरा ॥
परी पीठ रण महँ कहुँ नाहीं * धर्म धुरंधर भूतलमाहीं ॥

समर सुरासुर जीतनवारे ❀ ते भट सहज समर गे मारे ॥
सो केवल द्रुपदी अपराधा ❀ नत यमहू करि सकत न बाधा ॥
दोहा-धर्मराजको राज पद, कुरुकुलको संहार ॥
उभय हेतु द्रुपदी भई, और न कछू विचार ॥ १४ ॥
पांडुपुत्र यदुनाथके, भये प्राणते प्यार ॥
सोउ हेतु है द्रौपदी, और न कछू विचार ॥ १५ ॥
और द्रौपदीकी कथा, भारतमें विस्तार ॥
तिनमें येक कथा कहौं, निजमतिके अनुसार १६ ॥
येक समय हस्तिननगर, करत सुयोधन राज ॥
दुर्वासा आवत भये, जोरि मुनीन समाज ॥ १७ ॥
शिष्य सहसदश सोहत संगा ❀ अनल तेज तप दुर्बल अंगा ॥
सुन्यो सुयोधन मुनिआगमनू ❀ लीन्ह्यों आगूते करि गमनू ॥
सुखद सदनमें वास करायो ❀ अशन यथारुचि रुचिरजेवायो ॥
शांत रह्यो कामानुज मुनिको ❀ सेवन कीन्हो मुनिमुनिधुनिको ॥
सकल करन तोषित तपसीको ❀ मान्यो मुनि सेवा नृप नीकी ॥
बोलि समीप कह्यो अस बानी ❀ मांगु महीप जो मति हुलसानी ॥
कह्यो सुयोधन यह वर देहू ❀ जो राखहु मोपर मुनि नेहू ॥
जोन पांडु पुत्रन हित मानी ❀ दियो भानु भाजन सुखदानी ॥
तेहि भाजन जब द्रुपदकुमारी ❀ भोजन करिकै धरै पखारी ॥
तब तुम पांडुसुतन ढिग जाहू ❀ यह वर देहु मोहिं मुनिनाहू ॥
एवमस्तु कहि तब दुर्वासा ❀ चले पांडुपुत्रनके पासा ॥
साधु विप्र अरु पति जेवांई ❀ तिन प्रसाद जब आपहु खाई ॥
दोहा-भानुदत्त भाजन सुखद, द्रुपदकुमारी धोइ ॥
बैठी सुचित सुगेहमें, पतिपद पंकज जोइ ॥ १८ ॥
ताही समय सहसदशदासा ❀ लिये संग आये दुर्वासा ॥
मुनि आगम सुनि पांडुकुमारा ❀ लियो कछुक चलि करिसतकारा ॥

करि प्रणाम पदपद्म पखारी ❀ धारयो शीश बंधुयुतवारी ॥
करि विनती आश्रम लै आये ❀ पूजन करि बहु विधि शिरनाये ॥
विनय कियो मुनि भोजन करहू ❀ नाथ विनय यह मम मन धरहू ॥
मुनि प्रसन्न ह्वै वचन उचारे ❀ अहो युधिष्ठिर दास हमारे ॥
भोजन भवन तिहारे करिहैं ❀ तिहरे वचन कौन विधि टरिहैं ॥
मैं मध्याह्न संध्या नहिं कीन्ह्यो ❀ अबलों नाहिं मुखमें जल लीन्ह्यो ॥
ताते सरित समीप सिधैहौं ❀ नित्य नेम पूरण करि लैहौं ॥
भोजन करिहौं पुनि इत आई ❀ जबलौं राखहु पाक बनाई ॥
भूप कह्यो भल कह्यो मुनीशा ❀ आवहु नाइ ईशपद शीशा ॥
नित्य नेम सब नाथ निवाही ❀ करहु आइ पुनि मोहिं उछाही ॥

दोहा—दुर्वासा सुनि नृप वचन, अति अचरज उर मानि॥
मोहिं खवैहै कौन विधि, भूपति मति बौरानि॥ १९॥

गे सरि जब मुनि मज्जन हेतू ❀ द्रुपदिहिं बोले पांडु कुलकेतू ॥
कह्यो वचन भोजन रचि देहू ❀ दुर्वासहिं खवाइ यश लेहू ॥
शिष्य सहसदश संग सोहाहीं ❀ पूरण अशन देहु सब काहीं ॥
संध्या हित मुनि सरित सिधारे ❀ आवन चहत क्षुधा उर धारे ॥
जो विलंब होई कछु प्यारी ❀ दै मुनि शाप सबन कहँ जारी ॥
कंत वचन सुनि द्रुपदकुमारी ❀ भीति विवश तनु सुरति विसारी ॥
चकित भई कछु कही न बानी ❀ वज्रपात लखि जनु बौरानी ॥
बैठी भीतर भवनहिं जाई ❀ लगी विचार करन दुखछाई ॥
भानुदत्त भाजनमहँ भोजू ❀ मोहिं लाये बिन प्रगटत रोजू ॥
कै चुकती भोजन मैं जबहीं ❀ भाजन भोजन देत न तबहीं ॥
अतिथि साधु पति सबनि खवाई ❀ मैंहूं सुचित भई पुनि खाई ॥
अब भोजन मिलिहैं केहि भांती ❀ आयो क्षुधित अतिथि उत्पाती ॥

दोहा—बिन पाये भोजन बिलखि, करिहैं कोप कराल ॥
पतिसंयुत मोहिं शापदै, करी भस्म तत्काल २०॥

यह विचारि शंका उदधि, मगन द्रौपदी चित्त॥
अब न उपाय द्वितीय कछु, गयो चित्तहरिजित्त२१

कवित्त–साहेब कौन समर्थ है दूसरो जो यहि कालमें काल निवारिहै॥ आकसमात जग्यो उतपात लग्योहै निपातको वात सुधारिहै॥ को शरणागत दीनन मीनन वारि विहीन पयोनिधि डारिहै॥ श्रीरघुराज विना यदुराजको संकट कंटक कोटि उखारिहै॥१॥ देवकिनंदन दुष्ट निकंदन दीनन वृंदनके दुखहारी॥ हे करुणाकर सेवकशंकर देखि न कापर प्रीति पसारी॥ तेरे अनुग्रह अंबुको सींची दहै लतिका मुनिको पदवारी॥ श्रीरघुराज गरीबनेवाज रमापति तू पति राखो हमारी॥२॥ आजलौं ऐसि भई न कहूं सुरपादपके तर दारिद आवै॥ पक्षिनके पतिके पदको गहे आशु उरंगमते कहुँ जावै॥ सावनके वनकी सबुजो घन देखत दीह दवारि जरावै॥ श्रीरघुराज सुनो यदुराज विलोकत तोहिं को मोहिं सतावै॥३॥ वेद पुराण प्रमाण बने अरु लोकहू लोग प्रमाण कहैगो॥ रावरी वानि नहीं बिसरानि यही जिय जानि भरोस रहैगो॥ श्रीरघुराज सुनो यदुराज जो नेसुक रावरे नेह नहैगो॥ साहेब तूसे समर्थ है सो सपन्यो नाहिं सेवक शोच सहैगो॥४॥ आरत आरति वेग निवारत दीन पुकारतही पगुधारे॥ साहेब शूर समर्थ सुजान आपन्न प्रपन्नके पालनहारे॥ शोच विमोचन शोचि करो अबलों न सँकोच सनेह विसारे॥ श्रीरघुराज गरीबनेवाज कहा गोहरावें कहाय तिहारे॥५॥ मानसवासिनि हंसिनिको उपकार कहो किमि कैसके खूसर॥ त्यों पुनि बोये न बीज जमे जहँ होत है ऊपर भूपर ऊसर॥ दानव देव चराचर जीव भये तव मायाके धूमते धूसर॥ तोहिं विहाइ न देखि परै रघुराज दुनीमें दयानिधि दूसर॥६॥ येकई आश भरोसो है येकई है वय विक्रम येकई मेरे॥ येकई योग संयोग है येकई और कुरोग कुयोग घनेरे॥ त्रासको नाशको शोच कछू नहिं येकई शोच लगे हियहेरे॥ सांकरेमें रघुराज दयानिधि आये नहिं हरि द्रौपदी टेरे॥७॥ काम परचो

जबहीं जब जैसो तहां तबहीं तब धायो तुराई ॥ दोष अदोष गन्यो न हरी बिरदावलि सत्य करी श्रुति गाई ॥ कौनसी चूक विचारि हमारि मुरारि गोहारि नहीं मनलाई ॥ श्रीरघुराज गरीबनेवाज दयानिधि काहे दया बिसराई ॥ ८ ॥ जब हाटककश्यप दैत्य महामन कोप गहे करमें करवालै ॥ देखि परे हगमें नहिं दूसरो जो अब आइके संकट पालै ॥ बांचि सकै न अनेक उपाय किये द्रुपदी प्रहलाद उतालै ॥ खंभकुटी नरसिंह बिना प्रगटे रघुराज वा देवकी लालै ॥ ९ ॥ गाढो ग्रस्यो गजको जब ग्राह करी यदुनाह त्वरा वैसी ॥ मेरई बार सभामधिमें पति राखी हरी करिकै त्वरा वैसी ॥ श्रीरघुराज सुनो यदुराज सोई तू दयानिधि दीनहौ जैसी ॥ दाया सोई तुम मेरो सोई दुख हे हरि तेरी त्वरा भई कैसी ॥ १० ॥ कोपित ह्वै दुरवासा रुखानल चाहैं पतीन समेत जरावै ॥ चाहैं अनेक परै पवि पात महामुनि क्रोधी मही उलटावै ॥ हौं रघुराज गह्यो व्रतयों हरि बाहन छाड़न जन्म सिरावे ॥ द्वारकावासी तिहारि ये दासी कहौ द्रुपदी केहिको गोहरावे ॥ ११ ॥ पूरबजन्मके कर्महीके वशकै कछु कालहीकी कठिनाई ॥ कौनहू योग कुयोग वसात कुरोगको भोग पर्‌यो बरिआई ॥ और उपाय न औरहू औषध नेकु परै हग मोहिं देखाई ॥ श्रीरघुराज गरीबनेवाज बिना यदुराज को आजु सहाई ॥ १२ ॥ तेरे भुजनि भरोस भरी भभरी भवभीतिहूको नहिं आरी ॥ आजलौं एकई जान्यों तुम्हैं जिमि चातक चाहत स्वातिको वारी ॥ सांवरेहू न सनेह सकोच तज्यो अबलौं नहिं बानि बिसारी ॥ हे यदुराज तुम्हैं अछते रघुराज दशा यह होति हमारी ॥ १३ ॥ कैधौं पुकार गई उतलौं नहिं कैधौं बिचार्‌यो नहीं निज दासी ॥ सेवककी शरणाई तज्यो किधौंकी करुणाईते ह्वैगे निरासी ॥ हाय हरी तुम कैसे भये निठुराई कहां यह पाईहै खांसी ॥ द्वारिकावासी सुनो रघुराज न लागति लाज जो होयगी हांसी ॥ १४ ॥ जो नहिं ऐहैं बचैहैं नहीं पाछेतैहैं सही वसुदेवदुलारे ॥ दीनदयालु कहैहैं किते बिरदावली डारत काहे बिगारे ॥ हौं तो

मारी अफसोस भरी पै बानी नाहिं जो निज बानि बिसारे ॥ श्रीरघुराज गरीबनेवाज गरीबगोहारि सुनै नहिं कारे ॥ १५ ॥

दोहा-रहे रुक्मिणी सेजमें, श्रीवसुदेवकुमार ॥
द्रुपदसुताकी जाइ तहँ, कानन परी पुकार ॥ २२ ॥

कवित्त-चौंकि उठ्यो चितसों चहूंकित चवाइ रह्यो चितै रुक्मिणीकी वोर चैन बिसराइगो ॥ प्यारी पान देत पाणिपंकजसों लेतहीमें कृष्णाकी पुकार सुनि कृष्ण अतुराइगो ॥ करन पयान हेतु पलँगसों येक पाउँ पुहुमी उतारयो यतनोईलो देखाइगो ॥ रघुराज द्रुपदसुताईके समीप सोई पाणि लीन्हे बीरा यदुवंश बीर आइगो ॥ १६ ॥

दोहा-सुनि पुकार पांचालिकी, यक पग पलँग उतारि ॥
दूजो पद द्रुपदीकुटी, दीन्ह्यो पुहुमि मुरारि ॥ २३ ॥

देखि नाथ कह द्रुपदकुमारी ❀ चरण गिरी तनु सुरति बिसारी ॥
बार बार ढारति दृगवारी ❀ तनु पुलकित युत पलक निवारी ॥
करि छबि पान विनय पुनि कीन्ही ❀ धरणि धन्य मोको करि दीन्ही ॥
कस न खबरि लीजे करुणाकर ❀ तुमहीं अहो दयाके आगर ॥
कह्यो नाथ तब बचन पियूषा ❀ द्रुपदसुता लागी मोहिं भूषा ॥
भोजन दे मोहिं तुरत मँगाई ❀ विन भोजन कब कछु न सोहाई ॥
द्रुपदी कह्यो सुनहु यदुनाहू ❀ जानि जानि कैसे भषलाहू ॥
भोजन भवन जो होत हमारे ❀ तो कैसे जिय परत खभारे ॥
काहे कटुक बचन हम कहती ❀ अस श्रम प्रभुहि करावन चहती ॥
भोजन हेतु भानु मोहिं भाजन ❀ दियो जौन सुन रुक्मिणिसाजन ॥
ताको है यहि भांति प्रमाना ❀ जबलगि मैं खाऊं भगवाना ॥
तबलगि प्रगटत भोजन लोई ❀ क्षुधित रहत इत आय न कोई ॥

दोहा-जब मैं भोजन करचुकौ, अतिथिन पतिनखवाइ ॥
तब भोजन प्रगटत नहीं, कीन्हे कोटि उपाइ ॥ २४ ॥

ऐसो जानि भानुहरदाना ❀ करत रही मैं तेहि प्रमाना ॥

अशन के चुकी मैं जब आजू ॥ मुनि आयो तब जोरि समाजू ॥
तुम्हैं न कछु छिपान गिरिधारी ॥ विनय करौं मैं कहा उचारी ॥
तब हरि कह्यो सुनहु छबिराशी ॥ उचित न करब क्षुधितसों हांसी ॥
अतिशय भूख लगी मोहिं काहीं ॥ तुम हांसी करि कीजत नाहीं ॥
जो कछु होइ सोइ मोहिं देहू ॥ बिन दीन्हे मनिहौं नहिं केहू ॥
धर्मराजकी हो तुम रानी ॥ कस नाहिं भोजन देहु सयानी ॥
बहुतबार लगि हमहिं दुराये ॥ कैसे भूख मिटी बिन खाये ॥
ल्यावहु ढूंढि जौन घर होई ॥ हम अघाइ जैहैं भखि सोई ॥
द्रुपदी कह्यो हाइ दुख दूनो ॥ हरिभोजन मांगत घर सूनो ॥
जौन रोग हित तुमहिं बोलायो ॥ तौन रोग अब तुमहु लगायो ॥
हरि कह दे भोजन मोहिं प्यारी ॥ और बात नहिं सुनब तिहारी ॥
दोहा—बहु व्यंजनप्रद भानु जो, भाजन दीन्ह्यो तोहिं ॥
ह्वैहै कछु विशेष तेहिं, सो देखरावै मोहिं ॥ २५ ॥
बहुतकाल हांसी तुम कीन्ही ॥ बहुत क्षुधा बाधा मोहिं दीन्ही ॥
तब पांचाली कही दुखारी ॥ सो भाजन मैं धरयो पखारी ॥
मोर वचन मानहु सति नाहीं ॥ ल्याइ देखाऊं भाजन काहीं ॥
अस कहि तब उठि द्रुपदकुमारी ॥ भाजन ले आगे दिय डारी ॥
हरि भाजन कर लियो उठाई ॥ हेरन लगे हाथ तेहि नाई ॥
हेरत हेरत भाजन काहीं ॥ पायो शाक पत्र तेहि माहीं ॥
शाक पत्र लखि कह्यो मुरारी ॥ कृत कृष्णा तैं झूंठ उचारी ॥
यह तो मोहिं तोषकर भूरी ॥ यहै विश्वको जीवन मूरी ॥
शाक पत्र प्रभु निज मुख डारयो ॥ विश्व भरण अस वचन उचारयो ॥
शाकपत्र जग तोषक होई ॥ क्षुधित रहै यह समय न कोई ॥
अस कहि प्रभु द्रुपदी सन भाखे ॥ अबलों मुनिन नेवति कस राखे ॥
भीमहिं भेज लेहु बोलवाई ॥ अब विलंब केहि कारण लाई ॥
दोहा—प्रभुके वचन प्रतीति करि, द्रुपदी भीम बोलाइ ॥
कह्यो जाहु लै आवहु, दुर्वासै पधराइ ॥ २६ ॥

भीमहु भोजन जानि तयारी ❀ चले बोलावन हित तपधारी ॥
रहे करत संध्या दुर्वासा ❀ संयुत दश हजार निज दासा ॥
सबकहँ आवन लगी डकारा ❀ मनमहँ कंठभर किये अहारा ॥
कहहिं एक एकन श्रुति लागी ❀ हमरी भोजनकी रुचि भागी ॥
कहत कहत माच्यो अस सोरा ❀ सबके उदर अजीरन घोरा ॥
कहे वचन दुर्वासा काहीं ❀ हम सबके भोजन रुचि नाहीं ॥
दुर्वासहुँ तब वचन उचारा ❀ हमहूको आवती डकारा ॥
महा अनर्थ भयो यहि काला ❀ नेउता कियो धर्म महिपाला ॥
दश हजार जन भोजन साजू ❀ बनवायो मेरे हित आजू ॥
भोजन रुचि तनकहु जिय नाहीं ❀ कौने पेट जहां चलि खाहीं ॥
जाइ उतै भोजन नहिं करिहैं ❀ हमपर दोष धर्म नृप धरिहैं ॥
अन्न सुरति आवति बोकलाई ❀ कहौ सबै का करैं उपाई ॥

दोहा-भये मृषा वादी सबै, पर्यो परम अपराध ॥
व्यंजन गये खराब बहु, हमैं न भोजन साध ॥२७॥

धर्म स्वरूप कृष्णकर दासा ❀ भूप युधिष्ठिर तेज प्रकासा ॥
जबते अंबरीष महराजा ❀ मोपर कीन्हो कोप दराजा ॥
तबते हरिदासन सब काला ❀ डरत रहौं मैं जैसे काला ॥
अबलों भूली सुरति न मोही ❀ है हौं नाहिं हरिदासन द्रोही ॥
ताते जो निज चहो भलाई ❀ तौ सब भागो पेलि पराई ॥
यतना सुनत शिष्य गण सिगरे ❀ भागत भे दशहूं दिशि सडरे ॥
भागत जात डकारत जाहीं ❀ पुनि पाछे चितयो कोउ नाहीं ॥
दुर्वासहु अकेल तब भागे ❀ मनहुँ युधिष्ठिर पीछे लागे ॥
भागि गये मुनि गण द्रुत दूरी ❀ अफरे मनहुँ खाय भरि पूरी ॥
भीमसेन तेहिं थलमहँ गयऊ ❀ एकहु मुनि नाहिं देखत भयऊ ॥
हेरन लग्यो चहूंकित तहँवां ❀ संध्या करत रहे मुनि जहँवां ॥
गंगातीर हेरि सब डार्‌यो ❀ एकहु मुनि नहिं नैन निहार्‌यो ॥

दो०-अतिशय शोकितदुखित तहँ, भयोभीम भयमानि ॥
धर्म निकट आयो बहुरि, कह्यो जोरियुगपानि ॥२८॥

नाथ मिले मुनि मोहिं न हेरे ❀ कहां गये कहँ कियो बसेरे ॥
दुखी युधिष्ठिर भये तहांहीं ❀ का अपराध गन्यो मोहिं माहीं ॥
अथवा छल करिहैं मुनिराई ❀ ऐहैं बहुरि विलंब लगाई ॥
अस विचारि तहँ पांचो भाई ❀ बैठे मुनि आगम मनलाई ॥
जो ऐहैं भोजन नहिं पैहैं ❀ मुनि दे शाप विशेषि जरै हैं ॥
परिखे परिखे भइ अधराता ❀ मुनि आयो नहिं जोर जमाता ॥
कृष्ण कुटी ते तब कढि आये ❀ पांडव देखि मुदित अति धाये ॥
लपटि गये पद पांचहु भाई ❀ कृष्ण युधिष्ठिरको शिर नाई ॥
यथा योग पुनि मिलि यदुराई ❀ पूंछ्यो प्रमुदित कुशल भलाई ॥
पांडव कह्यो कुशल तव दाया ❀ कहां आप आय यदुराया ॥
हरि कह द्रुपदी मोहिं बोलायो ❀ दुर्वासाते भीति सुनायो ॥
सो नहिं भीति करहु नृपराई ❀ आप तेज मुनि गयो पराई ॥
दो०—धर्म धुरंधर जे पुरुष, तिनहिं विपति कहुँ नाहिं ॥
शासन दीजै भूपतो, सपदि द्वारिके जाहिं ॥ २९ ॥
पांडव तब कर जोरिकै, विनय कियो मृदु बैन ॥
हमरे प्रभु जहँ आपसे, तहँ हमको कछु भै न॥ ३० ॥
दुख समुद्र गोपद सरिस, तरिहे हम सब काल ॥
यहि विधि कृपा कियेरहो,हे कृपालु नँदलाल॥ ३१ ॥
मांगि बिदा पांडवनसों, गे द्वारका मुरारि ॥
पांडव द्रुपदी सहित तहँ, निवसत रहे सुखारि॥ ३२॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे पंचविंशतितमोऽध्यायः ॥ २५ ॥

अथ जनार्दनब्राह्मणकी कथा।

दोहा—एक जनार्दन नामको, रह्यो विप्र मतिवान ॥
तासु कथा वर्णन करौं, है हरिवंश पुरान ॥ १ ॥
शालव नगर अतिशय अभिरामा ❀ नृप रह ब्रह्मदत्त अस नामा ॥

धर्मात्मा इंद्रिय जित ज्ञाता * कारक यज्ञ अनेक विख्याता ॥
ताके रहीं सुमुख द्वै रानी * शील सुछबि सद्गुणकी खानी ॥
भूपति मित्र मित्रसह नामा * रह्यो विप्र इक अति मतिधामा ॥
विप्रहुको अरु राजहु काहीं * दियो एकहू सुत विधि नाहीं ॥
कियो राज चिर नृपकुलकेतू * विप्र मित्रसह मित्र समेतू ॥
एक समय नृप मानि गलानी * वैष्णव यज्ञ करन मन आनी ॥
शंभु प्रसन्न हेतु महिपाला * कीन्ह्यों वैष्णव यज्ञ विशाला ॥
तैसे विप्र मित्रसह नामा * कृष्ण प्रसन्न होन करि कामा ॥
कीन्ह्यों वैष्णव यज्ञ महाना * वेद कथित करि सकलविधाना ॥
जानि दुहुन कहँ परम प्रपन्ना * नृप द्विज हर हरि भये प्रसन्ना ॥
भूपतिके मख शंभु सिधाये * विप्र यज्ञमें जगपति आये ॥

दोहा-राजाशंकर चरणपरि, मांग्यो यह वरदान ॥
युगलप्रतापी पुत्र मो, देहु देव ईशान ॥ २ ॥

तैसे विप्र मित्रसह सोई * हरिसों मांग्यो वर इतनोई ॥
देहु दयानिधि सुत निज दासा * और न मेरे कछु हिय आसा ॥
दियो नृपहि हर युगलकुमारा * अजर अमर बलवान अपारा ॥
तैसहि द्विज सुत दियो मुरारी * विषय विरक्त भक्तिअधिकारी ॥
भूप पुत्र युग भे बलधामा * भयो हंस डिंभक अस नामा ॥
भयो विप्रके जौन कुमारा * तासु जनार्दन नाम उचारा ॥
द्वै सुत नृपके इक द्विज केरो * तीनिहुँ भयो सनेह घनेरो ॥
शस्त्र शास्त्र पढि भये सुजाना * तपकरिवे वन कियो पयाना ॥
हंस और डिंभक दोउ भाई * कीन्ह्यों तप शिव पद मनलाई ॥
विप्र जनार्दन हरिपद प्रेमी * भयो भक्ति याचनको नेमी ॥
पंचवर्ष तीनों मतिमाना * हरि हर तप कीन्ह्यों सविधाना ॥
हंस और डिंभक रह जहँवां * है प्रसन्न आये शिव तहँवां ॥

दोहा-मांगु मांगु वर हर कह्यो, तुम्हरे परम सप्रीति ॥
करी तपस्या कठिन अति, करि मम चरण प्रतीति ॥ ३ ॥

तबै हंस डिंभक दोउ भाई ❀ फेरि जन्म मानहु जगपाई ॥
उठे पुलकि दोऊ मतिवाना ❀ शिवहिं दंड सम कियो प्रणामा ॥
स्तुति किय अनेक लै नामा ❀ जय हर भालचंद्र अभिरामा ॥
बहुरि दोउ मांग्यो वरदाना ❀ जितैं सुरासुर हे भगवाना ॥
दिव्य अस्त्र सिगरे मोहिं देहू ❀ मीचु न होइ युद्ध महँ केहू ॥
एवमस्तु शंकर कहि दीन्ह्यों ❀ बहुरि कृपा अतुलित हर कीन्ह्यों ॥
बोले वचन सुनहु मम दासा ❀ तुम्हरे रक्षन हित तुव पासा ॥
रहिहैं सदा मोर गण दोई ❀ रिपु तोहिं जीति सकी नहिं कोई ॥
रहिहैं सदा तुम्हार सहाई ❀ तिनहिं विलोकत शत्रु पराई ॥
विरूपाक्ष कुंडोदर नामा ❀ रहिहैं तुम समीप सब यामा ॥
अस कहि भे हर अंतरधाना ❀ हंस डिंभको अति सुखमाना ॥
पहिरि कवच शंकर परसादा ❀ धारि परशु कर शमन विषादा ॥
दोहा–उभय भवन कहँ गवन किय, दोउ हरगण तिन संग ॥
आइ सदन पितु वंदना, कीन्ह्यों वोज अभंग ॥ ४ ॥
राजत रुचिर त्रिपुंड़ ललाटा ❀ भस्म सकल तनु अद्भुतठाटा ॥
सकल अंग रुद्राक्षन माला ❀ जटाजूट सुरसरित विशाला ॥
आठपहर शिव शंभु उचारत ❀ व्याघ्र चर्म कर अंबर धारत ॥
यही विधि निवसन लगे सदाई ❀ प्रबल हंस डिंभक दोउ भाई ॥
उतै जनार्दन कानन माहीं ❀ हरि प्रसन्न हित किय तप काहीं ॥
हरे राम राघव रघुवंशी ❀ हरि केशव यादव यदुवंशी ॥
यही विप्र रसना रट लागी ❀ दृग जल ढारत हरि अनुरागी ॥
तनुकी सिगरी सुरत बिसारी ❀ भजत मुकुंद कृष्ण गिरिधारी ॥
बीते पंच वर्ष यहि भांती ❀ जपत नाम हरिको दिनराती ॥
प्रेम नेम द्विज केर निहारी ❀ प्रगट भये प्रसन्न गिरिधारी ॥
प्रभुको निरखि विप्र सुख पायो ❀ दौरि चरण पंकज शिरनायो ॥
जय जय यदुवर कृपानिधाना ❀ तुम्हहि गरीबनेवाज न आना ॥
दोहा–कसन करहु निज दासपर, दया दयानिधि नाम ॥
यहि सागर संसारते, आसु उधारक श्याम ॥ ५ ॥

करी प्रीति युत अस्तुति भारी ❀ प्रेम मगन दृग ढारत वारी ॥
ह्वै प्रसन्न हरि वचन उचारा ❀ मांगहु जो मन होइ तुम्हारा ॥
हम प्रसन्न तुमपर महिदेवा ❀ कीन्हो कपट हीन मम सेवा ॥
द्विज तब कह्यो जोरि कर दोऊ ❀ पाये पर मांगै नहिं कोऊ ॥
याते अधिक काह अब पैहों ❀ तुम कहँ नाथ छोड़ि कहँ जैहों ॥
जो मोपर प्रभु कृपा करीजै ❀ तो निज चरण प्रेम मोहिं दीजै ॥
साधुन संग देहु भगवाना ❀ अब नहिं मोर मनोरथ आना ॥
विप्र वचन सुनि मुदित मुरारी ❀ मिले दौरि दृग ढारत वारी ॥
कह्यो भक्ति तोहिं होइ हमारी ❀ ऐहै मम पुर सपदि सिधारी ॥
असकहिअंतरहित प्रभु भयऊ ❀ विप्रहु मुदित भवन चलिगयऊ ॥
आइ भवन ठानी अस रीती ❀ क्षण क्षण बढति कृष्ण पद प्रीती ॥
ऊरध पुंड्र ललाट विराजत ❀ द्वादश तिलक अंग छवि छाजत ॥
गले पाणि तुलसी करमाला ❀ शील सुभाव सनेह रसाला ॥

दोहा-यहि विधि डिंभक हंस दोउ, और जनार्दन विप्र ॥
बसे शाल्वपुर महँ मुदित, यशी भये जग क्षिप्र ॥६॥

तहां हंस डिंभक दोउ भाई ❀ एक समय निज सैन्य सजाई ॥
विप्र जनार्दन लै सँग माहीं ❀ गये शिकार हेतु वनकाहीं ॥
खेलि तहां बहु भांति शिकारा ❀ बाघ वराहन हन्यो अपारा ॥
विहरत विहरत विपिन ललामा ❀ बीति गयो तिनको युग यामा ॥
तृषित सैन्य युत भे दोउ वीरा ❀ आवत भे पुष्करके तीरा ॥
करि जल पान कियो विश्रामा ❀ तहां रहे अगणित तप धामा ॥
सुनत वेदध्वनि दल तहँ राखी ❀ दोऊ द्विज दर्शन अभिलाखी ॥
लै सँग मीत जनार्दन काहीं ❀ गे मुनि आश्रम मंडल माहीं ॥
निरखि मुनिन दोउ करहिं प्रणामा ❀ आशिष देहिं मुनीश ललामा ॥
करहिं ऋषिन सब विनय बहोरी ❀ मानहु यह विनती सब मोरी ॥
राजसूय मख पितहि करैहैं ❀ सिगरी धरणि विजय करि लैहैं ॥
अइयो सब मुनि मम पुर काहीं ❀ जब हम तुम्हैं बोलावन जाहीं ॥

दोहा-यहि विधि मुनिन समीपमहँ, विनय करत दोउवीर
आश्रम आश्रम मुनिनके, गमन करत मतिधीर ॥७॥

दरशन करत सविधि सतकारत * मुनिगण तिनसों वचन उचारत ॥
पितु तुम्हार करिहैं मख जबहीं * ऐहैं हम सिगरे तहँ तबहीं ॥
यहि विधि वचन सुनत तिन केरे * गये दोउ दुर्वासा नेरे ॥
शिष्य सहसदश मध्य विराजत * मानहुं अनल मूर्ति धरि राजत ॥
विदित भुवन जेहिं कोप प्रतापा * मानत त्रास सुरासुर शापा ॥
दंड पाणि तनु अरुण दुकूला * दहत होत जापर प्रतिकूला ॥
रक्त नैन तनु भस्म लगाये * जटाजूट शिर श्वेत सोहाये ॥
मानहुं मुनि कालहु कर काला * कौन होइ तेहिं निरखि बिहाला ॥
तेहिं दुर्वासाके ढिग जाई * हंस और डिंभक शिर नाई ॥
कुशल प्रश्न पूछयो सब भांती * बैठे मुनि समीप अरि घाती ॥
जाइ जनार्दनहू शिर नायो * जानि कृष्ण जन मुनि सुखपायो ॥
जग विरक्त दुर्वासहि देखी * अनुचित हंस डिंभकहुं लेखी ॥

दोहा-कालरूप मुनि सन्मुखै, बोले वचन कठोर ॥
तजि गृहस्थ आश्रम भयो, संन्यासी कस चोर ८॥

प्रथम गृहस्थाश्रम विधि होई * प्रथम करै संन्यास न कोई ॥
रे मुनि म्वहिं जानसि पाखंडी * पहिरि अरुणपट ह्वै वपुदंडी ॥
कोउ नहिं प्रथमहि तोहिं सिखाये * वेद विरुद्ध रीति कहँ पाये ॥
नाहिं गृहस्थ सम आश्रम दूजा * जामें होति अतिथि सुरपूजा ॥
होत गृहस्थ आश्रमहि ते गति * करत गृहस्थहि पर शंकर रति ॥
ते पाखंड दंड कर धारे * धर्म कर्म सब भांति बिसारे ॥
जन वंचन हित पुष्कर तीरा * बैठ्यो बक समान तजि धीरा ॥
रे उन्मत्त विरूप मूर्ख वर * दुर्वासा तैं वृथा दास हर ॥
निराचार अतिशय अज्ञानी * राख लगावत लाज न आनी ॥
तैं निर्बुद्धि प्रमत्त प्रधाना * तोर अमंगल रूप महाना ॥
ऐसे पाखंडी शठ काहीं * हमहीं शासन करत सदाहीं ॥
याको पकरि बांधि युगपानी * व्याह कराउब घर महँ आनी ॥

दोहा—वेद विहित यह कुमतिको, गृह आश्रमी बनाइ ॥
पुनि संन्यास सिखाइ हैं, संस्कार करवाइ ॥ ९ ॥

अस कहि अत्रि मुनिके ढिगजाई * दुहुँ दिशि घेरि बैठि दोउ भाई ॥
पुनि बोले दोउ वचन कठोरा * रे दुर्वासा तैं शठ चोरा ॥
महामूर्ख कछु जानत नाहीं * नाशसि औरहु विप्रन काहीं ॥
मूर्ख आप औरहुको नासी * अबलौं तोर भयो नहिं शासी ॥
तैं पापी पाखंडी पूरो * तोसे बसत धर्म है दूरो ॥
शासन मानहुँ विप्र हमारा * लहिहौ स्वर्ग प्रमोद अपारा ॥
प्रथम गृहस्थाश्रम तुम कीजे * वानप्रस्थ बहुरि मन दीजे ॥
सविधि बहोरि करहु संन्यासा * तब नहिं होय धर्मपथ नसा ॥
जो नहिं मानिहो हुकुम हमारो * तौ दुर्लभ मुनि जीव तुम्हारो ॥
रहे करत जप मौन मुनीशा * सुमिरत ध्यान धरे जगदीशा ॥
ताते शाप वचन नहिं भाषे * मनमहँ दोहुन पर मुनि माषे ॥
जानि जनार्दन दोहुँन घाता * कह्यो हंस डिंभकसों बाता ॥

दोहा—वृद्धन को सेयो नहीं, कियो नहीं सतसंग ॥
मुनिहिं वृथा कटु वचनकहि, करि लिय आयुषभंग ॥ १० ॥

काल विवश तुम कह्यो कुवादा * लहिहो डिंभक हंस विषादा ॥
महा तपी शिवको अवतारा * दुर्वासा जेहि नाम उचारा ॥
क्रोध स्वरूप डरत संसारा * संन्यासी शिरताज उदारा ॥
ताको तुम कटु वचन बखान्यो * अवशि विनाश भयो हम जान्यो ॥
अबहु परो मुनिचरणन माहीं * है प्रसन्न क्षमिहैं अघ काहीं ॥
रही हमारि तुम्हारि मिताई * रहे बालते संग सदाई ॥
ताते देखि तुम्हार विनाशा * महाशोक मम हिये प्रकाशा ॥
गिरहुँ शैलते की विष खाऊं * की तजिकै तुमको कहि जाऊं ॥
सुनत जनार्दनकी शुभ बानी * भने हंस डिंभक अभिमानी ॥
रे द्विज मूढ मौन गहि लेही * शक्ति मोहिं नाशनकी केही ॥
तैं उपदेशक होत हमारे * मुनि मिलिकै कस वचन उचारे ॥

सुनि दुर्वासा वचन कराला * जगी घोर कोपानल ज्वाला ॥

दोहा–रोम रोम पावक शिखा, जगी जोलाहल जोर ॥
बंक भ्रुकुटि दृग करि तहां, चितयो मुनितिन वोर ११॥

कढ़ी नैन कोपानल ज्वाला * मानौ करत प्रलय यहि काला ॥
हंस और डिंभक ढिग आई * शिव प्रसाद वश गई बुताई ॥
दुर्वासा करि कोप अखंडा * दीन्ह्यो दोहुँन शाप प्रचंडा ॥
भस्म हंस डिंभक ह्वै जाहू * शाप सकी नहिं तिन करि दाहू ॥
दुर्वासा तब मानि गलानी * बार बार बिलखत कह बानी ॥
टरहु टरहु यहि थलते दोऊ * तुमहि न इत राखत हैं कोऊ ॥
तुम्हरो पाप जनित अभिमाना * अवशि नाश करिहैं भगवाना ॥
कृष्ण नाम अस सुनत सुरारी * महाकोप अपने उरधारी ॥
दियो छाइ मुनिकर कोपीना * बरबस भुजगहि थापित कीना ॥
देखि दशा दुर्वासा केरी * भागे शिष्य हाय मुखटेरी ॥
उठन लगे पुनि के दुर्वासा * गहि बैठायो हंस सहासा ॥
बरज्यो बहुत जनार्दन ज्ञानी * मानी नहिं तिनकी कछु बानी ॥

दोहा–दुर्वासा परसन्न ह्वै, विप्र जनार्दन काहिं ॥
कह्यो कृष्णरति होइ तोहिं, तैं सज्जन इनमाहिं ॥१२॥
आजु कालिह अथवा परौ, तोहिं मिलिहैं भगवान ॥
देहु संग तजि दुहुँनको, इन्हैं काल नियरान ॥१३॥

विप्र जनार्दन अरु मुनि केरी * जानि मित्रता हंस घनेरी ॥
विप्रहि कह्यो दुष्ट तैं सांचो * तेरेहु शीश काल अब नाचो ॥
जो अपनी तुम चहौ भलाई * तौ हमरे सँग रहौ न भाई ॥
जो कहिहौ कटु वचन महीसुर * तौ काटिहैं रसना कहते फुर ॥
भयो जनार्दन मनहिं उदासा * गवनत भयो निराश अवासा ॥
तबै हंस डिंभक करि कोपा * जान्यो सकल मुनिनके झोपा ॥
तोरयो दंड कमंडलु काहीं * औरहु पात्रन फोरि तहांहीं ॥
दुर्वासाके शिष्यन धरिकै * मारयो विविध यातना करिकै ॥

जस तस कै भागे दुर्वासा ❋ मानि हंस डिंभककी त्रासा ॥
अति दुर्दशा करी मुनिकेरी ❋ काल विवश विधितिनमति फेरी॥
योगिन जटाजूट बहु जारे ❋ विन अंबर करि बहुत निकारे॥
यहि विधि बहुत उपद्रव कीन्ह्यो ❋ मुनिन निवास नाश करि दीन्ह्यो॥

दोहा-मनहुँ न मुनि आश्रम रह्यो, अस है गयो तहाहिं॥
तहां दोउ डेरा कियो, मुदित महा मनमाहिं॥१४॥

तहँ दोउ बंधुन मांस अहारे ❋ पुनि अपने घर सुखित सिधारे॥
दुर्वासा भागे बहु दूरी ❋ भये श्रमित शोकित भरिपूरी॥
मुनि अधमरे मिले तहँ जाई ❋ रोदन करत महादुख छाई॥
तब दुर्वासा बोधन कीन्ह्यो ❋ अबे न तुम हरिको कोउ चीन्ह्यो॥
दुष्ट विनाशक दीनदयाला ❋ बसत द्वारका देवकिलाला॥
होहु सबै शरणागत ताके ❋ हम अवलंबित तासु कृपाके॥
रक्षण करिहैं अवशि हमारा ❋ प्रभु ब्रह्मण्य शरण्य उदारा॥
ऐसे दुष्टन बहुत सँहारा ❋ शरणागत रक्षण विस्तारा॥
सकल शिष्य संमत करि दीन्हे ❋ मुनिवर गमन द्वारकै कीन्हे॥
हैं शरणागत पालक नाथा ❋ हमको करिहैं अवशि सनाथा॥
करत विचार मनहिमन जाहीं ❋ शोकित श्रमित दुखित पथमाहीं॥
पंचसहस्र शिष्य मुनि साथा ❋ पंचसहस हथिगे नृपहाथा॥

दोहा-जस तसकै द्वारावती, निकट जाइ मुनिराइ॥
कटे फटे अंबर पहिरि, वापी लियो नहाइ॥१५॥

कियो प्रवेश नगर दुर्वासा ❋ यदुनंदनकी देखन आसा॥
जाइ सुधर्मा सभादुवारा ❋ द्वारपालसों वचन उचारा॥
देहु जनाइ खबरि प्रभु पाहीं ❋ मुनि आये तुव दर्शन काहीं॥
द्वारपाल लखिकै दुर्वासै ❋ जाइ कह्यो द्रुत रमानिवासै॥
दुर्वासा ठाढे प्रभु द्वारे ❋ आयसु होय तौ सभा सिधारे॥
हरि कह शीघ्रहि ल्याउ लेवाई ❋ प्रतीहार सुनि आसुहि आई॥
सभामध्य लै गो मुनिराई ❋ मुनि देख्यो बैठे यदुराई॥

राजत यदुवंशी सरदारा * महा वीर रणधीर उदारा ॥
चामीकर सिंहासन भ्राजा * राजत उग्रसेन महराजा ॥
मणिमय सिंहासन अति सुंदर * राजत यदुकुल कमल दिवाकर ॥
तासु निकट राजत बलरामा * मनहु कोटि शशि उदितललामा ॥
हरिके बाम दाहिने बीरा * सात्यकि उद्धव दोउ बरजोरा ॥
दोहा-औरहु वीर विराजहीं, कृतवर्मा अक्रूर ॥
हरि भ्राता गद आदि सब, राजत भुजबल पूर ॥ १६ ॥
खेलत सात्यकि संग गँजीफा * करत सभासद सकल तरीफा ॥
सात्यकि संयुत पाइ प्रमोदा * विविध भांति हरि करत विनोदा ॥
बाल कनिष्ठ आदि सुकुमारा * उद्धव आदिक युवा उदारा ॥
वसुदेवादिक वृद्ध सुजाना * बैठे सभा सभासद नाना ॥
यथा राम सुग्रीव संगमें * खेल्यो विविध सु खेल रंगमें ॥
तिमि खेलत सात्यकि सँग नाथा * देखि देखि सब होत सनाथा ॥
आये दुर्वासा दरबारा * निरखि मुनिहिं भट उठे अपारा ॥
दुर्वासहि लखिकै भगवाना * बंद कियो निज खेल महाना ॥
उठे राम युत श्याम तहांहीं * गोलक खेल लिये करमाहीं ॥
आगू चलि प्रभु कियो प्रणामा * तैसहि चरण परे पुनि रामा ॥
वंद्यो पुनि मुनि आहुक राजा * मुनि वंद्यो यदुवंश समाजा ॥
मुनिसँग मुनिगण पंच हजारा * सुभटन आशिष दये अपारा ॥
दोहा-राम श्याम वसुदेव कहँ, अरु आहुक नृप काहिं ॥
दुर्वासा आशिष दियो, औरहु सबन तहांहिं ॥ १७ ॥
शिष्यन युत दुर्वासा केरी * लखी दुर्दशा नाथ घनेरी ॥
आधे जटा जरे कोहु केरे * कोहुके तनुमें घाउ घनेरे ॥
फूटे कमंडलु दंडहु टूटे * जटाजूट काहूके छूटे ॥
फटे कोपीन कोउ पटहीना * हाय हाय बोलत दुखभीना ॥
फरकत अधर नैन अतिलाला * दुर्वासा मनु कालहु काला ॥
देखि सकल यदुवंश डेराये * केहि कारण मुनिनाथ रिसाये ॥

जोरे हाथ सबै भट ठाढे * चितवत मुनिमुख चिंता बाढे ॥
कनकसिंहासन तुरत मँगायो * तापर दुर्वासाहिं बैठायो ॥
चरण धोइ शिर धरचो मुरारी * कीन्ह्यों पूजन सविधि सुखारी ॥
यथा योग सब मुनिन मुकुंदा * दीन्ह्यों आसन यदुकुलचंदा ॥
भन्यो नाथ मुनि के कर जोरी * मुनि दुर्दशा कीन को तोरी ॥
कौन हेतु आगम इत भयऊ * धौं मोसे आगस ह्वै गयऊ ॥

दोहा—हम तौ सेवक आपके, तुम हौ देव हमार ॥
बहुरि थोरई कालमें, प्रभु आये मम द्वार ॥ १८ ॥

ताको कारण कछु नहिं जानो * तुम आगम निज कहँ धनि मानो॥
असकहि अर्घ्य पाद्य सतकारा * कियो बहुत वसुदेवकुमारा॥
हरिके पूंछत मुनि मनमाहीं * भये कुपित द्रुत दूत तहांहीं ॥
श्वास लेत मुख वारहिंवारा * चितवत हगन करत मनु छारा ॥
भक्षत मनहुँ निहारत माहीं * कछु न कहत चितवत चहुँघाहीं ॥
कोप विवश कछु कढत न बैना * चितवत हरिकहँ अनमिष नैना ॥
जस तसके मुनि कोप सँभारी * बोले वचन बिलखि तपधारी ॥
सांतिहै सांतिहै तुम नहिं जानो * काहेको अब हमको मानो ॥
हमहिं ठगनको अहैं तुम्हारे * हांसी करियत काह विचारे ॥
विदित विश्व वृत्तांत विशेषी * मम गति नाहिं जानहुँ का लेषी ॥
देखि दुर्दशा देव हमारी * पूंछहु आगम हेतु मुरारी ॥
हांसी करहु दुखित मोहिं जानी * भये विभव वश तुम अभिमानी॥

दोहा—जानत जग वृत्तांत सब, मैं का देहु जनाइ ॥
पूंछहु जानि अजानसे, बार बार मुसकाइ ॥ १९ ॥

यद्यपि जानहु सब यदुराई * तद्यपि पूंछे देहुँ सुनाई ॥
पापी डिभक हंस नरेशा * बसै शाल्वपुर शाल्वहिं देशा ॥
ते विडंबना करी हमारी * पुष्कर वसत रहे तपधारी ॥
मुनि आश्रम सिगरे शठ जारे * हनत भये बहु शिष्य हमारे ॥
कीन्ह्यो दंड कमंडलु भंगा * किय कौपीन हीन इक संगा ॥

तुमहिं अछत यह दशा हमारी ❀ होइ अतिहिं अचरज गिरिधारी ॥
जो नहिं हंस डिंभकहु काहीं ❀ वध करिहौ तुम संगर माहीं ॥
तौ तव पुर यदुवंश समेतू ❀ करिहौं भस्म जारि कुलकेतू ॥
अर्जुन भीषम रण भट जेते ❀ चितें न हंस डिंभकहिं तेते ॥
शिवप्रसाद वश गर्व अपारा ❀ तौ बिन हरै को भट अस भारा ॥
पराशि मोर पद कहहु मुरारी ❀ हनौ हंस डिंभक शर मारी ॥
तौ केशव कुल बची तुम्हारा ❀ नातौ करौं यही क्षण क्षारा ॥

दोहा–सुनि दुर्वासाके वचन, विहँसि कह्यो भगवान ॥
लघुकारजके हेतुप्रभु, अस अमरष अधिकान२०॥

हंस डिंभकहु केतिक बाता ❀ आपहि मरे विप्र दुखदाता ॥
जो आवैं शंकर धरि शूला ❀ होइ यदपि ब्रह्महु अनुकूला ॥
कर करि काल दंड यम आवै ❀ वरुण कुबेर यदपि सँग धावै ॥
करै सुरासुर यदपि सहाई ❀ तदपि हतौं तव चरण दोहाई ॥
तजहु मुनीश मनहिं संदेहू ❀ बचिहैं तुव रिपु भगे न केहू ॥
सात पताल स्वर्ग तिमि साता ❀ सात सिंधु महि मंडल ख्याता ॥
बचे न कुलिश कोठरी जाई ❀ सत्यवचन जानहु मुनिराई ॥
सुनि यदुनायक वचन उदंडा ❀ शांत भयो मुनि कोपप्रचंडा ॥
प्रस्तुति करन लगे प्रभु केरी ❀ दीनदयालु दास हित हेरी ॥
जय जय चक्रपाणि भगवाना ❀ जय मुकुंद जय कृष्ण सुजाना ॥
करि हरिकी प्रस्तुति यहि भांती ❀ होत भई मुनि शीतल छाती ॥
हरि कह क्षमा करहु मुनिराई ❀ संन्यासिन कहँ क्षमा बडाई ॥

दोहा–अस कहि व्यंजन स्वाद बहु, विविध भांति रचवाइ
दुर्वासे शिष्यन सहित, भोजन दियो कराइ ॥२१॥
बार बार संतुष्ट है, देकै आशीर्वाद ॥
दुर्वासा गमनत भये, पाइ परम अहलाद ॥ २२ ॥
उतै हंस डिंभक गये, जब निज जनक समीप ॥
वंदिचरण बोले वचन, सज्जन वृंद प्रतीप ॥ २३ ॥

राजसूय मख पिता करीजे * अनुपम जगत माहिं यश लीजे ॥
महिमंडल महीप हम जीती * करवै हैं मख सकल सुरीती ॥
समर सुरासुर जीतन हारे * हैं हम दोऊ पुत्र तिहारे ॥
तापर हमको रक्षन हेतू * दियो उभयगण निज वृषकेतू ॥
महि महीप हैं केतिक बाता * इनको जीतब सहज जनाता ॥
ब्रह्मदत्त कह सुनि सुत बानी * करिहैं मख संभारा ठानी ॥
जहँ तुमसे सुत अहैं हमारे * दुर्लभ कछु नाहिं कियो विचारे ॥
डिंभक हंस वचन सुनि काना * विप्र जनार्दन भक्त सुजाना ॥
ब्रह्मदत्तसों बोल्यो बैना * गये फूटि हियरेके नैना ॥
पापी सुत वश साहस करहू * तुमहु नरक मण्डल पग धरहू ॥
राजसूय कौने विधि होई * अस सुजान तौ कही न कोई ॥
तहां हंस डिंभक अति माषे * विप्र जनार्दनसों अस भाषे ॥

दोहा-वारण करता यज्ञको, दीजै विप्र बताइ ॥
ताको शिर हम काटिकै, पितुको देहिं देखाइ॥२४॥

विप्र जनार्दन पुनि अस भाष्यो * वृथा यज्ञ करिबो अभिलाष्यो ॥
जीवत भीष्मदेव जगमाहीं * जीत्यो परशुराम रणमाहीं ॥
जरासंध जीवत संसारा * जीतै को अस जननि कुमारा ॥
महाप्रबल सिगरे यदुवंशी * कबहुँ न मुरे समर अरिध्वंसी ॥
तिनमहँ जग पालक यदुनायक * को है तासु समरके लायक ॥
जगधिर जग पालक संहर्ता * अज अनादि अविचल श्रीभर्ता॥
अग्रज तासु राम है नामा * हल मूशल धारक बलधामा ॥
सरवस सरिस धरा शिर धारे * वेद विदित फण जासु हजारे ॥
शेष अशेष लोकके नाथा * आरज कहत जिन्हैं यदुनाथा ॥
सात्यकि महाबली हरि प्यारो * ताहि कौन जग जीतनहारो ॥
औरहु यादव बली महाना * जीतव तिन्हैं वृथा अभिमाना ॥
तुमहिं ब्रह्महत्या नृपलागी * ताते तुम दोउ भये अभागी ॥

दोहा-हमहुँ सुन्यो वृत्तांत यह, दुर्वासा दुख पाइ ॥
यदुपतिसों तुम्हरी दशा, कहन गयो द्रुत धाइ२५॥

बोल्यो कुपित हंस अज्ञानी * विप्र भीति वश बात बखानी ॥
दुर्बल भीष्म वीर अतिबूढा * धनुष धरन जानत नहिं मूढा ॥
हमरे सन्मुख संगर माहीं * कबहूं ठाढ होइगो नाहीं ॥
जो यदुवंशिन कियो बखाना * ते सब कायर कूर महाना ॥
गिनती नहीं वीरमें इनकी * करी दुर्दशा मागध जिनकी ॥
वीर गनायो सात्यकि जोई * ताको वीर कहैं नहिं कोई ॥
ये बालक घरहीके बाढे * परे कहूं संगर नहिं गाढे ॥
जो बलरामहिं वीर गनायो * सो सुनिकै अचरज मन आयो ॥
सुरापान करि सोवन जानै * कबहुँ न जान्यो गहन कमानै ॥
जो यदुपतिको ईश्वर कहेऊ * यह भ्रम तुव उर कबते रहेऊ ॥
सो तो नंद गोपको बेटा * कबहुँ न भइ हमसों भरभेटा ॥
पौंड्रक मेरो मित्र भुवाला * ताको नकल करत गोपाला ॥

दोहा—धर्मधुरंधर धरणिमें, जरासंध रणधीर ॥
नहिं विरोध करि है कबहुँ, मोर सहायक वीर ॥ २६ ॥

कह्यो जनार्दन सुनु नृप बैना * गर्व विवश तोहिं समुझि परनो ॥
भीष्म देव पांडव कुरुवंशिन * जगती महँ जीवत यदुवंशिन ॥
राजसूय ह्वै है नहिं तेरो * मानहु हंस बात सति मेरी ॥
वैसे कह्यो सो हासित भाषै * पै मन महँ शंका हठि राखै ॥
कह्यो हंस तब वचन रिसाई * विप्र तोरि शठता नहिं जाई ॥
शत्रु बीज वर्णत बहुबारा * निर्बल हमको करत विचारा ॥
पै जो भयो क्षम्यो अपराधा * विप्र तोहिं देहौं नहिं बाधा ॥
विप्र मोर शासन शिर धरिकै * जाहु द्वारकै आनँद भरिकै ॥
नंदगोप सुतसों मम बैना * कहियो सकल कियो कछु भैना ॥
राजसूय पितु करत हमारे * हम महिमंडल जीतन हारे ॥
तुम्हरे देश लवण अति होई * वृषभ भराइ चलहु लै सोई ॥
और डांड़ तुमसों नहिं लैहैं * नहिं कछु पुनि धन हेतु सतैहैं ॥

दोहा—हंस हुकुम नहिं मानिहौ, तौ होई कुलनास ॥
तातें लै सँगमें लवण, कीजै चलन प्रयास ॥ २७ ॥

हंस वचन सुनि द्विज अनुमाना * भे सहाय यदुपति मैं जाना ॥
दुर्वासा जो दिय वरदाना * मिले नाथ द्विज वचन प्रमाना ॥
तेहि क्षण द्विज उर सुख न समाना * वेप्रमाप दृग जल ढरकाना ॥
आनँद विवश बोलि नहिं आयो * मानहुँ कृष्ण मिले सुख छायो ॥
कही हंस पुनि ऐसी बाता * मेरी शपथ तोहिं हैं ताता ॥
जस मैं कह्यो तहां तस कहियो * गोप भीति वश गोइन रहियो ॥
सुनत जनार्दन वचन उचारा * शासन सुखकर हंस तुम्हारा ॥
तुव शासन द्वारका सिधैहौं * जैसो कहो तहां तस कैहौं ॥
आजु कालिह अथवा हम परसों * सुदिन पूंछिकै गवनब घरसों ॥
अस कहि उठ्यो पुलकि द्विजराई * चल्यो भवन कहँ आनँद पाई ॥
मनमहँ कियो विचार विशेषी * सानुज हंस काल वश लेषी ॥
फेरि कह्यो मनमहँ द्विजराई * हंस मोर सब दियो बनाई ॥
दोहा—जन्मभरेकी लालसा, रहि जो नयनन केरि ॥
भाग्य विवश पूरण करौं, जाइ दयानिधि हेरि ॥२८॥
असगुणि शयन रैन महँ कीन्ह्यों * नयनानि नींद वास नहिं लीन्ह्यों ॥
चढि तुरंग उठि होत प्रभाता * चल्यो लखन प्रभु पद जलजाता ॥
यथा जेठको पथिक पियासा * धावत सरजल पीवन आसा ॥
तथा विप्र द्वारका सिधायो * मानहुँ सुरपादप कहँ पायो ॥
परम वेगसों तुरँग धवावत * तदपि मंद गति मनमहँ भावत ॥
तृषा क्षुधा पथमें नहिं लागै * पंथ निवास करन मन भागै ॥
कब पहुँचौं द्वारका मँझारी * कब देखैं यदुपति गिरिधारी ॥
हंस कियो मम अति उपकारा * देखसायो वसुदेव कुमारा ॥
मोते धन्य न कोउ धरणीमें * मोते अधिक न कोउ करणीमें ॥
इन आपिन आंखिनसों जाई * आजु लखब हम कुँवर कन्हाई ॥
आजु दाहिनो भयो विधाता * देखब नाथ चरण जलजाता ॥
कहा रह्यो बाकी जग माहीं * हरिते मिलब अधिक कछु नाहीं ॥
दोहा—कहा भेट देहौं प्रभुहि, पूरणकाम मुरारि ॥
करब निछावर तनहुँ मन, याही भेट हमारि ॥२९॥

जा पदकी रजको शिव ब्रह्म चहैं रज सो शर लेउँगो धारी ॥
मोते नहीं जगती सुकृती कोउ देखिहौं छ्वै निजपाणि पसारी ॥
माधवकी मनमोहनी मूरति मारहुको मद मोचनहारी ॥ ६ ॥
कोटिन जन्मलौं योग कियो नहीं योगी लहैं जेहि को तपधामी॥
शंभु स्वयंभु सुरेश गणेश रटैं जेहिं नाम सकाम अकामी ॥
सो यदुराजको हौं रघुराज विलोकिहौं आजु समान सुनामी ॥
मैं धनिहौं धनिहौं अब मोहिं नमामि नमामि नमामि नमामी७॥

दोहा–यहि विधि भाषत मनहिंमन, अभिलाषत द्विज लाख
हरि मंदिर द्वारे गयो, चाखत प्रेमहि दाख ॥ ३१ ॥

सो०–ठाढे देव समान, द्वारपाल उर मणिमाल उर ॥
तिनसों कियो बखान, विप्र जनार्दन हर्षिके ॥ ३ ॥

दोहा–शाल्वनगर मम भवन है, हंस भूपको मित्र ॥
नाम जनार्दन जानियो, ब्राह्मण जाति पवित्र॥३२॥

सो०–आयो दरशन हेत, यदुकुल कमल दिनेशपद॥
जहँ प्रभु कृपानिकेत, तहँ तुम खबरि जनाइयो४॥
द्वारपाल सुनि वैन, दौरि गयो दरबारमहँ ॥
जोरि पाणि भरि चैन, बोल्यो करुणाऐनसों ॥ ५॥
नाथ जनार्दन नाम, विप्र शाल्वपुरवासि यक ॥
आयो दरशन काम, होइ जो शासन आवई ॥६॥
बोले वचन कृपाल, सपदि सभा द्विज ल्याइयो ॥
दूत दौरि तत्काल, द्रुत दरबारहि लैगयो ॥ ७॥
देख्यो द्विज यदुनाथ, हाथ जोरि पुहुमी पर्‌यो ॥
पुनि उठि मानि सनाथ, चिंतन लाग्यो चित्तमें॥८॥

सवैया–जो धरिकै सफरीको स्वरूप प्रलय जल वेद उधारनवारो ॥
क्षीरधिको मथ्यो कच्छरूप नृसिंह ह्वै जो प्रहलाद उबारो ॥
ह्वैकै वराह उधार्‌यो धरा बलिको छलि वामन नाम उचारो ॥

सो भृगुनाथ सोई रघुनाथ सोई यदुनाथ है नाथ हमारो ॥८॥
जाको मुमुक्ष जे प्रेमबुभुक्षु गुणे यह विश्व सिसृक्षु सदाही ॥
काल जिघृक्षु रुरुक्षु कृपाकी स्वपानन स्वक्ष स्वपक्ष प्रियाही ॥
सो प्रभु पेखिपऱ्यो परपक्ष विपक्षिनको जे विपक्ष कराही ॥
भीतिको भक्षक शत्रुको तक्षक दासको रक्षक कृष्णसों नाहीं९
सो०--द्विज देख्यो दरबार, यदुवर मंडल मंडली ॥
राजत सब सिरदार, चोख अनोख सरोष रण ॥१॥
नाचि रही अप्सरा हजारन * गाय रहे गन्धर्व अपारन ॥
चारण सूतहु मागध बंदी * हरि यश वर्णत अतुल अनंदी ॥
राजत उग्रसेन महराजा * जासु हुकुम मानत सुरराजा ॥
कनक सिंहासन अति विस्तारा * तापर दोउ वसुदेव कुमारा ॥
सात्यकि उद्धव दुहुँ दिशि सोहैं * दोउ प्रभु चंद्रवदन दृग जोहैं ॥
वीर विराजत सान समारे * सिंह सरिस यदु सिंह उदारे ॥
वसन अमोल पाणि हथियारे * यदुपतिको प्राणहुँते प्यारे ॥
भ्रमत चमर मंडल अतिचारू * मनु सरोज शिर हंस विहारू ॥
कनक सिंहासन यदुवर हलधर * मेरु माथ मनु निशिकर दिनकर ॥
पीतश्याम पट राजत अंगा * लाजत जिन्हैं विलोकि अनंगा ॥
लोल कपोलन कुण्डल मण्डल * पसरति प्रभा दिगंत अखंडल ॥
तके भौंह प्रभु वीर विशाला * शासन होत कौन केहि काला ॥
दोहा--नारदमुनि बैठे निकट, तिनसों हँसि यदुनाथ ॥
दुर्वासा वृत्तांत सब, भाषत गहि गहि हाथ ॥ ३२ ॥
द्रुत द्रुत दौरि देवकी सुतके * पऱ्यो चरण पंकज सुरसुतके ॥
पुनि उठि नयन बहावत अंबू * छक्यो सुछबि लखि सुछबिकदंबू ॥
घरी द्वैकलगि बोलि न आयो * प्रेम पयोनिधि विप्र नहायो ॥
भयो पनसफल तासु शरीरा * पुनि उर धरि धरणी सुरधीरा ॥
गिऱ्यो दंडसों मही मझारी * पुनि उठि जय जय वचन उचारी ॥
हे यदुनंदन कृपानिधाना * सब विधि तू समरथ भगवाना ॥

नृप हंस डिंभकको मित्रा ❋ विप्र जाति मैं जगत पवित्रा ॥
नाम जनार्दन पिता धरायो ❋ तुम्हरे दरश लागि इत आयो ॥
मैं अति अधम अपावन करणी ❋ उपज्यो अनाचार रत धरणी ॥
अहो पतितपावन तुम नाथा ❋ मोहिं दरश दै कियो सनाथा ॥
अब तौ चरण शरण महँ आयो ❋ जन्म जन्मके दुरित नशायो ॥
मोहिं करो अपनो यदुराई ❋ आरत आराति हरण सदाई ॥
दोहा—उठे हेरि हरि हुलसिकै, द्विजहि लियो उरलाय ॥
प्रगट करी निज बानि प्रभु, आंखिन अंबु बहाय॥३४॥
बैठायो सिंहासन माहीं ❋ लगे पखारन द्विजपद काहीं ॥
द्विजपद सलिल सींचि शिर लीन्हो ❋ निज ब्रह्मण्य नाम श्रुति कीन्हो ॥
पूजन किय युग अष्ट प्रकारा ❋ पुनि यदुनंदन वचन उचारा ॥
दीन्ह्यो दरश आप द्विजराई ❋ आजु भयो मैं सरवस पाई ॥
मोहिं ब्रह्मण्य कहत सब कोऊ ❋ ताते प्रिय मुनिगुणी द्विज सोऊ ॥
तापर भयो मोर जो दासू ❋ सुर नर मुनिपद पूजत तासू ॥
मोहिं विप्र तुम प्राण पियारे ❋ कबहुं न ह्वै हौ हमते न्यारे ॥
विदित मोहिं वृत्तांत तुम्हारा ❋ तुमको नाहिं होई संसारा ॥
वचन सुनत द्विज अंबुजनाभा ❋ लह्यो जनार्दन सरवस लाभा ॥
जोरि पाणि द्विज वचन उचार्‌यो ❋ नाथ दूत ह्वै मैं पगु धार्‌यो ॥
सिंहासन नाहिं बैठन लायक ❋ भूमि बैठिहौं मैं यदुनायक ॥
असकहि मही महीसुर बैठ्यो ❋ यदुपति सुछबि पयोनिधि पैठ्यो ॥
दोहा—जोरि पाणि बोल्यो वचन, तुमहिं न कछू छिपान ॥
जेहि हित मैं आयों इतै, नृप प्रेषित भगवान॥३५॥
जीभि गिरै तनु होय निपाता ❋ मोते कही जात नहिं बाता ॥
वासुदेव बोले हँसि वानी ❋ दूतहिं दोष न कहत विज्ञानी ॥
कहो हंस डिंभक कुशलाई ❋ बहुत दिवसते खबरि न पाई ॥
हंस जोन विधि वचन उचारा ❋ सो वर्णहु तजि भय कर भारा ॥
है न दोष कछु विप्र तुम्हारा ❋ कहत वचन नहिं करहु खँभारा ॥

तुम तो हौ अनन्य मम दासा * तुम्हरे मोरि निरंतर आसा ॥
दूत यथारथ जो नहिं भाखै * महापाप कर सो फल चाखै ॥
ताते हंस भणित द्विज कहिये * निज मनमाहिं शंक नहिं गहिये ॥
तब द्विज बोल्यो नयन नवाई * करी हंस यहि विधि शठताई ॥
दुर्वासाको दीन्ह्यों बाधा * सो सब जानहु बोध अगाधा ॥
बहुरि हंस जब भवन सिधारयो * तब मोसों अस वचन उचारयो ॥
जाहु विप्र द्वारके सिधाई * यदुपतिसों अस कह्यो बुझाई ॥
दोहा–राजसूय मख करत पितु, हम जीतब भूभूप ॥
लोन होत तुव देश महँ, देहु डांड अनुरूप ॥ ३६ ॥
जो नहिं बैलन लवण भराई * ऐहौ यज्ञ माहँ यदुराई ॥
तो होइहि यदुकुल करनासा * अस तुम मनहिं करहु विश्वासा ॥
ऐसी कीन्ह्यो हंस ढिठाई * और बात प्रभु जाय न गाई ॥
हंस वचन सुनि प्रभु मुसकाने * कालविवश दोउ भ्रातन माने ॥
कह्यो विप्रसे करुणाऐना * कह्यो हंस डिंभक सतबैना ॥
हैं हम द्विज सति डांड देवैया * लवण भराय बैल लदवैया ॥
जाहु विप्र हंसहि कहि देहू * डांड देत हमसों तुम लेहू ॥
हरिके वचन सुनत बलराई * दै तारी प्रभु हँसे ठठाई ॥
राम हँसत यादवी समाजा * हँसत भई रव भयो दराजा ॥
विप्र जनार्दन गयो लजाई * बोल्यो बार बार पछिताई ॥
हाय दूत है कहँते आयो * यदुपति कहँ कटु वचन सुनायो ॥
गिरिते गिरूं गरल की खाऊं * कौन भांति मैं वदन देखाऊं ॥
दोहा–कह्यो विप्र करजोरिकै, सुनिये कृपानिधान ॥
तुम्हें पाय अब दुष्ट गृह, करिहैं नहीं पयान ॥ ३७ ॥
तब हरि हेरयो सात्यकि ओरा * उठयो तुरंत तमकि सिनि छोरा ॥
कह्यो नाथ सात्यकि तुम जाहू * हंस डिंभ कहँ वचन सुनाहू ॥
जोन डांड़ तुम हमसे मांग्यो * हमहूं तौन देन अनुराग्यो ॥
जहां कहो तहँ देइँ चुकाई * ऐहैं बैलन लवण भराई ॥

पुष्कर मथुरा किधौं प्रयागा ❀ जहां करैं तिहरे पितुयागा ॥
कह्यो विप्रसों बहुरि मुरारी ❀ जाहु सात्यकी संग सिधारी ॥
तुमहिं न कछू दोष द्विजराई ❀ हौं तौ तुमहिं लियो अपनाई ॥
तुम नाहिं भाष्यो कह्यो हमारा ❀ कहिहै सात्यकि माधि दरबारा ॥
सुनत रह्यो बैठे तुम साखी ❀ कहिहैं सात्यकि जो मम भाषी ॥
सात्यकि संग लौटि पुनि आवहु ❀ मम पद निज मनसदन बनावहु ॥
तब द्विज प्रभु शासन शिरधरिकै ❀ जैहौं नाथ कह्यो मुद भरिकै ॥
तब सात्यकी प्रभुहि शिरनायो ❀ गमनकरन कहँ अतिचितचायो ॥

दोहा—कह्यो सात्यकीसों हरी, जाहु अकेले वीर ॥
हंसहि सकल बुझाइयो, मोर वचन गम्भीर ॥३८॥

सात्यकि तुम्हें चतुर मैं जानौं ❀ केहि विधि वचन बुझायबखानौं ॥
उचित होय सो कहियो जाई ❀ तासु सँदेश कह्यो इत आई ॥
सात्यकि सुनि करि प्रभुहिं प्रणामा ❀ महा निशंक वीर बलधामा ॥
भयो तुरंत तुरंग सँवारा ❀ विप्र जनार्दन संग सिधारा ॥
गयो तुरंत हंस दरबारा ❀ ठाढो भयो सभाके द्वारा ॥
गयो जनार्दन सभा मँझारी ❀ हंसहि आशिष गिरा उचारी ॥
हंस ताहि पूंछ्यो कुशलाई ❀ विप्र कह्यो तुव दरशन पाई ॥
हंस कह्यो जेहि अर्थ सिधारा ❀ सो कारज भयो सिद्धि हमारा ॥
विप्र कह्यो तोहि कारज हेतू ❀ सात्यकि पठयो कृपानिकेतू ॥
सो कहिहै उतकैर हवाला ❀ कह्यो जौन विधि वचन कृपाला ॥
कह्यो हंस सात्यकि कहँ आनौ ❀ विप्र तुमहु कछु वचन बखानौ ॥
कहो राम केशव कुशलाई ❀ देहैं कर की नाहिं यदुराई ॥

दोहा—हंस वचन सुनि विप्र तहँ, सात्यकिको लै आइ ॥
वर्णन लग्यो हंससो, जिमि देख्यो यदुराइ ॥ ३९ ॥

कवित्त—तेरे सम हंस उपकारी मेरे दूजो नाहिं दूत रचि द्वारावती मोहिं जो पठायो है ॥ जाय दरबार यदुवंशी सरदार जहां बैठे ऐंडदार वीर रस छवि छायो है ॥ दीपति दिगंत तहां कनकसिंहासनमें राजत

अनेक भान भास पसरायो है ॥ रघुराज सहित समाज यदुराज-
जूको देख्यो आज देख्यो आज जन्म फल पायो है ॥ १ ॥ एक कर
शंख एक करमें विराजै चक्र श्याम एक कर गदा एक पाणि धनु
भायो है ॥ विलसत पीतपट परम प्रकाशमान श्याम सरसिजसों
शरीरहू सोहायो है ॥ उर वनमाल नैन नेमुकही लाल लाल परम
विशाल बहु वैरिन नशायो है ॥ रघुराज सहित समाज यदुराजजूको
देख्यो आज देख्यो आज जन्म फल पायो है ॥ २ ॥ देवऋषि ब्रह्मऋ-
षि राजऋषि महीऋषि सेपन करत सर्वकाल शिरनायो है ॥ बंदी
सूत मागध वदत बिरदावली सुरावली मदावली लगाय सुरगायो है ॥
जगद्गुरु जगन्नाथ जगतस्रष्टा जगत्पाल जगतनियंता जगहंता जो
कहायो है ॥ रघुराज सहित समाज यदुराजजूको देख्यो आज देख्यो
आज जन्म फल पायो है ॥ ३ ॥ माधुरी हँसनि मुख कमल नयन बांके
माधुरे बयन उर सुख उपजायो है ॥ देवकी दुलारे सब दुखके हरनहारे
रुक्मिणीके प्राणप्यारे चारौं वेद गायो है ॥ भक्तन अधार धराधार
अतिशय उदार कृपा पारावार निज बिरद बढायो है ॥ रघुराज सहित
समाज यदुराजजूको देख्यो आज देख्यो आज जन्म फल पायो है॥४॥
राजि रहे बाम बलधाम बलराम आम और वीर वृंद ठाम ठाम ठीक
ठायो है ॥ ढालनसों ढाल करवालनसों करवाल मिलि रहीं वीरनकी
ओज मुख छायो है ॥ उद्धव उदंड बुद्धि दिये दिशि दाहिनेसो दानपति
कृतवर्मा आदिको गनायो है ॥ रघुराज सहित समाज यदुराजजूको
देख्यो आज देख्यो आज जन्म फल पायो है ॥ ५ ॥ चलि रहे चारौं
ओर चौर चंद्रमासों चारु चांदनीसी चांदिनी जो चित्तको चोरायो
है ॥ छपाकर मंडल अखंडल विराजै छत्र गिलिमगलीचे दूध फेनको
लजायो है ॥ बंदी बिरदावली वदत बार बार ठाढे विरद बखानसो
दिगंतनलों छायो है ॥ रघुराज सहित समाज यदुराजजूको देख्यो
आज देख्यो आज जन्म फल पायो है ॥ ६ ॥ वसुदेव उग्रसेन औरो
अक्रूर आदि वृद्ध वृद्ध एक ओर आसन लगायो है ॥ जगत विख्याता
हरि भ्राता गद आदिकको एक ओर मंडल अखंडल सोहायो है ॥

बडे बडे सरदार बडी भारी दरबार बडी सरकार जहां मोहूं जान पायो है ॥ रघुराज सहित समाज यदुराजजूको देख्यो आज देख्यो आज जन्म फल पायो है ॥ ७ ॥ दयानिधि दीन दुख दारिद विदारणको करिवो विचार बार बार मन ठायो है ॥ तापै दुर्वासा आय आरत पुकार कीन्ह्यों आरतहरण प्रण वचन सुनायो है ॥ मोहूंसों अधम अजामिलते अधिकहूंको आपने विरद बश नाथ अपनायो है ॥ रघुराज सहित समाज यदुराजजूको देख्यो आज देख्यो आज जन्म फल पायो है ॥ ८ ॥

सो०–कहँ लगि करौं बखान, नैन गिरा न गिरा नयन ॥
अब जेहिमें कल्यान, सुनहु हंस डिंभक सपितु ॥ १० ॥

राजसूय जो कियो अरम्भा ❀ सो यह गयो नाशको खम्भा ॥
अहै असाध्य यज्ञ संभारा ❀ सिद्ध होब अति कठिन तुम्हारा ॥
तातै तजहु याग कर योगा ❀ जो चाहहु अपनो सुख भोगा ॥
यदुपति पद पंकज चित लाई ❀ सानुराग कीजै सेवकाई ॥
जो प्रभु तुम पर होय प्रसन्ना ❀ होई तबै याग सम्पन्ना ॥
हम कहि उऋण होत तुमकाहीं ❀ करहु जो होय साध मन माहीं ॥
विप्र वचन सुनि हंस भुवाला ❀ कह्यो क्रूर करि कोप कराला ॥
अरे विप्र बालक मतिमंदा ❀ तोरि बुद्धि हरिलिय नँदनंदा ॥
हम तीनहुँ लोकन जयवारे ❀ तिनहिं कटुक बहु वचन उचारे ॥
करिकै इंद्रजाल यदुराई ❀ तोरि बुद्धि सब दियो भ्रमाई ॥
हमरे आगे गोप बडाई ❀ करत बार बहु नाहिं लजाई ॥
जाने सकल मोर यदुवंशी ❀ होत विप्र कत मृषा प्रशंशी ॥

दोहा–बालकपनते विप्र तैं, मम समीप किय वास ॥
मित्र कह्यो मैं निज वदन, तातै करहुँ न नास ॥ ४० ॥

रे द्विज अस चाहत चित मोरा ❀ गहि कृपाण काटहुँ शिर तोरा ॥
विप्र जानिकै वधहुँ न तोहीं ❀ अब नहिं वदन देखावहु मोहिं ॥
जहँ आवै तहँ जाहु तुरंता ❀ न तौ होन चहत तुव अंता ॥

हंस वचन द्विज सरवस पायो * उठिकै आशिष वचन सुनायो ॥
रमाकंत ढिग चल्यो तुरंता * सुमिरत चार चरण मतिमंता ॥
पुलकत द्वारवती द्रुत आयो * पुनि प्रभु पदपंकज शिर नायो ॥
प्रभु मिलि तेहिं निजानिकटबसायो * अपनो पार्षद ताहि बनायो ॥
ब्रह्मानंद मगन द्विजराई * जगकी प्रीति सकल बिसराई ॥
यथा राम उद्धव गद भ्राता * द्विजहिं गन्योतिमि दृगजलजाता ॥
विविध विनोद विप्र सँग लहहीं * यक क्षण विना विप्र नहिं रहहीं ॥
कछुक काल करि हरि अनुरागा * पुनि गवन्यो हरि पुर बड भागा ॥

दोहा-भक्त जनार्दनकी कथा, इतनी है हरिवंस ॥
और कहौं जिमि हरि कियो, हंसडिंभकाहिंदंस ४१
उतै सात्यकी जाय जब, बैठ्यो सभा लसंत ॥
पाय अनादर विप्र जब, हरिढिग गयो तुरंत॥४२॥

कह्यो हंस तब सात्यकि काहीं * आयो तुम केहि काज इहाहीं ॥
गोपनंदसुत काह बखान्यो * मोर हुकुम काहे नहिं मान्यो ॥
मोर मित्र पौंड्रक महिपाला * रचे रूप ताकर गोपाला ॥
जो न मानिहै शासन मेरो * तौ पैहै फल भल तेहि केरो ॥
मोहिं भरोस रह्यो यहि भांती * लाग्यो कर आयो जो राती ॥
लायो किमि नहिं नोन भराई * काहे नहिं आयो यदुराई ॥
कहो सात्यकी प्रीति बिहाई * होई तुमको नाहिं सजाई ॥
कहो कुशल सब गोप समाजा * करहिं उदर हित घर कर काजा ॥
सात्यकि सुनत हंसकी बानी * बोल्यो वीर वचन बलखानी ॥
तुमसे कुशल प्रश्नके कर्ता * तहँ सब भांति कुशल जगभर्ता ॥
हम तो नोन नहीं सँग लाये * चूक क्षमहु शासन विसराये ॥
डांड देनको जो कछु हमरे * सो लीजै मन होय जो तुम्हरे ॥

दोहा-यही त्रिलोकधनी कह्यो, तुमहिं कहन संदेश ॥
डांड लिये मैं संग में, आयो तुम्हरे देश ॥ ४३ ॥

हंस कह्यो का देहो डांडा * सात्यकि कह्यो मुहे महँ खांडा ॥

जा मुखते कह हरि कर देहू * ता मुख तुरत तेग तुम लेहू ॥
कहत न रसना भयो निपाता * बोलहि किये पान मदमाता ॥
कहसि देन कर त्रिभुवन नाथै * जोहिं जोरैं विधि शंकर हाथै ॥
टिट्टिभ गगन गिरन भय मानी * रोंकन हित सोवती उतानी ॥
तैसहि तोर गर्व मतिमंदा * बचै को जब रण करै गोविंदा ॥
दीन्ह्यो को सलाह यह तोही * उपर मित्र पूरो हिय द्रोही ॥
फूटि गये हियके दृग तोरे * ऐसो मन महँ भावत मोरे ॥
जो न मानि है मेरो बैना * रहि है तोन नेकु तुव चैना ॥
भावै भूरि भलाई भाई * नहीं विरोध कीजै यदुराई ॥
कहँ यदुसिंह सिंह भगवाना * कहँ ते हंस शृंगाल समाना ॥
पठ्यो मोहिं तोरि हित चाही * काहे होत हंस कुल दाही ॥

दोहा—सुनत सात्यकीके वचन, करि दृग लाल कराल ॥
हँसत हंस बोल्यो वचन, बिसऱ्यो मानहुँ काल ४४

अरे दुष्ट यादव सुनु पोचू * तोहिं न लागत मोर सँकोचू ॥
कोन नंदसुत को बलरामा * गोपहु जुरत कतहुँ संग्रामा ॥
संगर जरासंधसों हारा * यवन भीति त्याग्यो परिवारा ॥
सो अहीरकी करत बडाई * सभा मध्य तोहिं लाज न आई ॥
मेरे निकट दूत ह्वै आयो * ताते तेरो जीव बचायो ॥
ना तो काटि कृपाणहि शीशा * पठवावतो जहां तुव ईशा ॥
वदन बंद कुरु बुद्धिविहीना * मानु कहो जो हम कहि दीना ॥
तब हँसि कह्यो सात्यकी वीरा * रे शठ तुव मुख परि हैं कीरा ॥
मोरे सन्मुख मम प्रभु काहीं * अनुचित बोलत वचन वृथाहीं ॥
आयसु दियो न मोहिं यदुनाथा * नतु यहि क्षण कटत्यों तुव माथा ॥
तोहिं हतन नहिं मम प्रभु ऐहैं * मोहिं सम लघु लघु वीर पठैहैं ॥
समर सुरासुर जीतनवारे * महारथी दश हैं अनियारे ॥

दोहा—रामबन्धु अरु उद्धवहु, कृतवर्मा अक्रूर ॥
विपृथु सारंग तारनहु, अरु बलसुत द्वै सूर ॥ ४५ ॥

शिव वरदान विवश मद बाढा * अबै न पर्‍यो समर तोहिं गाढा ॥
करैं सैकरन शम्भु सहाई * तदपि तोहिं हनिहैं यदुराई ॥
तुव सँग जोन शम्भुगण धावत * भूप कहूं भट सन्मुख आवत ॥
अस रिस लागि रदन तुव तोरौं * छोरि शस्त्र यहि क्षमा पछोरौं ॥
दूत धर्म पुनि करहुँ विचारा * ताते धरहुँ धीर दरबारा ॥
कह्यो मोर प्रभु सुनु शठ बानी * समर कवन भांति जो हुलसानी ॥
तो पुष्कर मधुपुरी प्रयागा * अथवा गोवर्द्धन भुव भागा ॥
तहँ आवहु निज सैन्य सजाई * होय हमारि तुम्हारि लराई ॥
तहँ डांड हम तुम कहँ देहैं * अथवा मुनिन वैर हठि लेहैं ॥
तब बोल्यो पुनि हंस रिसाई * भली बात तैं मोहिं सुनाई ॥
ऐहैं पुष्कर परौं प्रभाता * तुमहुँ चलहु जो जिय न डराता ॥
तहँ देखब गोपन मनुसाई * गोप गर्व मोहिं सहो न जाई ॥

दोहा–को अस जगमें जीव घर, डांड न जो मोहिं देत ॥
कौन कहानी गोपकी, सीच मांगि सुख लेत ॥४६॥

सुनि सकोप भूपतिकी बानी * शिनिकुमार अस बात बखानी ॥
निज प्रभु निंदन सुनै जो काना * होत ब्रह्मवध पाप महाना ॥
काल विवश तैं शठ द्विज द्रोही * बहुत बुझाय कहौं का तोही ॥
अस कहि सात्यकि परम निशंका * वीर बाँकुरा संगर बंका ॥
उठिकै तमकि तुरंत तहाहीं * चल्यो द्वारका भय कछु नाहीं ॥
आयो यदुपति सभा मझारी * करि प्रणाम असि गिरा उचारी ॥
नाथ कालवश हंस महीपा * मरण चहत जिमि कृमिश्चामिदीपा ॥
अब तो नाथ विलंब न कीजै * सैन्य सजावन शासन दीजै ॥
पुष्कर चलिये होत प्रभाता * तहँ आवन कह द्विज दुखदाता ॥
सात्यकि वचन सुनत यदुराई * सेनापति निज निकट बोलाई ॥
सैन्य सजावन शासन दीन्हों * सो मुद मानि शीश धरि लीन्हों ॥
जाय सैन्य सब तुरत सजाई * लायो द्वार देश अतुराई ॥

सोरठा–सजी सैन्य चतुरंग, यदुकुल कमल दिनेशकी ॥
संयुत तुंग तरंग, मनहुँ उदधि उमडत भयो ॥ ११ ॥

झूलना॥ मत्त गज ठट्ट सरपट्ट निज पट्ट अटपट्ट गुणि इस्त दिग दंतिके जूट है॥ पट्ट गहि भट्ट रणकट्ट काटत विकट झट्टही पट्ट रिपु भट्टके कूट है॥ करत झरपट्ट रिपु नट्टके बट्टवे पट्ट महिपरत लटपट्ट रणखूट है॥ पट्ट हाटक नाटिल हट्ट हाटक समिटि खरे रघुराज उद्भट्ट भट जूट है॥ १॥ चंचला चमकसी चमकचमकत परत चौंकते चौगुणे चारिहूं ओर हैं॥ चंडकर चक्रधर चारिमुख चित्त जादिकनके चित्त चलचोर हैं॥ चित्रपट सो लिखे चित्र अति चारु वपु उच्चस्रव चटकई चोपनी चोर हैं॥ चंदकुल चंदके चंद चंदनहुसे तुरंग चोखेहु रघुराज चय चोर हैं॥ २॥

छप्पय-चामीकरके चारु चक्र स्यंदन बहु राजैं॥ नहे नवीन तुरंग रंग रंगनके भ्राजैं॥ सब प्रकारके पैनधार आयुध भारि भूरे॥ जुवां जोत गुनकील सकल हाटकके रूरे॥ मणि चित्र विचित्रनसे खचित मनुज नोज निजकर रचे॥ जिन सुनत घघंरा सोर रिपु भजि भजि लुकि लुकि मरिपचे॥ १॥

दोहा-आई सजके सैन्य सब, प्रभु मंदिरके द्वार॥
जोरि पाणि दारुक कह्यो, हे देवकीकुमार॥ ४७॥

उठि हरि स्यंदन भये सवारा ❀ बाजि उठे यक बार नगारा॥
बजे शंख तूरज सहनाई ❀ औरहु बाज विविध झरिलाई॥
चली सैन्य कछु वरणि न जाई ❀ जिमि पूरव मारुत मेघवाई॥
लसैं हजारन फहरि निशाना ❀ छाया छापित दशहु दिशाना॥
गगनपंथ पूर्‌यो उडि धूरी ❀ मूंद्यो भानु भासकहँ भूरी॥
करैं वीर बहु केहरिनादा ❀ बाढ्यो समर मरण अहलादा॥
श्वेत तुरंग विशोक सारथी ❀ राजत रथपर बल महारथी॥
सात्यकि दानपति कृतवर्मा ❀ गद उलमुक निसठहु धृतवर्मा॥
रणबांकुरे सकल यदुवंसी ❀ चले समर हर्षित अरिध्वंसी॥
बारहि अक्षौहिणि दलसाजा ❀ पुष्कर चल्यो चाय यदुराजा॥
राजत उग्रसेन महाराजा ❀ चारि चारु चामर छबिछाजा॥
तिमि वसुदेव चल्यो रथचढिकै ❀ हंस समर जीतन मुद मढिकै॥

दोहा-यहि विधि श्रीयदुनाथ चलि, पुष्कर पहुँचे आय॥
सुभट विकट सरतट निकट, बसे निपट मुदपाय॥४८

करि पुष्कर महँ मज्जन पाना * वसे विचिंत्य निशा अवसाना॥
समर हर्ष निशि नींद न आई * लखत दिशा दिय निशा बिताई॥
लहे सकल भट जब भिनसारा * मज्जन कीन्हे सरशुचि सारा॥
उतै हंस डिंभक बलवाना * रणहित पुष्कर कियो पयाना॥
दश अक्षौहिणि सेना संगा * स्यंदन पत्ति तुरंग मातंगा॥
धरे धनुष दोउ वीर विशाला * लसत उदंड त्रिपुंड्रहु भाला॥
सब तनु रुद्रअक्ष कर माला * भस्म विलेपित अंग कराला॥
जटाजूट शोभित शिरमाहीं * जय शिव जय शिव भाषत जाहीं॥
सुंदर स्यंदन उभय सँवारा * हियमहँ समर उमंग अपारा॥
शंकर गण दोउ रूप विशाला * लसैं मनहुँ कालहुके काला॥
महाकृषित अतिलंब शरीरा * ऊंचे तोल तीनि बिन चीरा॥
महा विकट कटकट रव करहीं * वमत वदन पावक भय भरहीं॥

दोहा-हंस और डिंभकहुंके, चले उभय दिशिजात॥
दोहुनको रक्षण करत, बारबार बतरात॥४९॥

दानव यक विचक्र जेहिं नामा * मित्र हंस डिंभक कर कामा॥
इंद्र वरुण यम और कुबेरा * जो संगर सन्मुख मुख फेरा॥
भयो सुरासुर संगर जबहीं * सुरन विचक्र जीतिलिय तबहीं॥
ऐरावत चढि वासव आयो * तेहिं विचक्र बिन श्रमहिं हरायो॥
कियो विष्णुसों आहव घोरा * हन्यो रणाजिर सुरन करोरा॥
द्वारवती महँ बारहिंबारा * जात रह्यो दानव दुर्वारा॥
करत उपद्रव रह्यो अनंता * सो श्रुति सुन्यो समर श्रीकंता॥
लखन दानव ले जय आसा * आयो हंस डिंभकहि पासा॥
राक्षस यक हिडंब अस नामा * सो विचक्रकर मित्र ललामा॥
महाबली मायावी पूरा * श्रीपति समर सुन्यो श्रुति शूरा॥
सो विचक्र सँग कियो पयाना * जीतन चहत कुमति भगवाना॥

राक्षस संगहि सहस्र अठासी * भूरि भयंकर भट रुधिरासी ॥
ऐसो सैन्य साजि दोउ भ्राता * आये पुष्कर गर्व अघाता ॥
दूत दौरि प्रभु खबरि जनायो * डिम्भक सहित हंस चलि आयो ॥

दोहा—हंस डिंभकहु आगमन, सुनि तुरंत भगवान ॥
सजे समर हित सहजहीं, कह्यो बजाव निशान ॥९०॥

छंद—वामन ॥ हरि हुकुम सुनि सब वीर । सन्नद्ध भे रणधीर ॥ बाजे अनेक निशान । रव छयो दशहुँ दिशान ॥ मातंग तुंग तरंग । स्यदन सजे बहु रंग ॥ भट वदद बर्बर बानि । करि युद्ध हित हुलसानि ॥ यदुवंश सैन्य सजाय । स्यंदन चढे यदुराय ॥ किय पांचजन्यहि शोर । चहुँ ओर छायो घोर ॥ यदुवंश दल सजि भूरि । छावत दिशन महँ धूरि ॥ सन्मुख भयो रिपु ओर । हिय भीति है नहिं थोर ॥ तिमि हंस डिम्भक सैन । आई समर अरि चैन ॥ दोउ दल पयोधि समान । दोउ ओर अगम देखान ॥ दोहुँ ओर विविध निशान । फहरत फबत असमान ॥ दोहुँ ओर बाजत बाज । दोहुँ ओर भट घन गाज ॥ दोउ सैन्य मंदहि मंद । गमनत उमंग अनंद ॥ मिलि गई कोप अपार । मनु मिले पारावार ॥ दोउ दिशनते हथियार । बहु चले बारहिंबार ॥ शर शूल पट्ट कृपान । तिमि भिंडपाल मक्षान ॥ ८ ॥

दोहा—सिंहनाद करि घोर भट, करत अभय संग्राम ॥
शूर शुद्ध रण त्यागि तनु, लहत स्वर्ग सुखधाम ॥ ९१ ॥

तोटकछंद ॥ नभ धूरि चहूं कित छाय रही । चहुँ ओरन शोणित धार बही ॥ मति आयुधकी झनकार छई । ललकार प्रवीरन रोष मई ॥ १ ॥ शर लागत शीश उडात नभै । कोउ कातर युद्ध परात सभै ॥ पलका कहुँ कंक निशंक भखैं । गण गीधनके पल सद चखैं ॥२॥ बहती बहु शोणितकी सरिता । भुवि कादरकी भयकी भरिता ॥ बहु भांतिन प्रेत जमाति जगैं । सँग योगिनि शोणित पान पगै ॥ ३ ॥ हिलिके झिलिकै भट तेग हनैं । रिपु देखत वीरन बाणि भनैं ॥ उत

राक्षस दानव मानवहूं । इत बीर बहादुर यादवहूं ॥ ४ ॥ संगसा संगसी दोउ फौजनकी । छवि बीरन विक्रम मौजनकी ॥ ललकार-नकी किलकारनकी । भट भूतन सोभ हजारनकी ॥ ५ ॥ यक ओरन लोथि पहार लगे । न मुरैं भट शूर सोहाग रँगे ॥ गजसों गज बाजिन बाजिनसों । रथ राजिनसों रथराजिनसों ॥ ६ ॥ भट व्याकुल संकुल युद्ध करैं । शर मारि झिलैं नहि नेकु मुरैं ॥ त्वच मांस वसा महि कर्दम भो । थल ऊंचहु नीच परै सम भो ॥ ७ ॥ आसे घोर कबंधहु कन्ध धरे । धरणी पर धावत रोष भरे ॥ याहि भांति महा घमसान ठयो । दुहुँ ओरन वीर विनाश भयो ॥ ८ ॥

दोहा—करि संकुल रण भट सकल, थकि थकिगे बिलगाय ॥
करन लगे तब द्वंद रण, वीर वीर रस छाय ॥ ५२ ॥

छंदपद्धरी—दानव विचक्र यदुराज वीर ॥ दोउ करत युद्ध भट युद्ध धीर ॥ बलराम और बलधाम हंस ॥ संग्राम करत जय काज शंस ॥ १ ॥ सात्यकि और डिभक प्रचंड ॥ दोउ करत युद्ध जगती उदंड ॥ नृप उग्रसेन वसुदेव दोउ ॥ राक्षस हिडिंब संग भिरे सोउ ॥ २ ॥ कृतवर्म गदादिक भट अक्रूर ॥ सब और जुरे शूरनहु शूर ॥ हरि हन्यो तिहत्तर शर प्रचंड ॥ दानव शरीर फूटे उदंड ॥ ३ ॥ यदुनाथ मारि पुनि मार धार ॥ दानवहिं मूंदि दिय लगि न वार ॥ तब कियो कोप दानव विचक्र ॥ सब बाण तुरंतहि तोरि वक्र ॥ ४ ॥ धनु खैंचि कानलों एक बान ॥ मारयो मुकुन्दके उर महान ॥ सो लगत बाण कढि गयो फोरि ॥ कछु शिथिल भये प्रभु उठि बहोरि ॥ ५ ॥ हरि हन्यो बाण जोंहि मुख दुफांक ॥ काट्यो विचक्र कर ध्वज पताक ॥ पुनि दलयो शीश सारथी केर ॥ दानव तुरंग हनि चारि फेर ॥ ६ ॥ प्रभु पांचजन्य कर शोर कीन ॥ रव दुहुँन दलन महँ छाय दीन ॥ रथते तुरंत कूद्यो विचक्र ॥ यक गदा लियो जोंहि डरत शक्र ॥ ७ ॥ हरिको किरीट तकि बहु भँवाय ॥ करि सिंहनाद दीन्ह्यो चलाय ॥ प्रभु रथ चलाय तेहिंगे बचाय ॥ दानव प्रचंड तब कोप

छाय ॥ ८ ॥ यक महाशिला बहुविधि भँवाय ॥ हरि वक्ष ताकि दीन्ह्यो चलाय ॥ सो शिला रोकि हरि दिय पवारि ॥ सो लगी दुष्ट छाती विदारि ॥ ९ ॥ गिरिगो विचक्र वसुधा विसंग ॥ पुनि उठ्यो सुरति करि वीर जंग ॥ यक लियो परिघ अतिशय कराल ॥ अस कह्यो वचन सुनु नंदलाल ॥ १० ॥ यह परिघ हरी सब दर्प तोर ॥ तैं खूब जानतो जोर मोर ॥ जब समर सुरासुर भयो घोर ॥ हम तुमहुँ लरे तब एक ठोर ॥ ११ ॥ सोइ बाहु हमारे हमहुँ सोय ॥ तोहिं विसरिगई सुधि कहुँ न होय ॥ जो वीर होसि परिघै बचाव ॥ हौं हरत प्राण यह घालि घाव ॥ १२ ॥ अस भाषि परिघ छोंड्यो कराल ॥ सो पकरि पाणि देवकीलाल ॥ किय नंदकते बहु खंडताहीं ॥ कोपित विचक्र तब समरमाहिं ॥ १३ ॥ शत शाख वृक्ष लीन्ह्यों उखारि॥ छोड्यो विचारि मृतकै मुरारि ॥ प्रभु नंदकसों बहुखंड कीन ॥ पुनि भरि अमरष शर एक लीन ॥ १४ ॥ वह अग्नि अस्त्र संपुटित बान ॥ मार्‌यो विचक्र कहँ गरुडयान ॥ शर लगत भस्म ह्वैगो विचक्र ॥ नाहिं देखि परे पद पाणि वक्र ॥ १५ ॥ प्रविश्यो पतत्रि पुनि तूण आइ ॥ दानव पयोधि प्रविशे पराइ ॥ १६ ॥

दोहा—उतै हंस बलभद्र दोउ, करन लगे रणघोर ॥
हन्यो विशिष दश हंसकहँ, उत रोहिणीकिशोर ॥ ९३ ॥

भुजंगप्रयात छंद ॥ हलीको हन्यो हंस नाराच पांचा ॥ हली बाण मार्‌यो दशै ज्यों पिशाचा ॥ हन्यो हंसके भालमें एक बाना ॥ गिर्‌यो मूरछा पायकै मध्यजाना ॥ १ ॥ उठ्यो सिंहसों सोरकै कोप भारी ॥ महाबाण रामै उरै ताकि मारी ॥ गयो भेदि सो वर्मको घोर बानू ॥ फव्यो युक्त ज्यों कुंकुमै शीत भानू ॥ २ ॥ हली सायकै सत साहस्र मार्‌यो ॥ रथै सूत वाजी ध्वजा चाप दार्‌यो ॥ गिर्‌यो हंसहू मूर्छितै भूमिमाहीं ॥ गह्यो चाप दूजो हन्यो रामकाहीं ॥३॥ दल्यो छत्र सूतै तुरंगै निसंगै ॥ गदाधारि धायो तबै राम जंगै ॥ गहे त्यों गदा हंसहू दौरि आयो ॥ उभय वीर गर्वी गदाको चलायो ॥ ४ ॥ उभयवीर राचे गदा

पाणि क्रुद्धा ॥ उभयवीर राजैं मनो कालक्रुद्धा ॥ कहूं ठाढहोते कहूं कूदिजाते ॥ गदा घातको वेग तातें बचाते ॥ ५ ॥ भरैं पैंतरे दक्षिणे वामरीती ॥ चहैं आपनी आपनी जंगजीती ॥ हली हंसको ज्यों गदायुद्ध ठायो । न देवासुरै संगरै त्यों दिखायो ॥ ६ ॥ चढे हैं विमानै खडे हैं अकासा ॥ हली हंसको देव देखैं तमासा ॥ भरे हर्ष गीर्वान वर्षैं प्रसूना ॥ कहैं युद्ध ऐसो लख्यो है कहूंना ॥ ७ ॥ जदा हंस मारयो गदाको नेराई ॥ तदा छोरि लीन्ह्यों गदा रामराई ॥ कियो लातको घात वक्षेमझारी ॥ गिन्यो हंस भूमें भयो मोहभारी ॥ ८ ॥ कह्यो रामरे दुष्ट उत्तिष्ठवेगे ॥ हनै देहमें जोरसों आजतेंगे ॥ उठैगो जबैलों नहीं हंसराजा ॥ करौंगो तबैलों न घातैं दराजा ॥ ९ ॥

दोहा—उठो हंस नहिं मोहवश, ठाढरहे बलराम ॥
डिंभक सात्यकिको लगे, लखन महासंग्राम ॥ ९४ ॥

छंद हरिगीतिका ॥ सात्यकि डिंभक विश्ववीर विख्यातश यक घातमें । दोउ लरत अमरष भरत धारत चित्त शत्रु निपातमें ॥ दशविशिख सात्यकि हन्यो डिंभक वक्ष ताकि तुरंतहीं । यकबाण मारयो सात्यकी तब भाषि अब तुव अंतहीं ॥ १ ॥ सो बाण डिंभक लागि उर तनु फूटि भूमि समायगो । तब हन्यो डिंभक लाख शर कहि काल तेरो आयगो ॥ तब काटि सात्यकि सकल शर कोदंड डिंभकको दल्यो । हंसानुजहु गहि चाप दूसर अर्धचंद्रहि हनि झिल्यो ॥ २ ॥ सोइ सात्यकी तनु अर्ध चंद्र विदारि पारसको दियो । जन सकल शोणितमें भयो जनु फूलि किंशुक छबिलियो ॥ तब कोपि सात्यकि रिपुशरासन एक दूसर तीसरो । दियकाट बोल्यो डांटि बैनन वीरतें खलखूसरो ॥ ३ ॥ यहि भांति शत अरु पांच डिंभक चाप सिनिसुत काटिकै । किय सिंहनादहि भट रणाजिर रिपुहि बहु बिधि डांटिकै ॥ तब कोपि डिंभक ढाल अरु करवाल लिय रथ त्यागिकै । कूद्यो तुरंतहि शत्रु सम्मुख चल्यो जे अनुरागिकै ॥ ४ ॥ तब सात्यकिहु धरि

धनुष कर करवाल ढालहु धारिकै । द्रुत कूदि स्यंदनते चल्यो निज जीति मनहिं विचारिकै ॥ अभिमन्यु डिंभक सात्यकी अरु सोमदत्तहु नकुलहूं । अरु तनै दुःशासनहुं को षट वीर असि रण अतुलहूं ॥ ५ ॥ दोउ करत खड्गप्रहार बारहिं बार बहुत प्रकारके । तिनको कहत मैं नाम जे हैं हाथ मुख्य हथ्यारके ॥ उद्भ्रांत भ्रांत प्रवृद्ध आकर विकर भिन्न अमानुषे । आविद्ध निर्मर्याद कुल चित्तबाहु निस्सृत रिपु दुषे ॥ ६ ॥ तिमि लव्य जानु विजानु संकोचित सुआहित चित्रको । घृतलवन कुद्दव छिन्न सव्येतर तथा उत्तरतको ॥ तिमि तुंग बाहु त्रिबाहु सव्योनत उदासिहु असिकै । पृष्ठत प्रथित जाधित प्रथित ये हाथ जानौ बत्तिसै ॥ ७ ॥ ये हाथ बत्तिस सात्यकी डिंभक प्रहारत समरमें । अति लाघवी करि पैतरे भरि हनत शिर उर कमरमें ॥ कहुं कूदि जात अकाशहूं पुनि भूमि आय थिरात है । कहुँ चलत चहुँ क्षित चटक चोपित चंचला चमकात है ॥ ८ ॥

दोहा—बढि दोऊ भट जोरसों, हन्यो बरोबर घाव ॥
मही दोउ मूर्छित परे, घट्यो न युद्ध उराव ॥ ५५ ॥
अर्जुन दूजो सात्यकी, तीजो श्रीयदुराज ॥
डिंभक षण्मुख शंभु तिमि, षटधनु धराशिरताज ५६ ॥
ऐसो भाषित देव सब, चढे आकाश विमान ॥
लखैं समर कौतुक मुदित, पावत मोद महान ॥ ५७ ॥

उग्रसेन वदसुव प्रवीरा ❀ वली पलित जर्जरित शरीरा ॥
महावृद्ध श्रुत ज्ञान विज्ञाना ❀ ज्ञाता भूपति नीति निदाना ॥
ते दोउ समर करन अनुरागे ❀ रथ चढि बाण चलावन लागे ॥
उत राक्षस हिडंब बलवाना ❀ आयो सन्मुख समर महाना ॥
पीत केश रोमा तनु ठाढे ❀ बाहु विलम्ब रदन अति बाढे ॥
बाजि सरिस नाशिका भयावनि ❀ लम्बी हनु विभीत उपजावनि ॥
सिवा सरिस मुख दीरघ डाढा ❀ वपुष विंधगिरि मानहुँ बाढा ॥

महा भयङ्कर दुष्ट हिडंबा * धावत भक्षत भटन कदंबा ॥
गज उठाय गजपर दै मारै * बाजिनको बाजिनपै डारै ॥
रथन पटकि रथपर चढ़ योरै * करत शोर चहुँ ओर कठोरै ॥
बडे बडे वीरन धरि खावै * गज बाजिन भक्षै अरु धावै ॥
एक मनुज कहँ करत न कोरा * पंच पंच दश भक्षत जोरा ॥
दोहा–कोउ भक्षत पटकत कोऊ, कोउ चपेटत पाय ॥
प्रलय रुद्र सम लसतरण, लखिभट चले पराय ॥ ९८ ॥
एक क्षण महँ यदुवंशी सेना * खाय हिडंबक कियो अचैना ॥
कछू डिंभ भक्षण ते बाचे * ते भट समर करन नहिं राचे ॥
हाहाकर करत सब भागे * पीछे नाहिं चितवत भय पागे ॥
कुंभकर्ण जिमि रणमें आयो * मर्कट कटक कोटि भट खायो ॥
तैसे सो हिडंब बलवाना * यदुवंशिन खायो भट नाना ॥
सन्मुख समर भयो नहिं कोऊ * बडे वीर बानयतहु सोऊ ॥
आनकदुंदुभि आहुक राजा * चढि रथ धरि कोदंड दराजा ॥
गे हिडंब सन्मुख बिनदेरी * क्षुधित बाघ आगे जिमि छेरी ॥
दोउ वृद्धन लखि राक्षस घोरा * धायो खान हेतु करि शोरा ॥
अंधकूप सम मुख बगराये * चावत मृतक मनुज मुख लाये ॥
उग्रसेन आहुक दोउ वीरा * राक्षस वदन भरयो बहु तीरा ॥
चाबि लियो शर सकल चलाये * खान हेतु धायो मुख बाये ॥
दोहा–दोहुँको धनुष धरि, लीन्हों सारथि खाय ॥
बाहु पसारे धरन को, धायो आनन बाय ॥ ९९ ॥
कह हिडंब तहँ हँसत ठठाई * उग्रसेन बसुदेव सुनाई ॥
रे हरि पिता तोहिं मैं खैहौं * उग्रसेन कहँ नाहिं बचैहौं ॥
वृद्ध तुम्हैं दोउनको खाई * मैं जैहौं अब आशु अघाई ॥
भले आजु आये रणमाहीं * है तुम्हार बचिबो अब नाहीं ॥
काहेको अब श्रम करवावहु * तुमही मेरे मुखमहँ आवहु ॥
जो मेरे मुख परिहौ नाहीं * तो हम खाब काटि तुमकाहीं ॥

अस कहि दौरयो राक्षस घोरा ❀ खान हेतु वृद्धन तेहिं ठोरा ॥
आवत काल समान भयानन ❀ हेरि हिडंबहि महाअपावन ॥
उग्रसेन वसुदेवहु दोऊ ❀ निरखि नगीच नहीं भट कोऊ ॥
चहुँकित चितये अति भै भीने ❀ निज रक्षक नाहिं कोउ लखि लीने ॥
भागे बूढ तुरत रथ कूदी ❀ आयुध डारि उगारे चूंदी ॥
रपट्यो तहँ हिडंब दोउ काहीं ❀ हाहाकार मच्यो चहुं घाहीं ॥
दोहा–उग्रसेन महाराजको, अरु वसुदेवहु काहिं ॥
भक्षत आजु हिडंब है, रक्षत कोऊ नाहिं ॥ ६० ॥
ऐसो शोर मच्यो चहुँ ओरा ❀ सुन्यो श्रवण रोहिणी किशोरा ॥
लडत रह्यो बल हंसहि संगा ❀ लोचन फेरि लख्यो तेहि जंगा ॥
जान्यो निश्चित बोजकदंबा ❀ पिताहिं नरेशहि भषत हिडंबा ॥
सौंप्यो हंस युद्ध हरिकाहीं ❀ सावधान है लरहु इहांहीं ॥
अस कहि कोपित हलधर धायो ❀ ऊंचे स्वर हिडंब गोहरायो ॥
खाय न खाय न बूढन काहीं ❀ ऐसो साहस करियतु नाहीं ॥
छोंडु छोंडु शठ जरठ प्रवीरन ❀ यह नाहिं धर्म धरा रणधीरन ॥
मोहिं खाय पुनि वृद्धन खाहू ❀ तौ हैजाय तोर बल थाहू ॥
अस कहि दौरि द्रुतहि बलराई ❀ पितु अरु राक्षस बीचहिं आई ॥
ठाढ भयो कोपित बलरामा ❀ देखो रामहिं राक्षस आमा ॥
कह्यो वचन तब हँसत ठठाई ❀ आजु अहार दियो विधिराई ॥
तोहिं पाय वृद्धन नहिं खैहौं ❀ युव तन महँ सब भांति अघैहौं ॥
दोहा–अस कहि दौरयो वेगसों, क्षुधित निशाचर घोर ॥
धन्यो आय अति जोरसों, करि कैशोर कठोर ॥ ६१ ॥
रामहु निज आयुध महि डारी ❀ निश्चर उर मूठी इक मारी ॥
लगत मुष्टि राक्षस विकरारा ❀ गिरयो महीमहँ खाय पछारा ॥
भयो विसंग मृतक सम जबहीं ❀ दोउ करचरण पकरिबल तबहीं ॥
ताहि उठाय भँवाय भँवाई ❀ फेरयो बल करिकै बलराई ॥
राक्षस परयो जाय षट कोसा ❀ रह्यो न तनुमहँ नेसुक होसा ॥

निश्चर ह्वैगो मृतक समाना * बहुत काल तहँ परे बिताना ॥
रह्यो भीम कर ताकर काला * ताते मरचो न निश्चर हाला ॥
उठि हिडंब रण रोस बिहाई * गयो सिंधुमहँ सभय समाई ॥
बलको बल बिलोकि यदुबंसी * जयजयकार कियो अरिध्वंसी ॥
इतने काल माहिं दिननाथा * परसन कियो अस्त गिरि माथा ॥
प्राणहारिणी निशि जब आई * सूझि परै नहिं कर पसराई ॥
दोउ दिशि भयो युद्ध तब बंदा * प्रगट्यो परब पूरण चन्दा ॥
दोहा—दोऊ बीरन वाहिनी, पुनि पुनि व्यूह बनाय ॥
संभारिसँभारि भट रण करन, लागे अति हर्षाय ॥ ६२ ॥
उते हंस डिंभक रणधीरा * भये सैन्य आगे दोउ बीरा ॥
राम श्याम इत दलके आगे * होत भये रिपुजय अनुरागे ॥
मच्यो उभय दलमें घमसाना * उभय सैन्य भट लरत समाना ॥
कोहुको भान रह्यो तनु नाहीं * जानि परचो नहिं कछु निशि माहीं ॥
हंस सैन्य हरि सैन्य हटावै * कहुँ हरि सैन्य अधिक बढिजावै ॥
यहि विधि बढत हटत निशिमाहीं * समर करत तनु तजत तहांहीं ॥
गोवर्द्धन गिरि तट दल दोऊ * आय गये जान्यो नहिं कोऊ ॥
यमुना तट महँ भयो प्रभाता * मच्यो बराबर आयुध घाता ॥
मिल्यो न संध्याकर अवकाशा * होत बराबर वीर बिनाशा ॥
सारणादि सात्यकि हरि रामा * कियो मनहिंमन शैल प्रणामा ॥
ते तहँ महारथी यदुबीरा * घेरे हंस डिंभकहि धीरा ॥
दोहा—हन्यो सात वसुदेव शर, भूप तिहत्तरि बान ॥
सात्यकि मारचो सात शर, शठहि तिहत्तरिमान ॥ ६३ ॥
सारण सायक हन्यो पचीसा * कंक हन्यो दश शर तकिशीशा ॥
विपृथु असी बाणतक मारचो * उद्धव दशइषु तिन पर झारचो ॥
हंस और डिंभक दोउ भाई * रण सबके शिर काटि तुराई ॥
हन्यो सबन कहँभरि भरि बाना * मूंदि दियो ध्वज सारथि याना ॥
वमत रुधिर भे वीर बिहाला * जिमिहतरुकुसुमितकिंशुकलाला ॥

डोलि उठी सब यादव सैना ❋ हंस विशिख सहि सकत बनैना ॥
उद्धव सात्यकि आदिक जेते ❋ मूर्च्छित परे मही महँ केते ॥
इतर वीर सब लगे पराई ❋ हंस डिंभकहु शर झरि लाई ॥
यदुवर हलधर भे बढि आगे ❋ हंस डिंभकाहिं मारन लागे ॥
करत युद्ध भट चारिहु क्रुद्धा ❋ इक एकनसों वीर विरुद्धा ॥
अवसर जानि शम्भु गण दोऊ ❋ आवत भे रक्षण हित सोऊ ॥
हंस डिंभकाहि करि मधि माहीं ❋ करन लगे माया चहुँ घाहीं ॥
दोहा-डिंभकके सँग क्रुद्ध है, करत युद्ध बलराम ॥
तथा समर लीला करत, हंस संग घनश्याम॥६४॥
दोऊ हरके गण विकरारा ❋ माया करहिं अनेक प्रकारा ॥
हंस डिंभकहु शंख बजावाहिं ❋ बार बार निज विजय जनावहिं ॥
शंख शोर देवकी किशोरा ❋ करत जोरसों भरि चहुँओरा ॥
शिथिल हंस डिंभक कहँजानी ❋ शंकर गण अति अमरपठानी ॥
लै लै शूल करत किलकारी ❋ धाये जिमि शिखिपै पखियारी ॥
दुहूं ओर ते मारयो शूला ❋ हरिहि लगे जिमि कैरवफूला ॥
तरकि तुरन्त तहां भगवन्ता ❋ गह्यो शंभु दूतन बलवन्ता ॥
दोहुँ करसों दोहुँन पद गहिकै ❋ जाहु शम्भु लोकहि असकहिकै ॥
दोहुँन कहँ सतबार भँवाई ❋ कैलासहि फेंक्यो यदुराई ॥
परे शम्भु गण शम्भु लोकमें ❋ अपनी अपनी जात थोकमें ॥
मूर्च्छित भये तनक सुधि नाहीं ❋ हर हँसि जीवन दिय तिनकाहीं ॥
पुनि नहिं समर करन मन कीने ❋ हरि विक्रम बिलोकि भयभीने ॥
दोहा-देखि त्रिविक्रम विक्रमहिं, हंस कह्यो भरि भीति ॥
राजसूय महँ विघ्न हरि, करिबो अति विपरीति ॥६५॥
जो मन भावै सो कर देहू ❋ लवण न होय तौ नहिं संदेहू ॥
करौ सर्वथा जो तुम नाहीं ❋ तौ हमसे कैसे सहि जाहीं ॥
हम सब राजन शासन कहहीं ❋ हमरो शासन सब नृप गहहीं ॥
जो न देहु कर गोप कुमारा ❋ तौ क्षण ठाढ रहौ यहि बारा ॥

एकहि बाण गर्व हरि लैहैं * विना गर्व यमलोक पठै हैं ॥
अस कहि धनु सायक संधाना * हन्यो ललाट देश भगवाना ॥
हरि ललाट शर सोहत कैसे * पुष्प शराकृति शशि उर जैसे ॥
तब दारुक पीछे बैठायो * हरि सात्यकि सारथी बनायो ॥
कह्यो हंस सों करलै लीजै * यहि औसर नाहिं शोच करीजै ॥
विप्र शत्रु पूरो तैं पापी * करि पाखंड शम्भु मनु जापी ॥
मोरे जियत विप्र अपकारा * कौन करन समरथ संसारा ॥
दोहा–अस कहि केशव कोपिकै, अग्नि अस्त्र लै घोर ॥
हन्यो हंस कहँ तब उठी, अनल प्रबल चहुँ ओर॥६६॥
वारुण अस्त्र हन्यो तब हंसा * अग्निज्वालकर कियो विध्वंसा ॥
पवन अस्त्र पुरुषोत्तम छांड्यो * हनि माहेंद्र हंस सो आड्यो ॥
हन्यो महेश्वर अस्त्र मुरारी * रुद्र अस्त्र रोक्यउ नृप भारी ॥
तब अति कोपित ह्वै गिरिधारी * तीनि अस्त्र दीन्ह्यो तेहि मारी ॥
राक्षस गांधर्वहु पैशाचा * प्रगटे तहँ बहु भूत पिशाचा ॥
दिव्य अस्त्र लीन्ह्यो त्रैहंसा * विधि कुबेर यम कर रिपुध्वंसा ॥
तीनि अस्त्र तीनहुँ कहँ मारयो * फेरि ब्रह्मशर हरिपर डारयो ॥
अस्त्र ब्रह्म शर हरिहु चलाई * दीन्ह्यो ज्वालामाल बुझाई ॥
वैष्णव अस्त्र लियो भगवाना * है नहिं वारण जासु विधाना ॥
संधानत धनु महँ दिशि चारी * ज्वालामाल उठी अति भारी ॥
हाहाकार माच्यो त्रैलोका * जरन लगे देवनके वोका ॥
छोंडि दियो सागर मर्यादा * विधि शंकर किय विषम विषादा ॥
दोहा–सुर नर अस भाषन लगे, क्षुद्र हंसके हेत ॥
करत प्रलय अब जगतकी, काहे कृपानिकेत॥६७॥
महा भयावन अस्त्र विलोकी * भयो हंस संगर महँ शोकी ॥
छूट्यो करते धनुष विशाला * गयो कोप ह्वै गयो विहाला ॥
जीव बचावन हेत डराई * कूदि यानते चल्यो पराई ॥
हंस घुस्यो कालीदह जाई * ताहि गिरत भो शोर महाई ॥

हंस परात निरखि यदुनाथा ❀ कूदि यानते दौरे साथा ॥
तासु उपर देवकीकुमारा ❀ कूदि परयो किय चरण प्रहारा ॥
गयो डूब कालीदह माहीं ❀ अबलों देखि परयो पुनि नाहीं ॥
कोउ अस कहहिं हंस मरिगयऊ ❀ कोउ कह भुजंगन भक्षण भयऊ ॥
देखि परयो नहिं हंस बहोरी ❀ चढयो आय रथमें हरि दौरी ॥
जीवत जुपै हंस जगमाहीं ❀ यज्ञ युधिष्ठिर होती नाहीं ॥
देव बजाये मुदित नगारा ❀ लागे वर्षन फूल अपारा ॥
हन्यो हंस हरि हन्यो हंस हरि ❀ यहै शोर जगमाहिं रह्यो भरि ॥
दोहा-भ्राता मरण विलोकिके, डिंभक अति अकुलान ॥
बलभद्रहि लखि भीति भरि, रथते कूदि परान ॥ ६८ ॥
कूदत भयो हंस जहँ जाई ❀ कूदि परयो डिंभकहु तहांई ॥
दौरयो ताके पीछे रामा ❀ कूद्यो कालीदह बलधामा ॥
निज अग्रज कहँ अतिदुख पाग्यो ❀ डिंभक जलमहँ खोजनलाग्यो ॥
पुनि पुनि बूडत पुनि उतराता ❀ नहिं देखत भ्राता बिलखाता ॥
कहुँ जल चारिहु ओर भँवावै ❀ कहुँ बहु दूरि इतै उत धावे ॥
हली विलोकत तासु तमाशा ❀ जानि निरायुध करत न नाशा ॥
बहुत काल यमुना महँ हेरी ❀ डिंभक गोहरायो हरि टेरी ॥
अरे नंदसुत भ्रात बतावै ❀ मम अग्रज कर खोज लगावै ॥
नातौ तोहिं डारिहौं मारी ❀ अबलौं गुरु वृंदावन चारी ॥
हरि हँसि कह्यो वचन अस ताको ❀ अग्रज हित पूछै यमुनाको ॥
देई यमुना तोहिं बताई ❀ जहां गयो है है तुव भाई ॥
तब यमुनासों पूछन लाग्यो ❀ डिंभक महाशोकसों पाग्यो ॥
दोहा-तब बोल्यो हँसिकै बली, सुनु डिंभक मतिहीन ॥
मोर भ्रात तुव भ्रात कहँ, मारि बोरि जल दीन ॥ ६९ ॥
अरे अंध देख्यो तैं नाहीं ❀ का पूछसि अब जड़जलपाहीं ॥
सुनत रामके वचन कठोरा ❀ डिंभक चित्त भयो अति भोरा ॥
लग्यो करन तब विपुलविलापा ❀ बंधु विनाश लह्यो परितापा ॥

हाय भ्रात मोहिं आजु बिहाई * कहां गयो सुरलोक सिधाई ॥
यहि विधि डिंभक रोदन कीन्हो * अपनो मरन ठीक मन दीन्हो ॥
उभय पाणिसों जीभि निकासी * डिंभक मरयो यमुनजलरासी ॥
कियो देव तब जयजयकारा * सुमन वर्षि दिवि दियो नगारा ॥
रामहुं निकारि चढे रथ आई * मिले परस्पर आनँद पाई ॥
पुनि हरि हलधर चढि रथ एका * सात्यकि आदिक सुभट अनेका ॥
गोवर्द्धन गिरि गे गिरिधारी * बसे सैन्ययुत सबे सुखारी ॥
आनँद रसमहँ निशासिरानी * दूरि भई श्रम व्यथा गलानी ॥

दोहा-कहहिं परस्पर रणकथा, हरि बलको परभाव ॥
यदुवंशी रण बांकुरे, बाढयो चौगुनचाव ॥ ७० ॥

हरि जे हंसक डिंभकनाशा * फैलि गयो दुनिया दश आशा ॥
गोप गोवर्द्धन धेनु चरावन * आये हुते यमुन जलपावन ॥
ते सब हेरि हंस हरि युद्धा * दौरे वृंदावन कहँ शुद्धा ॥
जाय यशोमति नंदहु पाहीं * कह्यो सुनो सुख जेहिं मिति नाहीं ॥
कोउ पापी पुहुमीपति भागी * दुरयो गोवर्द्धनदरी अभागी ॥
तेहि रपटे युत सैन्य विशाला * आयो राम सहित तुव लाला ॥
तुव लालन कहँ लखि नृपराई * कालिंदीदह घुसे पराई ॥
कालिंदी दह रामहुं श्यामा * कूदि परे तिनके वध कामा ॥
रहे अघी भूपति दोउ भाई * हन्यो एक हरि इक बलराई ॥
रिपु जय पाय अछत दोउ प्यारे * बसे गोवर्द्धन शैल किनारे ॥
हम आये निज आंखिन देखी * है नाहिं मृषा लेहु सति लेखी ॥
मानहु जो न हमार विश्वासू * पठवहुँ देखन जन तिन पासू ॥

दोहा-नंद यशोमति सत्य जो, मानहु वचन हमार ॥
तौ तुरतै पगु धारिये, देखन प्राणपियार ॥ ७१ ॥

कवित्त-गोपन बखान परन्यो नंद यशुमतिकान जैसी सूखी
सालिमें सलिल धार परती ॥ सुजन भवन धन तन मन जाके
हेत छितू नहिं हेरती रही है मति अरती ॥ क्षणक वियोग जासु

युग जोगही सो रह्यो आवन सुन्यो है ताको जामें लगी सुरती॥ नंद औ यशोमतिकी आनँद समुद्र मिति रघुराज लाज भरि भारती न करती॥ १॥ सुनते प्रथम तनु भूलि गई सुधि सारी जानि स्वपनोसों चौंकि ऊंचे चिते चारों ओर॥ तुरत संदेशीको इनाम मणिगण दीन्ह्यों धाये गिरिराज दिशि आनंदको भयो भोर॥ तनुकी वसनहूंकी मनमें सुरत नारि पथमें पथिक पूंछैं मिलत जे ठौर ठौर॥ रघुराज प्राणप्यारो सर्वस हमारो कहो कन्हुवां कहां है कहो कन्हुवां कहां है मोर॥ २॥

दोहा-गोवर्द्धनागिरि छोरसें, आयो नंदकिशोर॥
चारि ओर ब्रज ठौरसें, फैलि रह्यो यहिशोर॥ ७२॥

सुनतहि गोपी ग्वाल सुखारी * धावत भे तनु सुरति बिसारी॥
मिश्री माखन दूध बतासा * दही मही भरि शकटन खासा॥
भेट देन नँदनंदन काहीं * ब्रजवासी दौरत पथ जाहीं॥
बाल युवा वृद्धहु अरु नारी * चले विलोकन कृष्णमुरारी॥
पथिकनसों पूंछैं पथमाहीं * तुम देखे नँदलालन काहीं॥
बढी लालसा हरि दर्शनकी * इक इक क्षण सम करत युगनकी॥
कोउ अपने कर माखन लीने * देव लालको हम सुख भीने॥
कोउ दधि लिये कहैं हम जाई * देव लाल कहँ आजु खवाई॥
हमें चीन्हिहैं अवधौं नाहीं * भेट होति बहुदिवसन माहीं॥
सुनियत श्याम विभववड पायो * यदुपति अपनो नाम धरायो॥
हमहिं प्रथम लेखब अब जाई * नंदलाल कहँ अंक उठाई॥
चूमब वदन लेव बलिहारी * महाविरह दुख देब निवारी॥

दोहा-ब्रजवासीको पुनि कहत, बरबस ब्रज महँ ल्याय॥
नंदलालको द्वारका, हम न देब पुनि जाय॥ ७३॥

रहे संगके सखा खेलारी * बारबार ते कहत उचारी॥
बैठब हरिसँग दावन जोरी * भये भूप तो नाहिं कछु खोरी॥
कृष्ण संग खेलब बहुखेला * बहुत दिवस महँ परिगो भेला॥

हारे दांव लेब पुनि आजू ❀ बैठब कुंजन जोरि समाजू ॥
वृद्ध वृद्ध गोपिका सयानी ❀ गमनत कहत परस्पर बानी ॥
सुनि हैहै दधि माखन चोरी ❀ करत रह्यो ब्रजखोरिन खोरी ॥
अब तो भूप भये नँदलाला ❀ हैहै बिसरो बाल हवाला ॥
रहीं गोपिका जे हरि प्यारी ❀ ते अस कहहिं नयन जल ढारी ॥
आज लखब हम प्राणपियारो ❀ जो ब्रजवासिन सुरति बिसारो ॥
ले जिय दै दुख गयो पराई ❀ कुबरीके कर गयो बिकाई ॥
लेब बैर खिगरो गहि श्यामैं ❀ जो दै दगा गयो ब्रजवामैं ॥
सुनियत व्याह कियो बहुतेरे ❀ औरहि रंग मिली अब हेरे ॥

दोहा–छलिया छलकरि छटिगयो, दीन्ह्यों सुरति बिसारि
मारि कटाक्ष कसानिसों, लेबै श्याम सुधारि ॥७४॥

यहिविधि हिय हुलसत ब्रजवासी ❀ चले जात हरि दरशन आसी ॥
नंद यशोमति दोउ मधि माहीं ❀ चहुँकित ब्रजवासी पद जाहीं ॥
पहुँचे गोवर्द्धन ढिग जबहीं ❀ यदु सेना देखे सब तबहीं ॥
हरिके दूत दूरिसों देखी ❀ जाय कह्यो प्रभुसों मुद लेखी ॥
नाथ सकल तिहरे ब्रजवासी ❀ धावत आवत दरशन आसी ॥
सुनि सुखधाम राम अरु श्यामा ❀ काम अराम त्यागि तेहि यामा ॥
जैसे जहँ बैठे दोउ भाई ❀ तैसे तहँ धाये अतुराई ॥
सैन्य मध्य माच्यो अस शोरा ❀ जात कहूँ वसुदेव किशोरा ॥
सात्यकि उद्धव आदिक वीरा ❀ धाये नहिं पाये यदुवीरा ॥
कोउ छत्र लै धावत जाहीं ❀ कोउ चमर लै प्रभु पाछि आहीं ॥
कोउ व्यंजन लै धावत पाछे ❀ नहिं पावत प्रभु कहँ गति आछे ॥
खरबर परयो सकलदल माहीं ❀ धाये कौतुक देखन काहीं ॥

दोहा–यहिविधि गिरिधर हलधरहु, लखन यशोमति नंद
गोपसमाज समीपमें, पहुँचे भरे अनंद ॥ ७५ ॥

निज लालन जब यशुमति देखी ❀ तनुसुधि त्यागि तुरंत विशे
कन्हुवा कन्हुवां कहि द्रुत धाई ❀ लीन्ह्यों अंक उठाय

चूंमति वदन लिहे सुत अंका ❋ लह्यो देवतरु मानहु रंका ॥
हरि पुनि पुनि पद परहिं मातके ❋ खडे रोम अवदात गातके ॥
आनँदवश मुख आव न बाता ❋ दृगजल जातनते जलजाता ॥
यशुमति मुख पोंछति प्रभु केरो ❋ कहति मिल्यो कन्हुवां अब मेरो॥
बहुत दिवस कहँ लाल बितायो ❋ बहुत दिवसमहँ निज ब्रज आयो ॥
पुनि बलराम परे पदमाहीं ❋ लियो उठाइ अंक तेहिकाहीं ॥
चूमि वदन शिर सूंघति माता ❋ देति अशीश जिआवहु ताता ॥
नंद चरण पुनि परे मुरारी ❋ लियो उठाइ ढारि दृगवारी ॥
सूंघत शिर चूमत शशि आनन ❋ कहत धन्य मोहिं समजगआनन ॥
परे राम पुनि नंद शरणमें ❋ बाराहिबार मिल्यो तेहि क्षणमें ॥

दोहा-राम श्यामको नंद तब, लीन्ह्यों अंक उठाइ ॥
तेहि क्षणको सुख एक मुख, केहिविधि कहै सिराइ ॥७६॥

वृद्ध वृद्ध सिगरे पुनि गोपा ❋ राम श्याम देखनको चोपा ॥
आय आय कर प्रीति घनेरी ❋ करहिं निछावरि हरि बलकेरी ॥
चूमहिं वदन मिलहि बहु वारा ❋ अंबक वहति अंबुकी धारा ॥
मिलहिं नाथ सब गोपन काहीं ❋ रामहु यथा योग तिन काहीं ॥
वृद्धन वंदन करहिं मुरारी ❋ मिलहिं परस्पर सखन सुखारी ॥
देइ शिशुन कहँ सुभग अशीशा ❋ अति मोदित द्वारका अधीशा ॥
हरि भुज गहि सब सखा बताहीं ❋ भूलि गयो हरि व्रज तुम काहीं ॥
पाय रजायसु यदुकुल केरी ❋ भूल्यो नाहिं व्रजवासिन हेरी ॥
हरि कह जबते व्रज बिलगाने ❋ तबते कबहुं न क्षण ठहराने ॥
वृद्ध वृद्ध गोपी जुरिआई ❋ रामश्यामकी लेइँ बलाई ॥
चूमहिं वदन निहारहिं रूपा ❋ टोरहि तृण लखि रूप अनूपा ॥
वर्षहिं आंखिन आनँद आजू ❋ लेहि गोद महँ रमानिवासू ॥

दोहा-हरि पर वारहिं रत्न गण, कहहिं यशोमति लाल ॥
तुम बिन जगको जीवनो, भयो हमहि जंजाल ॥७७॥

मिलहिं सखी हरि प्राण पियारी ❋ जे हरिहित धन धाम बिसारी ॥

रहत हते नहिं जिन बिचहारा * तिन उर बीचन परे पहारा ॥
अंसिसुधिकारि२ पुनि हरिप्यारी * भरहिं प्राणपति भुजा पसारी ॥
करहिं कटाक्ष मंद मुसकाई * गुरुजन लाज डीठि बरकाई ॥
सखी सखी अस करहिं उचारा * मिल्यो बहुत दिन महँ पियप्यारा
अब छूटन छलिया नहिं पावै * ब्रज बसि नित आनँद उपजावै ॥
कोउसखि कर करि हरिकर काहीं * कहहिं कान्ह चीन्हत कसनाहीं ॥
राम श्याम ब्रजवासिन केरो * भयो समागम मोद घनेरो ॥
यदुवंशी धनि धनि मुख कहहीं * हरिकी रीति देखि चकि रहहीं ॥
नंद यशोमतिके पदकंजनि * परहिं सकल यदुकुल सुखपुंजनि॥
जैसो कृष्ण मात पितु मानै * तैसे यदुवंशी जब जानै ॥
हरिपै जस नँद यशुमति प्रीती * तिन यदुवंशिनसों किय रीती ॥

दोहा-राम श्याम कर जोरिकै, नंद यशोमति काहिं ॥
चलहु हमारे शिबिर महँ, अस भाख्यो तिनपाहिं७८॥

नंद यशोमति रामहु श्यामा * गोप गोपिका सकल ललामा ॥
औरहु यदुवंशी सरदारे * सकल सुखद शुचि शिबिरसिधारे
परमदिव्य कनकासन माहीं * हरि बल नंद यशोमति काहीं ॥
बैठायो करगहि सुख साने * यदुवर सब अचरज अतिमाने ॥
तहां यशोमति राम श्यामको * लियो गोद बैठाइ आमको ॥
पोंछति मुख चूमति बहुबारा * कहति अबै नहिं कियो अहारा ॥
लाल कलेऊ करहु सकारे * कोउ है सोपति साधनहारे ॥
कन्हुवां कबहूं माखन पावै * को तोहिं मिसिरी सहित खवावै॥
कहँ दधि कहँ गोरस कहँ मेवा * कौन करत ह्वैहै तुव सेवा ॥
कन्हुवां मोरि सुरति बिसराई * कहत रहे मुख माई माई ॥
मशहिं आचरज येक मन लागै * सब कोउ कहै मोर जिय भागै ॥
बडे बडे नृप दैत्यन काहीं * मारचो कान्ह सुन्यो अतिमाहीं ॥

दोहा-सिख्यो शस्त्रविद्या कबै, कब अस भयो जुझार ॥
कसकै जीत्यो शत्रु कहँ, अंग अतिहि सुकुमार ॥ ७९ ॥

राजकाज कस करहु कन्हाई * अजहूं छुटी कि नहिं लरिकाई ॥
भूलिगई माखनकी चोरी * रह्यो खेलतो खोरिन खोरी ॥
दूबर मुख तुव लाल देखातो * दधि माखन कबहूं नहिं खातो ॥
मैं तेरे हित रचि बहुसाजू * ल्याई लाल खवावन काजू ॥
दधिमाखन मिसिरी अरु खीरा * औरहु तुवहित भूषण चीरा ॥
भोजन करहु लाल यहि काला * बैठहिं संग सकल गोपाला ॥
असकहि यशुमति व्यंजन खासे * माखन मिसिरी दही बतासे ॥
कदली कदम पल्लवनि दोना * भरि २ आनि धरयो चहुँकोना ॥
राम श्याम बैठे तेहिं ठामा * ग्वाल बाल सब लसत ललामा ॥
हरि बल कहँ यशुमति निजपानी * लगी खवावन हिय हुलसानी ॥
जौन खवावति पूंछति स्वादू * हरि भाषत उरभरि अहलादू ॥
जबते ब्रजते हम कढिआये * तबते अस भोजन नहिं पाये ॥
दोहा-कहहु सकल ब्रजकी कुशल,सुखी सकल गोपाल ॥
कह्यो यशोमति तोहिं बिन, ब्रजहै सकल बिहाल ॥८०॥
हरिकह मैया तेरी दाया * मैं जीत्यो शत्रुन समुदाया ॥
पै दुखही दुखमें दिन बीते * कबहुँ न कारजते हम रीते ॥
ब्रजको सुख त्रिभुवनमें नाहीं * यदपि शक्र शत विभव समाहीं ॥
ग्वाल बाल अस बोलत बाता * सत्य कान्ह तव जोर अघाता ॥
हम देखे ब्रजमें बहुबारा * कियो अनेक असुर संहारा ॥
नंदहु कहत मंद मुसकाई * कति विवाह तुव भयो कन्हाई ॥
वसहु द्वारकामें घर नीके * संग सखा सब हैं प्रियजीके ॥
अब तो सुनियत बडी बडाई * छोडिदई लालन लरिकाई ॥
अब न ब्रजहु ब्रजते ब्रज प्यारे * हमरे भाग्य विवश पगु धारे ॥
ना तो चलउ हमहुँ सँग माहीं * तुव बिन जीवन जगत वृथाहीं ॥
कह्यो नाथ पितु तोर बिछोहू * कियो सकल मेरो सुखद्रोहू ॥
पै रहिहौं तुव निकट सदाहीं * यह जिय जानहु संशय नाहीं ॥
दोहा-यहि विधि भोजन करत प्रभु, बार बार बतरात ॥
नंद यशोमति सुखउदधि, नहि संसार समात ॥ ८१ ॥

यहि विधि भोजन करि यदुराई ❀ बैठे नंद गोदमहँ जाई ॥
यदुवंशी हरिचरित विहारी ❀ कहहिं परस्पर वचन सुखारी ॥
धन्य धन्य जग नंद यशोमति ❀ इनको कौनि अहै दुर्लभगति ॥
कियो कृष्णपर सत्य सनेहू ❀ जीवनमुक्त न कछु संदेहू ॥
कह्यो नंदसों आनँदकंदा ❀ ब्रजमें कुशल अहै गोवृंदा ॥
कहु सुरभी बछरावहु व्यानी ❀ देती गोरस अहैं मोटानी ॥
कहहु कुशल बछरा वाछिनकी ❀ नहिं भूलतिजिनकी सुधि छिनकी ॥
कहहु कुशल ब्रजकुंजन केरी ❀ जिनमहँ लगी रहत सुधि मेरी ॥
कहहु कुशल यमुना पुलिननकी ❀ जहँते टरति न गति मम मनकी ॥
सुनत नंद लालनकी बानी ❀ बोले चूंमि बदन सुखमानी ॥
ब्रजकी कुशल कौन हम कहहीं ❀ जहँ कान्हर तुमहीं बिन रहहीं ॥
और सकल विधिहै कुशलाई ❀ पै तुम बिन छिन रह्यो न जाई ॥

दोहा—इतनेमें चलि रामहूं, नंदगोदमहुँ आय ॥
बैठिगये आनंद भरि, मंद मंद मुसकाय ॥ ८२ ॥

जानि कछुक कारज भगवंता ❀ गये दूसरे शिबिर इकंता ॥
इहां नंद ऐसे अनुरागे ❀ यदुकुल कुशल सुपूंछन लागे ॥
कहहु राम यदुकुल कुशलाई ❀ रहहिं कुशल वसुदेव सदाई ॥
भोजराज अति कुशल रहतुहैं ❀ अब तौ कछु नहिं शोक लहतुहैं ॥
यादव देवक आदि सयाने ❀ कहहु सकल निवसहिं सुदसाने ॥
राम कह्यो यदुकुल कुशलाता ❀ यदुकुल कुशल सबै विधि ताता ॥
उतै यकंत कंत कहँ देखी ❀ गोपि गई महा मुद लेखी ॥
घेरि नंदनंदन कहँ प्यारी ❀ बैठन भई सकल सुकुमारी ॥
लालन ललना लखत लजाई ❀ बैठे नीचे नैन नवाई ॥
तब बोलीं हँसिकै हरि प्यारी ❀ अब नाहिं मानहु लाज बिहारी ॥
भली करी जो करी कन्हाई ❀ बीती बात कौन मुख गाई ॥
अबहूं तौ सन्मुख मुख कीजे ❀ हम नाहिं तुमको दूषण दीजे ॥

दोहा—जाके जो कछु होतहै, लिख्यो भाल नँदलाल ॥
राई घटै न तिल बढै, मिटै न कौनेहु काल ॥ ८३ ॥

बिसरि गईं सिगरी सुधि तबकी ❀ राखत रहे रोज रुचि सबकी ॥
अब तो चितवनहूंकी लागी ❀ देखि परतहो परम विरागी ॥
तुमको कछू दोष नहिं प्यारे ❀ रहे ऐसहिं भाग्य हमारे ॥
सब दिन ऐसी रीति निहारी ❀ मुँह देखेकी प्रीति तिहारी ॥
हम अहीरनी जात गमारी ❀ तुम व्याह्यो अब राजकुमारी ॥
बिसरि गई सुधि कान्ह हमारी ❀ सुनियत उतै बडी बडवारी ॥
छलकरि कान्ह क्रूरके संगा ❀ करि सिगरो ब्रजको सुखभंगा ॥
चलो गयो मनमोह विहाई ❀ जात समय भाष्यो गोहराई ॥
ऐहहिं अवशि बहुरि ब्रजकाहीं ❀ सखा शोच कीजै कछु नाहीं ॥
सो काहेको सुधि पुनि करहू ❀ तुम छल छंद सदा उर धरहू ॥
धौं सुधि हमरी करहु मुरारी ❀ धौं कुबरी मुख जियहु निहारी ॥
तुमहिं न लाज लगी ब्रजराजा ❀ छोडि विरंज भरुयो कत लाजा ॥

दोहा-कान्ह कूबरी नेह जब, हमहुँ सुन्यो घनश्याम ॥
जानि परचो तबहीं हमहिं, पाछितैहैं परिणाम ॥८४॥

कबहुँ न यकरस रहत विहारी ❀ सबसों करत छली छल वारी ॥
भयो सो सत्य हमार विचारो ❀ तजि कुबरी द्वारका सिधारो ॥
सुनियत तहँ रुक्मिणी निवाही ❀ कछुदिन ताको प्रीति निबाही ॥
व्याही बहुरि आठ पटरानी ❀ पुनि सोरह सहस्र छबिखानी ॥
प्रथम ते बिसरि गईं जिन रीती ❀ तिनकी कबहुँ न परत प्रतीती ॥
ब्रजको वारिधि विरह बहाये ❀ अब मुँह कौन देखावन आये ॥
कियो हंस नृप अति उपकारा ❀ जेहिं मिसि तुम तो इत पगुधारा॥
अबलों गई न चंचलताई ❀ भली निवाही प्रीति कन्हाई ॥
पै जो भयो भयो सो भयऊ ❀ पाछिताने ते केहिं दुख गयऊ ॥
दुर्घट दर्शन भये तुम्हारे ❀ तुम्हहि लखे भरि नैन पियारे ॥
याते लाभ और कछु नाहीं ❀ याहि लगि प्राण रहे तनुमाहीं ॥
अहहु कुशल अपनी यदुराई ❀ तुमते हमरी कुशल सदाई ॥

दोहा-जबते ब्रजते तुम ब्रजे, तबते केहि केहि ठोर ॥
ब्रजको सुख पायो छला, कहौ रसिकशिरमोर ॥८५॥

गोपिनके सुनि वचन कन्हाई * बोलत भे लजाय मुसकाई ॥
सखी मोहिं तुम प्राणपियारी * बिसरी पलहु न सुरति तिहारी ॥
कहा करों कछु कारज हेतू * गमन कियो पितु मात निकेतू ॥
ब्रजवनिता जस प्राणपियारी * तस नाहिं त्रिभुवन परै निहारी ॥
करहु क्षमा मेरो अपराधा * तुव दुख देखि हून मोहिं बाधा ॥
तुमहिं कौन विधि मैं समुझाऊं * जुगुति चलति नाहिं हारैं दाऊं ॥
सखी सत्य सुनु वचन हमारा * कबहुं न मोहिं वियोग तुम्हारा ॥
जो यह कहहु गये पुनि काहे * सुनहु सुहेत देहुँ निरवाहे ॥
पूरक प्रीति वियोग विशेषी * विप्रलंभ सुख देखन लेषी ॥
जस मन बसत विदेश पियामें * तस नाहिं निकट रहे दुनियामें ॥
तातें मैं द्वारका सिधारयो * प्रेम पयोनिधि तुम कहँ डारयो ॥
सत्य सखी तुम प्रेम निबाहा * मोहीं सो परिगयो गुनाहा ॥
दोहा-धरहु धीर मनमें प्रिया, अब नाहिं करहु विषाद ॥
सखि पैहौ तुम सर्वदा, मोरमिलन अहलाद॥८६॥
असकहि उठि सानंद कन्हाई * मिले सखिन दृग आंसु बहाई ॥
सखी ललकि उर लियो लगाई * विरहताप सब दियो बहाई ॥
मिलहिं कान्ह कहँ छोडहिं नाहीं * परे अमी जिमि मृत मुखमाहीं ॥
बहुत बुझाइ कह्यो यदुराई * प्यारी अब मोहिं देहु रजाई ॥
सूनी अहै द्वारका नगरी * बिन मोहिं शत्रु भीति बशबिगरी॥
कहहु तो जाहुँ सैन्य लै संगा * जीति लियो हंसहु कर जंगा ॥
यतना सुनत सबै ब्रजनारी * बूडी विरह पयोधि मँझारी ॥
कह्यो वचन दृगवारि बहाई * अब पुनि कब मिलिहो यदुराई ॥
हरि कह तुम्हरे मन मम वासा * मैं तो सदा रहौं तुम पासा ॥
कुरुक्षेत्र कहँ आउब जबहीं * यह सुख हम तुम पाउब तबहीं ॥
जबहीं करब मोर तुम ध्याना * प्रगटब हम तव वचन प्रमाना ॥
यह सुनि सुखी भई ब्रजनारी * बारबार मिलि मुदित मुरारी ॥
दोहा-बहुरि यशोमति नंद ढिग, आय कृष्ण करजोरि॥
कह्यो पिता शासन करहु, अहै चलन मतिमोरि॥८७॥

नंद यशोमति उठे दुखारी ❀ लिये लगाय हिये गिरिधारी ॥
अब पुनि चलन कहहु नँदलाला ❀ देहु हमहिं कष्ट दुसह कसाला ॥
प्रभु कह कबहुँ न मोर बिछोहू ❀ तुम राखेहु मोपर नित छोहू ॥
असकहि कियो बहुत उपदेशा ❀ नन्द यशोमति हन्यो कलेशा ॥
कुरुक्षेत्र महँ हे पितु माता ❀ मम मिलाप होई सुखदाता ॥
मैं सुत तात मातु तुम मेरे ❀ कोटि कल्प यह फिरै न फेरे ॥
असकहि भूषण वसन मँगाई ❀ विविध भांतिकी साज सजाई ॥
दीन्ह्यो गोपी गोपन काहीं ❀ बारबार पुनि मिले तहांहीं ॥
नन्द यशोमतिको तेहिं ठामा ❀ रामसहित प्रभु करि परणामा ॥
ह्वैगे प्रेम विकल गिरिधारी ❀ ढारत लोचन वारिज वारी ॥
उभे नन्द यशुमति सुधि त्यागे ❀ गोपी गोप रुदन सब लागे ॥
इतै कृष्ण रथ उभय सवारा ❀ उतै गिरे सब खाय पछारा ॥

दोहा–नाथ उतारि पुनि यानते, समुझायो पितु मात ॥
वार अनेक लगाय हिय, दंपति दुख न समात॥८८॥

जस तसके पुनि नंद यशोदा ❀ गोकुलको गवने तजि मोदा ॥
इत बलराम और घनश्यामा ❀ चले ससैन्य विरह दुख छामा ॥
बहुरि बहुरि चितवत सब ग्वाला ❀ कहँलगि अबै गये नँदलाला ॥
पुनि २ पथ निरखहिं दोउ माई ❀ किमि जैहैं गृह यशुदा माई ॥
जाति हंस डिंभक बलधामा ❀ सैन्यसहित यदुपति बलरामा ॥
गये द्वारका परम सुखारी ❀ रह्यो सुयश भरि भुवन मँझारी ॥
इतै यशोमति नन्दहु ग्वाला ❀ गोकुल गये सुमिरि नँदलाला ॥
एक कृष्णकी आश लगाये ❀ सपनेहुँ नाहिं दूसर कछु ध्याये ॥
धन्य धन्य ब्रजके ब्रजवासी ❀ जे यदुनाथ दरशके आसी ॥
ब्रजवासिनकी कथा सोहाई ❀ मैं यह प्रथम ग्रन्थ महँ गाई ॥
ताते इहां न किय विस्तारा ❀ लहै को पैरि पयोनिधि पारा ॥
श्रोता सन्त सुनो मतिमाना ❀ गोपिनको नाहिं प्रेम प्रमाना ॥

दोहा-हरि प्यारी ब्रजवल्लभी, हरि तिन प्राण अधार॥
वृंदावनसे एक पग, चलत न नंदकुमार॥ ८९॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे षड्विंशतितमोऽध्यायः॥ २६॥

अथ सुरथ सुधन्वाकी कथा।

दोहा-अब वर्णौं उत्तम कथा, सुनहु संत मन लाइ॥
सुरथ सुधन्वा भूप जिमि, लीन्ह्यो मुक्ति बजाइ॥ १॥
भूप युधिष्ठिर सो इक काला ❁ वाजिमेध मख कियो विशाला॥
छोड्यो तुरंग पूजि सविधाना ❁ चले संग महँ सुभट महाना॥
अर्जुन अरु प्रद्युम्न प्रवीरा ❁ औरौ महारथी रणधीरा॥
देशन देशन बागत बाजी ❁ करवावन रण राजन राजी॥
आयो चंपक पुरी तुरंगा ❁ महासैन्य पारथके संगा॥
तहां हंसध्वज नामक राजा ❁ धर्मधुरंधर धीर विराजा॥
दूत खबरि दीन्ह्यो तेहिं जाई ❁ सुनु वृत्तांत नयो नृपराई॥
अश्वमेध मख धर्म नरेशा ❁ करत अहैं विधि सहित सुवेशा॥
ताको बाजी सैन्य समेतू ❁ आयो तुम्हरे नाथ निकेतू॥
संग प्रद्युम्न पार्थ धनुधारी ❁ औरौ महारथी भट भारी॥
यह कारज मनमांह विचारी ❁ कीजै नाथ विलंब विसारी॥
सुनत हंसध्वज दूतन बैना ❁ होत भयो तुरंत मुद ऐना॥
दोहा-सचिव सुभट द्रुत बोलिकै, लाग्यो करन विचार॥
बडो लाभ आयो नगर, सुनहु सुबुद्धि उदार॥२॥
कवित्त॥ भूपति युधिष्ठिर मुकुंद प्रीति पात्र पूरौ कीन्ह्यों अश्वमेधको अरंभ यहि कालमें॥ छोड्यो यज्ञ बाजी दियो संग सैन राजी राजी बीरताकी ताजी जीतकाजी युद्ध हालमें॥ कृष्ण-सखा पारथ प्रद्युम्न कृष्णपुत्र प्यारो औरौ हरिदास आये उमंग उतालमें॥ बांधिकै तुरंग करैं जंग सव्यसाची संग मिलैं हरिदासनको लगैं येही ख्यालमें॥ १॥

दोहा-जहँ पारथ प्रद्युम्न हैं, ऐहैं तहँ यदुवीर ॥
यही व्याज यदुराजको, दरश करौ सब वीर ॥३॥

कबहूं नाहिं देखे प्रभु काहीं * गयो जन्म मम सकल वृथाहीं ॥
हरिदासन रिझाय रण आजू * होब कृतारथ सहित समाजू ॥
सचिव पुत्र पुरजन सब दारा * रहे सकल हरिदास उदारा ॥
सुनत हंसध्वजकी अस बानी * महामोद अपने मन मानी ॥
कह्यो नाथ यह अवसर नीको * हरिदासन दरशन प्रिय जीको ॥
नाथ निशंक निशान बजावहु * सकल सैन्य कहँ हुकुम सुनावहु ॥
सुनत भूप अति मानि उछाहा * शासन दीन्ह्यों पहिरि सनाहा ॥
सजहु सकल भट संगर हेतू * देखहु नयननि रमानिकेतू ॥
वैष्णव वीर सकल हर्षाने * सजे सकल नहिं कोउ सकाने ॥
यकहत्तरि सहस्र गजमाते * यकहत्तरि सहस्र रथ भाते ॥
तिमि यकहत्तरि लाख सवारा * लाख त्रिनवति पदाति उदारा ॥
फेरि भूप सब वीर बोलाई * यहि विधि शासन दियो सुनाई ॥

दोहा-एक नारि व्रत होइँ जे, कृष्णदास जे होइ ॥
सजैं सुभट ते समरहित, और जाइ नहिं कोइ ॥४॥

एक नारिव्रत जे हरिदासा * निकसि चले ते सहित हुलासा ॥
भूप हंसध्वजके दल माहीं * कोउ अस नाहिं जो हरिजन नाहीं ॥
ते सब दान विविध विधि दीन्हे * सब विधि अग्निम होमहु कीन्हे ॥
ऊरधपुंड्र तिलक दे भाला * पहिरि पहिरि तुलसीकी माला ॥
कवच कुंडल सायक धनुधारी * समर मरण कहँ किये तयारी ॥
सब भट बाजत राज नगारा * आये सजुग भूपके द्वारा ॥
रहे भूपके पांच कुमारा * तिनके नामनि करौं उचारा ॥
यक शशिसेन द्वितिय शशिकेतू * सुरथ सुधन्वा सुबल सचेतु ॥
तेऊ संग चले सानंदा * युद्ध उछाह भरे स्वच्छंदा ॥
निज निज पतिन देखि रण जाते * तिन तिय हिय नहिं हर्ष समाते ॥
प्रमुदित करहिं परस्पर बाता * सखि तुव अधर श्याम दरशाता ॥
तेरे पतिके हिय कदराई * तेरे अधरन प्रगट जनाई ॥

दोहा-तब सो कह्यो न कादरी, मेरे पतिकी वीर॥
हरिकरते पतिमरण सुनि, मैं ध्याऊं यदुवीर॥८॥

सोइ श्यामता अधरन छाई * नाहिं कछु है मम पति कदराई॥
यहि विधि वदहिं अनेकन बानी * वीरवधू अतिशय हर्षानी॥
आतपत्र चामर अरु छत्रा * चले हंसध्वज शोश विचित्रा॥
चली सैन्य कछु वरणि न जाई * यहिविधि काढि पुर बाहिर आई॥
कह्यो हंसध्वज तब प्रण रोपी * सकल प्रवीरन पर अति कोपी॥
जो कोउ मम शासन नाहिं मानी * तौन दंड पैहै मम पानी॥
शङ्ख लिखित उपरोहित दोई * रहे तहां जानत सब कोई॥
तिनकी कथा पूर्वकी ऐसी * हेतु पाय वरणौं मैं तैसी॥
शङ्ख लगायो इक वर बागा * तामें कियो परम अनुरागा॥
लिखित वाटिका गे इक काला * पके रहे तहँ बेर रसाला॥
लिखित तोरि बदरीफल खायो * पाछे तिन्है ज्ञान उर आयो॥
बिन पूंछे फल भक्षण कियऊ * यह हमसों अनुचित है गयऊ॥

दोहा-हम याको दंड नही, पाउब यहि तनुमाहिं॥
स्वर्ग गये दुर्गति लहब, संसारहु सुख नाहिं॥९॥

अस विचारि भ्राता ढिग आई * कह्यो पाप हमसों भो आई॥
याको दंड देहु तुम अबहीं * नातो शुद्ध होब नहिं कबहीं॥
शङ्ख विचार कियो मनमाहीं * विना दंड यहकी गति नाहीं॥
दंड देनको यह संसारा * बिन भूपति नाहिं मम अधिकारा॥
अस विचारि राजाढिग आये * दोउ भ्राता वृत्तांत सुनाये॥
राजा कह्यो शास्त्र तुम जानो * करैं सोइ जो आप बखानो॥
शङ्ख विचारि कही तब बाता * विना हाथ होवे मम भ्राता॥
राजा तुरतहि हाथ कटायो * दोउ भ्रातन कछु दुख नाहिं पायो॥
शङ्ख लिखित को धर्म विश्वासा * भूपतिके उर रह्यो प्रकाशा॥
ताते शङ्ख लिखित बोलवाई * नृपति हंसध्वज गिरा सुनाई॥
तुम पुर बाहेर बैठहु जाई * महाकराह तेल भरवाई॥
नीचे पावक देहु लगाई * चुरन लगे जब तेल तपाई॥

दोहा–तब नाहिं जे भट युद्ध हित, आवैं मेरे संग ॥
तिनको डारि कराहमें, करहु भस्म सब अंग ॥७॥

शङ्ख लिखित सुनि भूपरजाई * तैसहि कियो कराह चढाई ॥
और वीर सब गे नृप साथा * सुमिरत सुखद चरण यदुनाथा ॥
नृपको लहुरो पुत्र सुधन्वा * शूर बली धर्मी शुभ धन्वा ॥
कृष्ण अनन्य उपासक पूरो * समरे उछाह भरो अति रूरो ॥
सो सजि समर हेतु सब भांती * मातु समीप गयो अरिघाती ॥
आये विदा होन हम माई * लरौं शुद्ध है देहि रजाई ॥
यदुपति पुत्र प्रद्युम्न पियारा * तैसेहि पारथ सखा उदारा ॥
आये यज्ञ तुरंगहि संगा * होई हरिदासनसों जंगा ॥
देखब अवशि सकल हरिदासन * ऐहैं अवशि तहां भवनाशन ॥
धन्य होब प्रभु दर्शन पाई * याते और कौन सुख माई ॥
मातु कही मोदित ह्वै बानी * जाहु पुत्र शंका नहिं मानी ॥
रण महँ तोषित करि प्रभु काहीं * ल्यावहु द्रुत अपने घरमाहीं ॥

दोहा–पारथ अरु प्रद्युम्नको, औरहु सब हरिदास ॥
दरश करावहु मोहु कहँ, अपने आनि अवास ॥८॥

जूझि जंग महँ जो तुम जैहौ * जग महँ सुयश मुक्ति हठि पैहौ ॥
जीवत रैहौ हरि कहँ लैहौ * म्वहिं समेत तुम धन्य कहैहौ ॥
उभय भांति उपकार तुम्हारो * पुत्र निशंक समर पगु धारो ॥
सोइ युवती जगती तल माहीं * जा सुत शूर समर मरि जाहीं ॥
जासु पुत्र रणविमुख पराहीं * तिनसों बांझि भली जगमाहीं ॥
कही सुधन्वा तब असि बाता * जो तब गर्भ जनित मैं माता ॥
रणते विमुख कौन विधि ह्वैहौं * अस अवसर कबहूं नहिं पैहौं ॥
अस कहि मातुचरण शिर नाई * गयो नारिढिग आनँद छाई ॥
मांग्यो तेहिसों वीर बिदाई * प्यारी रण कहँ देहु रजाई ॥
बोली हर्षि सुधन्वा प्यारी * मोसम कौन आजु जग नारी ॥
जासु कंत श्रीकंत समीपा * शुद्ध युद्ध गमनत कुलदीपा ॥

जाहु समर कहँ प्राण पियारे ❀ करहु दरश वसुदेव दुलारे ॥
दोहा—पै मोको दैलेहु पिय, यही समय रतिदान ॥
फेरि शुद्ध है समर कहँ, कीजै सपदि पयान ॥ ९ ॥
तब रतिदान दियो तियकाहीं ❀ बहुरि सनाह पहिरि तनुमाहीं ॥
करि स्नान दान बहु दैकै ❀ सिगरे आयुध धारण कैकै ॥
रथ चढि गवन्यो शंख बजाई ❀ इतनेमें भै विमल महाई ॥
उतै हंसध्वज सैन निहारी ❀ कहां सुधन्वा कह्यो पुकारी ॥
सबै वीर मेरे सँग आये ❀ रह्यो सुधन्वा भवन डेराये ॥
जाहि यमन घसीटि तेहिं ल्यावैं ❀ राजपुत्र गुनि नाहिं वरकावैं ॥
सुनत भूप शासन तेहि काला ❀ दौरे यमन काढि करवाला ॥
मिल्यो सुधन्वा मारग माहीं ❀ भूपति शासन कह तेहिकाहीं ॥
आइ सुधन्वा पिता समीपा ❀ नायो शीश चरण कुलदीपा ॥
कह्यो भूप तैं सुत नाहिं मोरा ❀ नाहिं अवलोकब आनन तोरा ॥
जानि समर घर रहे सकाई ❀ सकल वीरता दियो बहाई ॥
कह्यो सुधन्वा तब कर जोरी ❀ पिता न है मोरी कछु खोरी ॥
दोहा—बिदा होन मैं मातुसों, गयो पिता यहि काल ॥
ताते भई बिलंब कछु, पहुँच्यो नहीं उताल ॥ १० ॥
हंसकेतु तब द्वै निज दूता ❀ शंख लिखित ढिग पठयो पूता ॥
दूत आइ उपरोहित नेरे ❀ कह्यो वचन अस भूपति केरे ॥
सुवन सुभट मंत्री सरदारे ❀ युद्धहेतु मम निकट सिधारे ॥
यह कादर सुधन्व सुत मेरा ❀ कियो समर डर सदन बसेरा ॥
सबके पाछू मम ढिग आयो ❀ याको दंड शास्त्र का गायो ॥
उचित सुधन्वाको जो दंडा ❀ देहु विचारी पुरोहित चंडा ॥
शंख लिखित सुनि भूप सँदेशा ❀ दियो विचारि विशेषि निदेशा ॥
तात तेल भरि बडो कराहा ❀ चढवावो यहि हित नरनाहा ॥
जे रण डर घर रहें लुकाई ❀ तत तेल तेहिं देहु डराई ॥
ऐसी भूप प्रतिज्ञा कीन्ही ❀ करहु अन्यथा सुतमुख चीन्ही ॥

होई जो भूपति प्रण भंगा * हम नहिं रहब आपके संगा ॥
दूत कहो अस मम संदेशा * करे उचित जो गुनै नरेशा ॥

दोहा-दूत हंस ढिग निकट चलि, कही पुरोहित बात ॥
राजा सचिव बोलाइके, कह्यो करहु सुत घात ॥ ११ ॥

सचिव सुधन्वै लियो बोलाई * शंख लिखित ढिग चले लेवाई ॥
सचिव सुधन्वै कह्यो दुखारी * राजपुत्र लखु विपति हमारी ॥
मेरे प्रभुके आहौ कुमारा * घात कौन विधि करौं तुम्हारा ॥
जो नहिं प्रभुकर शासन करहीं * दोऊ लोक हमार बिगरहीं ॥
कह्यो सुधन्वा परम निशंका * सचिव करहु नेसुक नहिं शंका ॥
जो कछु पिता रजायसु दीन्ही * सो अब करहु धर्म निज चीन्हीं ॥
यहि विधि कहत दूत दुख छाये * शङ्ख लिखितढिग नृपसुत ल्याये ॥
शंख लिखित लखि राजकुमारा * महाकोप करि वचन उचारा ॥
क्षत्रिय जन्म भूप कुल पायो * तापर तू कस समर डेरायो ॥
तप्त तेल महँ तो कहँ डारी * होई इच्छा पूर हमारी ॥
कह्यो सुधन्वा सहजहि बैना * करहु जो भावै मोहिं कछु भै ना ॥
मोरि शूरता कादरताई * जानत हैंहै हरि यदुराई ॥

दोहा-शङ्ख लिखित अमरष भरे, बोले वचन कठोर ॥
जेहि विधि कीन्ह्यो कर्म तुम, लेहु तासु फल घोर ॥ १२ ॥

असकहि कोपि पुरोहित पापी * राजकुँवर कहँ कादर थापी ॥
सचिवन कह्यो पकरि यहि लेहू * तप्त कराह डारि द्रुत देहू ॥
सचिव सुधन्वै द्रुत गहि लीन्ह्यो * विस्मय हर्ष कछू नहिं कीन्ह्यो ॥
सायुध बसन सहित तेहि काला * डारन चले कराह कराला ॥
राजकुँवर तब हरिकहँ ध्यायो * मनहीं मन प्रभु कहँ गोहरायो ॥
हे हरि करुणासिंधु मुरारी * नाथ हाथ अब सुरति हमारी ॥
रह्यो जो कादरता करि गेहू * तौ कराह महँ भस्म करेहू ॥
जो न कादरी रोमहु कोई * तप्त तेल तौ शीतल होई ॥
अस कहि जरत तेल महँ वीरा * कूदि परचो सुमिरत यदुवीरा ॥

भरो तेल तहँ मनुज प्रमानू * बलकत ज्वाला कढ़त कृशानू ॥
गिरयो तेल महँ राजकुमारा * मानहुँ परयो गंगकी धारा ॥
तप्त तेल शीतल ह्वै गयऊ * लोगनके उर विस्मय भयऊ ॥
दोहा-शङ्ख लिखित तब कोपिकै, सचिवन कह्यो सुनाइ ॥
चढ़ो तेल बहु बेरको, ताते गयो जुड़ाइ ॥ १३ ॥
अथवा चेटक कियो कुमारा * ताते नहिं भयो जरि छारा ॥
सचिव कहे नहिं तेल जुडाना * तुमहीं समुझि परत कछु आना ॥
शङ्ख लिखित तब कोटि तहाहीं * नारिकेल फल लै कर माहीं ॥
दीन्ह्यो डारि तुरंत कराहा * तप्त तेलकी लेन थमाहा ॥
नरियर परत भये युगफारा * शङ्ख लिखितके लगे कपारा ॥
लागत नारिकेरके टूके * गये शीश तहँ फूटि दुहूंके ॥
यह अचरज लखि सचिवसमाजा * गये हंसध्वज रह जहँ राजा ॥
आदि अंतते कह्यो हवाला * आयो दौरि द्रुतहि महिपाला ॥
मुख चूमत कर गहि नरनाहा * ऐंच लियो निजपुत्र कराहा ॥
चामीकर रथ माहिं चढाई * चल्यो युद्धहित शुद्ध लेवाई ॥
भूप कह्यो तुम सुत निर्दोषू * करहु मोर अपराध समोषू ॥
कह्यो सुधन्वा तब कर जोरी * पिता अहै सब मोरि न खोरी ॥
दोहा-मैं नहिं जानो हेतु कछु, जानै देवकिलाल ॥
जे कहवावत दास दुख, दाहक दीनदयाल ॥ १४ ॥
असकहि मिल्यो सैन महँ जाई * सबै वीर तिहिं करी बड़ाई ॥
हंसकेतु भूपति हरिदासा * सब वीरन अस वचन प्रकासा ॥
तुलसीमाल गले महँ डारहु * शस्त्र हनत हरिनाम उचारहु ॥
समरमध्य अस क्षण नहिं जाहीं * जिन हरिनाम कढै मुख नाहीं ॥
फेरि सुधन्वे शासन दीना * पकरहु पारथ बाजि प्रवीना ॥
सुनत सुधन्वा पिता निदेशा * पकरि अश्व ल्यायो तेहिं देशा ॥
हंसकेतु नृप पद्मव्यूह रचि * ठाढ भयो वीरता बृहद सचि ॥
दूतन दौरि तुरंत तहांही * कहे प्रद्युम्नहि पारथ पाहीं ॥

हंसकेतु नृप धरयो तुरंगा * ठाढो सैन्य सहित हित जंगा ॥
तब पारथ प्रद्युम्न बोलाई * कह्यो वचन अस भटन सुनाई ॥
हंसकेतु पकरयो मम बाजी * ठाढो समर हेतु दल साजी ॥
ताते कृष्ण पुत्र अस कीजै * अनुमति मोरि चित्त महँ दीजै ॥
दोहा—हम अरु तुम अरु सात्यकी, अरु अनिरुद्ध प्रवीर॥
महारथी बहु संग लै, युद्ध करैं रणधीर ॥ १५ ॥
दलनायक तुम कृष्णदुलारे * तुमसों सकल सुरासुर हारे ॥
अहहु मोर तुम प्राणहु प्यारे * आगे लरहु लखत हमारे ॥
हमहिं समर करिहैं तुम आगे * तुम संभारि लीज्यो दल भागे ॥
तब प्रद्युम्न कह्यो मुसकाई * सुनहु सव्यसाची चितलाई ॥
यह नहिं समर सुरासुर कैसो * यामें एक प्रसंग अनैसो ॥
यह राजा अनन्य पितु दासा * ताते निष्फल जइ प्रयासा ॥
युद्ध जोर भरि कबर विशेषी * क्षत्री धर्म कर्म मन लेषी ॥
सुनहु न हंसकेतु दल सोरा * जय हरि छाय रह्यो चहुँ ओरा ॥
ऊर्ध्वपुंड्र भाषित भटमाला * लसत हिये तुलसीकी माला ॥
यह राजा सब विधि अपनो है * पै याको जीतब सपनो है ॥
पार्थ कह्यो सति कह्यो कुमारा * प्राणहुते प्रिय भूप हमारा ॥
क्षत्रिय जन्म जानि युद्ध करिहैं * नहिं शंका जितिहैं की हरिहैं ॥
दोहा—अस प्रद्युम्न पारथ उभय, करि सम्मत ससमाज ॥
सन्मुख सैन्य चलाय दिय, युद्ध करनके काज ॥ १६ ॥
तब वृषकेतु वीर बलवाना * अर्जुनसों अस वचन बखाना ॥
क्षणक रहहु मम युद्ध निहारहु * पुनि निज विक्रम सकल पसारहु ॥
असकहि शङ्ख शोर भल कयऊ * धीर हंसध्वज दल धसि गयऊ ॥
लखि वृषकेतु सुधन्वा भाष्यो * को यक समर करन अभिलाष्यो ॥
आवत चलो अकेल वछाही * खडेरहौ इत सबै सिपाही ॥
यासों हमहिं अकेले लरिहैं * कैसे कै अधर्म अनुसरिहैं ॥
अस कहि चल्यो अकेलु सुधन्वा * धारे पाणि बाण अरु धन्वा ॥

पूंछ्यो तेहि सन्मुख रण जाई ❀ कौन वीर तुम देहु बताई ॥
कह वृषकेतु कर्णसुत जानो ❀ तुम अपनो पितु नाम बखानो ॥
कियो सुधन्वा नाम उचारा ❀ मैं मरालध्वज भूप कुमारा ॥
अस सुनि सो शर हन्यो अनंता ❀ गयो सुधन्वा मूंदि तुरंता ॥
तब सुधन्व जय कृष्ण उचारी ❀ सायक मारि काटि शर डारी ॥

दोहा—फेरि हन्यो बहु बाण तेहि, रथ सारथि हति तासु ॥
हिय हनि शर मूर्च्छित कियो, परयो न ताहि प्रयासु १७

वृषकेतुहिं सारथि लै भाग्यो ❀ निज दलमाहिं आय सो जाग्यो ॥
कर्णकुमार पराजय देखी ❀ धाये भट असमंजस लेखी ॥
उतै हंसध्वज सैनहु धाई ❀ जय हरि जय हरि छावत आई ॥
मिले दोउ दल चलि तेहिं ठौरा ❀ मानहु मिले सिंधु करि शोरा ॥
चले शस्त्र तहँ विविध प्रकारा ❀ भयो धूरि धरणी अँधियारा ॥
गिरे वीर बहु शोणित धारा ❀ समर सुरासुर सरिस उचारा ॥
तहां सुधन्वा रथहि धवाई ❀ अर्जुन दल बाणनि झरि लाई ॥
शर मारत जय यदुपति भाखै ❀ हरिकी मिलन आश उर राखै ॥
गयो वीर सन्मुख नहिं कोऊ ❀ महारथी अतिरथ रह सोऊ ॥
क्षण महँ चहल पार्थ दल नाली ❀ अस शुनि बडे वीर बलशाली ॥
कृतवर्मा सात्यकि अक्रूरा ❀ रहे औरहू जे अतिशूरा ॥
ते सब जाय सुधन्वै घेरे ❀ मारे विशिख ताहि बहुतेरे ॥

दोहा—तहां धनुष टंकोर करि, क्रुद्ध सुधन्वा वीर ॥
हन्यो बाण मुख टेरि अस, जयजयजय यदुवीर ॥ १८॥

सुनि यदुवंशी यदुपति नामा ❀ भये उछाह रहित संग्रामा ॥
तब धरि धनुष सुधन्वा रणमें ❀ कियो विरथ सबको इक क्षणमें ॥
मारि बाण इक इक उरमाहीं ❀ दियो गिराय धरणि सब काहीं ॥
फेरि पार्थ भट मारन लाग्यो ❀ हाहाकार करत दल भाग्यो ॥
तब आयो प्रद्युम्न रणधीरा ❀ शलभ सरिस छांडत धनुतीरा ॥
चली प्रद्युम्न धनुष शर धारा ❀ कटे मतंग तुरंत अपारा ॥

कोउ नहिं मरण भीति मन लेहीं ❀ जय हरि कहत प्राण तजि देहीं ॥
हंसकेतु दल कोउ अस नाहीं ❀ भगे न कहै कृष्ण मुखमाहीं ॥
यदपि प्रद्युम्न बाण लगि मरहीं ❀ मरतहु माधव मुख उच्चरहीं ॥
देखि सुधन्वा सैन्य विनाशा ❀ सम्मुख धस्यो भरत शर आशा ॥
उतते कृष्णकुमारहु आयो ❀ इतै सुधन्वा स्यंदन धायो ॥
दोऊ वीर भये इकठोरा ❀ कह सुधन्व सुनु नाथाकिशोरा ॥
दोहा—तैं मम प्रभुसुत पाटवी, मैं तुव पितु पद दास ॥
आप आप पितु दरशकी, रही सदा उर आस ॥१९॥
तव प्रताप तोहि तोषित करिकै ❀ ह्वैहौं सुखी नाथ पद परिकै ॥
रणपूजन करिहौं प्रभु तेरो ❀ यह कुलधर्म अहै खति मेरो ॥
अस कहि कृष्णपुत्र पद माहीं ❀ मारयो शर प्रणाम किय ताहीं ॥
तब प्रद्युम्न अस मनहिं विचारे ❀ याते बनत मोहिं अब हारे ॥
अस कहि शिथिल करन युध लागे ❀ भट सुधन्वके प्रेमहिं पागे ॥
इतै सुधन्वा तजि शरधारा ❀ उतै प्रद्युम्न बाण अपारा ॥
दोऊ वीर बराबर रणमें ❀ मूर्च्छित होत भये इक क्षणमें ॥
उठ्यो सुधन्वा तुरत संग्रामा ❀ कोउ नहिं वीर रहे तेहिं ठामा ॥
तब अर्जुन धायो कर कोपी ❀ मारि शरन लीन्ह्यों रथ तोपी ॥
तहां सुधन्वा सब शर काटी ❀ उदघाटी अपनी परिपाटी ॥
सुनहु कृष्णके सखा पियारे ❀ आजु मनोरथ पूर हमारे ॥
भीषम द्रोण कर्ण कृपवीरा ❀ तुम जीते जितेक रणधीरा ॥
दोहा—तब मेरो प्रभु सारथी, भयो धनंजय तोर ॥
अब निज सारथि त्यागिकै, कत अयो यहिठोर ॥२०॥
बिन निज सारथि जीति न पैहौ ❀ कोटि करौ घरही फिर जैहौ ॥
ताते सारथि लेहु बोलाई ❀ तब मेरे सँग करहु लड़ाई ॥
मैं तो हौं अनन्य हरिदासा ❀ कबहुँ न दूसरि राखहुँ आसा ॥
अस कहि हन्यो नराच हजारन ❀ पारथ कियो तुरंतहि वारन ॥
पावक अस्त्र धनंजय छाड्यो ❀ लै जलबाण सुधन्वा आड्यो ॥

अर्जुन दिव्य अस्त्र बहु मारे * सोऊ दिव्य अस्त्र सो वारे ॥
कौनिहुविधिनहिंजयलखिलीन्हों * तबश्रीप्रभुकोसुमिरण कीन्हों ॥
सुमिरतही भे प्रगट मुरारी * सारथि भयो गोवर्द्धनधारी ॥
हरिको लखि सुधन्व सुख पायो * रथते उतरि चरण शिरनायो ॥
त्राहि त्राहि जय आरत हरना * तुम हो दीन दास दुख दलना ॥
कस न दासकी पूरहु आसा * तुव अवलम्ब तुम्हारे दासा ॥
जय सच्चिदानंद घनराशी * जय पारथ सारथि अविनाशी ॥

दोहा—भयो जन्म आजहिं सफल, धन्य भयो मैं आज ॥
देव पितर तोषित भये, दरश पाय यदुराज ॥ २१ ॥

लखि सुधन्व हरि मोदित भयऊ * अर्जुन वाजिन वाणहि लयऊ ॥
पुनि रथ चढि करि प्रभुहि प्रणामा * करन लग्यो सुधन्व संग्रामा ॥
संगर महाभयावन भयऊ * सुरगन सकल प्रशंसा कयऊ ॥
तब अर्जुन बोल्यो अस बानी * तीनि बाण ले मैं संधानी ॥
तिनते जो तव शिर नहिं काटौं * तो पितरन पूरण अघ पाटौं ॥
तब सुधन्व बोल्यो रणमाहीं * जो त्रय सायक काटौं नाहीं ॥
तौ हरि विमुख पाप मोहिं लागै * मेरो यश युग युग नहिं जागै ॥
हन्यो धनंजय प्रथमहि बाना * काट्यो सो शर छोडि महाना ॥
तज्यो सव्यसाची जब दूजो * दल्यो सुधन्वा सुर तेहि पूजो ॥
तृतीय बाण लिय पांडुकुमारा * तब यदुपति अस वचन उचारा ॥
सखादास दोउ हो प्रिय मेरे * कछु न कहौं अति अनुचित हेरे ॥
छांड्यो पारथ तीसर बाना * तहां सुधन्वा वीर महाना ॥

दोहा—काट्यो तीसर बाणहू, पै आधो शर जाय ॥
लग्यो सुधन्वा शीशमें, दीन्ह्यो भूमि गिराय ॥ २२ ॥
तासु तेज प्रभु वदनमें, सबके लखत समान ॥
उठिकबंध पांडव भटन, हनत भयो सहसान ॥ २३ ॥

निरखि हंसध्वज पुत्र विनाशा * कियो विलाप बिसारि हुलासा ॥
हा सुधन्व मम प्राणपियारे * धर्म धुरंधर धीर उदारे ॥

सुनत पुत्र परिताप तहांई * दूजो पुत्र सुरथ तहँ आई ॥
कह्यो पिता कत करहु विलापा * रण मृत करन उचित परितापा ॥
याहि हित जननी जनमति जगमें * शूर होइ कीरति हरि पगमें ॥
अबै जियत हौं मैं जगमाहीं * पिता शोच करिये कछु नाहीं ॥
हौं तोषित करिहौं प्रभु काहीं * पारथ सहित प्रद्युम्न जहांहीं ॥
अस कहि रथ चढि आयुध धारी * करवायो दुंदुभी धुकारी ॥
सन्मुख संगर सुरथ सिधारा * जयति जयति वसुदेवकुमारा ॥
आवत सुरथ देखि यदुराई * अर्जुनको अस गिरा सुनाई ॥
महारथी इत सुरथ सिधारा * सन्मुख जाहु न पांडुकुमारा ॥
बंधु शोक व्यापी उर पीरा * मोर दास अनन्य रणधीरा ॥

दोहा–विजयलहब याते कठिन, अबै न सन्मुख जाहु ॥
पुनि प्रद्युम्नको बोलिकै, वचन कह्यो यदुनाहु ॥२४॥

जाहु सुरथसों करहु लराई * की वधि जाइ कि जाइ पराई ॥
तब प्रद्युम्न अस गिरा उचारी * सुरथ गहे पितु प्रीति तिहारी ॥
अहै अनन्य तुम्हार उपासी * सकै ताहि को संगर नासी ॥
क्षत्री धर्म करब हम जाई * मानि शीश महँ आप रजाई ॥
अस कहि सन्मुख सुरथ धीरके * चल्यो कुँवर लै यूथ वीरके ॥
देखि प्रद्युम्न सुरथ तहँ आयो * बारबार चरणन शिर नायो ॥
कह्यो वचन सुनु नाथ दुलारे * रण बांकुरे वीर अनियारे ॥
तुम मोहिं जीतन समरथ अहहू * सुभट सुरासुर जीतत रहहू ॥
जो मैं मरयो आप शर लागी * तौ न अकीरत जगमहँ जागी ॥
रही एक उरमें पछिताऊ * समर लख्यो न सखा यदुराऊ ॥
दे बताय रुक्मिणी दुलारे * सखा सहित जहँ पिता तिहारे ॥
तब प्रसन्न ह्वै कह्यो कुमारा * जहँ कपिध्वज फहरत छविवारा ॥

दोहा–सुरथ देख तेहिं सुरथ पर, सखा सहित पितु मोर ॥
जाहु दरश कीजै तुरत, सफल मनोरथ तोर ॥२५॥

सुरथ सुनत प्रद्युम्न मुखबानी * महालाभ अपने उर जानी ॥

चल्यो तुरंतहि यान धवाई ❀ पहुँच्यो खरे जहां यदुराई ॥
शिर धरि कीन्ह्यो प्रभुहि प्रणामा ❀ बोल्यो आयु भयो कृत कामा ॥
लेहु समर पूजन मम स्वामी ❀ तुम सबके उर अन्तर्यामी ॥
अस कहि हन्यो अनेक नराचा ❀ चले मनहुँ विकराल पिशाचा ॥
अर्जुनसों तब कह यदुराई ❀ सावधान ह्वै करहु लराई ॥
यह रणधीर धर्म धुरधारी ❀ पूरयो गगन पन्थ शर मारी ॥
अर्जुन कह प्रभु आप प्रतापा ❀ करै न समर शत्रु संतापा ॥
दोऊ वीर बरोबर योधा ❀ करन लगे करि २ अति क्रोधा ॥
महा युद्ध भो दोहुँन केरो ❀ हार जीति नहिं होत निबेरो ॥
तहां सुरथ बोल्यो गहि बाना ❀ सुनु पारथ यह बाण प्रमाना ॥
कहु तोहिं हस्तिनपुर पहुँचाऊं ❀ कहु पताल कहु गगन उडाऊं ॥

दोहा—तब अर्जुनसों हरि कह्यो, यहि प्रण झूंठ न होइ ॥
करहु विरथ तुमहीं प्रथम, तबहिं बिथा नहिं कोइ २६

अर्जुन सुरथ विरथ करिदीन्ह्यो ❀ दूसर रथ चढि सो युध कीन्ह्यो ॥
सोउ रथ तुरत धनंजय काट्यो ❀ सुरथ तृतिय रथचढि शर पाट्यो॥
सोउ रथ दल्यो पांडुको नन्दन ❀ यहिविधि कोटि दियो शत स्यंदन
तब गांडीव धनुष प्रत्यंचहि ❀ काट्यो सुरथ जक्यो नहिं नंचहि॥
जब जब तजत सुरथ शरधारा ❀ तबतब हरि हरि करत उचारा ॥
तब लै शर सुमिरत यदुनाहू ❀ काट्यो पार्थ सुरथ कर बाहू ॥
बाहु कटत सन्मुख सो धायो ❀ प्रभु पद पंकज चित्त लगायो ॥
तब अर्जुन लै सायक तीना ❀ काटि युगल पद अरु भुज दीना॥
तबहुँ न रुक्यो सुरथ कर रुण्डा ❀ तब काट्यो पारथ पुनि मुंडा ॥
मुंड लग्यो अर्जुन उर आई ❀ गिरयो धनंजय मूर्छितहाई ॥
सपदि शीश परस्यो हरि चरना ❀ पार्षद रूप लह्यो शुभ बरना ॥
अर्जुन कहँ प्रभु लियो जगाई ❀ तुरत बोलायो हरि खगराई ॥

दोहा—सुरथ शीश गरुडै दियो, फेंक्यो जाइ प्रयाग ॥
शिव निज मालामें धरयो, जानि वीर बडभाग ॥२७॥

सुरथ सुधन्वा सम जगमाहीं * वीर धीर हरिदासहु नाहीं ॥
शुद्ध समर हरि सन्मुख आई * गये विकुंठ निशान बजाई ॥
सुरथ सुधन्वा मरण विलोकी * भयो हंसध्वज भूपति शोकी ॥
सन्मुख चल्यो निशान बजाई * हरिदर्शन अभिलाष महाई ॥
आवत हंसकेतु कहँ देखो * माधव मोदित भये विशेखो ॥
अपनो दास जानि यदुराई * दौरत भे निज भुज पसराई ॥
धावत आवत प्रभुहिं निहारी * हंसकेतु सब शोक विसारी ॥
दंडसरिस किय भूमि प्रणामा * कहि जयजय यदुपति घनश्यामा ॥
लियो नाथ तेहि हिये लगाई * प्रेमविवश दृग वारि बहाई ॥
मंजुल वचन कह्यो सुनु राजा * धन्य धन्य तैं सहित समाजा ॥
तव सुत सरिस दास नहिं मोरा * लीन्ह्यों भुवन हरि चहुँओरा ॥
करहु न पुत्र शोक महिपाला * बसे विकुंठ दोऊ यहि काला ॥

दोहा—तब बोल्यो करजोरि नृप, सुत पितुमातहु भ्रात ॥
मोरे हौ यदुनाथ तुम, शोक न कतहु देखात ॥२८॥

करहु मोर मंदिर प्रभु पावन * हे कृपालु यदुपति जगभावन ॥
अस कहि प्रेमविवश महिपाला * गिरयो भूमि महँ भयो विहाला ॥
तेहिं उठाय प्रभु हिये लगाई * दीन्ह्यो अपनी भक्ति महाई ॥
अर्जुनसों पुनि भेट कराई * प्रद्युम्नादिक दियो चिन्हाई ॥
राजा बार बार शिर नाई * सादर पुर कहँ चल्यो लेवाई ॥
ससुत सखायुत प्रभु गृह ल्यायो * पूजन सविधि कियो सुखछायो ॥
अरप्यो मणिगण अरु मखवाजी * तापर भये नाथ अतिराजी ॥
दिय वरदान ताहि भगवाना * सुरदुर्लभ करि भोग विधाना ॥
अंत समय करु मो पुर वासा * जहां बसत सिगरे मम दासा ॥
कह्यो हंसध्वज पुनि कर जोरी * यह अभिलाष नाथ अब मोरी ॥
जबलों जियो जगत् महँ नाथा * तबलो लहैं आप जन साथा ॥
एवमस्तु भाष्यो भगवाना * तोहिं सम प्रिय मोकह नहिं आना ॥
पांच दिवस तहँ रहे मुरारी * नृपहिं सपुरजन कियो सुखारी ॥

दोहा–सुरथ सुधन्वा हंसध्वज, भये विमल हरिदास ॥
तातें कछु विस्तारयुत, कीन्ह्यों कथा प्रकाश ॥२१॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे सप्तविंशतितमोऽध्यायः ॥ २७ ॥

अथ नीलराजाकी कथा।

दोहा–गाथा नील नरेशकी, सुनहु सबै हरिदास ॥
तीर नर्मदामें कियो, माहिष्मती विलास ॥ १ ॥

तहां गयो अर्जुनको घोरा * जहँ प्रवीर रह नील किशोरा ॥
बांधि पट्ट सो गह्यो तुरंगा * कियो धनंजयसों बहु जंगा ॥
हारयो अंत भूप सुत भाग्यो * कह्यो नीलसों अति भय पाग्यो ॥
व्याह्यो पावक नील कुमारी * तातें करी नगर रखवारी ॥
नील तुरत पावक बोलवाई * दियो सकल वृत्तांत सुनाई ॥
पावक कह्यो समर हरि कीजै * अपने संग मोहूं कहँ लीजै ॥
नील चलो लै पावक संगा * कीन्ह्यों जुरि जालिम जगि जंगा ॥
पावक पारथ सैन्य जरायो * अर्जुन वारुण अस्त्र चलायो ॥
तदपि न शांत भई शिखिज्वाला * तब बोल्यो रुक्मिणिको लाला ॥
मारहु वैष्णव अस्त्र सुजाना * तब होई शिखि शांत महाना ॥
अर्जुन वैष्णव अस्त्र चलायो * सो लखि पावक पेलि परायो ॥
कह्यो नीलसों जाय दुखारी * देहु तुरंग नहिं जैहो हारी ॥

दोहा–नील तुरंगतुरंतही, दीन्ह्यो पार्थहिं आइ ॥
अर्जुनसों कर जोरिकै, कह्यो विनय दरशाइ ॥२॥
सखापुत्र यदुनाथके, पकरयो शरण तुम्हार ॥
हरिसों भक्ति देवाइये, यह अभिलाष हमार ॥ ३ ॥
तब अर्जुन प्रद्युम्नहू, जानिनिधे यहि हेत ॥
देहैं निज पद कमल रति, तोको रमानिकेत ॥ ४ ॥
अश्वमेधके अंतमें, नील नागपुर जाइ ॥

अर्जुन अरु प्रद्युम्नके, बैठ्यो धरन सुनाइ ॥ ५ ॥
तब अर्जुन प्रद्युम्नहूं, बरबस हरिसों मांगि ॥
नीलहिं हरि निष्ठा दई, गै भवकी भय भागि ॥ ६ ॥
राज कोष परिवार तजि, नील बिपिन करिवास ॥
कछुक कालमें लहत भो, अचल बिकुंठ बिलास ७
इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे अष्टाविंशतितमोऽध्यायः॥ २८ ॥

अथ मोरध्वज अरु ताम्रध्वजकी कथा।

दोहा–मोरध्वज अरु ताम्रध्वज, पिता पुत्र हरिदास ॥
तिनको मैं वर्णन करौं, परम सुखद इतिहास ॥ १ ॥
फिरत फिरत नृप धर्म तुरंगा ❁ जीतत विविध नरेशन जंगा ॥
रतन नगर आयो तेहि काला ❁ जहां मोरध्वज रह्यो भुवाला ॥
मोरध्वज रेवाके तीरा ❁ करत रह्यो हयमख मतिधीरा ॥
भवन ताम्रध्वज ताहि कुमारा ❁ रह्यो महाबल बुद्धि अगारा ॥
मंत्री तासु बहुलध्वज नामा ❁ सकल कर्मकारक मतिधामा ॥
देखि तुरंग पट्ट तेहि बांची ❁ ताम्रध्वज मति युधहित रांची ॥
कह्यो सचिवसों पकरहु बाजी ❁ होहु सजग लिगरो दल साजी ॥
याते अधिक न दूसर काजू ❁ क्षत्री धर्म दरश यदुराजू ॥
ऐसो रह्यो मनोरथ मोरा ❁ कब देखब वसुदेवकिशोरा ॥
यदुनंदनको दर्शन कीजै ❁ धाराक्षेत्र त्यागि तनु दीजै ॥
उभय लोक अब लेहिं सुधारी ❁ भई भाग्यकी उदय हमारी ॥
अस कहि साजि सैन्य चतुरंगा ❁ चल्यो ताम्रध्वज सहित उमंगा ॥
दोहा–जबते सुरथ सुधन्व दोउ, लिये मुक्ति रणमाहिं ॥
तबते अर्जुन संगमें, यदुपति रहे तहांहिं ॥ २ ॥
दूतन आय खबरि अस दीन्ह्यो ❁ नाथ ताम्रध्वज हय गहिलीन्ह्यो ॥
आवति सैन्य संग अति भारी ❁ युद्ध करनकी किये तयारी ॥

दूत वचन सुनि हरि अस बोले * रहहु न पार्थ और नृप भोले ॥
अति विक्रमी मोरध्वजनंदन * नाम ताम्रध्वज दुष्ट निकंदन ॥
धर्म धुरंधर धरणि उदारा * मोर अनन्य भक्त अविकारा ॥
महाकठिन संगर यह होई * जानि परत बचिहै नहिं कोई ॥
अर्जुन कह्यो सुनहु यदुनाथा * विजय अवशि पाउब तुव साथा ॥
तब प्रद्युम्न तुरत प्रभु टेरा * गृध्रव्यूह विरचहु दलकेरा ॥
तुरत प्रद्युम्न विरचि खगव्यूहा * चल्यो संग लै वीर समूहा ॥
यदुपति पार्थ सैन्य मधि माहीं * और वीर बांके चहुँ घाहीं ॥
उतै ताम्रध्वज सैन्य समेता * आयो सुमिरत कृपानिकेता ॥
देखि दूरि ते यदुपति काहीं * कियो प्रणाम उतरि महिमाहीं ॥

दोहा-जय यदुपति करुणायतन, शरणागतके पाल ॥
सखा पुत्र युत दरश दै, मोकहँ कियो निहाल ॥ ३ ॥

क्षत्री धर्म करौं कछु आजू * है यदुनाथ हाथ मम लाजू ॥
अस कहि कुँवर परस करिदीन्ह्यो * बाण चलाइ छाय दल लीन्ह्यो ॥
उतै यादवी सैन्य प्रवीरा * मारत भये अनेकनि तीरा ॥
भयो भयावन तहँ संग्रामा * जूझे विविध वीर तेहि ठामा ॥
वसुधा बही रुधिरकी धारा * प्रगटे प्रेत पिशाच अपारा ॥
तहां ताम्रध्वज रथहि धवाई * आयो जहां वीर समुदाई ॥
सात्यकि आदिक वीरन काहीं * मारि शरन किय विकल तहांहीं ॥
सकल यादवी सैन्य विदारयो * चहुँकित वेगवंत शर झार्‍यो ॥
कोउ नहिं सन्मुख रुक्यो प्रवीरा * आडि सक्यो कोऊ नहिं तीरा ॥
तब प्रद्युम्न तहँ कियो पयाना * धारे कर कोदंड महाना ॥
निरखि ताम्रध्वज हरिसुतकाहीं * किय प्रणाम संग्रामहि माहीं ॥
बोल्यो वचन विनय रस साने * हैं हम तुव भुज विक्रम जाने ॥

दोहा-पूर मनोरथ ह्वैगयो, तुमको निरखि कुमार ॥
कौन घरी वह होयगी, देखब पिता तुम्हार ॥ ४ ॥

लखहु कछुक विक्रमहु दासको * सिखि राख्यों जोकरि प्रयासको ॥

अस कहि विविध बाण संधाना * मारि चहूंकेत भयो दिशाना ॥
कियो लाघवी भूप कुमारा * कुँवर तुरंग तुरंत संहारा ॥
तब प्रशंसि तेहिं कृष्णकुमारा * कह्यो वचन सुनु वीर उदारा ॥
मम पितुके अनन्य तुम दासा * तोरे यश पूरित दश आसा ॥
मैं हौं यदुपति पुत्र भुवाला * सुतते सेवक प्रिय सब काला ॥
तुमसों हम सब विधिते हारे * प्रेम जंजीर पगन तुम डारे ॥
पै कछु विक्रम लखहु हमारा * क्षात्रधर्म कर करहु विचारा ॥
अस कहि कुँवर कोदंड टँकोरा * छांड्योविशिखविविधअतिघोरा ॥
चले अनेकन सायक पैना * विनशन लगो ताम्रध्वज सैना ॥
चहुँ दिशि रण रथ मंडल दीन्ह्यो * मघा बूंद सम शर झरि कीन्ह्यो ॥
रहे भुवन भरि पूरित बाना * कटे मतंग तुरंगहु याना ॥
दोहा—चारि दंड महँ तासु दल, कीन्ह्यो कुँवर सँहार ॥
तीन अक्षोहिणि हति गईं, माच्यो हाहाकार ॥ ९ ॥
तबै ताम्रध्वज रथहि धवाई * बोल्यो कृष्ण कुँवर ढिग आई ॥
साधु साधु रुक्मिणी दुलारे * तोसम विक्रम कहुँ न निहारे ॥
रोकहु रथ काटत हौं तोरा * लख विक्रम रुक्मिणी किशोरा ॥
महामंत्र आवत यक मोको * वारन करै जगत महँ सो को ॥
अस कहि जय यदुनंदन नाथा * मार्‍यो बाण ऐंचि यक साथा ॥
लागत बाण मदनको स्यंदन * भस्म भयो तब कह हरिनंदन ॥
जौन मंत्र पढि तैं शर मारा * सो त्रिभुवन नहिं रोकनहारा ॥
पुनि प्रद्युम्न बाण यक मार्‍यो * तुरत ताम्रध्वजको रथ जार्‍यो ॥
चढि द्वितीय रथ भूप कुमारा * समर मध्य अस वचन उचारा ॥
जो अनन्य मैं तुव पितु दासा * तौ यह बाण करै तव नासा ॥
अस कहि छोंडि दियो शर घोरा * लग्यो प्रद्युम्न हृदय बरजोरा ॥
मूर्च्छित भयो कुँवर संग्रामा * हाय हाय माच्यो तेहिं ठामा ॥
दोहा—तब सात्यकी तुरंतही, मारत विशिखनिकाइ ॥
जुर्‍यो ताम्रध्वजसों सपदि, ठाढ रह्योअसगाइ ॥ ६ ॥

तुरत ताम्रध्वज सात्यकि काहीं ❁ मूर्च्छित कियो परयो श्रम नाहीं ॥
तब अनिरुद्ध बाण तकि मारी ❁ तासों युद्ध भयो अति भारी ॥
सोऊ लगत ताम्रध्वज बाना ❁ गिरयो मुरछि महि वीर प्रधाना ॥
औरो महारथी जे आये ❁ सबनि ताम्रध्वज मारि गिराये ॥
भगी पांडवी फौज डेराई ❁ समर ताम्रध्वज शर झरिलाई ॥
तब अर्जुन सब भटन पुकारे ❁ जेहो कहां भागि भट भारे ॥
मैं यह भट कर करौं विनाशा ❁ देखहु खिगरे परे तमाशा ॥
अस कहि पारथ सारथि काहीं ❁ कह्यो चलहु प्रभु लै रथ्काहीं ॥
तुरतहि यदुपति यान धवाई ❁ दियो ताम्रध्वज पहँ पहुँचाई ॥
पारथ सात बाण तेहि मारा ❁ करि रथ खंडित सूत सँहारा ॥
द्वितिय यान चढि भूपकुमारा ❁ कुंती सुतसों वचन उचारा ॥
आजुहिं जन्म सफल ह्वैगयऊ ❁ रण आंखिन प्रभु देखत भयऊ ॥

दोहा—यहि हित मैं बांध्यो तुरँग, यहि हित कीन्ह्यों रारि ॥
यहि हित मारयो असित भट, देख्यो आजु मुरारि ॥ ७ ॥

हे प्रभु दयासिंधु जगदीशा ❁ तुम्हरे चरण मोर है शीशा ॥
जस मैं राख्यो उरमें आसा ❁ तस दरशन दिय रमानिवासा ॥
क्षत्रीकुल महँ जन्म हमारा ❁ क्षत्रधर्म बुध तुमहिं उचारा ॥
ताते जो आज्ञा प्रभु पाऊं ❁ तौ पारथ कहँ समर देखाऊं ॥
प्रभु प्रसन्न ह्वै बोले वचना ❁ करहु वीर विक्रमकी रचना ॥
तब प्रभु पंकजमें शिर नाई ❁ तज्यो ताम्रध्वज शर समुदाई ॥
पार्थहु सायक विविध पवाँरा ❁ होत भयो दशादिशि अँधियारा ॥
बहुत काल लगि दोउ युध कीन्ह्यो ❁ विस्तर भीति न मैं कहि दीन्ह्यो ॥
कह्यो ताम्रध्वज तब कर जोरी ❁ सुनहुँ नाथ विनती अस मोरी ॥
जोइ जब किय प्रण दास तिहारे ❁ तिनको तुमहि जाइ निरधारे ॥
हौं प्रण अस कर तो यहि काला ❁ सखा सहित गहि तुमहि कृपाला ॥
नाती पुत्र सहित पग पकरी ❁ प्रेम जँजीरनमें पुनि जकरी ॥

दोहा—लैजैहौं पितुके निकट, वसत नर्मदा तीर ॥
वाजिमेध मख करतहै, तोहिं ध्यावत यदुवीर ॥८॥

अस कहि तुरत ताम्रध्वज धायो ❀ प्रभु पद पंकज पाणि लगायो ॥
गहि प्रभुका लिय कंध चढाई ❀ चल्यो जनक ढिग आनँद छाई ॥
पारथ हूं लीन्ह्यों पाछेआई ❀ प्रद्युम्नादिक आये धाई ॥
देखि भक्त वत्सलता हरिकी ❀ बिसर गई सुधि संगर अरिकी ॥
चली सैन्य तब हरिके पाछे ❀ धन्य धन्य सब कह तेहि आछे ॥
गयो ताम्रध्वज रेवा तीरा ❀ जहँ बैठो मोरध्वज धीरा ॥
दूत कह्यो आगे कछु जाई ❀ आवत सुत हरि कंध चढाई ॥
सुनत मोरध्वज अचरज माना ❀ सन्मुख दौरत कियो पयाना ॥
देख्यो पुत्र कंध प्रभु काहीं ❀ गिरचो दंड सम धरणि तहांहीं ॥
कूदि कंधते प्रभु द्रुत धाई ❀ मोरध्वजहि लिये उरलाई ॥
मोरध्वजकर गहि यदुराई ❀ मखशाला महँ गये लेवाई ॥
तहां भूप सिंहासन माहीं ❀ बैठायो त्रिभुवन पति काहीं ॥

दोहा—पूजि सविधि पुनि कमलपद, सादर लियो पखारि ॥
सकुल सबंधु सदार नृप, लीन्ह्यों शिरमहँधारि ॥९॥

प्रभु पदपंकज अंकहि धरिकै ❀ कह्यो मोरध्वज आनँद भरिकै ॥
आजु धन्य मैं सकुल भयो है ❀ कोटि जन्मको दुरित गयो है ॥
तुव समान को दीनदयाला ❀ मोहिं दरश दै कियो निहाला ॥
मैं पामर पापी सब भांती ❀ नाथ निरखि भइ शीतल छाती ॥
सुत कुल बंधु धरणि धन धामा ❀ प्रिय परिजन पुरजन वसु वामा ॥
प्रभुको अर्पण सकल हमारो ❀ यह सगरो है नाथ तिहारो ॥
अस कहि उठि मोरध्वज राजा ❀ अर्जुन युत यादवी समाजा ॥
पूजन कीन्ह्यों कृष्ण समाना ❀ हरिते भिन्न भाव नहिं ठाना ॥
भूषण वसन विचित्र बनाई ❀ यथायोग्य सबको पहिराई ॥
सबको चरणोदक शिर धारचो ❀ हरिते वर हरिदास विचारचो ॥
नभते देव फूल वरषाहीं ❀ धन्य धन्य कहि भूपति काहीं ॥

सुतहि कह्यो तैं भो कुलतारन * मोहिं दरशायो वारन तारन ॥
दोहा–मोरध्वजकी प्रीति लखि, भे प्रसन्न यदुनाथ ॥
बार बार ताको मिले, धरयो माथमें हाथ ॥ १० ॥
कह्यो भूप नहिं तोहि सम आना * धर्मधुरधर भक्त प्रधाना ॥
तो सुत सरिस न वीर त्रिलोका * बाजि बांधि मेरो दल रोका ॥
जीत्यो अर्जुनादिक सब वीरा * सहसबाहु सम रिपु रणधीरा ॥
सो पद प्रेम जँजीरन डारी * तेरे ढिग ल्यायो प्रणधारी ॥
कह्यो मोरध्वज तब शिर नाई * नाथ रावरी है प्रभुताई ॥
तुम्हरे सुतहि सखहि जगमाहीं * अज शंकर जेता हैं नाहीं ॥
मम कुमार तो कतिक बाता * निज जन प्रण राखहु सुखदाता ॥
अस कहि तुरँग तुरँत मँगाई * सौंप्यो प्रभुहिं चरण शिरनाई ॥
लै तुरंग निज सैन्य लेवाई * चले नाथ भूपति गुणगाई ॥
यादव सकल सराहन लागे * नृपकी प्रीति रीति रस पागे ॥
कछुक दूरि जब प्रभु कहि आये * तब अर्जुन हरिपद शिरनाये ॥
विनय कियो कर जोरि सुखारी * धन्य भाग्य यदुनाथ हमारी ॥
दोहा–मो सम धरणीमें अपर, धन्य परत नहिं जोहि ॥
प्रभु सब नृपन जितायकै, दियो सुयश जग मोहि ॥ ११ ॥
नाथ कहौं कछु करत ढिठाई * क्षमहु चूक जो नहिं बनि आई ॥
मैं मानहुँ अपने मन माहीं * मोते अधिक दास कोउ नाहीं ॥
अग्रज मोर धर्म अवतारा * को तेहि सरिस अपर संसारा ॥
धर्म हेतु बहु सह्यो कलेशा * सो तुम जानहु सकल रमेशा ॥
धर्म वान पद पंकज दासा * औरहु कहुँ अस रमानिवासा ॥
तेहि यदुपति तुम देहु बताई * मोहिं द्वितीय नहिं परत लखाई ॥
तब बोले माधव मुसकाई * पारथ सुनहु वचन मन लाई ॥
यदपि युधिष्ठिर अहैं अनूपा * धर्मधुरंधर औरहु भूपा ॥
जे द्विज हित सर्वस निज त्यागैं * तन धन तिय सुत नहिं अनुरागै ॥
तब पारथ बोल्यो कर जोरी * को अस देहु बताय बहोरी ॥

हरि कह यही मोरध्वज राजा ❀ जाके सुतसों आयुध बाजा ॥
सुतको विक्रम शक्ति हमारी ❀ लख्यो सखा संग्राम मँझारी ॥
दोहा—मोरध्वजको धर्मधृत, सखा जो देखन चाहु ॥
तो द्विज वपु धारि तहँ चलौ, जाहिर करि नहिं काहु॥१२॥
पारथ कह्यो चलहु यदुनाथा ❀ हमहूं चलब तिहारे साथा ॥
तब अर्जुन अरु कृष्ण कृपाला ❀ धरयो विप्र वपु परम विशाला ॥
तहँ शाखि यादवी समाजा ❀ चले परीक्षा कारण राजा ॥
विप्ररूप धरिगे तहँ दोऊ ❀ तिन कर कपट जान नहिं कोऊ॥
द्वारपाल द्रुत जाय सुनाये ❀ कछु कारज हित द्वै द्विज आये ॥
सुनत भूप तुरतहि उठि धाया ❀ दोउ विप्रन मंडप महँ ल्यायो ॥
सविधि पूजि तिमि चरण पखारि, ❀ लीन्ह्यों चरणोदक शिर धारी ॥
करि प्रणाम पुनि बारहिं बारा ❀ जोरि पाणि अस वचन उचारा ॥
कहो विप्र केहि कारज हेतू ❀ कियो पवित्र हमार निकेतू ॥
बोले विप्र सुनहु महराजा ❀ हम आये जौने हित काजा ॥
धर्म धुरंधर धरणि मँझारी ❀ तुम्हें सुने द्विज आरतहारी ॥
अतिशय कठिन मोरि अभिलाखू ❀ बनै जो राखत तो प्रभु राखू ॥
दोहा—दानी नाम तुम्हार, सुनि तुम्हरे ढिग नरनाथ ॥
धन हित हम आवत हते, लिये पुत्र निज साथ ॥ १३ ॥
मिल्यो विपिन महँ व्याघ्र कराला ❀ मोरे सुतहि धरयो ततकाला ॥
तब मैं परयो चरण महँ ताके ❀ विनय करी कहि वचन दयाके ॥
मोरे एक पुत्र बनराऊ ❀ छोडि देहु करि सरल सुभाऊ ॥
धर्म किये सुधरत दोउ लोका ❀ सब प्राणी नहिं पावत शोका ॥
बाघ कह्यो हम मांस अहारी ❀ दया धर्म नहिं रीति हमारी ॥
तब मैं कह कौनेहु उपाई ❀ देहो त्यागि पुत्र बनराई ॥
तब केशरी कही यह बाता ❀ एक उपाय बची सुत ताता ॥
भूप मोरध्वज नामक कोई ❀ धर्म धुरंधर है यक सोई ॥
तेहिं अंग देहिं ल्याउ मोहिं पाहीं ❀ तब मैं नाहिं भक्षहुँ सुतकाहीं ॥

अस मोहिं सिंह कह्यो महिपाला * सुनतहि मैं ह्वै गयो बिहाला ॥
देहैं राजा निजतनु नाहीं * केहि विधि मिली पुत्रम्वहिकाहीं ॥
विप्रवचन सुनि नृपति उदारा * कह्यो पाइ उर मोद अपारा ॥
दोहा-धन्यभाग्य मैं मोरि अब, बचिहैं विप्र कुमार ॥
विदित वेद अरु लोकहू, धर्म न सम उपकार ॥ १४ ॥
धन्य विप्रहित लगै शरीरा * विप्रकाज लगि होति न पीरा ॥
देहौं तुमहिं विप्रतनु आधा * करौ न सुतहिं सिंह अब बाधा ॥
अस सुधि सुनि आई तहँ रानी * तनय ताम्रध्वजातिमि मतिखानी ॥
दुहुँन विप्र वृत्तांत सुनाये * तिरिया तनय महासुख पाये ॥
नृपतिय कही अर्धअँगनारी * म्वहि दै निज सुत लेहु उबारी ॥
सुत कह आतमज पुत्र कहावै * ताते पिताहि रूप जग आवै ॥
मोहिं दै सिंहहि निजसुत काहीं * लेहु बचाय होहु सुखमाहीं ॥
सुधि द्विज कह्यो सुरतिअस आई * वाणी बाघ जो मोहिं सुनाई ॥
नृपतिय तनय दोउ सुख भरिकै * निज निज करमें आरा करिकै ॥
करै मोरध्वज तनु युग फारा * तेहि लै मोहिं दै लेहु कुमारा ॥
सुनिकह नृपति विलम नहिं कीजै * आरा उभय पाणिमहँ लीजै ॥
शिरते पगलों अरु युगखंडा * उदय होय कीरति मार्तंडा ॥
दोहा-सुनत मोरध्वजके वचन, तिरिया तनय उदार ॥
आरा दिय नृपशिर निरखि, जन किय हाहाकार ॥ १५ ॥
किय पयान कौतुक लखन, चढि चढि देवविमान ॥
मंडप मधि भूपति खरो, आरा चलत महान ॥ १६ ॥
धन्य धन्य सुर मुनि करत, बारहिं बार बखान ॥
पुरजन परिजन दुखित अति, ठाढेवदन मलान ॥ १७ ॥
रानी कुमुदवती जेहि नामा * तनय ताम्रध्वज धर्महि धामा ॥
निज पतिनिजपिताशिरमहँआरा * खैंचत दुहुँ दिशि त्यागिखँभारा ॥
विप्रकाज गुनि दुख भजिगयऊ * दोहुँनको प्रसन्नमन भयऊ ॥

चलत चलत आरा तेहिं काला ❀ आयो भूपतिके मधिभाला ॥
तबै वाम आंखीते नीरा ❀ बहन लग्यो मानहु भै पीरा ॥
दोउ द्विज देखि बहत दृग वारी ❀ है उदास अस गिरा उचारी ॥
हम न लेब तनु भूपति केरा ❀ वह करिहै नहिं कारज मेरा ॥
देत शरीर भयो दुख भारी ❀ राजा वाम नयन बह वारी ॥
लेत विप्र जो दुख भरिदाना ❀ होत अहैं तेहि नरक निदाना ॥
अस कहि विप्र दियो चल दोऊ ❀ वरजत भे यद्यपि सब कोऊ ॥
तब बोले भूपति अस बानी ❀ सुनहु विप्र दोउ विनय प्रमानी ॥
तनुकी पीर बहै नहिं आंसू ❀ और हेतु कछु करौं प्रकासू ॥
दोहा–दाहिन मेरो अंग यह, छिप्र विप्र हितलाग ॥
वाम अंग यह ह्वै गयो, संयुत परम अभाग॥१८॥
सोइ दुख रोवति बाईं आंखी ❀ याको है यदुपति प्रभु साखी ॥
देखि धर्म वीरता भूपकी ❀ हरिको खबरि रही न स्वरूपकी ॥
भये प्रगट तहँ दीनदयाला ❀ चारि बाहु शोभित वनमाला ॥
मणिमय मुकुट माथमें राजै ❀ कोटिन भानु लखत जेहिं लाजै ॥
सजल जलदसमसुभग श्यामतन ❀ पीतवसनछनछवि छनछन ॥
उर द्विजपद श्रीवत्स विभाता ❀ अति प्रसन्न ह्वै मृदु मुसक्याता ॥
पकरि लियो आरा निज हाथा ❀ धन्य धन्य कह यदुकुलनाथा ॥
धर्मधुरंधर धीर प्रधाना ❀ तुमहिंसम मोहिंप्रियजग नाहिंआना
मनभावत वर मांग भुवालू ❀ विना दिहे सूखत मम तालू ॥
हरि कर परश पाइ शिरभाऊ ❀ भयो अरुज जस रह्यो सुभाऊ ॥
भूपति सावधान कर जोरी ❀ कह्यो नाथ विनती यह मोरी ॥
जो प्रसन्न हो दीनदयाला ❀ तौ वर देहु यही नँदलाला ॥
दोहा–ऐसी औरे दासकी, कियो परीक्षा नाहिं ॥
आवत कलियुग घोर अब, नाहिं दृढता तनुमाहिं ॥१९॥
एवमस्तु कहि मुदित मुरारी ❀ भूपतिसों पुनि गिरा उचारी ॥
लेहु विप्र पार्थहु कर वाजी ❀ पूरहु यज्ञ साज सब साजी ॥

तुम्हरे मख महँ धर्मभुवाला ❋ मनिहैं आपन यज्ञ विशाला ॥
तबै महीप मोरध्वज भाषा ❋ अब नहिं नाथ यज्ञ अभिलाषा ॥
तप जप यज्ञ योग फल जोई ❋ दुर्लभ पाय गयों मैं सोई ॥
जेहिं हित योगी यतन कराहीं ❋ सो पायो बैठे घरमांहीं ॥
अब सुत राज कोष परिवारा ❋ लेहु सकल वसुदेवकुमारा ॥
मोहिं देहु पदपंकज प्रीती ❋ अब नहिं मोहिं जगतकी भीती ॥
एवमस्तु कहि कृपानिधाना ❋ मिले महीपहि सुख न समाना ॥
भूपति दै प्रदक्षिणा चारी ❋ लै अपने संगमें निज नारी ॥
चल्यो विपिन सुमिरत गिरिधारी ❋ भवसंभव सुखसुरति विसारी ॥
वन वसि करि हरिपद अनुरागा ❋ दंपति गे वैकुंठ बडभागा ॥
दोहा—तब यदुपति पुनि ताम्रध्वज, राजासन बैठाय ॥
निजपद पंकज प्रीति दै, भवभय दीन छोडाय२०॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

अथ चंद्रहासराजाकी कथा।

दोहा—मोरध्वजके नगरते, डगऱ्यो चपल तुरंग ॥
करत जंग नृप संगसें, करवावत भट भंग ॥ १ ॥
कुंतलपुर महँ पहुंच्यो जाई ❋ चंद्रहास जहँ रह नृपराई ॥
चंद्रहास सुनि तुरंग अवाई ❋ पठै दूत लीन्ह्यो पकराई ॥
वाच्यो पट्ट अर्थ सब जान्यो ❋ मनमें मोद महीपति मान्यो ॥
भूपयुधिष्ठिरको यह वाजी ❋ रक्षत याहि अर्जुन दलसाजी ॥
याके साथ नाम मम ह्वैहैं ❋ आजु विलोचन फल हम पैहैं ॥
अस कहि सैन्य तुरंत सजायो ❋ युद्धहेतु भूपति कढिआयो ॥
इत प्रद्युम्न पार्थ धनुधारी ❋ खरे भये सजि समरतयारी ॥
तब अकाश महँ तेजहि राशी ❋ देखि परे देवर्षि प्रकाशी ॥
आये नारद सब शिर नाये ❋ अर्जुन तब अस वचन सुनाये ॥
कौन नगर यह कौन भुवाला ❋ देहु बताय मुनीश कृपाला ॥

तब नारद बोले हँसि बानी * यहि सम भूप न और विज्ञानी ॥
तुव सँग महँ अस नृप कोउ नाहीं * चंद्रहाससों समर कराहीं ॥

दोहा—कहत अहौं शशिहासको, यह अनूप इतिहास ॥
रामनाममें जाहि सुनि, उपजत अचल विश्वास ॥२॥

एक अनूपम केरल देशा * रह्यो सुधार्मिक तासु नरेशा ॥
ताके चंद्रहास सुत भयऊ * राजा सुत उछाह अति कयऊ ॥
ताके षटअंगुलि करमाहीं * यही दोष दैवज्ञ बताहीं ॥
बीति गयो जब नेकुक काला * चढिआयो तहँ कोउ भुवाला ॥
कढ्यो सुधार्मिक संगरहेतू * गयो जूझि भट सचिव समेतू ॥
सो नृप सकल सुधार्मिक राजू * अमलयो कोश देश कृतकाजू ॥
सती भईं सिगरी नृपरानी * रही धाइ इक तहँ मतिमानी ॥
सो लै चंद्रहास कहँ भागी * आई कुंतलपुर भय भागी ॥
तहाँ रह्यो कुंतल नृप नामा * धृष्टबुद्धि मंत्री अतिवामा ॥
बसी नगर तेहिं नाम छिपाई * कीन्ह्यों चंद्रहास सेवकाई ॥
पंचवर्षको भो शशिहासू * खेलन लाग्यो सहित हुलासू ॥
पुरबालकनि संग नित खेलै * जीतै सबसों रहै अकेलै ॥

दोहा—एक समयकहुँ विप्र घर, होतो रह्यो पुरान ॥
चंद्रहास कहुँ जाइकै सुन्यो आपने कान ॥ ३ ॥

रामनाम मुदमंगल मूला * रामनाम हारक भवशूला ॥
रामनाम सब संपति दाता * रामनाम है मुक्ति विधाता ॥
रामनाम सम कछु नहिं आना * रामनाम अति शास्त्र पुराना ॥
रामनाम जीवन हितकारी * रामनाम नाशक भयभारी ॥
रामनाम सज्जन सुर रूषा * रामनाम कलि मृतक पियूषा ॥
रामनाम जप योग विरागा * रामनाम साधन शिर भागा ॥
रामनाम नर नरक नशावन * रामनाम पतितन कर पावन ॥
रामनाम सब सुकृत समाजू * रामनाम कारण कृतकाजू ॥
रामनाम विधि शिव उरवासी * रामनाम ब्रह्मानंद रासी ॥

रामनाम त्रिभुवन भर्ता * रामनाम कारण अरु कर्ता ॥
रामनाम हठि दीन सनेही * रामनाम दाहक दुखदेही ॥
रामनामते अपर न कोई * रामनाम जानै जन सोई ॥
दोहा—ऐसो कथित पुराणमें, चन्द्रहास सुनि लीन ॥
रामनाम तबते सदा, रटन लग्यो है लीन ॥ ४ ॥
तबते रामनाम रट लागी * रामनाम सुमिरण अनुरागी ॥
खेलत जागत बैठत माहीं * रामनाम मुख निकसत जाहीं ॥
बीत्यो कछुक काल यहि भांती * जपत राम रघुपति दिन राती ॥
येक समय आये कोउ साधू * बैठे सरतट बोध अगाधू ॥
संपुटते निकास तेहिं ठामा * पूजन लागे शालिग्रामा ॥
खेलत खेलत तहँ तेहि काला * चंद्रहास गो बुद्धि विशाला ॥
साधुहि पूछन लग्यो विनीता * देहु बताइ जो पूजहु प्रीता ॥
साधु कह्यो रामजी हमारे * जे कोटिन अधमन उद्धारे ॥
येई राम जानि तहँ बालक * हैहै मोर अमित दुखघालक ॥
साधुनजरि तहँ तुरत बचाई * लै भाग्यो मूरति अतिराई ॥
रपट्यो ताहि बहुत नहिं पायो * तासु प्रीति गुनि नहिं पछितायो ॥
चन्द्रहास राख्यो तेहि काहीं * शालिग्रामशिला मुख माहीं ॥
दोहा—नित नहाइ नहवाइ तेहि, खावै भोग लगाय ॥
खेलतमें सबसों जिते, बंदी ताहि बनाय ॥ ५ ॥
यहिविधि बीति गये कछु मासा * मरी धाय गै देवनिवासा ॥
तबते रह्यो ठिकाना नाहीं * भोजन शयन निवासहु काहीं ॥
बालक सुभग देखि पुरवासी * होत भये सब तासु सुपासी ॥
कोई लेवाइ घर तेहिं नहवावै * कोउ उबटन बहुभांति लगावै ॥
कोउ बहु व्यंजन विरचि जवावै * कोउ निज ऐन शयन करवावै ॥
रामकृपाते तेहि पुर लोगू * करवावै यहि विधि सब भोगू ॥
धृष्टबुद्धि गृह तब यक काला * विप्रन नेउता भयो विशाला ॥
विप्रन संग गयो शशिहासा * भोजन किये विप्र सहुलासा ॥

विप्र चंद्रहासहि जब देखे ❀ बालक ताहि अपूरब लेखे ॥
धृष्टबुद्धि कहँ कह्यो बोलाई ❀ यह बालकको देहु बताई ॥
केहि सुत कौन देशते आयो ❀ कहां रहत को यहि पठवायो ॥
धृष्टबुद्धि कह मैं नहिं जानो ❀ बालक सकल एक करि मानो ॥
दोहा-विप्र कह्यो बालक यही, ह्वैहै यहि पुर भूप ॥
तेरी दुहिता व्याहिके, भोगी भोग अनूप ॥ ६ ॥
धृष्टबुद्धि सुनि अमरष छायो ❀ निज घरते विप्रन निकसायो ॥
कौन जातिको है केहि बालक ❀ ताहि कहत ह्वैहै पुरपालक ॥
यहि मम सुता व्याह किमि होई ❀ जाति पांति जाने नहिं कोई ॥
तब सब दुष्ट मित्र तेहि केरे ❀ बैन धृष्टबुद्धिहि अस टेरे ॥
विप्रवचन नहिं मृषा विचारहु ❀ आसु उपाइ तासु निर्धारहु ॥
धृष्टबुद्धि तब बोलि कसाई ❀ चन्द्रहास कहँ द्रुत पकराई ॥
रुषित कसाइन गिरा उचारी ❀ बन लैजाइ मारिये मारी ॥
यहि बालकहि कालवश कीजै ❀ मो को आइ चीन्ह कछु दीजै ॥
तुमको महिषी देव पचासा ❀ पैहौ पय भखि परम हुलासा ॥
चन्द्रहास कहँ तुरत कसाई ❀ गहि लै चले विपिनि भयदाई ॥
चन्द्रहास तब मनहिं विचारा ❀ मारत मोहिं विना अपकारा ॥
अब रक्षक अवधेशकुमारा ❀ रामनाम जेहिं भुवन अधारा ॥
दोहा-सुमिरचो श्रीरघुवंशमणि, चन्द्रहास मतिवान ॥
रामकृपा वश श्वपचते, करन लगे अनुमान ॥ ७ ॥
यह बालककी सुन्दरताई ❀ हमसों देखि मारि नहिं जाई ॥
कोउ कहै धृष्टबुद्धि नहिं देखी ❀ साच असाच कौन विधि लेखी ॥
काटि अंगुली अब बिन देरी ❀ करहु प्रतीति धृष्टमति केरी ॥
असकहि चंद्रहास कहँ डाटी ❀ ताकी छठईं अंगुलि काटी ॥
धृष्टबुद्धिके निकट सिधाई ❀ अंगुलि दियो देखाइ कसाई ॥
भई सचिवके परम प्रतीती ❀ दियो इनाम कसाइन प्रीती ॥
चंद्रहास बालक वनमाहीं ❀ रोवत बैठ अकेल तहांहीं ॥

पक्षी जाइ जाइ फल देहीं * तरुछाया शाखन करिलेहीं ॥
मधुमाखिन छातन मधु श्रवहीं * विपिन जीव चाहहिं हित सबहीं ॥
यहि विधि बीति गये दिन चारी * रामकृपा वश विपिन मझारी ॥
रह्यो कुलिंद जासु अस नामा * कुंतल नृप सेवक मतिधामा ॥
सोइ कुंतल नृपकेर दिवाना * धृष्टबुद्धि सोइ रह्यो अज्ञाना ॥

दोहा—कुंतलभूप कुलिंद कहँ, दिहे रह्यो शतग्राम ॥
ग्राम दिव्य प्रति वर्षमें, लेत रह्यो करिकाम ॥ ८ ॥

सोइ कुलिंद आयो वनमाहीं * देखत चन्द्रहास शिशुकाहीं ॥
ताके रह्यो पुत्र नहिं कोई * चंद्रहासको लखि मुद मोई ॥
निजरथपर चढाइ घर जाई * निज नारीसों गिरा सुनाई ॥
लेहु पुत्र दीन्ह्यों भगवाना * यामें करहु न कछु अनुमाना ॥
नारि पाइ शिशु चंद्रहासको * मानि अनुग्रह श्रीनिवासको ॥
चंद्रहासको सेवन कीन्ह्यों * द्विजन दान नानाविधि दीन्ह्यों ॥
तब कुलिंद शशिहास पढावन * पठै दियो पंडित घर पावन ॥
लग्यो पढावन तेहि उपरोहित * बोल्यो चंद्रहास शुनि अनहित ॥
मैं तो द्वै अक्षर पढि लीन्ह्यों * और शास्त्रमें नहिं मन दीन्ह्यो ॥
नाहिं ऐहैं मोहिं शास्त्रपुराना * कीजत वृथा परिश्रम नाना ॥
पंडित करगहि तेहि शिशुकेरे * लै आयो कुलिंद नृप नेरे ॥
कह्यो भूप बालक मतिहीना * राम कहनमें परम प्रवीना ॥

दोहा—हारयो कोटि पढायकै, द्वै अक्षरको त्यागि ॥
यह बालक कछु नहिं पढत, जानी परति अभागि ॥ ९ ॥

मैं जो कौनहु ग्रंथ पढावत * रामराम यह मुख रटलावत ॥
रह्यो कुलिंद राम कर दासा * सुत हवाल सुनि लह्यो हुलासा ॥
कह्यो पुरोहितसों अस बानी * अबै न बाल दोष कछु मानी ॥
जब व्रतबंध होइ सुतकेरो * तब करिहैं गुणदोष निबेरो ॥
पंडित अपने भवन सिधारहु * याहि पढावन अब न विचारहु ॥
पंडित विमन गयो गृह काहीं * रहन लग्यो शशिहास तहांहीं ॥

एकादश संवत जब बीते ❀ किय कुलिंद व्रतबंध पिरीते ॥
धनुर्वेद तब कियो अभ्यासू ❀ रामकृपा आयो सब आसू ॥
एक समय शशिहास प्रवीरा ❀ कह कुलिंदसों वचन गँभीरा ॥
पिता देहु हमको कछु सैना ❀ करहुँ दिशा जय अस उर चैना ॥
कह कुलिंद बालक मतिहीना ❀ हम कुंतल नरेश आधीना ॥
दुष्टबुद्धि मंत्री तेहि केरा ❀ सुनै जो कतहुँ उजारै खेरा ॥
दोहा—चंद्रहास तब हँसि कह्यो, पांच रथी मोहि देहू ॥
और देश बहु जीतिके, ल्याऊं धन निज गेहु॥ १०॥
पंचरथी कुलिंद तेहि दीन्हो ❀ गवन देश जीतन कहँ कीन्हो ॥
जीति अनेक देश शशिहासा ❀ ल्यायो धनसमूह निजवासे ॥
बीति गयो तहँ पुनि कछुकाला ❀ गो कुलिंद सुरलोक विशालहु ॥
चंद्रहास भूपति तब भयऊ ❀ शासन सकल राज्य मय दयऊ ॥
चंद्रहासकी फिरी दोहाई ❀ एकादशी रहै सब भाई ॥
विष्णुभक्ति जो करी न कोई ❀ पै है घोर दंड हठि सोई ॥
जो नहिं साधुचरण जल पीहै ❀ सो मेरे करते नहिं जीहै ॥
जो नहिं साधु करी सतकारा ❀ होई ताको भवन उजारा ॥
जो द्विज धेनु साधु सनमानी ❀ सो पैहै विशेषि सुखखानी ॥
चंद्रहास अस शासन फेरा ❀ सबके उर किय भक्ति बसेरा ॥
राममयो सब पुर है गयऊ ❀ चंद्रहास यश फैलत भयऊ ॥
उपजै राज मध्य धन जोई ❀ विप्र साधु महँ खरचै सोई ॥
दोहा—कुंतल नृपको डांड़ जो, देत रह्यो प्रतिपाल ॥
सो नहिं दीन्ह्यो भूपको, बीतिगयो बहुकाल ॥ ११॥
तब कुंतलनृप अमरष छाई ❀ दुष्टबुद्धि निज सचिव बोलाई ॥
कह्यो कुलिंद भूप कर बेटा ❀ डांड देतमें डारत छेटा ॥
साजि सैन्य तुम तहां सिधारहु ❀ जो न देइ तो पकरहु मारहु ॥
दुष्टबुद्धि सुनि भूपति शासन ❀ गवन्यो चंद्रहासको नाशन ॥
चंदनवती पुरीमहँ आयो ❀ चंद्रहासको सुनि आनँद पायो॥

ले अगवानी गृहपहँ ल्यायो * विविध भांति सतकार पठायो ॥
दुष्टबुद्धि चीन्ह्यो शशिहासै * यह तौ वही कह्यो जेहि नासै ॥
कीन्ह्यो हमसों कपट कसाई * अँगुरी काटि मोहिं देखराई ॥
कौन हेतु यहि दियो बचाई * मैं मारौं करि अवशि उपाई ॥
करहुँ जो सन्मुख शस्त्र प्रहारा * तौ याके भट करहिं संहारा ॥
ताते यतन सहित यहि मारौं * अब नाहिं और कछू निरधारौं ॥
दुष्टबुद्धि अस मनहिं विचारी * चंद्रहाससों गिरा उचारी ॥
दोहा-जबते मरे कुलिंदनृप, तबते तुम शशिहास ॥
दियो न भूपहि दण्डकछु, लिय वेसाहि निजनास ॥ १२ ॥
चंद्रहास तब कह मुसकाई * ब्राह्मण वैष्णव लिय धन खाई ॥
देहुँ कहांते कहँ धन पाऊं * रोजहि साधुन हेतु उठाऊं ॥
ऊपर मृदुल हिये कुटिलाई * दुष्टबुद्धि बोल्यो मुसकाई ॥
हौं एक देत उपाइ बताई * जाते तोर जीव बचिजाई ॥
तोहिं देखि लागति मोहि दाया * विरची निजकर विधि तव काया ॥
चंद्रहास बोल्यो कर जोरी * तुम्हरे हाथ जीव गति मोरी ॥
दुष्टबुद्धि तब कागज आनी * लिखी पत्रिका छलकी खानी ॥
दुष्टबुद्धि सुत मदननामको * करत रह्यो सो नृपति कामको ॥
ताको दुष्टबुद्धि यहि भांती * लिख्यो मदन कहँ रचिराचि पाती ॥
नाहिं कुल जाति विचारेहु बेटा * जब शशिहासकेर होइ भेंटा ॥
तबहीं विष यहिको हठि दीजै * और कछू विचार नहिं कीजै ॥
अस पाती लखि बांधि देवाना * चंद्रहास कर दियो अज्ञाना ॥
दोहा-दुष्टबुद्धि पुनि कहतभो, देहु मदन करजाइ ॥
चंद्रहास सब काज तुव, देहै मदन बनाइ ॥ १३ ॥
चंद्रहास अति आनंद पायो * लै पाती निज शीश चढायो ॥
चढि तुरंग कुंतलपुर आसू * चलतभयो करि परम प्रयासू ॥
बाजि धवावत तीजे यामा * आयो कुंतलपुर आरामा ॥
नगर बाहिरे उपवन येका * रहे प्रफुल्लित वृक्ष अनेका ॥

दुष्टबुद्धि मंत्रीकर बागा ❀ चंद्रहासको अतिप्रिय लागा ॥
फूलि रहीं लतिका चहुँओरा ❀ कूप अनूप रूप इकठोरा ॥
छाया सघन फले तरुवृंदा ❀ बोलि रहे विहंग सानंदा ॥
रोस हौद बहु करीं कियारी ❀ चौक चारु चहुं कित चितहारी ॥
देखि बाग शशिहास कुमारा ❀ श्रमित रह्यो अश कियो विचारा ॥
नेसुक करौं कूप जल पाना ❀ फेरि मदन ढिग करौं पयाना ॥
तुरत तुरंगते उतरि तहांहीं ❀ कीन्ह्यों पान कूप जल काहीं ॥
पुनि करि मज्जन सहित विधाना ❀ पूज्यो सानुराग भगवाना ॥

दोहा–शीतल मंद सुगंध तहँ, प्रवहत रह्यो समीर ॥
तरुछाया शीतल सघन, हरन पंथ श्रमपीर ॥ १४ ॥

निद्रा चंद्रहास कहँ आई ❀ सोयो पंथ श्रमित अलसाई ॥
ताही समय तौनहीं बागा ❀ दुष्टबुद्धिकी सुता सुभागा ॥
सहित सहेलिन तहँ चलि आई ❀ देखन हेतु मंजु फुलवाई ॥
तोरि कुसुम विहरत चहु ओरा ❀ गुंजत कुंजन कुंजन भौंरा ॥
बोलि रहे विहंग मदमाते ❀ नवपल्लवित वृक्ष लहराते ॥
विचरत बीति गयो कछु काला ❀ तृषावती भै सखियुत बाला ॥
चली हंसगति कूपहि ओरा ❀ सोवत रह जहँ भूप किशोरा ॥
विषया कूप निकट जब आई ❀ देख्यो शशिहासहिं सुखदाई ॥
कुँवर मनोहर वैस किशोरा ❀ निजकर विधि विरच्यो सब ठोरा ॥
अस जगतीतल सुंदरताई ❀ नयन दीख नहिं श्रवण सुनाई ॥
जबते चंद्रहास मुख जोहा ❀ तबते विषयाकर मन मोहा ॥
भूलिगयो करिबो जल पाना ❀ तासु निकट किय तुरत पयाना ॥

सो०–चंद्रहासको रूप, लखते शिख निरखत भई ॥
अंग अनंग अनूप, चकित एक क्षण ह्वैगई ॥ १ ॥

विषया बुद्धि विचारन लागी ❀ को है कहँ आयो बडभागी ॥
कछु नाहिं परचो तासु अनुमाना ❀ बारबार मन निरखि लोभाना ॥
गई पाग विषयाकी डीठी ❀ तहँ खोसी देखी यक चीठी ॥

ताहि पानिते लियो निकारी * बांचन लागी खांभ उघारी ॥
बांचि जानि निज पितुकी पाती * दरकि उठी विषयाकी छाती ॥
हाय महापापी पितु मोरा * ऐसहु रूप घात किय घोरा ॥
होइ प्राणपति यही हमारा * अस करु कारुणीक करतारा ॥
तहँ कीन्ही विषया निपुणाई * दृगकज्जलकी मसी बनाई ॥
करि लेखनी नोक नखकेरी * कन्या कीन्ही चारु चितेरी ॥
जहँ अस रह्यो दियो विष याको * तहँ अस कियो दियो विषयाको ॥
तैसहि पाती खांधि कुमारी * खोंसे दियो पुनि पाग मझारी ॥
गई भवन सुमिरत भगवाना * देहु यही पति कृपानिधाना ॥

दोहा—कछुक कालमें जगतभो, चंद्रहास मतिवान ॥
गुणि विलंब चढिकै तुरँग, कीन्ह्यो पुरहि पयान॥१५॥

पहुँच्यो मदन समीप कुमारा * सचिव सुतहि किय मुदित जोहारा
मदनहुँ मोदि गयो वपु देखी * चंद्रहासको अतिप्रिय लेखी ॥
मदन ताहि अस वचन सुनाये * को तुम तात कहांते आये ॥
चंद्रहास तब नाम सुनायो * क्षत्रिय कुल निज संभव गायो ॥
दुष्टबुद्धिकी पाती दीन्ही * बाचन लग्यो मदन तेहि चीन्ही ॥
नहिं कुल जाति विचारेहु याको * पाती लखत दिह्यो विषयाको ॥
मदन बांचि अस पितुकी पाती * सब प्रकार भै शीतल छाती ॥
लिय तुरंत ज्योतिषी बोलाई * लग्न घरी सब भांति सोधाई ॥
तेहिं दिन पंडित लग्न बतायो * व्याह साज सब मदन सजायो ॥
दियो व्याहि विषया शशिहासे * माचि रह्यो सब नगर हुलासे ॥
याचक वृंद सुनत शुभ व्याहा * आये मदन द्वार सउमाहा ॥
दीन्ह्यो धन द्विज वृन्दनकाहीं * जाकी जस आशा मनमाहीं ॥

दोहा—दुष्टबुद्धिको मदन तब, पाती दई पठाय ॥
दियो व्याहि विषया तुरत, शासन तिहरो पाय॥१६॥

दुष्टबुद्धि पाती जब पाई * बांचि कोप पावक तनु लाई ॥
कियो विचार मदन बौराना * लिख्यो आन समुझ्यो कछु आना ।

लिखत राम रावण लिखिगयऊ * मोहिं विपरीत दैव अब भयऊ ॥
असकहि तुरत यान मँगवाई * दुष्टबुद्धि चढि चल्यो तुराई ॥
आयो कुंतलपुरके नेरे * याचक वृंद अशीशत टेरे ॥
दुष्टबुद्धि जय सचिव शिरोमणि * युग २ जीवहु पुत्र सहित धनि ॥
मदन कियो निज भगिनि विवाहा * दियो दान करि महाउछाहा ॥
धन्य दुष्टबुद्धि द्विज सुखदाई * चंद्रहास अस लह्यो जमाई ॥
दुष्टबुद्धि तब अति अनखायो * मारि कसा याचकन भगायो ॥
जरत बरत आयो घर माहीं * मंगलचार लख्यो चहुँघाहीं ॥
मदन पितै आगू चलि लीन्ह्यो * पुत्र विलोकि कोप अति कीन्ह्यो ॥
अरे मंदमति तैं का ठान्यो * निज वैरी जामाता जान्यो ॥
दोहा–पाती मेरी कौन विधि, तै बांच्यो मतिमंद ॥
वैरीको भगिनी दई, कियो कौनतें छंद ॥ १७ ॥
पितावचन सुनि मदन डेराना * कहि न सक्यो कछु वदन सुखाना
पुनि पाती पितुके कर दीन्ह्यों * तात लिख्यो जस तस हम कीन्ह्यो
नहिं मानहु कछु दोष हमारा * बांचि पत्रिका करहु विचारा ॥
पाती बांचि धुनन शिरलागा * दीन्ही दगा दैव दुर्भागा ॥
पुत्र सहित गर भीतर आयो * तब शशिहास जाइ शिरनायो ॥
देखि चंद्रहास उर दहेऊ * ऊपर कोमल वैनहिं कहेऊ ॥
भली भई जो भयो विवाहा * तुम तौ चंद्रहास नरनाहा ॥
तब शशिहास गिरा अस गाई * यह सिगरी रावरी बडाई ॥
दुष्टबुद्धि तब कियो विचारा * याको करौं अवशि संहारा ॥
विधवा सुता होइ तौ होई * बची न यह उपाइ करि कोई ॥
अस मन ठीक दियो अघखानी * चंद्रहाससों बोल्यो बानी ॥
हमरे कुलमहँ है अस रीती * चंद्रहास तुम करहु प्रतीती ॥
दोहा–व्याह अंतमें वरस विधि, देवी पूजन जात ॥
ताते आजु निशीथमें, देवी पूजहु तात ॥ १८ ॥
चंद्रहास शासन शिर धरिकै * बोल्यो वचन महामुद भरिकै ॥

अर्धरातिमें आजुहिं जाई ॐ पूजिहौं सविधि चंडिका माई ॥
दुष्टबुद्धि तब अति सुख पाई ॐ बैठ्यो तुरत इकांतहि जाई ॥
तहां कसाइनको बोलवायो ॐ महा अमर्षित वचन सुनायो ॥
अरे कसाई सुनहु अभागी ॐ मोरि भीति तुमको नहिं लागी ॥
बालक वधन दियो मैं शासन ॐ तुम अँगुरी देखाइ कियनाशन ॥
ताते युत परिवार तुम्हारा ॐ मैं झोंकवाय देउँगो भारा ॥
पै तुम्हार इक वचन उपाई ॐ जीव चहहु तौ करहु तुराई ॥
कहे कसाई कांपत अंगा ॐ अब न करब तव शासन भंगा ॥
शासन भंग जो होइ तुम्हारा ॐ तौ मारहु सब कुल परिवारा ॥
दुष्टबुद्धि तब कह अस बाता ॐ आजु शिवामंदिर अधराता ॥
जो आवै ताको हठि मारो ॐ नीच ऊंच नहिं नेकु विचारो ॥

दोहा–दुष्टबुद्धि शासन सुनत, सकल कसाई जाइ ॥
देवीके मंदिर रहे, सायुध सुखित लुकाइ ॥ १९ ॥

रह्यो तहां कुंतल महराजा ॐ दुष्टबुद्धि जेहिं सचिव दराजा ॥
तेहि दिन कुंतल भूपति भवना ॐ गालव मुनि आये दुखदवना ॥
राजा उठि कीन्ह्यो सतकारा ॐ गालवमुनि तब वचन उचारा ॥
होतहि भोर भूप तव मरना ॐ सुमिरहु अब यदुकुलमणिचरना ॥
मोहिं ब्रह्मा तुव ढिग पठवायो ॐ तासु निदेश कहन सति आयो ॥
चंद्रहास कहँ तुरत बोलाई ॐ देहु राज्य छलछंद विहाई ॥
मानहु तेहि सुत प्राण पियारा ॐ जो चाहो निज स्वर्ग अगारा ॥
कुंतलभूप सुनत सुख पायो ॐ तुरत मदन कहँ सदन बोलायो ॥
कह्यो तुरत शशिहासहि आनो ॐ अब न और कछु कारज ठानो ॥
मदन चल्यो शशिहास बोलावन ॐ तहँ कौतुक कीन्ह्यो जगपावन ॥
चंद्रहास लै पूजन साजू ॐ अर्धरात तजि सकल समाजू ॥
चल्यो चंडिकापूजन हेतू ॐ जान्यो नहिं कछु हरिकर नेतू ॥

दोहा–मारगमें मिलिगे मदन, वचन कह्यो गहिपानि ॥
चंद्रहास कहँ जातहौ, सुनहु हमारी बानि ॥ २० ॥

महाराज तुमको बोलवायो * तोहिं बोलावन मैं इत आयो ॥
चंद्रहास तब कह कर जोरी * एक बातकी विनती मोरी ॥
पिता आपके दियो रजाई * देवी पूजहु निशिमहँ जाई ॥
शासन उभय कौन विधि टारहु * मदन तुम्हीं संदेह निवारहु ॥
मदन कह्यो कीजै अस काजू * म्वाहिं दीजै सब पूजन साजू ॥
देवी पूजन हम तहँ जाई * तुम नरेश ढिग जाहु तुराई ॥
असकहि देवी पूजन साजू * लियो मदन मान्यो कृतकाजू ॥
चंद्रहास भूपति गृह आयो * राजा देखि परम सुख पायो ॥
उतै मदन देवीघर गयऊ * माथ द्वार जब नावत भयऊ ॥
कियो कसाई खड्ग प्रहारा * कट्यो मदनशिर लगी न बारा ॥
मदन शीश लै द्रुत अघराता * चले कसाई पुलकित गाता ॥
कुंतलभूप इतै सुखमानी * रत्न जटित कनकासन आनी ॥

दोहा—चंद्रहासको ताहि पर, दिय बैठाइ तुरंत ॥
राजतिलक कीन्ह्यो हुलसि, दै द्विजदान अनंत ॥ २१ ॥

राजा गयो गंगके तीरा * भोर होत तजि दियो शरीरा ॥
इतै सकल पुरमहँ सुखदाई * चंद्रहासकी फिरी दोहाई ॥
मदनशीश लै निशा कसाई * आये दुष्टबुद्धि ढिग धाई ॥
कह्यो नाथ जो दियो निदेशा * सो हम कीन्ही विनहि कलेशा ॥
दुष्टबुद्धि गुणि वध शशिहासा * मान्यो हियमहँ परम हुलासा ॥
भोर भयो चीन्ह्यो सुतशीशा * हाइ कहा कीन्ह्यों जगदीशा ॥
मानि गलानि निकारि कटारी * दुष्टबुद्धि मारिगो उरफारी ॥
देखहु दाया श्रीनिवासकी * राजिय कंटक चंद्रहासकी ॥
भयो चक्रवर्ती महराजा * चंद्रहास है बली दराजा ॥
सुनु अर्जुन सोई युधहित आयो * निज तेजाहिते भूप हटायो ॥
याते युद्ध करब नहिं लायक * हरिको कृपापात्र नृपनायक ॥
सुनि अर्जुन नारदकी बानी * चंद्रहासकी कथा पुरानी ॥

दोहा—चंद्रहासको आपनो, मान्यो अति प्रियभ्रात ॥
रथते उतरि चल्यो मिलन, आनँद उर न समात ॥ २२ ॥

आवत अर्जुनको निरखि, नाथ सखा जिय जानि ॥
दौरि दूरिते मिलत भो, जगत जन्म धनि मानि ॥ २३ ॥
पुनि प्रद्युम्न शशिहासको, मिल्यो जानि पितुदास ॥
यथायोग सब मिलतभे, शशिहासहि सहुलास ॥ २४ ॥
प्रीतिपरस्पर बढतिभे, दोउ दल महँ तेहि काल ॥
चंद्रहास अर्जुन चले, जहँ हरि दीनदयाल ॥ २५ ॥
चंद्रहासकी यह कथा, वरण्यो यथा पुराण ॥
एते द्वापर भक्त भे, जिनको शास्त्र प्रमान ॥ २६ ॥
रच्यो रामरसिकावली, पूर्वारध सुखराशि ॥
सुनहु संत सब चित्त दै, भववासना विनाशि ॥ २७ ॥
रामभक्त जे परम सुजाना * कथा रसिक भागवत प्रधाना ॥
सुनन रामरसिकावलि आमैं * तिनके पदमहँ मोरि प्रणामैं ॥
मैं नहिं जानहुँ ग्रंथन रीती * नहिं कछु धर्ममाहिं परतीती ॥
कबहुँ न कीन्ह्यों शुभ आचारा * नहिं चीन्ह्यों संतन सतकारा ॥
काम क्रोध मद लोभ विकारा * मेरेई तनु किये अगारा ॥
विषय विवश चंचल चित मेरो * करत न रामचरण महँ डेरो ॥
ताहूपर मैं करी ढिठाई * सुखद रामरसिकावलि गाई ॥
श्रोता संत सुबुद्धि अगाधा * अपनो जानि क्षमहु अपराधा ॥
संतचरित्र जानि तजि रोषू * किह्यो कृपा करि दोष क्षमोषू ॥
विनय मोरि सब श्रोतन पाहीं * जो कछु बन्यो होय यहि माहीं ॥
तो निज दास जानि करि छोहू * यह वरके दानी सब होहू ॥
होय प्रीति संतन पद मोरी * मिलैं सियावर जनककिशोरी ॥
दोहा-वक्ता श्रोता संतपद, पुनि पुनि नाऊं माथ ॥
कहहु सबै रघुराजको, किय अपनो यदुनाथ ॥ २८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजासिद्धिश्रीमहाराजाधिराजमहाराजबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवविरचितायां श्रीरामरसिकावल्यां द्वापरखंडे त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

अथ कलियुगके भक्तोंकी कथा ।

सो०-जय जय संतसमाज, कलिकल्मषदारुणहरन ॥
कारन जन कृत काज, हेतु परमपद एकई ॥ १ ॥
जप तप तीरथ दान, ज्ञान विरागहु योगऊ ॥
साधन शास्त्र प्रमाण, संसृति हरन अनेक जे ॥ २ ॥
सत्यशिरोमणि तासु, विन प्रयास संसृतिहरन ॥
दायक रमानिवासु, संतसमागम शमन कछु ॥ ३ ॥
जय वसुदेवकुमार, दीनसनेही सत्य जे ॥
संतनके आधार, जानि मोहिं जन भ्रम हरहु ॥ ४ ॥
जडतानिशि रविभास, जयति जगतजननी गिरा ॥
मम रसना करिवास, रचिय राम रसिकावली ॥ ५ ॥
विघ्नहरण गणनाथ, शिवनंदन कंदन कुमति ॥
तुव पद नाऊं माथ, करहु पूर संतन सुयश ॥ ६ ॥
जय जय परमदयाल, श्रीहरि गुरु मुकुंदपद ॥
जासु कृपा कलिकाल, कछुन करत दासन असर ७ ॥
जय हरि पितु विश्वनाथ, रामोपासक पर जगत ॥
जासु प्रताप सनाथ, मैं हूं भयो विहाय भय ॥ ८ ॥

दोहा-ग्रंथ रामरसिकावली, रच्यो तीनि जे खंड ॥
तिनमें प्रथित पुराणकी, साधु कथा उदंड ॥ १ ॥
अब विरचत कलिखंडमें, कलिसंतन इतिहास ॥
भक्तमालमें जो कियो, नाभा गुरू प्रकास ॥ २ ॥
औरहु जो संतन वदन, सुन्यो संत इतिहास ॥
निज नयननि देख्यो चरित, करिहौं कथा प्रकाश ३ ॥
भक्तमालमें है नहीं, जिन भक्तनको गान ॥
सकल भक्त यहि कालके, तिनको करहुँ बखान ४ ॥

मोरे जिय अति होत उराऊ ❀ वर्णत सकल संत परभाऊ ॥
सब संतन राखहुँ सम भाऊ ❀ मोरे मनमहँ भेद न काऊ ॥
पै जो अद्भुत चरित निहारा ❀ ताहि कथनकहँ प्रथम विचारा ॥
ग्रंथ प्रपन्नामृत महँ ताते ❀ जे भक्तन इतिहास सुहाते ॥
दिव्यसूरि चारित्र ग्रंथपर ❀ आचार्यनकी कथा मोदभर ॥
और भणित भार्गवहु पुराना ❀ तिन संतनकी करहुँ बखाना ॥
जिनकछु दोष दियो मोहिंकाहीं ❀ जानहुँ मैं रचना विधि नाहीं ॥
जो नशाय सो लियो सुधारी ❀ सब श्रोतन पहँ विनय हमारी ॥
हरि हरिजनकर चरित बखाना ❀ कहत सुनत सुख लहत निदाना ॥
गाय गाय भवसागर तरते ❀ फिरि नहिं कबहु जगतमहँ परते ॥
शास्त्र संत मुख यह सुनि राख्यो ❀ ताते महूं संत गुण भाख्यो ॥
नहिंकविनहिंकछुकाव्यअभ्यासू ❀ नहिं कछु बुद्धि विशेषि विलासू ॥

दोहा–श्रोता संत सुशील निधि, करि तिनचरण प्रणाम ॥
कहौं रामरसिकावली, यह कलिखंड सुनाम ॥ ९ ॥

अथ भक्तभूतकी कथा।

दिव्य सूरि चारित्र ग्रंथ महँ ❀ अहैं भक्त वर्णौं मैं तिन कहँ ॥
तिनमहुँ भूत नाम हरिदासा ❀ तिनको कहौं प्रथम इतिहासा ॥
श्रीवैकुंठमहँ हरि इक काला ❀ बैठि मनहिमन गुण्यो कृपाला ॥
हैं सब कलियुगके जन पापी ❀ केहि विधि होहिं नाम मम जापी ॥
तबहिं पद्मकहँ दियो निदेशा ❀ तुम अवतार लेहु भुवि देशा ॥
जीव विमुख जे मम पद तेरे ❀ तिनहिं करहु उपदेश घनेरे ॥
दै मम भक्ति मुक्ति अधिकारा ❀ पठवहु मम पुर जीव अपारा ॥
प्रभुशासन शिरधरि तेहिं वारा ❀ पद्म लियो अवनी अवतारा ॥
मल्लपुरी इक रही सुहावनि ❀ अश्वनिसुदि अष्टमि अतिपावनि ॥
तेहि दिन सरसिजते अनयासू ❀ प्रगट्यो भूतनाम भो तासू ॥
तेहिं पांचजन्य दरकाहीं ❀ हरिशासन दीन्ह्यो सुखमाहीं ॥
सोऊ लियो अवनि अवतारा ❀ सर अस तिनको नाम उचारा ॥

दोहा-तैसहिं नंदकखड्गको, दीन्ह्यो शासन नाथ ॥
तुमहुँ प्रगटि महिमंडलै, जीवन करो सनाथ॥ १ ॥
सो हरिशासन शिरधरि लीन्ह्यो * कैरवते प्रगटित तनु कीन्ह्यो ॥
तिनको भयो महत अस नामा * ज्ञान विज्ञान भक्तिके धामा ॥
मल्लपुरी महँ भये भूत मुनि * भे मयूरपुरि भक्त महत पुनि ॥
कांचीपुरी भये सरस्वामी * तीनहुँ ध्यायो अंतर्यामी ॥
जीवनको करि करि उपदेशा * पठयो जहँ निवसत कमलेशा ॥
होइ सांझ तहँ करति निवासा * यक थल करैं नवहु दिन वासा ॥
नहिं कछु चाह करैं मनमाहीं * यथालाभ महँ सदा अघाहीं ॥
वामनक्षेत्र माहँ यककाला * आये तीनहुँ भक्त उताला ॥
जुरी रहे तहँ मनुज समाजा * तहँ कीन्ह्यो तीनों अस काजा ॥
सब जन कहँ हरिनाम सुनाई * सबको भक्तिरीति सिखवाई ॥
पठये हरिपुर जीव अपारा * कलिहि जीति दै ज्ञान नगारा ॥
बहुतकाल लगि मही सुखारी * जीव उधारि जीव हितकारी ॥
दोहा-गये फेरि वैकुंठ कहँ, तीनों भक्त उदार ॥
यह संक्षेपहि मैं कियो, भक्त कथा विस्तार ॥२॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ भक्तिसार अरु कनिकृष्णकी कथा।

दोहा-भक्तिसारको हौं करौं, अब इतिहास उचार ॥
श्रीमुकुंदके चक्रको, है जगहित अवतार ॥ १ ॥
महिसुरपुरी सिंधुतट जोई * भार्गवविप्र रह्यो तहँ कोई ॥
सो कानन कीन्ह्यो तप जाई * यदुपति चरण कमल मनलाई ॥
डरपे देव देखि तप ताको * विघ्न हेतु कीन्ह्यो मायाको ॥
पठयो एक सुन्दरी नारी * सो द्विजढिग आई मनहारी ॥
देखत तियहि मोहिं मुनि गयऊ * तियहि विप्रसंगम तहँ भयऊ ॥
गर्भवती ह्वैगे वरनारी * कियो वास मुनि संग सुखारी ॥

आमिषपिंड भयो तिय केरे * दंपति विमन भये नेहि हेरे ॥
रह्यो बेत वन तहँ अति भारी * सोई वनमहँ पिंडहि डारी ॥
गे मुनि कहुँ तिय स्वर्गसिधारी * रह्यो पिंड तहँ विपिन मझारी ॥
फूल्यो पिंड पाइ कछु काला * प्रगट्यो बालक तेज विशाला ॥
विपिन जंतु श्रीपतिकी दाया * सो बालकको कोउ न खाया ॥
रोवत शीतल तरुकी छाया * बढत भई ताकी कछु काया ॥

दोहा-महिसुर पुरमंदिर रह्यो, तहँ नारायण देव ॥
सो बालकहि अनाथ गुणि, कियो आइ प्रभुसेव ॥ २ ॥

तेहि वन शूप बनावनहारे * बेत लेन इक समय सिधारे ॥
आवत जानि जननकर वृंदा * अंतर्हित ह्वैगयो गोविंदा ॥
चहुँकित शिशु अपनो प्रभु जोयो * लख्यो न तब ऊंचे स्वर रोयो ॥
ते जन सुनत बालकर रोदन * आवत भये बालढिग तिहि छन ॥
निर्जन वनमहँ बालक देषी * ते सब अचरज गुन्यो विशेषी ॥
तिनमें यकके सुत नहिं रहेऊ * सो बालक तुरतै लै लयऊ ॥
भवन आइ दीन्हों तियकाहीं * कह्यो पुत्र मिलिगो वनमाहीं ॥
याको पालहु शिशु सम जानी * दियो वंश मोहिं शारंगपानी ॥
सो तिय शिशुकहँ पालन लागी * भई परम तापर अनुरागी ॥
अपनो पुत्रसरिस तेहि मान्यो * ताते प्रिया दूर नहिं जान्यो ॥
बालक पंचवर्ष है गयऊ * तब इक दिन अस कौतुक भयऊ ॥
वृद्ध जो बेत बनावनहारा * बालक रोवत क्षुधित विचारा ॥

दोहा-ताहि पियावन पय लग्यो, बालक करि पयपान ॥
निज जूंठो दंपतिहि दिय, ते करि पान अघान ॥ ३ ॥

बालकजूंठ दूध करि पाना * दंपति ह्वैगे तुरत जवाना ॥
सो शूद्री पुनि जन्यो कुमारा * नाम तासु कनिकृष्ण उचारा ॥
उभय बालकन भै अति प्रीती * बालहिते हरि माहिं प्रतीती ॥
तब कनिकृष्ण ताहि गुरु मानी * सेवन करन लग्यो सुख जानी ॥
भक्तिसार कहँ शास्त्र पुराना * यदुपति कृष्ण सकल प्रगटाना ॥

सो कनिकृष्णहि लगे पढावन ❀ योग विज्ञान विधान सुपावन ॥
भूतन दया तोष सब काला ❀ निशि दिन सुमिरण दशरथलाला ॥
जाय इकांत उभय मतिवाना ❀ सुमिरहिं प्रेम सहित भगवाना ॥
सकल शास्त्र गुणिहेत विचारी ❀ मान्यो परम तत्व गिरिधारी ॥
नास्तिक वाद शास्त्र दोउ खंडे ❀ वैष्णव मत सिद्धांतहि मंडे ॥
हरि विमुखन हरि सन्मुख कीन्हे ❀ विविध भांति उपदेशन दीन्हे ॥
हरि अनन्य निजसेवक जानी ❀ तिनपर कीन्ही कृपा महानी ॥

दोहा-एक समय अधरातको, प्रगट भये यदुनाथ ॥
दियो भक्ति अनपायिनी, कीन्ह्यों तिन्हैं सनाथ ॥ ४ ॥

तब ते दोउ हरिभक्त उदारा ❀ उपदेशत विचरैं संसारा ॥
भक्तिसार अस कियो विचारा ❀ भजै कृष्णपद विपिन मँझारा ॥
अस विचारि निर्जनवन जाई ❀ लै कनिकृष्ण संग सुखछाई ॥
तेहि कानन महँ वसे यकांता ❀ करत विचार विमल वेदांता ॥
वृषभ चढे तहँ शंभु भवानी ❀ निकसे तेहि मग औघडदानी ॥
भक्तिसार तपतेज निहारी ❀ कह्यो शंभुसों शैलकुमारी ॥
यहि वन कोउ हरिभक्त सुजाना ❀ वसत मोहिं परतो अस जाना ॥
चलहु नाथ दरशन तेहि कीजै ❀ ताकी कछू परीक्षा लीजै ॥
गौरिगिरा सुनि तुरत महेशू ❀ आइगये तुरंत तेहि देशू ॥
भक्तिसारको लखि भगवाना ❀ कह्यो महेश मांगु वरदाना ॥
हमरो दरशन विफल न जावै ❀ मनवांछित प्राणी वर पावै ॥
भक्तिसार मन कियो विचारा ❀ कछु न मनोरथ अहै हमारा ॥

दोहा-भक्तिसार तब करतभे, शंकरसों परिहास ॥
शूची छिद्र समानवर, देहु नाथ कैलास ॥ ५ ॥

जानि महेश मनहिं परिहासा ❀ कीन्ह्यों तापर कोप प्रकासा ॥
भस्म कियो जस मनसिज काहा ❀ भस्म करौं तस यहि क्षणमाहीं ॥
अस विचारि दृग तीसर घोरा ❀ शंभु उघारि तक्यो तेहि वोरा ॥
भक्तिसार हरिभक्त महाना ❀ तहँ ताको प्रभाव प्रगटाना ॥

वामचरण अंगुष्ठ विशाला * ताते कढी ज्वाल विकराला ॥
उभय तेज मिलि नभमहँ छायो * जानि परयो त्रैलोक्य जरायो ॥
ज्वाला माल बुझावन हेतू * प्रगट्यो प्रलय मेघ वृषकेतू ॥
सिंधुर शुंडादंड समाना * वृष्टि भई तहँ रहित प्रमाना ॥
पै नहिं तेज शांत कछु भयऊ * भक्तिसार निहचल तहँ ठयऊ ॥
मुदित महेश विलोकि प्रभाऊ * लगे सराहन शील स्वभाऊ ॥
है प्रसन्न परदक्षिण दीन्ह्यों * हरिजन जानि प्रणति तेहिं कीन्ह्यों॥
करि प्रणाम हर सहित भवानी * भक्तिसार बहुवार बखानी ॥

दोहा–भक्तिसार हरिदासको, वर्णत सुयश महान ॥
गमन कियो कैलासको, गौरि सहित भगवान ॥६॥

तेहि वन भक्तिसार कछु काला * निवसतभे ध्यावत नँदलाला ॥
भक्तिसार यक समय तहांहीं * बैठे सियत गूदरी काहीं ॥
तहँ है नभ पथ सिद्ध सवारा * कढ्यो सिद्ध यक तेज अपारा ॥
तेहिं थल उपर सिद्ध रुकि गयऊ * भल भल हांक्यो चलत न भयऊ॥
चित चहूंकित लखि भुवि माहीं * निरख्यो भक्तिसार मुनि काहीं ॥
भगवत भक्त सिद्ध तेहि जानी * कियो प्रणाम आय भय मानी ॥
सियत गूदरी तिनहि निहारी * जोरि पाणि अस गिरा उचारी ॥
मेरो वसन दिव्य यह लेहू * यह गूदरी त्यागि मुनि देहू ॥
फटे वसन लागत नहिं नीके * तुम अनन्य जन हो सियपीके ॥
भक्तिसार कह लखु तनुमाहीं * देखि परत कछु तो कहँ नाहीं ॥
सिद्ध लख्यो मुनितनु तेहिकाला * कनककवचमणिजटितविशाला ॥
सिद्ध दियो मोतीकी माला * भक्तिसार तब विहँसि उताला ॥

दोहा–तुलसीकी यकमाल निज, दीन्ही ताहि उतारि ॥
चिंतामणिकी माल सो, हैगै प्रभा पसारि ॥ ७ ॥

सिद्ध अचरज मानि मन माहीं * दियो प्रदक्षिण तब मुनि काहीं ॥
ताहि मग सिद्ध अनुज मुनि आयो * मुनिहि विलोकि दौरि शिर नायो॥
सिद्ध सो निज भ्रातहि बैठायो * मुनिकर सकल प्रभाव सुनायो ॥

सोऊ मनमहँ अचरज मानो ❀ बोल्यो भक्तिसारसों बानी ॥
दीखहु महारंक मुनिराई ❀ तोहिं देखि दाया मोहिं आई ॥
पारस तुम्हैं देत हौं सोई ❀ छुवत लोह सुवरण हठि होई ॥
असकहि पारस दियो सिद्ध जब ❀ भक्तिसार मुनि हँसे हेरि तब ॥
सिद्ध अनुजसों कह अस बाता ❀ मोरहु पारस लेहु विख्याता ॥
सो तो लोह कनक करि लेतो ❀ यह पाषाण पुरट करिदेतो ॥
सिद्ध अनुज अचरज करिजाना ❀ करि प्रणाम द्रुत कियो पयाना ॥
यक पर्वत महँ दोउ सिध जाई ❀ मुनि कृत पारस दियो छुवाई ॥
भयो पुरटको पर्वत परसत ❀ सिद्ध गयो निजघरअति हरषत ॥

दोहा—इतै भक्तिसारहु तुरत, उठि तहँते तिहिकाल ॥
प्रविसे अचलसमाधि हित, गिरिकंदरा विशाल ॥ ८ ॥

तहां भूत औसर दोउ स्वामी ❀ आवतभे सुमिरत खगगामी ॥
गुहा मध्यलखि अतुल प्रकासा ❀ जान्यो इत कोउ संत निवासा ॥
गुहा प्रविसि तब उभय उदारा ❀ भक्तिसार मुनिनाथ निहारा ॥
मुनिनाथहिं पूंछी कुशलाई ❀ सो कह हरिकी कृपा भलाई ॥
बसे भूत सर दोउ कछु काला ❀ गमन किये पुनि देश विशाला ॥
फेरि महतस्वामी तहँ आये ❀ भक्तिसारको लखि सुख पाये ॥
तहँ दोउ वर्णत हरि गुण गाथा ❀ बितये कछुक काल सुखसाथा ॥
सिंधुतीर यक नगर मयूरा ❀ तहँ आवतभे दोउ सुखपूरा ॥
तहँ केसरके तरुतर माहीं ❀ किये निवास सुमिरि हरिकाहीं ॥
तहँ दोउ संत समाधि लगाये ❀ महत भक्त पुनि अनत सिधाये ॥
भक्तिसार निवसे तेहि ठामा ❀ सुमिरत रामचरण अभिरामा ॥
तब तिनको चंदन चुकि गयऊ ❀ अति संदेह तासु मन भयऊ ॥

दोहा—तब रघुपति पदकंजको, सुमिरण लागे सोइ ॥
निशा नींद आई नहीं, दिय जागत निशिखोइ ॥ ९ ॥

भोर चले मुनि मज्जन हेतू ❀ रह्यो न चंदनकर कछु नेतू ॥
हरिशंकित गुणि निज जनकाहीं ❀ प्रगट्यो चंदन कुंड तहांहीं ॥

ले चंदन अंगन महँ दीन्ह्यो * कांचीपुरी गमन पुनि कीन्ह्यो ॥
अबलौं चंदन कुंड सुहावन * तौन देश महँ है अतिपावन ॥
भक्तिसार कांची महँ आये * तहँ गिरि गुहा वास मन लाये ॥
गुहा बैठि गोविंद गुण गावै * तहँते अनत कहूं नहिं जावै ॥
शिष्य तासु कनिकृष्ण इदारा * भिक्षाटन करि करै अहारा ॥
कोउ नहिं जान्यो नगर निवासी * रही एक वृद्धा हरिदासी ॥
सोई धन हित गै वनमाहीं * दरी वसत लखि संतन काहीं ॥
गोमय लीपि गुहा कर द्वारा * करि पूजन तेहि विविधप्रकारा ॥
आई अपने भवन तुराई * जान्यो नहिं मुनितेहि सेवकाई ॥
यहि विधि रोज गुप्त तहँ जावै * गुहा दुवार लीपि घर आवै ॥

सो०-गुहाद्वार यक बार, भक्तिसार लेपित निरखि ॥
मनमहँ कियो विचार, सेवन करत हमारको ॥ ९ ॥

भक्तिसार यक समय प्रभाता * वृद्धनारि निरख्यो अवदाता ॥
लेपित गुहा द्वार निज पानी * भक्तिसार बोले तेहिं बानी ॥
बहुसेवन तैं कियो हमारो * मांगु जौन मन होइ तिहारो ॥
वृद्धनारि तब कह कर जोरी * नाथ देहु विनती सुनि मोरी ॥
वय गत मोर वर्ष चौरासी * सेवा करत लहौं दुखरासी ॥
युवा भेष कीजै प्रभु मेरी * सेवा करौं रोज मैं तेरी ॥
सुनि मुनि लख्यो डीठि करिदाया * ताकी तुरत युवा भै काया ॥
देवदारु सम भयो स्वरूपा * महा मनोहर सुछवि अनूपा ॥
प्रगट करन लागी सेवकाई * घरते चंदन सुमनहुँ लाई ॥
रह्यो एक कांचीकर राजा * जातरह्यो मृगयाके काजा ॥
मारगमें सो ताहि निहारी * वरवश पकरि कियो निज नारी ॥
भवन ल्याइ पूंछ्यो अस बाता * को तोहिं युवा वैसको दाता ॥

दोहा-तब बोली करजोरि तिय, यहि गिरि गुहा विशाल ॥
बसत संत यक शिष्ययुत, सो मोहिं कियो निहाल ॥ १० ॥

तुमहुँ जरठपन ग्रसित भुवाला * चहहु जो युवा भेस यहिकाला ॥

तौ न विलंब करौ नृपराई ॥ शिष्य तासु कनिकृष्ण बुलाई ॥
करहु विनय सब विधि तिनपाहीं ॥ देहैं युवा डामिरि तुम काहीं ॥
तब राजा निज दूत पठायो ॥ तुरत तहां कनिकृष्ण बोलायो ॥
कह्यो वचन तिनसों यहि भांती ॥ तुम्हरी कीरति जगत विख्याती ॥
तिहरे गुरु वृद्धा यक नारी ॥ कीन्हो युवा डामिरि मनहारी ॥
महूं जरठपन दुखित मुनीशा ॥ कीजै युवा सुमिरि जगदीशा ॥
अथवा अपनो गुरु बोलाई ॥ देहु युवापन मोहिं देवाई ॥
जब मुनि हम ह्वैजाहिं किशोरा ॥ तब वर्णहु अनुपम यश मोरा ॥
नरयश वर्णब शासन सुनिकै ॥ तब कनिकृष्ण भयोमहिं गुनिकै ॥
कोपित कह्यो भूपकहँ बानी ॥ राजा कहत मोहिं नहिं जानी ॥
और देवको नहिं यश गाऊं ॥ भूपतिकी का बात चलाऊं ॥

दोहा—सीतापति सुंदर सुयश, ताहि त्यागि महिपाल ॥
कौन बापुरो को सुयश, मैं वर्णौं भ्रमजाल ॥ ११ ॥

तेरे गृह गुरुदेव हमारा ॥ नाहिं ऐहैं यह सत्य विचारा ॥
मम गुरु त्यागि भवन निज काहीं ॥ और भवन कबहुँ नहिं जाहीं ॥
सुनि कनिकृष्ण वचन यहि भांती ॥ कुपित भयो आंखी करि राती ॥
बोल्यो राजा वचन कठोरा ॥ श्वपच न मानसि शासन मोरा ॥
जाति श्वपच है गर्व महाना ॥ जो मम सुयश न करै बखाना ॥
तौ मम पुरते करै पयाना ॥ लै अपने सँग गुरु भगवाना ॥
सुनि कनिकृष्ण कुपित नृपबैना ॥ उठ्यो तुरंत तहांते भैना ॥
भक्तिसारके निकट सिधाये ॥ राजाके सब वचन सुनाये ॥
कह्यो नाथ यह बात सहीहै ॥ यहि नृप राज्य सलिल नहिं पीहै ॥
भक्तिसार सुनि सकल प्रसंगा ॥ कह्यो चलब हमहूं तव संगा ॥
यक क्षण करहु विलंब इहांहीं ॥ करहुं एक मैं कारजकाहीं ॥
असकहि भक्तिसार हरिदासा ॥ चल्यो तहांते मानि हुलासा ॥

दोहा—कांचीनगरीमें रहै, वरदराज भगवान ॥
जिनको मंगलप्रद सुयश, गावत सकल जहान ॥ १२ ॥

भक्तिसार तिन मंदर आये * जोरि पाणि विनती अस गाये ॥
हमहि देत यह भूप निकारे * बिदा होन तुव निकट सिधारे ॥
भक्तिसार यतनो कहि नाथे * निकसि चल्यो नवाइ प्रभु माथे ॥
भक्तिसारके गमनत माहीं * प्रभुसों रहत बन्यो तहँ नाहीं ॥
रेंगिचली मंदिरते मूरति * बारबार निजदास विसूरति ॥
भक्तिसारके पाछे पाछे * चलेजात प्रभु काछनि काछे ॥
यह अचरज लखि नगरनिवासी * धाये सब ह्वै जीवनिरासी ॥
जाय पुजारि नृपहिं पुकारे * वरदराज प्रभु जात सिधारे ॥
सुनि राजा रानी दुख पायो * रह्यो बैठ जस तस उठिधायो ॥
बालक युवा वृद्ध नर नारी * धाये हाहाकार पुकारी ॥
पुरमहँ मच्यो वृद्ध नर नारी * छाइ गई अंबर अँधियारी ॥
भक्तिसारके पदमहँ आई * गिरे सकल अतिशय बिलखाई ॥

दोहा—विनय कियो करजोरिकै, अब न अनत प्रभु जाहु॥
तुम्हरे गवनत गवनतो, सिंधुसुताको नाहु ॥ १३ ॥

भक्तिसार बोले तब बानी * है न बात हमरी कछु जानी ॥
जो कनिकृष्ण बहुरि इत आवै * तौ हम काहेको कहुँ जावै ॥
भक्तिसारकी सुनि अस बाता * राजा रानी अति बिलखाता ॥
परे जाइ कनिकृष्ण चरणमें * गहे चरण निज युगल करनमें ॥
लौटि चलहु क्षमिये अपराधा * बसति साधु उर दया अगाधा ॥
राजा रानी औ पुरवासी * लखि कनिकृष्ण महा दुखरासी ॥
लौटिचले कांचीपुर काहीं * पाछे चले प्रजा संगमाहीं ॥
लौटत तहँ कनिकृष्ण निहारी * भक्तिसार लौटे तपधारी ॥
भक्तिसारके करत पयाना * लौटे वरदराज भगवाना ॥
भक्तिसार तेहि मंदिर आये * कर गहि वरदराज बैठाये ॥
राजा रानी औ पुरवासी * भये सकल तब आनँदरासी ॥
भक्तिसारके शिष्य भये सब * मेट्यो भूरि भीति भव उद्भव ॥

दोहा-भक्तिसार कछुकाल तहँ, कीन्ह्यों मुदित निवास ॥
सुभग द्रविड भाषा कियो, विशद प्रबंध प्रकाश १४

हरिगुण गावत निशिदिन जाहीं * विते सप्त शत वरष तहाहीं ॥
पुनि चोलामहेश्वरहि आये * कुंभकोनको बहुरि सिधाये ॥
कुंभकोन पुरमाहि विशाला * रह्यो एक श्रीनाथ देवाला ॥
शारंगपाणि तहां भगवाना * मूरति मधुर रही सविधाना ॥
भक्तिसार तेहि मंदिर जाई * नारायणके पद शिर नाई ॥
कह्यो नाथसों अस कर जोरी * शंका सपदि निवारहु मोरी ॥
सर्प सेज महँ तुम केहिहेतू * कीजत शयन विहँगपति केतू ॥
वपुवराहधारि धरा उधारयो * सो श्रम धौं इत सोइ निवारयो ॥
धौं दंडकवन महँ अतिधाये * थाकिगये सो बहु दुख पाये ॥
धौं समुद्र कहँ मथ्यो मुरारी * सोवहु तौन पाय श्रम भारी ॥
निजजन वचन सुनत भगवंता * बोले शीश उठाइ तुरंता ॥
भक्तहेतु दौरत हम रहहीं * सो श्रम पाइ शयन इत करहीं ॥

दोहा-अबलों मूरति शीशसो, उठो अहै कर एक ॥
भक्तहेतु प्रगटत हरी, जानहु वेद विवेक ॥ १५ ॥

भक्तिसार तहँ वसि सुख पाये * चौदहिसौ संवतन बिताये ॥
पुनि तेहिते गमने हरिदासा * मारगमहँ इक भयो तमासा ॥
जुरे विप्र वैदिक यक ठामा * रहे वेदको पढत ललामा ॥
भक्तिसारको तुरत निहारी * मौन भये तेहि शूद्र विचारी ॥
मौन होत सब बाउर ह्वैगे * बोलि न आयो अति दुखि छ्वैगे ॥
दौरि दौरि सब द्विज दुख छाये * भक्तिसारके पद शिरनाये ॥
भक्तिसार कहँ दाया लागी * लेकर धान कृष्ण अनुरागी ॥
फारयो ताहि सुमिरि भगवंता * मिटी द्विजन मूकता तुरंता ॥
तहँ यक नगर सिंहपुर नामा * रह्यो तहां यक हरिको धामा ॥
यात्री दरशन हेतु हजारा * खडे रहे मंदिरके द्वारा ॥
रहे सुपूजन करत पुजारी * लखि न परे तहँते गिरिधारी ॥

भक्तिसार तब दूसर द्वारे * जाइ तहांते प्रभुहि निहारे ॥

दोहा-तब मूरति यदुनाथकी, फिरिगे तीनिहिं ओर ॥
सकलपुजारिन यात्रिकन, हैगो अतिशय भोर ॥ १६ ॥

अचरज मानि सबै भ्रम पागे * बाहर काढिके हेरन लागे ॥
भक्तिसार कहँ लखि द्वारेपर * जानि अनन्यदास यदुपतिकर ॥
गिरे सकल चरणन शिर नाई * ल्याये मंदिर तिनहि लेवाई ॥
भक्तिसार सों सब यश गाये * आप प्रभाव नाथ दरशाये ॥
जो हम पूजन करे तुम्हारा * सो सब कीजे ग्रहण उदारा ॥
होत रही तहँ यज्ञ महाई * जुरी सकल ब्राह्मण समुदाई ॥
तेहि मख भक्तिसार कहँ ल्याई * दिय ऊंचे आसन बैठाई ॥
कियो अग्र पूजन है चेरो * यथा युधिष्ठिर यदुपति केरो ॥
तहां रहे पंडित अभिमानी * जे नहिं भक्तिरीति कछु जानी ॥
करन लगे तिनको सब निंदन * जेहि किय भक्तिसारको वंदन ॥
भक्तिसार निंदन सुनि काना * सभामध्य यह वचन बखाना ॥
जो सति होइ मोर विश्वासू * तो प्रगटै इत रमानिवासू ॥

दोहा-भक्तिसारके कहत अस, तिनके उरमें आसु ॥
चारि बाहु घनश्याम तनु, प्रगटे रमानिवासु ॥ १७ ॥
सिगरे प्रभुको निरखिकै, अचरज मनमहँ मानि ॥
भक्तिसारके चरणमहँ, परे गुमानहिं मानि ॥ १८ ॥

सो०-यहि विधि निज परभाव, भक्तिसार प्रगटत जगत ॥
करत अनेकनि भाव, रंगनगर चलि बसतभे ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ शठकोपकी कथा।

दोहा-अब वरणौं शठकोपकी, कथा सुनहु सब संत ॥
जानि परत अस जाहि सुनि, करुणाकर भगवंत ॥ १ ॥

दक्षिण देश सिंधुके तीरा * नदी ताम्रपर्णी गंभीरा ॥
तहँ कुरका नगरी अस नामा * सुन्दर सकल सुछबिकी धामा ॥
तहँ द्विज वैदिक बसत अनंता * शूद्रहु बसत निरत भगवंता ॥
तिन शूद्रन महँ यक मतिधामा * भो हरिजन पल्ली अस नामा ॥
ताके वंशमाहिं सब कोऊ * भे हरिभक्त बाल लघु सोऊ ॥
तिनमें भयो कारि अस नामा * जापक रामनाम वसु यामा ॥
नाथ नायिका नाम कतारी * गोपी सरिस भई हरि प्यारी ॥
सो इक दिवस कढी पथ ह्वैके * यकमंदिर महँ प्रभुकहँ ज्वैके ॥
मनहीमन तिय कियो प्रणामा * पुत्र देहु निज सरिस ललामा ॥
हरि तेहिं स्वप्न महँ अस भाषे * जो तैं मम सम सुत अभिलाषे ॥
मैंहो पुत्र होउँगो तेरे * यही मनोरथ है मन मेरे ॥
असकहि हरि भे अन्तर्धाना * नारी उर भो मोद महाना ॥

दोहा—कछुक कालमहँ तहँ तिया, गर्भवती भै सोइ ॥
काल पाइ प्रगट्यो तनय, गयो विश्वमुद मोइ॥ २॥

जन्मतहीते बालक सोई * नाहिं पय पियो मातुलों रोई ॥
रह्यो अष्ट वर्षहिलों मौना * कछु नहिं कह्यो रह्यो सो मौना ॥
हरिकी कृपा भयो तेहि ज्ञाना * बालकही वन कियो पयाना ॥
विपिन जाइ अस कियो विचारा * मिलैं मोहिं किमि नंदकुमारा ॥
कहुँ वन कहुँ पुर महँ सो आवै * हरिगुण गाय गाय सुख पावै ॥
बीते अष्ट वर्ष यहि भांती * भे प्रसन्न हरि तब यक राती ॥
यदुपालक बालक ढिग आई * प्रगट भये प्रकाश पसराई ॥
हरिको निरखि बढ्यो तनुप्रेमा * तबहु न तज्यो मौनकर नेमा ॥
रोमांचित तनु दृगजलधारा * अनमिष निरखत नाथ हमारा ॥
कीन्ह्यो हरि तेहि कृपा महाई * रसना बसी शास्त्र समुदाई ॥
हरिकह तजहु मौनव्रत प्यारे * गावहु गुणगण सकल हमारे ॥
अस कहि भे हरि अंतर्धाना * तब बालक किय हरि गुणगाना ॥

दोहा-शठन सुमति कीन्ह्यो अमित, करिअज्ञानकरलोप॥
तातें ताको जगतमें, भयो नाम शठकोप ॥३॥

तेहि पुर महँ यक विप्र सुजाना * भयो मधुर कवि नाम बखाना ॥
जन्महितें हरिभक्त सो भयऊ * जगतवासना क्षय ह्वै गयऊ ॥
तीरथ करन विप्र मन लायो * अवध आइ सरयू महँ न्हायो ॥
औरहु तीरथ कियो अनेका * ज्ञानवान युत धर्म विवेका ॥
पुनि कुरुका नगरी सो आयो * श्रीशठकोप दरश मन लायो ॥
निकट जाय करि दंडप्रणामा * भयो समाश्रुत गुणि तपधामा ॥
सकल शास्त्र दिय ताहि पढाई * यदुपति भक्ति रीति शिखवाई ॥
तहँ शठकोप वेदको अर्था * रचन भये सब शास्त्र समर्था ॥
सहस गाथ विरच्यो मतिधामा * तेहि सहस्र गीता अस नामा ॥
मधुरकविहि सो सकल पढायो * इतिहासहु पुराण तेहि आयो ॥
यकशत आठ विष्णुके धामा * भरतखंड महँ परम ललामा ॥

दोहा-तिनमें विचरत सर्वदा, गावत हरिगुण गाथ ॥
गुरु शिष्य यक सँग रहे, जीवन करत सनाथ॥४॥

सो०-गुणि अनन्य हरिदास, अति प्रसन्नह्वै ताहिपर ॥
दीन्ह्यों रमानिवास, बकुल माल यक सुंदरी ॥ १ ॥

दोहा-तातें बकुलाभरण अस, लह्यो नाम जगमाहिं॥
अमिलीके तरुकी तरी, करी कुटी भय नाहिं ॥५॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ कुलशेखर महिपालकी कथा।

सो०-अब वरणौं इतिहास, कुलशेखर महिपालको ॥
जाको सुयश प्रकाश, छाइ रह्यो तिहुँ लोममें ॥ १॥

केरलदेश अहै यक जोई * नगर अनंतसेन तहँ सोई ॥
तहँ कुलशेखर निवसत भयऊ * साधुचरण सेवन मन दयऊ ॥

उदयनरेश दिनेश प्रतापू ❀ अरी उलूक दुरे लहि तापू ॥
पान कुशोदककी लहिधारा ❀ बही सरित विय ढाहि करारा ॥
कामधेनु सुरतरु दिविमाहीं ❀ लखि कुलशेखर दान सिहाहीं ॥
राजकोष परिजन परिवारू ❀ गज वाजी दल नारि कुमारू ॥
सिगरो यदुपतिको नृप मान्यो ❀ हरिको दास निजहि पहिचान्यो ॥
हरिते अधिक गुण्यो हरिदासा ❀ उपजी कबहुँ न कौनिहुँ आसा ॥
संपति जासु धनेश सिहाहीं ❀ वासव विभव जासु सम नाहीं ॥
भूप चक्रवर्ती कुलशेखर ❀ जेहि वर्णत स्वयंभु शशिशेखर ॥
पुत्रसमान प्रजा नृप मान्यो ❀ सुखद साधु सेवन नित ठान्यो ॥
करत साधुसेवन महिपाले ❀ राज्य करत बीत्यो बहु काले ॥

दोहा–इष्टदेव संतन गुण्यो, सर्वस मान्यो संत ॥
संतनको सेवन गुण्यो, सेवन कमलाकंत ॥ १ ॥

एक समय भूपति भंडारा ❀ भंडारी नहिं हार निहारा ॥
जटित जवाहिर जेवर भारी ❀ भंडारी अस मनहिं विचारी ॥
कियो नेत यह वैष्णव द्रोही ❀ राजा अहै साधुको छोही ॥
साधुन छोंडि आन नहिं मानै ❀ करत रोज हमरो अपमानै ॥
ताते हम अस करैं उपाई ❀ देहि वैष्णवन चोर बनाई ॥
अस विचारि भूपति भंडारी ❀ बाहिर कढि अस दियो पुकारी ॥
साधु चारि भंडारे आये ❀ मोहिं दुरायके हार चोराये ॥
सुनि मंत्री कोशाधिप वाणी ❀ जाइ भूपसों गिरा बखानी ॥
प्रभु तुम वैरागी अनुरागी ❀ ते वैरागी परम अभागी ॥
जाय भंडारे हार चोरायो ❀ भंडारी मोहिं आइ सुनायो ॥
भूपति कह्यो साधु नहिं चोरा ❀ यह मनमें विश्वास है मोरा ॥
तब मंत्री अरु परिकर जेते ❀ साधु चोरायो कहि दिय तेते ॥

दोहा–तब राजा बोल्यो वचन, साधु चोरायो नाहिं ॥
साधुनकी बदि शपथ हम, करिहैं यहि क्षण माहिं ॥ २ ॥

असकहि एक कुंभ मँगवायो ❀ तामें कारो नाग डरायो ॥

मुद्राकनक तज्यो तेहि माहीं ❀ बोल्यो वचन भूप सब पाहीं ॥
हम यहि कुंभ माहँ कर डारी ❀ कंचनमुद्रा लेहि निकारी ॥
जो यह साधु चोरायो हारा ❀ तौ भुजंग कर डसै हमारा ॥
असकहि कुंभ माहिं कर डारी ❀ भूपति मुद्रा लियो निकारी ॥
डस्यो न ताहि भुजंग भयावन ❀ सेवक संत भूप अति पावन ॥
भये संत द्रोहिन मुख कारे ❀ तब सकोप नृप वचन उचारे ॥
साधुन चोरी वृथा लगायो ❀ सिगरे शठ मम धर्म नशायो ॥
ताते सकल सजा तुम पैहो ❀ जाते पुनि अस नाहिं बतैहो ॥
असकहि भूपति धर्म उदंडा ❀ दीन्ह्यो सब कहँ दंड प्रचंडा ॥
पुनि अस हुकुम दियो सब द्वारन ❀ करै न कोई सन्त निवारन ॥
जो वारन सन्तनको करि हैं ❀ कालपाश महँ सो जन परि हैं ॥
दोहा-तबते ताके नगरमहँ, यहि विधि भै मर्याद ॥
जहां सन्त चाहैं तहां, विचरैं लहि अहलाद ॥३॥
राजा राम उपासक पूरो ❀ विषय विलास रास रस झूरो ॥
बाढी रामभक्ति पर प्रीती ❀ रामभक्तिमहँ अति परतीती ॥
वाल्मीकिकृत अतिचितचायन ❀ सुभग मुक्ति भाजन रामायन ॥
वेदरूप वेदार्थ विख्याता ❀ चारि पदारथको जग दाता ॥
रामरूप रामायण सांचो ❀ सुर नर मुनिन सकल मनराचो ॥
श्रीवैष्णवको परम अधारा ❀ दीरघशरणागत श्रुति सारा ॥
रामायणते पर कछु नाहिं ❀ जिनके मुक्ति आश मन माहीं ॥
एक सर्ग एकहु सुश्लोका ❀ पढत सुनत नाशत सब शोका ॥
रामभक्तकी अस मर्यादा ❀ जीवतलों संयुत अहलादा ॥
एक सर्ग सुश्लोकहु एका ❀ सुनै पढै जन सहित विवेका ॥
रामायण पढि भोजन पाना ❀ करै सुमति अस वेद विधाना ॥
श्रीवैष्णवन जानि अस प्रेमा ❀ नृप रामायणपर किय नेमा ॥
दोहा-श्रद्धायुत प्रतिदिन सुनत, पढत जात जेहि काल ॥
भयो अनन्य उपासकै, भूपति दशरथकाल ॥ ४ ॥

एक समय पौराणिक आई ❀ बांचत रह्यो कथा सुखदाई ॥
कथा अरण्यकांडकी बांच्यो ❀ श्रोतन युत भूपति मनराच्यो ॥
बांचत बांचत कथा सुहाई ❀ खर दूषण गाथा जब आई ॥
रघुनन्दन अकेल धनु हाथा ❀ चले लरन राक्षस गण साथा ॥
चौदहि सहस निशाचर घोरा ❀ धाये कोशलपतिकी ओरा ॥
तब राजा मनमाहिं विचारा ❀ है अकेल मम प्रभु सुकुमारा ॥
खर दूषण दल भीम अपारा ❀ किमि करिहै दुष्टन संहारा ॥
तासु सहाय करब सब लायक ❀ चलो तुरंत जहां रघुनायक ॥
अस विचारि नृप उठ्यो तुरंता ❀ पहिरचो कुंड कवच बलवंता ॥
ढाल पीठि कटि कलि करवाला ❀ चढचो तुरंग तुरंत भुवाला ॥
शासन दीन्ह्यो वीरन काहीं ❀ चलैं समरहित मम सँग माहीं ॥
भूपति शासन सुनत प्रवीरा ❀ सजे समरहित सब रणधीरा ॥

दोहा–बज्यो नगारा भूपको, खर दूषण वधहेत ॥
साजि सैन्य भूपति चल्यो, श्रोतन सुनत समेत ॥५॥

तीनि कोश जब कढि नृप गयऊ ❀ मंत्रिनके उर विस्मय भयऊ ॥
भूपति मतो प्रेमरस मांहीं ❀ हमरे कहे लौटि है नाहीं ॥
साधुनको नृप निकट पठावैं ❀ ते समुझाइ प्रभुहि लौटावैं ॥
तब संतनको सचिव बोलाये ❀ तिनको कहि नृपनिकट पठाये ॥
संत नृप कहँ जाइ सुनाये ❀ हमहिं राम तुव पास पठाये ॥
प्रभुको शासन तुम सुनि लेहू ❀ जाते मिटै सकल संदेहू ॥
नाथ कह्यो अस हम रणमाहीं ❀ कियो विनाश निशाचर काहीं ॥
आये खल युग सात हजारा ❀ तिनहिं छार किय बाण हमारा ॥
जनकसुता सौमित्र समेतू ❀ पंचवटी निवसहिं सुख सेतू ॥
अस कहि भूपति पग धारै ❀ लौटि जाहि आपने अगारै ॥
यह सुनि कुलशेखर सुख पायो ❀ तेहि क्षण विजय निशान बजायो ॥
मानि आपनी जीति भुवाला ❀ लौट्यो संयुत सैन्य विशाला ॥

दोहा–खबरि कहे जे संत यह, तिनको मिलि बहुवार ॥
भूषण दियो अनेक नृप, कर विशेष सतकार ॥६॥

आये लौटि महल महराजा ❋ आइन भृत्यन सहित समाजा ॥
मंत्री मंत्र बैठि करि लीन्हे ❋ बोलि पुराणिकसों कहि दीन्हे ॥
जहँ जहँ राम दुःखकी गाथा ❋ तहँ तहँ तुम नहिं बांचहु नाथा ॥
जहँ अस कथा आइ परि जाई ❋ तहँ दीजै पत्रा उलटाई ॥
सुनत पुराणिक मंत्रिन बैना ❋ तेहि विधि बांचन लग्यो सचैना ॥
एक दिवस पौराणिक काहीं ❋ अवशि काज परिगो घरमाहीं ॥
ताते अपनो पुत्र पठायो ❋ बांचन कथा सभामधि आयो ॥
ताकी रही रीति नहिं जानी ❋ जौन उपाय सचिव सब ठानी ॥
सीताहरण कथा सब बांची ❋ भूपतिको लागी सब सांची ॥
रावण आइ हरयो वैदेही ❋ लैगो लंक भीति नहिं तेही ॥
इतना सुनत भूपकर कोपा ❋ चह्यो करन रावण कर लोपा ॥
सभा मध्य अस गिरा उचारी ❋ हरयो लंकपति मातु हमारी ॥

दोहा–रावणको हनिकै सकुल, लै सीता निजमात ॥
कौशलपतिको देहिंगे, तबै सत्य मम बात ॥ ७ ॥

असकहि कह्यो बजाउ नगारा ❋ सजै सकल दल आजु हमारा ॥
जो कोउ होइ मोर हितकारी ❋ सो रावण पर करै तयारी ॥
यतना सुनत सुभट सब जेते ❋ सजे सकल संगर हित तेते ॥
रथ मातंग तुरंग अपारा ❋ मंत्री सुहृद सुवन सरदारा ॥
सजे सकल नृप संग सिधारे ❋ चल्यो धरापति धनु शर धारे ॥
बार बार नृप करत उचारा ❋ आजु करब रावण संहारा ॥
सूधो कर सागरपर हल्ला ❋ रावणको लैलेव महल्ला ॥
प्रभु रघुनायक जान न पैहैं ❋ हम रण मारि शत्रु सिय लैहैं ॥
यहि विधि भनत नरेश उछाहा ❋ चल्यो तुरँग चढि कसे सनाहा ॥
यद्यपि बहुत जन बारन कीन्हे ❋ तदपि न भूप चित्त कछु दीन्हे ॥
आजु करब रावण संग्रामा ❋ जय राजीव विलोचन रामा ॥
जात जात यहि विधि रणधीरा ❋ पहुँच्यो जाइ सिंधुके तीरा ॥

दोहा–महाभयावन सिंधु जल, उठत तरंग अपार ॥
गर्जत कोटिन मेघसम, पार जाब दुरवार ॥ ८ ॥

तदपि न भूप भीति कछु कीन्ह्यों ❋ रामकाजमहँ निज मन दीन्ह्यों ॥
रामकाज लगि लगे शरीरा ❋ तौ उपजै नाहिं तनु कछु पीरा ॥
अस विचारि रघुवरको दासा ❋ रावण विजय राखि उर आसा ॥
हनि ताजन बाजी धनुधारी ❋ दियो तुरंग सिंधु महँ डारी ॥
कण्ठ प्रयंत गयो जब राजा ❋ तब ताको सब सैन्य समाजा ॥
रथ तुरंग मातंग अपारा ❋ कूदिपरे सब सिंधु मँझारा ॥
हाहाकार मच्यौ चहुँ ओरा ❋ बूड्यो सिंधु भक्त शिरमोरा ॥
भाइन भृत्यन सुवन समेतू ❋ सचिव सैन्य युत नृप मतिकेतू ॥
बूडत जानि सिंधु तेहि काला ❋ सीतापति प्रभु दीनदयाला ॥
सीय लषण युत कृपानिधाना ❋ लै कपिदल चढि पुष्पविमाना ॥
प्रगट भये कृपालु रघुनाथा ❋ कह्यो आइ गहि भूपति हाथा ॥
गमनहु नृपति लंक अब नाहीं ❋ हम मारयो रावण रणमाहीं ॥

दोहा–लै सीता लछिमन सहित, चढिकै पुष्प विमान ॥
भरत मिलन हित करत हम, कौशलनगर पयान ॥९॥

असकहि जलते भूपति काहीं ❋ ठाढ कियो कर गहि तटमाहीं ॥
रामकृपा भूपतिकी सैना ❋ गई सकल बाचि पायो चैना ॥
राजा प्रभुकी प्रस्तुति कीन्ह्यों ❋ आपन जन्म धन्य गुणि लीन्ह्यों ॥
पुनि भूपतिसों कह रघुनायक ❋ कुलशेखर तुम हौ सब लायक ॥
अब हम जात अवधपुर काहीं ❋ भरत लखन लालस उरमाहीं ॥
जो हम आजु अवध नाहिं जैहैं ❋ तौ भरतहि जीवत नाहिं पैहैं ॥
अस कहि भे प्रभु अंतर्द्धाना ❋ राजा लह्यो अनंद महाना ॥
सैन्य सहित अपने पुर आयो ❋ बारहि बार निशान बजायो ॥
भूप अनन्य रामकर दासा ❋ वस्यो भवनमहँ पाय हुलासा ॥
सकल राज्य वैष्णव आधीना ❋ करत भयो नरनाथ प्रवीना ॥
नित्य राम उत्सव नृप करई ❋ संतन उर आनँद अति भरई ॥
कोउ पुर महँ अस रह्यो न बाकी ❋ नहिं जाकी मति हरिरति छाकी ॥

दोहा–घर घर रामायण प्रजा, सुनत नेमकर नित्त ॥
रामनाम अंकित भवन, रामचरण रति चित्त ॥ १० ॥

जेहि पुर वसत नरेश प्रवीना ❀ तहँते कोश रंगपुर तीना ॥
रंगनाथ पूजनकी साजू ❀ सब विधि साजि समेत समाजू ॥
संतन सहित रोज महराजा ❀ चलत रंग दरशनके काजा ॥
कहुँ पुर बाहिर कहुँ यक कोसा ❀ जब कढि जाय नरेश अदोसा ॥
जहँ संत कोउ मिलिजावै ❀ रंगनाथ सम तेहि नृप भावै ॥
रंगनाथ पूजनकी साजू ❀ सोइ संत पूजन महराजू ॥
ल्यावै ताहि निवेश लेवाई ❀ जानै घर आये रघुराई ॥
यही भांति जबते किय राजू ❀ जबलों जियत रह्यो महराजू ॥
रंगनगर गमन्यो नृप नाहीं ❀ मान्यो हरि सम संतन काहीं ॥
रंग दरशहित रोजहि जावै ❀ साधु पाइ तेहि निज घर लावै ॥
रघुपति सरिस संत कहुँ मानत ❀ अपनेको लघु किंकर जानत ॥
यहि विधि कुलशेखर महराजू ❀ कियो राज्य भूपति शिरताजू ॥

दोहा-काल पाइ संतनचरण, रज अपने शिर धारि ॥
दै निशान तिहुँ लोकमें, गो साकेत सिधारि ॥ ११ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ विष्णुचित्तकी कथा।

दोहा-विष्णुचित्त स्वामी चरित, अब बरणौं सुखदानि ॥
सुनहु सकल श्रोता सुमति, सुनत अखिल अघहानि ॥ १ ॥

दक्षिण देश सिंधुके तीरा ❀ पांडुदेश नाशक सब पीरा ॥
तहँ यक धन्विनगर अतिपावन ❀ उपवन वनवाटिका सुहावन ॥
विप्रमुकुन्द नाम यक रहेऊ ❀ धर्मरीति सब विधि सो गहेऊ ॥
पद्मानाम रही तिन नारी ❀ तनमनते पति सेवन कारी ॥
तेहि पुरमहँ प्रभु दीनपरायण ❀ वटदल सांई श्रीनारायण ॥
मंदिर महा मनोहर जाको ❀ सुंदररूप सदन सुखमाको ॥
तेहि मुकुन्द नित पूजन करही ❀ यथालाभ संतोषहि धरही ॥
द्विज मुकुन्दके सुत नहिं भयऊ ❀ ताते अति शोकित है गयऊ ॥

भन्यो मुकुंद मुकुंदहि काहीं * तब हरि भये प्रसन्न तहाहीं ॥
कह्यो स्वप्नमहँ यक सुत ह्वै है * जाको सुयश चहूं दिशि वैहै ॥
काल पाइके भयो कुमारा * विष्णुचित्त तेहिं नाम उचारा ॥
जातकर्म माता पितु कीन्हे * विप्रन दान विविध विधि दीन्हे ॥

दोहा—हरिपार्षद जेते अहैं, तिनमें परम प्रधान ॥
विष्वक्सेन सुनाम जेहि, जासु प्रकाश अमान ॥ २ ॥

ऐसे विष्वक्सेन कृपाला * आये सुत समीप यक काला ॥
कियो शङ्ख चक्रांकित ताको * ऊर्ध्व पुंड्र दिय परम प्रभाको ॥
संस्कार करि बालक केरो * कीन्हो बहुरि विकुंठ बसेरो ॥
विष्णुचित्त जब भये सयाने * करन साधु सेवन मन आने ॥
साधुसमाजहि रोजहि जाई * करहिं संत सब विधि सेवकाई ॥
सेवत साधुन भयो अघाऊ * विष्णुचित्तको बढ्यो प्रभाऊ ॥
विष्णुचित्त मन कियो विचारा * प्रभुके अहैं जे दश अवतारा ॥
तिनमें महामनोहर रूपा * जानि परत मोहिं यदुकुल भूपा ॥
तिनको सेवत काल बिताऊं * ऐसो दीनबंधु कहँ पाऊं ॥
यदुपति चरण बढ्यो अनुरागा * सबसों कहन लग्यो बडभागा ॥
देखो यदुपतिकी करुणाई * पार न पाव वेद जेहिं गाई ॥
नारदादि सनकादि मुनीशा * ध्यानहि धरत जासु पद शीशा ॥

दोहा—ब्रह्म शक्र शिव आदि सुर, करत जासु नित ध्यान ॥
सो यदुपतिको गोपिका, करवावति पयपान ॥ ३ ॥

मथ्यो सिंधु बांध्यो बलिराजै * बँध्यो उलूखल माखन काजै ॥
कंसवधन हित मथुरा जाई * मालीके घर गयो सिधाई ॥
माली माला इक पहिराई * भक्तिमुक्ति दीन्हो यदुराई ॥
हन्यो कंस मथुरा महँ जाई * पुनि द्वारावति गयो सिधाई ॥
पांडव वाजि बाग धरि हाथा * तिनके दूत सूत भे नाथा ॥
क्षीरसिंधु तजि सो प्रभु आई * बसे धन्विपुर देखहु भाई ॥
तिनको है अतिशय प्रिय माला * ताते हम रचि माल विशाला ॥

अपने हाथनसों पदिरै हैं * करिसेवन निज नाथ रिझैहैं ॥
अस कहि निज वाटिका बनायो * विविध भांतिके कुसुम लगायो ॥
अपने हाथनसों रचि माले * पहिरावै नित देवकिलाले ॥
यहि विधि बस्यो कृष्ण अनुरागी * जियमें प्रेमभक्ति अनुरागी ॥
तहँ दक्षिण मथुरा इक नगरी * पूरित प्रजा अनूपम सिगरी ॥
दोहा-तहँ इक वल्लभदेवको, नाम भयो महिपाल ॥
धर्मधुरंधर शास्त्ररत, किय सुधर्म जनपाल ॥ ४ ॥
राज्य कियो राजा बहुकाला * लहै प्रजा नहिं कनक कशाला ॥
एक समय अधरातहि माहीं * राजा कढ्यो अकेल तहांहीं ॥
लागन लग्यो रूप निज गोई * निरख्यो तहँ वैष्णव इक कोई ॥
सोवत पथ महँ परम अभीता * तेजवंत हरिदास पुनीता ॥
राजा पूछयो ताहि जगाई * को तुम वसे कहांते आई ॥
साधु जागि भूपति जिय जानी * कह्यो विप्र लीजै मोहिं मानी ॥
हम मज्जनकरि सुरसरि माहीं * सेतुबंध रामेश्वर जाहीं ॥
तब राजा करि ताहि प्रणामा * बोल्यो वचन महामति धामा ॥
जामें मोर होइ कल्याना * सो वैष्णव तुम करहु बखाना ॥
तबहिं साधु बोल्यो मुसकाई * है कल्यानकि यही उपाई ॥
जैसे आठ मास रोजगारी * करि मेहनत जोरत धन भारी ॥
चारि मास बैठे घर खावै * वर्षा काल अनत नहिं जावै ॥
दोहा-चारि पहर जिमि कामकरि, सुख सोवै जन रैन ॥
युवा उमिरि उद्यम करै, करै बुढाई चैन ॥ ५ ॥
तैसहि मनुज जन्म जिय पाई * लेहि अवशि परलोक बनाई ॥
सौ पचास इत वर्षन माहीं * करै जो पुण्य पापहूं काहीं ॥
सो उत लाखन वर्षन भोगै * ऐसो है सब शास्त्र नियोगै ॥
बनै जौन विधि नृप परलोका * सोई कर्म करौ तजि शोका ॥
सुनि राजा वैष्णवकी वानी * मनमें लियो यथारथ जानी ॥
लौटि आपने घरको आयो * प्रात पुरोहितको बोलवायो ॥

कह्यो पुरोहितसों अस बानी ❋ केहि विधि बनै जन्म मतिखानी ॥
तब अस कहे पुरोहित बाता ❋ बोलहु सब पंडित अवदाता ॥
तिनसों पूछेहु भूप उपाई ❋ दैहैं ते सब भांति बताई ॥
तब राजा निज सभा मँझारी ❋ गाड्यो खंभ एक अतिभारी ॥
तामें मुद्रा धरि दश लाखा ❋ सब पंडितन वचन अस भाखा ॥
कहै कोउ परलोक उपाई ❋ सो दश लाखो मुद्रा पाई ॥
दोहा-सभा मध्य पंडित सकल, निज २ मति अनुसार॥
कहन लगे बहु विधि वचन, परयो न एक विचार ६
विष्णुचित्त कह तब यदुराई ❋ धन्विपुरी महँ कह्यो बुझाई ॥
मधुरापुरी जाहु तुम ज्ञानी ❋ राजहि लेउ दास मम जानी ॥
भूपति कह्यो ज्ञान उपदेशा ❋ मिटै नाहिं संसार कलेशा ॥
विष्णुचित्त सुनि प्रभुके बैना ❋ मथुराको गमने भरि चैना ॥
सभा मध्य प्रविशे जहँ राजा ❋ विष्णुचित्त लखि उठी समाजा ॥
राजा कियो ताहि परणामा ❋ सादर सतकारयो मतिधामा ॥
पूंछयो नृप परलोक उपाई ❋ विष्णुचित्त तब दियो बताई ॥
भजहु भूप यदुपति पदकंजन ❋ और उपाइ नहीं भव भंजन ॥
राजा सत्य निदेश विचारी ❋ पावत भयो मोद अति भारी ॥
विष्णुचित्तको शिष्य भयो पुनि ❋ दश लाखो मुद्रा दिय प्रभु गुनि ॥
उत्सव कियो नगर महँ राजा ❋ आइन भृत्यन जोरि समाजा ॥
विष्णुचित्त कहँ नाग चढाई ❋ नगर प्रदक्षिण किय नरराई ॥
दोहा-अगणित पुरवासी चले, अवनीपतिके संग ॥
विष्णुचित्त आगे लसत, चढे तुंग मातंग ॥ ७ ॥
जय जय करत सकल पुरवासी ❋ भये सकल हरि दरशन आसी ॥
राजहु अस चाह्यो मनमाहीं ❋ केहि विधि लखौं यदूत्तम काहीं ॥
विष्णुचित्त सबको मन आसा ❋ जान्यो हरि प्रभाव हरिदासा ॥
कियो विनय प्रभुपहँ तेहि काला ❋ प्रगटहु इत अब दीनदयाला ॥
प्रगटे बिना जाते मम बाता ❋ तुम तो भक्त मनोरथदाता ॥

भक्त मनोरथ जानि मुरारी * प्रगट भये प्रकाश प्रसारी ॥
गरुड सवार रमा सँग माहीं * अतुलित छबि नाहिं बरणिसिराहीं॥
लह सब पुरजन दरशन पाये * सिगरे विष्णुचित्त यश गाये ॥
राजा धन्य जन्म निज मान्यो * प्रेम विवश तनु मानु भुलान्यो ॥
विष्णुचित्त लै कुसुम सुमाला * पहिरायो गल देवाकलाला ॥
बार बार प्रभु प्रस्तुति गायो * भक्तवश्यता नाथ देखायो ॥
भये नाथ पुनि अंतर्धाना * जयरव भो चारिहु दिशाना ॥

दो०-यहि विधि पुरजन सहित नृप, विष्णुचित्त शिरनाइ
क्रियसानंद प्रवेश पुर, धनि निज भाग्य गनाइ॥८॥
विष्णुचित्त पुनि धनिपुरी, बसे आइ मतिवान ॥
जौन रही सम्पति सकल, अर्प्यो श्रीभगवान॥९॥
भक्त अधीन मुकुंद प्रभु, विष्णुचित्तके पास ॥
शालिग्राम शिला सरिस, कीन्ह्यो प्रगट निवास १०

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ अंघ्रिराजकी कथा।

दोहा-भक्त अंघ्रिरज नाम जेहि, महाभागवत सोइ ॥
तासु कथा वर्णन करौं, सुनहु संत मुदमोइ ॥ १ ॥

चौल महेश्वर दक्षिण देशा * कावेरी तट सुखद हमेशा ॥
मंडगुटि तहँ नगर अनूपा * रह्यो तहांकर धार्मिक भूपा ॥
विप्र सप्तदश वैदिक ज्ञानी * बसत रहे तहँ परम प्रमानी ॥
एक समय हरि कियो विचारा * कलियुग महँ जन अघी अपारा ॥
मेरो दरशन कैसे पैहैं * कैसे कै भव पारहि जैहैं ॥
अस विचारि प्रभु प्रगट भये तहँ * रंगनाथ अस धरचो नाम कहँ ॥
नगर मंडगुटि रंगनगरते * रह्यो न बहुत दूरि पुरवते ॥
नगर मंडगुटि महँ इक काला * लिय अवतार कृष्ण वनमाला ॥
नाम तासु नारायण भयऊ * जन्महिते ज्ञानी है गयऊ ॥

जातकर्म माता पितु कीन्हे * पुनि व्रतबन्ध तासु करि दीन्हे ॥
सो तजि भवन रंगपुर आयो * रंग चरणसेवन चित लायो ॥
रंगनाथ पूजन नित करहीं * भिक्षा मांगि उदर निज भरहीं ॥

दोहा-पर्णकुटी तृणकी रच्यो, तहँ वाटिका लगाइ ॥
निज कर तुलसी फूल लै, अरपै माल बनाइ ॥ २ ॥

निज हाथनसों वृक्ष लगावै * निज हाथनसों तेहिं जलनावै ॥
तहँ यक निचुलापुरी विशाला * तहँ को रह्यो जौन महिपाला ॥
ताके रहीं वारतिय दोई * रूपवती रंभा छवि खोई ॥
तेहि नृप निकट काल बहु रहिकै * है उदास कछु कारण लहिकै ॥
रंगनगर गवनी गणिकाते * लै सहचरी अनेक तहांते ॥
रंगनगर संनिधि छविपागा * रह्यो विप्र नारायण बागा ॥
महामनोहर लखि आरामा * करन लगीं दोऊ विश्रामा ॥
शोचत रहे तरुन तेहि काला * नारायण हरिदास विशाला ॥
दोऊ यदपि रहीं रंभासी * लखत परै गल मनसिज फांसी ॥
तदपि तिन्हे नारायण दासा * कियो न तनक तनककी आसा ॥
तब छोटी भगिनी तेहि केरी * जेठी भगिनी कहँ अस टेरी ॥
यह नर धौं पषाणकर कहई * धौं बिन जीव वाटिका रहई ॥

दोहा-याके सन्मुख हम दोऊ, बैठी रूप बनाय ॥
हमपै तनक तकै नहीं, अचरज लगत महाय ॥ ३ ॥

जो यहिको वश करु छबिवारी * तौ हम दासी होयँ तिहारी ॥
तब जेठी छोटीसों बोली * अपने उरकी आशय खोली ॥
यहि न करौं वश जो यहि बेरी * हमही होब दासिका तेरी ॥
जेठी को दै सकल सहेली * आप चली वश करन अकेली ॥
सिगरो भूषण वसन उतारी * गणिका पहिरि एकही सारी ॥
परी विप्रके चरणन जाई * बोली गिरा महा सुखदाई ॥
मैं हौं वारवधू द्विजराई * छोंडि कुटुंब शरण तुव आई ॥
राखहु म्वहि अपनी सेवकाई * सिंचिहौं मैं वाटिका सदाई ॥

भिक्षा मांगि जौन तुम ल्यावहु * अपनो जूठन मोहिं खवावहु ॥
सुनि नारायण गणिका वानी * परमप्रीति ताकी पहिंचानी ॥
लियो आपने कुटी टिकाई * तासों खिचवावहिं फुलवाई ॥
भिक्षा मांगि अन्न जो ल्यावै * अपनो जूंठन ताहि खवावै ॥
दोहा-यहि विधि बीते कालकछु, लाग्यो मास अषाढ ॥
घन घुमंड चहु वोरते, वर्षा कीनी गाढ ॥ ४ ॥
महावृष्टि लहि परम सुखारी * वारवधू गे कुटी मझारी ॥
सोवत रहे विप्र नारायण * इंद्रिय जित अति धर्म परायण ॥
चापन लगी चरण मनहारी * कोमल पंकज पाणि पखारी ॥
जागि उठो द्विज तेहि क्षण माहीं * रह्यो न धीर निरखि तियकाहीं ॥
वारवधू दृग बाण चलाई * लिय मन मनसिज फांस फँसाई ॥
यदपि रहे अति धीरज धारी * तदपि लगी हिय काम कटारी ॥
विसरयो सकल धर्म अरु ज्ञाना * तनुते किय वैराग्य पयाना ॥
रम्यो ताहि लै कुटी मझारी * धर्म कर्म निज सकल बिसारी ॥
याही ते कह वेद पुराना * करै जो कोउ वैराग्य विज्ञाना ॥
रहै न संग इकांतहि नारी * नारी डालति सकल बिगारी ॥
वारवधू लै विप्र तहांई * रहन लगे वैसिकके नाई ॥
रंगनाथ सेवन सब भूलो * काम विटप उरमें अति फूलो ॥
दो०-यहि विधि लै निजसंग द्विज, गवन भवन कहँ कीन
हाव भाव करिके अमित, चेरोसो करि लीन ॥ ५ ॥
भगिनीसों अस जाय सुनाई * कियो सत्य प्रण जो मैं गाई ॥
ताहि सराहन लगीं सयानी * तुव सम कोउ न रूप गुणखानी ॥
विप्रचित्त जो कछु घर रहेऊ * वारवधू सरबस सो गहेऊ ॥
जब कछु रह्यो न द्विज घरमाहीं * तब आदर कीन्ह्यो कछु नाहीं ॥
द्विजको घरते दियो निकारी * वारवधू पीठहि पद मारी ॥
गणिका विवश रह्यो महिदेवा * तदपि तज्यो नाहिं ताकी सेवा ॥
परे रहैं ताहीके द्वारा * मिलै न यद्यपि कछू अहारा ॥
एक समय जब भइ अधराता * तब प्रभु भुक्ति मुक्तिके दाता ॥

कमला कर गहि विचरन हेतू ❋ कढे नगर महँ कृपानिकेतू ॥
सोइ गणिका द्वारे है नाथा ❋ निकसत भयो रमाके साथा ॥
गणिका द्वार देखि द्विज काहीं ❋ हँसत भये पछिताय तहाँहीं ॥
पूछ्यो रमा हँस्यो प्रभु कैसो ❋ देहु बताय प्रयोजन जैसो ॥
दोहा—प्रभु कह यह द्विज माल रचि, रह्यो चढावत मोहि ॥
सो विवेक तजि वश भयो, गणिकाको मुखजोहि ॥ ६ ॥
तब कमला बोली मुसकाई ❋ तव जन किमि दिय धर्म विहाई ॥
तुम्हरो दास विषय वश होई ❋ यह अचरज मानी सब कोई ॥
ताते प्रभु पूरण करि आसा ❋ निर्मल करहु आपनो दासा ॥
सुनि कमलाके बैन कृपाला ❋ लै कंचन भाजन तेहि काला ॥
गणिका भवन गवन प्रभु कीन्ह्यो ❋ ताहि जगाय वचन कहि दीन्ह्यो ॥
नारायण द्विज मोहिं पठायो ❋ तोहिं देन कछु मैं इत आयो ॥
सुनि गणिका द्रुत खोलि कपाटा ❋ जोहन लगी नरायण बाटा ॥
तेहि कंचन भाजन प्रभु दीन्ह्यो ❋ गणिका मोद सहित लै लीन्ह्यो ॥
कहत भई हे दूत तुराई ❋ ल्यावहु नारायणहि बोलाई ॥
दूत रूप धरि द्रुत प्रभु आये ❋ नारायणको वचन सुनाये ॥
जाके हित तैं अति दुख पावै ❋ प्राणप्रिया सो तोहिं बोलावै ॥
वचन सुनत नारायण काना ❋ मान्यो बहुरि मिले मम प्राना ॥
दोहा—दौरतहीं गमनत भयो, द्रुत गणिकाके गेह ॥
रंगनाथ मंदिर गये, कियो दास पर नेह ॥ ७ ॥
भयो भोर तब आय पुजारी ❋ तहां न कंचन पात्र निहारी ॥
चहुं ओर माच्यो अस शोरा ❋ कंचनपात्र चोरायो चोरा ॥
हेरन लागे सबै पुजारी ❋ राजाके ढिग कह्यो पुकारी ॥
भूपति दूत नगरमहँ हेरे ❋ गणिकाके घर पात्रहि हेरे ॥
भूपहि कह्यो दूत तब जाई ❋ गणिका लीन्ह्यों पात्र चोराई ॥
राजा वेश्या पकरि बोलायो ❋ गणिका संग नारायण आयो ॥
राजा कह्यो पात्र कहँ पायो ❋ वारवधू तब वचन सुनायो ॥

दूत हाथ मोहिं विप्र पठायो ❋ द्विज कह दूत कहां मैं पायो ॥
गणिका अरु नारायण केरो ❋ होत भयो संवाद घनेरो ॥
तब राजा कह सचिव बोलाई ❋ पात्र देहु मंदिर पठवाई ॥
इन दोइमें जो होवै चोरा ❋ पावै तौन दंड अति घोरा ॥
तौने निशा स्वप्न महँ आई ❋ राजा कहँ भाष्यो यदुराई ॥
दोहा–नारायण हैं दास मम, भयो विषय आधीन ॥
यहि हित हमहीं पात्र लै, वारवधू कहँ दीन ॥ ८ ॥
राजा जागि सभा महँ आयो ❋ द्रुत नारायण द्विजहिं बोलायो ॥
किय प्रणाम नरनाह उदारा ❋ क्षमहु विप्र अपराध हमारा ॥
तुम तो हौ अनन्य हरिदासा ❋ तुम्हरे हित हरि कियो प्रयासा ॥
कंचन भाजन गणिकहि दीन्ह्यों ❋ दूत कर्म तुम्हरे हित कीन्ह्यों ॥
अस कहि छोंडि दियो दोउ काहीं ❋ गणिका गै अपने घर माहीं ॥
विप्र विचार कियो तिहि काला ❋ मोर नाथ है दीनदयाला ॥
धिग धिग मोहिं अस नाथ विहाई ❋ भयो विवश गणिकाके जाई ॥
अस विचारि मंदिर द्विज आयो ❋ रुदन करत प्रभुको शिर नायो ॥
बार बार कह प्रभुहिं पुकारी ❋ मेरे नहिं प्रभु संपति भारी ॥
वारवधू लागी मम छाती ❋ प्रायश्चित्त करों केहि भांती ॥
अस कहि व्रत करि भूसुर सोई ❋ रोवत सोइ रह्यो दुख गोई ॥
स्वप्न माहँ कह द्विजहि मुरारी ❋ प्रायश्चित्त करहु अस भारी ॥
दोहा–तीरथ सब अरु व्रत सकल, यज्ञ सकल अरु दान ॥
संतचरण जलमें बसत, ताहि करौ तुम पान ॥ ९ ॥
भोर जागि द्विज लहि सुख भारी ❋ सब साधुन पद लियो पखारी ॥
सादर किय चरणामृत पाना ❋ मिटे अनंत जन्म अघ नाना ॥
तबते सकल संत मतिधामा ❋ दिय भक्तांघ्रि रेणु अस नामा ॥
तबते सकल आश द्विज छोडी ❋ भज्यो अनंद रमा हरि जोडी ॥
विविध भांति रचिपद हरि केरे ❋ गावैं रंग नाथके नेरे ॥
सो गणिका हरि चरित विलोकी ❋ मानि गलानि भई अति शोकी ॥

घरकी संपति संतन दीन्ही ❀ आप विरति पंथा गहि लीन्ही ॥
रंगनाथके मंदिर जाई ❀ त्राहि त्राहि कहि पद शिर नाई ॥
क्षमहु नाथ मेरो अपराधा ❀ तुम्हरे शरण न एकौ बाधा ॥
रचि रचि कोमल पद सुखदाई ❀ गावति निशि दिन लाज बिहाई ॥
साधुनको जूंठन नित खाती ❀ प्रेममग्न चितवति दिन राती ॥
कछु दिन महँ गणिका हरिदासी ❀ भै वैकुंठ नगरकी वासी ॥
दोहा—देखहु रे भाई सकल, यह सतसंग प्रभाउ ॥
गणिका पाई परमपद, लग्यो न कलिकर दाउ ॥ १० ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ चोलमहीपकी कथा।

सो०—अब बरणौं इतिहास, सुंदर चोलमहीपको ॥
सुनहु संत सहुलास, निचुला नगरी जो रह्यो ॥ १ ॥
धर्मधुरंधर धरणि अधीशा ❀ नित नावत संतन पदशीशा ॥
क्षत्री जाति विप्र पद सेई ❀ परम प्रतापी शत्रु अजेई ॥
सत्यसंध अति सुंदर दानी ❀ गो द्विज देव सदा सनमानी ॥
भूप अनन्य रंगपति दासा ❀ विषय विहीन भक्तिकी आसा ॥
निचुला नगरी परम सोहावनि ❀ जामें बसति विप्रतति पावनि ॥
नृपकर यक अभिराम अरामा ❀ जामें जात मिलत मनकामा ॥
रोज राव वाटिका सिधारे ❀ प्रभु अर्पण हित कुसुम उतारे ॥
तेहि वाटिका मध्य छबि छाई ❀ सरसी रही एक सुखदाई ॥
एक समय नृप गये प्रभाता ❀ तोरन लगे विमल जलजाता ॥
तहँ निरख्यो सरसीके तीरा ❀ कन्या एक सुछबि गंभीरा ॥
को हौ तुम पूछ्यो नरनाहा ❀ कन्या बोली सहित उछाहा ॥
का करिहौ नृप पूछि प्रसंगा ❀ चाहहिं हम श्रीपति अँग संगा ॥
दोहा—और पुरुषकी आश नाहिं, कर इतनो उपकार ॥
रंगनाथके संगमें, होइ विवाह हमार ॥ १ ॥

भूपति महा भागवत जानी * कन्या को अपने घर आनी ॥
ताको निज कन्या नृप मान्यो * तासु विवाह नाथ सँग ठान्यो ॥
जाइ रंगमंदिर महँ राजा * कीन्ह्यों विनय प्रेम भरि काजा ॥
भौन आइ पुनि तिलक पठायो * लग्न सोधाइ बरात बोलायो ॥
सत्य पुहुमिपति प्रेम विचारे * प्रभु प्रत्यक्ष पालकी सवारे ॥
मंदिरते कढि नृप घर आये * विधि विवाहकी सकल कराये ॥
राजा दीन्ह्यों कन्यादाना * अपने कर लीन्ह्यों भगवाना ॥
लै कन्या मंदिर पगु धारा * माचि रह्यो पुर जयजयकारा ॥
निज सर्वस दिय दाइज राजा * मान्यो अपनेको कृतकाजा ॥
कन्या लीन भई हरिमाहीं * नृप कीरति फैली मनमाहीं ॥
भूपति छन्तन जूंठनकाहीं * रंगद्वार महँ रहैं सदाहीं ॥
प्रेम प्रभाव लखहु सब भाई * प्रगट विवाह कीन यदुराई ॥

दोहा—धनि भूपति धनि कन्यका, धनि नगरीके लोग ॥
जे देख्यो प्रत्यक्ष यह, हरि विवाह संयोग ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ जोगिबाहकी कथा ।

दोहा—जोगिबाह हरिभक्तको, कहौं सुभग इतिहास ॥
रंगनाथको पद विरचि, कीन्ह्यो भवदुख नास ॥ १ ॥

सोइ निचुला नगरी माहीं * रह्यो शूद्र इक रचि घर काहीं ॥
ताकी गर्भवती भै नारी * हरि तेहि कृपा कटाक्ष निहारी ॥
गर्भहिमें उपज्यो तेहि ज्ञाना * बालक भयो विज्ञान निधाना ॥
रोवत गावत हँसत बतातो * राम नाम मुख निकसत जातो ॥
बिन हरिनाम कढै नहिं बानी * हरिको सुमिरत उमिर सिरानी ॥
द्वादश वार्षिक भो जब बालक * तज्यो कुटुंब सुमिरि यदुपालक ॥
रंगनगर महँ बस्यो सिधारी * रचन लग्यो हरिपद मनहारी ॥
सुर मूर्च्छना ग्राम लै ताला * गावत कृष्ण सुयश सब काला ॥

याम यामके राग रागिनी ❀ हरि पदावली मोद पागिनी ॥
रंगद्वार महँ गाय सदाहीं ❀ कालक्षेप करत सुखमाहीं ॥
प्रेम मगन ढारत दृग आंसू ❀ गावत रहै न भूंख पियासू ॥
रैन दिवस तेहि गान अपारा ❀ भूलौ सकल सुरति संसारा ॥

दोहा—एक समय अधरातकै, सुकवि करत रह गान ॥
ह्वै प्रसन्न सुनि गान कह, कमलासों भगवान ॥ २ ॥

सुकवि नाम मम दास सुजाना ❀ रचि पद करत मोर यश गाना ॥
अतिशय नीक लगत मोहिं प्यारी ❀ तब बोलीं पुनि सिंधुकुमारी ॥
रुचत तुमहिं जो गायक गाना ❀ तौ बोलवावहु ढिग भगवाना ॥
रमा वचन सुनि गुनि जन अपनो ❀ सुकविपूजकाहि दियो प्रभु सपनो ॥
गायक सुकविनामपहँ जाई ❀ ल्यावहु मम ढिग तुरत लेवाई ॥
पूजक सुकवि जागि निशिमाहीं ❀ मन्दिर खोलि कपाटन काहीं ॥
बाहिर कढि हेरन तेहि लागा ❀ कहँ गावत गायक बडभागा ॥
सुकवि बैठि कावेरी तीरा ❀ गान करत रह प्रेम अधीरा ॥
सुकवि पूजक तेहिं कन्ध चढायो ❀ रंगनाथके ढिग पहुँचायो ॥
रंग चरण ढिग गावन लग्यो ❀ हरिहू तासु प्रेम महँ पाग्यो ॥
दैके मार पूजक पगु धारयो ❀ भोर भये पुनि द्वार उघारयो ॥
लखो सुकवि कहँ तेहि थल नाहीं ❀ लीन भयो हरिचरणन माहीं ॥

दोहा—केवल हरि यश गानते, सुकवि पाय अनुराग ॥
गोपद सम भवनिधि तरयो, लग्यो न कलियुग दाग ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ भक्तपरकालकी कथा।

सो०—भयो भक्त परकाल, तासु कथा अब कहतहौं ॥
श्रोता बुद्धि विशाल, सुनहु सबै चित लाइकै ॥ १ ॥

कावेरी पश्चिम तटमाहीं ❀ नाम पुरी परिरंभ तहांहीं ॥
तहँ इक शूद्र नील अस नामा ❀ रह्यो शम्भुपद रत बलधामा ॥

महामनोहर तासु स्वरूपा ❀ गुणआगर नागर कवि भूपा ॥
याचक कल्पवृक्ष तेहि जान्यो ❀ रमनी तेहिं रतिपतिअनुमान्यो ॥
अंतक सरिस शत्रु तेहि देख्यो ❀ कवि सब बाल्मीकि सम लेख्यो ॥
तहँ परिरंभपुरी कर राजा ❀ रह्यो एक जो बली दराजा ॥
दियो ताहि संतति नहिं धाता ❀ ताते रह्यो दुखित कृशगाता ॥
सो मनमें अस कियो विचारा ❀ सब गुण पूरित करौं कुमारा ॥
सब गुण पूरित नर जग माहीं ❀ खोजन लग्यो भूप चहुघाहीं ॥
सब गुण पूरित नील निहारयो ❀ पुत्र करन तेहि भूप विचारयो ॥
शूद्र जानि बरज्यो सबकाहू ❀ पै कछु नहिं मान्यो नरनाहू ॥
शंभुकृपा वश नील उदारे ❀ सुदिन पूंछि नृप कियो कुमारे ॥
ताको नाम धरयो परकाला ❀ ओज तेज बलबुद्धि विशाला ॥

दोहा-कछुक काल महँ रागवश, भयो भूप वशकाल ॥
पुहुमीपति पुहुमी प्रथित, शासन किय परकाल १॥

नित नवमोद प्रजन कहँ बाढा ❀ धर्म बढयो जल यथा अषाढा ॥
भयो विभव सुरपति सम ताको ❀ शासन कियो सकल वसुधाको ॥
शासन करत ताहि दश दिशहूं ❀ रह्यो अधर्म अवनिमहँ न कहूं ॥
तेहि परिरंभपुरी के नेरे ❀ रह्यो नागपुर प्रजा घनेरे ॥
तहँ यक वैद्य रह्यो मतिवाना ❀ शीलवंत भागवत प्रधाना ॥
पुरी निकट यक रही तलाई ❀ फूली कंजन की समुदाई ॥
वैद्य रोज मज्जन हित जाई ❀ तहँ पूजै यदुनाथ नहाई ॥
एक दिवस सरसी तट माहीं ❀ लख्यो वैद्य लघु कन्या काहीं ॥
रही वैद्यके संतति नाहीं ❀ लिय उठाय दारिका तहांहीं ॥
घरमें ल्याइ दियो घरनीको ❀ मानहु पुत्र कह्यो अस तीको ॥
दंपति दुहिता पालन करहीं ❀ अपने उर आनँद अति भरहीं ॥
जस जस बढति कन्यका जाई ❀ तस २ विभव होत अधिकाई ॥

दोहा-सुता रूप गुण शील सुनि, सो परकाल भुवाल ॥
बोलि चिकित्सक भवनमें, वचन कह्यो तेहिकाल ॥२॥

वैद्य कहां कन्या तुम पाई * कौन भांति तुम्हरे घर आई ॥
वैद्य कह्यो सरसीके तीरा * हम दुहिता पाई मतिधीरा ॥
मेरे घर यह भई सयानी * सकल भांति संपति सुखदानी ॥
राजा कह्यो कन्यका केरो * वैद्य विवाह करहु तुम मेरो ॥
वैद्य कही यह भली बखानो * पै कछु कारण लीजै जानी ॥
बिना शंख चक्राङ्कित काही * व्याह करन कहती यह नाहीं ॥
रोजहि भोजन साधु करावै * तब यह अन्न पान मुख ल्यावै ॥
वैद्य वचन सुनि तुरत भुवाला * चक्रांकित हैगो परकाला ॥
तब दै साक्षी पावक काही * वैद्य कन्यका नृपहि विवाही ॥
नित नृप सदन जे साधु सिधारैं * भूपति भोजन दै सतकारैं ॥
सहस साधु भोजन करवाई * भोजन पान करै नृपराई ॥
जेतो धन नृपके घर होवै * सकल संत सेवनमहँ खोवै ॥

दोहा—तहँ यक बड़ो भुवाल कोउ, चढि आयो दलसाजि॥
तोप तुपक आयुध विविध, पैदर वारन वाजि ॥३॥

सो पठयो सेनापति काहीं * भूपति घर आयो भय नाहीं ॥
कह परकालहिसों अस बाता * देहु दंड नहिं दंड अघाता ॥
तब परकाल कही अस बानी * हमरे नहिं सुवरणकी खानी ॥
जो कछु राज्य माहिं धन पावै * सो सब विप्रन साधु खवावैं ॥
जो भूपति करिहैं बरजोरी * तो दैहैं कृपाण मुख मोरी ॥
हम तो हैं अनन्य हरिदासा * राखैं कबहुं न कोहुकी त्रासा ॥
अस कहि सेनापति कहँ राजा * दियो निकासि समेत समाजा ॥
सेनापति चलि निज प्रभु पाहीं * वचन कह्यो भय भरि उरमाहीं ॥
बडो घमंडी नृप परकाला * तुमरो शासन मान्यो ख्याला ॥
ताते ताहि दंड अस दीजै * ताको राज्य सकल लै लीजै ॥
सुनि भूपति किय कोप प्रचंडा * दीन्ह्यो शासन भटन उदंडा ॥
घेरि लेहु परकालपुरीको * रहै न थल निकसनअँगुरीको ॥

दोहा—भूपवचन सुनि सैन सब, चली निशान बजाय ॥
हय गय पैदर पदनकी, धूरिधुंध रहि छाय ॥ ४ ॥

नृप आवत लै सैन्य विशाला * सुनी खबरि अस नृपपरकाला ॥
रामचरण सुमिरयो मनमाहीं * लै नेसुक दल भय कछु नाहीं ॥
साधु चरण धरि अपनो शीशा * भाषत जयति कोशलाधीशा ॥
पुनि अस विनय कियो परकाला * हे दयालु दशरथके लाला ॥
तुमहिं समर्पित है यह राजू * राखहु आजु लाज रघुराजू ॥
अस कहि सन्मुख भयो नरेशा * जिमि मतंग गण माहिं मृगेशा ॥
दुहुँ दिशिते बहु बजे नगारे * दुहुँ दिशि भट हथियार निकारे ॥
प्रथमहि पसर कियो परकाला * सुमिरि चरण युग कोशलपाला ॥
तोपैं तुपक तीर तरवारी * चलत भई दुहुँ दिशते भारी ॥
जानि अनन्यदास रघुनाथा * प्रगटत भे लै धनु शर हाथा ॥
क्षणमें सकल भूप दल भारी * प्रभु डारयो निज सायक मारी ॥
भग्यो भूप जय लह्यो प्रकाला * लह्यो न कछु परकाल कसाला ॥

दोहा-भूप दीन है दल रहित, जानि प्रकाल प्रभाव ॥
त्राहि त्राहि कहि दौरिकै, गहत भयो दोउ पांव ॥ ५ ॥

कीन्ह्यो बहुरि विनय कर जोरी * मैं हौं नाथ शरण अब तोरी ॥
देहु कछुक धन तो घर जाऊं * तिहरो सुयश सदा मैं गाऊं ॥
तब परकाल कह्यो अस बैना * हमरे घर महँ धन कछु है ना ॥
रह्यो सो ब्राह्मण वैष्णव खायो * तुम्हरे हेतु न भवन धरायो ॥
तेहि निशि माहिं जानि जन अपनो * रघुपति दियं परकालहि सपनो ॥
राचित देव धन भूपति काहीं * शरणागत कहँ अनुचित नाहीं ॥
कांचीपुरी माहँ जब ऐहौ * भूपति देन हेतु धन पैहौ ॥
भोर जागि परकाल भुवाला * भाष्यो तुरत ताहि महिपाला ॥
मम सँग दीजै सचिव पठाई * ल्यावै कांचीते धन जाई ॥
अस कहि कांची गयो प्रकाला * संग सचिव पठयो महिपाला ॥
जा दिन कांची सचिव सिधारयो * तादिन नाथ मनुज वपु धारयो ॥
वृषभनमें धन भूरि भराई * दियो तासु डेरा पहुँचाई ॥

दोहा-मंत्री लै धन घर गयो, जान्यो नाहिं परकाल ॥
पूंछन लाग्यो जननसों, कहां सचिव यहि काल ॥ ६ ॥

प्रजा कह्यो तिहरो जन दयऊ ॥ धन लै सचिव बहुरि सो गयऊ ॥
प्रभु चरित्र परकाल विचारी ॥ हरिकी कीन्ही प्रस्तुति भारी ॥
बहुरि आपने भवन सिधारी ॥ तुरत बोलाय कह्यो निज नारी ॥
मोरि दीनता देखि मुरारी ॥ कीन्ह्यों समर सबन सँग भारी ॥
मेरे हित धरि मनुज स्वरूपा ॥ दीन्ह्यों वित्त विपुल तेहि भूपा ॥
मोहि धिग मोहि धिग बारहिंबारा ॥ तजौं न तिनके हित परिवारा ॥
चलु वन बसि कहुं भजिय सियापति ॥ देहिं लुटाय साधु कहँ संपति ॥
नारी सुनि संमत सो कीन्ह्यो ॥ साधुन बोलि सकल धन दीन्ह्यो ॥
आप बसे वन महँ दोउ प्रानी ॥ भजहिं सप्रेम जानकीजानी ॥
तहँ जे साधु तासु ढिग आवैं ॥ बिन संपति केहि भांति खवावैं ॥
तब परकाल चोरावन लागे ॥ साधु खवावन महँ अनुरागे ॥
छल बल चोरी कर धन ल्यावै ॥ ताते सिगरे संत खवावै ॥
दोहा-एक समय चोरी करन, गये धनिकके धाम ॥
कनक कटोरा लै कढी, तौन धनिककी बाम ॥ ७ ॥
तासु कटोरा हरयो प्रकाला ॥ जय गुरु कही धनिककी बाला ॥
तब फेंक्यो परकाल कटोरा ॥ भयो धनिक तियको अति भोरा॥
तब तिय निज पतिसों कह जाई ॥ भाजन कनक हरयो कोउ आई ॥
सो सुनि धनिक नारि युत तहँवा ॥ काढि आयो प्रकाल रह जहँवा ॥
परकालहि वैष्णव अवलोकी ॥ महिगत भाजन लखि भो शोकी ॥
कह्यो नारि कहँ आंखि देखाई ॥ साधु संग का करी ढिठाई ॥
साधु कौनहित पात्र न लीन्ह्यो ॥ कारण कौन फेंकि महि दीन्ह्यो ॥
तिय कह मैं अपराध न ठान्यो ॥ जयगुरु यतनो वचन बखान्यो ॥
तब तियको पति भयो सकोपा ॥ भाष्यो अरी धर्म किय लोपा ॥
संपति सोइ जो साधु हित लागै ॥ सोइ कीरति जो जगमहँ जागै ॥
दोउनकी लखि अनुपम प्रीती ॥ तब परकाल कियो अति प्रीती ॥
दे परिदक्षिण कियो प्रणामा ॥ पुनि परकाल गयो निजधामा ॥
दोहा-तबते सबके भवनकी, चोरी तज्यो प्रकाल ॥
राह लागि लूटै जनन, साधुन हित सबकाल ॥ ८ ॥

लूट्यो जबहिं जनन बहुकाहीं * पथिक चले पंथा तेहिं नाहीं ॥
मिल्यो न धन नित परयो उपासा * साधु न आवे तब तेहिं पासा ॥
तब परकाल महादुख छायो * मरन आपनो उचित गनायो ॥
तब प्रभुको संकट अति परेऊ * पार्षद सहित मनुज वपु धरेऊ ॥
भये पक्षिपति तुरत तुरंगा * पार्षद भे सेवक बहुरंगा ॥
कमलाको दुलही रचि लीने * दूलह आप भये परवीने ॥
तेहि मारग है कढे मुरारी * लखि प्रकाल तहँ गयो सिधारी ॥
घेरि भटनसों सकल बराता * बोल्यो वणिक जानि अस बाता ॥
भूषण दीजे सकल उतारी * नातो हम हनिहैं तरवारी ॥
हरि अपनो अरु कमला केरो * दिय उतारि आभरण घनेरो ॥
औरहु जो धन रह्यो अनंता * सो परकालहि दियो तुरंता ॥
उठ्यो न सो धन तासु उठायो * तब प्रकाल अस वचन सुनायो ॥

दोहा-शिर धरि मेरे भवन महँ, दीजे धन पहुँचाय ॥
नातो यहि थलते कहूं, तुम पैहो नहिं जाय ॥ ९ ॥

तब प्रभु वचन कह्यो मुसकाई * देत एक हम मंत्र बताई ॥
धन उठायकै मंत्र प्रभाऊ * जाहु भवन कहँ सहित उराऊ ॥
देहु मंत्र तब कह परकाला * तबहिं कान लगि दीनदयाला ॥
दिय अष्टाक्षर मंत्र सुनाई * धरयो हाथ माथे यदुराई ॥
पुनि पार्षद युत त्रिभुवन भूपा * प्रगट कियो आपनो स्वरूपा ॥
रमा सहित निज नाथ निहारी * त्राहि त्राहि परकाल पुकारी ॥
गिरयो चरणमहँ प्रेम अगाधा * कह्यो क्षमहु मेरो अपराधा ॥
प्रभु कह नहिं अपराध तिहारो * रह्यो मनोरथ यही हमारो ॥
अस कहि भे प्रभु अंतर्द्धाना * कांची किय परकाल पयाना ॥
मारग महँ भूखो अति भयऊ * ताको कोउ भोजन नहिं दयऊ ॥
तहां अष्टभुज नरहरि देवा * सो भरि कनक थार महँ मेवा ॥
भोजन दियो पंथ महँ आई * तहँ प्रकाल अति गयो अघाई ॥

दोहा-पुनि पूछयो परकाल तेहि, तुम कोहौ महिदेव ॥
किमि जान्यो मोहिं क्षुधित अति, करी आय अति सेव १०

नरहरि कह हम हैं तुव नाथा ॥ तोहि रक्षत वागे तुव साथा ॥
परयो चरण महँ तव परकाला ॥ कह्यो तुमहिं सांति दीनदयाला ॥
नरहरि भे तव अंतर्द्धाना ॥ कांची किय परकाल पयाना ॥
वरदराज को दरशन लीन्ह्यो ॥ वासर तीनि वास तहँ कीन्ह्यो ॥
पुनि परकाल रंगपुर आये ॥ रंगनाथ छवि अति सुख पाये ॥
हरिसों जो धन लियो छँडाई ॥ सो सब रंगनगर महँ लाई ॥
कारीगरन बोलाय अपारा ॥ बनवायो पुर सात प्रकारा ॥
कछु धन घट्यो बनावत माहीं ॥ गयो तुरंत नागपुर काहीं ॥
तेहि पुर रहे जैन बहुतेरे ॥ तिनके भवन माहँ चलि हेरे ॥
पारसनाथ केरि मनहारी ॥ रही कनक मूरति अति भारी ॥
वरवस तेहि उठाय परकाला ॥ ल्यायो रंगनगर तेहि काला ॥
सोइ मूरतिको सोन कराई ॥ दीन्ह्यो कारीगरन बँटाई ॥

दोहा—होत भये पूरे जबै, पुरके सात प्रकार ॥
तब परकाल उदार अति, मन महँ कियो विचार ॥ ११ ॥

कारीगर कीन्ह्यो अति कामा ॥ इनको दीजै कौन इनामा ॥
अस विचारि कावेरी तीरा ॥ बैठ्यो सो प्रकाल मतिधीरा ॥
हरिसों कह्यो पुकारि पुकारी ॥ रंगनाथ सुन विनय हमारी ॥
कारीगरन मुक्ति प्रभु दीजै ॥ नातो प्राण हमारे लीजै ॥
प्रभु प्रसन्न ह्वै शिल्पिन काहीं ॥ पठयो सवन धाम निज माहीं ॥
जैन जाय निज भूप पुकारे ॥ हरयो प्रकाल हि प्रभुहि हमारे ॥
राजा तुरत प्रकाल बोलायो ॥ जैनिन सों संवाद करायो ॥
लियो प्रकाल जैनमत जीती ॥ तब राजा कीन्ह्यो अति प्रीती ॥
भो प्रकालको शिष्य भुवाला ॥ नास्तिक भे आस्तिक तेहिकाला ॥
रंगनगर परकाल सिधारे ॥ किये वास चिरकाल सुखारे ॥
प्रभु शासन लहि पुनि परकाला ॥ भद्राश्रम गमन्यो तेहिकाला ॥
तहँ परकाल समाधि लगाई ॥ बैठ्यो रामचरण मनलाई ॥

दोहा–करि समाजि बहु काल लगि, भक्तराज परकाल ॥
ब्रह्मरंध्र है प्राण तजि, गयो जहां रघुलाल ॥ १२ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ गोदाअंबाकी कथा ।

दोहा–विष्णुचित्तिकी कन्यका, गोदाअंबा नाम ॥
तिनको मैं इतिहास अब, वर्णन करौं ललाम ॥ १ ॥

विष्णुचित्तिको तुलसी बागा * तामें कियो परम अनुरागा ॥
तुलसी सींचतही इक काला * मिली कन्यका रूप रसाला ॥
लखि कन्यका भयो सन्देहा * दया लागि ल्याये निज गेहा ॥
राति स्वप्नमहँ तेहि भगवाना * कन्याको सब भेद बखाना ॥
जब वराहवपु धरणि उधारयो * तब धरणी मोहिं वचन उचारयो ॥
पूजा तुमहिं कौन प्रियलागे * केहिविधि तुमहिं दास अनुरागे ॥
तब मैं कह्यो सुमनकी पूजा * ताते म्हहिं प्रिय और न दूजा ॥
करै नामकीर्तन जो मोरा * तापर मम अनुराग अथोरा ॥
ताते भूमि कन्यका भई * तुम्हरे भवन वास मन दई ॥
यह कन्या सेवत जो रहिहौ * तौ तुम अवशि परमपद लहिहौ ॥
यहिविधि राति स्वप्न जब देख्यो * विष्णुचित्ति बड भागहि लेख्यो ॥
जातकर्म कन्याकर कीन्हो * दम्पति महामोद मन लीन्हो ॥

दोहा–काल पाइ जब कन्यका, भई युवा छबिछाइ ॥
हरिके हित माला रचै, हरिके गुणगण गाइ ॥ २ ॥

कन्याकर विरचत वनमाला * विष्णुचित्ति लै प्रेम विशाला ॥
रंगनाथके मन्दिर जाई * देहिं आपने कर पहिराई ॥
एक समय गोदा सुकुमारी * तुलसीमाल रची मनहारी ॥
अतिशय सुन्दर माल निहारी * लियो आपने शिरमहँ धारी ॥
लै दर्पण देखन मुख लागी * विष्णुचित्ति आये बडभागी ॥
सुता उछिष्ट देखि वनमाला * विरच्यो दूसर द्रुत तेहि काला ॥

लै वनमाल रंग गृह गयऊ * निजकरसों पहिरावत भयऊ ॥
रंगनाथ प्रभु तब मुसकाई * विष्णुचित्तिको गिरा सुनाई ॥
गोदाकी जूंठी जो माला * सो पहिरावहु म्वहिं यहिकाला ॥
यद्यपि यह वनमाल अनूठी * पै मोहिं प्रिय गोदाकी जूंठी ॥
विष्णुचित्ति सुनि प्रभुकी बानी * अपने मन अति आनँदमानी ॥
सोइ वनमाल कन्यका सोऊ * प्रभुको अर्पण कीन्ह्यों दोऊ ॥

दोहा—तब भाष्यो प्रभु बैन अस, राखहु सुता निकेत ॥
हम व्याहब यह कन्यका, ठानु स्वयंवर नेत॥ ३ ॥

विष्णुचित्ति तब अति सुखपायो * कन्या लै अपने घर आयो ॥
कन्या एक समय पितुकाहीं * वचन कह्यो मोदित मनमाहीं ॥
यहि ब्रह्मांड माहँ सुनु ताता * केतने दिव्य धाम अवदाता ॥
विष्णुचित्ति तब लग्यो सुनावन * जेतने दिव्य धाम हरिपावन ॥
श्रीविकुंठमहँ परम उदारा * वास करैं वसुदेवकुमारा ॥
पुनि अमोद लोक जेहिं नामा * निवसत संकर्षण बलरामा ॥
लोक प्रमोद प्रद्युम्न निवासा * सो मोदहि अनिरुद्ध अवासा ॥
श्वेतद्वीपमहँ परम सुजाना * वसैं क्षीरशायी भगवाना ॥
बदरीवन जो धाम विशाला * नरनारायण रहैं कृपाला ॥
नीमषार जो क्षेत्र विख्याता * रहैं योगपति हरि गति दाता ॥
मुक्तिनाथ महँ शालिग्रामा * अवध वसे सिय सानुज रामा ॥
मथुरामहँ निवसे यदुनंदन * हरत प्रपन्न जनन भव फंदन ॥

दोहा—विश्वनाथवपु वसतहैं, काशी महँ भगवान ॥
तारकमंत्र सुनायकै, देत जनन निरवान ॥ ४ ॥

अवनी नाथ नाम जिन केरो * किये अवंतीनगरी डेरो ॥
द्वारवती यदुवंश विभूषण * शरणागत वत्सल हत दूषण ॥
नंदनंदन जिनको है नाऊं * निवसत वरसाने नँदगाऊं ॥
वृंदावनमहँ आनँद रासी * निवसत वृंदाविपिनविलासी ॥
कालीदह गोविंद निवासा * गोवर्द्धन गिरिधर करवासा ॥

गिरिगोमंत सौरि प्रभु रहहीं * हरिद्वार यदुपति सुख लहहीं ॥
प्रागराजमहँ वेणी माधो * गया गदाधर पूरित साधो ॥
गंगासागर कपिल अनूपा * नंदिग्राम भरताग्रज रूपा ॥
सीतालषण सहित रघुराई * निवसैं चित्रकूट नित आई ॥
विश्वरूप वध क्षेत्र प्रभासा * कूर्मक्षेत्र महँ कूर्म निवासा ॥
जगन्नाथ नीलाचल माहीं * युत बलभद्र सुभद्र सोहाहीं ॥
सिंहशैल नरसिंह विराजैं * गदानाथ तुलसी वन भ्राजैं ॥

दोहा–श्वेताचलमहँ नरहरी, करैं वास सब काल ॥
साक्षी नारायण वसैं, क्षेत्रपरात्म विशाल ॥ ५ ॥

धर्मपुरी गोदावरि तीरा * योगानंद वसैं यदुवीरा ॥
कृष्णावेणी तट सुस्थाना * वसैं अंधनायक भगवाना ॥
धाम अहो बल सुपरन गिरिपर * तहँ नृसिंहनिवसत भवभयहर ॥
पंढरपुरमहँ विट्ठल स्वामी * कांचीवरद राज खगगामी ॥
शेषाचल महँ व्यंकटनाथा * करैं वास करि जनन सनाथा ॥
यादवगिरि नारायण वसहीं * घटिकागिरि नृसिंह वपु लसहीं ॥
सोइ कांची नगरी माहीं * पारथ सारथि लसैं सदाहीं ॥
तहँ यथोक्त कारी अस नामा * लसै रमापति धाम ललामा ॥
तेहि नगरी महँ नरहरि स्वामी * दक्षिण निवसत अंतर्यामी ॥
पश्चिमदिशा। त्रिविक्रम सोहैं * निज छबि सुर नर मुनिमनमोहैं ॥
गृध्रसरोवरके तट आई * वसैं विजय राघव रघुराई ॥
वीक्षारम्य क्षेत्र अस नामा * वसैं वीर राघव छबिधामा ॥

दोहा–श्रोतादारी लसत हैं, रंगसैन भगवान ॥
गजनगरी गज शोकहर, श्रीहरिको सुस्थान ॥६॥

बलिपुर वसैं महाबल नामा * श्रीबलिशाग रूप छबिधामा ॥
क्षीरवती तट पुरी गोपाला * राजत हैं तहँ बालगोपाला ॥
क्षेत्रनाम श्रीमुष्ण अतोला * तहां वसैं प्रभु धरि वपु कोला ॥
नगर एक दक्षिण महि तूरा * वसैं कमललोचन सुखपूरा ॥

तहँ कावेरीके मधिमाहीं * दीप एक भासत चौवांहीं ॥
रंगनाथ सोहत भगवाना * दरशन-करत मिलत निर्वाना ॥
इष्टदेव रघुवंशिन केरे * श्रीवैष्णव तहँ बसत घनेरे ॥
महामनोहर सुंदर रूपा * श्रीभूलीला सहित अनूपा ॥
दक्षिण रामक्षेत्र है जहँवां * राम जानकी सोहत तहँवां ॥
श्रीनिवास इक क्षेत्र महाना * तहां लसै पूरण भगवाना ॥
सुभग सुवर्ण नगर इक जोई * सुवरण सुख प्रभु निवसत सोई ॥
महालाकु प्रभु व्याघ्र पुरीमहँ * लसैं चित्रहारे व्योम नगर जहँ ॥

दोहा–क्षेत्र उत्पलावर्तमें, यदुकुल कमल दिनेश ॥
मणिकोटीमें महाप्रभु, करैं निवास हमेश ॥ ७ ॥

नाम कृष्णपुर सागर तीरा * महाकृष्ण निवसैं यदुवीरा ॥
विष्णुक्षेत्र इक परम विख्याता * वसैं अनंत भक्तिके दाता ॥
कृष्ण क्षेत्र यक साधु परायण * निवसैं तहँ लक्ष्मी नारायण ॥
श्वेत शैल इक वेद प्रमाना * वसैं शांत मूरति भगवाना ॥
अग्निहोत्र पुर परम सोहावन * वसैं तहां सुर प्रिय प्रभुवामन ॥
भार्गवक्षेत्र एक अभिरामा * निवसैं तहां परशुधररामा ॥
इक वैकुंठ नगर छबिधामा * वसैं तहां प्रभु माधवनामा ॥
क्षेत्र गरिष्ठ विदित चहुँघाहीं * भक्त सखा तहँ वसैं सदाहीं ॥
चक्र तीर्थ महँ परम प्रकाशी * वसैं सुदर्शन प्रभु छबिराशी ॥
कुंभकोण महँ शारंगपानी * भूतपुरी महँ सोइ छबिखानी ॥
कलुष हरन इक क्षेत्र विख्याता * तहँ प्रभु हैं गजेंद्र गतिदाता ॥
चित्रकूट इक दक्षिण माहीं * तहां वसैं गोविंद सदाहीं ॥

दोहा–पुरी उत्तमामें वसैं, नाम अनुत्तम ईश ॥
पद्मविलोचन वसतहै, श्वेतशैल जगदीश ॥ ८ ॥

परब्रह्म पारथपुर राजै * वृद्धपुरी वृष आश्रय भ्राजै ॥
संगमपुरी असंग मुरारी * शरणपुरी शरण्य सुखकारी ॥
पञ्चपक्षेत्र जगदीश्वर नामा * कालमेघ सुद्रपुर धामा ॥

दक्षिण मथुरामें शुभ मंदिर ❀ तहां बसैं नामक प्रभु सुंदर ॥
वृषपर्वतमहँ सब सुखमाको ❀ नाम सुपर्ण राज है जाको ॥
वर शुभ क्षेत्र महा अभिरामा ❀ नाथ नाम तिनको तहँ धामा ॥
कुरुकापुरी रमापति राजैं ❀ गोष्ठीपुर गोष्ठी प्रभु छाजैं ॥
दर्भसेन महँ सागर तीरा ❀ निवसैं भूमि सैन रघुबीरा ॥
धन्वी मंगल पुर सुखदाई ❀ बसैं तहां प्रभु कुँवर कन्हाई ॥
सैवर क्षेत्र महँ शास्त्र प्रमाना ❀ निवसैं वलशाला भगवाना ॥
यक कुरंगपुर अति रमणीया ❀ तहँ प्रभु पूर्ण लसत कमनीया ॥
नगर लटी अरु सर्वग नामा ❀ बसैं विष्णु बपु अति अभिरामा ॥

दोहा–क्षुद्र नदीके तीरमें, अच्युत नाम विख्यात ॥
नाम अनंतसैन प्रभु, भद्रपुरी अवदात ॥ ९ ॥

यहिविधि विपुल पुण्य थलमाहीं ❀ विग्रह दिव्य विशेष सोहाहीं ॥
जे तिनको पूजन जन करहीं ❀ चारि पदारथ सुख उर भरहीं ॥
हरिके विग्रह पंच प्रकारा ❀ तिनमें अर्चा सुलभ अपारा ॥
दिव्य रूप जे सकल गिनाये ❀ तिनके चरणामृतको पाये ॥
भोजन कीन्हे तासु प्रसादा ❀ पावत गति अस श्रुति मर्यादा ॥
हरि मूरति जिनकी नहिं प्रीती ❀ ते शठ लहै भूरि भव भीती ॥
यहि विधि सुनि पितु मुखते बानी ❀ गोदा परम मोद उरआनी ॥
सब हरिकी मूरति गुणि सांची ❀ गोदा रंगनाथ महँ राची ॥
नितही रंगनाथ गुण गावै ❀ नितहीं माल बनाइ पठावै ॥
सोवत जागत तेहिं दिन रैना ❀ रंगनाथ दीसत दोउ नैना ॥
इक शत आठ दिव्य हरि रूपा ❀ भारतखंडहि परम अनूपा ॥
कथा सकल रूपन सुनि सांची ❀ गोदा रंगनाथमहँ रांची ॥

दोहा–रंगनाथके चरणमहँ, गुणि गोदाकी प्रीति ॥
रंगनाथकी सब कथा, कहन लगे शुभ रीति ॥ १० ॥

रंगनाथकी गाथा सारी ❀ हम वर्णैं सुनु सुभग कुमारी ॥
एक समय तप किय करतारा ❀ भये प्रगट भगवंत उदारा ॥

हरि कह का चाहहु मुख चारी * कह विरंचि अस आश हमारी ॥
तुमको पूजहिं करि मख भारी * सो पूरण करि देहु मुरारी ॥
प्रभु कह यज्ञ करहु चतुरानन * पुण्यक्षेत्र कुसुमित जहँ कानन ॥
अस कहि भे प्रभु अंतर्द्धाना * ब्रह्मा रच्यो यज्ञ सविधाना ॥
तेहि मखमहँ सुर असुर मुनीशा * आवत भे ध्यावत जगदीशा ॥
तेहि मखमहँ अति आनँद छाये * महाराज इक्ष्वाकु सिधाये ॥
रंगनाथ मूरति मखमाहीं * पूजत रहैं विरंचि सदाहीं ॥
रंगनाथको लखि इक्ष्वाकू * मान्यो सकल पुण्य परिपाकू ॥
कह विरंचिसों दोउ कर जोरी * इनके पूजनकी मति मोरी ॥
जो मोपर प्रसन्न प्रभु होहू * रंगनाथ दीजै करि छोहू ॥

दोहा—तब विरंचि बोल्यो वचन, तप कीजै नरनाह ॥
तब अधिकारी होहुगे, पूजनके जगमांह ॥ ११ ॥

सुनि विरंचिके वचन नरेशा * कीन्ह्यो तप सरयूतट देशा ॥
ह्वै प्रसन्न विधि अवध सिधाई * दीन्ह्यो रंगनाथ सुख छाई ॥
तबते रविकुलके नरदेवा * मांग्यो रंगनाथ कुलदेवा ॥
जब रघुनाथ रावणहिं मारी * सीतासहित अवध पगु धारी ॥
तिनके संग बिभीषण आयो * जान लग्यो लंकहि सुख छायो ॥
तब रघुपतिसों विनय सुनाई * तुव बिछोह नहिं मोहिं सहि जाई ॥
निशिचर पतिकी प्रीतिविचारी * रंगनाथको दियो खरारी ॥
धन्य भाग्य गुणि निशिचर नाथा * लंकहि चल्यो वंदि रघुनाथा ॥
जब कावेरी तटमहँ आयो * तहँ कछु नेम बिभीषण ठायो ॥
नेम समापत करि असुरेशा * चलन लग्यो जब अपने देशा ॥
रंगनाथको लग्यो उठावन * उठे उठाये नहिं जगपावन ॥
जब शोकित ह्वै रोवन लाग्यो * निशिचर नाथ महादुख पाग्यो ॥

दोहा—तब अकाश वाणी भई, सुनहु निशाचर नाथ ॥
हम याही थल महँ रहब, अब न चलब तुव साथ ॥ १२ ॥

यही भूमि मोको अति प्यारी * यहि थल महँ रुचि रहन हमारी ॥

लंकाते तुम रोजहि आई ❀ मेरो पूजन करहु सदाई ॥
जब तुम सुमिरण करिहौ मोहीं ❀ तब मैं प्रगट होब हठि तोहीं ॥
प्रभुको शासन मानि बिभीषन ❀ लंकहि गयो सुमिरि आनँदघन ॥
रोजहि पूजन करहिं सिधारी ❀ रंगनाथ पद करि रति भारी ॥
बसि कावेरीके तट माहीं ❀ रंगनाथ पालत जग काहीं ॥
रचो विश्वकर्मासो मंदिर ❀ परम प्रकाशित मानहुँ चंदिर ॥
अति ऊंचे हैं सात प्रकारा ❀ तहां बसैं हरिभक्त अपारा ॥
कथा रंगनायक सुनि गोदा ❀ मान्यो मनमहँ परम प्रमोदा ॥
इकसै आठ रूप हरि केरे ❀ रंगहि गुन्यो अधिक सब तेरे ॥
गोदा कही पितासों बानी ❀ मिलहिं मोहिंकिमिजानकिजानी ॥
विष्णुचित्त तब गिरा उचारी ❀ मार्गशीर्ष व्रत करहु कुमारी ॥
दोहा-वृन्दावन महँ गोपिका, मार्गशीर्ष व्रत ठानि ॥
लह्यो नन्दनन्दनचरण, भईं सकल सुखखानि ॥१३॥
गोदा मार्गशीर्ष व्रत कीन्हों ❀ गान प्रबंध युगल रचि लीन्हों ॥
व्रत करि करै मधुर नित गाना ❀ केहि विधि मिलै मोहिं भगवाना ॥
एक दिवस निशिमांह कुमारी ❀ सपन माहिं मिलि गई मुरारी ॥
जागि चहूं कित चितवन लागी ❀ लख्योनहरिकहँ अतिदुखपागी ॥
तबते बैठत जागत माहीं ❀ सोवत जागत वदत सदाहीं ॥
देखै रंगनाथ कहँ सोई ❀ चितवति काल रैन दिन रोई ॥
एक समय गे चंदन बागा ❀ हरिको बिरह दून तहँ जागा ॥
तासु सखी इक विप्रकुमारी ❀ आई चतुर चारु वपुधारी ॥
पूंछ्यो ताहि सखी दुख कैसो ❀ होइ यथा बरणो मोहिं तैसो ॥
तब गोदा अस गिरा सुनाई ❀ नारायण सपने महँ आई ॥
मिले मोहिं दुरिगे पुनि सजनी ❀ तबते कल न परति दिन रजनी ॥
विप्रसुता तहँ कह तेहि पाहीं ❀ बहुत रूप हरिके जगमाहीं ॥
दोहा-कौन रूपमें रावरी, उपजी है अति प्रीति ॥
सो देखराऊं चित्र लिखि, जाते होइ प्रतीति ॥१४॥

अस कहि सखी उतारन लागी * हरिके सकल रूप रति पागी ॥
लिखत लिखत जब रंगनाथकी * लिखत भई तसवीर हाथकी ॥
तेहि लखि गोदा गई लजाई * बोली मंद मंद मुसकाई ॥
यह छलिया सपने मिलि मोसों * गयो पराइ कहौं सति तोसों ॥
सखी कह्यो सुनु गोदा प्यारी * सखि जो है हौं सत्य तिहारी ॥
रंगनाथ कहँ तोहिं मिलै हौं * तोर मनोरथ पूर करै हौं ॥
तब गोदा बोली कर जोरी * अब जीवन गति तुव कर मोरी ॥
जाय रंगमंदिर महँ प्यारी * कहहु पियहि जस दशा हमारी ॥
गोदा वचन सुनत मन भाई * चली रंगमंदिर अतुराई ॥
प्रथमहिं गई मनोहर बागा * रह छबिवंत बसंत सुहागा ॥
तहँ देख्यो इक कौतुक प्यारी * सुंदर फूल सेज सुकुमारी ॥
विरहाकुल श्रीपति तेहि माहीं * लोटि रहे इक पल कल नाहीं ॥

दोहा—विप्रसुता तब चलि निकट, पूंछ्यो मधुरिपु काहिं ॥
कौन अही तुम हेतु केहि, लोटहु इत महिमाहिं ॥ १५ ॥

कह्यो वचन तब प्रभु तेहि टेरी * गोदाविरह दशा यह मेरी ॥
तुम हो कौनि कहो केहि हेतू * मोहिं पूंछहु यहि विधि छबिसेतू ॥
हौं तो रंगनाथ हे प्यारी * निज कारण तुम देहु उचारी ॥
तब अनुग्रहा सखी सयानी * बोली विहँसि काज सिधि मानी ॥
मोहिं गोदा तुव पास पठाई * तासु दशा वर्णन इत आई ॥
गोदा नाम सुनत उठि नाथा * बोले वचन जोरि युग हाथा ॥
मैं हूं ध्यान करत रह ताई * जासु नाम तैं दियो सुनाई ॥
कहु कहु गोदाकी कुशलाई * कौन हेतु तोहिं इतै पठाई ॥
सखी कही तब सुंदर बानी * पहिरि मालती माल सयानी ॥
सोइ मालिका तुमहि पठवाई * लेहु नाथ मैंही इत ल्याई ॥
वचन कह्यो कहु सुन यदुराई * स्वप्नमाहँ मिलि गये पराई ॥
ऐसो कोउ न करत कोहु काहीं * बांह पकर त्यागत प्रभु नाहीं ॥

दोहा—जबते निरख्यो रूप तव, तबते कल मोहिं नाहिं ॥
तुम्हरे विरह विषाद वश, निशिदिन शोचत जाहिं ॥ १६ ॥

तुमहु नाथ तारक अस हाला ❀ गोदा तुमबिन बहुत बिहाला ॥
निशिदिन तुमहिं मिलन अभिलाषे ❀ तुमबिन आश और नहिं राखे ॥
चौक बिरचि मोतिनकी चारू ❀ करति मिलनाहितशकुनविचारू ॥
सोवति नहिं जोवति दिनराती ❀ खोवति भोजन पान अघाती ॥
जो ताकर चाहहु प्रभु प्राना ❀ तौ द्रुत मिलहु बात नहिं आना ॥
सीता हित बांध्यो तुम सागर ❀ हन्यो दशानन तेज उजागर ॥
शिशुपालादिक नृप मद मोरी ❀ लायो रुक्मिणि करि बरजोरी ॥
मेरी बार गही निठुराई ❀ काहे नाथ दया बिसराई ॥
द्रौपदि गज गोपी मुनिनारी ❀ राखि लियो जे तुमहिं पुकारी ॥
अब जो मोहिं ग्रहण नहिं करिहौ ❀ तौ यह अपयश नाथ कहँ धरिहौ ॥
सखी वचन सुनि सुखी मुरारी ❀ कह्यो वचन सुनु दशा हमारी ॥
गोदाकी जब सुधि मोहिं आवै ❀ तबते और न कछु सोहावै ॥
दोहा—ज्यों चकोर चंद्रहि चहै, ज्यों चातक घनश्याम ॥
त्यों गोदहि हम चाहते, तेहिंबिन मोहिं न अराम ॥ १७ ॥
अस कहि जो माला सखिदीन्ही ❀ सो प्रभु पहिरि कंठमहँ लीन्ही ॥
कह्यो वचन सुनु सखी सुजानी ❀ प्राण राखि लिय माला आनी ॥
जो हम आजु माल नहिं पावत ❀ तौ तनुते जियरो कढि जावत ॥
अस कहि प्रभु मुंदरी उतारी ❀ तैसहि कमलमाल निज धारी ॥
उभय वस्तु दीन्ह्यो सखि हाथा ❀ बोले वचन रंगपुर नाथा ॥
उभय वस्तु दीन्ह्यो तेहि जाई ❀ और दियो अस वचन सुनाई ॥
कुरकानगर माहँ यहिबारा ❀ होइ स्वयंवर अबशि हमारा ॥
तहँ ऐहैं मम सब अवतारा ❀ सुर महर्षि देवर्षि अपारा ॥
सूरि हैं मेरे भक्त घनेरे ❀ तेहिं करमाल परी गर मेरे ॥
सुनि हरिवचन सखी सुख पाई ❀ गोदाके समीप द्रुत आई ॥
दई माल मुँदरी हरिकेरी ❀ वचन कह्यो सब जो हरि टेरी ॥
गोदा सुनत प्राण इव पायो ❀ सखीचरण पुनि पुनि शिरनायो ॥
दोहा—पांचसात बीते दिवस, विष्णुचित्त मतिवान ॥
लै दुहिता कुरकानगर, कीन्ह्यो तुरत पयान ॥ १८ ॥

वल्लभ देव भूप तहँ केरो ❀ चल्यो संग लै सुदल घनेरो ॥
विष्णुचित्त कुरकापुर माहीं ❀ पहुँचे जब लै दुहिता काहीं ॥
तब शठकोप स्वामि तहँ आये ❀ औरहु सब आचार्य सिधाये ॥
विष्णुचित्त शठकोप बोलाई ❀ दियो सकल वृत्तांत सुनाई ॥
तब शठकोप नरेश बोलायो ❀ वल्लभ देवहि वचन सुनायो ॥
तुव अरु सुमति मधुर कविराजू ❀ साजहु सकल स्वयंवर साजू ॥
सुनि शठकोप वचन कविभूपा ❀ रच्यो स्वयंवर साज अनूपा ॥
कनकमंच बहु रचे उतंगा ❀ तने वितान प्रमाण अभंगा ॥
फरसैं फावि रहीं अति चारू ❀ लागि रही तहँ विविध बजारू ॥
बिछे जरकसी दिव्य बिछौना ❀ चारि खंभ सोवत चहुँ कोना ॥
तहँ महर्षि देवर्षि सिधारे ❀ औरहु सुर मुनि सकल सुखारे ॥
भयो भूपमंडल अति भारी ❀ जगकी जन जमाति पगुधारी ॥

दोहा—यथायोग्य बैठत भये, सुर नर मुनि महिनाथ ॥
यथायोग्य परणामकिय, जोरि जोरियुगहाथ ॥ १९ ॥

आचारज निज निज निरमाने ❀ करहिं प्रबंध गान सुख माने ॥
तहँ इकसत अरु आठ प्रमाना ❀ आये दिव्य रूप भगवाना ॥
इक इक मंचन पर सब बैठे ❀ गोदा छबि पयोधि महँ पैठे ॥
आये रंगनाथ भगवाना ❀ उच्च मंच बैठे सविधाना ॥
लखि लखि हरि मूरति मनहारी ❀ सुर नर मुनि सब भये सुखारी ॥
तेहि औसर शठकोप सुजाना ❀ विष्णुचित्तसों वचन बखाना ॥
बोलवावहु गोदा कहँ आसू ❀ होय स्वयंवर मोद प्रकासू ॥
विष्णुचित्त गोदहि बोलवाये ❀ बहुविधि भूषण वसन सजाये ॥
पिता कह्यो दुहितासों वानी ❀ जापै तेरी मति हुलसानी ॥
ताके गल मेलहु वनमाला ❀ आयो अबहिं स्वयंवर काला ॥
सखी नाम जाको अनुग्रहा ❀ तेहि शठकोप वचन अस कहा ॥
यकसै आठ विष्णु वपु जेहैं ❀ कहहु नाम गुण तुम तिनके हैं ॥

दोहा—तब अनुग्रहा कर पकरि, गोदाको तेहि काल ॥
हरिके वपुके नाम गुण, वर्णन लगी विशाल ॥ २० ॥

इकसे आठ कृष्णवपु जेते ❀ नाम धाम गुण वर्ण्यो तेते ॥
अनुग्रह्य कर गादि गोदाको ❀ चली देखावन हरि वपु भाको ॥
जाके मंच निकट चाढ जावे ❀ ताके गुण अरु रूप सुनावे ॥
जात जात यहि विधि मनभाई ❀ रंगनाथ ढिग पहुँची जाई ॥
लख रूपनते गोदा मनमें ❀ रंगनाथ छबि छाकी क्षणमें ॥
लै वनमाल रंगपति कंठा ❀ डारयो गोदा भरि उत्कंठा ॥
जोहि जनन जमाति जय कीन्ही ❀ देवन दीह दुंदुभी दीन्ही ॥
भई गगनते फूलन वर्षा ❀ उपज्यो सुर नर मुनिमन हर्षा ॥
विष्णु दिव्यवपु निरखि अनूपा ❀ आश्चर्यित भे सुर नर भूपा ॥
तेहिं क्षण ब्रह्मा सभा सिधारे ❀ रंगनाथ भे गरुड़ सवारे ॥
सूरज चंद्र चमर कर लीने ❀ पंखा हांकत पवन प्रवीने ॥
शंभु इंद्र धारे कर सोटा ❀ लियो कुबेर छत्र सुख मोटा ॥

दोहा-सुर किन्नर गंधर्व बहु, साजे सकल विमान ॥
कुरकानगर भयो तहां, श्रीवैकुंठ समान ॥ २१ ॥

विष्णुचित्त कहँ धनि धनि कहहीं ❀ जासु प्रभाव महासुख लहहीं ॥
विष्णुचित्त तब कह कर जोरी ❀ रंगनाथसों कह्यो बहोरी ॥
श्रीशठकोप भवन सउछाहा ❀ करहु सुताकर नाथ विवाहा ॥
एवमस्तु कह रंग अधीशा ❀ शठरिपु मंदिर गयो मुनीशा ॥
तहँ विवाहकी करी तयारी ❀ सो न वदन इक जाइ उचारी ॥
तहँ देवर्षि महर्षि अपारा ❀ अरु आचारज सकल उदारा ॥
सिगरे व्याह साज सब साजे ❀ भवन भवन बाजे बहु बाजे ॥
रंगनाथकी सजी बराता ❀ को वरणे विभूति अवदाता ॥
चली बरात बरणि नाहिं जाई ❀ दशो दिशनि बाजन धुनि छाई ॥
ब्रह्मा वेद पढत चलि आगे ❀ पैठे जाइ द्वार सुख पागे ॥
विश्वकर्महिं हरि कह्यो बुलाई ❀ देहु अनूपम नगर बनाई ॥
विश्वकर्मा तुरंत तेहिं काला ❀ रच्यो विकुंठ समान विशाला ॥

दोहा-सो पुर छबि केहि भांतिते, मो मुख जाइ बखानि ॥
जहँ व्याहन आवत भये, दूलह शारँगपानि ॥२२॥

नचहिं नवीन अप्सरा नाना ❀ बहु गंधर्व कराहिं गुण गाना ॥
मंद मंद तहँ चली बराता ❀ पुरवासिन उर सुख न समाता ॥
देखहिं धाय नगर नर नारी ❀ कोउ देखनहित चढी अटारी ॥
कढी बरात राजपथ ह्वैके ❀ सुर नर मुनि मोदित भे ज्वैके ॥
आई जबै बरात दुवारा ❀ कहि न सकै सुखवदन हजारा ॥
माथे मोर पीतपट जामा ❀ दूलह रंगनाथ छबिधामा ॥
तहँ मोतिनकी चौक पुराई ❀ वेद पढैं महर्षि समुदाई ॥
बैठे रंगनाथ तहँ आई ❀ देवसमाज सहित छबि छाई ॥
तहँ ब्रह्मा अतिशय अनुरागे ❀ द्वार चार करवावन लागे ॥
मागि गण देव समूह लुटावें ❀ सुरतरु कुसुमनकी झरि लावें ॥
द्वारे छबि छके नगर नर नारी ❀ कोउ न लेत मन सुरति बिसारी ॥
दोहा–द्वार चार जब ह्वै गयो, गै जनवास बरात ॥
पठयो भोजन पान बहु, बिधि गोदाको तात ॥ २३ ॥
जोन देवकी रहि रुचि जैसी ❀ विष्णुचित्त पूरण किय तैसी ॥
आठौं सिद्धि निद्धि नव जेती ❀ विष्णुचित्त गृह निवसीं तेती ॥
तेतिस कोटि देव समुदाई ❀ औरहु जन अवली जो आई ॥
ते सब खानपान सन्माना ❀ पूरित भे पाये पकवाना ॥
विष्णुचित्त गृह तब करतारा ❀ आइ सबनसों वचन उचारा ॥
रंगनाथकी लगन विवाहा ❀ यही क्षण है अब करहु उछाहा ॥
तब शठकोप आदि मुनिराई ❀ गे जनवास अतिहि अतुराई ॥
रंगनाथसों विनती कीन्हों ❀ सुर समान लै प्रभु चलि दीन्हों ॥
विष्णुचित्त गृह जब प्रभु आये ❀ सनकादिक स्वस्तेन सुनाये ॥
कहि न जाइ मंडपकी शोभा ❀ जेहि लखि सुरसमाज मन लोभा ॥
फैली मणि दीपन उजियारी ❀ चहुं दिशि रत्न झालरें भारी ॥
पुरटपात्र मणिजटित सोहाये ❀ पीठि जवाहिर युगल धराये ॥
दोहा–विष्णुचित्तको करकमल, कमलापति गहि लीन ॥
सुरसमाज लै मंडपहि, शुभ प्रवेश प्रभु कीन ॥ २४ ॥

तहँ ब्रह्मर्षि सुरर्षि अरु, महामहर्षि उदार ॥
पढ़ैं वेद चहुँ ओर सब, करवावैं विधिचार ॥ २५ ॥

विष्णुचित्त अति आनँद छायो * प्रभुकहँ रत्न पीठ बैठायो ॥
दक्षिण दिशि गोदा तहँ बैठी * मनहुँ अनंद उदधि महँ पैठी ॥
तहाँ बृहस्पति सुदिन सुनायो * विष्णुचित्त कर कुशा धरायो ॥
विष्णुचित्त कर कुश जल धरिकै * पुनि गोदाको पाणि पकरिकै ॥
सदा प्रसन्न रंगपति रहहीं * मोहिं सदा अपनो जन कहहीं ॥
विष्णुचित्त अस पढि संकल्पा * प्रभुको कर गहि मोद अनल्पा ॥
गोदापाणि नाथके पानी * धरि दीन्ह्यो ढारत दृग पानी ॥
पाणिग्रहण रंगपति कीन्ह्यो * स्वस्ति २ अस मुख कहि दीन्ह्यो ॥
ताहि समय गगन महिं माहीं * बाजी दुंदुभि ध्वनि चहुँ घाहीं ॥
मच्यो भुवन महँ जयजयकारा * सुमनवृष्टि सुर करहिं अपारा ॥
सुर नर मुनि भाषहिं बहुबारा * धनि धनि विष्णुचित्त संसारा ॥
जाके हेतु प्रत्यक्ष सोहाये * रंगनाथ व्याहन इत आये ॥

दोहा—ब्रह्मा शिव इंद्रादि सुर, प्रगट भये कलिकाल ॥
रंगनाथको देखिकै, हम सब भये निहाल ॥ २६ ॥

रंगनाथ गोदा कर गहिकै * दियो सात भाँवरी उमहिकै ॥
हवन कियो पुनि पावक माहीं * विष्णुचित्त कह पुनि प्रभुपाहीं ॥
दाइज लीजै सर्वस मेरो * मम मन नाथ करहु पद चेरो ॥
एवमस्तु कहि दीनदयाला * कोहवर गये जुरी जहँ बाला ॥
कोउ पीतांबर ऐंचहिं नारी * कोउ प्रभुकहँ देती बहु गारी ॥
गोदा रंगनाथ मुखमाहीं * मेलति है लहकौर तहाहीं ॥
रंगनाथ गोदाके आनन * मेलहिं कौर सुखी तन भानन ॥
सो सुख इक मुख किमि कहि जाई * बार बार तिय लेहिं बलाई ॥
यहि विधि भयो नाथ कर व्याहू * गे जनवास भुवनके नाहू ॥
भये भोर शठकोप सिधारा * कीन्ह्यो सकल देव सतकारा ॥
रंगनाथ कहँ घरपहँ ल्यायो * विविध भांति व्यंजन बनवायो ॥
करवायो बहु भांति कलेवा * विविध भांति व्यंजन अरु मेवा ॥

दोहा-बनवायो पुनि विविध विधि, देवनकी जेउनार॥
सुर मुनि सब भोजन किये, जाको जौन अहार॥२७॥

जब ह्वै गईं देव जेउनारा ❀ लागि गयो सुंदर दरबारा॥
सुर मुनि मनुज महीप अपारा ❀ बैठे सकल सजे शृंगारा॥
तब शठकोप विष्णुचित्त दोऊ ❀ औरहु आचारज सब कोऊ॥
अनुपम भूषण वसन मँगाये ❀ यथायोग्य सबको पहिराये॥
कीन्ह्यों विविध भांति सतकारा ❀ सकल लहे आनंद अपारा॥
विष्णुचित्त कहँ सबै सराहैं ❀ अस कोउ जन जगतीतल नाहैं॥
पुनि दरबार भई बरखासू ❀ गये बराती सब जनवासू॥
चौथे दिवस रंगपति आये ❀ विधि चौथी कर चार कराये॥
तेहि निशि रंगनाथ भगवाना ❀ विष्णुचित्तके विमल मकाना॥
गोदा सहित शयन प्रभु कीन्हे ❀ हास विलासु रास रस भीने॥
चारि दंड निशि रहि जब बाकी ❀ तब शठकोपादिक सुख छाकी॥
आचारज हरि भवन दुबारे ❀ प्रभुहि जगावन सकल सिधारे॥

दोहा-उक्तियुक्ति बहुभांतिकी, रचि रचि छंद प्रबंधु॥
भये जगावत गायकै, पूरण करुणासिंधु॥ २८॥

रंगनाथ गोदा दोउ जागे ❀ भवन गवन करिवो अनुरागे॥
विष्णु चित्त शठकोपादिक सब ❀ विदा तयारी करत भये तब॥
सुभग पालकी रतनजालकी ❀ आवत भये तहँ भुवनपालकी॥
विष्णुचित्त दंपति बडभागी ❀ रंगनाथ चरणन अनुरागी॥
रंगनाथ अरु गोदा काहीं ❀ दियो चढाय पालकी माहीं॥
करि परिछन आरती उतारी ❀ कीन्ह्यो रुदन रीति संसारी॥
विदा कियो पुनि रंगनाथको ❀ किय प्रणाम युग जोरि हाथको॥
रंगनाथ अरु गोदा प्यारी ❀ चढि पालकि जनवास सिधारी॥
तहँते भे दोउ गरुड सवारा ❀ छाइ रही दुंदुभी धुकारा॥
शिव नंदी मराल मुख चारी ❀ किय ऐरावति शक्र सवारी॥
शिखी स्वामि कार्तिक शुभ वेशा ❀ भो अरूढ पालकी जलेशा॥

पुष्प विमान धनद असवारा * चढ्यो महिष यमराज उदारा ॥
दोहा-औरहु सिगरे देवता, चढि चढि निज निज यान ॥
रंगनाथ सँग रंगपुर, कीन्हे मुदित पयान ॥ २९ ॥
औरहु सकल भक्त अनुरागी * लीन्हे छत्र चमर बडभागी ॥
यहि विधि चली बरात सुहावन * गोदासों बोले जगपावन ॥
वन उपवन गिरि ग्राम सुखारी * मंजु सरित सर देखहु प्यारी ॥
यहि थल मोर भक्त परकाला * मोहिं लूटि लीन्ह्यों [illegible] काला ॥
दिय साधुन भोजन करि चोरी * राख्यो भवन वस्तु [illegible]हिं थोरी ॥
यहिविधि देखरावत गोदाको * गयो रंगपुर पति कमलाको ॥
करि करि रंगनाथ परणामा * गये देव सब निज निज धामा ॥
गोदा संग रंगपतिपावन * षटऋतु कियो विहार सुहावन ॥
कछु दिन महँ गोदा सुखभीनी * भई रंगपति अंगहि लीनी ॥
गोदा अंबाको इतिहासा * मैं कीन्ह्यो संक्षेप प्रकाशा ॥
गोदा सरिस भयो कोउ नाहीं * जाके हित कलिकालहु माहीं ॥
प्रगट प्रत्यक्ष रमा करनाहा * विष्णुचित्त घर कियो विवाहा ॥
दोहा-मनुजलखे प्रत्यक्ष सुर, भो जगरीति विवाह ॥
जनि अचरज श्रोता गुणहु, हरि निज जन गुणगाह ॥ ३०
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथ श्रीरामानुजकी कथा।

दोहा-श्रोता श्रद्धासहित सब, सुनहु सुमति दै कान ॥
कथा प्रपन्नामृत उदधि, मैं अब करौं बखान ॥ १ ॥
रामानुजको मुख्य चरित्रा * और अचारज कथा पवित्रा ॥
अहै प्रपन्नामृत विस्तारा * जेहिं नब्बे अध्याय उचारा ॥
मैं संक्षेपहि करौं बखाना * पै प्रबन्ध सम्बन्ध न आना ॥
एक समय विकुंठपुर माहीं * शेष सेजपर नाथ सोहाहीं ॥
महाघोर लखि कलियुग काहीं * प्रभु विचार कीन्ह्यो मनमाहीं ॥

केहिविधि मम सन्मुख जन होहीं * हैंगे सिगरे नरक बटोही ॥
प्रभुको चितत जानि अहीशा * बोल्यो वचन नाइ पद शीशा ॥
का चिंतत हो प्रभुकर सोगू * कहौ जो होइ कहनके योगू ॥
तब नारायण वचन उचारा * सुनहु वचन मम वदन हजारा ॥
कलिके जीव कहौं केहि भांती * मेरे पुर आवैं सब जाती ॥
तुमहि बिना अस कोउ न देखावै * जो मम सन्मुख जीव करावै ॥
ताते लेहु मही अवतारा * सब जीवन कर करहु उधारा ॥

दोहा—सुनि नारायणके वचन, कियो विनय फणिराज ॥
दीजे दोऊ विभूति मोहिं, तब हैहै सिधिकाज ॥ २ ॥

एवमस्तु तब श्रीपति भाषे * अहिप अवनि आवन अभिलाषे ॥
दै प्रदक्षिणा प्रभुकहँ चारी * लग्यो चरण जबै महिधारी ॥
तब नारायण वचन उचारे * भक्ति काज अब हाथ तुम्हारे ॥
करियो तस जैसो मन आवै * तुम विनको अज्ञान मिटावै ॥
शंख चक्र आदिक पठवाये * मनुज स्वरूप धारि जग आये ॥
नेसुक जीव इतै भेजवाये * आरन नहिं उपदेश बताये ॥
तुमहुँ मौन धारि रह्यो न ताता * जीवन उपदेश्यो यश माता ॥
सुनि शासन प्रभुको धरि शीशा * एवमस्तु कहि चल्यो अहीशा ॥
दक्षिण कावेरी सरि पावनि * भूतपुरी तहँ रही सोहावनि ॥
तेहि नगरीमहँ अति मतिधामा * रह द्विज केशव जज्वा नामा ॥
संपति सकल भवन रह भूरी * कांतिमती तेहिं तिय छबि पूरी ॥
पुत्र रह्यो नहिं विप्र दुखारी * सुमिरत तिन यदुनाथ मुरारी ॥

दोहा—है प्रसंग अहिराज प्रभु, बसे गर्भ तेहिं आय ॥
होन लगे तबते पुरी, नित नव मोद निकाय ॥ ३ ॥

चैत शुक्ल पञ्चमि गुरुवारा * कांतिमती तहँ जन्यो कुमारा ॥
केशव जज्वा पुत्र निहारी * दीन्ह्यो दान द्विजनगण भारी ॥
केशव जज्वाके गुरु रहेऊ * नाम शैलपूरण जग लहेऊ ॥
केशव जज्वा गुरुहि बोलायो * सुतको जातकर्म करवायो ॥

छठी भई बरहौं पुनि भयऊ * नाम तासु रामानुज दयऊ ॥
भे पसनी पुनि छठयें मासा * बालक बढ्यो भानुसम भासा ॥
संस्कार किय पंच प्रकारा * जान्यो सबै शेष अवतारा ॥
पुनि व्रतबंध भयो कछु काला * पढ्यो चारिऊ वेदविशाला ॥
षोडश वर्ष वैस जब आई * दियो पिता जब व्याह कराई ॥
काल पाइके पुनि कृत कामा * केशव जग्वा गे हरिधामा ॥
प्रेतकर्म पितुको करि दीन्ह्यो * शास्त्रन पठन मनोरथ कीन्ह्यो ॥
यादव गिरि इक रह्यो गोसाईं * पूरण पंडित सुरगुरु नाईं ॥

दोहा-पठन हेतु ताके निकट, रामानुज मतिवान ॥
लै पुस्तक करते भये, कांचीपुरी पयान ॥ ४ ॥
न्याय व्याकरण आदि सब, पढ्यो सांग सविधान ॥
पुनि वेदांत अरंभ किय, सुमिरत कृपानिधान ॥ ५॥

पठत पठत बीत्यो कछु काला * तहँको रह्यो जौन महिपाला ॥
तासु सुता रहि सुछबि विशाला * ताहि लग्यो इक ग्रह कराला ॥
राजा यतन अनेकन ओज्यो * पै न ब्रह्मराक्षस तेहि छोज्यो ॥
यादवको तहँ सुन्यो नरेशा * बडे मंत्र शास्त्री यहि देशा ॥
सुता हेतु राजा बोलवायो * शिष्य सहित यादव तहँ आयो ॥
रामानुजहु गये सँग ताके * ध्यावत मनहि नाथ कमलाके ॥
यादवके ढिग सुता बोलाई * राजा विनय कियो शिर नाई ॥
लग्यो ब्रह्मराक्षस दुहिताको * छूटत नाहिं यतन करि थाको ॥
यंत्र मंत्र कर देहु छोडाई * तुमहिं छोडि नहिं और उपाई ॥
यादव ब्रह्मराक्षसहिं देख्यो * अतिशयप्रबल ताहि मन लेख्यो ॥
पढि पढि मंत्र लग्यो द्विजझारन * भई न सुता विथा कछु वारन ॥
प्रेत बैठ तब हँसत ठठाई * यादव ओर पाउँ पसराई ॥

दोहा-तबहिं ब्रह्मराक्षस कह्यो, यादवसों अस बैन ॥
लाखयतन द्विज तुम करो, तुमसों मोहिं कछु भै न ॥६॥

अब अस मंत्र शास्त्रके ज्ञातन * हम उडाय देते हैं बातन ॥

पूर्वजन्मकी खबरि तुम्हारी ❋ सिगरी जानी अहै हमारी ॥
गोहर है तुम पूरव जन्मा ❋ वसे विमोट येक कहुँ वनमा ॥
कढे ताहि मारग कोउ साधू ❋ जिनको हरिपर प्रेम अगाधू ॥
निर्मल जल तहँ देखि तलाई ❋ भोजन रच्यो तुरंत नहाई ॥
करि पूजा प्रभुकी सुखदाई ❋ भोजन कीन्ह्यों भोग लगाई ॥
भोजन करि पतरीसर मोटे ❋ फेंकि दियो तेरोइ विमोटे ॥
साधु जबै मारग गहि लीन्हे ❋ तबतें कढि भोजन सोइ कीन्हे ॥
साधु जूंठ भोजन परभाऊ ❋ भये आय यादव द्विजराऊ ॥
साधु उच्छिष्ट पुण्य अतिबाढी ❋ विद्या त्वहिं आई अतिगाढी ॥
भयो ब्रह्मराक्षस जेहिं हेतू ❋ सो मैं कहत सुनहु मतिकेतू ॥
मैं द्विज रह्यो सहित निजनारी ❋ कीन्ह्यों यज्ञ जगत महँ भारी ॥

दोहा—भूलि गयो मोहिं मंत्र तब, भयो कृपाकर लोप ॥
सोइ पापतें मैं भयो, ब्रह्म प्रेत भरि कोप ॥ ७ ॥

जरन लग्यो निशि दिवस शरीरा ❋ भ्रमत रह्यों भूमहँ सहि पीरा ॥
भ्रमत भ्रमत इक समय तहांहीं ❋ आयो कांची नगरी मांहीं ॥
नृपके सुता काहँ मैं लाग्यो ❋ तबते कछुक मोर दुख भाग्यो ॥
यंत्री मंत्री सबै हजारन ❋ करि नहिं सके मोहिं कछु वारन ॥
तुमहुँ जाहु द्विज अब घरमाहीं ❋ हम छोंडब कैसेहु यहि नाहीं ॥
यहि छोंडनकी एक उपाई ❋ सो हम तुमको देत बताई ॥
तुम्हरे शिष्यन महँ इक अहई ❋ मोहिं छोंडाय देहि जो चहई ॥
अपनो चरणोदक मोहिं देवै ❋ अपनो शिष्य मोहिं करि लेवै ॥
नाव तासु रामानुज जानो ❋ तुम्हरे सँग महँ कियो पयानो ॥
यादव भयो चकित सुनि ऐसो ❋ लै दुहिता कहँ भूपति तैसो ॥
रामानुजके चरणन माहीं ❋ डारि दियो नृप दुहिता काहीं ॥
कह्यो नाथ यह राक्षि कुमारी ❋ लग्यो ब्रह्मराक्षस यहि भारी ॥

दोहा—रामानुज स्वामी तबै, निजपद कंज पखारि ॥
दियो सुताके वदन महँ, एक बारहीं डारि ॥ ८ ॥

सुता शीश निजपद धरि दीन्ह्यों ❀ जाहु जाहु अस शासन कीन्ह्यों ॥
दिय अष्टाक्षर मंत्र सुनाई ❀ तरयो प्रेत गो स्वर्ग सिधाई ॥
यह चरित लखि यादव सोई ❀ गयो लजाइ मौन भो रोई ॥
भूपति सुते अरोग निहारी ❀ पूज्यो रामानुजै सुखारी ॥
यादवहूंको किय सतकारा ❀ यादव लौटि भवन पगु धारा ॥
तब रामानुज अति सुख छायो ❀ पूजा माहिं जौन धन पायो ॥
सिगरो यादव कहँ दै डारयो ❀ तदपि न यादव शोच विचारयो
रामानुजसों बांध्यो वयरा ❀ ऊपर सरल पेट महँ कयरा ॥
रामानुज मौसीके बेटा ❀ आये करन भ्राततों भेटा ॥
नाम तासु गोविंदाचारज ❀ सकल साधु जन कारककारज ॥
यादवके ढिग तुरत सिधाई ❀ रामानुजहिं मिले शिरनाई ॥
पढत वेदांत निरखि निज भ्राते ❀ आपहु पढन लगे वेदांते ॥

दोहा–एक समय श्रुति अर्थको, यादव करयो विरुद्ध ॥
रामानुज बोलत भये, गुरु यह है नहिं शुद्ध ॥९॥

तब यादव कह कुपित अपावन ❀ भये तुमहिं गुरु लगे पढावन ॥
यादव कियो आंखि अरुणारी ❀ रामानुजको दियो निकारी ॥
रामानुज अपने घर आई ❀ चिंतत बैठ शास्त्र समुदाई ॥
पढन हेतु गुरुगृह नहिं गयऊ ❀ यादव महाकोप उर ठयऊ ॥
कह्यो आपने शिष्य बोलाई ❀ रामानुज मम रिपु दुखदाई ॥
मोहिसों पढयो वैर किय मोसो ❀ बालकसों मैं पाल्यो पोसो ॥
मेरो मत अद्वैत अखंडा ❀ ताहि करन चाहत शतखंडा ॥
ताते अस सब करहु उपाई ❀ रामानुज मारहु जेहि जाई ॥
हम उपाय ऐसी करि राखी ❀ तुमसों सकल देतहैं भाखी ॥
चलिये मज्जन मकर प्रयागे ❀ वेणीमहँ वोरैहैं अभागे ॥
शिष्य कह्यो शंका नहिं कीजै ❀ रामानुजहिं मरो गुण लीजै ॥
अस कहि रामानुज गृह आई ❀ कोउ शिष्य तेहि गयो लेवाई ॥

दोहा–यादव लखि रामानुजै, कियो प्रशंसा भूरि ॥
मकर माघ स्नान हित, चलहु प्रयागे दूरि ॥ १० ॥

रामानुज जननी ढिग आई ❀ प्राग जानि हित माँगि बिदाई ॥
करन प्रयाग मकर स्नाना ❀ याद्वके सँग कियो पयाना ॥
आये जब थहि विंध पहारा ❀ लहि एकांत गोविंद उदारा ॥
रामानुजको सकल बुझायो ❀ यादव तोहिं मारन लै आयो ॥
रहियो सावधान महँ भाई ❀ यादवसों बचि हौ बरियाई ॥
यह सुनि रामानुज तेहि ठामा ❀ बैठ रह्यो तरुतर मतिधामा ॥
यादव जात रह्यो कछु आगू ❀ मिल्यो जाइ गोविंद बडभागू ॥
यादव भाष्यो गोविंदकाहीं ❀ रामानुज आयो कस नाहीं ॥
गोविंद कह्यो मोहिं भ्रम भयऊ ❀ रामानुज आगे कढि गयऊ ॥
ताते हम तुमको मिलि लीन्ह्यों ❀ रामानुज कर खोजन कीन्ह्यों ॥
यादव तब शिष्यन दौरायो ❀ रामानुजको खोज करायो ॥
मिल्यो न रामानुज तेहि कानन ❀ जान्यो खाय लियो पंचानन ॥

दोहा—रामानुजको मृतक गुणि, यादव अति सुखमानि।
गंगामज्जन मानिफल, सोये पग पटतानि ॥ ११ ॥

यादव शिष्य समेत प्रयागा ❀ मज्जनहेतु गयो छलपागा ॥
विजन विपिन रामानुज जाई ❀ तरुतर बैठ्यो शंका छाई ॥
मम आगे पाछे कोउ नाहीं ❀ काह करैं केहि विधि कहँ जाहीं ॥
अस विचारि बैठ्यो करि ध्याना ❀ सँकरेके सहाय भगवाना ॥
निजजन दुख करुणानिधि देषी ❀ रहि न गयो उठि चले विशेषी ॥
आये कमला सहित मुरारी ❀ व्याध व्याधिनी करवपु धारी ॥
कमठातीर तेग कर धारे ❀ दंपति रामानुजहि निहारे ॥
जहँ रामानुज बैठ यकंता ❀ तहँ ह्वै कढचो रमाकर कंता ॥
रामानुज बोले अस ताते ❀ व्याध नारियुत कहँ तुम जाते ॥
कह्यो व्याध रामानुज काहीं ❀ सत्यब्रते क्षेत्र हम जाहीं ॥
तुम को हौ अकेल वन बैठे ❀ मानहु शोक समुद्रहि पैठे ॥
तब रामानुज वचन उचारा ❀ कांचीपुर महँ भवन हमारा ॥

दोहा—मकर प्रयाग नहानहित, आये तजि गृहकाहिं ॥
राह भूल बैठे इतै, साथी पावत नाहिं ॥ १२ ॥

अब नाहिं मकर प्रयाग नहैहैं ❀ मिलै सहायक तौ घर जैहैं ॥
व्याध कह्यो कछु ज्ञान न तेरे ❀ क्षेत्र सत्यव्रत कांची नेरे ॥
चलु हम त्वाहिं कांची पहुँचैहैं ❀ बहुरि सत्यव्रत क्षेत्रहि जैहैं ॥
व्याधा वचन सुनत द्विजराई ❀ चल्यो व्याध सँग आनँद पाई ॥
कोश प्रयंत गये दोउ जबहीं ❀ रवि भे अस्त निशा भै तबहीं ॥
तब यक तरुतर कीन्ह्यो शयना ❀ व्याधिनि जगी अर्द्ध गै रैना ॥
कह पियसों मोहिं लगी पियासा ❀ ल्यावहु जल तौ जीवनआसा ॥
व्याधा कह्यो कूप है दूरी ❀ नाहिं जैहौं लागति भय भूरी ॥
तब रामानुज कह अस बानी ❀ भोर भये देहैं हम पानी ॥
यहि विधि तिनहिं भयो भिनसारा ❀ तब व्याधा अस वचन उचारा ॥
राति देन कहि राख्यो पानी ❀ देहु कूपते तुरतहि आनी ॥
तब रामानुज जलहित गयऊ ❀ कूपमाहिं जब पैठत भयऊ ॥

दोहा-व्याधा व्याधिनि दोउ तहँ, कूपसमीप सिधारि ॥
व्याध कह्यो द्रुत देहु जल, प्यासन मरती नारि १३

रामानुज जल अंजलि भरिकै ❀ दियो पियाइ दुहुँन श्रम करिकै ॥
पुनि दूसरि अंजलि भरि लाये ❀ सोउ व्याध दंपतिहि पियाये ॥
पुनि तीजी अंजलि भरि नीरा ❀ दियो पियाइ जानि अतिपीरा ॥
चौथी अंजलि भरन गये जब ❀ दंपति अंतर्द्धान भये तब ॥
निकसि कूपते लख्यो मुनीशा ❀ अपनो देश दृगनमें दीशा ॥
तब आश्चर्य गुन्यो द्विजराई ❀ को मोहिं देश दियो पहुँचाई ॥
विस्मय करत गये पुरमाहीं ❀ पूछ्यो तहँके वासिनकाहीं ॥
देहु बताय कौन यह ग्रामा ❀ ते सब कह कांची अस नामा ॥
कांचीपुरी जानि मनमाहीं ❀ रामानुज वंद्यो हरिकाहीं ॥
पुनि अस मनमहँ कियो विचारा ❀ मेरो जानि खँभार अपारा ॥
करुणा कर देवकी कुमारा ❀ पहुँचायो क्षण कोश हजारा ॥

दोहा-पुनि प्रमुदित है निज भवन, गवन कियो द्विजराइ
यादवको वृत्तांत सब, मातहि गये सुनाइ ॥ १४ ॥

पुरवासी रामानुज देखी * पुनर्जन्म लीन्ह्यो निज लेखी ॥
माता रामानुजहि बोलाई * कह्यो वचन यहि भांति बुझाई ॥
क्षेत्र सत्य व्रत महँ मतिधामा * है इक कांची पूरण नामा ॥
है अनन्य नारायण दासा * जाहु पुत्र तुम ताके पासा ॥
मार्ग वृत्तांत सकलकहि जइयो * जो कछु कहै मानि सो लइयो ॥
तब रामानुज करि अतिनेहा * गवन्यो कांचीपूरण गेहा ॥
कांची पूरणको शिर नाई * पथ हवाल सब गयो सुनाई ॥
कांची पूरण सुनि अस भाख्यो * प्रभु करुणाकर तोहिं जग राख्यो ॥
व्याध व्याधिनीको धरि वेशा * रक्ष्यो तोहिं कमला कमलेशा ॥
ताते तीन कूप तैं जाई * कनककुंभमहँ जल भरिल्याइ ॥
वरदराजको पूजन कीजै * तासु कमलपद महँ मन दीजै ॥
कांचीपूरणके सुनि बैना * रामानुज आयो निज ऐना ॥

दोहा–मातासों वृत्तांत कहि, तासु निदेशहि पाइ ॥
कनककुंभ लै कूप ढिग, जाइ तुरत जल ल्याइ ॥ १५ ॥

वरदराजके मंदिर जाई * पूज्यो सानुराग चितलाई ॥
यहि विधि नित प्रति पूजन करहीं * बसि कांची नगरी सुखभरहीं ॥
उत यादव मज्जन किय प्रागा * तहां रोगवश भयो अभागा ॥
जे गोविंदाचारज स्वामी * ध्यावत रहे सु अंतर्यामी ॥
ते जब वेणी गये नहाना * बुडकी मारयो सहित विधाना ॥
इक शिवलिंग ताहि मिलि गयऊ * गोविंदार्य सुखी अति भयऊ ॥
जाय गुरुकहँ मूर्ति देखायो * गुरुकहँ धनि तैं जो प्रभु पायो ॥
यादव गोविंद मकर प्रयंता * वसत भये ध्यावत भगवंता ॥
यादव कांचीको चलि दीन्ह्यो * शिष्यहु सकल गमन सँगकीन्ह्यो ॥
जब यादव कांचीकहँ आयो * गोविंदहु निज भवन सिधायो ॥
शिवमूरतिको थापन कीन्ह्यों * हरपद पंकज निजचित दीन्ह्यो ॥
यादवसों सब कांची वासी * रामानुजकी खबरि प्रकासी ॥

दोहा–तब यादव मनमें डरयो, कीन्ह्यो बहुत विचार ॥
तासु सहायक भुवनपति, का किय होत हमार ॥ १६ ॥

अस सुणि अपनो शिष्य पठायो * राजानुजको बहुरि बोलायो ॥
रामानुज प्रभु संत स्वभाऊ * बिसरायो वैरीकर भाऊ ॥
यादव निकट रहे पूरुव जस * रहन लगे अरु पढन लगे तस ॥
रंगनगरमहँ तौने काला * जामुन भयो अचार्य विशाला ॥
पंच शिष्य भे तासु उदारा * तिनके नामनि करौं उचारा ॥
गोष्ठी पूरण कांची पूरण * महापूर्ण औ श्रीगिरिपूरण ॥
पँचयो माला धर अवदाता * ये पांचों भे शिष्य सुज्ञाता ॥
रंगनाथ पूजन अधिकारा * जामुनि पायो विभव अपारा ॥
बैठ रह्यो जामुनि इक काला * कियो विचार सुबुद्धि विशाला ॥
मिलै मोहिं बालक इक सुंदर * राम उपासक विद्या मंदिर ॥
रंगनाथ पूजन करवाऊं * घटिका इक विश्रामहि पाऊं ॥
अस विचारि सब शिष्य बोलाये * बालक खोजनको पठवाये ॥

दोहा-खोजत खोजत शिष्य सब, कांचीपुर महँ आइ ॥
रामानुजको लखत भे, सकल गुणनि समुदाइ १७

शिष्य बहोरि रंगपुर आये * रामानुज वृत्तांत सुनाये ॥
सुनि जामुन रामानुज काहीं * अति आनँद पायो मनमाहीं ॥
रामानुजके देखन हेतू * कांचीपुरी चल्यो मतिसेतू ॥
जब जामुन कांचीपुर आयो * वरदराज दरशन चितलायो ॥
वरदराज मंदिर महँ गयऊ * करि प्रणाम प्रस्तुति निर्भयऊ ॥
करि प्रस्तुति जामुनि चलि दीन्ह्यों * तहां आगमन यादव कीन्ह्यों ॥
लसत शिष्यमंडल चहुँ फेरो * गहे हाथ रामानुज केरो ॥
तब कांचीपूरण द्रुत धाई * जामुनसों सब कह्यो बुझाई ॥
जामुन जाको पकरे हाथा * सो रामानुज हैं मुनिनाथा ॥
यादव याहि लै गयो प्रयागा * विंध विपिन मधि मारन लागा ॥
व्याधरूप करि कृष्ण बचायो * निजप्रभाव कांची पहुँचायो ॥
जामुन रामानुजको चीन्ह्यों * ताकों संभाषण मन कीन्ह्यों ॥

दोहा-पै नहिं अवसर मिलत भो, तब सुमिरयो भगवान ॥
हे प्रभु बालक मोहिं मिलै, ज्ञाता वेद पुराण ॥ १८ ॥

वैष्णव मत यह खूब चलै है ❁ वाद विवाद जीति सब लैहै ॥
नास्तिकमतको खंडन करि है ❁ मेरे उर अति आनँद भरि है ॥
असकहि जामुन शिष्य समेतू ❁ आयो रंगनगर मतिसेतू ॥
जबते रामानुजका देख्यो ❁ तबते प्राण समानहि लेख्यो ॥
केहिविधि रामानुज इत आवै ❁ श्रीवैष्णव मत जगत चलावै ॥
अस अभिलाषा करि मन माहीं ❁ रंगनाथ मंदिर नित जाहीं ॥
शुभ स्तोत्र आलवंदारू ❁ जामुन रच्यो वेदकर सारू ॥
उत रामानुज यादव नेरे ❁ पढे वेदांतन शास्त्र घनेरे ॥
एक समय रामानुज ज्ञानी ❁ यादवको अपनो गुरु मानी ॥
रहे पीठिमहँ तेल लगावत ❁ यादव तिनको रह्यो पढावत ॥
यादव किय श्रुति अर्थ विरुद्धा ❁ तब रामानुज भे अतिक्रुद्धा ॥
तात तेल सम हगते आसू ❁ यादव जंघ गिरत भो आसू ॥

दोहा–तब यादव निज शीशको, कह उठाइ अस बात ॥
रामानुज कस रोवतो, गिरत आंसु अतितात ॥ १९ ॥

तब रामानुज कह अस वानी ❁ यह श्रुति अर्थ विरुद्ध बखानी ॥
कपि नितंब सम नाहिं हरि नैना ❁ पुंडरीक सब क्यों भाषैना ॥
तब यादव कीन्ह्यों अतिकोपा ❁ रे शठ शिष्य वादकी चोपा ॥
तोहिं पढावन मैं अनुराग्यो ❁ उलटा तुहीं पढावन लाग्यो ॥
जाहु जाहु अपने घरमाहीं ❁ हम अब तोहिं पढाउब नाहीं ॥
रामानुज सुनि यादव वैना ❁ आयो दुखित आपने ऐना ॥
कांचीपूरणके ढिग जाई ❁ दियो सकल वृत्तांत सुनाई ॥
कांची पूरण कह्यो बुझाई ❁ कीजे वरदराज सेवकाई ॥
कांचीपूरणके सुनि वैना ❁ करन लग्यो पूजन सुख ऐना ॥
उत श्रीरंगनगर तेहि काला ❁ सुन्यो जामुनाचार्य हवाला ॥
रामानुजको यादव पापी ❁ किय अपमान अज्ञानी थापी ॥
कांची पूरणके ढिग जाई ❁ रामानुज निवसत सुखछाई ॥

दोहा–शालकूपते कनकघट, भरि ल्यावत है नित्य ॥
रामानुज पूजन करत, वरदराजको भृत्य ॥ २० ॥

सुनि वृत्तांत महासुख पाई * जामुन पूर्णाचार्य बोलाई ॥
कह्यो जाहु कांचीपुर काहीं * ल्यावहु रामानुजे इहांहीं ॥
पूर्णाचार्य सुनत गुरुवानी * कांचीको गवन्यो सुखमानी ॥
वरदराजके मंदिर आयो * प्रभुहिं आलवंदार सुनायो ॥
कनककुंभ जलभरे तहांहीं * रामानुजको मंदिर माहीं ॥
सुनि स्तोत्र आलवंदारा * पूरणसों अस वचन उचारा ॥
को स्तोत्र रच्यो मनहारी * कहां रहहु तुम देहु उचारी ॥
तब पूरण अस वचन सुनायो * हम तो रंगनगरते आयो ॥
तुमहि लेन जामुनि पठवाये * ते मम गुरु स्तोत्र बनाये ॥
सुनि पूरणके वचन विधाना * चह्यो रंगपुर करन पयाना ॥
तब पूरन अतिशय अतुराई * कांचीपूरणके ढिग जाई ॥
कह्यो वचन आशय सब खोल्यो * जामुनार्य रामानुज बोल्यो ॥
दोहा—कांची पूरण सुनत भे, गुरुशासन यहि भांति ॥
रामानुजकी किय विदा, रंगनगर तेहिं राति ॥ २१ ॥
पूरण रामानुजे लेवाई * रंगनगर कहँ चल्यो तुराई ॥
रंगनाथ उत कियो विचारा * अब तरिहै सिगरो संसारा ॥
यामुनार्य रामानुज दोई * सिगरे नरक डारिहैं खोई ॥
करिहौं अब ऐसही उपाई * जामें भेंट होन नहिं पाई ॥
अस प्रभु निशिमहँकियोविचारा * उये भानु जब भो भिनुसारा ॥
रंगनाथके पूजन हेतू * गो यामुन जब नाथ निकेतू ॥
रंगनाथ तब बोले बानी * करु कारज मम शासन मानी ॥
आठ रोजके अंतर माहीं * जाहु विकुंठ रहो इतनाहीं ॥
सुनि यामुनाचार्य प्रभु बैना * मानत भे अखंड उर चैना ॥
अठयें रोज यामुनाचारज * गे विकुंठ धरिशिर गुरु पदरज ॥
शिष्य सकल अतिशय दुखछाये * प्लावन हित कावेरी ल्याये ॥
रामानुज पूरण सँग माहीं * आइ गये तेहि दिवस तहांहीं ॥
दोहा—देखि जननकी भीर बहु, पूरण पूछो आइ ॥
कावेरीके तीरमें, केहि हित जनसमुदाइ ॥ २२ ॥

शिष्य कह्यो सब सुन्यो न काना * यामुन कियो विकुंठ पयाना ॥
गुरुको गवन परमपद सुनिकै * पूरण गिरचो धरा शिर धुनिकै ॥
रामानुज पूरण लहि तापा * करन लगे तहँ महा विलापा ॥
रुदन करत यामुनढिग आये * गुरुशरीरके पद शिर नाये ॥
यामुनार्यकी अँगुरी तीना * गईं सकल जन विस्मय कीना ॥
तब रामानुज कह्यो पुकारी * सुनहु सुनहु यह बात हमारी ॥
श्रीवैष्णव मत जगत पसारी * मैं तारिहौं जीव संसारी ॥
पुनि रामानुज गिरा सोहाई * यक अंगुलि तुरंत उठि आई ॥
पुनि रामानुज कह अस बानी * रचिहौं भाष्य संत सुखदानी ॥
यतनो सुनि पुनि वचन विशाला * उठी दुती अंगुलि ततकाला ॥
पुनि रामानुज वचन बखाना * रच्यो पराशर विष्णुपुराणा ॥
सो पुराण वैष्णवन पढैहौं * तारक नाम पराशर दैहौं ॥

दोहा-सो पुराण वर्णित सकल, साधन करि जगजीव ॥
पै हैं मोक्ष परोक्षगति, ब्रह्मानंदहि सीव ॥ २३ ॥

रामानुज मुख गिरा जु निसरी * फैलि गई अंगुलि तब तिसरी ॥
यह लीला लखि मनुजन काहीं * लागत भो अचरज मनमाहीं ॥
पुनि वैष्णव यामुनहि उठाये * विधिवत कावेरी पधराये ॥
सब वैष्णव रामानुज काहीं * बोले वचन चलहु पुरमाहीं ॥
रंगनाथको दरशन कीजै * तिनको सब कैंकर्य करीजै ॥
तब रामानुज कह्यो सकोपा * कीन्ह्यो नाथ मनोरथ लोपा ॥
रंगनगर जैहैं हम नाहीं * कांची जैहैं यहि क्षणमाहीं ॥
यामुनार्य दरशन हित आये * तिनको नाथ विकुंठ पठाये ॥
मेरे हेतु दया नहिं कीन्ह्यो * आजहु कालिह रहन नहिं दीन्ह्यो ॥
निर्दय रंगनाथ हैं साचे * भक्त मनोरथ पूरण काचे ॥
ताते हम दरशन नहिं करिहैं * कांचीपुरी अवशि पगु धरिहैं ॥
अस कहि सिगरे वैष्णवन उचारयो * रामानुज कांची पगु धारयो ॥

दोहा-कांचीपुरी सिधारिकै, क्षीर नदीमें न्हाय ॥
वरदराजको दरशकै, बसे भवनमें जाय ॥ २४ ॥

सुखसों सोवत भयो प्रभाता * तब रामानुज मति अवदाता ॥
कांचीपूरण सदन सिधायो * यामुन गवन परमपद गायो ॥
गुरुयात्रा सुनि श्रीपति पद कहँ * कांचीपूरण दुखित भयो तहँ ॥
रामानुज अतिशय अनुराग्यो * कांचीपूरण सेवन लाग्यो ॥
रामानुज एक दिय कर जोरी * कह्यो गुरू सुनु विनती मोरी ॥
एक दिन मो घर भोजन कीजे * दै परसादी पूत करीजे ॥
कांचीपूरण कह्यो सुबैना * भोजन करिहैं चालि तुव ऐना ॥
रामानुज अपने घर आयो * विविध भांति व्यंजन बनवायो ॥
और मार्ग ह्वै गयो लेवावन * तहँ कांचीपूरण अति पावन ॥
और पंथ ह्वै तेहि घर आयो * तासु प्रिया कहँ वचन सुनायो ॥
मोहिं क्षुधा अतिशय अब लागी * भोजन देहु तुरत बडभागी ॥
रामानुज तिय भोजन दीन्ह्यो * कांचीपूरण भोजन कीन्ह्यो ॥

दोहा-कांचीपूरण धोइ कर, फेंकि पातरी पूरि ॥
वरदराज मंदिर गये, सेवन हित रति भूरि ॥ २५ ॥

रामानुज कांचीपूरण गृह * जात भये देख्यो नहिं तिनकह ॥
आये निज आलै तुव मोई * तबलौं तिय किय द्वितिय रसोई ॥
रामानुज पूंछ्यो निज नारी * सो वृतांत गै सकल उचारी ॥
रामानुज तब भोजन कीन्ह्यो * द्रुत हरिमंदिरको चलि दीन्ह्यो ॥
तहँ कांचीपूरण ढिग जाई * विनय कियो चरणन शिरनाई ॥
मोहिं समाश्रय करहु विज्ञानी * भवनिधि तरण उपाइ न आनी ॥
तब कांचीपूरण कह बाता * प्रभुसों पूंछि लेहुँ मैं ताता ॥
बिन पूंछे तोहिं शिष्य न करिहौं * जस प्रभुकी आज्ञा अनुसरिहौं ॥
अस कहि कांचीपूरण स्वामी * ध्यावत मनमहँ अंतर्यामी ॥
वरदराज भगवान समीपा * गो कांचीपूरण कुलदीपा ॥
हरिके विजन चलावन लागा * विनय कियो उमगत अनुरागा ॥
शिष्य होव रामानुज चाहै * जस प्रभु आज्ञा तस निरबाहैं ॥

दोहा-कांचीपूरण वचन सुनि, वरदराज भगवान ॥
कह्यो वचन षट वस्तु तुम, तासों कह्यो बखान २६॥

हमहीं परम तत्त्व जगकारन ❀ जिय अरु ईश भेद साधारन ॥
सब विधि गहब मोरि शरणाई ❀ यही मुख्य है मोक्ष उपाई ॥
मरत जो नहिं सुमिरै जन मोही ❀ तौं हमहीं सुधि करते छोही ॥
जो अनन्य है मेरो दासा ❀ ताहि मैं देहुँ परम पद वासा ॥
रामानुज करि अति अतुराई ❀ होइ शिष्य पूरणको जाई ॥
कांचीपूरण ये षट् बाता ❀ रामानुजहि कह्यो विख्याता ॥
तब कांचीपूरण द्रुत आई ❀ रामानुजको गये सुनाई ॥
रामानुज हरि शासन पायो ❀ रंगनगरको तुरत सिधायो ॥
इते रंगपुरमहँ तेहिं काला ❀ श्रीवैष्णव सब रहे बिहाला ॥
यामुन बिरह सह्यो नहिं जाई ❀ कहैं कौन अब ज्ञान बताई ॥
महापूरण आदिक सब साधू ❀ शोकित यामुन बिरह अगाधू ॥
सकल संत संमत तब कीना ❀ होइ अचारज कौन प्रवीना ॥

दोहा–वैष्णव मतको जगतमें, पाषंडिन मत खंडि ॥
कोउ दंड मंडित करै, कौन अखंड अदंडि ॥२७॥

सब संतन मिलि कियो विचारा ❀ है रामानुज यही प्रकारा ॥
रंगनगर रामानुज आवै ❀ तौ वैष्णव मत सकल चलावै ॥
सकल संत संमत अस करिकै ❀ पूरणसों बोले मुद भरिकै ॥
कांचीपुरी जाहु तुम स्वामी ❀ दरशन किन्ह्यो वरद खगगामी ॥
रामानुजको निकट बोलाई ❀ लिन्ह्यो आपनो शिष्य बनाई ॥
संसकार पांचौ तेहि करिकै ❀ ल्यावहु रंगनगर सुखभरिकै ॥
पूरण सुनि सब संतन बानी ❀ कांची चल्यो महा मुद मानी ॥
उतते रामानुज हू आयो ❀ इतते पूरण आय सिधायो ॥
कांची रंगनगर बिचमाहीं ❀ अग्रहार यक ग्राम तहाहीं ॥
तहँ भै भेंट दुहुँनसों जबहीं ❀ माने सिद्ध मनोरथ तबहीं ॥
रामानुज पूरण पदमाहीं ❀ गिरयो प्रेमवश कह कछु नाहीं ॥
पुनि धीरज धरि कह अस बाता ❀ कहँ प्रभु धारब पूरण ताता ॥

दोहा–रामानुजके वचन सुनि, पूर्णाचार्य सुजान ॥
निज आगमन कारण सकल, तासों कियो बखान२८

कह रामानुज बुद्धिविशाला * कीजै शिष्य मोहिं यहि काला ॥
पूर्णाचार्य कह्यो तब ताको * क्षेत्र सत्यव्रत चलहु तहांको ॥
तहँ हम तुम्हैं समाश्रित करिहैं * दीक्षाविधि सिगरी अनुसरिहैं ॥
तब रामानुज गिरा सुनाई * नाथ अचिंत्य काल कठिनाई ॥
हम तुम यामुन दरशन हेतू * आये रंगनगर मतिसेतू ॥
तेहि दिन यामुन परगति पाई * दरशन आश न मिटी मिटाई ॥
नहिं कछु कालु केर विश्वासा * केहि क्षण जीवन केहिं क्षणनासा ॥
ताते अबहिं समाश्रित कीजै * और कछू शासन नहिं दीजै ॥
जहँ गुरु मिलै शिष्य तहँ होवै * देश कालको कछु नहिं जोवै ॥
सकल शास्त्रसिद्धांत यही है * शिष्य होइ गुरु मिलै जहीं है ॥
प्रीति अलौकिक पूरण देखी * संतशिरोमणि तेहि जिय लेखी ॥
राम धाम यक रह्यो तहांही * रामानुजको लै सँगमाहीं ॥

दोहा—पूरणार्य तहँ जाइकै, दीक्षाविधि सब कीन ॥
रामानुज भुज मूलमें, शङ्ख चक्र धरि दीन ॥ २९ ॥

ऊर्ध्व पुंड्र पुनि दियो ललाटा * जाहि लखत बिसरत यम बाटा ॥
लक्ष्मणार्य अस नाम धरायो * अष्टाक्षर तेहि मंत्र सुनायो ॥
पुनि विधि सहित हवन तहँ कीन्ह्यो * पांचहु संस्कार करि दीन्ह्यो ॥
वरदराज पूजन अधिकारा * रामानुजको दियो उदारा ॥
रामानुजको संग लेवाई * पूरणार्य कांचीपुर जाई ॥
वरदराज लखि लह्यो हुलासा * रामानुज निवास किय बासा ॥
पूरणार्य रामानुज बोली * कहत भये मन आशय खोली ॥
यामुनार्यके यात्रा पाछे * तुम वैष्णव मत थापहु आछे ॥
सब वैष्णव माहँ मति धामा * अहै चक्रवर्ती तुव नामा ॥
सुनि रामानुज गुरुकी बानी * कियो प्रणाम जन्म धनि जानी ॥
पुनि गुरुसों बहु शास्त्र पुराना * पढ्यो अंग क्रमसहित विधाना ॥
पाखंडिनके मत बहु खंडे * श्रीवैष्णव मत महिमहँ मंडे ॥

दोहा—कांचीनगरी महँ रही, तेजी संतसमाज ॥
तिन सबको सत्कार किय, रामानुज द्विजराज ॥ ३० ॥

कांचीनगरी महँ गुरुपासा ❁ कीन्ह्यों वास सुखित षटमासा ॥
एक दिवस अपने गृह पाहीं ❁ तेल लगावत अंगनि माहीं ॥
तहँ इक कोउ भिक्षुक द्विज आयो ❁ तेहिं लखि करुणा रस उरछायो ॥
निज नारीको कह्यो बोलाई ❁ देहु अन्न याको कछु ल्याई ॥
नारी कह्यो कछू घर नाहीं ❁ अन्नहेतु ढूंढन कहँ जाहीं ॥
तब स्वामी अमर्ष करि भारी ❁ आपहि ढूंढन चले सुखारी ॥
अपने घरमें ढूंढन लागे ❁ पायो अन्न कछू सुख पागे ॥
ले ओदन तियको देखरायो ❁ कह्यो मूर्खिनी कहँते आयो ॥
तैं दुष्टा नहिं करसि विचारा ❁ करहिअतिथिकोअतिअपकारा ॥
तब सभीति रामानुज नारी ❁ बैठ रही घर कछु न उचारी ॥
एक समय पुनि तेहि पुर माहीं ❁ जहँ जलभरन सकल त्रियजाहीं ॥
तौने कूप माहि घट लेकै ❁ पूरणार्यकी तिय सुख भ्वैके ॥
दोहा–गई भरनजल तेहि समय, रामानुजकी नारि ॥
गई तौनही कूपमें, भरन हेतु वर वारि ॥ ३१ ॥
रामानुज तिय पूरणनारी ❁ एक संग गगरी दोउ डारी ॥
पूरण तिय जब जल भरि लयऊ ❁ रामानुज तिय घट पर परेऊ ॥
रामानुज तिय अतिहिं रिसाई ❁ गुरुनारीकी कानि विहाई ॥
बोली वचन कुंभजल तोरा ❁ कियो अशुचि परिके घट मोरा ॥
रे कुल नीच न जानसि बाता ❁ हमरो कुल जगमें विख्याता ॥
तेरो परशित जल नहिं पीहैं ❁ यह घट कूप डारि हम देहैं ॥
तब कोपित कह पूरणनारी ❁ मैं तेरी जानहु बडवारी ॥
याहि विधि दुहुँसो भयो विवादा ❁ छूटी गुरू शिष्यमर्यादा ॥
पूरण तिय तब निज घर आई ❁ निज पतिसों सब कथा सुनाई ॥
पूरण मानि मनहिं अपमाना ❁ तुरत रंगपुर कियो पयाना ॥
उत रामानुज सेवन हेतू ❁ सांझ समय गे गुरूनिकेतू ॥
गुरुको तहँ न देखि दुख पागे ❁ सबै परोसिन पूंछन लागे ॥
दोहा–तहँके जन भाषत भये, तुव तिय पूरणनारि ॥
दोउ कूपजल भरतमहँ, करत भई अतिरारि ॥ ३२ ॥

कारण हम कछु तासु न जाना * रंगनगर गुरु कियो पयाना ॥
रामानुज तुरंत घर आई * पूंछन लागे नारि बोलाई ॥
तब बोली रामानुज दारा * तेहिं परसितजल अशुचिअपारा ॥
ताते कुंभ कूपमहँ डारी * मैं आई ताको दै गारी ॥
सुनि रामानुज किय अतिकोपा * कीन्हो अरी धर्मकर लोपा ॥
जासु उच्छिष्ट सदा हम खाहीं * तेहिं तिय परसित जलशुचि नाहीं
यह को सुनै को करै उचारा * तैं किय गुरु अपकार अपारा ॥
अब नहिं मैं राखिहौं गृह तोको * क्षणभरि नीक लगत नहिं मोको ॥
तब डेराइ रामानुज नारी * है नाम्रित बहु विनय उचारी ॥
बरदराजके मंदिर माहीं * रामानुज गे पूजन काहीं ॥
मनमें लागे करन विचारा * तजौं कौन विधि मैं निज दारा ॥
ताही समय विप्र इक आयो * लागि क्षुधा अस वचन सुनायो ॥
दोहा-तब रामानुज यह कह्यो, लै सहिजानी मोरि ॥
जाहु भवन मम नारि है, क्षुधा निवारी तोरि ॥ ३३ ॥
भवन गयो लै द्विज सहिजानी * भोजन देहु कह्यो अस बानी ॥
तब रामानुज तिय अनखाई * राख्यो का तुव हेतु धराई ॥
जाहु जाहु घरते भिखियारी * नाहिं रुचि पैहहु देन हमारी ॥
बहुरि विप्र रामानुज नेरे * आइ कह्यो जस गुण तियकेरे ॥
तब रामानुज मनहिं विचारा * लागि गयो अब यतन हमारा ॥
सह्यो तीनि अपराध तियाके * तियमहँ अवगुण सब वसुधाके ॥
अस विचारि पुनि विप्र बोलायो * ताहि भांति यह वचन सुनायो ॥
तेरे मैकेते हम आये * तुव ढिग जननी जनक पठाये ॥
है तेरे भ्राताकर व्याहा * तैं आवै इत होइ उछाहा ॥
निजकर पुनि पत्रिका बनाई * कुंकुम मलयज बिंदु सिंचाई ॥
लिख्यो ताहि महँ यही हवाला * मम सुत होत व्याह यहिकाला ॥
तोरे आये पूरण होई * बिन आये हँसिहैं सब कोई ॥
दोहा-अस पाती लिखि विप्रकर, रामानुज दै दीन ॥
विप्रचल्यो पछितात घर, कौन काज हम कीन ॥ ३४ ॥

जब द्विज जाइ पत्रिका दीनी * रामानुज तिय सादर लीनी ॥
पितु पठयो गुणि करि सतकारा * दिय अहार तेहिं विविध प्रकारा ॥
रामानुज जब घर पुनि आये * तब तिय कह्यो मोदमन छाये ॥
मम भ्राता कर होत विवाहू * कहो तौ देखन जाउँ उछाहू ॥
जननी जनक मोहिं बोलवायो * यह द्विज कन्त बोलावन आयो ॥
तब रामानुज आनँद मान्यो * जाहु अवशि अस वचन बखान्यो॥
लै पट भूषण औरहु साजू * दिहेहु अनुजकहँ मध्यसमाजू ॥
हम दिन पांच गये उत ऐहैं * तुमको पुनि लेवाइ इत लैहैं ॥
नारि विविध पट भूषण लैकै * चलै पीरकहँ प्रमुदित ह्वैकै ॥
तब रामानुज लहि सुखरासी * जान्यो छूटि गयो गलफांसी ॥
पुनि विचार किय परम उदंडा * अब धारण करि लेहिं त्रिदंडा ॥
अब न गृहस्थाश्रम हम रहिहैं * औरहु कछू वस्तु नहिं चहिहैं ॥

दोहा-पठै मायकै निज सती, त्यागि जगतकी आस ॥
नारायणपद प्रेम करि, दियो विहाइ अवास ॥ ३९ ॥

याहि विधि तहां त्यागि निज नारी * घर कुटुंबकी सुरति विसारी ॥
वसन कषाय सुपात्र अखंडा * तथा कमंडलु और त्रिदंडा ॥
ग्रहण करब त्रिदंडकी साजू * लै अपने सँग मोद दराजू ॥
वरदराज मन्दिरमहँ जाई * आगे धरयो साज समुदाई ॥
पुनि कर जोड खडे भये आगे * रामानुज अच्युत अनुरागे ॥
विनय कियो हे त्रिभुवन राऊ * जो तुम्हारि अनुशासन पाऊं ॥
ग्रहण करूं त्रिदंड यहि काला * जो निरवाहहु दीनदयाला ॥
सुनि रामानुज गिरा सुहाई * प्रभु प्रत्यक्ष बोले मुसकाई ॥
जाहु अनंत सरोवर काहीं * तहां वसै मम भक्त सदाहीं ॥
तिनसों भूरि मित्रता कीजै * सविधि त्रिदंड ग्रहण करिलीजै ॥
रामानुज सुनि वचन नाथके * गुन्यो भये जन रमानाथके ॥
सो आनँद उरमहँ न समाई * गयो अनंत सरोवर धाई ॥

दोहा-तहँ हरिदासन बोलि बहु, करि शिरभरि परणाम॥
चरण यामुनाचार्यके, वंदन करि तेहि याम॥ ३६॥
सादर सविधि सुसंत हुलासी * गह्यो त्रिदंड भयो संन्यासी॥
तबते यतिवर नाम कहायो * देव गगन दुंदुभी बजायो॥
भई गगनते फूलनि वर्षा * जय जय कियो सुसंत सहर्षा॥
महिमंडल महँ मंगल छायो * लुक्यो जाय कलि विपिनडरायो॥
इत कांची पूरण कहँ राती * सपन दियो मधुकैटभ घाती॥
मम पादुका और पद नीरा * छत्र विशाल जटित बहु हीरा॥
चामर चारु चारि छबिछाई * रत्न जटित पालकी सोहाई॥
तेहि पालकीमाहँ छबिछावन * धरि मेरे पादुका सुहावन॥
रामानुजके निकट सिधाई * ल्यावहु तिनको इहां लेवाई॥
कांचीपूरण सुणि प्रभु शासन * उठे प्रभात त्यागि निजआसन॥
प्रभु पादुका पालकी धरिकै * चामर छत्र सहित सुख भरिकै॥
लेन सुरामानुज अगुवाई * कांचीपूरण चले तुराई॥
दोहा-रामानुजके निकट चलि, धारि खराऊं शीश॥
कांचीपुर ल्याये सुखित, सुमिरि वरद जगदीश॥ ३७॥
और त्रिदंडहि ग्रहणकी, कृत्ति रही जो बाचि॥
कांचीपूरण सकलसो, करवायो मनराचि॥ ३८॥
यतिवर लहि आनँद निकर, हरिमंदिर महँ जाइ॥
बारहिंबार प्रणाम किय, सुस्तुति अमित सुनाइ॥ ३९॥
वरदराज मंदिर सदा, रामानुज किय वास॥
सादर संतन बोलिकै, भोजन दिय सहुलास॥ ४०॥
रामानुजको वरदप्रभु, दीन्ह्यो यतिवरनाम॥
कांचीपूरण देतभे, प्रभुआज्ञाते धाम॥ ४१॥
रामानुजको चरित यह, सुनै जो प्रीतिसमेत॥
सो संसार असार तजि, वसै मुकुंद निकेत॥ ४२॥

श्लोक-रामानुजाय नाथाय यतींद्राय महात्मने ॥
कृपापात्रप्रसन्नाय लक्ष्मणार्याय ते नमः ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अथ दाशरथि अरु कूरेशकी कथा।

दोहा-कांचीपुरके पूर्वदिशि, रह्यो निकट इक ग्राम ॥
तहँ अनंतदीक्षित रह्यो, विप्र एक मतिधाम ॥ १ ॥

यतिवरको भगिनी पति सोई * अति सुशील तेहिं कह सब कोई ॥
ताके भो सुकुमार कुमारा * दाशरथी अस नाम उचारा ॥
वेद वेदांत दांत अति शांता * कमलाकांत दास क्षिति क्षांता ॥
सो सुनि मातुल भक्त उदंडा * आचारज ग्रहीत तिरदंडा ॥
दाशरथी मातुल ढिग आयो * भैने लखि यतिवर सुख पायो ॥
भयो समासृत मातुल पाहीं * पढ्यो ग्रंथ शतपंथ सदाहीं ॥
भट्ट अनंत एक द्विज रहेऊ * ताके एक आत्मज भयऊ ॥
ताको नाम भयो कूरेशा * सेवक संत श्रीकंत महेशा ॥
सो कहुँ कांचीपुरमहँ आयो * रामानुजको लखि सुख पायो ॥
भयो शिष्य रामानुज केरो * ज्ञाता वैष्णव शास्त्र घनेरो ॥
दाशरथी कूरेश शिष्य दोउ * यतिपतिअतिप्रियकहतसबकोउ ॥
कांचीपुरी गुरूके पासा * बसत भये किय शास्त्र विलासा ॥

दोहा-एक समय कांचीपुरी, यादव द्विजकी मात ॥
यतिवरको कहु पंथमहँ, पेख्यो अति अवदात ॥ २ ॥

ऊर्ध्वपुण्ड्र सोहत जेहिं भाला * शंख चक्र भुज मूल विशाला ॥
भानुसमान भास चहुँ पाहीं * पट कषाय सोहत तनुमाहीं ॥
धरे त्रिदंड उदंड पाणिमें * रति अछिन्न जानकीजानिमें ॥
लखि तिनको यादव द्विजमाता * कियो प्रणाम धाम विख्याता ॥
लौटि भवनको सो चलि आई * यादवको अस गिरा सुनाई ॥
रामानुजसों वैर बढायो * अपनो अति अपवाद बनायो ॥

अब नहिं तासों बैर करीजे ❀ शासन मोर मानि सुत लीजे ॥
यहि विकुंठते हरि पठवायो ❀ जीवउधार हेतु जग आयो ॥
सत्य अनंत अहै अवतारा ❀ वैष्णव मति करिहै परचारा ॥
जो द्विज विष्णुभक्ति नहिं कीना ❀ ताको जन्म वृथा विधि दीना ॥
पढै विपुल विद्या समुदाई ❀ विष्णुभक्ति बिन सकल वृथाई ॥
अलंकार जिमि मृतक शरीरा ❀ नहिं सोहत दायक अतिपीरा ॥

दोहा-कांचीपूरण आदि जे, ज्ञान विज्ञान निधान ॥
लखि रामानुज आचरण, पूजहि करहिं बखान ॥ ३ ॥

ताते पुत्र त्यागि अब द्रोहू ❀ रामानुज शरणागत होहू ॥
यादव सुनि जननीके बैना ❀ बोल्यो वचन मानि डर भै ना ॥
कही सत्य जननी तैं बानी ❀ मोरेउ अति भई गलानी ॥
शेष रूप आचार्य प्रधाना ❀ रामानुज सम नहिं कोउ आना ॥
पै हम अस मन किय अनुमाना ❀ भूप्रदक्षिणा दै सविधाना ॥
पुनि यतिवरके निकट सिधारैं ❀ ताको शासन शिरमहँ धारैं ॥
जब जननी बोली मुसक्याई ❀ अबलों तुव जडता नहिं जाई ॥
रामानुज प्रदक्षिण देहू ❀ भूप्रदक्षिणा कर फल लेहू ॥
जननी वचन मृषा द्विज जाना ❀ रामानुज मठ कियो पयाना ॥
तहँ शिष्यन युत यतिवर सोहै ❀ सुरगण युत सुरगुरु मन मोहै ॥
तब यादव अस वचन उचारा ❀ सुनु रामानुज वचन हमारा ॥
शङ्ख चक्र जो करहु विधाना ❀ ताके भाषहु सकल प्रमाना ॥

दोहा-सुनि यादवके वचन तहँ, रामानुज मतिवान ॥
शासन दिय कूरेशको, दीजै सकल प्रमान ॥ ४ ॥

सुनि कूरेश गुरुकी बानी ❀ यादवसों बोल्यो विज्ञानी ॥
ऊर्ध्वपुंड्र धारणहित भाला ❀ शङ्ख चक्र भुजमूल विशाला ॥
साधारण जिय ईश्वरभेदा ❀ सबते पर हरिको कह वेदा ॥
सगुण कौन विधि ईश्वर जाने ❀ येते प्रश्न जे आप बखाने ॥
उत्तर तासु सुनहु दै काना ❀ मैं बरणौं जस वेद पुराना ॥

अस कहि तहँ कूरेश सुजाना * ले संत श्रुति शास्त्र पुराना ॥
वेद पुराण प्रमाण उचारी * दीन्ह्यों सब शंका निरवारी ॥
यादव सुनत चकित अति भयऊ * ताहि विचारत निज घर गयऊ ॥
सोइ रह्यो जब निज घर जाई * वरदराज कह सपनहिं आई ॥
यादव अब जो कस बौराना * तोको अबलों कछु न देखाना ॥
बिन रामानुज शरण सिधारे * ह्वैहो नहिं संसारहि पारे ॥
यादव स्वप्न देखि यहि भांती * चौंकि उठ्यो सेजहि तेहि राती ॥

दोहा–काह कह्यो यहि मोहिं प्रभु, केहिविधि होइ उधार ॥
करत विचार अपार अस, जागत भो भिनसार ॥ ५ ॥

भोर भये यादव महतारी * गवनी कूप भरन हित वारी ॥
तेहि मारग ह्वै शिष्यसमेतू * रामानुज हरिपूजन हेतू ॥
आवत रहे देखि तेहिंकाहीं * यादव मातु गुन्यो मनमाहीं ॥
रामानुज रवि सरिस प्रकाशा * सकल शास्त्र ज्ञाता हरिदासा ॥
यासों राखत मम सुत द्वेषा * होई नहिं कल्याण विशेषा ॥
जो रामानुजको शिष होई * तौ कल्याण कल्पतरु जोई ॥
यही विचारत गईं भवनको * कह्यो बुझाय बोलाइ सुवनको ॥
होहु जो रामानुज शिष बेटा * तौ होई हरिसों हठि भेंटा ॥
नातो उभय लोक नशि जाई * और कछू नहिं मोक्ष उपाई ॥
मातु वचन सुनि यादव बोल्यो * हरिके वचन स्वपनके खोल्यो ॥
पै नहिं मिटयो तासु संदेहू * कियो न रामानुज पद नेहू ॥
संशय मेटन हित इकबारा * कांचीपूरण भवन सिधारा ॥

दोहा–करि प्रणाम भाषत भयो, मोरे अति संदेहु ॥
सो मेटहु करिकै कृपा, शुभ उपदेशहि देहु ॥ ६ ॥

वरदराज प्रभुके ढिग जाई * मोरि विनय अस देहु सुनाई ॥
केहिविधि होय मोर कल्याना * देहि तोहि शासन भगवाना ॥
कांचीपूरण उठ्यो तुरंता * आयो जहां वरद भगवंता ॥
यादवकी सब विनय सुनाई * तब बोले प्रत्यक्ष यदुराई ॥

कांचीपूरण तुम द्रुत जाई ❋ यादवसों अस कह्यो बुझाई ॥
बिन रामानुज शरण सिधारे ❋ किमि ह्वैहै भवसागर पारे ॥
यही हेतु मैं स्वप्न देखायो ❋ तबहुँ ताहि विश्वास न आयो ॥
अबहूं भलो बिगरिगो नाहीं ❋ गिरै जाय यति वर पदमाहीं ॥
दुर्लभ मानुष तनुकहँ पाई ❋ करे जो नहिं कछु मोक्ष उपाई ॥
तातें कौन अधम जगमाहीं ❋ कूकर शूकर सरिस सदाहीं ॥
कांचीपूरण सुनि हरि बानी ❋ आय यादवहि कह्यो बखानी ॥
चहहु नाश जो माया मोहू ❋ रामानुज शरणागत होहू ॥

दोहा-हरिशासन यादव सुन्यो, मिटिगै संशय शूल ॥
रामानुज ढिग जाइकै, परि पदपंकज मूल ॥ ७ ॥

आंखि बहावत आंसुन धारा ❋ त्राहि त्राहि अस कियो पुकारा ॥
क्षमा करहु अपराध हमारा ❋ तुम बिन अब न मोर उद्धारा ॥
अस कहि उठ्यो उठाये नाहीं ❋ भई दया यतिवर उरमाहीं ॥
कह्यो वचन रामानुज स्वामी ❋ यादव दुख हरिहैं खगगामी ॥
उठहु उठहु यादव द्विजराई ❋ तजहु सकल शंका दुखदाई ॥
तब उठि यादव दोउ कर जोरी ❋ कह्यो नाथ विनती सुनु मोरी ॥
पांचहु संस्कार मम कीजै ❋ बूडत ऐंचि मोहिं प्रभु लीजै ॥
तब यादव द्विजको यतिराजू ❋ करिकै सकल सुमंगल काजू ॥
पाचहु संस्कार प्रभु कीना ❋ गोविंद दास नाम तेहि दीना ॥
वैष्णव ग्रंथनि सकल पढायो ❋ पुनि प्रपत्तिको धर्म सुनायो ॥
पुनि रामानुज आज्ञा दीनी ❋ तुम वैष्णवकी निंदा कीनी ॥
तातें वैष्णव ग्रंथ बनावहु ❋ सकल महाअपराध मिटावहु ॥

दोहा-तब यादव गुरुवंदिकै, करिकै विमल विचार ॥
वेद पुराण प्रमाण धरि, लै सब शास्त्रन सार ॥ ८ ॥

रच्यो ग्रंथ सब ग्रंथनि उच्चै ❋ नाम जासु यति धर्म समुच्चै ॥
ग्रंथ बनाय गुरू ढिग ल्यायो ❋ गुरुको सकल सुनाय शोभागे ॥
तामें कियो विशेष प्रकासा ❋ ग्रहण करब त्रिदंड करिलैहौं ॥

सुनि रामानुज भये प्रसन्ना * मान्यो ताहि अनन्य प्रसन्ना ॥
यादव रामानुज पद केरी * सेवत कीन्हो प्रीति घनेरी ॥
कछुक कालमहँ गोविंद दासा * लहि गुरुकृपा गयो हरिवासा ॥
हरि महिमा देखहु रे भाई * यहि विधि निज जन लेत बचाई ॥
सोइ यादव है दूसर नाहीं * जहँ रामानुज पढ़ने जाहीं ॥
सोइ यादव है दूसर नाहीं * हतन चह्यो रामानुज काहीं ॥
सोइ यादव है दूसर नाहीं * जेहिं रामानुज देखि डराहीं ॥
सोइ यादव है दूसर नाहीं * छुवत न रहे वैष्णव परिछाहीं ॥

दोहा-सोइ यादव यतिवर चरण, शरणागत भो आइ ॥
लहि गुरु कृपा विकुंठको, गयो निशान बजाइ ॥९॥

रामानुज कांचीपुर माहीं * बसे पढावत शिष्यन काहीं ॥
उते रंगपुर महँ सब संता * यामुन विरहित दुखी अनंता ॥
कोऊ नहिं अचार्य रह्यो तहँ * शास्त्र पढावे सब संतन कहँ ॥
तब सब संत रंगपुर वासी * रामानुजके दर्शन आसी ॥
रंगनाथके द्वारहि आये * बार बार अस विनय सुनाये ॥
नाथ जो रामानुजै बोलावहु * तौ हम सबन कृतार्थ बनावहु ॥
असकहि निशिमहँ संत तहांहीं * बसे रंगमंदिर इकठाहीं ॥
दीन्हो राति स्वप्न भगवाना * कोउ जन कांची करै पयाना ॥
मेरी लिखी पत्रिका प्यारी * वरदराज कहँ देय सिधारी ॥
मम सिंहासन निकट सोहाती * मिलिहै भोर लिखी मम पाती ॥
भोर भये सब संत सिधाये * पट खोले पाती तहँ पाये ॥
लै पाती इक द्विजवर दीन्हे * कांचीपुरहि बिदा तेहिं कीन्हे ॥

दोहा-सो द्विज कांची आइकै, वरदराज ढिग जाइ ॥
करि प्रणाम पाती दियो, अपनो नाम सुनाइ ॥१०॥

रंगनाथकी पाती पायो * वरदराज अतिशय सुख छायो ॥
यह वृत्तांत लिखो तेहि माहीं * रामानुजै देहु हम काहीं ॥
रंगनाथ यह वरदराज यह * करहिं याचना जानि काजकह ॥

तब तेहिं निशा वरद भगवाना * पाती उत्तर लिख्यो प्रमाना ॥
मांगे ते सब कछु दै डारत * पै नहिं अपनो प्राण निकारत ॥
रामानुज मो प्राण समाना * कैसे तुमहिं देहिं भगवाना ॥
अस पाती लिखि निशि धरि राख्यो * पूजक पट खोलन अभिलाख्यो ॥
भोर भये खोल्यो पट काहीं * पाइ गयो पत्रिका तहांहीं ॥
रंगनाथको विप्र बोलाई * पूजक दिय पत्रिका बुझाई ॥
सो द्विज तहँ कोहुसों न बतायो * पाती पाइ रंगपुर आयो ॥
पाती रंगनाथ कहँ दीन्हो * संतनसों सो वर्णन कीन्हो ॥
तहँ यामुनसुत इक मतिमाना * नाम जासु वररंग बखाना ॥

दोहा–रंगनाथ वररंगको, कह्यो स्वप्नमें आइ ॥
रामानुजको ल्याइये, कांचीपुरमें जाइ ॥ ११ ॥

गानशास्त्रके तुम अतिज्ञाता * गाइ रिझाइहु वरद विख्याता ॥
पट भूषण जो कछु तोहिं देहीं * तौ तुम लीह्यो न मोर सनेही ॥
मांगेहु रामानुज कहँ प्यारे * और वस्तु नहिं नेकु निहारे ॥
दिख्यो स्वप्नसो अस तेहि राती * भई रंगवर शीतल छाती ॥
भोर भये वररंग तुरंता * कांचीपुर गमन्यो मतिवंता ॥
वरदराजके मंदिर आयो * तहँ प्रभुको चरणामृत पायो ॥
तब वररंग पहिरि पट भूषण * नाचन गायन लग्यो अदूषण ॥
सुनि वररंग केर मृदु गाना * भये प्रसन्न वरद भगवाना ॥
वरदराज प्रत्यक्ष बखाना * हे वररंग मांगु वरदाना ॥
तब वररंग कह्यो कर जोरी * जो आज्ञा पूरहु प्रभु मोरी ॥
तब मांगहुँ मनको वरदाना * नहीं करौं किमि वृथा बखाना ॥
वरद कह्यो द्विज रमा विहाई * मांगहु जो चैहो सो पाई ॥

दोहा–तब वररंग कह्यो वचन, रामानुजको देहु ॥
अब न टरहु कहिकै हरि, निज प्रण सुधि करलेहु ॥ १२ ॥

वरद कह्यो अति दुर्लभ मांगे * पै हराइ लिय मोकहँ आगे ॥
ताते रामानुजको देहौं * किमि असत्य निज प्रणकरिलेहौं ॥

अस कहि रामानुजै बोलाई ❀ वररंगहि को पाणि धराई ॥
वरद दियो रामानुज काहीं ❀ भाष्यो जाहु रंगपुरमाहीं ॥
रामानुज करि दंड प्रणामा ❀ आयो तुरत आपने धामा ॥
तहँ सब शिष्यन तुरत बोलाई ❀ चल्यो रंगपुर कहँ दुख छाई ॥
ज्यों पितुगृहते पतिगृह माहीं ❀ कन्या जाति महादुखमाहीं ॥
वरदराज सुमिरत बहुवारा ❀ रंगनगर तिमि गयो उदारा ॥
कावेरी महँ मज्जन कीन्हो ❀ द्वादश तिलक सबै अंग लीन्हो ॥
तब वररंग रंगमंदिर चलि ❀ रामानुज आये नाशककलि ॥
खबरि दियो यह रंगनाथको ❀ बारहिं बार नवाइ माथको ॥
रामानुजकी सुनत अवाई ❀ रंगनाथ अति आनँद पाई ॥

दोहा-रंग कह्यो वररंगसों, पठत वेद सब संत ॥
रामानुज अगवान हित, यहि क्षण सकल व्रजंत ॥ १३ ॥

रंगनाथकी सुनि यह बानी ❀ रामानुजको आगम जानी ॥
पूर्णाचार्य सबन सँग लीन्हे ❀ अगवानी हित गवनहि कीन्हे ॥
ताते रामानुजौ सिधाई ❀ गिरत भये पूरण पद धाई ॥
उभय ओर वैष्णव अभिरामा ❀ किये परस्पर दंड प्रणामा ॥
पूरण आदिक संत सुजाना ❀ लै रामानुज किये पयाना ॥
गये रंग मंदिर महँ जबहीं ❀ लीला रंगनाथ प्रभु तबहीं ॥
चलि सतयें प्रकारहीं द्वारा ❀ लिय अगवानी मोद अपारा ॥
रामानुज वैष्णवन समेता ❀ अंतःपुर गे रंग निकेता ॥
महारंगको दर्शन लीन्हो ❀ करि प्रणाम विनती अस कीन्हो ॥
मेरे हित आगवन गोसाईं ❀ कीन्हो कहा बंधुकी नाईं ॥
त्रिभुवन धनी रंग भगवाना ❀ मैं लघु सेवक अति अज्ञाना ॥
परगट रंगनाथ तब भाषे ❀ हमहूं तुम दर्शन अभिलाषे ॥

दोहा-जो मैं अपने दासको, करौं अस न सतकार ॥
दीनबंधु यह नाम तौ, को पुनि लेइ हमार ॥ १४ ॥

रामानुज तुम हौ सब लायक ❀ करौ उभय विभूति करनायक ॥

सुनि रामानुज प्रभुकी बानी * दै परदक्षिण आनँद मानी ॥
गये रंगमंदिरके भीतर * दर्शन कीन्ह्यो महा मूर्तिकर ॥
ले प्रसाद तहँते पुनि आई * बैठ गरुड मंदिर सुखदाई ॥
वैष्णव व्यूह तहां जुरि आयो * श्रीमन्नारायण रव छायो ॥
सकल बोलाइ रंग अधिकारी * तहँ रामानुज गिरा उचारी ॥
जौन नमन है जेहि अधिकारी * सावधान सो ताहि सवारै ॥
जो कछु काम बिगरि अब जाई * अवशि सो दंड पाइहै भाई ॥
पूरणाचार्य कह्यो तब दाता * सत्य कह्यो शठकोप विख्याता ॥
कोइक हमरे कुलमहँ होई * यतिवर ताहि कही सब कोई ॥
सो श्रीवैष्णव मत प्रगटैहैं * कलियुग धर्म धूरि करिहैहैं ॥
यामुन निज यात्राके काला * कह्यो वचन यह बुद्धि विशाला ॥

दोहा-हरिको भक्त अनन्य इक, कछु दिन महँ इत आइ ॥
सुखी करैगो जगत सब, वैष्णव मत प्रगटाइ ॥ १५ ॥

सो रामानुज तुमहीं अहहू * वैष्णव मत निर्वाह हित करहु ॥
सुनि रामानुज पूरण बानी * पूरणके पद परयो विज्ञानी ॥
कह्यो नाथ रावरी बडाई * मोते नहिं कबहूं बनि आई ॥
अस कहि तहँते उठे उदारा * देखन लगे प्रकार प्रकारा ॥
तब परकालहि बहुत सराही * बसे रंगपुर परम उछाही ॥
वरदराज त्यागन दुख जेतो * निरखत रंग मिल्यो सब तेतो ॥
जिन जिन पर रामानुज केरी * परी डीठि भरि दया घनेरी ॥
ते ते सकल त्याग संसारा * बसते भये विकुंठ मँझारा ॥
अनुपम रामानुज परभाऊ * जाहिर जाको शील सुभाऊ ॥
जब कांचीते कियो पयाना * बोलि वैष्णवन चारि सुजाना ॥
कह्यो इकांत वैष्णवन काही * गवनहु शैल पूर्णढिग माहीं ॥
मम फूफूको सुत गोविंदा * वैष्णव मतकी भाषत निंदा ॥

दोहा-वैष्णव ताको करन हित, शैलपूर्ण मतिवान ॥
काल हस्तिपुरको अबै, आये ज्ञाननिधान ॥ १६ ॥

सो तुम जाइ तहां है शांता ✻ जानि सकल तहँ कर वृत्तांता ॥
आवहु रंगनगर मम पासा ✻ करहु मोहिं वृत्तांत प्रकासा ॥
अस कहि वैष्णव तहां पठाये ✻ रंगनगर रामानुज आये ॥
कछुक कालमहँ वैष्णव तेई ✻ आये रंगनगर हरि सेई ॥
रामानुज पद वंदन करिकै ✻ लागे कहन खबरि सुख भरिकै ॥
काल हस्तिपुर महँ हे नाथा ✻ आये शैलपूर्ण द्विज साथा ॥
बैठे एक तडागहि तीरा ✻ शिष्यन शास्त्र पढावत धीरा ॥
तहँ गोविंद घट कांधे धरिकै ✻ आयो भरन सलिल श्रम करिकै ॥
घट भरि चल्यो भवन कहँ जबहीं ✻ शैलपूर्ण बोले तेहिं तबहीं ॥
का फल है घट भरि लै जावहु ✻ अवसर होइ तो हमहिं बतावहु ॥
तब गोविंद कही नहिं बानी ✻ गयो गेह गुनि गिरा विज्ञानी ॥
गयो भरन जल फेरि तहांही ✻ शैलपूर्ण तब मारगमाहीं ॥

दोहा—लिखि कागद श्लोक इक, दियो डारि तेहि ठाम ॥
सो श्लोक उठाइ लिय, चलि गोविंद मतिधाम ॥ १७॥

सो लाग्यो चितवन चहुँ वोरा ✻ लख्यो शैलपूरण तेहिं ठोरा ॥
तिनके निकट जाइ अस भाख्यो ✻ को यह पत्र डारि पथ राख्यो ॥
दीजे हमको अर्थ बताई ✻ शैलपूर्ण तब अर्थ सुनाई ॥
औरहु भाषो शास्त्र प्रमाणा ✻ तब गोविंद बहु वाद बखाना ॥
भो शास्त्रार्थ दुहुँनसों भारी ✻ हर्यो गोविंद न सक्यो उचारी ॥
ऐसी सुनि वैष्णव मुख बानी ✻ शैलपूर्ण कहँ विपुल बखानी ॥
रामानुज सब संतन काहीं ✻ कह्यो प्रमाण अनेक तहांहीं ॥
पुनि संतनसों पूछन लागे ✻ गोविंद तहां रहेकी भागे ॥
वैष्णव कहन लगे पुनि गाथा ✻ गुरुहिं सराहिं जोरी युग हाथा ॥
सुनहु यतीश्वर तेहिं सरतीरा ✻ शैलपूर्ण जब कह मतिधीरा ॥
तब गोविंदही उतर न आयो ✻ तहँते तुरतहि पेलि परायो ॥
शैलपूर्ण व्यंकट गिरि आये ✻ दिवस तीसरे फेरि सिधाये ॥

दोहा—वनमें शिष्यन जोरिकै, सहस गीतिको अर्थ ॥
लगे पढावन प्रीतिसों, मेटत सकल अनर्थ ॥ १८॥

फूल लेन तब अतिशय चायो * तेहिं वन गोविंद राज सिधायो ॥
पाटलि तरुमहँ चढे गोविंदा * तोरन लगे कुसुम सानंदा ॥
चोथे गीति माहँ तेहिं काला * निकसि तहँ यह कथा विशाला ॥
नारायण के नाभी तेरे * कह्यो कमल इक पत्र घनेरे ॥
ताते चारि वदन प्रगटाना * ताते प्रगट्यो जगत महाना ॥
नारायण सर्वेश्वर अहहीं * ऐसे वेद पुराणहु कहहीं ॥
नारायणको कुसुम चढावै * सो जगमें अनंत फल पावै ॥
यही कियो त्रैवार उचारा * तब गोविंद मन माहँ विचारा ॥
नारायण त्रिभुवनके नाथा * धरहि रुद्र विधि जेहि पदमाथा ॥
ताते नारायणको ध्याऊं * तो भवसिंधुपार मैं पाऊं ॥
अस गुणि कूदि तुरत तरु तेरे * गोविंद त्राहि त्राहि मुख टेरे ॥
गिरयो शैल पूरणके चरणा * नाथ भयो मैं तिहरे शरणा ॥

दोहा–अबलों म्वहिं अति भ्रम रह्यो, तजि नारायणकाहिं
भजत रह्यो औरे सुरन, लग्यो ठिकाना नाहिं १९॥

बार बार अस कहत गोविंदा * तजत शैलपूरण पदद्वंद्वा ॥
शैलपूर्ण तब गोविंद काहीं * लियो लगाइ तुरत हिय माहीं ॥
झारत तनु रज कोमल वैना * बोल्यो गोविंदसों भरि चैना ॥
गई सो गई सुरति नहिं कीजै * लई सो लई ताहि मन दीजै ॥
अब करु हरिपद दृढ विश्वासा * ते प्रभु करि है भवनिधि नासा ॥
तब गोविंद अति आदर कीन्हो * शैलपूर्णको गुरु अस चीन्हो ॥
गोविंद वैष्णव भये तहांहीं * भयो सोर चहुंकित पुर माहीं ॥
तब गोविंदके सिगरे संगी * आये तेहि समीप मति भंगी ॥
शैल पूर्णसों बोले बाता * तुम तो जादूमें अति ज्ञाता ॥
गोविंदको धौं कहा खवायो * हमरे साथीको बौरायो ॥
शैलपूर्ण तब कह मुसिकाई * पूंछि लेहु गोविंदसों भाई ॥
जो हम कछु सिखाये है हैं * तो गोविंद आपहि कहि दैहैं ॥

दोहा–शैलपूर्णके वचन सुनि, सिगरे कुमती धाइ ॥
लियो गोविंदहि घेरि तहँ, गहे हाथ अनखाइ ॥२०॥

कहे वचन अति आँखि तरेरी * चलौ भवन होती अति देरी ॥
अपनो धर्म करहु मन लाई * कोहुक कहे गये बौराई ॥
तब गोविंद निज हाथ छँडाई * कह्यो वचन निज नैन देखाई ॥
जबलौं हम तुमही महँ रहे * तबलों तिहरो शासन गहे ॥
जबते त्यागि दियो हम तुमहीं * तबते मतु तुमहीं हम हमहीं ॥
तब सब गये मानि हिय हारी * गोविंद सुमिरण लग्यो मुरारी ॥
शैलपूर्ण ढिग किय निशि वासा * गोविंद भो अनन्य हरिदासा ॥
तेहि निशि वैष्णव द्रोहिन काहीं * शंकर भाष्यो स्वप्न माहीं ॥
नास्तिक वैष्णव धर्म बिगारयो * वैष्णव ताको फेरि प्रचारयो ॥
ताते जो करिहौ बरियाई * तौ तिहरो हटि जई नशाई ॥
गोविंदको नाहिं रोकहु कोई * यह अनन्य हरिको जन होई ॥
हरिद्रोही अस स्वप्नो देखी * शैलपूर्ण सों कह्यो विशेखी ॥

दोहा—निज निज भवनन गमन किय, ह्वैगे सकल निरास।
गोविंदको निज संग लिय, शैलपूर्ण हरिदास ॥२१॥

संतन युत व्यंकट गिरि आये * गोविंदको निज निकट बोलाये ॥
संस्कार पांचहु तेहि कीन्हे * वैष्णव शास्त्र पढाइ सुदीन्हे ॥
अब व्यंकटगिरिमें गोविंदा * सेवत शैल पूर्ण सानंदा ॥
यह तहँको वृत्तांत विशाला * जानहु यतिपति दीन दयाला ॥
यतिपति सुनि गोविंद वृत्तांता * मान्यो महामोद दुखशांता ॥
किय सत्कार वैष्णवन काहीं * भली सुनाई आई इहांहीं ॥
पुनि रामानुज सिगरे संतन * बिदा कियो तिन घर मतिवंतन ॥
तहँते आपहु उठे तुरंता * गये रंगमंदिर सुखवंता ॥
करि प्रणाम प्रभुको बहु वारा * तनु पुलकित अस वचन उचारा ॥
तुम राखहु सन्तन मर्यादा * दूरि करहु सब जगत विषादा ॥
तुम सम प्रभु जो जग नहिं होतो * सन्तनकी सुधि राखत कोतो ॥
हे संतन अवलंब तम्हारा * द्रवहु सदा देवकी कुमारा ॥

दोहा—अस प्रभुसों विनती कियो, जानि सकल कृतकाम।
रामानुज स्वामी तुरत, आवत भे निजधाम ॥ २२ ॥

एक समय यतिराज प्रभु, करि मनमांह विचार ॥
गमन कियो गुरुदरशहित, पूर्णाचार्य अगार ॥ २३ ॥
गुरुपद क्रंदन बन्दन करिके * जोरि पाणि कह अतिसुखभरिके ॥
यामुनको नहिं दर्शन पायो * ताते मोहिं अति शोक सतायो ॥
शोकजनित बिसरो दुखघोरा * हरि लीन्हो हरि गुरु तुम मोरा ॥
मैं हौं तुव चरणनको दासा * करहु मोहिं उपदेश प्रकाशा ॥
सुनि रामानुजके अस बैना * महापूर्ण बोल्यो भरि चैना ॥
मन्त्ररत्न है मंत्र अनूपा * जानहु सब मन्त्रनकर भूपा ॥
द्वै अस जाको नाम उचारा * कारक कोटि जन्म अवछारा ॥
सब विधि भक्ति मुक्तिको दाता * जन रक्षक मानहु पितु माता ॥
चारिहु वर्ण माहिं जन कोई * जपै जो जाहि पूज्य सति सोई ॥
संसारार्णवके तारण कारण * वेदमूल अधमनि उद्धारण ॥
अस द्वै मंत्र पतित पावनकर * तुम्हैं देत हम लीजै यतिवर ॥
असकहि पूर्णाचार्य महाना * दिय द्वै मंत्र सुनाइ सुकाना ॥
दोहा—न्यायतत्त्व गीतार्थ तिमि, व्यास सूत्र त्रैसिद्ध ॥
पंचरात्र आदिक सबै, उपदेश्यो गुणि सिद्ध॥२४॥
पुत्र पुंडरीकाक्ष नाम जेहि * रामानुजको शिष्य कियो तेहि ॥
महापूर्ण पुनि कह अस बानी * गवनहु गोष्ठीपुर विज्ञानी ॥
तहँ है गोष्ठीपूरण स्वामी * भक्त अनन्य विहंगमगामी ॥
तिनसों शास्त्र अर्थ सुनि लेहू * अस नहिं आवत दूसर केहू ॥
रामानुज सुनि गुरुकी बानी * गोष्ठीपूर्ण वन्यो सुख मानी ॥
गोष्ठीपूरणके ढिग जाई * बोल्यो वचन चरण शिर नाई ॥
मोहिं मन्त्रार्थ देहु तुम नाथा * बार बार नाऊं पद माथा ॥
गोष्ठीपूरण गिरा उचारी * याको अब कोउ नहिं अधिकारी ॥
गोष्ठीपूरण भो पुनि मौना * रामानुज आयो निज भौना ॥
कछु दिन बीते रंगनगर महँ * भयो महाउत्सव घर घर तहँ ॥
गोष्ठीपूरण तब सुख पायो * उत्सव लखन रंगपुर आयो ॥

हरि मन्दिर दर्शन हित गयऊ * पूजक ताहि कहत अस भयऊ॥

दोहा–रंगनाथ शासनकरत, तुम रामानुज काहिं॥
मंत्रअर्थ उपदेशियो, गुनि सज्जन मन माहिं॥२५॥

तब गोष्टीपूरण अस भाष्यो * प्रथमहि रंगनाथ कहि राष्यो॥
होई जो याको अधिकारी * विना परीक्षा लिहे विचारी॥
तेहि मंत्रार्थ कबहुँ ना दीजे * अब शासन यह कीसो कीजे॥
गोष्टीपूरणसों पूजक पुनि * कह्यो वचन यहि शासनको गुनि॥
रामानुज सब गुणनि निधाना * याके सम जगमें को आना॥
तुम मंत्रार्थ देहु यहि जाई * जियकी शंका सकल विहाई॥
गोष्टीपूरण सुनि हरि शासन * रामानुजहि कह्यो दुखनाशन॥
रामानुज मम भवनहि आवहु * तब मंत्रार्थ अवशि तुव पावहु॥
अस कहि गोष्टीपूरण गयऊ * जात तहँ रामानुज भयऊ॥
पै मंत्रार्थ न किय उपदेशा * यतिवर आयो बहुरि निवेशा॥
यहि विधि यतिवर वार अठारा * गोष्टीपूरण भवन सिधारा॥
पै नहिं उपदेश्यो मंत्रारथ * कवन परीक्षा गुनि परमारथ॥

दोहा–बारवोनैसे पुनि गयो, गोष्टीपूरण पास॥
जाहु जाहु सो अस कह्यो, रोवत चल्यो निरास॥२६॥

रामानुज निज भवन सिधारी * लंघन कियो मानि दुख भारी॥
गोष्टीपूरणको कोउ यक संता * आयो रंगनगर मतिवंता॥
सो रामानुज दशा निहारी * गोष्टीपूर्णहि जाइ उचारी॥
तब गोष्टीपूरण निज दासा * पठवायो रामानुज पासा॥
सो वैष्णव रामानुज काहीं * कह्यो वचन अति आनँद माहीं॥
गोष्टीपूरण तुमहि बोलायो * तुमको लेन हेतु मैं आयो॥
अब मंत्रारथ तुमको देहैं * अब निराश नहिं तुमहिं फिरैहैं॥
चलहु अकेले सकल विहाई * सुनि रामानुज अति सुख गाई॥
गोष्टीपूरण गुरुके गेहू * गवन्यो रामानुज करि नेहू॥
तब कूरेश दाशरथि दोऊ * गवने रामानुज सँग वोऊ॥

तब गोष्ठीपूरणके दासा * रामानुजसूं वचन प्रकासा ॥
हरि गुरु कह्यो अकेले आवहु * दंड जनेऊ धरि सँग ल्यावहु ॥
दोहा-तुम अपने द्वै शिष्यको, लिये संग कस जात ॥
दूषण देहैं गुरु अवशि, हम इत तिनहिं डेरात ॥ २७ ॥
तब रामानुज वचन उचारा * लेइ बनाइ न करहु खँभारा ॥
यहिविधि कहत पंथमहँ बानी * गोष्ठीपुर आये सुखमानी ॥
गोष्ठीपूरण निकट सिधारे * कियो दंडवत पाणि पसारे ॥
रामानुजहि शिष्ययुत देखी * गोष्ठीपूरण अनुचित लेखी ॥
कह यतिराजहि आंख देखाई * ल्याये केहि हित शिष्य लेवाई ॥
हम तो कहि पठयो तुम पाहीं * और न आवे कोइ सँग माहीं ॥
एक त्रिदंड दूसर उपवीता * लइयो ये द्वै संग पुनीता ॥
तब रामानुज कह कर जोरी * मोसे नाथ भई नहिं खोरी ॥
दंड और उपवीतहि काहीं * तुम कह ल्यावहु निजसँग माहीं ॥
दोऊ शिष्य दंड उपवीता * गुरु ल्याये मैं परम पुनीता ॥
तब गोष्ठीपूरण गुरु बोले * को उपवीत दंड केहि तोले ॥
तब रामानुज गिरा उचारी * हे गुरु अस जिय मैं निरधारी ॥
दोहा-दाशरथीको जानियो, मोर त्रिदंड हमेश ॥
तिमि जानेउ कूरेश है, नाहिं दूसर यहि देश ॥ २८ ॥
तब गोष्ठीपूरण अस भाषे * यदपि जनेउ दंड करि राषे ॥
तदपि अकेले तुम इत आवहु * मंत्रराज लहिके सुख छावहु ॥
इनको तुमही किय उपदेशा * बोलि दाशरथि और कूरेशा ॥
पुनि रामानुज जाइ अकेले * बैठे गोष्ठीपूरण भेले ॥
तब गोष्ठीपूरण लगि काना * मंत्रराज मंत्रार्थ बखाना ॥
दै मंत्रार्थ पात्र पहिचाने * गोष्ठीपूरण अति सुखमाने ॥
गोष्ठीपूरण कह बहुबारा * मंत्र न कोहुसे कियो उचारा ॥
महामंत्र यह गोपन योगू * दायक मुक्ति भक्ति कर भोगू ॥
एवमस्तु कहि यतिवर ज्ञानी * करि प्रणाम पद परसत पानी ॥

आयो बहुरि रंगपुर काहीं ❀ धन्य जन्म निज गुनि मनमाहीं ॥
रंगनगरमहँ महा विशाले ❀ रह्यो एक नरहरिको आले ॥
तहँ आयो जब माधव मासा ❀ नरहरि जन्म उछाह प्रकासा ॥

दोहा–होत भयो उतसव महा, नरहरि जन्म अनन्द ॥
देश देशते आइकै, जुरे संतके वृंद ॥ २९ ॥

अति संघर्ष भयो पुरमाहीं ❀ चहुँकित साधु समाज देखाहीं ॥
तब रामानुज कियो विचारा ❀ जुरे सकल इत संत अपारा ॥
अष्टाक्षरते पर कछु नाहीं ❀ श्रवण परत अघ कोटि नशाहीं ॥
ताते करौं अवशि यह काजा ❀ चढिकै इत ऊंचे दरवाजा ॥
अष्टाक्षरको करौं पुकारा ❀ होइ अनेक अधम उद्धारा ॥
अस विचार रामानुज स्वामी ❀ सुमिरि अनन्य मंजुपद गामी ॥
तेहि दिन भई जबै अधराता ❀ उठि अकेल सज्जन सुखदाता ॥
चढ्यो उतंग रंग दरवाजा ❀ जहाँ जुरी सब संत समाजा ॥
तहँते रामानुज बहुवारा ❀ किय अष्टाक्षर मंत्र उचारा ॥
तहँ चौहत्तर जनके काना ❀ परत भयो सो मंत्र महाना ॥
ते चौहत्तर भे जन योगी ❀ भाजन मुक्ति महासुख भोगी ॥
तेइ चौहत्तर पीठ कहावैं ❀ अबलों दक्षिणमें सब ठावैं ॥

दोहा–श्रीअष्टाक्षर मंत्रको, यतिवर कीन पुकार ॥
गोष्ठीपूरणदास बहु, सुने जे रहे अगार ॥ ३० ॥

गोष्ठीपूरण पहँ सब जाई ❀ रामानुजकी दशा सुनाई ॥
नाथ जो गुप्त मंत्र तुम दीन्हो ❀ रामानुजको सज्जन चीन्हो ॥
वरजि दियो भल भल तेहि काहीं ❀ कियो प्रकाश कबहुँ यहि नाहीं ॥
तौन मंत्र रामानुज जाई ❀ ऊंचे चढि ऊंचे गोहराई ॥
सबको दीन्हो मंत्र सुनाई ❀ अनुचित जानि कहे हम आई ॥
गोष्ठीपूरण सुनि यह हाला ❀ यतिवर पर किय कोप कराला ॥
संतन कह्यो यही छन जाई ❀ ल्यावहु रामानुजै लेवाई ॥
संत आइ रामानुज काहीं ❀ तेहि क्षण गये लेवाइ तहांहीं ॥

गोष्ठीपूरण ताहि बिलोकी * कियो कोप है अतिशय सोकी ॥
कह्यो वचन रे मूर्ख प्रधाना * जो मैं दीन्हों मंत्र महाना ॥
महा गोप सब शास्त्रन सोई * कबहुँ अधर बाहिर नहिं होई ॥
भली तरा करि तोरि परीक्षा * तब मैं दीन्हों लखि तुव ईक्षा ॥
दोहा-बार अनेकनि तोहिं मैं, दीन्हों शपथ धराइ ॥
काहूसों कबहूं नहीं, दीजो मंत्र सुनाइ ॥ ३१ ॥
जो तैं मंत्र प्रकाशित करिहै * ताते अवशि नरकमहँ परिहै ॥
मंत्रराजसों परम प्रधाना * रंगद्वार चढि तुङ्ग मकाना ॥
मंत्र राज बहुवार पुकारा * सुनत भये तहँ मनुज अपारा ॥
गुरुशासन ते कीन्हो भंगा * दीसत तैं मनु मत्त मतंगा ॥
कहु गुरुद्रोह कर केर फलकाहै * तेरी मति सब शास्त्रन माहै ॥
तब रामानुज कह कर जोरी * सुनहु नाथ विनती अस मोरी ॥
प्रथमहि तुम अस किय उपदेशा * यह अष्टाक्षर रूप रमेशा ॥
देत तुमहिं सादर सो लीजे * कबहुँ काहुसों नहिं कहि दीजे ॥
जाके कान परत यह मंत्रा * सो बिकुंठ कहँ जात स्वतंत्रा ॥
पुनि नहिं आवत यहि संसारा * पावत हरि सेवन सुखसारा ॥
विना परीक्षित अरु बिन आज्ञा * जो कोउ करै मंत्र प्रकाशा ॥
सो विशेषि जन नरक सिधारै * ऐसो वेद पुराण उचारै ॥
दोहा-सो अपने मनमें कियो, मैं यह विमल विचार ॥
चढि उतंग अति भवनमें, मंत्रहि करौं उचार ॥ ३२ ॥
यह नृसिंह उत्सवके काजा * लावन आई संत समाजा ॥
मंत्र परी यह जिन जिन काना * करिहैं ते वैकुंठ पयाना ॥
मैं इक नरक जाउँ तौ जाऊं * जनन परमपदको पहुँचाऊं ॥
नरक गये मम मंत्र पुकारे * हरिपुर लावन जीव सिधारे ॥
तौ नहिं नाथ मोरि कछु हानी * नरक गवन मोहिं अति सुखदानी ॥
नाथ यही मैं कियो विचारा * किय अष्टाक्षर मंत्र पुकारा ॥
रामानुजके वचन सुहाये * गोष्ठीपूरण सुनि सुख पाये ॥

याकी जिय पर दया अपारा ॐ सांचो अहै शेष अवतारा ॥
अधम उधारण हित जग आयो ॐ जीवन हित निज दुख विसरायो ॥
गोष्ठीपूरण यही विचारी ॐ मिले दौरि निज भुजा पसारी ॥
कहत भये तैं गुरू हमारा ॐ रह्यो न पूरव मोहिं विचारा ॥
तेरो नाम अहै मन्नाथा ॐ रैहौं मैं तिहरे लै साथा ॥

दोहा-रामानुजको बोलि पुनि, अपने ढिग बैठाइ ॥
चर्मवाक्य दीन्हो हुलसि, जिमि अर्जुन यदुराइ॥३३॥

पुनि अपनो आतमज बोलवायो ॐ रामानुजको शिष्य करायो ॥
पुनि गोष्ठीपूरण कह बाता ॐ रंगनगर गवनहु तुम ताता ॥
यामुन सुवन नाम वररंगा ॐ तासों करहु अवशि सतसंगा ॥
यामुन तेहि गुतार्थ पढायो ॐ सो तुम लेहु जाइ मन भायो ॥
सुनि गोष्ठीपूरणकी वानी ॐ रामानुज गवने सुख मानी ॥
सँगमहँ दाशरथी कूरेशा ॐ और शिष्य सब चले सुवेशा ॥
गोष्ठीपूरण सुत मतिधामा ॐ चल्यो सौम्य नारायण नामा ॥
रंगनगर रामानुज आयो ॐ अपने भवन वस्यो सुखछायो ॥
अष्टाक्षर जो कियो पुकारा ॐ भयो अनेकनि जीव उधारा ॥
यह पुहुमीतलमें यश छायो ॐ रामानुजसों कोउ नाहिं आयो ॥
मंत्र दान करि यति गणराजू ॐ कियो सकल मनुजन कृत काजू ॥
रंगनाथ मंदिर पुनि गयऊ ॐ सब वृत्तांत कहत तहँ भयऊ ॥

दोहा-रामानुजके वचन सुनि, रंगनाथ कहहैं बैन ॥
जीव उधारयो भल कियो, सबहु चैन युत ऐन॥३४॥

एक समय कूरेश सुजाना ॐ रामानुजसों वचन बखाना ॥
चरम अर्थ मोकू प्रभु देहू ॐ तब रामानुज कह युतनेहू ॥
गुरु गोष्ठीपूरण अस भाष्यो ॐ जो चरमार्थ पढन अभिलाष्यो ॥
सो जो वर्ष करै ढिग वासा ॐ नाहिं कीन्ह्यों तुम चरण प्रकासा ॥
तब कूरेश कही अस वानी ॐ परै न मोहिं सरी गति जानी ॥

तब रामानुज वचन प्रकासा * करौ जो एक मास उपवासा ॥
तो संवत्सरको फल होई * पैहौ चरम अर्थ सुख सोई ॥
तब कूरेश महासुख मानी * कियो मास उपवास सिज्ञानी ॥
चरम अर्थ रामानुज दीन्हो * जोहि कूरेश ग्रहण करिलीन्हो ॥
दाशरथी गुरुसों कह जाई * चरम अर्थ हमहूं प्रभुताई ॥
यतिवर दाशरथीसों बोल्यो * गुरुसों मैं अस आयसु बोल्यो ॥
कूरेशहि चरमारथ देहो * दुसरेसों यह कबहुं न केहो ॥

दोहा—गोष्ठीपुरण निकट चलि, चरमारथ तुम लेहु ॥
उनकी अति सेवा करौ, देहै सहित सनेहु ॥ ३५ ॥

दाशरथी सुनि यतिवर बानी * गोष्ठीपुरहि गयो मुदमानी ॥
गोष्ठीपूरण पद शिर नायो * चरम अर्थ दीजे अस गायो ॥
गुरुता कर अधिकारन हेरी * तासों लेत भयो मुख फेरी ॥
दाशरथी तहँ बसि षट्मासा * सेवन कियो लगाये आसा ॥
गुरु कह क्यों पद सेवन मोरा * यतिवरको सम्बन्ध न तोरा ॥
को तुम कौन हेतु इत आये * दाशरथी तब वचन सुनाये ॥
प्रभु मैं रामानुज कर चेला * चरमारथ हित मोहिं इत मेला ॥
चरमारथ करिये उपदेशा * तब गुरु दीन्हों ताहि निदेशा ॥
विद्या कुल धन मद हत जेई * चरमारथ तुमको सो देई ॥
गोष्ठीपूरणकी सुनि बानी * रंगनगर आयो अति ग्लानी ॥
जाय तुरत रामानुज आले * करि प्रणाम सब कह्यो हवाले ॥
तेहि दिन पूर्णारजकी कन्या * अतुला नाम रही अतिधन्या ॥

दोहा—आइपितासों अस कह्यो, सलिल भरन हम जाहि ॥
सासु न पठवति संग कोउ, हमहुं अकेल डराहि ॥ ३६ ॥

पूरणार्य कह सुनहु कुमारी * रामानुज ढिग जाहु सिधारी ॥
कहियो सकल जो मनमें भावे * सोइ तुमरो सब शोक नशावे ॥
अतुला रामानुज ढिग आई * सब हवाल निज गई सुनाई ॥

यतिवर कह्यो दाशरथि काहीं ❋ तुम गवनहु याको सँग माहीं ॥
याको सकल सुधारहु काजा ❋ दाशरथिहि गुनि मोद दराजा ॥
अतुलासंग चल्यो अतुराई ❋ करन लग्यो ताकी सेवकाई ॥
पंडित एक रह्यो तेहि ग्रामा ❋ सो किय श्रुतिको अर्थ निकामा ॥
दाशरथिहि सुने सहि नाहिं गयऊ ❋ शुद्ध अर्थ भाषत तहँ भयऊ ॥
तब पंडित तापर अति कोप्यो ❋ वाद विवाद तहां अति रोप्यो ॥
दाशरथी पुनि अर्थ बखाना ❋ जामें मिट्यो विरोध महाना ॥
सो सुनि सकल ग्रामके वासी ❋ कियो प्रशंसा गुनि मतिरासी ॥
पुनि सिगरे अस वचन सुनायो ❋ कौन काज हित तुम इत आयो ॥

दोहा–दास वृत्त कैसे करत, है पंडित मतिवान ॥
दाशरथी तब अस कह्यो, गुरुशासनबलवान ॥ ३७ ॥

तब सब दाशरथी पद वंदे ❋ भूषण वसन दियो सानंदे ॥
कह्यो क्षमहु हमरो अपराधा ❋ दियो नाथ तुमको सब बाधा ॥
अब हमपर करिके अति दाया ❋ जाहु भवन अपने द्विजराया ॥
दाशरथी तब वचन सुनाये ❋ हम गुरुशासनते इत आये ॥
विन गुरुशासन हम नाहिं जैहें ❋ ज्वाब कौन गुरुदेवहि दैहें ॥
तब अतुलायुत सब पुर केरे ❋ जाय कहे रामानुज नेरे ॥
यतिवर दाशरथी बोलवायो ❋ ह्वै प्रसन्न चर्मार्थ सुनायो ॥
पुनि वर रंगभवन पगु धारा ❋ द्राविडार्थ सब पढ्यो उदारा ॥
पुनि निज शिष्यन किय उपदेशा ❋ आय बसे आपने निवेशा ॥
यामुन शिष्य महामति धामा ❋ रह्यो जासु मालाधर नामा ॥
ताको अपने संग लेवाये ❋ गोष्ठीपूर्ण रंगपुर आये ॥
रामानुजसों वचन बखाना ❋ पढहू सहस गीतिव्याख्याना ॥

दोहा–मालाधर तुव गुरु अहे, सहस गीतिके ज्ञात ॥
सहज गीति इनसों पढो, सकल अर्थ अवदात ॥ ३८ ॥

रामानुज सुनि गुरुकी वानी ❋ पढन लगे अति आनँद मानी ॥
एक समय रामानुज भाष्यो ❋ अर्थ न यामुन यह कहि राष्यो ॥

सुनि मालाधर भये उदासा * जात भये आपने अवासा ॥
गोष्ठिपूरन माला घरको * ल्याये फेरि यतीश्वर घरको ॥
मालाधरको दियो बुझाई * रामानुजहि सुनो अहिराई ॥
पढ्यो यथा सांदीपिनसों हरि * तथा पढावहु तुमहि प्रीति करि ॥
अर्थ यामुनाचारज केरे * जानत हैं यतिराज घनेरे ॥
मालाधर तब लग्यो पढावन * पुनि बोल्यो रामानुज पावन ॥
यामुन अर्थ अहै यह नाहीं * तब मालाधर कह तहिं काहीं ॥
लख्यो न तुम यामुन मति केतू * तासु अर्थ जानहु केहि हेतू ॥
तब रामानुज कह मुसकाई * यामुन अर्थ गयो मोहिं आई ॥
एकलव्य जिमि रह्यो निषादा * द्रोणहि मान्यो गुरु मर्यादा ॥

दोहा-कबहुँ लख्यो नहिं द्रोणको, तेहि मूरति गृहराखि॥
सकल शास्त्र विद्या पढी, तिमि जानहु हरि साखि ३९॥
रामानुजको वचन सुनि, मालाधर मनमाहिं॥
तासु प्रभाव विचारि मन, गुन्यो शेष तेहिं काहिं ॥४०॥

अपने सुतको शिष्य करायो * रामानुज पढाइ घर आयो ॥
एक समय रामानुज स्वामी * ध्यावत रंगनाथ खगगामी ॥
यामुन सुत वररंगहि नामा * कीन्हो गवन सुरत तेहि धामा ॥
मारग मास रह्यो तेहि काला * रामविवाह उछाह विशाला ॥
तीन उछाह माहँ वर रंगा * राच्यो रुचिर रामके रंगा ॥
नृत्य करत रह रघुपति आगे * गावत मधुर सुपद अनुरागे ॥
ताहि देख रामानुज हरष्यो * बार बार नैननि जल बरष्यो ॥
करन लग्यो ताकी सेवकाई * रैन दिवस नम्रता दिखाई ॥
रामानुजकी लखि सेवकाई * सो वररंग कह्यो सुनु भाई ॥
सेवन करहु मोर जेहि हेतू * सो अब कहहु प्रगट कुलकेतू ॥
तब रामानुज कह कर जोरी * चरम अर्थ पढने मति मोरी ॥
तब वररंग कृपा अति कीन्हो * रामानुजहि पढाइ सो दीन्हो ॥

दोहा-परब्रह्म गुरुदेव है, परधन गुरुहि विचार ॥
परम काम गुरु है सदा, गुरु है परमअधार ॥४१॥
परविद्या गुरु जानिये, परगति गुरुको मान ॥
उपदेशक जो जानको, गुरुते गुरु नहिं आन॥४२॥
सकल उपाय उपाय जग, गुरुको लेहु विचारि ॥
यह उपाइ पंचम अहै, दियो वेद निर्धारि ॥ ४३ ॥

ऐसो जब वर रंग पठायो ❀ रामानुज अति आनँद पायो ॥
तब वररंग यतीश्वर काहीं ❀ जान्यो शेष रूप मनमाहीं ॥
अपने अनुजहि सख्य करायो ❀ रामानुज अपने घर आयो ॥
वस्यो रंगपुर सहित समाजा ❀ कारक सकल जनन कर काजा ॥
गोष्ठी पूरण कांची पूरण ❀ शैलपूर्ण औरहु जो पूरण ॥
अरु मालाधर सुमति निवेरे ❀ पाव शिष्य ये यामुन केरे ॥
पांचहु रामानुजहि पढायो ❀ निज निज पुत्रन शिष्य करायो ॥
रंग नगर रामानुज भ्राजा ❀ जैसे सुरन सहित सुरराजा ॥
बिन गुरु कृपा परमगति नाहीं ❀ जानहु यही सत्य मनमाहीं ॥
सब आचार्यनके मधिमाहीं ❀ रामानुज मुनि सरिस सोहाहीं ॥
गुह्यत्रय यतिवर निर्माना ❀ जामें सर्व श्रेष्ठ भगवाना ॥
हरि आराधन क्रम जेहिं माहीं ❀ सकल शास्त्र सिद्धांत सोहाहीं ॥

दोहा-रंगनाथको विधि सहित, पूजन आठौ याम ॥
करवावत वैष्णवनसों, यतिवर लह्यो अराम ॥४४॥

कवित्त घनाक्षरी-जालिम जगत कलिकाल है कराल साचो धर्मको न ख्याल रहे ख्याल मुक्त मालमें ॥ रंगनाथ पूजकते माथ धुनि डारचो नहिं लाग्यो कछु हाथ घन गाथ कौन्यो कालमें ॥ पूजक प्रधान अनुमान कीन्हो मानसमें रामानुज प्राण हरौं खुशी यहि ख्यालमें ॥ द्विज भरमाया ताको जायाको बुझाया जाइ दश-कोटिगुण देन गुरुको कुचालमें ॥ १ ॥

सो०—रामानुज यतिराज, साधारण परभातमें ॥
भिक्षा मांगन काज, तेहि द्विजभवन कियो गवन ॥१॥
सो द्विज निकट बोलि निज नारी * लहि इकांत अस गिरा उचारी ॥
आयो भीख लेन यतिराई * देहु गरल मुख सरल सुनाई ॥
सुनि पति वचन नारि दुखमानी * भिक्षा माहिं गरल कछु सानी ॥
तोन अन्न लै बाहेर आई * दीन्हो यतिवर कर शिरनाई ॥
तासु चरणमहँ तिय लखि दीन्ही * यह विषवलित भीख त्यो चीन्ही ॥
यतिवर जानि भीख लै लीन्हो * श्वानहि सो खवाइ प्रभु दीन्हो ॥
करि जलपान बहुरि घर आये * यह सुनि गुरु श्रीपूर्ण सिधाये ॥
यतिवर लेन गये अगवानी * कावेरी तट मिले विज्ञानी ॥
लखि गोष्ठीपूरण गुरु काहीं * परे दंड सम अवनी माहीं ॥
गोष्ठीपूरण तेहि न उठायो * करन परीक्षा हित चित चायो ॥
लागि रह्यो तहँ माधव मासा * रही तपित रज मनहुँ हुताशा ॥
रामानुज तनु चल्यो प्रसेदू * सो लखि भयो येक द्विजखेदू ॥
दोहा—गोष्ठीपूरणसों कह्यो, शिष्यसो अति अकुलाइ ॥
क्यों न उठावहु मम गुरुहि, आरो मारन धाइ ४९॥
गोष्ठीपूरण तुरत उठाई * रामानुजको कह्यो बुझाई ॥
याके कर अब भोजन करहू * और विश्वास हिये नहिं धरहू ॥
सिकता तापित तुमहि निहारी * लीन्हों तुमहि पीठि निज धारी ॥
मोको कह्यो कुपित अति वानी * याकी मति तुवहित अति सानी ॥
गोष्ठीपूरण शासन शिरधारि * रामानुज आयो पुनि घर फिरि ॥
रंगभवन इक दिवस अकेले * गयो दरशहित कोइ नहिं भेले ॥
पूजक चरणामृत विष घोरी * दीन्हो यतिवर कहँ द्रुत दोरी ॥
विषहु जानि चरणामृत मानी * कियो पान यतिवर सुखआनी ॥
सो विष अमृत भो तेहिं काला * तेहिं बचाइ लिय दीनदयाला ॥
यहि विधि सिगरे पूजक पापी * रामानुज परसंतन तापी ॥
बहु विधि मारण कियो प्रयोगू * पै सब वृथा भये उत योगू ॥

यतिवर तिनहि कह्यो कछु नाहीं ❀ मान्यो जैसे रह्यो सदाहीं ॥
सो०-साधुनकी यह रीति, कराहिं कबहुँ अपकार नहिं ॥
मानहिं सबसों प्रीति, शत्रुहि मित्र समान गुनि ॥२॥
गंगातट तीरथ पति प्रागा ❀ जासु सुयश जग जाहिर जागा ॥
तहँ इक यज्ञमूर्ति अस नामा ❀ भयो विप्र इक विद्या धामा ॥
पढि बहु शास्त्र वाद बहु कीन्हो ❀ पंडित सभा जीति सब लीन्हो ॥
सुन्यो श्रवणसों दक्षिण देशा ❀ रामानुज पंडित इक वेशा ॥
रामानुज जीतन चित चहिकै ❀ गवन्यो दक्षिण देश उमहिकै ॥
शत पंचाशत शकटन माहीं ❀ भरे अनेकनि पुस्तक काहीं ॥
लीन्हे संग शिष्य समुदाई ❀ रंगनगर पहुँच्यो सो जाई ॥
रंगनाथको दर्शन करिकै ❀ रामानुजहि कह्यो तहँ अरिकै ॥
पंडित सुनियत तुमहिं प्रवीना ❀ ताते वाद करन मन कीना ॥
होय हमार तुमार विवादा ❀ होवै जीतनकी मर्यादा ॥
तुमसों अजय मान हम होवैं ❀ तुव पादिका शीश महँ ढोवैं ॥
हमसों जो जावहु तुम हारी ❀ तो मम शिष्यन होहु अचारी ॥
दोहा-यज्ञमूर्तिके वचन अस, सुनि यतिराज सुजान ॥
एवमस्तु कहि देत भे, माच्यो वाद महान ॥४६॥
रंगनाथ मंदिर महँ दोऊ ❀ भयो विवाद लख्यो सब कोऊ ॥
भयो सप्तदश दिवस विवादा ❀ रही समान उक्ति मरयादा ॥
यज्ञमूर्ति सत्रहवें द्योसा ❀ प्रबल परयो अनेक दै दोसा ॥
समाधान रामानुज केरे ❀ परे शिथिल तेहि द्योस घनेरे ॥
उठि यतिपति निजमंदिर आये ❀ निज मन शोक समुद्र डुबाये ॥
करिव्रत शयन कियो निशिमाहीं ❀ सुमिरयो बारबार प्रभु काहीं ॥
रंगनाथसों कह्यो पुकारी ❀ अब मर्यादा जाति तिहारी ॥
तुमहीं यह मत थापित कीन्हो ❀ तुमहीं अब खंडन मन दीन्हो ॥
करन हतो जो ऐसहि नाथा ❀ प्रथमहि दियो शीश कस हाथा ॥
अस कहि यतिवर कीन्हो शयना ❀ रात स्वप्नमहँ कह श्रीअयना ॥

कालिह विजय पैहो यतिराई * जैहै यज्ञ मूर्ति शिर नाई ॥
हरि निदेश सुनि अति सुखमानो * जागे उठ्यो यतिवर मति खानी ॥
दोहा-हरि हरि कहि उठि नाइ द्रुत, नित्य नेम निरधारि॥
रंगभवन आवत भयो, ध्यावत चरण खरारि ॥४७॥
यज्ञमूर्ति यतिपति कहँ जोह्यो * मानहुँ सिंह शैल अवरोह्यो ॥
औरहु दिनते दुगुन प्रकासा * दूनो हर्ष दुगुन मुख हासा ॥
यज्ञमूर्ति तब मनहिं विचारी * मोसों कालिह गयो यह हारी ॥
हर्षवान आवत अति आजू * कारण कौन कियो नहिं लाजू ॥
यह है रंगनाथ परभाऊ * याके जीतनको न उपाऊ ॥
यह है रंगनाथकर रूपा * उद्भुत सार्वभौम यति भूपा ॥
यज्ञमूर्ति अस मनहिं विचारी * गह्यो तासु पद पाणि पसारी ॥
बार २ करि दंड प्रणामा * बोल्यो वचन महामति धामा ॥
तुमसों हम विवाद नहिं करिहै * आप पादुका शिरमहँ धरिहैं ॥
तब रामानुज वचन बखाना * क्यों नहिं करहु विवाद सुजाना ॥
यज्ञमूर्ति तब कह कर जोरी * नाहिं सामर्थ्य वादकी मोरी ॥
जन जनसों जग होत विवादा * ईश जीवकी नहिं मर्यादा ॥
दोहा-रंगनाथके रूप तुम, हम लघु पंडित विप्र ॥
मोहिं शिष्य अपनो करो, करि दाया प्रभु क्षिप्र ४८
यज्ञमूर्तिको तुरतहीं, शिष्य कियो यतिराज ॥
रंगनगरमें वसत भो, सेवत सहित समाज ॥ ४९ ॥
तजो जनेऊ जो प्रथम, ताको प्रायश्चित्त ॥
करवायो यतिराज तेहि, विमल भयो तब चित्त ५०
संस्कार करि पांचहू, शीश शिखा रखवाइ ॥
नामदेव मन्नाथ दिय, मतके ग्रन्थ बढाइ ॥ ५१ ॥
देवराय इक नाम अरु, द्वितिय देव मन्नाथ ॥
यज्ञमूर्तिको देत भे, उभयनाम यति साथ ॥ ५२ ॥

तासु तेज विद्या बुधि देखी ❀ रामानुज निज ते वर लेखी ॥
इक नवीन मठ बृहद बनायो ❀ देवराज कहँ तहां टिकायो ॥
तहँ ऐश्वर्य बनाइ महाना ❀ राख्यो बहु भागवत प्रधाना ॥
तहां चारि द्विज पंडित आये ❀ यतिपति शरण होन चित चाये ॥
यतिपति देवराज मुनि नेरे ❀ पठवायो करवावन चेरे ॥
देवराज मुनि चारिहु काहीं ❀ किये समाश्रति अति सुखमाहीं ॥
कह्यो द्विजनहूं सुनहु पियारे ❀ हैं यतिराज अधार हमारे ॥
यह विभूति सब यदुपति केरी ❀ धोखेहु विप्र न जानहु मेरी ॥
गुरुके वचन विप्र सुनि चारी ❀ धन्य धन्य अस गिरा उचारी ॥
तहँ पश्चिमते वैष्णव आये ❀ रंगनगर मधि ते गोहराये ॥
कहँ मंदिर मन्नाथ सुमतिको ❀ देहु बताइ हमहि यतिपतिको ॥
पुरजन कह्यो रंगपुर माहीं ❀ द्वै मन्नाथ भवन दरशाहीं ॥

दोहा–पुरजनके अस वचन सुनि, वैष्णव विस्मय मानि॥
कहत भये पुरजननसों, परे न दूसर जानि॥९३॥

इक यतिपति मन्नाथ महाना ❀ मम ईश्वर भागवत प्रधाना ॥
अबलौं हम जान्यो इक काहीं ❀ दूसर है मन्नाथ कहाहीं ॥
गुरुजन तब सब भेद बतायो ❀ यतिपति जस मन्नाथ बनायो ॥
देवराज मुनि सुन्यो हवाले ❀ मोर नाम भ्रम होत कृपाले ॥
अति दुख मानि गुरू ढिग आयो ❀ बहुत बिलखि अस विनय सुनायो॥
नाथ विभूति आपनी लेहू ❀ तोहिं तजि रहौं न दूसर गेहू ॥
भटकत भटकत यह संसारा ❀ बहुत दिवस महँ भयो उधारा ॥
तुम्हरे नाम होइ भ्रम मोरा ❀ यह दुख मोहिं पिया पत घोरा ॥
अस कहि सकल विभूति बिहाई ❀ रहन लग्यो यतिपतिगृह आई ॥
रामानुज स्वामी अति हर्षे ❀ तापर कृपा सलिल अति वर्षे ॥
वरदराज पूजन अधिकारा ❀ दीन्हो ताहि जानि अविकारा ॥
देवराज मुनि किय द्वै ग्रंथा ❀ जामें गुरुपद रतिकी पंथा ॥

दोहा—एक समय यतिनाथ प्रभु, शिष्य पढावत माहिं ॥
वचन कह्यो यहि भांतिते, देखि शिष्यगण काहिं ९४

व्यंकट नाथहि गो चित लाई ❋ पूजे तुलसी फूल चढाई ॥
ताको फल अनंत विधि होवै ❋ कोटि जन्मके पातक खोवै ॥
तब अनंत इत शिष्य सुजाना ❋ नाइ चरण शिर वचन बखाना ॥
व्यंकटेश पूजन मोहिं देहू ❋ मेरो तापर परम सनेहू ॥
एवमस्तु स्वामी कहि दीन्हो ❋ गवन सुव्यंकट गिरि कहँ कीन्हो ॥
रच्यो विमल वृंदावन बागा ❋ तुलसि पुहुपते पूजन लागा ॥
निष्ठा तासु सुनत यति राजा ❋ व्यंकट गिरि गवने कृत काजा ॥
महित क्षेत्र तेहि मारग माहीं ❋ देख्यो पद्मविलोचन काहीं ॥
तिनको वंदि धनद दिशि जाई ❋ बसे देहलीपुर यतिराई ॥
तहां त्रिविक्रम प्रभुको वंदे ❋ चित्रकूट गे परम अनंदे ॥
तहँ बहु विषम वाद करतारा ❋ समय जानि नाहिं तिनहिं सुधारा ॥
अष्ट सहस्र गाउँ पुनि गयऊ ❋ तहँ वै शिष्यनाथके रहेऊ ॥

दोहा—एक दरिद्री एक रह, धनि यतिपती समीप ॥
पठवायो निज शिष्य है, श्रीवैष्णव कुलदीप ॥ ९५ ॥

धनमद विवश धनी अज्ञाना ❋ कीन्हो नाहिं वैष्णव सन्माना ॥
गुरु सत्कार साजि जब साजा ❋ वैष्णव फिरे जानि हत काजा ॥
यतिपतिसों कह आइ दुखारी ❋ धनी सुन्यो नाहिं बात हमारी ॥
सो तो धनमद अंध महाना ❋ लीन्हो नाहिं हमरो सन्माना ॥
यद्यपि वह आपन सत्कारा ❋ पै कीन्हो वैष्णव अपकारा ॥
नाहिं प्रसन्न भे यतिपति ताते ❋ फिरत भये तापर अनपाते ॥
चह्यो करन सत्कार हमारा ❋ पै न साधु सत्कार सुधारा ॥
मोतें अधिक अहैं मम दासा ❋ तिन अपमान मान मम नासा ॥
मुख न विलोकब ताकर ताते ❋ जैहै जन्म जगाते पछिताते ॥
अस विचारि रामानुज स्वामी ❋ भये दरिद्र शिष्य गृहस्वामी ॥

जौन समय गुरु आगम भयऊ * रह्यो न सो भिक्षाटन गयऊ ॥
रही भवन महँ ताकर दारा * गुर आगम निज भवन निहारा ॥
दोहा-तनु भरि बसनहु नहिं रह्यो, लाज विवश सो नारि।
कढी न बाहिर भवनके, सकी न गुरुहि निहारि ॥५६॥
रामानुज तहँ शिष्य समेता * भवनद्वार गे कृपानिकेता ॥
तब तिय दियो दुहुं करतारी * तब प्रभु तिय विन बसन विचारी॥
दीन्हो फेंकि शीश निज चीरा * सो तिय धारण कियो शरीरा ॥
स्वामीचरण गिरी कढि घरते * सादर चरण धोइ दुहुँ करते ॥
बहुरि सकल संतनपद धोयो * धनि २ जगत जन्म निज जोयो ॥
यतिपतिसों किय विनय बहोरी * रहहु आजु इत अस रुचि मोरी ॥
अहौं दरिद्रि नाथ सब भांती * तुमहि देखि भै शीतल छाती ॥
जो कछु होइ अन्न घर मेरे * लागे नाथ आजु हित तोरे ॥
भोजन करहिं इहां सब संता * भूरि भाग्य भेट्यो भगवंता ॥
अस कहि भीतर भवन सिधारी * नाहिं कछु घरमहँ अन्न निहारी ॥
लगी विचार करन द्विजदारा * केहि विधि करौं नाथ सत्कारा ॥
भूषण वसन अन्न धन नाहीं * गे पति कहुँ भिक्षाटन काहीं ॥
दोहा-एकवणिक मम मिलनहित, देन कह्यो धनभूरि ॥
राखनहित पतिधर्ममें, दीन्हों आशा दूरि ॥ ५७ ॥
भाषतहैं अस वेद पुराना * करै अघहु करि गुरु सन्माना ॥
तदपि न होइ धर्मको हानी * सुमति अनेक यहू भल जानी ॥
ताते बनिक निकट चलि जाऊं * ताकी आश पूरि धन ल्याऊं ॥
गुरुकारज जो लगै शरीरा * सफल जन्म सोइ कह मतिधीरा ॥
अस विचारि तेहिं वनिक निकेतू * द्विजरवनी गवनी गुरुहेतू ॥
कह्यो वचन सुनु वणिक सुजाना * बहु दिनते तैं रहे लोभाना ॥
मन भावत अपनो करि लीजे * गुरुहित आजु साजु सब दीजै ॥
शिष्यसहित रामानुज स्वामी * करौं न कछुक मोर बदनामी ॥
वणिक विचार कियो मनमाहीं * गुराहित यहि तनुकी सुधि नाहीं ॥

धर्म हेतु त्यागति मर्यादा * गुरुहित कछु न भीति अपवादा ॥
धन्य धन्य युवती जग ऐसी * किय गुरुभक्ति वेद महँ जैसी ॥
अस गुणि उच्यो वणिक मतिवंता * नारि चरण महँ परचो तुरंता ॥
दोहा-गौरीसम जगवंदनी, नारि शिरोमणि आप ॥
पतिव्रतानि समाजमें, सत्य रावरी थाप ॥ ५८ ॥
जाउ भवन भगवतकी प्यारी * मैं गुरसेवन साजु सँवारी ॥
ऐहौं तेरे भवन तुरंता * करिहौं दरश गुरू भगवंता ॥
अस कहि वणिक साजु बहु भांती * पठवायो तिय सँग सुख माती ॥
रचि भोजन बहुविधि निज हाथे * भोजन करवायो निज नाथे ॥
कीन्हों जोहि विधि गुरु सत्कारा * सब संतनको तेहि परकारा ॥
विप्रप्रियाकी पेषत प्रीती * गुन्यो गुरू लिय सेवा जीती ॥
करि भोजन गुरु बैठे जबहीं * आयो नारि कंत गृह तबहीं ॥
यतिपति पदसों कियो प्रणामा * नारि काम सुनि भो कृतकामा ॥
पतिसों तिय सब कह्यो हवाला * जेहि विधि भोजन दियो विशाला
परम प्रसन्न भयो पति ताको * मान्यो फल गुरुदेव कृपाको ॥
पतिसों तिय निज कपट दुराई * लै इकांत वृत्तांत सुनाई ॥
तियको पति कछु गन्यो न दोषू * वाम धर्मकी धाम अदोषू ॥
दोहा-दंपति गुरुपद वंदि पुनि, दियो प्रदक्षिण चारि ॥
जोरि पाणि सुस्तुति करत, नयन बहावतवारि ५९
गुरु आशिष दै शिष्यको, हर्षित हिये लगाय ॥
बारहिंबार सराहिके, बसत भये सुखपाय ॥ ६० ॥
तब प्रमुदित रानी पुनि आई * गुरुपद धोइ सलिल लै धाई ॥
गुरुको जूंठहु अन्नहु लीन्हो * जाइ तुरतसों वेश्यहि दीन्हो ॥
कह्यो वचन यह गुरुपरसादू * शिर धरि खाहु सहित अहलादू ॥
शिर धरि किय चरणोदक पाना * गुरुजूंठन खायो पकवाना ॥
तत्क्षण भई विमल मति ताकी * परचो चरण तियके सुखछाकी ॥
जोरि पाणि बोल्यो अस बाता * तैं मम गुरु ईश्वर पितु माता ॥

क्षमहु मोर अपराध महाना * मैं कछु तव प्रभाव नहिं जाना ॥
ले चलु अपने संग लेवाई * गुरुशरणागत वेगि कराई ॥
तब ताको तिय कर गहि ल्याई * स्वामी शरणागत करवाई ॥
छूटे कोटि जन्मके पापा * करन लग्यो अष्टाक्षर जापा ॥
तापर है प्रसन्न यतिराई * लियो जो संपति वैश्य चढाई ॥
उपजो वैश्यहि विमल विरागा * तजि धन धाम राम अनुरागा ॥

दोहा-विप्र विप्रतिय अरु वणिक, रामानुजके संग ॥
वसुधामें विचरन लगे, रँगे राम रतिरंग ॥ ६१ ॥

धनिक शिष्य जो यतिवर केरो * करि अपमान जो संतन फेरो ॥
सुन्यो सो गुरुपुर आगम जबहीं * गिरयो आइ यतिपतिपद तबहीं ॥
विनय कियो नाम्रित कर जोरी * करहु पवित्र कुटी प्रभु मोरी ॥
तब रामानुज तेहिं अस भाष्यो * साधु सेवतें नहिं अभिलाष्यो ॥
नाहिं यहि भांति संतकी रीती * तैं त्याग्यो जियते यम भीती ॥
मुख्य धर्म यह चारि प्रकारा * तामें प्रथम संत सत्कारा ॥
गुरुविश्वास राम अनुरागू * जगकर विषय भोग सब त्यागू ॥
सब कर साधु सेवहिं मूला * तामें प्रथम भये प्रतिकूला ॥
जबे संत घर पाहुन आवें * चरण धोइ तेहिं व्यजन चलावे ॥
भोजन दे पुनि प्रभु सम पूजो * मंगल तासु उपाय न दूजो ॥
हाले तब आले नहिं जैहैं * तब पखंड केहि भांति छिपैहैं ॥
कालांतर महँ पुनि तुम ऐहौं * सेइ संत तव घर लै जैहौं ॥

दोहा-बहुत भांतिसों किय विनय, पै न गये यतिराज ॥
क्षेत्र सत्य व्रत गवन किय, लै निज संत समाज ॥ ६२ ॥

तहँ रह कांचीपूरण स्वामी * मिले तिनहिं गुणि जगत अकामी ॥
वरदराजको दरशन लीन्हो * वासित रात्र संत सँग कीन्हो ॥
पुनि कीन्हो व्यंकट गिरि गवना * तहँ रह कपिलतीर्थ अघवदना ॥
दश योगी तहँ वसे सदाही * कछु दिन वसे यतीश तहांही ॥
तहँ इक विट्ठल देव भुवाला * प्रभु सेवन आयो तेहिं काला ॥

लखि अनूप यतिराज प्रभाऊ * भयो शिष्य भरि भूरि उराऊ ॥
गुरुहि समर्प्यो सो धन भूरी * भे तेहिते यमकी भय दूरी ॥
पुनि तुँडीर मंडल इक देशा * तहँ पिलमंगल ग्राम सुवेशा ॥
गवन कीय तहँ यति गण कंता * सुनि आये तहँके सब संता ॥
विनय कीन्ह प्रभु गिरिपर चलहू * हरिहि दराशि जन दुखदलदलहू ॥
प्रभु कहँ बसैं सुसंत इहांहीं * हम किमि शैल शीशपर जाहीं ॥
करे अचारज सो क्षिति गहई * शेष रूप यह भूधर अहई ॥

दोहा-संत कहे कर जोरिके, जो तुम जैहो नाहिं ॥
तौ किमि कोई जायगो, होई धर्म वृथाहि ॥ ६३ ॥

दीन वचन सुनि संतन केरे * नाथ शैल चढिवो चितहेरे ॥
त्र्यंकर नाथ चरण धरि माथा * चढे शैलपर साधुन साथा ॥
बीचहि शैलपूर्ण गुरु आये * दे प्रसाद गुरुको सुख छाये ॥
यतिपति किय तेहिं दंड प्रणामा * कह्यो नाथ आये केहिकामा ॥
जो प्रसाद शिशुकर पठावते * तबहूं हम अति मोद पावते ॥
गुरु कह बालक रहे न कोई * आयो मही प्रीति तव जोई ॥
शैलपूर्ण लै यतिपति काहीं * गवन किये हरिमंदिर माहीं ॥
तहँके तीरथ सकल नहाई * तीनि दिवस बिन अशन बिताई ॥
उतरि शैलसे संत समेतू * शैल पूर्णके गये निकेतू ॥
कीन्हो तहां वर्ष दिन वासा * शैलपूर्ण सँग सहित हुलासा ॥
शैलपूर्णकी करि सेवकाई * रामायणहि पढ्यो यतिराई ॥
तहँ गोविंदाचार्य सुजाना * एक दिवस करि प्रेम महाना ॥

दोहा-यतिपति सोवन सेज रचि, आप रहे तेहिं सोइ ॥
रामानुज गोविंदसों, बोले अनुचित जोइ ॥ ६४ ॥

गुरुहित सेज विरचि तुम सोये * शास्त्ररीति कस कबहुँ न जोये ॥
तब गोविंद कह्यो कर जोरी * सेज परीक्षा इत किय मोरी ॥
बरुक नरक दुख लहौं अभागे * पै नाहिं तुव तनु कंटक लागे ॥
सुनि गोविंद वचन यतिराई * प्रीति पेखि उर लियो लगाई ॥

एक समय यतिपति गोविंदा ❀ गये विपिन विहरन सानंदा ॥
तहँ मुख कंटक वेधित व्याला ❀ लखि गोविंद दयालु विहाला ॥
भय तजि अहिमुख अंगुलि डारी ❀ कंटक लियो तुरंत निकारी ॥
पुनि मज्जन करि यतिपति नेरे ❀ आवत भे तब यतिपति टेरे ॥
बिलमें कह गोविंद याहि काला ❀ तब गोविंद कह व्यालहवाला ॥
शैलपूर्ण ढिग पुनि दोउ आये ❀ रंगनगर हित विदा कराये ॥
शैलपूर्ण कह कहा त्वहिं देहू ❀ सकल लगत लघु निरखि सनेहू ॥
यतिपति कह मानहु जो सेवा ❀ देहु गोविंदहि तो गुरुदेवा ॥

दोहा-शैलपूर्ण कर करि कुशा, लै जल पढि संकल्प ॥
यतिपतिको गोविंद दिय, करिकै प्रेम अनल्प॥६५॥

तब गोविंद और यतिराजू ❀ गवने कांची सहित समाजू ॥
घटिकाचल नृसिंह अभिरामा ❀ गृध्र तड़ाग तीर सिय रामा ॥
दर्शन करत पंथ यहि भांती ❀ आये कांची सहित जमाती ॥
वरदराजको दर्शन कीन्हो ❀ गुरु गृह पदै गोविंदहि दीन्हो ॥
शैलपूर्ण ढिग गोविंद आये ❀ खान पान सन्मान न पाये ॥
शैलपूर्ण तिय तब अस कहेऊ ❀ किमि गोविंद सत्कार न लहेऊ ॥
शैलपूर्ण तब गिरा उचारी ❀ उचित न ग्रहन वस्तु दैडारी ॥
सुनि गोविंद गुरु वचन तुरंता ❀ कांची चल्यो जहां यतिकंता ॥
यतिपतिसों सब कह्यो हवाला ❀ सो सुनि मान्यो मोद विशाला ॥
रंगनगर आयो यतिराजा ❀ लै सँग गोविंद संत समाजा ॥
तेहि वैष्णव आगू चलि लीन्हे ❀ रंग भवनको गवनहि कीन्हे ॥
रंगनाथको नाथ नवाई ❀ पाइ प्रसाद महामुद छाई ॥

दोहा-करि सुस्तुति कर जोरिकै, आये पुनि निज धाम ॥
रामायण चिंतन लगे, यतिपति पूरण काम॥६६॥

एक समय यतिपति गृह माहीं ❀ श्रीगोविंदाचारज काहीं ॥
वैष्णव सकल प्रशंसन लागे ❀ धरि गोविंद गुरुपद अनुरागे ॥
अपनी सुनी प्रशंसा जबहीं ❀ गोविंद अति प्रसन्न भो तबहीं ॥

तब रामानुज वचन उचारे * कस सुस्तुति सुनि भये सुखारे ॥
अपनी सुस्तुति सुनि मतिवाना * कोउ प्रसन्न कबहूं नहिं आना ॥
तब गोविंद कही अस बानी * निजसम धन्य न मैं प्रभु जानी ॥
भ्रमत रह्यो योनिहिं चौरासी * लही कृपा तव आनँदरासी ॥
ताते मो सम नाथ न कोई * अस तो मोहिं परत है जोई ॥
गोविंद गिरा सुनत यतिराई * तेहिं सराहि उर लियो लगाई ॥
एक समय गोविंद विज्ञानी * गये रंग मंदिर छबि खानी ॥
तासु द्वार यतिपति यश गावत * रही एक गणिका छबिछावत ॥
सुनन लगे सो विलम बडाई * यतिपतिसों कह वैष्णव कोई ॥
दोहा-नाथ सुनत गोविंद उत, इक गणिकाको गान ॥
रामानुज गोविंदको, कियो तुरत आह्वान ॥ ६७ ॥
गुरू कह्यो जब गोविंद आये * गणिका गान कहा चित लाये ॥
गोविंद कह गुरु सुयश तिहारा * गावत रही लग्यो मोहिं प्यारा ॥
हे गुरु तव कीरति कोउ गावै * सो मेरो चित फांसि फँसावै ॥
यतिपति गुनि गुरु भक्ति दृढाई * गोविंदहि किय भूरि बडाई ॥
एक समय गोविंदकी माता * गोविंदसों बोली अस बाता ॥
जाहु घरै ऋतुवंतिनि नारी * मातु वचन सुनि भये दुखारी ॥
गुरुसेवाते नहिं अवकासा * नाहिं सुधि मोहिं कहँ तिय कहँ वासा ॥
तब गोविंद जननी यतिराजै * कियो निवेदित सिगरो काजै ॥
यतिपति हूं गोविंद पठायो * बार बार अस वचन सुनायो ॥
करहु गृहस्थ धर्म जब ताईं * तब लगि चलु गृहस्थकी नाईं ॥
हम अस सुन्यो जबै घर जाहू * ज्ञान विराग तिये बतराहू ॥
जो न गृहस्थ धर्म मन होई * ग्रहण करो त्रिदंड विधि जोई ॥
दोहा-तब गोविंद कर जोरिकै, मोहिं देहु संन्यास ॥
विन दीन्हे संन्यासके, नाहिं छूटी यम पास ॥ ६८ ॥
तब रामानुज विरति विलासी * कीन्हो गोविंदको संन्यासी ॥
लागे दैन नाम मन्नाथा * कह गोविंद जोरि युग हाथा ॥

मोहिं मन्नाम नाम नहिं योगू ❀ कहत नाम तिहरो यह लोगू ॥
तब तोहिं नाम दियो जँवारा ❀ गोविंद पायो मोद अपारा ॥
आनँद सहित बित्यो कछु काला ❀ किय विचार यतिराज कृपाला ॥
जामुन अंत समय हम आये ❀ भाष्य करनको प्रणमुख गाये ॥
ताते भाष्य करहुँ यहि काला ❀ ज्ञान भक्ति वैराग्य विशाला ॥
नाहिं इतहिं बोधायन ग्रंथा ❀ कैसे कै प्रगटी सतपंथा ॥
अस विचारि सँग लै कूरेशै ❀ गये शारदापीठि सुदेशै ॥
तहँके लियो पंडितन जीती ❀ कियो शारदा प्रभुपै प्रीती ॥
लै बोधायन ग्रंथ मुनीशा ❀ चलत भये सुमिरत जगदीशा ॥
तहँके पंडित सब अकुलाने ❀ बिन बोधायन ग्रंथ सुजाने ॥

दोहा—चले चारि पंडित तुरत, आये यतिपति पास ॥
सो बोधायन ग्रंथको, लिय छुड़ाय अनयास ॥ ६९ ॥

जब पुस्तक लै गये छँडाई ❀ रामानुज दुख लह्यो महाई ॥
तब कूरेश कही अस बानी ❀ स्वामी मति मन करहु गलानी ॥
एकबार मैं सब अवलोका ❀ है गो कंठ करहु नहिं शोका ॥
अस कहि तहँ कूरेश सुजाना ❀ सो बोधायन ग्रंथ महाना ॥
रह्यो लक्ष सुश्लोक प्रमाना ❀ ताको कंठ कियो सब गाना ॥
रामानुज अचरज मन माना ❀ रंगनगरको कियो पयाना ॥
आइ रंगपुर भवन सिधारा ❀ रचन हेतु श्रीभाष्यविचारा ॥
तब यतिपति कूरेश बोलायो ❀ तेहिं कर भाष्यो प्रबंध लिखायो ॥
रचि यतिपति श्रीभाष्य सुहावै ❀ दिय वेदांत प्रदीप बनाई ॥
पुनि वेदार्थ संग्रह निर्माना ❀ पुनि वेदांतसार किय गाना ॥
गीता भाष्य रच्यो सुखदाई ❀ येते ग्रंथ रच्यो यतिराई ॥
श्रीसंप्रदा प्रसिद्ध सुग्रंथा ❀ ताते जानि परत सतपंथा ॥

दोहा—एक समय वैष्णव सकल, यतिपतिके ढिगआइ ॥
विनय कियो प्रभु अवनिमें, करौ दिग्विजय जाइ ॥ ७० ॥

रामानुज संमत कर दीन्हो ❀ सुघरी साधि गवन प्रभु कीन्हो ॥

सादर रंगनाथपद ध्याई * चोलदेश आये यतिराई ॥
तहँ करि विजय विष्णुमत थापी * पांडुदेश आये हरि जापी ॥
तहाँ जीति कुरुकापुर आये * तहँ दश ग्रंथ पठे सुख छाये ॥
तहँ शठकोपस्वामि कर मंदिर * गवन कियो तहँ यतिकुल चंदिर ॥
यतिपुंगव करि ग्रहण प्रसादा * यह सुश्लोक कियो तहँ वादा ॥

श्लोक-बकुलधवलमालावक्षसं वेदबाह्यप्रबलसमयवाद-
च्छेदनं पूजनीयम् ॥ विपुलकुरुकनाथं कारिसूनुं कवीशं
शरणमुपगतोऽहं चक्रहस्तेभवक्रम् ॥ १ ॥

गये कुरंगनगर यतिनाथा * द्वादश सहस संत लै साथा ॥
संग जासु चौहत्तर पीठा * वादयुद्ध जे दिये न पीठा ॥
पुनि रामानुज संतन संगा * आये सादर नगर कुरंगा ॥
तहँ कुरंगपूरण भगवाना * तिनको दरश कियो सविधाना ॥
जब मंदिरमहँ गये यतीशा * प्रगट कह्यो तहँते जगदीशा ॥
इतके लोग मोहिं नहिं माने * विविध भांतिके नाम बखाने ॥

दोहा-सबको तुम शासन करहु, प्रगटहु मोर प्रभाव ॥
अनाचार करते महा, सो मेटहु यतिराव ॥ ७१ ॥

अपने शिष्य करहु मोहिं काहीं * बैठि कनक सिंहासन माहीं ॥
अस कहि उतरि सिंहासनते हरि * बैठायो रामानुज कर धरि ॥
शीश नवाइ वदन ढिग लाये * हरि कहँ यतिपति मंत्र सुनाये ॥
पांचहु संस्कार प्रभु केरो * यतिपति किय जस वेदनिवेरो ॥
यह आचार्य देखि सब लोगा * सत्य सत्य कह भक्ति प्रयोगा ॥
रामानुजके शिष हरि भयऊ * यह यश त्रिभुवनमहँ भरिगयऊ ॥
रामानुजको रथहि चढाई * विदा कियो हरि शीश नवाई ॥
रामानुज किय दंडप्रणामा * मम अपराध क्षमहु गुणधामा ॥
तौन देशवासी जन सिगरे * जे हरिविमुख रहे मति बिगरे ॥
ते प्रभुपद पूरी किय प्रीती * कीन्हों वैष्णव शास्त्रप्रतीती ॥
रामानुज गे केरलदेशा * लख्यो अनंत सैन कमलेशा ॥

रामानुज नामक इक मंदिर ❋ रचिनास्तिकन जोतियतिचंदिर ॥
दोहा—पश्चिम सागर तटहि तट, द्वारावती सिधारि ॥
तहँ यदुपतिको दरश करि, गे मधुपुरी पधारि ॥७२॥
मथुराते वृंदावन आये ❋ पुनि बदरीवनकाहँ सिधाये ॥
बदरीवनते अवध पधारे ❋ मुक्तिनाथको फेरि सिधारे ॥
औरहु नैमिष पुष्कर आदी ❋ सकल तीर्थ कीन्हे अहलादी ॥
तहँ तहँ जे नास्तिक मतवारे ❋ तिनहिं जीति निजपंथ पसारे ॥
पुनि शारदपीठि महँ आई ❋ जहँ ज्वाला देवी सुखदाई ॥
गे दर्शन हित मंदिर माहीं ❋ देवी भई प्रत्यक्ष तहांहीं ॥
पूछ्यो श्रुतिको अर्थ भवानी ❋ यतिपतिके सब अर्थ बखानी ॥
सुनि चंडिका लह्यो सुखधामा ❋ भाष्यकार दीन्हो अस नामा ॥
यतिपति कह केहि कारणमाता ❋ भाषसि मोर सुयश अवदाता ॥
कह्यो अंबिका पंडित केते ❋ अस न कह्यो आये इत जेते ॥
तहँ पंडित बहु किये विवादा ❋ पाय पराजय लये विषादा ॥
तहँको भूप शिष्य ह्वै गयऊ ❋ यतिपति शेषरूप गनि लयऊ ॥
दो०—यतिपति पर पंडित कुमति, किय मारनअभिचार॥
ते वैकल बागन लगे, विष्ठा करत अहार ॥ ७३ ॥
पुनि राजासों ह्वै विदा, वैकल बुधन सुधारि ॥
गंगातट आवत भये, रामानुज यशकारि ॥ ७४ ॥
पुनि काशी आये यतिराई ❋ तहँ निजकीरति चहुँकितछाई ॥
पुनि पुर खोजत ष्येव सिधारे ❋ लखि नीलाचल भये सुखारे ॥
करि जगदीश दर्श कछु काला ❋ बसत भये तहँ पुरी कृपाला ॥
मठ विरच्यो रामानुज नामा ❋ अबलौं है प्रसिद्ध सो धामा ॥
कछुदिन प्रभु तहँ कियो निवासा ❋ वितरन वैष्णव वृंद हुलासा ॥
देख्यो तहँकी पूजन रीती ❋ जान्यो सकल वेष विपरीती ॥
तब पूजकन बोलि यतिराई ❋ साधुनमध्य कह्यो समुझाई ॥
जोन भांति पूजन तुम करते ❋ सो सब वेदविमुख नहिं डरते ॥

भोग लगावहु जो सब अटका ❀ वेदविमुख लखि होत सो खटका ॥
कोने ग्रंथनको मत करहू ❀ सो समझाय मोर मन भरहू ॥
जौन वेद सम्मत जग माहीं ❀ सो सब निष्फल होत सदाहीं ॥
पूजक सकल जोरि युग पानी ❀ यतिपतिसों अस विनयबखानी ॥
दोहा–जौन रीति प्रभु सर्वदा, चलि आई यहि देश ॥
तौन रीति पूजन करैं, भोग लगाय हमेश ॥७५॥
यद्यपि जानहिं वेद विधाना ❀ पैयत है प्रभु यही प्रमाना ॥
नाहिं कबहूं शास्यो जगदीशा ❀ नाहिं हमको दूसर मत दीसा ॥
यतिपति सुनि पंडनकी बानी ❀ बोले कुपित अनै अनुमानी ॥
वेदविमुख हरि को उपचारा ❀ करत होत शिर पातक भारा ॥
मोरे लखत वेद विपरीती ❀ तुम करिहो तो पैहो भीती ॥
द्वादश सहस शिष्य हैं मेरे ❀ पूजब हमहिं रहब प्रभु नेरे ॥
तुम सबको हम देब निकारी ❀ वेदविरुद्ध विधान विचारी ॥
पंचरात्र विधि पूजन करहू ❀ को निज शिविरअनत कहँ धरहू ॥
अस कहि यतिपतिशिष्यबोलाये ❀ जगन्नाथ मंदिर महँ आये ॥
सिगरे पंडन तुरत बोलाई ❀ पंचरात्र विधि दियो सुनाई ॥
बहुरि कह्यो कीजे यह रीती ❀ नातो पावहुगे अति भीती ॥
पंडा यतिपति सीख न माने ❀ मौन सदन गे शोकहि साने ॥
दोहा–भये भोर पंडा सबै, कीन्हे सोइ विधान ॥
यतिपति शिष्यनबोल तब, शासन दियोप्रमान ॥७६॥
मंदिरते सब पंडन काहीं ❀ देहु निकारि रहै क्षण नाहीं ॥
द्वादश सहस शिष्य सब धाये ❀ पंडन मंदिर बाहिर लाये ॥
रामानुजके शिष्य उदंडा ❀ मंदिरते काढे सब पंडा ॥
रोवत पंडा सकल दुखारी ❀ गये आपने भवन सिधारी ॥
तब यतिपति मंदिर पगुधारा ❀ सहित शिष्य वसु वेद हजारा ॥
पढि पढि वेदमंत्र सविधाना ❀ मंदिर मार्जन कियो प्रमाना ॥
वेद विधान कियो पुनि होमा ❀ करी प्रतिष्ठा यज्ञ ससोमा ॥

वेद विहित षोडश उपचारा * कीन्ह्यो पूजन चारिहु बारा ॥
द्वारन द्वारन वैष्णवन थापा * ते कीन्हे अष्टाक्षर जापा ॥
बीति गयो इक दिन यहि भांती * कियो शयन मंदिर तेहिं राती ॥
यतिपतिको जगदीश निशामें * दीन्ह्यो स्वप्न पाछिले यामे ॥
दोहा–यतिपति तुम कीन्ह्यो यदपि, सुंदर वेद विधान ॥
तदपि मोरि इच्छा प्रबल, यह थल सोइ प्रमान ॥७७॥
ताते शासन मानिय मोरा * रहन देहु सोइ विधि यहि ठोरा ॥
गयो मोहिं लंघन परि आजू * लग्यो भोग नहिं यतिशिरताजू ॥
यहि विधि स्वप्न दियो भगवाना * जागे यतिपति भयो विहाना ॥
प्रभु सन्मुख यतिनायक जाई * करी विविध विधि सुस्तुति गाई ॥
पुनि सोइ वासर वेद विधाना * किय पूजन यतिगृह प्रधाना ॥
पंडा सब जुरिकै तहँ आये * प्रभुको आरत वचन सुनाये ॥
बैठे द्वार धरन सब ठाना * यतिपतिकियो वचन नहिं काना ॥
बीत्यो यहि विधि वासर सोऊ * पंड़न विनय सुन्यो नहिं कोऊ ॥
राति स्वप्न दीन्ह्यो जगदीशा * मोरि विनय मानिये यतीशा ॥
गंगा दक्षिण दिशि जे देशा * तिन महँ तुव अधिकार हमेशा ॥
यह थल मेरे अहै अधीना * लखहु न तुम इत विधिविधिहीना ॥
जागे जब प्रभात यतिराई * जगन्नाथपर गे अनखाई ॥
पंडनहूंको दिय प्रभु सपना * तुम अधिकार पाइहौ अपना ॥
दोहा–प्रभुको शासन सुनत सब, गये सदन सुखमानि ॥
इत यतीश जगदीश ढिग, कहत भये अस बानि ॥७८॥
तुमहीं कियो वेद कर वादा * अब तुमही मेटहु मर्यादा ॥
ताते प्रथम वचन हम माने * यह शासनहि मृषा अनुमाने ॥
वदहु मोहवश पंडन केरे * जे श्रुति शास्त्र विधानहि फेरे ॥
हमहिं दियो अपनो अधिकारा * तब नहिं यह कस कियो विचारा ॥
तुमहिं कह्यो श्रुति शास्त्रन माहीं * जहँ विक्षिप्त भूप है चाहीं ॥
तहां सचिव सब लेहि सुधारी * भूपहि विजन भवन महँ डारी ॥

तातें नाहिं मानव तुव भाखा * करब सो जो प्रथमहि करि राखा ॥
अस कहि पूजन वेद विधाना * करवायो यति वंश प्रधाना ॥
वेद विदित विधि भोग लगायो * महाप्रसाद जनन बटवायो ॥
दोउ दिन बीति गयो यहि रीती * तब जगदीश मानि अति भीती ॥
दीनदयालु भक्त आधीना * यतिपति काहिं स्वप्न पुनि दीना ॥
आज हमहिं भे तीनि उपासा * कहि न सकैं कछु तुम्हरे त्रासा ॥

दोहा—स्वप्नहिं भे यतिनाथहू, नहिं मानी प्रभुबानि ॥
तब जगदीश विचार किय, भक्त प्रबल अनुमानि॥७९॥

जबलों इत रहिहैं यतिराजा * तबलों करिहैं ऐसेहि काजा ॥
सेवा करि लीन्ह्यो मोहिं जीती * यापर मोरि परम है प्रीती ॥
तातें यहि अनतै पठवाऊं * पुनि प्रथमहिकी रीति चलाऊं ॥
अस विचारि प्रभु गरुड बोलायो * सो निशि माहीं नाथढिग आयो ॥
कह्यो वचन गरुडहीं जगदीशा * तुम उड़ाय लैजाहु यतीशा ॥
कूरमक्षेत्र देहु पहुँचाई * कानहु कान न परे जनाई ॥
तब तेहि निशि सोवत खगराई * शिष्य समेतहि पच्छ चढाई ॥
कूरमक्षेत्र दियो पहुँचाई * नहिं जागे नहिं परयो जनाई ॥
भोर भये जागे यतिराई * चहुँदिशि लखत भये चौआई ॥
नहिं वह देश न मंदिर सोई * चकित भये जागत सब कोई ॥
जगन्नाथ नगरी महँ सोये * जागे कूर्मक्षेत्र कहँ जोये ॥
यतिपतिसों पूछे भ्रम छाये * केहि विधि नाथ इतै सब आये ॥

दोहा—तब विचारि यतिपति कह्यो, प्रभु इच्छा यहिभांति॥
पठवायो जगदीश इत, शिष्यसहित यहि राति॥८०॥

करै न करै अन्यथा करई * अस समर्थको गुण श्रुति कहई ॥
नीलाचल महँ मम प्रभु केरी * यहि विधि इच्छा अहै तमेरी ॥
तातें करहि जो कछु मन भावै * अब नहिं हम नीलाचल जावै ॥
अस कहि कूर्म समीप सिधारे * तहँ शिवलिङ्ग अकारन द्वारे ॥
तहँके सकल देशके वासी * कच्छप कहँ मानें कैलासी ॥

तिनके वचन सुने यतिराई ❀ कियो वास कछु अन्न न खाई ॥
स्वप्न दियो कूरम भगवाना ❀ इतके सकल मनुज अज्ञाना ॥
पूजैं मोहिं शिवलिङ्ग विचारी ❀ गुनैं न कमठरूप अविचारी ॥
ताते मोहिं प्रगटौ यहि ठोरा ❀ मंदिरढिग सित चंदन मोरा ॥
भोर जागि यतिनाथ तहांहीं ❀ लियो खोदि सित चंदन काहीं ॥
वैष्णव दिये तिलक शिरभाला ❀ थप्यो कूर्म यतिराज कृपाला ॥

दोहा—तबते कूर्म सरूप तहँ, प्रगट भयो जगमाहिं ॥
तेहि प्रसाद अह्लादभरि, भोजन कियो तहांहिं ॥८१॥

तहां वसे कछु काल यतीशा ❀ इत नीलाचल महँ जगदीशा ॥
पंडन बोलि भोग लगवायो ❀ प्रथमकेर निज पंथ चलायो ॥
उत जन कमठक्षेत्रके वासी ❀ स्वामी शिष्य भये गति आसी ॥
कमठक्षेत्र करि यहि विधि वासा ❀ सिंहाचल आयो सहुलासा ॥
पुनि यतिपति गे गरुड गिरीशै ❀ तहां नाय नरहरि कहँ शीशै ॥
गये वेंकटाचल यतिराई ❀ तहँ कौतुक लखि परयो महाई ॥
जोरि जमाति शैव सब आये ❀ सकल वैष्णवन वचन सुनाये ॥
स्वामिकार्तिककी यह मूरति ❀ वृथा विष्णुकी कहहु मंदमति ॥
शङ्ख चक्र नाहिं बाहुन माहीं ❀ ताते विष्णुरूप है नाहीं ॥
वैष्णव कहैं विष्णुको रूपा ❀ शैव कहैं स्कंद अनूपा ॥
वैष्णव शैवन है अति रारी ❀ तेहिं अवसर यतिपति पगुधारी ॥
कह्यो शैव वैष्णवन बोलाई ❀ हम झगरो सब देत मिटाई ॥

दोहा—आयुध है स्कंदके, डमरू शूलहु आदि ॥
आयुध हैं श्रीविष्णुके, शारंग चक्र गदादि ॥८२॥

दोनहुँके आयुध ले आई ❀ यह वपु आगे देहु धराई ॥
जो आयुध धृत प्रात देखाहीं ❀ सोइ रूप मानहु यहि काहीं ॥
यतिपति जब अस वचन बखाना ❀ शैवहु वैष्णव मानि प्रमाना ॥
दोनहुँके आयुध धरि आगे ❀ दै कपाट निशिमहँ सब भागे ॥
जाय प्रभात कपाट उघारी ❀ देख्यो शङ्ख चक्र कर धारी ॥

माने सकल विष्णुको रूपा * जब वेंकट ध्वनि भई अनूपा ॥
शैव निराश गये निज ऐना * यतिनायक मान्यो मत चैना ॥
सुवरण मूरति रमा बनाई * अरप्यो वेंकटनाथहि जाई ॥
तबते ससुर भये हरिकेरे * कियो विवाह विधान घनेरे ॥
रहि तहां प्रभु ह्वै संन्यासी * गये सत्यव्रत क्षेत्र हुलासी ॥
दक्षिण मथुरा कहँगे चाये * नगर वीरनारायण आये ॥
पुनि बहुरूप नवावत शीशा * रंगनगर आये यतिईशा ॥
दोहा-रंगनाथके चरणको, करि वंदन यतिराज ॥
आय सदनमहँ बसत भे, शिष्यसहित कृत काज॥८३॥
रह्यो जौन कूरेश सुजाना * सो पश्चिम दिशि कियो पयाना ॥
कांची पश्चिम दिशि इक कोसा * बस्यो तहां करि राम भरोसा ॥
धन अरु अन्न अमित घर बाढा * दियो दान जलु यथा अषाढा ॥
दीनन देत भयो अतिशोरा * सुनि निशि भयो रमाको शोरा ॥
कही प्रभुहि कमला कर जोरी * यह रव सुनत डरी मति मोरी ॥
होत शोर कहँ देहु बताई * तब कुरेश कीरति हरि गाई ॥
रमा कह्यो तेहिं इतहिं बोलावहु * मेरे दृगगोचर करवावहु ॥
तब कांचीपूरण कह नाथा * कह्यो सदन महँ ल्यावहु साथा ॥
कांचीपूरण कुरपुर जाई * हरि शासन सब गये सुनाई ॥
सुनि कूरेश नाथको शासन * मान्यो सकल लोकको नाशन ॥
घर सम्पति सब दियो लुटाई * पुनि विचार कीन्ह्यो सुखछाई ॥
मैं धनि हौं जेहिं नाथ बोलाऊ * यह सब है गुरुचरण प्रभाऊ ॥
दोहा-ताते प्रथमहि गुरु निकट, जाइ कमलपद बंदि ॥
जस शासन गुरु देहिंगे, तस पुनि करव स्वछंदि॥८४॥
अस गुण रंगनगर गमनोसो * भार्य्या रही तासु भवनोसो ॥
कनक पात्र लै सकल बिहाई * मिली पंथ महँ कंथहि जाई ॥
पतिसों कही भीति तो नाहीं * कनक कटोरा मम कर माहीं ॥
कह कूरेश भीति तुव हाथा * याहि तजे नाहिं भय मम साथा ॥

तन्यो विपिन महँ कनक कटोरा ❀ धर्मचारिणी तिय तेहि ठौरा ॥
दम्पति रंगनगर कहँ आये ❀ सुनि रामानुज अति सुख छाये ॥
कांचीपूरण कांची जाई ❀ वरदहि गे वृत्तांत सुनाई ॥
इत रामानुज शिष्य पठायो ❀ सादर कूरेशहि बोलवायो ॥
वंद्यो सो गुरुपद तहँ जाई ❀ गुरु उठाय लिय हृदय लगाई ॥
दम्पति गुरु निवास किय वासा ❀ कछुक काल सहुलास निरासा ॥
विष समान सब विषय विहाई ❀ बसे तहां सीला विनि खाई ॥
एक समय वर्षा भै भारी ❀ सीला बीनन गये सिधारी ॥
दोहा–पतिहि परत व्रत जानि तिय, सुनि बाजनको शोर॥
भोग समय गुणि रंगको, मनमें कियो निहोर॥८५॥
परत आजु लंघन पति काहीं ❀ हे प्रभु सुर विकरहु कस नाहीं ॥
रंगनाथ तिय विनय विचारी ❀ स्वप्न दियो अपने अधिकारी ॥
छत्र चमर बाजन युत मेरो ❀ भोग अनेक प्रकार घनेरो ॥
चमर चलावत छत्र देखावत ❀ देहु कुरेशहि बाज बजावत ॥
पूजक सुनि सब भोग उठाई ❀ चमर छत्र युत बाज बजाई ॥
दियो निशा कूरेशहि आई ❀ सो लखि चरित गयो चौंआई ॥
मैं नहिं मांग्यो प्रभु पहँ जाई ❀ कौन हेतु दिय भोग पठाई ॥
तब तिय कह्यो कंत मैं मांग्यो ❀ तुव लंघनलखिम्रहिंदुखलाग्यो ॥
कृपानिधान रंगपति दीन्हो ❀ दीनदयालु नाम सत कीन्हो ॥
तब कूरेश तियहि अनखाई ❀ कछु प्रसाद शिर धरि सुखनाई ॥
कह्यो नारि कहँ माग्यो तैंही ❀ खाय तहीं न क्षुधा कछु मैंही ॥
तब तिय भोजन कियो प्रसादा ❀ रह्यो गर्भ पायो अहलादा ॥
दोहा–व्यास पराशर अंशते, जनमें युगल कुमार ॥
भट्ट पराशर नाम दै, दिये यतीश उदार ॥ ८६ ॥
सुखमें बीति गयो कछु काला ❀ एक समय यतिराज कृपाला ॥
गवन कियो कूरेश भवनमें ❀ करि अभिलाषलखनशिशु मनमें ॥
गोविंदाचार्यहि कह्यो बोलाई ❀ ल्यायशिशुन मोहिं देहु देखाई ॥

जाय गोविंद शिशुन ले आयो * मुख द्वै मंत्र जपत सुख छायो ॥
तब बोले यतिपति जगबंधू * आवत इत द्वै मंत्र सुगंधू ॥
कह गोविंद मैं मंत्र रतनको * लायों मैं इत जपत शिशुनको ॥
तब रामानुज कह्यो विचारी * करहु शिशुन कहँ शिष्य सुखारी ॥
पांचहु संस्कार कर देहू * अस कहि पुनि प्रभुसहित सनेहू ॥
हरि आयुध भूखन लग कीन्ह्यो * आचारज पद बीतिन दीन्ह्यो ॥
गोविंद अनुज एक सुत जायो * नाम परांकुश पूर्ण धरायो ॥
यहि विधि यामुनार्य दुखतीना * सविधिसमन यतिनायककीना ॥
बीत्यो सुखसों तहँ कछु काला * भये अष्टहाइन दोउ बाला ॥

दोहा-पढन लगे गुरु पास दोउ, खेलन लगे बजार ॥
कोउ सर्वज्ञ महातमा, निकसे पंथ मझार ॥ ८७ ॥

गह्यो तासु कर करत ढिठाई * मूठो भरि वालुका उठाई ॥
पूछ्यो बालक तेहिं मतिधामा * जो सर्वज्ञ धर्‌यो तुम नामा ॥
तौ सिकता जो है मम मूठी * संख्या करहु तासु नहिं झूठी ॥
सिकताकन जो जानहु नाहीं * तौ सर्वज्ञ कहाउ वृथाहीं ॥
सुनि सर्वज्ञ चकित ह्वै गयऊ * केहिं बालक अस पूछत भयऊ ॥
सुनि कूरेश सुवन लहि मोदा * पहुँचायो घर तेहिं ले गोदा ॥
पुनि व्रतबंध भए दुहुँकेरे * वेद पढन लागे गुरुनेरे ॥
एक समय कूरेश बजारा * खेलत देख्यो युगल कुमारा ॥
पकरि कह्यो पढते कस नाहीं * शिशु कह पढित सकलजगमाहीं ॥
पढितहु अपढित कंठहि भाषा * सुनि सुत पर सनेह पितु राखा ॥
रंग सुवन कमलाकर पाली * किमि न होय सब विद्याशाली ॥
भयो पराशर केर विवाहा * किय रामानुज परम उछाहा ॥

दोहा-रंगनाथके मंदिरै, एक समय यतिराज ॥
बोलत भे सुंदर वचन, श्रीवैष्णवी समाज ॥ ८८ ॥

दाशरथी बिन म्वोहिं सुख नाहीं * ल्यावहु कोउ लेवाय मोहिं पाहीं ॥
दाशरथी है मोर त्रिदंडा * सब शास्त्रनमें बुद्धि उदंडा ॥

तब वैष्णव तुरंत तहँ जाई * ल्याये दाशरथीहि बोलाई ॥
तहँ रामायणको सुश्लोका * रामानुज बोले बिन शंका ॥
श्लोक–वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे ॥
वेदः प्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना ॥ १ ॥
रामायण हैं वेद स्वरूपा * तिमि द्राविड प्रबंध श्रुति रूपा ॥
यह जानहु मत मोर प्रवीना * कहहिं अन्यथा ते मतिहीना ॥
उपदेशत अस शिष्य समाजू * सुखित रंगपुर बस यतिराजू ॥
रामानुज सतसंगति पाई * भे सज्जन दुर्जन समुदाई ॥
निछुलापुर महँ अति बलवाना * धनुषदास इक मल्ल महाना ॥
कबहुँ रंगपुर उत्सव भयऊ * लै निज वाम मल्ल तहँ गयऊ ॥
निज तियवदनविलोकतचलतो * गिरतपरतपथचलत पछिलतो ॥
महामंद मति रमनी दासा * कबहुँ न ज्ञान विवेक प्रकासा ॥
दोहा–रामानुज मज्जन हितै, कावेरी महँ जाइ ॥
करि मज्जन लौटत भये, सहित शिष्य समुदाइ ॥ ८९ ॥
छंद–किय दास सो धनुदास पथ महँ चलत स्वामी देखि ॥
शिष्यन हँसत अस वचन भाष्यो नाहिं जड अतिलेखि ॥
श्रीरंग दरश करायलेव बनाय यहि हरिदास ॥
अस भाषि शिष्य पठाय ताहि बोलायकै निज पास ॥
अस कह्यो तुम कत लाज तजि डोलहु पशून समान ॥
एकांत महँ जन जात तिय ढिग जगत रीति प्रमान ॥
धनुदास कह कर जोरि मैं नाहिं प्रभु अनंग अधीन ॥
याके नयनसम नयन नहिं ताते भयो मैं लीन ॥
मैं चलहुँ पथ पट ओट करि कुँभिलात हगरवि ताप ॥
तप कह्यो यतिपति वचन यह तुम करहु मिथ्यालाप ॥
हम याहुते सुंदर विलोचन तुमहिं देव देखाय ॥
अस कहत गवने रंग गृह धनुदास संग लेवाय ॥
तनु श्यामसुंदर कंज लोचन दुख विमोचननाथ ॥

शर मुकुट शोभित पीतपट सायुध कटक वर हाथ ॥
यतिपति कह्यो धनुदास सुनु अस भुवन महँ को शोभ ॥
जल रुधिर मज्जा चाम तिय दृग वृथा किय तेहि लोभ ॥
श्रीरंग दरश प्रभावते धनुदासको भो ज्ञान ॥
यतिनाथ चरणन हाथ धरि ध्वनि माथ अति पछितान ॥
पुनि भयो स्वामीके समासृत गयो छूटि विमोह ॥
तिय तासु तेसहि ठानि बानि कियो रमापति छोह ॥

दोहा—यथा रामके होतभे, सेवक पवनकुमार ॥
रामानुजके होत भे, त्यों धनुदास उदार ॥ ९० ॥

छंद—यक काल तहँ यतिनाथ गवने रंगभवन प्रभात ॥
धनुदासको गहि हाथ पाय प्रसाद बुधि अवदात ॥
कावेरि करि मज्जन मुदित धनुदासको गहि हाथ ॥
यति सार्व भौम सुभौन आये सुमिरि रघुकुलनाथ ॥
वैष्णव सकल धनुदासको अति नीच जाति विचारि ॥
युग जोरि कर यतिराजसों कह विनय वचन उचारि ॥
यह नीचको कह ग्रहण प्रभु मज्जन किये कस कीन ॥
यह महा अनुचित हमहिं लागत आप धर्म प्रवीन ॥

दोहा—तब रामानुज वचन कह, मंद मंद मुसकाय ॥
सुनहु संत सिगरे कहत, जो मैं हेतु देखाय ॥ ९१ ॥

जाति पांति पूछै नहिं कोई ❀ हरि को भजै सो हरिको होई ॥
जाके विरति विवेक विज्ञाना ❀ सो सब संतन माहँ प्रधाना ॥
नहिं निर्मल होवै तनु धोये ❀ निर्मल सोइ जो विषय विगोये ॥
काम क्रोध मद लोभ विहीना ❀ तिनहिं कहत श्रुतिसंतप्रवीना ॥
पै जो तुव मन शंका आई ❀ तासु हेतु हम देव देखाई ॥
अस कहि यतिपतिपूजनकीन्ह्यो ❀ संतन कार्य्य करनकहि दीन्ह्यो ॥
दिना द्वैक महँ प्रभु परभाता ❀ लख्यो वैष्णवन वसन सुवाता ॥
संचहि वैष्णव एक बोलाई ❀ कह्यो करतरी लै तुम जाई ॥

सब वैष्णवन बसन कछु काटी * ल्यावहु इत राखहु पट सांटी ॥
जाने नहिं कोउ कानहुं काना * यामें है कछु काज महाना ॥
सो वैष्णव किय जस गुरु भाख्यो * वैष्णव पटन काटि धरिराख्यो ॥
वैष्णव आय लखे पट काटे * यक एकन चोरी हित डाटे ॥
दोहा-महाकलह उपजत भयो, तहँ वैष्णवन समाज ॥
कहत परस्पर चोर तुम, पट काटे मम आज ॥९२॥
यतिपतितदपि बहुत समझायो * यदपि न तिनके मनकछु आयो ॥
तेहिवासर जब पहर निशागे * यतिपति धनुषदास बड भागे ॥
कह्यो रंग मंदिर तुम जाहू * गवन्यो सो मन मानि उछाहू ॥
पुनि यतिपति वैष्णव बोलवायो * तिन सबको अस वचन सुनायो ॥
धनुषदास घर जाहु तुरंता * तासु तिया सोवति बिन कंता ॥
ल्यावहु भूषण तासु उतारी * जाने निशा नेकु नहिं नारी ॥
धनुषदास गृह वैष्णव आये * लख्यो नारि सोवत सुख पाये ॥
लगे उतारन भूषण ताके * तिय जगि अस गुनि पुनि दृग ढांके
लेत विभूषण साधु उतारी * अहो भाग्य है जगत हमारी ॥
तन मन धन संतन हित लागे * ताते और कौन बड भागे ॥
रही करौंटा जेहिं बरनारी * तेहिं अँग भूषण लिये उतारी ॥
तब तिय लियो करौंट बहोरी * जाने संत कही अब चोरी ॥
दोहा-जागि नारिको मानि मन, भागे संत तुरंत ॥
लै आये भूषण जहां, रामानुज भगवंत ॥ ९३ ॥
तिय उठि तहां बहुत पछिताई * अधभूषण किमि दियो बचाई ॥
अभरण अर्ध संत हित लागे * तेई भये आजु बड भागे ॥
आधे रहे अंग जे मेरे * वृथा भये दुखदायक हेरे ॥
अस पछिताति बैठि घरमाहीं * वैष्णव जाइ यतीश्वरमाहीं ॥
धरि दीन्ह्यो भूषण घर आगे * तिया चरित्र कहन सब लागे ॥
धनुषदास तब दर्शन लैकै * आई बैठ गुरुवंदन कैकै ॥
यतिपति कह्यो सुनहु धनदासा * जाहु निशा आपने अवासा ॥

धनुषदास करि गुरुहि प्रणामा ❀ गयो तुरत मोदित निजधामा ॥
तब यतिपति कह साधुन वानी ❀ जाहु तासु घर परै न जानी ॥
जो पति कहै नारिसों बाता ❀ सो इत आइ करो आख्याता ॥
धनुषदास जब गे निज ऐना ❀ तब तिय तासु मानि अति चैना ॥
मिली कलश शिर धरि चलि आगे ❀ अर्द्ध अंगके भूषण त्यागे ॥
दोहा-अर्द्ध अंग भूषण विगत, निरखि कह्यो धनुदास ॥
कहँ डारयो अभरण प्रिया,ताकोकरहुप्रकाश ९४॥
भई धन्य मैं कह अस नारी ❀ भूषण लीन्ह्यो संत उतारी ॥
निशा मध्य इत संत सिधारे ❀ सोवत गुनि आभरण उतारे ॥
तब मैं करवट लीन्ह्यों जागी ❀ जाते सोउ लेइँ बड भागी ॥
तब मोहिं जगी जानि सब संता ❀ इतते गये पराय तुरंता ॥
धनुषदास सुनि कह अनखाई ❀ किमि लीन्ह्यो करवट मनभाई ॥
जानि जगी तोहिं संत पराने ❀ लिये न भूषण अर्द्ध डेराने ॥
संतनकी है सम्पति सिगरी ❀ लगी न संत हेतु सो बिगरी ॥
जो तन धन संतन हित होई ❀ स्वारथ परमारथ सति सोई ॥
अस कहि रहे निशा महँ सोई ❀ गुरु ढिग चलि वैष्णव सब कोई ॥
धनुषदासको कह्यो हवाला ❀ भे निहाल यतिपाल कृपाला ॥
बहुरि वचन वैष्णवन सुनायो ❀ अबहूं नाहिं तुम्हरे मन आयो ॥
चीता भर पट काटत माहीं ❀ कियो कलह यक एकन पाहीं ॥
दोहा-तुम्हरे शांति विवेक नाहिं, वैष्णव नामहि केर॥
धनुषदासको देखिये,जेहि किय नीचानिबेर ॥९६॥
तुम चोराय भूषण तेहिं लीन्हों ❀ तापर तिय करवट तन कीन्हों ॥
तापर धनुषदास किय कोपा ❀ तैं भूषण हित धर्महि लोपा ॥
संत शिरोमणि है धनुदासा ❀ जाहि न धर्म हेतु धन आसा ॥
अस कहि धनुषदास बोलवायो ❀ भूषण दै वृत्तांत सुनायो ॥
विस्मय हर्ष न किय धनुदासा ❀ गुरुपद सेयो सहित हुलासा ॥
ते वैष्णव माने अति लाजा ❀ माने सकल वृथा निज काजा ॥

याहि विधिके धनुर्दास चरित्रा ❀ अहैं अनेक विचित्र पवित्रा ॥
रामानुजके गुरु परधाना ❀ पूर्णाचार्य नाम जग जाना ॥
तिन इक शूद्र शिष्य निज कीन्ह्यो ❀ पांचहु संस्कार करि दीन्ह्यो ॥
दीन्ह्यो संत समाज मिलाई ❀ तबहि सबै वैष्णव समुदाई ॥
पूर्णाचार्यहि निंदन लागे ❀ कहहिं शूद्र महँ किमि अनुरागे ॥
पूर्णाचार्य्य सुता इक असुला ❀ भक्ति विवेक माहिं सो अतुला ॥

दोहा—सो पितुके भोजन तज्यो, और ज्ञाति तजि दीन ॥
तब रामानुज गुरु भवन, गवन प्रमोदित कीन ॥९६

विनय कियो गुरुसों कर जोरी ❀ शूद्र शिष्य की भइ अति खोरी ॥
तब पूरण बोले मुसकाई ❀ हम नहिं किय हरि तें अधिकाई ॥
शबरी विदुर गीध गजराजू ❀ अपनो किय यदुकुल रघुराजू ॥
जो हरिभक्त शूद्र नहिं सोई ❀ बिन हरिभक्त विप्र नहिं होई ॥
सुनि रामानुज अति सुख पाई ❀ सकल वैष्णवन दियो बुझाई ॥
सब वैष्णवन भयो परबोधा ❀ दियो त्यागि पूरण पर क्रोधा ॥
पुनि यतीश निज भवन सिधारे ❀ लख्यो बैठ इक बाउर द्वारे ॥
गहि कर तासु कोठरी जाई ❀ दै कपाट निज रूप दिखाई ॥
देशक कियो मंत्र उपदेशा ❀ कोटि जन्म कर हरयो कलेशा ॥
सो वाचाल भयो विज्ञानी ❀ लखि कूरेश उचित नहिं जानी ॥
रामानुजको दियो ओलम्भा ❀ कीन्ह्यो काह धर्म अवलम्बा ॥
तब जस पूरण ताहि सुनायो ❀ तिमि यतिपति कूरेश बुझायो ॥

दोहा—सुनि कूरेश लह्यो हरष, गुरुपद वंदन कीन ॥
उपज्यो जौन विषाद मन, सो सिगरो तजि दीन॥९७॥
गोष्ठीपूरण इक समय, दै कोठरी कपाट ॥
ध्यानावस्थित तहँ रहे, कियो अचल मन बाट ॥९८॥

रामानुज तेहि समय सिधारी ❀ वंदन करि अस गिरा उचारी ॥
कहा करौ एकांतहि बैठे ❀ मानहु ब्रह्मानंदहि पैठे ॥
गोष्ठीपूरण कहत बखानी ❀ सुनु लक्ष्मण देसुक विज्ञानी ॥

गुरु स्वरूप करतो मैं ध्याना ❀ जपौं नाम गुरुमंत्र महाना ॥
बालक बधिरै अंध जड मूका ❀ गुरुप्रसाद भेजा गहि रूका ॥
गुरुप्रसाद ते ज्ञान विज्ञाना ❀ गुरुप्रसाद ते पद निर्वाना ॥
गुरुप्रसाद ते विभव बडाई ❀ गुरुप्रसाद मिलत यदुराई ॥
नाहिं दुर्लभ कछु गुरु प्रसादा ❀ ऐहिक पारमार्थिक वादा ॥
जो केवल गुरुपद मन लायो ❀ सो सब धर्म कर्म फल पायो ॥
भुजा उठाय कहौं यह बानी ❀ श्रुति संहिता पुराण बखानी ॥
गुरुते अधिक न दूसर देवा ❀ मिलत हरी कीन्हे गुरुसेवा ॥
साधन सकल मूल यह जानो ❀ गुरुते अधिक देव नाहिं मानो ॥

दोहा–सुनि गोष्ठीपूरण वचन, रामानुज मतिवान ॥
शिष्य दाशरथि आदिकन कीन्ह्यो यही बखान ॥९९॥

यहिविधि रंगनगर यतिराई ❀ बसत भये जीवन गति दाई ॥
जीवउधार भार जगदीशा ❀ रंगनाथ धरि यतिपति शीशा ॥
आप सदा सुख सोवन लागे ❀ रमावदन वारिज अनुरागे ॥
रामानुज किय शिष्य घनेरे ❀ तासु प्रशिष्य शिष्य बहुतेरे ॥
विचरत महिमंडल सब ठौरा ❀ कीन्ह्यो जीवोद्धार करोरा ॥
यमपुर झूठ नरक भे सूना ❀ भै बसती वैकुंठकी दूना ॥
जिमि एकादश व्रत विस्तारी ❀ रुक्मांगद मनुजन दिय तारी ॥
बढी यथा यतिनाथ संप्रदा ❀ छूटी जन यमलोक आपदा ॥
यम है दुखित विगत व्यापारा ❀ ब्रह्मासों तब जाय पुकारा ॥
ब्रह्मा रंगनगरको आयो ❀ रंगनाथको सकल सुनायो ॥
अब यम लोक झूंठ भो स्वामी ❀ भये जीव सब परगति गामी ॥
रामानुज है तारक मूला ❀ तारत प्रतिकूलहु अनुकूला ॥

दोहा–तब विरंचिसों रंगपति, वचन कह्यो समुझाय ॥
कियो विनय तुम तासु मैं, करिहौं अवशि उपाय १००॥

अस कहि विदा कियो कर्त्तारा ❀ रंगनाथ अस मनहिं विचारा ॥
सेतुबंध हिमगिरि मधिमाहीं ❀ रह्यो मुक्तिविन कोउ जिय नाहीं ॥

कर्म भूमि यह भारतखंडा * तहँ रामानुज भयो उदंडा ॥
तारक मनुज मोक्ष मन मूठी * कीन्हो नरक स्वर्ग गति झूंठी ॥
है लीला विभूति यह मेरी * लीला करिहौं कहां घनेरी ॥
वसुधा और विकुंठ महाना * करि दीन्ह्यो यतिराज समाना ॥
ताते अस मैं करौं उपाई * चलै न अब संप्रदा चलाई ॥
अस गुणि रंगनाथ मन माहीं * प्रगट्यो चोलनगर नृपकाहीं ॥
तेहिं कृमिकंठ भयङ्कर नामा * उपज्यो भूप पापको धामा ॥
श्याम शरीर नयन विकराला * बालहितें पहिरयो अघमाला ॥
मिले सहायक तैसहि ताको * हिरण्याक्ष रावणको नाको ॥
संत विरोधी जीवन हंता * धर्मधुरा ध्वंसक अघवंता ॥

दोहा–फोरयो देवन मूर्ति बहु, मंदिर दियो ढहाय ॥
बोलि बोलि बहु वैष्णवन, जीवत दियो गडाय॥१॥

छंद–नहिं सुनत सब श्रुति विष्णु नाम अराम कल्मषकाम ॥
निजदेशके बहु बोलि पंडित कहत आठों याम ॥
मम नाम शिव है ताहितें इक लिखहु सिगरे पत्र ॥
शिवते अधिक नाहिं दूसरो परमान है सरवत्र ॥
तेहि देशके सब विबुध गण नृप भीति गुनि लखि दीन ॥
जिनकी रही नाहिं जीविका ते द्रुत पलायन कीन ॥
नरनाथ दानाध्यक्ष यक कूरेश शिष्य प्रवीन ॥
सो कीन विनय नरेशसों पंडित सभा मधि दीन ॥
मम गुरू है कूरेश तिनके गुरू हैं यतिराज ॥
बोलवाय दुहुन लिखाइये तो होय सब विधि काज ॥
नरपति पचास सवार पठयो रंगपुरहि तुरंत ॥
धरिलाव रामानुज कुरेशहि क्षणहु नाहिं बिलवंत ॥
ते रंगनगर सिधारि अश्वारूढ कह्यो पुकारि ॥
कूरेश कह रामानुजौ हम संग चलहिं सिधारि ॥
निज शिष्यको अधिकार गुनि कूरेश कीन पयान ॥
पाछे चले पूरनाचारज नृपति नगर सुजान ॥

तब दाशरथि यतिराजसों यह कह्यो सकल हवाल ॥
नहिं गुन्यो मंगल गवन तिनको जानि नृप चंडाल ॥
कूरेश पूर्णाचार्य दोउ पहुँचे नगर जब चोल ॥
तब रंगपुर महँ सकल वैष्णव यतिपतिहिं अस बोल ॥
गुरु आपके नाहिं रहन लायक रंगपुर यहि काल ॥
करि हैं उपद्रव अवशि अब नृप चोलपुर चंडाल ॥
सुनि शिष्य वचन विचारि उचित पयान किय यतिईश ॥
तब बोलि नृपति सवार पकरन चले संग पचीस ॥
तब बालुका पढि मंत्र दीन्हो शिष्य करि यतिराय ॥
ते शिष्य सिकता फेंक दिये सवार गये पराय ॥
तहँ पर्यो पथ महँ महावन भै बात वर्षा घोर ॥
नहिं लग्यो भोजन योग कहुँ नहिं मिल्यो निवसन ठौर ॥
षटरातिलौं पथ चलतगे बहु दूरिलौं यतिनाथ ॥
गिरि निकट धूम विलोकि तहँ सब गये गहि गहि हाथ ॥
तहँ रह्यो एक अहीरपुर पूछन लगे तहँ राह ॥
ते आय वैष्णव देखि कह तुव भवन केहि पुरमाह ॥
वैष्णव कह्यो हम रंगपुरवासी अहैं यह जान ॥
तब कह्यो सकल अहीर तहँ यतिराजकेर मकान ॥
वैष्णव कह्यो यतिराजको केहिं भांति तुम हियजानि ॥
ते कह्यो इत यक साधु आये दीन तेइ बखानि ॥
हम शिष्य है तेहिं साधुके ते सो साधु असकाहि दीन ॥
हम दास हे यतिनाथके रंगनगर प्रवीन ॥
तब साधु भिक्षनको दियो रामानुजै देवराय ॥
ते जानि गुरुको कीय गुरु परणाम शीश नवाय ॥
मधु अन्न कोदो लाय अर्पै कियो अति सतकार ॥
तेहि राति भोजन करि वसे यतिराज मुदित अपार ॥
पुनि भोर अपनो शिष्य दीन्ह्यों रंगपुरहि पठाय ॥
यतिराज पहुँचे जाय व्याघ्रापुर विपिन समुदाय ॥

तहँ रही कुजकी नारि चेला नामकी हरिदास ॥
ताके भवन यतिराज कीन्हों वास सहित हुलास ॥
सब व्याध मृगया ते बहुरि यतिराज सुनि आगौन ॥
बहु अन्न तंदुल आदि पठयो ब्राह्मणनके भौन ॥
गुनि व्याधपुर वैष्णव सकल मान्यो न भोजन योग ॥
तब कही चेला ब्राह्मणी सब सुनहु मम उत योग ॥
दुर्भिक्ष परिगो देश इत हम रंगपुर महँ जाय ॥
यतिराज शरणागत भइउँ दिय मंत्र मोहिं सुनाय ॥
सो बिसरिगो अब मंत्र मोहिं करि कृपा देहु बताय ॥
यतिराज सुनि द्विज नारि बैन कह्यो अनंदहि छाय ॥
यह सत्य दासी मोरि सिगरे करहु भोजन संत ॥
तब रच्यो व्यंजन विविध विधिसो ब्राह्मणी मतिवंत ॥
गुरुको सविधि पूजन कियो तिमि सकल संतन केर ॥
सब साधु भोजन कियो तेहिं कृत गुन्यो नहिं कछु फेर ॥
रामानुजो तेहिं हाथको भोजन कियो सुख छाय ॥
सो संतको उच्छिष्ट लै निज पतिहि दियो खवाय ॥
सब संत जूंठ प्रभावते तेहि भयो हिय महँ ज्ञान ॥
परभात सो यतिराजके भो शरण सहित विधान ॥
दम्पति कियो गुरु सहित संतन विविधिविध सतकार ॥
रामानुजो तहँ कियो बहुरि त्रिदंडको अधिकार ॥

दोहा—व्याध ग्रामते यति नृपति, पावक क्षेत्र सिधारि ॥
तहँ त्रयवासर वास करि, मथुरा गये सिधारि ॥२॥

तहँ कछु काल वास करि स्वामी ❀ मुक्त क्षेत्र गवने शुभ नामी ॥
तहँ मायावादी मतवारे ❀ ते यतिपतिहि न कछु सत्कारे ॥
तौन देश इक रह्यो तडागा ❀ विमल नीर बंधित चहुँ भागा ॥
कह्यो दाशरथिसों यतिराई ❀ सर तट परहु पांव पसराई ॥
दाशरथि तडाग तट जाई ❀ परे बोरि जल पद पसराई ॥

भयो साधुचरणोदक ताला * जे जे पान किये तेहिं काला ॥
ते सब भये विमल मतिवारे * रामानुजके शिष्य उदारे ॥
धन्य साधु महिमा जगमाहीं * पद जल करत शुद्ध सब काहीं ॥
अन्ध्रपूर्ण इक शिष्य सुजाना * तेहि सँग लै यतिवंश प्रधाना ॥
गये नृसिंहक्षेत्र यतिराई * बसत भये सन्तन समुदाई ॥
तहँ इक दिन उपजी अभिलाषा * चोल भूप हरि मत नहिं राखा ॥
जो राखहिं नृसिंह मत अपने * तौ नहिं मिटे चारि युग सपने ॥

दोहा—नरहरि यतिवर चित्तकी, आशय जानि तुरंत ॥
चोल नृपतिपै करत भे, कोप कटाक्ष दुरंत ॥ ३ ॥

तेहि दिन चोलभूप गलमाहीं * कीरा परे मिटे पुनि नाहीं ॥
यतिपति गे आये इक ग्रामा * रह्यो ग्राम पूरन द्विज नामा ॥
शिष्य रह्यो रामानुज केरो * सो कीन्ह्यो सत्कार घनेरो ॥
बसे तहां लै सन्त समाजा * विट्ठलदेव रह्यो तहँ राजा ॥
तासु सुता कहँ ब्रह्मपिशाचा * लगि तेहि बहुत नचावहि नाचा ॥
बहुत मंत्रशास्त्री तहँ आये * कोउ नहिं तासु पिशाच छोडाये ॥
विप्र ग्राम पूरन तहँ आयो * निज गुरुसों वृत्तांत सुनायो ॥
राजा यतिवरको बुलवायो * यतिवर लखन पिशाच परायो ॥
लखि यतिपति महिमा नृप भूरी * भयो शिष्य अघ भे सब दूरी ॥
रह्यो बौद्धको शिष्य सुजाना * जुरे बौध दश सहस समाना ॥
डेरा घेरि लियो प्रभुकेरो * वाद कुवाद बकैं बहुतेरो ॥
शास्त्रार्थ हमसों करि लीजै * तौ पयान अनते कहँ कीजै ॥

दोहा—रामानुज बोले वचन, करहु आपनो वाद ॥
उत्तर देव यथार्थ हम, मेटव सकल प्रमाद ॥ ४ ॥

सुनत बौध जन पंच हजारा * द्वै द्वै वदन लगे इकबारा ॥
तब यतिपति आवरन कराये * आप तासु भीतर महँ आये ॥
तहां बैठिकै वचन उचारा * तब नास्तिक सब कटे इकबारा ॥
तहँ यतिपति भे वचन हजारा * सत्य शेष वपु जगत अधारा ॥

एकै बार पराजय पाई ❀ गये बौध सब देश पराई ॥
पुनि सब आय भये शरणागत ❀ रामानुज कीन्ह्यो अति स्वागत ॥
पुरजन सहित भूप तेहि काला ❀ निरखि सहस्रमुख भयो निहाला ॥
सिगरो मिथिला देशहि वासी ❀ भये शिष्य परपातिके आसी ॥
रामानुज किय देश उधारा ❀ छायो सुयश सकल संसारा ॥
जनकनगर महँ सहित हुलासा ❀ करत भये कछु वासर वासा ॥
तहँ तिनको चन्दन चुकि गयऊ ❀ संतसमाज शोच अति भयऊ ॥
संत आय रामानुज नेरे ❀ चन्दन चुक्यो वचन अस टेरे ॥
दोहा–यतिपतिहूँ शोकित भये, लखि चंदनकी हानि ॥
ध्यायो मन महँ सोच यह, हरिये शारँगपानि ॥ ५ ॥
रंगनाथ तब स्वप्ने माहीं ❀ कह्यो जाय रामानुज काहीं ॥
यादव गिरिमहँ वास हमारा ❀ तहँ अब कानन भयो अपारा ॥
तहां मोरि मूरति मनहारी ❀ गडी भूमि नाहिं परे निहारी ॥
आय तहां तुम लेहु उपारी ❀ तहँ चंदन मिलि है सुखकारी ॥
तहां मोर मन्दिर बनवावहु ❀ तामें सोइ मूरति पधरावहु ॥
तहां महाउत्सव करु मोरा ❀ यह यश फैल रही चहुँ ओरा ॥
ऐसो स्वप्न दीख यतिराई ❀ कह मिथिलेशहि ओर बोलाई ॥
लै वैष्णवी समाज यतीशा ❀ कियो गवन सँग चल्यो महीशा ॥
गये यादवाचल कछु काला ❀ कटवायो तहँ विपिनविशाला ॥
रही एक सुंदर पुष्करनी ❀ नीर गँभीर मुनिन मन हरनी ॥
तहँ मज्जन करि अति अनुरागे ❀ हरि मूरति प्रभु खोजन लागे ॥
विविध थलनमें सो खोजवायो ❀ पै माधव मूरति नाहिं पायो ॥
दोहा–तब मनमें चिंता भई, कहँ खोजें प्रभु काहिं ॥
व्यापक हैं यह विश्वमें, माधव सब थल माहिं ॥ ६ ॥
चिंता करत नींद दृग आई ❀ स्वप्न माहिं हरि दियो बताई ॥
गिरि दक्षिण तीरथ कल्याना ❀ तहँ चम्पकके भूरुह नाना ॥
तेहि उत्तर तुलसी तरु एका ❀ तहँ इक बांबी नाहिं अनेका ॥

ताके तर मूरति है मेरी * लेहु भोर यतिनायक हेरी ॥
तहां श्वेत चंदन छबि छायो * श्वेत द्वीपते खगपति ल्यायो ॥
ऐसो स्वप्न दियो भगवाना * जगि प्रभात यतिवंश प्रधाना ॥
ले सँग वैष्णव भूपहु काहीं * यतिपति गये तौन थल माहीं ॥
तुलसीके तर तुरत खनायो * तहां मनोहर मूरति पायो ॥
यतिपति कीन्ह्यो महा उछाहा * मिट्यो सकल उरको दुखदाहा ॥
बाजे बाजत विविध प्रकारा * यतिनायक दिय दान अपारा ॥
कीन्ह्यो पूजन वेद विधाना * धूप दीप भोगहु सुखाना ॥
उत्तर दिशि तीरथ कल्याना * खन्यो श्वेत चंदन सविधाना ॥

दोहा—बोलि भिल्ल जन दूरिलौं, काननको कटवाय ॥
नारायण पद नामको, दीन्ह्यो शहर बसाय॥७॥

तहां महामंदिर बनवायो * गोपुर अतिशय ऊंच करायो ॥
अति उतङ्ग तिमि रच्यो प्रकारा * चारु चारि द्वारन विस्तारा ॥
तेहिं मंदिर महँ कियो प्रतिष्ठा * यादवनायक नाम गरिष्ठा ॥
संत समाज समेत यतीशा * कियो वास सुमिरत जगदीशा ॥
काल काल महँ उत्सव करहीं * जोरि जमात जनन सुख भरहीं ॥
याम याम पूजन करवावै * वेद विधान विशेष बतावै ॥
यादव पति मूरति मनहारी * उठै उठाये नहिं वपु भारी ॥
जब यात्राके उत्सव आवै * किमि प्रभुको बाहर लै जावै ॥
उठै न मूरति मनुज उठाई * कौन सकै रथ माहँ चढ़ाई ॥
यात्रा उत्सव खंडित होई * मन आशा पूरै नहिं कोई ॥
यह लखि यतिपति भये दुखारी * नहिं उत्सव मूरति मनहारी ॥
मिलै जो उत्सव मूरति प्यारी * होय तौ यात्रा उत्सव भारी ॥

दोहा—अस विचार यतिराज मन, कियो रैनिमें शयन ॥
तब यदुनायक यतिपतिही, कह्यो स्वप्न महँ बयन॥८॥

मोरि परम मूरति मनहारी * यात्रा उत्सव योग विचारी ॥
है दिल्लीपति बादशाहके * सो लायक है सब उछाहके ॥

बादशाह जब नौरंगजेबा ❀ चल्यो सकोप फोरावन देवा ॥
रूप फोरावत देवन केरा ❀ कियो यादवाचल जब डेरा ॥
रह्यो मंजु मंदिर इत मोरा ❀ कोउ इक साधु रहे यहि ठोरा ॥
बादशाह बहु मूरति भंज्यो ❀ देवालय अनेक तिमि गंज्यो ॥
देखि उपद्रव साधु महाना ❀ मम मूरति हित अति भय माना॥
बडी मूर्ति दीन्ह्यो खनि गाडी ❀ शाह सैन्य तहँ गई पछाडी ॥
सो मूरति गाडन नाहिं पायो ❀ बादशाह मंदिर फोरवायो ॥
सो मूरति फोरन सब लागा ❀ बरजेहु नाहिं मान्यो दुरभागा ॥
रह्यो संग महँ तासु जनाना ❀ लाये मूरति तहँ भट नाना ॥
रही शाहकी यक शहिजादी ❀ लखि सो मूरति छबि मरयादी ॥

दोहा—खेलन हित गुणि पूतरी, लियो पितासों मांगि ॥
शाह सहज गुनि देत भो, सो नित खेलन लागि ॥९॥

कियो प्रीति तापर शहिजादी ❀ क्षणहु लखे बिन होति विषादी ॥
भूषण वसन विविध पहिरावै ❀ अपने संगहि मोहिं जेवावै ॥
शयन करावति एकहि सेजू ❀ निशिदिन कियो मोर बंधेजू ॥
मैं प्रगट्यो तेहि प्रीति निहारी ❀ सो मम चरण प्रीति रजु डारी ॥
शहिजादी मोहिं वशकरि लीन्ह्यो ❀ गमन तुरत दिल्लीको कीन्ह्यो ॥
दिल्लीमें शहिजादी ऐना ❀ बसों अनेकन पावत चैना ॥
ताते बादशाह ढिग जाई ❀ मांगि लेहु मूरति मन आई ॥
अवशि मोरि मूरति तुम पैहौ ❀ जो म्लेच्छ तेहि आनि न लैहौ ॥
ऐसो स्वप्न लख्यो यतिराई ❀ उठि प्रभात सब संत बोलाई ॥
कह्यो वचन शंकित यतिराई ❀ भवन म्लेच्छ जाय किमि जाई ॥
यह झगरो प्रभु दियो लगाई ❀ काह उचित सब देहु बताई ॥
नाम विष्णुवर्द्धन मिथिलेशा ❀ कह्यो वचन प्रभु तजहु कलेशा ॥

दोह—दिल्लीको पगु धारिये, लै वैष्णवी समाज ॥
जो स्वप्नो तुमको दियो, सोइ करिहैं सब काज॥१०॥

सकुल संत सम्मत करि दीन्हे ❀ दिल्ली गवन यतीश्वर कीन्हे ॥

संत सङ्ग बहु चारि हजारा ❀ मिथेला भूपति सैन्य अपारा ॥
औरहु संत विपुल जुरिआये ❀ दिल्लीको प्रभु सङ्ग सिधाये ॥
दिल्ली जाय यमुनके तीरा ❀ डेरा कियो संतकी भीरा ॥
खोजन लागे एक वसीला ❀ मिलै संत हितकर शुभ शीला ॥
म्लेच्छ पुरी वैष्णव उपकारी ❀ मिलै कौन विधि तहँ नर नारी ॥
शाह समीप जनावन हेतू ❀ खोज्यो यतिनायक बहु नेतू ॥
पहुँची खबरि न शाह समीपा ❀ खडे रहत जेहि द्वार महीपा ॥
तब यतिनायक मन अकुलाने ❀ साधुनसों अस वचन बखाने ॥
बिन लिय मूरति टरब न टारे ❀ देब प्राण दिल्लीपति द्वारे ॥
चलहु किला लीजै सब घेरी ❀ और उपाय परत नहिं हेरी ॥
संतहु किय सम्मत तेहि भांती ❀ बीती यही विचारत राती ॥
दोहा-करि मज्जन हरि पूजि सब, वैष्णव होत प्रभात ॥
रामानुज सँग चलत भे, शाहै कछु न डेरात ॥ ११ ॥
चारिहु दिल्लीके दरवाजा ❀ रोंकि लियो वैष्णवी समाजा ॥
आवन जान न पावत कोई ❀ भयो कोलाहल नगर बडोई ॥
रहे कुतुबदिन बादशाहके ❀ अति समीप वर्ती सलाहके ॥
ते सुधि पाय शाह ढिग आये ❀ जोरि पाणि अस वचन सुनाये ॥
हजरत बहुत जुरे वैरागी ❀ एकै दरवाजे केहि लागी ॥
कहते हैं मरि हैं यहि ठोरा ❀ ना तो दीजै ठाकुर मोरा ॥
हुकुम होय कर तोपन फेरा ❀ देहिं उडाय लखैं अति सेरा ॥
हुकुम होय मतलबको बूझें ❀ करिकै कतल हुकुमते जूझें ॥
बादशाह सुनि सचिवन बानी ❀ बार बार मनमें अनुमानी ॥
विहँसि वचन सचिवनसों भाष्यो ❀ सुनि फकीर मन मोर न माष्यो ॥
कहो वचन उनसों अस मेरा ❀ किय बाइस दिल्ली तुम घेरा ॥
दौलत मांगें जो बहुतेरी ❀ दे द्रुत विदा करहु तिनकेरी ॥
दोहा-शीघ्रशाह शासन सचिव, धरि करि सपदि सलाम ॥
रामानुज ढिग गवन किय, पूछनको तिन काम ॥ १२ ॥

शाह दियो अस हुकुम सुनाई * देहु दुवार कपाट देवाई ॥
घुसैं न बैरागी पुर धाई * देहु तुरंत तोप फिरवाई ॥
जो नहिं शासन मानहिं मोरा * करहु फेर तिनपै अति घोरा ॥
भये बंद दिल्ली दरवाजा * सचिव गये जहँ रह यतिराजा ॥
पूछ्यो केहि कारण पुर घेरे * नगर लोग व्याकुल बहुतेरे ॥
तब यतिराज कह्यो अस बानी * शाह भवन हैं शारँगपानी ॥
ते ठाकुर प्रिय प्राण हमारे * तिनके हेतु बैठ हम द्वारे ॥
ठाकुर देहु मँगाय हमारे * चले जाब हम मौनहिं मारे ॥
नातो देब द्वार महँ प्राना * यह सिद्धान्त होय नहिं आना ॥
हय गय धन पटकी नहिं चाहै * और न काज कहैं कछु याहै ॥
सचिव सुनत रामानुज बानी * गये शाह ढिग विस्मय मानी ॥
बोले बादशाहसों बयना * हजरत वह फकीरके भयना ॥

दोहा—तेज तासु जालिम जुलम, बेहतर रूप उचाव ॥
ठाकुर मांगत आपनो, दीजे कौन जबाब ॥ १३ ॥

शाह कह्यो फकीर जो पूरा * तो हम लेब तासु पद धूरा ॥
अस कहि शाह सजाय सवारी * रामानुज पहँ चल्यो सिधारी ॥
कटक छोंडि दश पांच मुसाहिब * लैसँगचल्योसुमिरिनिजसाहिब ॥
देख्यो जाय जबहिं यतिराजा * तेजपुंज मानहु दिनराजा ॥
करि प्रणाम मोहर बहु दीन्हो * दियो अशीश यतीशन लीन्हो ॥
शाह कह्यो घेरे केहि कारन * जुरे बहुत बैरागी द्वारन ॥
रामानुज तब वचन उचारे * ठाकुर हैं मम भवन तिहारे ॥
शाह कह्यो चलि मंदिर मेरे * लेहु खोजि ठाकुर जे तेरे ॥
एवमस्तु तब कह यतिराई * शाह संग महँ चले तुराई ॥
बादशाहके गये मकाना * शाह मँगाया मूरति नाना ॥
जो जो देशनते लै आयो * सो सब यतिपति कहँ दरशायो ॥
इन महँ कौन अहै प्रभु मेरा * यह भ्रम भरि यतीश गे नेरा ॥

दोहा—राति स्वप्न सब हरि दियो, हम इनमें हैं नाहिं ॥
शाहिजादीके सेजमें, विलसत निशि दिन जाहिं ॥ १४ ॥

शाह सदन यतिराज प्रभाता * जाइ कह्यो निर्भय अस बाता ॥
इन महँ मम ठाकुर हैं नाहीं * तुव शाहिजादीके ढिग माहीं ॥
बादशाह अनुचरी बोलाई * शाहिजादी समीप पठवाई ॥
शाह हुकुम बोली तहँ चेटी * दे फकीरको पुतली बेटी ॥
कनक रत्न पुतली मन भाई * हम तोहिं देब आन बनवाई ॥
शाहिजादी तब कोपित बोली * लेम न पुतली कोटिन मोली ॥
और पूतली लेहि फकीरा * याहि दीन्हें रहिहै नाहिं जीरा ॥
शाह समीप आइ सो बांदी * कह्यो सकल जसकहि शाहिजादी ॥
शाह बहुत पुनि ताहि बुझाई * मूरति हित चेटी पठवाई ॥
कनक पूतली लायन लेई * यह पुतली फकीरको देई ॥
ठाकुर मम अस कहत फकीरा * बेटी तजे अयोग जिकीरा ॥
शाहसुता तब वचन उचारा * यह ठाकुर तो अहै हमारा ॥

दोहा-एक ओर मैं बैठती, यक दिशि रहै फकीर ॥
मूरति मध्य धराइये, जुरै जननकी भीर ॥ १५ ॥

आपहिते जेहिं ओर सिधावैं * तेई यह मूरति कहँ पावैं ॥
सुनत शाह दुहिताकी बानी * मनमें अति अचरज अनुमानी ॥
यतिपतिसों कह नौरंगजेबा * होय जु सत्य तुम्हारे देवा ॥
तो हम मधि महँ देयँ धराई * जो पहँ आपहिते चलि जाई ॥
सांचो देव ताहिको सोई * यामें नाहिं कछु संशय होई ॥
कह रामानुज करि विश्वासा * करहु तैसही जो मन आसा ॥
शाह तुरत बेटी बोलवायो * सभासदनको युह जोरायो ॥
करि मूरति सुंदर शृंगारा * लिये संगमहँ सखी हजारा ॥
अङ्क लिये प्रभुको शाहिजादी * आई सभा मध्य आह्लादी ॥
यतिपति आदिक वैष्णव जेते * जमनी अङ्क निरखि प्रभु तेते ॥
सब अतिशय अचरज मन माने * हरि जमनीके प्रेम लोभाने ॥
दियो मध्य मूरति बैठाई * आप बैठ दूरि पुनि जाई ॥

दोहा-बादशाह बोल्यो वचन, जाको ठाकुर होय ॥
तासु अङ्क चलि आपते, जाय लखे सब कोय ॥ १६ ॥

सब निरखैं मुख मूरति केरो ❋ सबके मन आश्चर्य घनेरो ॥
बादशाह जब कह अस बानी ❋ हरि मति शाहसुता रति सानी ॥
झुनझुन करि नूपुर झनकारी ❋ रेंगि चली मूरति मनहारी ॥
चले नाथ शाहिजादी ओरा ❋ कियो कोप तब यतिपति घोरा ॥
निज कर तुरत त्रिदंड उठाई ❋ बचन कह्यो प्रभु कहँ गोहराई ॥
बोरत आजु वेद मर्य्यादा ❋ पूरुष जोन कियो मुख वादा ॥
मोको तैं लेवाय इत लाये ❋ मध्य सभा हांसी करवाये ॥
तेरे ऊपर त्रिदंडहि टोरी ❋ धोउब तिलक हमैं नहिं खोरी ॥
तैं जगपति जमनी रस साने ❋ तोहिं आपने काज भुलाने ॥
अस कहि पटक्यो भूमि त्रिदंडा ❋ भयो कोलाहल सभा प्रचंडा ॥
मुरकी मूरति सभा मँझारी ❋ रामानुज पहँ चली सिधारी ॥
आय बैठिगै यतिपति गोदू ❋ रामानुज पायो अति मोदू ॥

दोहा–रहि न गई तनुमें सुरति, नैन बही जल धार ॥
सभा मध्य वैष्णव सकल, कीन्हें जयजयकार ॥ १७ ॥

प्रेम मगन यतिपति ह्वै गयऊ ❋ कछु न वचन मुख आवत भयऊ ॥
जस तस कै प्रभु अङ्क उठाई ❋ डेरहिं चले सुमिर यदुराई ॥
भये आजते सुत श्रीधामा ❋ श्री शङ्कत कुमार अस नामा ॥
वैष्णव करहिं कृष्ण गुण गाना ❋ बादशाह अति अचरज माना ॥
उठि रामानुज पांयन परेऊ ❋ बहु विधि आदर पूजन करेऊ ॥
मुद्रा एक करोर चढायो ❋ मणिमाणिक भूषण पहिरायो ॥
नौरंगजेब विनय पुनि कीन्ह्यो ❋ नाथ आपको अब हम चीन्ह्यो ॥
कह्यो शाहसों यतिपति बानी ❋ गमन हेतु मम मति हुलसानी ॥
द्रुतहिं यादवाचल अब जैहैं ❋ प्रभुको तेहि मंदिर पधरैहैं ॥
बादशाह तब कह कर जोरी ❋ जाहु नाथ सुधि राखहु मोरी ॥
लै ठाकुर अपने सँग माहीं ❋ गमन करहु शङ्का कछु नाहीं ॥
सुनत रह्यो हरिभक्त अधीना ❋ लख्यो प्रत्यक्ष मलिच्छ मलीना ॥

दोहा–इत यादवगिरि चलनको, यतिपति भये तयार ॥
उत शाहिजादीको चरित, श्रोता सुनहु अपार ॥ १८ ॥

श्रीसम्पतकुमार जोहँ क्षणते * गे रामानुज अङ्कुश मनते ॥
ताही क्षणते सो शाहिजादी * कृष्ण विरह वश भई विषादी ॥
परी सेजमहँ श्वासहि लेती * मानहु तनु तुरंत तजि देती ॥
हा पिय हा पिय मुख रट लागी * जारत तनु तीक्षण विरहागी ॥
चेरी बादशाह ढिग आई * शाहिजादी खबरि सुनाई ॥
बादशाह दुहिता ढिग गयऊ * बहुत भांति समुझावत भयऊ ॥
बेटी कनकपूतरी केती * रत्नहुकी ले भावै जेती ॥
एक पषाण पूतरी हेतै * कत भोजन तजि भई अचेतै ॥
शाहिजादी बोली तब बानी * सो मूरति मम प्राण समानी ॥
जीहों तेहि विन मैं क्षण नाहीं * लागत भोजन पान वृथाहीं ॥
की मूरति दीजे मँगवाई * की मोहि दीजे संग पठाई ॥
पिता तीसरी बात न होई * करौं कसम सुनते सब कोई ॥

दोहा-शाह दुखित उठिकै तुरत, यतिवर डेराजाय ॥
बेटीको वृत्तांत सब, दीन्ह्यो तिन्ह्यौं सुनाय ॥११९॥

तब बोले सकोप यतिराऊ * भयो समाज मध्य सब न्याऊ ॥
मूरति हम केहू नाहिं दैहैं * तेहि मूरति सँग प्राण पठैहैं ॥
तब उठि शाह सचिव बोलवाई * सुता प्रसंगहि दियो सुनाई ॥
सचिव कहे सुनु शाह सुजाना * तजिहै बिन मूरति सो प्राना ॥
जो बरबस छोडाय तुम लैहो * तौ फकीर हत्या हठि पैहो ॥
उभय भांतितें बिगरति बाता * ताते उचित यही दरशाता ॥
साजु साजि बहु करि सँग बादी * पठौ फकीर संग शाहिजादी ॥
पादशाह सम्मत सो कीन्ह्यो * तुरत मँगाय पालकी लीन्ह्यो ॥
तामें शाहिजादी चढवाई * बहु सम्पति दे साज सजाई ॥
यतिपति निकट सुता पठवायो * सुनि रामानुज विस्मय आयो ॥
यतिपति डेरा गइ शाहिजादी * सुख पायो मानहु भै सादी ॥
शाहसुता विनती अस कीन्ही * मम आयुष मूरति आधीनी ॥

दोहा-बाबा बिन देखे तिनहिं, नाहिं रहिहैं क्षण प्राण ॥
गमन करौ भावै जितै, करिहौं संग पयान ॥१२०॥

बाबा पूजि यथाविधि लेहू ※ मोर प्राणवल्लभ मोहिं देहू ॥
सुन्यो महुं अपने अस काना ※ मम पियको तुम सुत करि माना॥
हौं तुम्हारि अब भई पतोहू ※ देहु प्राणपति करि अति छोहू ॥
नतु शरीर त्यागन कर पापा ※ तुमहु पाय पैहौ संतापा ॥
प्रीति अलौकिक लखि यमनीकी ※ विस्मित प्रीति मानि निज फीकी
शाहसुतै सराहि बहु भांती ※ यतिपति कह माधि संत जमाती॥
यमनिजाति तैं धन्य कुमारी ※ भई प्रीति करि कृष्ण पियारी ॥
तेरे दरश होत अघ दूरी ※ चलु मम संग कृपा करि पूरी ॥
श्रीसम्पत कुमार कहँ दीजै ※ जो भावै सो मनकी कीजै ॥
लै संपत कुमार शहिजादी ※ यतिपति संग चली अहलादी ॥
बादशाह यह मनहिं विचारी ※ जाति अकेली मोरि कुमारी ॥

दोहा-पांच हजार सवार दै, गज रथ सहित उमाह ॥
पठयो कबहू नाम जेहिं, शहिजादाको शाह ॥ २१ ॥

यतिनायक संगहि शहिजादी ※ चल्यो सैन्य लै त्यागि विषादी ॥
चढी पालकी शाहकुमारी ※ लै सम्पत कुमार मनहारी ॥
करै जहां डेरा यतिराई ※ आपहु डेरा करै तहांई ॥
पूजन हित यतिपति कहँ देती ※ पुनि मँगाय अपनो पिय लेती ॥
भोजन पान शयन सब काला ※ प्रभुसँग करै शाहकी बाला ॥
यति विधि चलत पंथ महँ दूरी ※ शाहसुता शंका भै भूरी ॥
घटिका द्वै पूजन हित लेते ※ मांगेते जस तस कै देते ॥
क्षणभर ओट चोट डर लागै ※ बिन देखे विरहानल जागै ॥
कह्यो नाथ सों प्राणपियारा ※ क्षण भर विरह न होय तुम्हारा ॥
शाहसुताकी प्रीति परेषी ※ नाथ कह्यो तैं रमा विशेषी ॥
कस कहि कियो लीन हरि ताको ※ लखो मुकुंद प्रभाव कृपाको ॥
क्षुद्र जाति यमनी अघखानी ※ कियो नाथ तेहि रमा समानी ॥

दोहा-नाहिं जप नाहिं तप नाहिं नियम, नाहिं व्रत तीरथ दान॥
केवल प्रीति परेखिकै, रीझत कृपानिधान ॥ २२ ॥

रजनी गवन करै यतिराई * उगत भानु डेरा पर जाई ॥
तेहि प्रभात डेरै जब आये * पूजन हित निज नाथ मँगाये ॥
सन्त पालकी निकट सिधारे * करिकै विनय ओहार उघारे ॥
देखि परी मूरति अरि सोई * शाहिजादी दृग परी न जोई ॥
तब विस्मित यतिपति पहँ आये * शाहसुता वृत्तांत सुनाये ॥
रामानुज विस्मित अति भयऊ * प्रभु निजलीन कियो गुणलयऊ ॥
शाहिजादा सुनि भगिनि हवाला * रोवन लाग्यो भयो विहाला ॥
रामानुज तेहि बहु समुझाई * सँग यादव गिरि गये लेवाई ॥
तहँ संपत कुमार कहँ थापी * कियो महा उत्सव जग व्यापी ॥
जब जब उत्सवके दिन आवैं * तब संपत कुमार कहँ लावैं ॥
अति उतंग स्यंदन बनवाई * तेहि संपत कुमार चढवाई ॥
यात्रा उत्सव करैं महाई * विविध भांतिते बाज बजाई ॥

दोहा-दीनन दान अनेक विधि, देत यतीश उदार ॥
नित नव पट भूषण करत, नित नव हरि शृंगार २३
नाथ पियारी जानिकै, शाहसुता यतिराज ॥
ताकी मूरति कनककी, अति सुंदर बनवाय ॥ २४ ॥
मन्त्र प्रतिष्ठा तासु करि, हरिचरणन मधि आहिं ॥
यवनसुता थापित कियो, अबलौं अहै तहांहिं २५ ॥
शाहिजादीको मैं चरित, बरण्यो युत विस्तार ॥
अब शाहिजादाको चरित, श्रोता सुनहु उदार २६ ॥

यतिनायक सँग सो शाहिजादा * बस्यो यादवाचल अविषादा ॥
नित नव हरि उत्सव दृग देखै * धरणी धन्य भाग्य निज लेखैं ॥
कछु दिन बसि यादव गिरि माहीं * मांगि विदा यतिनायक पाहीं ॥
दिल्ली चल्यो सैन लै संगा * गुनत मनहिं मन भगिनि प्रसंगा ॥
रामानुज सतसंग प्रभाऊ * भयो म्लेच्छहू शुद्ध सुभाऊ ॥
बादशाह ढिग गे शाहिजादा * कीन्ह्यो भगिनी केर विवादा ॥
सुता चरित सुनि शाह सुजाना * हर्ष विषादहु भयो समाना ॥

रामानुजहि सराहन लाग्यो ❋ बादशाह हरिपद अनुराग्यो ॥
अंगराग भूषण पट नाना ❋ हाटक भाजन विविध विधाना ॥
पठयो यतिपति निकट सप्रेमा ❋ मान्यो तासु कृपा नित क्षेमा ॥
शाह सुवन उर हरि रति बाढी ❋ तासु बिछोह दुचितइ गाढी ॥
शाहिजादा पितुसों अस भाषैं ❋ अब मोहिं दिल्ली महँ नहिं राखौ ॥

दोहा–बिदा करो यतिनाथ ढिग, जहँ भगिनी पति मोर॥
उन बिन इक क्षण नहिं रहौ, सहौं दुसह दुख घोर ॥२७॥

शाह कह्यो सुत जाहु तुरंता ❋ जहँ तुम्हारि भगिनी कर कंता ॥
कीन्ह्यो रामानुज सेवकाई ❋ तुम्हरो उभय लोक बनिजाई ॥
शाह चरण शिर धरि शाहिजादा ❋ चल्यो यादवाचल अहलादा ॥
कबरू जब यादव गिरि आयो ❋ सादर रामानुज बोलवायो ॥
जानि अनन्य दास हरिकेरो ❋ यतिपति कीन्ह्यो मान घनेरो ॥
कछु दिन बसि यादव गिरि माहीं ❋ कबरू कह रामानुज पाहीं ॥
उभय विभूति आपके हाथे ❋ पतित अभय आपहिके साथे ॥
ताते मैं शरणागत आयो ❋ तुमरो सुयश भुवन महँ छायो ॥
जो न मुक्ति मोहिं दियो गोसाईं ❋ तौ तुम्हरो सब कार्य्य वृथाईं ॥
रामानुज कह तुव बहनोई ❋ ताके शरण मुक्ति हठि होई ॥
प्रभु सम्पत कुमार पहँ जाई ❋ मांगहु गति दीनता देखाई ॥
शाह सुवन सुनि यतिपति बयना ❋ गो सम्पत कुमारके अयना ॥

दोहा–कियो विनय कर जोरिकै, मैं यदुपति तुव सार ॥
अचरज तोहि अब होयबो, यह असार संसार ॥ २८ ॥

शुद्ध भाव हरि तासु विचारी ❋ दीनबंधु प्रणतारतिहारी ॥
कह्यो प्रत्यक्ष ताहि भगवाना ❋ रंगनाथ कहँ करहु पयाना ॥
रंगनाथ शासन सुनि लीजे ❋ विनहि विचार विशेषि करीजे ॥
हरि शासन यवनेश कुमारा ❋ सुनत तुरत श्रीरंग सिधारा ॥
जाय रंगपुरके दरवाजा ❋ कीह्यो धरन मुक्तिके काजा ॥
राति स्वप्न दीन्ह्यो भगवाना ❋ सुनु यवनेश कुमार सुजाना ॥

हम प्रपन्न पावन जग माहीं ❀ वसहिं मुक्ति प्रपन्नहि काहीं ॥
बिन चक्राङ्कित मुक्ति न होई ❀ यह सिद्धांत जान सब कोई ॥
नीलचक्र नीलाचल माहीं ❀ निरखत मिलति मुक्ति सबकाहीं ॥
जगन्नाथ नगरी तहँ जाहू ❀ सादर महाप्रसादहि खाहू ॥
अहैं पतित पावन जगदीशा ❀ देहैं तोहिं गति नावत शीशा ॥
कबरू सुनि रंगेश निदेशा ❀ चल्यो पुरी सुमिरत कमलेशा ॥

दोहा-जगन्नाथपुर आयकै, पाया महाप्रसाद ॥
नाचन लाग्यो द्वार मम, मगन प्रेम मर्याद ॥ २९ ॥

तासु प्रीति परतीति निहारी ❀ सपने पंडन कह्यो मुरारी ॥
कबरू को मंदिरके भीतर ❀ ल्यावहु वेगि विचारि शुद्धतर ॥
पंडा शाहसुवन कहँ ल्याये ❀ कबरू लखि नाथहि सुख पाये ॥
पुलकित तनु बह नैननि नीरा ❀ रही सुरति नहिं तनक शरीरा ॥
नाचन लागो हाथ उठाई ❀ जय जय दीनबंधु यदुराई ॥
यहि विधि नित मंदिर महँ जाई ❀ दर्शन करै प्रसादहि पाई ॥
विचरै पुरी मलेच्छ सुजाना ❀ नित नव प्रेम मगन भगवाना ॥
एक समय उत्सव अवसरमें ❀ महाभीर भइ हरिमंदिरमें ॥
महाप्रसाद कोउ नहिं दीन्ह्यो ❀ तब कबरू विचार मन कीन्ह्यो ॥
रोटी चारिक लेहुँ बनाई ❀ भोजन करि देवों प्रभु जाई ॥
अस विचारि बनयो कछु रोटी ❀ लेपन लाग्यो घृत गुनि मोटी ॥
तासु परीक्षा लेन विचारी ❀ श्रीजगदीश श्वान वपुधारी ॥

दोहा-आय अचानक यमन ढिग, लै रोटी प्रभु भाग ॥
कबरूके उर लखतही, उपज्यो अति अनुराग ॥ १३० ॥

सब महँ लखत रह्यो जगदीशा ❀ हरिगुनि रह्यो नवावत शीशा ॥
श्वानरूप भगवानहि भायो ❀ पाछे कबरू लै घृत धायो ॥
श्वानहि कह्यो पुकारि पुकारी ❀ कौन हेतु घृत दियो बिसारी ॥
भोजन करहु सघृत प्रभु रोटी ❀ बिन घृत रूक्ष अहै अति मोटी ॥
श्वान गयो सागरके तीरा ❀ पाछे कबरू गो अति धीरा ॥

लखि अनन्यदास जगदीशा * प्रगट भये प्रभुसहित फणीशा ॥
चारि बाहु पीताम्बर धारी * रूप कोटि मन्मथ मदहारी ॥
कबरू कहँ निज अङ्क उठाई * चूमत वदन आंशु झरिलाई ॥
तब कबरू बोल्यो अस बानी * सत्य पतितपावन हम जानी ॥
हरि विकुंठ कहँ ताहि पठायो * सो बहु विधि मुस्तुति सुख गायो॥
फैलिगई यह जग महँ बाता * भे जगदीश यमन जामाता ॥
पुरवासी यह अचरज देखे * यमनहिं महाभागवत लेखे ॥

दोहा—पुर दक्षिण दिशि सिंधु तट, रचे तासु सुस्थान ॥
सो अबलों यात्री लखत, जाहिर सकल जहान ॥ ३१ ॥
धन्य धन्य है कबरू धरनि, धनि धनि कृपानिवास ॥
की प्रभुकी प्रभुता कहौं, की सेवक विश्वास ॥ ३२ ॥

शाह सुनत सुत सुता हवाला * मानि सुगति नहिं भयो बिहाला॥
पुनि सम्पत कुमार प्रभु पासा * भेजा विविध भांति धनवासा ॥
अरु जगदीश समीपहु नाना * मणि भूषण पठयो सविधाना ॥
जब संपतकुमार भगवाना * कियो यादवाचलहि पयाना ॥
नीचजाति तिन संग बहु आये * चर्मकार जे जगत कहाये ॥
तिनकी भइ प्रभुपर अति प्रीती * जानि तासु यतिराज प्रतीती ॥
बांधि दई मर्य्याद प्रवीनी * वर्षरोज महँते दिन तीनी ॥
होत महास्नान नाथको * परश होत तब तिनहि हाथको ॥
यतिपति यादव गिरिपर सुंदर * बनवायो उतंक इक मंदिर ॥
कछु दिन कीन्ह्यो तहां निवासा * शिष्य सहित मत करन प्रकाशा॥
रंगनगर ते वैष्णव आयो * रामानुज तेहि निकट बोलायो ॥
पूरण पूर्ण कूरेश हवाला * पूंछन लागे मनहिं बिहाला ॥

दोहा—पूरण अरु कूरेशको, भयो जौन विरतंत ॥
अरु चोलहु नृपको चरित, कहे आदिते अंत ॥ ३३ ॥

पूर्णाचार्य कूरेशहु दोऊ * चोल नगर गे संग न कोऊ ॥
चोलराज निज सभा बोलायो * दोहुनको अस वचन सुनायो ॥

तीनि देव महँ को बड होई * यह तुम कहहु शास्त्र गति जोई ॥
तब कूरेश कह्यो सुनु राजा * मोहिं बड जानि परत यदुराजा ॥
वामन वपु प्रभु पांव पसारा * चरण धोय लीन्ह्यो करतारा ॥
सो जल शम्भु शीश महँ धारत * गङ्गा नाम सकल जग तारत ॥
तब राजा कह कोपित बानी * तुम बुध अहो युक्ति बहु जानी ॥
यह लिखि देहु जो मानहु सेवा * शिवते पर दूसर नहिं देवा ॥
तब हँसि कह्यो वचन कूरेशा * कौन हेतु हम लिखैं नरेशा ॥
तीनि देव महँ भेद न होई * अंतर्यामी हैं हरि सोई ॥
शास्त्र पुराण संहिता नाना * वर्णत यहि विधि वेद विधाना ॥
निज निज इष्टदेव कहँ प्रानी * पूजहिं सर्वोपरि जिय जानी ॥

दोहा–हम नारायणभक्त हैं, तुम शिवभक्त उदार ॥
तुम निज मति अनुसार हौ, हम निज मतिअनुसार ३४

जो अस कहौ न शिव पर कोई * द्रोण कहावत है शिव कोई ॥
ताते होत अधिक है धारा * यामें कछु नहिं देव विचारा ॥
राजा मानि वचन परिहासा * किय कुरेश पर कोप प्रकासा ॥
तुरत भटन कहँ शासन दीन्ह्यो * आंखि कढाय दुहुँनकी लीन्ह्यो ॥
दोनहुँ दीन्ह्यो नगर निकारी * चले रंगपुर अंध दुखारी ॥
बीच मिले वैष्णव कोउ आई * तिनसों पूरण कह्यो बोलाई ॥
यक शत पंच वर्ष वय मोरी * नहिं शरीर राखन मति थोरी ॥
ताते यहि थल वपुष विहाई * मिलिहौं रंगनाथ कहँ जाई ॥
अस कहि गुरुपद पंकज ध्याई * याते तनु मिले कृष्ण कहँ जाई ॥
प्रेत कर्म तिनके सुत कीन्ह्यो * लै कूरेश रंग चलि दीन्ह्यो ॥
सुनि परगति गुरुकी यतिराई * तासु नाम बहु साधु सराई ॥
रामायण अरु वेदहु केरो * पारायण कीन्ह्यो बहुतेरो ॥

दोहा–यतिपति तब कूरेशको, नयन हीन जियजानि ॥
महादुखित मनमें भये, मम सहाय भय हानि३५॥

पुनि कूरेश हवालहि पूंछे * मानहु भये सकल सुख छूंछे ॥

तब वृत्तान्त संत सब गाये * जिमि कूरेश रंगपुर आये ॥
नाथ शिष्य अति दुखित तुम्हारा * आयो जबै रंगपुर द्वारा ॥
द्वारपाल चाकर नृप केरे * जान दियो नहिं प्रभुके नेरे ॥
हाकिम हुकुम अहै यहि भांती * रामानुज जन राति विराती ॥
मंदिर भीतर जान न पावैं * पकरि नगर बाहर करि आवैं ॥
तिन महँ कोउ कह साधु विचारा * काहे कीजत वारण वारा ॥
तब कूरेश कह्यो मतिरासी * हम यतिनाथ अनन्य उपासी ॥
गुरु पद पंकज सेव विहाई * नहिं चाहत हरिकी सेवकाई ॥
जो मम गुरुको कौन न होई * हरिको कौन होय नहिं सोई ॥
अस कहि लौटि लियो सुत नारी * वस्यो जाय वृषभाचल भारी ॥
सुंदर बाहु तहां भगवाना * सेवन लाग्यो सहित विधाना ॥

दोहा—रच्यो चारि स्तोत्र तहँ, मान्यो सुख वसु याम ॥
नेत्र हीनकी तनु विथा, गन्यो न कछु मतिधाम ॥ ३६ ॥

दशा देखि यह संत दुखारी * गोष्ठी पूरण निकट सिधारी ॥
कह्यो वचन शिर धुनि धरणीमें * नाथ दुखी हम नृप करणीमें ॥
यतिपति यादवगिरि महँ वसहीं * पूरणार्य्य हरिके सँग लसहीं ॥
वृषभाचल कूरेश निवासा * भये सकल हम संत निरासा ॥
तब गोष्ठीपूरण कह बानी * मेरे वचन लेहु सति जानी ॥
सुरपति सुवन जयंत अभागा * सीताचरण चोंच हति भागा ॥
ताहि दंड दीन्ह्यो रघुराई * कस नहिं दंड चोल नृप पाई ॥
अस कहि जाधुन पद चित लाई * गोष्ठीपूरण वपुष विहाई ॥
भेदि भानुमंडल तेहिं काला * गयो जहां यदुनाथ कृपाला ॥
यह वृत्तांत सुनत यतिराई * कह्यो वैष्णवनसों तुम जाई ॥
कूरेशहि बहु विधि समुझायो * मोरि कुशल सब भांति सुनायो ॥
वैष्णव सुनत चले अतुराई * गये रंगपुर वेष छिपाई ॥

दोहा—सुनि कूरेश हवाल तहँ, वृषभाचलको जाय ॥
कूरेशहि यतिराजकी, दीन्ह्यो कुशल सुनाय ॥ ३७ ॥

नेत्रहीन तुम को सुन्यो, अरु गुरुको परधाम ॥
रामानुज अतिशय दुखित, विकल रहत वसु याम ३८
तब कूरेश कह्यो वचन, सुखी जो गुजरत माँहिं ॥
तौ मोहिं नैन वियोगको, नेसुक दुख है नाहिं ॥ ३९ ॥

अस कहि किये गुरू सत्कारा * लह्यो कूरेश अनंद अपारा ॥
इत कूरेश परमसुख पायो * उत यादवगिरि संत सिधायो ॥
तिनसों पुनि पूछ्यो यतिनाथा * कहहु चोल भूपतिकी गाथा ॥
तब यतिपतिसों साधु बखाना * जेहिं विधि किय यमपुरहि पयाना
चोल भूप पापिनको राजा * भई पातकी तासु समाजा ॥
जब कूरेश आंखि निकरायो * पूर्णारज परधाम सिधायो ॥
विष्णुद्रोह महँ अति अनुराग्यो * हरिमंदिर फोरवावन लाग्यो ॥
चोल देश हरिमंदिर जेते * दियो ढहाय रहे महि तेते ॥
रह्यो बचा इक रंग विमाना * ताहि ढहावन कियो पयाना ॥
मारग महँ इक दिन अधराता * फूलि उठे आपहि सब गाता ॥
ताके परे कंठ महँ कीरा * भये अनेकन घाव शरीरा ॥
कीरावंत पुकारत आरत * मर्यो भूप सुखसंत पसारत ॥

दोहा–कुशल क्षेम अब रंगपुर, यतिपति चलहु सिधारि
चौल मरण सुनि संत सब, जय हरि कहे पुकारि ॥ १४० ॥

रामानुज अति आनँद पायो * नरहरिके चरणन शिर नायो ॥
दियो वैष्णवन बहुत इनामा * जे कह भूप गमन यमधामा ॥
हरिमंदिर रामानुज जाई * प्रभुहि जोरि कर विनय सुनाई ॥
हिरणकशिपु अरु हाटक नयना * कुम्भकर्ण रावण बलअयना ॥
राक्षस दानव दैत्य नरेशा * जब जब कीन्ह्यो संत कलेशा ॥
तब तब जेहि विधि हने मुरारी * तेहि विधि चोलहि हने मुरारी ॥
यतिपति वचन सुनत भगवाना * दियो प्रसाद मोद अति माना ॥
पुनि शासन कीन्ह्यो कमलेशा * यतिपति जाहु रंगपुर देशा ॥
अब नाहिं तहां कछुक दुचिताई * बसहु तहां पूरबकी नाईं ॥

सुनि हरि हुकुम हर्ष हिय हेरी ❁ चले रंगपुर कियो न देरी ॥
कह वैष्णवन बोलि यतिदेवा ❁ नित संपत कुमारकी सेवा ॥
कीन्ह्यो तनक बीच नाहिं परई ❁ सावधान जिमि श्रुति अनुसरई ॥
दोहा–असह विरह सब संत गुनि, रुदन करन तहँ लाग ॥
निज मूरति थाप्यो तहां, संत हेतु बडभाग ॥ ४१ ॥
आये रंगनगर यतिराई ❁ बारह वर्ष विदेश बिताई ॥
आगू लिये रंगपुर वासी ❁ यतिपति निरखि लहे सुखरासी ॥
विविध भांतिके बाजन बाजे ❁ विजन छत्र चामर सब साजे ॥
गयो रंगमंदिर यतिराई ❁ रंगनाथ कहँ शीश नवाई ॥
सुस्तुति लीन्ह्यो विविध प्रकारा ❁ आंखिन बही अम्बुकी धारा ॥
रंगनाथ कर पाय प्रसादा ❁ आये भवन सहित अहलादा ॥
सुनि कूरेश यतिनाथ अवाई ❁ आयो वृषभाचल ते धाई ॥
लखि कूरेश यतींद्र दुखाई ❁ मिले विलोचन ढारत वारी ॥
कह कूरेश वचन गुरुपाहीं ❁ मम अपराध और कर नाहीं ॥
यतिपति कह मोरे अपराधा ❁ जाते तुम पाई अस बाधा ॥
कहत परस्पर दोउ यहि भांती ❁ आय भवन निवसे तेहि राती ॥
यतिपति देखन देश निवासी ❁ आवत भये मानि सुखरासी ॥
दोहा–करि प्रणाम बोले वचन, चित्रकूट नृप चोल ॥
हरिमंदिर नाश्यो अमित, दै अधर्मकर ढोल ॥ ४२ ॥
तहँ गोविंदराज भगवाना ❁ फेंकन चाह्यो उदधि महाना ॥
तहँ तिल्ली तिय विरति उपाई ❁ लै गोविंद मूरत पहिराई ॥
व्यंकट शैल माहिं तेहि थाप्यो ❁ भूपति भीति देश सब कांप्यो ॥
सुनि यतिपति व्यंकटगिरि आये ❁ श्रीगोविंद विधि युत बैठाये ॥
व्यंकटनाथ दरश पुनि लीन्ह्यो ❁ गवन सत्य व्रत क्षेत्रहि कीन्ह्यो ॥
यतिपति बहुरि रंगपुर आये ❁ सब संतन अति आनँद छाये ॥
तहँ कूरेशहि निकट बुलाये ❁ अंध विलोकि महादुख पाये ॥
कूरेशहि बोले यतिराई ❁ हरि सुस्तुति विरचो मनलाई ॥

मन वांछित देहैं भगवाना ❀ दास दूरनदुख दयानिधाना ॥
दे हैं दृग संशय कछु नाहीं ❀ यह भरोस हमरे मनमाहीं ॥
तब कूरेश कह्यो मुसकाई ❀ अब दृग होब मोहिं दुखदाई ॥
दिव्य नैन मोहिं दिय श्रीधामा ❀ लखौं नाम लीला वपुधामा ॥
दोहा-है न नयनकी चाह चित, देखन विषय विलाश ॥
दिव्य दृगन देखत रहौं, प्रभुको चरित प्रकाश ४३ ॥
गुरु कह करु स्तोत्र विशेषी ❀ मम शासन अवश्य उर लेखी ॥
तब स्तोत्र रच्यो कूरेशा ❀ भयो प्रसन्न सुनत कमलेशा ॥
दिये कूरेश दिव्य विज्ञाना ❀ लख्यो त्रिलोक वस्तुविधिनाना ॥
प्रभु कहँ तब स्तोत्र सुनाई ❀ पुनि कूरेश गुरू ढिग आई ॥
विनय कियो गुरुसों शिर नाई ❀ दिव्य नयन दीन्ह्यो यदुराई ॥
लै कूरेश शिष्य समुदाई ❀ कांचीपुरी गये यतिराई ॥
वरदराजकी सुस्तुति कीन्ह्यो ❀ मांगहु वर अस हरि कह दीन्ह्यो ॥
तब कूरेश कहत अस भयऊ ❀ जो मोहि चोल निकट लै गयऊ ॥
तोहिं भागवत लग्यो अपराधा ❀ ताहि दया करि करहु अबाधा ॥
एवमस्तु हरि कह्यो सराही ❀ परउपकारी तोहिं सम नाहीं ॥
सो वृत्तांत सुनत यतिराई ❀ कूरेशहि बोले अनखाई ॥
मांगन नेत्र तुमहि हम कहेऊ ❀ तुम औरहि हरिसों वर लहेऊ ॥
दोहा-वरदराज तब स्वप्नमें, कह्यो यतीशहि आय ॥
हैहैं दृग कूरेशके, तब दुख जाई नशाय ॥ ४४ ॥
तब कूरेशहि होत प्रभाता ❀ प्रगटे नैन सरिस जलजाता ॥
रामानुज अति आनँद पायो ❀ बहुरि रंग पुरको पुनि आयो ॥
सुनि शतघट अरप्यो नवनीता ❀ धन्नीपुर पुनि गये पुनीता ॥
तहँ बट पत्र शयन भगवाना ❀ दरशन कीन्ह्यो सहित विधाना ॥
गोदांबाके दर्शन लीन्ह्यो ❀ कुरका नगर गवनपुनि कीन्ह्यो ॥
बीच मिली इक विप्रकुमारी ❀ यतिपति तासों गिरा उचारी ॥
कुरकापुरी अहै कति दूरी ❀ कही कुमारि त्यागि भय भूरी ॥

सहसगीत शठ रिपु कृत जोई ❀ भूली नाथ तुमहिं का सोई॥
अस कहि सहस गीतपढि दयऊ ❀ रामानुज सुनि विस्मित भयऊ॥
रामानुज तेहिं गये अगारा ❀ सो कीन्ह्यो बहुविधि सत्कारा॥
यतिपति तेहिं उपदेइयो ज्ञाना ❀ लह्यो कुटुम्बसहित निर्वाना॥
पुनि कुरकानगरी महँ जाई ❀ आदिनाथ हरिके शिर नाई॥

दोहा—पुनि अमिली तरु तर गये,शठरिपु पद शिरनाय॥
इन सम नाहिं कोउ दूसरो, असकहि सबहिं सुनाय॥४५॥

शैलपूर्ण सुत निकट बोलाई ❀ श्रीशठकोप रचित मन भाई॥
सहस गीत तेहिं दियो पठाई ❀ अपनो पुत्र गन्यो यतिराई॥
रामानुज पुनि रंग निवासा ❀ आवत भे करि सुयशप्रकासा॥
पुनि हरिविमुखन विविधप्रकारा ❀ हरि शरणागत कियो अपारा॥
बसे रंगपुर शिष्य समेतू ❀ जीवन ज्ञान भक्ति रति हेतू॥
आचारज सब यतिपति सेवा ❀ करहिं याम वसु गुनि निज देवा॥
आठ और शत शिष्य प्रधाना ❀ गने को और शिष्य सहसाना॥
सकल शिष्यमिलिहरिगुरुदासा ❀ कीन्ह्यो इक स्तोत्र प्रकासा॥
दिव्यजाति कीन्ह्यो नाहिं भाषा ❀ लिख्यो ग्रंथ जस तस इत राखा॥

श्लोक—इति ध्रुवं विनिश्चित्य यतिराजपदाम्बुजम्॥
अष्टोत्तरशतैर्दिव्यैर्नामभिर्भक्तितत्परः॥ १॥
नित्यमाराधयंस्तस्थौ इष्टदेवमिवादरात्॥
रामानुजः पुष्कराक्षो यतीन्द्रः करुणाकरः॥ २॥
कांतिमत्यात्मजः श्रीमाँल्लीलामानुषविग्रहः॥
सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः सर्वज्ञः सज्जनप्रियः॥ ३॥
नारायणकृपापात्रः श्रीभूतपुरनायकः॥
अनघो भक्तमंदारः केशवानंदवर्द्धनः॥ ४॥
कांचीपूर्णप्रियसखः प्रणतार्तिविनाशनः॥
पुण्यसंकीर्तनः पुण्यो ब्रह्मराक्षसमोचकः॥ ५॥
यादवापादितापार्थवृक्षच्छेदकुठारकः॥

अमोघो लक्ष्मणमुनिः शारदाशोकनाशनः ॥ ६ ॥
निरंतरजनाज्ञाननिर्मोचनविचक्षणः ॥
वेदांतद्वयसारज्ञो वरदाम्बुप्रदायकः ॥ ७ ॥
पराभिप्रायतत्त्वज्ञो यामुनांगुलिमोचकः ॥
देवराजकृपालब्धषट्वाक्यार्थमहोदधिः ॥ ८ ॥
पूर्णार्यलब्धसन्मंत्रः शौरिपादाब्जषट्पदः ॥
त्रिदंडधारी ब्रह्मज्ञो ब्रह्मध्यानपरायणः ॥ ९ ॥
रंगेशकैंकर्यरतो विभूतिद्वयनायकः ॥
गोष्ठीपूर्णकृपालब्धमंत्रराजप्रकाशकः ॥ १० ॥
वररंगानुकंपी च द्राविडाम्नायसागरः ॥
मालाधरार्यसुज्ञातद्राविडाम्नायतत्त्वधीः ॥ ११ ॥
चतुःसप्ततिशिष्याढ्यः पंचाचार्यपदाश्रयः ॥
प्रपीतविषतीर्थांभः प्रकटीकृतवैभवः ॥ १२ ॥
प्रणतार्तिहराचार्यो दत्तभिक्षैकभोजनः ॥
पवित्रीकृतकूरेशभागिनेयत्रिदंडकः ॥ १३ ॥
कूरेशदाशरथ्यादिचरमार्थप्रदायकः ॥
रंगेशवेंकटेशादिप्रकाशीकृतवैभवः ॥ १४ ॥
देवराजार्चनरतो मूकमुक्तिप्रदायकः ॥
यज्ञमूर्तिप्रतिष्ठाता मन्नाथो धरणीधरः ॥ १५ ॥
वरदाचार्यसद्भक्तो यज्ञेशार्तिविनाशकः ॥
अनंताभीष्टफलदो विट्ठलेशप्रपूजितः ॥ १६ ॥
श्रीशैलपूर्णकरुणालब्धरामायणार्थकः ॥
प्रपत्तिधर्मैकरतो गोविंदार्यप्रियानुजः ॥ १७ ॥
व्याससूत्रार्थतत्त्वज्ञो बोधायनमतानुगः ॥
श्रीभाष्यादिमहाग्रंथकारकः कलिनाशनः ॥ १८ ॥
अद्वैतमतविच्छेत्ता विशिष्टाद्वैतपालकः ॥
कुरंगनगरीपूर्णमंत्ररत्नोपदेशकः ॥ १९ ॥
विनाशिताखिलमतः शेषीकृतरमापतिः ॥

पुत्रीकृतशठारातिः शठजिद्दणमोचकः ॥ २० ॥
भाषादत्तहयग्रीवो भाष्यकारो महायशाः ॥
पवित्रीकृतभूभागः कूर्मनाथप्रकाशकः ॥ २१ ॥
श्रीवेंकटाचलाधीशशंखचक्रप्रदायकः ॥
श्रीवेंकटेशश्वशुरः श्रीरमासखदेशिकः ॥ २२ ॥
कृपामात्रप्रसन्नार्यो गोपिकामोक्षदायकः ॥
समीचीनार्यसच्छिष्यः सत्कृतो वैष्णवप्रियः ॥ २३ ॥
कृमिकंठनृपध्वंसी सर्वमंत्रमहोदधिः ॥
अंगीकृतांध्रपूर्णार्यः शालिग्रामप्रतिष्ठितः ॥ २४ ॥
श्रीभक्तग्रामपूर्णार्यो विष्णुवर्द्धनरक्षकः ॥
बौद्धध्वांतसहस्रांशुः शेषरूपप्रदर्शकः ॥ २५ ॥
नगरीकृतवेदाद्रिर्दिल्लीश्वरसमार्चितः ॥
नारायणप्रतिष्ठाता संपत्पुत्रविमोचकः ॥ २६ ॥
संपत्कुमारजनकः साधुलोकशिखामणिः ॥
सुप्रतिष्ठितगोविंदराजः पूर्णमनोरथः ॥ २७ ॥
गोदाग्रजो दिग्विजयी गोदाभीष्टप्रपूरकः ॥
सर्वसंशयविछेत्ता विष्णुलोकप्रदायकः ॥ २८ ॥
अव्याहतमहद्वर्त्मा यतिराजो जगद्गुरुः ॥
एवंरामानुजार्यस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥
यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वान्कामान्समश्नुते ॥ २९ ॥
यदांध्रपूर्णेन महात्मनेदं स्तोत्रं कृतं सर्वजनावनाय ॥
तज्जीवभूतं भुवि वैष्णवानां बभूव रामानुजमानसानाम् ॥ ३० ॥

अष्टोत्तर शत यतिपति नामा * पाठ करत पूरत सब कामा ॥
यतिपति शिष्य सकल मतिधामा * पै वर आंध्रपूर्ण जेहिं नामा ॥
एक समय सब कियो पयाना * यतिनायक ताको पछि आना ॥
दोहा—नारायण मंत्रहि जपत, निरख्यो निज गुरुकाहिं ॥
तुव प्रभु ते मम प्रभु न लघु, अस बोल्यो गुरुपाहिं ॥ ४६ ॥

इष्टदेव यदुनाथ तुम्हारे * इष्टदेव यतिनाथ हमारे ॥
फेरि रंगमंदिर इक काला * गुरुकहँ लखि हरि नैन विशाला ॥
आंध्रपूर्ण कह मम गुरु नैना * तिनकी छवि कछु कहतबनैना ॥
आंध्रपूर्ण कर लखि गुरुनेमा * यतिपति कियतापर अति प्रेमा ॥
निज उच्छिष्ट दियो तेहि काहीं * लियो खाय कर धोयो नाहीं ॥
गुरुते अधिक देव नहिं जान्यो * इष्टदेव अपनो गुरु मान्यो ॥
पय औटावत महँ इक काला * कढे रंगपति विभव विशाला ॥
रामानुज कह कीजै दरशन * आंध्रपूर्ण कह नाहिं अवसर क्षन ॥
जो मैं रंगदरश कहँ जाऊं * गुरुहित गोरस तुरत नशाऊं ॥
इक दिन ज्ञाति बंधुके आये * आंध्रपूर्ण नहिं मिलन सिधाये ॥
जब वे जात भये घर माहीं * आंध्रपूर्ण आये घर काहीं ॥
जानि अवैष्णव पात्रन फोरचो * ज्ञातिनते सनेह नहिं जोरचो ॥

दोहा-अंतकाल आयो जबै, आंध्रपूर्ण मतिवान ॥
बोलि वैष्णवको तुरत, तिनसों कियो बखान ॥ ४७ ॥
मोर शरण यतिपति चरण, ऐसो कह्यो पुकारि ॥
जे यतिपति अशरणशरण, बोले संत विचारि ॥ ४८ ॥
रामानुज पदकमलमें, करि मन मुदित मिलिंद ॥
आंध्रपूर्ण तनु तजि भयो, श्रीवैकुंठ वासिंद ॥ १४९ ॥

दोहा-रामानुजको कोउ रह्यो, शिष्य सु नाम अनंत ॥
बसत रह्यो व्यंकट सहित, हरिके कर्ज करंत ॥ १ ॥

व्यंकटगिरिके उपर मनोहर * रामानुज इक रह्यो सरोवर ॥
ताहि अनंत खनावन लागे * व्यंकट चारु चरण अनुरागे ॥
खनि मृत्तिकासहित निज नारी * शिर धरि दोहिं बाहिरे डारी ॥
दंपति कराहिं परिश्रम भारी * औरहु आये परउपकारी ॥
तेऊ धर्म मानि खनि माटी * शिर धरि डारहिं बाहर पाटी ॥
रही सगर्भ अनन्ताहि दारा * ताहि परचो श्रम ढोवत भारा ॥

गुरु तडाग हरिकी सेवकाई * मानि तियातनु सुधि विसराई ॥
यह लखि करुणानिधि भगवाना * अपनो बालरूप निरमाना ॥
तुरत अनंत नारि ढिग आई * माटी ढोवन लगे अतुराई ॥
खनि अनंत तिय हरि कहँ देही * फेंकि अनत सो पुनि शिर लेही ॥
अतिशय शीघ्र फेंकि हरि माटी * यहि विधि प्रीति रीति उदघाटी ॥
अति आतुरता तियकी देखी * तब अनंत पूछयो भ्रम लेखी ॥

दोहा–तुम माटी उत फेंकिकै, आवहु इत अतुराय ॥
ताको कारण कौन है, दीजै वेगि बताय ॥ २ ॥

तब नारी पतिसों कह बानी * इक बालक आवै छबिखानी ॥
सो माटी मम करसों लेकै * आवै फेंकि त्वरा अति कैकै ॥
तब अनंत मन माहिं विचारा * है सांचो वसुदेव कुमारा ॥
दीन दयानिधि अस को दूजो * जाको पदपंकज विधि पूजो ॥
अस विचारि मन माहिं अनंता * धायो धरन तुरत श्रीकंता ॥
विप्रहि धावन आवत देखी * भागे हरि प्रगटब निज लेखी ॥
बोले तब अनंत पछि आने * बचिहो नाहिं यदुनाथ पराने ॥
विघ्न करहु मेरी सेवकाई * नारि न जानति तोरि ढिठाई ॥
प्रविशे भवन भागि भगवाना * खनन लग्यो पुनि विप्रसुजाना ॥
एक समय तुलसी वन माहीं * लेन गये तुलसीदल काहीं ॥
तहँ अनंत कहँ सर्प सतायो * मनमहँ विप्र भीति नहिं ल्यायो ॥
तेहि विधि लाग्यो करन सेवकाई * तब कोउ संत कह्यो तेहिं आई ॥

दोहा–घोर भुजंग तुम्हैं डस्यो, ताको करहु उपाय ॥
मंत्र यंत्र अरु तंत्रहू, औषधि अवशि मँगाय ॥ ३ ॥

तब अनंत बोले मुसकाई * जो विष प्रबल होयगो भाई ॥
तौ तनु तजि वैकुंठ सिधारब * तहँ हरि पद सेवन विस्तारब ॥
हरिके कर्ज प्रबल यदि होई * तौ डारी अहिको विष खोई ॥
अस कहि लगे करन सेवकाई * गयो भुजंगम गरल पराई ॥
एक समय अनंत मतिवाना * अवधपुरीको कियो पयाना ॥

चिउरा दही बांधि पट माहीं * उतरे कहुँ पथ भोजन काहीं ॥
तामें चढी पिपीलक आई * संत कह्यो फेंकहु कहुँ जाई ॥
तब अनंत बोले मुसकाई * वारण करत मोहिं रघुराई ॥
अस कहि व्यंकटगिरिफिरि आये * तहँते रामचरण शिर नाये ॥
एक समय अनंत मतिवाना * रहे करत माला निरमाना ॥
तहँ कोउ हरिको पूजक आयो * कह्योतिनाहिं हरि तुमहिं बोलायो
मालारचन त्यागि नहिं गवने * रचि माला पुनि गे हरि भवने ॥

दोहा–हरि प्रत्यक्ष तिनसों कह्यो, कत मम शासन टारि
तुम नहिं आये ताहिते, दे हैं तुमहिं निकारि ॥ ४ ॥

तब अनंत बोले तेहिं ठोरा * मोहिं निकासन तुमहिं न जोरा ॥
मैं गुरु शासनको शिर धारी * तिहरो सेवन करहुँ मुरारी ॥
भक्त हेतु वैकुंठ बिहाई * तुम जग महँ विचरहु सब ठाई ॥
सदा रहो भक्तन रुख राखे * कबहुँ न निज दासन पर माखे ॥
मोपर है यतिपति कर जोरा * तिनही पै प्रभु शासन तोरा ॥
हम गुरुभक्त भक्त नहिं तुम्हरे * गुरु तजि दूसर ईश न मेरे ॥
नहिं कछु जोर पराये चाकर * गुनि हौ अघ अस काकर काकर॥
लखि अति दृढ गुरुभक्ति मुरारी * भे प्रसन्न तापर अघहारी ॥
यहि विधिके जग करन पवित्रा * अहैं अनंत अनंत चरित्रा ॥
अब कूरेश विकुंठ पयाना * श्रोता सकल सुनहु दै काना ॥
एक समय कूरेश विज्ञानी * गयो रंगमंदिर छवि खानी ॥
तासों कह्यो प्रत्यक्ष मुरारी * मांगहु जो मन लियो विचारी ॥

दोहा–तब अति मंजुल मधुर पद, रचि अनेक सुश्लोक ॥
रंगनाथसों किय विनय, ह्वैके विश्व विशोक ॥ ५ ॥

जो प्रसन्न मोपर भगवाना * तौ करि कृपा देहु निरवाना ॥
और आश नहिं कछु मन मोरे * यहि लगिलागि रह्यो पद तोरे ॥
रंगनाथ तब वचन उचारा * अहै परमपद तुव अधिकारा ॥
जाहु विकुंठ अवाशि शठद्रोही * यतिपति शपथ न वारब तोही ॥

शिष्य प्रशिष्य मुक्त सब तेरे * तोहिं कौन विधि कौन निवेरे ॥
तब कूरेश मानि मुद भारी * नाचत गयो निवेश सिधारी ॥
रामानुज सुनि हरिको शासन * वसन उडाय लगे तहँ नाचन ॥
बोलि वैष्णवन कियो बखाना * दिय वरदान आजु भगवाना ॥
शिष्य प्रशिष्य हमारे ह्वैहैं * ते सब अवशि विकुंठहि जैहैं ॥
गे कूरेश निकट यतिराई * कियो प्रणति कूरेशहु आई ॥
दियो मंत्र शरणागत काना * विरह विचारि बहुरि बिलखाना ॥
पुनि बहु वचन भाषि यतिनाथा * धरि कूरेश पीठि पद हाथा ॥

दोहा-रामानुज निज भवनको, गवन कियो दुखमानि॥
तब कूरेश कह्यो वचन, तनय तिया निज आनि ॥६॥
रंगनाथ पूजन कह्यो, गुरु सेवों सब भांति ॥
इष्टदेव मानत रह्यो, श्रीवैष्णवकी जाति ॥ ७ ॥
अस कहि पग तिय अंक धरि, शिर सुत अंक निधाय
गुरुपद चित कूरेश दै, बस्यो परमपद जाय ॥ ८ ॥

जेहिं विधि रामानुज मुख वरणी * करी तथा विधि सुत सब करणी ॥
भट्टारज कूरेश कुमारा * तेहि रामानुज तुरत हँकारा ॥
गये रंग मंदिरहि लेवाई * तहँ प्रत्यक्ष बोले यदुराई ॥
पिता सोच मत करहु पियारे * मैंहीं हौं अब पिता तिहारे ॥
रंगवचन सुनि यतिपति वंदे * गये भवन ले सुतन अनंदे ॥
पुनि कूरेश पुत्र दोउ भाई * गोविंदहि सौंप्यो यतिराई ॥
पुनि सुमिरत मन अंतर्यामी * बसे रंगपुर यतिगण स्वामी ॥
रंगनगर नायक इक काला * बोले वचन विचारि विशाला ॥
जे रामानुज मत महँ ऐहैं * ते सायुज्य मुक्ति नर पैहैं ॥
व्यंकट नायक यतिपति बोली * कह्यो गिरा यह जगत अतोली ॥
उभय विभूति नाथ तुम भयऊ * जीवन तारि परमपद दयऊ ॥
फैली बात सकलसंसारा * सो सुनि एक गोपकी दारा ॥
बेंचन दही रंगपुर आई * तब कोउ यतिपतिशिष्यसिधाई ॥

दोहा-लै दधि रामानुज भवन, आयो मोल न लीन ॥
रही बैठि सो द्वार मैं, धन हित मन नहिं कीन ॥ ९ ॥
रंग दरश हित जब यतिराई * कढे द्वार शिष्यन समुदाई ॥
कह्यो पुकारि अहीर कुमारी * दही मोल दीजे सुखकारी ॥
यतिपति कह्यो मोल का लैहै * जो कछु उचित वित्त सो पैहै ॥
गोपसुता कह धन समुदाई * मैं नहिं लेहौं हे यतिराई ॥
दही मोल में मुक्ति लेउँगी * नातो यतिपति जीव देउँगी ॥
तब यतिनाथ कहा मुसकाई * है नारायण परगतिदाई ॥
हमरी दीन नहीं हैजाती * तैं भजु माधवको दिन राती ॥
तब अहीर कन्या कह बानी * देहु पत्रिका मोहिं गति दानी ॥
मैं पत्रिका देहुँ हरिकाहीं * देहै गति कछु संशय नाहीं ॥
तब यतिपति निज कर लिखिपाती * दीन्ही गोपसुतै मुदमाती ॥
लै पत्रिका अहीर कुमारी * व्यंकटगिरिको सपदि सिधारी ॥
दीन्ह्यो व्यंकटनाथहि पांती * प्रभुपत्रिका बांचि गति दाती ॥
दोहा-गोपसुता कहँ बोलि द्रुत, सो पाती शिर धारि ॥
तुरत परमपद दीन तेहिं, निज जन वचन विचारि ॥ १० ॥
यज्ञमूर्ति इक पंडित भारी * गयो रंगपुर विजय विचारी ॥
यतिपति यज्ञ मूर्ति अविषादा * दिवस अठारहि किय संवादा ॥
यज्ञमूर्ति शास्त्रार्थ न हारयो * तब यदुपति यतिनाथ सँभारयो ॥
यज्ञमूर्तिको स्वप्नहि आई * हारि कह जिते न तोरि बडाई ॥
रामानुज शरणागत होहू * तो छूटिहै तोर मद मोहू ॥
यज्ञमूर्ति उठि तुरत प्रभाता * पकरयो यतिपति पदजलजाता ॥
भयो समाप्त वाद बिहाई * दीन्ह्यो परगति तेहिं यतिराई ॥
ऐसे चरित अनेकन देखी * तब वैष्णव अचरज मन लेखी ॥
नगर नगर महँ जोरि समाजा * भाषत सदा चरित यतिराजा ॥
एक समय तहँ दीनदयाला * ठाकुर सुंदर बाहु विशाला ॥
कह्यो स्वप्न महँ बोलि पुजारी * लीजै यतिपति शिष्य हँकारी ॥

पूजक सब वैष्णवन बोलाये * रामानुज शिष्यहि भरि आये ॥
दोहा–तब हरिसों पूजक कहे, और न आये कोइ ॥
यतिपति गुरुके शिष्य जे, रहते अति मद मोह ११ ॥
तब पूजनकन कही हरि वानी * लेहु सत्य ऐसो तुम जानी ॥
जस दशरथ हैं पिता हमारे * तस यतिपतिके गुरू अपारे ॥
स्वप्ने महँ सुनि नाथ रजायो * विस्मित लै पूजक समुदायो ॥
कोउ वैष्णव तहँ मंदिर आयो * सुंदर बाहु प्रभुहिं शिर नायो ॥
कह अपराध सहस मैं भाजन * बोले ताहि सिंधुजा साजन ॥
रामानुज सम गुरू तिहारे * दया अनल अपराधन जारे ॥
तबते श्रीवैष्णवमत केरी * यह मर्य्यादा चली घनेरी ॥
जो कोउ रामानुज मत आवै * सो पापिहु परगति कहँ पावै ॥
श्रीकुरंग नगरी भगवाने * यतिपति कियो शिष्य सविधाने ॥
ह्वैगे विश्व विदित यह बाता * यक रामानुज परगति दाता ॥
औरहु पूर्वाचार्यन केरी * कहति संत इत कथा घनेरी ॥
औरहु रामानुज आख्याना * श्रोता सकल सुनहु दै काना ॥
दोहा–एक समय यतिवृंद प्रभु, गुरुदर्शनके हेत ॥
पूर्णाचारके भवन, जात भये मति सेत ॥ १२ ॥
पूर्णाचारज यतिपति देखी * कियो प्रणाम गुरू निज लेखी ॥
पूर्णाचार्य सुता तब गायो * यह अनुचित मेरे दृग आयो ॥
तब पूर्णार्य कह्यो सुनु हेतू * कोउ न अधिक सम है यतिकेतू ॥
पुनि पूर्णार्य सबन सुनाई * बोले वचन महा मुद छाई ॥
सबके गुरु रामानुज अहहीं * शठकोपादिक अस सब कहहीं ॥
ताते इनहिं कियो परणामा * इनमें सब श्रुति अर्थनिग्रामा ॥
को रामानुज अस जगमाहीं * मम नैनन दीसत कोउ नाहीं ॥
मंत्र रत्न गुरु इनहिं सिखायो * कह्यो न कोहुसों अस समुझायो ॥
रामानुज चढिकै दरवाजा * ऊंचे स्वर टेरयो मनु राजा ॥
गुरु कह अति अनर्थ तैं कीन्ह्यो * सबको मंत्र सुनाय जो दीन्ह्यो ॥

रामानुज तब वचन उचारा * सुनहु गुरू मैं जौन विचारा ॥
मंत्रराजको अस परमाना * लहै परमपद परे जो काना ॥
दोहा-मोहिं नरक वरु होहि हठि, पै जो परिजनकान ॥
ते जीवनको परमपद, ह्वैहै अवशि निदान ॥ १३ ॥
भये अकेल नरक जो मोरे * लहै परमपद जीव करोरे ॥
तौ नहिं नाथ हानि कछु मेरी * ताते कह्यो मंत्र मैं टेरी ॥
ऐसी सुनि रामानुज बाता * गह्यो गुरू इन पद जलजाता ॥
इनके पांचहु गुरू नामके * एई सबके गुरु अकामके ॥
सुनि पूर्णारजकी अस बानी * लिगरे शिष्य सत्य करि जानी ॥
ऐसे यतिपति चरित अनेका * कैसे कहूं जीह मुख एका ॥
औरहु सुनहु चरित सब श्रोता * पूर पियूष पयोनिधि सोता ॥
भयो कोउ द्विज कुल इक मूका * जो दृग संज्ञाते नहिं चूका ॥
सो विय वर्षसो अंतर्द्धाना * कांची वासिन नाहिं देखाना ॥
बिते वर्ष विय प्रगट भयो सो * आपन लाग्यो वचन नयो सो ॥
पुरवासी अति अचरज माने * ताहि घेरि अस वचन बखाने ॥
मिटी मूकता केहि विधि तोरी * जबलों रहे बसत कोहिं ठोरी ॥
दोहा-तब लाग्यो वर्णन करन, मूक सो पूरुष केर ॥
श्वेतद्वीपको मैं गयो, तहँ हरि पार्षद ढेर ॥ १४ ॥
रामानुज सब वर्णन करहीं * आपुसमहँ सब मुद उर भरहीं ॥
विष्वक्सेन मुख्य हरिदासू * जाय विश्व महँ परम प्रकासू ॥
रामानुज अस नाम धराई * उद्धारत जीवन समुदाई ॥
अस कहि सो जन तहां विलान्यो * कांचीजन अचरज अतिमान्यो ॥
औरहु रामानुज कछु गाथा * श्रोता सुनहु नाइ तेहि माथा ॥
एक ब्रह्मराक्षस वन माहीं * लागत रह्यो बटोहिन काहीं ॥
निकरे रामानुज तेहि राहू * लग्यो आय सो वैष्णव काहू ॥
जन रामानुज ढिग ले आये * कह यतिपति केहिं हेतु सताये ॥
कह्यो ब्रह्मराक्षस गति दीजै * शरणागत गुनि उधरन कीजै ॥

तेहि अष्टाक्षर नाथ सुनाई * दियो तुरत वैकुंठ पठाई ॥
यह यादव प्रकाश सुनि नाथा * नायो यतिपतिके पद माथा ॥
नाम बालस्वामी इक संता * नगर नगर सो कहत फिरंता ॥

दोहा—रामानुजके शरण विन, मोक्ष उपाय न आन ॥
सो सुनि जन यतिपति चरण, गहे लहे निर्वान ॥ १५ ॥

देवराज रामानुज चेला * नगर नगर कीन्ह्यो सो हेला ॥
अगणित जनन सुमंत्र सुनाई * दियो परमपद तुरत पठाई ॥
कोउ कूरेश शिष्य अज्ञानी * वैष्णव निंदा विविध बखानी ॥
सो सुनिकै कूरेश सिधाई * मांग्यो गुरु दक्षिणा छिपाई ॥
सो वाणी गुरुदक्षिण दीन्ह्यो * है पुनि मूक वास घर कीन्ह्यो ॥
एक समय देख्यो कोउ दीना * गुनि उपकार वचन कहि दीना ॥
पुनि मनमहँ कीन्ह्यो पछिताऊ * मैं प्रण कियो न बोलहुँ काऊ ॥
किय अनशनव्रत मानि गलानी * आय कुरेश कह्यो तेहि वानी ॥
तजहु वानि जो परअपवादा * करहु सदा गुरुगुणगणवादा ॥
सो सुनि निज गुरु सुखके वैना * तजि अनशन व्रत पायो चैना ॥
एक समय कावेरी तीरा * भई सकल साधुनकी भीरा ॥
तहँ कूरेश कह्यो सब पाहीं * गुरुते पर नारायण नाहीं ॥

दोहा—गुरु पदपंकज सेव विन, मुक्ति लहै नहिं कोउ ॥
योग ज्ञान वैराग्य तप, साधन कोटि करोउ ॥ १६ ॥

एक समय कोउ नास्तिक आयो * सभा मध्य अस प्रणहि सुनायो ॥
शास्त्रार्थ महँ जो जय पावै * तेहि जो हारै कंध चढावै ॥
कियो दाशरथि तेहि सँग वादा * पायो विजय शास्त्र मर्यादा ॥
दाशरथिहि जो कंध चढायो * संत अंगपराशि ज्ञानउरआयो ॥
तेहि प्रणाम करि मांग्यो ज्ञाना * दिय उपदेशसो पद निर्वाना ॥
कोउ इक संत शास्त्र पढि आयो * शास्त्र पठनको गर्व देखायो ॥
तेहिं लोकाचारज महराज * कह्यो शास्त्रको गर्व तुर्त तज ॥
सो तजि गर्व भयो शरणागत * गर्व विनाशत सोवत जागत ॥

कोइ आचार्य कुरकापुर माहीं * गयो साधु कोइ पढिबे काहीं ॥
पढ्यो भाष्य तिनसों त्रयबारा * पुनि पूछ्यो छूटन संसारा ॥
तब आचार्य कह्यो बिन गुरुसेवा * मिलै न मोक्ष भजे बहु देवा ॥
कोइ संत नारायण पुरमें * भाष्य प्रचारयो धर्महि धुरमें ॥
दोहा-विद्यावान महान् भो, सो चेला बहु कीन ॥
कोउ शिष्य पूछत भयो, मोक्ष मार्ग परवीन ॥ १७ ॥
सो कह भाष्य पढ़े गुरु सेवै * तब संसृत तजि परगति लेवै ॥
कोउ वरद विष्णार्य नामके * भये आचार्य सुबुद्धि धामके ॥
ते बहु शिष्यन शास्त्र पढाये * भक्तिमार्ग बहु भांति बताये ॥
शिष्य सकल पूछें तिन पाहीं * केहि विधि सहज परम पद जाहीं ॥
तब कीन्हो अपार उपदेशा * ते कह यहि महँ बडो कलेशा ॥
तब गुरु कह सुनु सुलभ उपाई * कीजै रामानुज सेवकाई ॥
याते मुक्ति उपाय न आनी * गुरु सेवत का कर भयहानी ॥
शिष्य सुलभ गुनि मुक्ति उपाई * गुरुपदमें किय प्रीति दृढाई ॥
यहि विधि चोहत्तर परधाना * रामानुजके शिष्य सुजाना ॥
अपने अपने शिष्यन काहीं * यही कियो उपदेश सदाहीं ॥
यहि विधि जगत विभव परकाशी * यतिपति लसैं रंगपुर वासी ॥
जिमि बहु हरि अवतारन माहीं * दश अवतार मुख्य कहि जाहीं ॥
दोहा-दश अवतारन माहँ जिमि, त्रय अवतार प्रधान ॥
यदुपति रघुपति नरहरी, जिन जग यश सित भान ॥ १८ ॥
अधम जाति गुरु नाथ निषादा * तासों करी मित्र मर्यादा ॥
धूरि जटायु जटा निज झारे * शबरीसों अति नेह पसारे ॥
लंका तिलक विभीषण सारे * कपि सुकंठ कहँ सखा उचारे ॥
शरणागत रक्षण प्रभु कीन्ह्यो * ताते मुख्य रूप गुणि लीन्ह्यो ॥
कीन्ह्यो कृष्ण अहीर मिताई * लीन्ह्यो बहु भय तिनहिं बचाई ॥
कियो श्रीदाम सुदाम मिताई * कुबिजै दीन्ह्यो रमा बडाई ॥
सूत सुत भे पांडव केरे * गुरुद्विज तनय मृतक पुनि हेरे ॥

तजि दुर्योधन घर पकवाना * विदुर शाक खायो भगवाना ॥
कृष्ण समान दीन हितकारी * कतहूँ मोहिं नाहिं परै निहारी ॥
कियो आर्त्त रक्षण यदुराई * लही सकल वपु विशद बड़ाई ॥
श्रीप्रह्लाद भक्तके कारण * प्रगटे खम्भ फारि खलदारन ॥
तामें दश अवतार प्रधाना * नरहरिहूको वेद बखाना ॥

दोहा–तैसहि सब आचार्य मधि, श्रीशठकोप प्रधान ॥
सहज गीत हरि सुयशमय, किय अपने मुख गान ॥१९॥

जिमि आचारज मधि शठ देखी * तिमि रामानुज शिष्य विशेषी ॥
सहस्र गीत सब वेदन सारा * तासु सार श्रीभाष्यउचारा ॥
जिमि मुनिगण नारद गनिजाहीं * सुरगणमहँ गोविंद वर आहीं ॥
रामानुज तिमि भक्त शिरोमनि * करिउपदेश कियो मुनिजनधनि ॥
जो नाशै अज्ञान अँधियारे * हरि पद नेह प्रकाश पसारे ॥
सो गुरु कहवावत जग माहीं * कौडी हेतु होत गुरु नाहीं ॥
परब्रह्म गुरुकहँ सब जानौ * परगति हेतु गुरूकहँ मानौ ॥
पर विद्या गुरु गुरु पर धन है * मुक्ति गुरु हेतु पद दृढ मन है ॥
माता पिता सखा प्रिय भ्राता * गुरुते अधिक न कोउ जगजाता ॥
पूर्वाचार्य्य कहे सब वाणी * रामानुज करिहैं कल्याणी ॥
सो प्रगट्यो रामानुज आई * दिय वैकुंठ सोपान लगाई ॥
रंगनगर महँ तहँ इक काला * धनुषदास कह बुद्धि विशाला ॥

दोहा–रामानुज आचार्यवर, देहु मुक्ति हमकाहि ॥
शरणागत हम रावरे, तुमहिं छोडि कहँ जाहि ॥२०॥

रामानुज कह सुनु धनुदासा * मुक्तिलहन में संशय नासा ॥
जो हमको हरि परगति देहैं * तौ मम शिष्य सकल गति पैहैं ॥
जिमि लंकेश अनुज द्रुत धाई * परचो शरण महँ पद रघुराई ॥
शरण बिभीषण एकहि भये * राक्षस चारि संग तरिगये ॥
ऐसेहि जे संतन पद सेवें * तिनको हरि हठि परगति देवें ॥
श्रीसंप्रदा माहिं जे ऐहैं * अघी अनेक परमगति पैहैं ॥

सुनि वाणी सब संत समाजा ❋ माने सकल भये कृत काजा ॥
नहिं गति पद विराग विज्ञाना ❋ गुरु सेवन दायक निर्वाना ॥
यहि विधि वितरत मनुजन ज्ञाना ❋ पावन करत अपावन नाना ॥
साठि वर्ष यतिराज हुलासा ❋ कीन्ह्यो रंगनगर महँ वासा ॥
साठि वर्षलौं तिमि यतिराई ❋ भूतपुरीमहँ वसे सुहाई ॥
धरणी उदै अस्त पर्यंता ❋ यतिपति कीरति भई वसंता ॥

दोहा—एक समय यतिराज प्रभु, मन महँ किये विचार ।
शत अरु विंशत वरष हम, रहत भये संसार ॥ २१ ॥

अब विकुंठ कहँ करौं पयाना ❋ उचित न आयु उलंघि प्रमाना ॥
रंगनाथ कह स्वप्ने आई ❋ अबै रहो कछु दिन यतिराई ॥
पुनि २ विनय कियो यतिराजा ❋ अब न रुचत मोहिं जग कर काजा
एवमस्तु तब हरि कहि दीन्ह्यो ❋ तब यतिराज विनय अस कीन्ह्यो ॥
मम संप्रदा माहिं जे आवै ❋ ते जन पापिहु परगति पावैं ॥
एवमस्तु कह रंगअधीशा ❋ किय बहुवार प्रणाम यतीशा ॥
बोलि शिष्य गण बैठि निवेशा ❋ कियो बहत्तर विधि उपदेशा ॥
तीनि दिवस लगि यतिगण नाथा ❋ दे उपदेशहि कियो सनाथा ॥
शिष्य सकल सुनि यतिपतिवानी ❋ लीन्ह्यो निज सरवस धन मानी ॥
सो यह सर्व संत सिद्धांता ❋ सार सकल शास्त्रन वेदांता ॥
याते अधिक धर्म कछु नाहीं ❋ इतनो करतव संतन काहीं ॥
इतनोई कीह्ये संसारा ❋ मिलत मनुज वसुदेवकुमारा ॥

दोहा—सो मैं भाषाबद्ध यह, करतो सकल बखान ॥
श्रोता श्रद्धासहित तुम, सुनहु सबै दे कान ॥ १ ॥
प्रथम अहै उपदेश यह, जिमि निज गुरु सत्कार ॥
तिमि सब संतनको करै, जन उपकार अपार ॥ १ ॥
दूजो जिमि सब संतजन, कीन्ह्यो धर्म प्रकाश ॥
तामें इंद्रिय वश रहित, करै विशेष विश्वास ॥ २ ॥

तीजो हरि जस गुनि रहित, पढै न शास्त्र पुरान ॥
हरि यश लीला ग्रंथ जे, पढै सुनै मतिवान ॥ ३ ॥
चौथो लहि गुरुपद कृपा, भयो जो भक्ति विज्ञान ॥
विषय विवश पुनि होय नाहिं, करै सयुग हरिध्यान ४॥
पांचौ विषय समान सब, गुनै सदा हरिदास ॥
स्वर्गहुते संसारलौं, विषय वासना नास ॥ ५ ॥
छठो यथा हरि नामके, कथन करै जन प्रीति ॥
तैसहि संतन नाममें, करै प्रीति परतीति ॥ ६ ॥
सातौं भगवत मिलनमें, कारण संत सनेह ॥
तातै संत कहैं यथा, करैं सो तजि संदेह ॥ ७ ॥
आठौं हरि हरिजननको, सेवन करै न त्याग ॥
भगवत भागवतहुनकी, सेवा तजब अभाग ॥ ८ ॥
नवयों संतन सेवको, सब साधन फल जान ॥
संत सेव साधन गनब, यह पूरो अज्ञान ॥ ९ ॥
दशयों कहि तुम संतको, अबहुँ बोलावै नाहिं ॥
रौरे आप कहै सदा, सहजहु कठिनहु मांहि ॥ १० ॥
ग्यारहयों सब संतको, हाथ जोरि बतराय ॥
पहिले करै प्रणाम सब, संतन शीश नवाय ॥ ११ ॥
बरहौं प्रभु अरु संत ढिग, बैठे जब जब जाय ॥
दूरिहु औ तिन सन्मुखौ, नाहिं पांव पसराय ॥ १२ ॥
तेरहौं हरिगुरु संतके, और पांव पसराय ॥
करै शयन कबहूं नहीं, यदपि कठिन परिजाय ॥ १३ ॥
चतुर्दशौं उठि प्रात नित, सुमिरै हरि गुरुनाम ॥
श्रीगुरु परम्परा भनै, यही अवशि जन काम ॥ १४ ॥

पंद्रहयों हरिजननको, दुखित देखि मतिधाम ॥
मूल मंत्र मुखमें कहै, करै हरिहि परणाम ॥ १५ ॥
सोरहौं श्रीगुरु संत जन, हरि गाथा हरिनाम ॥
सन्त कथा जबलौं कहै, तजै न तबलौं ठाम ॥ १६ ॥
जो मधिमें तहँते उठै, करै न पूजन तासु ॥
महापाप तो शिर परै, जाकर कबहुँ न नासु ॥ १७ ॥
सत्रहयों श्रीसन्त गुरु, आवत आगू लेय ॥
जात समय कछु दूरिलौं, पहुँचावै पद सेय ॥ १८ ॥
अष्टादश सब सन्तको, साधारण जन केर ॥
करै न कबहुँ समानता, किये लहै अघ टेर ॥ १९ ॥
उनइसयों गुरु श्रेष्ठके, लैलै तारक नाम ॥
घर घर मांगै भीख जो, ताहि पाप वसुयाम ॥ २० ॥
बीसों हरि मंदिर निरखि, दूरिहिंते मतिवान ॥
हाथ जोरि परणाम करि, मानै मोद महान ॥ २१ ॥
यकैसवों सुर और को, सुनत महातम नाम ॥
अन्य देव गृह ऊंच लखि, करै न विस्मय काम॥२२॥
बाइसयों संतन वदन, सुनि कीर्तन हरि साधु ॥
निंदा करै न सुख लहै, तेहि अघ होत अगाधु ॥ २३ ॥
तेइसों छाया साधुकी, नाकै नहिं मतिधीर ॥
चौविसयों छाया स्वतन, परै न साधु शरीर ॥ २४ ॥
पचीसयों जब पातकिन, लखै आपने नयन ॥
तब संतनके चरणको, करै परस भरि चैन ॥ २५ ॥
छबीसयों अपनेको, जो संत करै परणाम ॥
लघु गुनि ताहि अनादरै, तो पापी जगआम ॥ २६ ॥

सत्ताइसयों संतको, दोष न करै प्रकाश ॥
गुणको करे प्रकाश नित, दोष कहे हठि नाश ॥ २७ ॥
अट्ठाइसयों संतको, चरणोदक चितलाय ॥
हरिचरणोदककहूं पिये; दुर्जन दीठि दुराय ॥ २८ ॥
उन्तिसयों हरितत्त्व हत, हरिको मंत्र विहीन ॥
तिनको चरणामृत कबहुँ, पान करै न प्रवीन ॥ २९ ॥
तीसौं हरि अनुराग युत, अरु संयुत आचार ॥
तासु चरणजल नित पिये, सो न परे संसार ॥ ३० ॥
यकतिसयों भगवतजनन, गुनै न निजहि समान ॥
औरहुते समता कबहुँ, करे नहीं मतिवान ॥ ३१ ॥
बत्तिसयों जो पातकी, कार्यविवश छुइजाय ॥
तौ संतन पद जल पिये, पहिरै वसन नहाय ॥ ३२ ॥
तेंतिसयों हरिदास वर, भक्ति ज्ञान युत जेइ ॥
तिन भागवतन भक्ति जन, भगवतसम गनिलेइ ३३ ॥
चौंतिसयों पापी सदन, मिलै जो हरि पद नीर ॥
पान करै सो कबहुँ नाहिं, शीश धरै मतिधीर ॥ ३४ ॥
पैंतिसयों जो शूद्र कर, संस्थापित हरि रूप ॥
ताहि सुमति पूजै नहीं, देय द्रव्य अनुरूप ॥ ३५ ॥
छत्तिसयों तीरथहुमें, पापिन देखत माहिं ॥
हरिप्रसादको पाइवो, उचित संतको नाहिं ॥ ३६ ॥
सैंतिसयों जो सन्त कोउ, देय कृष्णपरसाद ॥
एकादश आदिक व्रतन, तजै न धारि प्रमाद ॥ ३७ ॥
अरतिसयों हरि सन्तको, मिलै जो कहूं प्रसाद ॥
ताहि जूठ मानै नहीं, यही धर्म मर्य्याद ॥ ३८ ॥

उन्तालिसयों सन्तके, निकट जो बैठे जाय ॥
तौ अपने गुणगणनको, कबहुँ न वदन बताय॥३९॥
चालिसयों जब जायके, बैठै सन्त समाज ॥
करै कोप कोहु पर नहीं, यदपि बिगारै काज ॥ ४०॥
यकतालिसयों जाइ जब, बैठै सन्त समीप ॥
कहै साधुहीके गुणन, नहिं गुण कहै समीप ॥ ४१ ॥
बयालिसों प्रभुको करै, पूजन जन सब काल ॥
द्वै घटिका लगि गुरुनके, वरणै गुणन विशाल ॥४२॥
तेंतालिस द्वै याम लगि, सन्तमंडली जोरि ॥
हरि गुरु सन्तनके गुणन, वरणै प्रीति न थोरि ॥४३॥
चौंआलिसयों, देहको, जो अभिमानी होय ॥
हरि विमुखी तेहि संगमें, कबहुँ न बैठै कोय ॥ ४४॥
पैंतालिसयों ठगन हित, धरै जो वैष्णव रूप ॥
तिनको संग करै नहीं, होय यदपि ते भूप ॥ ४५ ॥
छयालियों जे दुष्ट जन, पर दूषण रत होइ ॥
संभाषण तिन संगमें, करै सुमति नहिं कोइ ॥ ४६ ॥
सैंतालिसयों जे कुमति, भूत प्रेत रत होय ॥
तिनको संग करै नहीं, जानि हानि गति दोय ॥४७॥
अरतालिसयों हरि रसिक, साधु भागवत संग ॥
संभाषण नितहीं करै, तजिकै कपट कुसंग ॥ ४८ ॥
उञ्चासो जे जन तजैं, रामकृष्णविश्वास ॥
तिनको संग करै नहीं, संग किहेते हास ॥ ४९ ॥
पचासयों जे रसिक जन, कीन्हे हरि दृढ नेम ॥
तिनके संग बसै सदा, ते दायक हठि क्षेम ॥ ५० ॥

इक्यावनो विकान जे, ललना लोभ बजार ॥
तिनके नेह न है नहीं, रामदास युग चार ॥ ५१ ॥
बामन जो कहुँ साधु ते, लहै अनादर भूरि ॥
तौ हठि साधुन चरणकी, धरै शीशमें धूरि ॥ ५२ ॥
तिरपनयों जो जगतमें, मानै महा गलानि ॥
तबहि परमपद वासना, उठै मनहिं सुखदानि ॥ ५३ ॥
चौवनयों सब साधुते, हित राखै अभिलाषि ॥
संतनसों अपनो चहै, हित नित चित वितमाषि॥५४॥
पचपनयों जेहि कर्म जे, यदपि महाफल होइ ॥
पै जो धर्मविहीन है, तौ नहिं सेवै कोइ ॥ ५५ ॥
छप्पनयों जल फूल फल, भोजन पट अँगराग ॥
बिन हरि अरपे कबहुँ नहिं,ग्रहण करै बड़भाग ॥५६॥
सत्तावनयों सन्त हरि, हित लागै जो नाहिं ॥
मिलै जो विन मांगेहु तदपि, चित न देय तेहिमाहिं ५७
अट्ठावनों जो शास्त्रते, वर्जित हैं अन्नादि ॥
करै न भक्षण कबहुँ तेहि, कहै वचन नहिं वादि ॥५८॥
उन्सठयों जो आपको, वस्तु परमप्रिय होय ॥
सो अरपै भगवानको, विहित शास्त्रगण जोय ॥ ५९॥
साठौं औरहु शास्त्रमें, विहित जो वस्तु पुनीत ॥
सोउ अरपै प्रभुको सुमति, राखि प्रीतिकी रीत ॥६०॥
इकसठयों प्रभु अर्पितें, पट भूषण अन्नाद ॥
भोगबुद्धि तेहि नहिं करै, मानै ताहि प्रसाद ॥ ६१ ॥
बासठयों जे शास्त्रमें, लिखे कर्म बहु भांति ॥
ते हरि सेवन मानिकै, करै सुमति दिन राति ॥ ६२ ॥

तिरसठयों जो भगवत, हरिमंत्री हरिदास ॥
तासु अवशि अपकार को, गुनै आपनो नास ॥ ६३ ॥
चौसठयों जब साधुजन, निज पर होय प्रसन्न ॥
तब अपनो संसारते, गुनै उद्धार प्रपन्न ॥ ६४ ॥
पैंसठयों भगवानकी, मूरति गुनै पषान ॥
ताको सति करि जानिये, यह पाषाण महान ॥ ६५ ॥
छासठयों गुरु देवको, गुनै जो मनुज समान ॥
महापातकी ताहिको, भाषत वेद पुरान ॥ ६६ ॥
सरसठयों जो संतमें, राखै जाति विभेद ॥
सो पावत है नरकमें, कोटि वर्षलों खेद ॥ ६७ ॥
अरसठयों कलिमल हरण, हरिचरणामृत काहिं ॥
साधुचरणजल जल गुनै, तेहिं उद्धारहै नाहिं ॥ ६८ ॥
उनहत्तरयों कृष्णके, अहैं जे नाम अनंत ॥
और शब्द सम तेहि गुनै, सो न नरक निकसंत॥६९॥
सत्तरयों हरिको गुनै, औरन देव समान ॥
सो पापी यमराजपुर, पावत दंड महान ॥ ७० ॥
इकहत्तरयों कृष्णके, पूजनते मतिवान ॥
अधिक संत पूजन गुनै, ऐसो वेद प्रमान ॥ ७१ ॥
बहत्तरौं श्रोता सुनो, उभय भांति सब कोय ॥
कृष्ण चरण जलते अधिक, साधुचरणजलहोय॥७२॥
यदुपतिके अपराधते, अधिक साधु अपचार ॥
हरि अपराधमिटै कबहुँ, मिटै न सो युग चार ॥७३॥

धर्म बहत्तर यह परधाना ❀ दायक सकल अवशिनिर्वाना ॥
येइ बहत्तर धर्म जो करई ❀ तासु नाम सज्जन जग धरई ॥
कीन्हें विना बहत्तर धर्मा ❀ वृथा होत सिगरे सत्कर्मा ॥

यह सर्वस संतनको जानो ❀ मुख्यसंतको धर्माहि मानो ॥
और करै वा करै न कोई ❀ पै जो निरत बहत्तर होई ॥
सो पूरो जग संत कहावै ❀ जियत मोद अंतहि गति पावै ॥
पै जे कही बहत्तर रीती ❀ संत होहु तो करहु प्रतीती ॥
संतरसिक सुशील मतिवंता ❀ जे अनोख प्यारे भगवंता ॥
ते सब करैं बहत्तर रीती ❀ इतने अहैं संतकी रीती ॥
इतनोई कर्त्तव्य संतको ❀ मिलन होत रुक्मिणीकंतको ॥
वेद पुराण शास्त्र कर सारा ❀ रामानुज यह कियो उचारा ॥
सरल रीति भाषा सो गाई ❀ याके करत न कछु कठिनाई ॥

दोहा—तन मन धन जो संतको, मानि करै सत्कार ॥
ताहि आपते मिलत हैं, श्रीवसुदेवकुमार ॥ २२ ॥

यहिविधि जब किय गुरु उपदेशा ❀ तब जे शिष्य रहे तेहिं देशा ॥
ते तब अचरज गुने प्रवीना ❀ कस गुरु उपदेश्यो जन पीना ॥
पूंछे सकल शिष्य कर जोरी ❀ का स्वामी मनकी गति तोरी ॥
तब यतिराज कह्यो मुसकाई ❀ मोहिं बकस्यो बिकुंठ यदुराई ॥
बीते आजसहित दिन चारी ❀ मैं जैहौं बिकुंठ पगुधारी ॥
सुनत शिष्य सब भये बिहाला ❀ मरण ठीक दीन्हो तेहिं काला ॥
तब बोले रामानुज बानी ❀ तजहु शिष्य यह वृथा गलानी ॥
पूर्वाचार्य गये हरि धामा ❀ पंचभूत तनको यह कामा ॥
शिष्य कहे नहिं सहब बियोगा ❀ धीरज होय सो करहु नियोगा ॥
तब रामानुज अपने रूपा ❀ बनवायो अनुरूप अनूपा ॥
तेहि मिलि शक्ति धरयो तेहि माहीं ❀ थापित कियो रंगपुर काहीं ॥
दूसरि निज मूरति बनवाई ❀ भूतपुरी महँ दिय पधराई ॥

दोहा—तीसर अपनो रूप रचि, व्यंकट शैल धराय ॥
कह्यो सकल शिष्यन करहु, यामें प्रीति महाय ॥ २३ ॥

अबलों मूरति तीनहु थाना ❀ है प्रत्यक्ष प्रभाव महाना ॥
पुनि सब शिष्य विनय अस कीन्हे ❀ केहि विधि रहब ईशचित दीन्हे ॥

यतिपति कह जेहि विधि हरिराखै ❀ तेहि विधि रह्यो मुक्ति अभिलाखै ॥
कियो उपाय न परगति हेतू ❀ तनु अधीन यह कृपानिकेतू ॥
पूर्वाचारज रचित प्रबंधा ❀ पढेहु पढायहु करि सम्बंधा ॥
मंत्रराज नित जपेहु सुजाना ❀ याते गति उपाय नहिं आना ॥
और सुनहु इक परम उपाई ❀ जाके किये सकल बनिजाई ॥
रसिक विज्ञ वैष्णव शुभ शीला ❀ अहमित रहित निरत हरिलीला ॥
तिनको शासन शिरपर धरिये ❀ तिनसों हरिसों भेद न करिये ॥
यह जानहु तुम परम उपाई ❀ यह सुश्लोक दियो हम गाई ॥

श्लोक-श्रीभाष्यद्रविडागमप्रवचनं श्रीशस्थलेष्वन्वहं ।
कैङ्कर्यं यदुशैलनित्यवसतिः स्वार्थद्वयोच्चारणम् ॥
यद्वा भागवताभिमानमननं श्रेयः सतामित्यलं ।
शिष्यान्प्राह यतीश्वरः परमगाद्विष्णोः पदं शाश्वतम् ॥

विषय भोग द्वै भांति समूला ❀ एक विरोधी इक अनुकूला ॥
तजै समूल विरोधिन काहीं ❀ प्रीति करै अनुकूलनमाहीं ॥

दोहा-हरि अनुरागी लोभ हत, जे हैं संत सुजान ॥
तिनको संग किये सदा, लहत अवशि निर्वान ॥२४॥

यहि विधि शिष्यन करि उपदेशा ❀ बोलि पराशरको तेहि देशा ॥
कर गहि रंगनाथ ढिग गयऊ ❀ हाथ जोरि बोलत अस भयऊ ॥
देहु प्रसाद पराशर काहीं ❀ पूजक सकल तेहि क्षणमाहीं ॥
द्रुत प्रसाद पादुका लै आये ❀ सुखित पराशर शीश धराये ॥
रंगनाथ आगे अह्लादी ❀ दियो पराशरको निज गादी ॥
सौंप्यो सकल वैष्णवन काहीं ❀ राख्यो प्रीति यथा मोहिं माहीं ॥
पकरि पराशर कर घर आये ❀ शिष्यगणन यह वचन सुनाये ॥
मम वियोग वश तजहु न देहू ❀ मोरि शपथ राखेउ धरि नेहू ॥
जब वैकुंठ गवन दिन आयो ❀ तब सब शिष्यन बहुरि बोलायो ॥
कह्यो आजु भोजन करि लेहू ❀ सुखित होहु तजि मन संदेहू ॥
रंगनाथ पूजकन हँकारी ❀ तिनको सब संदेह निवारी ॥

पुनि आंगनमहँ विरंचिकुशासन ❀ धरि निज शिर गोविंदपद्मासन ॥
दोहा—आंध्रपूर्णके अंकमें, धरचो चरण यतिराज ॥
वेद पढन लागे सबै, चहुँदिशि साधु समाज ॥२५॥
बाजा बाजन लगे सुहावन ❀ जयहरिजय हरि दिशिध्वनिछावन॥
महापूर्ण पादुक धरि आगे ❀ ध्यावत यामुन पद अनुरागे ॥
माघ शुक्ल दशमी शनिवारा ❀ मध्य दिवस यतिराज उदारा ॥
ब्रह्म रंध्र ह्वै यतिगण स्वामी ❀ गे विकुंठ जहँ अंतर्यामी ॥
लिखे चित्र सम जन सब ठाढे ❀ सबके उर दुखवारिधि बाढे ॥
दाशरथी कुरकेश्वर गोविंद ❀ आन्ध्रपूर्ण ये चारि शास्त्रविद ॥
अंतिम क्रिया करी गुरु केरी ❀ कुरकेश्वर सब भांति निबेरी ॥
दुसह विरह गोविंद कछु कालै ❀ हरि मत थापि गये हरि आलै ॥
भये पराशर महा प्रभाऊ ❀ हरि पद सेवक जस यतिराऊ॥
गीता भाष्य वेदार्थहु संग्रह ❀ अरु वेदान्त प्रदीप ग्रंथ कहँ ॥
अरु श्रीभाष्यो वेदान्तहु सारा ❀ गद्य त्रय प्रपत्ति परकारा ॥
ये षट ग्रंथ पराशर स्वामी ❀ प्रचरित कियो जगत शुभनामी ॥
दोहा—तहँ पंडित कोउ आयकै, कह्यो पराशर काहिं ॥
वेदान्ती अस नाम यह, कह बुधवर जगमाहिं॥२६॥
है मायावादी वर सोई ❀ जीति सकै विवाद नहिं कोई ॥
कह्यो पराशर तब तेहिं बानी ❀ तेहिं देखन मम मति हुलसानी ॥
गयो विप्र सो तेहि बुध नेरे ❀ कह्यो पराशर जो दुख टेरे ॥
सो कहल्याउँ पराशर बोली ❀ जीति लेहुगो निज मत खोली ॥
इतै पराशर रंगनाथसों ❀ विनय कियो युग जोरि हाथसों ॥
मायावादी जीतन जाऊं ❀ जो जय कर तुव शासन पाऊं ॥
रंगनाथ तब करि निज दाया ❀ चमर छत्र तेहिं संग पठाया ॥
जाय पराशर विगत विभीती ❀ मायावादीको लिय जीती ॥
रंगनगर विजयी फिरि आये ❀ भुवमंडल अखंड यश छाये ॥
रंगनगर वेदान्तिहु आयो ❀ माधवदास नाश सो पायो ॥

शिष्य पराशरको ह्वै गयऊ ❋ अपनी कुमति छोडि सो दयऊ ॥
रंगनगर महँ सो चिरकाला ❋ बसत भयो विज्ञान विशाला ॥
दोहा—चलन चह्यो वैकुंठको, रच्यो पंन्थ वर ग्रंथ ॥
माधवदासै बोलि ढिग, उपदेश्यो सतपंथ ॥ २७ ॥
हमहुँ चहत विकुंठ कहँ जाना ❋ तुम विचरो विहाय अभिमाना ॥
शठरिपु गीतिको अर्थहि शाषा ❋ रचहु विमल तुम द्राविड़भाषा ॥
शिष्य पराशर शिर धारि सोई ❋ माधवदास रह्यो मुद मोई ॥
माधवदास कह्यो कर जोरी ❋ भक्त चरित सुनिबो मति मोरी ॥
तबहिं पराशर वर्णन लागे ❋ श्रोता सकल सुनन अनुरागे ॥
एक समय गिरिवर कैलासा ❋ भयो गौरिहर ब्याह विलासा ॥
तहां जुरे सब सुर मुनि नाना ❋ तहँ कुम्भजमुनि कियो पयाना ॥
तहँ अगस्तयसों कह असुरारी ❋ बसहु दिशा दक्षिण तपधारी ॥
कुम्भज सुरगण शासन मानी ❋ बस्यो दिशा दक्षिण तप ठानी ॥
बीते वर्ष सहसदश जबहीं ❋ ह्वै प्रसन्न प्रगटे हरि तबहीं ॥
विविध भांति मुनि सुस्तुति कीन्ह्यो ❋ वरं ब्रूहि श्रीपति कहि दीन्ह्यो ॥
तब कह घटसंभव यह देशा ❋ होय पुनीत तुम्हार निवेशा ॥
दोहा—हरि कह दिगरे देशते, मोहिं प्रिय द्राविड देश ॥
मैं विचरन करिहों इतै, धरि अवतार हमेश ॥ २८ ॥
जो कोउ द्राविड प्रबंधहि गाई ❋ सो जन अवशि मुक्त ह्वै जाई ॥
शठकोपादिक महाभागवत ❋ ह्वैहै जगत मोर थापक मत ॥
उद्धारण पापी जन नाना ❋ अस कहि भे हरि अंतर्ध्याना ॥
रंग वेंकटादिक क्षेत्रन महँ ❋ प्रगट कृष्णलत कियो वचन कहँ ॥
हरि पार्षद विकुंठ पुर वासी ❋ शठकोपादिक भे सुख रासी ॥
भारतवर्षहि नाशि पखंडा ❋ थाप्यो वैष्णव मतहि अखंडा ॥
हरिको प्रिय अति द्राविड भाखा ❋ संवत वेद शास्त्र श्रुति साखा ॥
द्राविड भाषा संतन काहीं ❋ उचित अवशि पढिबो जग माहीं ॥
सहसगीत तामें परिधाना ❋ जो शठकोप कियो निरमाना ॥

धवदास सुन्यो गुरु वैना * तेहि विधि कियो मानि अति चैन
पुनि बोल्यो तहँ माधवदासा * करहु सूरि वृत्तांत प्रकासा ॥
तबहिं पराशर अति सुखछाये * सब आचार्य प्रबंध सुनाये ॥

दोहा—ते सिगरे इतिहासको, संक्षेपहु विस्तार ॥
मैं पूरव वर्णन करचो, निजमतिके अनुसार ॥२९॥

जग भागवत सरिस कोउ नाहीं * यह सिद्धांत पुराणन माहीं ॥
नर सो नारायण अस गायो * सो मैं तुमसों देत सुनायो ॥
कमला शिव विरंचि अरु शेषा * इतन सब ते साधु विशेषा ॥
मम पूजनते संतन पूजा * है विशेष सिद्धांत न दूजा ॥
केवल करत संत सेवकाई * मुक्ति मिलति नहिं आन उपाई ॥
नरनारायणसों अस भाषा * संत प्रभाव सुनत अभिलाषा ॥
कहन लगे नारायण गाथा * कहौं सो नाय साधु पद माथा ॥
पूरुव एक भयो द्विज पापी * चोर और चंडाल सुरापी ॥
गो ब्राह्मण गण हन्यो हजारन * लागत पंथ पथिक धन हारन ॥
राखे रह्यो सो एक निषादी * कबहुँ न रामकृष्ण मुखवादी ॥
एक समय कौनेहु मग माहीं * लीन्ह्यो लूटि साधु जन काहीं ॥
दुखी साधु तब वचन उचारे * कस अनित्य न शरीर निहारे ॥

दोहा—यह अनित्य तनु हेतु तुम, करहु जगत अनघोर ॥
कोटिन वर्षन नरकते, नाहिं उधार है तोर ॥ ३० ॥

तब पापी बोल्यो अस वाणी * चोरी तजे मरे मम प्राणी ॥
काह खवाऊं मैं सुत नारी * पूजे साधु कौन फल भारी ॥
तब पापीसों कह सो साधू * यह सागर संसार अगाधू ॥
मरे जात कोउ सँग महँ नाहीं * है कुटुंब संग जगमाहीं ॥
जाइ [illegible] संग तिहारे * तिय सुत तजै चिता लगि जारे ॥
याहि विधि संत कही जब वानी * तब कछु मन सो[illegible] अभिमानी ॥
[illegible]धु [illegible] परभाव महाना * उपज्यो पापी हिय महँ ज्ञाना ॥
त[illegible] बोल्यो दो[illegible] क[illegible] जोरी * क्षमहु सन्त यह मम बाड खोरी ॥

देहु उधार उपाय बताई * त्राहि त्राहि मोहिं राम दोहाई ॥
तबै संत बोले मुसकाई * सेवत साधु पाप जरि जाई ॥
महाभागवत मूर्ति बनाई * पूजहु तिन्हें सदा चित लाई ॥
औरहु संत करहु सेवकाई * तरिजैहो है राम दोहाई ॥

दोहा–अस कहि साधु चले गये, सो शठमानि गलानि ॥
रामानुज आदिकनकी, रचि मूरति विधि ठानि ॥ ३१ ॥

पूजन लग्यो सप्रीति सो पापी * संतन नाम भयो सुख जापी ॥
संतन सेवत अस चंडाले * बीत्यो जियत जगत कछु काले ॥
आयो अंतकाल जब ताको * धाये यम भट धारि गदाको ॥
कोऊ लिये हाथ महँ फांसी * लियो बांधि तनु गोभत गांसी ॥
सो शठ कीन्ही संत दोहाई * तब हरि पार्षद आये धाई ॥
यमदूतन कहँ आंखि दिखाई * सो पापी कहँ लियो छोडाई ॥
सूर्य समान विमान चढाई * दियो ताहि हरिपुर पहुँचाई ॥
तब यमकिंकर रोवत जाई * यमको दिय वृत्तान्त सुनाई ॥
कह्यो बहोरि पाप अस कीन्हे * मिली मुक्ति प्राणिन दुख दीन्हे ॥
तो पुनि मनुज धर्म किमि करिहैं * हठि अधर्म पंथा पग धरिहैं ॥
याको दीजै हेतु बताई * तब संदेह दूरि ह्वै जाई ॥
तब यमराज संत शिर नाई * कह्यो साधु महिमा सुख गाई ॥

दोहा–महाभागवत सर्वदा, जे पूजैं करि नेह ॥
ते पापी सब पाप हत, जात अवशि हरि गेह ॥ ३२ ॥

जे जग महँ हैं संत सनेही * मोते भीति लहै नहिं देही ॥
जे नित सेवत संतन चरना * ते विकुंठवासी सुख भरना ॥
साधु चरण सेवक जग माहीं * कबहुँ समीप जाइयो नाहीं ॥
संत उपासक जे बडभागी * तिन पर जोर तुम्हार न लागी ॥
अस दूतन यमराज बुझाये * दूत गये संतन शिर नाये ॥
तबते दूत करी यह रीती * देखि संत भागैं भरि भीती ॥
अपने पूजनते गिरिधारी * साधुन पूजा जानै प्यारी ॥

जो साधुन गण जन सो मानै ❀ कोटि वर्ष लगि नरक महानै ॥
संतन देय सुवर्ण जो माशा ❀ मेरु तुल्य तेहि पुण्य प्रकाशा ॥
जो साधुन पद रज शिरधारी ❀ नहिं मानै गति भई हमारी ॥
सो प्रत्यक्ष पशु शृंग विहीना ❀ नहिं फल सकल तासु कर कीना॥
तासों विमुख रहत रघुराई ❀ जीवत कुयश मरे नरकाई ॥

दोहा—जे पथ श्रमित सुसंत कहँ, श्रमहि निवारत सेइ ॥
ते सुकृती कहँ हरिअवशि,भव निवाश करि देइ॥३३
जे संतन पूजत अवशि, तिनहिं विनारत जोय ॥
स्वर्ग गवन तिनके करत, रोकत सुर सब कोय ॥३४॥
जो जन निंदा साधुकी, करत एकहू बार ॥
नरक भोगि सो जन्म बहु, मूक होत संसार ॥ ३५ ॥
जो हरि भक्त विलोकिकै, उठै न गर्वहि धारि ॥
होतो अवशि पहारको, सो पषाण युग चारि ॥ ३६ ॥
जो सप्रीति पूजै सदा, संत चरण विधि युक्त ॥
जियत भोग भोगै विपुल,अंत होत हठिमुक्त ॥ ३७॥
पग मीजै पंखा करै, बीरी देय खवाय ॥
साधुनकी सेवा सदा, निज मानै यदुराय ॥ ३८॥
संतन अर्चन छोडिकै, जो पूजै हरि कोइ ॥
पूजा तासु मुकुंद प्रभु, ग्रहण करैं नहिं सोइ ॥ ३९॥
पढै विप्र षटशास्त्र जो, कृष्ण भक्त नहिं होइ ॥
कृष्ण भक्ति जो जन करै, पंडित ते वर सोइ ॥ ४० ॥
शूद्र श्वपचहू जातिको, राम रसिक जो होय ॥
भक्ति विगत वेदिकहुते, अधिक विप्र ते सोय ॥४१॥
भक्तिहीन जे विप्रजन, करहिं जे कर्म विधान ॥
ते सब निष्फल कर्म हैं,भक्तिसहित फल दान ॥ ४२ ॥

कृष्ण प्रतिष्ठाते अधिक, संतप्रतिष्ठा जान ॥
हरिते अधिक विचारिये, हरिको दास महान ॥४३॥
तुलसीमाला चिह्नते, चिह्नित जो जन होइ ॥
ते भागवत सुजगतमें, वेद पढे नहिं कोइ ॥ ४४ ॥
माला चंदन चक्र धर, संतनको जगमाहिं ॥
मानै नारायण सरिस, भेद कछू है नाहिं ॥ ४५ ॥
आये साधुन भौनमें, जो शठ पूजै नाहिं ॥
सात जन्मके पुण्य तेहिं, क्षीण होत क्षण माहिं ४६ ॥
जो न खवावै साधुको, करिकै अति अनुराग ॥
सो जस भोजन करत हरि, यथा न मखको भाग४७॥
जो वैष्णवको देखिकै, करै नहीं परणाम ॥
जो प्रदक्षिणा देत नहिं, तापर कोपत राम ॥ ४८ ॥

जो कोइ तुलसी वृक्ष लगावै ❀ सविधि सो हरिपूजन फल पावै ॥
जो माधव मंदिर बनवावै ❀ करै प्रतिष्ठा प्रभु पधरावै ॥
सो हरि सँग विकुंठ पुर माहीं ❀ करत-विलास काल तेहि जाहीं ॥
यथा गरुड अहिपति हरि केरे ❀ ताहि करत हरि तथा निधेरे ॥
जो तुलसीदल शालिग्रामै ❀ पूजित तापर तोषित रामै ॥
विन तुलसीदल पूजन हीना ❀ करै कोटि उपचार प्रवीना ॥
गुरुकी करै सदा सेवकाई ❀ गुरु रूठे रूठत यदुराई ॥
गुरु प्रसन्न प्रसन्न मुरारी ❀ हरि गुरुमें नहिं भेद विचारी ॥
लखि त्रिदंड वैष्णवसंन्यासी ❀ पूजन करैं मानि मुद रासी ॥
तेहि पूजत ज्ञानहु विज्ञाना ❀ पावत जन कह वेद पुराणा ॥
करै न साधुनसों अभिमाना ❀ होय नमित यदि विभव महाना ॥
साधु चरण रज शिरमहँ धारै ❀ तेहि जन पुनि न होत संसारै ॥

दोहा—यह साधुन महिमा कह्यो साधुते अधिक न कोइ ॥
जो हरिको मिलिबो चहै, सेवै संतन सोइ ॥ ४९ ॥

ग्रंथ प्रपन्नामृत यह गायो * पूर्वाचार्य प्रबंध सुनायो ॥
तामें अहै विपुल विस्तारा * मैं कीन्ह्यो संक्षेप उचारा ॥
पै नहिं छूटे कोउ इतिहासा * कियो यथामति सकल प्रकासा ॥
ग्रंथ रामरसिकावलि माहीं * सिगरी संत कथा दरशाहीं ॥
अहै न कथा प्रपन्नामृत की * है रामानुजके शुभ मतकी ॥
अति विचित्र है साधुन गाथा * कहे सुने जन होत सनाथा ॥
जाके है नित संत अधारा * सो यदुपति कहँ प्राण पियारा ॥
ताते मैंहूं कियो विचारा * संतन कर है मोर उधारा ॥
सुनै जो सुमति प्रपन्नामृतको * सानुराग वर्णै शुभ मतिको ॥
ते सज्जन यह मोरि ढिठाई * क्षमा करैं बिगरी बनिआई ॥
संत चरित कहँ अखिल अपारा * कह मैं कुमति लचार अचारा ॥
पै जो कछु मोसों बनिआई * सो यह करी संत सेवकाई ॥

दोहा—नहिं विद्या नहिं तप सुकृत, नहिंशुभ मतिहरिनेह ॥
पै साधुन सेवन करत, नहिं उधार सन्देह ॥ ५० ॥

मैं अपनी का दशा बखानौ * निजते लघु मोहूं कहँ जानौ ॥
चंचल चित तिय बिन नित राचो * अधरम रत भगवत मत कांचो ॥
पूरब पुण्य उदय कछु भयऊ * ताते साधु शरण है गयऊ ॥
यही अधार एक है मोरे * और सुकृत नहिं कछु जग जोरे ॥
मोहिं साधु शरणागत जानी * कर उद्धार अधम अति मानी ॥
श्रोता तुम सब सुमति सुहाये * सुनन रामरसिकावलि आये ॥
तिनहिं मोरि बहु बार प्रणामा * क्षमहु चूक बिगरो जो कामा ॥
जो यह बांचै ग्रंथ सदाहीं * मोर प्रणाम अहै तेहि काहीं ॥
विनय मोरि सबसों यहि भांती * देहु यही वर करि दृढ छाती ॥
संत चरण उपजै नवनेहू * होय न संतन मह संदेहू ॥
मानहि सन्त मोहिं लघु दासा * याते अधिक मोरि नहिं आसा ॥
रचत रामरसिकावलि केरे * विद्या गुरु रामानुज मेरे ॥

दोहा—तिनके चरण कृपाविवश, सहजहिमें यह ग्रंथ ॥
रच्यो प्रपन्नामृत विमल, दायक शुभ सतपन्थ ॥ ५१ ॥

जय मुकुंद हरि गुरु चरण, जय जय पितुविश्वनाथ॥
जय गुरु रामानुज विमल, मोको कियो सनाथ॥६२॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीसमराज-महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतौ रामरसिकावल्यां कलियुगखंडे पूर्वार्धः समाप्तः ।

अथ कलियुगखंडोत्तरार्धमारम्भः ।

सो०—जय रघुकुल वनकंज, विदित दिवाकर दिशि दिपत
सन्त कोक मन रंज, सुयश भोर हत दुखनिशा१॥
जय यदुकुल उडुइंदु, सत चकोर चायक चतुर॥
कीरति जोन्ह अनिंदु, कुमुद दीन मुद दायने॥२॥

दोहा—जय गणपति जय शगिरा,जय जय सन्त समाज॥
रचित रामरसिकावली, उत्तरार्द्ध रघुराज॥१॥
ग्रन्थ रामरसिकावली, भे समाप्त त्रैखंड॥
पुनि विरच्यो कलि खंडको, पूर्वार्द्ध उद्दंड॥२॥
सकल प्रपन्नामृत कथा, तामें वचन न कीन॥
पूर्वाचार्यनकी कथा, औरहु कथा नवीन॥३॥
श्रोता सब मन दै सुनहु, उत्तरार्द्ध कलिखंड॥
यामें कलि भक्तन कथा, वर्णित अहै अखंड॥४॥
श्रीमुकुन्द हरि गुरु चरण, रज धरि अपनो माथ॥
तैसहि सुखित नवाइ शिर, महाराज विश्वनाथ॥५॥
श्रोता सुनहु सुशील सब, श्रद्धासहित सप्रीति॥
उत्तरार्द्ध कलिखंडको, सुनत भगत कलिभीति६॥

अथ विष्णुस्वामीकी कथा ।

दोहा—प्रथम विष्णुस्वामीकी कथा, श्रोता सुनहु सुजान॥
जाहि सुनत जाने परत, अहै जानकीजान॥१॥

भये विष्णुस्वामी हरि दासा ❋ जिन जग यश शशि सरिस प्रकासा
जग महँ विचरि २ सब ठोरा ❋ हरि विमुखिन किय हरिकी ओरा ॥
वेद पुराण शास्त्र सब ज्ञाता ❋ बहु देशन उपदेशन दाता ॥
एक समय नीलाचल काहीं ❋ कियो पयान शिष्य सँग माहीं ॥
जब जगदीशपुरी महँ गयऊ ❋ अरुण खम्भ ढिग ठाढो भयऊ ॥
फूलडोल उत्सव तहँ रहेऊ ❋ निकसत कढत मनुज दुख सहेऊ॥
देखि विष्णुस्वामी जन भीरा ❋ मन महँ कियो विचार गँभीरा ॥
जो हम शिष्य सहित तहँ जैहैं ❋ तौ सँगके जन अति दुख पैहैं ॥
ताते मंदिर पाछे जाई ❋ बैठो कछुक काल चितलाई ॥
अस विचारि मंदिरके पाछे ❋ बैठे शिष्य सहित प्रभु आछे॥
सुनि जगदीश दासकी आशा ❋ तेही ओर किय द्वार प्रकाशा ॥
यात्री लखी पश्चिमको द्वारा ❋ धाये दर्शन हेतु हजारा ॥

दोहा-निरखि विष्णुस्वामी तहां, मनुजनकी अति भीर॥
बैठे दक्षिण द्वार चलि, ध्यावत श्रीयदुवीर ॥ २ ॥

प्रगट्यो तब दक्षिणहू द्वारा ❋ धाये जन तहँ और हजारा ॥
कसमस परचो कढत तेहिं ओरा ❋ स्वामी गे पुनि उत्तर ओरा ॥
उत्तरहू निज जनके काजा ❋ प्रगट्यो प्रभु दराज दरवाजा ॥
देखि विष्णुस्वामी प्रभुताई ❋ गुणी अचर्ज मनुज समुदाई ॥
गिरे विष्णु स्वामी पद आई ❋ धन्य २ मुख गिरा सुनाई ॥
विदित विष्णु स्वामीकरकाजा ❋ अबलौं तहां चारि दरवाजा ॥
यहि विधि और अनेक चरित्रा ❋ विमल विष्णुस्वामीके चित्रा ॥
कहँलौं करों विशेष बखाना ❋ जाहिर है सब भांति जहाना ॥
तिनके भये शिष्य बहुतेरे ❋ तिनहूके परभाव घनेरे ॥
निज प्रभाव संपदा चलाई ❋ जिनहिं सुमिरि भवनिधि तरि जाई
ताते मैं कीन्ह्यों संक्षेपा ❋ लघु गुनि कियो न कछु आक्षेपा॥
यह संपदा विष्णु स्वामीकी ❋ हठि दायिनि गति खगगामीकी ॥

दोहा—और कथा सुनिबे हितैं, श्रोता जो मन देहु॥
विष्णुस्वामि मत बुधनते, तौ सादर सुनि लेहु॥३॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे प्रथमोऽध्यायः॥१॥

अथ श्रीमध्वाचार्यकी कथा।

दोहा—मध्वाचारजकी कथा, अब बरणौं चित लाय॥
जासु नाम यश मध्य मत, रह्यो जगतमहँ छाय॥१॥

मध्वाचार्य्य महा उपकारी * कीन्ह्यो हरि विमुखोन सुधारी॥
हरि रति सूखे मनुज तड़ागा * घन इव भरन भक्ति जल लागा॥
देशन देशन करत पयाना * थापत निज मत विविधविधाना॥
एक समय गवन्यो पंजाबा * विमुखिन सुमुखकरन मनलावा॥
मारग महँ इकशिला निहारचो * बैठि ताहि महँ ईश सँभारचो॥
पाछे परे शिष्य सब तिनके * रहे संग महँ सेवक जिनके॥
बैठि अकेले शिला मँझारी * ध्यायो हरि नहिं आंखि उघारी॥
तेहि मारग है सहित समाजा * कढ्यो चक्रवर्ती महराजा॥
संग तुरंग मतंग अनंता * रथ पैदल दल विविध लसंता॥
मध्वाचार्य मार्ग मधि बैठे * अचल समाधि महोदधि पैठे॥
गवों भूपति तिनहिं निहारी * मान्यो महापखंडहि भारी॥
रह्यो राज सिंधुर असवारा * पीलपालसों वचन उचारा॥

दोहा—यह पाखंडी मार्ग मधि, बैठो करि पाखंड॥
तेहि कचरावत चढि चलो, याको है यह दंड॥२॥

अस कहि करि करीनकी पांती * तिमि तुरंग पैदलहु जमाती॥
चल्यो माध्व मतनाथहि ओरा * तब अस कौतुक भो तेहि ठोरा॥
रथ पैदल मातंग तुरंगा * तेहि क्षण भे थम्भित सब अंगा॥
सबके उठत न पांव उठाये * मनहुँ भूमि महँ अहैं जमाये॥
पीलपाल पीलन कहँ पेलै * अश्वपाल अश्वन कहँ रेलै॥
पैदर कूदि गिरे तेहिं ठामा * रथ चाके चापे वसुधामा॥

यह नैनन नरनाह निहारी ❀ महापुरुष तेहिं लियो विचारी ॥
तज्यो तुरत नागहि नरनाथा ❀ गिरचो चरण महँ भूधरि माथा ॥
त्राहि त्राहि आरत कह बैना ❀ भयो भूप तेहिं क्षण दुख ऐना ॥
मध्वस्वामि तेहि समय दयाला ❀ तापर कीन्ह्यो कृपा विशाला ॥
सदल नरेश शिष्यकरि लीन्ह्यो ❀ भवभय सकल दूरि करिदीन्ह्यो ॥
ऐसे मध्वाचारज केरे ❀ अहैं चरित्र विचित्र घनेरे ॥

दोहा–मध्वाचारजके मती, अबलौं भक्त प्रधान ॥
अबलौं दीसत भेद बहु, जाहिर जगत जहान ॥३॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ श्रीनिंबार्कस्वामीकी कथा।

दोहा–निंबारक स्वामी चरित, अब वर्णौं चितलाय ॥
श्रद्धायुत श्रोता सुनहु, मंगल मोद निकाय ॥१॥

निंबादित भे भानु समाना ❀ नाम करन निहार अज्ञाना ॥
भगवत धर्म कर्म सब कीन्ह्यो ❀ निजमतिदृढ थापितकरिदीन्ह्यो ॥
एक समय हरि उत्सव माहीं ❀ किय निवतो द्विज संतनकाहीं ॥
ताही क्षण दंडी इक आयो ❀ ताहूको नेवतो पठवायो ॥
सहसन संतन होति रसोई ❀ अस्ताचलहि रहे रवि गोई ॥
तेहि दंडी कर प्रण अस रहई ❀ भानु विगत भोजन नहिं गहई ॥
जब भोजन हित ताहि बोलायो ❀ तब सो यह संदेश पठायो ॥
यतिन राति भोजन नहिं होई ❀ यह प्रसंग जानै बुध जोई ॥
सुनि निंबारक यती सँदेशा ❀ मान्यो मन महँ परम कलेशा ॥
साधु नेवति भोजन नहिं देई ❀ घोर दंड पावहिं जन तेई ॥
अति आशङ्कित भे तेहि काला ❀ सुमिरत भये नन्दके लाला ॥
रह्यो एक कङ्कण कर माहीं ❀ फेंक्यो एक नीमतरु पाहीं ॥

दोहा–तासु प्रकाश दिनेश सम, फैल्यो चारिहुँ ओर ॥
यह चरित्र लखिके सकल, भयो जननको भोर२॥

तब भोजन हित संतन काहीं ❋ बोलि पठायो निज घर माहीं ॥
निम्ब वृक्ष महँ भानु निहारी ❋ अतिअचरजसब लियो विचारी ॥
पुनि तेहिं दंडी काह बोलायो ❋ जो दिन भोजन नेम सुनायो ॥
सो आदित्य निंब महँ देखी ❋ भोजन कियो विनोद विशेषी ॥
अहो सत्य तुम हरि अवतारा ❋ यह सिगरे परभाव तुम्हारा ॥
तबते सकल जगत महँ आमा ❋ निंबादित्य परयो अस नामा ॥
निंबारकको मत संसारा ❋ भयो प्रचार उदार अपारा ॥
निंबारककी कथा अनेकू ❋ विश्व प्रसिद्ध अहै सविवेकू ॥
मैं ताते संक्षेप बनायो ❋ विस्तर ग्रंथ भीति नहिं गायो ॥
निंबारकके मत अवलंबी ❋ सकल कथा जानहिं छघुलंबी ॥
श्रोतादिक देवहु जनि खोरी ❋ सुनि गुनि मंद मनीषा मोरी ॥
यदपि कथा वर्णन नहिं तोषा ❋ अति विस्तर तदपि कविदोषा ॥
दोहा-निंबारक मत अति प्रबल, अबलों विश्वमँझार ॥
चंद्र चंद्रिकाके सरिस, फैल्यो अधम उधार ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ श्रुतप्रज्ञकी कथा।

दोहा-भक्ति भूमि धारक सरिस, दिग्गज चारि महंत ॥
रामानुज गुरुभ्रात जग, मंगल करन लसंत ॥ १ ॥
सनकादिकके सरिसते, परे विरक्तहि जोय ॥
तिनको नाम प्रभाव अब, कहों सुनहु सब कोय ॥ २ ॥
अब श्रुत प्रज्ञज नाम गज, ऋषभ सरिस परधान ॥
तासु कथा वर्णन करूं, श्रोता सुनहु सुजान ॥ ३ ॥
जबते भे श्रुतप्रज्ञ सयाने ❋ नारायण तजि और न जाने ॥
रटन लगी रसना हरि नामा ❋ लग्यो न रंग तीय धन धामा ॥
देशन देशन विचरन लागे ❋ सिखवत राम जनन अनुरागे ॥

गे श्रुतप्रज्ञ जौनही देशा ❀ तहँके जन भे विगत कलेशा ॥
जातिभेद सब वैष्णव माहीं ❀ राख्यो अपने जिय महँ नाहीं ॥
राम भक्ति सब मूल अचारा ❀ सोई कियो जगत परचारा ॥
एक समय नीलाचल काहीं ❀ जात रहे वैष्णव सँग माहीं ॥
जब कछु दूरिधाम रहि गयऊ ❀ तबइक श्वपच मिलत मग भयऊ ॥
लौटचो सो प्रभु दर्शन कीन्ह्यो ❀ महाप्रसाद बेत कर लीन्ह्यो ॥
श्वपच विलोकत संत समाजा ❀ धायो मानि सकल कृत काजा ॥
दंड सरिस श्रुतप्रज्ञ चरणमें ❀ गिरत भयो गहि चरण करनमें ॥
आंखिन बही अंबुकी धारा ❀ रह्यो न तासु शरीर सँभारा ॥
तेहि श्रुतप्रज्ञ लियो उर लाई ❀ प्रेमविवश तनु सुरति भुलाई ॥

दोहा—दंड द्वैक महँ जब श्वपच, कीन्ह्यो सुरत शरीर ॥
तब धिक् २ मुख वचन कहि, बोलत भयो अधीर ॥४॥

जाति श्वपच मैं महा अपावन ❀ विप्र जाति तुम हो अतिपावन ॥
मोसों भयो महा अपराधू ❀ क्षमहिं मनुज करअवगुण साधू ॥
नीच जाति मैं प्रभुपद परस्यों ❀ जाति सुरति मैं प्रथम न दरइयों ॥
तब श्रुतप्रज्ञ वसन निज लैके ❀ पोंछन लगे तासु अँग ह्वैके ॥
कियो तासु गुरु सम सत्कारा ❀ जोरि पाणि पुनि वचन उचारा ॥
अहो अधिक तुम हमते भाई ❀ आवहु महाप्रसादहि पाई ॥
देहु हमहुँको महाप्रसादा ❀ याते नहिं अचार मरयादा ॥
सो दिय महाप्रसाद तुरंता ❀ धरचो ताहि मुखमें मतिवंता ॥
तेहिनिशितेहिसंगबसिसुखमाहीं ❀ कियो प्रभात बिदा तेहि काहीं ॥
आप गये जगदीशपुरीको ❀ बांधो जगपति धर्म धुरीको ॥
होत भई तहँ संत समाजा ❀ तिनमें तिनको नाम दराजा ॥
तहँ निवास कीन्ह्यो कछु काला ❀ तनुतजि गवन्यो लोकविशाला ॥

दोहा—संत सनेही जगतमें, सो श्रुतप्रज्ञ समान ॥
होत भयो अबलों न कोउ, जाहिर सुयश जहान ॥५॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ श्रुतदेवकी कथा।

दोहा—अब श्रुतदेव कथा कहौं, श्रोता सुनहु सुजान ॥
दिग्गज पुष्कर नाम जो, ताको भयो समान ॥ १ ॥

संत जातिमें भेद्र विधारा * राम नाम बहु याम उचारा ॥
वृत्ति विराग ज्ञानते पूरी * कृष्ण भजनते भयो न दूरी ॥
सो श्रुतदेव विदित जग माहीं * संगहि सन्त समाज सदाहीं ॥
साधुसमाज जोरि जग भावन * विचरह्यो पुहुमि करत जनपावन ॥
विचरत २ सो इक काला * एक देश महँ गयो कृपाला ॥
तहँको रह्यो अभक्त नरेशा * तासु प्रभाव अभक्तहु देशा ॥
सन्त समाज समेत तहांहीं * गयो श्रुतदेव जबै पुर माहीं ॥
मज्जन हित गे सन्त अनेका * रह्यो न नगर सरित सर एका ॥
रहे कूप वापी बहुतेरे * उपवन बाग वाटिका नेरे ॥
भरन लग्यो जल मज्जन हेतू * तब माली कह सुनहु अचेतू ॥
यह जल है हित सींचन बागा * काहू मज्जन हेतु न लागा ॥
माली भरन दियो जल नाहीं * चलयो सन्त शोकित मनमाहीं ॥

दोहा—यहिविधि जहँ जहँ साधु गे, वापी कूप समीप ॥
तहँ तहँ माली रोंकि दे, शासन भाषि महीप ॥ २ ॥

तहँ श्रुतदेव समीप सिधारी * दुखित सन्त सब गिरा उचारी ॥
हे पुर सहित शरण ते खाली * वापी कूप न रोंकत माली ॥
कहँ मज्जन हित जाहिँ कृपाला * मज्जन हित प्रभु होत विहाला ॥
तब श्रुतदेव कह्यो मुसक्याई * अहै ईश ऐसही रजाई ॥
करहु भजन बिन मज्जन कीन्हे * मिलै नीर अनते चलि दीन्हे ॥
तब सब सज्जन मज्जन हीना * करन लगे तहँ भजन प्रवीना ॥
दंड एक महँ तहँ पुर माहीं * रह्यो कूप वापी जल नाहीं ॥
परयो नगर महँ हाहाकारा * प्रजा पुकार कियो नृप द्वारा ॥
भूप सचिव लै कियो विचारा * तब माली चलि वचन उचारा ॥
आयो एक साधु नृप बागा * मज्जन हेतु भरन जल लागा ॥

मैं तेहि असन दियो जल नाहीं ❋ दुखित गयो फिरि आश्रम काहीं॥
इक श्रुतदेव नाम हरिदासा ❋ रहत संत सो तिनके पासा॥
दोहा-नृप मंत्री सावंत सब, कारण सकल विचारि॥
परे चरण श्रुतदेवके, त्राहि पुकारि पुकारि॥ ३॥
प्रजा सचिव नृप सुभट सब, भे शरणागत तासु॥
शरणागतके होतहीं, मिटी जनन सब त्रासु॥४॥
पार्थिव प्रजा समेत सो, पावन है गो देश॥
धन्य धन्य हरिभक्त जग, हरहिं कलेश अशेश५॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे पंचमोऽध्याय॥ ५॥

अथश्रुत उदधिकी कथा।

दोहा-शीलउदधि हरि रति उदधि, उदधि ज्ञान विज्ञान॥
वरणों श्रीश्रुतिउदधिको, अमी उदधि आख्यान॥ १॥
श्रीश्रुतिउदधि नाम जिन केरो ❋ वामन दिशि गज सम तेहि हेरो॥
भगवत भक्ति भूमि शिर धारचो ❋ दिग्गज सरिस सुयश विस्तारचो॥
दिय निज सर्वस संतन हेतू ❋ निशिदिन करहिं भावना नेतू॥
रह्यो इकांत शांत अति दांता ❋ शास्त्र प्रात बोधक वेदांता॥
विदित विनोदित विश्व विहारी ❋ अधम अज्ञान उदोत उग्यारी॥
अस श्रुतिउदधि करत सचारा ❋ गंगा मज्जन हेतु सिधारा॥
मारग महँ इक नृपपुर रहेउ ❋ तेहि उपवन निशि निवसत भयउ॥
तेहि निशि चोर राज घर जाई ❋ चोरी कियो वित्त समुदाई॥
चोर भागि तेहिं उपवन आये ❋ खबरि पाय भूपतिभट धाये॥
बचत न चोर जानि जिय माहीं ❋ माला पहिरायो तेहि काहीं॥
सो श्रुतिउदधि मगन हरिध्याना ❋ माला पहिरावत नहिं जाना॥
चोर भागिगे दूरि अदेखे ❋ भूपति भट श्रुतिउदधिहि देखे॥

दोहा-तिनहिं निरखि मणिमालयुत, जानि भूप भट चोर
पकरि बांधि लै चलत भे, तुरत राजघर ओर ॥ २ ॥

भूपति देखि कोप अति कीन्ह्यो * तेहिं बँधवाय कोठरी दीन्ह्यो ॥
तामें महाधूप करि दयऊ * तेहिं हरिध्यानभान नहिं भयऊ ॥
बांधें बीति गई निशि जबहीं * भूपतिशीश पीर भै तबहीं ॥
वैद्य अनेकन औषध दीन्हे * मिटी न पीर यतन बहु कीन्हे ॥
तब अनुमान सचिव अस सांधे * बीती निशा संत इक बांधे ॥
यहि कारण अब मिटत न पीरा * तजहु संत नतु नशी शरीरा ॥
तब खोल्यो कोठरी किवारा * बैठे जहँ श्रुतिउदधि उदारा ॥
कछु नहिं भान भयो तनु माहीं * को पीरा दीन्ह्यो केहिकाहीं ॥
तब राजा मुख त्राहि पुकारी * दियो चरणमहँ मस्तकधारी ॥
कह्यो क्षमहु अपराध हमारा * तब श्रुतिउदधिहु वचन उचारा ॥
कह्यो कौन कीन्ह्यो अपराधा * काह क्षमावहु केहिकी बाधा ॥
मोहिं पर्‍यो अबलों नहिं जानी * बैठि इकांत भावना ठानी ॥

दोहा-तब राजा बोलत भये, देहु हाथ मम माथ ॥
अब शरणागत मोहिं करि, कीजै नाथ सनाथ ॥ ३ ॥
तब भूपति शिर हाथधरि, हर्‍यो सकल शिरपीर ॥
ताहि मंत्र उपदेश करि, कियो भक्त रघुवीर ॥ ४ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ श्रुतिधामकी कथा।

दोहा-अब वरणौं श्रुतिधामको, रघुपति भक्त अनन्य ॥
नाम पराजित दिशि करी, भयो तासु सम धन्य ॥ १ ॥

श्रीहरिभक्त अनन्य उदारा * हरि हरिजन नहिं भेदविचारा ॥
कंठी माला धारण काहीं * किय प्रणाम प्रभु गुनि मन माहीं ॥
हरि यश रहित कथा नहिं सुनेऊ * नहिं अभक्त भाषण चित गुनेऊ ॥
संतन नाम रूप यश धामा * मान्यो हरि समान वसु यामा ॥

जहँ जहँ होय राम गुण गाथा ❋ तहँ तहँ लै सब संतन साथा॥
करै श्रवण मन मगन प्रेममें ❋ बहत सलिल दृग सहित नेममें॥
यहि विधि विचरत वसुधा माहीं ❋ छायो सुयश विमल चहुँघाहीं॥
एक समय लै संत अनंता ❋ तीरथपति गवने मतिवंता॥
कियो त्रिवेणी महँ अस्नाना ❋ वर्णन लागे कथा पुराना॥
सन्त मन्डली जुरी अपारा ❋ तहां सन्त इक वचन उचारा॥
नाथ बडो कौतुक मन लागत ❋ यह सन्देह न जियते भागत॥
वर्ण्यो यहि विधि वेद पुराना ❋ सो हम सुना वार बहु काना॥

दोहा-गङ्गा यमुना सरस्वती, सङ्गम वेणी नाम॥
गङ्गा यमुना लखिपरै, नहिं सरस्वती ललाम॥२॥

ताको हेतु बतावहु नाथा ❋ विनती करौं नाय पद माथा॥
तब श्रुतिधाम कह्यो अस वयना ❋ देखहु सकल सन्त निज नयना॥
घटिका द्वै महँ सरस्वति धारा ❋ वेणीमधि निकसति सुखसारा॥
तब सब साधु आचरज मानी ❋ वेनी लगे निहारन ज्ञानी॥
घटी द्वैक महँ जमुना ज्वैकै ❋ पश्चिमसरस्वति कूपहि ह्वैकै॥
बही सरस्वतीकी तहँ धारा ❋ अरुण वर्ण तेहि तेज अपारा॥
उठि उठि सन्त विलोकन लागे ❋ श्रीश्रुतिधाम वचन अनुरागे॥
श्रीश्रुतिधाम ध्यान धरि धीरा ❋ बैठि अचल सुमिरत रघुवीरा॥
सन्त कह्यो मज्जन प्रभु करहू ❋ सरस्वति धार देखि सुख भरहू॥
तब श्रुतिधाम उठे सुख छाई ❋ मज्जन कीन्ह्यो सरस्वति जाई॥
जय ध्वनि रही चहूंदिशि छाई ❋ सबै करी श्रुतिधाम बडाई॥
लाखन मनुज मकरके वासी ❋ मज्जन करि भे आनँद रासी॥

दोहा-औरहु श्रीश्रुतिधामके, अहैं चरित्र अपार॥
विस्तरकी भय मानि उर, मैं नहिं कियो उचार॥३॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे सप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

अथ लालाचार्यकी कथा।

दोहा-लालाचारजको कहौं, अब सुंदर इतिहास ॥
जाहि सुनत हरिजननमें, दृढ उपजत विश्वास ॥ १ ॥
लालाचारज यक हरिदासा * प्रगटे द्राविड दक्षिण आसा ॥
श्रीरामानुजके जामाता * सकल शास्त्रमहँ महिविख्याता ॥
एक समय यतिराज समीपा * कीन्ह्यो विनय सुखद कुलदीपा ॥
सब संतन महँ हे यतिराऊ * राखहु कोन भांति मैं भाऊ ॥
रामानुज बोले मुसक्याई * मानहु सकल संत कहँ भाई ॥
तबते लालाचारज ज्ञानी * संतन भ्राता सम लिय मानी ॥
एक समय कावेरी माहीं * भोर समय तहँ मज्जन काहीं ॥
लालाचारज केरी नारी * जात भई तिय संग सिधारी ॥
तहँ इक मृतक तिलक युत माला * बहि आयो सरिता तेहिकाला ॥
तब लालाचारज तियकाहीं * हँसी तिया लखि मृतकतहांहीं ॥
तेरो देवर आवत बहतो * देखत सबै कोऊ नहिं गहतो ॥
तब लालाचारजकी नारी * चलि घर पतिसों गिरा उचारी ॥
दोहा-कावेरी इक मृतक लखि, देवर मोर बनाय ॥
कियो सकल हाँसी तिया, यह दुख सह्यो न जाय ॥ २ ॥
लालाचारज सुनि यह बाता * ल्याये पकरि मानि तेहि भ्राता ॥
क्रिया कर्म भ्राता सम कीन्ह्यो * विप्रन सकल निमंत्रण दीन्ह्यो ॥
कह्यो विप्र यह बंधु न तेरो * नाहिं मनिहै जो नेवता फेरो ॥
तब रामानुजके ढिग जाई * लालाचारज कह बिलखाई ॥
तब तो संतन मानत कोई * कोन भांति भोजन प्रभु होई ॥
तब यतिपति बोले कछु कोपी * जे तेरे नेवताके लोपी ॥
तिनको जानहु परम अभागी * तुव नेवता विकुंठ लगि लागी ॥
अस कहि यतिपति किय आकर्षण * भेज्यो निज पार्षद संकर्षण ॥
ते सब विप्र स्वरूप सोहाये * लालाचारजके घर आये ॥
भोजन करि लहिके सत्कारा * कियो गगन पथ है संचारा ॥

जात गगन पथ तिनहिं निहारी * सकल विप्र आश्चर्य विचारी ॥
लालाचारजके घर जाईं * जूंठन खान लगे पछिताईं ॥
दोहा—लालाचारजकी कथा, यहि विधि अहै अनंत ॥
विस्तर भय भाष्यो नहीं, क्षमा कियो सब संत ॥ ३ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे अष्टमोऽध्यायः ॥८॥

अथ गुरुचेलाकी कथा।

दोहा—गुरु चेलाकी अब कहौं, कथा परम कमनीय ॥
सुनहु सकल श्रोता सुमति, कर्म अनिर्वचनीय ॥ १ ॥
गुरु चेला गंगा तट दोऊ * रहे बसत आनंदित सोऊ ॥
लगे गुरू बदरीवन जाने * चेलाको अस वचन बखाने ॥
जबलौं इत आऊं मैं नाहीं * तबलगि वस्यो गंग तटमाहीं ॥
कहो शिष्य विन दर्श तुम्हारा * होई को इत मोहिं अधारा ॥
गुरु कह जबलों दरशन मोरा * तबलगि है गंगा गुरु तोरा ॥
अस कहि गयो गुरू बदरीवन * शिष्य गुन्यो सुरसरि गुरु ताक्षन ॥
तबते शिष्य देवसरि माहीं * मज्जनहेतु हिल्यो पुनि नाहीं ॥
कियो कूप जलसों सब काजा * मान्यो नहीं जगतकी लाजा ॥
तब गंगातटके सब वासी * मान्यो ताहि धूत संन्यासी ॥
जब बदरीवनते गुरु आये * तासु दशा तिनसों सब गाये ॥
महामूढ है शिष्य तुम्हारा * गंगा तजि किय कूप अधारा ॥
तब गुरु अचरज गुनि मनमाहीं * चले गंग महँ मज्जन काहीं ॥
दोहा—चले शिष्य सब संग महँ, तेहुको लियो बोलाय ॥
गये गुरुहि लिय सलिलमें, और शिष्य समुदाय ॥ २ ॥
सो गुरु मानि देवसरि काहीं * धरचो सलिल महँ निज पद नाहीं ॥
तब गुरु तासु परीक्षा हेतू * बोले वचन बांधि मन नेतू ॥
धरचो तीर कौपीन हमारा * ल्याउ शिष्य मो ढिग यहि बारा ॥
तब शिष्यहि पर भो संदेहा * केहि विधि बचै गंग गुरु नेहा ॥

हे गंगा राखहु मम लाजा * परिगो महाकठिन अब काजा ॥
तब सुरसरि निज भक्त विचारी * प्रगट कियो कौतुक यह भारी ॥
जहँ शिषि तहँते गुरु पर्यन्ता * प्रगटे पद्मिनि पत्र अनंता ॥
तिन पद्मिनि पत्रन पग देके * चल्यो शिष्य गुरु सुमिरण केके ॥
बूडे पद्मिनि पत्र न जलमें * लखि अचरज माने तेहि थलमें ॥
गुरु निहारि यह शिष्य तमासा * कीन्ह्यो तापर पूर विश्वासा ॥
कहत रहे जे ताहि पखंडी * हांसी योग भये ते दंडी ॥
तब गुरु ताहि अङ्क बैठायो * जय जय शब्द जगत महँ छायो ॥

दोहा-गुरुते चेला भो अधिक, नाहिं अचरज उर लाव ॥
यह सिगरो तुम जानियो, सुरसरिभक्ति प्रभाव ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ देवाचारजकी कथा ।

दोहा-श्रुति विचित्र वर्णन करों, श्रोता सुनहु सुजान ॥
देवाचार्यके भक्तको, यह सुंदर आख्यान ॥ १ ॥

देवाचारज तिनको नामा * भयो भक्त इक पूरण कामा ॥
साधुन मंडन मोद प्रदाता * ध्यायो नित हरि पद जलजाता ॥
जोन देशमहि कियो पयाना * पावन भे तहँके जन नाना ॥
एक समय गवने सो काशी * पंथ मिली नगरी छबिराशी ॥
विमल बाग महँ कियो निवासा * तहँ इक अर्जुन पादप खासा ॥
मज्जन करि ध्यावत जगबंधू * बांचन लागे दशमस्कंधू ॥
यमलाअर्जुन कह्यो प्रसंगा * जुरे बहुत जन साधुन संगा ॥
कथा प्रसंग लग्यो अध्याया * तब यह कौतुक तहँ प्रगटाया ॥
आकस्मात भयो तरु पाता * कह्यो पुरुष इक अति अवदाता ॥
सो देवाचारज पद वन्दी * चढि विमान गो लोक अनन्दी ॥
जात समय अस बोल्यो बैना * मोरे पुण्यलेश कछु लैना ॥

पूरवजन्म केर हौं पापी * परतियगामी चुगुल सुरापी ॥
दोहा-सांसति सो मम मीच मै, नरक गये लै दूत ॥
तहां सहस्रन वर्षलौं, भोग्यों दुःख अकूत ॥ २ ॥
फेरि लह्यों तरु जन्मको, लहि तुव कथा प्रभाव ॥
अब अपाप ह्वै जात हौं, उर अति बडो उराव ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथ हरियानंदकी कथा।

दोहा-अब सुनिये चित दै सकल, हरियानंद आख्यान ॥
जाहि सुनत सब सन्तके, उपजत मोद महान ॥ १ ॥
हरियानंद भागवत पूरे * हरि आनंद रहत नहिं झूरे ॥
दिनप्रति करै साधुसेवकाई * माया विभव विलास विहाई ॥
एक समय अषाढ जब आयो * श्रीजगदीश दरश चितचायो ॥
रथयात्राके अवसर माहीं * रथ पर रुक्यो जाइ हरि काहीं ॥
रुक्यो रह्यो रथ टर्यो न टारे * जगन्नाथ जय मनुज उचारे ॥
हरियानन्द गयो रथ नेरे * सब मनुजन वाणी अस टेरे ॥
छोडि देहु रथ नाथ चलैहैं * लाखन जन अभिलाष पुजैहैं ॥
छोडि दिये तब सब रथ काहीं * माने अति कौतुक मन माहीं ॥
निज जन प्रण पूर्यो यदुराई * आकस्मात चल्यो रथ धाई ॥
द्वै शत पग रथ बिना चलाये * चलो गयो घर घर रव छाये ॥
हरि आनन्द चरणमें आई * गिरी सकल जनकी समुदाई ॥
माचिरह्यो सब थल जयकारा * अस प्रभाव हरि जन संसारा ॥
दोहा-यहि विधि हरियानंदके, और अमित इतिहास ॥
कहँलों मैं वर्णन करों, ग्रंथ बढनकी त्रास ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अथ राघवानंदकी कथा।

दोहा-हरिजन हरियानन्दके, शिष्य राघवानन्द ॥
तिनको अब इतिहास मैं, वर्णत हौं सानन्द ॥ १ ॥

भक्त राघवानंद सुजाना * भये अनूप प्रभाव जहाना ॥
चारिहु आश्रम चारिहु वरणा * कीन्ह्यो सन्मुख यदुपति चरणा ॥
जेहि जेहि देशन कियो पयाना * दै उपदेश दियो निर्वाना ॥
साधु शिरोमणि सज्जन सांचो * रोज २ रघुपति रंग रांचो ॥
एक समय काशीमें आये * वास करत कछु काल बिताये ॥
एक दिवस गत दिन इक यामा * भय पंडित समाज तेहि ठामा ॥
तेहि क्षण नृपसुत करन समाश्रय * बोल्यो करन कृष्णकी आश्रय ॥
तेहि क्षण दौरि दूत द्वै आये * आचार्यन आगमन सुनाये ॥
आशू लेन जान मन दयऊ * तेहि क्षण कार्य तीनि पारि गयऊ ॥
ध्याय तवै मन अंतर्यामी * तीनि रूप ह्वैगे तहँ स्वामी ॥
तीनहु कर्म कियो इक काला * कोऊ नहिं जान्यो यह ख्याला ॥
पाछे भयो जबै निरजोसा * तब सब जानि कियो अफसोसा ॥

दोहा-श्रीहरिभक्ति प्रभाव गुणि, अचरज गुन्यो न कोइ ॥
ब्रह्मरंध्रते प्राण तजि, गयो ब्रह्मपुर सोइ ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथ रामानंदकी कथा।

सो०-रामानन्द महान, भये भक्त यदुनाथके ॥
तिन आख्यान सहसान, आदि अन्तलों को कहै ॥ १ ॥
पीपा औ रैदास, नाऊसेन सुजान अति ॥
अरु कबीर भवनाश, धनाजाट इत्यादि बहु ॥ २ ॥

शिष्य चतुर्दश सति यहि भांती * इक इकते महिमा विख्याती ॥
तिनके शिष्यनकी जब गाथा * कहिहौं नाय साधु पदमाथा ॥

तब रामानंदहिकी महिमा ❀ अपने ते प्रगटी यहि महिमा ॥
पै कछु कथा कहौं सुखदाई ❀ ताहि सुनो संतो मन लाई ॥
किय अभक्त जनसों नहिं भाषन ❀ कियो भक्ति वर्षन जन राखन ॥
वर्ष सतशतलौं तनु राख्यो ❀ परमारथ तजि और न भाख्यो ॥
तासु प्रभाव विदित चहुँ घाहीं ❀ भरत खंड जानत को नाहीं ॥
बांधवगढ इक दुर्ग हमारो ❀ वरुणाचल तेहिं वेद उचारो ॥
तहँ बघेल वर वंश विशाला ❀ वास करत अबलों सब काला ॥
तहँको सेन नाम कोउ नाऊ ❀ कहिहों आगे तासु प्रभाऊ ॥
सो नापित इक समय सुजाना ❀ पायो अस निदेश भगवाना ॥
रामानंद शिष्य तुम होहू ❀ मिटिहै तब माया मद मोहू ॥

दोहा-हरि अनुशासन पायकै, काशी कियो पयान ॥
रामानन्द समीपमें, कीन्ह्यों विनय बखान ॥ १ ॥

रामानंद शूद्र तेहि जानी ❀ बैठे पट कवार कहँ ठानी ॥
सेन समीप माहँ गे जबहीं ❀ पट कवार टरिगो तहँ तबहीं ॥
पुनि बांध्यो पुनि टरयो तुरंते ❀ रामानंद गन्यो तेहि संते ॥
दौरि मिले भीतर लै गयऊ ❀ सादर शिष्य करत तेहिं भयऊ ॥
शिष्य होन जब गे रैदासा ❀ रामानंद कह्यो सहुलासा ॥
चर्मकारकी जाति तिहारी ❀ शिष्य करौं किमि अहैं अचारी ॥
जब शासन देहैं हरि मोको ❀ करब शिष्य तबहीं हम तोको ॥
अस कहि विदा कियो रैदासे ❀ भोजन हित गे आप अवासे ॥
पट कवार बान्धे चहुँ ओरा ❀ देख्यो यह कौतुक तेहि ठोरा ॥
लीन्हें सलिल खडे रैदासा ❀ तब लै जल बैठायो पासा ॥
पट कवारको खोलि निहारा ❀ दूरि बैठ रैदास उदारा ॥
दौरि मिले हरिशासन जानी ❀ कीन्ह्यो शिष्य सकल विधि ठानी ॥

दोहा-यहि विधि रामानन्दके, अहैं चरित्र अनन्त ॥
कहँलौं मैं वर्णन करौं, जोहि अधीन भगवन्त ॥२॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

अथ अनंतानंदकी कथा ।

दोहा-भक्त अनंतानंदको, अब वर्णौं आख्यान ॥
संतन हानि अनंद जेहिं, प्रण पाल्यो भगवान ॥ १ ॥

भक्त अनन्तानन्द सुजाना * भयो निधान ज्ञान विज्ञाना ॥
रामनाम महँ वचन विहारा * राम सनेह पियूष अधारा ॥
जोरयो रघुपति भक्त समाजा * कीन्ह्यो परउपकारहिं काजा ॥
जेहिं जेहिं देशन कियो पयाना * तेहिं तेहिं पापन पुंज पराना ॥
संभरदेश गये इक काला * तहँको रह्यो अभक्त भुवाला ॥
रह्यो अपूरब भूपति बागा * तापर रह्यो राव अनुरागा ॥
बड बड आमरूदफल जाके * माली रह्यो दिवस निशि ताके ॥
कोउ वैष्णव तहँ जाय निहारयो * स्वामीसों पुनि आय उचारयो ॥
वीहीके फल सुखद महाना * लगे बाग महँ गुरु भगवाना ॥
कोहु कहँ टोरन देत न माली * मांगेहु पर झुरके हम खाली ॥
तबहिं अनन्तानन्द सुजाना * शिष्यनसों अस वचन बखाना ॥
एकहु फल वीहीके बागा * नहिं रहिहैं अस मोहिं सतिलागा ॥

दोहा-तेहि क्षण निज जन पूर प्रण, करन सत्य भगवान
कियो बाग वीहीरहित, कौतुक मच्यो महान ॥ २ ॥

पहुँचावन हित फलकी डाली * टोरन वीही गो जब माली ॥
तरुन रहित फल देख्यो जबहीं * भयो दुखी उपज्यो डर तबहीं ॥
कह्यो कौन कारण यह भयऊ * बिन फल सकल बाग ह्वै गयऊ ॥
तब कोउ अनुचर कह्यो बुझाई * साधु एक आयो इत धाई ॥
मांग्यो फल दीन्ह्यो हम नाहीं * सो किय कौतुक यहिक्षण माहीं ॥
तब माली खोजत चलि आयो * नाथ चरणमें शीश नवायो ॥
भूपतिसों सब कह्यो हवाला * आयो द्रुतहि दौरि महिपाला ॥
निरखि अनन्तानन्द स्वरूपा * तुरतहिं भयो भक्ति युत भूपा ॥
आय शिष्य भो युत परिवारा * सकल देश पुनि हुकुम प्रचारा ॥

भयो शिष्य तब खिगरो देशू * मिटत भयो भव केर कलेशू ॥
कह्यो अनन्तानन्द प्रसन्ना * भयो बाग पुनि फल सम्पन्ना ॥
राजा प्रजा भये गतिभागी * भवसम्भावित भूरि भव भागी ॥

दोहा-ऐसे अमित चरित्र जग, कियो अनन्तानन्द ॥
कहँलौं मैं वर्णन करौं, अहै मोरि मतिमंद ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ नरहरिदासकी कथा।

दोहा-शिष्य अनन्तानन्दके, नरहरिदास सुजान ॥
तासु कथा वर्णन करौं, अवशि अनन्द निधान ॥ १ ॥

नरहरिदास भक्त इक भयऊ * कबहुँ सो जगन्नाथपुर गयऊ ॥
मन्दिर भीतर प्रविश्यो जबहीं * करत दन्डवत देख्यो सबहीं ॥
तब मन महँ अस कियो विचारा * जब जाई भुवि शीश हमारा ॥
तब ह्वै हैं दर्शन अवरोधू * क्षणभर विरह सनेह समोधू ॥
अस गुनि पद करि प्रभुकी ओरा * परे उतान लखत तेहि ठोरा ॥
पंडा यह अपचार निहारा * तेहि घसीटि बाहिरे निकारा ॥
तब जेहि दिशि डारयो तेहि काहीं * तहँ द्वार भो मन्दिर माहीं ॥
पुनि पछीत महँ ताको डारा * तहां भयो हरि मन्दिर द्वारा ॥
यात्री पन्डा देखि प्रभाऊ * परे सबै नरहरिके पाऊ ॥
त्राहि २ क्षमिये अपराधा * धोखे महँ दीन्ह्यो हम बाधा ॥
सो नहिं कीन्ह्यो हर्ष विषादा * यह हरिदासनकी मर्यादा ॥
ऐसे अहैं अनेक चरित्रा * हरिभक्तनके जगत पवित्रा ॥

दोहा-सोई नरहरिदास प्रभु, जाको सुयश प्रकास ॥
जासु शिष्य जगविदित भो, स्वामी तुलसीदास २॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

अथ भावानन्दकी कथा ।

दोहा-अब मैं भावानन्दकी, कथा कहौं रसखानि ॥
जासु सुनत हरि देत पुर, पकरि पाणिसों पानि ॥ १ ॥

छंद-गये भावानंद जो यकसमय तीरथराज ॥
बसे मकर प्रयंत सँग बिलसन्त सन्त समाज ॥
न्हाइ पूरणमासिको अधरात कीन्ह पयान ॥
तरन हेत सु तरनिजा तट तरनिको चौआन ॥
कह्यो केवट हुकुम हाकिम तरनको निशि नाहिं ॥
गवन अवशि विचारि सुमिरचो श्रीनिवासहि काहिं ॥
सुमिरि हरिको हिले पैदर यमुनमध्य दहार ॥
भयो जल तब जानुलौं भे संत सिगरे पार ॥
यह निरखि कौतुक सकल साधु अगाव आनँद पाय ॥
यश विमल भावानंदको दीन्ह्यो चहूं दिशि छाय ॥
यहि भांति भावानन्दके हैं चरित विविध प्रकार ॥
मैं कियो वर्णन नहिं विशेष विचारि अतिविस्तार ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथ रामदास और सारीदासकी कथा ।

दोहा-रामदास अरु दूसरो, सारीदासहि नाम ॥
शिष्य अनन्तानन्दके, भये युगल मतिधाम ॥ १ ॥

हरि प्रेमी नेमी जग क्षेमी ❀ रोजहिं राम रास रुचि नेमी ॥
नवधा भक्ति विभेदविज्ञाता ❀ भगवद्भक्ति विभेद अज्ञाता ॥
हरि चरणोदक नीर न जाना ❀ हरि अवतार न गुन्यो समाना ॥
साधु मानप्रद आपु अमानी ❀ उभय भक्त मे परम विज्ञानी ॥
एक समय विचरत सब देशा ❀ चित्रकूट गे सुभग प्रदेशा ॥
चित्रकूट दिशि पश्चिम ठामा ❀ त्वरा नाम रह्यो इक ग्रामा ॥
तहँके वासिनकी यह रीती ❀ करैं साधुसों अवशि अनीती ॥

कबहुँ न करैं सन्त सत्कारा ❀ ठाढो होन न पाव दुवारा ॥
रामदास औ खारीदासा ❀ गये ग्राम तहँ लखन तमासा ॥
देखत दूरि दूरि सब भाषे ❀ ठाढहु होत माहँ अति माषे ॥
तब दोउ साधु ग्रामके दूरी ❀ बसे नदी तट लहि दुख भूरी ॥
तेहि निशि ग्रामाधिप सुत काहीं ❀ डस्यो भुजंग मर्यो क्षण माहीं ॥

दोहा-भोर जरावन लै चले, गये जबहिं सरि तीर ॥
तिनहिं देखि दोउ साधु तहँ, बोले वचन गँभीर ॥ २ ॥
जियहि जो सुत तौ देहु का, दीजै सत्य बताय ॥
जौन कहो सो देहिं हम, बोले सबै हहाय ॥ ३ ॥
तब दोउ साधु कह्यो विहँसि, अस मर्य्यादा होय ॥
करहु सबै सत्कार तुम, संत जो आवै कोय ॥ ४ ॥
तब बोले सब ग्रामके, ऐहैं जो हरिदास ॥
जो सुत जियै तौ करब हम, युत सत्कार सुपास ॥ ५ ॥
तब दोउ सन्त तुरंत उठि, यदुपतिको शिर नाइ ॥
अपनो चरण छुवायकै, दीन्ह्यो सुतहिं जिआइ ॥ ६ ॥
तबते त्वरीं गांवकी, अबलौं ऐसी रीति ॥
आवै जो कोउ साधु तहँ, करै ताहि अति प्रीति ॥ ७ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अथ पयहारीजीकी कथा।

दोहा-पयहारीजीको करौं, अब इतिहासप्रकास ॥
जाहि सुनत समुझत सकल, हुलसत है हरिदास ॥ १ ॥

जयपुर कछवाहनको ग्रामा ❀ तहां रह्यो गालव मुनि धामा ॥
सो गलता गादी कहवावै ❀ सन्त समाज तहां सुख पावै ॥
सो गद्दी महँ अति तपधारी ❀ भयो एक हरि जन पयहारी ॥
ताके शिष्य महा परभावा ❀ एकते एकन महत्त्व बढावा ॥

तिनकी कथा कहौंगो आगे * पयहारी यश सुनहु सुभागे ॥
गलता गादी प्रभु पैहारी * भयो सकल संतन सुखकारी ॥
सहसन संत करैं तहँ वासा * सबको अतिशय होत सुवासा ॥
एक समय पयहारी दासा * कांचीके स्वामीके पासा ॥
नेवता हित द्वै संत पठायो * कांचीके स्वामी सुख पायो ॥
स्वामी तबै करन व्यवहारा * शुभ मुद्रा शत पंच पवारा ॥
वैष्णव मुद्रा लै द्रुत धाये * जब जैपुर बजार मधि आये ॥
यक गणिका स्वरूप लखि मोहे * धनहु आपने ढिग महँ जोहे ॥

दोहा–बारवधूसों कह्यो बिहँसि, मुद्रा लै शत पांच ॥
चारि दंड बीते निशा, देहु हमैं सुख सांच ॥ २ ॥

बारविलासिनि गुनि धनवाना * कीन्ह्यो तिनको वचन प्रमाना ॥
साधु गये जब अपने डेरा * चारि दंड निशि गइ भइ बेरा ॥
मोहित मदन बार तिय गेहू * चले संग धन धरि भरि नेहू ॥
पयहारीके मंत्र प्रभाऊ * तिनको धन कुपंथ किमि जाऊ ॥
देखि पर्यो नहिं गणिका गेहू * फिरे सकल निशि भरि संदेहू ॥
उतै बारातिय अवधि व्यतीते * हेरन चली मानि दुख जीते ॥
सोऊ चारि पहर निशि वाग्यो * संत खोज कतहूं नहिं लाग्यो ॥
भटकत भोर भये भै भेटा * उपज्यो ज्ञान मदन भय मेटा ॥
धिक्धिक् कियो संत निजकाहीं * हाय कौन गति भै क्षण माहीं ॥
तहँ सतसंग प्रभाव विशेषी * गणिकहु अधम आप कहँ लेषी ॥
चलन लगे जब संत दुखारी * गणिका तब अस गिरा उचारी ॥
लाखनको धन है मम गेहू * देहौं संतन बिन सन्देहू ॥

दोहा–लै चलिये मोहिं प्रभु निकट, कीजै मम उद्धार ॥
विषयविवश मैं विविध विधि, भुगत्यों दुख संसार ॥ ३ ॥
गणिकाको अति शुद्ध लखि, लीन्ह्यो सन्त लेवाय ॥
कपट छांड़ि निज गुरु निकट, दिय वृत्तांतबताय ॥ ४ ॥
पयहारी परसन्न ह्वै, गणिकै लियो टिकाय ॥

हरिसन्मुख किय नृत्य सो, लिय गतिविषय विहाय॥५
सुनहु सन्त दूजो चरित, पयहारीजी केर ॥
वर्णत जाहि न होत है, मन सन्तोष घनेर ॥ ६ ॥

पयहारीजी उत्तर ओरा ✽ गये करन तप नंदकिशोरा ॥
गुहा बैठि यक ध्यान लगाई ✽ यहि विधि दिय कछु काल विताई॥
यक अहीर महिषी बहुल्यावै ✽ गुहा निकट महँ रोज चरावै ॥
धर्यो कमंडलु जहँ पयहारी ✽ तहँ यक महिषी सपदि सिधारी ॥
तेहि पर थन करि ठाढी होती ✽ भरत कमंडलु पयकी सोती ॥
यहि विधि बीति गयो चौमासा ✽ यक दिन लख्यो अहीर तमासा ॥
पयहारीको दर्शन पायो ✽ दौरि तासु चरणन शिर नायो ॥
पयहारीजी कह अस बैना ✽ तेरी भैंस दियो मोहिं चैना ॥
मांगु मांगु वर जो मन होई ✽ कह्यो अहीर सुनहु प्रभु सोई ॥
दूध पूत दिय दैव हमारे ✽ नहिं आशा अब दया तुम्हारे ॥
पै मम भूपति है धनहीना ✽ धनी होत सो तुम्हरो कीना ॥
भये प्रसन्न तबहि पयहारी ✽ कह्यो धन्य तैं गिरा उचारी ॥

दोहा—स्वारथ वश सिगरो जगत, पर उपकार विहीन ॥
पर उपकार प्रवीन जे, तेई मनुज प्रवीन ॥ ७ ॥

मेघ वृक्ष सरि सत्य सपूती ✽ परहित हेतु होति करतूती ॥
जिनको तन मन धन पर हेतू ✽ तेही मनुज मनुजकुल केतू ॥
परहित होनी संत विभूती ✽ निज हित होती खलन कुपूती ॥
अस कहि पयहारी पठवायो ✽ सो अहीर अवनीपति ल्यायो ॥
राजा गह्यो आय युग पादा ✽ पयहारी दिय आशीर्वादा ॥
तबते धरा धान धन पूरी ✽ राज्य भई नहिं संपति झूरी ॥
राजा संतन विविध खवायो ✽ हरिमंदिर अनेक बनवायो ॥
करत कृष्ण कीर्तन दिन जाहीं ✽ एकहु क्षण नहिं जात वृथाहीं ॥
कृष्ण निवेदित भोजन करहीं ✽ गाय गाय हरिगुण सुख भरहीं ॥
एक दिवस राजा हरिसेवी ✽ मँगवायो हरिहेत जलेबी ॥

नृप बालक ताको कछु खायो ❀ राजा शिर काटनको धायो ॥
बच्यो भागि हरि मंदिर माहीं ❀ नृप कह मुख देखब हम नाहीं ॥

दोहा-संत आय तब विनय करि, क्षमा करायो खोरि ॥
राजा दै धन मोल जिय, तबसे बच्यो बहोरि ॥ ८ ॥
कुल्लूनगर महीं अमर, जूता बेचन लाग ॥
दै सम्पति हटक्यो नृपति, इमि ब्रह्मज्ञ अदाग ॥ ९ ॥
संत भोज यक दिन भयो, नृपसुत परुसन लाग ॥
गर्भवतिहुँ द्वै पातरी, परस्यो भरि अनुराग ॥ १० ॥
पयहारी परभावते, अस नृप भयो प्रवीन ॥
नहिं सन्तन आश्चर्य कछु, द्रवत सदा जे दीन ॥ ११ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

अथ कीलदासकी कथा ।

दोहा-श्रोता सुनहु सुजान सब, कीलदास इतिहास ॥
जाहि सुनत उर तम हरत, सन्त प्रभाव प्रकास ॥ १ ॥
अहै देश पश्चिम गुजराता ❀ तहँ यक खत्री मति अवदाता ॥
सो कीन्हो हरि महँ अनुरागा ❀ ताते भयो जगत बडभागा ॥
शाह समीप लग्यो रोजगारू ❀ तासु कृपा भो विभव अपारू ॥
सूबा भयो देश गुजराता ❀ सुमिरत नित हरिपद जलजाता ॥
विभव विवश नहिं सुमिरनत्यागा ❀ करै काज हरिमहँ मन लागा ॥
नाम सुमेरु देव जग जाको ❀ धर्म धुरंधर भो वसुधाको ॥
तासु पुत्र यक भयो सुजाना ❀ तब विरक्त ह्वै तज्यो मकाना ॥
परमहंस ह्वै विचरन लाग्यो ❀ हरि सुमरत बहु देशन वाग्यो ॥
भयो शिष्य पयहारीजीको ❀ किये कृपा तापर पिय सीको ॥
एक समय दिल्लीपुर आयो ❀ शिला बैठि हरि ध्यान लगायो ॥
कढ्यो शाह तेहि मारग ह्वैकै ❀ कियो सलाम सकल जन ज्वैकै ॥

सो ब्रह्मांड निरखि निज प्राना * बादशाहको भयो न भाना ॥

दोहा–शाह निरखित तेहि जानिजड, करिकै कोपप्रचंड
कह्यो प्रवेशहु शीशमें, यक मम आयसदंड ॥ २ ॥

सेवक सुनत तैसही कीन्ह्यो * ताके शीश कील द्रुत दीन्ह्यो ॥
हरिप्रभाव आयस गलि गयऊ * ताको कछू भान नहिं भयऊ ॥
बादशाह लखि सन्त प्रभाऊ * तजि घमंड पकर्‌यो युग पाऊ ॥
तबते कीलदास भो नामा * कियो कोप नहिं सुमिरत रामा ॥
एक समय जयपुर नृप केतू * आयो मथुरा मज्जन हेतू ॥
कीलदासको सुनि अवनीशा * जाय कियो निज पद तिन शीशा ॥
मानसिंह रह जाकर नामा * जाको विप्र हेतु धन धामा ॥
लग्यो करन संभाषण राजा * मान्यो अपनेको कृतकाजा ॥
कीलदास ताही क्षण माहीं * खडे भये करि भुज नभ काहीं ॥
बार बार कह सुख स्याबासू * कियो सत्य पितु विष्णु विश्वासू ॥
सचकित मानसिंह तब बोलो * यह लीलाका कारण खोलो ॥

दोहा–कीलदास तब कहत भे, रह्यो पिता गुजरात ॥
सो तनु तजि हरिधामको, चढि विमानअबजात ॥ ३ ॥

नृप मन गुनि आश्चर्य अपारा * गुर्जर पठयो सुतर सवारा ॥
सो लै खबरि तुरंतहि आयो * कीलदास कह तस सो गायो ॥
राजा भयो समासृत तबहीं * मान्यो मोद संत जन सबहीं ॥
कीलदास यक समय तहांहीं * सुमन लेन गे उपवन माहीं ॥
सुमन लेत काट्यो अहि हाथा * रह्यो न कोउ तिनके तहँ साथा ॥
कीलदास तब कियो विचारा * धौं यह कारो अति विषवारा ॥
धौं मम तनु कारो विष छायो * कौन होत यहि क्षण अधिकायो ॥
लेन परीक्षा हाथ पसारा * डस्यो बहुरि अहि बारहिबारा ॥
चढ्यो न विष नेकहु तनु ताके * सुमिरत पति वृषभानुसुताके ॥
ऐसो कीलदास इतिहासा * मति लघु कहँ लगिकरों प्रकाशा ॥
कीलदास यमुना तट बैठे * यदुपति प्रेम पयोनिधि पैठे ॥

ब्रह्मरंध्र ह्वै करि निज प्राना * किय गोलोक तुरंत पयाना ॥
दोहा-कीलदासकी यह कथा, मैं वरण्यो सुख छाय ॥
और अमित तिनके चरित, को कहि पारै जाय ॥४॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकोनविंशोऽध्यायः ॥१९॥

अथ अग्रदासकी कथा ।

दोहा-श्रोता सुमति सुजान सब, अब अतिशय चितलाय
अग्रदासकी अति अमल, सुनहु कथा शिर नाय ॥१॥
छप्पय नाभाकृत-सदाचार ज्यों संत प्रात जैसे करि गाये ॥
सेवा सुमिरण सावधान राघव चित लाये ॥
प्रसिधि बागसों प्रीति हुव्यकृत करत निरंतर ॥
रसना निर्मल नाम मनहुँ वर्षत धाराधर ॥
कृष्णदास करके कृपा भक्ती मन वच क्रम कियो ॥
श्रीअग्रदास हरिभजन बिन काल वृथा नहिं चित दियो
दोहा-नाभाकृत छप्पय यही, लिख्यो यथावत जोय ॥
सन्त कथा आचार्य गुनि, बंदौं मन मुद मोय ॥ २ ॥
अग्रदास गलताके गादी * भयो अधीश धर्म मर्य्यादी ॥
मानसिंह जैपुरको राजा * सो अपनी लै सकल समाजा ॥
अग्रदास गुरु आज्ञाकारी * रहै समीप चरण रज धारी ॥
एक समय तीरथके हेतू * अग्र चल्यो बहु सन्त समेतू ॥
पथ महँ रह्यो वणिक कर बागा * निरखत अग्रदास मन लागा ॥
तहां वास कीन्ह्यो तेहि राती * सुन्यो सो आई सन्त जमाती ॥
आय कियो सन्तन सत्कारा * दीन्ह्यो भोजन विविध प्रकारा ॥
तापर सन्त प्रसन्न भये सब * अग्रदास कह जाहु भवन तब ॥
वणिक वन्दि पद गृह निजआयो * तेहि निशि तेहिसुत सर्पसतायो ॥
डसत भुजंग गयो मरि सूना * तेहि घर भयो दुराह दुख दूना ॥
अग्रदास यह सुन्यो हवाला * आये वणिक भवन तेहिकाला ॥

सन्त चरणकी लाल पियाई ❀ दियो वणिक सुत तुरत जियाई ॥

दोहा—जय जयकार भयो नगर, तहँको सुनि नरनाह ॥
भयो शिष्य परिकर सहित, लै अग्रहि गृहमाह ॥३॥

पुनि तीरथयात्रा बहु कीन्ह्यो ❀ भवन गवन मोदित चित दीन्ह्यो ॥
अग्रदास अरु कीलदास दोउ ❀ एक समै लीन्हो न संत कोउ ॥
मज्जन करि गवने घर माहीं ❀ लख्यो अंध यक बालककाहीं ॥
सो शिशु लांगूली द्विजकेरो ❀ कबहूं पर्‍यो अकाल घनेरो ॥
ताकर माता तेहि थल त्यागी ❀ गई पराय अन्न अनुरागी ॥
पूछयो अग्रदास शिशु काहीं ❀ को तुम इत अकेल पथमाहीं ॥
शिशुकह जननी मोहिं विहाई ❀ गई क्षुधावश अनत पराई ॥
अग्रदास कह मातु धिकारा ❀ तब बालक यह वचन उचारा ॥
नहिं जननी कर दोष गोसांई ❀ प्रभुहि तजत प्राकृतकी नाई ॥
सुतविरंचि वारिधिपितु जोई ❀ भगिनी रमा विष्णु बहनोई ॥
तीन कमल कह हनै तुषारा ❀ करै सहाय न अस परिवारा ॥

दोहा—ऐंचि कमंडलुते सलिल, दियो दृगन महँ मारि ॥
अमल कमलदल सम नयन, प्रगटे विमल निहारि ॥४॥

पर्‍यो चरण बालक तब रोई ❀ गयो चित्त करुणा रस मोई ॥
निज आश्रम बालक कहँ लाये ❀ यहि विधि भोजन पान बताये ॥
संत चरण जल कीजै पाना ❀ भोजन साधु उच्छिष्ट प्रमाना ॥
सार्ध कोटि त्रय तीरथ जगमें ❀ ते सब हरिदासनके पगमें ॥
कोटिहुँ अंश चरण जल काहीं ❀ वेद वदत तूल कहुँ नाहीं ॥
कोटि जन्मके पातक भारे ❀ ज्ञात और अज्ञात अपारे ॥
साधु जूंठ भोजन मुख डारत ❀ सबै परातन फेरि निहारत ॥
साधु जूंठ पग सलिल प्रभावा ❀ हिये विराग ज्ञान प्रगटावा ॥
अग्रदास हरि नाम सुनायो ❀ नाभा नाम गुरूसों पायो ॥
सेवत संत चरण तहँ नाभा ❀ प्रगटी विमल तासु तब आभा ॥
रहन लग्यो गलता महँ सोई ❀ मान्यो भक्त प्रबल सब कोई ॥

अग्रदास यक समय सुजाना * लग्यो करन रघुपति कर ध्याना॥

दोहा-तासु शिष्य यक साहु रह, करन हेतु व्यवहार॥
जात जहाज चढो चलो, मधि कहुँ पारावार॥ ५॥

तेहि क्षण बूडन लागी नाऊ * सो सुमिरयो गुरुपद परभाऊ॥
सो इत अग्रदास सब जान्यो * तेहि रक्षणको चित हुलसान्यो॥
जब रक्षणको कियो विचारा * वणिक नाव तब लगी किनारा॥
अग्रदास जबलों किय रक्षण * राम ध्यान छूट्यो तबलों क्षण॥
दूरि बैठि नाभा तहँ रहे * विजन करत डोरी कर गहे॥
सन्त चरण सेवन परभाऊ * नाभाको नाहिं भयो दुराऊ॥
गुरु वृत्तांत जानि अस गायो * नाथ नाव वह भले बचायो॥
अब तो सिंधु तीर गइ नाऊ * पुनि ध्यावहु रघुकुलमणिराऊ॥
ऐसे अग्रदास सुनि बैना * बोल्यो चकित खोलि युग नैना॥
यहि क्षण को यह वचन प्रकाशा * नाभा कह्यो नाथ तुव दासा॥
अग्रदास नाभा कहँ जानी * बार बार कह वचन बखानी॥
सेवत साधु शक्ति भै तेरी * जानन लाग्यो गति मन केरी॥

दोहा-ताते अब तू सन्तको, कीजै चरित बखान॥
वर्णन सन्तचरित्रते, परगति हेतु न आन॥ ६॥

नाभा कह्यो सुनहु गुरुज्ञानी * यह तो कठिन परत मोहिं जानी॥
सन्तभाव दुस्तर जग माहीं * यक इतिहास कहौं तुम पाहीं॥
कहुँ द्वै साधु चले मग जाते * लखे मूर्ति हरि प्रगट शिलाते॥
वनमें तापर रही न छाया * चहुँकित जामी तृणसमुदाया॥
द्वै में एक लग्यो पछिताना * सहत शीत आतप भगवाना॥
दूजो चलो गयो कहुँ दूरी * ठहरि गयो तहँ यक राति भूरी॥
तेहि मूरति पर बहु तृणकारी * रच्यो कुटी बहु पत्रन पारी॥
करिकै कुटी गयो चलि सोई * दूजो लौट्यो मारग ओई॥
कुटी निरखि हरि मूरति पाहीं * गारी दीन्ह्यो करता काहीं॥

दोऊ सन्तभावके सांचे * दोऊ निज निज हेतुनि राचे ॥
आतप वात वरष यक वारयो * यक दवारिकी भीत विचारयो ॥
इकुसि कुटी तेहिं क्षण तृण काटी * मूरति चहुँकित पाथर पाटी ॥
देइ लगाय दवारि न कोऊ * अस कहि गयो कहूं पुनि सोऊ ॥

दोहा—देखिय दोहुन सन्त कर, हरिमें भाव अपार ॥
कौन भांति सन्तन चरित, वरणि पाइहौं पार ॥ ७ ॥
अग्रदास बोले वचन, सुनु नाभा चितलाय ॥
भक्ति किये भगवंतकी, दुस्तर सरल देखाय ॥८॥
तीन भक्तिके रूप मैं, अनुसाधन शुभ रीति ॥
तुमको देत सुनाय मैं, होति जाहि सुनि प्रीति ॥९॥

कवित्त—भक्ति तरु पौधा ताहि विघ्न डर छेरीहूंको वारिदे विचारी वारि सींच्यो सतसंगसों ॥ लगोई बढन गोदा चहुँदिशि कठिनसो चढन अकाम यश फैल्यो बहु रंगसों ॥ सन्त उर आलवाल शोभित विशाल छाया जिये जीव जाल ताप गये यों प्रसंगसों ॥ देखो बडवार जाहि अजाहूकी शंका हुती ताहि पेट बांधे फूलैं हाथी जीते जंगसों ॥ १ ॥
श्रद्धाई फुलेल उबटनो श्रवणन कथा मैल अभिमान अंग अंगन छुटाइये ॥ मनन सुनीर अन्हवाय अंगुछाय दया नवन वसन पन सोधोलै लगाइये ॥ आभरण नाम हरिसाधु सेवा कर्णफूल मानसिक नथ अंजन लगाइये ॥ भक्ति महरानीको शृंगार चारु वीरी चाह रहै जो निहारि लहै लाल प्यारी गाइये ॥ २ ॥

ऐसी गुरु आज्ञाको पाई * नाभा तुरत भक्तिरस छाई ॥
ज्ञान विज्ञान विराग निधाना * पाय तुरत त्रैलोक देखाना ॥
कछुक काल महँ अग्र विज्ञानी * गवने विपिन घोर अति जानी ॥
तब गादी हित झगरो माचो * सकल सन्त जुरि किय मतसाचो ॥
अग्रदासके शिष्य घनेरे * लिखि २ पत्र नाम सब केरे ॥
प्रभुके आगे सो धरि दीजै * जेहि आज्ञा तेहि मालिक कीजै ॥

तैसे कीन्हे संत अपारा * कढि आये करि बंद केवारा ॥
कछुक काल महँ खोल्यो जाई * नाभा नाम सही लिखि पाई ॥
तब नाभाजीको दिय गादी * भये संत सिगरे अह्लादी ॥
माचि रह्यो सब थल जयकारा * नाभा सांचो संत अपारा ॥
तासु प्रभाव रह्यो चिरकाला * रच्यो मनोहर भक्तन माला ॥
चारिहु युगके संत गनायो * तिनके सकल चरित्रन गायो ॥
दोहा-पुनि संतन पग पांवरी, धरि अपने उर शीश ॥
तरि सागरसंसार गो, जहँ रघुकुलको ईश ॥ १० ॥
मानसिंह राजा कछवाहा * जैपुरको अधीश अरिदाहा ॥
अग्रदासको शिष्य सुजाना * तासु चरित कछु करौं बखाना ॥
मानसिंह यक समय सिधायो * सतसँग हित नाभा ढिग आयो ॥
वचन कह्यो मन माहँ सुखारी * हरिगुरु अग्र कृपानिधि भारी ॥
तिनके शिष्य सहस्र सुजाने * पै मोहिं सो मानत नहिं आने ॥
नाभा कह्यो सबैको माने * राजा रंक रीति नहिं जाने ॥
मानसिंह तब कह अस बाता * अबै बाग महँ गुरु विख्याता ॥
हमहुँ तुमहुँ तहँ चलैं सिधारी * प्रथम दरश लह सोइ प्रिय भारी॥
अस कहि नाभा अरु नृप माना * कियो वाटिकै तुरत पयाना ॥
अग्रदास हरि हित सुम टोरत * कढ्यो बाग बाहेर दल जोरत ॥
इतै भूप दल रुक्यो दुवारा * मारग बंद भयो तेहि बारा ॥
भूप अकेल वाटिका गयऊ * तहँ गुरुको नहिं देखत भयऊ ॥
दोहा-इतै गुरु लगि भीर अति, निकसि बागते जाइ ॥
बैठि इकांतहि तहँ गयो, नाभा दरशन पाइ ॥ ११ ॥
मानसिंह पुनि गयो तुरंता * वंद्यो चरण गुरू भगवंता ॥
नाभाके पद पुनि शिर नायो * कह्यो तुमहिं गुरु अधिक बनायो॥
एक समय दश सहस्र सवारा * मानसिंह नृप लै पगु धारा ॥
अग्रदासके दरशन हेतू * गुरु दरशन किय मोद निकेतू ॥
दश कदलीफल गुरु तेहिं दीन्ह्यो * सादर पद वंदन करि लीन्ह्यो ॥

दीन्ह्यो गुरु पुनि दश फल नाभे * करहु सकल दलके फल लाभे ॥
मानसिंह तब अचरज मानी * चल्यो भवन मति विस्मय सानी ॥
पूछ्यो कालिह फौज महँ आई * गयो कौन कदली फल पाई ॥
सबै रहे दश फलको लीन्हें * कहत भये नाभा यह दीन्हें ॥
मानसिंहको पुनि यक काला * मर्‍यो महाप्रिय नाग विशाला ॥
अतिशय विमन तबै नरनाहा * नाभा हित गो विगत उछाहा ॥
नाभा तासु देखि दुचिताई * तुरत जाय गज दियो जियाई ॥
दोहा-नाभाके अरु अग्रके, यहि विधि चरित अपार ॥
मान महीपतिके तथा, को कहि पावै पार ॥ १२ ॥

अथ प्रियादासकी कथा।

अब वरणौं प्रियदास चरित्रा * भक्तमाल किय तिलक विचित्रा ॥
प्रियादास यक संत प्रधाना * शिष्य मनोहर दास सुजाना ॥
तेहिं किय साधु चरण अति प्रेमा * साधु सेव तजि द्वितिय न नेमा ॥
एक समय तीरथको गवने * साधु समाज सहित अघ दवने ॥
एक देश महँ रह यक साहू * सो कीन्ह्यो दरशन उत्साहू ॥
प्रियादास पद वंद्यो आई * कछु मोहर पुनि दियो चढाई ॥
होत रहै तहँ भक्तन माला * सुनत साहु अति भयो निहाला ॥
प्रियादासको विनय सुनाई * हरि सन्मुख मोहिं देहु कराई ॥
प्रियादास कह सुनहु उपाई * प्रथम जानु संतन सेवकाई ॥
दूजो हरिकीर्तन मुख गाना * तीजो चरित सुनै भगवाना ॥
यहि ते बढै राम अनुरागा * तब उपजै विज्ञान विरागा ॥
तब छूटै जनको संसारा * और यतन नाहिं मोर विचारा ॥
दोहा-साधु कह्यो मैं अधम अति, बहुत करों व्यापार ॥
सावकाश पाऊं नहीं, गृह महँ एकहुवार ॥ १३ ॥
पै यक मम उद्धार उपाई * सो तुम्हरे करमें दरशाई ॥
भक्तमाल मोहिं देहु दिखाई * सो पुस्तक मोहिं देहु धराई ॥

मरण समय हमरो जब आई ❀ तब पुस्तक उर लेब धराई ॥
तब छूटी यमकी सब भीती ❀ जाहुँ वैकुंठ यही परतीती ॥
एक भक्त समरथ गतिदाता ❀ यामें भक्त अनंत विख्याता ॥
प्रियादास सुनि साहु गिराको ❀ प्रेमित कियो सजल नयनाको ॥
कह्यो प्रशंसि साहु कहँ वानी ❀ भक्तमाल पुस्तक ले ज्ञानी ॥
तेरो भक्तन महँ विश्वासा ❀ कबहुँ न होइ यमकी त्रासा ॥
अस कहि पुस्तक दियो लिखाई ❀ साहु गयो घर आनँद पाई ॥
मरण काल जब ताकर आयो ❀ यमके दूत भीति दरशायो ॥
तब उर पुस्तक लियो धराई ❀ गे यमदूत तुरंत पराई ॥
तब पुत्रनसों साहु सुखारी ❀ कहत भयो अस गिरा उचारी ॥

दोहा—भक्तमाल परभावते, मैं वैकुंठहि जात ॥
यमके दूत पराय गे, हरिके दूत दिखात ॥ १४ ॥

जबहिं मरै कोउ घर माहीं ❀ तब धरिके उर पुस्तक काहीं ॥
तुमहुँ सबै वैकुंठ सिधारेहु ❀ अब नहिं आन उपाय विचारेहु ॥
अस कहि साहु गयो परधामा ❀ पुत्रहु कीन्ह्यो तैसहि कामा ॥
तेऊ किय हरिलोक बसाऊ ❀ देखहु भक्तमाल परभाऊ ॥
एक नगर महँसो प्रियदासा ❀ आयो सन्तन सहित हुलासा ॥
तहँ यक मंदिर रह्यो उतंगा ❀ कीन्ह्यो वास सहित सतसंगा ॥
तेहि मन्दिर महन्त यक रहेऊ ❀ प्रियादाससों अस सो कहेऊ ॥
भक्तमाल प्रभु देहु सुनाई ❀ फिरि जैयो अनतै चितलाई ॥
प्रियादास तब अति अनुरागे ❀ भक्तमाल तहँ बांचन लागे ॥
भीर भई तहँ साधुन केरी ❀ तीनि दिवस भै कथा घनेरी ॥
तिसरे दिवस चोर निशि आई ❀ ठाकुर पुस्तक लियो चोराई ॥
प्रियादास तब अति दुख भीने ❀ तीनि पहर भोजन नहिं कीन्हे ॥

दोहा—तब हरिको संकट गयो, चोरन कीन्ह्यो अंध ॥
उरमें दीन्ह्यो ज्ञान कछु, आन दीनके बंध ॥ १५ ॥

सिगरे चोर ज्ञान जब पाये ❀ तब अनेक बाजन बजवाये ॥

ठाकुर अरु पुस्तक करि आगे ❀ चले प्रियादासै पद लागे ॥
मिटी अन्धता तब तिन केरी ❀ हरिमें प्रगटी प्रीति घनेरी ॥
ठाकुर पुस्तक दिय चलि आई ❀ सन्त समाजहि बजी बधाई ॥
पुनि प्रियादास तीर्थहित गवने ❀ कछु दिन महँ आये तेहि भवने ॥
कह्यो सन्त तब सब कर जोरी ❀ भक्तमाल बांचहु सुख बोरी ॥
प्रियादास तब विस्मय कीन्ह्यो ❀ कथा प्रबंध राखि कहँ दीन्ह्यो ॥
प्रभुमन्दिर ते वचन प्रकासा ❀ कथा प्रबंध लग्यो रैदासा ॥
प्रियादास कह को यह भाष्यो ❀ उत्तर कोउ न देन अभिलाष्यो ॥
सो वाणी हरिकी पहिचानी ❀ जय जयकार कियो सुख मानी ॥
करि समाप्त पुनि भक्तन माला ❀ प्रियादास ध्यावत नँदलाला ॥
वृन्दाविपिन विनोदित आये ❀ तहँ सब सन्तन शीश नवाये ॥

दोहा—तहँ यदुपतिपदकंज महँ, मन करि अमल मिलिंद ।
चढि विमान गोलोकको, भयो तुरत बासिंद ॥ १६ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

अथ केवलदासकी कथा।

दोहा—केवलदास कथा कहौं, श्रोता सुनहु सुहाय ॥
जासु दया वारिध विशद, पार पाय को जाय ॥ १ ॥

केवलदास सन्त यक रहेऊ ❀ तीरथ गवन करन चित चहेऊ ॥
मारग महँ यक मिल्यो किसाना ❀ वृषभ लिये बहु कियो पयाना ॥
सो वृषभै मारयो यक लाठी ❀ कछु दाया नहिं कियो कुपाठी ॥
उतै बैलके लग्यो प्रहारा ❀ लखि केवल गयो खाय पछारा ॥
देखत दौरि सकल जन आये ❀ पूछन लागे कौन सताये ॥
केवल कह्यो हन्यो वृष काहीं ❀ लाठी लगी पीठि मम माहीं ॥
केवल पीठि लखे जन जबहीं ❀ लाठी उपटी देखे तबहीं ॥
धन्य २ अचरज सब माने ❀ दयारूप तिनको जिय जाने ॥
वृषभै लखत दया अधिकाई ❀ सो प्रहार उपट्यो तनुआई ॥

वृषभै भई न तनको पीडा ❀ दया मानि लखि माने व्रीडा ॥
देखि दशा यह उहै किसाना ❀ त्राहि त्राहि करि अतिहिं डेराना ॥
केवल चरण गिरयो उत धाई ❀ करहु नाथ अपराध क्षमाई ॥
दोहा-केवलदास किसान कृत, कछु न गन्यो अपराध ॥
बसहि जासु हिय असि दया, तेहि यमकी नहिं बाध ॥ २ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्ध एकाविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

अथ चरणदासकी कथा।

दोहा-अब हुलास भरि कहत हौं, चरणदास इतिहास ॥
सुनतहि रमानिवासमें, अचल होत विश्वास ॥ १ ॥
सो अनन्य हरिको जन ठयऊ ❀ संतन भेद भाव नहिं भयऊ ॥
संतनको पूजन नित करहीं ❀ धूप दीप चंदन नित धरहीं ॥
संतनको नैवेद्य लगावै ❀ तब आपहु परसादी पावै ॥
पंगु संत यक समय निहारा ❀ घासिलत मग महँ जात सिधारा ॥
दौरि ताहि निज आश्रम ल्याये ❀ करि पूजन अति आँनद छाये ॥
करत परश भे सुंदर पाऊ ❀ रेंगन लग्यो साधु भरि चाऊ ॥
चलत चरण सो तीरथ गयऊ ❀ चरणदास यश जग महँ छयऊ ॥
श्रोता देखहु संत प्रभाऊ ❀ परशत चरण पंगु चल पाऊ ॥
यहि विधि चरणदास हरिदासा ❀ बहुत काल लगि कियो विलासा ॥
अंत समय जब तज्यो शरीरा ❀ तब पठयो पार्षद रघुबीरा ॥
तिनको प्रगट्यो गमन प्रकासा ❀ जन प्रत्यक्ष यह लखे तमासा ॥
निरखि तासु दुख भये दुखारी ❀ लगे चरण चापन सुखकारी ॥
दोहा-चरणदास वैकुंठको, गवन कियो यहि भांति ॥
बालकालते अंत लगि, सेयो संत जमाति ॥ २ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

अथ हठीदासकी कथा।

दोहा-हठीदासकी कहत हौं, कथा मोदकी धाम ॥
जा मुखते निकस्यो सदा, एक रामको नाम ॥ १ ॥

भोजन पान शयन मग जाता * वागत बैठत सांझ प्रभाता ॥
खेलत हँसत रुदत दुख सुखमें * राम नाम निकसत नित मुखमें ॥
जब जब मुखते वचन बखाना * राम भाषि भाषै पुनि आना ॥
यही परचो हठ हठी दासको * राम विश्वास निराश आशको ॥
एक समय कहु रामत माहीं * परचो अकेल रह्यो कोउ नाहीं ॥
लागी प्यास महादुख लहेऊ * राम कहनको कोउ नहिं रहेऊ ॥
तृषावंत बीतत दिन भयऊ * अपनो नेम न त्यागत भयऊ ॥
परचो रामको संकट भारी * आये तहां विप्र तनु धारी ॥
तिनहि देखि बोल्यो मुख रामा * सोऊ कह्यो रामको नामा ॥
हठीदास कीन्ह्यो जलपाना * तब ब्राह्मण भो अंतर्द्धाना ॥
यही नेमको नाम कहावै * अस निरवाहै सो गति पावै ॥
नेम निवाहक हैं रघुवीरा * सोई हरैं संतकी पीरा ॥

दोहा-हठीदासके नेम कस, कौन करै जग नेम ॥
हरिको तहँ प्रगटन परचो, जानि दासको प्रेम ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

अथ नारायणदासकी कथा।

दोहा-अब वरणों मैं चरित जो, किय नारायणदास ॥
कियो भावना ध्यानमें, सो प्रगट्यो अनयास ॥ १ ॥

छंद-सो कियो संतन प्रीति परम प्रतीति पद रज शिर धरचो ॥
इक समय बदरी वन गयो वन मध्य झूला तहँ परचो ॥
लखि भीर मनुजनकी तहां नहिं कढनको अवसर लह्यो ॥
यहि पारमें तब बैठि कीन्ह्यो भावना नहिं कछु कह्यो ॥

द्वै दंडमें नयनन उघारयो भये झूला पारहैं ॥
यह देखि अचरज जानि यात्री कियो नति बहु वारहैं ॥
पुनि गये बदरीवन विलोक्यो तहां नरनारायणै ॥
कछु काल वसिकरि योग त्याग्यो तनु पढत रामायणै ॥
दोहा-नारायणमें प्रेम करि, नारायणकी आस ॥
नारायणके धाम गो, नारायणको दास ॥ २ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

अथ सूरजदासकी कथा।

दोहा-वरणौ सूरजदासको, अब सुंदर इतिहास ॥
रविमंडलमें रामको, कियो ध्यान सहुलास ॥ १ ॥
सूरजदास अनन्य उपासी * पूजत रविमंडल सुखरासी ॥
बिन रविमंडल दर्शन पाये * कियो न पान अन्न नहिं खाये ॥
यहि विधि बीति गयो बहु काला * विचरैं जग जन करत निहाला ॥
एक समय भादोंके मासा * घेरयो घनमंडल आकासा ॥
भई वृष्टि कछु बरणि न जाई * रविमंडल नहिं परयो दिखाई ॥
तेहि दिन जाने संत जमाती * आजु करौं भोजन केहि भांती ॥
सूरजदास उठ्यो तब आसू * लग्यो करन पूजन सहुलासू ॥
ताकर नेम जानि भगवाना * प्रगटायो परभाव महाना ॥
फूटि गयो घनमंडल घोरा * रविप्रकाश प्रगटयो चहुँ ओरा ॥
लखि रविमंडल सूरजदासा * भोजन कीन्हो पूरित आसा ॥
अचरज सकल संतजन माने * वंदे बार बार सुखसाने ॥
यहि विधि जबलों रह्यो शरीरा * तबलों नेम निबाह्यो धीरा ॥
दोहा-ऐसे सूरजदासके, चरित विचित्र अनेक ॥
कौन भांति वर्णन करौं, दयो दई मुख एक ॥ २ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

अथ रंगदासकी कथा।

दोहा–रंगदास इतिहास अब, श्रोता सुनहु सुजान ॥
वणिक जातके सो रहे, ज्ञान विज्ञान अयान ॥ १ ॥

एक समय गमने इक ग्रामा ❁ व्यापारी देख्यो इक ठामा ॥
बैठि गोनि घृतमोतिन माला ❁ तेहि ढिग इक यमदूत कराला ॥
रंगदास चीन्ह्यो तेहि देखी ❁ यह चाकर है मोर विशेखी ॥
पूछ्यो ताते तुम कहँ आये ❁ सो कह अबहीं देत बताये ॥
बैलसींग सो गयो समाई ❁ बैल हन्यो व्यापारी धाई ॥
पुनि यमदूत कह्यो असि बानी ❁ धन जोरयो यह भयो न दानी ॥
तुमहूं करो न पर उपकारा ❁ होई यही हवाल तुम्हारा ॥
तबते रंगदास भय मानी ❁ संपति त्यागि भये विज्ञानी ॥
एक समय तिनके सुत काहीं ❁ लाग्यो प्रेत तज्यो तेहिं नाहीं ॥
रंगदास इक समय कुमारा ❁ अपने संग निशा महँ पारा ॥
तेहि दिन मारन प्रेत सिधारयो ❁ रंगदासको लखि हिय हारयो ॥
साधु दरश महिमा प्रगटानी ❁ मांग्यो मुक्तिसो मानि गलानी ॥

दोहा–तेहि तनु निज पद जलछिरकि, काननामसुनाय
तारयो ताहिं तुरंतहीं, रंगदास हरषाय ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

अथ षोडशभक्तकी कथा।

दोहा–षोडश भक्त चरित्र मैं, वरणों सहित अनंद ॥
जाहि सुतन श्रद्धासहित, होत सुमति मतिमंद ॥ १ ॥

पुरुषादासजी, पृथुदास, श्रीपद्मनाभ, गोपालदास, टेकदास, टीलादास, गदाधर, देवादास, कल्याणदास, गंगादास अरु उनकी स्त्री, विष्णुदास, कान्हरदास, रंगदास, चन्दनदास। तामें प्रमाण नाभाजीकी छप्पयको (पयहारी परसादते शिष्य सबै भये पार कर ॥)

षोडश भक्त अनन्य उपासी ❀ पयहारीके शिष्य सुपासी ॥
एक समय बदरीवन काहीं ❀ गये सकल संतन सँग माहीं ॥
करि दर्शन लौटे सब संता ❀ मारग श्रमित भये अत्यंता ॥
रहे एक पुर ताके नेरे ❀ इक वट वृक्ष न तहँ बहुतेरे ॥
वट तर निकट कूप इक रहेऊ ❀ तेहिं निवास हित संतन चहेऊ ॥
तेहि वट महँ सोरहसै प्रेता ❀ राति बसै निज नारि समेता ॥
तेहि वट तरु तर रज अधिकाई ❀ आधी निशि आंधी अति आई ॥
परी संत रज वट तरु माहीं ❀ प्रेतन तनु गे छाइ तहांहीं ॥
साधु चरण रज प्रगट प्रभाऊ ❀ प्रेतनको भो शुद्ध स्वभाऊ ॥
षोडशशत जे प्रेत महाना ❀ चढि विमान किय हरिपुर जाना ॥
बिन श्रद्धा सत पद रज पाई ❀ प्रेत गये हरि लोक सिधाई ॥
श्रद्धायुत संतन पद रेनू ❀ धरै ताहि हरिपुर महँ चेनू ॥

दोहा–एक समय पुनि षोडशौ, ते हरिभक्त सुजान ॥
संभरके मेला गये, भइ तहँ भीर महान ॥ २ ॥

परी नदी इक गहिरी धारे ❀ ले पैसा केवटहु उतारे ॥
नाव चढे षोडश हरिदासा ❀ औरहु मनुज पारकी आसा ॥
मध्य धार नौका जब आई ❀ अति गंभीर नीर भयदाई ॥
केवट पैसा यांचन कीने ❀ षोडश भक्त रहे धन हीने ॥
जब पैसा केवट नहिं पायो ❀ तब कोपित अस वचन सुनायो ॥
मैं लौटाय नाव अब जैहौं ❀ तुमको अब नहिं पार करैहौं ॥
संत कह्यो लौटत श्रम होई ❀ इतहीं उथल लही सब कोई ॥
अस कहि सोरहो संत उदारा ❀ कूदि परे तहँ मध्य दहारा ॥
तेहि थल प्रगट भयो बड रेता ❀ केवट सब ह्वैगये अचेता ॥
गिरयो संतके चरणन जाई ❀ कह्यो नाव कैसे चलि जाई ॥
नौका चढौ संत भगवंता ❀ मैं करिदैहौं पार तुरंता ॥
चढे संत पुनि नावहि माहीं ❀ तब गँभीर जल भये तहांहीं ॥

दोहा–पार गये जब संत सब, छायो जयजयकार ॥
तहँको नृप अचरज सुन्यो, आयो तहँ बिन बार ३॥

संतनको लै जाय घर, कीन्ह्यो अति सतकार॥
साधुनके परभावते, गवन्यो राम अगार॥ ४॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे सप्तविंशोऽध्यायः॥२७॥

अथ नामदेवकी कथा।

छप्पय–अब वरणौं मैं नामदेव इतिहास मनोहर॥
जासु प्रतिज्ञा सत्य कियो जगमें विश्वंभर॥
जैसे श्रीप्रहलाद प्रतिज्ञा सतयुग राख्यो॥
नामदेवके हाथ नाथ गोरस पुनि चाख्यो॥
पुनि बादशाह ढिग जायकै मृतक गाइको ज्याय दिय॥
यमुनादहते बहुरतनमय बहुपर्यंक निकासि लिय॥ १॥
हरिमंदिरको पूर्व द्वार पश्चिम करि दीन्ह्यो॥
जासु भवन पंढरीनाथ निज हाथन कीन्ह्यो॥
हरिव्रत एकादशी परीक्षा सबन देखाई॥
कियो चतुर्भुज एक प्रेत यश भयो महाई॥
इक साहु दानमानी रह्यो तासु महामद हरि लियो॥
इतिहास सकल विश्वास हित मैं अब वर्णन करि दियो २॥

दोहा–पंढरपुर दरजी रह्यो, वामदेव जेहि नाम॥
बडो भक्त भगवानको, तासु सुता इक आम॥१॥

मर्‍यो तासु पति कौनेहु काला * वामदेव कह वचन विशाला॥
बेटी भक्ति करै हरि केरी * उभय लोक सुधरै बिन देरी॥
करन लगी हरि भजन कुमारी * यक दिन तासु परोसिन नारी॥
गोद लिये निज सुत कहँ आई * वामदेव कन्या तब धाई॥
सो सुतको लीन्ह्यो निज गोदू * सुत वासना भई भरि मोदू॥
हे हरि होत जो पुत्र हमारे * तौ खेलाय लहत्यूं सुख भारे॥
तासु मनोरथ पूरण हेतू * भयो गर्भ महँ कृपानिकेतू॥
विधवा गर्भ बढ्यो अपवादा * पितु पूछ्यो तेहि पाय विषादा॥

सुता शपथ करि कह जस भयऊ * राति मुकुंद स्वप्न तेहिं दयऊ ॥
वामदेव तुव सुता अदोषा * मोहिं जानहु गर्भहि तजि रोषा ॥
तू जनि करु अपयशकी शंका * पुत्र भये नहिं होय कलंका ॥
वामदेव तब शंक विहाई * सेवन लग्यो सुतै सुख छाई ॥
दोहा–कछुक काल महँ सुत भयो, वामदेव सुत पाय ॥
नामदेव तेहि नाम दिय, बहु धन दीन लुटाय ॥ २ ॥
पांच वर्ष जब बालक भयऊ * तबहींते हरिपद चित दयऊ ॥
खपरा पाथर घर महँ ल्याई * तिनको यदुपति मूर्ति बनाई ॥
पूजे तिनको आंशु बहाई * घंट बजावै भोग लगाई ॥
पुनि माता महँ वामदेवसों * कह्यो वचन अस नामदेवसों ॥
जो पूजा करियत तुम नाना * सो मोहिं देहु उछाह महाना ॥
नामदेव कह अबै न तोसों * बनिहै पूजन बनै जो मोसों ॥
दूध औंटि तेहि सिता मिलाऊं * मैं नारायण भोग लगाऊं ॥
नामदेव कह अधिक बनैगी * करु विश्वास नहिं कछु बिगरैगी ॥
वामदेव तब हँसि अस गायो * यक पूजन मैं देत बतायो ॥
मैं हरिको नित दूध खवाऊं * मैंहूं तासु प्रसादी पाऊं ॥
मैं तो जात अहों इक ग्रामा * तू खवाइयो प्रथमहि यामा ॥
अस कहि वामदेव गो ग्रामै * नामदेव कीन्ह्यो अस कामै ॥
दोहा–दूध औंटि मिसरी मिलै, हरि आगे धरि दीन ॥
घंट बजाय लगाय पट, आप बैठ सुख भीन ॥ ३ ॥
कछुक काल महँ पुनि पट खोला * वैसहि दूध लख्यो तब बोला ॥
दूध रतीभर कियो न पाना * दैहै मोहिं दोष अब नाना ॥
अस कहि पुनि २ घण्ट बजावै * पियो २ पुनि २ अस गावै ॥
यहि विधि बीति गयो दिन राती * दूसर दिन बीत्यो यहि भांती ॥
आपहु अन्न दियो मुख नाहीं * दुइ उपास परिगे घर माहीं ॥
तिसरे दिन बैठ्यो लै छूरी * कह्यो नाथसों दुख भरि भूरी ॥
नाना आजु आइ घर मोरा * मोहिं कहैगो वचन कठोरा ॥

ठाकुरको नाहिं दूध पियाये ❀ तैं पूजन केहिं भांति नशाये ॥
तो पैं ताहि ज्वाब का देहौं ❀ ताते तुम्हरे पर मरि जैहौं ॥
अस कहि काटन लाग्यो कण्ठा ❀ प्रगटे तुरत धनी वैकुण्ठा ॥
तीनिहु दिन कर किय पय पाना ❀ नामदेव तब वचन बखाना ॥
सिगरो दूध तुम्हीं पी लेहो ❀ की कुछ हमैं पान हित देहो ॥
दोहा–अस कहि प्रभुको कर गह्यो, तब यदुपतिमुसकाय
नामदेवको हाथ निज, दीन्ह्यो दूध पियाय ॥ ४ ॥
पुनि जब वामदेव घर आये ❀ नामदेव तब तुरतहिं धाये ॥
वामदेव ते वचन बखाने ❀ तुम बिन ठाकुर बहुत रिसाने ॥
गोरस पियो दिवस दुइ नाहीं ❀ दुइ उपास परिगे हमकाहीं ॥
तिसरे दिन कीन्ह्यो पय पाना ❀ मोहूंको दीन्ह्यो भगवाना ॥
वामदेव सचकित ह्वै गयऊ ❀ नातीसों भाषत अस भयऊ ॥
कोउ है यह बातन कर साखी ❀ नामदेव कह तब मुख भाखी ॥
का करिहौ साखी तुम नाना ❀ बैठहु मम ढिग करि अस्नाना ॥
नामदेव ढिग वामदेव तब ❀ बैठत भो अचरज माने सब ॥
नामदेव तब घंट बजाई ❀ कहत भयो पीजे प्रभु आई ॥
नाहिं प्रगटे नानाके आगे ❀ नामदेव तब कह दुख पागे ॥
मोरि बात तू खोय दई है ❀ अबै न छूरी मोरि गई है ॥
तब प्रभु वामदेवके आगे ❀ प्रगट भये पय पीवन लागे ॥
दोहा–वामदेव चरणन परयो, कीन्ह्यो जय जयकार ॥
सत्य भक्तवत्सल अहैं, श्रीवसुदेवकुमार ॥ ५ ॥
वामदेव कछु कालहि माहीं ❀ तनु तजि गवन्यो गोपुर काहीं ॥
नामदेव जग विचरन लागे ❀ यदुपति भक्त जगत यश जागे ॥
बादशाह सुनि नामदेव यश ❀ बोलवायो दिल्लीको जस तस ॥
शाह कह्यो अयानकी नाईं ❀ करामात देखरावै साईं ॥
नामदेव कह मैं नहिं जानौं ❀ करामात सब रामहिं मानौं ॥
शाह कह्यो बिन कछुक देखाये ❀ जान न पैहो कत इत आये ॥

नामदेव कह काह देखावहु ❀ शाह कह्यो यह गाय जियावहु ॥
मरी रही सुरभी इक तहवां ❀ नामदेव बैठे रह जहवां ॥
नेकुक लख्यो धेनुकी ओरा ❀ उठि बैठी सुरभी तेहि ठोरा ॥
शाह देखि अजमत पग परेऊ ❀ देन लग्यो धन सो नहिं लयऊ ॥
तब इक रत्नजटित पर्य्यंका ❀ नामदेव कहँ दिय अकलंका ॥
नामदेव पर्य्यंकहि पाई ❀ तेहि उठवाय यमुन तट आई ॥

दोहा–तापर बैठे कछुक दिन, पुनि यमुना महँ डारि ॥
आप भजन करने लगे, हर्ष विषाद विसारि ॥ ६ ॥

दूत दौरिके शाह पुकारा ❀ सो साईं पर्य्यंक तुम्हारा ॥
दियो डारि दरियाव दुहारे ❀ नेकर नीक न कियो विचारे ॥
शाह कह्यो साईं पे जाई ❀ मम शासन यह देहु सुनाई ॥
तब पर्य्यंक रह्यो मम एका ❀ हैं न हमारे भवन अनेका ॥
इक क्षणको दीजे सो हमहीं ❀ हम बनवाय देब पुनि तुमहीं ॥
सुनत शाह शासन सब चेरे ❀ जाय नामदेवहि तिमि टेरे ॥
सुनिके नामदेव मुसकाई ❀ यमुन ओर जोह्यो शिर नाई ॥
तब तैसहि पर्य्यंक हजारा ❀ यमुना तट निकसे इकबारा ॥
नामदेव कह दूत बोलाई ❀ अपनी होय सो लेहु उठाई ॥
यह अचरज लखि धावन धाये ❀ शाहहि सब वृत्तांत सुनाये ॥
सुनिके शाह तहां द्रुत आयो ❀ नामदेव चरणन शिर नायो ॥
निज अपराध क्षमावन लाग्यो ❀ दिल्लीमहँ राखन अनुराग्यो ॥

दोहा–नामदेव तब शाहको, दियो एक पर्य्यंक ॥
और यमुन महँ डारिकै, तुरतहिं चले अशंक ॥७॥

विचरत विचरत पुनि इक ठाऊं ❀ रहे कृष्णमंदिर इक गाऊं ॥
नामदेव आये तेहिं ग्रामा ❀ दर्शन हेतु गये हरिधामा ॥
रहे भजन गावत बहु साधू ❀ संत समाज प्रमोद अगाधू ॥
भीर देखि पांवरी उतारी ❀ लियो तुरत फेंटा महँ डारी ॥
भीतर मंदिरके जब आये ❀ जूता लखि वैष्णव अनखाये ॥

धक्का दे तेहि दियो निकारी ❋ नामदेव तब विहँसि सुखारी ॥
लैकर झांझ पछीतहि जाई ❋ गावन लागे झांझ बजाई ॥
तब तेहि दिशि भो मंदिर द्वारा ❋ कोलाहल तहँ मच्यो अपारा ॥
संत जाय सिगरे शिर नाये ❋ निज अपराध अगाध क्षमाये ॥
नामदेव कछु कालहि माहीं ❋ उठिकै गवने निज घर काहीं ॥
कछु दिन आय बसे निज भवने ❋ साधु दरश हित पुनि कहुँ गवने ॥
इते भवन महँ लागी आगी ❋ जरी अनेकन वस्तु अदागी ॥

दोहा—आगि लागि सुनिकै तुरत, नामदेव तहँ आय ॥
रही बची कछु वस्तु जो, सोउ पावक फेंकवाय ॥ ८ ॥
आप झांझ लै युग करन, नाचन लगे तुरंत ॥
यह पद गावत भे हरषि, सकल सुनावत संत ॥ ९ ॥

भजन—अगनि रूप प्रभु मेरे आजु आये ॥
धन्य मेरी भाग्य अस कौन सुख पाये ॥ १ ॥
मेरी घर वस्तु प्रभु सब लै लीन्ह्यो ॥
नामदेवको आज धन्य जग कीन्ह्यो ॥ २ ॥

नामदेव जब किय पद गाना ❋ आपहिते तब अनल बुताना ॥
तब हरि ह्वैकै तुरत कवारी ❋ क्षण महँ छानी दियो सुधारी ॥
नामदेवकी छानी जैसी ❋ तीन लोक महँ रही न तैसी ॥
तब सब ग्राम निवासी आई ❋ नामदेवसों कह शिर नाई ॥
नामदेव तब कह मुसकाई ❋ असि छानी किमि बनै बनाई ॥
तन मन प्राण समर्पण कीन्हे ❋ अस छानी बनती प्रभु चीन्हे ॥
एकादशी रहै इक काला ❋ नामदेव व्रत कियो विशाला ॥
तब हरि विप्ररूप धरि आये ❋ देहु अन्न अस वचन सुनाये ॥
भोजन बिन निकसत मम प्राना ❋ नामदेव तब वचन बखाना ॥
एकादशी आजु है भाई ❋ भोजन दैहौं कालिह मँगाई ॥
ब्राह्मण कह्यो आजुही लैहौं ❋ नातो तुम्हरे पर जिय दैहौं ॥

दोहा-तबहूं नाहिं भोजन दियो, तब द्विज दिनभर बैठि ॥
राति द्वार पर मरिगयो, तासु गयो तनु ऐंठि ॥ १० ॥

यह सुनि सब जन निंदन लागे ❋ नामदेव तब अति दुख पागे ॥
लै द्विजको तनु चिता बनाये ❋ बैठ ताहि पर अनल लगाये ॥
उठि बैठ्यो ब्राह्मण हंसि तबहीं ❋ मनुजन लाग्यो अचरज सबहीं ॥
ब्राह्मण नामदेव सों गायो ❋ लेन परीक्षा मैं इत आयो ॥
अस कहि भो द्विज अंतर्घ्याना ❋ जयजय मान्यो शोर महाना ॥
एक समय कौनेहु पुर माहीं ❋ भई सुसंत समाज तहांहीं ॥
एकादशी जागरण रैना ❋ करत रहैं सब साधु सचैना ॥
नामदेवहू तहँ चलि आये ❋ भजन करत निशिअर्द्ध बिताये ॥
जब इक संतहि लगी पियासू ❋ नामदेव तब उठि अति आसू ॥
सलिल भरन वापी महँ आयो ❋ तब इक प्रेत रूप दरशायो ॥
महाभयावन लम्बशरीरा ❋ नभ महँ शिरपदमहि अतिजीरा ॥
नामदेव जब प्रेतहि पेख्यो ❋ गायो यह पद ईश्वर लेख्यो ॥

भजन-भले विराजे लम्बक नाथ ॥
धरणी पांय स्वर्गलों मांथा योजन भरके हाथ ॥
शिवसनकादिकपार न पावैं अनगनसखाविराजतसाथ ॥
नामदेवके आपहि स्वामी कीजे मोहिं सनाथ ॥

दोहा-जब यह पद गावत भये, तब वह प्रेत तुरंत ॥
पाये चतुर्भुज रूप तहँ, भयो विकुंठ वसंत ॥ ११ ॥

नामदेव लखि गुनि यदुनाथा ❋ नायो तासु चरण निज माथा ॥
पुनि जल भरि तेहि साधु पियायो ❋ भोर भये निज भवनहि आयो ॥
तहां कछुक दिन वसत बितायो ❋ नामदेव पंढरपुर आयो ॥
साहूकार तहां यक रहेऊ ❋ कोटिध्वजी ख्याति जन कहेऊ ॥
सो इक समय सुवर्ण तुलामें ❋ चढतो भयो चौथ बहुलामें ॥
कनक बांटि सब विप्रन दीन्ह्यो ❋ नामदेव तहँ गवन न कीन्ह्यो ॥
नामदेव को साहु बोलायो ❋ जसतसकै सो तहँलो आयो ॥

हेम देन लाग्यो नहिं लीन्हें ❀ ताहि दान अभिमानी चीन्हें ॥
नामदेव तब कह अधिकाना ❀ तुलसीदल भरि दीजै सोना ॥
अस कहि इकदल लिख्यो रकारा ❀ धरि दीन्ह्यो तेहि तुलामँझारा ॥
साहु कह्यो कत कीजत हांसी ❀ यामें तो नहिं रतिहु तुलासी ॥
नामदेव कह इतनहि लैहौं ❀ इतनेमें संतोषित जैहौं ॥

दोहा—सो तुलसीदल ओर इक, एक ओर कछु सोन ॥
धरत भये तौलत भये, भयो बराबर सोन ॥ १२ ॥

घर भरकी संपति मँगवाई ❀ एक ओर दिय साहु धराई ॥
सो तुलसीदलको नहिं तूलयो ❀ कनक सहस मन ऊपर झूलयो ॥
नामदेव तब कह मुसकाई ❀ जौन किये तैं सुकृति महाई ॥
सो कुश जल लै धरु पलरामें ❀ सो तुलसीदल तौल तुलामें ॥
साहु तबै व्रत तीरथ दाना ❀ धरयो तुला महँ वचन प्रमाना ॥
तबहू तुलयो न तुलसीदलको ❀ लाग्यो अचरज मनुजसकलको ॥
साहु त्राहि कहि गिरयो चरणमें ❀ नामदेव पद पकरि करनमें ॥
बोलयो वचन आजुलों मेरो ❀ रह्यो विश्वास दानही केरो ॥
कनक दानहू ते गोदानो ❀ होत अधिक यह वेद बखानो ॥
पै अब धेनु दान गोदानो ❀ नामते अधिक नाथ नहिं मानो ॥
नामदेव तब करि अति दाया ❀ हरिपद प्रीति प्रतीति सिखाया ॥
नामदेव भाष्यो सुनि वैना ❀ सुरभी दान छोड जग हैना ॥

दोहा—साहु कह्यो गोदान अब, काहे करौ वृथाहिं ॥
नामदेव इतिहास तब, कह्यो महाजन पाहिं ॥ १३ ॥

एक वणिक कोन्यो पुर ठयऊ ❀ कबहुं न इक वराटिका दयऊ ॥
मरन लग्यो तब ताके आई ❀ बूढि गाय इक दियो देवाई ॥
मरिकै जब यमपुर महँ गयऊ ❀ तब यम चित्रगुप्तसों कहेऊ ॥
याके पाप पुण्य करु लेखा ❀ चित्रगुप्त कह पाप अलेखा ॥
मरत समय दिय बूढी गाई ❀ तौने भरि मोहिं सुकृतिदेखाई ॥
ताते द्वै घटिका पर्य्यन्ता ❀ जो चाहै सो लहै तुरन्ता ॥

फेरि नरक है कोटिन वर्षा * वणिकहि तब यम कह्यो सहर्षा ॥
द्वै घटिका भरि जो मन होई * तोको गाय देयगी सोई ॥
वणिक गाय ढिग तुरत सिधारा * कह्यो मनोरथ देय हमारा ॥
गाय कह्यो तोसों कहि पाऊं * सो तुरंत तोको दरशाऊं ॥
वणिक कह्यो यम गुद महँ शृंगा * मातु डारिये यही उमंगा ॥
धाई धेनु तुरत यम ओरा * भाग्यो यम चितवत चहुँ ओरा ॥

दोहा—लियो रपटि सुरभी तुरत, वणिक पूंछ गहि तासु ॥
पाछे पाछे चलतभो, माने परम हुलासु ॥ १४ ॥

कहुँन बचे जब गो विधिअयना * सुरभीको बारचो वसुनयना ॥
वणिक कह्यो इनहूको तैसो * करु सुरभी मम मानस ऐसो ॥
तबहिं धेनु ब्रह्मौ पहँ धाई * करतारहु तब चले पराई ॥
यम विरंचि वैकुंठ सिधारे * पाछे सुरभी वणिक निहारे ॥
इतनेमें घटिका द्वै बीती * धाये दूत देत अति भीती ॥
पकरचो वणिक डारि गलफांसी * तेहिं लै चले देत दुखरासी ॥
वणिक तबहिं अस कियो पुकारा * त्राहि त्राहि वसुदेवकुमारा ॥
वेद पुराण भाषि अस दयऊ * तुव पुर आइ कोउ नाहिं गयऊ ॥
जो अब यमभट मोहिं लैजैहैं * वेद पुराण मृषा सब ह्वै हैं ॥
यह सुनि हरिपार्षद द्रुत धाई * वणिकहि लीन्ह्यो तुरत छुडाई ॥
तेहि विकुंठ महँ दियो निवासा * मिटिगे सकल वणिककी त्रासा ॥
अस प्रभाव जानहु गोदाने * पै नहिं अधिक नाम ते माने ॥

दोहा—अधिक जानियो नाम जे, नामी ते तुम साहु ॥
तासु कहौं इतिहास मैं, सुनिये सहित उछाहु ॥ १५ ॥

एक समय नारद ऋषिराई * पारिजातको फूलहि ल्याई ॥
दियो रुक्मिणीके धरि शीशा * बैठि रहे जहँ यदुकुल ईशा ॥
खबरि सत्यभामा यह पाई * बैठि रही करि मान महाई ॥
हरि आये तब कह्यो रिसाई * दियो फूल तिनको तहँ जाई ॥
हरि कह पारिजात तरु पाई * तेरे घर महँ देहुँ लगाई ॥

अब कहि जाय स्वर्ग महँ नाथा * जीत्यो सुरन गहे धनु हाथा ॥
पारिजातको पादप ल्याई * दिय सतिभामा भवन लगाई ॥
पुनि नारद सतिभामा भवनै * कौतुक करन हेतु किय गवनै ॥
करि प्रणाम सतिभामा बोली * यह उपाय दीजै मोहिं खोली ॥
जन्म जन्म मम पति हरि होवैं * हम क्षणभरि बिछोह नहिं जोवैं ॥
नारद कह्यो देतहै जोई * पावत जन्म जन्म है सोई ॥
ताते करहु कृष्णको दानै * पैहौ जन्म जन्म भगवानै ॥

दोहा–तब सतिभामा कृष्णको, नारदको दिय दान ॥
हरिको नारद ले चले, चेरो करत बखान ॥ १६ ॥

जानि बिछोह तुरत सतिभामा * नारदसों बोली दुख छामा ॥
अबहीं करहु बिछोह ऋषीशा * उलटो मोहिं दान फल दीशा ॥
नारद कह्यो सत्य तू गावै * कारो दानहि कौन पचावै ॥
इनको तोलि रत्न मोहिं देहू * जन्म जन्म अपनो पति लेहू ॥
तब पति काहँ तुला बैठाई * एक ओर धरि मणि समुदाई ॥
तौलन लगी कृष्णको जबहीं * रत्न बराबर भे नहिं तबहीं ॥
तबहिं सदनकी सम्पति ल्याई * एक ओर दिय तुला चढाई ॥
भई बराबर हरिके नाहीं * रुक्मिणि आई तुरत तहांहीं ॥
लीन्ह्यो सम्पति सकल उतारी * एक रत्न अपने कर धारी ॥
कृष्ण युगल अक्षर लिखि तामें * धरि दीन्ह्यो तहँ तुरत तुलामें ॥
तब हरिको पलरा उठि गयऊ * पलरा नाम केर महि ठयऊ ॥
ताते नामी ते गुरु नामा * जानहु सत्य साधु मतिधामा ॥

दोहा–नामदेव कहि साहुसों, यह अनुपम इतिहास ॥
भक्ति रीति सिखवायके, मेटि दियो भवत्रास ॥ १७ ॥
नामदेवके भांति यह, जानहु चरित अनेक ॥
मैं कहँ लगि वर्णन करौं, मुखमें रसना एक ॥ १८ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे अष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

अथ जयदेवकी कथा ।

दोहा—अब वरणों जयदेवको, चरित परम कमनीय ॥
जासु काव्य कविकुल कमल, भयो भानु रमणीय ॥ १ ॥

तीनि जन्म लगि हरिरति रीती * करत भयो यदुनाथ प्रतीती ॥
गाथा प्रथम जन्मकी गाऊं * श्रोता श्रवण सुधार सुनाऊं ॥
देश एक कर्णाटक नामा * तहां रह्यो मथुरा इक ग्रामा ॥
तहँ यक वणिक धनिकअति ठयऊ * सो यक गणिकाके वश भयऊ ॥
रोजहि जात तासु घर माहीं * क्षण भर नाहिं वियोग सहिजाहीं ॥
एक समय रह भादव मासा * अंधकार लेपित दश आसा ॥
वर्षत रहे जलद जलधारा * नदी नार तजि दिये करारा ॥
अर्द्ध निशा अस बीती जबहीं * वणिक चल्यो गणिका गृह तबहीं ॥
गणिका भवन रह्यो सरि पारा * पैरत पार भयो सरि धारा ॥
गयो वारतिय जबहिं दुवारे * रहे बंद तहँ भवन केवारे ॥
तब पछीत ह्वै सो चढि गयऊ * झूलत तहँ भुजंग इक रहेऊ ॥
तेहि रज्जू भ्रम निज कर धारी * गवन्यो गणिका ऊंचि अटारी ॥

दोहा—ताहि जगायो नाम कहि, गणिका लखिकै ताहिं ॥
अति अचरज मानत भई, किमि आयो घर माहिं ॥ २ ॥

वणिक कह्यो आपनो हवाला * तब निंदन लागी तेहि काला ॥
जस तुम कियो प्रीति मोहिं माहीं * तस भजत्यो जो हरिपद काहीं ॥
दोऊ लोक सुधारि तव जाते * कबहुं न यमके भट पछियाते ॥
वणिक कह्यो को हरि प्रभु भारी * मोहिं बताउ दुराउ न प्यारी ॥
तब तेहिं भवन माहिं इक ठामा * लग्यो चित्र सुंदर घनश्यामा ॥
तेहि बताय गणिका अस गायो * येई प्रभु यदुनाथ सोहायो ॥
वणिक ग्लानि मानी मन भारी * लियो तुरत तसवीर उतारी ॥
सो पट लै गवन्यो सरि तीरा * बैठ्यो धरा ध्यान धरि धीरा ॥
कहै चित्रसों अहै अभीती * प्रगटहु नाथ मानि परतीती ॥

बीते कहत ताहि दिन साते ❋ बिना अन्न बिन जल बतराते ॥
लगी रटन मुख प्रगटहु नाथा ❋ रह्यो न ताके कोउ तहँ साथा ॥
तन मन तासु जग्यो हरि माहीं ❋ दूसर सुरति रही तेहि नाहीं ॥
दोहा-सतयें दिवस बिकुंठ महँ, संकट गो हरिकाहिं ॥
प्रगट भये तसबीरते, श्रीयदुनाथ तहांहिं ॥ ३ ॥
कह्यो वणिकसों प्रभु यहि रीती ❋ प्रगट्यो मैं लखि तोर प्रतीती ॥
ह्वैहो द्विज तजि वणिक शरीरा ❋ मम प्रसादते बुद्धि गँभीरा ॥
करुणामृत रचिहो जब ग्रंथा ❋ तब पैहो बिकुंठकी पंथा ॥
ह्वैगे शुद्ध बुद्धि हरि देखे ❋ वणिक कह्यो तब मोद अलेखे ॥
दीजे नाथ मोहिं वरदाना ❋ जब लगि चहौं करौं गुणगाना ॥
हरि कह तीनि जन्म लगि प्यारे ❋ गावहु सुंदर सुयश हमारे ॥
यही जन्म महँ ग्रंथ बनायो ❋ नाम शृँगार समुद्र धरायो ॥
द्वितिय जन्म करुणामृत करहू ❋ ते सुनाय पापिन उद्धरहू ॥
तृतिय जन्म रचि गीतगोविंदा ❋ ह्वैहो गोपुर केर वसिंदा ॥
अस कहि भे हरि अंतर्ध्याना ❋ वणिक लग्यो विचरन थल नाना ॥
तब शृंगार समुद्रसु ग्रंथा ❋ विरचो जामें हरि रति पंथा ॥
तजो शरीर पाय कछु काला ❋ भयो जन्म द्विज भवन विशाला ॥
दोहा-बाल कालते करत भो, हरिमें अति अनुराग ॥
बाल कालसे कालसे, किय जगजालहिं त्याग ॥ ४ ॥
विचरन लाग्यो जगत अभीता ❋ करत अपावन परम पुनीता ॥
रच्यो ग्रंथ करुणामृत नीको ❋ जो साहित्य शास्त्रको टीको ॥
बहुत काल लगि धरयो शरीरा ❋ गायो कृष्ण सुयश मतिधीरा ॥
तज्यो शरीर जन्म जब पायो ❋ तब जयदेव नाम कहवायो ॥
श्रीजयदेव चक्रवर्ती कवि ❋ रचो गीतगोविंद ग्रंथ रवि ॥
जो कोउ अष्टपदी मुख गावै ❋ राधारमण चरण रति पावै ॥
श्रीजयदेव संत कुल भाना ❋ तासु कथा अब करौं बखाना ॥
किंदुबिल्व नामक इक ग्रामा ❋ तामें जन्म लियो मति धामा ॥

बालकाल ते हरि अनुरागी * भयो विरक्त विषय रस त्यागी ॥
जेहि तरु तरे नींद निशि गहही * तेहि तरु तरे बहुरि नहिं रहही ॥
गुदरी वपुष कमंडलु हाथा * भजन करै कोउ रहै न साथा ॥
काशीमें कोउ इक द्विज भयऊ * जगन्नाथ दर्शन हित गयऊ ॥
दोहा–विनय कियो जगदीशसों, देहु नाथ संतान ॥
सो मैं तुमहीं अर्पिहौं, ग्रहण कियो भगवान ॥५॥
अस कहि जबै बहुरि घर आयो * कन्या जन्म नारि महँ पायो ॥
भई वर्ष दश जबै कुमारी * सुता सहित द्विज पुरी सिधारी ॥
प्रभुसों विनय कियो कर जोरी * लेहु समर्पित दुहिता मोरी ॥
अस कहि द्विज डेरा महँ आयो * प्रभु मंडन कहँ निशि सपनायो ॥
कह्यो जाय द्विज काहँ बुझाई * कन्याको तुरंत लै जाई ॥
किंदुबिल्व नामक इक ग्रामा * तहँ जयदेव वसै मतिधामा ॥
मोर रूप तेहिं देय कुमारी * अनुचित उचित न नेकु विचारी ॥
द्विज दुहिता लै तुरतहिं गयऊ * किंदुबिल्व महँ आवत भयऊ ॥
लख्यो वृक्ष तर श्रीजयदेवै * गाय सुयश करते हरि सेवै ॥
द्विज कह लीजै मोरि कुमारी * जगन्नाथ शासन शिरधारी ॥
बोले तब जयदेव प्रवीना * तू बावरो अहै मतिहीना ॥
नहिं गृह नहिं धन नाहिं तनु जोरा * नाहिं बिवाह मनोरथ मोरा ॥
दोहा–जगदीशैको जायकै, देहु सुता सविचार ॥
नारि लालसा उनहिंके, तिय युग अष्ट हजार ॥६॥
द्विज जयदेव वचन नहिं मान्यो * कन्यासों पुनि वचन बखान्यो ॥
हम दे चुके तोरि पति येई * जन्म बितावहु इन कहँ सेई ॥
अस कहि द्विज गवन्यो घर काहीं * बोले तब जयदेव तहांहीं ॥
का सुख लहि इत रहहु कुमारी * मैं तो जन्महि केर भिखारी ॥
कन्या कह्यो होय जो चाहै * या तनुके तुमहीं हो नाहै ॥
तहँ वासि कुटी एक रहि लीन्ह्यो * पद्मावती नाम तेहि दीन्ह्यो ॥
तहँ यदुपतिकी मूर्ति पधारी * सेवा पूजा करै सुखारी ॥

गीतगोविंद बनावन लागे ❀ यदुपति चरण चारु अनुरागे ॥
रचत रचत जब यह पद आयो ❀ (स्मरगरलखंडनं मम शिर-
सि मंडनं धेहि पदपल्लवमुदारं) ❀ तब जयदेव सोच अधिकायो ॥
श्रीवृषभानु सुता पद काहीं ❀ अनुचित कहब कृष्ण शिरमाहीं ॥
पै आवै सोइ पद नहिं आना ❀ तब उठि गये करन स्नाना ॥
तब जयदेव स्वरूपहि धारी ❀ आये हरि लै पुस्तक प्यारी ॥

दोहा—पुस्तकमें लिखि पद सोई, जात भये यदुराय ॥
खोल्यो पुस्तक आयकै, श्रीजयदेवनहाय ॥ ७ ॥

हरिकर अक्षर लिखित विलोकी ❀ तियसों कहत भये अति शोकी ॥
को खोल्यो मम पुस्तक आई ❀ बोली वाम वचन मुसकाई ॥
तुमहीं खोल्यो पुस्तक आई ❀ मज्जन हित पुनि गये सिधाई ॥
तब जयदेव जानि प्रभु काहीं ❀ कियो तियहि दंडवत तहांहीं ॥
जन्म प्रयंत सेव हम कीन्ह्यो ❀ नाथ आय दर्शन तोहिं दीन्ह्यो ॥
गीतगोविंद समथ बनायो ❀ हरि प्रभाव जगमाहँ चलायो ॥
प्रचरचो जगत गीतगोविंदा ❀ गावैं उभय सुमति मतिमंदा ॥
श्रीजगदीश पुरी चहुँ ओरा ❀ गावहिं नारि पुरुष सब ठोरा ॥
रहे पुरी को राजा जोऊ ❀ गीतगोविंद रच्यो इक सोऊ ॥
कह्यो पंडितन याहि चलाओ ❀ नहिं जयदेवभणित मुख गाओ ॥
पंडित कह्यो चली यह नाहीं ❀ हरिदाया जयदेवहि माहीं ॥
राजा और पंडितन केरो ❀ भयो पुरीमहँ वाद घनेरो ॥

दोहा—यह सिद्धांत परचो तहाँ, दोउ पुस्तक हरि पास ॥
धरि दीजै हरि उर सोई, मिलै सो होय प्रकास ॥८॥

दोउ पुस्तक धरि नाथ अगारा ❀ कढि आये करि बंद किवांरा ॥
दंड द्वैक महँ खोलि कपाटा ❀ लखे जाय सब अनुपम ठाटा ॥
कृत जयदेव गीतगोविंदा ❀ धरचो आपने उरहि मुकुंदा ॥
गीतगोविंद रचित नृप केरो ❀ दूरि परो रहै सब हेरो ॥
तब राजा मन मानि गलानी ❀ बूडन चल्यो सिंधु दुख मानी ॥

भइ अकाशवाणी नृप काहीं ❀ मति बूडे संशय कछु नाहीं ॥
द्वादश सर्गन प्रति सुश्लोका ❀ इक इक रचहु तजहु मनशोका ॥
ते द्वादश सुश्लोक तिहारे ❀ चलिहैं तीनिउँ लोक उदारे ॥
तब राजा अति आनँद पायो ❀ शुभ द्वादश सुश्लोक बनायो ॥
सर्ग सर्ग प्रति यक सुश्लोकू ❀ राजाके जानहु मति ओकू ॥
एक समय सो पुरी मँझारी ❀ मालिनकी यक रही कुमारी ॥
सो टोरत कहुँ भाटन काहीं ❀ गावै यह पद निज मुख माहीं ॥

पद-धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली ॥

दोहा-तेहि निशिके परभातमें, पंडा खोलि किवांर ॥
लखत भये जगदीशके, फारे वसन अपार ॥ ९ ॥

तब राजाको जाय जनायो ❀ राजहु द्रुतहिं धाय तहँ आयो ॥
अचरज मानि भूप अरु पंडा ❀ धरन कियो दुख जानि अखंडा ॥
स्वप्न माहँ तब कह हरिदेवा ❀ गीतगोविंद जो किय जयदेवा ॥
सो मोहिं प्राणनते अति प्यारा ❀ जो गावै घर पंथ बगारा ॥
ताके पीछे पीछे लागौं ❀ ताहि सुननको अति अनुरागौं ॥
है यक मालिनि केरि कुमारी ❀ भाटन तोरत गावत प्यारी ॥
धीर समीरे यह पद गायो ❀ ताहि सुनन हित मैं तहँ धायो ॥
भाटन कांटन सब पट फाटे ❀ कोउ वारण हित ताहि न डाटे ॥
निशि पर्य्यन्त तासु सँग वाग्यो ❀ गीतगोविंद सुनत अनुराग्यो ॥
यह हरिको शासन सुनि धाई ❀ पंडा कह्यो भूपसों जाई ॥
भूपति सुनि माली कन्याको ❀ बोल्यो तुरत पठै शिबिकाको ॥
तेहि पद परशि धन्य मुख गाई ❀ पुरी मध्य डौंडी पिटवाई ॥

दोहा-गावै गीतगोविंद जो, सो सुंदर थल माहिं ॥
गीतगोविंद सुननको, यदुपति हठि तहँ जाहिं ॥ १० ॥

यह हवाल एक मुगुल सुन्यो जब ❀ गीतगोविंद पढन लाग्यो तब ॥
पढिके गीतगोविंद मलेच्छा ❀ वागन लाग्यो पुरी यथेच्छा ॥
चढो तुरंग यही पद गावै ❀ बहुरि बहुरि पाछे टक लावै ॥

पद–संचरदधरसुधामधुरध्वनिमुखरितमोहनवंशम् ॥
हरि आगे आगे तेहि केरे * वागत फिरै न सो दृग हेरे ॥
पीछे लखे लखे हरि नाहीं * तब उपजी संशय उर माहीं ॥
भ्रम्यो तीनि दिन सो पद गायो * नाहिं हरिको दर्शन सो पायो ॥
चौथे दिवस बंद किय गाना * तब आरत हित भे भगवाना ॥
अंतर्ध्यान भये हरि जबहीं * मरचो तुरंत तुरंगहि तबहीं ॥
मुगुल महामन मानि गलानी * पीछे ओर नयन टक तानी ॥
मूर्छित ह्वै महिमें गिरि परेऊ * तब हरि दौरि पकरि कर लयऊ ॥
हरिकह विह्वल कत मुगुलेशा * हरिको जोहि कह्यो यमनेशा ॥
मैं अस सुन्यों आपने काना * करे जो गीतगोविंदहि गाना ॥
दोहा–पीछे पीछे तासु हरि, वागत हैं दिन रैन ॥
पीठि ओर ताते कियो, तीनि दिवस भरि नैन ॥ ११ ॥
तुमको लखत टूटि गइ ग्रीवा * देख्यों मैं नाहिं आनँद सीवा ॥
हरि कह मैं आगे तुव रहेऊ * ताते मोर दरश नहिं लहेऊ ॥
मांगु मांगु जो अब मन आवै * तोहिं न कछु दुर्लभ मोहिं भावै ॥
तब मलेच्छ मांग्यो कर जोरी * तुरँग समेत होय गति मोरी ॥
एवमस्तु कहि यदुकुल राया * तहँते अपनो रूप छिपाया ॥
यमन जरूर तुरंग समेता * गवन्यो कृपानिकेत निकेता ॥
पै औरहु कौतुक कछु सुनिये * हरि प्रभाव अचरज नहिं गुनिये ॥
चाम ऊन लोहादिक केते * बाजी साजु रचे जन जेते ॥
ते तुरंत हरिलोक सिधारे * जो तुरंग भूषणहुँ सवारे ॥
तामें प्रियादास हरिदासा * यहि कवित्तको कियो प्रकासा ॥

कवित्त–और सुनो महिमा हरिकी, अति अद्भुतता कहि जात न भारी। चाम लगाम औ जीनमें ऊन, लग्यो जेहि जीवको अश्व मझारी ॥ औरहु भूषण वस्त्र तुरंग सजे निज अंगन अंग सवांरी। ते मुगुलेश शरीरको पाईं गये हरिलोक भो बंधन टारी ॥ १ ॥

ऐसो गीतगोविंद प्रभाऊ * श्रोता जानहु भेद न काऊ ॥
गीतगोविंद प्रभाव महाना * कहँ लगि करिये वदन बखाना ॥

दोहा-सुकवि चक्रवर्ती महा, श्रीजयदेव उदार ॥
तासु कथा अब कहतहौं, सहित कछुक विस्तार १२॥
एक समय जयदेव सुजाना * तीर्थ करनको कियो पयाना ॥
चोर मिले मारग महँ चारी * ते जयदेवहिं गिरा उचारी ॥
जैहौ कहां पथिक बतराऊ * कह जयदेव तीर्थ हित जाऊ ॥
चोर कह्यो सँग भो पथ माहीं * जहां जाहु हमहू तहँ जाहीं ॥
अस कहि चले संग पथ चोरे * रह जयदेव पथिकके भोरे ॥
संत खवावन हित अति चोरी * मोहर लिये रहे सँग थोरी ॥
चोरि चोर चामीकर हेतू * किय मारन जयदेवहिं नेतू ॥
जानि गये जयदेव हवाला * चोरन दियो कनक तत्काला ॥
चोरन संग चले पथ जाहीं * चोर सबै शंकित मन माहीं ॥
आपसमें संमत अस कीन्ह्यो * मांगे विना कनक यह दीन्ह्यो ॥
ताते परी जहां पुर भारी * पकरै है हाठे मारि गोहारी ॥
ताते मारग महँ यहि मारी * कनक लिहे पुनि चलौ सुखारी ॥
दोहा-कोउ कहि दीन्ह्यो कनक यह, जिय मारब बड़ दोष
कोउ कह कर पद काटिकै, चलहिं मानि परितोष १३॥
अस कहि चोर सुशील सरूपा * चले पंथ मिलिगो इक कूपा ॥
तब तुरंत जयदेवहिं डाटी * डारयो कूप पाणि पद काटी ॥
कूप माहँ जयदेव सुजाना * बीति गई निशि भयो विहाना ॥
तौन देशको तब नरनाहा * गवन्यो मृगया हित नरवाहा ॥
निकस्यो तौन कूपके तीरा * निरख्यो जयदेवहि युत पीरा ॥
माचिया डारि तुरंत निकासी * जान्यो संत देखि द्युति रासी ॥
राजा निज पालकी चलाई * पुरक्यो भौन महा सुख पाई ॥
भिषक बोलाय कराय उपाई * तुरत अंगके घाव मिटाई ॥
पूछ्यो यह कस भयो गोसांई * तब जयदेव कह्यो मुसक्याई ॥
रह्यो ऐसही मोर शरीरा * नहिं वृत्तांत कह्यो मति धीरा ॥
यहि विधि रहन लगे जयदेवा * नृपहिं बतायो साधुन सेवा ॥

राजा जयदेवहिं सँग पाई * लाग्यो करन साधु सेवकाई ॥
दोहा–आवन लागे साधु बहु, भूपति करि सत्कार ॥
यथायोग्य धन दै तिन्हैं, करतो विदा उदार १४॥
यह यश फैलि गयो जग माहीं * विदित भयो तेउ चोरन काहीं ॥
चारिहु चोर साधु वपुधारी * आये भूप भवन पगु धारी ॥
लोगनसों पूछ्यो कहँ जाहीं * लोगन कह स्वामी ढिग माहीं ॥
तब जयदेव निकट गे चोरे * चीन्हि भये सिगरे भय भोरे ॥
चीन्हि तिन्हैं उठिकै जयदेवा * मिलत भये मानहुँ हरिदेवा ॥
एकहि आसन में बैठायो * राजाको पुनि खबरि पठायो ॥
आये जेठे बंधु हमारे * भूपति सुनत तुरत पगु धारे ॥
गुरुको जेठो बंधु विचारयो * करि प्रणाम अतिशय सत्कारयो॥
दियो भवनके भीतर डेरा * दिय भोजन पकवान घनेरा ॥
आपुस महँ अस चोर विचारे * वध हित हमहिं भीतरहिं डारे ॥
लैहै वैर विशेषहि अपने * जयदेवहिं सो बात न सपने ॥
करने लगे गवन अतुराई * गुरुको भूपति खबरि जनाई ॥
दोहा–बडे भ्रात गुरु रावरे, रहत न अब यहि भौन ॥
बहुत भांति रोक्यों तिन्हैं, करहिं यतन अबकौन १५॥
तब जयदेव कह्यो अस वानी * विदा करे धन दै सन्मानी ॥
तब भूपति दै धन समुदाई * कीन्ह्यो संतन केहि विदाई ॥
चारि भृत्य दीन्ह्यो सँग माहीं * जामें कहूं लूटि नहिं जाहीं ॥
बहुत दूरि लगि गे जब चारे * भूप भृत्य तब वचन उचारे ॥
जस तुमको नरपति सन्माना * तस सत्कार लह्यो नहिं आना ॥
जेठे बंधु अहो गुरु केरे * यही हेत परतो मन मेरे ॥
चारिहु चोर तबै अस भाषा * कहहिं कथा जनि मानहु माषा ॥
स्वामी स्वामी जे कहवामैं * ते अरु हम इक समय सकामैं ॥
गये एक भूपति भट भारे * राख्यो सो चाकर सत्कारे ॥
तब यह कियो कुकर्म महाना * कोप रूप भो भूप सुजाना ॥

इमें कियो शासन अघ घोरा * याको शिर काटहु यहि ठोरा ॥
तब हम अपनो हितू विचारी * काटि चरण कर गये सिधारी ॥
दोहा–इतना चोरनके कहत, सही मही नाहिं पाप ॥
फाटि गई प्रगट्यो विवर, लहे चोर अति ताप ॥ १६ ॥
सोई विवर चारिहू चोरा * गिरिके गये रसातल घोरा ॥
तहँ कवित्त कीन्ह्यो प्रियदासा * करौं अंत तुक ताहि प्रकासा ॥
कवित्त–फाटि गई भूमि सब ठग वे समाय गये,
भये ये चकित दौरि स्वामीजूपैं आये हैं ॥ १ ॥
राजदूत स्वामी ढिग आये * चोरन को वृत्तांत जनाये ॥
श्रीजयदेव सुनत सो हाला * मींजत कर अति भये विहाला ॥
मींजत कर कर पद ह्वै आये * दौरि दूत भूपतिहि जनाये ॥
राजहु आय देखि ठगि रहेऊ * पूंछत भो जयदेव न कहेऊ ॥
पुनि हठ परयो भूप गुरु पाहीं * तब जयदेव दुखित मन माहीं ॥
सिगरो निज हवाल कहि गयऊ * सुनि राजा अति विस्मित भयऊ
पुनि जयदेव नाम अस गायो * सुनि नरनाह मोद अति पायो ॥
देखहु श्रोता संत सुभाऊ * ऐसेहु पर अपकार न भाऊ ॥
यदपि चोर शठता असि कीन्ह्यो * श्रीजयदेव न चित कछु दीन्ह्यो ॥
रक्षत संतन को भगवाना * मरे पाप ते पापि निदाना ॥
दोहा–जो जासों करतो बदी, बदी ताहि धरि खाय ॥
कन्या सोवै कुँवर घर, बाबहि भालु चबाय ॥ १७ ॥
याको सुनहु यथा इतिहासा * श्रोता देखहु बडो तमासा ॥
यक पाखंडी बाबा आयो * राजद्वारमें स्वाल सुनायो ॥
भूपति सुता उतंग अटारी * खडी रही भूषण पट धारी ॥
बाबा ताहि विलोकत मोह्यो * बार बार ताको तन जोह्यो ॥
बाबहिं भूपतिके भट आई * दीन्ह्यो भीख अन्न समुदाई ॥
बाबा कह्यो भीख नहिं लैहौं * राजाको मिलिके पुनि जैहौं ॥
कछु मंगल कहि हौं नरपतिको * देहौं मेटि अमंगल गतिको ॥

भूपति भृत्य भूप ढिग जाई ❀ बाबा की करतूति सुनाई ॥
भूपति बाबै निकट बोलायो ❀ साधुहि जानि भूप शिरनायो ॥
बाबा कह्यो और सब नीको ❀ एक बातते सिगरो फीको ॥
सुता रावरी दोषित जोई ❀ याते अधिक अधिक दुख होई ॥
याको परित्यागन करि देहू ❀ तो जगमें सुख सम्पति लेहू ॥
दोहा–राजा बाबाके वचन, मनमें सांचो जानि ॥
सुता त्यागि करिबो चह्यो, महादोष तेहि मानि॥१८॥
विशद दारु मंजूष बनाई ❀ तामें निज दुहिता बैठाई ॥
दीन्ह्यो गंगा धार बहाई ❀ बाबा तुरत खबरि यह पाई ॥
सो मंजूषा पाय प्रवाहा ❀ लाग्यो एक नगर नर नाहा ॥
राजकुमार नहात रह्यो सो ❀ लखि मंजूषा पैरि गह्यो सो ॥
भवन लाय मंजूष उघारी ❀ देख्यो अनुपम राजकुमारी ॥
ताहि भवन महँ सो बैठायो ❀ बडो भालु मंजूष धरायो ॥
पुनि गंगा महँ दियो बहाई ❀ पीछे बाबहु पहुँच्यो जाई ॥
पूछ्यो पुरवासिन सों बाता ❀ मंजूषा बहतो इत जाता ॥
पुरवासिन कह दूरि गयो सो ❀ बाबा अति द्रुत चलत भयो सो॥
पकरे मंजूषै चलि दूरी ❀ बाबा आनँद मान्यो भूरी ॥
मोर मनोरथ पूरण भयऊ ❀ अनुपम लाभ विधाता दयऊ ॥
अस कहि मंजूषा जब खोला ❀ रोषित निकसो भालु तब ठोला ॥
दोहा–बाबाको लपट्यो लपकि, डारयो वदन विदारि ॥
भालु भागि वनको गयो, बाबा मरयो पुकारि ॥ १९ ॥
भई दशा तस्करन तैसही ❀ ऐसेन चाही अवशि ऐसही ॥
पुनि भूपति सुपकाल पठायो ❀ पद्मावती तुरंग बोलायो ॥
पद्मावती और जयदेवा ❀ वसे तहां विरचित हरि सेवा ॥
एक समय राजाकी रानी ❀ पद्मावति अंतहपुर आनी ॥
कीन्ह्यो विविध भांति सत्कारा ❀ बैठी निकट भूपकी दारा ॥
नृपतिय नैहरते खत आयो ❀ तासु बंधु सुरलोक सिधायो ॥

रानी की सिगरी ओजाई * जरीं कंत सँग चिता बनाई ॥
यह सुनि रानी कियो विलापा * फेरि प्रशंसा कियो अमापा ॥
पद्मावती कह्यो मुसकाई * यह न सत्य पतिव्रतताई ॥
जो पतिमरन सुनै तिय काना * तजै तुरंत नहीं निज प्राना ॥
सो तिय है नहिं सत्य सुकीया * तब रानी बोली रमणीया ॥
तुम्हैं छोडि अस को जग करई * पै जो कहै सो नहिं परिहरई ॥
दोहा-आई गृह पद्मावती, रानी रच्यो उपाय ॥
गे महीप मृगया जबै, तब इक पुरुष बनाय॥२०॥
कह्यो जाय पद्मावति पाहीं * आयो यह नृप भृत्य इहाहीं ॥
सो अस भाषत सत्य हवाला * स्वामी भये आजु वश काला ॥
पद्मावती कह्यो मुसकाई * अछत अहै मन पति सुखदाई ॥
रानी भई चकित सुनि बानी * भूपतिसों अस दशा बखानी ॥
भूपति वारण किय बहु वारा * गुरू परीक्षा करु न अवारा ॥
रानी परी महा हठ माहीं * किहे परीक्षा बिन कल नाहीं ॥
राखिय यदपि वारि उर माहीं * युवती शास्त्र नृपति वश नाहीं ॥
राजा इक दिन गयो शिकारे * तब रानी पुनि वचन उचारे ॥
आज सत्य स्वामी गति पायो * भाषत राजदूत यक आयो ॥
पद्मावती कह्यो पुनि इच्छा * चहो लेन तुम मोरि परीच्छा ॥
अस कहि तुरत त्यागिदिय प्राना * माच्यो हाहाकार महाना ॥
लगे करन नृप आय विलापा * रानी दुसह लह्यो परितापा ॥
दोहा-तब जयदेव तुरंत तहँ, आय गह्यो कर बीन ॥
गावन लागे पद यही, राग विहाग प्रवीन ॥२१॥
पद-ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे ॥
मधुकरनिकरकरंबितकोकिलकूंजितकुंजकुटीरे ॥ १ ॥
जब यह पद गायो जयदेवा * तब कौतुक कीन्ह्यो यदुदेवा ॥
पद्मावती तुरत उठि बैठी * लखि पति मोदसिंधु महँ पैठी ॥
मच्यो नगर महँ जय जयकारा * धन्य धन्य जयदेव कुमारा ॥

राजा मान्यो बहुत गलानी ❋ समझायो गुरु कह शुभ बानी ॥
पुनि गंगा मज्जन के हेतू ❋ गवने उत्तर संत समेतू ॥
कीन्ह्यो जाय एक थल वासा ❋ गंगा मज्जन हित सहुलासा ॥
तहँते हरनिहार सब दोसा ❋ गंगा रहे अठारह कोसा ॥
जब कछु वृद्ध भये जयदेऊ ❋ तब श्रम होन लग्यो बहुतेऊ ॥
सुरसरि तब सपने महँ भाष्यो ❋ वृथा आप आवन अभिलाष्यो ॥
हमहीं तुव समीप महँ ऐहैं ❋ ताको अनुभव तुमहिं देखैहैं ॥
जब सर महँ फूले जलजाता ❋ मम आगम जान्यो सति ताता ॥
जब जयदेव जगे परभाता ❋ लखे तडाग विपुल जलजाता ॥

दोहा–तबते तेहि सर महँ निते, लागे प्रात नहान ॥
गंगा तेहि सरमें बसी, यह आश्चर्य महान ॥ २२ ॥
सकल देशवासी जिते, जेजे मज्जन कीन ॥
ते गंगा मज्जन फलै, पाय भये दुख क्षीन ॥ २३ ॥
ऐसे श्रीजयदेवके, जानहु चरित अपार ॥
ताते कछु संक्षेपते, भाष्यों मति अनुसार ॥ २४ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥२९॥

अथ श्रीधरस्वामीकी कथा।

दोहा–श्रीधर स्वामीको कहौं, यह अद्भुत इतिहास ॥
जो श्रीमद्भागवत, कीन्ह्यो तिलक प्रकास ॥ १ ॥

श्रीधर ब्राह्मण कुल महँ जाये ❋ पंडित यदुपति भक्त कहाये ॥
नाम कीर्त्तनमें अति प्रीती ❋ तैसे संत समाज प्रतीती ॥
एक समय करने रोजगारा ❋ दूर देशलौं कारि व्यापारा ॥
लै बहु द्रव्य चले घर काहीं ❋ मिले तिनाहिं ठग मारग माहीं ॥
श्रीधरसों पूछ्यो सब चोरा ❋ को हो भवन अहै केहि ठौरा ॥
श्रीधर ग्राम नाम कहि दीन्ह्यो ❋ बहुरि प्रश्न चोरनसों कीन्ह्यो ॥
तुमहु कहहु को हो कहँ जाहू ❋ ग्राम आपनो नाम बताहू ॥

चोरनहू आप्यो सोइ ग्रामा ❀ जहां रहे श्रीधरको धामा ॥
श्रीधर कह्यो साथ भल भयऊ ❀ ठग कह तुव साथी कहँ गयऊ ॥
श्रीधर कह्यो राम है साथी ❀ हम कहँ पावें दल हय हाथी ॥
चोरन द्रव्यवंत तेहिं जानी ❀ मारन हित उपाय निरमानी ॥
पै श्रीधर जब नित पथ गहहीं ❀ यह सुश्लोक सदा मुख कहहीं ॥

श्लोक-सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा ॥
गच्छन्मनोऽरथोऽस्माकं रामः पातु सलक्ष्मणः ॥
आत्तसज्यधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषंगसङ्गिनौ ॥
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम् ॥

दोहा-जब जब श्रीधरको हतन, चोर समीपहि जायँ ॥
तब तब राम लषण दोउ, धनु धारि तिनहिं देखायँ ॥ २ ॥

यहि विधि चलत २ घर आये ❀ मारग ठग नाहिं मारन पाये ॥
तब श्रीधर ढिग चोर सिधारे ❀ साम रीतिसों वचन उचारे ॥
है बालक जे तुव सँग रहहीं ❀ धनुष बाण रोजहि कर गहहीं ॥
तिनको बोलि देहु देखराई ❀ असि छवि अबलौं हग नाहिं आई ॥
तब श्रीधर जान्यो सब हाला ❀ वे दोऊ हैं दशरथ लाला ॥
चोरन सो कह ढारत आंशू ❀ बालक कहँ अवध महँ वाशू ॥
धन्य भाग हे चोर तुम्हारो ❀ दोउ बालक देखे धनुधारी ॥
अस कहि पकरचो चोरन चरणा ❀ श्रीधर हर्ष जाय नाहिं वरणा ॥
चोरनहू है गयो विरागा ❀ संत भये कीन्ह्यो जग त्यागा ॥
श्रीधर तजि संपति परिवारा ❀ काशी वासी भयो उदारा ॥
यती भयो धारचो कर दंडा ❀ रच्यो भागवत तिलक उदंडा ॥
सकल शास्त्र संमत जेहि माहीं ❀ वाद विवाद कलपना नाहीं ॥

दोहा-काशिराजके भौनमें, एक समय सविचार ॥
भइ समाज पंडितनकी, जुरिगे टीकाकार ॥ ३ ॥

काशिराज पूछ्यो यह ठीका ❀ को को रच्यो भागवत टीका ॥
जे भागवत तिलक निरमाने ❀ निज २ तिलक तुरंतहि आने ॥

वामन तिलक जुरे तेहि काला * तब कोउ बोल्यो बुद्धि विशाला ॥
श्रीधर तिलकातिलकातिलकनको * कठिन कठिन कोमल कोमलको ॥
पंडित सबै आषि मन माहीं * कहत भये अब भूपति पाहीं ॥
नृपति बिंदुमाधवके मंदिर * तिलक धरौं सिगरे अति सुंदर ॥
जापै नाथ सही लिखि देहीं * तौन तिलक आदर करि लेहीं ॥
यही भयो संमत सब केरो * भूपति हुकुम नगर महँ फेरो ॥
निज निज तिलक सबै ले आये * माधव मंदिर माहँ धराये ॥
श्रीधरहूको भूप बोलायो * हर्ष विषाद रहित सो आयो ॥
तिलक जौन श्रीधर प्रभु कीन्ह्यो * सब तिलकन नीचे धरि दीन्ह्यो ॥
जुरे सकल काशीके वासी * तिलक तमासो देखन आसी ॥

दोहा–भूपति बंद केवार करि, लग्यो बजावन बाज ॥
रमारमण धौं कौनकी, आज राखिहैं लाज ॥ ४ ॥

तब अकाश महँ बजे नगारे * परी सही अस सबै उचारे ॥
खोलि किवार लख्यो जब जाई * तब यह कौतुक परयो देखाई ॥
सकल आदि ऊपर अति नीका * धरो रहै श्रीधरको टीका ॥
आदि पत्र कनकाक्षर दोई * सही लिखी देखो सब कोई ॥
तब भूपति श्रीधर कृत टीका * लियो लगाय दृगन अरु टीका ॥
सब पंडित कीन्ह्यो अस टीको * श्रीधर टीको टीकन टीको ॥
काशीमें माच्यो जयकारा * राजा अरप्यो कनक हजारा ॥
श्रीधर तुरत बांटि सब दीन्हे * आप एक मोहर नहिं लीन्हे ॥
तबतें श्रीधर तिलक सुहावन * भयो सकल तिलकनते पावन ॥
बुधजन ताहि अवशि आदरहीं * और तिलक तेहिं समनहिं करहीं ॥
जगमें श्रीधर तिलक प्रचारा * अबलौं चलित सकल संसारा ॥

दोहा–यहि विधि श्रीधरकी कथा, जानहिं विविध प्रकार ॥
मैं कहँलौं वर्णन करौं, मानि भीति विस्तार ॥ ५ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

अथ सूरदासकी कथा ।

सो०-अब बंदौं श्रीसूर, भक्तशिरोमणि रसिक वर ॥
जासु काव्य रस पूर, विश्व भयो भावुक सकल ॥ १ ॥

कवित्त-प्रथम गृहस्थ गृह त्यागिकै विरक्त भयो, कृष्णकृपापात्र ग्रंथ रच्यो करुणामृतै ॥ ताको संत कीन्ह्यो हार फेरि निज नैन फोरि, हरि हाथ गहि आये वृंदावन सुमतै ॥ चिंतामणि नाम गणिकाको उपदेश पाय, गोपिकाकी गति पायो सब संत संमतै ॥ सूर-सों भयोहै नाहिं ह्वै है नाहिं दीसै अजौं ताके पदकंज रघुराज नित नमतै ॥ १ ॥

दोहा-कृष्णावेना तीरमें, नगर सोहावन एक ॥
विप्र बिल्वमंगल तहां, बसत भयो सविवेक ॥ १ ॥

कोऊ द्विजगृह उत्सव भयऊ ❋ विप्र बिल्वमंगल तहँ गयऊ ॥
तहँ चिंतामणि गणिका आई ❋ ताहि देखि मन गयो लोभाई ॥
गै गृह गान नृत्य करि आछे ❋ चले बिल्वमंगल तेहिं पाछे ॥
धन दै कीन्ह्यो तासु चिन्हारी ❋ बसै रोज तेहिं भवन सुखारी ॥
भूल्यो विद्या धर्म अचारा ❋ तज्यो कुटुम्ब लोक परिवारा ॥
आयो पितृपक्ष इक काला ❋ श्राद्ध करनको कारज झाला ॥
तासों विदा मांगि घर आये ❋ करी श्राद्ध बहु विप्र खवाये ॥
एक पहर बीती निशि जबहीं ❋ भयो मनोज उदीपन तबहीं ॥
एकहि गणिका भवन सिधारा ❋ तेहि घर रहे तरंगिनि पारा ॥
बाढी रहै नदी अति जोरा ❋ पैरत भे करि जोर अथोरा ॥
मुरदा बह्यो जात इक रहेऊ ❋ ताहि पकरि द्विज पारहि लहेऊ ॥

दोहा-कामाविवश तेहिं मृतकको, जान्यो नाव सुजान ॥
ताहि विटप अरुझायकै, तेहि घर कियो पयान ॥ २ ॥

तेहि घर लागि दुवार केवारे ❋ गोहरायो नाहिं खुले उघारे ॥
तब गृहके पछीत महँ आये ❋ झुलत रह्यो अहि भोग लगाये ॥

ताहि रज्जु गुनि गहि चढि गयऊ ❀ तेहि आंगन महँ कूदत भयऊ ॥
फँसे तासु नरदाके पंका ❀ तहँके मानि चोरकी शंका ॥
उठे सकल देखे द्रुत धाई ❀ फँस्यो बिल्वमंगल दुख छाई ॥
तब तेहि खेंचि पंक सब धोई ❀ पूछ्यो गणिका युत सब कोई ॥
केहि मारग ह्वै तुम इत आये ❀ तिन कहतै तो नाव पठाये ॥
पुनि राखे इक रज्जु लगाई ❀ तोहिसम मीत न मोहिं लखाई ॥
गणिका कह्यो नाव अरु डोरी ❀ देहु देखाय मोरि मति भोरी ॥
तब द्विज डोरी नाव देखायो ❀ अहि अरु मृतक मानि भय पायो
विप्र बिल्वमंगल बैठाई ❀ चिंतामणि बोलि अनखाई ॥
तोहिं धिक् तोहिं धिक् तोहिं धिक् कामी ❀ तोहिसम कौन विषम पथगामी ॥

दोहा-जस यह मेरे चामसें तुम हिय चित्त चुभाय ॥
तस जो लागत कृष्णमें, तो सिगरो बनिजाय ॥ ३ ॥

कवित्त-जैसो मन मेरे हाड चाममें चुभायो मूढ, तैसो यदि श्याम-सो लगावतो सनेहसों ॥ लोक परलोक जग ख्याति औ बडाई यश, तेरो बनिजातो रे तुरंत यही देहसों ॥ मैं तो अहौं वारवधू उद्यम यही है नित, तदपि भजों मैं हरि चातक ज्यो मेहसों ॥ तू तो कुलवंतविप्र क्यों ना भगवंत भजै वृथाही विकानो पापी पातुरीके गेहसों ॥

दोहा-चिंतामणि गणिका वचन, लगे विप्रके बान ॥
खुलिगे हिय पाटल पटल, उदित भानु भो ज्ञान ॥ ४ ॥
भक्तमालहूमें कह्यो, यह कवित्त प्रियदास ॥
औसर तासु विचारकै, मैं इत करहुँ प्रकास ॥ ५ ॥

कवित्त-खुलि गईं आंखैं अभिलाषैं रूप माधुरीको, चाखे रसरंग औ उमंग रस भारिये ॥ वीण लै बजाय गाय विपिन निकुञ्ज क्रीडा, भयो सरपुंज जापै कोटि विषै वारिये ॥ बीतिगई राति प्रात चले आप आप-कोज, हिये वही जाय दृग नीर भरि डारिये ॥ सोमगिरि नाम अभि-राम गुरु कियो आनि सकै को बखानि लालभुवन निहारिये ॥

दोहा-यहि विधि चिंतामणि जबै, निशिभरकियउपदेश
भोर बिल्वमंगल उठे, दीन्ह्यो त्यागि निवेश ॥ ६ ॥
तब चिन्तामणि मनहिं विचारी * भजौं जाय अब गिरिवरधारी ॥
विषय विगत ह्वै निज घर त्यागी * हरिमंदिर महँ नाचन लागी ॥
लहि संतनकी सोउ प्रसादी * आयो भुक्ति मुक्ति मरयादी ॥
विप्र बिल्वमंगलहु सुखारी * नाम सोमगिरि सोउ तपधारी ॥
कीन्ह्यो गुरू यथाविधि तिनको * कबहुँ न आस रही कछु जिनको॥
वर्षरोज भरि करि सत्संगा * वृंदावन गे दरश उमंगा ॥
चले बिल्वमंगल तेहि काला * मिल्यो मार्ग महँ नगर विशाला ॥
पुर बाहर यक रहै तड़ागा * बैठे तहां नीक अति लागा ॥
तहँ यक सज्जन द्विजकी नारी * अति सुंदरि मज्जन पगु धारी ॥
करि मज्जन पट पहिरि मिहीने * चली भवन कहँ गागरि लीने ॥
लख्यो बिल्वमंगल तेहिं जबते * नयन निमेष परे नहिं तबते ॥
लीन्हे तेहि तियको पछिआई * भूलि गयो उपदेश बनाई ॥
दोहा-नारि गई घरभीतरे, बैठे आप दुवार ॥
ताको पति आवत भयो, दीन्ह्यो द्विजै अहार ॥ ७॥
करि प्रणाम पूछ्यो अनुरागी * विप्र कह्यो मोहिं क्षुधा न लागी ॥
सोऊ गयो करन गृह काजू * पुनि आयो देख्यो द्विजराजू ॥
पूछत भयो बैठ केहि हेतू * इन कहँ बैठ लेत नहिं देतू ॥
विप्र परयो हठ देहु बताई * तबै बिल्वमंगल दिय गाई ॥
निरखत तव तिय वदनविलाशा * मैं बैठ्यों इत और न आशा ॥
हाय २ तब सो द्विज गायो * नाथ प्रथम नहिं कस बतरायो ॥
मम धन नारि भवन परिवारू * संत हेत नहिं और विचारू ॥
अस कहि बिल्वमंगलहि आनी * धोयो चरण आपने पानी ॥
सींच्यो सकल भवन सो नीरा * पुनि भोजन कराय दिय बीरा ॥
पुनि परयंक माहँ पौढाई * अपनी तियको कह्यो बोलाई ॥
भूषण वसन पहिरि सब भांती * इनको सेवन कीजै राती ॥

अतिथि होत भगवंत सरूपा ❀ इनहिं भजे न परै भवकूपा ॥
दोहा-पतिको शासन पाय तिय, भूषण बसन सवारि ॥
द्विज आगे कर जोरिकै, ठाढी भई सुखारि ॥ ८ ॥
विप्र निरखि तिय सुंदरताई ❀ पुनि विचारि द्विज सज्जनताई ॥
अपनेको धिक् धिक् बहु कीन्ह्यो ❀ पुनि सुंदरिसों अस कहि दीन्ह्यो ॥
सूजी द्वै दीजै मन आई ❀ सो तुरंत सूजी दिय लाई ॥
गाड्यो दोउ सूजी दोउ आंखी ❀ तिय लखि हाय २ मुख भाखी ॥
यह प्रसंग प्रियदासहु भाष्यो ❀ यक कवित्तके युगतुक राख्यो ॥
कवित्त-कही युग सुई लाओ लाय दई लियो हाथे, फोरी डारी आंखी कह्यो बडी य अभागी हैं ॥ गई पतिपास श्वास भरत न बोलि आवे बोली दुख पाये आये पाय परे रागी हैं ॥
दशा बिल्वमंगलकी देखी ❀ नारि गई पतिपै दुख लेखी ॥
सुनत विप्र आयो द्रुत धाई ❀ बोल्यो तिनसों आंशु बहाई ॥
कहा कियो यह तनकी बाधा ❀ हमसों भयो महा अपराधा ॥
साधुहि ल्याय भवन दुख दीन्ह्यो ❀ तबै बिल्वमंगल कहि दीन्ह्यो ॥
तुव हो साधु अहै हम नाहीं ❀ औगुण रहित साधु कहवाहीं ॥
तहँ कवित्त यह कह प्रियदासा ❀ समय विचारि करौं परकासा ॥
कवित्त-काम नहीं क्रोध नहीं लोभ अहंकार नहीं माया नहीं मोह नहीं मिथ्या नहीं वाद है ॥ आशा नहीं तृष्णा नहीं ईरषा न दम्भ कछु, कपट कठोर नहीं इन्द्रिनको स्वाद है ॥ निंदा नहीं झूठ नहीं वासना न भोगकी है, हिंसा मद मान नहीं पाप ना प्रमाद है ॥ साधु साधु सबही कहत हरिदास कहा, येते गुण जामें नहीं ताको नाम साध है ॥
दोहा-अहैं विकारी नैन मम, नारी नेह करंत ॥
सुखी भये हग विगत हम, जगत बीच विचरंत ॥ ९ ॥
विप्र अबहि जानौ तुमहुँ, जौन मनोरथ मोर ॥
सो चलि पूरण करहिंगे, नागर नन्दकिशोर ॥ १० ॥

जे नयना तियमें लगे, हाड चाम रस पाय॥
ते नयननको फोरिये, जन्म २ दुख जाय॥ ११॥
नयननसों संतन दरश, नहिं देख्यो मतिमंद॥
मोरपक्षसम अक्ष ते, नहिं दायक आनंद॥ १२॥
धिक्‌धिक्‌ धिक्‌ पुनि धिक्‌ तिन्हें, सफल विलोचन नाहिं॥
येकहि बार निहारि जे, युवति ओर लगि जाहिं॥ १३॥
धिक्‌ धिक्‌ धिक्‌ उन कविनको, जे कवि वरणें नारि॥
सब औगुनकी खानि है, ज्ञान भक्तिकी हारि॥ १४॥

कवित्त–मासुहीकी ग्रन्थि कुच कंचन कलश कहे, मुख कहें चंदसों जो कफहीको घरु है॥ वे भुज कमलनाल नाभि कूप कहे, ताहि हाड-हीको खम्भ ताहि कहे रम्भ तरु है॥ हाडके दशन ताहि कुंदके कलीसों कहे, चामके अधर ताहिं कहें बिंबाफरु है॥ ऐसी झूठी युगुति बनावे औ कहावे कवि तापर कहत हमें शारदाको वरु है॥

दोहा–याहि विधि कहि बहु विधि वचन, मांगि विदा द्विजपाल॥
सूरदास देखन चले, वृंदाविपिन विलास॥ १५॥

टोहत गये सूर कछु दूरी * यक थल बैठि गये श्रम भूरी॥
तेहि क्षणमें गजको उधरैया * द्रुपदसुताको चीर बढैया॥
भरुहीके अंडन बचवैया * निज दासनको रक्ष करैया॥
ऐसो श्रीदेवकी दुलारो * सूरदासके निकट सिधारो॥
पूछत भये सूर कहँ जाहू * सूर कह्यो व्रज लखन उछाहू॥
हरि कह नयन हीन बिन साथी * किमि पहुँचोगे विषय प्रमाथी॥
सूर कह्यो जसुधाको प्यारा * सोइ साथी है एक हमारा॥
तब हरि हाथ पकरि कह बानी * होत सांझ लीजे अस जानी॥
आगे चलौं बसौ यक बागा * भोर भये व्रज जाहु सुभागा॥
अस कहि यदुपति हाथ धराये * सूरदासको बागहि लाये॥
निज हाथन जलपान कराये * तब गहि हाथ सूर अस गाये॥

ये करकंज कृष्ण कस लागे ❀ अस सुनि हरि छोडाय कर भागे ॥
सूर कह्यो तब ऊंच पुकारी ❀ सुनहु वचन मम कुंजविहारी ॥
दोहा—हाथ छोडाये जातहौ, निबल जानिकै मोहिं ॥
जब हिरदै ते छूटिहौ, मर्द बदौंगो ताहिं ॥ १६ ॥
अस कहि राति प्रयंत तहँ, सूरदास वसि बाग ॥
जागतही पहुँचे तुरत, वृंदावन बडभाग ॥ १७ ॥
सेवा कुंज सिधारिकै, बैठे तरु तर जाय ॥
कीन्ह्यो मनसंकल्प अस, बिन देखे यदुराय ॥ १८ ॥
नहिं उठिहौं नाहिं डोलिहौं, नहिं करिहौं जलपान ॥
भजन करन लागे तहां, सूरदास मतिवान ॥ १९ ॥
कवित्त—भई उतकंठा भारी आये श्रीविहारीलाल, मुरली बजायकै सो कीन्ह्यो पुर आस है ॥ खुलिगये नैन ज्यों कमल रवि उदै भये, देखि रूप राशिबाढ़ी कोटि गुनी प्यास है ॥ मुरली मधुर सुर राख्यो मुदभारि मानो हरि आये आननते काननमें भास है ॥ कमलानिवासको यों वदन विलाश देखि, आश निज पूर मान्यो धन्य सूरदास है ॥
दोहा—सूरदाससों पुनि कह्यो, नागर नंदकिशोर ॥
दूध भात भोजन करहु, तुम परसादी मोर ॥ २० ॥
रोजहिं हम पठवै हैं दोना ❀ ब्रजमें दोन पत्र बहु होना ॥
अस कहि भे हरि अंतर्ध्याना ❀ सूरदास भे भक्त प्रधाना ॥
सूर सरिस कोउ दूसर नाहीं ❀ जो पकरयो हरि निजकर माहीं ॥
ब्रजमंडल महँ विचरन लागे ❀ गावत कृष्ण चरित अति रागे ॥
एक दिवस यक मंदिर आये ❀ रामरूप तेहि अतिहि सोहाये ॥
सूरदास जब वंदन कीन्ह्यो ❀ तब कोउ साधु तर्क कहि दीन्ह्यो ॥
तुम तो कृष्ण उपासक अहहू ❀ राम दरश काहेको करहू ॥
सूर कह्यो तब वचन प्रमानैं ❀ रामकृष्ण एकहि हम जानैं ॥
साधु कह्यो एकहि है नाहीं ❀ ऐसो कहो न तुम मुख माहीं ॥

हैहैं कृष्ण कबहुँ नहिं रामा ❀ राम होयँगे नहिं क्षण श्यामा ॥
वे तो दशरथ भूप किशोरा ❀ ये तो नंदमहरके छोरा ॥
सूर कह्यो कछु अचरज नाहीं ❀ राम होयँगे कृष्ण सदाहीं ॥
दोहा-अस कहिकै कर जोरिकै, सन्मुख ठाढे सूर ॥
यह कवित्त भाषत भये, आनँद रस महँ पूर ॥ २१ ॥

कवित्त-राखो धनु बाण गहि मुरली बजाओ तान, राखो पट पीत चखचपल निहारिये ॥ राखो वनमाल उर अंगहो त्रिभंग करो, शीश मोरमुकुट कर लकुटी विचारिये ॥ राखो जानकी किशोरराधिका देखाओ और राखो राज पाट गांव चोरीको सिधारिये ॥ औधचंद होहु नंदनंदन अब हेतु मेरे साधुको हमारो या विवाद निरवारिये ॥

सो०-सूर विनय सुनि राम, मोर मुकुट लकुटी गह्यो ॥
सँग राधावर वाम, अधर मुरलि धारण कियो ॥ २ ॥

यह कौतुक लखि साधु समाजा ❀ सूरहि मानि साधु शिरताजा ॥
धरे सूर पदरेणु माथमें ❀ जय जय कीन्ह्यो एक साथमें ॥
चिंतामणि गणिका रहि जोई ❀ ब्रजको आय गई पुनि सोई ॥
सुन्यो सूरके चरित अपारा ❀ दरशन हेतु तहां पगुधारा ॥
सूरदास ताको पहिचानी ❀ आगेते चलिकै सनमानी ॥
ताहि वंदि आसन बैठाई ❀ बोले वचन ताहि शिरनाई ॥
तव उपदेश मोद मैं पायो ❀ तैं तो सर्वस मोर बनायो ॥
सूर आपनी कथा सुनाई ❀ जेहि विधि दरश दियो यदुराई ॥
कथा कहत मैं आयो दोना ❀ दूध भातको अतिशय सोना ॥
कह्यो सूर तब सहित सनेहू ❀ आजु प्रसादी तुमहीं लेहू ॥
चिंतामणि बोली तब बाता ❀ यह दोना काकर है ताता ॥
सूर सकल वृत्तांत सुनायो ❀ चिंतामणि तब अस मुख गायो ॥
दोहा-कहा तुमहि भर भक्त हो, मोहिं न जानत नाथ ॥
दोना दूसर लेहुँगी, जब दैहैं यदुनाथ ॥ २२ ॥
अस कहि वीन बजायकै, गावन लगी पुकारि ॥

तदाकार हरिमें भई, तुरत द्वारकी नारि ॥ २३ ॥
ताकी प्रीति परेखिकै, प्रगटे ताही ठोर ॥
दोऊ कर दोना लिये, नागर नंदकिशोर ॥ २४ ॥
चिंतामणिको एक दै, दूसर सूरहिं दीन ॥
चिंतामणिको सूरको, हरि अपनो करि लीन ॥ २५ ॥

कवित्त–कविकुल कोककंज पायकै किरिनि काव्य, विकसे विनोदित है नेर ओर दूरके ॥ सूखिगो अज्ञान पंक मंद भो मयंक मोह, विषय विकार अंधकार मिटे कूरके ॥ हरिकी विमुखताई रजनी पराय गई मूक भये कुकवि उलूक रस झूरके ॥ छायो तेज प्रेम पुहुमीमें रघुराज नूर, हरिजन जीव सूर उदै सूर सूरके ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

अथ ज्ञानदेवकी कथा।

दोहा–ज्ञानदेव आख्यान अब, करहुँ प्रमान बखान ॥
ज्ञान दीप दीपत सुनत, श्रोता सुनहु सुजान ॥ १ ॥

कोउ ब्राह्मण यक भक्त सुजाना * गृह तजि काशी कियो पयाना ॥
मिले जाय संन्यासी काही * कह्यो कुटुंब हमारे नाहीं ॥
संन्यासी कीन्ह्यो संन्यासी * बसे कछुक दिन मोदित कासी ॥
तेहि तियसों कोउ अस कहिदयऊ * तेरो पति संन्यासी भयऊ ॥
नारि सुनत काशीको आई * कियो पुकार राजघर जाई ॥
राजा कह्यो जो तुव पति होई * लैजा घर वरजे नहिं कोई ॥
तिय निजपति लै निजघर आई * तेहि सँग पुत्र तीनि जनमाई ॥
जाति पाँतिके सब तेहि त्यागे * बसत भयो निजघर दुख पागे ॥
तिनमें जेठ पुत्र जो जायो * ज्ञानदेव सो नामहि पायो ॥
भयो अनन्य भक्त हरि केरो * सकल विश्व भगवतमय हेरो ॥
जो अनन्य जग हरिमय देखत * उत्तम भक्त ताहि बुध लेखत ॥

तुलसी कृत रामायण माहीं * लिख्यो गोसांई दोहा काहीं ॥
दोहा-सो अनन्य असि जाहिकै, मति न टरै हनुमंत ॥
मैं सेवक सचराचर, रूपराशि भगवंत ॥ २ ॥
ऐसे ज्ञानदेव जब भयऊ * हरिते भिन्न न कछु लखि लयऊ ॥
यक दिन गे यक पंडित भवनै * कीन्ही विनय ध्याय श्रीरमनै ॥
देहु हमहुँको वेद पढाई * तब पंडित बोल्यो मुसकाई ॥
तेरो नहीं वेद अधिकारा * छांडि दियो तोको परिवारा ॥
ज्ञानदेव तब मन बिलखाई * दूसर पंडित निकट सिधाई ॥
वेद पढनको बिनती कीन्हा * सोऊ उतर तेहि विधि दीन्हा ॥
तब आये घर मानि विषादा * कैसी वेद पढन मरयादा ॥
एक समय नृपभवन मँझारा * लाग रहे पंडित दरबारा ॥
ज्ञानदेवहूं तहां सिधाई * राजासों असि विनय सुनाई ॥
सब वैदिकन विनय हम कीन्हो * वेद पढनको अति मन दीन्हो ॥
पै पंडित नहिं वेद पठाये * भूप तुम्हें फिरि याचन आये ॥
राजा कह्यो वैदिकन पाहीं * काहे वेद पढावत नाहीं ॥
दोहा-तब वैदिक बोले सकल, यहि त्याग्यो परिवार ॥
वेद पढनको अब नहीं, याको है अधिकार ॥ ३ ॥
तब यक महिष बँध्यो तेहि ठोरा * ज्ञानदेव कह लखि तेहि ओरा ॥
सुनहु सकल यहि भैंसाकाहीं * श्रुति अधिकार अहै की नाहीं ॥
पंडित कह्यो न है अधिकारा * जस भैंसा कर तथा तुम्हारा ॥
ज्ञानदेव कह होवै कैसा * वेद पढै जो निज मुख भैंसा ॥
साभिमान पंडित तब गायो * जो यह भैंसा वेद सुनायो ॥
तो तुमको हम वेद पढैहैं * फेरि न कछु संदेह सुनैहैं ॥
तब उठि ज्ञानदेव हरषाई * भैंसा निकट ठाढभे जाई ॥
बोले वचन सुमिरि भगवंता * जो हरि पंडित हृदय बसंता ॥
भैंसा महँ होवै हरि सोई * पढै वेद संशय नहिं कोई ॥
पठन लग्यो भैंसा तब वेदा * पदक्रम जटाक्रमहु बिन खेदा ॥

सकल सभा अचरज ह्वैगयऊ ❀ वैदिकवृंद मानहत भयऊ ॥
भूपति अरु पंडित समुदाई ❀ ज्ञानदेव पद पकरे जाई ॥
दोहा-जयजयकार कियो सबै, ज्ञानदेव गुरु मानि ॥
सकल वेद पुस्तक दियो, गृहते द्रुत तेहि आनि ॥ ४ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे द्वात्रिंशोऽध्यायः॥ ३२॥

अथ वल्लभाचार्यकी कथा।

दोहा-कहौं वल्लभाचार्य्यको, अब सुंदर इतिहास ॥
जाहि सुनत यदुनाथमें, होत अवशि विश्वास ॥ १ ॥
भये वल्लभाचार्य्य विरागी ❀ वृंदाविपिन गये अनुरागी ॥
गोकुलगांव वसे सुखरासी ❀ राधा माधव चरण उपासी ॥
एक समय गोवर्द्धन आये ❀ राधाकुंड वसे सुखछाये ॥
एक विप्र कन्या लै आयो ❀ सुता लेहु वल्लभसों गायो ॥
वल्लभ बहुत भांति तेहि वार्‌यो ❀ सो हठ पर्‌यो न नेकु विचार्‌यो ॥
कह्यो सपन महँ तब प्रभु आई ❀ लेहु सुता शासन मम पाई ॥
वल्लभ कियो त्यागि जो आयो ❀ पुनि तामें तू चहत फँसायो ॥
जो याके तुमहि सुत होऊ ❀ तौ स्वीकार करब हम सोऊ ॥
हरि कह ह्वैहैं सुत हम आई ❀ कन्या ग्रहण करौ मन भाई ॥
वल्लभ जागि भोर दुहिताको ❀ ग्रहण कियो विवाहविधि ताको ॥
कछुक काल महँ विप्रकुमारी ❀ गर्भवती भै अतिछबि वारी ॥
तबै वल्लभाचार्य्य सुजाना ❀ तीर्थाटन हित कियो पयाना ॥
दोहा-तियहु चली सँगमें तुरत, मान्यो वारण नाहिं ॥
पति आगे पाछे तिया, मौन चले पथ जाहिं ॥ २ ॥
कछुक दूरि महँ बालक भयऊ ❀ वल्लभ तेहि तनु कछुक न लखेऊ ॥
नाहिं टेर्‌यो तिय मन यह भीती ❀ तिय शासन पतिको नहिं रीती ॥
तब यक वृक्ष तरे धरि बालक ❀ आप चली सुमिरत यदुपालक ॥
तीर्थ करत बीते युत हर्षा ❀ दम्पतिको तहँ द्वादशवर्षा ॥

बहुरि वल्लभाचार्य्य सनारी ❋ आये तेहि पथ व्रजहिं सिधारी ॥
सोइ बालक तेहि तरुतर माहीं ❋ पर्‌यो रहै कौतुक दरशाहीं ॥
किये सर्प तेहि ऊपर छाया ❋ चहुँ दिशि रक्षत मृग समुदाया ॥
पूछ्यो वल्लभ तब तेहि काहीं ❋ बालक काको परा यहांहीं ॥
तिय कह बालक आपहि केरो ❋ याको करो विशेष निवेरो ॥
वल्लभ कह्यो जाहु ढिग प्यारी ❋ श्रवै पयोधर जो पय भारी ॥
तौ बालक सांचो है तेरा ❋ ऐसो याको करौ निबेरा ॥
तुरत बात ढिग नारि सिधारी ❋ भयो पयोधरते पय भारी ॥
दोहा-गे मृगवृंद बिलाय सब, गो अहि भूमि समाय ॥
तब तुरंत शिशुको तिया, लीन्ह्यो कंठ लगाय ॥ ३ ॥
विट्ठलदास धर्‌यो तेहि नामा ❋ तासु सुयश पूरित सब धामा ॥
चरित वल्लभाचार्य अपारा ❋ कहै को जेहि हरि भये कुमारा ॥
यह प्रसंग जानहु श्रोता धुर ❋ सुनहु चरित्र और तिनके फुर ॥
एक दिवस वल्लभाचार्य्य गृह ❋ आयो एक साधु दर्शन कह ॥
एक वृक्षकी शाखा माहीं ❋ ठाकुर बटुवा बांधि तहांहीं ॥
करिकै दर्श बहुरि जब देख्यो ❋ ठाकुर रहै न तहँ दुख लेख्यो ॥
कह्यो वल्लभाचार्यहिं आई ❋ ठाकुर मम कोउ लियो चोराई ॥
कह्यो वल्लभाचार्य विशेखी ❋ ठाकुर तहँ लेहु निज देखी ॥
जाय लख्यो पुनि पादप शाखा ❋ बटुवा बहुत बांधि कोउ राखा ॥
तब भ्रम भयो बहुरि पुनि आयो ❋ वृत्त वल्लभाचार्यहि गायो ॥
कह्यो वल्लभाचार्य बहोरी ❋ चीन्हि लेहु बटुवा निज छोरी ॥
पुनि शाखा समीप द्विज गयऊ ❋ निज बटुवै भरि देखत भयऊ ॥
दोहा-लै ठाकुर अति मुदित ह्वै, वल्लभ निकट सिधारि ॥
चरण परशिपरणाम किय, जैजै वचन उचारि ॥ ४ ॥
चरित वल्लभाचार्यके, यहि विधि जानहु भूरि ॥
रसिक जनन संतन चरित, जगमें जीवनमूरि ॥ ५ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

अथ शंकराचार्यकी कथा।

दोहा-कथा शंकराचार्यकी, कथत अहौं यहि काल ॥
सुनिये श्रोता चित्त दे, हरत सकल भ्रमजाल ॥ १ ॥

शंकर सत्य शम्भु अवतारा * कियो जगत्में धर्म प्रचारा ॥
बढे जैन धरमी जग माहीं * लोपे शास्त्र पुराणन काहीं ॥
दियो भागवत अम्बु डुबाई * भै अवनी अधर्म अधिकाई ॥
श्रीभागवत सकल असकंधा * बोपदेवके कंठ प्रबंधा ॥
अमरसिंह सेवरा अयाना * सो जैननमें रह्यो प्रधाना ॥
विदित विश्व इत शंकर भयऊ * पूर्व धर्म थापन हित गयऊ ॥
अमरसिंहसो भयो विवादा * करैं हजारन जैन कुवादा ॥
कहँलगि शंकर सुवन बुझावैं * हारैं बहुत बहुत पुनि आवैं ॥
शिष्यन शंकर तुरत बोलाई * दीन्ह्यो अस इकांत समुझाई ॥
यहि पुरको नृप जब मरि जैहैं * तब मम जीव तासु तनु जैहैं ॥
धरयो मोर तनु जतन कराई * जो पुनि होय विलंब महाई ॥
तो सुनाइये यह सुश्लोका * तब मिट जैहै सिगरो शोका ॥

दो०-अस कहि तहँ निवसत भये, कछुदिन महँ महिपाल ॥
मरत भयो तब तनु प्रविशि, उठि बैठे तत्काल ॥ २ ॥

ग्रंथ मोहमुदगल इक नामा * रानी पढे रहे छबिधामा ॥
तासों पढिके सिगरो ग्रंथा * तीन देश प्रगट्यो सदपंथा ॥
दीन्ह्यो जैनिन देश निकारी * प्रगटायो वरभक्ति खरारी ॥
शिश्यन जानि विलम्ब महाई * नृपहि जाय सुश्लोक सुनाई ॥
तब पुनि निज शरीर महँ आये * काशी गवन कियो सुख छाये ॥
रह्यो काशिपति जैनिन चेला * एक समय परिगो तेहि मेला ॥
ऊपर अटा पर बैठ्यो राजा * सहित जैन दश सहस समाजा ॥
कीन्ह्यो शङ्कर स्वामी माया * गङ्गाजल तुरन्त अधिकाया ॥
अटाप्रयन्त पहुँचि जल गयऊ * जाने सकल मरन अब भयऊ ॥

प्रगटी तबै दराज जहाजा * तापर चढन लग्यो जब राजा ॥
तब शंकर बोले असिवानी * प्रथम चढावहु निज गुरुज्ञानी ॥
गुरुन बचाय बचावहु जीवा * नातो नरक होय दुख सीवा ॥
तब भूपति अस दियो निदेशा * चढे गुरु सब विगत कलेशा ॥
दोहा-दश हजार तब जैन जन, नौका चढे तुरंत ॥
बूडिगई तब नाव जल, भयो सबनको अंत ॥ ३ ॥
तब राजाहि शंकर शिष्य कीन्ह्यो * करि उपदेश भक्त करि दीन्ह्यो ॥
वेद पुराण शास्त्र जगमाहीं * जसके तस थापे सबकाहीं ॥
प्रगटी हरिकी भक्ति महाई * यमके पुरको जन नहिं जाई ॥
तब यम जाय नाथ फिरियादा * किय शंकर सतयुग मरयादा ॥
तब शंकरहि कियो प्रभु शासन * विमुख करो जीवनके ब्रातन ॥
नातो नरक झूंठ है जाई * तब शंकर दीन्ह्यो अस गाई ॥
मानहु ब्रह्मजीव कह एका * अहै न माया जीव अनेका ॥
मानन लगे ब्रह्म जिय काहीं * सोहं रटन मची चहुं घाहीं ॥
भे हरिविमुख मिट्यो अनुरागा * तर्कपंथ पुनिके बहु जागा ॥
शंकर चाडि बदरीवन माहीं * ब्रह्मरंध्र त्याग्यो तनु काहीं ॥
कीन्ह्यो हरिनिवास महँ वासा * ऐसी शंकर कथा प्रकासा ॥
कहँलौं करौं तासु गुणगाना * विस्तर भीति ग्रंथ मन जाना ॥
दोहा-पुनि जब रामानुज भये, तबपाखंडिन खंडि ॥
श्रीसंप्रदाचलायके, दियो भक्तिरस मंडि ॥ ४ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

अथ कोई एक भक्तकी कथा ।

दोहा-अब वरणौं इक भक्तको, नाम न जानहुँ तास ॥
सुन्यो पिता मुखते कथा, सो अब करहुँ प्रकास ॥ १ ॥
रह्यो कोउ व्रजमें हरिदासा * हरि अनुरागी जगत निरासा ॥
परमहंस विचरत व्रज माहीं * लीला बीनि बीनि सुख लाहीं ॥

लागी सुरति रहति हरिचरणा * देखत जगन श्यामई वरणा ॥
ताहि देख नारद इक काला * जाय कह्यो सुने दीनदयाला ॥
तोर भक्त जगमहँ अति रंका * ताकी होति तोहिं नहिं शंका ॥
प्रभु कह यदपि देहुँ तिन काहीं * काह करौं लेते कछु नाहीं ॥
नारद कह्यो देहु तुम जोई * कस नहिं ग्रहण करहिं हठि सोई ॥
प्रभु कह चलहु संग मम लागी * देहौं सोइ जौन वह मांगी ॥
अस कहि प्रभु नारद दोउ आये * सोइ भक्तके निकट सोहाये ॥
हरि पीतांबर दियो ओढाई * कह्यो मांगु जो तुव मनभाई ॥
तब वह यदुपति भक्त सुजाना * प्रभुहिं विलोकि नेकु मुसकाना ॥
अंबक बहति अम्बुकी धारा * मंद मंद अस वचन उचारा ॥
लाला हमको तुम नहिं देहौ * मांगब मोर सुनत नटिजैहौ ॥

दोहा-प्रभुकह भुवन विभूतिहूं, जो मागै यहिवार ॥
सो देहौं संशय नहीं, मृषा न वचन हमार ॥ २ ॥

कह्यो भक्त तब मंजुल वाणी * होति न मोहिं प्रतीति प्रमाणी ॥
लाला तीनिवार कहि देहू * मोर मनोरथ तौ सुनि लेहू ॥
तब हरि विहँसत वचन उचारे * मांगहु मांगहु मांगहु प्यारे ॥
तब हरिभक्त कह्यो मुसकाई * सुनहु नंदनंदन सुखदाई ॥
ऐसे झगरेमें मति परिये * सुखी आपने मंदिर रहिये ॥
यही देहु मोको वरदाना * है नहिं हिये मनोरथ आना ॥
कोमल पद कंटक महिमाहीं * बारबार विचरहु तुम नाहीं ॥
सींके कांटन चिरकुट भूरी * करें शीत आतप हम दूरी ॥
बीनि शिलाभरि उदर अघाई * तुमको नित देखब यदुराई ॥
याते अधिक कौन सुख होई * मम सम इंद्र विरंचि न कोई ॥
सब हरि विहँसि कह्यो ऋषि पाहीं * देखहु दियेहु हेत कछु नाहीं ॥
नारद करि परदक्षिण ताको * प्रेमानंद मगन सुख छाको ॥

दोहा-ताहि प्रशंसत बार बहु, पुनि पुनि करि परणाम ॥
गवन कियो हरि संगमें, गावत हरिगुण ग्राम ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥

अथ सिंहकिशोरकी कथा।

दोहा-मिथिलाको राजा रह्यो, सिंहकिशोरसुनाम ॥
ताके गर्व महा रह्यो, मोर जमाई राम ॥ १ ॥

बैठे सभा मध्य जब राजा * ताहि कहैं पंडितन समाजा ॥
चलहु अवधपुर प्रभु इक बारा * पावहिं सबै अनंद अपारा ॥
तब राजा भाषे सब पाहीं * विना बुलाये नात न जाहीं ॥
जब रघुवंशी हमहिं बोलै हैं * तब कोशलपुर हमहुँ सिधैहैं ॥
यहि विधि बीतिगयो बहु काला * कोउ पंडित कह बुद्धिविशाला ॥
चलहु विदेह अवधपुर काहीं * तुम्हरे संग हमहुँ सब जाहीं ॥
तबहिं किशोरसिंह नरनाहा * अवध गवन करि कियो उछाहा ॥
साजि समाज राज परिवारा * चल्यो दुंदुभी देत धुकारा ॥
रहिगो अवध कोश जब पांचा * डेरा कियो भावको सांचा ॥
कहैं सबै जब चलिय भुवाला * तब ऐसो भाषत तेहि काला ॥
नात बोलाये विना न जाहीं * आयो कोउ लेन मोहिं नाहीं ॥
एक समय भूपतिके डेरा * सभा सदन सबको अस टेरा ॥

दोहा-महाराज कोशल अधिप, मंत्री तासु सुमंत ॥
मोहिं आनन आवत भयो, ताको तनय तुरंत ॥ २ ॥

अस कहि दै मिथिलेश नगारा * चल्यो अवधपुर शहरमँझारा ॥
मंदिर एक उतंग अनूपा * किय निवास मिथिलापतिभूपा ॥
दरशन हेतु कहूं नहिं जाहीं * बैठ रहैं निज मंदिर माहीं ॥
चलहु दरश हित अस सब कहहीं * तब मैथिल गुमान मन गहहीं ॥
कहै सबैसो केहि विधि जाहीं * कोउ रघुवंशी आये नाहीं ॥
भूप चक्रवर्ती महराजा * अथवा तिन सुत सहित समाजा ॥
ऐहैं प्रथम हमारे डेरा * करिहैं जब सत्कार घनेरा ॥
तब हम चलब तासु घर माहीं * विन सत्कार नात गृह जाहीं ॥
कबते भे रघुवंश बडाई * जाते रहे महामद छाई ॥

रघुवंशिनते छोट न अहहीं ❋ मांगन हेतु इते नहिं रहहीं ॥
जो हमरो करि हैं सन्माना ❋ तौ हम इनके जाब मकाना ॥
सत्वभाव कीन्हे मिथिलेशा ❋ बिते पांच दिन बैठि निदेशा ॥
दोहा-पंचम दिन मिथिलेशकी, भई भावना सत्य ॥
बोलि उठ्यो निजते तहां, सुनहु सबै मम भृत्य॥३॥
दशरथ नृपके चारि कुमारे ❋ आवत डेरा आजु हमारे ॥
करहु तयारी विलम न आनी ❋ सब विधि नातनको सन्मानी ॥
अस कहि लंब फरश बिछवायो ❋ चारु चांदनी तहँ तनायो ॥
गद्दी चारु चारि लगवायो ❋ पचई तेहि ढिग निज धरवायो ॥
अतर गुलाबहु पान मसाला ❋ धरयो हेमभाजन ततकाला ॥
बैठि सभासद सकल समाना ❋ ठाढे भये नकीब सुजाना ॥
कछुक काल महँ कह्यो भुवाला ❋ आवत चारिहु दशरथ लाला ॥
राजा उठि ड्योढीतक आयो ❋ रामरूप तेहि प्रगट दिखायो ॥
चारिहु बंधु उतारि यानते ❋ पूंछि कुशल आनँद महानते ॥
ल्यायो भीतर शिबिर तुरंता ❋ बैठायो आसन सिय कंता ॥
बैठ यथावत चारिहु भ्राता ❋ तैसहि सब रघुवंश जमाता ॥
आप तुरत उठि अतर लगायो ❋ चारिहु बंधुन पान खवायो ॥
दोहा-सुरभि सलिल सींच्योसबन, कीन्ह्यो अतिसत्कार॥
कुशल प्रश्न पूंछत भयो, बहनो इन बहु बार ॥ ४ ॥
चारि बंधु हित सबन अनूपा ❋ ल्यायो जो मिथिलाते भूपा ॥
सो चारिउ भ्रातनको दीन्ह्यो ❋ बहु सत्कार सखनको कीन्ह्यो ॥
कछुक दूरि लगि भै दरबारा ❋ द्वितिय न कोउ यहचरितनिहारा॥
बंधुन सहित उठे तब रामा ❋ गये शयन युत अपने धामा ॥
कछुक दूरि लगिनृप पहुँचायो ❋ लौटि फेरि डेरै निज आयो ॥
दुसरे दिवस साजि निज सैना ❋ कनकभवन गवन्यो भरिनैना ॥
कोहूको नहिं कछु देखाये ❋ ताहि लेन रघुपति कढि आये ॥
गहि रघुनाथ हाथ गृह लाये ❋ निजसमान आसन बैठाये ॥

बैठे तहँ दशरथ महराजा * आइन भृत्यन सहित समाजा ॥
अतर पान निज कर प्रभु दीन्ह्यो * पुनिसत्कारविविध विधि कीन्ह्यो ॥
कुशल प्रश्न कीन्ह्यो महराजा * आप कृपा कह मैथिल राजा ॥
राज्यो बहुत बार दरबारा * चलत हासरस विविध प्रकारा ॥
दोहा-सबते अति सत्कार लहि, उठि तिरहुतको भूप ॥
भगिनि भेट हित गवन किय, अंतःपुरहि अनूप ॥५॥
गयो पवरि जब मैथिल राई * तीनिहु भगिनि सहित सिय आई ॥
परि पद रुदनकरत तेहिं भेट्यो * कहि मृदुवचनभ्रातदुखमेट्यो ॥
मणि मंदिर सिय गई लेवाई * पूछी नैहरकी कुशलाई ॥
भगिनि देन हित जो लैगयऊ * यथा योग्य मिथिलाधिपदयऊ ॥
कौशल्यादिक जे सब रानी * मिथिलाधिपहि बहुतसन्मानी ॥
पुनि उठि भूपति बाहेर आयो * चढि वाहन निज सदन सिधायो ॥
रहे जे मिथिलाधिप सँगमाही * ते चरित्र देखे कोउ नाहीं ॥
जबलों रह्यो अवधपुर राजा * मुद्रा दिय जल पीवन काजा ॥
कियो कूच कोशलपुर तेरे * मिथिला गयो डरावत डेरे ॥
जबलों रह्यो विदेह शरीरा * तबलगि तस देख्यो मतिधीरा ॥
सज्जन और जे राम मिलापी * ते जाने तेहि परम प्रतापी ॥
ते ताके सँग किये पयाना * तिनको तैसहि सत्य देखाना ॥
दोहा-यह चरित्र याहि कालते, शतसंवतके बीच ॥
रामकृपा जापर भई, कौन ऊंच को नीच ॥ ६ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

अथ पुरुषोत्तमक्षेत्रके राजाकी कथा।

दोहा-श्रीपुरुषोत्तम क्षेत्रको, राजा भक्त प्रधान ॥
तासु चरित वर्णन करौं, सुनहु सबै दै कान ॥ १ ॥
जगन्नाथ नगरीको राजा * बसै पुरी महँ सहित समाजा ॥
अबलों प्रगट तासु सब रीती * यात्री दर्शन करहिं सप्रीती ॥

एक समय आपने अवासा * खेलत रह्यो भूमिपति पासा ॥
जगन्नाथ पंडा तेहि काला * लाये नाथ प्रसाद उताला ॥
दक्षिण कर पांसा इत रहेऊ * बांये हाथ प्रसाद गहेऊ ॥
तब पंडा नहिं दियो प्रसादा * लै प्रसाद फिरि गे सविषादा ॥
मन महँ सबै विचारन लागे * राजा नहिं प्रसाद अनुरागे ॥
चौपरि खेलि उठ्यो नरनाहा * अति गलानि कीन्ही मनमाहा ॥
आयो हाथ नाथ परसादा * लीन्ह्यो मैं न सहित मर्यादा ॥
वाम पाणि तेहि गहन पसार्‌यो * पासा क्षुद्र दहिन कर धार्‌यो ॥
ता दिन भूपति अशन न कीना * मानि गलानि महादुख भीना ॥
भोर भये पंडितन बोलायो * तिनते ऐसो वचन सुनायो ॥

दोहा—श्रीजगदीश प्रसादको, करै जो कोउ अपमान ॥
ताषु कौन उपचार है, सांचो करहु बखान ॥ २ ॥

सब पंडित संमत करि भाखे * वेद पुराण रीति अस राखे ॥
जोन अंगते हो अपमाना * ताको छेदन करे सुजाना ॥
तब नृप गुन्यो भूप परिपाटी * को अस जो हमार कर काटी ॥
ताते अस मैं करहुँ उपाऊ * जाते मैं अघर्म फल पाऊं ॥
दिवस द्वैक महँ सो नृप राई * पर्‌यो पर्यकहि नकल बनाई ॥
पूछ्यो आय सचिव प्रभु कैसो * नृप कह इक डर होत अनैसो ॥
शयन करहुँ जब मैं अधराता * आवत एक प्रेत भयदाता ॥
डारि झरोखाते कर क्रूरा * मोको देत महाभय पूरा ॥
कह्यो सचिव नृप सोच न कीजै * अपने पास मोहिं निशि लीजै ॥
जबहि झरोखाते कर डारी * डरिहौं मारि काटि तरवारी ॥
अस कहि सचिव भूपके पासा * निवस्यो निशा करन भय नासा ॥
सचिव नींदवश कछु जब भयऊ * राजा तब तुरंत उठिगयऊ ॥

दोहा—सोइ झरोखाते नृपति, डार्‌यो निज करवाम ॥
प्रेत सरिसरव करतभो, जग्यो सचिव तेहिं याम ॥ ३ ॥

काढि कृपाण हन्यो कर माहीं * भये खंड द्वै हाथ तहांहीं ॥

मोदित सचिव दौरि तहँ आयो ❀ राजाको लखि अति दुख पायो ॥
कह्यो कहा कीन्हो प्रभु कर्मा ❀ उभयलोक नाश्यो मम धर्मा ॥
राजा कह्यो रह्यो कर प्रेता ❀ ताहि छोंडायो तैं शुभचेता ॥
भगवत अपराधी कर मोरा ❀ यामें दोष कछू नहिं तोरा ॥
अस कहि भूपति आनँद सानी ❀ निवस्यो सुमिरत सारँगपानी ॥
पंडन उते नाथ सपनायो ❀ लै प्रसाद पंडा द्रुत धायो ॥
लखि जगदीश प्रसाद भुवाला ❀ युग पसारि कर उठ्यो उताला ॥
गहत प्रसाद हाथ जमि आयो ❀ सकल पुरी जय जय रव छायो ॥
सपनायो पंडन जगनाथा ❀ देहु गाडि भूमहँ नृप हाथा ॥
सो कर लै पंडा क्षिति गाडे ❀ उपज्यो द्रुत तरु एक तेहि डाडे ॥
ताकर नाम भयो करदोना ❀ तासु सुमन सुमिरत सुठि सोना ॥

दोहा–सो जगदीशहि चढत नित, अबलौं प्रगट प्रभाव ॥
ऐसे चरित अनेक हैं, कहलौं करौं बढाव ॥ ४ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥

अथ कर्मांबाईकी कथा ।

दोहा–कर्मांबाईकी कथा, अब वरणौं चितलाय ॥
अबलौं जासु प्रभाव जग, सुनहु संत समुदाय ॥ १ ॥

रही जातिकी तेलिनि कोई ❀ पूर्व जन्म सेयो संत सोई ॥
सेवन संत प्रगट परभाऊ ❀ बढ्यो तासु हरिपदमहँ भाऊ ॥
सो जगदीश पुरी कहँ आई ❀ रहे वित्तते हीन महाई ॥
भजन पूजन कछु नहिं करही ❀ भोरहिते उठि अस अनुसरही ॥
यक दोहनि खीचरी बनावै ❀ सो जगदीशै भोग लगावै ॥
सांचो प्रेम करै प्रभु माहीं ❀ राति दिवस बिसरै सुधि नाहीं ॥
सांचो भाव देखि तहँ ताको ❀ प्रगटि तुरत कंत कमलाको ॥
सो खिचरी प्रत्यक्ष प्रभु पावै ❀ बचो जौन प्रभु ताहि खवावै ॥
कर्मांको मन निशि दिन लागा ❀ होय प्रात कब अति सुखपागा ॥

कब मैं राचि खीचरी बनाऊं ❁ कब प्रभुको मैं भोग लगाऊं ॥
राति दिवस यदुनाथ देखाहीं ❁ और ताहि सूझे कछु नाहीं ॥
याहि विधि बीति गयो तेहि काला ❁ खिचरी खाय तासु जगपाला ॥
दोहा-याहि मारग है एक दिन, आचारी कोउ आय ॥
कहत भये देख्यो रचत, खिचरी विना नहाय ॥२॥
बैठि गये तहँ कोपहि छाई ❁ बोलत भे सुनु कर्माबाई ॥
क्या करती दोहनी चढाई ❁ कर्माबाई कह शिर नाई ॥
हरिके हित खीचरी बनाऊं ❁ रोजहि प्रभुको भोग लगाऊं ॥
कोपित तब बोले आचारी ❁ अनाचार करती तैं भारी ॥
बिन मज्जन बिन भाजन धोये ❁ खिचरी रचै उठै जब सोये ॥
कर्मा कह्यो नाथ का करऊं ❁ प्रभु आज्ञा अरु गुन अनुसरऊं ॥
रहत रोज स्वामी अति भूखो ❁ आवत इतै रोज मुख सूखो ॥
तब मम बिसरिजातिसुधिसिगरी ❁ लगो रहत खिचरी नहिं बिगरी ॥
मानि मृषा बोले आचारी ❁ त्वहिं यम दंड होयगो भारी ॥
प्रथम धर्म जानहु आचारा ❁ बिन आचार नरक अधिकारा ॥
कर्मा कह्यो मानि मन भीती ❁ जस तुम कह्यो करों तस रीती ॥
तब आचारी वचन बखाना ❁ नाथ निवेदन वेद विधाना ॥
दोहा-दुती दोहनी साजिकै, करि मज्जन उठि भोर ॥
दै चौका खिचरी रचै, पोति भवन चहुँ ओर ॥ ३ ॥
अस बताय गे भवन अचारी ❁ करमा किय तैसही तयारी ॥
पोतत भवन करत सुस्नाना ❁ भई बिलम खिचरी निरमाना ॥
जगन्नाथ पुनि २ तहँ आवैं ❁ झांकि २ मुरि २ पुनि जावैं ॥
डेढ पहर वेला जब आई ❁ तब करमा खीचरी बनाई ॥
तैसे प्रभुको भोग लगायो ❁ जगन्नाथ प्रत्यक्षहि पायो ॥
आधी खिचरी जब प्रभु खाये ❁ मंदिर पंडा भोग लगाये ॥
कारिकै त्वरा बिना मुख धोये ❁ चले गये मंदिर दुख मोये ॥
उत पंडा मंदिरहि पखारी ❁ भोग लगावन करी तयारी ॥

तब देखे प्रभु मुख छबि खानी ❀ एक ओर खिचरी लपटानी ॥
पंडा सब अचरज मनमाने ❀ बारबार बहु विनय बखाने ॥
हे केंवार बैठो तोहि द्वारे ❀ मेटहु प्रभु संदेह हमारे ॥
तब मंदिरते भै अस बानी ❀ यक दासी मम भक्ति प्रधानी ॥
दोहा-कर्माबाई नाम जेहि, प्राणहुते प्रिय मोहिं ॥
रचति रही खिचरी नितै, वेदविधान न जोहि ॥४॥
देखि प्रीति मैं तासु अपारा ❀ रोजहि खिचरी करहुँ अहारा ॥
इक आचारी तेहिं डरवायो ❀ वेदविधान ताहि सिखवायो ॥
करत वेदविधि भै अति बेरा ❀ कैयक बार कियो मैं फेरा ॥
भोजन करन जबै हौं लाग्यो ❀ कर्मा प्रीति रीति अनुराग्यो ॥
तब मंदिर महँ महा प्रसादा ❀ लाये तुमहु सहित मरयादा ॥
त्वरा विवश,मैं मुख न धोवायो ❀ अध भोजन करते उठि आयो ॥
ताते खिचरी मुखमें लागी ❀ याकी भीति देहु तुम त्यागी ॥
समुझावहु आचारिहि जाई ❀ अब नहिं करमाको डेरवाई ॥
करत रही रोजहि जस रीती ❀ तस खिचरी अरपै युत प्रीती ॥
यह सुनि पंडा द्रुत उठि धाये ❀ आचारीको बहु समुझाये ॥
आचारी करमा ढिग आयो ❀ चरणन परि अस विनय सुनायो ॥
वही रीति करु मातु सदाहीं ❀ मेरो कह्यो मान कछु नाहीं ॥
दोहा-अमल विवश मैं त्वहिं कह्यो,क्षमा करहु अपराध॥
तेरे प्रीति फँसे हरी, करुणासिंधु अगाध ॥ ५ ॥
अस कहि आचारी घर आयो ❀ कर्मा वही रीति मन लायो ॥
कछुक काल महँ करमा बाई ❀ तजि शरीर बैकुंठ सिधाई ॥
जा दिन कर्मा तज्यो शरीरा ❀ ता दिन लंघन किय यदुबीरा ॥
रजनीमें राजै सपनायो ❀ मैं करमैं निज लोक पठायो ॥
अब खिचरी मोहिं कौन खवैहै ❀ प्रीती रीति अस कौन दखैहै ॥
राजा कियो विनय कर जोरी ❀ पावहु नाथ खीचरी मोरी ॥
राजा उठि तुरंत परभाता ❀ राचि खिचरीअतिशयअवदाता ॥

रोजहि भोग लगावन लगा ❀ कर्मा नाम अबै लग जागा ॥
खिचरी करमा बाई केरी ❀ चलै पुरीमहँ अबलग ढेरी ॥
श्रोता देखहु हरि करुणाई ❀ प्रीति रीति जानहिं यदुराई ॥
नहिं विद्या कुल जाति अचारा ❀ नहिं धन राज्य ज्ञान तप भारा ॥
केवल प्रीति रीति महँ रीझैं ❀ वारत ताहि नाथ अतिखीझैं ॥

दोहा—स्मृति शास्त्रहु संहिता, वेद पुराण प्रमान ॥
विप्र तेइ जे हरि भजैं, शूद्र भजैं जे आन ॥ ६ ॥
द्वादशगुणयुत विप्रहू, हरिविमुखी है जोय ॥
ताते उत्तम श्वपच है, भक्त जो हरिको होय ॥ ७॥
रामभक्त गो स्वामि वर, कह्यो जो तुलसीदास ॥
सोऊ मैं यहि ग्रंथ में, किंचित करों प्रकास ॥८॥
(भारै परै सु चातुरी, चूल्हे परैं अचार ॥
तुलसी हरिको ना भजै, चारों वर्ण चमार ॥ ९ ॥)

तुलसीकृत रामायण केरी ❀ चौपाई मैं कह्यों निवेरी ॥
रघुनंदन अपने मुख गायो ❀ श्रोता मैं सो देत सुनायो ॥
सब मम प्रिय सब मम उपजाये ❀ सबते अधिक मनुज म्वहिं भाये॥
तिनमहुँ द्विज द्विजमहँ श्रुतिधारी ❀ तिनमहँ बहुरि निगम अनुसारी ॥
तिनमहँ पुनि विरक्त पुनि ज्ञानी ❀ ज्ञानिहुते अति प्रिय विज्ञानी ॥
तिनमहँपुनिमोहिं प्रियनिजदासा ❀ जेहि गति मोरि न दूसरिआसा ॥
भक्तिवंत अति नीचहु प्राणी ❀ मोहिं प्राणसम अस मम वाणी ॥
सन्मुख जीव होय मोहिं जबहीं ❀ जन्म कोटि अघ नाशौं तबहीं ॥
जाति पांति पूछै नहिं कोई ❀ हरिको भजै सो हरिको होई ॥
ऐसहि जानहु करमाबाई ❀ गै विकुंठ खीचरी खवाई ॥
हरिहि भजत कछु है न प्रयासा ❀ केवल करै तासु विश्वासा ॥
प्रभुकी करै भावना जैसी ❀ मिलैं जाय प्रभु रीतिहिं तैसी ॥

दोहा-श्रोतादेखहु कृष्ण अस, को ठाकुर जग आन ॥
इक सेवकाई करतमें, सौ गुण करत बखान॥१०॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे अष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८॥

अथ मामा भैनेकी कथा।

दोहा-मामा भैनेकी कथा, भनौं भाग्य भुवि भूरि ॥
श्रोता सुनहु सुजान सब, होत पाप सब दूरि ॥ १ ॥
पश्चिम दिशिके देशमें, कियो वास बहु काल ॥
निकसि चले दोउ भवनते, तीरथ करनउताल ॥ २ ॥
रंगनाथ आवत भये, गे मंदिर जब दोय ॥
विन मूरति मंदिर निरखि, गये महादुख मोय ॥३॥
मामा भैनेकी कथा, प्रियादास मतिमान ॥
आधे यही कवित्तमें, सूचन कियो महान ॥ ४ ॥

कवित्त-घरते निकसी चले वनको विवेक रूप, मूरति अनूप विन मंदिर निहारिये ॥ दक्षिणमें रंगनाथ नाम अभिराम जाको ताको ले बनावे धाम काम सब टारिये ॥ इति प्रियादासकवित्तको प्रमाण ॥

मामा भैने उभय क्षिधारी * विन मंदिर हरिरूप निहारी ॥
तब दोउ लागे करन विचारा * बने कौन विधि नाथ अगारा ॥
जो धन अमित यतन करि पावैं * तो प्रभुको मंदिर बनवावैं ॥
इष्टदेव रघुवंशिन केरे * रंगनाथ अस नाथ निबेरे ॥
रघुपति जबै अवधपुर आये * कपिन विभीषण संग लेवाये ॥
विदा भये जब राक्षस राजा * तब वरदान दियो रघुराजा ॥
येक कल्पलागि राज्यहि करहू * पुनि साकेत लोक संचरहू ॥
कह्यो विभीषण तब कर जोरी * राज्य करनकी आश न मोरी ॥
देहु नाथ मोहिं कछुक अधारा * जामें होइ कल्प भरि पारा ॥

तब प्रभु रंगनाथ कहँ दीना ❀ निशिचरपति लैचल्यो प्रवीना ॥
कछुक दूरि जब तेहिं लैगयऊ ❀ रंगनाथ तब भाषत भयऊ ॥
छोडैगो मोहिं जौने देशा ❀ तहँ करिहौं आपनो निवेशा ॥
दोहा-याहि विधि कहत चले गये, रंगनाथ भगवान ॥
कावेरीके मध्यमें, कीन्ह्यो जबै पयान ॥ ५ ॥
कावेरीकी लखि युग धारा ❀ दीप रह्यो मधिमें बडवारा ॥
गरुआने तहँ श्रीरँगनाथा ❀ सक्यो न लै चलि निशिचरनाथा ॥
धरि दीन्यो भूपहँ तेहि ठौरा ❀ तहँते गये न दक्षिण ओरा ॥
करि बहु विनय निशाचर राई ❀ लंकै गयो अमित पछिताई ॥
आवत रोजहि दर्शन हेतू ❀ अबलों तहँ निशिचर कुलकेतू ॥
मामा भैने तहँ दोउ जाई ❀ मंदिर रचन यतन चित लाई ॥
करन विचार लगे मन माहीं ❀ केहि विधि मिले द्रव्य हम काहीं ॥
देशन देशन धन हित वागे ❀ एकहु यतन कहूं नहिं लागे ॥
जैननको इक शहर महाना ❀ तहां किये जब दोउ पयाना ॥
जैनिनको यक मंदिर भारी ❀ तहँ इक मूरति जाय निहारी ॥
तामें द्युति चमकै आरशकी ❀ पारशनाथ मूर्त्ति पारशकी ॥
बहुत जैनधर्मी तहँ रहहीं ❀ कोटिनको धन यक यकलहहीं ॥
दोहा-मामा भैने निरखि तेहि, कियो जतन चितलाय ॥
इनकी करिकै चाकरी, मूरति लेयँ चोराय ॥ ६ ॥
तब मिलि हैं हमको धन भारी ❀ बनी रंगमंदिर मनहारी ॥
पहिले शिष्य होयँ इनकेरे ❀ सेवन करैं बहुत विधिकेरे ॥
तब भैने अस उत्तर दीन्ह्यो ❀ काहे वृथा नरक मन कीन्ह्यो ॥
जैन चाकरी मंत्रहु लीन्हे ❀ नहिं उद्धार यतन बहु कीन्हे ॥
तब मामा अस वचन बखाना ❀ सुनहु शास्त्रको यही प्रमाना ॥
कवित्त-पावैं प्रभु सुख हम नर्कही गये तो कहा, धरकन आई जाय कान लै फुकायोहै ॥ ऐसी करी सेवा जामें हरी मतिकेवरा ज्यों सेवरा समाज सब नीकेकै रिझायोहै ॥ इति ॥

श्लोक—न वदेद्यावनीं भाषां प्राणैः कंठगतैरपि ॥
हस्तिना पीड्यमानोऽपि न गच्छेज्जैनमंदिरम् ॥

असप्रमाणकहिपुनि अस भाख्यो * धन्य सो धन जो हरिहितराख्यो ॥
कौनिहुँ विधिते हरि सेवकाई * भैनै विफल कबहुँ नाहिं जाई ॥
अस सुनि भैनेहु अतिसुख पाई * लागे करन जैन सेवकाई ॥
ऐसी सेवा कीन्ही दोऊ * तापर भाषण कियो नाहिं कोऊ ॥
भे प्रसन्न दोहुन पर जैना * रह्यो कोहुते भेदहु भैना ॥
जैन सबै सम्मत जुरि कीन्हो * मंदिर सौंपि दुहुनको दीन्ह्यो ॥
रहन लगे मंदिर महँ दोऊ * तिनको मर्म न जान्यो कोऊ ॥

दोहा—चौकी मंदिरमें रहै, रहै न दुती दुवार ॥
पूछ्यो कारीगरनसों, करिओदर इकवार ॥ ७ ॥

कारीगर तब वचन बखाने * जितने मंदिर हम निरमाने ॥
अतिशय जबर कबहुँ नाहिं गिरई * का समरथ जो चोरी करई ॥
कलशा निकट छिद्र यक कोता * कलशा गिरे प्रगट सो होता ॥
यह सुनि आनँद दोऊ पाये * जबर जबर संसाव नवाये ॥
अति उतंग रचि सूत निसेनी * मंदिर उपर चढे लै छेनी ॥
काट्यो भवँरकली तहँ जाई * कलशा दियो तुरंत ढहाई ॥
भयो छिद्र लघु भैने गयऊ * मूरति द्रुत उखारि सो लयऊ ॥
पुनि मामहु प्रविश्यो तेहिंमाहीं * बांध्यो रजुमहँ मूरति काहीं ॥
भैने प्रथम उपर कढि आयो * मूरति मामा तुरत उठायो ॥
निकसी मूरति सहि अति पीरा * मामा कढ्यो न थूल शरीरा ॥
तब मामा भीतरते बोलो * अब नाहिं आन बात मन तोलो ॥
मेरो शीश काटि ले प्यारे * मूरति लै भागहु जब धारे ॥

दोहा—हरिमंदिरके हेतु जो, लागहि मोर शरीर ॥
तौ यामें कछु सोच नाहिं, कछु न मानिये पीर ॥८॥

अब यामें नाहिं द्वितिय विचारा * भागहु द्रुतै होत भिनसारा ॥
तब भैने मातुल शिर काटी * लै मूरति भाग्यो भरि माटी ॥

बहुत दूरिमें भो भिनसारा * तब भैने दुख लह्यो अपारा ॥
भैने रंग नगर नियराना * तहँते कौतुक ताहिं देखाना ॥
बडे बडे तहँ परे पषाना * कारीगर लागे विधि नाना ॥
लावन लागे तहां मजूरा * मंदिर नेव करैं तहँ पूरा ॥
यह लखि भैने अति पछिताना * हाय हमारो दोउ नशाना ॥
उत मातुलको हम हतिआये * इत मंदिर आने बनवाये ॥
सोचत यहि विधि गो जब नेरो * तहँ अपने मातुलको हेरो ॥
अचरज मानि कह्यो अस बाता * तू कहँते आयो इत ताता ॥
मामा कह्यो न मैं कछु जानो * भोरहि यह थल मोहिं देखानो ॥
यक मूरति मैंहूं ले आयो * लोह पराशि बहु सोन बनायो ॥

दोहा–बनवावन लाग्यो तुरत, कनक बेंचि बहु सोन ॥
कोउ नहिं पूछ्यो आजलौं, कहा करै तू कोन ॥९॥

भैने परमानंदित भयऊ * दोउ मिलि मंदिर रचना कियऊ ॥
बन्यो सात सम्वत महँ भारी * हरिमंदिर त्रिभुवन मनहारी ॥
भरतखंडमहँ अस नहिं दूजो * जासु निपुणता सुरगण पूजो ॥
मामा भैने पुनि बहुकाला * जियत भये सेवत जगपाला ॥
संत हजारन भोजन करहीं * रंग भवन वसि आनँद भरहीं ॥
सो मंदिर अबलों जग जाहिर * कारीगर विरचे जगमाहिर ॥
कछुक काल महँ दोउ तनु त्यागे * हरिपुर गवन करन जब लागे ॥
कढे नरकपति चढे विमाना * दृग पथ परे नारकी नाना ॥
जे जे परे नैन पथ तिनके * गे विकुंठ उद्धार न जिनके ॥
कावेरी तट रंग विमाना * श्रीवैष्णवन मुख्य स्थाना ॥
ताकी कथा प्रथम मैं गाई * ग्रंथ प्रपन्नामें सुखदाई ॥
रंगविमान प्रभाव अपारा * ताते मैं न कियो विस्तारा ॥

दोहा–धनि धनि भैने जगतमें, धनि धनि मातुल सोय ॥
हरिसेवनके हेतु दोउ, दीन्ह्यो तनु निज खोय ॥१०॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

अथ हंस हंसनीकी कथा ।

दोहा-एक हंस इक हंसिनी, कथा अपूरब तासु ॥
श्रोता सुनहु हुलास भरि, मैं अब करहुँ प्रकासु ॥१॥

कोइ यक रहे देशको राजा * रहे सजी सब राज समाजा ॥
कुष्ठरोग ताके तनु भयऊ * यतन अनेकनते नहिं गयऊ ॥
कर पद गलन लगे नृपकेरे * भूप आनि सब वैद्यन टेरे ॥
भूमि वित्त खायो सब मोरा * मेटे मिटै रोग नहिं थोरा ॥
मेरो रोग मिटी जो नाहीं * देहौं सबन गाडि महि माहीं ॥
मीचु निवारण बल न तुम्हारा * रुजहर वैद्य होत संसारा ॥
सुनत वैद्य राजाकी बानी * गये भवन संशय उर आनी ॥
सिमिटि लगे सब करन विचारा * यह उपाधि किमि होय निवारा ॥
भिषक एक तिनमें अतिबूढो * सबसों कहा मंत्र अस गूढो ॥
सुनहु चिकित्सक सबै सुजाना * करब कालिह हम नृप सन्माना ॥
भोर भये राजा ढिग आये * वृद्ध वैद्य तब वचन सुनाये ॥
अचरज नहिं प्रभु रोग विनाशा * पै औषधि जो शास्त्र प्रकाशा ॥

दोहा-सो प्रभु देहु मँगाय द्रुत, तौ औषधी बनाय ॥
करहिं चिकित्सा रावरी, आमय आसु नशाय ॥२॥

राजा बोल्यो वेगि बतावहु * वैद्य कह्यो युग हंस मँगावहु ॥
भूपति कह्यो मिलै केहिं ठौरा * वैद्य कह्यो जानो नहिं मोरा ॥
रहत हंस जेहि थल महँ ह्वैहैं * व्याधा जानि अवशि हति लैहैं ॥
अस कहि वैद्य निवास सिधारयो * यह चातुरी न कोउ विचारयो ॥
एक ओर पढियो सब होई * एक ओर सिगरो गुण जोई ॥
पै न चातुरी को दोउ तूलै * सो जानहु विद्यागुण मूलै ॥
राजा तुरतहि वधिक बोलाई * ल्याउ हंस कहँ आनि देखाई ॥
जो युगहंस इतै नहिं लैहौ * तौ कुल सहित गडाये जैहौ ॥
चारि वधिक जे रहे नगीची * लै घन दौरे दिशा उदीची ॥

पर्वत पर्वत वन वन माहीं * फिरे मराल मिले कहुँ नाहीं ॥
क्षुधित दुखित दुख लहे अपारा * मिल्यो सिद्ध यक तेज अगारा ॥
धावत कत व्याधनसों गायो * व्याधा सब वृत्तांत सुनायो ॥
दो०-सिद्धहि दाया लागि अति, वधिकन व्यथित निहारि।
दियो एक गुटिका तिनहिं, ऐसे वचन उचारि ॥ ३ ॥
यह गुटिका जो मुख धरिलैहौ * जहँ मन होय पहुँचि तहँ जैहौ ॥
वधिक तुरत गुटिका मुख धारे * मानसरोवर तुरत सिधारे ॥
मान सरोवर बसैं मराला * मिलैं विलोकि तिलक अरु माला
तहँके वासिनके ढिग आवैं * इनहिं देखि दूरी भजि जावैं ॥
वधिक सबनते पूंछन लागे * हंस हमहिं लखि केहि हित भागे ॥
तहँके वासी वचन बखाने * तिलक माल विन तुमहिं डेराने ॥
वधिकहुँ दिये तिलक तब माला * पहिरे नव तुलसीके माला ॥
मानसरोवरमें गे जबहीं * हंस विलोकि तुरंतहि तबहीं ॥
हंस हंसिनी सन्मुख धाये * वधिक समीप साधु गुणि आये ॥
कही हंसिनी तब पतिकाहीं * इनके नयन साधुसे नाहीं ॥
कंत तुरंत समीप न जाहू * तब बोल्यो हंसिनि कर नाहू ॥
माला तिलक देखि हम आये * अब बहुरैं विश्वास गमाये ॥
दोहा-कंत सहित सो हंसिनी, संतन धोखे जाय ॥
परी तुरंतहि पींजरा, लीन्हे वधिक फँसाय ॥ ४ ॥
वधिक हंस हंसनि लै धाये * भूपति पास हुलासित लाये ॥
राजा तिनको दियो इनामा * हंसन धरयो औषधी कामा ॥
तब हरिको उपज्यो संदेहू * हंस कियो संतन पर नेहू ॥
वधे वधिक कर संतन भोरे * है उद्धार हंस कर मोरे ॥
अस कहि हरि धरि वैद्य स्वरूपा * आये तुरत नगर जहँ भूपा ॥
जाय बजारहि कियो पुकारा * कुष्ठरोग हर काम हमारा ॥
लोगन सुनि भूपतिपहँ लाये * जाय तहां प्रभु वचन सुनाये ॥
ये विहंग केहि हेतु मँगायो * तब राजा वृत्तांत सुनायो ॥

इनको तेल देहिं उगवाई * देहैं रोग विशेष मिटाई ॥
वैद्य कह्यो छोडिये विहंगा * अबहिं अरोग करैं सब अंगा ॥
भूप कह्यो करु प्रथम अरोगा * तब करु हंसन छोडन योगा ॥
तब साधुन चरणोदक पायो * भूपति अँगते कुष्ठ नशायो ॥

दोहा—भूपति अंग अरोग्य करि, हंसन दियो छुडाय॥
कौन दीनकी लेय सुधि, बिन श्रीयादवराय ॥५॥

राजाको यह कर्म बतायो * साधु चरणसेवन मन लायो ॥
राजा चरणन पर्यो सुखारी * कियो भूमि धन देन तयारी ॥
प्रभु कह देहु अंतहित काहीं * हमको अब आशा कछु नाहीं ॥
पै अब ऐसी रीति न गहियो * नहिं धृतराष्ट्र दशाको लहियो ॥
राजा कह्यो कथा यह कैसी * तब प्रभु कहन लगे सब जैसी ॥
रहे एक नृप धर्म प्रधाना * निरत निरंतर पग भगवाना ॥
एक वर्ष वरष्यो नहिं सोती * भयो न मान सरोवर मोती ॥
तब द्वै हंस भूप ढिग आये * राजा अपने बाग बसाये ॥
बसे हंस भे सुखी असंडा * कछु दिन माहँ धरे सो अंडा ॥
यक दिन नृपति नयन भइ पीरा * जुरी तहां वैद्यनकी भीरा ॥
नृप दृगहित औषधी बनाये * हंस अंड विधि तासु बताये ॥
अनुचर दौरि बागते लाये * सो औषधि नृप नयन लगाये ॥

दोहा—औषधि लेपत पीर गई, उठि बैठ्यो नरनाहँ ॥
सुन्यो हंस अंडानि लै, डार्यो औषधि माहँ ॥ ६॥

यह सुनि नृपति बहुत पछितायो * सब अनुचरन दंड करवायो ॥
सो जब मर्यो भूप कहि काला * भयो सोइ धृतराष्ट्र भुवाला ॥
रानी नृपकी मीचुहि पाई * गांधारी भे सो महि आई ॥
सो अंडा हंसनके जेते * पुत्र सुयोधनादि शत भे ते ॥
सो अंडन वध पाप प्रभाऊ * देख्यो शत सुत वध कुरुराऊ ॥
रह्यो भूप धर्मज्ञ अपारा * मिल्यो ताहिते नन्दकुमारा ॥
राजाको अपराध अज्ञाता * ताते मिल्यो विदुर सम भ्राता ॥

शरणागत नृप हंसन पाला * ताते महि भोग्यो बहु काला ॥
वैद्यरूप हरि अस कहि बैना * पुनि कह तोहिं यमकी भय भैना ॥
गे विकुंठ वैकुंठ विहारी * राजा सकुल लह्यो सुख भारी ॥
महाभागवत भूपति भयऊ * साधु चरणसेवन मन दयऊ ॥
दियो राज डौंडी पिटवाई * सेवहु संत चरण मन लाई ॥
दोहा-बहुत काल लगि राज्य करि, छोंड्यो भूप शरीर ॥
डंका दै यमराजपुर, गयो जहां यदुवीर ॥ ७ ॥
हंस मिले जेहिं वेषते, सोइ वेष निज धारि ॥
वधिक भावगत ह्वैगये, भवभय दियो निवारि ॥ ८ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥

अथ भुवनसिंहकी कथा ।

दोहा-अब आख्यान बखानहूं भुवनसिंह चौहान ॥
भुवन चारि छायो सुयश, भुवन प्रताप महान ॥ १ ॥
भुवनसिंह यक रह्यो चौहाना * बालहिंते ध्यायो भगवाना ॥
एक समय वृंदावन आयो * श्रीहरिवंश दरश मन लायो ॥
श्रीहरिवंश सुमति तेहिं चीन्ह्यो * प्रेम समेत शिष्य करि लीन्ह्यो ॥
भयो सु परमारथी प्रधाना * कृष्णचरण रतिमें मति साना ॥
तब मनमें अस कियो विचारा * यक थल बैठि न होय गुजारा ॥
बिन धन परमारथ नाहिं होई * राखै हमको भूपति कोई ॥
यह विचारि गृहते चलि दीन्ह्यो * सँगमें निज कुटुंब लै लीन्ह्यो ॥
गयो उदयपुर उदित प्रभाऊ * बसत जहां राना नृपराऊ ॥
राना जानि ताहि बडभागी * राख्यो चाकर वार न लागी ॥
पट्टा दियो लाख रुपयाको * कियो अधिप नेसुक वसुधाको ॥
राना रोज बोलि दरबारा * करै भुवनकर अति सत्कारा ॥
भुवनसिंह आह्निक अस बांध्यो * आठहु याम कृष्ण अवराध्यो ॥

दोहा–प्रथम याम सेवा करै, कृष्णचरण चित लाय ॥
द्वितिय याम नृप सदन चलि, कारज करै बनाय॥२॥
परमारथ तिसरे करै, चौथे नृप दरबार ॥
भुवन भाव किमि वर्णिये, महिमा बढी अपार ॥ ३ ॥
भक्तमालमें लिखत हैं, नाभा छप्पय जौन ॥
इत प्रमाण हित मैं लिखौं, छप्पयकी तुक तौन ॥ ४ ॥
दारुमयी तरवार सारुमय रची भुवनकी ॥

भुवन उदैपुर बस्यो सुखारी * महरानाको अति हितकारी ॥
यक दिन राना तुरँग सँवारा * खेलन निकस्यो विपिन शिकारा॥
सहसन सादी संग सिधारे * शूकर मृगा शशन बहु मारे ॥
गर्भवती यक मृगी परानी * जाय सवारण मध्य समानी ॥
चहुँ दिशि भाग्यो पंथ न पायो * तब राना अस हुकुम सुनायो ॥
हरिणी कढे जासु ढिग जाई * सोइ मारै तरवार चढाई ॥
मृगी भुवन ढिग निकसन लागी * भुवन हन्यो असि सो कटि लागी॥
शावक सहित भई युग खंडा * लगे सराहन वीर उदंडा ॥
राना मुरुकि महल महँ आयो * भुवन महा ग्लानी मन छायो ॥
हाय कहावहुँ मैं हरिदासा * मृगी मारि किय सुकृत विनासा॥
जो न होति करमें तरवारी * मृगी सगर्भ जाति नहिं मारी ॥
खड्ग आजुते कर नहिं धरिहौं * भूप देखावन मिसि कछु करिहौं॥
दोहा–सोइ म्यानमें काठकी, राखि भुवन तरवार ॥
साँझ जाय रोजै करै, रानाको दरबार ॥ ५ ॥
यहि विधि बीतिगयो कछुकाला * भुवन बस्यो ध्यावत नँदलाला ॥
भुवन चाकरी लखि अति भारी * लगे काहुको नाहिं पियारी ॥
करन चहे चुगुली तेहि केरी * कहन व्याज पावे नहिं हेरी ॥
यक दिन भुवन खड्ग कोउ भाई * देखि काठकर हस्यो ठठाई ॥
सो उपाय चुगुलीकी जानी * रानासों चलि कह्यो बखानी ॥
जाको लाख चाकरी देहू * ताकी दशा देखि यह लेहू ॥

रावत काठ केरि तरवारी ❋ कहवावतहै समर जुझारी ॥
राना अचरज मन महँ मान्यो ❋ तासो पुनि अस वचन बखान्यो ॥
मृषा होय तो का पुनि होई ❋ सो कह दंड होय मोहिं सोई ॥
भुवन केरि देखहु तरवारी ❋ ह्वैहै तबहिं प्रतीति तुम्हारी ॥
चारण बोलि कह्यो तब राना ❋ बोलहु शूरन होत विहाना ॥
सब सरदार आय दरबारा ❋ सादर मोजरो करे हमारा ॥

दोहा–सरदारनको दूत चलि, लाये तुरत बोलाय ॥
भुवनसिंहहू आयके, बैठे शीश नवाय ॥ ६ ॥

भक्त तेजवश सन्मुख राना ❋ भुवनसिंहसों नाहिं बखाना ॥
तब राना यह कियो उपाई ❋ देहिं सबै तरवारि देखाई ॥
असकहि अपनी काढि कृपाणी ❋ म्यान्यो ताहि विशेखि बखानी ॥
पुनि जे निकट बैठ सरदारा ❋ तिनके खड्ग निकारि निहारा ॥
देखत देखत सब लखि लयऊ ❋ भुवनसिंह बाकी रह गयऊ ॥
भुवनसिंहसों भूपति भाख्यो ❋ कस तरवारि म्यान महँ राख्यो ॥
भुवन चह्यो अस करन उचारू ❋ मम तरवारि अहै प्रभु दारू ॥
दारु कहत निकस्यो मुख सारा ❋ अचरज सब दरबार विचारा ॥
भुवनसिंह सुमिर्‍यो यदुनाथै ❋ अब मम लाज रावरे हाथै ॥
दियो खड्ग राना कर माहीं ❋ सुमिरत यदुकुल भूषण काहीं ॥
राना द्रुत तरवारि निकासी ❋ चमकि उठी चहुँ दिशि चपलासी ॥
सबके चकचौंधा परि गयऊ ❋ महराना मन विस्मित भयऊ ॥
तासु तेज सहि सक्यो न राना ❋ खड्ग तुरंत म्यान महँ म्याना ॥

दोहा–बोल्यो राना भुवनसों, अस कहुँ सुन्यो न दीख॥
जैसो खड्ग तुम्हार है, जाहु भुवन है शीख ॥ ७ ॥

फेरि कह्यो चुगुली जे कीन्हे ❋ तुम कस मृषा भाषि मुख दीन्हे ॥
दैहैं तुमहिं दंड अति घोरा ❋ चहो विनाशकरन जन मोरा ॥
भाषत भटन कह्यो पुनि राना ❋ दै शूरी लीजै इन प्राना ॥
भुवन ठाढ ह्वै कह कर जोरी ❋ नाथ न इनकी है कछु खोरी ॥

सत्य दारुकी मम तरवारी * राख्यो लाज आज गिरिधारी ॥
तब राना पूछ्यो सब हाला * केहि हित धरयो दारु करवाला ॥
भुवन मृगीकी कथा सुनाई * राना अति अचरज मन लाई ॥
भुवनसिंहको गुनि हरिदासा * करि वंदन बैठाये पासा ॥
आठ लाख पट्टा तेहिं कीन्हो * मत दरबार आव कहि दीन्हो ॥
हमहिं तुव दरशन हित ऐहैं * तुव सत्संग पाय तरिजै हैं ॥
हमहूं धन्य अहैं संसारा * जिनके तुम समान सरदारा ॥
असकहि बिदा भुवनकी दीन्ही * राज समाज सकल नति कीन्ही ॥

दोहा–राखत लाज अनन्य निज, सेवककी यदुराज ॥
भुवनसिंह चौहानकी, जैसी राखी लाज ॥ ८ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४१ ॥

अथ देवापंडाकी कथा।

दोहा–देवा पंडाकी कथा, कहौं उदंडा सोय ॥
झंडा जाके सुकृतको, नवखंडामें जोय ॥ १ ॥
देश एक मेवार है, राना जासु अधीश ॥
तहां चतुर्भुज रूपते, निवसत हैं जगदीश ॥ २ ॥

बन्यो चतुर्भुज मंदिर भारी * रहति भोगकी बड़ी तयारी ॥
रहे नेम कीन्हे अस राना * दरशनहित नित करै पयाना ॥
जब दरशन ले लौटन लागे * देवा पंडा अति अनुरागे ॥
देहि फूल माला परसादी * ले राना गवने अह्लादी ॥
एक दिवस भे विलम महाना * राना कियो न दरश पयाना ॥
देवा पंडा तब अस जाना * दरशन हित ऐहै नहिं राना ॥
प्रभुहि सोवाय सुमाल उतारी * लियो आपने गल महँ धारी ॥
कढन लग्यो मंदिरते जबहीं * देखि परे महराना तबहीं ॥
तब द्रुत गलते माल उतारी * धरि दीन्ह्यो जसको तस थारी ॥
देवा बूढे रहे सचेता * तनुके बार रहैं सब श्वेता ॥

गे द्वै चारि बार रहि माला * इतनेमें आया महिपाला ॥
लौटन लग्यो दरश जब कीन्ह्यो * देवा माल भूप कहँ दीन्ह्यो ॥

दोहा-राजा पहिरि कढ्यो जबै, सूंघ्यो माल उतारि ॥
बूढे बार विलोकिकै, पंडै कह्यो हँकारि ॥ ३ ॥

बूढे बार माल लपटाने * ताको भेद न हम कछु जाने ॥
देवा पंडा कह्यो डेराई * नाथ गये यदुनाथ बुढाई ॥
तब राना बोल्यो अनखाई * भोर लखोंगो मैं इत आई ॥
देवा पंडा भय अति माना * कुशल होय किमि होत विहाना ॥
निशिपर्यंत श्रीकंतहि ध्यायो * यह प्रमाण प्रियदासहु गायो ॥

कवित्त-कहत तो कहीगई सही नाहिं जात अब, महीपति डारै मारि हरिपद ध्याये हैं। अहो हृषीकेश करौ मेरे लिये श्वेत केश, लेशहू न भक्ति कहि कियो देखो छाये हैं ॥ इति ॥

बार बार पंडा पद परई * धडकत हियो धीर नहिं धरई ॥
जब तबके तहँ भयो प्रभाता * पंडा मन महँ अति बिलखाता ॥
हे करुणानिधि राखहु लाजू * तुम तो अहो गरीबनेवाजू ॥
इतनेमें आयो महराना * पंडा देखत वदन सुखाना ॥
गयो दरश हित मंदिर माहीं * पंडहु लीन्ह्यो बोलि तहाहीं ॥
कह्यो देखाव बूढ कहँ नाथा * पंडा कह्यो जोरि युग हाथा ॥
देखहु जाय समीप सिधारी * मृषा गिरा मैं नाहिं उचारी ॥

दोहा-राजा जाय समीप हरि, देख्यो निज दृग माहिं ॥
डाढीमें अरु वदनमें, श्वेत बार दरशाहिं ॥ ४ ॥

राना जान्यो मोम लगायो * पंडा श्वेत बार लपटायो ॥
तब यक बार पाणिमें धारी * राना लीन्ह्यो तुरत उखारी ॥
उखरत बार सकिलिगई नासा * भयो तहांते रुधिर प्रकासा ॥
छिटका परे भूपके आई * मही महीप गिरयो मुरछाई ॥
चारि दंडमें मूर्छा जागी * राना उठ्यो विचारि अभागी ॥
बहुत प्रार्थना प्रभुसों कीन्ह्यो * व्रत करि भूमिशयन करि लीन्ह्यो ॥

स्वप्नेमें प्रभु शासन द्यऊ * तोहिं दंड ऐसो अब भयऊ ॥
राना जबते गद्दी बैठे * तबते मेरे भवन न पैठे ॥
तब राना करि पूजन भारी * गयो उदेपुर महा दुखारी ॥
चली जाति अबलों यह रीती * जात न राना सुनि प्रभु भीती ॥
जबलों गद्दी बैठे नाहीं * तबलौं दरश परश हित जाहीं ॥
याहि विधि देवा पंडा हेतू * बूढे हैंगे कृपानिकेतू ॥
दोहा-सो वरण्यो प्रियदासहू, नाभा कियो बखान ॥
सो मैं इत लिखि देतहौं, श्रोता सुनहु प्रमान ॥ ९ ॥
कवित्त-आयो भोर राना श्वेत बार सो निहारि रह्यो, कह्यो श्वेत केश काहू पंडाने लगायो है ॥ ऐंचिलियो एक तामें खैंचत चढाई नाक, रुधिरकी धारा नृप अंग छिरकायो है ॥ गिरयो भूमि मूर्च्छा है तनुकी न सुधि कहूं जाग्यो याम बीते अपराध कोटि गायो है ॥ यही अब दंड राज बैठे सो न आवे यहां, अबलोंहू आन मानि करै जो सिखायो है ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४२॥

अथ कमधुजकी कथा ।

दोहा-कमधुजकी वरणौं कथा, धर्मध्वजा फहरात ॥
भक्तमालमें जो कह्यो, सो विस्तर विख्यात ॥ १ ॥
कमधुज विप्र चारिहू भाई * भये उदेपुर चाकर जाई ॥
राना सादर तिन कहँ राख्यो * चूके तिनपर कबहुँ न माख्यो ॥
कमधुज तिनमें लहुरे भाई * सो अपनी अस रीति दृढाई ॥
भोरहि निकसि विपिन महँ जाई * करहिं यकांत भजन यदुराई ॥
भोजन हेतु घरिक घर आवै * भजन करत दिन रैनि बितावै ॥
एक दिवस तहँ तीनिहु भाई * कमधुज कहँ अति आंखि देखाई ॥
कह्यो कहां तैं कानन जाई * देत तहां दिन रैन बिताई ॥
क्षण भर तू हुजूर ह्वै आवै * पुनि रहु जहां तोरि मन भावै ॥

नाहिं तो तोरि चाकरी छूटी * भूप गैरहाजिर कहि खूंटी ॥
तब कमधुज बोल्यो तिनकाहीं * हम तो रहे हजूरहि माहीं ॥
हमरो तो पट्टा लिखि गयऊ * यक जन द्वै ठाकुर नहिं कयऊ ॥
कहँ पट्टा भाई कहि माषे * तब कमधुज आनंदित भाषे ॥
दोहा—चाकर दशरथलालके, खडे रहैं दरबार ॥
पटौ लिखायो अवधमें, यह तनु डारचो वार॥२॥
तब भाई बोले अनखाई * देखें वनमें कौन जराई ॥
रात दिवस बसतो वन माहीं * मरिजैहै कोउ तुव सँग नाहीं ॥
कमधुज कह्यो जरैहै सोई * जौन हमारो ठाकुर होई ॥
अस कहि कमधुज विपिन सिधारी * धरचो ध्यान कोशलाविहारी ॥
भजन करत तनु छूटत भयऊ * तब रघुनाथहु संकट गयऊ ॥
उठि तुरंत सियकंत सनेही * चल्यो जरावन कमधुज देही ॥
पवनसुवन पूछ्यो हरषाई * कहँ प्रभुकी अब होति जवाई ॥
प्रभु कह एक भक्त मरिगयऊ * तेहि तनु दाहन में चित दयऊ ॥
मारुत कह मोहिं शासन देहू * आऊं तुरत दाहि तेहि देहू ॥
रघुपति कह्यो करहु यह काजा * सत्य कृपालु गरीब निवाजा ॥
अनिलतनय मलयाचल जाई * लाये चंदन काठ उठाई ॥
पीपर वृक्ष तरे तनु राखी * दाहन कियो राम मुख भाषी ॥
दोहा—दहन दहत कमधुज सुतनु, निकस्यो धूम तुरंत ॥
चलदलतरुवासी सकल, तरिगे प्रेत अनंत ॥ ३ ॥
तहँ कह यह प्रियदास प्रमाना * श्रोता सुनिये सकल सुजाना ॥
छूटचो वन तन राम आज्ञा हनुमान आय कियो दाह धुवां लगे प्रेत पार भये हैं ॥ इति ॥
जो श्रोता करिये कछु शंका * किमि प्रगटचो वनमहँ कपि बंका॥
अनगन तरे प्रेत केहि भांती * जान्यो कैसे जनन जमाती ॥
रह्यो विपिन नाहिं जन संचारा * तौ सुनिये मैं करहुँ उचारा ॥
तेहि पीपरमें प्रेत हजारा * निशि दिन कराहिं सबै संचारा ॥

एक प्रेत कोउ नगर सिधायो * तब सो तनु हनुमान जरायो ॥
प्रेत तरे सबसो रहिगयऊ * जाय तहां लिखि रोवत भयऊ ॥
हाय कहां गइ मोरि समाजा * अस कहि कीन्ह्यो शोर दराजा ॥
लकरी ईंधन लेन जे आये * प्रेत सोर सुनि तुरत पराये ॥
हल्ला कियो शहरमहँ जाई * रोवत एक प्रेत रव छाई ॥
रानाजी सुनि देखन धाये * तरु तर जनन जमाति लगाये ॥
पूंछे प्रेत प्रत्यक्ष बताना * मम समाज कित कीन पयाना ॥

दोहा-तासु वचन सब जननको, समुझि परै कछु नाहिं ॥
तब यक साधु स्वरूप धरि, आये हरी तहांहिं ॥ ४ ॥

कह्यो प्रेत वाणी हम बूझी * अवलों तुमको कछू न सूझी ॥
यक जन भक्त रह्यो भगवाना * ताको दाह कियो हनुमाना ॥
साखी है सब चंदन दारू * तरे धूम लहि प्रेत हजारू ॥
तब वह प्रेत प्रचंड पुकारा * हा नहिं मोर भयो उद्धारा ॥
तब पत्तन बहु साधु बटोरी * डारयो पावक भरि भरि झोरी ॥
प्रेतहि कह्यो ठाढ हो सोहै * अनमिष रूप हमारो जोहै ॥
प्रेत भयो सन्मुख तहँ ठाढो * लाग्यो धूम तासु तनु बाढो ॥
धूम प्रभाव प्रेत तनु त्यागा * चढयो विमान दिव्य बडभागा ॥
गयो विकुंठ निशान बजाई * धन्य धन्य संतन प्रभुताई ॥
कमधुज चिता कोरि सब राखा * चुटकी २ सब शिर राखा ॥
जे जे जन विभूति शिर धारे * ते ते जन वैकुंठ सिधारे ॥
रतिहु मात्र तहँ रही न राषा * रहिगे भ्रात किये अभिलाषा ॥

दोहा-रामदास कमधुज भयो, देखहु तासु प्रभाव ॥
चिता भस्म तारण तरण, प्रगट्यो प्रबल उपाव ॥ ६ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

अथ जैमिलराजाकी कथा।

दोहा-जैमिल जगतीपालके, सुनहु चरित्र विचित्र ॥
हरिभक्तन गाथा सुनत, होते कर्ण पवित्र ॥ १ ॥

मेरु देशको जैमिल राजा ❋ कृष्ण उपासक रह्यो दराजा ॥
श्रीहरिवंश स्वामी शिषि रहेऊ ❋ साधु सेव धर्महि दृढ लहेऊ ॥
मीरा तिनहींकी दुहिता है ❋ जाको यश बहु कवि वक्ता है ॥
रह्यो नेम नृपको दृढ ऐसो ❋ करै न दश घटि कारज कैसो ॥
घरी दशक हरिपूजन करई ❋ बंद राज कारज सब रहई ॥
दश घटिका अंतर जो आवै ❋ विनती करै सो दंडहि पावै ॥
एक समय कोउ भूपति आई ❋ शत्रुन मिलिकै किधौ चढाई ॥
दश घटिका अंतर महँ आयो ❋ लूटन लाग्यो शहर चितचायो ॥
सचिव मुसाहिब अरु सरदारा ❋ जाहिर करन गये नृप द्वारा ॥
राजा हरिपूजा महँ बैठो ❋ त्रास विवश तहँ कोइ नहिं पैठो ॥
तब नृप जननीसों कहवायो ❋ जननी आय नृपहि गोहरायो ॥
कहा बैठ पूजामहँ बेटा ❋ शत्रुन शहर लूटि सब मेटा ॥

दोहा–तब जैमिल हरिदास नृप, इतनो कह्यो निशंक ॥
हरि आछो करिहैं सकल, काहे कीजत शंक ॥ २ ॥

कवित्त–जानि निज सेवक निरत निज पूजनमें, चढिकै तुरंग श्याम रंगको सवार है ॥ कर करवाल धारि कालहूको काल मानो, पहुँच्यो उताल जहां सैन्य बेशुमार है ॥ चपलासों चमकि चहूं-कित चलाय बाजी, भटनकी राजी काटि करत प्रहार है ॥ रघुराज भक्तराज लाज राखिवेके काज, समर विराज्यो वसुदेवको कुमार है ॥ १ ॥

दोहा–शत्रु समाज सहारि प्रभु, तुरँग तबेले राखि ॥
आप गये तेहि भवन जहँ, नृप बैठो अभिलाखि ॥ ३ ॥

दश घटिका बीते तब राजा ❋ निकसि बोलायो वीर समाजा ॥
आयो तुरंग चढनके हेतू ❋ सचिव कह्यो कीजय का नेतू ॥
आपहि ह्वैकै तुरंग सवारा ❋ कीन्ह्यो सकल सैन्य संहारा ॥
यह तुरंग तनु स्वेदहि धारा ❋ तुम सम कौन वीर बलवारा ॥
तब राजा मन अचरज आयो ❋ समरभूमि देखन कहँ धायो ॥

दल चढाय जो लायो भाई * घायल परो विलोक्यो जाई ॥
सो जैमिल कहँ देखत भाष्यो * नृप कबते यह चाकर राख्यो ॥
चढि तुरंग यक श्याम सवारा * कीन्ह्यो सकल सैन्यसंहारा ॥
राजा गुनि हरिकी प्रभुताई * दौरि गह्यो भाई पद जाई ॥
कह्यो दरश पायो ते भाई * हौं ललकतही उमिर गँवाई ॥
पुनि उठाय भाई घर लायो * अच्छो करि उपदेश सुनायो ॥
सोऊ भयो भागवत रूपा * विषय वासना सब भे लोपा ॥

दोहा–अब राजाको भाव जस, यदुपतिमें सब काल ॥
रह्यो तौन वर्णन करौं, सुनहु सबै सुखजाल ॥ ४ ॥

सब महलनते उपर उतंगा * राधा मोहन मंदिर शृंगा ॥
कनकासन आसित वर जोरी * कनकसाजु सब ओर न थोरी ॥
करै सकल उत्सव हरिकेरे * कोउ न जान पावै प्रभु नेरे ॥
चढै निसेनी राखि नरेशा * दूसर कोउ नहिं करै प्रवेशा ॥
उतरि जबै मंदिरते आवै * तबै निसेनी अनत धरावै ॥
रानिहुँ भरी तहँ जान न पामै * एक दिवस रजनीके यामै ॥
चोरिन रानी दियो निसेनी * चढि खोल्यो कपाटकी वेनी ॥
तहँ देखै तो तेहि पर्यंका * मोहन बैठे राधिका अंका ॥
रानी चकित भाजि तब आई * समय पाय निज पतिहि सुनाई ॥
राजा धन्य कह्यो निज रानी * लेहिं तबहिंते रानिहु आनी ॥
जैमिलराज राजऋषि भयऊ * यहि विधि भाव कृष्णमहँ कयऊ ॥
एक दिवस यक संत सिधाग्यो * राजा ताहि बहुत सतकारयो ॥

दोहा–रह्यो संत नृप भवनमें, बहुत काल लगि सोय ॥
कामविवश तिय एक लै, रह्यो उपर घर सोय ॥ ५ ॥
भूपति कीन्यो काज वश, ऊपर जाय निहारि ॥
कछु न कह्यो आयो उतरि, ऊपर पिछौरी डारि ॥ ६ ॥
जागि संत नृपको वसन, चीन्हि सबै तहँ आय ॥
कछु न कह्यो तब भूप तेहिं, लै यकांतमें जाय ॥ ७ ॥

कह्यो वचन अस सुनहु प्रभु, इत बहु विधिके लोग॥
करै घात जो आपको, होय तो मोहिं दुख भोग॥ ८॥
ताते धन लै अनत कहुँ, भजन करहु तप ठानि॥
लै धन संत तुरंत तब, गमन्यो मानि गलानि॥ ९॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे चतुःचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४४॥

अथ साखी गोपालकी कथा।

दोहा–अब साखी गोपालकी, वरणौं कथा रसाल॥
हरणहार कलिकालको, अति कराल भ्रमजाल॥ १॥

गोडवान नामक यक देशा * तहँको वासी द्विजवर वेशा॥
लै यक बालक अपने संगा * तीरथ करन चल्यो सउमंगा॥
तीरथ करत करत सुख छाये * वृद्ध बाल वृंदावन आये॥
वृद्ध विप्र रोगित ह्वै गयऊ * बालक बडि सेवा तेहिं भयऊ॥
वृद्ध विप्र जब भयो अरोगा * तब बालकको कियो नियोगा॥
कियो मोरि तैं अति सेवकाई * मेरे नाहिं सम्पति समुदाई॥
काह देहुँ मैं अहौ उछाही * दिहौ तोहिं कन्या निज व्याही॥
बालक कह्यो न करौं विवाहा * वृद्ध परचो तब अति हठमाहा॥
तब बालक बोल्यो द्विज पाही * साखी देहु गोपालहि काही॥
कह्यो वृद्ध तब तुम हठ रहहू * हे गोपालजी साखी अहहू॥
बालक कियो मोरि सेवकाई * कन्या देहौं मैं घर जाई॥
अस कहि वृद्ध बालकहु दोऊ * आये घर जान्यो नहिं कोऊ॥

दोहा–वृद्ध कह्यो निज सुतनसों, मैं दीन्ह्यों अस हारि॥
कन्या तोहिं विवाहिहौं, अनुचित उचित विसारि॥ २॥

पुत्रन कह्यो न योग विवाहा * करिहै नाहिं कहे भो काहा॥
बीतन लगे लगन दिन जबहीं * बालक कह्यो वृद्धसों तबहीं॥
सुता देनको जो तुम भाषे * दीजे जात लगन कत नाषे॥

वृद्ध कह्यो हम कह्यो न देना * काके आगे हारे बैना ॥
बाल कह्यो साखी गोपाला * उठ्यो न्याउको कलह कराला ॥
लरत लरत दोउ भूप समीपा * जात भये तब कह्यो महीपा ॥
चार पांच जो न्याव पटावे * सो वादी दोउ करे करावे ॥
पांच बैठि पूछ्यो दोउ काहीं * यह नियाव महँ साखी नाहीं ॥
बालक कह्यो कहा कोहि भाषी * यामें अहै गोपालहि साषी ॥
पंच कह्यो पटि गयो नियाऊ * जो साखी बालक ले आऊ ॥
पंच सभामें साखी बोलै * तौं पुनि वृद्ध वचन नहिं डोलै ॥
यह प्रमाण भाष्यो प्रियदासा * सो मैं दुइ तुक करौ प्रकासा ॥

कवित्त–भई सभा भारी पूछ्यों साक्षी नर नारी श्रीगोपाल बनवारी और कौन तुच्छ लोग है ॥ लेवो जू लिवाय जो पै साक्षी भरे आय तोपै व्याही बेटी दीजै दीजै बडो सुख भोग है ॥ इति ॥

दोहा–तब बालक बोलत भयो, ह्वैहैं साखी सांच ॥
तौ गोपाल इत आयकै, कहि देहैं मधि पांच ॥ ३ ॥

तब द्विज बालक तुरत सिधायो * चलत चलत वृंदावन आयो ॥
जाय गोपाल समीप पुकारा * वृद्ध व्याह नहिं करत हमारा ॥
साखी रहे गोपालहि भलिकै * कहो गोपाल साखि तहँ चलिकै ॥
नातो लेहु हमारो प्राना * हम काके ढिग करैं पयाना ॥
अस कहि धरन कियो द्विज बालक * द्वै दिन बिते कह्यो जगपालक ॥
चलि हैं हम बोलब तहँ साखी * तब बालक बोल्यो अभिलाषी ॥
प्रतिमा बोलति कबहूं नाहीं * तुम बोले हमरे हित काहीं ॥
बोले तौ बोलहु चलि साखी * अब काहेको बाकी राखी ॥
तब प्रत्यक्ष हँसि कह्यो गोपाला * चलु हम चलैं संग द्विजबाला ॥
मगमहँ आछो भोग लगैये * पीछे कोउ नहिं बहुरि चितैये ॥
हमको लौटि चितैहै जहँई * रहिहैं अवशि विप्रसुत तहँई ॥
द्विजबालक बोल्यो तब वानी * चितये बिना परी कब जानी ॥
प्रभु कह मेरो नूपुर शोरा * सुनत चलौ जैहै द्विज छोरा ॥

दोहा–कहि अस द्विजसुत चलिदियो, सुनत सो नूपुर शोर ॥
देत भोग द्वैसेरको, चितयो नहिं तहि ओर ॥ ४ ॥

जब द्वै कोश रह्यो सो ग्रामा * मान्यो बालक पहुंच्यो धामा ॥
मनमहँ द्विजसुत लियो विचारी * होत महा नूपुर झनकारी ॥
शोरहिमात्र करै करि माया * धौं आवत संगमें यदुराया ॥
अस विचारि ताक्यो तब पाछे * लख्यो गोपालहि आवत आछे ॥
कह गोपाल यह रह्यो करारा * लावै इत लेवाय परिवारा ॥
आगे हम इतते नहिं जैहैं * याही थल निज भवन बनैहैं ॥
बालक जाय महीप पुकारा * आयो साखी कहन हमारा ॥
यह सुनि भूपति प्रजा समेतू * वृद्ध बाल दरशनके हेतू ॥
आये सकल तहां द्रुत धाई * छके विलोकि मनोहरताई ॥
शङ्ख झालरी बजे नगारे * अरपे चंदन फूल अपारे ॥
करि पूजन नृप विनय सुनायो * तब सबके आगू हरि गायो ॥
सत्य वृद्ध व्याहन दिय भाषी * हम हैं यहि बालकके साषी ॥

दोहा–तब सो द्विज व्याह्यो सुता, बालक विप्र बोलाय ॥
रहे नाथ तेहि देशमें, साखि गोपाल कहाय ॥५॥
भक्तमालमें है सही, यह प्रियदास प्रमान ॥
सो मैं इत लिखि देतहौं, श्रोता सुनहु सुजान ॥६॥

कवित्त–खोलिकै सुनाई साख पूजी हिय अभिलाष लाख लाख भांति रंग भरयो उर भायकै ॥ आयो ना स्वरूप फेरि विनय करि राख्यो घेरि भूपें सुख ढेरि दियो अबलों बजायकै ॥ मोती एक रह्यो नृप कह्यो राति रानीसन छिद्र होतो तो बुलाक देते पहिरायकै ॥ प्रात जाय छिद्र देखि मोती पहिराय दीन्ह्यो ऐसी कला गोविंदकी तरें जन गायकै ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे पंचचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४५॥

अथ वारमुखीकी कथा ।

दोहा–वारमुखीकी यह कथा, बार बार हरषाय ॥
बार बार वर्णन करौं, बार बार मुख गाय ॥ १ ॥

जुरी एक थल सन्त समाजा * तीरथ करन चले कृत काजा ॥
निकसे एक ग्राम है जाई * परे मसखरा चारि देखाई ॥
साधुन कह्यो कहां है पानी * ढूंढ चारि दुष्टता बखानी ॥
रहै एक वेश्याकर भोना * अति सुंदर चमकत चहुँ कोना ॥
ताको दियो निवास बताई * यह जल थल सुंदर सुखदाई ॥
अहै साधुके निवसन योगू * यामें कछू नहीं दुख भोगू ॥
साधु जाय उज्ज्वल थल देखी * बसे तहां अतिशय सुख लेखी ॥
वेश्या भवन साधु नहिं जान्यो * सविधि कृष्ण पूजन निर्मान्यो ॥
शंख बजाय कियो जब सोरा * तब गणिकाको भो अति भोरा ॥
लख्यो द्वारते भय उर आने * हंस वर्ण सब सन्त देखाने ॥
लगी करन मनमाहिं विचारा * पूर्व पुण्य कछु कियो पसारा ॥
आये सन्त आजु घर मोरे * प्रगटे पुंज पुण्य नहिं थोरे ॥

दोहा–करि सोरह शृंगार तनु, भरि बहु मोहर थार ॥
कढि आई निज भवनते, वंदत बारहिं बार ॥ २ ॥

धरि दीन्ह्यो महंतके आगे * बोली वचन अतिहिं अनुरागे ॥
नाथ आप धोखे महँ आये * वेश्या गृह कोऊ न बताये ॥
तब महंत पूंछ्यो अस बाता * को तुम अदहु करहु विख्याता ॥
गणिका कह्यो अहौं गणिका मैं * बहु वसुधामें मम वसु धामें ॥
दरश प्रभाव कुमति भै दूरी * अब मम आश करहु प्रभु पूरी ॥
बही तासु नयनन जलधारा * लखि महंत अस कियो विचारा ॥
वेश्यासम्पति लेब न योगू * अतिउत्तम यहि करौ नियोगू ॥
तब महंत बोल्यो अस बैना * वेश्या अहै तदपि करु भैना ॥
जितनी तेरे सम्पति होई * कारज करै और नहिं कोई ॥
मुकुट मनोहर जटित मणीना * रंगनाथको रचे प्रवीना ॥

यह अचरज लखि संतसमाजा ❋ जय जय कहि बजवायो बाजा ॥
बारवधू तब मुकुट सुधारी ❋ दीन्ह्यो रंगनाथ शिर धारी ॥
कहन लगे सब संत सुजाना ❋ भक्त अधीन होत भगवाना ॥
क्षणमें सकल चूक बिसरावत ❋ तुलसी दासहुँ ऐसहि गावत ॥
लखत न प्रभु चित चूककियेकी ❋ करत सुरति सौ बार हियेकी ॥
मिलहिं न रघुपति बिन अनुरागा ❋ कीन्हे कोटि योग जप यागा ॥
बारमुखी पुनि औरहु तेती ❋ अरपी संपति घरमहँ जेती ॥
निवसी रंग भवनके द्वारा ❋ मांगि मधुकरी करै अहारा ॥
कछु दिनमहँ पुनि तज्यो शरीरा ❋ गै बिमान चढि जहँ यदुवीरा ॥
अबलों मुकुट बारतिय केरो ❋ रंगनाथ शिर सजत घनेरो ॥
देखहु संतन संग प्रभाऊ ❋ बारवधू भै शुद्ध स्वभाऊ ॥
देखहु बहुरि प्रेम प्रभुताई ❋ लियो बारातिय हरि अपनाई ॥

दोहा-पापिन सकल शिरोमणी, गणिकाको अवतार ॥
रंगनाथ मन ना धरयो, केवल प्रेम विचार ॥ ९ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥४६॥

अथ रैदासकी कथा।

दोहा-अब प्रकाश रैदासको, यह इतिहास अखंड ॥
सब श्रोता चित दे सुनहु, नाशत पाप उदंड ॥ १ ॥

रामानंद भक्त परधाना ❋ तासु शिष्य इक विप्र सुजाना ॥
सात भवनते भिक्षा लेई ❋ रामानंद गुरूकहँ देई ॥
ताते कृपापात्र गुरु केरो ❋ होत भयो सो विप्र घनेरो ॥
एक दिवस भिक्षा हित गयऊ ❋ जलप्रपात अतिशय तहँ भयऊ ॥
खडो भयो यक वनिक दुवारे ❋ वनिक ताहिं अस वचन उचारे ॥
हमहीते भिक्षा ले सटको ❋ द्वार द्वार काहेको भटको ॥
ले भिक्षा द्विजगुर ढिग आयो ❋ रामानंदहु पाक बनायो ॥
पुनि श्रीहरिको भोग लगायो ❋ भोजन करन आप मन लायो ॥

तब द्विजसों बोले अस बानी * यह भिक्षा कहँते तुम आनी ॥
शिष्य कह्यो तब वणिक हवाला * वणिक बोलायो गुरु तत्काला ॥
कह्यो पिसान कहाँ तुम पायो * वणिक नारि निज नाम बतायो ॥
तब पूछयो नारीसूं जाई * नारी कह्यो चमारिनि ल्याई ॥

दोहा—रामानंद प्रकोप करि, शिष्यहि दीन्हो शाप ॥
चर्मकार कुल जन्म तुव, होय कियो बड़पाप ॥ २ ॥

मरयो ब्रह्मचारी तेहि काला * सोइ चमार घर जन्यो उताला ॥
पै गुरुसेवन प्रगट प्रभाऊ * भयो न पूरव सुरति दुराऊ ॥
बालक भयो वर्ष जब तीना * तबते दूध पान नहिं कीना ॥
मातु पिता तब भये दुखारी * बैठे रहे अचरज विचारी ॥
रामानंदहि इतै खरारी * कह्यो स्वप्नमहँ वचन उचारी ॥
चर्मकार कुल तव शिष जायो * पयको पान करन बिसरायो ॥
दै आवहु तुम ताहि रजाई * करै पान पय शोकविहाई ॥
रामानंद तुरत उठि धाये * बालक कानहिं वचन सुनाये ॥
बच्चा करहु मातु पयपाना * तेरो दोष हरयो भगवाना ॥
तबते पान करन पय लाग्यो * बालहिते रामहिं अनुराग्यो ॥
भो रैदास नाम अस ताको * करै कर्म रचिवौजू ताको ॥
रचि पांवरी सन्त कहँ देवै * सन्तचरणजल शिर धारि लेवै ॥

दोहा—जो कछुअहैं चोरायकै, सन्तन देइ चोराय ॥
मातु पिता अस जानिकै, दियो ताहि अलगाय ॥ ३ ॥

बाहिर ग्राम कुटी रचि लीन्ही * तहँ आपनी रीति अस कीन्ही ॥
विरचि उपानत बेचन करई * आधो धन संतनको भरई ॥
आधेमें घरकाज निबाही * पूजे शालिग्राम सदाही ॥
करै रोज सन्तन सेवकाई * सन्त दीननाहिं लेय टिकाई ॥
शुद्ध द्रव्य देतो जो कोई * पावत राम द्रव्य है सोई ॥
जो अशुद्ध धन करतो दाना * ताको कहुँ नाहिं लगत ठिकाना ॥
है नाहिं दीन दान सम दाना * राम नाम सम नाम न आना ॥

दया धर्म सब धर्मन कोई * व्रत सम और धाम नहिं होई ॥
रैदासै विचारि निज दासा * साधु रूप धरि रमानिवासा ॥
आवत भे रैदासे धामा * रैदासहु किय दंड प्रणामा ॥
साधु कह्यो तोहिं खर्च सकेतू * ताते मैं बांध्यो यह नेतू ॥
पारस देहुँ हर्ष संदोहा * सुवरन होत छुआये लोहा ॥

दोहा-अस कहि रापी ताहिको, तामें दियो छुआइ ॥
तुरते कंचनकी भई, तेहि गुण दियो देखाइ ॥ ४ ॥

कह रैदास न पारस लेहौं * याको कौन काम करि देहौं ॥
मेरी रापी कियो खुआरा * चाम कटै नहिं गोठिल धारा ॥
तब हरि पारस तेहि घर खोसी * कह्यो राखियो है अति होसी ॥
अस कहिके हरि अनत सिधारे * नहिं तापर रैदास निहारे ॥
हरि बहुरे यक संवत माही * पूछ्यो पुनि निज पारस काहीं ॥
कह रैदास छुयो मैं नाहीं * लै पारस हरिगे कहुँ वाहीं ॥
भोरहि जब रैदास नहाई * पूजे शालिग्राम सोहाई ॥
मिलीं पांच मोहर तेहिं नेरे * फेंकि दियो नहिं तापर हेरे ॥
दूसरे दिन दश मोहर देख्यो * महा उपद्रव निज कहँ लेख्यो ॥
अब करिहौं पूजन नहिं कोई * साधु रूप प्रगटे हरि सोई ॥
कह्यो छांडु अड अबहुँ पियारे * लै धन विरचहु मोर अगारे ॥
जिनको पूजहु ते हैं हमहीं * मानो कहो बुझावे तुमहीं ॥

दोहा-तब रैदास कह्यो वचन, करतो भजन चोराइ ॥
यामें हैहैं विघ्न बहु, जो देहौ प्रगटाइ ॥ ५ ॥

तब हरि कह्यो निवारन करिहैं * तेरो धन सन्तन महँ ढरिहैं ॥
तब रैदास लियो मनमानी * रोजहि मोहर दश प्रगटानी ॥
हरि मंदिर बनवावन लाग्यो * सन्तहु सहस खवावन राग्यो ॥
वाराणसी बात प्रगटानी * अशकुन गुणि पंडित अभिमानी ॥
जाय भूपसूं चुगुली खाई * भूपति होत अधर्म महाई ॥
शालिग्रामहि येक चमारा * पूजत है नहाय हरबारा ॥

ताहि देशते देहु निकारी * नातो लगी अधर्मेहि भारी ॥
वेद विरुद्ध जासु नृपराजू * होत अनेकन कर्म दराजू ॥
सो दूषण लागत नृपकाहीं * करो विलंब नाथ अब नाहीं ॥
राजा तब रैदास बोलाई * बारबार तेहि आँखि देखाई ॥
कह्यो वचन करि कोप अपारा * पूजब शालिग्राम तुम्हारा ॥
वेद विरुद्ध धर्म यह हेरो * शालिग्राम अहै द्विज केरो ॥

दोहा—तब रैदास कह्यो वचन, नृपति न्याउरत होय ॥
न्याउ सहित दीजै हुकुम, यामें दोष न कोय ॥ ६ ॥

हम पूजैं जे शालिग्रामा * लै आवैं चलिके निज धामा ॥
फेंकि दियो गंगा महँ जाई * जाके होयँ सो लेय बुलाई ॥
आवैं नहिं पंडितन बुलाये * तो हम अपने लेत मँगाये ॥
जो निषाद शबरी गृहमाहीं * गये होंयगे संशय नाहीं ॥
जो पै पतितपावन कहवे हैं * मेरे टेरे कस नहिं ऐहैं ॥
भूप मुदित संमत सुनि कीन्हो * सकलपंडितनसों कहि दीन्हों ॥
साभिमान पंडित बतराने * ऐहैं कस न हमारे आने ॥
चर्मकारको ओर सिधैहैं * पंडित विप्र ओर नहिं ऐहैं ॥
यह अनरथ करिहैं कस ईशा * शासन दीजे तुरत महीशा ॥
तब राजा पयान उठि कीन्हें * सकल मंत्र शास्त्री सँग लीन्हें ॥
वैदिक अरु षटशास्त्री जेते * साभिमान गवनत भे तेते ॥
नृप सँग चलि गंगाके तीरा * बैठे यत्न करहिं मतिधीरा ॥

दोहा—नीच नीच सब तरिगये, रामचरण लवलीन ॥
जातिहिके अभिमानते, बूडे सकलकुलीन ॥ ७ ॥

कोउ कुशासन बैठि बिछाई * होम करै कोउ कुंड बनाई ॥
कोउ सूर्य सन्मुख भे ठाढे * कोउ गंगा पूजैं मन गाढे ॥
इष्ट देव निज निजै मनावैं * सुस्तुति पाठ बहुत विधि गावैं ॥
भई दंड दशकी मरयादा * प्रथम दुहूंसों होत विवादा ॥
द्विजन बोलावत द्वादश दंडा * बीतिगये भो सोच अखंडा ॥

तब भूपति बोल्यो अति बानी ❀ द्विजन सयानप सकल सिरानी ॥
बोले शालिग्राम न आये ❀ जप तप होम पाठ सब गाये ॥
अब तुमहूं रैदास बोलाओ ❀ आवत होय तौन मुख गाओ ॥
सब पंडित मुख भये मलाने ❀ देखन हित बहु मनुज जुहाने ॥
कह्यो पंडितनसों पुनि राजा ❀ कहे जो सब पंडितन समाजा ॥
तो रैदासो नाथ बोलावे ❀ आवैं चाहि इते नहिं आवे ॥
कह्यो पंडित बोलावे सोऊ ❀ लखैं तमाशा यह सबकोऊ ॥

दोहा–तब रैदास हुलास भरि, करिकै दृढ विश्वास ॥
यह पद कियो प्रकाश तहँ, ध्यावत रमानिवास ॥८॥

पद–हे हरि आवहु वेगि हमारे ॥
जैसे आये द्रुपदसुताके, गजके काज सिधारे ॥
ज्यों प्रह्लाद हेतु नरहरि ह्वै, प्रगटे वज्रखम्भको फारे ॥
पति राखौ रैदास पतितकी, दशरथ कोशलनाथ दुलारे ॥

सोरठा–सहित सिंहासन राम, अंक लगे रैदासके ॥
द्विज सब करत प्रणाम, चरण गहे तजि मानको ॥

दोहा–निज जन प्रणको राखहीं, चारौं युग रघुबीर ॥
शबरी पदके परशते, शुद्ध भयो सरिनीर ॥ ९ ॥

यह आश्चर्य विलोकि सु राजा ❀ पर्‌यो चरणमहँ सहित समाजा ॥
वित्त लुटावत सकल शहरमें ❀ पहुँचायो रैदासहि घरमें ॥
तजि तजि मान वर्ण तहँ चारी ❀ भे रैदास शिष्य नर नारी ॥
एक दिवस बैठे निज द्वारा ❀ एक विप्रसों वचन उचारा ॥
जो तुम प्राग भूसुर जैयो ❀ एक सुपारी मोरि चढैयो ॥
आयो विप्र तुरंत प्रयागा ❀ दीन्ह्यो दान कियो यक जागा ॥
चलत सबै गंगातट जाई ❀ कह्यो वचन करि बहुत हँसाई ॥
चर्मकारकी लीजे भेटा ❀ दीन्ह्यो मोहिं चलत भै भेंटा ॥
अस कहि दीन्ह्यों फेंकि सुपारी ❀ निकस्यो कर मणि कंकणधारी ॥
तबे विप्र मनमें पछिताना ❀ मैं किय याग योग जप दाना ॥

सो मैं कबहुँ न दरशन पायो * चर्मकार हित कर काढि आयो ॥
गंगातट कीन्यो सो धरना * स्वप्नमाह अस सुरसरि बरना ॥
दोहा-जासु तुरत रैदास घर, परी भेद तहँ जानि ॥
विप्र तुरत रैदास पै, चल्यो अचर्यहि मानि ॥ १० ॥
भई भेंट तब मारग माहीं * कह रैदास जाहु घर पाहीं ॥
कह्यो जाय अस मम तिय काहीं * धरे चारि घृत घट घर माहीं ॥
घूरे फेकहु तिनहि तुरंता * ऐसो कह्यो तुम्हारो कंता ॥
विप्रे जाय रैदास तियाको * कह्यो सकल वृत्तांत पियाको ॥
तुरतहि घृतघट डार्‍यो फोरी * कीन्ही नारि शंक नहिं थोरी ॥
तब अचरज गुणि द्विज घर आयो * अपनी तियको वचन सुनायो ॥
सजल एक घट फेंकहु प्यारी * सो सुनि दीन्ह्यो पतिको गारी ॥
मिलत कुँभारनकी घर नाहीं * कहत बावरो फेंकन काहीं ॥
तब द्विज निज शिर कूटन लागो * धनि रैदास विश्व बडभागो ॥
ऐसी जाकी तिय घर विलसै * तेहि हित कस गंग कर निकसै ॥
यक झाली नामककी रानी * आई शिष्य होन हुलसानी ॥
नहिं रैदास मंत्र तेहि दीन्ह्यो * तब कबीर संबोधन कीन्ह्यो ॥
दोहा-रानीको रैदास तब, कियो शिष्य दै मंत्र ॥
तब तेहि सँग पंडित सकल, कीन्हे बैर स्वतंत्र ११
चर्मकारको गुरु कियो, दीन्ह्यो धर्म बहाय ॥
रानी कह्यो न नीच है, साँचो ईश्वर आय ॥ १२ ॥
भई परीक्षा गंगमें, जाहिर सकल जहान ॥
पंडित कह्यो जो होय अब, तौ हम करे प्रमान १३
तब तैसे पुनि गंगमें, शालिग्राम डुबाय ॥
द्रुत रैदास बोलाय लिय, गिरे विप्र सबपाय ॥ १४ ॥
रानी पुनि अस विनय सुनाई * ह्वैहै कब मम भवन अवाई ॥
बोले वचन तबै रैदासा * एकवार ऐहै तुव वासा ॥
रानी गई देश कहँ जबहीं * गे रैदास भवन तेहि तबहीं ॥

संत पंचशत सहित समाजा * छावत हरि रव सकल दराजा ॥
पहुँचे रानी देशहि जाई * रानी चलि कीन्ही अगुवाई ॥
तहँ संतन भोजन करवायो * निज घरमें पंगति बैठायो ॥
विप्र कह्यो नीचन सँग माहीं * अशुचि होब बैठब हम नाहीं ॥
तब द्वै पांती दिय बैठाई * खानलगे जब सब द्विजराई ॥
देखिपर्‍यो अस तहां तमाशा * द्वैद्वै विप्र बीच रैदासा ॥
सिगरे विप्र गुमान विहाई * रैदासे प्रसाद लिय खाई ॥
परे चरण भे शिष्य अनंता * जयजयकार कियो सब संता ॥
पुनि रैदास सभा महँ आये * चीरि त्वचा उपवीत देखाये ॥

दोहा-कनक जनेऊ सब लखे, त्वचके भीतर आसु ॥
ऐसे चारित अनेक हैं, कीन्हे रैदासु ॥ १९ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः॥४७॥

अथ कबीरजीकी कथा।

दोहा-अब कबीरजीकी कथा, श्रोता सुनहु विशाल ॥
जो हिंदू अरु तुर्कको, उपदेश्यो सब काल ॥ १ ॥

हरि विमुखी सब धर्मिन काहीं * कह्यो अधर्म अखंड सदाहीं ॥
योग यज्ञ तप दान अचारा * राम भजन विन कह्यो असारा ॥
कह्यो रमैणी साखी जेती * अटपट अर्थ शास्त्रमय तेती ॥
जो बीजकको ग्रंथ बनायो * तासु तिलक मो पितु निरमायो ॥
आगे कहिहौं मति अनुसारा * पूरव पुरुष वंश विस्तारा ॥
श्री कबीरजीको इतिहासू * पूर्व पुरुष मम वर्णन तासू ॥
निज कुल वर्णत लागति लाजू * जाने हैं अस सब सुमति समाजू ॥
निजकुलको महत्व प्रगटायो * गाथा सकल मृषा मुख गायो ॥
पै श्रोता सब यदुपति दासा * ताते लागति कछु नहिं त्रासा ॥
क्षमि लैहैं सब मोरि ढिठाई * मैं न मृषा प्रभुता कछु गाई ॥
जस कबीर वर्ण्यो निज ग्रंथा * वर्णौं निजकुल सोई पंथा ॥

और कबीर कथा सुखदाई * प्रियादास नाभा जस गाई ॥
दोहा-सोई मैं वर्णन करौं, संक्षेपहु विस्तार ॥
प्रथमहि जन्म कबीरको, श्रोता सुनहु उदार ॥ २॥
रामानंद रहे जगस्वामी * ध्यावत निशि दिन अंतर्यामी ॥
तिनके ढिग विधवा इक नारी * सेवा करै बडो श्रमधारी ॥
प्रभु यक दिन रह ध्यान लगाई * विधवा तिय तिनके ढिग आई ॥
प्रभुहिं कियो वंदन बिन दोषा * प्रभु कह पुत्रवती भरि घोषा ॥
तब तिय अपनो नाम बखाना * यह विपरीत दियो वरदाना ॥
स्वामी कह्यो निकासि मुख आयो * पुत्रवती हरि तोहिं बनायो ॥
हैहै पुत्र कलंक न लागी * तव सुत ह्वैहैं हरि अनुरागी ॥
तब तिय कर फुलका परिआयो * कछु दिनमें ताते सुत जायो ॥
जनत पुत्र नभ बजे अगारा * तदपि जननि उर सोच अपारा ॥
सो सुत लै तिय फेंक्यो दूरी * कढी जोलाहिन तहँ यकरूरी ॥
सो बालकहि अनाथ निहारी * गोद राखि निज भवन सिधारी ॥
लालन पालन किय बहुभांती * सेयो सुतहि नारि दिन राती ॥
दोहा-कछुक सयान कबीर जब, भये भई नभवानि ॥
सो प्रियदास कवित्तको, इक तुक कह्यो बखानि॥३॥
भई नभवानी देह तिलकर मानी करो
करो गुरु रामानंद गरे माला धारिये ॥
पुनि कबीर बोल्यो अस वानी * मोहिं मलेच्छ लियो गुरु जानी ॥
रामानंद मन्त्र नहिं दै हैं * पै उपाय हम कछु रचि लैहैं ॥
अस कहि गंगा तीरे आयो * सीढी तर निज वेष छुपायो ॥
मज्जनहित रामानंद आये * तेहि अंगुरी निज चरण चपाये ॥
रोय उठ्यो तहँ तुरत कबीरा * रामानंद कह्यो मतिधीरा ॥
राम राम कहु रोवै नाहीं * गुन्यो कबीर मंत्र सोइ काहीं ॥
रामानन्दी तिलकहि धारयो * माल पहिरि मुख राम उचारयो॥
मातपिता मान्यो बौराना * रामानंदहि वचन बखाना ॥

याको प्रभु किमि वेकलवायो ❋ राम कहत सब काज भुलायो ॥
रामानंद कबीर बोलायो ❋ ताके बिच परदा बँधवायो ॥
कह्यो मन्त्र तोको कब दीन्हो ❋ कह्यो कबीर जौन विधि कीन्हो ॥
रामनाम सब शास्त्रन सारा ❋ बार तीनि मोहिं कियो उचारा ॥
दोहा–रामानंद कबीरको, गुनि अनन्य हरिदासु ॥
परदा टारिसु मिलत भे, दृगन बहावत आंसु ॥ ४॥
सुरति राम नामहि महँ लागी ❋ कछु गृहकाज करहिं बडभागी ॥
लै बिकनन पट जाहि बजारे ❋ जो मांगे ताही दै डारे ॥
परखे रहैं मातु पितु ताके ❋ गनैं न कछु दुख क्षुधा तृषाके ॥
घर आवते कबीर लजाहीं ❋ छूंछे हाथ कौन विधि जाहीं ॥
परचो सोच तब हरिको भारी ❋ मम जनके पितु मातु दुखारी ॥
धरि व्यापारी रूप मुरारी ❋ भरि बैलन बहु चाउर चारी ॥
आय कबीर भवन महँ डारे ❋ कह्यो पठायो पूत तिहारे ॥
माता कह्यो कहां सुत मोरा ❋ कौतुकी वस्तु लेत नहिं छोरा ॥
तब कबीर घरमें व्यापारी ❋ डारि अन्न गे अनत सिधारी ॥
जब कबीर गे भवन सिधारी ❋ देखि अन्न हरि कृपा विचारी ॥
साधु तुरंत बोलाय लुटायो ❋ यक दिनको घर नाहिं धरायो ॥
तुरत टोरि निज तानो वानो ❋ राम भरोसाको उर आनो ॥
दोहा–तब काशीके विप्र सब, बैठ कबिरहि घेरि ॥
मुडिअनको रोटी दियो, हमहिं बैठ मुख फेरि ॥ ५॥
कह्यो कबीर न करो सँदेहू ❋ मोहिं बजार भर गवननदेहू ॥
भागि गये कबीर मिसि येही ❋ प्रभु कबीर हित भे संदेही ॥
आये धरि कबीरको रूपा ❋ सबको भोजन दियो अनूपा ॥
यथा योग दै सबन बिदाई ❋ पुनि लिय अपनो भेष छिपाई ॥
तब कबीरको बढ्यो प्रभाऊ ❋ मानै रंकहु राजा राऊ ॥
श्रोता सुनहु पुरान प्रमाना ❋ रामभक्ति है धर्मप्रधाना ॥
राम विमुख जो कोउ जग होई ❋ मूल सकल पापनको सोई ॥

लखि कबीर अति निज प्रभुताई * गुन्यो उपद्रव ताहि महाई ॥
मेटन हेतु महा प्रभुताई * गणिका द्वार गये प्रगटाई ॥
दे धन गणिकाको गहि हाथा * चले बजार बजारहि साथा ॥
यह लखि भये संत जन शोकी * लहे अनंद असंत अशोकी ॥
इक दिन गये भूप दरबारा * उठयो न राजा तुच्छ बिचारा ॥
दोहा-तब कबीर मनमें गुन्यो, भयो अनादर मोर ॥
आदर और अनादरौ, सहि जातौ है थोर ॥ ६ ॥
रहे भरे जल घट बहुतेरे * ढरकायो तिनको कर फेरे ॥
राजा पूछयो का यह कीजे * तब कबीर बोले सुनि लीजे ॥
श्रीजगदीश पुरी यहि काला * गई आगि लगि पाकहि शाला ॥
पुरी पठायो तुरत सवारा * पुरी लोग सब कियो उचारा ॥
जो कबीर वह दिन न बुझावत * तो सिगरी नगरी जरि जावत ॥
यह सुनि भूपति बहुत डेराना * रानीसों अस वचन बखाना ॥
है कबीर मूरति भगवाना * याको हम कीन्हो अपमाना ॥
ताते अब अस करहु विधाना * पैदल तेहिं ढिग करहिं पयाना ॥
त्राहि त्राहि कहि चरणन गिरहीं * जो वह कहे तबै घर फिरहीं ॥
अस विचारि राजा अरु रानी * राज विभव तहँ तजि डर मानी ॥
पैदर चले सुलाज विहाई * सचिव प्रजा सब लियपछि आई ॥
दो०-राजा रानीकी विनय, सुनि कबीर मतिधीर ॥
बहुत नीर दृग पीर बिन, कियो धीर युत भीर ॥ ७ ॥
तहँ कवित्त प्रियदास यह, कीन्हो सुभग बखान ॥
सो मैं इत लिखि देतहौं, श्रोता सुनहु सुजान ॥ ८ ॥

कवित्त-कही राजा रानीसो जो बात यह सांच भई आंच लागी हिये अब कहो कहा कीजिये। चलेही बनत चले शीश तृण बोझ भारी गरे सो कुलहारी बांधि त्रिया संग भीजिये ॥ निकसे बजार हैके डारि दई लोक लाज कियो मैं अकाज छिन छिन तन छीजिये। दूरिते कबीर देखि ह्वै गये अधीर महा आये उठि आगे कह्यो डारि मति रीझिये ॥ १ ॥

रह्यो सिकंदर साह सुजाना * सुनेहु कबीर प्रभाव महाना ॥
तब लिखि पठयो एक खलीता * सुनियत तुम्हैं कबीर पुनीता ॥
न्याय व्याकरण शास्त्र अनंता * करै एक जेहि संमत संता ॥
हिंदू मुसलमान दोउ दीना * निज निज मत देखो सुखभीना ॥
ऐसो शास्त्र देहु पठवाई * तो हम जाने अजमत भाई ॥
तब कबीर लिखि उत्तर पठायो * सहस शकट कागज पठवायो ॥
ऐसो सुनि कबीर खत साहा * अति विस्मित हैके मनमाहा ॥
सहस शकट भरि कागज कोरा * पठयो दूत कबिरकी वोरा ॥
सहस शकट कागज जब आयो * तब कबीर अति आनँद पायो ॥
सबके ऊपर शकट यक माहीं * लिख्यो राम अक्षर द्वै काहीं ॥
सहसहु शकट साहढिग भेजा * प्रगट्यो राम नाम कर तेजा ॥
सकल शास्त्र सब कागज माहीं * लिखिगे आपहिते श्रम नाहीं ॥

दोहा–हिंदू और मलेच्छहू, चहैं जो मतके ग्रंथ ॥
सो तेहिते निकसन लगे, और सकल सतपंथ ॥९॥

जानि प्रभाव सिकंदर साहा * काशीको आयो सउछाहा ॥
तब सह पंडित चलि फिरियादा * छूटी दोउ दीन मर्यादा ॥
यक जोलहा चेटक पढि आयो * करि जादू विश्वास बढायो ॥
तब कबीरको साह बोलायो * जब कबीर दरबारहि आयो ॥
काजी कह करु साह सलामा * तब कबीर बोल्यो सुखधामा ॥
जानहिं राम सलाम न जाने * सुनत साह किय कोप महाने ॥
दियो हुकुम करियो नहिं देरी * गंगा बोरहु भरि पग बेरी ॥
सुनि अनुचर पग पाइ जँजीरै * बोरयो गंगा माहँ कबीरै ॥
रहिगे बेरी नीर गँभीरा * गंग तीर भो ठाढ कबीरा ॥
पुनि लकरी पट अंगणि बांधी * आगि लगायो कोठरि धांधी ॥
भयो भस्म तनुको सब मैला * निकस्यो कंचनरूप उतैला ॥
पुनि इक मत्त मतंग बोलायो * कचरावन हित सौंह घवायो ॥

दोहा–गजको सिंह स्वरूपसो, देखो परो कबीर ॥
भग्यो चिकारत नाग तब, भरयो महा भय भीर ॥ १० ॥

बादशाह अस देखि प्रभाऊ * पकरचो आय कबीरहि पाऊ ॥
देख्यों करामात मैं तेरी * अब रक्षा करु जगते मेरी ॥
मोसे भयो बडो अपराधा * दीन्हो रामदासको बाधा ॥
देश गाउँ धन जो कहि दीजै * सो याही क्षण प्रभु लैलीजै ॥
कह्यो कबीर रामको चाहैं * राम दाससों काम कहा हैं ॥
तबै विरोधी पंडित जेते * विरचे यह उपाइ तहँ तेते ॥
श्रीवैष्णव दश पांच बनाई * दियो सकल देशन गोहराई ॥
यह कबीरको नेवतो जानो * सब कबीर घर करो पयानो ॥
यह सुनि साधु विप्र समुदाई * लियो कबीरहि को समुहाई ॥
लाखन विप्र साधु जुरि आए * तब कबीर मन माहँ डेराए ॥
अपनो भवन त्यागि द्रुत भाग्यो * रघुपतिको यह नीक न लाग्यो ॥
धरि कबीरको रूप तुरंतै * शत शत मुद्रा दिय प्रति संतै ॥

दोहा-साधुनको सत्कार करि, विदा कियो रघुनाथ ॥
उदर पूर पूजन दियो, सबको गहि गहिहाथ ॥ ११ ॥

सब देशन विख्यात भो नामा * कह कबीर अनुकंपारामा ॥
येहू विधि पंडित जब हारे * तब गोरखको तुरत हँकारे ॥
गोरख आय गयो जब कासी * लखि कबीरको भयो हुलासी ॥
कूप उपर रचि पांचहि सूता * बैठ्यो ताहि प्रभाव अकूता ॥
तुरत कबीरहि लियो बोलाई * मोसों करहु विवाद बनाई ॥
अंतरिक्ष तब बैठ कबीरा * देखत गोरख भयो अधीरा ॥
तेहि दिन गवन्यो गोरख हारी * आयो भोरहि सिंह सवारी ॥
कह्यो कबीरहिसों गोहराई * आवे वाद करै मन जाई ॥
तब मृगको रचि सिंह कबीरा * आयो चलो चलावत धीरा ॥
तब गोरख कह सुनहु कबीरा * गंगामें डूबैं दोउ बीरा ॥
को काको हेरै यहि काला * कूदे गोरख प्रथम उताला ॥
तब गोरख गूलर ह्वै गयऊ * जानि कबीर पकरि तेहि लयऊ ॥

दोहा-गोरख सुनहुँ कबीर कह, प्रगटो अबहुँ तुरंत ॥
नातो कर मलि डारि हौं, दोष देहिंगे संत ॥ १२ ॥

तब प्रसन्न गोरख प्रगटाना * तेहि कबीर अस वचन बखाना ॥
मैं अब छिपहुँ हेरि तुम लेहू * कह गोरख छिपु बिनु संदेहू ॥
तब डूब्यो माघे गंग कबीरा * है गो तुरत गंगको नीरा ॥
तब गोरख करि योग प्रभाऊ * जान्यो सकल कबीर दुराऊ ॥
दोऊ सिद्ध फेरि प्रगटाने * गोरख वन्दन किय हुलसाने ॥
कह्यो सत्य साहब तुम रूपा * संत शिरोमणि शुद्ध अनूपा ॥
एक समय कबीर लै माता * चले जात कोउ देश विख्याता ॥
तहँ इक मारग मोहर थैली * परी रही अतिशय तहँ मैली ॥
माता थैली दौरि उठाई * तब वारचो कबीर तहँ जाई ॥
परधन लै न मातु दे डारी * परधन छुइ मुहँकी तरवारी ॥
बैठ वृक्षतर देखु तमाशा * यह करिहै केतनको नाशा ॥
माता पूत बैठि तरु छांहीं * चारि सिपाही कढे तहांहीं ॥

दोहा—थैली चारि निहारिकै, हर्षित लियो उठाइ ॥
चलत भये तेहि पंथको, लिय कबीर पछिआइ ॥ १३ ॥

जाय सिपाही इक पुरमाहीं * डेरा किये वणिक घर माहीं ॥
सोइं किये कबीरहु डेरा * एक सिपाही यक कहँ टेरा ॥
डेरामें तुम दोउ रहि जाहू * द्वै जन जाहिं करन निरवाहू ॥
अस कहि द्वै जन गये सिधाई * लियो हाटमहँ कछुक मिठाई ॥
बैठे कुवां लागे जब खाने * तब आपुसमहँ सम्मत ठाने ॥
माहुर भरे मिठाई मांहीं * जामें द्वै खाते मरिजाहीं ॥
नातो हीशा हैहैं चारी * हम तुम होहिं उभय हिसदारी ॥
अस विचारि भरि माहुर दीन्हे * उत विचारि डेरा दोउ कीन्हे ॥
जब वे आइ खाइ इत सोवे * तिनके तुरत प्राण हम खोवे ॥
इतनेमें दोउ लियो मिठाई * आय गये डेरे श्रमछाई ॥
कह्यो दुहुँनसों खाहु मिठाई * इन कह थके अहैं हम भाई ॥
अस कहि दोउ सिपाही सोये * श्वास बजत तिनको तहँ जोये ॥

दोहा—तबै मिठाई खायकै, दोहुनके गलमाहिं ॥
मारि कटारी पार किय, दोऊ मरे तहांहिं ॥ १४ ॥

कछुक कालमहँ विष तहँ लाग्यो * ते दोऊ तुरतै तनु त्याग्यो ॥
मोर वणिक लखि शोणितधारा * कोतवालके जाय पुकारा ॥
कोतवाल तेहिं दोष लगायो * ताको संपति सकल लुटायो ॥
मोहर और वणिक धन जेतो * गयो भूप भंडारहि तेतो ॥
कह कबीर लखु मातु तमासा * ये मोहर दोउ और विनासा ॥
माता कह्यो सुवन चलु अनतै * कह कबीर लखु और हगनतै ॥
थैली परी रही जेहिं ठौरा * सो थल रहै भूपको औरा ॥
सो पठयो तुरंत असवारा * कह्यो देउ धन अहै हमारा ॥
जेहि वह नगर कह्यो सो राजा * हम न देव विन समर दराजा ॥
यह सुनि भूप तुरत चढि आयो * उभय भूप अति युद्ध मचायो ॥
दोऊ लरि मरि गये तहांहीं * तब कबीर कह माता काहीं ॥
जो चाहै आपन कल्याना * तौ परधन नहिं लेय सुजाना ॥

दोहा-जो परधन लेतो जननि, तासु हाल यह होय ॥
लगति न हाथवराटिका, नाहककलह उदोय ॥ १५ ॥
येक अप्सरा आयकै, मोहन चह्यो कबीर ॥
ताहि मातु कहिकिय विदा, करी न मनसिज पीर १६॥

कवित्त-एक समय जाय जगदीश पुरी वास कीन्हो भयो तहँ संतन समागम सोहावनो ॥ कोई संत बोल्यो कियो काशीमें चरित्र केते इते कीन्हो काहे नहिं महिमा देखावनो ॥ ताही समय कौतुक कबीर कीन्हो रघुराज देखि सब सन्तनको मंडल भो पावनो ॥ एक रूप हाथ चौंर ढांकते जगतनाथै एक रूप साधुन समाज प्रगटावनो ॥ १ ॥

पुनि जगदीश पुरी ते सोई * चल्यो कबीर महासुद मोई ॥
बांधव गढ मम दुर्ग महाना * शिवसंहिता जासु परमाना ॥
सतयुग वरुणाचल कहवायो * कलि बांधवगढ नाम कहायो ॥
पूरब पुरुष रहे जे मोरा * रहते सब गुजरातहिं ठोरा ॥
तेऊ पाइ कबीर निदेशा * विंध्यपृष्ठ आये यहि देशा ॥
तब ते बांधवगढै भुवाले * कीन्हो नृप ववेल निज आलै ॥

आगे तासु कथा मैं गैहौं ❀ सब श्रोतनको सविधि सुनैहौं ॥
विरसिंहदेव बघेल भुवाला ❀ सुनि कबीर आवनको हाला ॥
चहुँकित दूत दियो बैठाई ❀ दियो कबीरहि खबरि जनाई ॥
और पंथ ह्वै नहिं कढि जाई ❀ सावधान रहियो सब भाई ॥
सुनि विरसिंहदेव अभिलाषा ❀ ताको शिष्य करन चित राखा ॥
बांधवगढै कबीर सिधारे ❀ राजा आगू लेन पधारे ॥

दोहा-सादर ल्याइ कबीरको, करि उत्सव हर्षाइ ॥
शिष्य भये परिवारयुत, भवभय दियो मिटाइ ॥१७॥
भक्तमालकी यह कथा, किय संक्षेप बखान ॥
अब कबीर इतिहासको, विस्तर सुनहु सुजान ॥१८॥

देश गहोरा युत परिवारा ❀ भयो शिष्यविरसिंह भुवारा ॥
कछुक काल लगि नृप ढिगमाहीं ❀ बस्यो कबीर सुमिरि हरि काहीं ॥
एक समय विरसिंह नरेशै ❀ दियो बोलाइ कबीर निदेशै ॥
देहैं तोहिं कछू हम ज्ञाना ❀ ताते कर अस भूप विधाना ॥
यक ब्राह्मणी रचे यक धोती ❀ बरष दिवसमहँ अतिहि उदोती ॥
लेइ पाणिमहँ डोर कपासू ❀ सूत भूमि परशै नहिं तासू ॥
सो धोती लै आवहु राजा ❀ तब ह्वै हौ तुरंत कृतकाजा ॥
सुनि विरसिंह तुरंत सुखारी ❀ गो ब्राह्मणीसमीप सिधारी ॥
धोती मांग्यो तब द्विज नारी ❀ सुनु महीपसो गिरा उचारी ॥
धोती वर्ष प्रयंत बनाऊं ❀ जगन्नाथको जाय चढाऊं ॥
लेहु महीश शीश बरु मोरा ❀ धोती लेव उचित नहिं तोरा ॥
राजा फिरि कबीर ढिग आयो ❀ सकल ब्राह्मणी वचन सुनायो ॥

दोहा-कह कबीर जगन्नाथको, धोती देइ चढाय ॥
प्रतीहार करि साथ नृप, तियको दियो पठाय १९॥

जाय ब्राह्मणी बसन चढायो ❀ प्रभु ढिगते तुरंत फिरि आयो ॥
कियो ब्राह्मणी धरन तहांही ❀ स्वप्ने कह्यो नाथ तेहिं काहीं ॥
मांग्यो हम बांधवगढ काहीं ❀ काहे दियो मोहिं न लै नाहीं ॥

जाय कबीरे देइ चढाई ❀ तब चैहै पूरण फल पाई ॥
द्विज तिय फिर बांधवगढ आई ❀ दियो कबीरहि वसन चढाई ॥
वसन पहिरि जब बैठि कबीरा ❀ तब आयो विरसिंह प्रवीरा ॥
महिते यक कर ऊंच निहारा ❀ तब कीन्हो अस वचन उचारा ॥
जो हरिको हरि लोकहु काहीं ❀ दीजें हमहि देखाइ सुखमाहीं ॥
तौ प्रतीति मोरे परि जाई ❀ ये तो सत्य कबीरे आई ॥
तब राजाहि कबीर बैठायो ❀ ध्यानावस्थित ताहि करायो ॥
योगमार्गते तेहि लै गयऊ ❀ हरि हरि लोक देखावत भयऊ ॥
तब विरसिंह भूप विश्वासे ❀ लहन विज्ञान हिये हुलासे ॥

दोहा-श्रीकबीरजी तहँ कियो, सुभग ज्ञान उपदेश ॥
मिटे सकल संसारके, ताके काय कलेश ॥ २० ॥

कह कबीर लै चलहु शिकारा ❀ भूप कियो तेहि नाग सवारा ॥
गजके ऊपर हाथ सवाऊ ❀ बैठ कबीर लखे सब काऊ ॥
बांधवगढके पूरब ओरा ❀ सदल तृषित भो नृप तेहि ठोरा ॥
कह्यो कबीरे गुरु भगवाना ❀ जल बिन जात सबैके प्राना ॥
तब कबीर परभाव देखायो ❀ तुरत सकल तरु सफल बनायो ॥
प्रगटी वापी निर्मल नीरा ❀ तहँ अंतर्हित भयो कबीरा ॥
अब बघेल वंशावलि जोई ❀ श्रीकबीर विरचित है सोई ॥
अरु आगम निदेशहू ग्रंथा ❀ तामें है बघेल सतपंथा ॥
उक्ति कबीरहिकी लै नीकी ❀ वर्णौं मोरि उक्ति नहिं ठीकी ॥
यदपि वंश महिमा निजवरणत ❀ उपजतिलाज तदपि अतिसुखरत
तेहि अनुसर वरणों कर जोरी ❀ श्रोता दियो मोहिं नहिं खोरी ॥
करि दरशन जगदीश कबीरा ❀ उत्तर दिशा चल्यो मतिधीरा ॥

दोहा-बांधवदुर्ग बघेलको, ताढिग जबहिं कबीर ॥
आए तब नृप रामसिंह, आनँद युत मतिधीर ॥ २१
लै आगे ल्याए तुरत, बांधव दुर्ग लेवाइ ॥
अति सत्कार कियो तहां, मानि रूप यदुराइ ॥ २२

पुनि कबीर स्थानमें, भूपति गये अकेल ॥
तब कबीर नृपसों कह्यो, मोहिं गुरु कियो बघेल२३
तेरे पुरुवक पुरुष, कियो गुरू जस मोहिं ॥
मैं लै आयो हंस द्वै, सकल सुनाऊं तोहिं ॥ २४ ॥

वाराणसी जन्म मैं लीन्हो ✱ जगन्नाथ दरशन मन दीन्हो ॥
तहँ समुद्रको करि मर्यादा ✱ गमन्यो गुजराते अविषादा ॥
तहँ को भूप पुत्र ते हीना ✱ विनती कियो मोहिं अति दीना ॥
मैं वरदान दियो नृप काहीं ✱ द्वै सुत ह्वैहैं तुव तिय माहीं ॥
मोर अंशते जो यक होई ✱ वदन बाघ देखी सब कोई ॥
तब सुलंक नृप आनँद पायो ✱ द्वै सुत निज तियमहँ जनमायो ॥
व्याघ्रदेव भो जेठ व्याघ्रमुख ✱ अनुज तासु भो सुंदर हरदुख ॥
व्याघ्रवदन लखि पंडित आये ✱ जानि अशुभ वनमहँ फिकवाये ॥
तब कबीर धरि पंडित वेशा ✱ जाइ भूपको दियो निदेशा ॥
ल्यावहु व्याघ्रवदन सुत काहीं ✱ ताते चालेहै वंश सदाहीं ॥
भूप सुलंकदेव बिन शंका ✱ ल्यायो तुरत सुतहि अकलंका ॥
व्याघ्रदेव तेहि नाम सुहंसा ✱ तिनते चल्यो बघेलहि वंसा ॥

दोहा–तब कबीर अस वर दियो, जगमें सहित प्रसंश ॥
अचल राज बांधो रही, चली बयालिस वंश ॥ २५ ॥

व्याघ्रदेवके सुत नाहिं रहेऊ ✱ सो कबीरसों निज दुख कहेऊ ॥
तब कबीर किय मनमहँ ध्याना ✱ कियो तुरत गिरिनार पयाना ॥
चंद्र विजय नृप रह्यो तहांहीं ✱ रानी इंदुमती रति छांहीं ॥
तेहि पूछव कबीर उपदेशा ✱ दंपति किय हरिपुरहि प्रवेशा ॥
सो कबीर हरिलोक सिधारी ✱ दंपति काहिं योग मति धारी ॥
ल्यायो द्रुत गुजरातहि देशा ✱ कीन्ह्यो व्याघ्रदेव सुतवेशा ॥
दियो नाम जैसिद्ध प्रसिद्धा ✱ पूरित वृद्ध ऋद्धि अरु सिद्धा ॥
युवा वैस जैसिद्धहि आई ✱ निशिमहँ चिंता भई महाई ॥
केहि विधि नाम चलै चहुँओरा ✱ क्षत्रीधर्म विजय वरजोरा ॥

व्याघ्रदेवसों कह्यो प्रभाता * सो कह पितामहै कहु बाता ॥
तबै सुलंक देव ढिग जाई * निज मनकी शंका सब गाई ॥
सो सादर शासन तेहि दीन्हो * लै कछु सैन्य पयानो कीन्हो ॥
दोहा-गढा देशमहँ सो वस्यो, भूप नर्मदा तीर ॥
कर्णदेवताके भयो, तासु सरिस रणधीर ॥ २६ ॥
गंगापार डोंडिया खेरा * बैसनको तहँ रहै बसेरा ॥
तहँ कीन्हो विवाह सुत केरा * डारचो चित्रकूट पुनि डेरा ॥
बीती तहां बहुत दिन राती * व्याघ्रदेवके भयो पनाती ॥
बहुत काल जब बीतत भयऊ * तब जयसिंह छोंडि तनु दयऊ ॥
कर्ण देव तब भयो नरेशा * तासु पुत्र केशरी सुवेशा ॥
भयो केशरीसिंह जुमाना * तव कालिंजर कियो पयाना ॥
कालिंजर भूपति चंदेला * तासों कियो केशरी मेला ॥
लै चँदेल चतुरंग महाना * कीन्हो देश गहोरा थाना ॥
बहुत काल लगि वसे गहोरा * चल्यो केशरी उत्तर ओरा ॥
रह नवाब राजा तहँ भारी * कीन्हो अमल केशरी सारी ॥
सुनि नवाब दल लै चढि आयो * सुनि केशरी निसान बजायो ॥
माच्यो तहां महा संग्रामा * विजय लह्यो केशरी ललामा ॥
दोहा-पुनि नवाब तहँ आइकै, कियो केसरी मेल ॥
अर्ध राज्य देवे लग्यो, सो न लयोगुणिखेल ॥ २७ ॥
पुनि नवाब केशरी बघेला * गोरखपुर पर कीन्हो हेला ॥
सद नवाब अति प्रीति देखायो * गोरखपुर महँ तेहि बैठायो ॥
कहत भयो रक्षहु अब मोही * मम दल कोश लाज है तोही ॥
गोरखपुर वस केशरी भूपा * प्रगटायो यक पुत्र अनूपा ॥
इत नृप कर्ण देव मतिधीरा * चित्रकूट महँ तज्यो शरीरा ॥
पुत्र केशरीको जो भयऊ * तेहि मल्लार नाम अस भयऊ ॥
सुत मलारके शारँग देवा * शारँगके भीमल हरि सेवा ॥
भीमल देव प्रचंड प्रतापी * अतिसुंदर हरि नामहि जापी ॥

भीसल देव पुत्र जो भयऊ ❋ मल्लदेव तेहि नामहि ठयऊ ॥
लोमगहरकहँ कीन्हों थाना ❋ तहां बसत बहुकाल बिताना ॥
मल्लदेव लै कटक महाई ❋ मिले गहरवानसों आई ॥
पुनि सिरनेतनदेश सिधारा ❋ कीन्हो ब्याह उछाह अपारा ॥
दोहा—तहँ कोउ भूपति बंधु इक, कीन्हे रहे विरोध ॥
ताहि पकरि ल्यायो सदय, करि चहुँ दिशि अवरोध२८
मल्लदेवके भो सिंध देवा ❋ नरहरि देव तासु सुत भेवा ॥
नरहरिके भइ भेदसुधन्या ❋ ब्याहीसो शिरनेतन कन्या ॥
नरहरि बस्यो कछुक दिन कासी ❋ भेद चल्यो लै दल अरि नासी ॥
भयो शालिवाहन सुभेद सुत ❋ विरसिंहदेव तासु सुत नृप नुत ॥
भो विरसिंह महान भुवाला ❋ बस्यो प्रयाग आइ तेहि काला ॥
लियो अमलि सब देशन काहीं ❋ लाख सवार रहै सँग माहीं ॥
बीरभानु सुत भो पुनि ताके ❋ राजाराम भये तुम जाके ॥
जबै प्रयाग देश चहुँओरा ❋ अमल्यो विरसिंह निजभुज जोरा॥
तबै प्रजा किय जाय पुकारा ❋ दिल्ली शाहहिंमाऊद्वारा ॥
आयो कोउ कबीर बघेला ❋ लाख सवार चले बगमेला ॥
अमल कियो सो मुलुक तुम्हारा ❋ सो सुनि साह तुरंत सिधारा ॥
चित्रकूट आयो जब साहा ❋ चलन लग्यो विरसिंह नरनाहा ॥
दोहा—वीरभानु तब आयकै, वारन कियो बुझाय ॥
तुम न जाहु म्लेच्छहि मिलै, ऐहै सो इतधाय२९॥
तब पुत्रहि विरसिंह बुझाई ❋ चल्यो तुरंत निसान बजाई ॥
चित्रकूट विरसिंह सिधारा ❋ सुनत साह आगू पगधारा ॥
दोउ दल भये बरोबर जबही ❋ सादर साह बोलायो तबही ॥
जब भूपति गो साह समीपा ❋ विहँसि साह कह सुनहु महीपा ॥
कवन हेतु परजन दुख दीन्हो ❋ काहे मुलुक हमारो लीन्हो ॥
तब विरसिंह बोल्यो मुसकाई ❋ कोहूसो किय नहीं लराई ॥
जे हमही मारे तेहि मारे ❋ अमल्यो तिनके देश अपारे ॥

कह्यो साह कहँ सुवन तुम्हारा * वीरभानु कहँ भूप हँकारा ॥
वीरभानु तब बाजि उडाई * परयो साह हौदामहँ जाई ॥
साह उतर हाथीते आयो * वीरभानु गोदहि बैठायो ॥
बैठो तख्त मांह जब साहा * वीरभानु कहँ बहुत सराहा ॥
पुनि विरसिंहहि कह दिल्लीशा * अब हम तुमको देत अशीशा ॥
दोहा—बारहिं राजा करि स्ववश, करहु राज्य चहुँवोर ॥
बांधवगढ निज वसनको, लीजे नृपशिरमोर ॥ ३० ॥
असकहिलिखित दियो दिल्लीशा * चल्यो तबै विरसिंहमहीशा ॥
दिल्लीपति प्रयाग ले आयो * करि मेहमानी भवन पठायो ॥
ले दल पुनि विरसिंह भुवारा * दक्षिण चल्यो सहित परिवारा ॥
आयो तमस नदीके तीरा * तब लाडिल परिहार सुवीरा ॥
नरो शैल महँ दुर्ग बनाई * वसतरहै सो बली महाई ॥
सो मारग महँ कियो लडाई * तासु नरो गढ लियो छँडाई ॥
नरो जीति विरसिंह भुवाला * बांधा नगर रह्यो तेहि काला ॥
तहां कछुक दिन कियो निवासा * पुनि गवनतभो दक्षिण आसा ॥
रहे रत्नपुर करचुलिराजा * तुव पितुकेर कियो तहँ काला ॥
सोदायज महँ बांधव दीन्ह्यो * तहँ विरसिंह वास चलि कीन्ह्यो ॥
वीरभानको दै पुनि राजू * आय प्रयाग बस्यो कृतकाजू ॥
कह्यो तोरि वंशावलि ऐसी * जानी रही मोरि यह जैसी ॥
दोहा—सुनि अपनी वंशावली, बहुरि कह्यो शिर नाइ ॥
अब भविष्य यहि वंशकी, दीजे कथा सुनाइ ३१ ॥
बांधव दुर्ग वसीकी नाहीं * राज्य चली यहि भांति सदाहीं ॥
आगे कैसो ह्वैहै वंशा * यह सिगरो अब करहु प्रशंशा ॥
तब कबीर बोले मुसुकाई * राजाराम सुनहु चित लाई ॥
तुम्हरे दरये वंशहि माहीं * लैहो तुमही जन्म तहांहीं ॥
सुत समेत बांधवगढ ऐहो * बीजक ग्रंथ मोर तहँ पैहो ॥
ताको अर्थ समर्थन करिहो * संत समाजनको सुखभरिहो ॥

वीरभद्र तुम्हरो सुत होई ❀ करिहै राज्य सदा सुख मोई ॥
संवत अष्टादश नवषटमें ❀ ऐहौ बांधव गढ अटपटमें ॥
तबते ताहिं विशेष बसैहौ ❀ अपनो विमल महल रचवैहौ ॥
और भविष्य कबीर जो गायो ❀ वर्ण तेहि मैं पार न पायो ॥
यक कबीर आगम निर्देशा ❀ मम शासित वर्णित युगलेशा ॥
तामें सकल अहैं विस्तारा ❀ जानिलेहु सब संत उदारा ॥
दोहा–और कबीर कथा अमित, वरणि लहौं किमिपार॥
संक्षेपैते इत लिख्यो, कीन्ह्यो नहिं विस्तार ॥ ३२॥
यथा बघेलवंशकी गाथा ❀ वर्ण्यो भूत भविष्यहु नाथा ॥
तैसेहि अबलौं प्रगट देखाती ❀ पलहू बढै न पल घटि जाती ॥
मगहर गे यकसमय कबीरा ❀ लीला कीन्ही तजन शरीरा ॥
अतिशय पुष्प तुरंत मँगाई ❀ तामें निजतनु दियो दुराई ॥
सबके देखत तज्यो शरीरा ❀ हिंदू यमनहुकी भै भीरा ॥
हिंदू यमन शिष्य रहे दोऊ ❀ आपु समय भाषे सब कोऊ ॥
यमन कह्यो माटी हम देहैं ❀ हिंदू कहैं अनलमें लेहैं ॥
तब दोउ जाय पुष्पकहँ टारयो ❀ नाहिं कबीर शरीर निहारयो ॥
आधे आधे लै दोउ सुमना ❀ दाह्यो हिंदू गाड्यो यमना ॥
भये कबीर प्रगट मथुरामें ❀ विचरन लगे सकल वसुधामें ॥
यहि विधि अहैं अनेकनगाथा ❀ साँति कबीर हैं वपु जगनाथा ॥
यह लीला करि सकल कबीरा ❀ आयो बांधव पुनि मतिधीरा ॥
दोहा–अबलों गुहा कबीरकी, बांधवदुर्ग मँझार ॥
जगन्नाथको पंथ सो, पावत नहिं कोउ पार ॥३३॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः॥४८॥

अथ सेना नापितकी कथा।

सो०–अब बरणों सुखधाम, चरित एक अद्भुत सुनहु ॥
सेन जासु है नाम, नापित यक पूरुब भयो ॥ १ ॥

नाभाकी छप्पय-प्रभूदासके काज रूप नापितको कीन्हो ॥
छिप्र छुरहरी गही पाणि दर्पण तहँ दीन्हो ॥
तादृश ह्वै निःकाम भूपको तेल लगायो ॥
उलटि राव भयो शिष्य प्रगट परचो जब पायो ॥
इयाम रहत सन्मुख सदा ज्यों वत्साहित धेनके ॥
प्रगट बात जग जानियो हरि भये सहायक सेनके॥१॥

बांधवगढ पूरुव जो गायो * सेन नाम नापित तहँ जायो ॥
ताकी रहै सदा यह रीती * करत रहै साधुनसूं प्रीती ॥
चारि दंड बांकी निशि जागै * हरि स्मरण करन सो लागै ॥
चारि दंड दिन चढत भ्रयंता * ध्यावै रोज रमाको कंता ॥
तहँको राजाराम वघेला * दण्यों जेहिं कबीरको चेला ॥
करै रोज तिनकी सेवकाई * मुकुर देखावै तेल लगाई ॥
डेढ पहर दिनमें घर आवै * साधुनको भोजन करवावै ॥
यही रीति निवही बहु काला * एक दिनाको सुनहु हवाला ॥
आवत रहे सेन घर तेरे * वीचहिं साधु मिले बहुतेरे ॥
पूछत सेन भवन पुर माहीं * सेन गह्यो तिन चरणन काहीं ॥
गयो आपने भवन लेवाई * किय षोडश पूजन सुख छाई ॥
सविधि साधु भोजन करवायो * इतनेमें द्वै पहर बितायो ॥

दोहा-साधु सेव जब करि चुकयो, तब नृप सुधिभै ताहि ॥
गयो न आजु हुजूरमें, मान्यो भय उरमाहि ॥ १ ॥

उते कृष्ण गुणि निज सेवकाई * सेन रूप धरिकै अतुराई ॥
आये राजाराम समीपै * लगे लगावन तेल महीपै ॥
परसत कर तनुके सब रोगू * मिटे तुरंत मिल्यो सुख भोगू ॥
डेढ पहर लगि करि सेवकाई * गवने भूपहिं माथ नवाई ॥
उते सेन मनमांह डराई * गयो महीप समीप तुराई ॥
कह्यो जोरि कर हे महराजू * बडी चूक मोसे भै आजू ॥
साधु भीर मोरे घर आये * बडी वेर तनु तेल लगाये ॥

आज गई खिगरी मम पीरा ❀ रहिगे रोग न एक शरीरा ॥
सेन कह्यो मैं तो नहिं आयो ❀ भूपति तब अतिशय भ्रम छायो ॥
जान्यो साधु हेतु यदुराई ❀ दियो आइ तनु तेल लगाई ॥
अस गुणि सेनहि मिले महीपा ❀ सिंहासन बैठाइ समीपा ॥
दोहा-गुरू सरिस पूजन कियो, अतिशय आनँद दाइ॥
साधुन सब सेवै नगर, दिइ डौंडी पिटवाइ ॥ २ ॥
राजाराम साधु सेवकाई ❀ करन लगे रोजे चित लाई ॥
संतसेव प्रगट्यो परभाऊ ❀ लह्यो कबीरहि गुरु नृप राऊ ॥
पूरुब सकल कथा मैं गाई ❀ सुनहु एक दिनकी सब भाई ॥
राजा रोजहि साधु जेवावै ❀ परसै आप और परसावै ॥
परुसत एक दिवस श्रम जूट्यो ❀ धौत वसनको छोरहि छूट्यो ॥
तब द्वै कर परुसन महँ रागे ❀ द्वै कर वसन सँभारन लागे ॥
चारि भुजा देखे सब कोई ❀ गुणे सकल लीन्हे हरि जोई ॥
यह सब गुणहु कबीर प्रभाऊ ❀ नहिं मानहु मन अचरज काऊ ॥
सकल वघेल वंशके सांचे ❀ गुणहूं गुरु कबीर हरि राचे ॥
बांधवदुर्ग वघेलन मूला ❀ ताके सरिस और नहिं तूला ॥
मम पितु राजारामहिं सोई ❀ दशयें पुरुष प्रगट भो जोई ॥
बीजक अर्थ कियो विस्तारा ❀ पूरब यथा कबीर उचारा ॥
दोहा-रामसिंहको सुवन जो, वीरभद्र अस नाम ॥
सो मोहिं कह्यो कबीरजी, आगम ग्रंथहि ठाम ॥ ३ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ४९

अथ घना जाटकी कथा।

दोहा-घना जाटको अब कहौं, यह चरित्र रचि ठाट॥
जाहि सुनत हरिभक्तिकी, देखिपरैं दृग बाट॥ १ ॥
छंद-दिशि वरुणदेशहिमें रह्यो कोउ जाट जाति सुवृद्ध है ॥
ताके भयो यक सुवन ताको घना नाम प्रसिद्ध है ॥

इक जाय पंडित तासु घर किय बास लहि सतकारहै ॥
उठि करै शालिग्राम पूजन रोज विविध प्रकार है ॥ १ ॥
तेहि निकट धना सिधारि पूजन हेतु मांग्यो ठाकुरै ॥
सो जाय मज्जन हेतु सरिता गुण्यो मज्जन करिउरै ॥
लै गोल यक पाषाण भेटहु बाल हठ है ताहिकै ॥
अस ठानि मन पाषाण लै यक धऱ्यो प्रभु सँग चाहिकै ॥ २॥
जब धना मांग्यो जाय तब कहि दियो ठाकुर नाम है ॥
यहि पूजियो तुम रोज तुम्हरो पूजिहै यह काम है ॥
अस भाषि पंडित गमन किय तबते धना पाषाणको ॥
पूजन करै भरि प्रेम रोजहि करत अति सन्मानको ॥ ३ ॥
हरि होत प्रेमहिते प्रगट यह सकल श्रुति सिद्धांत है ॥
नैवेद्य धरि बोले धना अब खाहु कमलाकांत है ॥
कस खात नाहिं बतरात नाहिं ऊबे किधौं पंडित बिना ॥
अस कहत कहत विषादभरि रोवनलग्यो व्याकुलधना ॥ ४ ॥
तहँ जानि शुद्ध स्वभाव शिशु प्रगटे पषाणहिंते हरी ॥
बतराय तेहि नैवेद्य खायो धना सँग संगति करी ॥
रोटी लगावे भोग निज खावै भुवनपति आयकै ॥
यक रोज हरि कह सूखि रोटी धँसति कंठ न जायकै ॥ ५ ॥
तब छांछ परवर मांगि रोजहिरोज भोग लगावही ॥
पुनि धना अपने धेनु बछरा रोज विपिन चरावही ॥
हरि कह्यो रोजहि खात तुम्हरो देहु मोहिं कछु काम है ॥
तब धना कह मम धेनु फेरहु जाहुले मम धाम है ॥ ६ ॥
तबते नितहिं प्रभु धना धेनु चराय फेरहिं भवनको ॥
बहुकाल बीत्यो भांति यहि पंडितसो किय आगवनको ॥
पूंछ्यो धना ते विप्र सो पूजन करो कैधों नहीं ॥
तब आदिते वृत्तांत सिगरो धना वर्णन किय सही ॥ ७ ॥
पंडित सुनत जकिरह्यो कह्यो विशेषि मोहिं देखाइये ॥
तब धना लै तेहि विपिन चारत धेनु ताहि बताइये ॥

पंडिताहि वेषि न परे प्रभु बैठ्यो गलानिहिं मानिकै ॥
तब धना कह्यो चपेटि न दीन्ह्यो दरश तब वन आनिकै ॥ ८॥

दोहा-धनै पषाणहिं ते मिले, मिले न द्विजहि पुजाय ॥
प्रेम अधीन विशेषिकै, जानहु यादवराय ॥ २ ॥

(तामें प्रमाण)

न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृण्मये ॥
सर्वत्र विद्यते देवस्तत्र भावो हि कारणम् ॥

दोहा-धनै निदेश दियो हरी, होहु शिष्य तुम जाय ॥
काको रामानंद है, धारहु ज्ञान निकाय ॥ ३ ॥

छंद-यक समय गोहूं बवन हित गे धना विपिन वगारमें ॥
तहँ सन्त आये दूरिते तिन लियो अति सतकारमें ॥
कह सन्त भूखे सकल हम सुनि धना गोहँन बेंचिकै ॥
तेहि ठाम व्यंजन विराचि सन्त खवाय दिय सुख सेंचिकै ॥९॥
पितु मातु भै भरि भूरि धूरिहि पूरि दिय सब खेतमें ॥
गोधूम जाम्यो सरस सबते बढ्यो संतन हेतमें ॥
सब कृषिक निरखि सिहात आपुसमाहिं सकल सिराहहीं ॥
जस धनाको गोधूम जाम्यो लख्यो हम तस कहुँ नहीं ॥१०॥

दोहा-धनि धनि संत प्रभाव जग, यह कछु अचरज नाहिं
संत वदन बोयो धना, जाम्यो खेतन माहिं ॥ ४ ॥

छप्पय-घर आये हरिदास तिनहिं गोधूम खवाये ॥
तात मात डर थोथ खेत लांगूल बहाये ॥
आस पास कृषिकार खेतकी करत बडाई॥
भक्त भजेकी रीति प्रगट परतीति जो पाई ॥
अचरज मानत जगतमें निपज्यो कहुँवैवयो ॥
धन्य धनाके भजनको विनहिं बीज अंकुर भयो ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

अथ पीपाकी कथा।

दोहा-श्रीपीपाको पाप तम, हरदीपा इतिहास ॥
रह्यो महीपा पूर्व जो, ताको करौं प्रकाश ॥ १ ॥

गागरौन यक नगर महाना * पीपा तहँको भूप प्रधाना ॥
रचे चंडिका भक्त सुवारा * यक दिन आये साधु अपारा ॥
चालिस मनको भोग बनावे * प्रतिदिन देवी चरण चढावे ॥
साधुनहूंको भोजन दीन्हों * साधु रसोई तहँ सब कीन्हों ॥
बने जहां देवीको भोगा * साधु कियो तहँ पंगति योगा ॥
भोग लगावन जब जल फेरचो * देवी भोगहि तेहि बिच गेरचो ॥
साधु कियो भोजन तहँ सिगरे * आनँद सहित अनत कहुँ डगरे ॥
पंडा सबै भोग धरि सोई * देवीको अरप्यो मुदमोई ॥
लग्यो भोग देवीको नाहीं * प्रथमहिं सो लाग्यो हरिकाहीं ॥
देवी राति भूप ढिग जाई * दियो पलँगते ताहि गिराई ॥
बोलत भई क्षुधित मैं बैठी * ताते तुव समीप मैं पैठी ॥
भूप कह्यो हम भोग पठायो * देवी कह्यो राम सो खायो ॥

दोहा-भूप कह्यो तुमते अधिक, राम अहै जगमाहिं ॥
देवी कह्यो सो जगतपति, हम ताके सम नाहिं ॥ २ ॥
भूप कह्यो मैं त्वहि भज्यो, मुक्ति हेतु जगमातु ॥
काली कह्यो सुमुक्तिहै, रघुपति कर जलजातु ॥ ३ ॥

भूप कह्यो भजिहैं हम तेहिको * मुक्ति देनको है बल जेहिको ॥
तुम्हरी करी बहुत सेवकाई * बताय हरिभजन उपाई ॥
देवी कह्यो जाहु तुम काशी * होहु तहां यदुनाथ उपासी ॥
मिटन चह्यो जो माया मोहू * रामानंद शिष्य तहँ होहू ॥
अस कहि देवी रूप दुरायो * सोचन नरपति निशा बितायो ॥
भोर उठ्यो राजा ठगि गयऊ * लोगन कह नृप वैकल भयऊ ॥
पीपा दलयुत काशी आयो * रामानंद चरण शिर नायो ॥

रामानंद कही तब बानी ❀ दे लुटाय सम्पति जो आनी ॥
तब पीपा सब दिया लुटाई ❀ रत बसन हय गज समुदाई ॥
रामानंद कही पुनि बाता ❀ गिरै कूप नहिं मोहिं सुहाता ॥
पीपा कूप गिरन कहँ धाये ❀ साधु पकरि समीपहिं लाये ॥
भे प्रसन्न तब रामानंदा ❀ मंत्र दियो काटन भवफंदा ॥

दोहा–जो विरक्त तेहि लागतों, साधुनकों उपदेश ॥
तामें श्रोता सुनहु सब, यह इतिहास प्रदेश ॥ ४ ॥
सुन्यो भागवत भूप यक, बारह वर्ष प्रयंत ॥
तब पौराणिकते करी, शंका यह मतिवंत ॥ ५ ॥

सुन्यो भागवत संवत बारा ❀ छूट्यो नाहिं मोहिं संसारा ॥
जोन परीक्षित सुनि दिन साता ❀ पायो यदुपति पद जलजाता ॥
सुन्यो धुंधकारी भागवतै ❀ सात दिनामें छूट्यो भवतै ॥
तुम भागवत सुनायो सोई ❀ मेरे दोष मिटे नहिं कोई ॥
सोइ भागवत अहै धौं आना ❀ धौं बांचन नाहिं बन्यो पुराना ॥
धौं न बन्यो मोहिं श्रवण विधाना ❀ यह संदेह हरहु मति वाना ॥
पंडित सुनि नहिं उत्तर दयऊ ❀ कालिह कहौंगो अस कहि गयऊ ॥
निशि यक साधु समीपहि जाई ❀ अपने नृपकी शंक सुनाई ॥
साधु कह्यो लावहु नृपकाहीं ❀ समाधान हम करब इहांहीं ॥
साधु समीप गये पुनि राजा ❀ कह्यो सकल संदेह दराजा ॥
साधु कह्यो धौं प्रगट देखावै ❀ शास्त्र रीति धौं त्वहि समुझावै ॥
कह्यो भूप मोहिं प्रगट देखावहु ❀ साधु कह्यो जानि दुख उर लावहु ॥

दोहा–शिष्यनको बुलवायकै, भूप पुराणिक काहिं ॥
बांधि वृक्षमें टांगिदिय, कह पौराणिकपाहिं ॥ ६ ॥

बारह वर्ष भूपको खायो ❀ सन्मुख बँधो नाहिं छोडवायो ॥
साधु ऐसही नृपसों गायो ❀ बांधे दोउ अस दोउ सुनायो ॥
साधु तबै दोहुँन कहँ छोरी ❀ दोउनसों कह गिरा कठोरी ॥
दोऊ बँधे सोहकी फांसी ❀ सुनब सुनाउब दोउ कर हांसी ॥

जो दोउ महँ विरक्त कोउ होते ❋ धँसाते भागवत सुरसुरि सोते ॥
श्रीशुक परीक्षित भूप प्रधाना ❋ श्रोता वक्ता तुमहिं नशाना ॥
ऐसहि पीपा रामानंदा ❋ गुरू शिष्य जानिये अमंदा ॥
सुनि दोहुन कहँ साधु छोडायो ❋ नृपहु पुराणिक ज्ञानहि पायो ॥
तीन साधुको लहि उपदेशा ❋ नृपहि पुराणिक तज्यो कलेशा ॥
यामें है दूसर दृष्टांता ❋ श्रोता सुनहु सकल तुम दाता ॥

दोहा—एक साधू ढिग तिय गई, लै शिशुगुडहि खवाय ॥
कह्यो साधुसों गुड भषन, दीजे सुतहि छोडाय ॥ ७ ॥
साधु कह्यो लै आइयो, देहौं कालिह छोडाय ॥
भोर भये लैगै तिया, कह्यो साधु अनखाय ॥ ८ ॥
रे शिशु भोजन करत गुड, उर उपजत गुडरोग ॥
सुनत भीति वश शिशु तज्यौ, गुडभोजनसंयोग ॥ ९ ॥
नारि कह्यो प्रभु कालिह यह, कही वृत्त कस नाहिं ॥
गुरु बोले गुड खात मैं, कालिह रह्यो यहि ठाहिं ॥ १० ॥

सो०—आप गिरै जलकूप, वारण करै जो और कोउ ॥
सोउ बडो बेकूफ, मृषा तासु उपदेश सब ॥ १ ॥

रामानंद और नृप पीपा ❋ भे दोउ सकल भक्त कुलदीपा ॥
रामानंद कह्यो सुनु पीपा ❋ चलि परसें बहु साधु महीपा ॥
हम द्वारका होत तहँ ऐहैं ❋ तेरे भवन निवासि सुख पैहैं ॥
पीपा चल्यो चरण शिर नाई ❋ पहुँच्यो जबै राज्य निज आई ॥
सकल राज्य डौंडी पिटवाई ❋ सब कोउ करै साधु सेवकाई ॥
आपहु साधुन रोज खवावै ❋ मान सहित पुनि विदा करावै ॥
पीपा यश छाये जगमाहीं ❋ साधु सेव पीपासम नाहीं ॥
रामानंद सुनते सुख पाई ❋ चले द्वारकै शिष्य लेवाई ॥
धना कबीर सेन रैदासा ❋ चालिस भक्त रहै तिन पासा ॥
गागरौन गे रामानंदा ❋ पीपा सुनि पायो आनंदा ॥

वित्त लुटावत किय अगुवाई ❋ अमल सुथल महँ वास कराई ॥
पृथक् पृथक् किय संत प्रणामा ❋ पृथक् पृथक् दीन्ह्यो तिन ठामा ॥
दोहा-व्यंजनमेवा विविधविधि, सहित सकल सत्कार ॥
जस पीपा कीन्ह्यो हुलसि, वरणि लहैको पार ॥ ११ ॥
गागरौन वसि गुरु कछु काला ❋ चलन लगे द्वारका उताला ॥
पीपा संग चलनको चाहा ❋ रानिहुँ तेहिं सँग कियो उमाहा ॥
रानी रहैं बीस तेहि केरी ❋ पीपा वरज्यो आँखि तरेरी ॥
नाहिं मान्यो तब बोलि कबीरै ❋ कह्यो हवाल नयन भरि नीरै ॥
कह कबीर रानिन पहँ जाई ❋ का करिहौ भूपति सँग आई ॥
बरबस चलहु तो अस करिलेहू ❋ धन तन बसन संत कहँ देहू ॥
तुंबा कर कोपीन शरीरा ❋ चलहु भूप सँग संतन भीरा ॥
सुनत कबीर वचन नृप नारी ❋ रही मौन नाहिं संग सिधारी ॥
सीता नाम रही यक रानी ❋ पहिरि कोपीन संग हुलसानी ॥
रामानंद कह्यो सुनु पीपा ❋ सीतै लैचलु सँग कुलदीपा ॥
पीपा कह्यो देहु कोउ संतै ❋ गुरु कह तजै कौन विधि कंतै ॥
यह सुनि उनइस नृपकी रानी ❋ उपरोहितै बहुत सन्मानी ॥
दोहा-सहस सहस मुद्रा दियो, नृप वारणके हेतु ॥
पीपै वरज्यो बहुत द्विज, नहिं मान्यो नृपकेतु ॥ १२ ॥
मरिगो विप्र तबै विष खाई ❋ पीपा गुरुसों कह्यो डेराई ॥
गुरु उपरोहित तुरत जिआयो ❋ उपरोहित रानिन ढिग आयो ॥
रानिनसों भाष्यो द्विजराई ❋ अब हमारि कछु नाहिं बसाई ॥
पीपा लै सँग सीता रानी ❋ गुरु सँग गयो द्वारका ज्ञानी ॥
कछुदिन कुशस्थली करि वासा ❋ गुरु युत पायो परम हुलासा ॥
रामानंद गये पुनि कासी ❋ आप द्वारका बस्यो हुलासी ॥
सुन्यो सविधि भागवत पुराना ❋ संतनसों पूंछ्यो मतिवाना ॥
तहँ है यदुपति मंदिर भाई ❋ संत सकल मोहिं देहु बताई ॥
संत कह्यो अबलों नहिं बिगरी ❋ सागरके अंतर है सिगरी ॥

तब पीपा सीता सँग लेके * कूद्यो सागर मधि सुख स्वैके ॥
सागर मधी पंथ इक पायो * सोइ पथ है द्वारका सिधायो ॥
यदुपति महल लख्यो सो जाई * भयो चकित प्रगटी पुलकाई ॥
दोहा-आगे चलि पीपै लियो, श्रीरुक्मिणिको कंत ॥
सात दिना राख्यो भवन, दियो अनंद अनंत १३॥
रुक्मिणि दिय सीतै निज सारी * यदुपति दियो छाप कर धारी ॥
पीपै कह वसुदेव कुमारा * जाय उधारहु तुम संसारा ॥
जाके जाके देहों छापू * ताके रहो न पुनि यमदापू ॥
हरि पीपै बाहिर पहुँचायो * बूडन भक्त कलंक मिटायो ॥
पीपा सूखे अम्बर धारी * आयो संत समाज मँझारी ॥
अचरज मानि सन्त शिर नायो * पीपा हरिकी छाप चलायो ॥
अबलों प्रगट द्वारका माहीं * छाप लगे सब जातिन काहीं ॥
पीपा तहँते सतिय सिधारी * मिल्यो यमन इक विपिन मझारी॥
सीतै गहि सो तुरत पराना * पीपा कहँ जंजाल बिलाना ॥
तब इक बाघ पठानहिं खायो * लै सीतै पीपा पुर आयो ॥
पीपा कह्यो सुनेरी सीता * जाहि भवन निज तैं अति भीता ॥
सीता कह्यो अबै लगि तोरा * मिट्यो न भेद पुरुष तिय मोरा॥
दोहा-पीपाजी तब हँसि कह्यो, लेहु परीक्षा तोरि ॥
तैं तो रुक्मिणिकी सखी, तोहिं तजब बांड खोरि १४॥
सीता सहित चल्यो पुनि पीपा * मिल्यो पंथ इक शेर समीपा ॥
पीपा ताके निकट सिधारचो * दे तेहिं मन्त्र माल गल डारचो ॥
वनपति अनशन व्रत किय तबते * तज्यो शरीर सुचित भो सबते ॥
सो गुजरात देश महँ जायो * नरसीजी अस नामहि पायो ॥
तासु कथा वर्णहुँगो आगे * पीपा चरित सुनहु अनुरागे ॥
गये शेषशाई पुनि पीपा * कीन्ह्यो दर्शन यदुकुल भूपा ॥
तहँ इक भक्त अकिंचन रहेऊ * चीधर नाम नारि युत ठयऊ ॥
सो दम्पति पीपा सत्कारचो * करि पूजन पुनि पांय पखारचो॥

पुनि तियसों बोल्यो असि बानी * आये महाभागवत ज्ञानी ॥
देहु वित्त कछु भोजन हेतू * तब तिय कह्यो आज नहिं नेतू ॥
रह्यो जौन कछु घरमें मोरे * खायो कालिह जे आये तोरे ॥
अब तो रह्यो घांघरो बांकी * साधु हेतु मोहिं प्रीति न ताकी ॥
दोहा-चीधर बेंच्यो घांघरो, पीपै भोजन दीन ॥
पीपा भोजन विरचिके, बोल्यो वचन प्रवीन ॥ १५ ॥
आपहु खाहु बैठि युत नारी * तब चीधर निज तिया हँकारी ॥
बिना वसन किमि जाय सिधारी * तब पीपा पठयो निज नारी ॥
लखी वसन बिन चीधर घरनी * सीता कह्यो तौनकी करनी ॥
चीधर नारि कही धुसकाई * लग्यो सकल साधुन सेवकाई ॥
तब सीता आधो पट फारी * चींधर तियको दै पगुधारी ॥
भोजन करि सीता जब सोई * तब पीपासों कह अति रोई ॥
पीपा अचरज मान्यो प्रणको * तिय कह बेंचि देहौं धन तनको ॥
उठे भोर चलिके द्वै कोशा * मिल्यो नगर जयपूरित कोशा ॥
मिले गैल महँ छैल छतीसे * ते सीता कहँ सुंदर दीसे ॥
पूंछे छैल कौन तुम प्यारी * तिय कह गति पातुरी हमारी ॥
अंध एक चाकर सँग माहीं * रमैं पुरुष पावैं धन काहीं ॥
वेश्या बाज सुनहु बहु धाये * धन अरु धान्य विपुल तहँ लाये॥
दोहा-सीता चीधर भवन महँ, भेजिदियो धन धानि ॥
आये तेहि दिन तेहि घरै, साधू पंचशतानि ॥१६॥
चीधर तुरतहिं सबनि खवायो * इक दिनको नहिं नेकु बचायो ॥
जिन जिन वेश्या बाजिन केरो * धन भोजन किय सन्त घनेरो ॥
तिनकी तिनकी भै मति अमला * सीते गुणे न द्वारकी अबला ॥
पूंछतभे को अहहु सयानी * तब सीता निज कथा बखानी ॥
पीपाको सुनि सब जन आये * लीन्हे मन्त्र चरण शिर नाये ॥
भये शुद्ध सब वेश्याबाजू * पीपा चल्यो मानि कृत काजू ॥
ग्राम एक तोडो जेहिं नामा * तहँ नृप शूरमल्ल मतिधामा ॥

ताके नगर निकट किय वासा ❀ कहुँ भोजन कहुँ करै उपासा ॥
एक दिन मज्जन गये तडागे ❀ एक थल माटी खोदन लागे ॥
मोहर भरो पात्र मिलि गयऊ ❀ तेहिं लखि तहँते भागत भयऊ ॥
नारीसों वरण्यो विरतंता ❀ सो कह तहां न जैयो कंता ॥
सुने चोर यह दम्पति वादा ❀ गये लेन तेहिं भरि अहलादा ॥

दोहा-गहत पात्र इक अहि कढ्यो, भगे चोर भयभीर॥
डसवायो तैं भुजँगते, यह शठ साधु अधीर ॥१७॥

ताते यही घर डारि भुजंगा ❀ हमहिं डसावे यहिकर अंगा ॥
अस कहि पात्र उपर पट डारी ❀ फेंक्यो पीपा भवन मँझारी ॥
घर घर शोर सुनत उठि पीपा ❀ मोहर लख्यो बारि निशि दीपा ॥
मिलीं सातसौ मोहर मोटी ❀ शत शत मासाकी नहिं खोटी ॥
पीपा तबते अन बेसाही ❀ संत असंत खवाय उछाही ॥
दश दिनमें मोहर चुकवायो ❀ सूरजमल्ल खबरि यह पायो ॥
आय दरशहित पद शिर नायो ❀ शिष्य होन हित विनय सुनायो ॥
पीपा कह्यो जो शिष्यहि होवहु ❀ तो अबहीं घरको धन खोवहु ॥
सूरजमल्ल सुनत हर्षान्यो ❀ तहँ तुरंत घर संपति आन्यो ॥
पीपा ह्वै प्रसन्न कह बानी ❀ धन लै जाहु भवन नृप ज्ञानी ॥
हम यह करी परीक्षा तेरी ❀ अब भै शिष्य करन मति मेरी ॥
करिकै शिष्य कह्यो नृप काहीं ❀ राखेहु संतन परदा नाहीं ॥

दोहा-रच्यो धर्मशाला बृहत, मंदिर बहु बनवाय ॥
नर नारी सब शिष्य करि, दिय ब्रजभूमि बनाय ॥ १८ ॥

इक दिन नृप कह अश्वहि लीजे ❀ पै नहिं इह काहूकहँ दीजे ॥
जब सेयो नृप संतनकाहीं ❀ तबते बंधु खिझात सदाहीं ॥
एक दिन आयो एक व्यापारी ❀ मरयो वृषभ तेहि पंथ मँझारी ॥
पूंछ्यो वृषभ बिकत यहि गाऊं ❀ कोउ कह मिलिहै पीपा ठाऊं ॥
पीपासों चलि कह व्यापारी ❀ देहु बैल सुनियत बडवारी ॥
पीपा कह्यो चरत वनमाहीं ❀ ऐहैं जब देहैं तुमकाहीं ॥

दियो पंचशत धन व्यापारी ❀ सो किय भोजन केर तयारी ॥
तेहि दिन सहस्रन साधु जेवायो ❀ पंचशतहुँ इक दिवस उडायो ॥
सांझ समय मांग्यो व्यापारी ❀ पीपा तब तेहिं गिरा उचारी ॥
अपने बैल देखिले आंखी ❀ भोजन कराहिं नगर जन साखी ॥
व्यपारी तब पायो ज्ञाना ❀ ऊन वसन दीन्ह्यो तेहि नाना ॥
भयो शिष्य तजिकै संसारा ❀ लहि विराग हरिलोक सिधारा ॥

दोहा-इक दिन पीपा तुरंग चढि, गयो करन सुस्नान ॥
चोर चोरायो घोड कोउ, लाये तेइ पुनि थान ॥ १९ ॥

इक दिन अपर गाँव पगु धारे ❀ तासु कुटी बहु संत सिधारे ॥
लखिकै सीता संत समाजा ❀ गई वणिक घर भोजनकाजा ॥
कह्यो वणिक मन भावत लेहू ❀ पै रजनीमहँ मोहिं सुख देहू ॥
करि सीता स्वीकार तुरंतै ❀ लाय अन्न भोजन दिय संतै ॥
आयो पति निशि कह्यो हवाला ❀ पीपा सुनिकै भयो निहाला ॥
कह्यो शृँगार सहित तहँ जाहू ❀ संत हेतु नहिं मन पछिताहू ॥
सीता करि षोडश शृँगारा ❀ वणिक निवास तुरत पगु धारा ॥
वर्षाऋतु कर्दम पथमाहीं ❀ पीपा धरयो कंध तिय काहीं ॥
तियको वणिक धाम पहुँचाई ❀ आप द्वारमहँ बैठ्यो आई ॥
सीतै लखत वणिक उरमाहीं ❀ भयो विवेक रह्यो भ्रम नाहीं ॥
सीता सूखे चरण निहारी ❀ कह्यो मातु केहि मार्ग सिधारी ॥
सीता कह्यो कंत मोहिं लायो ❀ सुनत वणिक तुरतहिं उठि धायो ॥

दोहा-पीपा पांयनमें परयो, क्षमवायो अपराध ॥
सोउ वणिकहिं करि शिष्य निज, हन्यो सकलभवबाध२०

यह सुधि सकल भूप जब पाई ❀ अनुचित गुण्यो संत सेवकाई ॥
घटन लग्यो भूपति अनुरागा ❀ जान्यो पीपा भया अभागा ॥
यहि क्षण अंकुर कुमति उखारै ❀ नृपहि कुसंगति चहति विगारै ॥
अस गुणि नृप घर तेहि क्षण आये ❀ चोपदारसों खबरि जनाये ॥
मोजा बनवावत नृप रहेऊ ❀ करि पूजन ऐहौं अस कहेऊ ॥

पीपा कह्यो बनावत मोजा ❀ पूजन नाम लेत भरि मोजा ॥
लावहु तुरत नरेश लेवाई ❀ सो सुनि आयो भूप डेराई ॥
पीपा कह लहुरी तुव रानी ❀ अबहि देहु मोहिं नतु तुव हानी ॥
भूप भीति वश रानिन लायो ❀ तव पीपा वपु सिंह देखायो ॥
रहे बांझ लहुरी नृप रानी ❀ गयो लेन नृप भय उर आनी ॥
सुतहिं खेलावत ताकहँ देख्यो ❀ पीपाकी महिमा मन लेख्यो ॥
परचो पुहुमिपति पीपा पायन ❀ लायो रानीको सुत चायन ॥
दोहा—पीपाके हग देखते, बालक गयो विलाय ॥
भूप कह्यो तेरी कला, मोसों जानि न जाय ॥ २१ ॥
पीपा पुहुमीपति परमोध्यो ❀ संतभेद महिमाकरि सोध्यो ॥
पीपा कह्यो सुनहु नरनाई ❀ करु संतत संतन सेवकाई ॥
तनमन संत सेव जे करहीं ❀ तिन सँग पाय अधम उद्धरहीं ॥
छुटत न जग विन संतन सेये ❀ चलति न सिंधु नाव विन खेये ॥
अस परमोधि नृपहि घर आये ❀ प्रतिदिन भूपहिं प्रेम बढाये ॥
विषयी साधु एक दिन आयो ❀ मांग्यो सीतै लखि ललचायो ॥
पीपा कह्यो अबहिं लैजाहू ❀ लै भाग्यो डेरात नरनाहू ॥
कह्यो साधुसों तब अस सीता ❀ रहि हैं तहँ जहँ निशा व्यतीता ॥
सीतहि लिहे भूप भय पाग्यो ❀ चारि पहर निशि सो शठ भाग्यो॥
भयो भोर देख्यो चहुँओरा ❀ रह्यो नगरके निकटहि ठोरा ॥
तब सीता कह रह्यो करारा ❀ अब नहिं करिहैं संग तुम्हारा ॥
सीता संग ज्ञान प्रगटायो ❀ मातु मातु कहि सो शिर नायो ॥
दोहा—सीतै पीपा भवनमें, पहुँचायो परि पांय ॥
भयो शिष्य छूटी विषय, लीन्ह्यो मुक्ति बजाय २२॥
कछु दिनमाहँ चारि पुनि आये ❀ विषयी साधुन वेष बनाये ॥
पीपासों सीताकहँ मांगे ❀ पीपा कह्यो लेहु सुखपागे ॥
सीतै कह्यो करहु शृंगारा ❀ बैठि कोठरी करु सत्कारा ॥
सीता बैठि कोठरी जबहीं ❀ साधुनसों पीपा कह तबहीं ॥

बैठी तिय गमनहु तुम चारी * करहु यथामन आश तिहारी ॥
विषयी गये कोठरी द्वारे * तहँ इक बाघिनि बैठि निहारे ॥
गिरे भागि पीपाके पाये * पीपा चलि सीतैं दरशाये ॥
लहे ज्ञान पीपा परभाऊ * भजन लगे यादव कुल राऊ ॥
कथा अमित पीपाको ऐसी * कहँलों कहौं यथारथ जैसी ॥
किय संक्षेप इतै प्रियदासा * ताते कह्यो न सब इतिहासा ॥
द्वै कवित्त प्रियदास बनाये * संक्षेपहि गाथा सब गाये ॥
लिखौं कवित्त तौन मैं दोई * श्रोता सुनहु हुलसि सब कोई ॥

दोहा–अष्टादश इतिहास जे, पीपाके प्रियदास ॥
किय संक्षेप कवित्तमें, आगू तासु प्रकास ॥ २३ ॥

कवित्त–गुजरीको धन दियो पियो दही संतनमें ब्राह्मणको भक्त कियो देवी दै निकारिकै ॥ तेलीको जिआयो भैंसि चौरनपै फेरि लायो गाडी भर आयो तन पांच ठोर जारिकै ॥ कागज लै कोरो करचो बनियाको शोक हरचो भरचो घर त्यागी डारी हत्याहू उतारिकै ॥ राजाको अवसेरभई संतको जब विभव दई चीठी मानि गयो श्रीरंगजी उदारिकै ॥ १ ॥ श्रीरंगके चेत धरचो तिय हिय भाव भरचो ब्राह्मणको शोक हरचो राजापै पुजाइकै ॥ चँदोवा बोझाय लियो तेलीको लै बेल दियो पुनि घर मांझ आयो भयो सुख आइकै ॥ बडोई अकाल परचो जीवदुख दूरि करचो परचो भूमि गर्भ धन पायो दै लुटायकै ॥ अति विस्तार लियो किये है विचार यह सुने एक बार पुनि भूले नाहिं गायकै ॥

दोहा–अष्टादश इतिहास ये, पीपाके सुखदान ॥
तिनको मैं संक्षेपते, सिगरे करौं बखान ॥ २४ ॥

छप्पय–यकदिन पीपा भवन संतमंडली सोहाई ॥
बेंचनहित तहँ सुखद गूजरी दधि लै आई ॥
मांग्यो दधि सो दियो सकल भो मोल पांचपन ॥
पीपा कह जो मिल आजु सो लेहि मोल धन ॥

तब सांझ शिष्य इक साहु गो दियो भेंट मोहर शते ॥
सो दियो गूजरीको तुरत पीपा पूरव प्रण चिते ॥ १ ॥
देवीको यक रह्यो भक्त द्विज नेवति बोलायो ॥
पीपा प्रथमहि राम भोग मंजूर करायो ॥
तहँ पीपा चलि राम भोग अरघा जल फेरयो ॥
रामहिंको सो भोग लग्यो बांदर बहु घेरयो ॥
सब देवि भोग कीसन भषे यह कौतुक देखैं सबै ॥
अधरात विप्र छाती चढी देवी कहि भूंखी तबै ॥ २ ॥

सोरठा—तब द्विज कह्यो प्रकोपि, देवी तैं निर्मल भई ॥
मैं ध्यायो यहि चोपि, तै रक्षण करिहै अवसि ॥ १ ॥
रक्षण किये न भोग, मोहि कौन विधि राखि हैं ॥
मम तब अब न सँयोग, भजिहौं तेहिजो तोहि पेरै२॥
अस कहि विप्र प्रभात, पीपाके पांयन पर्यो ॥
कही सकल निशिबात, राम नाम सुनिलेतभो ॥ ३ ॥
देवी मंदिर माहिं, पधरायो रघुवंशमणि ॥
भज्यो संत पदकाहिं, कछुदिनमें भवनिधितर्यो४॥

यक दिन पीपा नगर बजारा * कौनहु हेतु कहूं पगुधारा ॥
इक सुंदरि तेलिनिकी नारी * आवति चली तेल शिर धारी ॥
बेंचन हेतु तहां बहु बारै * तेल लेहु अस ऊंच पुकारै ॥
ताहि देखि पीपा छविवारी * निकट बोलि अस गिरा उचारी ॥
रामभजन लायक तनु माहीं * तेल तेल कृत करति वृथाही ॥
राम राम कहु तेलिनि प्यारी * कह्यो कोपि तब तेली नारी ॥
राम राम सत्ती मुख भाषै * जियै मोर पति वर्षन लाखै ॥
पीपा कह्यो मरी पति जबहीं * राम राम भाषैगी तबहीं ॥
अस कहि पीपा गे निज कामा * ताकर पति आयो निज धामा ॥
प्रविशत भवन देहरी लागी * फूटो शिर गिरिगो तनु त्यागी ॥
सती होन कहँ ताकरि नारी * लै नरियर कर करी तयारी ॥

राम राम मुख करत बखाना * तेलीकी तिय गई मशाना ॥

दोहा-शोर भयो सब नगरमें, धाये देखन लोग ॥
पीपाजी तहँ जात भे, जानि राम संयोग ॥ २५ ॥

देखत तेलिनि हँसे ठठाई * अब तो राम नाम रट लाई ॥
तेलिनि गिरी चरण महँ धाई * कह्यो नाथ पति देहु जियाई ॥
जबलौं दंपति हम जग जीहैं * राम राम रटिहैं हम जीहैं ॥
पीपा कह्यो न तजे करारा * तौ अबहीं पति जिये तिहारा ॥
तेलिनि कह्यो शपथ पद तेरी * रटिहै राम जीह नित मेरी ॥
तब पीपा निज पद जिव शीशा * धरि ज्यायो कहि जय जगदीशा ॥
तेलिनि तेली शिष भये दोऊ * अचरज मान देखि सब कोऊ ॥
एक दिन भैंस चोरायो चोरा * पीपा जानि कियो नहिं शोरा ॥
बूढी भैंसि चोर लैजाते * आपहु चले तिन्है गोहराते ॥
युवा भैंसि औरो सब लेहू * करहु कछू नहिं मन संदेहू ॥
चित यो चोर लौटिके जबहीं * सकल भैंसि आई ढिग तबहीं ॥
पीपा दरशनपावत चोरा * उरमें रह्यो अज्ञान न थोरा ॥

दोहा-तासु चरण परि शिष्य भे, कहे सन्त सेवकाय ॥
कछु दिनमें संसार तजि, लीन्हीं मुक्ति बजाय॥२६॥

कवित्त-पीपा कहँ राम तको एक दिन जाते पंथ, कोऊ भक्त आय करि भाव घर लैगयो ॥ दिन दिन दून दून प्रेम बाढी गाढी अति, चलत निहारि प्रभु शोक अतिसों छयो ॥ रघुराज अरप्यो अनेक विधि द्रव्य भूरि शकट भरि सादर सु नाज स्वामीको दयो ॥ सोइ अन्न टोडो भेजि लाखन जेवांये संत, सौंरि भगवंत नाहिं अंतताको ह्वै गयो ॥ १ ॥ एक समै पांचग्रामहीते संग न्योतो आयो पीपा उर संशै कारि इक ग्रामको गये ॥ पीपा पीर जानि रघुवीर धरि पीपा वेष, न्योता कियो चारो नाहिं कोऊ जानते भये ॥ आई एक बाई रघुराज शिष्य होन हेतु, देख्यो है प्रथम गांव तनु तजिको दये ॥ दूजो दाह तीजे राखे चौथे दशगात पांचे, तेरहीं प्रत्यक्ष देख्यो जाय छठयें ठये ॥ २ ॥

दोहा-एक वणिक पीपा निकट, कियो विनय कर जोरि
पुरवहु प्रभु दाया सहित, यह अभिलाषा मोरि ॥२७॥
जो उठान साधुन के हेतू * उठे रोज रावरे निकेतू ॥
सो मोहिं सो लेहु कृपाला * दिये दाम बीते कछु काला ॥
पीपा कह्यो भलो कह साहू * कीजे तुहीं मोर निरवाहू ॥
वणिक लग्यो तब देन अनाजू * खान लगी नित संत समाजू ॥
ताके खोट पांचसै पैसा * वणिक होतिहै जाति अनैसा ॥
खोटे पैसा सकल चढाई * जारचो वणिक खर्च बहुताई ॥
बीते जब षट्मास अवादा * तब बनियां चलि कियो तकादा ॥
पीपा कह्यो पत्र लै आवहु * लेखा करि निज दाम चुकावहु ॥
झूठो कागज वणिक बनाई * पीपै लग्यो सुनावन जाई ॥
कागज झूठ बंद रह जेते * कोरे कागज भे सब तेते ॥
तब बनियां भ्रमकरि घर गयऊ * लिये बंद सब देखत भयऊ ॥
पुनि पीपा ढिग कागज आने * कोरे कागज पुनि दरशाने ॥

दोहा-सांच दाम जेतनो रह्यो, तेतनो लिख्यो देखान ॥
पीपा कह तू बावरो, वणिक चित्त चोआन ॥ २८॥
ज्ञान भयो पुनि साहु हिय, गयो दूरि भ्रम भूरि ॥
क्षमा करायो आपसे, धरचो चरण सिर धूरि॥२९॥
जगकी तुच्छ विभूति गुणि, लै सीता संगमाहिं ॥
संत समाजनमें मिले, पीपा शंकित नाहिं ॥ ३० ॥

कहे सुने हरि कथा सदाहीं * उपदेशै देशन जनकाहीं ॥
जहां बसे प्रभु वर्ष द्विवर्षा * तहां संत जन आवहिं हर्षा ॥
एक समय इक विप्र सिधारचो * सुता व्याह हित वचन उचारचो ॥
ताहि दई सम्पति निज भूरी * रही कुटी पीपाकी झूरी ॥
द्विज लै धन भरि महा उछाहू * कीन्ह्यो जाय सुताकर व्याहू ॥
पीपा सूने कुटी महँ बैठे * सुमिरत हरि सुखसागर पैठे ॥
हत्या लगी विप्र यक काहीं * ग्रहण न किय कुलके तेहि काहीं॥

सो द्विज रोवत रोवत आयो * स्वामीके चरणन शिर नायो ॥
स्वामी पूंछो कत दुखछायो * सो अपनो वृत्तांत सुनायो ॥
पीपा कह्यो जपो हरिनामा * मिटी ब्रह्महत्या दुखधामा ॥
जपन सो रामनाम द्विज लाग्यो * तनुते तुरत पाप सब भाग्यो ॥
पीपा कह्यो शुद्ध तैं भयऊ * अब कुल मिलन योग्य ह्वै गयहू ॥
दोहा-विप्र कह्यो मोहि देखतै, कुलके मारत धाय ॥
कौन भांति ते अब मिलौं, जाति पांतिमहँ जाय ॥ ३१ ॥
तब पीपा द्विज कर कर करिकै * कह्यो विप्र कुल चालि सुख भरिकै॥
यह द्विज जप्यो रामको नामा * यहि तनु अब न दुरित करठामा
तब ताके कुलके अस गाये * कौन भांति यहि शुद्ध बताये ॥
जो हनुमत मूरति प्रगटाई * यहि कर कृत नैवेद्यहि खाई ॥
तौ हमरे उपजै विश्वासा * भयो विप्र हत्या कर नासा ॥
तब द्विज तुरतहिं भोग बनायो * पीपा हनुमत भोग लगायो ॥
पीपा पट किंवार दै दीन्ह्यो * हनुमत प्रगट सो भोजन कीन्ह्यो॥
खोल्यो पट किंवार मतिवाना * पेरा मारुत वदन देखाना ॥
तब कुलके मान्यो विश्वासा * कीन्ह्यो जय जय शोर प्रकासा ॥
लियो जाति महँ द्विजे मिलाई * पीपा चरण गहे शिरनाई ॥
यहि विधि द्विजको पाप छोंडाई * पीपा रहे दूरि कहुँ जाई ॥
टोरेको नृप सूरजमल्ला * विन गुरु कीन्यो सोच प्रबल्ला ॥
दोहा-पीपाके खोजन हितै, भेज्यो विपुल सवार ॥
बीसमँजल महँ गुरु मिले, कियो विनय बहुबार॥ ३२॥
सादिनसों पीपा कह्यो, चलहु प्रथम तुम तत्र ॥
हौं आगेहीं पहुँचिहौं, बैठो है नृप यत्र ॥ ३३ ॥
विना गये मेरे तहां, जल पीवे नृप नाहिं ॥
ताते टोडो नगरमें, जैहौं यहि क्षणमाहिं ॥ ३४ ॥
अस कहि टोडो नगरमें, पीपा पहुँचे आय ॥
राजा सुनत सहर्ष चली, लायो भवन लेवाय ॥ ३५ ॥

एक दिवस सीता कहँ बोली * पीपा कह निज आशय खोली ॥
रंगदास इक वैष्णव चोखा * मोहिं बोलायो है नहिं दोषा ॥
मैं आऊं नेवतो करि भारी * तबलगि रहे कुटी महँ प्यारी ॥
अस कहि रंगदास घर गयऊ * ध्यान करत सो बैठो रहेऊ ॥
कियो मानसी पूजन फूलो * कुसुम चढावत तहँ सो भूलो ॥
पीपा जाय कही तब बानी * कुसुम चढावहु माति रति सानी ॥
रंगदास तब तजिके ध्याना * कुसुम चढायो विविध विधाना ॥
पीपा चरण गह्यो शिरनाई * जान्यो सत्य अहैं रघुराई ॥
पुनि पीपै भोजन करवायो * करन लग्यो सत्संग सोहायो ॥
यक दिन रंगदास अरु पीपा * बैठे ज्ञान कथत जगदीपा ॥
तहँ आईं द्वै श्वपच कुमारी * करसी बिनन लगी छबिवारी ॥
तब पीपा दोहुन गोहरायो * रंगदास तब अति अनखायो ॥

दोहा–श्वपच सुनत केहि हेतुते, आनहु अपने पास ॥
परदारन भाषण करत, होत धर्मकर नाश॥३६॥

तब पीपा बोल्यो मुसकाई * रामभिन्न कोउ मोहिंन देखाई ॥
इन दोहुनको दे उपदेशा * अबहीं हरिहौं जगत कलेशा ॥
जब आई दोउ श्वपच कुमारी * जगत वृथा सब कह्यो उचारी ॥
राम भक्ति फल पुनि दरशायो * तिनके हिये ज्ञान प्रगटायो ॥
सीताराम कहत दोउ गवनी * कंठी बांधिलई दोउ रवनी ॥
गईं भवन देखत तिन माता * मारन चलीं कहत कटुबाता ॥
जब तिहरे ऐहैं घर केरे * काटिहैं मूड मिली नहिं हेरे ॥
भागीं दोउ भवनते भीता * मिलीं संतगण कहि जय सीता ॥
भईं अनंत अनन्य उपासी * पावत भईं बहुत सुखरासी ॥
पुनि पीपा अतिशय सुखछाई * रंगदासते मांगि बिदाई ॥
चले भवन सुमिरत रघुराई * सज्जन करन लगीं सारे आई ॥
रहे एक द्विज रोवत तहँमां * पूंछ्यो कौन शोक तुव तनमां ॥

दोहा–विप्र कह्यो धन लावतो, करन सुताको ब्याह ॥
यहि थल चोर चोराय लिय, भयो भोर दुखदाह॥३७

पीपा कह्यो मानि मम बानी ❀ तब मिटि जाय विवाह गलानी ॥
माहिसुर कह्यो मानिहौं बयना ❀ तुमहिं छोडि लखि परे न नयना॥
संतवेष तब द्विजहिं बनाये ❀ भूपति निकट तुरत लै आये ॥
राजा जाय चरण शिर नायो ❀ ये को हैं अस वचन सुनायो ॥
पीपा कह गुरु अहै हमारे ❀ कृपा करन तुव निकट पधारे ॥
शत मोहर तब भूप चढायो ❀ द्विजहिं दुशाला अमल वोढायो ॥
यहि विधि नृपसों द्विजहिं पुजाई ❀ पीपा किय पुनि विप्र विदाई ॥
संतवेष द्विज धरयो सदाहीं ❀ प्रगट्यो ज्ञान विमल उरमाहीं ॥
कछु दिन बसे टोरपुर पीपा ❀ सूर्यमल्ल नित रहे समीपा ॥
यक दिन पीपाके अस्थाना ❀ होत रह्यो हरिकीर्तन गाना ॥
तब पीपा कर मींजन लागे ❀ बोले सब अचरज अस पागे ॥
कौन हेतु कर मींजहु दोई ❀ कारण जानिपरे नहिं कोई ॥

दोहा–तब पीपा बोले वचन, आजु द्वारका माहिं ॥
हरिउत्सव हित चांदनी, लागी रही तहांहिं ॥ ३८ ॥

लगी पवनवश तामहँ आगी ❀ मैं बुझाय आयो इत भागी ॥
हाथ जरे मींजहुँ हित येहू ❀ मानहु मृषा खबरि लैलेहू ॥
तब भूपति चारण पठवायो ❀ दूत देखि सब सत्य बतायो ॥
राजा पीपा पद शिरनायो ❀ कछुक काल निज नगर बसायो ॥
यक दिन मज्जन हित सर आते ❀ तेली वृषभ कहूंते आते ॥
ताही समय विप्र इक आयो ❀ पीपाको अस वचन सुनायो ॥
वृषभ सकल मरिगे प्रभु मेरे ❀ कृषी हेतु कछु परत न हेरे ॥
पीपा कह्यो वृषभ जे जाहीं ❀ तिनको लै गमनहु घर काहीं ॥
तेली वृषभ विप्र लै गयऊ ❀ रक्षक रोवत घर चलि दयऊ ॥
तेली रहे भवन महँ नाहीं ❀ गयो अनत कहुँ कारजकाहीं ॥
आयो सांझ जबै घर तेली ❀ कह्यो नारि तब रोय अकेली ॥
पीपा वृषभ द्विजहिं दै डारा ❀ कियो सकल घरको संहारा ॥

दोहा–तेली रोवत भूपपहँ, वरण्यो जाय हवाल ॥
तेलीको पीपा निकट, पठवायो महिपाल ॥ ३९ ॥

पीपा कह्यो वृषभ तुव सारे * जाय भवन महँ आंखि निहारे ॥
तेली पीपा वचन विचारी * गयो भवनमहँ अतिहि सुखारी ॥
बँधे बैल देख्यो तिन सारे * तासु भवन सुख भयो अपारे ॥
तेई वृषभते किये रोजगारा * दशगुन बढ्यो पल्यो परिवारा ॥
तेली न्यौतो सब परिवारा * दियो यथा सुख सबन अहारा ॥
पीपाके शरणागत भयऊ * सहित कुटुम्ब सन्त है गयऊ ॥
एक समय पुनि परयो अकाला * भये रंक तेहिके महिपाला ॥
हाहाकार परयो चहुँ घाहीं * सुतहिं मातु पितु छोडि पराहीं ॥
दे कपाट घर घुसे सुदानी * प्रजा क्षुधावश अति बिलखानी ॥
तब पीपा लखि प्रजन कलेशा * खन्यो एक थल करि अंदेशा ॥
मिली द्रव्य तहँ तीन करोरा * लीन्ह्यो अन्न वितरि चहुँ ओरा ॥
पीपा प्रजन बोलाय खवायो * दुराधर्ष दुर्भिक्ष मिटायो ॥

दोहा—यहि विधि पीपाके चरित, श्रोता जानहु भूरि ॥
मैं कहलों वर्णन करौं, रह्यो जगत यश पूरि ॥ ४० ॥
बहुत काल लगि जगतमें, पीपा तनुको राखि ॥
तारयो अधम अनेक जग, रामतत्व मुखभाखि ॥ ४१ ॥
जा दिन पीपा बैठि महि, सहजहिं तज्यो शरीर ॥
ता दिन प्रगट विमान नव, पठवायो रघुवीर ॥ ४२ ॥
अर्द्ध निशा दिनकर सरिस, प्रगट्यो विमल प्रकास ॥
रामधाम पीपा गयो, पायो परम हुलास ॥ ४३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकपंचाशोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

अथ सुखानंदकी कथा ।

दोहा—सुखानंदकी कथा अब, श्रोता सुनहु सुजान ॥
जासु कथा वर्णत वदन, उपजत प्रेम महान ॥ १ ॥

छप्पय—सुखानंद हरिभक्त शिरोमणि भये जगतमें ॥

जिनको परशत अधम होत हरिभक्त सुमतमें ॥
पद रचनामें अति प्रवीण गुरुमंत्र विश्वासू ॥
बहत नैन दिन रैन प्रेमजल सहित हुलासू ॥
हरिगुणगण श्रवण सचेत अति भक्त कमल दिनकर उयो ॥
तनु तजत जासु नभमें लख्यो हरि विमान आवत भयो ॥१॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे द्विपंचाशोऽध्यायः ॥ ५२ ॥

अथ केशवभट्टकी कथा।

सो०—अब वरणौं इतिहास, केशवभट्ट सुजानको ॥
जाको सुयश प्रकाश, भरतखंडमें भरि रह्यो ॥१॥

केशवभट्ट सुपंडित ज्ञानी * रही प्रगट सरस्वती भवानी ॥
बैठे वाद करत रसनामें * कीन्ह्यों विजय सकल वसुधामें ॥
संग चलैं गज वाजि पालकी * विप्र भीर विद्या विशालकी ॥
केशवभट्ट सोई इक काला * नदिया गमने बुद्धि विशाला ॥
शास्त्रारथ करिवेके हेतू * नगर बाहिरो कियो निकेतू ॥
सुनिके केशवभट्ट अवाई * नदिया पंडित उठे डेराई ॥
रहे कृष्ण चैतन्य तहांहीं * पांच वर्षकी वयस सोहांहीं ॥
जानि पंडितनकी अति भीती * लेहैं केशवभट्टन जीती ॥
केशव पंडित जहां नहांहीं * आप गये खेलते तहांहीं ॥
केशवभट्टहि कह्यो सुनाई * गंगाको वर्णहु वपु भाई ॥
केशवभट्ट कहन तब लागे * रचि गंगा अष्टक अनुरागे ॥
कह्यो कृष्णचैतन्य सुबैना * यह तो कछू शुद्ध दरशैना ॥

दोहा—केशवभट्ट प्रकोपि कह, मम कृत कहहु अशुद्ध ॥
होय जो तोहिं समर्थ कछु, तौ बालक करुशुद्ध १॥

कह्यो कृष्णचैतन्य बुझाई * यह अशुद्ध तुव कृत कविताई ॥
सत्य अशुद्ध जानि द्विजराजा * मौन रह्यो कछु कियो न काजा ॥
बहुरि कह्यो ऐयो तुम काली * अस कहि उठ्यो सुमिरि द्विजकाली ॥

किथो आपने अपन पयाना * राति सरस्वति किय अहवाना ॥
गिरा प्रगटि तेहिं गिरा बखानी * करहु न वाद बुद्धि भ्रम आनी ॥
अहैं कृष्णचैतन्य मुरारी * श्रीपति कुरुपति अहैं हमारी ॥
केशवभट्ट तबै शिर नायो * बहुरि मुदित सरिता तट आयो ॥
गये कृष्णचैतन्य जबै तहँ * केशवभट्ट तबै पद परि कहँ ॥
आयसु होय करौं प्रभु सोई * तुम भगवंत शंक नहिं होई ॥
कह्यो कृष्णचैतन्य सुहाये * कापैहौ कोउ द्विजै हराये ॥
भक्ति करहु तजिके यहि भीरा * यही पठेको फल मतिधीरा ॥
केशवभट्ट धारि शिर शासन * तज्यो भीर तहँजियजयआसन ॥

दो०–सुन्यो खबरि कछु दिवस महँ, मथुराम्लेच्छनआय
मुसल्मान विप्रन कियो, अपनो पंथ चलाय ॥ २ ॥

लै करि दश हजार भटभंगा * मथुरा गमने विजय उमंगा ॥
तहँ विश्रांतघाट महँ जाई * यह कौतुक देख्यो द्विजराई ॥
बँध्यो यंत्र पथ मध्य तहांहीं * तेहितर जात यमन ह्वै जाहीं ॥
कटै सुनत शिर रहै न वारा * मथुरा माच्यो हाहाकारा ॥
केशवभट्ट सुमिरि यदुराई * सबके शिर पट दियो बँधाई ॥
बँधे बसन निकसैं तहँ जेते * तबते म्लेछ होंय नहिं तेते ॥
जानि यमन रोपे बहु वादा * केशवभट्ट थप्यो मरयादा ॥
यमन जुरे मारन कहँ धाये * तब केशव हुंकार सुनाये ॥
यमनी भये यमन सब जेते * केशव चरण परे डरि तेते ॥
पठै भटन दिय यंत्र तुराई * तुरकनको डारयो पिटवाई ॥
पुनि विप्रन यमुना नहवाई * कियो विप्र व्रतबंध कराई ॥
मथुराते दिय यमन निवासी * जे न कढे दीन्ह्यो तिन्ह फांसी ॥

दोहा–ऐसो थापित धर्मकरि, केशव मथुरा माहिं ॥
करिकै भजन विहाय जग, गवने गोपुर काहिं ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे त्रिपचाशोऽध्यायः ॥ ५३ ॥

अथ श्रीव्यासकी कथा।

दोहा-करौं व्यास इतिहासको, सहित हुलास प्रकाश ॥
अनायास भवपाशको, सुनत होतहै नाश ॥ १ ॥

चटथावल नामक इक ग्रामा * तहां बाग इक अति अभिरामा ॥
संत समाज जोरिकै व्यासा * जाय कियो तेहिं बाग निवासा ॥
रहै देवि तहँ अति भयावनी * छागवंश विध्वंसकामिनी ॥
तहँ कोउ छाग कियो बलिदाना * व्यास दयावश अतिबिलखाना ॥
शिष्य सहित तेहिं दिवस न खायो * हाय कहत यदुपति कहँ ध्यायो ॥
व्यासहि देवि भागवत जानी * बोली कत बैठे व्रत ठानी ॥
व्यास कह्यो पीहैं नहिं पानी * यह देवी हत्याकी खानी ॥
देवी कह्यो जो हो हरिदासा * तो मोहिं शिष्य करो हरि त्रासा ॥
तब देवीको निकट बोलाई * दीन्ह्यो कृष्ण मंत्र सुखदाई ॥
देवी हिंसा दई विहाई * ताही निशा नगरमहँ जाई ॥
नगर भूपको गहि पर्य्यंका * पटकि दियो भूमहँ बिन शंका ॥
बोली व्यास शिष्य है जाहू * नातो यहि क्षण यमपुर जाहू ॥

दोहा-तब भूपति पुरजन सहित, आय व्यासके पास ॥
भये शिष्य हरिमंत्र लै, छूटि गई भवत्रास ॥ २ ॥
एक दिवस इक श्वपचहूं, श्रद्धा सहित सिधारि ॥
श्रीहरिव्यास निदेश लहि, भयो भक्त सुखकारि ॥ ३ ॥
ऐसे हैं श्रीव्यासके, चरित, अनेकन भांति ॥
तासु कटै यमयातना, जो वरणै दिन राति ॥ ४ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे चतुःपंचाशोऽध्यायः॥ ५४ ॥

अथ माधवदासकी कथा।

दोहा-अब मैं माधवदासको, वरणों शुभ इतिहास ॥
संत सेवको जासु यश, जगमें कियो प्रकास ॥ १ ॥

माधवदास विप्र इक रहेऊ * संत सेव सो धर्महिं गहेऊ ॥
भयो गृहस्थी चित्त उदासा * भो तेहिं समय नारिको नासा ॥
भवन काज धरि सुतके शीशे * आप गये दर्शन जगदीशे ॥
बसे समुद्र तीरमहँ जाई * भोजन पानहु दियो विहाई ॥
विन भोजन बीते दिन तीना * तब जगदीश खबरि तेहिं लीना ॥
लक्ष्मी हाथ थार पठवायो * माधव निकट रमा पहुँचायो ॥
माधवदास प्रसादी जान्यो * भोजन कियो धन्य निज मान्यो ॥
लियो थार निज कुटी धराई * भजन करन लागे सुख छाई ॥
पंडा खोले जबै किंवारा * मंदिरमें देखे नहिं थारा ॥
खोजन खोजत अति दुख छाये * माधवदास आश्रमहि आये ॥
देखि थारते कहि कहि चोरा * माधवको पकरे बरजोरा ॥
हने पचिस बेत तेहि कांधे * बांधे अंध कोठरी धांधे ॥

दोहा-मंदिर महँ पूजन हितै, पंडा गे भरि चाव ॥
तब जगदीश शरीरमें, लखे बेंतके घाव ॥ २ ॥

त्राहि त्राहि तब सकल पुकारे * धरण किये मंदिरके द्वारे ॥
स्वप्न माहँ कह रमानिवासा * मोर दास जो माधवदासा ॥
ताको जौन बेंत तुम मारा * मैं अपने तनु लियो प्रहारा ॥
थार रमा कर मैं पठवायों * तिसरे लंघन ताहि खवायों ॥
सकल जाय ताके पद परहू * निज अपराध क्षमापन करहू ॥
पंडा दौरि सकल तब आये * माधवदास चरण शिर नाये ॥
करन लगे तिनकी सेवकाई * जगत मध्य भइ तासु बडाई ॥
माघ मास यक दिन सुख बाढे * माधवदास द्वार पर ठाढे ॥
निशा बितायो वदन उघारे * स्वप्ने प्रभू पूजकन हँकारे ॥
यहि क्षण माधवदासहि जाई * देहु वोढाय हमारि रजाई ॥
पंडा तुरतहिं दियो रजाई * शीत भीत तब गई पराई ॥
यहि विधि बसे सुखित सुरमाहीं * रेचक रोग भयो तेहिं काहीं ॥

दोहा-बारबार रेचक भये, विकल सिंधुके तीर ॥
करन लगे सेवा तहां, साधु वेष यदुबीर ॥ ३ ॥

माधवदासहिं गहि लैजाईं * धोवहिं प्रभु तिनके पटकाहीं ॥
माधवदास कछू दिन बीते * भे चैतन्य रोग कछु रीते ॥
जानि लियो प्रभु साधुस्वरूपा * बोल्यो सुनु विकुंठकर भूपा ॥
काहे हानि करहु प्रभुताई * क्यों नाहिं दीजे रोग मिटाई ॥
प्रभु कह भाग भोग है बाकी * ह्वैहौ सुखी भोगि गति ताकी ॥
नहिं प्रारब्ध भोग मिटिजाईं * जानहु मम संकल्प सदाई ॥
माधवदास भये पुनि नीके * बात परी यह श्रुति सबहीके ॥
माधवदास जोरि कर करमें * मांगन लगे भीख घर घरमें ॥
कृपिणि रहै इक पुरमहँ बाई * मांग्यो भीख द्वार तेहिं जाई ॥
सो पोतना लै ताकहँ मारयो * माधव पोतना निज शिर धारयो ॥
पोतना सिंधु सलिल महँ धोई * रचि बाती ताकरि बहुतोई ॥
दियो दीप मंदिरमहँ जाई * तासु प्रभाव शुद्ध भइ बाई ॥

दोहा–माधवदास प्रभात चलि, मांग्यो बाई पास ॥
दौरि गह्यो बाई चरण, मानि मानसी त्रास ॥ ४ ॥

माधवदास दियो उपदेशा * संतन सेवन लगी हमेशा ॥
एक समय पंडित इक आयो * विद्याको घमंड अति छायो ॥
विद्याबल जीत्यो सो काशी * गयो पुरीको विजय हुलासी ॥
तहां सकल पंडितन बोलायो * शास्त्रार्थ रोप्यो चित चायो ॥
तब सब पंडित गिरा उचारी * माधवदास जाय जोहारी ॥
तब सब सहजहि महँ हम हारे * पंडित माधवदास हँकारे ॥
माधवदास न कियो विवादा * लिख्यो हारि अपनी अविषादा ॥
तीन पत्र पंडितन देखायो * माधव विजय तहां कढि आयो ॥
पंडित कहे कहहु कस बानी * हार आपनी नहिं पहचानी ॥
सो पण्डित जब पत्र निहारयो * लिख्यो विप्र माधवसो हारयो ॥
तब पण्डित गो माधव नेरे * कहत भयो अक्षर कर फेरे ॥
लिखो विजय नतु करो विवादा * माधव हारिलिख्यो अविषादा ॥

दोहा–पुनि पण्डितसों आयकै, दरशायो सो पत्र ॥
लिखीरही माधव विजय, हारि लिखी रह यत्र ॥ ५ ॥

सकल पुरीके पण्डित गाये * लाज न लागति हारि लिखाये ॥
सुनि प्रकोपि पण्डित तहँ धायो * माधवदासहि वचन सुनायो ॥
चेटक करै चेटकी पूरो * तुव चेटक देहौं करि धूरो ॥
करहु आजु मम संग विवादा * ताकी होय यही मरयादा ॥
जो हारै तेहिं खरे चढाई * जूती बांधि देहु निकराई ॥
माधव कह्यो रहहु यहि ठाऊं * बाद होय मज्जन करि आऊं ॥
अस कहि भागे माधवदासा * तहँ तेहि वपु धरि रमानिवासा ॥
कियो वाद पण्डितसों आई * क्षणमहँ दीन्ह्यो ताहि हराई ॥
खर चढाय बांधे श्रुति जूती * कढी सकल विद्या करतूती ॥
दियो पुरीते ताहि निकासी * भे अदृश्य नीलाद्रि निवासी ॥
माधव आय सुन्यो यहि हाला * बिग्रहि दुख गुणि भये बिहाला ॥
बसत पुरी बीत्यो कछु काला * उरमह भय अभिलाष विशाला ॥

दोहा-वृन्दावन महँ आयकै, देखे यदुपति रास ॥
मांगि विदा जगदीशते, गमने माधवदास ॥ ६ ॥

रहै ग्राम इक मारगमाहीं * कृष्णभक्त तिय बसै तहांहीं ॥
सो माधवको अति सत्कारा * विविध भांतिको दियो अहारा ॥
भोग लगायो माधवदासा * राम लषण वपु तहां प्रकासा ॥
तब बाई बोली अनखाई * लाये काके पुत्र भोराई ॥
अस सुकुमार चरण जलजाता * इन बिन किमि जीहै इन माता ॥
माधव दृग तब बह्यो प्रवाहू * धनि तू लखे अवध नरनाहू ॥
प्रभु तहँते पुनि चले सुखारी * रहै वणिक इक गाउँ मँझारी ॥
सो प्रथमहि मांगि अस राखा * आवहु मम घर यह अभिलाखा ॥
तासु भवन गे माधवदासा * सो दिय अपने भवन निवासा ॥
वणिक कियो अतिशय सत्कारा * प्रेम पुलक प्रगटी जलधारा ॥
प्रथमहि कोउ महन्त तहँ आये * तिन्हें अटारी मध्य टिकाये ॥
सो महंत अति गर्वहि छायो * दर्शन हित तहँ उतरि न आयो ॥

दो०-यदपि महंतहि वणिक तिय, कह्यो देहु इत वास ॥
तदपि महंत घमंडवश, दियो न थल निज पास ॥ ७ ॥

माधव जब हरिभोग लगाई ❀ वृंदावनहिं चले हर्षाइ ॥
तब महंत आंधर है गयऊ ❀ माधवदास शिष्य सो भयऊ ॥
वणिजहुँको दीन्ह्यो पुनि ज्ञाना ❀ कियो दोउ वैकुंठ पयाना ॥
जब वृन्दावन माधव आये ❀ करि यात्रा सब तीर्थ नहाये ॥
वृन्दावन इक रहे गोसांई ❀ क्षेम नाम करते कृपिणाई ॥
आपहिं सब भोजन करिलेहीं ❀ भिक्षुक नाम केंवारहि देहीं ॥
तासु द्वार गे माधवदासा ❀ पौढि रहे सहि भूंख पियासा ॥
जब घर क्षेम गोसांई आये ❀ तुरत ओसारीते निकराये ॥
माधव कह्यो राति भर रैहौं ❀ भोर अनत उठिकै चलि जैहौं ॥
कह्यो गोसांई तबै रिसाई ❀ पीछे महामकर फैलाई ॥
ताते अबहीं देहु निकारी ❀ यह मांगिहै अन्न अरु वारी ॥
माधव कह्यो मांगिहौं नाहीं ❀ सूधे करिहौं शयन यहांहीं ॥
दोहा-जाय गोसांई भवनमें, दूध पुवाको खाय ॥
माधवदासहि देतभो, बासी भात पठाय ॥ ८ ॥
माधव कह्यो मँगाव उज्यारी ❀ लखिकै कृमि तब होंहुं अहारी ॥
लायो तुरतहि दीप गोसाई ❀ भात लख्यो कीराकी नांई ॥
तब जाके पूंछेहु नामहुं धामा ❀ माधवदास कह्यो निज नामा ॥
त्राहि त्राहिकै चरण परयो तब ❀ निज अपराध क्षमा कराय सब ॥
लै चरणोदक किय सत्कारा ❀ भयो शिष्य भो ज्ञान अपारा ॥
माधवदास अनंदहि पाये ❀ श्रीजगदीश पुरी कहँ आये ॥
रहे मातु सुत गांव मँझारी ❀ मातु दरश लालस भइ भारी ॥
लुके पछीत भवनमहँ जाई ❀ कोउ जन कह्यो मातुपहँ आई ॥
तेरो नंदन माधवदासा ❀ आवत अब आपने अवासा ॥
मातु कह्यो तापर अनखाई ❀ है न कपूत पूत मम आई ॥
त्यागि भवन किमि भवन सिधैहै ❀ बवन कियो जो सो किमि खैहै ॥
माधव सुनत मातुकी बाता ❀ तुरत चले गुणि लाज अघाता ॥
दोहा-फेरि पुरीमहँ आयकै, तजि जिय मारग शीश ॥
भये रूप जगदीशके, बसे संग जगदीश ॥ ९ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे पंचपंचाशोऽध्यायः ॥ ५५ ॥

अथ व्यासदासकी।

दोहा–प्रथम कह्यो हरि व्यासको, अति सुंदर इतिहास ॥
व्यासदासको अब कहौं, चरित विचित्र विलास १॥

व्यास अवास कुटुम्ब विहाई ❀ वृंदावन आये हरषाई ॥
जो कोउ कहे जान क्त छोडी ❀ ताहि कहे मति तोरि निगोडी ॥
भये रासमंडल अधिकारी ❀ व्हैगे युगलकिशोर पुजारी ॥
पधराये जे युगल किशोरा ❀ पूजे तिन्हैं व्यास उठि भोरा ॥
लगे पाग बांधन इक बारा ❀ बने न पाग खधे बहुबारा ॥
कह्यो खीझि तर बांधो तुमहीं ❀ अस कहि गवने आप अनतहीं ॥
बहुरि लखे बांधे प्रभु पागा ❀ परे चरणमहँ भरि अनुरागा ॥
यक दिन कियो निमंत्रण संतन ❀ आयहु बैठे पंगति सुख मन ॥
परस्यो गोरस तिनकी नारी ❀ छाढो परस्यो पतिहिं निकारी ॥
संतन भेद करत गुणि व्यासा ❀ तिय त्याग्यो तजि शोक हुलासा॥
तिय हित विनय संत सब कीन्हें ❀ ऐसो तब करार करि दीन्हें ॥
भूषण बेचि जो संत खवावै ❀ तौ मेरे घर आवन पावै ॥

दोहा–तब निज भूषण बेंचिकै, नारि अति हरषाय ॥
संत समाज बोलायकै, सादर दियो खवाय ॥ २ ॥

एक समय निज सुता विवाहू ❀ पुत्र कियो घर महा उछाहू ॥
धरि विवाहकी साजु अपारा ❀ दियो बंदकरि भवन केंवारा ॥
गये पुत्र कहुँ कारज हेतू ❀ दियो खोलि तब बंद निकेतू ॥
साजु ऐंचि सब साधु खवायो ❀ फेरि कोठरी बंद करायो ॥
समय विवाह जानि सुत आये ❀ बंद कोठरी जाय खुलाये ॥
मिली साजु जैसीकी तैसी ❀ पुत्रन कह्यो बात भइ कैसी ॥
एक समय रचि सुवरण वंशी ❀ युगलकिशोरहिं दिय दुख ध्वंशी ॥
रहै न करमें छटि छटि परई ❀ व्यास कह्यो कत कर नहिं धरई ॥
वंशी पटकि चरण महँ व्यासा ❀ कढि आये करि कोप प्रकासा ॥
बहुरि लखे मुरली करमाहीं ❀ परे चरण तल सजल तहांहीं ॥

एक दिन एक जातिको आयो * तेहिं भोजन हित घर बैठायो ॥
चर्मपात्र सो तुरत निकासा * मांग्यो जल अतिशय भरि प्यासा ॥

दोहा-जल दै पुनि तेहिं पातरी, दिय पावँरी फेंकाय ॥
सो खीझ्यो जब तब कह्यो, चामनका यह आय ३॥

व्यास संगते प्रगट्यो ज्ञाना * सो द्विज भो भागवत प्रधाना ॥
एक दिन साधु बहुत घर आये * सादर तिनको व्यास टिकाये ॥
जानलगे तब बोले व्यासा * व्रज तजि करहु अनत कत वासा ॥
साधु कहे रहिहैं हम नाहीं * हमरे राम अनत अब जाहीं ॥
रमे राम व्रजमहँ कह व्यासा * तदपि साधु नहिं टिके अवासा ॥
तब तिनके ठाकुर लेलीन्ह्यो * सम्पुट महँ विहंग धरि दीन्ह्यो ॥
बहुरि व्यास कह साधुन काहीं * उडि ऐहैं ठाकुर व्रजमाहीं ॥
साधु जाय कछु दूरि नहायो * खोलत सम्पुट खग उडि आयो ॥
फिरे साधु मानि विश्वासा * अचल कियो तुलसीवन वासा ॥
इक दिन व्यास करत रह ध्याना * रच्यो भावना रास महाना ॥
नृत्य करत वृषभानुकुमारी * लिय गति क्षण क्षण प्रभा पसारी ॥
नूपुर घुँघुरू टूटिगयो जब * व्यास जनेउ तूरि बांध्यो तब ॥

दोहा-सोइ प्रत्यक्ष राधाचरण, बँध्यो जनेऊ ताग ॥
देखत भे व्रजलोग सब, गुणे व्यास बडभाग ॥४॥

साधू लेन परीक्षा आयो * भोजन हेतु द्वार गोहरायो ॥
व्यास कह्यो विन भोग लगाई * कौन भांति तोहिं देहिं खवाई ॥
साधू देन लग्यो तब गारी * तबहीं व्यास दिय भोजन थारी ॥
साधु खाय कछु व्यासहि शीशा * फेंक्यो जूंठ कह्यो तुव हीसा ॥
सो जूंठन ले व्यासहु पायो * बार बार संतन शिर नायो ॥
साधु कह्यो तब भरे हुलासा * सत्य व्यास तैं संतन दासा ॥
गयो साधु सुमिरत जगदीशा * व्यास करन लागे सुत हीसा ॥
एक ओर धरि हरि सेवकाई * एक ओर छापा पधराई ॥
एक ओर धरि धन अरु बासा * कह्यो लेइ जो जाकरि आसा ॥

एक धन लियो द्वितिय हरि सेवा ❋ तीजो लिय छापा गुणि देवा ॥
युगलकिशोर लियो सेवकाई ❋ सो हरिदास शिष्य है आई ॥
विचऱ्यो ब्रजमंडल बडभागी ❋ नाम किशोर नाम अनुरागी ॥

दोहा—द्वै सुता निर्धन देखिकै, मातु कह्यो अनखाय ॥
भये पुत्र द्वै रंक मम, कीन्ह्यो कंत अजाय ॥ ५ ॥
नारीकी लखि विषम गति, व्यास कोप अति छाय ॥
गाया संत समाजमें, ये पद तानि बनाय ॥ ६ ॥

भजन—तिरिया जो न होय हरिदासी ॥
तौ दासी गणिका सम जानो दुष्ट रांड मसवासी ॥
निशिदिन अँखनो अंजन मंजन करत विषयकी रासी ॥
परमारथ कबहूं नाहिं जानत आन बँधो जन फांसी ॥
साकत नारि जो घरमें राखत निश्चय नरक निवासी ॥
रामभक्त कबहूं नहिं आवत गुरु गोविंद न मिलासी ॥
कहाभयो जो रूपवती पै नाहिन श्याम उपासी ॥
व्यासदास यह संगति तजियो मिटै जगतकी हांसी ॥ १ ॥
ऐसो हरि कब करिहो मन मेरो ॥
करकावा इरवा गुंजनके, कुंजन मांझ बसेरो ॥
भूख लगै तब मांगि खाउँगो, गनौं न सांझ सबेरो ॥
व्यास विवेकी श्रीवृंदावन, हरिभक्तनको चेरो ॥ २ ॥
हम कब होहिंगे ब्रजवासी ॥
ठाकुर नंदकिशोर हमारे, ठकुरायनि राधासी ॥
सखी सहेली नीकी मिलिहैं हरिवंशी हरिदासी ॥
इतनी आश व्यासकी पुजवो, वृंदाविपिन विलासी ॥ ३ ॥

दोहा—यहि विधि विचरत प्रेमभरि, व्यास लखत हरिदास ॥
प्राकृत तनु तजि लहतगो, वृंदाविपिन विलास ॥ ७ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे षट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५६ ॥

अथ मुरारिदासकी कथा।

दोहा-बरणौं दास मुरारिको, अति विचित्र इतिहास॥
कियो साधु सेवन सकुल, तन मन धन अनयास॥१॥

हरिते अधिक संत कहँ मान्यो ❋ कृष्ण प्रेमरस मति गति सान्यो॥
कीन्ह्यो यक गजको उपदेशा ❋ सो तारिगयो न रह्यो कलेशा॥
मटका भरे संत पदवारी ❋ पूजन होय ताहिको भारी॥
जुरै जौन दिन संत समाजा ❋ सो देंहं करते कृतकाजा॥
एक समय गुरु उत्सव रहेऊ ❋ दासमुरारि शिष्यसों कहेऊ॥
सब संतन चरणोदक लावहु ❋ संत मंडलीमें परुसावहु॥
तौन शिष्य चरणोदक लायो ❋ सब साधुनको बांटि पियायो॥
साधु कह्यो जस पूरुब स्वादू ❋ आजु न तस यह हरे विषादू॥
सोइ साधुको कह्यो बोलाई ❋ कैसो चरणोदक दिय लाई॥
कह्यो साधु सबको मैं लायों ❋ खना चरण लखि एक बचायों॥
कह्यो मुरारिदास सोउ लावहु ❋ सो लै आय कह्यो यह पावहु॥
सो जल पाय स्वाद सब भाखे ❋ ऐसो भाव संतमहँ राखे॥

दोहा-साधु खवावत साधु यक, कह सुनु दास मुरारि॥
मम सोंटाको पातरी, दे बड साधु विचारि॥२॥

कह्यो मुरारिदास यह कैसो ❋ सोंटा भाजनकारी ऐसो॥
यह सुनि साधु दियो बहुगारी ❋ निज पतरी मुरारि शिर डारी॥
कह्यो मुरारि प्रसादी पायो ❋ मोपै तुम अति कृपा जनायो॥
साधु पर्यो मुरारि पद आई ❋ निज अपराधहि लियो क्षमाई॥
आई यक दिन साधु समाजा ❋ बसे बागमहँ भोजन काजा॥
पठयो खबरिहेतु यक संता ❋ दौरे दासमुरारि तुरंता॥
हुक्का लेत रहैं सब साधू ❋ धर्यो चोराय बिभीत अगाधू॥
दासमुरारि खबरि यह पाई ❋ मम डर हुक्का धर्यो चोराई॥
तब जन साधु समीप पठायो ❋ हुक्का दासमुरारि मँगायो॥
हुक्का लेब मुरारिहि सुनिकै ❋ लागे लेन साधु भय धुनिकै॥

संतनके विश्व(?)सक हेतू ❀ कछुक लियो आपहुँ मति सेतू ॥
दास मुरारि शिष्य यक राजा ❀ गावँ चढायो संतन काजा ॥
दोहा–छूटयो जब नरनाह तनु, तासु पुत्र मतिहीन ॥
लीन्ह्यो गावँ छोडाइ सो, संत हेतु जो दीन ॥ ३ ॥
श्यामानंद शिष्य अस नाऊं ❀ लिये बोलाय रहे जो गाऊं ॥
आयसु सुनत मुरारिदासको ❀ गयो शिष्य द्रुत गुरू पासको ॥
चले भूप ढिग दासमुरारी ❀ मिल्यो सचिवपथ गिरा उचारी ॥
प्रभु मति जाहु भूप मति हीना ❀ करिहै अनरथ विषय अधीना ॥
दासमुरारि कही तब वानी ❀ सचिव तजहु उर भीति महानी ॥
आजु महीप समीप सिधैहैं ❀ कुमति खंडि ताको सुधरैहैं ॥
अस कहि भूप समीप सिधारे ❀ नृपति सुन्यो गुरु आवत द्वारे ॥
तब यक मत्त मतंग छोडायो ❀ दास मुरारि ओर सो धायो ॥
तजि पालकी परान कहारे ❀ भगे शिष्य सब गज भय भारे ॥
तजि सिबिका तब दास मुरारी ❀ गज सन्मुख चलि गिरा उचारी ॥
तजि दुर्बुद्धि शुद्ध तनु कीजै ❀ अब अपनो सुधारि सब लीजै ॥
सुनत गयंद बैठि सो गयऊ ❀ दास गोपाल नाम तेहिं दयऊ ॥
दोहा–दियो मालपहिराय गल, दियो तिलक पुनि भाल ॥
गजको संग लेवायकै, आये भवन भुवाल ॥ ४ ॥
भूप चरण परि गाउँ सो, अरु द्वै तीनि मिलाय ॥
दीन्ह्यो दास मुरारिको, निज अपराध क्षमाय ॥ ५ ॥
शिष्य कुटुंब समेत ह्वै, कियो संत सेवकाय ॥
प्रियादासको कवित यह, तामें सुनहु सोहाय ॥ ६ ॥

प्रियादासको कवित्त–कानमें सुनायो नाम नाम दै गोपाल दास, माल पहिराय गल्यो प्रगट्यो प्रभाव है ॥ दुष्ट शिरमौर भूप लखि उठि ठौर आयो, पावँ लपटायो भयो हिये अति चाव है ॥ निपट अधीन गावँ केतक नवीन दये, लिये कर जोर मेरो फरयो भागदाव है ॥ भयो

गजराज भक्तराव साधु सेवा साजि, संतन समाज देखि करत प्रणाम है ॥ १ ॥

दोहा–तबते नाग सदा रहै, संगहि दास मुरार ॥
भोजन हित सब साधुके, लावै अन्न बजार ॥ ७ ॥
जौन गावँ डेरो करै, चलिकै दास मुरारि ॥
लावै साजु न देय जो, देतो गावँ उजारि ॥ ८ ॥
बादशाह सुनि खबरि यह, करत उजारि गयंद ॥
पकरन हित पठयो जनन, परचो गजनसों फंद ॥ ९ ॥
कोउ कह मालातिलक लखि, नाहिं भागत गजराज ॥
तिलक भाल उरमाल धरि, गे जन पकरन काज ॥ १० ॥
खडो रह्यो गज नहिं भग्यो, पकरचो बेडी डारि ॥
खायो नाहिं हरिभोग बिन, परिगे लंघन चारि ॥ ११ ॥
जल प्यावन हित सुरसरी, लैगे जब गजपाल ॥
तब गंगा हिलि तनु तज्यो, गयो जहां नँदलाल ॥ १२ ॥
ऐसे दास मुरारिके, जानहु चरित अनेक ॥
मैं वरणों केहि भांति ते, मुखमें रसना एक ॥ १३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे सप्तपंचाशोऽध्यायः ॥ ५७ ॥

अथ हरिवंशकी कथा।

दोहा–सकल संत अवतंश जो, हित हरिवंश सुहंस ॥
अब विध्वंश चरित्र तेहिं, मैं अब करौं प्रशंस ॥ १ ॥

प्रमाण।

वंदे श्रीहरिवंशाख्यं हितपूर्वं सतां हितम् ॥
कान्त्ये सुरूपिणं साक्षात्परमानन्दरूपिणम् ॥
संप्रदायमहादिव्ये राधावल्लभसंज्ञिके ॥

प्रकाशयति यो लोकान्सूर्यवत्तमहं भजे ॥
एतानि पुराणप्रमाणानि ज्ञेयानि इति ॥ १ ॥

तुलसी वनके मध्ये निवासी ❋ सेवा कुंजहि करी खवासी ॥
उर्देस मान्यो महाप्रसादा ❋ गही भक्तभावक मरयादा ॥
हित हरिवंश रहनिकी रीती ❋ सो जाने जेहि प्रेम प्रतीती ॥
वृंदावनमें बढयो प्रभाऊ ❋ प्रेम करत नहिं भयो अघाऊ ॥
रह्यो एक द्विज कोनेहुँ देशा ❋ स्वप्न माहिं तेहिं कह्यो रमेशा ॥
दे दुहिता तेरी छविवारी ❋ व्याहहु हित हरिवंश सुखारी ॥
सुनि सो द्विज कन्या लै आयो ❋ हित हरिवंशहि वचन सुनायो ॥
स्वप्ने हरि शासन मोहिं कीन्हो ❋ कन्या तुमहिं चहौं अब दीन्हो ॥
हित हरिवंश मानि हरिदासा ❋ कन्या ग्रहण कियो न हुलासा ॥
मत अपनो हरिवंश चलायो ❋ वृंदावनके तीर्थ बतायो ॥
ह्वैगे आप रास अधिकारी ❋ विलसे सेवा कुंज मँझारी ॥
सखी रूप दरशन नित पावैं ❋ अबलों तासु सुयश कवि गावैं ॥

दोहा–हित हरिवंश चरित्र बहु, लिखे अनेकन ग्रंथ ॥
तातें मैं इत लघु लिख्यो, चलत आजलौं पंथ ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे अष्टपंचाशोऽध्यायः ॥ ५८ ॥

अथ हरिदासकी कथा।

दोहा–अब भाषों हरिदासको, यह पावन इतिहास ॥
हिय हुलास बाढत सुनत, प्रगटत पाप प्रनाश ॥ १ ॥

श्रीहरिनाम दास हरिदासा ❋ बालहिंते त्याग्यो जग आसा ॥
गान तान तिमि वाद विधाना ❋ करि कीन्ह्यो निज वश भगवाना ॥
राधाकृष्ण नामको नेमा ❋ वृन्दावन विलसे भरि प्रेमा ॥
मर्कट मृग मयूर मराला ❋ दे भोजन तोष्यो सब काला ॥
राजा लोग दरशको आवैं ❋ खडे द्वार नहिं तिनहिं बोलावैं ॥
करे न सरि गन्धर्व गानमें ❋ सुर सप्तक त्रय लेत तानमें ॥

रसिकशिरोमणि जगतविख्याती * भावक निरत रास दिन राती ॥
तजो विषय जग मीठी खट्टी * वृन्दावन सुस्थान सुटट्टी ॥
अतर अमल बहु मोल बनायो * कोउ हरिदास निकट लै आयो ॥
करत रहैं मन्दिरमहँ पूजन * अतर लेहु कह आय कोऊ जन ॥
हरिपूजन तजि कढे न स्वामी * गोहरायो बहु बेचन कामी ॥
तब दाहिनो कर दियो निकारी * लै सीसी घूरे महँ डारी ॥

दोहा-गन्धीगिर रोवन लग्यो, मैं लायो हरिहेत ॥
आप फेंकि दीन्ह्यो अनत, दाम कौन अब देत ॥ २ ॥

तब हरिदास कहे पुनि बानी * अतर जो तुम हरिहितदियआनी ॥
सो हम हरिको दियो चढाई * अस कहि दीन्ह्यो दाम देवाई ॥
गन्धीगिर हिय भ्रम नहिं गयऊ * पुनि मन्दिर महँ आवत भयऊ ॥
सोई अतर सुगन्ध झकोरा * निकसै मन्दिरते चहुँ ओरा ॥
गन्धीगिर तब जानि प्रभाऊ * गहत भयो हरिदासहि पाऊ ॥
कछु दिनमें साधू गिरनाली * लै आयो पारस दुखशाली ॥
लियो मन्त्र पारसहिं चढायो * तब हरिदास ताहि अस गायो ॥
प्रियायोग पारसहि विचारी * दे यमुनादहार मधि डारी ॥
सो फेंक्यो पारस यमुनामें * विस्मय हर्ष कियो यमुनामें ॥
यक दिन करत तहां हरिदासा * करी भावना भरे हुलासा ॥
रास करत पीतम अरु प्यारी * करहिं आपहु गान सुखारी ॥
प्यारी नृत्य करत सुख लूट्यो * चरण कमलको नूपुर टूट्यो ॥

दोहा-तब हरिदास हुलास भरि, तुरत जनेऊ तोरि ॥
निज कर बांध्यो नूपुरनि, दिय पहिराय बहोरि ॥ ३ ॥

इत तनुमें टुटिगयो जनेऊ * जके लोग लखि गुने न भेऊ ॥
उत मंदिर राधिका पगनमें * नूपुर बँध्यो जनेउ तगनमें ॥
अस हरिदास चरित्र प्रभाऊ * प्रगट्यो जग थउ बच्यो न काऊ ॥
दिल्लीपति जो अकबर शाहा * तानसेन गायक नरनाहा ॥
शाह सभा महँ भयो विवादा * गायक कहे गान मरयादा ॥

बडे बडे गायक सब गाये * तानसेनसों विजय न पाये ॥
यक बैजूबावरा सु गायक * गान शास्त्र गन्धर्वहि नायक ॥
गानग्रंथ शत शकट भराई * विजयहेतु दिल्लीकहँ आई ॥
सब गायक निज निकट हँकाऱ्यो * तानसेनसों द्रोह पसाऱ्यो ॥
तानसेनसों जे सब हारे * ते गायक अस वचन उचारे ॥
जो बैजू बावरे हरावे * तानसेन तौ जग यश पावे ॥
शाह सभा गायकन बोलायो * तहँ बैजूबावरा सिधायो ॥

दोहा—सुनिये बैजूबावरा, शाह कह्यो अस बैन ॥
तानसेनको जीतिये, करिके गान सचैन ॥ ४ ॥

तब बैजूबावरा हुलासा * करिके अँगन्यास करि न्यासा ॥
करि आवाहन रागन केरो * मूर्तिमान करि राग निवेरो ॥
कियो आरंभ राग शारंगा * आये मोहि विपिन शारंगा ॥
तानसेन तब वचन बखाना * हमरो इनको यही प्रमाना ॥
देहिं मजीरा मोर उबारी * सदा पराजय होय हमारी ॥
अस कहि तानसेन किय गाना * भयो द्रवित जेहिं बैठ पषाना ॥
छोंडिदियो अपनो मंजीरा * बूडिगये मनु जल गम्भीरा ॥
तानसेन पुनि लियो न ताना * तब जबको तस भयो पषाना ॥
पुनि बैजूबावर बहु गायो * पै न पषाण द्रवित ह्वै आयो ॥
तानसेनकी विजय भई जब * अकबरशाह सराहि कह्यो तब ॥
तानसेन तुव सम को होई * परै मोहिं गायक नहिं जोई ॥
तानसेन बोल्यो कर जोरी * शाह सुनो विनती सति मोरी ॥

दोहा—गानशास्त्र मर्याद विद, मम स्वामी हरिदास ॥
तिनसों मैं कणिका लही, सो इत करों प्रकाश ॥ ५ ॥

शाह कह्यो किमि दरशन पैहैं * तानसेन कह इत नहिं ऐहैं ॥
मेरे संग चलो जो शाहा * तो पूजै तुव दरश उछाहा ॥
तानसेन सँग अकबर शाहा * चल्यो दरश हरिदास उमाहा ॥
गे हरिदास पास जब दोई * शाह तमूरा लिय शिर ढोई ॥

बैठ्यो तानसेन करि वंदन * भाष्यो तव हरिदास अनंदन ॥
गावहु तानसेन शुभ गाना * गायो तानसेन ले ताना ॥
दियो जानिके कछू बिगारी * खूटि हियो हरिदास विचारी ॥
तानसेन कह मोहि न आवै * नाथ कृपाकरि सकल बतावै ॥
तब लेकर हरिदास तमूरा * गान करन लागे सुर पूरा ॥
श्रीहरिदास गान सुनि शाहू * लोटि गयो मढि महा उछाहू ॥
ये को हैं पूछ्यो हरिदासा * तानसेन तब सकल प्रकाशा ॥
शाह कह्यो प्रभुसों कर जोरी * सेवाकी अभिलाषा मोरी ॥

दोहा—विहँसि कह्यो हरिदास तब, चीरघाट कछु फूट।
तांको तू बनवाय दे, जो संपति कछु जूट ॥ ६ ॥

सहजहिं मानि शाह मुसुकाई * कह्यो नाथ मोहिं देहु बताई ॥
तब हरिदास चले ले संगा * चीरघाट आये रति रंगा ॥
नेसुक खोदि धरणि बतरायो * मणिको सिगरो घाट देखायो ॥
ताको एक कोन कछु फूटो * शक धनद धन अजहुँ न जूटो ॥
शाह चकित लखि परयो चरणमें * कह्यो शक्ति नहिं घट करनमें ॥
मम सम्पति है कतिक बाता * त्रिभुवन धन नहिं रचन देखाता ॥
मम लायक कछु शासन दीजै * दिल्ली गवनहुँ कृपा करीजै ॥
तब हरिदास कह्यो मुसकाई * दे मर्कटन चना लगवाई ॥
चालिस मन दिय चना लगाई * पुनि हरिदास कह्यो हरषाई ॥
चलि हैं दिल्ली यक दिन काहीं * शुद्ध बुद्ध तैं शाह सदाहीं ॥
अबलों चना लगे ब्रज माहीं * होत शाह ते देते जाहीं ॥
काढ्यो यक साहेब यहि काला * तापर किय कपि कोप कराला ॥

दोहा—मारगमें गजमें चढो, जात चलो अँगरेज ॥
कालीदह बोरयो सगज, लिय कपि चना अवेज ॥ ७ ॥

दिल्लीको गवने हरिदासा * कियो शाह सत्कारकहँ खासा ॥
सभा मध्य बैठे जब जाई * यक पातुरी मानि हित आई ॥
अति सुंदरि कोमल सब अंगा * मनहु रही रतिके नित संगा ॥

तासु गान अरु रूप निहारी * स्वामि शाहसों गिरा उचारी ॥
शाह प्रसन्न जो हम पर होहू * यह पातुरी देहु करि छोहू ॥
शाह पातुरी सँग करि दीन्ह्यो * पदरज धारि बिदा पुनि कीन्ह्यो ॥
लै पातुरी चले हरिदासा * जब आये आपने अवासा ॥
मंदिरमें चलि कह्यो हवाला * लाये कछु तेरे हित लाला ॥
सांझ समय पातुरी बोलायो * हरि सन्मुख तेहिं नाच करायो ॥
लखे गणिका नँदनंदन रूपा * उपज्यो हिय अनुराग अनूपा ॥
चलि तनु चितवतिसों चहुँ ओरा * यह व्रज छैल छली चित चोरा ॥
हरि सन्मुख सो भाव बतावै * प्रभु मूरति तजि कछु न देखावै ॥

दोहा—भाव बतावत बारतिय, गवनी मंदिर द्वार ॥
चौकठमें सो पाणि धरि, खरी अचल बहुबार ॥ ८ ॥
बीत्यो पहर प्रयंत जब, टरयो न चौकठ पाणि ॥
तबै पुजेरी आयके, कही प्रकोपित बाणि ॥ ९ ॥
रे यमनी टरु द्वारते, भवन अशुच करि दीन ॥
अस कहि गहि गणिका करन, चह्यो बाहिर कीन १०
कर्षत कर महिपर गिरि, गयो सुखाय शरीर ॥
मनहुँ मरी यक वर्षकी, भयो तासु तनु जीर ॥ ११ ॥
पूजक अचरज मानि मन, गो हरिदासहिं पास ॥
मंदिरको वृत्तांत तब, कीन्ह्यो सकल प्रकाश ॥ १२ ॥
दिल्लीते यक पातुरी, लै आये प्रभु जोय ॥
निरखत नव नँदलाल छबि, दीन्ह्यो तनु तजि सोय १३
पूजकके ऐसे वचन, सुन बिहँसत हरिदास ॥
मंदिरमें चलिके कह्यो, कुंजविहारी पास ॥ १४ ॥

कवित्त—मांगि अकब्बर शाहसों सुंदरि, तेरिय योग मैं ताहि विचारी॥
ल्यायो लला ललनाको इतै लखिके तु क्षणोंभर धीर न धारी ॥

श्रीरघुराज बोलाय लई, रुचिसों कियो रासनकी अधिकारी ॥ नंद-
नंदाको चलांको सदाको, बडोईटवाको तु बांको बिहारी ॥ १ ॥

दोहा—ऐसे श्रीहरिदासके, चरित अनेकन भांति ॥
जो सिगरो वर्णन करै, तो बीते बहु राति ॥ १५ ॥

यक दिन कोउ यक साहु पतोहू * आई गवन सासुकर छोहू ॥
हरिदरशन करवावन हेतू * आई सासु पतोहु समेतू ॥
दरसायो प्रथमैं हरिदासे * पुनि लै गई गोविंदहि पासे ॥
करि दर्शन परदक्षिण देती * पुत्रवधू अपने सँग लेती ॥
साहु पतोहु फिरी जस जैसी * हरिमूरति फिरिगै तस तैसी ॥
अबलौं सो वृंदावन माहीं * फिरी मूर्ति लखिपरै सदाहीं ॥
सो हरिदास दरश प्रभाऊ * और हेतु जानहु नहिं काऊ ॥
यह चरित्र तहँ देखि पुजारी * ल्यायो द्रुत हरिदास हँकारी ॥
लखि हरिदास नाथ चपलाई * कछु नहिं कह्यो मंद मुसकाई ॥
पूजक सासुहिं कह करि कोहू * कस ल्याई आपनी पतोहू ॥
लखिके पुत्रवधू यह तेरी * तक्यो नाथ निज नयनन फेरी ॥
लैजा पुत्रवधू घर अपने * लैयो नहिं मंदिरमहँ सपने ॥

दोहा—पूजकको परबोधिके, पुत्रवधू उर लाय ॥
सासु सकोपित वचन अस, बोली ताहि सुनाय ॥ १६ ॥

कवित्त—भोरहिं मैं इते आई हुती, उठि भोरई ऐसी प्रतीती भईना।
वासर बीते कितेक इते, पै कछू यहिकी यह रीति नईना ॥ श्रीरघुराज
जो जानती यों, तोहि लावती केहु कलेश बईना ॥ भौनको भाजि
चलैरी भटू अबलौं दइमारेकी बानि गईना ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे नवपंचाशोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

अथ तुलसीदासजीकी कथा।

सो०—वंदौं सिताराम, विमल चारु पद कमल युग ॥
जेहि प्रभाव त्रयधाम, पूरित तुलसीके चरित ॥ १ ॥

जगत भयो नहिं कोय, गोस्वामी तुलसी सरिस ॥
दियो अघमँहि खोय, रामायण रचि सुरसरि ॥ २ ॥
आदि अंत लखि तासु, तुलसीदास चरित्रको ॥
रसना करन विकासु, मेरे शक्ति कछू नहीं ॥ ३ ॥
पै विंशति इतिहास, प्रियादास भाषा कथित ॥
शतमुख कछुक प्रकाश, तौन रीति वर्णन करौं ॥ ४ ॥

राजापुर यमुनाके तीरा ❀ तुलसी तहां बसै मति धीरा ॥
पंडित सकल शास्त्र विज्ञाता ❀ विद्यामें विख्यात अघाता ॥
भो विवाह आई जब नारी ❀ तासों अतिशय नेह पसारी ॥
आयो तियहिं लेवावन भाई ❀ करी न तुलसी तियहिं विदाई ॥
नैहर हित तिरिया बिझानी ❀ तदपि न कह्यो तासु कछु मानी ॥
आप गये कछु काज बजारा ❀ तव भाई लै भगिनि सिधारा ॥
आये पुनि तुलसी जब गेहू ❀ विकल भये तिय बिन वशनेहू ॥
वर्षन लगो मेह अधराता ❀ बाढ्यो यमुन प्रवाह अघाता ॥
भै विभावरी भूरि अँधेरी ❀ करहु पसारे परत न हेरी ॥
अर्द्धरात्रि तेहिं काम सतायो ❀ चल्यो ससुर गृह तिय मनलायो ॥
बढ्यो यमुन कर बडो प्रवाहा ❀ पैरि परचो नाहिं भय उत्साहा ॥
अर्ध निशा गो ससुर दुवारा ❀ लगे रहैं चहुँ ओर किवारा ॥

दोहा—गयो पछीती चढन हित, झूलत रहे भुजंग ॥
ताहि पकरि ऊपर गयो, रँग्यो कामके रंग ॥ १ ॥

जाय नारि ढिग दियो जगाई ❀ प्रथमें रही नारि चौआई ॥
चीन्हि बहुरि शंका अति कीन्ही ❀ गिरावाण सम सो हानि दीन्ही ॥
धिक् धिक् धिक् तोहिं प्राणपियारे ❀ चाम हाड अति निरत हमारे ॥
ऐसो मन जो लागत रामे ❀ तो सुधरत तिहरे सब कामे ॥
नारि वचन शर सम उर लागे ❀ पूरब सकल पुण्य फल जागे ॥
तुलसिदास कह मानि गलानी ❀ हे सति हे सति तिय तुव वानी ॥

दहुरे तुरत धूककी नांई ❋ गे काशी ताजे भवन गोसांई ॥
विनती किय विश्वेश्वर पाहीं ❋ रामभक्ति दीजे मोहिंकाहीं ॥
शूकर क्षेत्र गयो पुनि सोई ❋ गुरू कियो तहँ अति मुदमोई ॥
गुरुको अति सेवन तहँ ठायो ❋ रामायण अध्यात्महि पायो ॥
तुलसीदास आय पुनि काशी ❋ भे अनन्य रघुनाथ उपासी ॥
भजन करत बीत्यो बहुकाला ❋ भे प्रसन्न तापर शशिभाला ॥

दोहा-रामायण जहँहोय तहँ, सुनन हेतु नित जाय ॥
कथा समापत ह्वैगयो, तहां न पुनि ठहराय ॥ २ ॥

बदिर भूमिहित दूरिहि जाहीं ❋ लिये कमंडलु यक कर माहीं ॥
शौच क्रिया कर बचे जो नीरा ❋ बदरीतरु डारे मतिधीरा ॥
रहे एक तेहि प्रेत पुराने ❋ अशुचि नीर लहि सो सुख माने ॥
याहि विधि बीतिगयो कछु काला ❋ यक दिन बोल्यो प्रेत कराला ॥
तोपर अहौं प्रसन्न गोसांई ❋ मांगे सब अपनी मनभाई ॥
अस सुनि तुलसिदास कह बानी ❋ अहो कौन तुम परे न जानी ॥
सो भाष्यो जानहु मोहिं प्रेता ❋ याहि बदरीतरु मोर निकेता ॥
याहिपर जौन सलिल तुम डारयो ❋ मैं निज सेवा ताहि विचारयो ॥
तुलसिदास कह हो तुम प्रेता ❋ प्रेत कहा मनुजन कहँ देता ॥
जानन चहौ जो मम मनकेरी ❋ सो सुनिये मैं कहौं निबेरी ॥
जो रघुबीर दरश मैं पाऊं ❋ जियत प्रयंत तोर यश गाऊं ॥
और कछू मेरे नहिं आसा ❋ कह्यो प्रेत तब भरो हुलासा ॥

दोहा-रामदरश करवाइबो, मोर जोर कछु नाहिं ॥
पै सहाय हित कछु कहौं, यह उपाय तुम काहिं ॥ ३ ॥

जहँ रामायण सुनन सिधारो ❋ सबके पाछे जाहि निहारो ॥
अति निर्द्धनी दुखी अति दीना ❋ पूरित रोग नयनते हीना ॥
उठे सकल श्रोतनके पाछे ❋ मंद चलत चिरकुट कटिकाछे ॥
सो है सांचो पवनकुमारा ❋ तेहि रामायण सुनब अहारा ॥
नेम पवनसुत अस नित धरहीं ❋ श्रवण सदा रामायण करहीं ॥

मिलैं तुम्हें कौनहू उपाई ❋ रामदरशकी करैं सहाई ॥
प्रेत वचन सुनि तुलसीदासा ❋ उरमें उनग्यो अमित हुलासा ॥
ताहि गुरू गुणि भवन सिधारे ❋ कथा सुनन हित तुरत पधारे ॥
कथा सुनत तहँ लख्यो मलीना ❋ अति कुरूप तनु छाम मलीना ॥
दूरी बैठो आंधर ऐसो ❋ तैसो लख्यो प्रेत कह जैसो ॥
ह्वैगै कथा समापत जबहीं ❋ श्रोता चले भवन कहँ तबहीं ॥
सहे बार कछु बैठ गोसाईं ❋ चल्यो पवनसुत जडकी नाईं ॥
दोहा–तुलसिदास एकांत लहि, दौरि गह्यो पद जाय ॥
छोडु छोडु मोहिं यति छुवै, सो अस कह्यो सुनाय ॥४॥
तुलसी कह्यो न छूटन पैहो ❋ लैहो प्राण दरश की दैहो ॥
कियो छोडावन विविध उपाई ❋ चपरि गह्यो तुलसी बरियाई ॥
भे प्रसन्न तब पवनकुमारा ❋ मांगु मांगु अस वचन उचारा ॥
तुलसिदास कह रूप देखावहु ❋ मेरे शीश पाणि निज लावहु ॥
मेरे और कछू नहिं आशा ❋ होन चहौं रघुपति कर दासा ॥
रामदरश मोहिं देहु कराई ❋ तुम समर्थ सब विधि कपिराई ॥
तब मारुत निज रूप देखायो ❋ तुलसिदासकहँ वचन सुनायो ॥
चित्रकूट कहँ चलहु प्रवीना ❋ पैहो रामदरश सुख भीना ॥
अस कहि कपि निजरूप दुरायो ❋ तुलसिदास निज आश्रम आयो ॥
कछु दिनमें मनमहँ अस भयऊ ❋ अबै न शिवदरशन ह्वैगयऊ ॥
गयो विश्वेश्वरनाथ मंदिरे ❋ लखन रूप चह चूडचंदिरे ॥
पै नहिं दरशन दियो पुरारी ❋ तुलसिदास तजि आश सिधारी ॥
दोहा–चित्रकूट कहँ चढ चल्यो, पुरके बाहर आय ॥
मिल्यौ एक महिसुर तहां, बोल्यो वचन बोलाय ॥५॥
काशी छोडि अनत मति जाहू ❋ इतते गये न तोर निबाहू ॥
तुलसिदास कह किय सेवकाई ❋ भे प्रसन्न नाहिं शम्भु गोसाँई ॥
सो कह सत्य शम्भु मैं अहहूं ❋ काशी छोडि अनत नाहिं रहहूं ॥
अस कहि हर निजरूप देखायो ❋ तुलसिदास चरणन शिर नायो ॥

बहुरि वचन बोल्यो कृतिवासा * चित्रकूट चलु तुलसी दासा ॥
कह्यो पवनसुत है सति सोई * रामदरश पैहे मुदमोई ॥
रचिहै रामायण सुख श्रेणी * अधम उधारण यथा त्रिवेणी ॥
तुलसिदास तब भयो निहाला * चल्यो चित्रकूटहिं तेहिं काला ॥
शंकर अपनो रूप छिपायो * तुलसी चित्रकूट कहँ आयो ॥
फटिक शिलापर बैठ जाई * राम लखन लालसा बढाई ॥
ताही समय तुरंग सवारे * कढे शिकारी द्वै धनु डारे ॥
रपटत मृगन शरन कहँ मारे * हरितवसन सुंदर तनु धारे ॥
दोहा-जानि शिकारी भूप सुत, रामराम कहि बैन ॥
तुलसिदास पछितायकै, मूंदिलियो दोउ नैन॥६॥
निकसि गये जब युगलसवारा * आय कह्यो तब पवनकुमारा ॥
प्रभु दरशन पायो की नाहीं * दोऊ राम लषण ते आहीं ॥
तुलसिदास कह जानि शिकारी * हाय नयन मैं लियो नेवारी ॥
अबै न पूर भई अभिलाषा * जैसी पवनतनय तुम भाषा ॥
तब हनुमान कह्यो असि वानी * रामघाट चलु कालिह विज्ञानी ॥
भोर भये तब तुलसीदासा * रामघाट गो भरो हुलासा ॥
गारन लग्यो न्हाय तहँ चंदन * आयगये दोउ दशरथ नंदन ॥
कहे देहु चंदन मोहिं बाबा * तुलसिदास तब सहजहि गावा ॥
चंदन देहु सरुचि अँग माहीं * राम लषण तुम हो की नाहीं ॥
बालक कहे साधु जग जेते * राम लषण की मूरति तेते ॥
दै चंदन दोउ बाल सिधारे * पाछे पवनकुमार पधारे ॥
बोले वचन दरश तुम पाये * तुलसिदास यह दोहा गाये ॥
दोहा-चित्रकूटके घाटमें, भइ साधुनकी भीर ॥
तुलसिदास प्रभु चंदन गारैं, तिलक करैं रघुवीर ७॥
बहुरि कह्यो कर जोरिकै, सुनिये पवनकुमार ॥
देखौं चारौं बंधुको, सहित राजसंभार ॥ ८ ॥
पवनतनय कह कलियुग माहीं * अस दरशन होते कहुँ नाहीं ॥

तुलसिदास कहु कृपा तिहारी ❀ मोहिं न अचरज परत निहारी ॥
कह कपीश कामता सिधारी ❀ बैठहु कालिह राम उर धारी ॥
अस कहि कपि अंतर्हित भयऊ ❀ भोर होत तुलसी तहँ गयऊ ॥
बैठ्यो युगल पहर पर्यंता ❀ आयो दरश देन सिय कंता ॥
धनद दिशा रहि धूंधरि पूरी ❀ भो प्रकाश दश आसहु भूरी ॥
अगणित मत्त मतंग तुरंगा ❀ सोहत विविध भांति रथसंगा ॥
बोलत बहु नकीब गण शोरा ❀ आयो कोशल कंतकिशोरा ॥
रथ सवार सँग चारिहु भाई ❀ करत पवनसुत पद सेवकाई ॥
तुलसिदास तब आरति साजा ❀ लख्यो नयन भरि रघुकुलराजा ॥
दे परदक्षिण विह्वल भयऊ ❀ रघुपति कर पंकज शिर दयऊ ॥
यहिविधि प्रगट दरश तब पायो ❀ औरनको नाहिं भेद लखायो ॥

दोहा—यहि विधि तुलसीदास प्रभु, श्रीहनुमान सहाय ॥
रामदरश पायो प्रगट, रह्यो सुयश जग छाय ॥ ९ ॥
राम उपासक अति अमल, नाशक जग जनत्रास ।
हिये हुलसी वासकिय, काशी तुलसीदास ॥ १० ॥
प्रगट्यो महा महत्व तहँ, जुरै रोज जन भीर ॥
पर्यो रहै चरणन नृपति, आवैं भूप सधीर ॥ ११ ॥

कछु दिन किय काशी महँ वासा ❀ गये अवधपुर तुलसीदासा ॥
तहँ अनेक कीन्ह्यो सतसंगा ❀ निशिदिन रँगे राम रतिरंगा ॥
सुखद रामनौमी जब आई ❀ चैत मास अति आनँद पाई ॥
संवत सोरहसौ यकतीशा ❀ सादर सुमिरि सानुकूल ईशा ॥
वासर भौम सुचित चित चायन ❀ किय अरंभ तुलसी रामायन ॥
बालकांड तहँ पूरण करिकै ❀ आये पुनि काशी सुख भरिकै ॥
विनय आदि गीतावलि ग्रंथा ❀ रचे रुचिर सूचक सतपंथा ॥
वाराणसी बस्यो सुख छायो ❀ एक प्रबल पंडित तब आयो ॥
काशी जीतनको मन कीने ❀ बजवावत दुंदुभी प्रवीने ॥
काशिराज नित सभा बोलायो ❀ सब पंडितन समाज करायो ॥

तब जो काशी जीतन आयो ❋ सो पंडित अस वचन सुनायो ॥
एक मुख्य सबमें करि दीजे ❋ हार जीत ताके शिर कीजे ॥

दोहा-पंडितको अस बैन सुनि, काशीवासी विप्र ॥
मानि महाभ्रम चित्तमें, कहे वचन अति छिप्र १२

उत्तर देव काल्हि यहि केरो ❋ अस कहिगे द्विज निज निजडेरो॥
कियो धरन विश्वेश्वर अयना ❋ मर्यादा तुव हाथ त्रिनयना ॥
राति स्वप्न शंकर अस भाषे ❋ तुलसी शीश अजय जयराषे ॥
पंडित मुदित भूप गृह आये ❋ सो पंडितसों वचन सुनाये ॥
तुलसिदास सबमाहिं प्रधानो ❋ जयहु पराजय तेहिं शिर जानो ॥
भूप कह्यो किमि सके बोलाई ❋ तुलसिदास गृह चलो सिधाई ॥
यह सुनि लै पंडितन समाजा ❋ आयो तुलसिदास गृह काजा ॥
सबन कियो सत्कार गोसांई ❋ एक शिष्यको कह्यो बोलाई ॥
ये तांबूल पांच लै जाहू ❋ देहु मुदित पंडित सबकाहू ॥
शिष्य तुरत तांबूलहि बांटा ❋ बचे पांच कोहु पर्‍यो न घाटा ॥
यह प्रभुता लखि पंडित सोई ❋ वाद करनकी आशय खोई ॥
तुलसिदास पंडितहि बोलाई ❋ दै रामायण कह्यो बुझाई ॥

दोहा-खंडन मंडन पक्ष जो, सो देखहु यहि माहिं ॥
जो न होय तौ आइ इत,वाद करहु हम पाहिं॥१३॥

पंडित रामायण ले लीन्ह्यो ❋ डेरा चलि अवलोकन कीन्ह्यो ॥
संमत शास्त्र पुराणनकेरो ❋ रामायणमहँ पंडित हेरो ॥
जौन पक्ष पंडित मन भयऊ ❋ समाधान तेहि महँ मिलिगयऊ ॥
जो श्लोक वंदना माहीं ❋ ताकी हानि भई कछु नाहीं ॥
श्लोक-नानापुराणनिगमागमसंमतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वांतःसुखाय तुलसीरघुनाथगाथा भाषानिबद्धमतिमंजुलमातनोति ॥
पंडित गृहते द्रुत चलिदयऊ ❋ तुलसिदास पद रज शिर धरयऊ॥
निज अपराधहि क्षमा करायो ❋ सभामध्य सुश्लोक सुनायो ॥

श्लोक-आनंदकानने कोऽपि तुलसीजंगमस्तरुः ॥
यत्काव्यमंजरीभावाद्रामभ्रमरभूषितः ॥ २ ॥ इति

तुलसी शिष्य भयो पुनि सोई ❀ अरप्यो सकल वस्तु बहुतोई ॥
रामभक्तिको करि उपदेशा ❀ गयो गर्व तजि कोशलदेशा ॥
पुनि चेटकी एक तहँ आयो ❀ यक यक्षिणी सिद्धि करि लायो ॥
तेहि बल सब थल नगर पुजायो ❀ महामहत्व जननसो पायो ॥
यक वैष्णव कोउ गयो सकामा ❀ राख्यो सिद्ध ताहि निज धामा ॥
सिद्ध नारिसों भई मिताई ❀ साधु गयो लै ताह पराई ॥

दोहा-जग्यो चेटकी भोर जब, लख्यो नारि नहिं धाम ॥
बोलि यक्षिणीको तुरित, कीन्ह्यो कोप अछाम ॥ १४ ॥

यहि क्षण नगर भूप गहि लावै ❀ साधु नारि लै जान न पावै ॥
सुनि यक्षिणी तुरंतहि धाई ❀ युत पर्य्यंक भूप गहि लाई ॥
कह्यो यक्षिणी भूपहि वैना ❀ काशी महँ कोउ साधु रहैना ॥
तिलक धोवाय माल सब टोरी ❀ धरिदीजे मम कुंड बटोरी ॥
जो अस करिहौ नरपति नाहीं ❀ तौ जानो वर यमपुर माहीं ॥
नरपति कह्यो भवन पहुँचावहु ❀ कालिहहिते निज हुकुम करावहु ॥
तुरत भवन भूपहि पठवायो ❀ भोर भूप शासन प्रगटायो ॥
साधुन गल कंठी सब टोरी ❀ धोय तिलक करिके बरजोरी ॥
सिद्ध कुंड दीजै पहुँचाई ❀ द्वितिय बात नहिं बनै बनाई ॥
यह सुनि नृप दल कियो तयारी ❀ धोवन लगे तिलक लै वारी ॥
टोरि टोरि कंठी बहुतेरी ❀ भरयो सिद्धके कुंडहि ढेरी ॥
हाहाकार मच्यो सब काशी ❀ भये संत सब जीव निराशी ॥

दोहा-कह्यो धूर्त कोउ जायकै, तुरत चेटकी काहिं ॥
तुलसिदास माला तिलक, तुम टोरौ कत नाहिं ॥ १५ ॥

सुनि चेटकी सैन्य सब साजे ❀ चल्यो कोपि बजवावत बाजे ॥
नगर लोग सब देखन धाये ❀ कोउ वैष्णव तुलसी ढिग गाये ॥
माला कंठी टोरन हेतू ❀ आवत किये चेटकी नेतू ॥

तुलसिदास तब गिरा बखानी ❀ जाकर माल तिलक सो जानो ॥
जब चेटकी कुटी नियरायो ❀ तब एक घोरबवंडर आयो ॥
परी फौज उडि सुरसरि माहीं ❀ रही चेटकी तनु सुधि नाहीं ॥
रुधिर वमत बूडत मधि धारा ❀ जस तसके सो लग्यो किनारा ॥
त्राहि कहत तुलसी पद गिरेऊ ❀ मैं अयान संतनसों भिरेऊ ॥
क्षमा करहु अपराध हमारा ❀ तुलसी करुणा पारावारा ॥
वचन कह्यो मुसकाय गोसाईं ❀ संत सेउ लघु जनकी नाईं ॥
खाहु वर्षभरि साधुन जूंठो ❀ तब ह्वैहो शुचि है नहि झूंठो ॥
कियो चेटकी तैसहि आई ❀ तरी यक्षिणी संगति पाई ॥

दोहा-संत चरण जलपान करि, साधु जूंठ नित खाय ॥
भयो चेटकी रामको, दास सुवास विहाय ॥ १६ ॥

भई रामनौमी एक काला ❀ जुरी कुटी महँ संतन माला ॥
उत्सव कियो महासुख छायो ❀ सिगरी राज्य विभूति बोलायो ॥
भई भीर भारी तहि ठामा ❀ छाय रह्यो एक रामहि नामा ॥
तहँ एक डोम अवधपुर केरो ❀ आयो तुरत उछाह घनेरो ॥
महाभीर वश दरश न पायो ❀ जन्म मनोरथ बोलि सुनायो ॥
तुलसिदास पहँ कोउ कह आई ❀ तुरत गयो प्रभु काज विहाई ॥
पूंछ्यो है तू कहँको वासी ❀ सो कह कोशलनगर निवासी ॥
अवध निवासी सुनत कृपाला ❀ भरि आये दोउ नयन विशाला ॥
उर लगाय कुटी लै आई ❀ बार बार तेहिं कह्यो बुझाई ॥
यह विभूतिके प्रभु रघुराई ❀ जनि भाषियो अवधपुर जाई ॥
मैं चेरो रघुपति पद केरो ❀ वाराणसी वसौ करि डेरो ॥
ऐसे तुलसीके परभाऊ ❀ कहत मोहिं नहिं होत अघाऊ ॥

दोहा-एक समय श्रीअवधको, लै सँग संत समाज ॥
नावहि नावहि चलत भे, नाव भराये साज ॥ १७ ॥

सरयू गंगा संगम जहँईं ❀ पहुँचे जबै गोसाईं तहँईं ॥
सूपघाट घाटी अनुग्रामा ❀ पूंछ्यो तुलसी चारिहुँ नामा ॥

कहे लोग चलिकै शिर नावत ❀ रामसिंह इत नृपति कहावत ॥
रामदास घाटीकर नाऊं ❀ तथा रामपुर बाजत गाऊं ॥
रामघाट यह सुन्यो गोसाईं ❀ लगत जगात इतै बरिआई ॥
बिन कर दिय कोउ जान न पावै ❀ तुमहुँको देव उचित इत भावै ॥
रामसखे सुणि नाम सबनके ❀ सजल कोर भे प्रभु नयननके ॥
तुलसिदास बोले मुसुकाई ❀ दै जगात है मोर जवाई ॥
सुन्यो गोसाईं आगम राजा ❀ आयो तुरतहिं सहित समाजा ॥
वन्द्यो तुलसिदास पद कञ्जन ❀ लिय उपदेश कुमति तम अंजन ॥
विनय कियो भरि आनँद भारा ❀ होय नाथ इतहीं भंडारा ॥
मेरे कण्ठ देहु प्रभु कंठी ❀ कीजै मोहिं बासिंद विकुंठी ॥

दोहा—तुलसिदास करिकै कृपा, भंडारा तहँ दीन ॥
भूपहु द्रव्य लगायकै, अति उत्सव तहँ कीन ॥ १८ ॥
तुलसिदास उपदेशते, भूप सहित सब देश ॥
रघुपति भक्त अनन्य भो, सेयो संत हमेश ॥ १९ ॥
तुलसिदासकी पादुका, धरयो भूप गृह माहिं ॥
इष्टदेव सम पूजिकै, पायो मोद सदाहिं ॥ २० ॥

एक समय निवसत तेहिं काशी ❀ एक चरित्र भयो सुखराशी ॥
भैरवनाथ प्रभाव अपारा ❀ सो मनमें अस कियो विचारा ॥
मोहिं गोसाईं पूजत नाहीं ❀ दरशाऊं प्रभाव यहि काहीं ॥
अस गुनि तुलसिदासके बाहू ❀ दुसह पीर प्रगट्यो प्रददाहू ॥
होत भई अति पीर तहांहीं ❀ छूटत जान्यो निज तनुकांहीं ॥
यतन कोटि कीन्ह्यो मतिधीरा ❀ तबहुँ न मिटी बाहुकी पीरा ॥
तब बाहुकको रच्यो गोसाईं ❀ मिटिगै पीर स्वप्नकी नाईं ॥
भैरवपर कोप्यो हनुमाना ❀ भैरवसों शिव वचन बखाना ॥
देहु रामदासन दुख नाहीं ❀ ते मोहिं प्रिय प्राणहुंते आहीं ॥
स्वप्ने तुलसीसों शिव भाष्यो ❀ मैं भैरवहि मुख्य गण राख्यो ॥
इनहूंको वन्दन तुम कीजै ❀ मोरि प्रीति अतिशय गनिलीजै ॥

तुलसिदास तब आनँद पाई * भैरवकी वन्दना बनाई ॥
दोहा-रच्यो कवित्त उदग्र अति, बाहुक चौआलीस ॥
तासु प्रभाव प्रत्यक्ष अति, अबलों आंखिन दीस२१॥
जो चौआलिस दिवस लगि, हनुमत मन्दिर जाय ॥
पाठ करैं बाहुक शुचित, बैठि सनेम सोहाय ॥ २२ ॥
तासु प्रेतबाधा सकल, तनकी मनकी पीर ॥
मेटि देत मारुतसुवन, यह भाषैं मतिधीर ॥ २३ ॥
एक समय तुलसी भंडारे * जुरी भेंट जन दिये अपारे ॥
चोर चोरावनके हित आये * अर्द्ध निशा निज घात लगाये ॥
जबहीं चोर चोरावन आवैं * द्वै बालक धनु शर लै धावैं ॥
यहि विधि सिगरी निशा सिरानी * चोरन उरते कुमति परानी ॥
दौर चोर तुलसीके पायन * परे आय चितमें अति चायन ॥
पूंछयो को बालक प्रभु दोऊ * इते न आवन पावत कोऊ ॥
तुलसिदास पूंछयो वृत्तांता * चोर कहे सिगरे ह्वै शांता ॥
धन्य धन्य कहि पुलकि गोसाई * गहे चोर पांयन बरिआई ॥
ह्वैगे शिष्य तुरन्तहि चोरा * तुलसिदास उर भो दुख भोरा ॥
सम्पति धरब उचित इत नाहीं * राम लषण ताकें धनकाहीं ॥
धिक् तोहिं जेहिं प्रभुपरिश्रमभयऊ * अबलौं मोर कपट नहिं गयऊ ॥
अस गुणि सम्पति दियो लुटाई * कर करवा कौपीन बिहाई ॥
दोहा-काशीमें पुनि एक समय, मरयो विप्र कोउ एक॥
सती होन हित तासु तिय, बांध्यो यतन अनेक॥२४॥
न्हाय पहिरि तब नारियर लैकै * चली देव दरशन सुख छैकै ॥
तुलसिदास आश्रमहूं गवनी * वंद्यो चरण विप्रकी रवनी ॥
ध्यान करत तहँ रहे गोसांई * बोले वचन सहजकी नांई ॥
हो सौभाग्यवती तैं नारी * सुनि सहगामिनी गिरा उचारी ॥
साखी-तुलसी आवत देखकरि, सती नवायो शीश ॥
जब तुलसी ऐसे कह्यो, अमरचूड आशीश ॥ १ ॥

पती हमारे चलिगये, हमहीं चलनेहार ॥
तुलसी तुमरे वचनको, होसी कवन हवाल ॥ २ ॥

सत्य करो अपनी प्रभु वानी * सती होन हित अहौं पयानी ॥
लख्यो गोसाईं नयन उघारी * किहे हती तिय सती तयारी ॥
अपने वचन सत्यके हेतू * गये जहां मृत दाहन नेतू ॥
नयन मूंदि दोउ भुजा पसारहु * जय जय सीताराम उचारहु ॥
मृतक ओर चितई जो कोई * आंधर सो विशेषिकै होई ॥
जन समाज तैसहि सब कीन्हे * सीताराम मुदित कहि दीन्हे ॥
जब सब बोले राम दोहाई * मृतकहु बोल्यो हाथ उठाई ॥

दोहा—तुलसी मरा बोलाइकै, मस्तक धारयो हाथ ॥
हम तो कछु जाने नहीं, तुम जानो रघुनाथ ॥ २५ ॥
दौरि गह्यो तुलसी चरण, माच्यो जयजयशोर ॥
कोउ यक मूंद्यो नयन नहिं, भयो अंध तेहिंठोर २६॥

गह्यो आय पद ताकी नारी * हरहु नाथ यक आंखि हमारी ॥
एक आंखि पतिकी प्रभु दीजे * अपनो वचन सत्य करिलीजे ॥
एवमस्तु कहिदियो गोसाईं * तैसहि भयो तुरत तेहिं ठांईं ॥
पुनि काशी महँ कोनेहु काला * गोहत्या केहुँ लगी कराला ॥
दियो कुटुम्ब तासु तब त्यागी * आयो सो तुलसी पद लागी ॥
कह्यो जोरि कर सुनहु उदारा * लखै लोग नहिं वदन हमारा ॥
तुलसिदास बोले तब बैना * राम कहे तनु पाप रहैना ॥
हम कुटुम्ब सब देय मिलाई * राम राम तैं कहु रट लाई ॥
तेहिं मुख राम राम रट लागी * तनुते गोहत्या द्रुत भागी ॥
तुलसी तासु कुटुम्बन बोल्यो * मंजुल वचन सबनसों खोल्यो ॥
राम कहत गोवध अघ भाग्यो * याको वृथा सबै तुम त्याग्यो ॥
जोहिं प्रतीति अब होय तिहारी * सो करिलेहु परीक्षा भारी ॥

दोहा—कह्यो कुटुम्बी तासु सब, जो नंदी शिव भौन ॥
याके करको खाय कछू, तो संदेह है कौन ॥ २७ ॥

तब विश्वेश्वर मंदिर माहीं ❋ गये गोसांई लै तेहिं काहीं ॥
नंदीश्वरसों विनय सुनायो ❋ नाम प्रभाव तुम्हीं सब गायो ॥
राम नामको यथा प्रभाऊ ❋ तुम समान को जानन काऊ ॥
राम कहत जो अघ रहिजावै ❋ तौ यहिकर प्रभु कछू न खावै ॥
अस कहिके द्विजकरकृत पेरा ❋ धरि दीन्ह्यो नंदीश्वर नेरा ॥
दै किंवार बाहिर प्रभु बैठे ❋ कौतुक लखत जुरे जन तैठे ॥
लखे केवार खोलि जब जाई ❋ लीन्ह्यो नंदी पेरा खाई ॥
यकमुखमहँ प्रतीति हित राख्यो ❋ काशी वासी जयजय भाख्यो ॥
लिय कुटुम्ब सब ताहि मिलाई ❋ तुलसिदास महिमा मुख गाई ॥
एक समय पुनि तुलसीदासा ❋ कछु दिन कियो अवधपुरवासा ॥
एक विप्रबालक तहँ मरेऊ ❋ तुलसी चरण आय सो गिरेऊ ॥
लोक रीति तुलसी समुझायो ❋ ताके मनमें कछू न आयो ॥

दोहा–लोथि डारिकै सो गयो, तुलसिदासके द्वार ॥
खान पान संध्या न किय, तुलसी कियो खँभार २८॥

सुमरन कीन्ह्यो पवनकुमारा ❋ अहो नाथ तुम मोहिं अधारा ॥
हनूमान कह स्वप्ने आई ❋ यहि पर जम कीन्हे जबराई ॥
पै याको हम अवशि जियैहैं ❋ रामभक्तको शोक मिटैहैं ॥
अस कहि यमपुर गयो कपीशा ❋ यम बोल्यो पद नावत शीशा ॥
यमपुर विप्र बाल जिय नाहीं ❋ खोजिलेहु सिगरे पुरमाहीं ॥
खोज्यो कपि पायो नहिं जीवा ❋ तब यम पर करि कोप अतीवा ॥
सुमिरि राम पद महिमा सिगरी ❋ लियो लपेटि लँगूरसों नगरी ॥
बोल्यो यमसों पवनकुमारा ❋ देहु जियाय विप्रको बारा ॥
नातो तेहि सँग यमपुर जैहै ❋ मम प्रभु तुव सम और बनैहै ॥
तब यम भभरि कह्यो कर जोरी ❋ भाग्य मिटावन शक्ति न मोरी ॥

श्लोक–लिखिता चित्रगुप्तेन ललाटाक्षरमालिका ॥
तन्न चालयितुं शक्यमसुरैस्त्रिदशैरपि ॥ १ ॥

इति पुराणांतरे।

वायुसुवन तब कह मुसकाई * यह सति रघुपति भक्ति बिहाई ॥
तामें सुनु यमराज प्रमाना * कियो सनातन वेद बखाना ॥

श्लोक-यद्धात्रा लिखितं भाले तन्मृषा नैव जायते ।
ऋते श्रीरामदासानां प्रेमनिर्भरचेतसाम् ॥

दोहा-तब यमराज डेरायकै, लै द्विज बालक प्रान ॥
अरप्यो आय कपीशको, राख्यो अपनो थान ॥ २९ ॥

दिय कपीश द्विजपुत्र जियाई * सकल अवधपुर बजी बधाई ॥
तुलसिदास अति आँनँद पायो * तहां बसत कछु काल बितायो ॥
आयो एक वणिक पुनि कोऊ * रामदरश लालस किय सोऊ ॥
तुलसिदाससों विनय सुनायो * श्रीरघुवीर दरश चितचायो ॥
तुलसिदास तब कह मुसकाई * यह तो बात महा कठिनाई ॥
सहजहि रामदरश नहिं होई * कोटिन जन्म जातहै खोई ॥
वणिक कह्यो है कौन उपाई * तुलसिदास तब कह्यो बुझाई ॥
बरछी गाडि भूमिमहँ देहू * तापर कूदहु तजि तनु नेहू ॥
यहि विधि दरश होय तौ होई * और यतन कछु परै न जोई ॥
वणिक कह्यो यह तौ न असतिहै * तुलसिदास कह सति सति सतिहै
वणिक गाडि बरछी महि माहीं * चढ्यो जाय तरु कूदन काहीं ॥
मरन भीति कूद्यो नहिं जाई * बनिया बारबार पछिताई ॥

दोहा-कोउ क्षत्री तेहि पंथ है, लख्यो तमाशो जाय ॥
कह्यो वणिकसों काह यह, वैश्य गयो सब गाय ॥ ३० ॥

क्षत्री कह्यो उतरि तुम आवहु * कौन हेतु तनु वृथा गवांवहु ॥
मोसों लेहु कछुक धन भाई * करहु जाय रोजगार बनाई ॥
वणिक मानि क्षत्रीके वयना * लै धन तुरत गयो निज अयना ॥
क्षत्री लियो मनहिं अनुमानी * मृषा न तुलसिदासकी बानी ॥
तरुपर चढि कूद्यो बरछीपर * उपरहि रोकि लियो तेहि रघुवर ॥
बजे नगर दुंदुभी अपारा * भयो सुयश बिगरे संसारा ॥
तामें प्रमाण गोसांईजीकी * मैं लिखि देहौं सोई नीकी ॥

कौनिहुँ सिद्धि कि विन विश्वासा ❀ बिन हरिभजन न भवभयनाशा ॥
यक दिन सरयू गये नहाने ❀ मज्जन हित जब नीर समाने ॥
तब यक तिय बिन बसन नहाती ❀ कह्यो लाजभरि सो बिलखाती ॥
करि मम ओर पीठि यहि ठाईं ❀ ठाढो रहु तोहिं रामदोहाईं ॥
तिय मज्जन करिकै घर आई ❀ तुलसिदास सुनि रामदोहाई ॥
रहे ठाढ तेहिं दिन तेहिं ठाईं ❀ शपथ बहोरब तिय बिसराईं ॥
भयो शोर सिगरे पुरमाहीं ❀ आई सो तिय बहुरि तहाहीं ॥
दोहा—तुलसिदास सो वचन कहि, राम शपथ तुमकाहिं ॥
जाहु आपने भवनको, इतै कार्य कछु नाहिं ॥ ३१ ॥
तुलसिदास जलते निकसि, तब आयो निज भौन ॥
जलचर पगपल नोचि लिय, कियो न इक पद गौन ३२
राम शपथ यहि भांतिकी, ताहि मंदमति लोग ॥
रामद्रोहि भाषत रहैं, करिकै मृषा प्रयोग ॥ ३३ ॥
तुलसिदासकर बढ्यो प्रभाऊ ❀ भयो विदित पुहुमी सब ठाऊ ॥
बादशाह दिल्लीको वासी ❀ सुनि कीरति अति आनँदरासी ॥
निज नायकको कह्यो बोलाई ❀ तुलसीको लाइये लेवाई ॥
नायब चल्यो बनारस आयो ❀ तुलसिदासके पद शिरनायो ॥
हजरत तुम्हें बोलायो सांई ❀ चलो मेहर करिकै तेहिं ठांई ॥
तुलसिदास तब कियो विचारा ❀ कौन शाहते हेतु हमारा ॥
पै जो हम दिल्ली नाहिं जैहैं ❀ शाह अवशि दरशन हित ऐहैं ॥
तो जीवनको अति दुख होई ❀ उचित परै चालिबो मोहिं जोई ॥
तुलसिदास लै साधु समाजा ❀ दिल्ली गये सुमिरि रघुराजा ॥
शाह कियो सादर सत्कारा ❀ पुनि बोल्यो अपने दरबारा ॥
तुमहिं सुन्यो साहेबहिं मिलापी ❀ अजमत देहु देखाय प्रतापी ॥
तुलसी कह्यो राम हम जानैं ❀ दूसर साहेब और न मानैं ॥
दोहा—अजमत देखन हेतु तहँ, कीन्ह्यो हठ शठ शाह ॥
तुलसिदास अजमत करन, कियो न मनमें चाह ३४ ॥

शाह सकोप कह्यो तब बानी * तू खिलाफ अजमत अभिमानी ॥
कारागार कैद यहि कीजै * राम करत का सो लखिलीजै ॥
सुनत शाह शासन मजबूता * कारागार गये लै दूता ॥
तुलसिदास तब कियो विचारा * मोर सहायक पवनकुमारा ॥
सुमिरयो पद रचिकै हनुमाना * सो पद श्रोता सुनहु सुजाना ॥

पद–ऐसो तोहिं न बूझिये हनुमान हठीले ॥
हांक सुनत दशकंधके भये बंधन ढीले ॥

तुलसिदास यह पद रचि गायो * तब हनुमत उर अमरष आयो ॥
होत भोर दिल्लीपुर माहीं * कोटिन मर्कट बिकट देखाहीं ॥
कोट कँगूरन और हवेली * कलसा दियो अनेकन ठेली ॥
शाखामृग यक यक घर माहीं * प्रविशत लाखन तुरत देखाहीं ॥
लाल किला मधि शाह मकाना * तहँ बांदर प्रविशे सहसाना ॥
तोपन तुपकन यद्यपि मारा * तदपि कीश नहिं हटे हजारा ॥
घुसे कीश बहु शाह जनाने * पकरि बेगमनको अनखाने ॥

दोहा–फारि वसन पटहीन किय, नोचि नोचि सब अंग ॥
हाहाकार मचाय दिय, रँगे कोपके रंग ॥ ३९ ॥

रहैं जौन दिल्लीके वासी * भये सकल ते जीव निरासी ॥
लखि दुर्दशा शाह घबराना * सकल वजीरनको द्रुत आना ॥
शासन दीन्ह्यो करहु विचारा * केहि हित माच्यो जुलुम अपारा ॥
हाफिज वृद्ध रह्यो तहँ एका * सो कह कीन्ह्यो अति अविवेका ॥
यक फकीरको कैद करायो * सो अपनी अजमत दरशायो ॥
करत शाहके यही विचारा * दिल्ली माच्यो हाहाकारा ॥
यक यक पुरुष नारि पर कीशा * लाखन लपटिगये गहि शीशा ॥
भागीं बेगम बिना सुथनिया * कहत खोदाय न पग पैंजनिया ॥
नोचहिं नारिन केशन कीशा * भागत गिरीं फूटिगे शीशा ॥
मातु सुता पितु सुत तजि भागे * कोउ काहु संग न लिय भयपागे ॥
दिल्ली प्रलय होति सों दीसै * हल्ला कियो महल्ला कीसै ॥
कारागार जाय द्रुत शाहा * गिरयो तुरत तुलसी पद माहा ॥

दोहा-विनय कियो करजोरिकै, अजमत लीन्हो देखि॥
अब वानरन समेटिये, प्रलय होतिसी लेखि ॥ ३६ ॥
तुलसिदास कह अजमत देखौ * रामचरित्र सकल जिय लेखौ ॥
जो चाहो आपनी भलाई * तौ फेरहु पुर रामदोहाई ॥
यह दिल्ली भो हनुमत थाना * वसहु जाय रचि द्वितिय मकाना ॥
शाह मानि शासन शिर नाई * दिल्ली फेरचो रामदोहाई ॥
बंदर बंद भये जोहिं काले * तुलसीको लायो निज आले ॥
कियो गोसांईको सत्कारा * दिल्ली दूसरि रच्यो भुवारा ॥
रामघाट रचि यमुना माहीं * दिल्ली अरपि सु तुलसी काहीं ॥
वस्यो सुचित चित बादशाह तहँ * तुलसीको राख्यो तेहि पुर महँ ॥
सुन्यो सूर कीरति तेहिं भांती * दरशन अभिलाषा अधिकाती ॥
पठै बुद्धिमानन ब्रजकाहीं * आन्यो सूरदास पुर माहीं ॥
तुलसी सूरसमागम भयऊ * राम कृष्ण मय पुर ह्वै गयऊ ॥
दोऊ गये शाह दरबारा * बादशाह किय अति सतकारा ॥
दोहा-शाह कह्यो तब सूरसों, दीजै चरित देखाय ॥
सूर कह्यो तुलसी चरित, लखि नहि गये अवाय ३७॥
बेटी तुव जो वसै जनाने * तासु चरित सुनिये दोउ काने ॥
कृष्ण रासकी सखी सुहाई * कौनेहु पाप भवन तुव आई ॥
ताहि पठावहु ब्रजै तुरंता * रास करत जहँ राधाकंता ॥
जो परतीति होय नहिं तेरे * तौ मानिये वैन अस मेरे ॥
तासु वाम जंघा तिल होई * मूरति श्याम कपोलहि जोई ॥
शाह सुनत उठि गयो जनाने * बेटीको सो वचन बखाने ॥
सुनतहि सुता सूर ढिग आई * दै तलमुख तनु दियो विहाई ॥
तासु जंघ तिल लख्यो अमोला * श्याम स्वरूपहु लख्यो कपोला ॥
अचरज गुणि पूंछ्यो तब सूरै * हेतु बखानि हरहु भ्रम पूरै ॥
सूर कह्यो यह सखी रासकी * मान किये पिय मिलन आसकी ॥
मैंही गयो मनावन याको * मान्यो नहिं मनायकै थाको ॥

तब मैं कह्यो वियोगिनि ह्वैहै * सोउ कह तहूं वियोगहि पैहै ॥
दोहा-आयगये तहँ मिलन हित, तुरतहि मदन गोपाल॥
कर गहि जंघा धरि छरी, चूमि कपोल विशाल॥ ३८॥
लियो लेवाय मनाय पियाको * जान्यो सब वृत्तांत तहांको ॥
मोहिं कह्यो तैं प्रगट जगतमें * तारै जनन विराजि भगतमें ॥
सती होयगी शाह कुमारी * तोहिं मिलिहै तब तनु तजिडारी॥
सोयअमरषवशमोहिंतलमारयो * तनुतजियदुपतिराउ सिधारयो ॥
छरी चिह्न जंघा तिल सोई * चुम्बन चिह्न कपोलहि जोई ॥
शाह सत्य गुनि अचरज त्यागा * बारहिंबार सूर पग लागा ॥
रहे बहुत दिन सूर गोसांई * करि सतसंग न मोद अघाई ॥
यक दिन दोउ बजार महँ बैठे * करि सत्संग मोदरस पैठे ॥
शाह मत्त मातंग महाना * आवत चलो दुहुँन दरशाना ॥
लोगन कह्यो पराव तुरंता * नातो करन चहत गज अंता ॥
सूर कह्यो मैं जाहुँ गोसांई * मैं रहिसकों न अब यहि ठांई ॥
मेरो नंदलाल अतिबालक * किमि ह्वैहै दुरधर गज घालक ॥
तू बैठे तौ बैठ भलाई * धनुधर तेरो नाथ गोसांई ॥
दोहा-भगे सूर अस कहि तहां, लीन्हे अंग गोपाल ॥
तुलसिदास मुसकायकै, बैठ सुमिरि रघुलाल ॥ ३९ ॥
धायो तुलसी सन्मुख नागा * आकस्मात शीश शर लागा ॥
मरयो हस्ति करि घोर चिकारा * भो वृत्तांत विदित संसारा ॥
तुलसी सूर समागम करिकै * काशी आवत भे मुद भरिकै ॥
एक समय नाभाजू ज्ञानी * जिन यह भक्तमाल निरमानी ॥
ते सब संतन नेउता दीन्ह्यो * सिगरे संत पयानो कीन्ह्यो ॥
तुलसिदासको न्योतो आयो * तब मनमें विचार अस लायो ॥
पंगतिमें कच्चो पकवाना * द्विजको खैबो उचित न जाना ॥
यह विचारि कर तहां न गयऊ * पवनसुवन तासों कहि दयऊ ॥
भक्तराज नाभाको जानो * तुरतहि तहँको करो पयानो ॥

हनुमत शासन सुनत गोसांई * चले तुरत भिक्षुककी नांई ॥
नगर ओडछे ढिग तब गयऊ * कौतुक तहां माचि यह रहेऊ ॥
तहँको इंद्रजीत जो राजा * सो जोरचो बहु कविन समाजा ॥

दोहा–कवि समाज शिरताज किय, श्रीकवि केशवदास॥
रामचंद्रिका जो विमल, कीन्ह्यो जगत प्रकास४०

कवि मंडली विलोकि नरेशा * दीन्ह्यो विप्रन नवल निदेशा ॥
यह सब कविमंडली सदाहीं * रहे कौन विधि मम ढिगमाहीं ॥
मंत्रशास्त्रवित कह असि बानी * प्रेतयज्ञ कीजै विधि ठानी ॥
यहि विधिते यह कविन समाजा * रहै सहस वर्षहु लगि राजा ॥
इंद्रजीत तब अति सुख पायो * प्रेतयज्ञ विधिसहित करायो ॥
सो कवि मंडल युत नरनाथा * भये प्रेत तनु तजि यक साथा ॥
रामचंद्रिका केशव कीन्ह्यो * पूरण भई न तनु तजि दीन्ह्यो ॥
यह वृत्तांत सकल कोउ पाई * तुलसिदासको दियो सुनाई ॥
सोइ कवि केशव वट तरु माहीं * अबलों करत पुकार सदाहीं ॥
रामचंद्रिकाको ले जाई * ल्यावै तुलसीसों शोधवाई ॥
यह सुनि तुलसिदास तहँ गयऊ * केशव कहत पुकारत भयऊ ॥
केशव तरुते उतरि तुरंता * तुलसी पद पकरचो हरषंता ॥

दोहा–नाथ उधारो मोहिं अब, ग्रंथ सुधारो सोय ॥
नहिं बांच्यो समकोउकुमति, हाऱ्योबहुविधिरोय ४१॥

तुलसी कह्यो विहँसि असि बानी * रामचंद्रिका पढु सुखखानी ॥
केशव रामचंद्रिका पढेऊ * तुलसी सुनि शोधत मुद बढेऊ ॥
रामचंद्रिका पूरी जबहीं * केशव तऱ्यो जयति कहि तबहीं ॥
नाभा निकट गोसांई गवने * पंगति समय पहुँचि दुख शमने ॥
लखि नाभा कछु कह्यो न बानी * लखन रीति तेहि सुमति लोभानी॥
तुलसी बैठे पंगति छोरा * परी पातरी नीचे ठोरा ॥
साधु उपानत पातरि नीचे * धरि कीन्ह्यो सम अति सुख सींचे॥
नाभा निरखि भाव अस ताको * मिलयो जायकर गहि सुख छाको ॥

ताहि मध्य पंगाते बैठायो * बार बार चरणन शिर नायो ॥
कछु दिन कीन्ह्यो तहां निवासा * करि सतसंगहि लह्यो हुलासा ॥
नाभा तासु विमल अति हेरा * भक्तमालमहँ कियो सुमेरा ॥
पुनि व्रजमंडल यात्रा करने * तुलसिदास गवन्यो सुखभरने ॥

दोहा-नाभाजू छप्पय लिख्यो, भक्तमालमें जौन ॥
मैं सो इत लिखि देत हौं, श्रोता समुझो तौन ॥४२॥

छप्पय-त्रेता काव्य निबंध कियो शत कोटि रमायण ॥
यक अक्षर उद्धरे ब्रह्महत्यादि परायण ॥
अब भक्तन सुखदेन बहुरि लीला विस्तारी ॥
रामचरण रसमत्त रहत अहनिशि व्रतधारी ॥
संसार अपारके पारको सुगम रूपनौका लयो ॥
कलिकुटिलजीवनिस्तारहितवाल्मीकि तुलसी भयो ॥ १ ॥

दोहा-तुलसिदास यात्रा करी, ब्रज चौरासी कोश ॥
राम कृष्ण वपु भेद बिन, भरि आनँद उर कोश ॥ ४३ ॥

बहुरि जबै वृंदावन आये * घाट घाट मज्जन करि भाये ॥
सब मंदिरन दरश करि लीन्ह्यो * ज्ञान गूदरी डेरा कीन्ह्यो ॥
परशुराम तहँ रह्यो महंता * कृष्ण उपासक भाव करंता ॥
लख्यो गोसांईकी सब रीती * बढी करन सत्संगहि प्रीती ॥
तुलसिदासको करि सतसंगा * नव नव बढत प्रेमरसरंगा ॥
परशुरामके मंदिर माहीं * कृष्णरूप श्रीनाथ सोहाहीं ॥
वंशी लकुट काछनी काछे * मुकुट माथ माला उर आछे ॥
सोहति मूरति ललित त्रिभंगी * हरणहार हिय राधा संगी ॥
यक दिन तहँ सब दिनकी नाईं * दरशहेतु चलिगये गोसांईं ॥
परशुराम तहँ रह्यो महंता * तासु परीक्षा चह्यो करंता ॥
तुलसी करन दंडवत लागे * तब महंत बोल्यो अनुरागे ॥
मेरे वचन कछुक सुनिलेहू * फेरि द्वार दंडवत करेहू ॥

दोहा—अपने अपने इष्टको, नवन करैं सबकोय॥
इष्टविहीनपरशुरामजी, नवै सो मूरख होय॥४४॥
परशुरामके वचन सुनि, मानत हिये हुलास॥
सीतारमण सँभारिकै, बोल्यो तुलसीदास॥४५॥
कहा कहौं छबि आजुकी, भले बनेहो नाथ॥
तुलसी मस्तक तब नवै, धरो धनुष शर हाथ ४६॥
मुरली लकुट दुरायकै, धर्‍यो धनुष शर हाथ॥
तुलसी लखि रुचि दासकी,नाथ भये रघुनाथ॥४७

यह प्रत्यक्ष देख्यो संसारा * वृंदावन माच्यो जयकारा॥
परशुराम तुलसी पद गहेऊ * धन्य धन्य कहि आनँद लहेऊ॥
यकदिन ज्ञानगूदरी माहीं * होती हरिकी कथा सदाहीं॥
गये गोसांई श्रवण उमाहा * निरखे संत महंतन काहा॥
कोउ गद्दीपहँ बैठ महंता * कोउ उच्चासन महँ विलसंता॥
गद्दी महँ बैठावन लागे * भूमहँ बैठिगयो अनुरागे॥
कह्यो गोसांई सबन सुनाई * कथाश्रवणके दोष गनाई॥
कथा सुनत बीरा जे खाहीं * ते मल भक्षत नरकन माहीं॥
कथा सुनत बैठे उच्चासन * ते अर्जुन तरु होत पाप सन॥
कथा सुनहिं जे विना प्रणामा * ते विष वृक्ष होत अघ धामा॥
कथा सुनत जे सोवत जानी * ते अजगर होते अभिमानी॥
जे वाचक सम आसन बैठैं * ते गुरुतल्प पाप फल पैठैं॥

दोहा—जे निंदैं यदुपति कथा, अघहरनी मनहारि॥
ते शत जन्म प्रयंत लगि, श्वान होत दुखकारि४८॥

कथा होत जे करैं विवादा * ते खर सरठ होत मरयादा॥
जे हरिकथा सुनत शठ नाहीं * होत नरक लहि कोलव नाहीं॥
कथा विघ्न करते जे द्रोही * नरक भोगि पुर शूकर होही॥
ये दश दोष तुरंत विहाई * श्रीहरि कथा सुनहु सब भाई॥

सुनिके तुलसिदासके वयना * भरि आये जल प्रेमिन नयना ॥
तुंगासन सब दियो बिहाई * बैठे भूमि कथा शिर नाई ॥
ह्वैगे कथा समापत जबहीं * बोल्यो सन्त एक अस तबहीं ॥
षोडशकला कृष्ण सुखसारा * द्वादश कला राम अवतारा ॥
षोडश तजि द्वादश कल भजहू * समाधान करु नहिं घर ब्रजहू ॥
यहसुनि तुलसिदास सुख छाके * भये मिलनहारे वसुधाके ॥
रही दंड द्वैलगि सुधि नाहीं * सींचे सन्त सलिल तिन काहीं ॥
भई खबरि जब उठे गोसांई * पूछे संतभेद बरिआई ॥
दोहा-तुलसिदास बोल्यो वचन, यदपि कहब नहिं योग ॥
तद्यपि कहहुँ प्रसंग वश, सुनहु भेद सब लोग४९
रामहि जान्यो मैं लगि आजू * अति कृपालु कोशलमहराजू ॥
तुम तौ बारहि कला बताये * ईश्वरको अति भाव दृढाये ॥
महाराज पुनि ईश्वर रामा * जब किमि तजौं तासु मैं नामा ॥
यह सुनि जानि अनन्य उपासी * गहे चरण सब सन्त हुलासी ॥
यहि विधि करत विविध सत्संगा * तुलसी विपिन बसे रतिरंगा ॥
पुनि कछु काल माहँ चलिकाशी * तुलसिदास आये सुखराशी ॥
विनयपत्रिका जौन बनायो * ताको मंदिर मध्य धराये ॥
विनय कियो सन्मुख कर जोरी * सत्य होय विनती जो मोरी ॥
तौ यहि माहिं सही परिजावे * मोर दुसह दुख द्रुत मिटिजावे ॥
अस कहि कीन्ह्यो बंद केंवारा * गयो बहुर जब भो भिनसारा ॥
तुलसी पुस्तक गहि जब हेरी * मिली सही रघुपतिकर केरी ॥
वियन माहँ तब यह पद कीन्ह्यो * सो म इतने तक लिखि दीन्ह्यो ॥
पद-तुलसी अनाथकी परी रघुनाथ हाथ सही है ॥ १ ॥
दोहा-पुनि अति दुस्तर काल लखि, रामधामको जान॥
तुलसीदास विचार किय, बोल्यो सबन सुजान॥५०॥
सहि न जात रघुपति विरह, जान चहौं हरिधाम ॥
यह सुनिकै अति व्यथित भे, सकल संत मतिधाम५१

तिनहिं दियो उपदेश मम, ग्रंथ वेद मरयादि ॥
रामायण गीतावली, विनयपत्रिका आदि ॥ ५२ ॥
तिनहि सुनहु समुझहु सुरुचि, चलहु ग्रंथ अनुसार ॥
अंत समय हठि मिलहिंगे, दशरथराजकुमार ॥५३॥
अस कहि सहजहि आयगे, असी वरुणके तीर ॥
नयन मूंदि तनु अचल किय, भइ संतनकी भीर५४॥
बजे नगारे गगनमें, देखो परो विभाश ॥
दामिनिसों चहुँ ओरमें, चमक्यो चपल प्रकाश॥५५॥
संवत सोरहसै असी, असी वरुणके तीर ॥
सावन शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर ॥ ५६ ॥
भवसागरमें नाव सम, विरचि ग्रंथ मतिधीर ॥
चढि विमान गवनत भयो, जहँ निवसत रघुबीर५७॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥

अथ रामदासकी कथा।

दोहा-रामदासको यह सुनहु, अति विचित्र इतिहास ॥
हीराकोरक ग्राम यक, रह्यो द्वारका पास ॥ १ ॥

सात कोश नगरी ते रहेऊ ❋ रामदास तहँ वासहि गहेऊ ॥
व्रत एकादशि जागन हेतू ❋ जाय द्वारका कृष्ण निकेतू ॥
विधि बहु काल बीति बहु गयऊ ❋ रामदास बूढो अस भयऊ ॥
स्वप्ने हरि भाख्यो करि नेहू ❋ बैठे करहु जागरण गेहू ॥
तबहूं रामदास नहिं मान्यो ❋ स्वप्नेमें पुनि नाथ बखान्यो ॥
अब हम रहिहैं भवन तुम्हारे ❋ लाय शकट लेचलहु उदारे ॥
रामदास हरिवासर काहीं ❋ शकट सहित गो मंदिर माहीं ॥
अर्द्ध निशा खिरकी खुलि गयऊ ❋ लै मूरति शकटहि धरि दयऊ ॥
लै प्रभु रामदास द्रुत भागे ❋ भोर भये पंडा सब जागे ॥

जान्यो रामदास किय चोरी * चढे तुरंत चले सब दौरी ॥
आरत आवत देखि सवारा * रामदास ह्वैगे भय भारा ॥
वापी माहिं फेंकि प्रभु काहिं * भाग्यो यवन और सुधि नाहीं ॥

दोहा-रामदासको चोर गुणि, नेजा हने सवार ॥
अपने तनुमें घाव लिय, श्रीवसुदेवकुमार ॥ २ ॥

पंडा बहुरि बावली आये * रुधिर भरी लखिकै भय पाये ॥
मूरति खैंचि धरन तहँ कीन्ह्यो * स्वप्ने महँ प्रभु तेहि कहिं दीन्ह्यो ॥
हम अब रामदास गृह रहिहैं * अबते तुम्हरो अन्न न लहिहैं ॥
विजय मूर्ति लीजै पधराई * चलिहै पूजा भोग सदाई ॥
मम मूरति भरि तौलि सु हेमा * लेहु जाहु घर चाहु जो क्षेमा ॥
पंडा मान्यो नाथ रजाई * कह्यो सोन प्रभु देहु मँगाई ॥
रामदाससों कहु प्रभु बानी * धरि दीजै तियकी नथ आनी ॥
रामदास नथ लै धरि दीन्ह्यो * पंडा मूरति तोलन कीन्ह्यो ॥
मूरति पलरा ऊरध भयऊ * नथको पलरा महि धरि गयऊ ॥
रोवत पंडा निज घर आये * रामदास घर प्रभु पधराये ॥
अबलों सो प्रत्यक्ष जगमाहीं * श्रीरणछोड विराज तहाहीं ॥
विजय मूर्ति पंडा पधराये * अबलों तहँ सो नाथ सोहाये ॥

दोहा-रामदासकी यह कथा, मैं वरण्यो संक्षेप ॥
यामें कछू न जानिये, हरिजन चरित प्रलेप ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥

अथ आशकर्णकी कथा ।

दोहा-आशकर्णनरनाहको, अब सुनिये आख्यान ॥
बडो संतसेवी रह्यो, बडो भूप मतिवान ॥ १ ॥

नेम रहै भूपतिको ऐसो * करै संत दरशन रह जैसो ॥
लीन्हे विना संत पद नीरा * करै प्रमाण भूप मतिधीरा ॥
एक समय कहुँ रहे विदेशू * वर्षा भई भूरि तेहिं देशू ॥

जहँ तहँ गई सैन्य वश वर्षा ❋ रह्यो अकेल भूप हत हर्षा ॥
लग्यो प्यास भूपति कहँ भारी ❋ लह्यो तहां न संत पद वारी ॥
तृषा विवश भूपति गिरि गयऊ ❋ विन चरणोदक जल नहिं लयऊ ॥
तब हरि साधुरूप धरि आये ❋ दै चरणोदक जलहि पियाये ॥
भूप उठ्यो जब कियो सँभारा ❋ तौन साधुको कहुँ न निहारा ॥
तब भूपति जान्यो प्रभु काहीं ❋ आयो करि गलानि घर माहीं ॥
भूपति सकल विभूति विहाई ❋ लियो विराग सुमिरि यदुराई ॥
बस्यो विपिन तजि संसृति संगा ❋ रोज रँग्यो रामहिंके रंगा ॥
तजि शरीर कछु दिन महँ भूपा ❋ राम धामको गयो अनूपा ॥

दोहा–आशकर्ण इतिहास बहु, मैं नहिं किया बखान ॥
यहि विधि औरहु चरित सब, लीजै करि अनुमान२॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे द्विषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६२ ॥

अथ नरवाहनराजाकी कथा।

दोहा–नरवाहन राजा चरित, सुनहु सुमति चितलाय ॥
हित हरिवंश सुशिष्य सो, रह्यो प्रेम रस छाय ॥१॥

रह्यो संत सेवी नरवाहा ❋ आनै निज घर संत उछाहा ॥
जस तसकै धन जोरि अनंता ❋ भोजन करवावै बहु संता ॥
यक दिन लूटि लियो यक शाहू ❋ पाय अमित धन सहित उछाहू ॥
बहुत संत भोजन करवाया ❋ तौन साहुको कैद कराया ॥
भयो साहु अति दुखी तहांहीं ❋ बहुत दिवस बीते तेहि काहीं ॥
यक दिन यक भूपतिकी चेरी ❋ लागी दया साहु जब हेरी ॥
पूंछ्यो साहुहि सो सब गायो ❋ तब चेरी भोजन करवायो ॥
साहुहि दियो उपाय बताई ❋ भोर कह्यो तुम अस गोहराई ॥
मैं हरिवंश शिष्य हौं राजा ❋ राधावल्लभ दास दराजा ॥
अस कहि गई भवनसो चेरी ❋ साहु जगत गइ निशा घनेरी ॥
सोए भये ऊंचे गोहरायो ❋ हित हरिवंशहि नाम सुनायो ॥

राधारमण उपासक भाख्यो ❋ भूपति सुनत मिलन अभिलाष्यो ॥

दोहा–भेरी दियो कटाय द्रुत, दियो लूट सँगताय ॥
धन दै अति सत्कार करि, दीन्ह्यो घरहि पठाय॥२॥
साधु आय वृंदावनै, हित हरिवंश समीप ॥
शिष्य भयो वर्णन कियो, नरवाहनै महीप ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे त्रिषष्टितमोऽध्यायः॥ ६३ ॥

अथ चतुर्भुजदासकी कथा।

दोहा–कहूं चतुर्भुज दासको, यह अनुपम परबंध ॥
श्रोता सुनहु सुजान सब, जानि कृष्ण सम्बंध ॥ १ ॥
रह्यो शिष्य हरिवंशको, भजन करै दिन राति ॥
राधारमण उपासना, प्रेम मग्न सब भांति ॥ २ ॥
भक्त चरण रज शिर धरै, करै सदा सतसंग ॥
रहैं भक्त येते सदा, दास चतुर्भुज संग ॥ ३ ॥

कवित्त–वर्द्धमान गंगलजी नारायण भट्ट खीवा त्यों अधारजी आशाधर देवराज है ॥ काठि हरियादास खोखूराम ऊद्धाराम रामदास विमलानंदजी रामराज है ॥ श्यामदास छीहादास दलूदास पद्मदास मनोरथ जा रणदास चाचाराम आन है ॥ तैसही गुरु सधाई चांदनदास नापादास लक्ष्मण नफरदास सूर्यदास छाज है ॥ १ ॥ कुंभदास खेमदास वैरागी भावनदास विरही भरत हरकेशजी नफरदास ॥ लूटेदास हरि अयोध्यादास चक्रपाणि त्यों त्रिलोकदास पुपादीराम विजुलीदास ॥ उद्धवदास सोमदास भोमदास सोमनाथ विकोदास विशाखाजी गणेश त्यों मुकुंददास ॥ त्रिविक्रमजी रघुदास वाल्मीकि जगादास झांझूराम हरिभूराम हरिदास वृद्ध व्यास ॥ २ ॥ लाखाराम छीतदास कपूरदास देवानंद नरहरिजी मुकुंददास हरिदास संतराम ॥ नंददास विष्णुदास छीतमदास द्वारकादास माधोदास माडदास रूपा-

दास अभिराम ॥ दामोदरदास नरहरि भगवानदास बालदास कान्ह-
दास केशवदास हतकाम ॥ प्राग त्यों गोपालदास लोहँग त्यों केशवजी
हरिनाथ भीमदास बालकृष्ण मतिधाम ॥ ३ ॥

दोहा-श्रह्लदास विद्यापतिहुँ, तैसहि भरत मुकुंद ॥
दास बहोरन चतुरपुनि, दास गोविंद गोविंद ॥४॥
तथा बिहारीदास पुनि, गंगादास दयाल ॥
लालदास भीषम परम, येते भक्त विशाल ॥ ५ ॥

हरि पद प्रेम मगन सब संता * दास चतुर्भुज संग वसंता ॥
संत मंडली संग सोहाये * कबहुं गोडवाने प्रभु आये ॥
तहँ जन मनुज मारि बलि देहीं * वाम उपासक प्रेत सनेही ॥
इनको परचो जाय जब डेरा * बलि हित लैगे सुत द्विजकेरा ॥
तासु मातु रोवत अति धाई * गिरी चतुर्भुज पद बिलखाई ॥
बलिहित मोर पुत्र लेजाहीं * त्राहि त्राहि वरजो इनकाहीं ॥
ते शठ सकल बजावत बाजे * लै गवने द्विजसुत बलि काजे ॥
देखि चतुर्भुज दाया आई * कह्यो सोच मति करु तैं माई ॥
चले आप लै संत समाजा * गे मंदिरमहँ वारण काजा ॥
कह्यो मोहिं बलि तुम देदेहू * भूसुर सुवन पठावहु गेहू ॥
ते खल संत वचन नहिं माने * बालकको बलि देन तुराने ॥
तबहिं संतमंडल लै साथा * गह्यो आय देवीको हाथा ॥

दोहा-दास चतुर्भुज तेजको, सहि न सकी सो देवि ॥
उचटि शिला बाहिर परी, मनहुँ पषानरकेवि ॥६॥

जे बलि देन हेतु शिशु लाये * ते सब गिरे मूर्च्छि भय पाये ॥
देवी कन्या वपु धरि आई * दास चतुर्भुज पद शिरनाई ॥
दास चतुर्भुज दिय गलमाला * ऊर्ध्वपुंड्र दै भाल विशाला ॥
देवीको दीन्ह्यो उपदेशा * रहैं दुष्ट अब नाहिं यहिं देशा ॥
जो खलभूप भाजि घर आयो * ताको देवी स्वप्न देखायो ॥
शिष्य चतुर्भुजके सब होहू * नातो मैं हनिहौं करि कोहू ॥

राजा प्रजा भोर उठि आये * दास चतुर्भुज पद शिर नाये ॥
कीन्ह्यो शिष्य चतुर्भुजदासा * भयो राज्य भर भक्ति प्रकाशा ॥
हरी कथा यक दिन कहुँ होती * श्रोता सुनहिं भक्ति रस सोती ॥
एक साहु धन चोर चोराये * दौरे भट तब चोर पराये ॥
बचत न जानि चोर भय पाई * कथा समाजहि रह्यो लुकाई ॥
कथा कही यह तहां पुराना * मंत्रहि लेत जन्म भो आना ॥

दोहा-यह सुनि चोर तुरंतही, मुद्रा दियो पचास ॥
भयो शिष्य कंठी लियो, तिलकहु दिय सहुलास ॥७॥

पाछे साहु सिपाही आये * चोर चोर कहि ताहि बताये ॥
चोर कह्यो मैं अहौं न चोरा * हैगो तुम्हें सबनको भोरा ॥
कह्यो सिपाही अबहिं चोराई * इतै भागि अब कह शिरनाई ॥
चोर कह्यो तब करि बरजोरी * जो यहि जन्म कियों मैं चोरी ॥
तो गोला दै मैं जरिजाऊं * तब यह परचो भूप घर न्याऊं ॥
राजा लियो चोरसों गोला * गोला देत चोर अस बोला ॥
जो यहि जन्म कियों मैं चोरी * दहै दहन तो मोरि गदोरी ॥
अस कहि सो गोला दै सूझ्यो * साहुसिपाहीसों द्रुत बूझ्यो ॥
वृथा साहुको चोर बनायो * अस कहि तिनको कैद करायो ॥
यह देखहु सत्संग प्रभाऊ * तुरत चोरको साहु बनाऊ ॥
फलीभूत होतो विश्वासा * तहँ अस तुलसीदास प्रकाशा ॥
कौनिहु सिद्धि कि बिन विश्वासा * बिन हरिभजनकि भवभयनाशा ॥

दोहा-अपने हाथन दै हथा, तिय पूजहिं लखि भीति ॥
सफल फलै मन कामना, तुलसी प्रेम प्रतीति ॥ ८ ॥

नृपति सिपाहिन पै अनखाई * कह्यो अहै यह मम गुरुभाई ॥
ताको चाह्यो चोर बनावन * ताते लायक सूरी पावन ॥
तब सो चोर कह्यो अस रोई * शूरी नाथ इन्हैं नहिं होई ॥
सही साहु सम्पति मै चोरयो * अस कहि सिगरी द्रव्य बहोरयो ॥
यह जानहु सब संत प्रभाऊ * रह्यो न मोर बचब जग काऊ ॥

संत प्रभाव देखि सो राजा * तजि जग मिलिगो संत समाजा ॥
कछु दिन तहां चतुर्भुज दासा * संत सहित किय सुखित निवासा ॥
गवने तहँते मांगि विदाई * कछुक दूरि आये हरि ध्याई ॥
अधपक्व चना रहे यक खेतू * संत उखारयो भोजन हेतू ॥
दौरि रक्षकन लियो छोडाई * गारी दीन्हें भीति देखाई ॥
बहुरि खेत निज पेखत भयऊ * ढेला भरि खेतहि रहिगयऊ ॥
गहे चतुर्भुज दासहि चरणा * तब प्रसन्न ह्वै प्रभुअस वरणा ॥

दोहा-करहु संत सेवन सदा, होई नहिं कछु हानि ॥
लखे जाय खेती निजै, प्रथमहुँते अधिकानि ॥९॥
आय चतुर्भुजदास ढिग, भये शिष्य लै मंत्र ॥
किये संत सेवन सकल, रहे न जग परतंत्र ॥१०॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे चतुःषष्टितमोऽध्यायः ॥६४॥

अथ अंगदसिंहकी कथा ।

दोहा-कहौं विचित्र चरित्र मैं, सुनिये संत उदार ॥
कीन्हो अंगदसिंह ज्यों, जगमें राजकुमार ॥१॥

नाभाकी छप्पय-नगअमोल यक आहि ताहिको भूपति यांचे ॥
साम दाम बहु करै दास नाहिन मनकांचे ॥
एक समय संकटमें परि पानी महँ डारयो ॥
प्रभू तिहारी वस्तु वदनते नाम उचारयो ॥
पांच दोह शतकोशते हरि हीरा लै उर धरयो ॥
अभिलाषभक्तअंगदकोपुरुषोत्तमपूरणकरयो ॥ १ ॥

दोहा-रह्यो सैनगढ एक कहुँ, तहँको अंगद वासि ॥
दीन सलाह सुनाम जेहि, तहँको भूप हुलासि ॥२॥

अंगदसिंह रहे नृप काका * रही दुहुँनकी प्रीति पताका ॥
अंगद रह्यो विषय आधीना * तासु नारि हरिभक्त प्रवीना ॥

यक दिन तियके गुरु घर आये ❀ सो सत्कारचो अतिचितचाये ॥
गुरु चेली यक दिन एकांता ❀ बैठ रहे वर्णत वेदांता ॥
अंगद आय गयो तेहिं काला ❀ लखि यकांत किय कोप कराला ॥
गुरु विमनस ह्वै भवनहि गयऊ ❀ तिय कीन्ह्यो व्रत अंबु न लयऊ ॥
अंगद निशिमहँ जाय मनायो ❀ तब तिय पतिकहँ शपथ करायो ॥
पद परि जो गुरु ल्याउ मनाई ❀ करहु साधु सेवनहु सदाई ॥
तब राखिहैं कंत हम प्राना ❀ नाहिं पैहो मम अपश निदाना ॥
अंगदसिंह शपथ करि दीन्ह्यो ❀ संतचरण सेवन सुख भीन्ह्यो ॥
सेवत संत भई मति विमला ❀ छूटी विषय वासना सकला ॥
बढी कृष्ण दरशन अभिलाषा ❀ यथा तृषित जल चहै वैशाषा ॥

दोहा—भूप सलाह सुदीन पुर, चढ्यो शाह यक काल ॥
भज्यो सूबै सैन्य युत तब बोल्यो महिपाल ॥ ३ ॥

अंगद तुही जाहु रण काहीं ❀ अंगद चल्यो शंक कछु नाहीं ॥
कीन्ह्यो समर बीर परिपाटी ❀ लीन्ह्यो सूबाकी शिर काटी ॥
तेहि टोपी महँ क्षिति गंभीरा ❀ लागे रहैं एक शत हीरा ॥
बडो जवाहिर एक अमोला ❀ अंगद ताहि तुरंतहि खोला ॥
कह्यो मनहिमन हे जगदीशा ❀ यह हीरा योगहि तुव शीशा ॥
अस कहि सो हीरा घर राख्यो ❀ और सबहिं भूपहिं देराख्यो ॥
कछु दिनमें भूपति सुधि पाई ❀ मांगन लग्यो पठिक बरियाई ॥
सो हीरा अंगद नहिं दीन्ह्यो ❀ तब भूपतिअमरष अतिकीन्ह्यो ॥
अंगद प्रिय भगिनी कहँ बोली ❀ कह्यो सकल आशय निजखोली ॥
जो अंगदहि गरल तैं देहै ❀ चारि ग्राम हमसों ते पैहै ॥
ग्राम लोभवश भगिनि विकारी ❀ अंगदको विष देन विचारी ॥
गरलवलित राचि सकल रसोई ❀ अंगद ढिग लैगै छल मोई ॥

दोहा—तब अंगद भगवानको, दीन्ह्यो भोग लगाय ॥
सँग भोजन हित भगिनिके, तनय लियो बोलवाय ४॥

भगिनी कह्यो सो आजु न ऐहै ❀ काज विवश घरही महँ खैहै ॥

तब अंगद भनेजके नेहा ❋ अश्रुपात सींच्यो सब देहा ॥
तब भगिनी लखि अंगद प्रीती ❋ धिक्धिक्कहनिजमानिअनीती ॥
चली भगिनि लै थार उठाई ❋ अंगद कह कत चली पराई ॥
तब भगिनी सब कह्यो हवाला ❋ जौन प्रबंध रच्यो महिपाला ॥
तब अंगद भगिनी पर कोपी ❋ हरिप्रसाद गुणि भोजन चोपी ॥
प्रथमहि तू कत म्वहिं न बुझायो ❋ विषयुत मैं हरि भोग लगायो ॥
अब तो तजौं न हरि परसादा ❋ जात महाप्रसाद मर्यादा ॥
अस कहि दै कोठरी केंवारा ❋ विषयुत भोजन कियो अहारा ॥
हरिप्रताप विष ताहि न लाग्यो ❋ तनुते और रोगगण भाग्यो ॥
भूपतिहूं यह सुन्यो हवाला ❋ तदपि तज्यो नहिं कुमतिकराला॥
अंगद हरिविमुखी नृप जानी ❋ पुरी गमनहित मति हुलसानी ॥

दोहा—जगन्नाथ अर्पण हितै, लै हीरा निज पास ॥
अंगद कियो पयान द्रुत, सुमिरत रमानिवास ॥ ६ ॥

कोस द्वैक पुरते कढि गयऊ ❋ यह सुधि भूपति पावत भयऊ ॥
तब अंगद पर फौज पठाई ❋ लावहु हीरा तुरत छडाई ॥
अंगद करत रहैं हरि पूजा ❋ घेर्‌यो फौज रह्यो नहिं दूजा ॥
करे पुकारि सबै दलवारे ❋ प्राण जात अब तुरत तिहारे ॥
नातो हीरा देहु नरेशै ❋ शिर काटन नृप दियो निदेशै ॥
तब अंगद हीरा लै हाथा ❋ बोले वचन सुनहु जगनाथा ॥
यह हीरा हम तुमहिं चढावैं ❋ तुम्हरे निकट न आवन पावै ॥
अस कहि जय जगदीश उचारी ❋ दियो फेंकि गंभीरहि वारी ॥
सैनिक हीरा फेंकत देखे ❋ अति अचरज मनमहँ सब लेखे ॥
नृपहि जाय वृत्तांत सुनाये ❋ राजहु तुरत दौरि तहँ आये ॥
सर कटाय तहँ जाल फेंकाई ❋ कंकर कंकर प्रति हेरवाई ॥
हार गयो हीरा नहिं पायो ❋ तब अंगदको हरि स्वप्नायो ॥
जो अरप्यो मेरे हित प्यारे ❋ सो हीरा हिय हार हमारे ॥

दोहा–आवहु नीलाचल तुरत, मोर दरश करि लेहु ॥
संत समाज विराजिकै, करहु अपूरव नेहु ॥६॥

अंगद सुखित पुरी कहँ गयऊ * हरि हिय हीरा हेरत भयऊ ॥
मानि महाप्रभु संतन जोरी * पूज्यो हुलसि बहोरि बहोरी ॥
भूप सलाह दीन सुनि सिगरो * मान्यो सकल मोहिं सों बिगरो ॥
पठै पुरीमहँ विप्र समाजा * बोल्यो अंगद मानि स्वकाजा ॥
आशू चालि अंगद कहँ ल्यायो * निज अपराधहि क्षमा करायो ॥
आपहु लिय अंगदकी रीती * कीन्ह्यो संत चरणमहँ प्रीती ॥
डौंडी पिटवायो निज देशा * सेवहि संत मनुष्य हमेशा ॥
राममयी भै सिगरी राजू * भजन लगे सादर यदुराजू ॥
अंगदको निज भवन टिकायो * निज घर तासु अधीन करायो ॥
भूप विपुल मंदिर बनवायो * सदावर्त्त सब ठौर चलायो ॥
यह अंगद सतसंग प्रभाऊ * भयो अनन्य भक्त नृपराऊ ॥
नित प्रति संतन सेवन करहीं * संत चरणरज शीशहि धरहीं ॥

दोहा–पेखहु श्रोता सकल तुम, यह सतसंग प्रभाव ॥
अघी नृपति हरिजन भयो, लखि अंगदहि प्रभाव ॥७॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे पंचषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६५ ॥

अथ चतुर्भुजकी कथा।

दोहा–भूप करौलीको रह्यो, नाम चतुर्भुज दास ॥
श्रोता सुनहु सप्रेम अब, तासु विमल इतिहास ॥१॥

तामें नाभाकी छप्पय।

भक्त आगमन सुनत जाय सन्मुख हो धाई ॥
सदन आनि सत्कारि सदृश गोविंद बडाई ॥
पादप्रक्षालन स्वहथ राय रानी मन सांचे ॥
धूप दीप नैवेद्य बहुरि तिन आगे नाचे ॥

यह रीति करौलीधीशकी तन मन धन आगे धरै ॥
चतुर्भुज नृपके भक्तकी कौन भूप सरवरि करै ॥ १ ॥

दोहा–अपने पुरके चारि दिशि, योजन यक प्रयंत ॥
बैठ रहैं जनजात पथ, बोलि लै आवैं संत ॥ २ ॥

राजा निज करसों पग धोई * करै संत सत्कार बडोई ॥
संत जौन मांगै सो पावै * लहि सत्कार और थल जावै ॥
दास चतुर्भुज सुयश महाई * रह्यो सकल भूमंडल छाई ॥
सो यश सुनि जैपुरको राजा * कह्यो एक दिन मध्य समाजा ॥
दासचतुर्भुज भक्त बडोई * देत अपात्र पात्र नहिं जोई ॥
तब यक पंडित कह्यो बखानी * अबै न तेहि आशय तुम जानी ॥
तब भांडहि पठयो भूपकेतू * रीति चतुर्भुज जानन हेतू ॥
संतवेष धरि भांड सिधारे * सुनत चतुर्भुज वेगि हँकारे ॥
पूछ्यो भूप जानि तिन संता * भांड वेश खुलिगयो तुरंता ॥
लगे बजावन करि निज गाने * तिनको भांड चतुर्भुज जाने ॥
संत वेष वश अति सन्मान्यो * दीन्ह्यो विपुल वित्त सन्मान्यो ॥
रत्न जडित डब्बा यक दीन्ह्यो * तेहिं अंतर कौडी यक कीन्ह्यो ॥

दोहा–लै डब्बा कर भांड तब, जैपुर गये सिधारि ॥
डब्बा नृप आगे धरयो, भरख्यो भूप निहारि ॥३॥

डब्बा युत रतन मुक्ताके * भीतर धरी काकनी ताके ॥
सोइ पंडित बोल्यो अस बानी * आशय लेहु तासु अस जानी ॥
रत्नजडित डब्बा जो दीन्हो * संत वेष सत्कारहि कीन्हो ॥
जो वराटिका भीतर राख्यो * भांडन केरि पात्रता भाष्यो ॥
दास चतुर्भुजके मन आयो * सोउ परीक्षा हेत पठायो ॥
जैपुर नृप सुनि पंडित वानी * कह्यो सत्य तुम कह्यो बखानी ॥
आप करौलीको अब जाहू * सब वृत्तांत बूझि इत आहू ॥
सुनि पंडित अति आनँद माना * कियो चतुर्भुज निकट पयाना ॥
द्वार खडो जाहिर करवायो * राजा सादर ताहि बोलायो ॥

पंडित तहां लखी यह रीती * बँधी रहै द्वै घटिका नीती ॥
घटी बँधी यक रहै रामकी * तामें सुधि कोउ करनकामकी ॥
घटी कामकी जब पुनि आवै * तामें सब निज काम चलावै ॥
दोहा-सुवा सारिका द्वै रहैं, ते बोलैं अस बानि ॥
सो दोऊ दोहा इतै, मैं अब करहुँ बखानि ॥ २ ॥
राम कहे सबको भलो, और कहे दुख होय ॥
दुर्लभ मानुष जन्मको, डारु वृथा कत खोय ॥३॥
सभा चतुर्भुज भूपकी, उठन लगै जेहिं काल ॥
तब दोऊ शुक सारिका, बोलैं वचन रसाल ॥ ४ ॥
जपो रामको नाम नृप, वृथा जन्म नहिं जाय ॥
नारि नय नश्वर लागतै, ज्ञान विराग नशाय ॥ ५ ॥
यह चरित्र पंडित जब देख्यो * अचरज तासु रीति मन लेख्यो ॥
विदा होन लाग्यो द्विजराई * मांग्यो नृपसों सुवा विदाई ॥
राजा सादर शुक देडार्यो * लै पंडित जैपुरहि सिधार्यो ॥
दास चतुर्भुजकी सब रीती * कीर कहेगो संयुत प्रीती ॥
सकल सभासद तौन सभामा * कहत रहे कोऊ नहिं रामा ॥
कहैं परस्पर विषयी बाता * कोहुको नहिं परलोक देखाता ॥
पंडित कह्यो सुनहु महराजा * दास चतुर्भुज सुयश दराजा ॥
एक जीहसों कहि न सकतहों * धन्य धन्य तेहि जन्म भणतहों ॥
तब राजा अस वचन सुनायो * वरणो यथा देखि तुम आयो ॥
कह्यो विप्र पूंछ्यो शुक याहीं * राजा पूंछ्यो तेहिं क्षण माहीं ॥
वर्णहु कीर चतुर्भुज रीती * तब शुक बोल्यो जानिअनीती ॥
दोहा-धिक् धिक् है तेरी सभा, धिक् धिक् भूपति तोहिं॥
राम सुन्यो नहिं काहु मुख, अचरज लाग्यो मोहिं॥६॥
पुनि पंडित ते शुक कह्यो, मोहिं सभाते टारु ॥
तहां न मैं यक क्षण रहौं, जहां न राम उचारु ॥ ७ ॥

दरबारी यमदूत सब, राज सत्य यमराज ॥
ऐसी पातकिनी सभा, कहा मोर इत काज ॥ ८ ॥
ऐसे सुनिकै शुक वचन, खुलि गे हिये केंवार ॥
भूप करन लाग्यो भजन, कीन्ह्यो भक्ति प्रचार॥९॥
सहित समाज दराज सब, जैपुरको महराज ॥
गयो करौलीको तुरत, मिलन चतुर्भुज काज १०॥
मिल्यो चतुर्भुजको हुलसि, लहि उपदेश अखंड ॥
सोइ रीति वर्तत भयो, छूटि गयो यमदंड ॥ ११ ॥
सकल चतुर्भुजकी कथा, जो इत करौं प्रचार ॥
ग्रंथ रामरसिकावली, होय अमित विस्तार ॥ १२॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे षट्षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६६ ॥

अथ पृथ्वीराजकी कथा।

दोहा-बरणों सहित उछाह मैं, पृथ्वीराज कछवाह ॥
कीन्ह्यो विमल चरित्र जो, जैपुरको नरनाह ॥ १ ॥

पयहारीको शिष्य सुजाना * भयो महाभागवत प्रधाना ॥
करै साधु सेवन प्रति रोजू * आनै भवन साधु करि खोजू ॥
करै प्रीति युत गुरुसेवकाई * यहि विधि बीत्यो काल महाई ॥
इक दिन कह्यो नृपति पयहारी * जानि द्वारका सुमति हमारी ॥
राजा कह्यो चलहु लै मोहीं * जो प्रभु होहु मोहिं पर छोहीं ॥
गुरु कह भली बात नृप भाषा * तोहिं लै चलन मोर अभिलाषा ॥
भई खबरि सब नगर मझारी * भूप जात द्वारका सिधारी ॥
तब मंत्री अतिशय दुख पायो * सपदि गुरूके निकट सिधायो ॥
विनती किय प्रभु तुव सँग जैहैं * नाहिं लेवाय जैये सँगमाहीं ॥
जो राजा प्रभु तुव सँग जैहै * साधुनको सेवत नाहिं ह्वैहै ॥
अधम देश यह राक्षस केरो * संतसेव तुव चारित घनेरो ॥

ऐसी सुनि मंत्रीकी बानी ❀ गुरु स्वीकार कियो विज्ञानी ॥
दोहा-पृथ्वीराजको बोलिकै, भाष्यो गुरू बुझाय ॥
इतै द्वारिका सकल फल, पैहौ बसा बनाय ॥ २ ॥
बिमनस ह्वै गुरु शासन मानी ❀ रह्यो भूप निज पुरी विज्ञानी ॥
एक समय निज रानी संगा ❀ सोवत रह्यो भूप रति रंगा ॥
देख्यो स्वप्न प्रत्यक्ष तहांही ❀ गयो द्वारका नगरी मांहीं ॥
करि मज्जन गोमतिके कूला ❀ लियो छाप नृप युगभुज मूला ॥
करि द्वारिकाधीशको दर्शन ❀ आयो बहुरि पुरी नृप हर्षन ॥
जाग्यो नृप देख्यो सुख मूला ❀ तनु मज्जित अंकितभुजमूला ॥
स्वप्न यथारथ भयो नरेशै ❀ गुरु गमनत जस दियो निदेशै ॥
संत महंत सबै जुरि आये ❀ नृप चरित्र लखि अचरज गाये ॥
यहि विधि भयो प्रथै कछवाहा ❀ गढ आमेर धनी नरनाहा ॥
वैद्यनाथको यक द्विज गयऊ ❀ पूरब कबहूं अंध सो भयऊ ॥
धरन कियो द्वारे व्रत साता ❀ कह्यो स्वप्नमहँ हर यह बाता ॥
भाग्य विवशते नेत्र विहीना ❀ मैं नाहिं सकों चक्षु तोहिं दीना ॥

दोहा-शिव शासन सुनि विप्रसों, बिलिखान्यो नहिं मानि॥
नेत्र हेत शिव द्वारमें, पुनि बैठ्यो व्रत ठानि ॥ ३ ॥
सतयें व्रत शिव स्वप्नमें, भाष्यो द्विजहि बुझाय ॥
तू आमेर धनी नृपति, पृथीराजपहँ जाय ॥ ४ ॥
पोंछित तासु शरीरको, पट लै दृगन लगाउ ॥
यदपि लिख्यो नहिं भागमें, तदपि नेत्र तैं पाउ ॥ ५ ॥
शिव शासन सुनि विप्र सो, गढ आमेर सिधारि ॥
पृथीराज तनुको सुपट, लियो आंखि निज धारि ॥ ६ ॥
रह्यो जन्मको अंध द्विज, अंबक लह्यो विशाल ॥
और चरित्र विचित्र है, पृथ्वीराज भूपाल ॥ ७ ॥

जब आमेर धनी नृपति, पृथ्वीराज कछवाह ॥
त्यागो तब तनु भासअति, देख परयो नभ मांह ॥८॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे सप्तषष्टितमोऽध्यायः॥ ६७॥

अथ मधुकरशाहकी कथा।

दोहा-मधुकर शाह महीप यक, नगर ओडछेमाहिं ॥
भयो संत सेवी विमल, कहौं चरित सब पाहिं ॥ १ ॥

तासु नेम अस रह्यो विशेखे * संत जाति महँ भेद न देखे ॥
माला तिलक देखि सत्कारे * करि पूजन षोडशोपचारे ॥
भवन मध्य भोजन करवाई * निज शिरमहँ चरणोदक नाई ॥
भूपति मधुकरकी अस रीती * चलि आई बहुकाल सप्रीती ॥
प्रगट्यो यश नृपको नवखंडा * भूप भागवत महाउदंडा ॥
समय एक मिलि धूर्तन चारी * लेन परीक्षा करी तयारी ॥
एक रोज बहु रजक बोलाई * साधु वेष तनु दियो बनाई ॥
खरगर करि तुलसीकर माला * ऊर्ध्वपुंड्र दियो भाल रसाला ॥
यहि विधि रजकन स्वांग बनाई * दियो भूप दरबार पठाई ॥
देखत भूप साधु मनमानी * आगे चलि अतिशय सन्मानी ॥
करि पूजन षोडशोपचारो * धोयो निज कर खरपद चारो ॥

दोहा-पुनि भोजन करवाय बहु, करि अतिशय सत्कार॥
जोरि पाणि बोल्यो वचन, धिक् धिक् भाग हमार २॥
भूतलमें अबलौं मिले, द्वैपदके बहु संत ॥
चारि चरणके आजुहीं, देख्यों संत लसंत ॥ ३ ॥
धरणीपतिकी मति विमल, देखि पाय सत्संग ॥
तजे रजोगुण रजक सब, रँगे रामके रंग ॥ ४ ॥
परि पुहुमीपतिके चरण, भवन भूति सब त्यागि॥
गही अनन्य उपासना, ज्ञाननिशामहँ जागि ॥५॥

त्यागन लग्यो शरीर जब, मधुकर अतिमतिधीर॥
लखि संतनकी ओर सब, गगन प्रकाश गँभीर॥ ६॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे अष्टषष्टितमोऽध्यायः ॥६८॥

अथ रामराजाकी कथा।

दोहा–दक्षिण दिशिके देशमें, रसिक शिरोमणि भूप॥
भये रामराजा कहूं, तासु चरित्र अनूप॥ १॥

कवित्त–रसिक समाज जोरि रोजही विराचि रास, राम रसरंग रँगि राजा लखै रासको॥ एक दिन रासहीमें राजा लख्यो रामरूप, पर साकेतमें जो सोहै दिव्य भासको॥ अर्पण विचारि अर्प्यो आपनी सुकन्या काहिं, मान्यो नहिं प्रेम छकि लोकलाज नाशको॥ रघुराज संतन समाज जुरि राजसुता, दीन्ह्यो वास संपति दै ताहीके अवासको॥ १॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९॥

अथ रामराजाकी राणीकी कथा।

दोहा–जासु रामराजा चरित, वरण्यो विराचि कवित्त॥
कहौं तासु रानी चरित, संत चरण रत चित्त॥ १॥

कवित्त–सोई रामराजा एक समय मथुराको आय, संतन समाज जोरि कीन्ह्यो सत्कार है॥ जौन द्रव्य लायो सो लगायो संतविप्रनमें जेहै कैसे भौन अब कीन्ह्यो सो विचार है॥ पंचशत मोहरके चूडा खोलि रानी दियो ताही समै आये नाभा परम उदार है॥ चूडा तासु कर पहिरायकै निहारचो छबि, भूप जाय भौन भेज्यो धन जो उदार है॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे सप्ततितमोऽध्यायः॥ ७०॥

अथ कूवाजीकी कथा।

दोहा–अब कूवाजीको कहौं, अति सुंदर इतिहास॥
जाहि सुनत सब संतजन, मानत हिये हुलास॥ १॥

छंद—यक रह्यो कूवा नाम हरिजन जाति तासु कुम्हारकी ॥
सो भयो भक्त प्रधान है मति संतके सतकारकी ॥
जो होय रूखो सूख घर सो संतजनन खवायके ॥
पुनि करै भोजन आप संतन चरण जल शिर नायके ॥ १ ॥
यक दिवस घर कछु रह्यो नाहिं तब गयो लेन उधार है ॥
यक वणिक बोल्यो कूप खनतौ पाउ वित्त अपार है ॥
सो मानि लाग्यो खनन कूपहि पाय धन घर लायके ॥
सब साधुजनन खवाय मान्यो वृत्ति भली बनायके ॥
कूप भयो गंभीर यक दिन सकल मांटी धसिगई ॥
सब लोक जान्यो मरयो कूवा वणिककी निंदा भई ॥ २ ॥
षट् मास बीते जाय कोउ तहँ राम धुनि सुनि जकिरह्यो ॥
पुनि आय पुरजन सो सकल जो सुन्यो कौतुक सो कह्यो ॥
जन जाय सब खनि मृत्तिका कूवै लख्यो बैठो तहां ॥
तेहिं ऐंचिकै बाहर कियो माच्यो कोलाहल पुर महा ॥ ३ ॥
मुख राम धुनि लागी रही पूजा चढी धन भूरि है ॥
सो सकल धन दै घर गयो मुनि संत सेवा पूरि है ॥
बहु भांति संत खवाय करि सतकार वस्यो निवासमें ॥
यक समैं आये संत कोउ राख्यो सप्रेम अवासमें ॥ ४ ॥
यक संतके ढिग निरखि बालमुकुंद मूर्ति मनोहरी ॥
जो होत हमरेहु पूजते अभिलाष अस कूवा करी ॥
जब संत लागे चलन बालमुकुंद लगे उठावने ॥
तब उठे बालमुकुंद नाहिं संतहु लगे पछितावने ॥ ५ ॥
कूवा कह्यो ये चहत मेरे घर रहन भगवान है ॥
जो कहो महीं उठाय निज घर जाहुतो परमान है ॥
तब संत कह्यो उठाय लीजे लियो कूवा दौरिकै ॥
निज भवनमें पधराय पूज्यो सविधि चंदनखोरिकै ॥ ६ ॥
तब संत अमरष भरे बरवश लगे जाय उठावने ॥
तिल भरि तज्यो नाहिं भूमि बालमुकुंद पतितनपावने ॥

तब संत कूबे दियो ठाकुर आप मारगको लिये ॥
कूबा हिये हर्षत दृगन वर्षत सलिल पूजन किये ॥ ७ ॥
प्रभु नाम राख्यो जान राम सु वारितन मनको हिये ॥
यक समैं चाह्यो द्वारकाको गमन अंकन मन किये ॥
प्रभु कह्यो सपने सुनहु कूबा छाप शंखहु चक्रकी ॥
इतहीं लहैगो अवशि कत सहु विथा मारगवक्रकी ॥ ८ ॥
पुनि गयो सपने द्वारका अंकित भयो हरि छापते ॥
सो प्रगट तन देखे परे निरभै भयो यम तापते ॥
पुनि एक दिन देख्यो सपन गोमतीसागर संगमै ॥
कोऊ कृतघ्नी हाड डारचो टूटिगै धारा समै ॥ ९ ॥
अपनी सुमिरनी डारि दीन्ह्यो तुरतही धारा बढी ॥
लै अस्थि सकल कृतघ्नके तारत सुजलनिधि है कढी ॥
इत ओर मुद्रित अंग लखि आये सुसंत अपार है ॥
चारो वर्ण भे शिष्य अगणित त्यागि दर्प विकार है ॥ १० ॥
इक दिवस कूबा नारिभ्राता भवनमें आवत भयो ॥
ताही दिवस है संत आये तिय हिये अति सुख छयो ॥
तिय भ्रात हित पायस रची दिय रूख संतन भोजनै ॥
कूबा निहारि विचारि अनुचित किय यतन अस तेहि छिनै ११
तियको पठायो भरन जल संतन खवायो खीर है ॥
तिय आय लखि विपरीत दिय निज नाक अँगुलि सचारिहै ॥
कूबा गरेमें राखि अँगुरी वचन कह्यो पुकारिहै ॥
यमराज जब गल काटिहै नहिं भ्रात तोर निवारिहै ॥ १२ ॥
पुनि जानि तियको संत विमुखी कियो त्याग तुरंतही ॥
सो क्षुधावश चहुँदिशि फिरी तेहि दियो भोजन संतही ॥
यहि भांति कूबाके चरित्र विचित्र कहँलों गाइये ॥
तजिके कलेवर जाय कूबा कृष्णधाम सोहाइये ॥ १३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥

अथ करमैतीकी कथा।

दोहा-करमैती बाई सुमति, तासु कथा विस्तार ॥
मैं वरणौं सुनिये सकल, श्रोता संत उदार ॥ १ ॥
शेखावत राजा रह्यो, रह्यो पुरोहित तास ॥
करमैती दुहिता रही, ताहीकी छबिरास ॥ २ ॥
जैपुरके सो राज्यमें, नाम खंडेला ग्राम ॥
उपरोहित दुहिता सहित, वस्यो तहां मतिधाम ॥ ३ ॥
तासु पिता व्याही सुतै, आयो जब पति लैन ॥
करमैती सोच्यो अतिहि, मिल्यो सकल चित चैन ४॥
हाड चामको पति तजौं, होय मोर पति श्याम ॥
उतरों भवनीरधि सहज, पूर होय मन काम ॥ ५ ॥

अस विचारि दुहिता अधराते * त्यागि भवन भागी बिलखाते ॥
नगर बाहिरे जाय विचारा * जन खोजिहैं होत भिनसारा ॥
केहि विधि बचों लोग नहिं पावैं * भजों अनन्य कंत गुणि श्यामैं ॥
मृतक ऊंट यक परो निहारि * तासु उदर महँ छपी कुमारी ॥
मृतक ऊंट दुरगंध न मान्यो * जग दुर्गंध अधिक तेहिं जान्यो ॥
भोर भये जन खोजन धाये * कतहुं न लखे दुखी फिरि आये ॥
कढी ऊंट तनते दिन तीजे * चली प्रयाग श्यामरँग भीजे ॥
मज्जन करि तीरथपति माहीं * कछु दिन महँ पुनि गे ब्रजकाहीं ॥
वृंदावन वंशीवट ठामा * भजन लगी निजपति गुनि श्यामा ॥
पिता तबै दुहिता सुधि पाई * आयो वृंदावन हरषाई ॥
कह्यो सुतापदमहँ शिर धारी * चलो भवनकहँ आशु कुमारी ॥
कटति नाक होतो अपवादा * राखु सकल कुलकी मरयादा ॥

दोहा-उत्तर दियो कुमारिका, सो कवित्त प्रियदास ॥
विरच्यो सो यहि ग्रंथमें, मैं इत करौं प्रकास ॥ ६ ॥

कवित्त–कही तुम कटो नाक कटै जोपैं होय कहूं, नाक एक भक्त नाक लोक मैं न पाइये ॥ बरष पचासकलौं विषैहीमें वास कियो तऊना उदास भये चरेको चबाइये ॥ देखै सब भोग मैं न देखे एक देखे श्याम ताते तजि काम तन सेवामें लगाइये ॥ राततें ज्यों प्रात होत ऐसे तम जात भयो दयो लै स्वरूप प्रभु गयो हिय आइये ॥ १ ॥

दोहा–काल सरिस जानहु पिता, अति कराल जग जाल ॥
व्यास सरिस हालहि तजो, भजिये लाल गोपाल ॥७॥

अस भाख्यो करमैती बाई ❋ पिता सुनत जकि रह्यो बनाई ॥
लागे बचन बाण सम हीमें ❋ मान्यो अति गलानि निज जीमें ॥
त्यागि भवन तजि जगकी आसा ❋ कियो अचल तुलसी बनवासा ॥
शेखावत नृप यह सुधि पाई ❋ मान्यो विप्र गयो बौराई ॥
ब्रज यात्रा करिवेके हेतू ❋ आयो ब्रजहिं बांधि बरनेतू ॥
करमैतीके निकट सिधारयो ❋ विविध जतन करि बचन उचारयो ॥
जस पितुको दीन्ह्यो उपदेशा ❋ तैसहि दीन्ह्यो नृपहि निदेशा ॥
नृपहु तासु सतसंगति पाई ❋ खुलिगे हिय कपाट बनाई ॥
लौटि आपने सदन सिधारा ❋ ध्यावन लाग्यो नंदकुमारा ॥
फेरयो सिगरी राज्य निदेशा ❋ करै भजन सब सुरति रमेशा ॥
भजनानंद मगन भूपाला ❋ छूटि गई यमभीति कराला ॥
भे हरि भक्त प्रजा तेहि केरे ❋ रहे न लेश कलेश घनेरे ॥

दोहा–करमैती बाई चरित, यहि विधि गुनहु अनंत ॥
लिख्यो न इत विस्तार वश, क्षमिये आगस संत ॥८॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे द्वासप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७२ ॥

अथ उभय कुमारिनकी कथा।

दोहा–एक भूपकी कन्यका, जमींदारकी एक ॥
उभै कुमारिनको चरित, वरणौं सहित विवेक ॥१॥

जमींदारकी एक कुमारी * भूपतिकी तिमि एक दुलारी ॥
रहैं एक गुरुके शिषि दोई * वसैं भवनमें अति मुद मोई ॥
जब हरिको गुरु पूजन करहीं * तब आपहु लखि अस उच्चरहीं ॥
शालिग्राम हमहुँ कहँ देहू * हम पूजहिंगी सहित सनेहू ॥
गुरु न देय तब दोउ अति रोवैं * ह्वै अति दीन गुरू मुख जोवैं ॥
यक दिन पूजन हेतु कुमारी * गुरुसों कियो उपद्रव भारी ॥
तब गुरु लै द्वै पंथ पषाना * धरचो मध्य पूजन अविधाना ॥
पूजि पषाणहि प्रभुके संगा * सुता न जान्यो यह परसंगा ॥
जब मांग्यो पुनि आय कुमारी * दुहुँन दियो अस वचन उचारी ॥
ये ठाकुर शिलपिल्ले नामा * पूजहु तुम पूजी मन कामा ॥
दोई दुहिता ठाकुर मानी * लै पषाण गमनीं रतिसानी ॥
निज निज घर लै पूजन करहीं * भोग लगाय अन्न मुख धरहीं ॥

दोहा-जिमींदारकी कन्यका, तासु रहे द्वै भाय ॥
आपुसमें झगरो कियो, परचो डाकघर आय ॥२॥

लूटि लई संपति घर केरी * धरचो जाय निज भवन घनेरी ॥
शिलपिल्लेहु गे साजुहि संगा * तब कुमारिका करि सुख भंगा ॥
कीन्ह्यो व्रत भाई समझायो * तदपि न याके मन कछु आयो ॥
जब बोई ठाकुर हम पैहैं * भोजन पान तबै मुख देहैं ॥
भाई कह्यो जाहि लै आवै * तेरो ठाकुर कौन चोरावै ॥
तब कन्या चलि हेरन लागी * मिले न ठाकुर अति दुखपागी ॥
तब गोहरायो हे शिलपिल्ले * गये कहां तुम मोहिं न मिल्ले ॥
आरत वचन सुनत भगवाना * शुद्धभाव कन्या कर जाना ॥
भे पषाण ते प्रगट मुरारी * कूदिपरे तेहिं गोद कुमारी ॥
शिलपिल्ले पषाण ते नाथा * प्रगटे मुरलि लकुट धरि हाथा ॥
तुलसीदास कह्यो चौपाई * सो मैं कहत प्रसंगहि पाई ॥
हरिव्यापक सर्वत्र समाना * प्रेमते प्रगट होत भगवाना ॥

दोहा-प्रगट पाय यदुनाथको, कन्या तजि संसार ॥
रानी षोडश सहसमें, मिली जाय तेहिं वार ॥ ३ ॥

भूपसुता शिलपिल्लै लेके * पूजन लगी प्रेम अति केके ॥
बीत्यो कछुक काल सउछाहा * भूप सुताकर भयो बिवाहा ॥
भूपसुता कर भई बिदाई * राजपुत्र लै चल्यो लेवाई ॥
पंथमाहँ इक कूप निहारा * तहँ पालकी धराय कुमारा ॥
राजसुता सो प्रेमहिं सानी * राजपुत्र कह कोमल बानी ॥
मैं तुववश मिलिये मोहिं प्यारी * राजसुता तब गिरा उचारी ॥
हरिविमुखी तुम कंत हमारे * ताते छुओं न अंग तिहारे ॥
जो हरिदास होहु मम प्यारे * तौ हरि पूजहु सरिस हमारे ॥
अस कहि झपलैया देवरायो * शिलपिल्लेको दरश करायो ॥
सो जादू विचारि सुत भूपा * फेंक्यो झपलैयाको कूपा ॥
तेहि क्षणते सो राजकुमारी * छोडि दियो भोजन अरु वारी ॥
गई ससुरगृह लंघन कीन्हें * तासु ताहि बोधन बहु दीन्हे ॥

दोहा—तदपि न भोजन वारि मुख, दीन्ह्यो राजकुमारि ॥
अति सोचत परिवार सब, गे तेहिं कूप सिधारि ॥ ४ ॥
राजसुता लखि दूरिते, तौन कूप दुख धारि ॥
गोहरायो आरत वचन, शिलपिल्ले गिरिधारि ॥ ५ ॥
मिलहु मोहिं अब दौरिकै, दयासिंधु भगवान ॥
तुव दरशन विन दासिका, तजन चहति अब प्रान ॥ ६ ॥
राजसुता आरत वचन, सुनतहि हरि अतुराय ॥
निकसि कूपते गोदतेहिं, बैठि गये प्रभु आय ॥ ७ ॥
शिलपिल्ले पाषाणते, प्रगट्यो कमलाकंत ॥
राजसुताके कंत भे, प्रेम विवश भगवंत ॥ ८ ॥
राजसुता श्रीरुक्मिणी, रमण पाय रमणीय ॥
तजि संसार अपार दुख, लई मुक्ति कमनीय ॥ ९ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे त्रयःसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७३ ॥

अथ एक राजकन्याकी कथा।

दोहा-एक राजकन्या चरित, अब वरणौं हरषाय ॥
जो संतन विश्वासते, लीन्ह्यो पुत्र जिआय ॥ १ ॥

रही राजदुहिता जहँ व्याही ❀ रहैं ते हरिविमुखी जन दाही ॥
केहि विधि निबहै धर्म हमारा ❀ राजसुता किय महाखँभारा ॥
रहै पुत्र इक राजसुताके ❀ दीन्ह्यो तेहि विषअति सुखछाके॥
जब मरिगयो नरेश कुमारा ❀ पुरमहँ माच्यो हाहाकारा ॥
दासीको तब तुरत पठाई ❀ संत समाज खोजि सो आई ॥
बंधुन कह्यो संतजन आनै ❀ ते सब कहे संत नहिं जानै ॥
धौं औषधि धौं मंत्रहु संता ❀ धौं अकाश धौं धरणि वसंता ॥
तब दासी सँग बंधु पठाई ❀ लीन्ह्यो संत समाज बोलाई ॥
बंद्यो शिर भरि राजकुमारी ❀ जोरि पाणि अस गिरा उचारी ॥
जो मम सत्य संत विश्वासा ❀ तौ यह पुत्र जिये अनयासा ॥
अस कहि संतनको पग धोई ❀ डारयो पुत्र वदन हरि जोई ॥
सोवत इव सुत उठयो तुरंता ❀ जयजयकार कियो सब संता ॥

दोहा-संतनपर विश्वास लखि, पुरजन युत सब देश ॥
साधुनको पूजन लगे, कीन्ह्यो भक्ति रमेश ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंड उत्तरार्द्धे चतुःसप्ततितमोऽध्यायः॥ ७४॥

अथ दयाबाईकी कथा।

दोहा-रही दयाबाई कोई, कृष्ण सनेही सत्य ॥
तासु कथा वर्णन करौं, रँगे प्रेम चित नित्य ॥ १॥

पति गमन्यो कहुँ तीरथ हेतू ❀ नारि अकेले रही निकेतू ॥
तीरथ करत करत पति ताको ❀ आयो बहु दिनमें मथुराको ॥
पुनि बलदेव दरशहित आयो ❀ जेहिं निशि शयन कियो सुखछायो॥
तेहि दिन ताके गृह अस भयऊ ❀ ताके सदन संत कोउ गयऊ ॥

माघ मास अति शीत दुखारी * कांपत तनसो परचो ओसारी ॥
देखि दयाबाई करि दाया * रज्जु डारि तेहिं उपर चढाया ॥
अग्नि तपाय वोढाय रजाई * ऊपरते पुनि लियो दबाई ॥
गई अटारी तब कोउ नारी * दशा देखि सो कह्यो पुकारी ॥
मनुज दयाबाई सँग लीन्हे * सोवातिहे कुरीति अति कीन्हें ॥
दौरि सबै दोहुन गहिलीन्हें * फेरि एक कोठरी महँ कीन्हें ॥
वृद्ध कहे तब सबै विचारी * जब ऐहै याहि कंत सिधारी ॥
यथायोग्य देहै तब दंडा * हम न लेब यह अयश अखंडा ॥

दोहा-अस कहि राख्यो दुहुँनको, एक कोठरी डारि ॥
असमंजस मान्यो महा, टोलाके नर नारि ॥ २ ॥
जा निशि भयो हवाल यह, ता निशि हलधर राय॥
दियो स्वप्न तेहि कंतको, तू अब घरको जाय ॥३॥
संत वेष धरि हम गये, तुव गृहनीके गेह ॥
सो कीन्ह्यो सत्कार अति, नहीं हमारे नेह ॥ ४ ॥
असमंजस माने महा, तोर सकल परिवार ॥
मोहिं और तुव नारिको, राख्यो बांधि अगार ॥५॥
भोर जानि सो भवनको, चल्यो तुरत अकुलाय ॥
भवन आय देखी दशा, सांचो सपन गनाय ॥६ ॥
पूजितदयाबाई चरण, सहित सकल परिवार ॥
संतहुको कीन्ह्यो बिदा, करि अतिशय सत्कार॥७

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे पंचसप्ततितमोऽध्यायः ॥७५ ॥

अथ गंगाबाईकी कथा।

दोहा-गंगाबाईकी कथा, अब वर्णौं चितलाय ॥
जाहि सुनत गुरुवचनमें, अति विश्वास दृढाय॥१॥

गंगाबाई भै हरिदासी ❀ हरिकी कथा माहँ विश्वासी ॥
गुरुको परमेश्वर करि जानै ❀ गुरुके वचन मृषा नहिं मानै ॥
एक समय पति गयो लेवावन ❀ सो गवनी समीप गुरुपावन ॥
विदा होत गुरु दियो अशीशा ❀ जिये कंत तुव असी वरीशा ॥
चल्यो कंत लै गंगाबाई ❀ मारग मध्य विपिन अधिकाई ॥
तहँ ठग आइ लूटि धन लीन्ह्यो ❀ ता पतिको विन प्राणहिं कीन्ह्यो ॥
तब अति विलखित गंगाबाई ❀ रोवन लागी वचन सुनाई ॥
पतिको मरण सोच नहिं मोरे ❀ जिये मरे जग मनुज करोरे ॥
गुरु कह असी वरष पतिजी है ❀ होत मृषा सो सोच अतीहै ॥
नारायण तुम हौ केहिं ठोरा ❀ करहु सत्य गुरु कह्यो जो मोरा ॥
जो गुरुवचन मोर विश्वासू ❀ तौ जीहै पति यहि क्षण आसू ॥
अबलौं नहिं यदुनाथ लुकाना ❀ करिहै मृषा न वेद प्रमाना ॥

दोहा—गंगाकी आरत गिरा, गुरुके वचन निहोर ॥
गजरक्षक रक्षक जनन, प्रगट्यो नंदकिशोर ॥ २ ॥
गंगाबाई कंतको, दियो जियाइ तुरंत ॥
अंतरहित ह्वै जातभे, कमलाकर भगवंत ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे षट्सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७६ ॥

अथ एक रानीकी कथा।

दोहा—इक रानीको चरित्र अब, सुनिये श्रोता संत ॥
संतन हित जो सुत हन्यो, पुनि ज्यायो भगवंत ॥ १ ॥

एक भूप अति संतन सेवी ❀ जानै और देव नहिं देवी ॥
आई इक दिन संत समाजा ❀ राजा किय सत्कार दराजा ॥
कियो महंत संत सत्संगा ❀ विचरत नित नव भक्ति प्रसंगा ॥
चलन चहै महंत जेहि काला ❀ तबहीं वारण करै भुवाला ॥
यहि विधि त्रिशत साठि दिन बीते ❀ राजा नहिं सत्संगहि रीते ॥
तब महंत अतिशय अकुलाई ❀ जान चह्यो तहँ ते वरिआई ॥

चलत महंत निरखि नरनाहा ❁ अति विमनस हत भयो उछाहा ॥
निशा जाय अंतःपुर माहीं ❁ सो वृत्तांत कह्यो तिय पाहीं ॥
जो महंत रहिहैं इत नाहीं ❁ तौ नहिं प्राण रहै तन माहीं ॥
सुनि पति वचन मानि दुख रानी ❁ अस उपाइ संतन हित ठानी ॥
संत पयानहि काल विचारी ❁ दै विष डारयो सुतकहँ मारी ॥
हाहाकार मच्यो चहुँ ओरा ❁ भयो शोर संतन कहँ घोरा ॥

दोहा—लेन खबरि इक संतको, पठयो राज निवेश ॥
पुत्र मरण सुनि संत सब, आय गये तेहि देश ॥ २ ॥
मरयो राजसुत गरलवश, जानि महंत तुरंत ॥
पूंछो रानीसों सपदि, शपथ धरावत कंत ॥ ३ ॥
रानी कह तब गरल गुनि, जानि भूपको नाश ॥
मैं मारयो सुत दै गरल, करैं संत जेहि वास ॥ ४ ॥
सुनि महंत अचरज गुनत, जानि अलौकिक प्रीति ॥
सुमिरयो श्रीयदुवंशमणि, वर्णत प्रभुकी रीति ॥ ५ ॥

सवैया—जो प्रभुभारतयुद्धमहा तेहिके, मधि टिट्टिभअंड बचायो ॥ जो प्रभु देवकी सोचहि जानि मरे षट बाल तहां दरशायो ॥ जो गुरुको मृतपुत्र दियो हरि संत विनय सुनिके सुख पायो ॥ सो विधिको अप-मान विचारिकै संतही हलतें बालक ज्यायो ॥ १ ॥

दोहा—यही कवित्त बनायकै, पढ्यो महंत पुकारि ॥
अंतःपुरहि तुरंतही, बालक उठ्यो खँखारि ॥ ६ ॥
पुनि सब संतन बोलिकै, बोल्यो वचन महंत ॥
हम तो इत रहिहैं सदा, जाहु चहो जहँ संत ॥ ७ ॥
नृपति भवन वसि संतपति, करि हरिभजन अपार ॥
पुरजन भूपति तिय सहित, किय वैकुंठ अगार ॥ ८ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७७ ॥

अथ हरिपालकी कथा ।

दोहा-एक भक्त गाथा कहौं, नाम जासु हरिपाल ॥
संत सेव लखि प्रगटभे, जाको श्रीनँदलाल ॥ १ ॥
इक हरिपाल विप्र कोउ रहेऊ * साधुन सेव धर्म हठि गयेऊ ॥
जो कछु होय भवन सो लेवै * साधुनको खवाय नित देवै ॥
घरके तासु देखि अनरीती * कियो निनार त्यागि तेहिं प्रीती ॥
सो विभागमें जो धन पायो * कछु दिनमें सब संत खवायो ॥
रहि नाहिं गयो भवनधन जबहीं * चोरी करन लग्यो पुनि तबहीं ॥
चोरी करिके जो धन पावै * भवन बोलिके संत खवावै ॥
भई बात जाहिर पुरमाहीं * चोरिहु किये मिलै धन नाहीं ॥
एक दिवस हरिपाल दुवारा * उतरी संत समाज हजारा ॥
तिनहिं राखि चोरीहित धायो * मिल्यो न धन बहु घात लगायो ॥
तासु रहै इक बाणि कठोरी * माल तिलक लखि करै न चोरी ॥
मिल्यो न वित्त लौटि घर आयो * बाहिर भीतर बहुविधि धायो ॥
मींजत हाथ बहुत पछिताता * छुट्यो नेम मम हाय विधाता ॥
दोहा-तब प्रभुको संकट भयो, हँसे विकुंठ ठठाय ॥
रमा मानि अचरज मनहिं, पूंछ्यो कछु मुसकाय॥२॥
नाथ कह्यो मम दासको, संत खवावन हेत ॥
चोरिहु कीन्हे आजु तेहिं, लग्यो न संपति नेत ॥ ३ ॥
चलन पर्‌यो हमको तहां, भूषण पहिरि अमोल ॥
हमहुँ चलब प्रभु संतके, रमा कह्यो अस बोल ॥ ४ ॥
धारिके साह स्वरूप प्रभु, भूषण पहिरि अनंत ॥
दरवाजे हरिपालके, गये रमा भगवंत ॥ ५ ॥
बोले वचन पुकारिकै, विपिन जो देइ नघाय ॥
ऐसे मुद्रा ताहि हम, देहैं तुरत गहाय ॥ ६ ॥

जेवरपहिरे वणिक लखि, मानि मोद हरिपाल ॥
कह्यो पवन पहुँचाइहैं, कानन महाकराल ॥ ७ ॥
अस कहि दम्पति वणिक लै, गवन्यो वनकी ओर ॥
मध्य विपिन बोलत भयो, लैकर दंड कठोर ॥ ८ ॥

कवित्त–भूषण उतारि दीजै कह्यो हरि जान दीजै, जान तुम्हें देहौं विना भूषण उतारे ना ॥ भूषणहूं लीजै नाहिं जीव मोरे लीजै कछू, दयारस भीजै चित दया तो हमारे ना ॥ भूषण उतारि लेहु मुद्रिकाको छांडि देहु, बनिहें वणिक बिन मुद्रिका उतारे ना ॥ प्रीतिको निहारे नाहिं धीर उर धारे मिले, देवकी दुलारे तासु कर्मका विचारे ना ॥ १ ॥

सोरठा–प्रगट भये भगवान, बहु बखानि हरिपालको ॥
दीन्ह्यो ज्ञान विज्ञान, अंत समय मिलिहौं हमैं ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे अष्टसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७८ ॥

अथ नंददासकी कथा।

दोहा–अब भाषहु श्रोता सुनहु, नंददास इतिहास ॥
जाके हेतु जियाय दिय, बाछी रमानिवास ॥ १ ॥

नंददास इक भक्त अनूपा * भयो जासु यश जगमहँ जूपा ॥
हरिको भयो अनन्य उपासी * रह्यो जगत कर तनक न आसी ॥
रह्यो बरैली पुर तेहिं गेहा * नित नव नंद नँदनसों नेहा ॥
फैली सकल नगर प्रभुताई * पूजा देहिं मनुज सब आई ॥
रहे जे उपरोहित पुर माहीं * तिनको नीक लग्यों यह नाहीं ॥
सकल दुष्ट जुरि करी सलाहा * लगे कलंक ताहि जेहिं माहा ॥
यक निशि मृतक राखि यक बाछी * नंददास घरके कछु पाछी ॥
डारि सबै खल भवन सिधारे * लगे पुकारन जागि भिनसारे ॥
बाछी मिलै न आजु हमारी * कोउ कह नंद लकुट लै टारी ॥
अस कहि नंददास घर नेरे * आय सबै बाछी मृत हेरे ॥
लागे कहन पुकारि पुकारी * नंददास बाछी निशि मारी ॥

नंददास लखि मृषा कलंका * यदुपति बल मानी नहिं शंका ॥
दोहा–बाछीके ढिग जायकै, बोल्यो वचन पुकारि ॥
दयासिंधु यदुवीर प्रभु, राखहु लाज हमारि ॥ २ ॥
कवित्त–दुष्टन दुष्टता जानि लई, तब वच्छ समीपहि आतुर आये ॥ ध्याय रमापतिको उर अंतर, हाथ दै बाछरी वेगि जिआये ॥ देखो महामहिमा जनकी विधि, अंक ललाटके धोय बहाये ॥ दासन रीति विचारि विरंचिहु, मानहि सोइ तिन्हें शिर नाये ॥ १ ॥
दोहा–नंददासको चरित लखि, परे चरण शठ आय॥
नंददासकी रीति सब, सीखत भे हरिध्याय ॥ ३ ॥
गिरि गिरि माणिक होत नहिं, गज गज मुकुत न होय
वन वनमें चंदन नहिं, विरला साधू कोय ॥ ४ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकोनाशीतितमोऽध्यायः ॥७९ ॥

अथ जगतसिंहकी कथा।

दोहा–भूप करौलीको रह्यो, जगतसिंह अस नाम ॥
भयो सतसेवी विमल, कहौं चरित अभिराम ॥ १ ॥
छप्पय–श्रीयुतनृपमणिजगतसिंह दृढभक्ति परायण ॥
परम प्रीति किय सुवश शीश लक्ष्मीनारायण ॥
रमा गोविंद स्वरूप भूप नालकी चढावे ॥
नौबति नवल निशान सदल आगू चलवावे ॥
भरि कनककलश निज शीशमें प्रेम नेम पूजन करै ॥
तन मन धन करि अर्पण हरिहि आप विषयसुख नहिं भरै ॥ १ ॥
दोहा–जगतसिंह यदुकुल नृपति, यदुकुल मणिको दास ॥
ताकी कीरति चारि दिशि, कीन्ह्यो परम प्रकाश ॥ २॥
जगतसिंह तब सुनि सुखदाई * जैपुरको जैसिंह सवाई ॥
बोल्यो जैपुर दरशन हेतू * आयो जगतसिंह मति सेतू ॥

सादर चलि करिकै अगुवाई * किय प्रणाम जैसिंह सवाई ॥
लायो अपने भवन मँझारा * कीन्ह्यो विविध भांति सत्कारा ॥
कह्यो तुमहिं कुलकमल दिनेशू * हम सब वृथा कर्म नहिं लेशू ॥
जगतसिंह तब कह मुसकाई * तुव भगिनी जैसिंहसवाई ॥
दीप कुँवरिहै जाकर नामा * अहै अनन्य उपासिक रामा ॥
भक्ति प्रबल सद्गुण है मोसों * गुप्त भेद भाष्यो भल तोसों ॥
भक्तिमती भगिनी पहिंचानी * धन्य भाग्य जैसिंह निज मानी ॥
परे भगिनि चरणन महँ जाई * दियो हुकुम जैसिंहसवाई ॥
खर्च करै साधुनमहँ जेतो * सचिव दोउ वरजै नहिं तेतो ॥
जगतसिंह पुनि मांगि बिदाई * जैसिंहहिं भल भक्ति बताई ॥

दोहा—आयो अपने भवनमें, भक्ति अनोखी ठानि ॥
तनु परिहारि रघुवर भवन, वसत भयो शुभखानि॥३॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे अशीतितमोऽध्ययः ॥ ८० ॥

अथ सदाव्रतीकी कथा।

दोहा—सदाव्रती यक हरिभगत, कहों तासु इतिहास ॥
श्रोता सुनहु सप्रीतिसों, दायक परम हुलास ॥१॥

सदाव्रती नामक यक साहू * रह्यो अनन्य भक्त यदुनाहू ॥
विना हेतु अति संत सनेही * आतम सम मानत सब देही ॥
रही नारि यक पुत्र सयानो * नित संतन सत्कारहि ठानो ॥
यक दिन कुटिल साधु यक आयो * अतिशय सादर सदन वसायो ॥
साहु पुत्र अरु साधु सनेहू * भयो एक मन जिय द्वै देहू ॥
यक दिन साहुसुवन कहँ साधू * लै आयो जहँ नदी अगाधू ॥
करि छल साहुसुवन कहँ मारी * भूषण छीनि दियो दह डारी ॥
आयो भवन पिता जब पूछ्यो * कह्यो आजु गवन्यो तोहिं छूछयो॥
सदाव्रती भूपति पहँ जाई * नृपसों कहि डौंडी पिटवाई ॥
तिसरे दिवस लोथि उतरानी * यक संन्यासी लखि पहिंचानी ॥

सदाव्रतीके निकट सिधारी ❋ कह्यो कानमें वचन उचारी ॥
रहत जौन साधू तुव धामें ❋ सोई सुवन हत्यो सरितामें ॥
दोहा—सदाव्रती तब चित्तमें, कीन्ह्यो विमल विचार ॥
मरचो सुवन जीहै नहीं, होई साधु सँहार ॥ २ ॥
जो भूपति यह सुधि सुनि पैहै ❋ अवशि साधुको जिय हत ह्वैहै ॥
अस विचारि कह सुनु संन्यासी ❋ तैहीं है मेरो सुतनासी ॥
लै शतमुद्रा जाहु पराई ❋ जो अपनो जिय चाहो भाई ॥
संन्यासी शतमुद्रा लैकै ❋ भाग्यो नगर छोडि भय भैकै ॥
साहु जारि सुत सरित नगीचू ❋ कह्यो नृपहि मरिगो सुत मीचू ॥
जान्यो साहु साधु सब जाना ❋ दिन दिन लग्यो शरीर सुखाना ॥
साधु शरीर सुखात विलोकी ❋ सदाव्रती तियसों कह शोकी ॥
केहिविधि साधु भीतिअतिभागै ❋ पुत्र वधेको दोष न लागै ॥
बोली सदाव्रतीकी नारी ❋ देहु साधुको व्याहि कुमारी ॥
साधु सुनत परदक्षिण दीन्ह्यो ❋ तियशासन शिरमें धरिलीन्ह्यो ॥
तियको बारहिं बार सराही ❋ दीन्ह्यो सुता साधुको व्याही ॥
कृष्णचरणमें अति रति जागी ❋ यह दोहा रसना रट लागी ॥
दोहा—अवगुण ऊपर गुण करै, ऐसो भक्त जो कोय ॥
ताकी पनही शिर धरों, जबभर जीवन होय ॥ ३ ॥
देखि साहुको अस उपकारा ❋ रीझिगयो वसुदेवकुमारा ॥
साहु गुरूको स्वप्न देखायो ❋ जीहै साहु सुवन तुव ज्यायो ॥
गुरू कह्यो जीहै सो नहीं ❋ तौ दे हैं हत्या तोहि काहीं ॥
प्रभु कह साहु सुवन हठि जीहै ❋ करहु न संशय वचन सहीहै ॥
गुरु उठि भोर साहु घर आयो ❋ सदाव्रती चलिकैं शिरनायो ॥
गुरु पूंछयो सुत कहां तिहारा ❋ साहु कह्यो अनित्य संसारा ॥
मरिगो बीति गये षट मासा ❋ जारचो ताहिं नदीके पासा ॥
गुरू कह्यो हम देब जिवाई ❋ दहन भूमि मोहिं देहु बताई ॥
चिता भूमि चलि साहु बतायो ❋ तहँ गुरु जाय कनात लगायो ॥

फैली खबरि सकल पुरमाहीं ❀ धाये मनुज विलोकन काहीं ॥
अचरज लखन नरेशहु आयो ❀ लाखन मनुज वृंद तहँ ठायो ॥
तब कनात भीतर गुरु जाई ❀ चिता भूमिपट पीत ओढाई ॥
दोहा–सुमिरयो श्रीयदुवंशमणि, जो शासन सहि होत ॥
सदाव्रतीको सुत जिये, लखैं मनुज सबकोय ॥४॥
जियैं सुवन अबहीं इतै, नाहिं देहौं जिय तोहिं ॥
लाखन जन आगे कढत, लज्जा लागति मोहिं ॥५॥
इतना गुरुके कहतहीं, भयो विवर भूमाहिं ॥
कढ्यो समंगल साहु सुत, बैठिगयो गुरुपाहिं ॥ ६ ॥
साहुसुवन गुरु गोद लै, दियो साहु कहँ जाय ॥
भूपतियुत पुरजन सकल, अचरज गुने बनाय॥७॥
सदाव्रती सोइ साधुको, सौंप्यो सुतको जाय ॥
कह्यो रावरेकी दया, पुत्र मिल्यो मोहिं आय ॥८॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८१ ॥

अथ प्रेमनिधिवणिककी कथा।

दोहा–प्रेमनिधि वणिककी, श्रोता सुनहु सुजान ॥
जाके करसों कृष्णप्रभु, करत भये जलपान ॥ १ ॥
नगर महा आगरा मँझारी ❀ रह्यो प्रेमनिधि वणिक सुखारी ॥
तहां यमन वस्ती बहुतेरी ❀ बचै न परश उपाय घनेरी ॥
वणिक प्रेमनिधि मनहिं विचारी ❀ लावै निशि भरि यमुना वारी ॥
द्वार बैठि हरिगाथा गावै ❀ जे आवैं तिन ग्रहण करावै ॥
यदुपति छोंडि और नाहिं जानै ❀ यांचन हित नाहिं करै पयानै ॥
एक निशा वर्षाऋतुमाहीं ❀ गये यमुनजल भरिबे काहीं ॥
रह्यो पंथमहँ पंक महाना ❀ यमुना मारग तिनहिं भुलाना ॥
गिरहिं कीचमहँ पुनि उठि गवनै ❀ बनै न यमुन जात नाहिं भवनै ॥

निज सेवक अति दुखी निहारी ❀ आये हरि मशाल कर धारी ॥
तहँते यमुन दियो पहुँचाई ❀ पुनि घरलों आये यदुराई ॥
सुन्यो प्रेमनिधि कोउ सरदारा ❀ लै मशाल गमनत दरबारा ॥
यक दिन म्लेच्छ शाह पहँ जाई ❀ साधु वणिकको चुगली खाई ॥
दोहा—यक बनिया बदमाश अति, औरत देखन हेत ॥
करत बखान पुराण बहु, जन दौलत ठगि लेत ॥ २ ॥
बादशाह करि कोप कराला ❀ पठयो तुरत द्वारके पाला ॥
गहिके वणिक कैद करि दीजै ❀ नातिक हुकुम शंक नहिं कीजै ॥
इते प्रेमनिधि भोग लगाई ❀ पान करायो नहिं यदुराई ॥
इतनेमाहँ शाहके दूता ❀ आये गहि गवने मजबूता ॥
शाह समीप दियो पहुँचाई ❀ बादशाह कहँ आँखि देखाई ॥
कथा बनियां तें करत बयाना ❀ औरत देखत ठानहि ठाना ॥
अस कहि हजरत कैद करायो ❀ तब प्रभुको संकट अति आयो ॥
धरि खोदायको वपु यदुनाहा ❀ जात भये सोवत जहँ शाहा ॥
कियो शाहको चरण प्रहारा ❀ कह्यो देहि मोहिं सलिल अहारा ॥
शाह चौंकि उठि बोल्यो वानी ❀ हजरत तुम्हैं देइ को पानी ॥
अस कहि शाह गयो पुनि सोई ❀ प्रभु प्रहार किय अमरष मोई ॥
कह्यो जासु कर मैं जल पाऊं ❀ कीन्ह्यो कैद प्रेमनिधि नाऊं ॥
दोहा—यहि क्षण छोड़ै प्रेमनिधि, तेहिं कर करिहौं पान ॥
नतौ बादशाही सकल, होई तुव हैरान ॥ ३ ॥
शाह तुरत उठि शीश उघारे ❀ आयो आपहि कारागारे ॥
तुरत प्रेमनिधि वणिक छोंडाई ❀ सादर सपदि सदन पहुँचाई ॥
बार बार चरनन शिर नाई ❀ दीन्ह्यो संपति भवन भराई ॥
जाय प्रेमनिधि निज प्रभुकाहीं ❀ पान कराये जल सुखमाहीं ॥
भई आगरा नगर विख्याती ❀ पूजै ताहि सजाति विजाती ॥
करहिं प्रेमनिधि साधुन सेवा ❀ राखहिं नहिं जातिकर भेवा ॥
लागै खर्च संत सत्कारा ❀ देत साह सो खोलि भँडारा ॥

यहि विधि बहुत कालळगि सोई * कियो संत सेवा बहुतोई ॥
अंतकाल महँ त्यागि शरीरा * बस्यो जहां निवसत यदुवीरा ॥
सिखे जे वणिक प्रेमनिधि रीती * तिनहूं के भइ हरिपद प्रीती ॥
तेऊ संतसेव मन लाये * अंतकाल यदुपति पुर पाये ॥
पाय प्रेमनिधिको सतसंगा * शाहौ रंग्यो रामके रंगा ॥

दोहा-बादशाह सब देशमें, दीन्ह्यो हुकुम फिराय ॥
जो न करी हरिभक्ति जन, पैहै तौन सजाय ॥ ४ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे द्व्यशीतितमोऽध्यायः ॥ ८२ ॥

अथ रत्नावतीकी कथा।

दोहा-रानी इक रत्नावती, सुनहु कथा यह तासु ॥
छप्पय नाभाकी प्रथम, तामें करहुँ प्रकासु ॥ १ ॥

छप्पय-कथा कीर्तन प्रीति भीर भक्तनकी भावै ॥
महामहोछौ मुदित नित्य नँदलाल लडावै ॥
मुकुंद चरण चिंतवन भक्ति महिमा धुजधारी ॥
पतिपर लोभ न कियो टेक अपनी नहिं टारी ॥
भलपन सबै विशेषहीं आमरे सदन सुनषाजिती ॥
पृथ्वीराज नृप कुलवधू भक्त भूप रत्नावती ॥ १ ॥

दोहा-जैपुरको नृप जैकरन, मानसिंह महराज ॥
भ्राता माधौसिंह तेहिं, सब सुजान शिरताज ॥२॥
ताकी रानी नामकी, रत्नावती प्रसिद्ध ॥
पासमान ताकी रही, गही भक्ति तजि सिद्ध ॥ ३ ॥
श्वास श्वास हरिनामको, निशिदिन करै उचार ॥
कृष्ण नाम मुख लेतही, बहै नयन जलधार ॥ ४ ॥
एक दिवस रत्नावती, बोली ताहि बोलाय ॥
भक्ति भेद कछु मोहुँको, दीजै सखी बताय ॥ ५ ॥

पासमान बोली वचन, करहु रजायसु भोग ॥
मिलति बात यह कठिनते,होय जो साधु सँयोग ६
तामें लिख्यो कवित्त यह, प्रियादास मतिवान ॥
सो मैं इत लिखिदेतहौं, श्रोता सुनहु सुजान ॥ ७ ॥

कवित्त–मानसिंह राजा ताको छोटो भाई माधवसिंह, ताकी जानो तिया जाकी बात लै बखानिये ॥ ढिग जो खवासिनि सो इवासनि भरत नाम, रटित जटित प्रेम रानी उर आनिये ॥ नवलकिशोर कबों नंदको किशोर कभूं वृंदावनचंद कहि आँखें भरि पानिये ॥ सुनत विकल भई सुनिवेकी चाह भई, रीति यह नई कछु प्रीति पहिचानिये ॥ १ ॥

दोहा–तब रानी अति हठ परी, मोको भक्ति बताव ॥
तब चेरी चित चाहिकै, वरण्यो संत प्रभाव ॥ ८ ॥

कवित्त–जबते बताय दीन्ही चेरी कृष्ण रस रीति, तबते हियेको गई फूटि विषय गागरी ॥ नटनागर गुनन को आगरमें प्रीति बाढी, गाढो भै प्रतीति जगी रीति भई कागरी ॥ वसन डसन भये हँसन रसन होत, इवासनते जागी है वियोग आगि आगरी ॥ धाम तो उजार सोहै छार सोहै काम काज, आलिनके यूथ जाल ऐसे हाल नागरी ॥ २ ॥

दोहा–रत्नावती सुभावको, पासमान हरषाय ॥
यदुपति भक्ति रहस्य सब, दीन्ह्यो आसु बताय९॥
तब चेरीको मानि गुरु, सिंहासन बैठाय ॥
रत्नावति पूजन लगी, प्रीति प्रतीति बढाय ॥१०॥
सादर साध जेवांवती, धरै कृष्णको ध्याय ॥
कबहुँ कबहुँ सो ध्यानमें, लखै रूप भगवान११॥
तब जो चेरी गुरु कियो, ताको निकट बोलाय ॥
कह्यो कौन विधि मैं लखौं, परगट यादवराय॥१२॥

कवित्त–सुनि रतनावतीके वैन अति चैनहीसों बोली रघुराज वैन चेरी खरेखरे हैं ॥ शिव सनकादि ब्रह्मादिक न पावें पार योगिहूं अनेकन

यतन करि जरे हैं ॥ दरशन दूरि राज छोडें लोटें धूरिपे न पावैं छोधे पूरि एक प्रेम वश कोहैं ॥ करो हरि साधु सेवा भाव भरि मेवा धारि नाना रस खानि बहु भांति स्वाद भरे है ॥ ३ ॥

दोहा—ऐसो सुनि चेरी वचन, रत्नावती अपार ॥
प्रेम भरी निज हाथ हरि, करन लगी शृंगार ॥ १३ ॥
कछु दिन परदा राखिकै, साधुन देय खवाय ॥
पुनि निज कर संतन चरण, धोवै लाज विहाय ॥ १४ ॥

कवित्त—प्रेमहीमें नेम हेमथार लै उमँगि चली, चली दृगधार सो परोसके जेवांये हैं ॥ भींजिगई साधु नेह सागर अगाध देखि नैनन निमेष तजी भये मन भाये हैं ॥ चंदन लगाय आन बीरीहू खवाय श्याम चरचा चलाय चख रूप सरसाये हैं ॥ धूमपरी गाउँ झूमि आजे सब देखिवेको, देखि नृप पास लखि मानस पठाये हैं ॥ ४ ॥

दोहा—रत्नावती चरित्र सब, सचिवन मंत्र लखाय ॥
मानसिंह महराजको, जाहिर कीन्ह्यो जाय ॥ १५ ॥

कवित—ह्वैकरि निशंक रानी वंक गति लई नई दई तजि लाज बैठी मुडियन भीरमें ॥ लिख्यो लै देमान नर आये सो बखान कियो बांचि सुनि आंच लागी नृपके शरीरमें ॥ प्रेमसिंह सुत ताहो काउलों रसाल आयो, भालपै तिलक माल कंठी कंठ नीरमें ॥ भूपको सलाम कियो नरन जताय दियो, बोल्यो आउ मोडीकेर परचो मन पीरमें ॥ ५ ॥

दोहा—रत्नावतिको सुवन जो, प्रेमसिंह अस नाम ॥
तेहिं राजा मुडिया सुवन, भाष्यो करत सलाम ॥ १६ ॥
जब राजा उठिगे तबै, प्रेमसिंह सब पाहिं ॥
पूछयो भूपतिका कह्यो, मोको वचन अजाहिं ॥ १७ ॥
प्रेमसिंहसों सब कह्यो, जननी जौन तुम्हारि ॥
लाज तजी सब संत पै, नृप कह सोइ विचारि ॥ १८ ॥
प्रेमसिंह सुनि मातुपै, दीन्ह्यो पत्र पठाय ॥
भूप संतसुत म्वहिं कह्यो, सत्य करहु सो माय ॥ १९ ॥

पत्र सुनत रत्नावती, मंडन कीन्ह्यो केश ॥
सुनत माखि मारन चह्यो, रत्नावतिहिं नरेश ॥ २० ॥
रत्नावती समीपमें, दीन्ह्यो बाघ पठाय ॥
हरिपूजा करती हती, चेरी दियो बताय ॥ २१ ॥
हरिहि उतारी आरती, रत्नावती तुरंत ॥
बाघहुको सोइ आरती, कीन्ह्यो ध्यावत संत ॥ २२ ॥

कवित्त-प्रियादासको ॥ करै हरिसेवा भारि रँग अनुराग हग, सुनी यह बाल नेकु नैन उत ढारे हैं ॥ भावहीलों जाने उठि अति सनमाने अहो, आज मेरे भाग श्रीनृसिंहजी पधारे हैं ॥ भावना सचाई गोंही शोभा ले देखाई फूलमाल पहिराई रचि टीको लागे प्यारे हैं ॥ भौनते निकसि धाये मानो खम्भ फारि आये विमुख समूह तत्काल मारडारे हैं ॥ ६ ॥

दोहा-सो नाहरमें कृष्णजी, भयो तुरत आवेश ॥
हरिविमुखिनिको निकसि द्रुत,भख्योरख्योनहिंलेश॥२३
रत्नावती प्रभाव अस, देखि मान नरनाह ॥
रत्नावती समीपके, क्षमा करावन काह ॥ २४ ॥
माधवसिंहहु मानसिंह, परे चरणमहँ जाय ॥
कह्यो क्षमहु अपराध मम, यह विभूति तव आहि ॥२५

बादशाहको रुक्का आयो ❀ दिल्ली माधव मान सिधायो ॥
लागे तरन नदी जब राजा ❀ लागो डूबन तहां जहाजा ॥
माधवसिंह कही तब वानी ❀ हरिजन सुमिरि होय दुख हानी ॥
मानसिंह रत्नावति ध्यायो ❀ तब प्रभु नौका पार लगायो ॥
आये फिरि जैपुर महिपाला ❀ पुनि जबगे दिल्ली कछु काला ॥
बादशाह कह किमि फिरि गयऊ ❀ तब नृप सब हवाल कहि दयऊ ॥
रत्नावती चरित सुनि शाहा ❀ तासु दरश कीन्ह्यो उत्साहा ॥
मानसिंहसों कह्यो बुझाई ❀ देहु तासु तस्वीर मँगाई ॥

सुमिरत सरित कियो तोहिंपारा * मोहिं पार करिहैं संसारा ॥
रत्नावतिकी मांगि सबीहा * शाह दरश करि किय शुभ ईहा ॥
मानसिंह माधवसिंह काही * कह्यो बोलाय इकांतहि माहीं ॥
सम्पति देहु जो संत खवावै * कौनेहुँ विधिसों नहिं दुख पावै ॥
दोहा—रत्नावती चरित्र यह, वर्ण्यों मति अनुसार ॥
प्रिया दासके कवित्त कछु, लिख्यों भीति विस्तार२६॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे त्र्यशीतितमोऽध्यायः ॥ ८३ ॥

अथ त्रिपुरदासकी कथा।

दोहा—त्रिपुरदास इतिहासको, अब मैं करौं प्रकाश ॥
श्रोता सुनहु हुलास भरि, सो कायथ हरिदास ॥ १ ॥
त्रिपुरदास इक भूपति नेरे * रहहिं जाहि ढिग सांझ सबेरे ॥
तहँ इक पंडित कोउ चलि आयो * नृप पंडितसों बाद बढायो ॥
शिथिल पर्‌यो नृप पंडित जबहीं * त्रिपुर सहाय कियो अति तबहीं॥
डग्यो न नृप पंडित कर पक्षा * कोप्यो तब सो विबुध ततक्षा ॥
त्रिपुर कह्यो हम करें जो वादा * तो तुमरी नशाय मर्यादा ॥
पंडित कह्यो अधम तें बरना * मोसों शास्त्र विवाद न करना ॥
त्रिपुर कह्यो मैं अधम कौन विधि * मोरि अधमता करहु आप सिधि॥
पंडित कह्यो समर्थन नाहीं * त्रिपुर समर्थन कियो तहांहीं ॥
पुनि पंडितके पद गहि दोऊ * कियो प्रणाम कह्यो तब सोऊ ॥
धन्य धन्य तुम अहो भुवाला * जासु सभा अस बुद्धि विशाला॥
दशहजार मुद्रा दे राजा * पंडितको करि बिदा समाजा ॥
त्रिपुरहि तब अति भई गलानी * मनमें कियो विचार विज्ञानी ॥
दोहा—विद्या पाय विवाद किय, कीन्ह्यो मद धन पाय ॥
है समर्थ परदुख दयो, नरकमूल त्रै आय ॥
विद्या पाय जो ज्ञान लिय, धन लहि कीन्ह्यो दान
समरथ है उपकार किय, त्रैपद स्वर्ग निदान॥२॥

त्रिपुरदास मन माहँ विचारी ❀ वृंदावनको गयो सिधारी ॥
श्रीवल्लभाचार्य शिषि भयऊ ❀ वाद विवाद त्यागि सब दयऊ ॥
कछु दिन बस गुरुशासन पाई ❀ वासि घर कियो साधु सेवकाई ॥
शीत निवारण बसन सोहावन ❀ नेम कियो श्रीनाथ पठावन ॥
यहि विधि बीतिगयो कछु काले ❀ कोउ चुगली कीन्ह्यो महिपाले ॥
त्रिपुरदास तुव वित्त चोराई ❀ करत पखंड साधु सेवकाई ॥
भूपति त्रिपुरदासकहँ लूट्यो ❀ त्रिपुरदास मान्यो दुख छूट्यो ॥
जौन मिले तेहि करै निवाहू ❀ आठहु याम भजै सिय नाहू ॥
शीतकाल आयो पुनि जबहीं ❀ त्रिपुरदास पछिताके तबहीं ॥
रह्यो विभव जो मोर विशाला ❀ श्रीनाथहि समीप प्रतिशाला ॥
भेजत रह्यो वसन तब भारी ❀ कहा करौं अब भयो भिखारी ॥
अस विचार किय हाट पयाना ❀ लायो मोल अमोवा थाना ॥

दोहा–तौन अमोवा थान इक, कोउ वैष्णवके हाथ ॥
पठयो कहि वृत्तांत निज, जहां रहे श्रीनाथ ॥ ४ ॥
जानि पुजारी अधम पट, कोने राख्यो डारि ॥
ताहि निशा श्रीनाथ तनु, कांप्यो लगत बयारि ॥५॥
प्रभुको लाग्यो जाड अति, पूजक सिगरे जानि ॥
वसन अमोल अमोल सब, लगे ओढावन आनि॥६॥
प्रभुको मिट्यो न जाड कछु, तब कोउ कह्यो सुजान ॥
भेज्यो त्रिपुर ओढाइये, सोइ अमोवा थान ॥ ७ ॥
जबै अमोवा नाथको, पूजक दियो ओढाय ॥
मिट्यो कम्प तनु शीतकृत, पूजक रहे चकाय ॥ ८ ॥
त्रिपुरदासकी जय कहे, दीन्हे खबरि पठाय ॥
त्रिपुरदास सुनि अति पुलकि, वृंदावनको जाय ॥ ९ ॥
लोटि लोटि व्रज भूमि रज, करि साधुन सेवकाय ॥
तजि शरीर मतिधीर सो, जहँ यदुवीर सोहाय ॥ १० ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे चतुरशीतितमोऽध्यायः ॥८४ ॥

अथ सदनकसाईकी कथा ।

दोहा-सदन कसाईकी कहौं, सुखदायी यह गाथ ॥
द्विजताई तजि रीझिगे, यदुराई जेहि साथ ॥ १ ॥

रह्यो एक कहुँ सदन कसाई * आमिष बेंचि रोज सो खाई ॥
रहै साधु हरिनाम उचारै * निज करसों नहिं जीवन मारै ॥
शालिग्राम शिला इक लाई * ताहीभर आमिष तोलाई ॥
बेंचै सो चलि रोज बजारा * करत रह्यो यहि भांति गुजारा ॥
शालिग्राम शिला नहिं जानै * तोन शिला पषाणकरि मानै ॥
घटै बढै सो शिला सदाही * उपराजै धन दिन प्रति ताही ॥
एक दिवस इक साधु सिधायो * शालिग्राम देखि अनखायो ॥
सुनहि दुष्ट रे सदन कसाई * शालिग्राम शिला कहँ पाई ॥
तोलै आमिष सम प्रभु मोरा * सहि न जात अपचार कठोरा ॥
सदन कह्यो अबलौं नहिं जान्यो * ताते यह अपचारहि ठान्यो ॥
कौन यतनते यह अघ जाई * देउ कृपाकर मोहिं बताई ॥
साधु कह्यो मोको प्रभु दीजै * यामें और यतन नहिं कीजै ॥

दोहा-सदन साधु कहँ दियशिला, सो निज घरमें ल्याय ॥
पूज्यो वेदविधान ते, पंचामृत अन्हवाय ॥ २ ॥
दियो साधुको स्वप्न प्रभु, तैं अनुचित यह कीन ॥
सदनकसाई सदनते, मोहिं बाहिर करि दीन ॥ ३ ॥
सुनत वचन प्रभुके कह्यो, साधु सकोपित वानि ॥
प्रियादासको कवित सो, मैं इत कहौं बखानि ॥ ४ ॥

कवित्त-वह पद भाषा ढेक जैसे तैसे गावत हैं हम तुम्हैं गावत हैं सदा वेदवानीसों ॥ मांस भरे हाथ वह आय तुम्हैं छीवत है कैयो मास बीते हमैं तुम्हरी कहानीसों ॥ लक्ष्मी नारायणजू बडे रिझवार तुम, रीझ निकसत है तुम्हारी रजधानीसों ॥ हम निर्मल

गंगाजलसे अन्हवावे तुम्हें, तुम रीझे सदनाके बधनाके पानीसों ॥ १ ॥

दोहा–साधु वचन सुनिके हरी, कह्यो वचन मुसकाय ॥
सो कवित्त प्रियदासको, मैं इत दियो लिखाय ॥ ५॥

कवित्त–कहा भयो तापै बडो कुलहूमें जन्म भयो, जप तप नेम व्रत साधन अपार है ॥ कहा भयो तीरथ अनेकन गवन किये, गयो नहिं जौलौं निज मनको विकार है ॥ जौलौं मेरे संतनमें राखे जातिभेद सदा, तौलौं कहौ कैसे वह पावै सुख सार है ॥ मेरो साधु नीच पद पंकज न धोयो जौलौं, तौलौं सब शास्त्रनको पढिबोई भार है ॥ २ ॥

सो०–सुनि प्रभु ऐसी वाणि, साधु सदनके सदन चलि ॥
सब वृत्तांत बखानि, शालिग्राम शिला दयो ॥१॥

सदन सुनत अति आनँदमानी ❋ आमिष बेंचब त्यागि विज्ञानी ॥
जगन्नाथ नगरीमें धायो ❋ चल्यो साधु यक संग सोहायो ॥
दोउ मिलि चले पंथ महँ संगा ❋ क्षण क्षण रँगे रामके रंगा ॥
मिल्यो पंथ महँ पुर यक भारी ❋ कह्यो सदनसों साधु उचारी ॥
मैं भिक्षा मांगनहित जाऊं ❋ तुम रहियो इत जबलगि आऊं ॥
अस कहि साधु तुरंत सिधारा ❋ सदन रहे इक सदन दुवारा ॥
तीन भवनकी भामिनि कोई ❋ सदनहि जोहि मोहिगै सोई ॥
कह्यो सदनसों इत तुम रहहू ❋ मम सत्कार सकल अब गहहू ॥
सदन साधुसेवी तेहि जानी ❋ रहे भवन ताके सुख मानी ॥
तिय बहु विधि पकवान बनाई ❋ सादर सदनै दियो खवाई ॥
भीतर अयन शयन करवायो ❋ निशि अपनो शृंगार बनायो ॥
अर्द्ध निशा गे सदन समीपा ❋ बोली वचन बुझावत दीपा ॥
मोहि गयो तोपर मन मोरा ❋ करहु जौन भावै चित तोरा ॥

दोहा–सदन कह्यो परदारको, परश करौं मैं नाहिं ॥
मेरो चित मेरे वसै, काटै जो गरकाहिं ॥ ६ ॥

तिय जान्यो पति मारन कहतो * पतिकी भीति संग नहिं चहतो ॥
तब तुरंत गइ कंत मकाना * काढ्यो पिय शिर काढि कृपाना ॥
सदन समीप आय पुनि गाई * तुम हित मैं पतिको हति आई ॥
सदन कह्यो तब तापर कोपी * दूर होय पापिनि पति लोपी ॥
तिय निराश ह्वै जाय दुवारा * करि विलाप अति दियो गोहारा॥
आये सकल परोसी धाई * तिनसों कह्यो नारि बिलखाई ॥
साधु जानि मैं भवन टिकायों * बहुविध व्यञ्जन विरचि खवायों ॥
अर्द्ध निशा सो पापी संता * मारयो खड्ग काढि मम कंता ॥
पुरजन शीश कटे तेहि देखे * सब अपराध साधुके लेखे ॥
भूपति सदन सदन कहँ बांधी * लैराख्यो कोठरी महँ धांधी ॥
भोर भये पूछ्यो नृप बाता * तैं कत किय तियके पतिघाता ॥
सुनत सदन मनमाहँ विचारा * जो मैं कहौं नारि अपकारा ॥

दोहा-तौ तियको वध होय हठि, ताते शिर धरि लेहुँ ॥
जस हरि इच्छा होयगी, सो टरिहै नहिं केहु ॥ ७॥

अस विचारि तब सदन बखान्यो * मैंही निशि तियको पिय भान्यो ॥
अति अपराध जानि नरनाथा * लियो कटाय सदनको हाथा ॥
नेकहुँ सोच सदन नहिं लायो * जगन्नाथको तुरत सिधायो ॥
सदन पुरी पहुँच्यो जब जाई * स्वप्न दियो पंडन यदुराई ॥
मोर भक्त वर सदन कसाई * ल्यावहु तेहिं पालकी चढाई ॥
पंडा सकल प्रभातहिं धाये * सदन निकट शिबिका लैआये ॥
सदन चढ्यो शिबिकामें नाहीं * आय गयो इक साधु तहांहीं ॥
सदने लै यकांत महँ भाख्यो * तुम कस मोर हुकुम नहिं राख्यो॥
मैं हौं जगन्नाथ प्रभु तोरा * सदन कह्यो तब वचन कठोरा ॥
मैं परदार ग्रहण किय नाहीं * काटि गये मम हाथ वृथाहीं ॥
जो तिय कीन्ह्यो निज पिय घाता * भयो न ताहि दंड कस बाता ॥
साधु स्वरूप नाथ मुसकाई * पूरबकी सब कथा सुनाई ॥

दोहा-पूर्व जन्मके विप्र तुम, काशीमें रह धाम ॥
पढ़न पढावन किय सकल, धर्मधुरंधर आम ॥८॥

एक धेनु इक दिवस कसाई ❀ गह्यो हतन सो चली पराई ॥
जब पावत ताको नहिं हेरचो ❀ तबै कसाई तुमको टेरचो ॥
तुम अपने दोउ कर पसराई ❀ रोक्यो धेनु गह्यो सो आई ॥
ले घर सुरभी हत्यो कसाई ❀ गोहत्या तोहिं लगी महाई ॥
धेनु सोइ तिय कंत कसाई ❀ कटे हाथ सोइ अघ फल भाई ॥
जानहु मोरि रीति असि प्यारे ❀ जे अनन्य हैं भक्त हमारे ॥
तिनको पूर्व भोग नहिं राखौं ❀ सदा भक्त शत्रुनपै माखौं ॥
अब प्रसाद कर धरत हमारे ❀ ह्वैहैं हाथ तुरंत तिहारे ॥
चढो पालकी मंदिर जाहू ❀ सादर महाप्रसादहि खाहू ॥
अस कहि हरि भे अंतर्द्धाना ❀ सदन सत्य शासन प्रभु माना ॥
चढे पालकी मंदिर आये ❀ पंडा प्रभु प्रसाद लै धाये ॥
लेन प्रसादहि भुज पसराये ❀ तुरतै उभय हाथ ह्वै आये ॥

दोहा-सदन चरित्र निहारिकै, पुरी लोग हरषान ॥
सदन कसाईको नमें, गुणि भागवत प्रधान ॥ ९ ॥
सदन कछुक दिनकरिसदन, नंदनंदन कहँ ध्याय ॥
कदन करत यमफँदनको, गे हरिसदनसिधाय ॥ १० ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे पंचाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८५ ॥

अथ नरसीमेहताकी कथा।

दोहा-हिय हरसी बरसी हरष, हरसी विशद विचित्र ॥
सुरसरसी सरसी कहौं, नरसी कथा पवित्र ॥ १ ॥
जूनागढ गुजरातमें, तहँको निवसनहार ॥
नरसी उत्तम जाति द्विज, रह्यो दरिद्र अगार ॥ २ ॥

अतिशय मूढ देश गुजराता ❀ कोउ नहिं कृष्ण भजनको ज्ञाता ॥
घरमें रहे भ्रात भौजाई ❀ करै न उद्यम कोउ कहुँ जाई ॥
नरसीको नहिं भयो विवाहू ❀ भ्रात मिले महँ कर निर्वाहू ॥
नरसी इक दिन कहुँते आई ❀ मांग्यो सलिल देहिं भौजाई ॥

कह्यो भ्रात तिय वचन रिसाई * देहुँ सलिल का देहि कमाई ॥
ले भाजन भरि पीवहु नीरा * तुमहिं देखि हिय उपजाति पीरा ॥
लगे बाण सम वचन कठोरा * नरसी निकसि चल्यो दुखभोरा ॥
बाहिर नगर शिवालय रहेऊ * लंघन सात बैठि तहँ किहेऊ ॥
द्रव्यो उमा चित करुण अपारा * बिहँसि शम्भुसों वचन उचारा ॥
तुव गृह द्विज किय सात उपासा * जो मांगै दीजै कृतिवासा ॥
तबै प्रगटि कह वचन त्रिनैना * मांगु मांगु वर तोहिं कछु भय ना ॥
नरसी कह्यो न मांगन जाना * जो प्रिय होय सो देहु इशाना ॥
दोहा-शम्भु विचारयोमनहिं तब, मोहिंप्रिययदुकुलचंद॥
तासु रास दरशाइ हौं, वृंदावन सखिवृंद ॥ ३ ॥
दिव्य रूप करि ले निज साथा * गे जहँ रास करत यदुनाथा ॥
सखी रूप करिकै जिय काहीं * प्रविशे रास विलास जहांहीं ॥
तेहि कर दियो धराय मशाला * गइत्त बन्यो नहिं नासिल हाला ॥
कह्यो शम्भुसों हरि मुसकाई * ल्याये तुम इत कौन लेवाई ॥
जाय भवन मम रासहि ध्यावै * अंत समय मम रासहि आवै ॥
हरिशासन सुनि शम्भु तुराई * दियो तहँ नरसी पहुँचाई ॥
नरसीको स्वप्नो सो भयऊ * उठ्यो चौंकि चकृत ह्वै गयऊ ॥
शम्भुकृपा पुनि मनहिं विचारी * जूनागढ गवन्यो अविकारी ॥
बाहिर नगर निवास बनायो * गाय रास पद यदुपति ध्यायो ॥
भई कछुक सम्पति तब धामैं * करै रासलीला पद गामैं ॥
नाचे हरि पढ़ँ भाव बतावैं * दशा देखि कुलके जरि जावैं ॥
करै सदा संतन सेवकाई * कछुक काल यहि भांति बिताई ॥
दोहा-संतमंडली द्वारका, जात रही हरषाय ॥
पूछ्यो साहूकारको, जूनागढमें आय ॥ ४ ॥
साहूकार नगर जो होई * हुंडी देय सातसै सोई ॥
नरसीके द्रोहीजन जेते * नरसीको बताय दिय तेते ॥
साधु सबै नरसीघर आये * हुंडी हित रुपया पहुँचाये ॥

नरसी गुण्यो वित्त घर नाहीं ❀ संत विमुख दीन्हे बिन जाहीं ॥
यह संकेत निवारणहारो ❀ ब्रजको माखन चाखनवारो ॥
कृष्ण ध्याय मुद्रा लैलीन्ह्यो ❀ हुंडी साधुनको लिखि दीन्ह्यो ॥
पूछ्यो संत साहुको नामा ❀ तब बोल्यो नरसी मतिधामा ॥
बस द्वारका साहित उछाहू ❀ जानहु संत सँवलिया साहू ॥
देखत हुंडी तुरत पठाई ❀ यामें संशय नाहिं जनाई ॥
ले हुंडी द्रुत साधु सिधाये ❀ कुशस्थली षट दिनमहँ आये ॥
हेरन लगे सँवलियो साहू ❀ नाम लेत पूंछै सब काहू ॥
कहुँ नहिं मिल्यो द्वारकामाहीं ❀ नाम सँवलिया साह तहांहीं ॥

दोहा—नरसी पै जब संत सब, कहे सकोपित बैन ॥
ठग ठगि लीन्ह्यो मुद्रिका, चलो मारि तेहि लैन ॥५॥

निकसि नगर बाहर जब आये ❀ मिले सँवलिया साहु सोहाये ॥
पूछ्यो संत सबै तेहिकाहीं ❀ कह्यो सो साहु सँवलिया आहीं ॥
साधु कह्यो खोजत हम थाके ❀ अबलों रहे धाम तुम काके ॥
कह्यो सँवलिया साहु सुबानी ❀ चलहु भवन हमरे सुखखानी ॥
संतन लाय सँवलिया साधू ❀ भवन देखायो सुछवि अगाधू ॥
मंदिर सुंदर अतिहिं उतंगा ❀ मनहु रच्यो निजपाणि अनंगा ॥
सम्पति सकल पूर सब ठामा ❀ बैठे जन मनु मूरति कामा ॥
गद्दी छबि रही अति ऊंची ❀ रही कर शशि प्रभा समूची ॥
तामें बैठि सँवलिया साहू ❀ दिय आसन संतन सबकाहू ॥
पूंछि कुशल मुद्रा मँगवाई ❀ दियो सातसै तुरत गनाई ॥
कह्यो सँवलिया साहु बहोरी ❀ नरसीसों भाष्यो असि मोरी ॥
लघु हुंडी पठवावहिं नाहीं ❀ उनको यह अनुचित दरशाहीं ॥

दोहा—सहसलक्ष अरु कोटिकी, हुंडी देहिं पठाय ॥
उनकी पाती पावते, तुरते देब पठाय ॥ ६ ॥

कबहुँ शंक करिहैं कछु नाहीं ❀ हुंडी पठवाइहैं सदाहीं ॥
गमने विस्मित साधु तुराई ❀ जूनागढ आये सुखछाई ॥

मिले संत नरसी कहँ जाई * दियो सकल वृत्तांत सुनाई ॥
सुनत सँवलिया साहु चरित्रा * नरसी अति मुदमानि विचित्रा ॥
संतन मिल्यो बहोरि बहोरी * भाषत भयो भाग्य धनि तोरी ॥
लखे सँवलिया साहु सिधारी * हम नहीं लखे अभाग्य हमारी ॥
पुनि संतन भोजन करवाई * सादर नरसी दियो बिदाई ॥
यहि विधि नरसीको बहु काला * बीति गयो ध्यावत नँदलाला ॥
भयो पुत्र इक युगल कुमारी * नरसीको नहिं दुख सुखकारी ॥
देखहु संत सेव प्रभुताई * हुंडी आपहि कृष्ण पठाई ॥
जो धरते रुपिया घरमाहीं * तो हरि सुरति करत कहुँ नाहीं ॥
तामें सुनहु एक इतिहासा * श्रोता सिगरे सहित हुलासा ॥
दोहा-रह्यो एक द्विज नगर कहँ, सो असि मानी बानि ॥
देहु जो मोहिं जगदीश सुत, तोतुमकहँ सुखमानि ७॥
अटका द्विशत रुपैया केरो * तुमहि चढैहौं अस प्रण मेरो ॥
कछु दिनमें द्विजके सुत भयऊ * यक कर द्विज मुद्रासो दयऊ ॥
कह्यो जाय जगदीश चढावहु * एकहु मुद्रा नाहिं घटावहु ॥
विपिन पंथ ह्वै विप्र सिधारयो * मारग महँ तेहिं संत पुकारयो ॥
सहस मूर्ति वैष्णव व्रत कीने * परे इतै अतिशय दुख भीने ॥
सज्जन होहु तु भोजहि देहू * सुनत विप्र मान्यो संदेहू ॥
हरि स्वरूप सब संत गनाई * सोइ मुद्रको अन्न मँगाई ॥
दिय संतन भोजन करवाई * द्वै मुद्रा बचि रहे तहांई ॥
द्वै मुद्रा ले पुरी सिधारा * अरप्यो प्रभुहिं मानि सुखसारा ॥
जेहि दिन भवनलौटि द्विजआयो * हरितेहि दिन द्विज स्वप्न देखायो॥
तुव प्रेषित द्वैशत जे मुद्रा * द्वै कस अरप्यो मोहिं द्विज छुद्रा ॥
ऐसो स्वप्न देखि द्विज राई * उठि प्रभात द्विज तुरत बोलाई ॥
दोहा-बोल्यो आखि देखायके, द्वै कस लियो चोराय ॥
एक सबै आठन्नबे, मुद्रा दियो चढाय ॥ ८ ॥
कह्यो पुरोहित तब असि बानी * मैं हरिरूप संत सब जानी ॥

दीहों संतन द्रव्य खवाई ❀ बचे ढेक ते दियो चढाई ॥
ऐसी सुनत पुरोहित वानी ❀ सो द्विज हरिवशु संतन मानी ॥
करन लग्यो संतन सेवकाई ❀ हरिपुर गो संसार विहाई ॥
देखहु नरसीको विश्वासा ❀ दिय हुंडी भरि श्यामनिवासा ॥
नरसी बसे सुखित घर माहीं ❀ कियो काज पुनि कन्या काहीं ॥
प्रथम गर्भ दुहिताके भयऊ ❀ तासु सासु कोपित कहि दयऊ ॥
तेरो पिता महा कंगाला ❀ पठयो कछु पट नहिं यहि काला ॥
कन्या नरसीपहँ दुख छाई ❀ सासु कथित कहवाय पठाई ॥
जो यहि समय पिता नहिं ऐहौ ❀ अयिशय अयश जगत महँ पैहौ ॥
सुतापत्र नरसी जब पायो ❀ समधी भवन तुरत चलि आयो ॥
पिता मिलन हित सुता सिधाई ❀ मिलि बहुविधि पूछयो शिरनाई ॥

दोहा–मोहि देनके हेतु पितु, कालाये सो भाषु ॥
जो नहिं देहौ तो अवशि, सासु करी अतिमाषु ९॥

नरसी कह्यो कछुक नहिं लाये ❀ भवन माहिं ढूंढे नहीं पाये ॥
सुता यह्यो छूंछे कत आये ❀ मोहिं दुसह दुख पिता कमाये ॥
नरसी कह्यो कहै का साशू ❀ सुता पूंछि मोहिं करै प्रकाशू ॥
सुता सासु ढिग तुरत सिधारी ❀ देखत सासु प्रकोपि उचारी ॥
का लायो पितु तोहि सधौरी ❀ सुता कह्यो तेरी मति बोरी ॥
पूंछयो पिता जो समधिनि भाषै ❀ मम मन सकल देन अभिलाषै ॥
सासु सहस्रन नाउँ लिखाई ❀ दीन्ह्यो नरसी ढिग पठवाई ॥
नरसी कह्यो भूलि रह जेई ❀ सकल लिखाय पत्रमहँ देई ॥
सासु सुनत अमरष अति छाई ❀ द्वै पषाण पुनि दियो लिखाई ॥
नरसी पत्र पाय सुखमानी ❀ बैठि कोठरी ध्यानहि ठानी ॥
नरसीको औ यदुपति केरो ❀ रह्यो प्रथम संकेत निबेरे ॥
जब तुम गैहौ राग केदारा ❀ होई मिलन हमार तुम्हारा ॥

दोहा–सो नरसी अनुराग भरि, गायो राग केदार ॥
भक्त प्रेमवश प्रगट भो, श्रीवसुदेव कुमार ॥ १० ॥

पत्र लिखित सब बसन हजारन * कोठरीते द्रुत लग्यो निकासन ॥
बसन शैल लगि गयो दुआरा * कनक रजत युग उपल पवारा ॥
भये कृष्ण पुनि अंतर्द्धाना * नरसी पट पठयो तब नाना ॥
ग्राम मात्रजन सब पट पाये * औरहु पाये जे तहँ आये ॥
पठयो कनक रजत पाषाने * समधिनि समधी अचरज माने ॥
छाय रही कीरति संसारा * नरसी गमन कियो आगारा ॥
नरसीसुता संग चलि दीनी * यदुपति प्रेम भक्ति रस भीनी ॥
सहित सुता नरसी प्रेमी * निवसे भवन भक्तिके नेमी ॥
निशि दिन करहिं कृष्णपद गाना * छांडि लाज मानहुँ अभिमाना ॥
कुलके सकल वैर अतिमानैं * भूपतिसों चुगली नित ठानैं ॥
यक दिन नृप नरसी बोलवायो * गान करत सो सभा सिधायो ॥
सहित सुता सुत हरिरँग राते * गावत नाचत आंशु बहाते ॥

दोहा-जब नरसी आयो सभा, दरश करत महिपाल ॥
शुद्धभयो अंतःकरण, जानिपरयोनँदलाल॥ ११॥

तब कोउ विप्र तौन पुरवासी * वरण्यो नरसी चरित हुलासी ॥
जस समधी घर किय सत्कारा * मिल्यो यथा वसुदेवकुमारा ॥
भूपति सुनत परयो पदमाहीं * सतकारयो बहु नरसीकाहीं ॥
पुनि कोउ हरिविमुखी तहँ आई * नरसीकी चुगली अस गाई ॥
काचे सूत विरचि सुमनमाले * पहिरावतहै नित नँदलाले ॥
सन्मुख बैठि आप जब गावै * माल टूटि नरसी गल आवै ॥
भूपति लेन परीक्षा हेतू * सभा करायो संत समेतू ॥
भूपति रेसममें गुहि माला * पहिरायो हाले नँदलाला ॥
नरसी गान करन पुनि लाग्यो * राग केदारा नहिं तहँ राग्यो ॥
रह्यो साहुके गहन केदारा * नहिं गायो सो सभा मँझारा ॥
तब प्रभु धारि नरसी कर रूपा * कह्यो साहुसों वचन अनूपा ॥
ले रुपया अब देहु केदारा * समुझिलेहु जो होय तुम्हारा ॥

दोहा-साहु तुरत मुद्रा दियो, दियो केदारा राग ॥
साहु पत्र नरसिहि दियो, हरि चलि विलम न लाग ॥ १२॥

गिरयो गगनते पत्र अंकमें ❀ गायो नरसी तब निशंकमें ॥
गावत तहां सुराग केदारा ❀ माला टूटत सबै निहारा ॥
परी माल नरसी गल आई ❀ भूप परयो नरसी पद जाई ॥
माच्यो सभा महँ जयजयकारा ❀ हरि विमुखीचित भे जरि छारा ॥
भयो शिष्य नरसीको राजा ❀ भायनभृत्यन सहित समाजा ॥
सुनहु सबै अब हरि जेहिं भांती ❀ नरसी सुतके भये बराती ॥
जूनागढ संनिधि इक ग्रामा ❀ तामें बसै विप्र मतिधामा ॥
रहैं धनाढय सुपात्र सुजाना ❀ तासु कुटुम्बहु तासु समाना ॥
सुंदरि ताके रही कुमारी ❀ षोडश वर्ष वयस जब धारी ॥
तब ताको पितु कियो विचारा ❀ करौं विवाहकेर संभारा ॥
पठयोद्विज अस तेहिकहिदीन्ह्यो ❀ सकुलधनाढय खोजि जबलीन्ह्यो॥
तब दीन्ह्यो तुम तिलक चढाई ❀ जामें सुता कलेश न पाई ॥

दोहा-चल्यो विप्र लै तिलक तब, जूनागढको आय ॥
पूछ्यो सगरे नगरमें, केहि घर धन बहुताय॥१३॥

विप्र सकल जे रहे कुलीना ❀ नरसीके संबंधी दीना ॥
ते सब नरसी वैर विचारी ❀ कही बात तेहिं द्विजहि उचारी ॥
जो कुल सम्पति चहौ बडाई ❀ तौ नरसी घर करौ सगाई ॥
नरसी सरिस आज नाहिं कोऊ ❀ सम्पतिमांह बडोहै सोऊ ॥
सो सुनि नरसी घर महिदेवा ❀ जात भयो बोल्यो करि सेवा ॥
विप्र एक अतिशय धनवाना ❀ जातिहुँ महँ सो अहै प्रधाना ॥
सो निज सुता विवाह विचारा ❀ तुम्हरे पुत्र संग सुखसारा ॥
नरसी ठानिलियो सो व्याहू ❀ लियो तिलक सुमिरत यदुनाहू ॥
बहुरि विप्र अपने घर गयऊ ❀ कन्या पितहि कहत सो भयऊ ॥
नरसी नाम पूर्व सुनि राखा ❀ ताते द्विजपर अतिशयमाखा ॥
नरसी जन्मकेर कंगाला ❀ क्षुधा विवश नितलहतकशाला ॥
नरसी सुत सँग सुता विवाहू ❀ मैं करि किमि लेहौं दुखदाहू ॥

दोहा-कह्यो विप्रसों माषि अति, आयो तिलक चढाय ॥
जेहिकर मैं दीन्ह्यो तिलक, सो कर लेहु कटाय ॥१४॥

तब तौ जाय तिलक ले आऊं ❀ नातो लेउ प्राण यहि ठाऊं ॥
जुरे पंच सब सुनत बिबादा ❀ कहत भये नाहिं करहु विषादा ॥
सुता भाल जस लिख्यो विधाता ❀ सोई होत न दूसरि बाता ॥
यहि विधि कहि दुहितापितुकाहीं ❀ समुझाये सब आय तहांहीं ॥
कन्यापिता मानि तब लीन्ह्यो ❀ काज करनको सम्मत कीन्ह्यो ॥
लग्न लिखाय विचारि शोधाई ❀ दीन्ह्यो नरसी भवन पठाई ॥
नरसी जबते तिलकहि लीन्ह्यो ❀ तबते व्याह सुरति नहिं कीन्ह्यो ॥
रँगे कृष्णके प्रेमहि रंगा ❀ गावत पद करते सत्संगा ॥
जो पूंछे कोउ कबै बिवाहू ❀ तौ भाषे जानै यदुनाहू ॥
लग्न चारि दिन जब रहिगयऊ ❀ पुरमहँ अति उपहासहि भयऊ ॥
तब करुणानिधि मनहि विचारा ❀ नरसी मोपर राख्यो भारा ॥
ताते आज काज सब करिहौं ❀ कालिमहँ प्रगट होय नहिं डरिहौं ॥

दोहा—अस विचारि करुणायतन, भीष्मकसुता समेत ॥
प्रगट भये नरसी भवन, कियो विवाहहि नेत १५ ॥

निज करसों रुक्मिणि महरानी ❀ कियो विवाह चार विधि ठानी ॥
जाति कुटुम्बहि सकल बुलायो ❀ विविध भांति भोजन करवायो ॥
सो द्विज घर पठयो यक चारा ❀ करै विवाहकेर संभारा ॥
सुनत विप्र सो हँस्यो ठठाई ❀ ऐहैं किमि बरात सजवाई ॥
इत नरसीसों कह यदुराई ❀ लावहु व्याहि पुत्र रत जाई ॥
नरसी कह्यो न मैं कछु जानौं ❀ जस चाहा तुमहीं तस ठानौं ॥
हरि कह तू गमनै महि माहीं ❀ मैं अकाश है चलौं तहांहीं ॥
नरसी चल्यो पुत्र लै साथा ❀ धरि यदुनायक शासन माथा ॥
जबै गयो सो ग्राम नेराई ❀ प्रगटी तबै बरात महाई ॥
मणिन जटित यक दिव्य पालकी ❀ भूषित वाहक मुक्तजालकी ॥
प्रगटे तहां तुरंग हजारन ❀ सिंधुर सहस मेरु मदमारन ॥
सुवरण साजित स्यंदन सोहैं ❀ ललकत जिन्हैं विबुधगण जोहैं ॥

दोहा—नखसिख रत्ननते जडित, प्रगटे सुभट अपार ॥
बजे हजारन दुंदुभी, माच्यो शोर अपार ॥ १६ ॥

कवित्त—एक ओर गैयर गरट्टनके ठट्ट ठाटे, एक ओर हैवर हजारन विराजहीं ॥ स्यंदन अमंद मानो मारके समारे सर्व, प्यादे अर्व खर्व सुर गर्वको पराजहीं ॥ प्रगटे अकुंठित विकुंठहीके बाजे तहां कुंठित करैं जे देवराजहूके बाजहीं ॥ भनै रघुराज यदुराज लै समाज आयो विलसी बरात ऐसी नरसीके काजहीं ॥

दोहा—परयो परावन देशमें, कोउ चढि आयो भूप ॥
को पूंछे कहँ जात दल, कोउ नाहिं यहि अनुरूप १७

कहैं बराती तब यह बाता * नरसी सुतकी जात बराता ॥
सो द्विजके हितुवा कोउ धांई * अति बिलखित यह खबरि जनाई
आवत नरसी लिहे बराता * कछु नाहिं तासु प्रमाण जनाता ॥
जितनो धन तुम्हरे घरमाहीं * चारहु भरि पूजी तेहि नाहीं ॥
धायो द्विज तब शीश उघारी * सिंधु समान बरात निहारी ॥
गिरो जाय नरसी पदमाहीं * राखहु अब मर्यादा काहीं ॥
नरसी तापर करि अति दाया * विनय कियो सुनियो यदुराया ॥
राखहु विप्रहुकी अब लाजू * तुम तो नाथ गरीब निवाजू ॥
तब यदुनाथ रमा पठवाई * ऋद्धि सिद्धि युत द्विज घर आई ॥
क्षणमहँ दियो साजु सब साजी * खाय बराती भे सब राजी ॥
ग्राम देशके जे जन आये * पृथक् पृथक् सम्पति सब पाये ॥
सो द्विजभवन कुबेरभवनभो * कौतुक किमि जहँ रमारवनभो ॥

दो०—कोउ नहिं देख्यो नहिं सुन्यो, भयो यथाविधि ब्याह
सो विभूति को कहिसकै, जहँ प्रगटे यदुनाह ॥१८॥
चारि दिवस तहँ रहतभै, नरसीसुवन बरात ॥
खान पान सन्मान बहु, भयो वरणि नहिंजात ॥१९॥
पुनि सोई सन्मानसों, कियो बरात पयान ॥
आई नरसीके भवन, तहौं विभूति अमान ॥ २० ॥
यहि विधि नरसीसुवनको, हरिकिय प्रगट विवाह ॥
फेरि बरात समेत भे, अंतर्हित यदुनाह ॥ २१ ॥

फैलि रह्यो सब देश महँ, नरसी सुयश विशाल ॥
नंदलालसों दूसरो, को है दीनदयाल ॥ २२ ॥

इति श्रीभक्तचरितावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे षडशीतितमोऽध्यायः ॥८६ ॥

अथ मीराबाईकी कथा ।

दोहा–अब मीरा मंजुल चरित, श्रोता सुनहु सुजान ॥
नाभाको छप्पय प्रथम, तामें करहु बखान ॥ १ ॥

छप्पय–सदृश गोपिकन प्रेम प्रगट कलियुगहि देखायो ॥
निरअंकुश अतिनिडर रसिक यश रसना गायो ॥
दुष्टन दोष विचारि मृत्युको उद्यम कीयो ॥
बार न बांको भयो गरल अमृत ज्यों पीयो ॥
भक्ति निसान बजायकै काहूते नाहिन लजी ॥
लोकलाज कुल शृङ्खला तजि मीरा गिरिधर भजी ॥

दोहा–मारवाड यक देश जो, जैमिल तहँको भूप ॥
तासु सुता मीरा भई, यदुपति भक्त अनूप ॥ २ ॥

बालापनते हरि अनुरागा ❀ अति उज्ज्वल मीरा उर जागा ॥
खेलहि हरि चरित्रके खेला ❀ हरिमूरति विरचै मृदुढेला ॥
राधा माधव करै विवाहू ❀ करै सहचरिन सहित उछाहू ॥
यहि विधि वैस वर्ष दश वीती ❀ दिन दिन दून दून हरि प्रीती ॥
यक दिन कोउ साधू तहँ आयो ❀ जैमिल भूप भवन बोलवायो ॥
सुनत शङ्खध्वनि मीरा आई ❀ साधुनके चरणन शिर नाई ॥
संतनमहँ जो रह्यो महंता ❀ सो मूरति पूजै श्रीकंता ॥
मीरा तिनहिं देखि ललचाई ❀ पूछ्यो येको देहु बताई ॥
कह महंत सुन मीराबाई ❀ या हरिकी मूरति मन भाई ॥
गिरिधरलाल नाम इन केरो ❀ तू अब मनमें करै निवेरो ॥
मीरा कह्यो देहु मोहिं काहीं ❀ इनहिं छोडि सूझत कछु नाहीं ॥
भाषि महंत गये स्वस्थाना ❀ तासु देव अनुचित अतिमाना ॥

तेहि क्षणते मीरा सब ख्याला ❋ रटन लगी हा गिरिधर लाला ॥
दोहा-बैठी जाय निकेत तजि, खान पान अरु स्नान ॥
गावै यह पद सूरको, सो मैं करौं बखान ॥ ३ ॥
पद-जो विधिना निज वश करि पाऊं ॥
तौ सब कहो होय सखि मेरो, अपनी साध पुराऊं ॥
लोचन रोम रोम प्रति मांगौं, पुनि पुनि त्रास देखाऊं ॥
यकटक रहै पलक नाहिं लागै, पद्धति नई चलाऊं ॥
कहा करौं छविराशि श्यामघन, लोचन द्वै न अघाऊं ॥
येते पर ये निमिष सूर सुनु, यह दुख काहि सुनाऊं ॥
दोहा-यह गावत मीरहि भये, जल विन सात उपास ॥
भूप बोलाय महंतको, किय वृत्तांत प्रकाश ॥ ४ ॥
ताको मरन निहारि महंता ❋ जैमिलसों तब कह्यो हसंता ॥
मूरति चहै जो सुता तुम्हारी ❋ करै विनय यदुनाथ पुकारी ॥
स्वप्न देहिं जो गिरिधर लाला ❋ तौ मैं देहुँ मूर्ति यहि काला ॥
अस कहि गयो महंतनु डेरा ❋ सोवतमें गिरिधर तेहिं टेरा ॥
चहो जो भल तुम विन संदेहू ❋ तौ हमको मीरा कहँ देहू ॥
अर्द्धरात्रि उठि डरयो महंता ❋ आयो भूपति भवन तुरंता ॥
मूरति मीराके घर दीन्ह्यो ❋ आप गवन वृंदावन कीन्ह्यो ॥
गिरिधरलाल प्राण सम पाई ❋ मीरा पूजन लगी सदाई ॥
गिरिधरलाल विना क्षण नाहीं ❋ मीरा रहै भवन निज माहीं ॥
खान पान खेलन दिन राती ❋ गिरिधर सँग करती सब भांती ॥
मारवाड जो देश अमाना ❋ नगर जोधपुर तहां महाना ॥
जैमिल भूप जाति राठोरा ❋ करत राज्य शासन चहुँ ओरा ॥
दोहा-दुहिता द्वादश वर्षकी, व्याह योग्य निहारि ॥
पठै पुरोहित उदयपुर, विरच्यो व्याह विचारि ॥ ५ ॥
क्षत्रिय जाति शिरोमणि राना ❋ जाको जाहिर सुयश जहाना ॥
राना साजि बरात अपारा ❋ व्याहन चल्यो मानि सुखसारा ॥

जैमिल भूप किये व्यवहारा * है्गो जबै द्वारको चारा॥
आयो जबै भाँवरी काला * तब मीरा कह वचन रसाला॥
गिरिधरलाल जाय जब आगे * बैठें मंडप तरे सबागे॥
तब हम मंडप तरे सिधारब * गिरिधरलाल भाँवरी पारब॥
भये चकित यह सुनि पितुमाता * कियो प्रथित मीराकी बाता॥
गिरिधर लाल तहां ले आई * मंडप तरे दियो बैठाई॥
मीरा आय कियो तब चारा * गिरिधरलाल भाँवरी पारा॥
राना भवन गयो उठि जबहीं * मीरासों माता कह तबहीं॥
चरित कौन यह कियो कुमारी * प्रगट कहै सब हेतु उचारी॥
तब मीरा नेसुक मुसकाई * मंद मंद सुंदर यह गाई॥

पद–माई म्हाको स्वप्नमें बरनी गोपाल॥
राती पीती चूनरि पहिरी मेहँदी पाणि रसाल॥
कांई औरकी भरौं भांवरे, म्हाको जग जंजाल॥
मीरा प्रभु गिरिधरन लालसों करी सगाई हाल॥

दोहा–यह सुनिकै माता पिता, मीरासों कह बानि॥
जो चाहै सो मांगिले, धन माणिक मनमानि॥६॥
तब मीरा पितु मातुसों, बोली यह पद गाय॥
कृष्णविवाह उछाह भरि, नयनप्रवाह बहाय॥७॥

पद–देरी अब माई म्हाको गिरिधर लाल॥
प्यारे चरणकी आनि करतिहौं, और न दे मणि माल॥
नात सगो परिवारो सारो, मने लगे मनो काल॥
मीराप्रभुगिरिधरनलालकी छवि लखि भई निहाल॥

दोहा–सुनि मीराके वचन तब, जननी जनक तुराय॥
प्रथमहि गिरिधरलालको, दिय पालकी चढाय॥८॥

राना लै बरात घर आयो * मीरै वधू प्रवेश करायो॥
दुलहिनि दूलह लै तहँ सासू * गे कोहबर कुलदेव निवासू॥
तहँ कुलदेव मूर्ति अति पावन * मीरहि पूजा लगीं करावन॥

वृद्ध वृद्ध आई जुरि नारी ❋ लगीं सिखावन रीति उचारी ॥
तब मीरा बोली मुसक्याई ❋ पूजा रीति मोहिं नहिं भाई ॥
यदुकुलदेव देवकहँ त्यागी ❋ द्वितिय देवकर सेवन रागी ॥
कही सासु तब मंजुल बानी ❋ मम कुल रीति बहू नहिं जानी ॥
ये कुलदेव सदाके म्हारे ❋ पूजे रहो सोहाग तिहारे ॥
यह सुनि चितै चहूंकित मीरा ❋ बोली विधवन लखि मतिधीरा ॥
इनके पूजत बढै सोहागा ❋ यह जो कह्यो मृषा मोहिं लागा॥
ये सब तिय जे तुव घर आई ❋ पूजे हैहैं देव सदाई ॥
भई कहो विधवा केहि हेतू ❋ मोहिं दीखैं द्वै चारि निकेतू ॥

दोहा–सासु बहूके वचन सुनि, कह्यो वचन अति कोपि॥
दुलहिनि देहरी देत पग, दई लाज सब लोपि ॥९॥

और सबै रानाकी रानी ❋ रानासों चलि बचन बखानी ॥
भयो कुमार विवाह उछाहू ❋ पै यह अति दारुण दुखदाहू ॥
बहू ढीठि बेकलि बिन लाजू ❋ करै यथोचित नहिं कुलकाजू ॥
राना सुनि मन मानि गलानी ❋ रानीसों अस गिरा बखानी ॥
भूत महलमहँ देहु अवासू ❋ आपहिते ह्वै जैहै नासू ॥
तब दुलहिनि मीराको लाई ❋ भूतमहलमहँ दियो टिकाई ॥
कियो कुँवरकर द्वितिय विवाहू ❋ मीरा मान्यो महा उछाहू ॥
जो नैहरते सम्पति लाई ❋ तामें इक मंदिर बनवाई ॥
गिरिधरलालहि तहां पधारी ❋ पूजहि रोज मानि सुख भारी ॥
बजैं झांझरी शङ्ख नगारे ❋ गये प्रेत सब देव अगारे ॥
मीरा नाम जग्यो जगमाहीं ❋ आवैं संत अनंत तहांहीं ॥
करैं भजन गिरिधरके मंदिर ❋ प्रगटत रोजहि आनँद चंदिर ॥

दोहा–रोजहिं संत जेवांयके, रोजहिं चरण पखारि ॥
सलिल शील मीरा धरहि, नयन प्रेम जल ढारि ॥१०॥

गिरिधर ढिग लै आप तमूरा ❋ गावै सुंदर पद रचि पूरा ॥
दशा देखि राजाकी रानी ❋ आई सब अति अमरष सानी ॥

लगी बुझावन बहुविधि मीरै ❀ क्यों उपजावति कुलकहँ पीरै ॥
साधुनकों बहु संग न कीजै ❀ निज कुलरीति सदा गहि लीजै ॥
सुनिहै तुव गति जो महराना ❀ तौ किमि बची तोरि पुनि जाना ॥
तब मीरा बोली हँसि बानी ❀ का समुझावहु मोहिं अज्ञानी ॥
तुमहिं न समुझि परे संसारू ❀ देखिपरै मोहिं नंदकुमारू ॥
कही सासु तब अमरष सानी ❀ तैं अज्ञानि मोहिं कह अज्ञानी ॥
मम कुलदेव अहैं यक लिंगा ❀ करै तासु तैं वचन अभंगा ॥
तब मीरा अस गिरा उचारी ❀ सोउ सबैं मेरे गिरिधारी ॥
जाहु सबै छर जनि बतराहू ❀ मेरे मरे न कछु दुख दाहू ॥
मोहि तो संत संग सुख होई ❀ और बात बोलो जनि कोई ॥

दोहा–अस सुनि मीराके वचन, सासु ननद अनखाय ॥
रानाके ढिग जायकै, दीन्हीं दशा सुनाय ॥ ११ ॥

मीरा चरित सुनत तब राना ❀ कुलकलंक मीराकहँ माना ॥
मनमहँ लीन्ह्यो तुरत विचारी ❀ मीरा जाय कौन विधि मारी ॥
तब रानी अन कह्यो उपाई ❀ यहि विधिसों नहिं बची बचाई ॥
जहर घोरि कंचनके प्याला ❀ कहि चरणामृत गिरिधरलाला ॥
तेहि ढिग भेजिदेहु महराना ❀ पावतही करिहै सो पाना ॥
राना जहर घोरि यक प्याले ❀ सासु हाथ पठयो तेहि आले ॥
सासु कह्यो मीरा तू जाई ❀ तोरि चूक दिय माफ कराई ॥
है प्रसन्न तोपर महराना ❀ चरणामृत पठयो भगवाना ॥
तब मीरा अस वचन बखाना ❀ गिरिधरलाल सत्य भगवाना ॥
ताकर तुम चरणामृत लाई ❀ मेरो सब विधि दियो बनाई ॥
अस कहि लियो जहरकर प्याला ❀ कियो पान कहि गिरिधरलाला ॥
गिरिधरलाल समीप सिधाई ❀ सासु ननद कहँ गइ लेवाई ॥

दोहा–तहँ अस पद कहँ विमल रचि, गावन लगी सप्रेम ॥
सो मैं इत लिखि देतहौं, श्रोता सुनहु सनेम ॥ १२ ॥

पद-रानाजी जहर दियो मो जानी ॥
निज हरि मेरो नाम निवेर्‌यो, छन्यो दूध अरु पानी ॥
जबलगि कंचन कसियत नाहीं, होत न बाहिर बानी ॥
अपने कुलको परदा करियो हम अबला बौरानी ॥
श्वपच भक्त वारौं तन मन जे, हौं हरि हाथ बिकानी ॥
मीरा प्रभु गिरिधर भजिबेको, संत चरण लपटानी ॥
हमारे मन राधा श्याम बसी ॥
कोई कहै मीरा भई बावरी, कोई कहै कुल नसी ॥
खोलिके घुंघट पारिके गाती, हरि ढिग नाचत गसी ॥
वृंदावनकी कुंजगलिनमें भाल तिलक उर लसी ॥
विषको प्याला रानाजी भेज्यो, पीवत मीरा हँसी ॥
मीराके प्रभु गिरिधर नागर, भक्ति मारगमें फँसी ॥

सो०-मीरा यह पद गाय, विषप्याला पीवन कियो ॥
गयो सो गरल विहाय, नशा न कीन्ह्यो नेकहू ॥ १ ॥

तदपि न कछुमन समझयो राना ❋ सुनन लग्यो पुनि चुगुल बखाना ॥
एक समय मीरा हरिदासी ❋ अर्द्ध रात्रि हरि प्रेम हुलासी ॥
करि पट बंद मंदिरहि जाई ❋ नाचति गावति भाव बताई ॥
गिरिधरलाल प्रत्यक्ष बताने ❋ मीराके रस वश मैं ठाने ॥
पुरुष वचन सुनि दासी दौरी ❋ रानासों कह मतिकी बौरी ॥
कोउ यक पुरुष भवन महँ आयो ❋ मीरासों प्रत्यक्ष बतरायो ॥
सुनि राना सकोपि उठि धायो ❋ कर करिकै करवालहि आयो ॥
खोल्यो पट पूंछ्यो कस मीरा ❋ कौन पुरुष इत रह्यो अधीरा ॥
मीरा कह्यो न नयनन देखों ❋ गिरिधर छोंडि द्वितिय कस लेखों ॥
इतै न द्वितिय पुरुष संचारा ❋ छोंडि छैल यक नंदकुमारा ॥
मीरा वचन सुनत तब राना ❋ लज्जित भयो न वचन बखाना ॥
तब मीरा तुरतहिं पद ठाने ❋ गावनलगी सुनावत राने ॥

दोहा-सो पद इत लिखि देतहौं, श्रोता सुनहु सचाय ॥
श्रीमीराके पद विमल, मोको अधिक सोहाय ॥ १२ ॥

पद-रानाजी मैं सांवरे रँग रांची ॥
सजि शृंगार पद बांधि घूंघुरू, लोक लाज तजि नाची ॥
गई कुमति लहि साधुकी संगति, भक्तिरूप भई सांची ॥
गाय गाय हरिके गुण निशि दिन, काल व्यालसों बांची ॥
उन बिन सब जग खारो लागत, और बात सब कांची ॥
मीरा श्रीगिरिधरनलालसों, भक्ति रसीली यांची ॥

दोहा-सुनि मीराकी वाणि प्रभु, मनमें मानि गलानि ॥
गवन कियो निज भवनको, रवण रमापति जानि १४॥

पुनि मीरा सब संत समाजा * बैठनलगी छोडि कुल लाजा ॥
एक समय इक साधु सिधायो * मीराको अस वचन सुनायो ॥
मीरा तुम गिरिधरकी दासी * मैं गिरिधरको दास हुलासी ॥
मोहिं दियो गिरिधर यह शासन * जाय करो मीरा दुख नाशन ॥
ताते अंग संग मोहिं दीजै * गिरिधरको शासन गुणि लीजै ॥
मीरा कही भली यह बाता * भोजन करहु अबहिं तुम ताता ॥
अस कहि सादर संत जेवाई * साधु समाजहिं सेज बिछाई ॥
कह्यो साधुसों मनकी कीजै * सकल दुचित चितकी तजि दीजै ॥
साधु कह्यो कहुं जनके यूहा * होती केलि कला करि कूहा ॥
मीरा कह्यो न कहूं यकंता * कहो ठौर जहँ नहिं श्रीकंता ॥
बसहिं तनुहि महँ देव अपारा * रवि आदिक अश्विनीकुमारा ॥
ते सब पाप पुण्य कहि देते * यम जस उचित दंड तेहिं देते ॥

दोहा-मीराके अस वचन सुनि, हिय पट खुले तुरंत ॥
गह्यो चरण कहि करु क्षमा, देहि भक्तिभगवंत १५
तब मीरा यह गाय पद, दियो मंद मुसक्याय ॥
संत मंडली चरित लखि, रहे सबै शिरनाय॥ १६॥

येरी मैं तो दरददिवानी मेरा दरद न जानै कोय ॥
घायलकी गति घायल जानै और न जानै सोय ॥
छूरी ऊपर सेज हमारी पौढन केहि विधि होय ॥
मीराको दुख तबहिं मिटै जब वैद सँवलिया होय ॥

दोहा-यहि विधि मीराको सुयश, प्रगट्यो सकल जहान॥
बादशाह अकबर सुन्यो, दरश हेतु हुलसान १७॥

तानसेनको संग लै, अपनो वेष छिपाय॥
आयो मीराजी निकट, बैठत भो शिरनाय॥ १८॥

तानसेन पूंछत भयो, गानभेद बहु नेत॥
सो मैं भाषा इत लिखौं, सबके समुझन हेत॥१९॥

तानभेद, रागभेद, वाद्य वादक लक्षण तालनके भेद इत्यादि॥ तब श्रीमीराजी विस्तारते पूर्ण तानभेद अपूर्ण तानभेद, पुनरुक्त तानभेद तीनि ग्राम सप्तस्वर छप्पन मूर्छना ते सब करिके फेरि ताल एकसै बीस तिनके नाम भेद फेरि दुइसै चौंसठि राग जे संगीतरत्नाकरादि ग्रंथोंमें तिनके नामभेद कह्यो पुनि रागनके आलापके वर्ण ते कह्यो फेरि जौन राग जौन ऋतुमें जौन पहरमें गाइवे योग्य है और जौन रागको जौन देवता है सो कह्यो फेरि भाषांग क्रुपांग उपांग और इनके नाम भेद कह्यो फेरि वीणालक्षण कह्यो फेरि मृदंगकी उत्पत्ति कह्यो फेरि वादक चरित प्रकार वादक १ मुखरी २ प्रतिमुखरी ३ गीतानुग ४ तिनके सब लक्षण कह्यो अरु त्राटन जो बाव ताके वर्ण कह्यो फेरि उतनिग्रह सम अतीत अनागत तिनके लक्षण कह्यो फेरि वाद्य प्रबंधमें तीनि प्रकारके लय द्रुत मध्य विलंबित इनके लक्षण अरु जौन गृहमें जौन लय रहैहै सो कह्यो फेरि चंचत्पुट चाचपुट जे ताल और जे वर्ण बोल बजावतमें निकसैं ते कह्यो फेरि गीतमाहात्म्य कह्यो तब बादशाह अकबर और गानवेत्ता तानसेन ते मग्न ह्वै गये बार बार मीराको सराहिके प्रणाम कियो अरु अपने मनमें जानि लियो कि जो मीराजीको श्रीगिरिधरलालजी प्रत्यक्ष हैं सो बात सत्य है फेरि तानसेन और ताकि मीराजीसों अपनो उद्धार पूछ्यो तब मीराजी राजनीति कहिकै फेरि साधुनके दरश परशते सबहीको उद्धार होय यह कह्यो॥ ३॥

दोहा-पुनि मीरा बोली वचन, सुनहु अकब्बरशाह ॥
कहों एक इतिहास मैं, ज्ञान विमल जेहिं मांह ॥ २० ॥
कोऊ भूप रह्यो इक पापी * सब जीवनको अति संतापी ॥
इक दिन खेलन गयो शिकारा * मग आवत इक साधु निहारा ॥
साधू रहे लगाये छाता * ताहि देखि नृप अमरष माता ॥
कह्यो उतारहु छत्र तुरंता * नातो होत अबहिं तुव अंता ॥
साधु घामवश छत्र न टारयो * तब राजा तेहि नेजा मारयो ॥
भूपति आयुध हन्यो कितेको * हरि रक्षित लागी नहिं येको ॥
छत्र उतारयो साधु डेराना * भूपतिके उपज्यो कछु ज्ञाना ॥
छत्र उठाय साधुको दीन्ह्यो * सो अपने आश्रम मग लीन्ह्यो ॥
मरयो भूप लैगे यमदूता * देन लगे यमदंड अकूता ॥
चित्रगुप्त कह कछु किय धर्मा * साधुहि दियो छत्र अति घर्मा ॥
यम कह ल्याउ वैकुंठ देखाई * लैगे दूत ताहि दौराई ॥
लखत विकुंठ लखे हरिदासा * ताहि देखायो अपने पासा ॥
दोहा-यमदूतनते कर फटक, गयो भूप हरिधाम ॥
साथहि छत्र प्रदानते, भयो भूप कृतकाम ॥ २१ ॥
ऐसो साधु प्रभाव तुम, गनहु अकब्बर शाहि ॥
सकलसुकृतको मूल किय, संत प्रशंसत जाहि ॥ २२ ॥
पुनि अकबरके सन्मुखे, तकि गिरिधरके ओर ॥
मीरा गायो विमल पद, सकल संत चित चोर ॥ २३ ॥
पद-माईरी मैं सँवलिया जानो नाथ ॥
लेन परचो अकबर आयो तानसेन लै साथ ॥
राग तान इतिहास श्रवण करि, नाय नाय महि माथ ॥
मीराके प्रभु गिरिधर नागर कीन्ह्यो मोहिं सनाथ ॥
दोहा-जा दिन मीरा दरश करि, अकबर आयो धाम ॥
तादिन कोउ अकबर उपर, करिके मारनकाम ॥ २४ ॥

पुरश्चरण अति घोर किय, हनूमानको ध्याय ॥
पवनपूत कोपित महा, तुरत आगरे आय ॥ २५ ॥
अकबरको मारन गयो, धारे गदा कराल ॥
तहँ ठाढे देखत भयो, दोऊ दशरथलाल ॥ २६ ॥
तब प्रभुपद शिरनायके, आयो लौटि तुरंत ॥
करताके शिर देत भो, गुरू गदा हनुमंत ॥ २७ ॥
यह मीराके दरशको, जानहु सकल प्रभाव ॥
मरत भयो अकबर अमर, राखि लियो रघुराव २८
येतेहू पै राना कुमति, मीरहि जान्यो नाहिं ॥
मीरासों करि वैर अति, भूलि रह्यो जगमाहिं ॥ २९

यक डब्बामें अहि अति कारो * मीरा पूजन समय विचारो ॥
यक दूती कर भेज्यो धामा * लहिये यामें शालिग्रामा ॥
दूती कह मीरासों जाई * शालिग्राम लेहु सुखदाई ॥
मीरा महालाभ मन मानी * दूतीको किय दारिद हानी ॥
गिरिधर पूज्यो गिरिधर प्यारी * पुनि डब्बाको लियो उघारी ॥
शालिग्राम शिला तेहि माहीं * निरखत भे सब संत तहांहीं ॥
शालिग्राम शिला कहँ पाई * मीरा बार बार बलिजाई ॥
पूज्यो नयनन हृदय लगायो * यह अचरज सबके मन आयो ॥
राना सुनि अतिविस्मित भयऊ * तहुँ न राग रोष मन गयऊ ॥
पुनि मीरा गिरिधर आई * प्रेम मगन दृग आंशु बहाई ॥
गावन लगी विमल पद रचिके * भाव बतावहि सन्मुख नचिके ॥
ते पद मैं इत लिखौ बनाई * सुनहु सकल श्रोता मन लाई ॥

दोहा—मीराजीके विमल पद, तिनमें अतिशय भाव ॥
सुनत गुनत गावत जपत, अतिशय होत उराव ॥ ३० ॥

पद—डब्बाके शालिगराम बोलत काय नहियां ॥
हम बोलत तुम बोलत नाहीं, काहेको मौन धरे पहियां ॥

यह भवसागर अगम बडोहै, काढि लेहु गहिके बहियां ॥
मीराके प्रभु गिरिधर नागर, तुमहीं हो मोर सहहियां ॥
राना म्हारो कांई करिहै मीरा, छोडदई कुल लाज ॥
विषको प्याला रानाजी भेज्यो, मीरा मारन काज ॥
हँसिके मीरा पायगईहै, प्रभु प्रसाद पर राग ॥
डब्बा इक रानाजी भेज्यो, उसमें कारा नाग ॥
डब्बा खोलि मीरा जब देख्यो, हैगयो शालिग्राम ॥
जय जय ध्वनि सब संत सभा भइ, कृपा करी घनश्याम ॥
साजि शृंगार पग बांधि घूंघुरू, दोउ कर देती ताल ॥
ठाकुर आगे नृत्य करत रही, गावत श्रीगोपाल ॥
साधु हमारे हम साधुनके, साधु हमारे जीव ॥
साधुन मीरा मिलि जो रही है, जिमि माखनमें घीव ॥

दोहा-एक समय मीरा तनुहि, भई व्यथा अतिघोर ॥
तब यह पद गावनलगी, सकल सुखद शिरमोर॥३१॥

पद-बडिबडि अँखियन वारो, सांवरो मोतन हेरो हँसिकैरी ॥
हों यमुनाजल भरन जातही, शिर पर गागरि लसिकैरी ॥
सुंदरश्याम सलोनी सूरति, मो हियरमें बसिकैरी ॥
जंतर लिखिल्यावो मंतर लिखि ल्यावो, औषधि लावो घसिकैरी॥
जो कोउ लावे श्याम वैदको, तो उठि बैठों हँसिकैरी ॥
भ्रुकुटिकमानबाण वाकेलोचन, मारत भरिभरि कसिकैरी ॥
मीराके प्रभु गिरिधर नागर, कैसे रहों घर बसिकैरी ॥

दोहा-एतेहूपै राना कुमति, तज्यो न हठ शठ जोर ॥
भजन करत मीरै लग्यो, करन उपद्रव घोर॥३२॥
तब मीरा यह पत्रिका, विनती प्रेम प्रकाश ॥
पठै दियो यक संतकर, तुलसिदासके पास ॥३३॥

भजन-स्वस्तिश्री तुलसी गुण दूषण हरण गोसाईं ॥
बारहिंबार प्रणाम करहुं अब, हरहु शोक समुदाई ॥

घरके स्वजन हमारे जेते, सबन उपाधि बढाई ॥
साधु संग और भजन करत मोहिं, देत कलेश महाई ॥
बालपनेते मीरा कीन्हीं, गिरिधरलाल मिताई ॥
सो तो अब छूटत नहिं क्योंहूं, लगी लगन वरियाई ॥
मेरे मात पिताके सम हौ, हरि भक्तन सुखदाई ॥
हमको कहा उचित करिवोहै, सो लिखियो समुझाई ॥

दोहा-मीराकी लहि पत्रिका, तुलसी भरि आनंद ॥
तासु उतर यह लिखत भो, सुमिरत दशरथ नंद ॥ ३४ ॥

पद-जिनके प्रिय न राम वैदेही ॥
तिन त्यागिये कोटि वैरी सम, यद्यपि परम सनेही ॥
पिता तज्यो प्रहलाद विभीषण, बंधु भरत महतारी ॥
बलि गुरु तज्यो कंत व्रजवनितन, भे जग मंगलकारी ॥
नातो नेह रामसों सांचो, सुकृति संत जहांलों ॥
अंजन कहा आंखि जो फूटै, बहुतक कहौं कहांलों ॥
तुलसीदास पूज्य सोइ पीतम, पुत्र प्राणत प्यारो ॥
जाको लग्यो सनेह रामसों, सोई जगहितू हमारो ॥

सवैया-सो जननी सो पिता सोइ, भाई सो भामिनि सो सुत सो हित मेरो। सोई सगो सो सखा सुत सेवक, गुरु सो सुरसाब चेरो ॥ सो तुलसी प्रिय प्राण समान, कहांलों बनाय कहौं बहु तेरो ॥ जो तजि देहको गेहको नेह, सनेहसो रामको होय सवेरो ॥ १ ॥

दोहा-यह तुलसीकी पत्रिका, मीरा सादर लीन ॥
वृंदावनको चलि दियो, कुल नातो तजिदीन ॥ ३५ ॥
रच्यो विमल ये युगल पद, नागर नवल संभारि ॥
श्रोता सुनहु सप्रेम सब, मैं इत लिखों विचारि ३६ ॥

भजन-मेरो मन लग्यो सखी सँवलियासों, काहूकी वरजी नाहिं रहौंगी ॥ जो कोउ मोंको एक कहैगी, एक की लाख कहौंगी ॥ सासु बुरीहै ननँद हठीली, यह दुख काहिं सहौंगी। मीरा प्रभु गिरिधर करे

कारण, जग उपहास सहोंगी ॥ मेरे गिरिधर गोपाल दूसरा न कोई । जाके शिर मोरमुकुट मेरो पति सोई ॥ शंख चक्र गदा पद्म कंठ माल जोई । संतन ढिग बैठि बैठि लोक लाज खोई ॥ अब तो बात फैलिगई जानै सब कोई । मैं तो परम भक्ति जानि जक्त देखि मोई ॥ मात पिता पुत्र बंधु संग नाहिं कोई । मैं पियाको देखि हँसी लोग जान रोई ॥ अँसुवन जल सींचि २ प्रेम बेलि बोई । लोक त्रास छोंडि दियो कहा करै कोई ॥ मीराकी लगन लगी होनि हो सो होई ॥

दोहा–मीराजी राना निकट, ये द्वै पद पठवाय ॥
आप बसी तुलसी विपिन, संत समाजहि जाय ॥३७॥

कवित्त–देव मुनि पूजत अतीव प्रिय माधवको, जीव जहां जात मुक्ति पावै रजधारते ॥ धन्य धरणीको धारि कालिको कुकाम कारि, पापी परगति भरि दरश करारते ॥ रघुराज जाको यदुराज नाहिं छोडै क्षण, बारा वन बारा उपवनके विहारते ॥ सस्ती अति सौदा बिकै गृहिन विरक्तनको वृंदावन वीथिनमें मुक्तिके बजारते ॥

दोहा–ऐसी तुलसी विपिनमें, मीरा कियो प्रवेश ॥
बारावन उपवन सकल, विचरत भई हमेश ॥३८॥
सखीरूप तहँ है गई, टेरत गिरिधर नाम ॥
एक दिवस कहुँ कुंजमें, आय मिले तेहि श्याम ३९
तब यह पद गावत भई, कुंजन कुंजन टेरि ॥
सादर सब श्रोता सुनहु, लिखत अहों इत हेरि ४०॥

पद–लावनी ॥ आजुहौं देख्यों गिरिधारी ॥
सुंदर वदन मदनकी शोभा चितवनि अनियारी ॥
बजावै वंशी कुंजनमें ॥
गावत ताल तरंग रंग ध्वनि नचत ग्वाल गनमें ॥
माधुरी मूरति है प्यारी ॥
बसी रहै निशि दिन हिरदेमें टरै नहीं टारी ॥
ताहि पर तन मन वारी ॥

वह मूरति मोहनी निहारत लोक लाज डारी ॥
तुलसीवन कुंजन संचारी ॥
गिरिधर लाल नवल नटनागर मीरा बलिहारी ॥
पद–जबते मोहिं नंदनँदन दृष्टि पर्यो माई ॥
तबते परलोक लको कछू ना सोहाई ॥
मोरमुकुट चंद्रिकासु शीश मध्य सोहै ॥
केसरिको तिलक उपर तीनि लोक मोहै ॥
सांवरो त्रिभंग अंग चितवनिमें टोना ॥
खंजन औ मधुप मीन भूलै मृग छोना ॥
अधर बिम्ब अरुण नयन मधुर मंदहासी ॥
दशन दमक दाडिम द्युति दमकै चपलासी ॥
क्षुद्र घंटिका अनूप नूपुर ध्वनि सोहै ॥
गिरिधरके चरण कमल मीरा मन मोहै ॥

दोहा–उद्धव कुंड सिधारिकै, पुनि गोपी सम्वाद ॥
मीरा गायो विमल पद, भरि उरविरह विषाद ॥४१॥

पद–सांवरेकी दृष्टि मानौं प्रेमकी कटारी है ॥ लागत विहाल भई गोरसकी सुरति गई तनहूंमें व्याप्यो काम मद मतवारी है ॥ चंद्र तो चकोरनीके दीपक पतंग दाहै जल बिन मीन जैसे अधिक पियारी है ॥ सखी मिलि दोई चारि बावरी भई निहारि मैं तो याको नीके जानो कुंजको विहारी है ॥ १ ॥ तिहारे कुबिजाही मन मानी हमसे न बोलना हो राज ॥ हमसों कहै सोहाग उतारो दृग अंजन सबही धोय डारो माथे तिलक चढाओ पहिरि चोलना हो राज ॥ हमरी कही विषै सम लागै घर घर जाय भँवर रस जागै उनहींके सँग रहना सहना बोलना हो राज ॥ वृंदावनमें धेनु चरावै वंशीमें कछु अचरज गावै बांकी तान सुनावै बोलियां बोलना हो राज ॥ हमरी प्रीति तुम्हैं सँग लागी लोकलाज सब कुलकी त्यागी मीराके गिरिधारी बन बन डोलना हो राज ॥ २ ॥

दोहा-वंशीवट तटके निकट, एक समय रट लाय ॥
मीरा गायो युगलपद, परम प्रीति रस छाय ॥४२॥

पद-रस भरिआं महराज मोको आय सुनाई बांसुरी ॥
सुनत बांसुरी भई बावरी निकसन लागी सांसुरी ॥
रकत रतीभर ना रह्यो न मासा मांसुरी ॥
तनु तोलाभर ना रह्यो रही निगोडी सांसुरी ॥
मैं यमुनाजल भरन जाति थी सासु ननँदकी त्रासुरी ॥
मीराके प्रभु गिरिधर मिलिगे पूजी मनकी आसुरी ॥
बाजनदे गिरिधरलाल मुरली बाजनदे ॥
सप्त सुरन मुरली बजी कहुँ कालिंदीके तीर ॥
और सुनत सुधि ना रही मेरी कित गागरि कित नीर ॥
बैठि कदमके चौतरा सब ग्वालन लिये बोलाय ॥
खेलत रोकत ग्वालिनी मुरली शब्द सुनाय ॥
पांसा डारे प्रेमके मेरो सब धन लेगे लूटि ॥
मीराके प्रभु सांवरे तुम अब कहँ जैहो छूटि ॥

दोहा-गोकुलमें पुनि आयकै, गोकुल नंद सँभारि ॥
मीरा गायो एक पद, सो मैं कहौं उचारि ॥४३॥

पद-सखि मोहिं लाज बैरिन भई ॥
चलत लाल गोपाल पियके संग क्यों ना गई ॥
चलन चाहत गोकुलहिंते रथ सजायो नई ॥
रुक्मिणी सँग जाइबेको हाथ मींजत रई ॥
कठिन छाती श्याम बिछुरत बिहरि क्यों ना गई ॥
तुरत लिखि संदेश पियको काहे पठऊं दई ॥
कूबरी सँग प्रीति कीनी मोहिं माला दई ॥
दास मीरा लालगिरिधर प्राण दक्षिना दई ॥

दोहा-जीव गोसांई कोउ रहे, हरि रति रसिक सुजान ॥
कबहुँ तासु पद दरश हित, मीरा मन हुलसान ॥४४॥

जीवगोसांई पाय सुधि, कहिपठयो तेहि पास ॥
मैं नारी मुख लखहुँ नहिं,नेम कियो तजि आस॥४५॥
कहि पठयो मीरा तबै, परदो बीच लगाय ॥
संभाषण कीजै प्रभू, उभै अर्थ सधि जाय ॥ ४६ ॥
जीवगोसांई मानि तब, भेज्यो ताहि बोलाय ॥
पटकेंवारके ओटमें, बैठी सो शिरनाय ॥ ४७ ॥
मीरा तब कर जोरिकै, बोली वचन सप्रेम ॥
प्रीति रीति मिसि त्यागि रिसि,तजे गोसांई नेम॥४८॥

कवित्त–आजलौं काननमें तुलसीवन कानन मैं न सुनी कहुँ ठाई ॥ वेद पुराणनहूंके बखान सुजानन आननमें नहिं पाई ॥ श्रीरघुराज विना व्रजराज दुतो नाहिं पूरुष पूरुषनांई॥ तू द्वितीय पूरुष ह्वै कस बैठे अहो व्रजमें अब जीव गोसांई ॥ १ ॥

तामें प्रमाण–वासुदेवः पुमानेकः स्त्रीप्रायमितरज्जगत् ।

दोहा–सुनि मीराके वचन वर, कृष्ण मिलापी जानि ॥
जीव गोसांई छोडि पट, मिले ढारि अँसुवानि ॥ ४९ ॥
यहि विधि व्रजमंडल सकल, मीरा बसि बहु काल ॥
गईं उदैपुरको कबहुँ, जानन राना हाल ॥ ५० ॥
रानाकी लखि विषम मति, किय द्वारिका पयान ॥
क्षण क्षण हरिगुण गावती, संत संग सहसान ॥ ५१ ॥

भजन–द्वारकाको वास हो मोहिं द्वारकाको वास ॥
शंख चक्रहु गदा पद्महु ते मिटै यमत्रास ॥
सकल तीरथ गोमतीमें करत नित्य निवास ॥
शंख झालरि झांझ बाजे सदा सुखकी रास ॥
तज्यो देशौ वेष पतिगृह तज्यो संपति राजि ॥
दासि मीरा शरण आई तुम्हें अब सब लाजि ॥

दोहा–दरशन करि रणछोडके, ह्वै प्रसन्न पद गाय ॥
नृत्य करै आनँद भरै, दशा वर्णि नहिं जाय ॥ ५२ ॥

इतै उदैपुरमें भयो, रानाको उत्पात ॥
बोलि कही उपरोहितन, दुखित भये अति गात ॥ ९३ ॥
लावहु मीराको इतै, तब तो जीवन मोर ॥
कहा कहौं कहि जात नहिं, भयो मोहिं अति भोर ९४ ॥
उपरोहित चलि द्वारका, बैठि धरन करि दीन ॥
कह्यो चलहु मीरा भवन, नातो जिय अबलीन ॥ ९५ ॥
तब मीरा रणछोडपैं, विदा होन हित जाय ॥
ये त्रय पद रचिकै कियो, विनती आंसु बहाय ॥ ९६ ॥

भजन–आई छूंजी राजा रणछोड शरणे थांथे आई छूंजी राजा रणछोड ॥ हितसूं ब्राह्मण भेजदिया हैं लावोनी मेडतणी वहोड ॥ धरम संकट दीयो ब्राह्मणा बेठी मंदिरमैं दोड ॥ आपणी ढिग राखि सांवरा विनती करूं करजोड ॥ के मैं पाछी जाऊं जगतपै लागे म्हांने मोटी खोड ॥ भयो प्रकाश मंदिरमैं भारी ऊगा सूरज किरोड ॥ एसो रूप देख कृष्णको आई मंदिरमें दोड ॥ नीर खीर ज्यों मिलग्या सजनी परमानंदकी ओड ॥ जनालिछमणछाजोजमुगतमें धनि मीरा राठोर ॥

भजन–यह पद प्रस्ताऊ ॥ हरि तुम हरो जनकी भीर ॥
द्रौपदीकी लाज राखी तुम बढायो चीर ॥
भक्त कारण रूप नरहरि धरयो आप शरीर ॥
हिरण्यकश्यपु मारिलीन्यो धरयो नाहिन धीर ॥
बूडतहीं गज ग्राह मारो कियो बाहेर नीर ॥
दासि मीरा लालगिरिधर दुष्ट जहँ तहँ पीर ॥
ज्यों जानो त्यों लिये सजन सुधि ज्यों जानो त्यों लीजे ॥
तुम विन मेरे और न कोऊ कृपा रावरे कीजे ॥
बासर भूख न रैन न निद्रा यह तनु पल पल छीजै ॥
मीरा प्रभु गिरिधर नागर अब मिलि विछुरन नाहिं जीजै ॥

दोहा–नृत्य नूपुर बांधिकै, गावत ले करतार ॥
देखतही हरिमें मिली, तृण सम गनि संसार ॥ ९७ ॥

मीराको निज लीन किय, नागर नंदकिशोर ॥
जग प्रतीत हित नाथ मुख,रह्यो चूनरी छोर॥५८॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे सप्ताशीतितमोऽध्यायः ॥८७॥

अथ गोस्वामीकी कथा।

दोहा–विष्णुपुरी गोस्वामिकी, कथा कहौं अभिराम ॥
कलि जीवन उद्धार हित, प्रगट्यो जो जग ठाम १
श्रीभागवत पुराण जो, शोभित सिंधु समान ॥
खैंचि भक्त रत्नावली, विरच्यो ग्रंथ महान ॥ २ ॥

तामें भगवत धर्म बखाना ❀ और धर्मको किय न प्रमाना ॥
कृष्ण कृपा फल लगिवो कांहीं ❀ दरशायो सत्संगहि माहीं ॥
खैंचि भागवत किय यह ग्रंथा ❀ वरणों तासु हेतुको पंथा ॥
नाम कृष्ण चैतन्य सुसंता ❀ एक समयमें अति मुदवंता ॥
जगन्नाथ क्षेत्रहिमें जाई ❀ भक्त समाज लिये सुखदाई ॥
बैठो रह्यो शिष्य तिनकेरो ❀ विष्णुपुरी जो रहे निवेरो ॥
ताको करत काशिमें वासा ❀ बीति गये बहु दिन सहुलासा ॥
कहे वचन सब संत सुनाई ❀ विष्णुपुरी जो काशी जाई ॥
बहु दिन बस्यो सो अस हम जानै ❀ श्रीपति भक्ति निरादर ठानै ॥
कीन्ह्यो अहै मोक्षकी चाहा ❀ सुनिये वचन स्वामि सउछाहा ॥
संतनकी आशय उर जानी ❀ लेन परीक्षा तेहि गुणखानी ॥
विष्णुपुरीको पत्र लिखायो ❀ यक अमोल मणिमाल सुहायो ॥

दोहा–हमको देहु पठाय उत, मेरे मन अति चाह ॥
पठवायो तेहि बांचिकै, विष्णुपुरी सउछाह ॥३॥

अपने मनमें कियो विचारा ❀ जो गुरु करिकै कृपा अपारा ॥
मांगि पठायो है मणिमाला ❀ देहुँ पठाय सोई अब हाला ॥
अस विचारि भागवतहिको तब ❀ भक्त परत्व रत्नको अतिनव ॥
दास लिखाय दियो पठवाई ❀ दियो मुक्तिको खोदि बहाई ॥

तामें प्रियादासको भाखा ❁ एक कवित्त मुदित लिखिराखा ॥

कवित्त—जगन्नाथ क्षेत्र मांझ बैठे महाप्रभुजू वे, चहूं ओर भक्त भूप भीर अति छाई है ॥ बोले शिष्य विष्णुपुरी काशी मध्य रहैं याते, जानि पुनि मोक्ष चाह नीकी मन आई है ॥ लिखि प्रभु चीठी आप मणिगण माला एक, दीजिये पठाय मोहिं लागत सुहाई है ॥ जानि लई बात निधि भागवत रत्नदाम, दई पठै आदि भुक्ति खोदिके बहाई है ॥ १ ॥

दोहा—स्वामी कृष्ण चैतन्यके, रहे संत जे संत ॥
ते वह माल निहारिकै, पाये मोद अनंत ॥ ४ ॥
सबके भई प्रतीति यह, विष्णुपुरी सति भक्त ॥
वृथा कियो हम भ्रम सबै, परि अनित्य यहि जक्त॥५॥
भक्त भीर तेहि ठाम जो, रही कहौं तिन नाम ॥
लालदास गोविंद अरु, रघुनाथहु अभिराम ॥ ६ ॥
रामभद्र यदुनंदनौ, गोपीनाथ रघुनाथ ॥
गोविंद रामानंदजी, प्रेमी अति रघुनाथ ॥ ७ ॥
मुरलीधर हरिदास अरु, हे मुकुंद भगवान ॥
केशवदास चरित्र अरु, वेणीदास महान ॥ ८ ॥

संत जयंत गँभीरहु दासू ❁ गोविंद जीत अर्जुनहु दासू ॥
और जनार्दन दामोदर हैं ❁ संत गदाजी औ ईश्वर हैं ॥
हेम मयानंद और गुठीले ❁ तुलसी गौरीदास रँगीले ॥
बनिया राम गणेश प्रसिद्धा ❁ दारुजी जगदीशहु सिद्धा ॥
लक्ष्मणदास श्याम ले जानो ❁ लाखा और गोपाल बखानो ॥
नरसी देवदास नँददासा ❁ और किशोर गोपालहु दासा ॥
संत चतुर्भुज औ हरिदासा ❁ बिमलानंद बालकहु दासा ॥
संतदास औ दास मुरारी ❁ मानदास गिरिधर सुखकारी ॥
गोकुलनाथ और वनमाली ❁ नारायण राघो अघ घाली ॥
माधवदास और हरिदासा ❁ जीवानँद परमानँद खासा ॥

स्वामी कृष्णचैतन्य महाना * निकट लसत ये संत अमाना ॥
मुक्तिहुकाहि निरादर कीन्हें * भक्तिहि प्रतिपादन मन दीन्हें ॥
दोहा-विष्णुपुरी कृत भक्तकी, रत्नावलि जो ग्रंथ ॥
जीवनको उपदेश करि, करिदीन्ह्यो हरिपंथ ॥ ९ ॥
विष्णुपुरी होते भये, ऐसे संत महान ॥
तिनके चरित अनंत हैं, मैं कछु कियो बखान ॥ १० ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे अष्टाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८८ ॥

अथ तिलोचनदासकी कथा ।

दोहा-वणिक तिलोचनदासकी, कथा कहौं सुखधाम ॥
ज्ञानदेवके शिष्यवर, संतनमें सरनाम ॥ १ ॥
तिनकी कथा सुनै जो कोई * तेहि उर राम भक्ति दृढ होई ॥
करनलगे साधुनकी सेवा * प्रीति सहित सम गुणि हरिदेवा ॥
रहहिं गेहमें नितयुत नारी * करैं यही अनुमान सुखारी ॥
ऐसो कोउ चाकर जो मिलतो * संतसेव जो नित प्रति करतो ॥
संतनके अनुकूल सदाहीं * चले मिलव दुर्लभ जगमाहीं ॥
करत एक दिन यहि हित ध्याना * भक्त मनोरथ कर भगवाना ॥
रूप एक नरको वपुधारी * आये ताके निकट सिधारी ॥
टूटी पनही पायन माहीं * ओटे फटी कमरिया काहीं ॥
पूंछ्यो निरखि तिलोचनदासा * कहँते आये कहां निवासा ॥
कहां मातु पितु अहे तुम्हारो * नहीं गुरू सब परे निहारो ॥
तब बोले हरि वचन सुखारी * अहौं भृत्य नहिं पितु महतारी ॥
जो कोउ अपने गृह महँ राखै * तो रहिजाउँ यहीं अभिलाखै ॥
दोहा-कह्यो तिलोचन वचन तब, मेरे ढिग रहिजाहु ॥
कह्यो सो अनमिल बात यह, उर अति भरो उछाहु २
सात सेर भोजन नित चहहूं * नित सेवामें हाजिर रहहूं ॥

यामें मन बिगारिहै कोई ॥ तो मेरो क्षण रहन न होई ॥
कह्यो तिलोचन तब हरषाई ॥ करहु यथेच्छित अशन सदाई ॥
संतन सेवन करहु निशंका ॥ यही काम मेरे अति बंका ॥
तामें बीच परै नाहिं नेको ॥ और काम मेरे नहिं एको ॥
प्रियादास तामें जो भाखा ॥ इक कवित्त सो इत लिखिराखा ॥

कवित्त—चारिहूं वरणकी जो रीति सब मेरे हाथ, साथहूं न चाहों करो नीके मन लायकै ॥ भक्तनकी सेवा सो तो करतहीं जन्म गयो, नयो कछू नाहिं डारे वरष बितायकै ॥ अंतर्यामी नाम मेरो चेरो भयो तेरे हौं तो, बोले भक्तभाव आवो अतिहीं अघायकै ॥ कामरी पन्हैया सब नई करि दई और, नीके नहवायो तनु मैलको छोडायकै ॥ १ ॥

बोल्यो फेरि तिलोचनदासा ॥ निज नारिसों सहित हुलासा ॥
जो ये भोजन करैं सदाहीं ॥ सो भोजन दीजे इनकाहीं ॥
कुवचन कबहुँ न किहेहु उचारा ॥ यह सेवींहै संत अपारा ॥
अस कहि संतन सेवामाहीं ॥ सादर दिय लगाय तेहिकाहीं ॥
भृत्य रूप तनु श्रीभगवाना ॥ आवहिं नित जे संत महाना ॥
तिनके प्रथमहिं तेल लगाई ॥ सुंदर जल सु स्नान कराई ॥

दोहा—बहुविधि अशन करायकै, पलँगा महँ पौढाय ॥
चरणचापि होउ चोपयुत, सुखसों देहिं सोवाय ॥ २

आवहिं जहां संतजन जितने ॥ धारि हरिरूप भृत्य तनु तितने ॥
करनलग्यो इमि संतन सेवन ॥ जानतभयो कोउ यह भेदन ॥
साधु तिलोचनदासहि केरो ॥ जाहिं प्रशंसत सुयश घनेरो ॥
संत तिलोचनकी यहि भांती ॥ साधुनकी सेवा भै ख्याती ॥
ऐसेहिं बीते तेरह मासा ॥ इक दिन तीय तिलोचनदासा ॥
गई परोसिनिके ढिगमाहीं ॥ सो पूंछचो सादर तेहिकाहीं ॥
दुर्बल काहे परति लिखाई ॥ सो यह वाणी दई सुनाई ॥
एक टहलुवा अहै हमारा ॥ सात सेर सो करत अहारा ॥
पीसत ताके हेत पिसाना ॥ दूबरि मैं है गई महाना ॥
जानि तुरंत नाथ भगवाना ॥ ताके घरते कियो पयाना ॥

महादुखी तब भयो तिलोचन ❋ पूंछयो तियसों कारि अतिसोचन ॥
तेहि तिय यह वृत्तांत बतायो ❋ सुनि रोवन लाग्यो रिस छायो ॥

दोहा-हाय कहां अस भृत्यमैं, पाऊं किय अस शोर ॥
बिन जल तीनि उपास पुनि, करत भयो तेहिंठोर ॥ ४ ॥
तब अकाशते प्रगट है, बोले श्रीभगवान ॥
तेरे प्रेम अधीन हौं, मैं हे साधु सुजान ॥ ५ ॥
जो तेरे मनमें यही, तौ धारि सोई रूप ॥
आय भुवन तुव संतको, करिहौं सेव अनूप ॥ ६ ॥
रह्यो टहलुवा रूपते, मैं ही तेरे ऐन ॥
सुनत वणिक व्याकुल भयो, जान्यो हरिको शैन ॥ ७ ॥
हरि बिन कौन दयालु अस, गुण्यो तिलोचनदास ॥
अस उनहींसों बनि परै, मोहिं तिनहिंकी आश ॥ ८ ॥
मैं कौनहु लायक नहीं, कैस्यहु पाऊं नाथ ॥
चरण रहौं लपटाय तौ, कबहुँ न छोडौं साथ ॥ ९ ॥
संत तिलोचनदासके, ऐसे चरित विचित्र ॥
मैं वर्णन कीन्ह्यों कछुक, सुनतहि करणपवित्र ॥ १० ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकोननवतितमोऽध्यायः ॥ ८९ ॥

अथ अनुकरणकी लीला।

दोहा-अब लीला अनुकरणकी, लीला करौं बखान ॥
नीलाचल जो धाम तहँ, शुभशीला तेहि थान ॥ १ ॥

एक समय तहँके सब लोगा ❋ किय नृसिंहलीला विन शोगा ॥
तहँ लीला अनुकरणहि काहीं ❋ कियो नृसिंहरूप मुखमाहीं ॥
हिरणयकशिपु कोहु काहँ बनायो ❋ तेहिबध करन समय जब आयो ॥
तब लीला अनुकरण स्वरूपा ❋ भो नृसिंह आवेश अनूपा ॥

हिरण्यकशिपु जेहि काहँ बनायो ❀ ताहि तुरत ते मारि गिरायो ॥
तब कोउ कह इरषाते मार्‍यो ❀ कोउ अवेशते वचन उचार्‍यो ॥
आपुसमें यह विग्रह माच्यो ❀ जुरि बहु संत कियो यह साँच्यो ॥
तुम नहिं करो अवशि कछु रारी ❀ अर्चनमें हम अति सुखकारी ॥
सुभग रामलीला अनुसरिहैं ❀ तब याहीको दशरथ करिहैं ॥
जो वन समय काय यह त्यागी ❀ तो याको वध करब न लागी ॥
नहिं इरषाते लैहैं जानी ❀ यहिको वध यह किय रिस सानी ॥
तब सब कोउ यह कियो प्रमाना ❀ जब लीलाको कियो विधाना ॥

दोहा—तब लीला अनुकरणको, किय दशरथ निर्माण ॥
राम गवन वन समयमें, त्यागि दियो तिन प्राण ॥ २ ॥
दशरथकी गतिको लह्यो, कियो संत जय शोर ॥
तिनके चरित अथोर हैं, मैं वरण्यों इत थोर ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे नवतितमोऽध्यायः ॥ ९० ॥

अथ रतिवंती बाईकी कथा ।

छंद—यक रही रतिवंती सुबाई करी बाल उपासना ॥
हरिकी कथामें बडी रुचि जेहिं आश और न वासना ॥
यक दिवस छाकी प्रेम यदुपति कछु दुखी तनुने रही ॥
निज पुत्रको सुनिवे कथाहित पठै दीनी सुखचही ॥ १ ॥
जब पुत्र सुनिके कथा आयो तब मुदित पूंछत भई ॥
कहु आज कैसी कथा भै उत सो सुनावै मुदमई ॥
तब कह्यो ताको तनय यशुदा कृष्ण बांधी दाम है ॥
यह कथा अनुपम भई सुनि कहतभै तेहि ठाम है ॥ २ ॥
सुकुमार छोटो बाल मेरे लालको लै जेमरी ॥
तेहि मातु बांधी भाषि मुख अस त्यागि तनु दिय तेहिं घरी ॥
निज प्रेम सत्य देखाय दिय बाई सुरतिवंता तहां ॥
तेहि चारु चरित अपारमति अनुरूप मैं इत कछु कहां ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकनवतितमोऽध्यायः ॥ ९१ ॥

अथ जसूस्वामीकी कथा।

दोहा—जसूस्वामिवर भक्तको, कहौं सुभग इतिहास ॥
करै साधुसेवा रहै, अंतरवेद निवास ॥ १ ॥

जपै निरंतर हरिको नामा ❋ जाय न अनत त्यागि निज ठामा ॥
संतन सेवन हेतु कृपाला ❋ खेती करवावै सब काला ॥
एक दिवस कोउ चोर सिधाई ❋ बँधे बैल लैगये चोराई ॥
जसूस्वामि जब उठे प्रभाता ❋ बैलन बँधे लखे सुखदाता ॥
खेती हित लैगये ढिठाई ❋ भेद न जान्यो गये चोराई ॥
वोई चोर कछुक दिनमाहीं ❋ आय बैल लखि किय भ्रमकाहीं ॥
इनके हम लेगये निकेता ❋ ये इत आये कौने नेता ॥
लौटिगये ते अपने धामा ❋ बैल न दिख्यो तहां अभिरामा ॥
यही भांति है चारक बारा ❋ आये औ निज गये अगारा ॥
स्वामीको प्रभाव सिय जानी ❋ बैल लाय सब हाल बखानी ॥
शिष्य भये हिय चोरी त्यागी ❋ संतनकी सेवामें लागी ॥
जासु स्वामिकी कृपा प्रतापा ❋ मुक्त भये ह्वैके निष्पापा ॥

दोहा—जसूस्वामिको जानिबो, चारु चरित्र अपार ॥
मैं समास वर्णन कियो, संतन परम अधार ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे द्विनवतितमोऽध्यायः ॥ ९२ ॥

अथ अल्हभक्तकी कथा।

दोहा—अल्हभक्तकी अब कहौं, कथा भक्त सुखधाम ॥
एक समय राम तहिते, कीन्ह्यो कहूं पयान ॥ १ ॥

तेहि मगते कोउ संत सिधारी ❋ बरजत भो यह वचन उचारी ॥
आप न जाहिं देश यहि माहीं ❋ दुष्ट लोग लखि संतन काहीं ॥
तिलक बिंदुको मानि निशाना ❋ गूरा हनत गुलेल महाना ॥
बहु संतनके गे दृग फूटी ❋ ऐसे विमुख लेहिं मग लूटी ॥

सुनत अल्हजी कह यह देशा * चलि अवश्य करिहैं शुचि वेशा ॥
ऐसो कहि यक शहर मँझारी * बाहेर रहै बाग नृप भारी ॥
तहँ लीन्हें बहु संतसमाजा * उतरतभे लहि मोद दराजा ॥
ज्येष्ठ मास इक आंब वृक्ष तर * थापित कियो मूर्ति मुरलीधर ॥
करि मज्जन हरि पूजि सरागा * हित नैवेद्य पके फल मांगा ॥
तब माली अस वचन बखाना * वृक्ष तरे तो हैं भगवाना ॥
जो चहिहैं आपहि लेलैहैं * तुव मुखसों फल नाहिं मँगैहैं ॥
सुनत अल्हजी ताके वयना * कियो निवेदन तरु फल चैना ॥

दोहा—तब तुरंत तेहिं वृक्षकी, झुकि झुकिकै सब डार ॥
फलन सहित हरिके उपर, शोभित भई अपार ॥ २ ॥
लखि माली गुणि आचरज, भूपति ढिग द्रुत जाय ॥
कह हवाल नृप आय सो, चरणन पर्यो सचाय ॥ ३ ॥
युत समाज है शिष्य नृप, तिन्हैं राखि निज देश ॥
संतनकी सेवा करन, लागेउ वेस हमेश ॥ ४ ॥
ऐसे चरित अनेक हैं, संत अल्हके ख्यात ॥
मैं वरण्यों संक्षेपते, सुनत करै अघ घात ॥ ५ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे त्रिनवतितमोऽध्यायः ॥ ९३ ॥

अथ हरिभक्त ब्राह्मणकी कथा।

दोहा—यक ब्राह्मण हरिभक्तकी, नाम जासु हरि भक्त ॥
हरि अनुरक्त कहौं कथा, तासु मुक्ति प्रद जक्त ॥ १ ॥

बीते बहु दिन भयो विवाहा * गवन लेन हित कियो उछाहा ॥
बहुर्यो जब ससुरारिहि तेरे * तेहि मग महँ ठग मिले घनेरे ॥
पूंछत भये चोर तेहि काहीं * तुम को तिय लीन्हें सँग माहीं ॥
कहँ जैहो निज कहहु हवाऊ * द्विज हवाल सब कह्यो उताऊ ॥
तिनसों जब पूछत भो विप्रा * तबते चोर कह्यो अस छिप्रा ॥
जहां जात तुम अहो सुजाना * तहँ अहै ममहूं को जाना ॥

तब ब्राह्मण यह वचन उचारा ❀ भल सँग भयो हमार तुम्हारा ॥
चले चलैंगे तुम्हरे साथा ❀ अस कह तिययुत सो द्विजनाथा ॥
ठगन संगमें कियो पयाना ❀ जब मग पर‍यो अरण्य महाना ॥
तब चोरन पहारकी राहा ❀ द्विजहिं बतायो सहित उछाहा ॥
कह्यो विप्र यह मग न जनाई ❀ यही राह पुनि चोर सुनाई ॥
जो हम पंथ अन्यथा कहहीं ❀ तुम हम बीच राम तौ अहहीं ॥

दोहा–चलो यही मग चोर कह, चलि द्विज तबहुँ सकै न ॥
तिय बोली यह राम बिच, तहां शंक कछु है न ॥ २ ॥

जहँ ये कहत अहैं मग ताहीं ❀ निर्भय चलहु कछू भय नाहीं ॥
चल्यो विप्र भाषे अस नारी ❀ जब आये वन विकट मँझारी ॥
तब चोरन द्विजको शिर काटी ❀ आगे चाले तियसो कह डाटी ॥
रोवत चलतभई तब नारी ❀ तेहि पीछे ठग चले सुखारी ॥
चलि कछु दूरि नारि द्विजकेरी ❀ पीछे बार बार जब हेरी ॥
तब चोरन यह वचन उचारा ❀ केहि हेरौ तुव पति हम मारा ॥
कही नारि ताकहँ मैं ताकों ❀ दीन्ह्यो अहै बीच तुम जाको ॥
का वाहूको तुम हति डारा ❀ वह सब थल अस सुन्यो हमारा ॥
असि वाणी जब नारि पुकारी ❀ तब है प्रगट राम धनुधारी ॥
ताहि शोकसागरते तारी ❀ हति दुष्टनको लियो उबारी ॥
तेहि पतिको दिय तुरत जियाई ❀ प्रमुदित भयो नारि निज पाई ॥
तामें यक छप्पय नाभाकृत ❀ लिख देतहौं अति सुख लहि इत॥

छप्पय–बांच दिये रघुनाथ भक्त सँग ठगिया लागे ॥
निर्जन वनमें जाय दुष्ट किय कर्म अभागे ॥
बीचि दियो सो कहां राम कहि नारि पुकारी ॥
आये सारँगपाणि शोकसागरते तारी ॥
दुष्टन किय निर्जीव सब दास प्राण संज्ञा धरी ॥
और युगनते कमलनयन कलियुग अधिक कृपा करी ॥

दोहा–यहि प्रकार कलिकालमें, निज भक्तन पर राम ॥
दुष्टनको संहारि करि, कृपा करी अभिराम ॥ ३ ॥

द्विज नारीको दरश दै, जात भये निजधाम ॥
कथा अमित हरि भक्तके, मैं कछु कह्यो ललाम ॥ ४ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे चतुर्नवतितमोऽध्यायः ॥ ९४ ॥

अथ एक नृपतिकी कथा ।

दोहा-एक नृपति गाथा कहौं, सुनत दानि सुख गाथ ॥
जासु कथा श्रवणन किये, होति प्रीति रघुनाथ ॥ १

आवत तिलक माल जो धारै * ताको नयनानि माहँ निहारै ॥
हरि औ गुरुको मानि समाना * पूजन करै राज मतिमाना ॥
किये अभक्तन माहँ अप्रीती * निर्भय सदा मानि यम भीती ॥
ऐसो परम भागवत भूपा * ताके ढिग धरि भक्तन रूपा ॥
भांड लोग आये बहुतेरे * किये लोभ अति द्रव्य घनेरे ॥
तिन्हें देखि भूपति सुख धारी * लै चरणामृत चरण पखारी ॥
धूप दीप करि प्रथम सुजाना * दे निवेद पूंछ्यो सविधाना ॥
भांड सभा मधि ये नृप आगे * तारी दै दै नाचन लागे ॥
पुनि भोजन बहुभांति कराई * सतकारचो अति नगर टिकाई ॥
संतवेष इमि लहि सतकारा * भांड वेषको करि धिक्कारा ॥
बिदा होन जब नृप ढिग आये * तब बहु धन दै भूप सुहाये ॥
बोले वचन भांडते भूरी * यह सब द्रव्य कीजिये दूरी ॥

दोहा-यामें अति दुर्गंधिहै, ग्रहण करन नहिं योग ॥
कहि नृप दरशन परशको, लहि प्रभाव तजि सोग ॥ २
भांड वेष तजिकै भये, भक्त राज विख्यात ॥
कह्यो कथा यह भूपकी, संक्षेपहि अवदात ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे पंचनवतितमोऽध्यायः ॥ ९५ ॥

अथ अंतर्निष्ठभूपकी कथा ।

दोहा-भूपति अंतर्निष्ठ इक, रहे भक्त अभिराम ॥
बाहर ओठनके कबहुँ, लेय नहीं हरिनाम ॥ १ ॥

उर अंतर हरिनाम निरंतर ❀ जपैं न कोउ जानै बाहिर नर ॥
रानी तासु जपै हरिनामा ❀ करै साधु सेवा वसु यामा ॥
सोचति रहै सदा मनमाहीं ❀ मम पति कृष्ण भक्त भो नाहीं ॥
भगवत नाम लेत नहिं आनन ❀ सुन्यो न मैं कबहूं निज कानन ॥
जागत रहै एक दिन राती ❀ सोवत रह्यो भूप सुख माती ॥
नाम बिहारीलाल उचारा ❀ सोवनही तौन मुआरा ॥
नृप मुखते निकस्यो हरि नामा ❀ सुनि रानी अति भै सुखधामा ॥
उठि भोरहि तोपन दगवायो ❀ दीनिनको बहु द्रव्य लुटायो ॥
बजवायो नौबतिहु निशाना ❀ यह उत्सव लखि अति हरषाना ॥
पूंछत भयो रानिसों भूपा ❀ यह उत्सव कस कियो अनूपा ॥
रानी तब यह वचन सुनाई ❀ जबते नाथ व्याहि मैं आई ॥
तबते आजु आपके मुखते ❀ सुन्यो नाम मैं निज श्रुति सुखते॥

दोहा-तब राजा यह कहत भो, जो हरिनाम सुभाय ॥
राख्यो अंतर यतनमें, आजु गयो कढि आय ॥ २ ॥
अस कहि दियो शरीर तजि, भूपति हरि मन लाय ॥
लखि रानी असि नृपदशा, दिय यह कवित बनाय ३

कवित्त-भाव नरेशको को वरणै कहि ऐसो सनेहको गाथ बढायो ॥ मीन ज्यों वारिविहीन मरै मणिहीन फणीश न झेलगायो॥ ताहुते वेगि कियो सुनो संत, पिता रघुनंदनके सम भायो ॥ राम वियोग वै प्राण तज्यो इन नाम वियोगहि प्राण पठायो ॥ १ ॥

दोहा-अंतर्निष्ठ महीपके, ऐसे चरित अनेक ॥
मैं वरण्यों संक्षपते, सुन संत सविवेक ॥ ४ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखडे उत्तरार्द्धे षण्णवतितमोऽध्यायः ॥ ९६ ॥

अथ गुरुभक्तकी कथा।

दोहा -संत एक गुरु भक्तकी, कहौं कथा रमणीय ॥
रहैं गुरूके भक्तअति, गुरुको हरिगुणि जीय ॥ १ ॥

सेवै संतत मोद महाने * संत जननको कम कछु माने ॥
गुरु अपने मनमें यह लावैं * याको अब हम अवशि सिखावैं ॥
संतनको हमते बड माने * हमते कम संतन नाहिं जाने ॥
चेलाको सँकोच बड मानी * भूलिजाय कहिबो नित जानी ॥
चेलाको लाग्यो कछु कामा * ताको हेतु जान यक ग्रामा ॥
गुरुते मांगत भयो बिदाई * जाहु गुरू बोल्यो हरषाई ॥
कहिबेको परंतु इक बाता * तुमसो रह्यो हमहि अवदाता ॥
ह्वै आवो तब करब उचारा * सुनि चेला तुरंत पगु धारा ॥
गुरू राति मरिगयो सबेरे * चेला और आय तिन नेरे ॥
दाह करनको सरितट माहीं * जात भये लै द्रुत गुरु काहीं ॥
तोलौं सोइ कारज करि आयो * मृतक गुरू लखि वचन सुनायो ॥
गुरुको वेगि चलौ लै घरे * इनको नाहि जानो तुम मरे ॥
बरजन लगे सबै तहँ लोगा * मान्यो नहिं येकहू नियोगा ॥

दोहा-श्मशानकी भूमिते, गुरुको घर लै आय ॥
गिरदामें सो टकायकै, देत भये बैठाय ॥ २ ॥

चेला कह्यो जोरिकै हाथा * हरि गुरु वचन सदा सति नाथा ॥
यह है शास्त्र वेद मर्यादा * मोहिं निदेश दिय युत आह्लादा ॥
जब कारज करि ऐहैं भ्राता * तब तोसों कहिहैं यक बाता ॥
सो वह बात मोहिं कहि दीजै * तब अपनो तनु त्यागन कीजै ॥
तब चेलाको गुणि सतभावा * गुरुको प्राण कायमें आवा ॥
चेलासों गुरु कियो उचारा * हमहिं कहन यह रह्यो विचारा ॥
संतन हमते कम नहिं मानो * परम गुरू संतनको जानो ॥
तब चेला बोल्यो सुखमानी * स्वामि परे अटपट यह जानी ॥
जल्दी मोसो बनिहै नाहीं * बरस रोज न तजै तनु काहीं ॥
मोहिं संतनको सेव सिखाई * रामधामको नाथ सिधाई ॥
सुनि चेलाके वचन रसाला * जिये वर्षदिन गुरू विशाला ॥
चेलहि संतन सेव सिखाई * गये धाम हरि अति सुखदाई ॥

दोहा-प्रियादास तामें कह्यो, कहों एक तुक तासु ॥
चरित बहुत संक्षेपते, मैं कछु कियो प्रकाशु ॥ ३ ॥
सांचा भाव जानि प्राण, आइबो बखान कियो करो
भक्त सेवा करी वर्षलौं देखाइये ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे सप्तनवतितमोऽध्यायः ॥ ९७ ॥

अथ सुरसुरानंदकी कथा।

दोहा-कथा सुरसुरानंदकी, सादर करौं बखान ॥
महिमा महाप्रसादकी, कीन्ह्यो सत्य जहान ॥ १ ॥

रहे राजगुरु संतन सेवन * करै निरंतर अति प्रसन्न मन ॥
महाप्रसाद परम अधिकारी * जो कोउके कर लेहिं निहारी ॥
तो बरबस लै भोजन करहीं * निज थलते कबहूं नहि टरहीं ॥
यक दिन यक भंगिनि करमाहीं * लीन्हें बरा भातही काहीं ॥
लिहेजाति लखि कोउ दुष्टजन * कह्यो दुष्टता करि अपने मन ॥
ढिग सुरसुरानंदते जाई * जब पूछे तब तेहि बताई ॥
मैं लीन्हें हौं महाप्रसादा * भंगिनि सोइ किय युत आह्लादा ॥
सुनि सुरसुरानंद द्रुत धाये * लै जबरई वदनमें नाये ॥
पीछे पीछे चेलहु धाई * लेत भये घिनात तहँ जाई ॥
तब स्वामी ताकिकै तिन ओरा * कहत भये करि कोप अथोरा ॥
कस तुम महाप्रसाद न पायो * अस कहि करि उबांत दरशायो ॥
यक यक चाउर तुलसीदल युत * सहित सुगंध कढतभो तब द्रुत ॥

दोहा-चेलहु कियो उबांत जब, उठतभई दुर्गंध ॥
नहिं प्रभाव जाने गुरू, ते चेला मति अंध ॥ २ ॥
महिमा महाप्रसादकी, प्रगट सुरसुरानंद ॥
देखरायो सब जननको, तेउ लखि लेह अनंद ॥ ३ ॥

यह विश्वास प्रधानता, जामें होय सो संत ॥
मैं वरणों संक्षेपते, तिनके चरित अनंत ॥ ४ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे अष्टनवतितमोऽध्यायः ॥ ९८ ॥

अथ सुरसुरीकी कथा।

दोहा-तिया सुरसुरानंदकी, जासु सुरसुरी नाम ॥
तासु कथा अभिराम अति, कहौं श्रवण सुखधाम ॥ १ ॥

छंद-यक समय पति युत त्यागि गृह हरिभजन हित बनको गई ॥ तहँ वसि यकंतहि भजन लागे करन दोऊ सुख छई ॥ बहु दिवस बीते योंहि यक दिन म्लेच्छ यक कामी महा ॥ गुणि रूपवती विशेष याहि तिय करि यतन भोगन चहा ॥ १ ॥ पति तासु लेवे फूल समिधहि हेतु जब कहुँ कढि गयो ॥ तब दुष्ट वह ढिग नारिके अति प्रीतिसों गवनत भयो ॥ तकि ताहि आवत सुमिरि हरिको करत भई पुकार है ॥ क्षण ताहि सिंह स्वरूप हरि लैगये म्लेच्छ गवांर है ॥ २ ॥

दोहा-यहि प्रकार सुरसुरीकी, सत्य राखि सिय राम ॥
कह्यो कथा संक्षेपते, अहैं विपुल जग ठाम ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे नवनवतितमोऽध्यायः ॥ ९९ ॥

अथ नरहरियानंदकी कथा।

दोहा-यह नरहरियानंदकी, करौं कथा परकास ॥
जासु श्रवण अनयासही, होत नाश भवत्रास ॥ १ ॥

श्री नरहरियानंद विख्याता * रहे साधुसेवी अवदाता ॥
यक दिन संत बहुत घर आये * तिनको लखि मन मुदित टिकाये ॥
सीधा सरंजाम घर माहीं * रहे रहै लकरी घर नाहीं ॥
बरसत रहै मेह बहु वारी * मांगन गये ठौर दुइ चारी ॥
मिली न लकरी तियसों आई * कह्यो वचन यह अति हरषाई ॥
मेरो टांगा देहु निकासी * ले आऊं कहुँते द्रुत खासी ॥

नारि दियो टांगा चलि आपू ❀ बाहिर गांव गये निहपापू ॥
बरसत जल यक देवीके घर ❀ जाय खडेभे तेहि देहरी पर ॥
गुण्यों मनहि वर्षा है भारी ❀ लकरीको कहँ जाउँ सिधारी ॥
क्षुधित संत बहु बसे अगारा ❀ बनै तौ देवीकेर केंवारा ॥
परे जबर झूर अति जोई ❀ इनते संतन होय रसोंई ॥
अस गुणि टांगा लै केंवार पर ❀ हनत भयो तब देवी करि डर ॥

दोहा–तेहि आगे ठाढी भई, धारि इक कन्या रूप ॥
क्यों कपाट झारत अहै, कही सो वचन अनूप ॥ २ ॥

तब इन कह्यो वचन कछु रूखे ❀ लकरी चही संत हैं भूखे ॥
देवी कह केंवार मति फारै ❀ यक बोझा मैं बडे सकारै ॥
नित तुव घर देहौं पहुँचाई ❀ करु तदबीर और घर जाई ॥
तब ये उर अति आनँद छाये ❀ अपने घर तुरंत चलि आये ॥
पीछे तासु कचारिनि वेषा ❀ लिहे देवि लकरी सब देषा ॥
एक बोझ तेहिं डारि दुवारे ❀ निज मंदिर गवनी सुखधारे ॥
ये सब संतन अशन कराई ❀ सेवा करि दैदियो बिदाई ॥
देवी एक बोझ लकरी नित ❀ डारि जाय नित द्वार संतहित ॥
जाहिर भई गावँ यह बाता ❀ यक द्विज रहै परो विख्याता ॥
तेहि तिय लकरी देखि बढानी ❀ अपने पतिसों बोली बानी ॥
लै आवहु लकरीहैं नाहीं ❀ मिलै न जाहुँ कहां तेहिं काहीं ॥
नारि कियो तब वचन उचारा ❀ एक परोसी आय तुम्हारा ॥

दोहा–देवी मंदिर जायकै, फारन लग्यो केंवार ॥
डरि देवी डारै नितै, लकरी बोझ दुवार ॥ ३ ॥

यक तुम अहौ नाहिं ए आनन ❀ कढत अहै कढतो कछु आनन ॥
कह द्विज टांगा दे मोहिं लाई ❀ जैहौं मैंहू उतहि सिधाई ॥
मोहिं देवी देहैं कस नाहीं ❀ लकरी लै ऐहौं घरमाहीं ॥
तहँ तिय कह जरूर तुम जाहू ❀ करहु परोसी सम सउछाहू ॥
जाय विप्र लै हाथ कुलहारी ❀ देवीके केंवार पर मारी ॥

तब देवी करि कोप अपारा ❀ तेहि उठाय पटक्यो बहु बारा ॥
गिरयो सो दश हाथ पर जाई ❀ दोउ आंखी बाहर कढि आई ॥
भै बाडि बार न पति घर आयो ❀ तब तेहिं तिय कछु शोच बढायो॥
खबरि लेन पुनि निजपति केरी ❀ गै तिय तहां दशा सो हेरी ॥
देवि द्वार कूटन शिरलागी ❀ देवी प्रगटि कही सुख पागी ॥
भक्तराजकी करि समताई ❀ ताही सम तू करी ढिठाई ॥
तेरे घरमें जो कोउ होई ❀ मों कर आजहि नाशिहै सोई ॥

दोहा-तब द्विज तिय बहु विनय किय, रक्षा करु मम मात ।
किये मोर पति करहु मैं, कहो देवि जो बात ॥ ४ ॥

कवित्त-देवी कह्यो जौन एक बोझा नित लकरी मैं नरहरिया नंदके दुवार पहुँचावती ॥ सोई तुम लैकै मेरी बदि पहुँचाओ तैं तब पति तेरो बचै यहै बात भावती ॥ नाहिं तो न बचै केहू सुनि तब कही नारि दैहैं लकरी मैं सुनि देवि सुख छावती ॥ ताके पतिको जिआय दीन्ह्यो उठ्यो हरषाय देवीकी बेगारि सोई धारि दुख पावती ॥ १ ॥

दोहा-ताते समता काहुकी, करत विवेकी नाहिं ॥
करत जे तिनकी होति हैं, दशा यही जगमाहिं ॥ ५ ॥
तामें नाभाको कह्यो, छप्पय यह लिखि देहुँ ॥
बांचि सबै संतहु हिये, मानहु मूढन केहुँ ॥ ६ ॥

छप्पय-घर झर कलरी नाहिं शक्तिको सदन उदारे ॥
शक्ति भक्तिसों बोलि दिनाहि प्रति बरही डारे ॥
लगी परोसिनि हौंसि भवानी लै सो मारचो ॥
बदलेकी बेगारि मूड वाके पर डारचो ॥
रत प्रसंग कालिकाल देखि तनुपें तई ॥
श्रीनरहरियानंदको करदाता दुर्गा भई ॥ १ ॥

दोहा-श्रीनरहरियानंदके, ऐसे चरित अनंत ॥
मैं बरण्यों संक्षेपते, कृपा करैं सब संत ॥ ७ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे शततमोऽध्यायः ॥ १०० ॥

अथ पद्मनाभजीकी कथा।

दोहा-पद्मनाभजीकी कथा, कहौं परम सुखदानि ॥
राम नाम महिमा लियो, कृपा कबीरहि जानि॥ १॥

एक समय सुरसरि सुस्नाना ❀ करि डेराको कियो पयाना ॥
तहँ यक साहु धनाढ्य महाना ❀ काशी रह्यो जासु सुस्थाना ॥
बिगरि जातभो तासु शरीरा ❀ भै दुर्गंध गये परि कीरा ॥
साहु मानि तब मनहिं गलानी ❀ बूडन हेतु गंग दुख मानी ॥
आवत चलो रहै मग माहीं ❀ तेहिं परिवारहु लोग तहाहीं ॥
ताके पीछे आवत रोवत ❀ पद्मनाभजी भे तेहि जोवत ॥
पूछ्यो लोगन पाहिं हवाला ❀ कहे ते सब वृत्तांत उताला ॥
पद्मनाभ उर दया महानी ❀ तब उपजी अस बोले बानी ॥
सहित कुटुंब संतको सेवन ❀ करै कबूल सत्य अपने मन ॥
धन निज रघुपति हेतु लगावै ❀ राम भक्ति हियमें उपजावै ॥
तौ तुरंत याको तनु सिगरो ❀ शुद्ध होयगो जो है बिगरो ॥
तब कुटुंबके सुनि यह बानी ❀ कियो कबूल साहु युत मानी ॥

दोहा-जिनकी नाम उपासना, नामहि जिनको मंत्र ॥
नामहिकी सेवा जिन्हैं, नामहि पूजा यंत्र ॥ २ ॥

जप तप तीरथ नामहि मानै ❀ जपत निरंतर नामहि ठानै ॥
ऐसे पद्मनाभ जे संता ❀ शिष्य कबीर भक्त क्षिय कंता ॥
लै तेहिं साहु साथ सुख छाई ❀ गंगाजी समीप द्रुत आई ॥
तेहि हिलाय जल कंठ प्रयंता ❀ करिकै ठाढ कह्यो मतिवंता ॥
तीनि बार करि राम उचारा ❀ बुडकी देहु न करहु अवारा ॥
सुनिकै साहु तैसही कीन्ह्यो ❀ कृमि दुर्गंधि दूरि करि दीन्ह्यो ॥
सकल शरीर दिव्य ह्वै गयऊ ❀ निज नयनन निरखत सब भयऊ ॥
जन समूह लखि काशीवासी ❀ जयजय शोर कियो सुखरासी ॥
साहु कुटुम्ब सहित घर जाई ❀ दान कियो बहु द्विजन बोलाई ॥

पद्मनाभ शिषि ह्वै पुनि सोई ❀ भववासना सकल हिय खोई ॥
श्रीकबीर ढिग जाय उताला ❀ पद्मनाभ सब कह्यो हवाला ॥

दोहा—राम नाम परभाव सति, स्वामि लख्यो हम आज ॥
तीनबार उच्चार करि, साहु भयो कृत काज ॥ ३ ॥
सिगरी व्यथा शरीरकी, दूर हैगई आशु ॥
सुनि कबीर कह नामको, बडो प्रभाव प्रकाशु ॥ ४ ॥
तुम प्रभाव जान्यो कहा, राम नामको जौन ॥
जानत तौ त्रयबार कस, नाम लेवावत तौन ॥ ५ ॥
नाम कहनके भासहीं, तौ रुज होत विनाश ॥
तामें द्वै तुक कहतहौं, वरण्यो जो प्रियदास ॥ ६ ॥

कवित्त—राम नाम कहे वेर तीनियें विनाश होत, भयोई नवीन कियो भक्ति मति धीर है ॥ गये गुरु पास तुम महिमा न जानी अहो, नाम भास काम करै कही यों कबीर है ॥

दोहा—पद्मनाभको चरित यह, वर्णन कियो समास ॥
सुनत संतजन लहतहैं, हियमें परम हुलास ॥ ७ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकाधिकशततमोऽध्यायः १०१

अथ तत्वा जीवाकी कथा।

दोहा—तत्वा जीवाकी कथा, कहौं रहैं द्वै भाय ॥
वासी दक्षिण देशके, भक्ति सुधारी राय ॥ १ ॥

दयावान अति धीर उदारा ❀ सदा धर्ममें प्रीति अपारा ॥
द्विजसेवी साधुनको प्यारे ❀ एक समय अस मनहि विचारे ॥
अनशि गुरू अब कीन्ह्यो चाही ❀ दोउ भाई ह्वै अति उत्साही ॥
सौंपि सुतनको सब गृह काजा ❀ यह उपाय किय ढिग दरवाजा ॥
झूर दारु गाडतभे आनी ❀ आशय यह निज मन अनुमानी ॥
जासु चरण जल सींचन पाई ❀ पीका फूटि हरित ह्वै जाई ॥

ताही संतकाहँ गुरु करिहैं ❀ यह अपार भवसागर तरिहैं ॥
अस विचारि दोउ बडे प्रभाता ❀ जाय गांव बाहर हरषाता ॥
बैठहिं मधु जो साधु सुवारी ❀ निकसे माला कंठी धारी ॥
ताको बिनती करि लै आई ❀ चरण धोयकै उर सुख छाई ॥
वही काठ पर डारहिं जाई ❀ विदा करें तेहिं अशन कराई ॥
वर्ष रोज भर किय यह रीती ❀ यक दिन वही राह श्रुतप्रीती ॥

दोहा—श्रीकबीर निकसे तिनहिं, करि दंडवत प्रणाम ॥
घरहिं लाय पग धोय जल, डारयो दारु ललाम ॥२॥

तब वह दारु चहूं दिशि तेरे ❀ आये पीका फूट घनेरे ॥
हरित विलोकि पूर्व निज हाला ❀ कहि ह्वै गये शिष्य तत्काला ॥
खात भये पुनि सीत प्रसादी ❀ जब गुरु जात भये अहलादी ॥
गये दूरि पहुँचावन हेतू ❀ चलत कह्यो गुरु कृपानिकेतू ॥
कबहुँ सँदेह परै तुम काहीं ❀ तो अइयो जरूर हम पाहीं ॥
ताते प्रियादासको भाषा ❀ एक कवित्त यही लिखि राखा ॥

कवित्त—तत्वाजीवा भाई उभय विप्र साधु सेवापन मन धरी बात ताते शिष्य नहिं भयेहैं ॥ गाड्यो एक ठूंठ द्वार होय जो हरी डार संत चरणामृतको लेकै डारि नयेहैं ॥ जबहीं हरितदेखो ताको गुरु करि लेखो आय श्रीकबीर पूजी आश पायलयेहैं ॥ नीठ नीठ नाम दियो दियो परिचाय धाम काम कोउ होय जोपै आयो कहिगयेहैं ॥

श्रीकबीर जब कियो पयाना ❀ तब तत्वा जीवा अस थाना ॥
चल्यो फिसाद कबीर जुलाहा ❀ खायो ये तेहिं जूठ उछाहा ॥
ताते इनके साथ न खैहैं ❀ खातहिं छोंडि जातिके दैहैं ॥
द्वै सुत रहे एक जो भाई ❀ एकके द्वै कन्या छबिछाई ॥
तिनके काज करै नहिं कोई ❀ ये उपाय कीन्हे बहुतोई ॥
एको तिन उपाय नहिं लागे ❀ भे सुत सुता स्यान दुख पागे ॥

दोहा—तब दोउ बंधु विचार किय, कहिगे स्वामि अवास ॥
संकट परै जो तुमहिं कछु, अइयो हमरे पास ॥३॥

अस विचारि काशीमें जाई * सब हवाल निज गये जनाई ॥
सुनि कबीर यह वचन उचारा * करहु विवाह निजहि आगारा ॥
दुइ कन्या दुइ पुत्र तिहारे * बात न घटी कबहुँ तव प्यारे ॥
तब गृह आय दोउ सुखधारी * काज करनकी करी तयारी ॥
टोला और परोसीवारे * कहां सगाई कियो उचारे ॥
तब इन कह्यो भगिनि औ भाई * घरहीमें खोजें कहँ जाई ॥
ह्यांहीं हम करि लेहिं विवाहा * सुनि सब कीन्ह्यो सोच अथाहा ॥
जो यह व्याह कियो घरमाहीं * तो हमरो उपहास सदाहीं ॥
कहि हैं सकल जातिके येहीं * तुम्हरे घर विवाह करि लेहीं ॥
यह सुणि सबै ज्ञातिके आई * पग परि कह अस करहु न भाई ॥
जब ये तिनको कहा न माने * फेरि ज्ञाति जन वचन बखाने ॥
जौन खर्च लगिहै तुव काजै * सो हम तुमहिं देहिंगे आजै ॥

दोहा–नहिं परंतु ऐसो करो, हे कबीर भगवान ॥
सीत प्रसादी लेहिंगे, तिनको हमहुं सुजान ॥ ४ ॥

ऐसो पक्का इत करि लीने * सकल ज्ञानवारे भय भीने ॥
प्रियादास जो किय निर्माना * सो कवित्त इत करों बखाना ॥
सकल ज्ञातिके जब यह भांती * नम्र होत भे सहित जमाती ॥

कवित्त–कानाकानी भई द्विज जानी जाति गई पांति न्यारी करिदई कोऊ बेटी नहिं लेतु है ॥ चल्यो एक काशी जहँ बसत कबीर धीर जाय कही पीर जब पूछ्यो कौन हेतु है ॥ दोऊ तुम भाई करौ आपमें सगाई होई भक्ति सरसाई न घटाई चितु चेतु है ॥ आय वही करी परी ज्ञाति खरभरी कहै कहा डर धरी कछु मतिहूं अचेतु है ॥

तब प्रसन्न ह्वै अति यक भाई * काशी श्रीकबीर ढिग जाई ॥
सादर सब कहिगयो हवाला * स्वामि कह्यो सुनि वचन विशाला ॥
तपदि जाय अब करो विवाहा * लीन्ह्यो यह कबुलाय उछाहा ॥
की हरि भक्ति आजुते करिहैं * कबहुँ कुमारग पाँव न धरिहैं ॥
हम नहिं सुता अभक्तहि काहीं * देहिं वचन सुनि अस गुरु पाहीं ॥

तुरत आपने सदन सिधाई ❀ भगवत भक्ति करन कबुलाई ॥
व्याह सुतासुतको करि दीन्ह्यो ❀ परम उछाह गेह निज कीन्ह्यो ॥
सब विमुखनको काशि पठाई ❀ श्रीकबीरके शिष्य कराई ॥
सकल देश हरिभक्त बनायो ❀ तत्वा जीवा अति सुख छायो ॥
दोहा-ऐसे दक्षिण देशमें, तत्वा जीवा दोउ ॥
भये कह्यो तिनकी कथा, है संक्षेपहु सोउ ॥ ९ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे द्वयधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०२

अथ श्रीरघुनाथ गोसांईकी कथा।

दोहा-श्रीरघुनाथ गोसांइकी, कहौं कथा अभिराम ॥
पूरब रहे गृहस्थ अरु, बडे धनाढ्य ललाम ॥ १ ॥
सब परिवार छोंडि धन काहीं ❀ जात भये नीलाचल माहीं ॥
स्वामि सामुहे ठाढे भये ❀ बीति दिवस निशि कै औ गये ॥
पंडन जगपति दियो रजाई ❀ देहु बोढाय हमारि रजाई ॥
कीरति बडी पुरी अति छाई ❀ भो संग्रहणी रोग महाई ॥
तब जस माधौदासहि केरो ❀ सेवा किय जगनाथ घनेरो ॥
तैसहि स्वामि आपने हाथा ❀ सेवा कियो दास रघुनाथा ॥
पुरी महा प्रभु यक अभिरामा ❀ रहे कृष्णचैतन्यहि नामा ॥
बहुत दिवस निवसे तिन पासा ❀ लहि निदेश तिन पुनि सहुलासा ॥
सादर श्रीवृन्दावन आई ❀ राधाकुंड बसे सुख छाई ॥
तहँ बहु परिचै सबको दीन्ह्यों ❀ नहिं वर्णन विस्तर भय कीन्ह्यो ॥
यक परिचै मैं देहुँ सुनाई ❀ जानिलेहु ऐसहि सुखदाई ॥
एक समय रघुनाथ गोसांई ❀ है विराम किय व्रत तेहि ठांई ॥
दोहा-मंदिर केर महंत तहँ, वैद्यहिं लियो बोलाय ॥
सो लखि नाडी कह कियो, इन निशि अशन बनाय २
सुनि महंत कह झूठ न कहहू ❀ तुम सत वैद्य विदित जग अहहू ॥
इनको भोजन कोउ न दीन्ह्यो ❀ ये असक्त भोजन कस कीन्ह्यो ॥

वैद्य कह्यो न वैद्य हम ऐसे ✽ वचन हमार अन्यथा कैसे ॥
देहिं बताय खीर इन खायो ✽ चिनी डारिके राति बनायो ॥
पूंछिलेहु सो शपथ धराई ✽ यहि रोगीसो अबहीं जाई ॥
सुनि महंत चलि तिनके पासा ✽ कह्यो सत्य तुम करहु प्रकाशा ॥
वैद्यराज मिथ्या यह कहहीं ✽ तुमहिं उपास सत्रहे अहहीं ॥
देहै कौन खीर तुम काहीं ✽ कह्यो गोसांई वचन तहांहीं ॥
वैद्य सत्य कहतेहैं बाता ✽ भूख लगी तुमसों अधराता ॥
मांगत भये न जब तुम दीन्ह्यों ✽ हमसों अस उचार मुख कीन्ह्यो ॥
भोर वैद्यको हाथ देखाई ✽ देहैं भोजन तुमहिं देवाई ॥
शौचक्रिया मानस तब ठानी ✽ चाउर दूध कतहुंते आनी ॥

दोहा-अग्नि बारिकै खीर करि, सुंदरि चिनी मिलाय ॥
थार परसि श्रीकृष्णको, दीन्ह्यो भोग लगाय॥३॥
खायगये सो खीर सब, आवति अबहुँ डकार ॥
सुनत मानि अचरज गहे, संत चरण सुखसार ॥४॥
वैद्यराजको देत भे, तुरत मँगाय इनाम ॥
बहु रघुनाथ गुसांइके, चरित कह्यों कछु आम॥५॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे त्र्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०३॥

अथ नित्यानंदकी कथा।

दोहा-नित्यानंद सुसंतको, वरणों बर इतिहास ॥
रहैं बंधु द्वै जेठ मे, नित्यानंद प्रकाश ॥१॥

अनुज कृष्णचैतन्यादि नामा ✽ गौड देश प्रगटे अभिरामा ॥
श्रीबलदेव केर अवतारा ✽ नित्यानंद भक्ति आगारा ॥
जगमें करिकै भक्ति प्रचारा ✽ मत पाखंड खोय सब डारा ॥
आगे मत्त वारुणी माहीं ✽ रहे विदित बलदेव सदाहीं ॥
तिनको अंतर प्रेम अपारा ✽ तब नहिं प्रगट रह्यो संसारा ॥
ताते नित्यानंद स्वरूपा ✽ धरि प्रगटतभे प्रेम अनूपा ॥

नयननिते आंसुनकी धारा ❀ बहै निरंतर सबै निहारा ॥
जान्यो उर समात सो नाहीं ❀ तब चलि ठौर ठौर चहुँघाहीं ॥
बहु शिष्यनको करि उपदेशा ❀ दिय विरताय प्रेमसो वेशा ॥
पूरण प्रेम लक्षणा तेरे ❀ ह्वैगे तिनके शिष्य घनेरे ॥
इनके अहैं बहुत इतिहासा ❀ विस्तर भीति न कियों प्रकाशा ॥
लेहिं प्रभाव सकल तिन जानी ❀ इतनेहीमें संत विज्ञानी ॥

दोहा-नित्यानंद सुसंतकी, कही कथा सुखदानि ॥
सुनि सुनि संत सुजान सब, लहिहैं आनंद खानि ॥२॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे चतुरधिकशततमोऽध्यायः १०४

अथ कृष्णचैतन्यकी कथा।

कवित्त-महाप्रभु कृष्णचैतन्य भये गौड देश, नदिया शहर कथा करौं मैं उचार है ॥ पार करिवेको या अपार भव पारावार संत सुखसार जासु कृष्ण अवतार है ॥ अनुराग गोपिनके हारि गये द्वापरमें, गौर अंग गोपी उर कियो जो विहार है ॥ श्याम रंग ताकि मनु श्याम भये गौर अंग शची पुत्र भक्ति कीन्ह्यो कलि परचार है ॥ १ ॥

दोहा-गोपिन लाल शरीरमें, मनु श्यामता गमाय ॥
इतै कृष्णचैतन्य प्रभु, गौर रहे छबिछाय ॥ १ ॥

सोरठा-तिनके चरित अनंत, विस्तर भय वरण्यों न इत ॥
सति जानैं सब संत, लिखों कवित प्रियादास कृत १ ॥

कवित्त-आवै कभूं प्रेम हेम पिंडवत तनु होत, कभूं संधि संधि छूटि अंग बढि जात है ॥ एक ओर न्यारी तिमि आसु पिचकारी मानों, उभय लाल प्यारी भाव सागर समात है ॥ ईशता बखान कहा करौं यों प्रमाण याको, जगन्नाथ क्षेत्र नेत्र लखि साक्षात हैं ॥ चतुर्भुज षट्भुज रूपलै दिखाय दियो दियोजू अनूप हित ख्यात पात पात हैं १ ॥
कृष्णचैतन्य नाम जगतमें प्रगट भये अति अभिरामा लै महंत देही

करी है ॥ जितो गोड देश भक्ति लेशहू न जाने कोऊ सोऊ प्रेमसागरमें बोऱ्यो कहि हरी है ॥ भये शिरमोर जग एक एक तारिबेको धारिबेको कौन साखि पोथिनमें धरी है ॥ कोटि कोटि अजामेल वारि डारे दुष्टताये ऐसेहू मगन कियो भक्ति भूमि भरी है ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे पंचाधिकशततमोऽध्यायः १०५॥

अथ सूरदासकी कथा।

दोहा-सूरदासजी जग विदित, श्रीउद्धव अवतार ॥
कथा पुराणांतर कथित, वर्णन करौं उदार ॥ १ ॥

जब मथुरामें श्रीनँदलाला * गोपिनको विज्ञान विशाला ॥
सादर करन हेतु उपदेशू * पठयो उद्धव गोकुल देशू ॥
तहँ गोपिन पर प्रेम परेखी * उद्धव बोले ज्ञान विशेषी ॥
धारि भक्ति हरि निजउरमाहीं * आवत भे पुर मथुराकाहीं ॥
राखि भाव उर गोपिन केरो * लख्यो संग हरिचरित घनेरो ॥
तब उद्धवको श्रीयदुराया * बदरी नाथ काहँ पठवाया ॥
यह सुवासना उद्धवके तब * रही आय ब्रज एकबार कब ॥
गोपिनको अनूप अनुरागा * हरि लीला जो ब्रज सब जागा ॥
सो रसनाते वर्णन करहूं * वरसंतोष हिये पर धरहूं ॥
कीन्हें यही वासना काहीं * उद्धव प्रगट भये कलिमाहीं ॥
सूरदासते संत शिरोमणि * विरचे सवालाख पदको गुणि ॥
करि संकल्प मुदित मनमामें * हरिलीला विभूतिहू तामें ॥

दोहा-वरण्यों तिमि गोपीनको, जो यथार्थ अनुराग ॥
विरचि कृष्णपद सूरवदि, सहस पचीस अदाग २॥
पूरण कीन्ह्यो सूर प्रण, सूरश्याम जहँ होय ॥
सो पद विरच्यो कृष्णहीं, जानि लेहु सब कोय ॥३
महाघोर कलिकाल महँ, जन्म लेब दुखदूर ॥
दृग विकार गुणि याहिते, सूरदास भे सूर ॥ ४ ॥

जन्महिते हैं नयन विहीना ❀ दिव्यदृष्टि देखहिं सुखभीना ॥
लीनि परीक्षा सो तेहिं नारी ❀ एक समय अस वचन उचारी ॥
पिय मोहिं सकल ग्रामकी वामा ❀ मोसों कहहिं वचन असि वामा ॥
तू केहि देखन कराहि शृंगारा ❀ तेरो पति तो अंध अपारा ॥
सुनिकै सूर कही यह वानी ❀ आजु शृंगार भली विधि ठानी ॥
बहु त्रियनको लै निज संगा ❀ बैठहु आय इहां सउमंगा ॥
भूषण तुव बिगरो जो होई ❀ देहैं हम बताय सत सोई ॥
सुनि यह सूरदासका नारी ❀ सब भूषण निज अंग सँवारी ॥
बेंदी देत भई नाहिं भाला ❀ सूर बोलायो ढिग तब बाला ॥
तिय भूषण सब अंग निहारी ❀ सूरदास बोल्यो सुखधारी ॥
बेंदी भाल दियो क्यों नाहीं ❀ लखि प्रभाव यह सूर तहांहीं ॥
कीन्हे सकल लोग जय शोरा ❀ ख्यात बात भइ जग सब ठोरा ॥

दोहा—है विरक्त संसारते, दिव्यदृष्टि हरि ध्यान ॥
सूरदास करते रहे, निदिदिन विदित जहान ॥५॥
सूरदास इतिहास बहु, परचै अहै अनेक ॥
जानिलेहु सब संतजन, कहौं नेक सविवेक ॥ ६ ॥

कवित्त—कविकुल कोक कंज पाइकै किरिणि काव्य विकसे विनोदित ह्वै नेरे और दूरके ॥ सूखिगो अज्ञान पंक मंद भोमयंक मोह विषय विकार अंधकार मिटे कूरके ॥ हरिकी विमुखताई रजनी पराय गई, मूक भये कुकवि उलूक रस झूरके ॥ छायो तेज पुहुमिमें रघुराज स्वर हरि जन जीव सूर सूर उदै होत सूरके ॥ १ ॥ मतिराम भूषण विहारी नीलकंठ गंगवेणी शम्भु तोष चिंतामणी कालीदासकी ॥ ठाकुर नेवाज सेनापति शुकदेव देव, पजन घन आनँद अरु घन श्यामदासकी ॥ सुंदर मुरारि बोधा श्रीपतिहू दयानिधि युगल कविंद त्यों गोविंद केशव दासकी ॥ भनै रघुराज और कविन अनूठी उक्ति मोहिं लगी जूंठी जानि जूंठी सूरदासकी ॥ २ ॥ अखिल अनूठी उक्ति युक्ति नहिं झूठी नेकु, सुधाहूंते सरस सरस को सुनावतो ॥

उद्धृत विराग भागसहित अनेक राग, हरिको अदाग अनुराग को सिखावतो ॥ जगत उजागर अमल पदआगर सु नटनागर ध्याय सूरसागर को गावतो ॥ भाषे रघुराज राधा माधवको रासरस कौन प्रगटातो जो सूर नहिं आवतो ॥ ३ ॥ शाह सुन्यो शुरनसे वेगही बुलायो दिल्ली पूंछ्यो कौनहो तू सूर कह्यो पूंछो बेटीसो ॥ शाह कह्यो जानो कैसे सूर कह्यो जंघतिल शाह पुंछवायो सो तुरत यक चेटीसों ॥ कन्या कह्यो कहत तुरंतही शरीर छूटी हठ परे कहि तनु तजि हरि भेटीसो ॥ भने रघुराज शाह सूर पद शिर नाय पूंछि हरि रास रीति भव भीति मेटीसों ॥ ४॥ गोकुलमें रास होत राधाजुने मान कीन्यो हरी मान मोरिबेको उद्धवै पठायो है ॥ जानि गुरुमान कह्यो नेसुक कटुक वेन दीनि वृषभानुसुता शाप कोप छायो है ॥ धारिये मनुज तनु तारिये जगत जाय सकल सुनाइये जो रास रस भायो है ॥ भनै रघुराज सोई ऊधो अवनीमें आय रसिक शिरोमणि सो सूर कहवायो है ॥ ५ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे षडुत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १०६ ॥

अथ परमानंदकी कथा।

दोहा—परमानन्द भये पुहुमि, परमसन्त विख्यात ॥
पावै परम अनंद उर, देखि साधु अवदात ॥ १ ॥
भगवत धर्म विहायकै, कियो धर्म नहि और ॥
रट्यो निरंतर नाम हरि, रसना बसि यक ठौर॥२॥
श्रवण करत भगवत कथा, बहै आंसुकी धार ॥
भक्ति जे नवधा भक्ति है, तिनके रसिक अपार॥३
तनु त्यागनके समयमें, श्रीवृन्दावन जाय ॥
कालिंदी ध्रुव घाटमें, दीन्ह्यो काय विहाय ॥ ४ ॥

इनकी बहु परचै कथा, जानैं जन सहुलास ॥
विस्तर भयते नहिं कियो, तिनको यहां प्रकाश९॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे सप्ताधिकशततमोऽध्यायः १०७

अथ श्रीभट्टकी कथा।

दोहा-कहों कथा श्रीभट्टकी, वृन्दावन करि वास ॥
राधाकृष्ण उपासना, कीन्हीं परमहुलास ॥ १ ॥
मधुरभावअति लखि हरिलीला ❀ रहै प्रसन्न सदा शुभ शीला ॥
जिनते दृगते आंसुन धारा ❀ बहै प्रेम परिपूर्ण अपारा ॥
भवसागर उतरन कहँ सोई ❀ सरिस जहाज भक्ति हरि सोई ॥
करहिं सदा सबको उपदेशा ❀ सदावर्त्त सम मानि हमेशा ॥
रविशशि जेहि उपदेशप्रकाशा ❀ भ्रम तम तुरत हरे अनयासा ॥
कृष्ण राधिका भजनहिं माहीं ❀ जाहिं रैन दिन जिन्हैं सदाहीं ॥
एक समय श्रीभट्ट सुसन्ता ❀ ब्रज कुंजन गे कहि मुदवन्ता ॥
आज दरश करि लाला केरो ❀ और प्रियाको मोद घनेरो ॥
दरशन करि विशेष गृह ऐहौं ❀ तब सबको निज वदन देखैहौं ॥
हेरत हेरत थाकि गये तहँ ❀ श्रीहरिदास निवास कियो जहँ ॥
ऐसे निधि वनमें जब आये ❀ कृष्ण राधिकाको तहँ पाये ॥
तहँ कवित्त इक सुभग बनायो ❀ परम प्रमोद हिये महँ छायो ॥
दोहा-सो कवित्त इत लिखतहौं, सुनहिं संत मतिमान ॥
जानिलेहिं श्रीभट्टमें, ऐसो भाव अमान ॥ २ ॥
कवित्त-ब्रजमें ढूंढि पुराणन वेदऋचा पढि चौगुने चायन ॥ जान्यो नहीं न कहा कबहूं यह कौन स्वरूप है कौन सुभायन ॥ हेरत हेरत हारि परचोहौं बतायो नहीं कोउ लोगायन ॥ देखो कहां दुरचो कुंजकुटीरमें बैठो पलोटत राधिका पायन ॥ १ ॥
दोहा-श्रीवृंदावन कुंजमें, युगल चरणरस मग्न ॥
श्रीभट महिमा वरणि कवि, होत मोद संलग्न ॥३॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे अष्टाधिकशततमोऽध्यायः १०८

अथ विठ्ठलदास और इनके सातपुत्रोंकी कथा

दोहा-पुत्र वल्लभाचार्यके, प्रगटे विठ्ठलदास ॥
तासु सात सुत मै करों, तिनके नाम प्रकाश ॥ १ ॥
गिरिधर अरु गोविंदजू दूजे * तीजे बालकृष्ण जन पूजे ॥
चौथ रहे जस वीर नाम जेहि * पंचम गोकुलनाथ नाम तेहि ॥
छठो नाम रघुनाथहि जानो * सातों श्रीघनश्याम बखानो ॥
सातहु करि हरि भक्ति अपारा * दे उपदेश जनन संसारा ॥
दिय पठाय श्रीपतिके धामा * व्रज माधुर्य्यभाव अभिरामा ॥
सातों भये तासु अधिकारी * कवि ह्वै वरणें हरियश भारी ॥
रसनाते नर कविता काहीं * कैसेहु कबहूं भाषे नाहीं ॥
एक समय यक भूप महाना * कह्यो करहु मम सुयश बखाना ॥
जो मम यश नहिं वर्णन करिहो * तो विशेषि यमलोक सिधरिहो ॥
सुनि कबूल करिके गृह आई * निज रसना काट्यो अतुराई ॥
सो हवाल नृप सुन्यो सबेरे * चरणन आय पर्‌यो तिनकेरे ॥
निज अपराध क्षमा करवाई * अपने अयन गयो नरराई ॥
दोहा-पुनि वृंदावन आयके, करिके अचल निवास ॥
अंत समय गोलोक गे, सातहु सहित हुलास ॥ २ ॥
इनके चरित अनेक हैं, जानत संत सुजान ॥
बिस्तर भय संक्षेपते, इत मैं कियो बखान ॥ ३ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे नवोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १०९ ॥

अथ कृष्णदासकी कथा।

दोहा-शिष्य वल्लभाचार्य्यके, कृष्णदास अवदात ॥
अधिकारी भे भजनके, गुरुकी कृपा विख्यात ॥ १ ॥
तिनकी कथा करों मैं गाना * धारि हियेमें प्रीति महाना ॥
करैं नाथजी की सेवकाई * भये प्रसिद्ध जगत कविराई ॥

जामें दूषण परै न हेरी * ऐसी कविता करैं निवेरी ॥
सर्वस मानै ब्रजरज काहीं * नाथ कृपाके पात्र सदाहीं ॥
इक दिन दिल्ली चले बजारा * तहां जलेबी सुभग निहारा ॥
योग्य नाथजीके तेहि जानी * खरे बजाराहिमें सुख मानी ॥
दियो नाथकहँ भोग लगाई * लह्यो तहैं ते श्रीयदुराई ॥
वृंदावनमें होत प्रभाता * भोग धरयो पंडा अवदाता ॥
भोग न लग्यो नाथको जबहीं * पंडा विनय करतभो तबहीं ॥
भई प्रगट हरिकी तब वानी * पंडा लेहु सत्य यह जानी ॥
कृष्णदासने बीच बजारा * अरप्यो मोहिं जलेबि अपारा ॥
भयो अजीरण मोको सोई * ऐसो जानि लेहु सब कोई ॥

दोहा—ख्यात भई यह बात पुनि, बडी प्रीति लखि गान॥
द्वै गणिका अति सुन्दरी, कहुँ गावैं रतिवान ॥२॥

तिनको ऐसे वचन सुनाई * मेरे लालाके ढिग जाई ॥
गान अपनी देहु सुनाई * अस कहि जगकी लाज विहाई ॥
लाये गृह लेवाय निज साथा * मज्जन करवायो सुख गाथा ॥
पट नवीन सादर पहिराई * अतर आपने पाणि लगाई ॥
पुनि मंदिर श्रीनाथहिं केरे * ले आये भरि मोद घनेरे ॥
तहँते गणिका नृत्यहु गाना * कियो अपूरव छकित महाना ॥
तदाकार ह्वै हरि छवि करि मन * त्यागिदियो अपनो अपनो तन ॥
कियो नाथ जो अंगीकारा * लिखे देत प्रियदास उचारा ॥

कवित्त—नीके अन्हवाय पट आभरण पहिराय, सोधोहू लगाय हरिमन्दिरमें लाये हैं ॥ देखि भई मतवारी कीन्ही लै अलाप चारी, कह्यो लाल देखे बोली देखे मही भाये हैं॥ नृत्यगान तानभाव भरि मुसकानि दृग, रूप लपटान नाथ निपट रिझाये हैं ॥ ह्वैकै तदाकार तनु छूट्यो अंगीकार करि, धरि उर प्रीति मन सबके भिजाये हैं ॥ १ ॥

इक दिन सूरदास जब आये * कृष्णदास निज भजन सुनाये ॥
सूरदास तब वचन बखाना * ऐसो करहु अनूपम गाना ॥

जामें मेरे पदकी छाया * परै न ऐसो करहु उपाया ॥
कृष्णदास जोइ भजन बनाई * गावैं ते खूटैं नित जाई ॥
दोहा—मेरी पद छाया परै, याहूमें सुनु संत ॥
बचे न कौनहु हरिचरित, विरच्यो सूर अनंत ॥ ३ ॥
सूरदास जब फेरि सिधाये * तबते नयो भजन यक गाये ॥
सूरदास तब कह्यो तहांहीं * यामें मम पद छाया नाहीं ॥
है परंतु नहिं आप बनायो * कृष्णदास तब वचन सुनायो ॥
यह पद मेरे कागज माहीं * लिख्यो कृष्णनिर्मित मम नाहीं ॥
सूरदास तब धन्य धन्य कहि * कियो दंडवत परम मोदलहि ॥
नाथ कृपा कीन्ही यहि भांती * सो कविसों नहिं बरणि सिराती ॥
इक दिन हरिभक्तनको प्यासा * लगी लेन जल गये हुलासा ॥
पांव छुट्यो गिरिपरे कूप पर * छूटिजातिभो तब तिनको घर ॥
बडी शंक भे संत समाजा * संत लह्यो अपमृत्यु दराजा ॥
शंका तौन निवारण हेतू * करिकै कृपा नाथ सुखसेतू ॥
जादिन कृष्णदास तनु त्यागा * तादिन नाथ सहित अनुरागा ॥
परिक्रमा गोवर्द्धन पाहीं * चले जात तिनके सँग माहीं ॥
दोहा—गाय चरावत जो रह्यो, मंदिरकी नित ग्वाल ॥
भेंट भई तिनकी तहां, पूंछयो सो तत्काल ॥ ४ ॥
महाराज कहँ आजु सिधारो * कृष्णदास तब वचन उचारो ॥
श्रीबलदेव जातहैं आगे * तिनके साथ जाहु सुख पागे ॥
तुम मंदिरहि नाथके जाई * निवसत तहां हमेश गोसाई ॥
तिनसों मम दंडवत प्रणामा * कहियो और दबाल ललामा ॥
द्रव्य गडो मंदिर यक जागा * देहुँ बताय तोहिं शुभ रागा ॥
सो गोसांइसों तू कहिदीजो * कृष्णदास अस कहि सुख भीजो ॥
पर विभूतिको कियो पयाना * करत कृष्णगुण यशसुख गाना ॥
मंदिर माहिं आय सो ग्वाला * आदर सब कहि गयो दबाला ॥
जहाँ द्रव्य तहँ चलि सब संता * द्रव्य देखि अतिभे मुदसंता ॥

कीन्ह्यो निज मन माहँ प्रतीती * तिन्हैं न मृत्यु अकालहि भीती ॥
यहि विधि नाथ सबहिं दरशायो * कृष्णदास कहँ निकट बसायो ॥
ऐसे श्रीवृंदावन माहीं * कृष्णदास भे विदित सदाहीं ॥
दोहा-तिनके चरित अनंत हैं, कहि न लह्यो कोउ पार ॥
मैं बरण्यो संक्षेपते, सुनत गुणत सुखसार ॥ ९ ॥
इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे दशोत्तरशततमोऽध्यायः ११०॥

अथ माथुर विट्ठलदासकी कथा ।

दोहा-रह्यो माथुरिया एक द्विज, विट्ठलदासहि नाम ॥
आप आपनी मानप्रद, सब संतन सुखधाम ॥१॥
तासु कथा बरणों जेहि रीती * तिलकदाससों किय अतिप्रीती ॥
भगवत सम्बन्धी गुण धारण * कियो जन्मभरि नाम उचारण ॥
भगवत भक्तनकी बडवारी * कहि प्रसिद्ध भे पर उपकारी ॥
हरि उत्सवमें किय सुत दाना * भाई उभय पुरोहित राना ॥
आपुसमें लरि दूनों भाई * देतभये निज देह बिहाई ॥
तासु तनय भो विट्ठलदासा * नृत्य गानमें सुघर प्रकाशा ॥
प्रेमाभक्ति प्रधान अनूपा * ताके निकट एक बरभूपा ॥
अस कहि यक जनको पठवायो * विट्ठलदास संत जो भायो ॥
मेरे ढिग लेआवहु ताको * प्रेम विलोकहुँ मैंहूँ वाको ॥
कोउ कह नृत्य करत हरि आगे * प्रेमते गिरन लगत सुखपागे ॥
जो कोऊ पकरत है नाहीं * तो महिमें गिरि परत तहांहीं ॥
राना सुनि यह त्रयछत ऊपर * बैठत भयो आय कह यक नर ॥
दोहा-आयो विट्ठलदास पुनि, नृप लिय तिनहिं बोलाय॥
नृत्य गान करने लगे, ते तहँ हरि बैठाय ॥ २ ॥
कृष्णदासके प्रेम बढ्यो जब * गिरन लग्यो विमुखीन धरचो तब
गिरिके ऊपरते महि माहीं * परत भये रहिगे सुधि नाहीं ॥
राना वदन श्वेत है गयऊ * दुष्टनको गारी बहु दयऊ ॥

कृष्णदास बीते दिन तीनी ❀ तनक तनक तनुमें सुधि कीनी ॥
राजा तिनके सेवा हेतू ❀ पठवत भयो मनुष्य सचतू ॥
बहु धन पूजा हेतु पठायो ❀ निज अघ गुणि बहुविधि दुख पायो॥
जननी सुख यह सकल हवाला ❀ कृष्णदास सुनि अतिहिं उताला ॥
तजि वह गाँव छटिकरा नामा ❀ रह्यो ग्राम तहँ चलि किये धामा॥
मातु तियहु तेहिं सो सुधि पाई ❀ तहां निवास करतभे जाई ॥
सेवा भजन करै हरिकेरी ❀ पीडा लहै शरीर घनेरी ॥
दिय भगवान स्वप्न त्रय बारा ❀ जाहु मधुपुरी मिनहिं विचारा ॥
तब मथुरा चलि तजि सब जाती ❀ बसे गेह बढई सुखमाती ॥
दोहा–गर्भवती अति पतिव्रता, रही तासु जो नारि ॥
यक दिन माटी खोदते, भांडा नयन निहारि ॥ ३ ॥
बढईसों वचन सो बखानी ❀ तेरी द्रव्य लेहि सुखमानी ॥
सुनि बढई कह है मम नाहीं ❀ लेहु तुमहिं दिय हरि तुमकाहीं ॥
तब प्रसन्न अति विट्ठलदासा ❀ सकल द्रव्य ले आय अवासा ॥
करनलगे संतनको सेवन ❀ हरिके राग भोगमें बहु धन ॥
खर्चि नृत्य अरु गान सुहायो ❀ हरिके आगे बहु करवायो ॥
भक्ति रीति बहु जग फैलाई ❀ भये शिष्य ते जन समुदाई ॥
यक दिन गान तान परवीनी ❀ एक नटी उत्सव सुख भीनी ॥
ऐसो करत भई सो गाना ❀ विट्ठलदास परमसुख माना ॥
देत देत सब द्रव्यहि दीन्ह्यो ❀ विविध भांति सन्मानहि कीन्ह्यो ॥
रंगीराय नाम सुतकाहीं ❀ रीझि नटीको दियो तहांहीं ॥
रंगीराय शिष्य यक रहई ❀ राना सुता सुनत भे तहँई ॥
दीन्ह्यो नटी हमारे गुरु कहँ ❀ भयो कुनाम बडो यह जगमहँ ॥
दोहा–अस विचारि रानासुता, कहि पठयो नटि पाहिं ॥
द्रव्य कहै सो देहुँ मैं, देहि गुरू मोहिं काहिं ॥ ४ ॥
नटी कह्यो मैं द्रव्य न चाहौं ❀ जस रिझाय लिय तुव गुरुकाहौं ॥
ऐसहि नृत्य गानमें कोई ❀ लेहि रिझाय मोहिं जन जोई ॥
ताको तुव गुरु देहुँ विशाला ❀ भूपसुता यह सुन्यो हवाला ॥

अमित गायकन नृत्यक जोरी ❀ पठे नटीपै प्रीति अथोरी ॥
नृत्य गान बहुविधि करवायो ❀ नटी काहँ बहु भांति रिझायो ॥
रीझि नटी पालकी चढाई ❀ रंगीराय काहँ लै आई ॥
रानासुता काहँ दै दीनो ❀ रंगीराय कह्यो सुख भीनो ॥
सुनहि वचन मम राजकुमारी ❀ मम पितु रीझिगयो है भारी ॥
तब मोहिं मोहरन वदिन्थुवछावरि ❀ कीन्ह्यो ताते मोहिंन लेहिंआरि ॥
गुरुको वचन लेहि यह मानी ❀ ऐसो रंगीराय बखानी ॥
गमनत भये नटीके संगे ❀ गुरु वियोग तब जानि अभंगे ॥
रानासुता शरीर बिहाई ❀ हरिके लोक गई सुख छाई ॥
दोहा-ऐसे चरित विचित्र हैं, भगवत रसिक अपार ॥
बिट्ठलदासहु रामके, करि उतसव संसार ॥ ५ ॥
देत देत धन तोष कछु, लह्यो न निज मन माह ॥
तब अपनो सुतप्यारहूं, दै राख्यो सउछाह ॥ ६ ॥
इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकादशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ १११ ॥

अथ संतहरिनामकी कथा।

दोहा-कथा संत हरिनामकी, कहत अहौं अभिराम ॥
गन्यो न रानहुको जो कछु, भजन प्रभाव सुदाम ॥ १ ॥
एक संन्यासीके सँग माहीं ❀ राजा खेलै चोपरिकाहीं ॥
सो आपनो सँकोच जनाई ❀ एक साधु जीविका मिटाई ॥
तब वह संत महादुख छायो ❀ रानाको फिरि आय सुनायो ॥
सुनि राना दीन्ह्यो झिझिकारी ❀ ताकी बात कान नहिं धारी ॥
हैकरि तब वह संत उदासा ❀ जाय कह्यो हरि रामहिं पासा ॥
महाराज तब गाँव जो रहेऊ ❀ कइ संन्यासी राना लयऊ ॥
करौं संत सेवा कस नाथा ❀ सुनते चले संतके साथा ॥
सपदि सभा रानाके जाई ❀ खडे भये राना सुख पाई ॥
हरिरामहि सादर बैठायो ❀ तबते बहु उपदेश सुनायो ॥

पै राना कबूल किय नाहीं ॥ गाँव देन तोहि संतहि काहीं ॥
तब हरिराम कह्यो इतिहासा ॥ हिरण्यकशिपु प्रह्लादको खासा ॥
दोहा–तबहुँ न समुझ्यो मूढ सो, तब अति रोषहि छाय॥
देह कँपत फरकत अधर, बोलन चह्यो तुराय ॥ २ ॥
ताही क्षण राजा महल, सिगरे डोलन लाग ॥
तरे महल रानहु तहां, लाग्यो गिरन अभाग ॥ ३ ॥
तासु कृपा बचि उठि सपदि, विनय कियो गहि पाय॥
करि बहाल लीन्ह्यो तुरत, संत गाँव हरषाय ॥ ४ ॥
प्रेमपुंज अति तेजयुत, ऐसे श्रीहरिराम ॥
दास भये तिनकी कथा, कह्यों समास ललाम ॥ ५ ॥
इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे द्वादशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ ११२ ॥

अथ कमलाकरभट्टकी कथा ।

सो०–कमलाकरभे भट्ट, पंडित पुहुमि अखंडितै ॥
आचारी उदभट्ट, आय जिन्हैं आदर कियो ॥ १ ॥
संप्रदायक निज छत्र, मध्वाचारज द्वितिय मनु ॥
हरि अवतार चरित्र, गान कियो निज वदनसों२॥
श्रीभागवतहि रीति, चले धारिकै भुजनपै ॥
मुद्रा तस सप्रीति, लियो निरंतर नाम हरि ॥ ३ ॥
अंत समय हरिधाम, तनु विहाय गमनत भयो ॥
कह्यो कथा अभिराम, संक्षेपहु जग विदित बहु४॥
इति श्रीरामरसिका० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे त्रयोदशाधिकशततमोऽध्यायः ११३॥

अथ नारायणदासकी कथा ।

कवित्त–नारायणदास भये भागवत वक्ता अति, प्रेम पूरे शास्त्रनको सार नीके जान्यो है ॥ सुरगुरु शुक्र व्यास नारद औ सनकादि

रीतिको ग्रहण करि भूरि यश तान्यो है ॥ मथुरापुरीमें बसि हरिद्वार गये फेरि, आज्ञा हरि बद्रिकाश्रममें मोद मान्यो है ॥ तहां शुकदेवको दरश पाय काशी आय, छोंडि तनु श्रीपतिके धाम वास ठान्यो है॥१॥

सो०-तिनकी कथा अपार, पुहुमीमें संतन विदित ॥
मैं कछु कियो उचार, विस्तर भय यहि ग्रंथमें ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे चतुर्दशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ ११४ ॥

अथ रूपसनातनकी कथा।

दोहा-गौडदेशवासी अहैं, बंगाली सरनाम ॥
रूप सनातननाम तिन, कहौं कथा अभिराम ॥ १ ॥

रहे शाहके बड अधिकारी * रह्यो ऐश्वरज तिनको भारी ॥
सो सुखसरिस उबांतहिं मानी * तज्यो लिखौं नाभाकृतबानी ॥

उक्तं च नाभायां।

गौडदेश बंगालहु ते सबहीं अधिकारी ॥
हय गय भवन भँडार विभव भूपति अनुहारी ॥
यह सुख अनित विचारि वास वृंदावन कीन्ह्यो ॥
यथा लाभ संतोष कुंज करवा मन दीन्ह्यो ॥ इति ॥

संत कृष्णचैतन्यहि केरो * लहि उपदेश माने सुद ठेरो ॥
रूप सनातन दोनो भाई * गृह तजि श्रीवृंदावन जाई ॥
जीवगोसांई साधु महाना * तिनसों तहँ किय संग सुजाना ॥
गोप्य तीर्थ वृंदावनके पुनि * प्रगट किये भाषे जिमि शुकमुनि ॥
षट्संदर्भ भागवत माहीं * करतभे बुध बदत सदाहीं ॥
प्रेम लक्षणाके रस रूपा * रहे परम भागवत अनूपा ॥
कथा श्रवण दृग आंसुन धारा * बहै निरंतर परै निहारा ॥
कियो सनातन यक दिन मन अस * आजु खीरको भोग लगे कस ॥
तब निज दास केरि रुचि जानी * श्रीराधिका मोद उर मानी ॥

धरिके एक ग्वालनी रूपा ❀ पय तंदुल कर लिये अनूपा ॥

दोहा-आय सनातनको दियो, ते नव खीर बनाय ॥
परसादी पावत भये, हरिको भोग लगाय ॥ २ ॥

कह्यो रूप तब सुनिये भाई ❀ खीर साजु कहँवां तुम पाई ॥
सुनि सब कह्यो हवाल सनातन ❀ चले रूप नयनन अँसुवा घन ॥
रूप वचन पुनि कह्यो सराही ❀ ऐसो स्वाद लियो नहिं चाही ॥
जामें प्रियाकाहुँ श्रम परई ❀ आगुहि निकट भक्त पग्ग धरई ॥
यक दिन श्रीभागवत पुराना ❀ होत रहे किय रूप पयाना ॥
निरखि साधु यक तिनको आई ❀ लीन्ह्यो निज समीप बैठाई ॥
भँवरगीत गापिनकी नीकी ❀ विरह कथा होती प्रिय जीकी ॥
सुनि सुनि सब दृग आंसुन धारा ❀ बहत रही तेहिं सभा मँझारा ॥
तहां रूप दृग आंसुन देखी ❀ कहे सबै अचरज मन लेखी ॥
प्रेमिनमें ये मुख्य सुहाये ❀ कहा भयो नहिं आंसु बहाये ॥
करणपूर तहँ एक गोसांई ❀ उठिकै तिनके मुखके ठांई ॥
नासामें निज हाथ लगायो ❀ आग जरो सो फोरा पायो ॥

दोहा-कर्णपूर तब सभामें, देखरायो निज पानि ॥
जरे गात इन सुनि विरह, गोपिन लीजै जानि ॥ ३ ॥

विरह अग्नि इन प्रगट देखायो ❀ ताहीते फोरा है आयो ॥
श्रीगोविंद चंद्र भगवाना ❀ स्वप्न माहिं यक दिवस बखाना ॥
मैं गाइनके खरकन माहीं ❀ रहत अहौं महि गडो सदाहीं ॥
भोग लगाय पय धारहि तेरे ❀ पूजहु म्वाहिं निकासि चलि नेरे ॥
तहँ चलि भूमि खनाय निकासी ❀ पूजन लगे मूर्ति सो खासी ॥
एक साहुकी नाव विशाला ❀ यमुनामें अटकायो हाला ॥
हरि मंदिर बनवावन काहीं ❀ किय कबूल तब छुटी तहांहीं ॥
साहु तुरत मंदिर बनवायो ❀ तहँ गोविंद चंद पधरायो ॥
राग भोग हितसों धन भूरी ❀ दियो लगाय मोदसों पूरी ॥
यक दिन यक पदरच्यो सनातन ❀ कियो राधिका वेणी वर्णन ॥
उपमा तासु नागिनी केरी ❀ दियो कह्यो सुनि रूप निवेरी ॥

भई प्रिया पीठि पर नागिन * कहिबो नहिं बनतहै यहि छिन ॥
दोहा-ऐसो कहि कुंजन गये, तहँ कदंबकी डार ॥
झूला झूलत प्रियाकी, निरख्यो सुछबि अपार ॥ ४ ॥
नागिनसी वेणी छुटी, लख्यो राधिका पीठि ॥
पद पारि कह पद मल रच्यो, अग्रजसो इत हीठि॥५॥
रूप सनातनके अहैं, ऐसे चरित अनंत ॥
मैं वर्ण्यौं संक्षेपते, श्रवणकरैं सब संत ॥ ६ ॥
इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे पंचदशाधिकशततमोऽध्यायः॥ ११५ ॥

अथ जीवगोसांईकी कथा।

दोहा-रूप सनातन शिष्य भे, जीव गोसांई संत ॥
परम उपासक प्रथित जग, राधा राधाकंत ॥ १ ॥
तिनकी कथा कहौं सहुलासा * वृंदावन ढिग कीन्हो वासा ॥
आलस रहित कथा हरिकेरी * सुन्यो भजन महँ प्रीति घनेरी ॥
ग्रहण कियो सदग्रंथनि सारा * लिखनेमें परवीन अपारा ॥
छिगरे शास्त्र पुराणनकाहीं * लिख्यो अपूर्व आय करमाहीं ॥
जन संदेह गांठि वर जोरी * दरशनमात्रहि ते दिय छोरी ॥
राम उपासनमें हठ वेशा * कियो भक्ति बहु ग्रंथ हमेशा ॥
जहँ तहँते जो धन ढिग आवै * सो यमुनामें डारि सोहावै ॥
प्रीति साधुसेवामें थोरी * लखि सब कहैं जुरे यकठोरी ॥
जो धन कालिंदीमें डारै * सो साधुन खिवाय सुख धारै ॥
जीवगुसांइ सुनि तिन वानी * कहै यही सबसों हठ ठानी ॥
संतपात्र मिलतो है नाहीं * कैसे करिये सेवाकाहीं ॥
सुनि हवाल यह गुरु ढिग आई * देत भये बहु विधि समुझाई ॥
दोहा-बहु साधुनको बोलि तब, जीवगोसांई गेह ॥
दिय भंडारा एकसों, कह कठोर वचतेह ॥ २ ॥

सवैया—रूप सनातनसो सुनिकै कह्यो जीवगोसाईंसों सादरवानी ॥ संतनसों अस भाव करो नहिं सेवहु संतवरै हरि मानी ॥ सो सुनि जीव है नम्र महा करैं संतन सेवा सदा सुखसानी ॥ नारिको आनन देखिहैं ना कबहूं प्रण ऐसो लियो मन ठानी ॥ १ ॥

दोहा—मीराजी ब्रजमें गई, ते निज भक्ति लखाय ॥
सो प्रण दियो छोडाय सो, मीरा कथा सोहाय ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे षोडशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ ११६ ॥

अथ अलिभगवान्‌की कथा।

कवित्त घनाक्षरी—अलिभगवान नाम भये संत कथा तासु कहों रामचंद्रजूकी कीन्ही है उपासना ॥ और देवको न सेव कीन्हो गुरु परंपरा यहि रह्यो भाव एक समै मोदके घना ॥ वृंदावन आय रास कृष्णको निहारि नय तामें छकि राम मूर्तिहूमें कियो योजना ॥ रासहि विहारी येऊ सुन्यो या हवाल गुरु वृंदावन आये तिन्हैं शी-श नाय या भना ॥ १ ॥

सवैया—रासविहारी स्वरूप सदा हियरे मम रामको रूप सोहावै ॥ सोई रह्यो उरमें वसिहै नहिं औरको रूप हगै दरशावै ॥ दीन अशीश गुरू सुनि बैन या ध्यावहु राधिकारौन जो भावै ॥ श्रीगुरुदेवके पाइन धै शिर कृष्णहीं ध्यानमें नैन छकावै ॥ १ ॥

दोहा—देखि गुरू अलि यह दशा, कह सब एकै रूप ॥
मग्न रहो यहि परमसुख, धनि तुम संत अनूप ॥ १ ॥
तबते अलि भगवान किय, वृंदावनै निवास ॥
कथा अमित मैं इत किय, तिनको कछुक प्रकास ॥ २ ॥

इति श्रीरामसि० कलि० उत्तरार्द्धे सप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ ११७ ॥

अथ गोपालभट्टकी कथा।

दोहा—श्रीगोपाल भटकी कथा, कहौं सुनत सुख छाव ॥
राख्यो शालग्राममें, राधारमणहिं भाव ॥ १ ॥

प्रेम लक्षणा भक्ति दृढाई * राग भोग बहु करै बडाई ॥
वृंदावन माधुर्य अगाधा * ताको स्वाद अपूरव साधा ॥
रहै जे सत्संगहिंमें जेऊ * वाही रीति गयेहै तेऊ ॥
सब जीवनके गुणके ग्राही * ग्रहण करैं अवगुणकोहु नाहीं ॥
एक दिन कहूं लगो झांकी * तहां अपूर्व शृंगारहि ताकी ॥
रुदन करनलागे अस भाषी * निज मनमें अस है अभिलाषी ॥
ऐसे पग मुख नयनहुं हाथा * सहित होत जो मेरेहु नाथा ॥
तो मैंहूं शृँगार अस करतो * गहना अरु पोशाक पहिरवतो ॥
ऐसो मनमें करि सब रैना * रोवत दियो बिताय अचैना ॥
मज्जन करि जो होत सबेरै * मंदिर जाय खोलि पट हेरै ॥
शालग्राम शिलाके रूपा * सब अंगन युत लख्यो अनूपा ॥
शिला पृष्ठके देशहि माहीं * पूरवही सो रह्यो तहांहीं ॥

दोहा—पट भूषण पहिरायकै, कीन्ह्यो तब शृंगार ॥
वृंदावनमें अजहुँसो, मूरति लसति अपार ॥ २ ॥
तामें भगवत वाक्य जो, कहौं अर्द्ध श्लोक ॥
कह्यो कथा संक्षेपते, अहै अमित मुद थोक ॥ ३ ॥
भगवद्वाक्यं उक्तं च ॥

श्लोक—यद्यदिच्छतिमद्भक्तस्तत्तत्कुर्यामसंताद्रितः ॥

इति श्रीरामसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे अष्टादशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ ११८ ॥

अथ विठ्ठलविपुलकी कथा।

कवित्तघनाक्षरी—विठ्ठल विपुल शिष्य स्वामि हरिदासजूके परमउपासक भये हैं कृष्णरासके ॥ एक दिन रास होत देह सुधि भूलि गई, गुरु हैं अछत यह मानिकै हुलासके ॥ एक शिष्य भेज्यो लाउ गुरुको लेवाय बिन, गुरु है न मोद जे सुपासी सदा दासके ॥ प्रेम भरो शिष्यहूको खबरि न रही धाय, आय देख्यो आसनमें पास हरिदासके ॥ १ ॥

दोहा-लखि प्रत्यक्ष हरिदासको, निज गुरु विट्ठल पास ॥
गो लेवाय हरिरासमें, लखिते लहे हुलास ॥ १ ॥
लीला अंतर्द्धानकी, हरिकी भई तहाहिं ॥
तब तनु तजि विट्ठल विपुल, गे विकुंठपुर काहि २॥
सो०-ऐसे चरित अनेक, विदित जगत विट्ठल विपुल ॥
मैं वर्णन किह नेक, विस्तर भय यह ग्रंथके ॥ १ ॥

इति श्रीरामर० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकोनविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः ११९

अथ जगन्नाथकी कथा ।

कवित्त घनाक्षरी-महाप्रभु कृष्णचैतन्यजूके शिष्य सांचे थानेश्वर जगन्नाथ कथा कहों चारु है ॥ बडे साधुसेवी जगन्नाथपुरी जान चह्यो फेरि सुन्यो कैसे ह्वैहै संत सतकारु है ॥ विमुख गये जो संत तो मैं कहा कियो जाय शिष्य चलि एक कियो वचन उचारु है ॥ चलियो विशेषि तीनि दिन झांकी करि फेरि इत चलिऐहैं कियो यही निरधारु है ॥ १ ॥

दोहा-जब त्रय दिन जगन्नाथ दिय, झांकी घरही माहिं ॥
तब अस ग्राणि रहिगे महा, साधु प्यार हरि काहिं ॥ १ ॥

कवित्तघनाक्षरी-एक दिन स्वप्नहीमें कह्यो भगवान हम कूप परे हमको पधारिये निकासिके ॥ थानेश्वर जगन्नाथ तब उठि प्रात बोलि संतन निकासि तिन्हें थाप्यो मोद राशिके ॥ पुत्र एक अपढके शोकहीमें बैठरहे एक श्लोक हरि कृपाको प्रकाशिके ॥ दियो है सुनाइ सो पढाय दियो सुतकाहँ सुत भंठवाणी वर्णमूढता विनाशिके ॥ २ ॥

दोहा-विद्याशक्ति भई प्रबल, तिनके बहु इतिहास ॥
विस्तर भयते मैं कियो, वर्णन कथा समास ॥ २ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे विंशत्युत्तरशततमोऽध्यायः १२०

अथ लोकनाथजीकी कथा।

कवित्त घनाक्षरी–कृष्णचैतन्य शिष्य लोकनाथजीकी कथा कहैं राधा कृष्ण लीला रँगो जिनको है मन ॥ जलमें ज्यों मीन योंही लीन रहै भागवत प्राण तुलय मानै ताको जौन सुनै अनुछन ॥ एक समय रामतको गमने समाज संत साज युत ठाकुर चुराय लीन्हें चोरगन ॥ कछु दूरि जाय भये अंध चोर आय ढिग ठाकुर दै चरण पकरि अरप्यो है तन ॥ १ ॥

दोहा–लोकनाथ हरि रसिककी, रीति प्रतीति सिखाय ॥
चोरन उर करि शुद्ध अति, जाहु सु दियो रजाय ॥ १ ॥

सो०–तिन के अमित चरित्र, पुहुमीमें संतन विदित ॥
कर्णन करन पवित्र, वर्णन किय संक्षेपते ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकविंशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥१२१॥

अथ मधुगोसांईकी कथा।

छंद चौबोला–मधू गोसांई कथा कहों गृह तजि सुखछाये ॥
कबहिं लालको लखौं वेणु टेरत मन आये ॥
यही लालसा किये सपदि वृंदावन आये ॥
तजे भूख अरु प्यास कुंज कुंजनमें धाये ॥ १ ॥
भक्त लालसा जानि कालिंदीके तट माहीं ॥
लख्यो बजावत वेणु धेनु सो नँदसुत काहीं ॥
लियो धाय धरि तबहिं प्रीति भरि मधू गोसांई ॥
प्रतिमा ह्वै हरि गये लिहे मुरली तेहि ठांई ॥ २ ॥
मुरलि मनोहर मूर्ति अजहुँ वृंदावन सोहै ॥
क्षण क्षण सुछवि नवीन तकत बरबस मनमोहै ॥
ऐसे चरित अनेक दियो इत नेक सुनाई ॥
कृष्णदासकी कथा कहौं अब अति सुखदाई ॥ ३ ॥

जाहि सनातन रहे पूजते संत सनातन ॥
मदनमोहनै नाम मूर्ति सो पाय प्रेमघन ॥
पूजन कीन्ह्यो भट्ट नारायण शिष्य भये जिन ॥
को वरणै यश रह्यो कृष्ण अनुराग भूरि तिन ॥ ४ ॥
अबलों वाही रीति राग अरु भोग सदाहीं ॥
होत मदनमोहनै केर वृंदावन माहीं ॥
कृष्णदास पुनि तजि शरीर हरिधाम पधारे ॥
पंडित कृष्णहुदास काहँ वरणों सुखधारे ॥ ५ ॥
वृंदावन करि वास मूर्त्ति गोविंदचंद तहँ ॥
रहे रूप रस मग्न सदा तिनके प्रमोद महँ ॥
हरिदासनमें प्रीति करतभे तैसहि भारी ॥
छाय रह्यो यश गये अंत हरिधाम पधारी ॥ ६ ॥
श्रीभूगर्भ गोसांई कथा अब करों बखाना ॥
वृंदावन करि वास लियो कुंजन सुख नाना ॥
कृष्ण राधिका रूप माधुरीमें अति छाके ॥
संतनसेवा कियो सदा हरिसम हग ताके ॥ ७ ॥
मानस पूजन राग भोग हरिको नित ठानी ॥
पर विभूतिगे अंत समय तनु तजि सुखदानी ॥
परमरसिक जे संत दरशको तिनके आये ॥
परिचै अहैं अनंत कह्यो मैं कछु सुख छाये ॥ ८ ॥
काशीश्वर गोस्वामि कथा वरणों सुख माहीं ॥
रहे वेष अवधूत गये नीलाचल काहीं ॥
संत कृष्ण चैतन्य महा प्रभु आज्ञा पाई ॥
आये वृंदावनहिं देखि अनुराग महाई ॥ ९ ॥
जिनके सखे महानुभाव गोविंदचंदकी ॥
सेवा दीन्ह्यो सौंपि अहै जो अति अनंदकी ॥
भावसिंधुमें मग्न सदा दै दरश जनन कहँ ॥
भवसागर जो महाअगम सो सुगम कियो तहँ ॥ १० ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे द्वाविंशोत्तरशततमोऽध्यायः १२२

अथ रांकाबांकाकी कथा।

दोहा-रांका बांका विप्र भये, पंढरपुरके वासि॥
रांकाकी बांका तिया, कहौं कथा सुखराशि॥ १॥

नामदेव तेहि देशहि माहीं * होत भये प्रिय संतन काहीं॥
ते दोउ भक्त भये बडभागा * परधन किय न स्वप्नअनुरागा॥
लकरी बीनि जीविका करहीं * नाम निरंतर हरि ध्रुव धरहीं॥
सोइ जीविकाते नित अनुछन * करैं साधु सेवन प्रमुदित मन॥
यक दिन नामदेव हरिसों कह * ये दोऊ सहि सहि विपतीमह॥
संतन सेवन करत सदाहीं * इनको द्रव्य देहु कस नाहीं॥
तब स्वप्ने भगवान उचारा * ये न लेत नहिं करत पुकारा॥
कहा करौं स्वभाव अस देखी * दया होति मोहिंकाहँ विशेखी॥
चलहु परीक्षा तुमको देहीं * अस कहि श्रीपति दीन सनेहीं॥
नामदेवको संग लेवाई * जाय वनहि हरि रहे छिपाई॥
यक मोहरकी थैली भारी * देत भये तेहिं मगमें डारी॥
रांका बांका दोउ प्रभाता * लकरी लेन भये जब जाता॥

दोहा-आगे पति पाछे तिया, थैली रांका देखि॥
निहुरि तोपि दिय धूरिते, तियको पीछे लेखि॥२॥

लोभासक्ति नारि अति होई * लेय तो जाय धर्म मम खोई॥
पीछे तिय निहुरत पतिकाहीं * लखिके आई धाय तहांहीं॥
कछुक दूरि रांका तब जाई * खडे भये तिय निकट सिधाई॥
कही निहुरिके मगमें नाथा * कहिये कहा करत निज हाथा॥
सुनि रांका तब वचन बखाना * इत थैली धन बहुत लखाना॥
तुव भयते नहिं लेइ उठाई * तोपि दियो ले धूरि महाई॥
रांका तिय तब रही जो बांका * बोली विहँसि वदनसों बांका॥
अबे आपको धनको भाना * मेरे धनको भान नशाना॥
रांका तब निज नारि सराही * थैली त्यागि होतभे राही॥
नामदेवसों कह भगवाना * तुमको इन आचरण लखाना॥

नामदेव लखि तिन आचरना ❀ हारि गये हरि पुनि कह बचना ॥
औरहु इनको चरित विशेखी ❀ मेरे संग लेहु अब देखी ॥

दोहा—अस कहि हरि गवने वनहिं, नामदेव लै साथ ॥
धरिदीन्हे मग ठौर यक, बहु लकरी विनि हाथ३॥

घनाक्षरी—वासुदेव नामदेव दोऊ छिपिरहे फेरि कूहा देखि लक-रीको जानिकै बिरानीहै ॥ वह राह त्यागि रांका बांका और ठौर बीनि, लकरीको बोझ सांझ लैकै सुख मानी है ॥ जातभे बजार भगवान दै दरश तिन्हैं छातीमें लगा लियो तेऊ विनय ठानी है ॥ लाय निज धाम नामदेवसन कह्यो ऐसे प्रभुको क्यों कियो दिक्क मेरी कहि वानी है ॥ १ ॥

दोहा—नामदेव तब लै कछु, गर काटिबो देखाय ॥
मूड़ कूटि प्रगटाय हरि, लिय सो स्वहिं न सोहाय॥४॥
नामदेवकी जो कथा, वर्णित यह तेहिं ठाम ॥
कर पसारि रांका मुदित, लै सँग बांका वाम ॥ ५ ॥
धारे चिरकुट बसन पुनि, गिरो चरणमें आसु ॥
तकि हरि कहत नवसनतो, पहिरहु भल सहुलासु॥६॥
चीरमात्र करि धारणे, हरि आज्ञाते दोउ ॥
विचरि जगत दै दरश किय,शुचि जो अघिरह कोउ७
रांका बांकाकी कथा, यहि विधि कियों बखान ॥
जाहि सुनत उपजत अहै, हरिमें भक्ति महान ॥ ८ ॥

इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे त्रयोविंशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ १२३॥

अथ खोजाजीकी कथा ।

दोहा—खोजाजीकी यह कथा, कहौं सुनहु चितचाय ॥
खोजा गुरु हरिभावना, में पटु रहे बनाय ॥ १ ॥

तेहि तनु तजन समय जब आयो ❀ वचन शिष्यसों तबहिं सुनायो ॥
घंटा एक बांधि इत देहू ❀ ताको हेतु कहौं सुनिलेहू ॥
तनु तजि जब हम हरिके धामा ❀ जैहैं तब बजिहै अभिरामा ॥
छूटत भयो गुरू तनु जबहीं ❀ घंटा बजत भयो नहिं तबहीं ॥
तब खोजा चिंता कीन्ह्यो मन ❀ मम गुरु कहां रमे हैं यहि क्षण ॥
गुरु जस तनु त्यागनके काला ❀ पौढे रह तैसही उताला ॥
खोजा पौढि सामुहे माहीं ❀ निरखत भये आम तरु काहीं ॥
पकोसाहू यक रहै तहांई ❀ गुरुकी दृष्टि परी तेहि ठांई ॥
तहँ रहे राखि गुरु तनु त्यागी ❀ गुणि फल तोडि लियो सुखपागी ॥
ताको फारि जंतु तेहिं भीतर ❀ लघु लखि काढि दियो तेहिं बाहर
जब वह जंतु कियो तनु त्यागा ❀ तब गुरु हरिढिग गे बडभागा ॥
घंटा बाजत भयो दराजा ❀ तब खिगरे जुरि संत समाजा ॥

दोहा-शिष्य योग्यता प्रबल लखि, गुरुप्रभाव अन जानि॥
करि विचार मन ठीकदै, कहत भये मृदुबानि॥२॥

सवैया-सुंदर पक्क फले लखिके गुरु अर्पणके हरिकी परसादी ॥
लेन हिते लघु जंतु भये हरिदै परसाद तिन्हैं अहलादी॥
आपने धाम पठायो सदा परसाद हरिके रहते सवादी ॥
पूरणसो भगवंत कियो यह खोजा कथा करै संत अबादी ॥१॥

इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे चतुर्विंशत्युत्तरशततमोऽध्यायः॥१२४॥

अथ लड्डूभक्तकी कथा।

दोहा-लड्डू भक्त कथा कहौं, लीन्हें संत समाज ॥
चले तीर्थ मग मिलो यक, विमुखी देश दराज ॥ १ ॥

जहँ मनुष्य को देवी काहीं ❀ दै बलि करैं प्रसन्न सदाहीं ॥
पाप पगे तहँके जन भूरी ❀ लखि यक द्विजसुतको सुख पूरी॥
देवीको बलि देवे हेतू ❀ चले ताहि लै देवि निकेतू ॥
रोदन करत मातु तेहि धाई ❀ लड्डूस्वामि पास चलि आई ॥

सब हवाल सो गई सुनाई ❋ सुनत स्वामि सब अति दुखछाई॥
चले आपहीं उठि अतुराई ❋ दियो ब्राह्मणी तनय छोडाई॥
ताके ओजी आप सुखारी ❋ लड्डू भक्त गये पगु धारी॥
भक्त तेज तापित देवी तहँ ❋ धरिके महाकराल रूप कहँ॥
प्रतिमा फारि निकसिके आसू ❋ सब विप्रुसनको कियो विनासू॥
आगे लड्डू भक्तहि केरे ❋ करिके नृत्य मोद लहि टेरे॥
होत भई द्रुत अंतर्ध्याना ❋ लखि सुस्तुति किय संत अमाना॥
संत रहे जे तिन संगमाहीं ❋ लिखे देत तिन नामनकाहीं॥

दोहा–पारिख सीवाराम अरु, ऊदा वो हथराम॥
जगन्नाथ सीवा अउर, संत नरायण नाम॥ २॥

घनाक्षरी–गोपालकुंवर अरु गोविंद शांडिल्य छीत, हरिनाम दीना औ अनंतानंद जानिये॥ नारद औ श्यामदास उद्धव ध्रुव भगवान हरि नारायणहु त्यों श्यामदास मानिये॥ कृष्णजीवन विहारी गंगादास कृष्णदास कुंठा किंकरहु विश्रामदास गानिये॥ खेमसोटा गोपानंद जयदेव राघोदास, परमानंद उद्धवगोमा कालख बखानिये॥ १॥

दोहा–खेम पँडा भगवान अरु, चीधर और प्रयाग॥
पूर्णविनोदी भटल अरु, बनवारी युतराग॥ ३॥
संत नृसिंह दिवाकरहु, जगन्नाथ सुकिशोर॥
लघु उद्धव अंगज बहुरि, नाम सलधे और॥ ४॥
विट्ठल परमानंद अरु, केशव खेमहुदास॥
इते संत निवसत सदा, लड्डूभक्तहिं पास॥ ५॥
ते संतन युत शुचि कियो, लड्डू विप्रुस सो देश॥
ऐसे चरित अनेक हैं, मैं वरण्यों यह वेश॥ ६॥

इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे पंचविंशत्युत्तरशततमोऽध्यायः॥ १२५॥

अथ संतभक्तकी कथा।

दोहा-संतभक्त इतिहास यह, सुनौ सबै बडभाग ॥
संतन सेवामें रह्यो, जासु बडो अनुराग ॥ १ ॥

भिक्षा मांगि रोज लैआई ❋ करै साधुसेवा सुखदाई ॥
यक दिन साधु गेह बहु आये ❋ तिनसों पूंछत भये सुहाये ॥
संत कहां हैं देहु बताई ❋ सुनि सो कही कोप अति छाई ॥
चूल्हे संत लेहु चलि हेरी ❋ सुने संत अस गिरा करेरी ॥
ताहि तियको अभक्त मन जानी ❋ तबते लौटि चले सुखमानी ॥
तौलौं संत आयगे गेहू ❋ सुनि हवाल धाये युत नेहू ॥
संतनको करि विनय महाई ❋ लाये अपने अयन लेवाई ॥
संत कहे तेहि नारि हवाला ❋ बोले संत सत्य कहु वाला ॥
मैं चूल्हेहीके हित लागी ❋ गयो बरै जामें बड आगी ॥
होय पाक बहु संतन केरो ❋ सुनत लहे ते मोद घनेरो ॥
पुनि जेउनार संत बनवाई ❋ ते संतनको दियो जेवाई ॥
भोर माइकेते तिय भाई ❋ आये रचि जेउनार बनाई ॥

दोहा-आयपरे बहु साधु तहँ, सो तिय तिनके हेत ॥
मोटी रोटी बनैकै, बनयो साक निकेत ॥ २ ॥

फेरि लेनगे जल बहु दूरी ❋ बोलि संत संतनको भूरी ॥
भोजन हित दीन्ह्यो बैठाई ❋ बैठायो यक थल तिय भाई ॥
भाइन हित तिय पाक बनायो ❋ सो संतन परुस्यो सुख छायो ॥
रच्यो पाक जो संतन काहीं ❋ सो तिय भाइन दियो तहांहीं ॥
पानी लेकर सो तिय आई ❋ अँगुली रेति नाक तेहिं ठांई ॥
पतिसों कही वचन दुख पाई ❋ तुम मेरो लियो नाक कटाई ॥
रेतत घोच आपनी संता ❋ बोल्यो वचन तबै मतिवंता ॥
रे दुष्टिनि जब यमके दूता ❋ करिहैं मार घींच हतिजूता ॥
तब तू काहे कौन सहाई ❋ सो मोको अब देहि बताई ॥

पतिके वचन सुनत सो नारी ❀ संतनमें लखि पति रति भारी ॥
आनन सों बहु भांति सराही ❀ वही रीति गहिलियो उछाही ॥
ऐसो संतनमें अनुरागा ❀ जानिलेहु ताको अति लागा ॥

दोहा-संत भक्तकी है कथा, ऐसी विदित अनंत ॥
मैं वरण्यों संक्षेपते, लहि सुकृपा सियकंत ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे षड्विंशत्युत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १२६ ॥

अथ तिलोकसोनाकी कथा।

दोहा-भयो तिलोकसुनार यक, पूरव देशहि माहिं ॥
तासु कथा वर्णन करौं, सेवै साधुन काहिं ॥ १ ॥

कौनिहु यत्न जो धन कहुँ पावै ❀ तो संतनको बोलि खवावै ॥
ऐसेहि बहु दिन बिते उछाहा ❀ रहै नगरमें यक नरनाहा ॥
तासु सुताको रह्यो विवाहा ❀ कामदार ताको करि चाहा ॥
यक जोडी जेहर दनवायो ❀ बनवन हित निज घर लैआयो ॥
सो संतनको दियो खवाई ❀ मनमें शंका कछू न लाई ॥
पंद्रह रोज अवादा आयो ❀ जेहर लेन जनन पठवायो ॥
जाय तिलोक उभय दिन माहीं ❀ देने कहि आये तेहि काहीं ॥
आवत भो दूजो दिन जवहीं ❀ भागि तिलोक गयो डरि तवहीं ॥
राजा पुनि बोलत भयऊ ❀ तव हरिवपु तिलोकधरि लयऊ ॥
जेहर लै निज पाणि अनूपा ❀ करि सलाम चलिकै ढिगभूपा ॥
नजर कियो नृप सभा समेता ❀ देखतहीं ह्वैगयो अचेता ॥
दै तिलोकको बहुत इनामा ❀ बिदा कियो सो धन धरि धामा ॥

दोहा-हरि तिलोक वपु संत बहु, करि भंडारा फेर ॥
संत वेषको धारिकै, चलि तिलोकके नेर ॥ २ ॥

सोरठा-दै प्रसाद कह बैन, कालिह तिलोकसोनारने ॥
किय भंडारा ऐन, संतनको बहु बोलिकै ॥ १ ॥

सुनतहि कह्यो तिलोक, दूसर कौन तिलोक है ॥
करि शंका निज ओक, आय महीप इनाम को २
सुनि हवाललिय जान, कियो कृपा श्रीकृष्णयह ॥
संत सेव मुदमान, करत जो तापै हरि खुशी ॥३॥
वर्णन कियो समास, कथा तिलोक सोनारकी ॥
सुनैं संत सहुलास, अति आदर युत कान दै ॥४॥

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे सप्तविंशत्युत्तर-शततमोऽध्ययः ॥ १२७ ॥

अथ प्रतापरुद्रकी कथा।

घनाक्षरी—संत जो प्रताप रुद्र गजपति रह्यो यक, भक्ति अति ठानी जगन्नाथपुरी गयो है ॥ बहुत उपाय कियो दरश न पायो तब, करै संन्यास स्वप्न हरि कहि दयो है ॥ करिकै संन्यास तब प्रेम भरो कृष्ण आगे मत्तसो करन लाग्यो नृत्य मोद छयो है ॥ महाप्रभु कृष्णचैतन्य देखि भाव ताहि, मग्न ह्वै अपार छातीमें लगाय लयो है ॥१॥

दोहा—सुनि हवाल वर्णन परयो, नीलाचलको भूप ॥
संत सभामें ख्यातभो, ताको भाव अनूप ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे अष्टाविंशत्युत्तरशततमोऽध्यायः १२८

अथ गोविंदस्वामीकी कथा।

छंद—कथा गोविंद स्वामिकी कहौं सख्यत्व भावकै ॥
गोविंद संग बाल समय खेलते उरावकै ॥
दियो जनाय बात सो हरी स्वरूप बालकै ॥
गोविंद स्वामि संग आंटि दंड खेल हालकै ॥ १ ॥
जबै गोविंद दांव देनको परयो तबै भगे ॥
अबै न दांव देंहिगे पुकारने यही लगे ॥

गोविंद गारी देत गो गोविंद पीछुमें तबै ॥
अबैहि दांव लेउँगो कहां भगाइहौं जबै ॥ २ ॥
सवैया—भगि मंदिर भीतर कृष्ण गये तब गोविंद भीतर जान लगो ॥
जब पंडन मारी निकासि दियो तब बाहरही अति कोप जगो ॥
माहि ठोंकत डंड उचारत गारिदे तू कढिहै कबलौं न भगो ॥
इत बैठ रहौंगो मैं तेरे लिये नहिं दांव दियो अहै पूर ठगो ॥ १ ॥
चौबोला—कछुक बारमहँ गयो पुजारी भोग लगावन काहीं ॥
भोग लगै नहिं भयो पुजारी शंकित तब मन माहीं ॥
सोवत रह्यो महंत स्वप्नमें श्रीपति जाय उचारा ॥
गारी मोहिं गोविंद देतहै भूखो बैठ दुवारा ॥ २ ॥
तात प्रथम खवावहु वाको जाते तोहि रिस जाई ॥
मैं हूं तब पाउंगो भोजन अस दिय स्वप्न सुनाई ॥
गोविंदको लेवाय तब लाये पग गहि सबै पुजारी ॥
भोजन सुभग करायो सादर कोमल वचन उचारी ॥ ३ ॥
आवत थार एक दिन गोविंद रोकि कह्यो अस वानी ॥
मोहिं खवाय प्रथम लालाको फेरि देहु सुखखानि ॥
कह्यो पुजारी तब महंतसों छुयें लेत यह भोगू ॥
भोग लग्यो नहिं कह महंत तब अबै न तेरे योगू ॥ ४ ॥
गोविंद कह्यो प्रथम जो याको देते भोग लगाई ॥
तो यह चलोजात कुंजनमें दूरि देत भटकाई ॥
ताते देहु खवाय प्रथम मोहि है मैं रहौं तयारे ॥
जब लाला खेलन चलिहै तब चलौं मैंहूं विनवारे ॥ ५ ॥
हेरन परत नाहिंतौ मोको सुनि अस गोविंद बैना ॥
नयन सजल सबके ह्वैआये पूरित उर अति चैना ॥
यक दिन शौच क्रिया लालनको करत सो गोविंद धाई ॥
टोरि टोरि अकवनकी बौंडी मारन लग्यो सचाई ॥ ६ ॥
तब लालहु उठि गोविंदकाहीं मारि बैठि पुनि जाहीं ॥
ऐसा कियो सख्यत्व भावसो विदित रसिक जनकाहीं ॥

चरित विचित्र ऐसही तिनके लेहु सबै तुम जानी ॥
मैं कछु कियो बखान हेतु निज करन पुनीतहिं वानी ॥ ७ ॥
इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकोनत्रिंशोत्तरशततमोऽध्यायः १२९॥

अथ गंगामालीकी कथा।

दोहा-बसनहार लाहौरको, गंगामाली एक ॥
रह्यो तासु वर्णन करौं, कथा सुखद सविवेक ॥ १ ॥

विधवा रही पुत्रकी नारी * तासों कह्यो वचन सुखधारी ॥
लेहि मानि पति श्रीपति काहीं * लेहु गेह धन सब मम नाहीं ॥
कह्यो नारिहूं सो पुनि वानी * जन्म सफल करु हरि रति ठानी ॥
कही नारि मोहिं लालाकेरी * सेवा पूजा देहु घनेरी ॥
निरखि प्रेम अति निजतियकाहीं * हरिकी सेवा पूजा माहीं ॥
गुंजा माली दियो लगाई * फेरि सौंपि गृह धन समुदाई ॥
जाय आप व्रज कियो निवासा * तहँको चरित कहौं अब खासा ॥
देहि जहां ठाकुर पधराई * खेलैं तहँ बालक बहु आई ॥
खपरा माटी ईटहु केरे * खेलहिं खेल बनाय घनेरे ॥
इनके ठाकुर पर उडि धूरी * परै निरखि सो लडकन दूरी ॥
दियो भगाय मारि करि रोषा * रज भरि दिन्हे दे करि दोखा ॥
जाय पुजारि जब ढिगमाहीं * लग्यो लगावन भोगहिं काहीं ॥

दोहा-लगै भोग नहिं तब करी, विनती गुंजा नारि ॥
क्यों रूठे हौ नाथसो, मोसो कहो उचारि ॥ २ ॥

घनाक्षरी-मंदिरके भीतरते वाणी यों प्रकट भई बालकन खेल मोहिं लगै अति प्यारो है ॥ तिनको भगाय दियो भोजन न करों ताते, कह्यो गुंजा आजु भोग लगै धरो थारो है ॥ कालिह लडकन बोलि आपके उपर धूरि, माटी मैं डराय देहौं जाते मोद धारो है ॥ भोग तब लग्यो यदुराजे रघुराज कहै ऐसे बैन गुंजा जब मुखसों उचारो है ॥

दोहा-ऐसे भाव अनेक हैं, जानि लेहु सब संत ॥
मैं बरण्यो कछु लहि कृपा, नाथ रुक्मिणीकंत ॥ ६

इति श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे त्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः १३०

अथ गणेशदेईकी कथा।

घनाक्षरी-भूप ओडछेमें भयो मधुकरशाह ताकी, रानी भै गणेशदेई कथा कहौं तासु है ॥ संतसेवी रहै आवैं रोजहीं अनंत संत, एक संत रह्यो रामि पायके सुपासु है ॥ एक दिन देखिके अकेलि बैठि रानी काहँ, साधु यह जाय कह्यो बैन सहुलासु है ॥ देहु धन थैली भरि रानी कह्यो है न यहां,साधु तब छुरी मान्यो रानी जांघ आसु है ॥ १ ॥ रुधिर निहारि भय भूपतिकी धारि संत गयो भागि पट्टी बांधि लियो भूप नारि है ॥ कह्यो न उचारि मुख काहूसों सँभारि यह, कहे कछु वचन न कोऊ शोक कारि है ॥ नृपति पधारि जब गयो ढिगसों निवारि, दियो अबै आवै नाहिं निकट सिधारि है ॥ अहो नारि धर्म युत पुनि चारि रोज बीते, नृप जाय पूंछ्यो विथा नवल विचारि है ॥ २ ॥ खोलि कहो कारण विथाको कह्यो फेरि नाहिं, दुइ चार बार हाऱ्यो भूप बार बार है ॥ पूंछ्यो जब तब कह्यो भर्म नाहिं कीजे नाथ, दोष नाहिं धारो तामें करहु उचार है ॥ नृपति कबूल्यो तब कह्यो सो हवाल सब, जेहिं विधि मान्यो छुरी संत अविचार है ॥ क्षमा लखि रानीकी सराहि बहु धन्य करि, कियो है प्रदक्षिणा नरेश मोदवार है ॥ ३

दोहा-भूषण तू मम गेहकी, जेहि कुल कोउ हरिभक्त ॥
होवे सो कुल धनि विदित, यह प्रमाण बुध उक्त ॥ १

श्लोक-सत्पुत्रः कुलभूषणं कुलवधूर्गेहस्य संभूषणं
सद्बुद्धिर्धनभूषणं सुजनता विद्यावतां भूषणम् ॥
विद्युद्भूषणमंबुदस्य सरसः पंकेरुहं भूषणं
त्राणीनादविभूषणं भगवतो भक्तिः सतां भूषणम् ॥ १ ॥

दोहा-निज तियमें तियभाव तजि, नृप लीन्ह्यो गुरु मानि
अस गणेशदे रानिको, लेहु सबै जन जानि ॥२॥
तेहि समान तेहि संगमें, भक्त रहीं जे नारि ॥
तिनके नामनको कहूं, सुनहु सबै सुखधारि ॥३॥
सीता झाली सुमति अरु, शोभा बाई नाम ॥
प्रभुता भठियानी बहुरि, गंगा गोरी आम ॥४॥
जीवा गोपाली सुनौ, नाम उबीठा और ॥
अहै कोमला देवकी, हीरा त्यों शिरमौर ॥५॥
हरिचेरी बाई भई, परम भक्ति उर धारि ॥
संग गणेशदे रानिके, रहिं सो कियो उचारि ॥६॥

इति श्रीरामरसिकाव० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकत्रिंशोत्तरशततमोऽध्यायः १३१

अथ भक्तगोपालकी कथा।

दोहा-रह्यो भक्त गोपाल यक, तासु कहौं इतिहास ॥
मानि परम गुरु संतजन, सेवै सहित हुलास ॥१॥

तासु वंशमें यक जन कोई ❀ है विरक्त गो तीरथ गोई ॥
संतन सेवन सुयश विशाला ❀ सुन्यो जो करत रह्यो गोपाला ॥
भक्त आपने कुल तेहि जानी ❀ लेन परीक्षा हित सुख मानी ॥
आवत भे गोपाल गृह माहीं ❀ लखते उठि गोपाल तहांहीं ॥
पूजन करि षोडशहि प्रकारा ❀ सादर मुखसों कियो उचारा ॥
गृह भीतर चलि भोजन करहू ❀ कह्यो सो मोर वचन चित धरहू ॥
नारि बदन मैं देखत नाहीं ❀ सुनि गोपाल कह मैं तिय काहीं ॥
देहौं करि किनार प्रभु चलिये ❀ सुनिजे गृह भीतर कहि भलिये ॥
तहंको इक निहारि दिय नारि ❀ तब सो संत कोप उरधारी ॥
मुख गोपालके थापर मार्‍यो ❀ तब गोपाल कर भींजि उचार्‍यो ॥
मेरो मुख अति अहै कठोरा ❀ हाथ पिरात होयगो तोरा ॥

तब सो संत गहि चरण गोपाला ❀ अपनो यह कहि गयो हवाला ॥
दोहा—कैसी सेवा संतकी, करत परीक्षा लेन ॥
आयों तेरे निकट मैं, तेरे सम कोउ है न ॥ २ ॥
सो०—ऐसे भाव अनेक, संतनके जानहु सबै ॥
मैं वर्णन किय नेक, विस्तर भय यहि ग्रंथकै ॥ १ ॥
इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे द्वात्रिंशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३२ ॥

अथ लाखानामकी कथा।

सो०—मारवाड जो देश, तहँको वासी भक्त यक ॥
लाखा नाम हमेश, करै संतसेवा सतत ॥ १ ॥
भोजन संतन जबहिं करावै ❀ मोद अनंत उरहिं तब पावै ॥
परयो अकाल बडो यक काला ❀ आवन लगे संत बहु हाला ॥
तब संकेत अन्नको जानी ❀ तजन चह्यो सो थल विज्ञानी ॥
स्वप्न दियो तब हरि निशि आई ❀ तुव हित किय यक यत्न सुहाई ॥
गोहूं कालिह एक गाडी भर ❀ लगता भैंसी यक तुव घरपर ॥
ऐहै सो गोहूं कुठली भरि ❀ औनातरी तासु लीजो करि ॥
लेतजाहु गोहूं तहँ तेरे ❀ कुठला भरो रहैगो डेरे ॥
दूध भैंसिको दियो जमाई ❀ ताहि मांइ बहु मठा बनाई ॥
रोटी छांछ तो संतन कहँ ❀ रोज खवाय रहो निज घरमहँ ॥
ऐसो स्वप्न देखि निशि जागी ❀ तियसों कह हवाल सुखपागी ॥
नारि कह्यो यह सत्यहिं होई ❀ कहैं सो जेहिं विधि आयो सोई ॥
दोहा—रहैं गावँ यक निकट तहँ, जमींदार बहु भाय ॥
रहे भयो धनहीन यक, तब सिगरे जुरि आय ॥ १ ॥
पत्ती दियो लगाय सुजाना ❀ जामें वोहू होय समाना ॥
तहँ कोउ सज्जन बैठ तहांहीं ❀ बोलत भयो वचन सुखमाहीं ॥
यह व्यवहार भयो अति नीको ❀ कछु परमारथ करिबो ठीको ॥
लाखा भगत संत अनुरागी ❀ चलो जात सो निज घर त्यागी ॥

तातें यहि पत्तीमें थोरा ❋ देहु वाहुको यह मत मोरा ॥
जामें सेवा साधुन केरी ❋ चली जाय वाकी बिन देरी ॥
अस बिचारि भैंसी दुधारिवर ❋ गोहूं मन पचास गाडी भर ॥
पठैं दियो लाखा घरमाहीं ❋ लाखा बोलि संतजन काहीं ॥
जैसो कह्यो स्वप्न भगवाना ❋ तेहि बिधि भोजनदिय सविधाना ॥
तामें यक सुश्लोक प्रमाणा ❋ लिखेदेत जो बिदित पुराणा ॥

श्लोक—अष्टादशपुराणानां व्यासस्य वचनद्वयम् ॥
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

एक समय दंडवत प्रणामा ❋ करत दरशहित पुरी ललामा ॥
मारवाडते लाखा आये ❋ जब जगदीश पुरी नियराये ॥

दोहा—जगन्नाथ तब स्वप्न दिय, पंडनको निशि माहिं ॥
लावहु म्यानामें इतै, लाखाभक्तहि काहिं ॥ २ ॥

पंडा तबहि पालकी लाये ❋ लाखा लखि अस वचन सुनाये ॥
मम प्रण भंग करहु तुम नाहीं ❋ जानदेहु योंहीं मोहिं काहीं ॥
पंडन कह्यो पूर प्रण भयऊ ❋ करहु निदेश नाथ जो दयऊ ॥
यहू हुकुम जगदीश सुनायो ❋ सुयश सुमिरनी मोर बनायो ॥
लाखा मोहिं देहि पहिराई ❋ अति प्रसन्न मैं मम ढिग आई ॥
तब लाखा चढि शिबिका माहीं ❋ जाय दरशि सुख लह हरिकाहीं ॥
रहे सुता यक तेहि हित व्याहा ❋ जुरै जो धन सो सहित उछाहा ॥
सब संतनको देय खवाई ❋ कहि मम धन संतनको आई ॥
योंहीं बहु धन सेवक लाई ❋ जोरैं संतत देय बोलाई ॥
जगन्नाथ तब स्वप्नसुनायो ❋ व्याह करौ लै द्रव्य सुहायो ॥
तबहुँ परयो लाखा मन नाहीं ❋ बिदा न भये चले घरकाहीं ॥
जगन्नाथ तब कियो उपाई ❋ ताके सुता व्याह हित भाई ॥

दोहा—मारग महँ यक भूप रह, स्वप्न दियो तेहिकाहँ ॥
आवत लाखा भक्ततेहि, जाय न निजघर माहँ ३ ॥
हुंडी मुद्रा सहसकी, आवति सो तेहिं देहु ॥

राजा सुनि सोइ करतभो, लाखासों कह लेहु ॥ ४ ॥
लाखा मुद्रा पायसो, सोमें करि सो व्याह ॥
नौशत संतनको दियो, अशन कराय उछाह ॥ ५ ॥
जानि लेहु सब संत तिन, ऐसे चरित अपार ॥
मैं वर्ण्यौ संक्षेपते, करिकै विमल विचार ॥ ६ ॥

इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे त्रयस्त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १३३ ॥

अथ सूरमदनमोहनकी कथा ।

दोहा—सूर मदनमोहन कथा, कहौं परमपटु गान ॥
राधाकृष्ण उपासना, कीन्ही सहित विधान ॥ १ ॥
नाममात्र तिनको रह्यो, सूरदास विख्यात ॥
सब लोगनके नयनमें, सूर सरिस दरशात ॥ २ ॥

कृष्ण चरित देखिबे काहीं ❀ अम्बुजसे युग नयन सुहाहीं ॥
रहे पूर्वही साहु देवाना ❀ ले मुद्रा त्रैलाख सुजाना ॥
सौदा चले खरीदन काहीं ❀ सो तो लेत भयेहैं नाहीं ॥
साधुन सब धन दियो खवाई ❀ शाह जबै दिय हुकुम पठाई ॥
तब छकरामें उपल भराई ❀ दिय पठाय चिट्ठी लिखवाई ॥
आधीरात आपगे भागी ❀ ऐसो लिख्यो भीतिमें पागी ॥
तीनि लाख तेरह हजार सब साधुन मिलि गटका ॥
सूरदास मदनमोहन आधी रातिमें सटका ॥ इति ॥
अकबर शाह बांचि सो पाति ❀ है प्रसन्न मन अति मुदमाती ॥
बोलि तुरंत मदन मोहन कहँ ❀ खातिर करि पठवायो ब्रजमहँ ॥
आय मदन मोहन ब्रज काहीं ❀ मदन गोपाल मंदिरे माहीं ॥
बसे महंत कियो सत्कारा ❀ यक दिन आधीरात मँझारा ॥
लेन परीक्षाहेतु महंता ❀ कह्यो पुजारीसों मतिवंता ॥
होते पूजा समय यहि माहिं ❀ भोग लागतो तो हरिकाहीं ॥

दोहा-सुनत मदनमोहन तहां, किय मुहूर्त्त लौं ध्यान ॥
प्रेम देखितेहि कृष्ण तब, पुवा लादि छकरना ॥३॥
पठे दियो काहूके हाथा * मंदिर द्वार आय सो साथा ॥
छकरनको ठराय कह वानी * पुवा हरिहि अरपौ सुखमानी ॥
सुनि महंत तब मदन गोपाले * भोग लगाय प्रीति युत हाले ॥
दियो खवाय सैकरों संतन * लेहु प्रभाव जानि असनिजमन ॥
फेरि मदनमोहन सुख छायो * यक पद ऐसो तुरत बनायो ॥
तामें लिख्यो संत पनही को * रक्षक मैं कहवाऊं नीको ॥
सो पद सुनि कोउ संत उदारा * लेन परीक्षा हेतु विचारा ॥
पहिरि उपानह मंदिर आई * दरशन लेन चल्यो अतुराई ॥
लखि कह सूर धारि इत जूता * दरशनकरि आवौ मजबूता ॥
संत कह्यो लै जैहै कोई * सूर कह्यो मैं ताकत सोई ॥
तब जूता उतारि सो गयऊ * सूर तासु जूता कर लयऊ ॥
खडे रहे जब साधु सो आयो * तब ताके पगमें पहिरायो ॥
दोहा-तब वह साधु प्रसन्न अति, करि प्रदक्षिणा चारि ॥
करि दंडवतप्रणामको, बोल्यो वचन सँभारि ॥४॥
संत उपानहके अहै, सांचे रक्षक आप ॥
फेरि एक पद रचिय दिन, गायो मुखनिहपाप॥५॥
शत योजनलों ताहि दिन, रहजे संत महान ॥
तेउ गान किय वर भये, योगाभ्यास सुजान ॥६॥
भक्तराजमें ख्यात व्रज, प्रगट लखे नँदलाल ॥
चरित अमित यह सूरके, मैं कछु कह्यों विशाल७॥
इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे चतुस्त्रिंशोत्तरशततमोऽध्यायः॥ १३४॥

अथ मुरारिदासकी कथा।

कवित्त-मुरधर देशमें विलौंदा नाम ग्राम यक तहांके निवासी

संत दूसरे मुरारिदास ॥ गानविद्यामें प्रवीन प्रेमाभक्ति सदा छके बाँधि पग नूपुरको नृत्य करैं हरि पास ॥ जातिको न मानै भेद चरणामृत देय जोई शीश धरि पान करै नेम करि सहुलास ॥ राजगुरु परम प्रतिष्ठित ते यक दिन मज्जनकै आवत रहे ते रह्यो जो अवास ॥ १ ॥

सो०—मगमें एक चमार, बैठो चरणामृत लिये ॥
सो किय ऊंचै उच्चार, पात्र होय सो लेय चलि ॥ १ ॥

सो ध्वनि सुनिमुरारिनिज काना ❀ दौरि तुरित अस वचन बखाना ॥
देहु हमैं चरणामृत काहीं ❀ सो मुरारिको चीन्हि तहांहीं ॥
कह्यो तुच्छन मैं जातिहि केरो ❀ सो सुनि कह मुरारि बिन देरो ॥
तुच्छन ते हमहूं ते स्वच्छा ❀ नमे किये चरणामृत दक्षा ॥
अस कहि लै चरणामृत आसू ❀ पाणि लियो करिसहित हुलासू ॥
फैली बात सकल यह गाऊं ❀ त्योंहीं भूप सभाके ठाऊं ॥
निज पर जानि भूप कम प्रीती ❀ तब मुरारि नृपसों तजि भीती ॥
एक सूरको भजन सुनाई ❀ नगर त्यागि निवस्यो ब्रज जाई ॥
लिखे देतहौं सो पद काहीं ❀ सुनैं संत बांचैं मुदमाहीं ॥

भजन—जातिभेद जो करै भक्त सो सोईहै अति पापी ॥
तातै भलो वधिक परनिंदक गुरुहिंसक मदिरापी ॥
वायसके विष्ठाते उपजै पीपर नाम कहावै ॥
ताहि परिक्रम करै दंडवत सब द्विज पूजन आवैं ॥
तुलसी जो घूरे महँ उपजै दोष न कोऊ जोई ॥
ते तुलसीके फूल पत्र सब हरिपूजनको होई ॥
योग जाप तीरथ व्रत संयम इनमें तो हरि नाहीं ॥
सूर स्वामि जहँ नित्य विराजैं सदाभक्त उरमाहीं ॥ १ ॥

नगर मुरारिदास जब त्यागा ❀ संत रहित पुर लखि दुख पागा ॥
नृपति भयो संतापित भारी ❀ वर्ष रोजमें नृप सुखधारी ॥
उत्सव संत समाजहिं केरो ❀ करत रह्यो सर्वदा घनेरो ॥

दोहा—तेहि हित भूपति गुरुको, गयो लेवावन काहँ ॥
साष्टांग दंडवत किय, दूरहिं ते मुदमाहँ ॥ १ ॥

ताहि संत अपराधी हेरी ❋ गुरु आनन लीन्ह्यो निज फेरी ॥
बैठ पीठिदै लिखों सुहाई ❋ तेहि प्रमाण तुलसी चौपाई ॥
जो अपराध भक्त कर करई ❋ राम रोष पावकसो जरई ॥
भूपति हाथ जोरि गुरु आगे ❋ रहिगो खडो कह्यो अनुरागे ॥
अब महराज कृपा तुव बाकी ❋ सो पूरण करिये सुख छाकी ॥
शरणागतको तजिबो जोई ❋ अहै अयोग्य कहत बुध लोई ॥
सुनि प्रसन्न गुरु भये कृपाला ❋ लै आयो नृप पुरी निहाला ॥
सो सुनि आये संत दराजा ❋ भई नृपतिके बडी समाजा ॥
तेहिं उत्सव बहु गुणी लिघाये ❋ नृत्य गान कीन्हें सुख छाये ॥
संत मुरारि तहां सुख कांधी ❋ उभय पांयमें नूपुर बांधी ॥
तीनि ग्राम सातों सुर कांहीं ❋ धरि छप्पन मूर्च्छना तहांहीं ॥
पूरण प्रेम भक्ति उरधारी ❋ समय राम वन गवन विचारी ॥

दोहा—दशरथको सुरलोकको, जैसो करि पद गान ॥
राम विरह हरिलोकको, कीन्हो तुरत पयान ॥ २ ॥
राजा सहित समाज तहँ, ऐसी दशा निहारि ॥
अचरज गुणि सोचत भये, अस भे दास मुरारि ३ ॥

इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे पञ्चत्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३५ ॥

अथ तुंबुरुद्विजकी कथा।

दोहा—तुंबुरु द्विज इक भो बढचो, चीर द्रौपदी ज्योंहिं ॥
संत सेव हित साजु तेहिं, बढचो जानियो त्योंहिं १ ॥

वर्ष रोजमें तासु सप्रेमा ❋ मथुरा रह्यो जानको नेमा ॥
तहां प्रथम सब संत जेवाई ❋ दिवा करै पटको पहिराई ॥
पीछे द्विजन अशन करवावै ❋ ताते द्विजमन कछु दुख पावै ॥
करै संतको विविध प्रकारा ❋ तुंबुरु करत प्रथम सत्कारा ॥
पीछे हमको भोजन देई ❋ तिनते हमैं छोट गुणि लेई ॥

बहुत वर्ष बीते यहि भांती ❀ कछु दिनमें घटिगे धन पांती ॥
तब मथुरा आवत भो सोई ❀ जामें नेम पूर मम होई ॥
तहँ बहु विप्रन काहँ बोलाई ❀ विनय कियो सबसों हरषाई ॥
अब मेरे धन अलप रह्यो घर ❀ निज प्रण पूर कियो चाहों वर ॥
लघु धन मोसों बनि है नाहीं ❀ ताते तुम्हें देहुँ धन काहीं ॥
जामें मोर पूर प्रण होई ❀ सो कीजै सब मिलि मुदमोई ॥
सुनि ब्राह्मण धन लै कह बानी ❀ करब पूर प्रण सोच न ठानी ॥

दोहा—अस कहि द्विज निज मन गुण्यो, याको करैं खुवार ॥
भंग होय यहि कीर्ति जो, छाय रही संसार ॥ २ ॥

ऐसो ठीक निजहि मन दीन्हो ❀ ये सब साज इकट्ठा कीन्ह्यो ॥
सीधा घृत अरु चिनी मिठाई ❀ बर्त्तन बसन धर्‌यो घर लाई ॥
कमरा लोई और बनाता ❀ रोक बिदाई हित सुखदाता ॥
ये सब जुदे जुदे घरमाहीं ❀ धरिकै पृथक सौंपि जनकाहीं ॥
यक यकको जन बीस बीसको ❀ साज देन कहि दियो मोद को ॥
काहूकहँ पचास जनकेरी ❀ साज दिवायो कियो न देरी ॥
जामें शीघ्र वस्तु चुकिजाई ❀ याको प्रण देवो मिटिजाई ॥
देन अरम्भ कियो अस चाही ❀ तब हरि दया दीठिसों चाही ॥
जितनी वस्तु जौन घर धारी ❀ सौगुण हो सो परी निहारी ॥
बीस पचास जनेको एका ❀ पाये तबहुँ घटै नाहिं नेका ॥
ब्रजमंडल चौरासी कोसा ❀ भो प्रसिद्ध जोहिं कृष्णभरोसा ॥
तामें तुलसिदास चौपाई ❀ लिखहुँ प्रमाण सुनहु सब भाई ॥
रामदास सेवक रुचि राखी ❀ वेद पुराण सन्त सब साखी ॥

दोहा—यह बरण्यो तुंबुरु कथा, सादर सुनि सब संत ॥
दृढ विश्वास करि ताहि सम, सेवै संत अनंत ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे षट्त्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३६ ॥

अथ जसवंतकी कथा।

दोहा–भयो भक्त जसवंत यक, भगवत भक्तन काहिं ॥
सेवै नित अति भावसों, अंतर राखै नाहिं ॥ १ ॥
वृंदावनमें वास करि, नवधाभक्ति विधान ॥
राधावल्लभकी सदा, सेवा करै सुजान ॥ २ ॥
प्रेम मगन जडवत रहै, अंत समय तनु त्यागि ॥
गमन कियो गोलोकको, कह्यो कथा अनुरागि ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे सप्तत्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः॥ १ ३ ७ ॥

अथ वणिक हरिदासकी कथा।

छंद–शिष्य हित हरिवंशजूको वणिक यह हरिदास ॥
साधु सेवन करै नितहीं सहित परम हुलास ॥
वृद्ध रह यक दिवस कानन गयो तहँ यक शेर ॥
धरे सुरभीको रह्यो लखि दयाभरि विन देर ॥ १ ॥
धाइ भाव नृसिंह करि परि धाय भाष्यो वैन ॥
माइ यह जग जाइया को छांडि मोहिं युत चैन ॥
करिय भक्षण अब जियहि सो कह्यो वृद्धहि मास ॥
खायहों नहिं कह्यो तब ये कालिह मैं तुव पास ॥ २ ॥
लाय अपनो तनय देहौं मानि वचन विश्वास ॥
लेहु निशिभर राखि तब किय व्याघ्र वैन प्रकास ॥
भलो प्राण बचाय ताको लाय निज घर संत ॥
कह्यो सकल हवाल सो तिय पुत्रसों मुदवंत ॥ ३ ॥
सुणिके अहिंसा परमधर्महि कहे ते हरषाय ॥
कियो भल यह कार्य्य पितु तेहिं देहु मोहिं लेजाय ॥
कही नारी मोहिं दीजै नाथ विलम विहाय ॥
देत तासु प्रमाण दोहा एक सबहिं सुनाय ॥ ४ ॥

दोहा–गाइ विप्र हित तनु तजत, धनि रहीम वे लोग ॥
चारि लक्ष जग योनि जे, तहां न तिनको भोग ॥ १ ॥

कवित्त–नारि सुत सहित सबेरे जाय हरिदास, व्याघ्र चुरपर खडे भये सुख पायकै ॥ सोवत रह्यो सो जागि देखिकै गराज कियो फेरि चुप ह्वैकै चतुर्भुज धारि धायकै ॥ कंठमें लगाय कह्यो प्यारे तुम मेरे भक्त, भजन करहु मेरो नीके घर जायकै ॥ अंतसमय तीनों तुम वसोगे विकुंठधाम कथा हरिदासकी यों कही चितचायकै ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसि० कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे अष्टात्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३८ ॥

अथ कई एक भक्तनकी कथा ।

दोहा–कथा भक्त समुदायकी, अब बरणों सुखदानि ॥
मानदास सब साधुको, सेयो हरिसम मानि ॥ १ ॥
लिये निरंतर रामको, नाम सत्यव्रत धारि ॥
अंत समय हरिपुर गये, परचो प्रकाश निहारि ॥ २ ॥

सीवा नाम भयो यक संता ❀ कथा कहों सुखदानि अनंता ॥
म्लेच्छ अजीज नामको कोई ❀ सैन्य सहित द्वारावति सोई ॥
आगि लगाय देतभो आई ❀ कह्यो स्वप्नमें तब यदुराई ॥
करों भक्तजन मैं प्रतिपाला ❀ करो मोरि रक्षा कोउ झाला ॥
म्लेच्छ दियो यह आगि लगाई ❀ रक्षा करत न कस मम आई ॥
सुनि सीवा सो भक्त उदारा ❀ लिये संग निज चमू अपारा ॥
आय द्वारका दुष्टन मारी ❀ लियो कष्टते जनन उबारी ॥
है परसन्न द्वारकाधीसा ❀ भे तनु प्रगट नयनसों दीसा ॥
बढई गढादेशमें एकू ❀ माधव नाम रह्यो सविवेकू ॥
भक्ति प्रेम लक्षणा प्रधाना ❀ होत भयो सो भक्त महाना ॥
नूपुर उभय पांयमें बांधी ❀ नाचै हरि आगे सुख कांधी ॥
प्रेमविवश विह्वल जब होई ❀ गिरन लगै धारै जन कोई ॥

दोहा-लेन परीक्षा हेतु नृप, बैठि उपरत्रय छात ॥
नृत्य करायो नृत्यमें, प्रेम भयो सरसात ॥ ३ ॥

गिरन लग्यो माधव तेहिं काला ❀ थांभ्यो कोउ न रहे जन जाला ॥
नीचे गिरत उपरते भयऊ ❀ पै हरि कृपा बाचि सो गयऊ ॥
जैसे बचत भये प्रह्लादा ❀ लह्यो न कछु हरि कृपा विषादा ॥
भूपति लखि गलानि मनमानी ❀ गहि सोइ रीति भक्ति अति ठानी ॥
बड़े महान भाव सरनामा ❀ भये गदाधर भट्ट ललामा ॥
रहे भागवतके ते रूपा ❀ बांचत श्रीभागवत अनूपा ॥
सब श्रोतनके नयनन तेरे ❀ चलैं प्रेमते आंसु घनेरे ॥
कूप रहै यक घरके पासा ❀ बैठि रहे तहँ भट्ट हुलासा ॥
जीव गोसांईकेर पठाये ❀ तहँ ब्रजते युग वैष्णव आये ॥
पूंछे ते भट्टहिंसों तहँवां ❀ भट्ट गदाधरजी हैं कहवां ॥
भट्ट गदाधर सुनि कह बानी ❀ आप कहांते आवन ठानी ॥
साधु कह वृंदावन तेरे ❀ आये अहैं आपके नेरे ॥
सुनत गदाधर भट्ट तहांहीं ❀ मूर्च्छित गिरत भये महि माहीं ॥
तनक रह्यो नहिं तनुको भाना ❀ सब कोउ ऐसो वचन बखाना ॥
भट्ट गदाधरजी हैं एई ❀ बोलत भये साधु सुनि तेई ॥
पाती जीव गोसांईजी की ❀ लाये अहैं आप ढिग नीकी ॥

दोहा-सुनि झट लै चैतन्य है, शिरधरि बांचि तुरंत ॥
ब्रज चलि जीवगोसांइसों, मिलत भये हदवंत ॥ ४ ॥

यक दिन श्रीभागवत पुराना ❀ बांचत रहे भट्ट मतिवाना ॥
तहँ कल्याणसिंह रजपूता ❀ आवै कथा सुनत मजबूता ॥
कथा श्रवण हरिकी उपासना ❀ छूटि गई तेहिं कामवासना ॥
विकल होति भै ताकी नारी ❀ यह निज मनमें लियो विचारी ॥
मम पति भट्टगदाधर केरो ❀ करिके संग दियो तजि मेरो ॥
गर्भवती चेरी यक रहही ❀ तासों वचन मुदित अस कहहीं ॥
आजु जाइ तुम भट्ट कथा महँ ❀ कहै विशेषि वचन श्रोतन पहँ ॥

मेरे पूर्ण गर्भ अब भयऊ ❀ सो आजुलों कोहु श्रुति दयऊ ॥
गर्भ गदाधरभट्टहि केरो ❀ जानि लेहु सब जन यह मेरो ॥
कहां रहों करि देहिं उपाई ❀ ऐसो चेरी काहँ सिखाई ॥
पठयो भट्ट गदाधर पाहीं ❀ कथा समापत भये तहांहीं ॥
चेरीसों सब कह्यो हवाला ❀ सुनि सब दुखी भये तेहिं काला ॥
दोहा–सुनि हवाल सो भट्टजी, चेरिहि तुरत बोलाय ॥
भोजनको तदबीर करि, यक थल दियो टिकाय ॥५॥
श्रोतन भई गलानि महाई ❀ होहिं विवर महि जायँ समाई ॥
जानि शिष्य गण सहित विषादा ❀ अधिकारी राधिका प्रसादा ॥
ते तेहिं नारी काहँ बोलाई ❀ कह्यो सत्य तू देय सुनाई ॥
सत्य वचन कहिहै जो नाहीं ❀ छीनिलेयँगे तो शिरकाहीं ॥
सत्य बताय दियो तब सोई ❀ तिय कल्याणसिंहकी जोई ॥
सो मोको जस दियो सिखाई ❀ तैसे कहत भई इत आई ॥
सुनि कल्याणसिंह तरवारी ❀ ले काटन गमन्यो शिर नारी ॥
तब श्रीभट्टगदाधर स्वामी ❀ कह न करो अस है बदनामी ॥
जाते अपनो निंद न होई ❀ मानत नीक संतजन सोई ॥
है महत्वमें परम विकारा ❀ क्षमा करब संतनको सारा ॥
एक समय गे कौनेहु देशा ❀ होती रहै कथा तहँ वेसा ॥
सब हग बहै आंसुकी धारा ❀ एक महंत तहँ रहै उदारा ॥
दोहा–आंसु बहैं नहिं तासु हग, सो अस कियो उपाय ॥
मिरिच नैन दोउ घसिलियो, निकस्यो आंसु निकाय॥६॥
पद गहि तासु भट्टसो जानी ❀ कह असि रति मम होय महानी ॥
जैसी प्रीति आप उरधारी ❀ निकसायो नैननसों वारी ॥
अस कहि कीन्हें रुदन अपारा ❀ नैनन बही आंसुकी धारा ॥
ऐसो प्रेम भट्टको भारी ❀ लेहु संत सब मनहिं विचारी ॥
इक दिन चोर पैठ घरमाहीं ❀ रहैं जागते आप तहांहीं ॥
साज समेत मोटरी बांधी ❀ उठै न लग्यो उठावन साधी ॥

छोंडि न सके होत भिनसारा ❀ देखि भट्ट अस वचन उचारा ॥
तुम श्रम करहु न हम ढिग आई ❀ देत अहैं मोटरी उठाई ॥
याते दश गुण वस्तु हमारे ❀ धरी लेहु सो मेटि खभारे ॥
लगे उठावन संत भट्ट जब ❀ चोर ठोर तेहिं पांय पऱ्यो तब ॥
शिष्य भयो पुनि तजिके चोरी ❀ कीन्ही हरिमें प्रीति अथोरी ॥
ऐसी तिनकी कथा अनेका ❀ वर्णन कीन्ह्यों मैं इत नेका ॥

दोहा–परमभागवत होत भे, संत किशोरहु दास ॥
प्रेम लक्षणा भक्ति करि, हरिपुर कियो निवास ॥ ७ ॥

कवित्त–कोल्हदास अल्हदास दोनों भाई राजकुल भये उत्पन्न संत प्रथित उदार अति ॥ कोल्ह जेठ भाइ रह्यो परम विरक्त जग अल्ह तासु सेवा करै कपट विहीन सति ॥ कोल्ह अल्ह दोऊ गये द्वारावति नाथ आगे कोल्हदास भजन बनाय गायो सानि रति ॥ पीछे अल्ह गान कीन्ह्यो प्रेम सरसाय हरिहूंकी दीन्ह्यो मोल देहु अल्ह काहिं मोदमति ॥ १ ॥

दोहा–दै पंडा डारन लग्यो, अल्ह गलेमें धाय ॥
कह्यो अल्ह पहिरावहू, मम जेठो जो भाय ॥ ८ ॥
पंडा कह हरि तुमहिं दिय, दीन्ह्यो तिनको नाहिं॥
अस कहि माला अल्ह गल, दीन्ह्यो डारि तहांहि९

कोल्ह मानि तब अति अपमाना ❀ कूदि पऱ्यो जलसिंधु महाना ॥
डूबि जाय भीतर जल माहीं ❀ पायगयो सो मारग काहीं ॥
चलत चलत द्वारका दिव्य कहँ ❀ पहुँचि गयो सो परम मोदमहँ ॥
हरि आगू जे गये लेवाई ❀ भोजन हित दीन्ह्यो बैठाई ॥
परस्यो दुइ पतरी युत प्रीती ❀ तब किय विनय कोल्ह यहि रीती
दूसरि पतरी दिय यह धारी ❀ ताको कहिये हेतु मुरारी ॥
प्रभु कह अहै जो लघु तुव भाई ❀ तेहि हित यह पातरी धराई ॥
सुनत कोल्ह अतिशय दुखमान्यो ❀ पुनि निजमनमें यह अनुमान्यो ॥
यक तो देके नाथ हुँकारी ❀ माळदिवायो अल्ह सुखारी ॥

जन्महि ते हम सबको त्यागी ❀ भजन कियो इनको अनुरागी ॥
भक्तन सेवी संतन केरो ❀ अल्ह भ्रात लघु है जो मेरो ॥
सो अजहूं प्रभु विसरत नाहीं ❀ भाव करत आधिके तेहिंमाहीं ॥
दोहा-इनके साधु असाधु सब, जानो परत समान ॥
दुख मति मानहु जानि यह,किय बखान भगवान १०
घनाक्षरी-तेरो जो कनिष्ठ भाई राजपुत्र रह्यो पूर्व मेरो बडे भक्त भयो राजको विहायके ॥ साहिबी विलोकि एक भूपकेरी कीन्ह्यो मन ऐसे होय मेरिहू विभूति सरसायके ॥ ताते भये राजकुल आयो जबते तू इहां तबते सो अन्न जल छोंड्यो दुख छायके ॥ वेगि जाय वाको सुख देहु कोल्हदास तुम शंख चक्र भुजनपे दीन्ह्यो ऐसो गायके ॥ १ ॥
सो०-दै प्रसाद तेहिं हाथ, विदा कियो यदुनाथ पुनि ॥
बाहिर कढि सुख गाथ, दियोकोल्ह तजिअनु जको १
करि मन परम उराउ, निज घरमें आये दोऊ ॥
ऐसे अमित प्रभाव, कोल्हअल्हके जानिये ॥ २ ॥
कोल्ह वंश नारायणदासा ❀ भये करहु तिन चरित प्रकाशा ॥
रहैं और भाई तिन केरे ❀ ते कमाय लाये धन ढेरे ॥
ये लहुरे अति रहैं उदारा ❀ वितरहि सबकी द्रव्य अपारा ॥
यक दिन भौजाई तेहिं केरी ❀ रूख अन्न भोजन दिय हेरी ॥
दुख करि कह्यो हालको जोई ❀ बनो होय दीजै मोहिं सोई ॥
सुनि भाभी अस वचन बखाना ❀ कहां तुमहुँको श्री भगवाना ॥
दियो हुँकारी किय अपहासा ❀ बोल्यो तब नारायणदासा ॥
अब तो मैं भरवाय हुँकारी ❀ हरिको ऐहौं अयन सुखारी ॥
अस कहि गृहते निकसि तुरंता ❀ परमभक्ति करिके भगवंता ॥
गान करन लाग्यो हरि आगे ❀ तब भगवान परम अनुरागे ॥
दै हुँकारि दिय माल प्रसादा ❀ जस अल्हहिं दिय युत अहलादा॥
लै नारायणदास मुदित मन ❀ भाभी कर दिय लही सो सुख घन

दोहा–पृथ्वीराज यक भक्त नृप, बीकानेर सुथान ॥
भयो संस्कृत भाषहूं, में परवीन महान ॥ ११ ॥

करे मानसी हरिको ध्याना * कीन्ह्यो सो परदेश पयाना ॥
तहँ निज घरके मंदिरमाहीं * रहे जे निज ठाकुर तिनकाहीं ॥
तीन दिवसलौं ध्यानहि धारयो * सो मूरति मंदिर न निहारयो ॥
शंकित ह्वै सांडिया निकेता * पठयो खबरि लेनके हेता ॥
लिख्यो पत्रमें यही हवाला * आयो सो नृप अयन उताला ॥
तहँते जन यह खबरि लिखाई * नृप समीपमें दियो पठाई ॥
मंदिर भीतर चून छपाई * रही यहीते इत नृपराई ॥
बाहर तीनि दिवस भगवाना * रहे बांचि सो नृपति सुजाना ॥
ह्वै प्रसन्न अति मथुरा आई * तनु त्यागहुँ अस मन ठहराई ॥
करी प्रतिज्ञा शाह सो जानी * दै पठयो निदेश सुखमानी ॥
काबुलो नृप करहु पयाना * सुनि नृप तहां जाय मतिवाना ॥
जीवन अवधि जानिकै थोरी * भक्ति प्रभाव भगवतहि सोंरी ॥

दोहा–ह्वै सवार सांडिनी महँ, काबुलते चलि आसु ॥
मथुरा आय शरीर तजि, वास कियो हरि पासु ॥ १२ ॥
कायथ वासी ग्वालियर, खड्गसेन जेहि नाम ॥
सदा साधुसेवा करै, ध्याय कृष्ण वसु याम ॥ १३ ॥

सादर सुनै कृष्णकी गाथा * चाकर रहै भानगढ नाथा ॥
करै स्वामिको काज सदाई * दुखसुखसम गुणि छलहि विहाई ॥
संत प्रसादीको रह नेमा * यशकी चाह रहति युत प्रेमा ॥
संत सहस्रन अशन करावै * ऐसा अति उदार जग भावै ॥
चुगलन जाय नृपतिके पासा * चुगली कीन्ही सहित हुलासा ॥
खड्गसेन धन सकल तिहारो * दत जनन हम नयन निहारो ॥
सुनत भूप सो रोषहि धारयो * बंदी खानामें तेहि डारयो ॥
अन्न जलहु भोजन नहिं दीन्ह्यो * तब यमराज कोप अति कीन्ह्यो ॥
यम निज दूतन दियो उठाई * ताडन लगे भूप ते धाई ॥

तब जकि रह्यो भूप डर छाई * दिये वचन यमदूत सुनाई ॥
तू नृप अहै बडो अज्ञानी * देत भक्तको दुख रिससानी ॥
ताते धर्मराज इमकाहीं * पठयो मारन तुव ढिगमाहीं ॥
दोहा-असकहि दीन्ह्यो पलँगते, भूपहि दूत गिराय ॥
है विसंज्ञगो चुगुलहुन, दीन्ह्यो फेरी सजाय॥ १४॥
भूपति जब चैतन्यहि भयऊ * खड्गसेन पद तब गहि लयऊ ॥
फेरि बंदिते तुरत निकासी * खड्गसेनसों कह्यो हुलासी ॥
रहिये आप सदा निज गेहू * लेहौं दरशन आय सनेहु ॥
खड्गसेनको लिय गुरु मानी * भूपति सो गहि रीति अमानी ॥
करत साधुसेवा अति प्रीते * खड्गसेनका त्रय पन बीते ॥
चौथे पन निज गृहको त्यागी * वृंदावन गमन्यो अनुरागी ॥
तहां रासकी करे समाजा * लीला लखि सुखलहै दराजा ॥
यक दिन शरदपूर्णिमा पाहीं * कृष्ण रासके मंडलमाहीं ॥
बठनिभाव अनुरूपहि केरी * ताथेई करिबो सुख टेरी ॥
लखि चख सुनि प्रमोद उरधारी * पुनि हरि राधा सुछवि निहारी ॥
करि भावना खेल तेहि केरो * खड्गसेन तनु तजि बिन देरो ॥
नित्य अप्रगट जो हरि रासा * तहँ सहुलास जाय किय वासा ॥
दोहा-निरखि संतजन रासतेहिं, जय जय कीन्ह्यो शोर॥
गंगनाम यक ग्वालकी, कहौं कथा शिरमोर ॥ १५ ॥
परमभक्त वृंदावन माहीं * कियो निरंतर वास सदाहीं ॥
एक समय किय शाह पयाना * गंग काहँ करिके दीवाना ॥
वृंदावनको वास छोडाई * राख्यो दिल्लीमें ले जाई ॥
जानि गंगको प्रण ब्रजवासा * हरिसों विनय कियो हरिदासा ॥
दिल्लीते तब श्रीभगवाना * गंगहि दिय छोडाय सब जाना ॥
तब वृंदावन गंगसिधाई * तनु तजि बस्यो निकट यदुराई ॥
कृष्णदास यक रहै सोनारा * कृष्णदासको भक्त अपारा ॥
नृत्य करत लखि कृष्णरास महँ * कृष्णदास तेहि रंग रँगे तहँ ॥

नूपुर युगल पांयमें बांधी ❋ नृत्य करन लागे सुख कांधी ॥
तनक रहि गयो नाहिं तनु भाना ❋ यक पग नूपुर टुट्यो न जाना ॥
तब करि कृष्ण कृपा उर भारी ❋ गतिकी तहँ भंगता निहारी ॥
अपने पगको नूपुर छोरी ❋ कृष्णदास पग दीन्ह्यो जोरी ॥

दोहा–कृष्णदासके सुधि भई, निरख्यो नूपुर छूट ॥
कृष्ण कृष्णदासहुँ पगनि, नूपुर निरखि अटूट १६
जय जय कीन्हें शोर तहँ,जुरी जो सकल समाज॥
वरणों मथुरादासको, अब इतिहास दराज ॥ १७॥

रहे तिजारा ग्राम निवासी ❋ राजगुरू जग सुयश प्रकाशी ॥
संत सेव रत परम विरागी ❋ संतत राम नाम अनुरागी ॥
एक दिवस आये पाखंडी ❋ शालिग्राम लिहे सुख मंडी ॥
नूपुर पगन बांधि तिन आगे ❋ करहिं नृत्य अति प्रेमहिं पागे ॥
रहैं लगाये कर यहि भांती ❋ जामें नृत्य करत मुदमाती ॥
शालिग्राम जौन सिंहासन ❋ डोलन लगे लखैं सिगरे जन ॥
निरखि नयन सिगरे पुरवासी ❋ लागे करन प्रशंसा खासी ॥
सज्जन बड़े ग्राम यहि आये ❋ नृत्यत शिलहु प्रेम प्रगटाये ॥
शिष्य ग्रामके भे जन यूहा ❋ दिये भेंठ लाग्यो धन कूहा ॥
मथुरादास निकट जन जाई ❋ यक दिन कर विनती बरियाई ॥
तहँ लै आय ठाढ़ करिदयऊ ❋ बंद ठगनको कर ह्वै गयऊ ॥
ठग अनेक तहँ किये उपाई ❋ प्रेम न शिला पर्‍यो दरशाई ॥

दोहा–मथुरादास प्रभाव यह, ठग अपने मन जानि ॥
मार्‍यो मूढ न किय असर, भक्त तेज वर मानि ॥ १८ ॥

उलटि गई वाही ढिग पाहीं ❋ बिन शरीर सो भयो तहांहीं ॥
तब वह ठगके ठग सँगवारे ❋ बहु प्रार्थना किये शिरधारे ॥
मथुरादास स्वामि सुख छाई ❋ तब तिनको सब कपट छोडाई ॥
वाहू ठगको दियो जिवाई ❋ प्रभु उपदेश सबै ठग पाई ॥
शालिग्राम शिलामहँ सांचो ❋ कीन्हें भाव गयो मिटि कांचो ॥

एक जैतारण विदुर सुसंता * और प्रबोधानंद महंता ॥
ये दोउ बडे राम अनुरागी * सेवैं सदा संत बडभागी ॥
जैतारण खेती करवाई * वर्षा विन सो गई सुखाई ॥
ताकि संदेह कियो मनमाहीं * किमि सेइहौं संतजन काहीं ॥
तब जैतारणको भगवाना * दीन्ह्यो स्वप्न आय सुस्थाना ॥
चलिकै खेत कटावहु जाई * ताको पुनि द्रुत लेहु गहाई ॥
द्वै हजार मन तामें अन्ना * ह्वैहैं सेवहु संत प्रसन्ना ॥

दोहा–भोर भये चलि खेतमें, किय जैतारण सोय ॥
होत भयो तेहिं भांतिसो, अन्न गये मुद मोय ॥ १९ ॥

घनाक्षरी–राम नृप एक कोऊ उद्भट कर्म कियो करों सो बखान शरदपूर्णिमामें भयो रासु ॥ सखिन समेत तहां नृत्य गान करे कृष्ण सुछवि निहारि भोर आसक्त मानिकै हुलासु ॥ विप्रनसों कह्यो प्यारे काहूँ कहा भेट देहुँ तिन कह्यो प्यारी वस्तु दीजै होय जो प्रकासु ॥ भूप सुनि प्यारी गुणि कन्या काहँ दियो देखि, सोचि सब कहे दियो द्रव्य लियो सुता आसु ॥ १ ॥ नृपति जगतसिंह रहे हरिभक्त जहां जाय तहां आगे हरि पालकी चढायकै ॥ चलै अरि युद्धसमय आप आगे रहे पीछे राखै हरिकाहँ सो न हारै कभी जायकै ॥ आपनेही कर पूजे भगवान एक समय शाह नवरंगजेब बोल्यो गये चायकै ॥ नौबत बजत देखि खून खाय शाह तौन नौबत फेंकायो कालिंदीमें रोष छायकै ॥ २ ॥

दोहा–जल भीतर नौबत शबद, सुनि अचरज गुणि शाह ॥
जगतसिंह भूपति चरण, गह्यो सहित उत्साह ॥ २० ॥

नृप जगदेव समान उदारा * होतभयो हरिदास भुवारा ॥
जो जगदेव भूप जगमाहीं * किय उदारता कहौं यहांहीं ॥
पुनि कहिहौं हरिदासहु केरी * कथा दानि उर मोद घनेरी ॥
अति उदारता ताकर जानी * लेन परीक्षाहित सुखसानी ॥
नृत्य गानमें परम प्रवीनी * शक्ति नरी वपु धारि नवीनी ॥

नृप जगदेव समीप सिधाई ❀ नृत्य गान करि लियो रिझाई ॥
नृपति रीझि तेहिं देन विचारयो ❀ देन तौन नाहिं वस्तु निहारयो ॥
तब शिर काटि देन सो चाह्यो ❀ काटन हित कर तेग उबाह्यो ॥
लखि सो नटी हाथ गहि लीन्ह्यो ❀ कहत भई मैं निज वदि कीन्ह्यो ॥
मेरी थाती शिर प्रभु राखी ❀ लेहौं जब हैहौं अभिलाषी ॥
कैकेयीके सम वरदाना ❀ थाती धरि शिर राख्यो प्राना ॥
फेरि नटी भूपतिसों बोली ❀ आप शीश दिय प्रीति अतोली ॥

दोहा—मैं निज दाहिन बाहुँको, देती अहौं चढाय ॥
कोहु नृपपै दाहिन भुजा, नहिं वोढाइहौं जाय ॥ २१ ॥

ऐसो दान कौन मोहिं देहै ❀ जैसो आप दियो सुख म्वेहै ॥
अस कहि नटी सो गई सिधारी ❀ इक उदार नृप गुणी विचारी ॥
नटी कहँ निज निकट बोलाई ❀ नृत्य गान सुनि रीझि महाई ॥
राजा देन इनाम बोलायो ❀ नटी लेन कर वाम उठायो ॥
वामहाथ लखि भूपति भाषा ❀ कहि सो जगदेवहि दै राखा ॥
कह्यउ सो जगदेव इनामा ❀ दियो सो देहैं हमहुँ ललामा ॥
नटी कही सो नाहिं देजैहै ❀ नृप कहि तेहि दशगुण इत पैहै ॥
नटी कही तो दाहिन हाथा ❀ लेहौं मैं इनाम नृपनाथा ॥
नटी जाय तब ढिग जगदेवा ❀ शिर मांग्यो कहि सिगरो भेवा ॥
शिर उतारि तेहिं दक्षिण पानी ❀ धरि दीन्ह्यों भूपति सुखमानी ॥
नटी नृपति तनु यतन धराई ❀ वही नरेश पास द्रुत जाई ॥
नृप जगदेव शीश देखराई ❀ कही जो यहि दशगुण नर राई ॥

दोहा—देहु तो दक्षिण हाथ मैं, तुमहिं वोढाऊं आशु ॥
लखि महीप मूर्छित गिरयो, किय पुनि वचनप्रकाशु २२ ॥

देश ग्राम धन जो कछु होई ❀ सो मैं अबहिं देहुँ मुदमोई ॥
मोहिं यह दान देनगति नाहीं ❀ सुनि सो भक्ति नटी सुखमाहीं ॥
तुरत पास जगदेव सिधाई ❀ शीश जोरि निज गान सुनाई ॥
अब हवाल वह भूपसुताको ❀ कहौं सुनहु जाहिर वसुधाको ॥

नदी शीश सो जब लै आई * सो हवाल सुनि सुता सुहाई ॥
कही पिता सों लाज विहाई * मोहिं व्याहहु जगदेव बोलाई ॥
तब वह नृप जगदेव बोलायो * नृप जगदेव भूप ढिग आयो ॥
जगदेवहिं सो बहु समुझाई * कह्यो सुता लीजे हरषाई ॥
कह जगदेव कहहु सो बारा * तबहुँ न हैहै व्याह हमारा ॥
यक पत्नी व्रत रहै हमारो * पुनि राजा अस वचन उचारो ॥
इनहिं हतो कह जन बोलवाई * सुनि अकेल तेहिं लैगे धाई ॥
तब कन्या बोली मति मारहु * होविलेहुँ मेरे ढिग लावहु ॥

दोहा-कहे लोग नृप सुता कहँ, इनको चलहु लेवाय ॥
कह जगदेव न ताकिहौं, वाको मैं तहँ जाय ॥ २३ ॥

सुनि सो सुता कही रिसधारी * लावहु वाको शीश उतारी ॥
तब शिर काटि थार भरि लीन्ह्यो * कन्याके आगे धरि दीन्ह्यो ॥
जब कन्या दृग जोरन लागी * तब तेहिं शिर फिरिगा दुखपागी ॥
दृग जोरयो जगदेव न माथा * बरण्यो मैं ताकी असि गाथा ॥
ताके सम हरिदास भुवाला * भयो कहों तेहि कथा रसाला ॥
कियो शरीरार्पण पर काजा * संतन सेवन कियो दराजा ॥
संतनको परदा नहिं राखैं * जाहिं जनाने कछू न भाखै ॥
एक समय इक संत सिधाई * रामि जनानखाने रहजाई ॥
तहां संत नृप दुहिताकेरो * बढ्यो अछेह सनेह घनेरो ॥
एक समय ग्रीषम ऋतुमाहीं * छत ऊपर तेहिं कन्याकाहीं ॥
लै तेहि गात्त उपरकरि गाता * सोवत रह्यो होत परभाता ॥
करन हेतु हरिदास सुखारी * चढत भयो तेहिं ऊंचि अटारी ॥

दोहा-साधु और निज सुताको, सोवत लखि सुखवंत ॥
पट बोढायकै आपनो, आयो उतरि तुरंत ॥ २४ ॥

जागि पिता पट चीन्हि कुमारी * होत भई लज्जित मन भारी ॥
डरयो संत शंकित तेहिं जानी * लै एकंत सिखयो मृदुवानी ॥
जौन कार्य्य करबो मन होई * सावधान है करिये सोई ॥

जो जन दुष्ट छिद्रको पाई * कहै निंदि कटुवचन सुनाई ॥
तो सुनि संत कलंक महाना * जरिहै छाती मोर नशाना ॥
सुनत साधु लज्जा अति धारी * चलन हेतु निज कियो तयारी ॥
तब नृप ताहि राखि घरमाहीं * दीन्ह्यो परमप्रमोद सदाहीं ॥
ऐसो सेवी साधुन केरो * भूपति भो हरिदास निवेरो ॥
हरिदासके छोटे भाई * गोविंददास संत सुखदाई ॥
शिष्य स्वामि हरिवंशहि केरे * टेरै वेणु सदा हरि नेरे ॥
राधावल्लभहीकी आशा * कियो जगत ते भये निराशा ॥
राग रागिनी सब मुरली महँ * टेरि सुनावै प्रमुदित हरिकहँ ॥

दोहा-आगे करि हरिपालकी, पीछे गमनहि आप ॥
शाह बोलि कह यक समय, मुरलीमें तुव थाप ॥ २५ ॥

सो हमहूँ कहँ देहु सुनाई * सुनि जवाब दिय भीति विहाई ॥

दोहा-प्रभु आगे मुरली बजै, तब आगे तरवार ॥
और कछू होनो नहीं, यही बात निरधार ॥ २६ ॥

अस कहि बादशाहसों बैना * गोविंद आयो शिविर सचैना ॥
शाह चमू दै बहुसँग माहीं * पठयो इक सरदारहि काहीं ॥
चढिपालकी रह्यो सो आवत * खड्ग चल्यो आपहिते तहँ द्रुत ॥
कट्यो बांस गिरियो सरदारा * शाह मानि आचरज अपारा ॥
आय पांय दोऊ गहिलीन्ह्यो * बहुविधि तासु प्रशंसा कीन्ह्यो ॥
रहे नरायणदास सुसंता * परम अनन्य भक्त सियकंता ॥
है हँडिया सरायके वासी * करहिं नृत्य हरि ढिग सुखरासी ॥
एक समय पर्यटनै हेतू * गये नरायणदास सचेतू ॥
म्लेच्छमीर यक कौनहु देशा * रहे बोलि सो दियो निदेशा ॥
मेरे आगे नृत्यहि ठानो * ताको कह्यो न ये कछु मानो ॥
कह्यो करैं हम नृत्य सदाहीं * हरिके आगे अनतै नाहीं ॥

दोहा-ऊंचे थल तुलसी निरखि, तहँ सिंहासन धारि ॥
नृत्य गान करने लगे, हरि आगे मनुहारि ॥ २७ ॥

यक दिशि बैठी संत समाजा * यक दिशि बैठ्यो मीर दराजा ॥
निरखन लाग्यो नयन लगाई * रीझि गयो सो अति सुख पाई ॥
नेवछावर सो करन विचारयो * वस्तु न कौनहु नयन निहारयो ॥
तब सो मीर प्राण निज वारी * तनु तजि गो हरि निकट सिधारी॥
परशुराम एक रह्यो महंता * चाल राजसी सेवी संता ॥
संत समाज तुरंग मतंगा * चले पचास लिये निज संगा ॥
छरीदार दौरहिं तेहि आगे * चवँर चलावैं जन अनुरागे ॥
जड जंगलीदेशके लोगा * तिन्हैं कियो शुचि चलि बिन शोगा
गद्दी तकी काहु लगाई * एक दिन बैठिरहे तहँ आई ॥
एक साधु करि कोप अपारा * करत भयो अस वचन उचारा ॥
अस ऐश्वर्य्य माहँ हरि केरो * भजन न होत सुनहु सति मेरो ॥
हरि निमित्त तनु धूरि लगायो * आय राजगृह गुरू कहायो ॥

दोहा–वृथा गृहस्थी धारिकै, साजु राजसी ठानि ॥
बैठे हो सुनि कह्यो तिन, दोहा द्वै निर्मानि ॥ २८ ॥
माया सगी न मन सगा, सगा न यह संसार ॥
परशुराम यह जीवको, सगा सो सिरजनहार ॥ २९
कहते हैं करते नहीं, मुखके बडे लबार ॥
काले मुँहडे जाँइगे, साँईके दरबार ॥ ३० ॥
कहै आप सति साधुपै, हम बहु कियो उपाय॥
यह ऐश्वर्य्य कभी नहीं, मेरे संगते जाय ॥ ३१ ॥

सुनत साधु भाष्यो गहि हाथा * ये सब त्यागि चलो मम साथा ॥
सुनि महंत उठि चले तुरंता * गिरि कंदरा गयो लै संता ॥
निर्जन जहां जात नहिं कोई * बैठ तहां जहँ खोज न होई ॥
तब महंत युत परमउछाहा * तेहि साधूको बहुत सराहा ॥
ताही समय साधु एक दरशन * हेतु जात रह तेहिं कोउ गिरिजन॥
दियो बताय यही गिरिकंदर * अहै महंत लख्यो हम सुखकर ॥

तब सो साहु तहां द्रुतजाई * गहिके चरण परम सुख पाई ॥
मुद्रा सहस पालकी दीन्ह्यो * यक तुरंत अर्पण पुनि कीन्ह्यो ॥
डेरा तेहि पहाड तर डारी * सेवा हित बहु मनुज हँकारी ॥
दियो लगाय चलन पंखा तहँ * लगे महंत कह्यो साधू पहँ ॥
अब हम कहाकरैं लखि लीजै * राम रजाय यही सो कीजै ॥
तब सो वैष्णव ह्वै प्रसन्न अति * पद गहि कह्यो चलिय आश्रमसति

दोहा-हैं विरक्त प्रभु आप यह, हरि इच्छा ऐश्वर्य ॥
दूरि भयो मम मोह अब, है न आपके गर्ब ॥३२॥
परशुराम सुनि सपदि तब, निज आश्रममें आय॥
संतनकी सेवा सतत, करनलग्यो मन लाय ॥३३॥

संतदास यक संत सुपासी * रहै नेवाई ग्राम निवासी ॥
निज मति सति जगदीश लगाई * नीलाचल गवने सुख पाई ॥
वनमें पत्र फूल फल हेरी * छप्पन प्रकार भोग शुभ केरी ॥
करि भावना मानसै माहीं * संतन दियो अर्पि हरि काहीं ॥
सो नीलाचलमें जगनाथा * रुचिसों पायो लहि सुख गाथा ॥
कह्यो न कछु संतहि निशि भूपै * स्वप्न दियो हरि कृपा अनूपै ॥
सादर जो कोउ संत जेंवावै * ताते मोरी तृप्ति ह्वै जावै ॥
जागि नृपति सबसों सुखमानी * कह्यो परचो तब सबको जानी ॥
भयो कल्याण दास यक संता * भजनानंद सदा सियकंता ॥
प्राण पयान समै सब त्यागी * मन लगाय रघुपति अनुरागी ॥
गयो रामके धाम बजाई * जय जय किये संत समुदाई ॥
भो भगवानदास इक साधू * सेवै साधुन प्रीति अगाधू ॥

दोहा-रह्यो उपासक प्रथित जग, माला तिलकहि केर॥
बादशाहको हुकुम भो, एक दिवस बिन देर ॥३४॥

तिलक न देय कोउ यहि ग्रामा * धारै उर कंठी नहिं दामा ॥
ताते कंठी माल सेकरन * उतरगये त्यों छूटि तिलकतन ॥
जब भगवानदासके पासा * आये जन करि कोप प्रकासा ॥

तहँ भगवानदासको निरखत ❀ तेउ भे कंठी माल तिलक युत ॥
ते मुखसों भाषन नहिं पायो ❀ लखि भगवानदास अस गायो ॥
तिलक भाल गलकंठी माला ❀ तनु आपने लेहु लखि हाला ॥
और बात चालहु हमसों पुनि ❀ लज्जित गये शाह पै ते सुनि ॥
कंठी माल तिलक युत भेषा ❀ तिनको शाह नयन निज देखा ॥
तिनसों जिगरो पूछ हवाला ❀ मानि सत्य अति भयो निहाला ॥
है प्रसन्न भगवानहिं दासा ❀ दीन्ह्यो मथुरापुरको वासा ॥
ते पूजन करिके हरि केरो ❀ मथुरा बसे मानि मुद ढेरो ॥
वंश वल्लभाचार्यहि माहीं ❀ गोकुल नाथ भये तिन काहीं ॥

दोहा–वर्णन मैं अब करतहौं, आयो तिनके पास ॥
लाखनकी संपति लिये, यक जन सहित हुलास ॥ ३५ ॥

मोहिं मंत्र दै शिष्य करीजै ❀ कह्यो नाथ जाते अघ छीजै ॥
गोकुलनाथ वचन तब टेरा ❀ काहूमें लागत मन तेरा ॥
सुनि सो कह्या न कहुँ मन भीजै ❀ तब इन कह्यो अनत गुरु कीजै ॥
शिष्य तुमहिं हम करिहैं नाहीं ❀ ताको हेतु सुनहु हम पाहीं ॥
जेहि मन जगतविषय हिंसामें ❀ लागत सो जन खैंचि ललामै ॥
हरिमें तेहि विधि सक्त लगाई ❀ जाको मन सर्वत्र उडाई ॥
वह हरि ओर कबहुँ नहिं आवै ❀ द्रव्यनहित हरि साधु लगावै ॥
करै जो गुरू शिष्य जेहि काहीं ❀ धन ताजि होय लोभवश नाहीं ॥
गुरूशिष्य संसार छोडाई ❀ देइ यही सिद्धांत सदाई ॥
गोकुलनाथ वचन सो मानी ❀ भयो शिष्य तेहि भांति अमानी ॥
येक हलालखोर तहँ रहई ❀ कान्हा नाम तासु सब कहई ॥
हरिमें निशि दिन मनहि लगाई ❀ रटै नाम मुखसों सुख छाई ॥

दोहा–सोहै मंदिर नाथजी, नित मिसि झारू देन ॥
रहै दरशकारि लालसा, भरो परम उर चैन ॥ ३६ ॥

तहँ श्रीगोकुलनाथ महंता ❀ रहे प्रथित प्रहुमी यशवंता ॥
कह्यो रोज इत होत सकारा ❀ देखि परत यह झारूदारा ॥

कहै जो कोउ झारू नहिं देई ❀ अस विचारि अपने मनतेई ॥
मंदिर सौंह आडके हेतू ❀ भीती लिय उठाय मति सेतू ॥
कान्हा झारन हेतु सबेरे ❀ आवै नाथ परें नहिं हेरे ॥
हरिको हरिदासहिको दरशन ❀ दास काहँ हरिदरशन क्षनक्षन ॥
हानि भई जब दोनहुँ केरी ❀ नाथ स्वप्नमें तब यह टेरी ॥
गोकुलनाथ फोरु यह भीती ❀ शालति मोहिं कियो अनरीती ॥
अस द्वै बार स्वप्नमें नाथा ❀ कह्यो न किय श्रुति गोकुलनाथा ॥
तब तिसराय कही हरि बानी ❀ कान्हा परमभक्त विज्ञानी ॥
ताके दरश आड तुम कीन्ह्यो ❀ भीती फोरि आसु अब दीन्ह्यो ॥
मम दरशन हित भोजन त्यागी ❀ देत भयोहै सो अनुरागी ॥

दोहा–सुनि महंत सो भीतिको, दियो तुरंत गिराय ॥
गहि पग झारूदारके, सतकाऱ्यो घर लाय ॥ ३७ ॥

संतनमाहँ प्रधान गनाई ❀ झारू दीयो दिबो छुडाई ॥
ताते जानिलेहु यह भाई ❀ हरिदरबार न जाति बडाई ॥
भगवतकर्म भक्ति जन जोई ❀ करत जनतमें उत्तम सोई ॥
भक्ति रूप ब्राह्मणको जानो ❀ भक्ति सहित तेहिं ब्राह्मण मानो ॥
जासु काय हरिभक्ति विहीना ❀ डोम सोइ यदि बहुत प्रवीना ॥
यह सिद्धांत युधिष्ठिर पाहीं ❀ भीष्मदेव कह भारत माहीं ॥
संतसेव रत गिरिधर ग्वाला ❀ रहे जक्त यक भक्त विशाला ॥
नेम साधु चरणामृतकेरो ❀ किये रहे लहि मोद घनेरो ॥
साधु मृतकहूको अति सेई ❀ सादर चरणोदक लैलेई ॥
तासु प्रभाव त्यागि तनु कार्ही ❀ निवास भो हरिधाम सदाहीं ॥
रामदास यक भयो सुसंता ❀ बालहिंते करि रति भगवंता ॥
रीति संत सेवनकी लीनी ❀ प्रीति न जगतमाहँ कछु कीनी ॥

दोहा–मिलै जो अच्छी वस्तु कहुँ, सो संतन कहँ देहि ॥
होय न नीको वस्तु जो, आपु सोइ हठि लेहि ॥ ३८ ॥

एक समय बेटीको व्याहा ❀ रह्यो पुत्र सब सहित उछाहा ॥

मेवा अरु पकवान रचाई * एक कोठरी माहिं धराई ॥
तारा दे ताके इनकाहीं * बितरि देहिं नाहिं संतन पाहीं ॥
रामदास वह साजु निहारी * संत योग्य गुणि होहिं दुखारी ॥
एक दिवस कछु सूनो पाई * तारा खोलि दियो कर जाई ॥
सकल साजु सो संतन बोली * मोटरी बांधि दियो नहिं खोली ॥
वैसहि तारा पुनि दै दीन्ह्यो * पुत्र पौत्र सुनि लखि दुख कीन्ह्यो ॥
तारा खोलि निहारत भयऊ * वस्तु दशगुणी तह लखि लयऊ ॥
ऐसो तिनको भाव अनूपा * मैं वर्णन कीन्ह्यों सुखरूपा ॥
सूजाको दिवान अभिरामा * रह भगवंतदास यक नामा ॥
वृंदावन वासिनकी सेवा * करै सतत तन मन धन तेवा ॥
एक समय श्रीगुरु महराजा * आये लीन्हें संत समाजा ॥

दोहा—तब भगवंत प्रमोद उर, मानि तिन्हैं गृह लाय ॥
कह्यो नारिसों भेटदै, करु पूजा हरषाय ॥ ३९ ॥

सुनि तेहिं तीय कही सुख छाई * संपति सब गुरु देहि चढाई ॥
एक एक धोती भर राखी * होय न और वस्तु अभिलाखी ॥
तब पत्नीको बहुत सराही * रामदास कह परम उछाही ॥
यही बात मेरे मनमाहीं * रही कहों मैं सति तोहिं पाहीं ॥
यह सलाह पति तियको जानी * अति प्रसन्न है गुरु विज्ञानी ॥
प्रेम आंसु दोउ नयन बहावत * विदा न भये भये ब्रज आवत ॥
रामदास तब बहु पछिताना * वृंदावनको कियो पयाना ॥
तहां दरशि गुरु संतसमाजा * सादर दीन्ह्यो मोद दराजा ॥
फेरि गुरूको आयसु पाई * आवत भये अथन हरषाई ॥
करि हरि भजन काल बहु टारी * अंत समय मनमाहँ विचारी ॥
चल्यो आगरेते ब्रज काहीं * आये आधी दूरि तहांहीं ॥
कह्यो समीपी जनसों बैना * मम तनुयोग तुलसिवन हैना ॥

दोहा—मोको अब घर लैचलौ, जो वृंदावन माहिं ॥
मरि हौं तौ सब लोग मम, तनु दाहिहैं तहांहिं ॥ ४० ॥

कढिहै तनु दुर्गंधिसो, लाल पियारी अंग ॥
लगिहै सुनते भवनमें, लाये सहित उतंग ॥ ४१ ॥
रामदास तनु त्यागिकै, दिव्य शरीरहि धारि ॥
वृंदावनमें जायकै, हरि ढिग सबै सुखारि ॥ ४२ ॥
भक्तमाल नाभाजुकृत, तामें कहे जे संत ॥
तिनकोहौं वर्णन कियो, कृपारुक्मिणीकंत ॥ ४३ ॥

इति श्रीसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतौ श्रीरामरसिकावल्यां भक्तमालायां कलियुगखंडे उत्तरार्द्धे एकोनचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १३९ ॥

रामरसिकावली नाम भक्तमाला संपूर्णा।
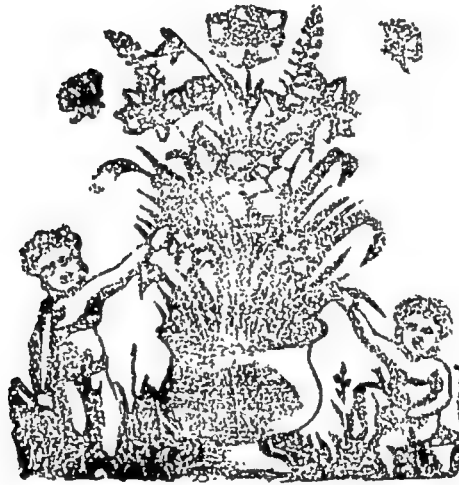
पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ उत्तरचरित्रप्रारम्भः ।

सो०–जय यदुवंशकुमार, जय रघुवंशकुमार जय ॥
जय जय अधम उधार, जय सर्वस रघुराजके १॥
दोहा–जय बाणी जय गजवदन, जय हरि गुरु पितु मात॥
संतचरित रचिबे हितै, देहु बुद्धि अवदात ॥ १ ॥
ग्रंथ राम रसिकावली, चारिखंड निर्माण ॥
सतयुग त्रेता द्वापरहु, कलियुग खंड प्रमाण ॥२॥
कलियुग खंडहि भाग किय, पूरब उत्तर दोय ॥
सादर सो वर्णन कियो, उत्तर चरित अब होय३॥
सो०–श्रोता सकल सुजान, श्रद्धायुत सुनिये सुचित ॥
अबके भक्त बखान, मतिअनुसार करौं कछुक२॥
दोहा–श्रीकबीर इतिहासमें, वंश बघेल बखान ॥
वर्णन कीन्ह्यों मैं कछुक, राजाराम प्रमान ॥ ४ ॥
राजारामहि सुत भये, वीरभद्र बलवान ॥
भये विक्रमादित्य पुनि, पुनि अमरेश महान ॥५॥
भूप अनूप सुतासु सुत, भावसिंह सुत तासु ॥
तासु सूनु अनिरुद्ध भो, तेहि अवधूत प्रकासु ॥६॥
प्रपितामह पुनि मोर भे, श्रीअजीत रिपु जीत ॥
तासु तनय जयसिंह भो, धर्म देव द्विज नीत ॥७॥
मम पितु ताके सुत विमल, विश्वनाथ अस नाम ॥
तिनके गुरु प्रियदास भे, भक्ति प्रेम रस धाम ॥८॥
सैली श्रेष्ठ कवीनकी, गुरुको गुरु है जौन ॥
ताको चरित बखानिकै, कहै होय मति तौन ॥ ९ ॥

तातें प्रथमहिं मैं कहौं, श्रीप्रियदास चरित्र ॥
जाहि सुनत जगजीव सब, होते परमपवित्र ॥ १० ॥
जो चरित्र प्रियदासको, मम पितु कियो बखान ॥
तेहि अनुसर वर्णन करौं, सुनौ सबै दै कान ॥ ११ ॥

व्यास सुवन शुकदेव उदारा ❀ जो कीन्ह्यो भागवत प्रचारा ॥
लियो सो कलियुगमहँ अवतारा ❀ प्रियादास अस नाम उचारा ॥

तामें प्रमाण—अवतीर्य शुकस्तत्र प्रियाचार्य्यो भविष्यति ॥
इति भविष्यपुराणे ॥

सूरत नगर समीप सुहावन ❀ रामपुरा यक ग्राम सुपावन ॥
तामें वामदेव अस नामा ❀ रह्यो एक द्विजवर मतिधामा ॥
मतिअतिविमलअमलगतिताकी ❀ निशिदिनमतिहरि पदरतिछाकी॥
रही तासु तिय गंगाबाई ❀ सो हरिकृपा भक्ति वर पाई ॥
तासु कुमार भये प्रियदासा ❀ जासु सुयश जग कियो प्रकासा ॥
बालहिंते हरि भक्ति उठाये ❀ तृण सम जगद्विषय मन भाये ॥
द्वादश वर्ष वयस जब बीती ❀ वृंदावन दर्शन भइ प्रीती ॥
तुलसी विपिन गये प्रियदासा ❀ किये सकल वन दर्श विलासा ॥
चंद्रलाल तहँ रहे गोसांई ❀ देखहिं मनमोहन सब ठांई ॥
महा रसिक हरिभक्ति उदंडा ❀ जेहिं प्रभाव पूरित नवखंडा ॥

दोहा—तिनके निकट सिधारिकै, लियो मंत्र उपदेश ॥
श्रीराधापति पद सुरति, कियो अनन्य हमेश ॥ १ ॥

लै उपदेश गये घर स्वामी ❀ सेवहिं साधु सत्य निष्कामी ॥
नित प्रति मन वर्तहिं वैरागा ❀ रहहिं उदास चहैं जग त्यागा ॥
पिता मातु जब गे हरिधामा ❀ भये विरक्त त्यागि धन धामा ॥
मन गुणि हरि सबकी सुधि लेहीं ❀ देखहुँ मोहिं किमि भोजन देहीं ॥
निर्जन गिरिवर गुहा निहारी ❀ रहे तहां हरिपद चित धारी ॥
भोर गोविंद वणिक तनु धारी ❀ आय अहार दीन सुखकारी ॥
तीजे दिन वृषभानुकुमारी ❀ आय दीन दधि क्षीर हँकारी ॥

कह्यो विहँसि राधिका सुवयना ❀ यह अचरज मो दीसत नयना ॥
कराहिं सकल स्वामीकी सेऊ ❀ तुम स्वामीते सेवा लेऊ ॥
सुनत वचन नयनन जल आये ❀ राधा पदपंकज शिर नाये ॥
पे स्वामिनिकी सीखहि शीशा ❀ वृंदावन गे ध्यावत ईशा ॥
तहँ विद्या पढिकै सुखदाई ❀ छकै रास सुख कछु न सोहाई ॥
दोहा–मग्न भजन निशिदिन रहैं, कहहिं न कोहुसों भेव॥
एक दिवस तब ध्यानसे, कह्यो आय यदुदेव ॥२॥
करेहु जौन हित जन्म तिहारो ❀ विचरि जगत् सब जीव उधारो ॥
ले आज्ञा बद्री वन आये ❀ व्यासदेवके दर्शन पाये ॥
तिनसों पढि भागवत पुराना ❀ रामेश्वरको कियो पयाना ॥
सब तीरथ करि दक्षिण केरा ❀ कावेरी तट कियो बसेरा ॥
द्वारावती दरश पुनि कीन्ह्यो ❀ यक पुर भूप धर्म प्रद चीन्ह्यो ॥
तेहि पुर प्रभु यकनिशा वितायो ❀ राजा सुनत दरशहित आयो ॥
महा प्रभाव जानि सत्कारयो ❀ प्रियादास सो तुच्छ विचारयो ॥
चले निशा उठि भूप न जाना ❀ सूझत नहिं मग तम अधिकाना॥
तासु कोट ढिग निकसे आई ❀ पहरी टेरे रहे छुपाई ॥
जानि चोर पकरे सब धाई ❀ बांधे कर पग रज्जु दृढाई ॥
डारि दियो खनि खात महाई ❀ भजैं सुचित तहँ कुँवर कन्हाई ॥
जागत भयो भोर भूपाला ❀ नाथ गमन सुनि भयो विहाला॥
दोहा–ढूंढन निकस्यो सैन्य लै, चढे बडे गजराज ॥
चहुँ दिशि खोजनके लिये, दौरी मनुज समाज ॥ ३ ॥
ढूंढे भटकि नहीं प्रभु पाई ❀ राजहि ज्वाब दिये फिरि आई ॥
भूपहि खबरि दियो कोतवाला ❀ रैन चोर यक खातहि डारा ॥
भूपति जाय चीन्हि दुख कीन्ह्यो ❀ त्राहि त्राहि करि पद शिर दीन्ह्यो ॥
भवन लाय आसन बैठायो ❀ प्रभु तेहिं पूरण ज्ञान सिखायो ॥
रक्षक सूरी देन पठाये ❀ स्वामी रक्षक सकल बचाये ॥
तहँते चलि गमने यक ग्रामा ❀ यक वटतरु तर किय विश्रामा ॥

बरजे लोग सहित अनुरागी * यहि वट विटप निकट अहिलागे॥
प्रभु कह सब थल रक्षक रामा * जहँ नहिं प्रभु अस नहिं कहुँ ठामा॥
धायो भुजंग कुपित निशि माहीं * मार्यो यक बिलार तेहिं काहीं॥
भोर प्रभाव मच्यो सब गाऊ * आये सबै मनुजतरु ठाऊ॥
तीन ग्रामको ठाकुर आयो * प्रियादास पदमो शिर नायो॥
नाथ कियो निर्विष मम ग्रामा * जिमि काली काढ्यो घनश्यामा॥

दोहा-रहो कछुक दिन नाथ इत, हम सब होंय सनाथ॥
राखि मान तेहि चलतभे, गये देश यक नाथ॥४॥

रहैं महाजड तहां अहीरा * तहँको नृप नेसुक मतिधीरा॥
सो चह नृप सुधरहि किमि देशा * स्वप्ने हरि तेहिं दियो निदेशा॥
आवत सन्त एक मम रूपा * सो सब देश सुधारी भूपा॥
तेहि मुख सुनि भागवत सप्रीता * होय भक्ति सब देश पुनीता॥
एकादशि दिन गे प्रियदासा * भूपति आय मिल्यो सहुलासा॥
तेहि सुनाय भागवत पुराना * कीन्ह्यो देश भक्त भगवाना॥
पुनि द्वारका सिधारि सुखारी * जगन्नाथ दर्शन पगु धारी॥
पुनि गंगासागर महँ न्हायो * तहँ यक वणिक आय शिर नायो॥
वणिक कह्यो भोजन भो नाहीं * तिनकह भोजन रहै सदाहीं॥
तीनि दिवस यहि विधिगे बीती * तब हरि द्विज वपु धर्यो सप्रीती॥
कह्यो वणिकसों चलिघर बाता * वृत्ति अयाचक इनकी ताता॥
तुमसों बनी न कछु सेवकाई * जाय साधु कहँ देहु खवाई॥

दोहा-लै भोजन द्रुत वणिक तब, हरि प्रसाद करवाय॥
कहि प्रसाद दीन्ह्यो प्रभुहि, सादर निजशिरलाय॥५॥
वनिजारनके संगमें, मम प्रभु रीवा आय॥
तीरथपति मज्जन हितै, गमने हर्ष बढाय॥६॥
तीरथराज नहायकै, मथुरामंडल जाय॥
तीनि वर्ष पहँ वसतभे, मम गुरु संग सोहाय॥७॥

बहुरि जरौली गांव यक, अन्तर्वेदहि माहिं ॥
यमुना तट शोभा सदन, दर्श करत अघ जाहिं८॥

तहां कियो प्रियदास निवासा ❀ ध्यावत राधारमण सुरासा ॥
परमहंस तहँ राम प्रसादा ❀ पूरण साधुन बाद विवादा ॥
तामुख सुनि रामायण नीको ❀ सर्व जगत् सुखहित सबहीको ॥
तेहि भागवत सुनाय बहोरी ❀ बढी परस्पर प्रीति न थोरी ॥
तिन सुस्थल निज भेंट चढाये ❀ जफराबाद नाथ पुनि आये ॥
देश जरौली दुष्ट अनेका ❀ चोर विमुख हरिविगत विवेका ॥
ते जन प्रभुकर दर्शन पाई ❀ हरिजन भये त्यागि कुटिलाई ॥
प्रियादास कर चरित अनेका ❀ कहहिं परस्पर जन यकएका ॥
ते सब जुरि जुरि दर्शन करहीं ❀ दर्श करत हरिपद रति भरहीं ॥
करन हेतु बहु जीव उधारा ❀ भक्तिदान तहँ दियो अपारा ॥
करहिं जे प्रियादास सत्संगा ❀ ते रँगे जाहिं रामके रंगा ॥
नाम सराय चतुर्भुज गाऊं ❀ एक समय आये तेहिं ठाऊं ॥

दोहा–तहां रहै यक साधु कोउ, नाम उजागर दास ॥
श्वेतकुष्ठ प्रभु तनु निरखि, कीन्ह्यो विनय प्रकाश॥९॥

जडी एक जानी प्रभु मेरी ❀ मलत हनत तनु रोगन ढेरी ॥
विहँसि कह्यो प्रभु होय न रोगा ❀ हरि इच्छाते भोगहि भोगा ॥
ताके मन विश्वास न आयो ❀ तब गंगाजल नाथ मँगायो ॥
लियो चुपरि अपने तनुमाहीं ❀ श्वेतवर्ण रहिगो तब नाहीं ॥
पुनि जसको तस रोग बनायो ❀ तब विश्वास ताके मन आयो ॥
तहँ कोउ जमींदार सुतकाहीं ❀ लग्यो प्रेत छोडैं तेहि नाहीं ॥
मंत्र यंत्र बहु तंत्रन झारे ❀ छुट्यो न प्रेत उपाय हजारे ॥
तब प्रभु पास लाय सुतकाहीं ❀ पर्यो पिता रोवत पद माहीं ॥
नाथ कह्यो मैं मंत्र न जानो ❀ सुनो जो प्रेतहि वचन बखानो ॥
अस कहि कह्यो प्रेत कह बानी ❀ तुमहिं न लागति योनि गलानी ॥
प्रेत कह्यो अबलों यहि हेता ❀ रह्यो सतावत जीव निकेता ॥

मिलैं जो कबहूं संत उदारा ❀ तौ हठि मेरो करैं उधारा॥
दोहा-कलि जीवन निस्तार हित, लीन्ह्यो प्रभु अवतार॥
करहु कृपा अब दीनलखि, जेहिं मम होय उधार॥१०॥
विनय दीन सुनि मन हर्षायो ❀ तासु उधारन हित चित लायो॥
कह्यो प्रेतसों मंजुल बाता ❀ अमिली तरु वसिये दिन साता॥
प्रेत त्यागि तेहिं अमिली माहीं ❀ वसतभयो गति पावन काहीं॥
बांचनलगे नाथ सप्ताहा ❀ भयो समापत जेहि दिन माहा॥
तेहि दिन विटप बरयो करि ज्वाला ❀ गयो प्रेत जहँ देवकिलाला॥
धाये जन गुणि पावक लागी ❀ जाय तहां नहिं देखे आगी॥
बूझि नाथसों सुधि सब पाई ❀ जय जयकार कियो सुख छाई॥
प्रियादास पर फूलन वर्षे ❀ प्रेत मुक्त गुणिअतिशयहर्षे॥
बढ्यो चहूंदिशि महा प्रभाऊ ❀ यह करणी अति सरल स्वभाऊ॥
एक समय प्रभु विचरन हेतू ❀ गये फतेपुर कृपानिकेतू॥
तहँ देवी मंदिर किय डेरा ❀ देवी रैन प्रत्यक्षहि टेरा॥
दोहा-रह्यो अयोध्या नगर इत, अति पुनीत केहुँकाल॥
करहु रामलीला इतै, लखि जन होयँ निहाल॥११॥
देवी वचन सुनत अघहारी ❀ तहां रामलीला विस्तारी॥
राम गमन बनकी भइ लीला ❀ पुर नर नारि कुमति शुभशीला॥
सत्य सत्य सब रोदन कीन्हे ❀ भोजन पान त्यागि सब दीन्हे॥
जो दशरथको रूपहि भयऊ ❀ सो सति त्यागि देहु निज दयऊ॥
जब पुनि भयो राम अभिषेका ❀ तब अँगरेजहु कियो विवेका॥
साहेब सब निज ठाकुर जाने ❀ रामनिसाफ करै सोइ माने॥
राम जौन जोहिं दियो रजाई ❀ सो सब शिर धरि करै सदाई॥
अचरज फैलि रह्यो पुरमाहिं ❀ सकल प्रशंसैं जन प्रभुकाहीं॥
एक समय वृंदावन आये ❀ दै भंडारा संत बोलाये॥
आपहु निजकर परसन लागे ❀ अतिशय साधु सेव अनुरागे॥
तब यक संत कह्यो अनखाई ❀ कोढीकेर छुआ को खाई॥

तब प्रभु गये भवनके भीतर ❀ सकल संत तेहि कह्यो अनूतर ॥
दोहा–सकल महात्मा साधुको, बोलवायो करि प्रीति ॥
आये प्रभु सुंदर वरण,लखि सब किये प्रतीति १२॥
करि भोजन जब गे निज गेहू ❀ तब जसकी तस कीन्ही देहू ॥
चित्रकूट यक अवसर आये ❀ भरत कूप युत जनन नहाये ॥
जब अनसुइया तेइ जन आये ❀ तहँ नाथको दर्शन पाये ॥
पर्‌यो बहुत कहांलगि गाऊं ❀ चरित एक अस और सुनाऊं ॥
चले अमरकंटक प्रियदासा ❀ रींवा है निकसे मग आसा ॥
श्रीजयसिंह पितामह मोरा ❀ छायो जासु सुयश चहुँ ओरा ॥
रीवां है बघेल रजधानी ❀ बसत रह्यो जयसिंह गुणखानी ॥
तिनके तीनि पुत्र सुखदाता ❀ मम पितु औ पितृव्य दुइ भ्राता ॥
जेठे विश्वनाथ पितु मेरे ❀ फहरत जिन पताक यश केरे ॥
लक्ष्मणसिंह मांझिले नामा ❀ पुनि बलभद्रसिंह मतिधामा ॥
सुन्यो कान प्रियदास सिधाये ❀ तीनिहुँ सुत युत राजा आये ॥
श्रीजयसिंह नरेश सुजाना ❀ करि प्रसन्न स्वामी सन्माना ॥
दोहा–राखन हित राजा चह्यो, पद बहु विनय बखानि ॥
सकल रीति विपरीति लखि, प्रभुहि न नेक सोहानि १३॥
रीति रही पूरब यह राजू ❀ लूटै प्रजन मनुज बिन काजू ॥
बोलैं झूठ सकल अज्ञाता ❀ ब्राह्मण करै निजातम घाता ॥
देखि दशा प्रभु कियो विचारा ❀ यह बघेल कुल अति उजियारा ॥
बहु राजा भे यहि कुल रूरे ❀ समर शूर दाता गुणपूरे ॥
विपुलवार कोटिन करि दाना ❀ यश लिय करि याचक सन्माना ॥
बादशाह जब विपति सतायो ❀ तब तब यहि कुल आय बितायो ॥
सेनभक्त बांधवगढ़ भयऊ ❀ नृप रामहि हरि दर्शन दयऊ ॥
तेहि कुल सोहन यह अनरीती ❀ काल कर्म गति भै विपरीती ॥
यह प्रभु कीन्ह्यो मन संकल्पा ❀ राजासों नहिं कीन्ह्यो जल्पा ॥
गये अमरकंटक तेहिं पंथा ❀ दीन्ह्यो कछु न धर्म कर संथा ॥

प्रभुके लागिगई मनमाहीं ❀ दिये भक्ति बिन बनतो नाहीं ॥
लहें बघेल भक्ति उपदेशा ❀ भक्ति प्रचार होय सब देशा ॥
दोहा-जब जब इत है कढैं प्रति, तीरथ हेतु नहान ॥
तब तब भूपहि सुनत युत, देहिं दरश सविधान ॥ १४ ॥
कई बार दै दरश सोहाये ❀ सहज सहज हरि ओर लगाये ॥
श्रीजयसिंह भूप यक बारा ❀ गयो प्रयाग सहित परिवारा ॥
तहां जाय प्रभु दर्शन पायो ❀ तीनों सुत युत मोद बढायो ॥
विश्वनाथ जेठो सुत जोई ❀ प्रभुसों कह्यो यकांतहि रोई ॥
मंत्र देहु मम करहु उधारा ❀ नातो कब छूटी ससारा ॥
प्रभु कह शिष्य करें नाहिं काहू ❀ पै तेरो होई निर्बाहू ॥
एक बार पुनि तीनिउँ भाई ❀ दरश कियो मिरजापुर जाई ॥
तहां यकादशि बरत बतायो ❀ भक्ति बीज शुभ खेत बोवायो ॥
पुनि प्रभु चले नर्मदा काहीं ❀ रीवा वाम छोंडि पथमाहीं ॥
ग्राम सेमरिया महँ जब आये ❀ विश्वनाथ दर्शन हित धाये ॥
विनव कियो रीवां पगु धारो ❀ तब प्रभु कह्यो बहुरती बारो ॥
मुरके जबै नर्मदा न्हाये ❀ स्वामिअमर पाटन जब आये ॥
दोहा-प्रियादासकी पाय सुधि, मोदित तीनों भ्रात ॥
दरश हेतु तहँ जायकै, पकरे पद जलजात ॥ १५ ॥
करि विनती रीवां पुनि लाये ❀ सब पंडित मिलि वाद बढाये ॥
समाधान साधारण कीन्हे ❀ प्रभुको अति प्रभाव सब चीन्हे ॥
एक समय मम पितु कह बानी ❀ विन उपदेशे लगति गलानी ॥
नाथ कह्यो तब सुनु विशुनाथा ❀ करिहै शिवतोहिंअवशि सनाथा॥
तेहि निशि मम पितु जब घरमाहीं ❀ सोवन लागे दुचित तहांहीं ॥
राम मंत्र लिखि दर्पण सुंदर ❀ स्वप्न माहिं उपदेश्यो शंकर ॥
कहैं न काहूसों शिव भाषा ❀ गुरुसों सविधि लेन अभिलाषा ॥
एक समय यकंत महँ स्वामी ❀ मम पितुसों कह अंतरयामी ॥
जान मंत्र शिव स्वप्ने दीन्ह्यो ❀ सो निज मुख उच्चारण कीन्ह्यो ॥

पुनि अस मंजुल वचन सुनायो * यही मंत्र शंकरसों पायो ॥
राम मंत्र जो दियो इशाना * सो प्रभु मुख सुनि अपने काना ॥
अचरज मानि गह्यो पद कंजन * दीजै सविधि मंत्र भवभंजन ॥
दोहा-प्रियादास बोले वचन, कीन्हे परम सनेह ॥
होनी रही सो ह्वै गई, जनि कीजै संदेह ॥ १६ ॥
अस कहि तीरथ करन कृपाला * जात भये ध्यावत नँदलाला ॥
एक बार दक्षिण पगु धारे * रीवां तजि पश्चिम पथ धारे ॥
जयसिंह सुत मम पितु तिन भ्राता * लक्ष्मण सिंह नाम अवदाता ॥
माधवगढ तिनको पुर रहेऊ * तेहिं परगन ह्वै प्रभु पथ गहेऊ ॥
हाटीग्राम जबै प्रभु आये * सकलदेश वासी तब धाये ॥
दर्शन करि सब शोर मचाये * परगट कपिल देव मुनि आये ॥
मम पितृव्य लक्ष्मणसिंह गयऊ * प्रभुहिं चीन्हि अति मोदित भयऊ
विनय कियो प्रभु रीवहिं चलिये * चरण सलिल दे कलिमल दलिये
प्रभु कह दक्षिण यात्रा करिके * ऐहौं रीवें अति सुख भरिके ॥
अस कहि दक्षिण यात्रा कीन्ह्यो * आय बहुरि रीवें सुख दीन्ह्यो ॥
हरि विमुखी पण्डित पुर केरे * वादविवाद कियो बहुतेरे ॥
सबको समाधान करि दीन्ह्यो * प्रभु प्रभाव सब हरिको चीन्ह्यो ॥
दोहा-मम पितु अरु पितृव्य दोउ, तिनको निकट बोलाय
आमिष अरु मछरी भखन, दीन्ह्यो सकल छोंडाय १७॥
फेरि कह्यो मम पितु विशुनाथै * मन्दिर रचि थापै रघुनाथै ॥
जाय प्राग पुनि ग्रन्थ बनायो * सिद्धांतोत्तम नाम धरायो ॥
वाणी सरल गूढता तामें * पढहिं लोग लखुझें समुझामें ॥
पुनि मम दोउ पितृव्य सुजाना * लक्ष्मण अरु बलभद्र प्रधाना ॥
शिष्य होनहित विनय सुनायो * प्रभु एकांत बोलि समुझायो ॥
मैं नहिं करौं शिष्य करनाऊं * पै अपने सम बोलि पठाऊं ॥
तिनके शिष्य होहु दोउ भाई * भक्ति भेद सो सकल बताई ॥
मेरो गुरुसुत बुद्धि विशाला * नाम जासु है मोतीलाला ॥

अस कहि ब्रजको पत्र पठायो ❀ मोतीलाल तुरत बोलवायो ॥
लक्ष्मण अरु बलभद्रहु काहीं ❀ शिष्य करायो रीवांमाहीं ॥
मम पितु विश्वनाथ कर जोरी ❀ कह्यो नाथ अब का गति मोरी ॥
प्रभु कह तोपर करि मैं दाया ❀ स्वप्ने जो उपदेश बताया ॥

दोहा—सोई सत्य माने रहो, कियो रहो गुरुभाव ॥
अवशि तोहिं मिलिहैं हरी, यामें नाहिं दुराव ॥ १८ ॥

प्रगट मन्त्र दीन्हें तोहिं दासा ❀ होय उपद्रव इत अनयासा ॥
मम पितु अति आनंदित भयऊ ❀ प्रभुमहँ ईश्वर भावहि कियऊ ॥
पुनि जे राजगुरू द्विजराई ❀ अग्निहोत्री नाम कहाई ॥
श्रीबलभद्र आदि द्विज केते ❀ संमत कीन्ह्यो मिलि मिलि तेते ॥
राजगुरू हमहीं कहवाये ❀ वृत्ति मंत्र दीवे की पाये ॥
प्रियादास सो मन्त्रहि दैकै ❀ हरत मन्त्र हमरी क्षय कैकै ॥
अस विचारि सिगरे द्विजराजा ❀ लगे मरन निज जोरि समाजा ॥
परयो राजगृह महँ संकेता ❀ सुमिरैं सिगरे कृपानिकेता ॥
प्रियादास सुनि यह सन्देहू ❀ गये अग्निहोत्रिनके गेहू ॥
कह्यो मन्त्र मैं देहौं नाहीं ❀ राजद्वार तुम मरौ वृथाहीं ॥
पै जो मन्त्र देन मैं चैहों ❀ स्वप्ने माहँ काह करि लैहों ॥
तिनमें श्रीबलभद्र सुज्ञानी ❀ जन उपकारक वेद विधानी ॥

दोहा—सो प्रभुके पद परशिकै, कह्यो जोरि युग हाथ ॥
जो भावै सो कीजिये, तुम समरथ हौ नाथ ॥ १९ ॥
मम पितु श्रीविशुनाथको, प्रियादास गुणि दास ॥
तासु दिवान अयान अति, ताहि बोलायो पास २०
हरिविमुखी वेश्यानिरत, सीवनराम दिवान ॥
कह्यो ताहि गणिका तजौ, छूटी काम निदान २१ ॥

सो नहिं वेश्या तज्यो अभागी ❀ भयो न कछु हरिको अनुरागी ॥
छूटि गयो कछु दिनमहँ कामा ❀ भोदूलाल रह्यो मतिधामा ॥

राज्यकार्य्य ममपितु तेहिँ दीन्ह्यो * सो प्रभुको शासन शिर कीन्ह्यो ॥
धर्मरीतिसों राज्य सुधारा * अबलों जासु सुयश संसारा ॥
नीति धर्ममें निपुण सोहाये * ताते स्वामीके मन भाये ॥
पण्डित यक नैयायिकवादा * नाम जासु कामताप्रसादा ॥
प्रभुकर किय कछु दिन सतसंगा * सो तजि न्याय रँग्यो हरि रंगा ॥
नाथ गये कहुँ तीरथ काहीं * मन्दिर बन्यो अमहिया माहीं ॥
आयगये प्रभु थोरेहि काला * पधरायो तहँ दशरथ लाला ॥
रही चरण चौकी संकेता * सिय बैठन उपाय किय केता ॥
सीता मूरति बैठी नाहीं * मम पितु कह्यो दुखित गुरुपाहीं ॥
प्रियादास तुरतहिं तहँ आये * देखि जानकिहिं अतिदुख पाये ॥

दोहा–मोदक देहैं तोहिं बहु, हे मिथिलेशकुमारि ॥
अस कहिके निज हाथते, सीतहि दियो पधारि ॥२२॥

बैठिगईं मूरति तेहिं माहीं * अचरज आयो सब जन काहीं ॥
अवध अमहियाको दिय नामा * तहँकी सरिसरयू सुखधामा ॥
कृष्ण कूप यक कूप बनायो * सुधा समान तासु जल आयो ॥
लक्ष संतकी जुरी समाजा * आये नात जाति बहु राजा ॥
लघु सरिता लखि जन अकुलाई * भयो समल जल पीशि न जाई ॥
प्रभुसों सब जन कहे दुखारी * नाथ पियें का बिगरो बारी ॥
बाढे आजु सुधरि जल जावे * ज्येष्ठ मास विश्वास न आवे ॥
प्रभु कह कठिन रामकहँ नाहीं * हरि चाहे बनिहै क्षण माहीं ॥
जेठमास तेहि दिन बिन वरषा * कीन्ह्यो सरित सलिल उत्करषा ॥
बहिगो मल भो निर्मल नीरा * जयजयकार कियो जन भीरा ॥
मम पितु अन्न अडारजुहायो * क्रमक्रमते सब जनन बटायो ॥
यक द्विज क्षुधित घुस्यो तहँ पेली * दियो सिपाहीं ताकहँ रेली ॥

दोहा–सो फिरि आयो नाथ पहँ, तब प्रभु चले रिसाय ॥
दौरि दूरिलों मम पिता, गिर्‌यो चरणमें जाय ॥२३॥

प्रभु कह जे तुव भृत्य अडारा * ते द्विजके बाधक अविचारा ॥

जो तू देहि अडार लुटाई * तौ मैं फिरहुँ प्रीति अति छाई ॥
मम पितु तुरतहि भटन बोलाई * दीन्ह्यो सकल अडार लुटाई ॥
लाखन भिक्षुक लूटन लागे * जयजयकार मच्यो चहुँ भागे ॥
पहर सवाइक लुट्यो अँडारा * तब मम पितु कहँ निकट हँकारा ॥
प्रभु कह लूटन वारण कीजै * मैं प्रसन्न कम कमते दीजै ॥
तब करि वारण लूटन काहीं * मम पितु समुझयो कागज माहीं ॥
उठत रह्यो जितनो दिन एकू * तितनहिं उठ्यो कम्यो नहिं नेकू ॥
यक दिन मम पितु मातु सोहाये * हरि पूजन हित मंदिर आये ॥
पूजन करि पोशाक पहिराये * तीनहुँ मूरति अतर लगाये ॥
सीता नयन अतर लगि गयऊ * तब तेहि आंसू आवत भयऊ ॥
विघ्न मानि पितु कह प्रभु पाहीं * प्रभु कह विघ्न अहै कछु नाहीं ॥

दोहा—राम जानकी लषणमें, ज्यों ज्यों करिहौ भाव ॥
त्यों त्यों दरशैहैं कला, दिन दिन दून उराव ॥ २४ ॥

एक बधिर आयो तेहि ठाईं * कह्यो नीक मोहिं करौ गोसांईं ॥
प्रभु कह हम कछु मंत्र न जानैं * वैद्य निकट कहुँ करौ पयानैं ॥
मम पितु कह तैं कृष्ण कूपमें * मज्जन कीजै प्रेम रूपमें ॥
बधिर जाय तेहि कूप नहायो * कान बधिरता तुरत गवांयो ॥
पुनि सरिता महँ कमल बोवायो * अबलौं फूलत अति छबि छायो ॥
द्वै ब्राह्मण पंढरपुर माहीं * प्रभु शिष होन हेतु बिलखाहीं ॥
द्विजन प्रेम वश गुणि उर जामी * गमने पंढरपुर कहँ स्वामी ॥
दोहुन द्विजन कियो उपदेशा * भोर होत आये यहि देशा ॥
प्रभु ढिग गे मम पितु त्रय भाई * मम पितुसों प्रभु कह करुणाई ॥
मैं तुव प्रेमविवश हौं भारी * उपदेशिहौं सुस्वप्न मँझारी ॥
अस कहि बहु धीरज प्रभु दीन्ह्यो * फिरि पंढरपुर गमनहिं कीन्ह्यो ॥
वहां जाय पुनि दोउ द्विजकाहीं * उपदेश्यो हरि मनु सुखमाहीं ॥

दोहा—नाथ पंढरी दरशिकै, देशहि दिय मुद गाथ ॥
विनय माल निर्माण किय, इतै ग्रंथ विशुनाथ ॥ २५ ॥

एक निशामें आयके, स्वप्नमें प्रियदास ॥
विश्वनाथ उपदेश दिय, सकल रीति हरि रास ॥२६॥

अतिशय मन आनँद रस पाग्यो * भक्तिवृक्ष फूल्यो फल लाग्यो ॥
दक्षिणते पंडित यक आयो * विपुल वाद करि गर्व बढायो ॥
खर्रा सो प्रभु ढिग पठवायो * देखि अशुद्ध ताहि बहुरायो ॥
सो पठयो पुनि कोपहि कीन्हें * हरि खर्रा अशुद्ध करि दीन्हें ॥
तबहूं मिटी न तेहि मति थोरी * शास्त्रार्थ मति कियो बहोरी ॥
यक पंडित गोविंद सुनामा * अरु कामताप्रसाद ललामा ॥
दोउ पंडित किय तेहि सँग वादा * सूत्र अचित चित करि मर्यादा ॥
दक्षिणको पंडित तब हार्‍यो * पुनि नहिं ताकर उत्तर उचार्‍यो ॥
जा दिन भई अमहिया माहीं * रामप्रतिष्ठा सुख चहुँ घाहीं ॥
मम पितु विश्वनाथ कहँ बोली * सादर भाष्यो बात अतोली ॥
आजु जागरणकी विधि होई * जागहु तुम कुटुम्ब सब कोई ॥
मम पितु विश्वनाथ तब भाखो * प्रभु मम विनय हृदय यदि राखो ॥

दोहा—कहहु कथा भागवतकी, होय कुटुंब पुनीत ॥
करौं जागरण कुटुमयुत, तुव मुख सुनिबे प्रीत २७

तब प्रभु यह आधो श्लोका * व्याख्या सहित कह्यो हरि शोका ॥
गच्छ देवि ब्रजं भद्रे गोपीगोभिरलंकृतम् ॥
यह आधे श्लोकहि केरी * निशि भर व्याख्या भाष्यो टेरी ॥
दंड चारि रजनी रहि बाकी * तब मम पितु बोल्यो सुख छाकी ॥
औरहु आगे कहौ गोसांई * समुझावहु मोहिं करि करुणाई ॥
प्रभु कह यदि व्याख्या षट मासा * मैं कहिहौं तोहिं देत हुलासा ॥
तब पंडित सिगरे शिर नाये * व्यास रूप तिनके मन भाये ॥
पुनि मम जननीको ढिग आनी * कह्यो वचन करुणारस सानी ॥
पढ़ै भागवत संयुत प्रीती * ऐहै तोहिं सत्य परतीती ॥
हरि मंदिर सुंदर बनवावै * सीता राम तहां पधरावै ॥

देवनाथ पौराणिक हूरे * प्रभु पद पंकज प्रेमहिं पूरे ॥
ते भागवत विशेष पढ़ै हैं * हेतु भाव ध्वनि अर्थ बुझैहैं ॥
प्रभु शासन शिर धारि मम माता * पढ्यो भागवत अर्थ विख्याता ॥

दोहा—प्रभु प्रतापते मातु मम, अर्थ भागवतकेर ॥
पढ्यो पक्ष दश पंच करि, बाद सुबुद्धि निबेर॥२८॥
पिता जननि मम होतभे, प्रियादासके दास ॥
नितप्रति आनँद लहतभे, ध्यावत यदुपति रास२९
कह्यो फेरि विशुनाथसों, काल कठिन गति देखि॥
पर वृंदावन जाइहौं, यह तनुत्यागि विशेखि॥३०॥
राधा वल्लभके विरह, मोसों रहो न जाय ॥
सूत्रभाष्य मोहिं रह रचन, तुमहीं दियो बनाय३१

ऐसो मम पितुसों कहि गाथा * गये जरोलीको पुनि नाथा ॥
चतुर मास व्रत करि सविधाना * बांचि सार्थ भागवत पुराना ॥
यमुना तट निज आश्रम माहीं * संत समाज बैठि चहुँ घाहीं ॥
संवत बाण सात वसु एका * चैत्र वदी परिवा निशिनेका ॥
बहु ब्राह्मणन तुरंत बोलायो * सबते गोविंद मंत्र जपायो ॥
शिष्य भवानीदीनहि कीन्ह्यो * मम पितु तेहि आचार्या दीन्ह्यो ॥
मंत्र दियो पुनि वैष्णवदासै * संत सेव वरण्यो इतिहासै ॥
साधुसेव तेहि दिय अधिकारा * कियो सिद्धि सब हृन्यो खँभारा ॥
पूरब मुख पद्मासन करिकै * राधाकृष्ण शोर मुख भरिकै ॥
भानु उदै स्वामी तनु त्यागा * देखि सबनको अचरज लागा ॥
जेहि दिन त्याग्यो कुटी शरीरा * तेहि दिन वृंदावन महँ धीरा ॥
सेवाकुंजमाहँ प्रभु बैठे * लखे जु केशवदासहु पैठे ॥

दोहा—नाती चेला जानिकै, केशवदास बोलाय ॥
कह्यो जरौली जाहु तुम, ते गमने शिरनाय ॥३२॥

मम पितृव्य बलभद्रको, तेहिं दिन स्वप्न देखान ॥
आयगये रीवां प्रगट, श्रीप्रियदास सुजान ॥ ३३ ॥
मम पितु अरु पितृव्य दोउ, गे दर्शनके हेत ॥
कह्यो वचन प्रियदास तब, मैं अब जाहुँ निकेत ३४
जब तुम तीनिहुँ बंधु तनु, त्यागि ध्याय ब्रजनाथ॥
तब मिलिहौं गोलोकमें, प्रकट पसारे हाथ ॥ ३५ ॥
यह स्वप्नो बलभद्र लखि, कह्यो सबनसों भोर ॥
जानि गये सब नाथगे, जहँ बस नंदकिशोर॥३६॥
अमित चरित प्रियदासके, कहँलों कहौं बखानि॥
नेसुक जो जानो रह्यो, सोवण्यों सुखसानि॥३७॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरचरित्रे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दोहा-प्रियादासको शिष्य वर, विश्वनाथ पितु मोर ॥
तासु चरित वर्णन करत, लगति लाज नहिं थोर॥ १ ॥
पै लखि भक्तन संप्रदा, हुलसति अति मति मोरि॥
भक्त चरित वर्णन करौं, करौं कछू नाहिं खोरि २॥
जग जाहिर हरिजन जनक, चरित कहौं जो नाहिं॥
तौ सज्जन सब दूषि हैं, बांचे ग्रंथ मोहिं काहिं॥३॥
मम प्रिय मम पितुपरमप्रिय, खास कलम युगलेश
सो वरण्यो मम पितु चरित, जौन भयो जेहिं देश ४
मतिअनुसार वर्णन करौं, तौन ग्रंथ अनुसार ॥
सावधान श्रोता सुनहु, संत चरित सुखसार ॥५॥
लिख्यो भविष्य पुराणहिं माहीं ॥ प्रियाचार्य हैहैं कलिमाहीं ॥
सो करिहै जीवन उद्धारा ॥ तासु होइ यक शिष्य उदारा ॥

नाम रोमहर्षण अति पूता * वरण्यो जेहि पुराण पितु सूता ॥
सोइ रोमहर्षण विज्ञाता * पायो हलधर कर कुश घाता ॥
सोइ रोमहर्षण कलिकाला * भो मो पितु विशुनाथ भुआला ॥
अष्टादश षट चालिस साला * माधव सित चौदशि शुभकाला ॥
लियो जन्म मो पितु विशुनाथा * रींवां नगर महामुद गाथा ॥
आह्निक तासु रह्यो यहि भांती * चारि दंड बाकी उठि राती ॥
करै भावना ध्यानहि माहीं * सखी रूप सिय रामहि काहीं ॥
ध्यानहि महँ सब कृत्य करावैं * चारी दंड यहि भांति बितावैं ॥
आह्निक श्रीसीतापति केरो * करहिं भावना बेद निबेरो ॥
चारि ध्यान निशि दिनमें करहीं * भव वासना सकल परिहरहीं ॥
दोहा—एक समय विशुनाथको, स्वप्ने शंकर आय ॥
राम षडक्षर मंत्रको, दीन्ह्यो कर्ण सुनाय ॥ १ ॥
प्रियादास भगवान वपु, एक समय पुनि आय ॥
उपदेश्यो सोइ मंत्रको, तेहि एकांत लैजाय ॥ २ ॥
ग्रंथ विनयमाला निर्माण्यो * प्रियादासको हरिवपु जान्यो ॥
पुनि मंदिर सुंदर बनवायो * सीता राम तहां पधरायो ॥
करै रामलीला मधु मासा * कहुँ कहुँ होय प्रत्यक्ष तमासा ॥
अवध नगर गवने यक काला * बालि स्वप्न महँ रघुकुल पाला ॥
दीन्ह्यो चक्र प्रचंड प्रकाशा * कह्यो तोहिं रक्षी सब आशा ॥
जागि प्रकाश लख्यो निज शीशा * मान्यो पूरकृपा निज ईशा ॥
पुनि रामायण विमल बनायो * सादर सब साधुन बटवायो ॥
पुनि चलि चित्रकूट यक काला * पुरश्चरण तहँ कियो विशाला ॥
लख्यो स्वप्न महँ यक निशिमाहीं * सखी रूप चलि गोपुरकाहीं ॥
सीताराम रास जहँ होतो * महामोद छनछनहिं उदोतो ॥
सुखीरूप तहँ आप सिधाई * रहन लग्यो पुर महँ सुख छाई ॥
पुरश्चरणको यह फल पाई * दै दक्षिणा द्विजन समुदाई ॥
दोहा—आयो पुनि रींवा नगर, राम रंग महँ छाकि ॥
पार्षद वपु मानत निजै, रहनलगो प्रभु ताकि ॥ ३ ॥

ठाकुर गांव सेमरियाकेरो ❀ यक जग मोहसिंह निवेरो ॥
मम पितु पर कृत्या करवायो ❀ आधी निशि प्रकाश करि धायो ॥
कोउ कह स्वप्न माहँ ढिग आई ❀ कृत्यानल आयो दुखदाई ॥
स्वप्नहि उठि विशुनाथ भुवाला ❀ लख्यो पूर्वदिशिभाल कराला ॥
होत सहस्र कुलिशनकर पाता ❀ दमकि रही दामिनी अघाता ॥
यतने महँ तेहि मंदिर तेरे ❀ कढे कुँवर द्वै दशरथ केरे ॥
दियो पूर्व दिशि बाण चलाई ❀ कृत्यानल सब गयो बिलाई ॥
स्वप्न माहँ प्रभु शासन दीन्ह्यो ❀ क्यों नहिं ग्रंथ संस्कृत कीन्ह्यो ॥
तब संगीत रघुनंदन ग्रंथा ❀ रच्यो राम सिय राससुपंथा ॥
बहुरि राम आह्निक निर्माण्यो ❀ निशिदिन चरित रामको ठान्यो ॥
शासन दीन्ह्यो राम बहोरी ❀ भाषा रचहु कीर्ति सब मोरी ॥
तब नाटक गीतावलि आदिक ❀ रच्यो ग्रंथ साधुन अह्लादिक ॥
दोहा—एकसमय हनुमंत मिलि, स्वप्ने मोद बढाय ॥
श्रीरघुनंदनको तहां, दीन्ह्यो तुरत मिलाय ॥ ४ ॥
द्विज भिक्षुकाचार्य विज्ञानी ❀ तिनसों श्रुतिको अर्थ बखानी ॥
ग्रंथ सर्व सिद्धांत अनंता ❀ रच्यो परंतु सकल सियकंता ॥
कियो रामजप गंगा तीरा ❀ अनाचार किय विप्र अधीरा ॥
स्वप्न माहँ प्रभु ताहि बतायो ❀ सो विशुनाथहि सत्य देखायो ॥
एक समय विशुनाथ नरेशा ❀ गमनत भयो जिरोहा देशा ॥
मारि शत्रु सो मुलुक छोड़ायो ❀ तबते पुरश्चरण करवायो ॥
तहँ देवी धरि रूप कराला ❀ आई जहँ विशुनाथ भुवाला ॥
कह्यो तोहिं को रक्षणहारा ❀ मानउतारन मम अधिकारा ॥
तहँ मूरति यक पवनपूतकी ❀ रही सो निकट सनेह सूतकी ॥
सो प्रत्यक्ष बोलि कह विशुनाथै ❀ मतिभय कर मम कर तुवमाथै ॥
पितु कह जो रक्षक तुम मेरे ❀ हैहै कहा कौन कोहु केरे ॥
एक समय पुनि आइ कबीरा ❀ कह्यो वचन पितुसों मतिधीरा ॥
दोहा—दुष्ट शिष्य मम ग्रंथको, दीन्ह्यो अर्थ बिगारि ॥
बीजक तिलक बनाय मम, दीजै अर्थ सुधारि ५

बीजक तिलक बनावन लागे * तब द्वै सत्संगी दुख पागे॥
पंडित धोकलसिंह चँदेला * दूसर फत्तेसिंह बघेला ॥
कह्यो आप का भूप बनावो * क्यों कबीर पंथी कहवायो ॥
पितु कह है मोहिं राम रजाई * ताते मैं यह देहुँ बनाई ॥
दोउ कह तुम नृप करहु बहाना * पितु कह जो शासन भगवाना ॥
तुमहीं परी निशा महँ जानी * सोवहु नेम सहित दोउ ज्ञानी ॥
तेहि निशि दोउ कहँ कह रघुनाथै * सत्य मोर शासन विशुनाथै ॥
ते दोउ आय शीश पदनाये * बीजक तिलक नरेश बनाये ॥
यक दिन हरि व्यारी करवाई * पूजक बीरी दियो न जाई ॥
राम स्वप्न महँ कह पितु पाहीं * बीरा आजु लहे हम नाहीं ॥
तुरतै जागि कियो तहँ कीका * बीरा भोगलग्यो नहिं ठीका ॥
महाराज जयसिंह महाना * विश्वनाथको पिता सुजाना ॥
दोहा—मरण समय जेहि प्रागमें, द्वादश हस्त सिधारि ॥
अगवानी गंगा लई, बिन वर्षा बढि वारि ॥ ६ ॥
राधाकृष्ण मूर्ति तिन पूजी * जिनके सम सुंदर नहिं दूजी ॥
तिनको प्रागहि चह पधराई * तबते कह्यो स्वप्न महँ आई ॥
हम चलिहैं अब संगहि तेरे * इतै रहन अभिलाष न मेरे ॥
तब लै राध कृष्णहि जोडी * थाप्यो रीवां उर सुखबोडी ॥
एक समय आयो यक संता * लीन्हें शालिग्राम अनंता ॥
तिनमें एक मूर्ति पितु मांग्यो * सो नहिं दीन्ह्यो अमरषराग्यो ॥
मूरति लै गमन्यो पुनि जबहीं * स्वप्ने महँ भाषे हरि तबहीं ॥
मोहिं महीप समीप न दैहै * तौ तैं जरा मूरसों जैहै ॥
तो कहँ कह्यो भूप अस वानी * द्वै शत मुद्रा देहौं ज्ञानी ॥
जो तैं लेहै एको पैसा * तौ होई तुव अवशि अनैसा ॥
भोर लौटि साधू सो आयो * मूरति दै अस वचन सुनायो ॥
मुद्रा द्वै शत हम नहिं लेहैं * विना मोल मूरति तोहि देहैं ॥
दोहा—पितु लै मूरति शिर धरयो, चक्र चिह्न दरशाय ॥
रासविहारी नाम तेहि, राख्यो प्रीति बढाय ॥७॥

एक समय पितुसों कह्यो, फत्तेसिंह बघेल ॥
राम कृष्णमें भेद है, यामें करहु न खेल ॥ ८ ॥
तब पितु कह नाहिं भेद है, रामकृष्णके रूप ॥
देखिलेहु कहुँ जायकै, प्रभुकी मूर्ति अनूप ॥ ९ ॥
जाय अमहियाभवनमें, रामचंद्रको देखि ॥
पुनि लीन्ह्यो सोइ मूर्तिको, कृष्णस्वरूप परेखि १०
फत्तेसिंह कह सत्य यह, करिये आप बखान ॥
प्रभु परंतु कलिकालमें, है आश्चर्य्य महान ॥ ११ ॥

एक समय बैठे महराजा * गिरी गाज करि घोर गराजा ॥
भयो भवन ऊपर षट टूका * परो नगर चहुँदिशि जनु लूका ॥
एक टूक भीतर कढि आयो * सो कढिगयो तेज नहिं छायो ॥
लियो राखि रघुकुल महराजा * दीनदयालु गरीब नेवाजा ॥
एक समय ज्वर पीडित भयऊ * पूजा पाठ बहुत विधि ठयऊ ॥
तब रघुनन्दन शासन दीन्ह्यो * तुम कत ठन ठन मनठन कीन्ह्यो ॥
मस्तक दिशि हनुमत पुनि आये * कह्यो सोउ दुख देत मिटाये ॥
पितु उठि भोर पुजनकी साजू * दिय फेंकवाय विचारि अकाजू ॥
तेहिं निशि आय कह्यो हनुमाना * तोर अमंगल सकल पराना ॥
सूत्रभाष्य पुनि मम पितु कीन्ह्यो * हरिभक्तन विप्रनकहँ दीन्ह्यो ॥
एक समय पुरमहँ अति घोरा * मारि उपद्रव भयो न थोरा ॥
जोनि मूर्ति पूजे पितु मोरा * जनकनंदिनी अवध किशोरा ॥

दोहा—राख्यो तिनको नाम अस, कौशल राजाधिराज ॥
तासु पुजारी मरिगयो, तुलसीराम विराज ॥ १२ ॥

पितुहिं भयो अतिशय सन्देहा * प्रभु पूजक छूटी किमि देहा ॥
कह्यो राम स्वप्नेमहँ आई * यह पूजक विधि दियो नशाई ॥
मोकहँ सब देवनके पीछे * बैठायो प्रभु करि नहिं ईछे ॥
सोइ अपराध मरयो यहि काला * मति कीजे सन्देह भुवाला ॥
पितु उठि भोरनाम जेहि गणपति * सौंप्यो पूजनगुणि तेहि शुभमति ॥

सो अबलों प्रभुकेर पुजारी * बनो अहै नृप कृपाधिकारी ॥
जगन्नाथ यक समय सिधाई * पितुको दीन्ह्यो स्वप्न देखाई ॥
पञ्चाशत सहस्रको अटका * देहु चढाय इमैं बिन खटका ॥
पितु तुरंत करि सब संभारा * दियो चढाय पचास हजारा ॥
अबलों लगत पुरी महँ भोगू * यह प्रसंग जानत सब लोगू ॥
एक समय कालिका सिधारी * मांग्यो भूषण कनकहि हारी ॥
दिय देवी भूषण बनवाई * अबलों पहिरे परम सोहाई ॥

दोहा-नाम जरौली ग्राम यक, तहँ द्विज अम्बरदास ॥
सो कीन्ह्यो अपचार कछु, रघुकुल नाथनिवास १३

राम दियो मम पितै रजाई * यहि वैष्णवै देहु निकराई ॥
विश्वनाथ लिखि पठयो पाती * नहिं निकस्यो सो कुपित अघाती
दीन्ह्यो स्वप्न ताहि रघुराई * नहिं कढिहै तो जई नशाई ॥
तब वैष्णव सो पुरी सिधायो * मन्दिरके सब दास टिकायो ॥
चित्रकूट यक समय सिधारे * राममंत्र जप करन विचारे ॥
तहँ प्रगटे श्रीगुरु प्रियदासा * पूजन कीन्ह्यो सहित हुलासा ॥
कोउ रिपु ममपितु पर यककाला * किय मारन अभिचार कराला ॥
निशा स्वप्न देख्यो महराजा * सर्पहि खायो भटा समाजा ॥
भोर भिक्षुकाचार्य्य समीपा * कह्यो स्वप्न वृत्तांत महीपा ॥
सो कह इते प्रत्यक्षहि भयऊ * सर्पहि भटा खाय बहु लयऊ ॥
हमहुँ स्वप्न देखा यहि राती * सो तुमसों वर्णों सब भांती ॥
राम नाम जे अमित जपाये * ते तुव कालरूप यहि खाये ॥

दोहा-ब्रजके गोस्वामी रहे, नाम गोविंदहिलाल ॥
एक समय सो भेद किय, नंदलाल रघुलाल ॥ १४ ॥

तिनसों कह्यो मोर पितुभूपा * भेद न राम कृष्णके रूपा ॥
हरिगोविंदहि स्वप्नहि भाखे * जौन भेद श्रुति तुम कहिराखे ॥
तोहि नृप जो अस अर्थहि करिहैं * तुमहिं न उत्तर वहुरि उघरिहैं ॥
राम कृष्णके रूप न भेदा * यह सिद्धांत पुराणहु वेदा ॥

एक समय बरसे नहिं मेघा * तब नृप गायो रागहि मेघा ॥
भई वृष्टि भे प्रजा सुखारी * फूटि चली सब सेतु कियारी ॥
नाम छत्रपति राव कसोटा * बिना पुत्र दुख भो तेहिं मोटा ॥
तिनसों पितु कह पुत्रहि होई * भयो पुत्र देख्यो सबकोई ॥
एक समय महँ काशिनरेशा * करि देवी भागवतहि वेशा ॥
विश्वनाथके निकट पठायो * यह भागवत सत्य अस गायो ॥
दुर्जन मुखचपेटिका नामा * ग्रंथ पठायो अतिहि ललामा ॥
पितु किय चंडभास कर ग्रंथा * श्रीभागवत सत्य सतपंथा ॥

दोहा-काशी सो पठवाय दिय, सब पंडित तेहि बांचि ॥
श्रीभागवतहि सत्य किय, नृप प्रमाण मन सांचि १५॥

एक समय भइ वृष्टि विशाला * बढ्यो सोनन्द महा कराला ॥
उतरि गये पांयन विशुनाथा * भयो बहुरि गंभीरहि पाथा ॥
गये अवधपुर कौनेहुँ काला * जपे राम मनु गहि द्विज माला ॥
सरयू मज्जन हेतु सिधारा * बहे भूप लहि दारुण धारा ॥
कोश तीनि लग कियो पयाना * नहिं छूट्यो सीतापति ध्याना ॥
आकस्मात मिल्यो तहँ दीपा * खडे भये हैं सुमिरि महीपा ॥
दियो दक्षिणा द्विजन समाजा * पुनि आये पितु तीरथराजा ॥
रोंके सब अँगरेज सिपाहीं * कर दीन्हे बिन कोउ न नहाहीं ॥
पितु जेहि थल महँ जाय नहायो * वेणी क्षेत्र तहां चलि आयो ॥
यह सुनिके अँगरेज विचारी * माफी दीन्ह्यो आठ हजारी ॥
तब पितु गंगाष्टकहि बनायो * ताहि सुनावत जल बढि आयो ॥
बांधो गिरि बघेलगढ गूढो * होतो जाहि तकत रिपु मूढो ॥
रही गुप्त गंगा तेहिं माथा * तेहि प्रगटायो पितु विशुनाथा ॥

दोहा-दिल्ली नगर समीपमें, एक महीपकुमार ॥
जस जस कियो उपाय सो, तस तस भयो बेजार १६॥

तेहिं कह गोविंदलाल गोसांई * मानहु विश्वनाथ हरि नांई ॥
सो किय सकल यही उपचारा * तुरत पुत्र भो रहित विकारा ॥

गंगापार एक द्विज हेरी * गर्भ गिरै असि गति तियकेरी ॥
विश्वनाथको सो कहु मान्यो * भयो पुत्र पुनि भयो सयान्यो ॥
ते दोउ चलि विश्वनाथहि नेरे * मुंडन किय निज पुत्रन केरे ॥
औरहु चरित अनेकन तिनके * कहौं कहां लगि भणित कविनके॥
खास कमल युगलेश प्रवीना * कियो जो ग्रंथ उदोत नवीना ॥
नामचरित विश्वनाथ विलासा * तिनमें सब युगलेश प्रकाशा ॥
रचे जितेक ग्रंथ पितु मोरा * राम परंतुहि शास्त्र निचोरा ॥
साधु सुबुद्धि सबै हरिदासा * ते मम पितुसों जौन प्रकाशा ॥
सब वैष्णव मतते अविरुद्धा * रच्यो ग्रंथ सिगरे पितु शुद्धा ॥
राम कृष्णके रूप अभेदा * यह प्रतिपादक संमत वेदा ॥

दोहा-ते ग्रंथनके नाम सब, रचि छप्पय कमनीय ॥
मैं वर्णौं यहि ग्रंथमें, सुनहु साधु रमणीय ॥ १७ ॥

छप्पय-विनयमाल रचि प्रथम फेरि आनँद रामायन ॥
गीतावलि नाटकौ अनँद रघुनंदन चायन ॥
शांतशतक व्यंग्यप्रकाश कृष्णावलि काहीं ॥
नीति ध्रुवाष्टक बृहद एक लघुनीति उछाहीं ॥
अरु श्रीकबीर बीजक तिलक, धर्मशास्त्र चौखंड किय ॥
हनुमतपँतीसिसिकारके, कवितरच्यो अति मुदितहिय ॥ १ ॥
कुंडलिया चौंतीसि तत्त्व परकाश बखान्यो ॥
ग्रंथ विचार सुसार धनुषविद्याको ठान्यो ॥
वरग जलाशय विधिहु बीछि सर्पादि मंत्र पुनि ॥
वैद्यक पाक विलास और बहु अष्टक किय गुणि ॥
ब्रज जिवनगोसांई नामको, रच्यो गीत रघुनंदनो ॥
परम प्रमोद विधुनाटको, कृष्णाह्निक भाषा बनो ॥ २ ॥
राधावल्लभ भाष्य सर्व सिद्धांत सुहायो ॥
रामाह्निक करि ग्रंथ संगित रघुनंदन भायो ॥
गुरुग्रंथ सुमारग तिलक तिलक अध्यात्महु केरो ॥
वाल्मीकि संदर्भ भागवत तिलक घनेरो ॥

ये रच्यो ग्रंथ संस्कृत सुभग माधव गायक नामवर ॥
वरण्यो भुशुंडि रामायणो भाषामें सुखप्रद सुघर ॥ ३ ॥

दोहा-धनि धनि अवध नगर प्रजा, पशु पक्षीजन ग्रात ॥
भजनावलि यक ग्रंथ लघु, रच्यो नाथ अवदात ॥ १८ ॥
संवत वोनइस सै सुभग, आयो ग्यारह साल ॥
मास अषाढ चतुर्दशी, पितु ज्वर भयो कराल ॥ १९ ॥
तेहिं दिन देख्यो स्वप्न पितु, गायक काशीनाथ ॥
आय कह्यो कछु आपकों, हुकुम दियो रघुनाथ ॥ २० ॥

यह तनु त्यागि दिव्य वपु पाई ❀ वसहु रामसहँ अब तुम आई ॥
यह लखि स्वप्न पिता सुख मान्यो ❀ भोरहिं मोहिं बोलाय बखान्यो ॥
अब तुम करहु राज्य संभारा ❀ करि भरोस दशरत्थ कुमारा ॥
अबै न करहु दरश जगदीशा ❀ जाहु बिते कछु दिन बिसवीसा ॥
अब यात्रा साकेत हमारी ❀ करहु न कछू सोच उर भारी ॥
जो वियोग को कछु दुख मानो ❀ तौ उपाय तुमहूं अस ठानो ॥
दियो जो गुरू मंत्र तुमकाहीं ❀ जपहु नेम करि ताहि सदाहीं ॥
तौ हम तुमहिं मिलब साकेते ❀ तहँ जान्हु हमार संकेते ॥
साधुनमें कीन्हेहु भल प्रीती ❀ रहेहु स्वतंत्र गुणेउ नहिं भीती ॥
लोक हेतु जो कह अँगरेजू ❀ सो मानेहु गुणि रघुवर तेजू ॥
रामकृष्ण कर कियो भरोसा ❀ दिहेहु दंड नहिं गुणि विन दोसा ॥
दान द्विजन साधुन सन्माना ❀ यही मुक्तिको पंथ प्रमाना ॥

दोहा-यहि विधि मोहिं उपदेश करि, सिखै भजनकी रीति ॥
झिरियाते रीवां गये, करि न कालकी भीति ॥ २१ ॥

यक दिन इक वैष्णव तहँ आयो ❀ परमहंस निज नाम सुनायो ॥
तेहिं देखत पितु कह्यो कबीरा ❀ भलो कियो आयो मतिधीरा ॥
सो कह साहेब हुकुम चलनको ❀ तुम कस बैठे जगत मिलनको ॥
तुमहिं लेवावन हम इत आयो ❀ जस आगम निदेशमहँ गायो ॥
पितु कह चलिहों संशय नाहीं ❀ सो सुनि गयो साधु घरकाहीं ॥

फेरि मोहिं पितु निकट बोलायो * दै मुद्रिका सुवचन सुनायो ॥
रामरजाय शीश धरि लेहू * करहु राज्य अब विन संदेहू ॥
अस कहि भे पुनि मौन विज्ञानी * रहे बैठि हरिध्यानहि ठानी ॥
जपत सुरामकृष्ण कर माला * अर्धोन्मीलित नयन विशाला ॥
संवत बोनइससै इग्यारा * कातिक मास रह्यो भृगुवारा ॥
कृष्णपक्ष सप्तमि जब आई * डेढ पहर आये दिनराई ॥
तब तनु तजि पूरुब यश गायो * पिता लोक साकेत सिधायो ॥

दोहा-कहत मोहिं पितु चरित सब, सज्जन लागति लाज ।
ताते संक्षेपहि कह्यौं, गुणि संतनको काज ॥२२॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरचरित्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

दोहा-एक भक्तका पुनि कहौं, घन आनँद इतिहास ॥
घन आनँद है नाम जिन, सुनत हरत भवत्रास॥१॥

मथुरापुरी मलेच्छन घेरे * लाखों यमन खडे चहुँ फेरे ॥
कारण तासु सुनौ अब सोई * दिल्लीमें शाहिजादा कोई ॥
एक समय मधुपुरी सिधायो * सबै मथुरियन हास बढायो ॥
पनहीको रचिकै यक माला * डार्‌यो शाहिजादाके भाला ॥
सो प्रकोपि निज कटक बोलायो * चहुँकित मथुरापुरी घेरायो ॥
दीन्ह्यो हुकुम नगरमहँ जेते * अब बचि जायँ जियत नहिं तेते॥
मारनलगे मलेच्छ प्रचारी * बचे न माथुर भटहु भिखारी ॥
घनआनँद वंशीवट पाहीं * बैठे रहे भावना माहीं ॥
राधामाधवके मधि रासा * सखी रूप छवि पीवन आशा ॥
हाथे लीन्हे रहे मुखारी * तेहि क्षणमें भावना पसारी ॥
सोइ मुखारी करमें लीन्हे * दिन रजनी बिताय सब दीन्हे ॥
सोइ भावना महँ गिरिधारी * बीरी दीन्ह्यो पाणि पसारी ॥

दोहा-सोइ बीरी मुख मेलियो, लगे सुरावन सोय ॥
सोई बीरीको रामसुख, प्रगट लख्यो सबकोय २॥
मुखमें भरि आयो जब बीरा * तबहिं ध्यान छोड्यो मति धीरा ॥
तेहि अवसर मलेच्छ तहँ आई * मारे खड्ग शीश महँ धाई ॥
उचकि गयो सो खड्ग न काट्यो * तब पुनि मारि ताहि अति डाट्यो॥
तदपि कटी नहिं तिनकी देही * तब घनआनँद कृष्ण सनेही ॥
कही पुकारि कृष्णसों बानी * यह तैं कौन रीति अब ठानी ॥
मोको भूरि मार है देहू * यत्न कियो छूटै नहिं नेहू ॥
कौन हेतु राखत संसारा * क्यों न बोलावै नंदकुमारा ॥
यद्यपि तजन तनु यत्नहु लाग्यो * तदपि न तैं उघार अनुराग्यो ॥
कह्यो यमनकहँ पुनि गोहराई * अबकी मारहु शिर कटि जाई ॥
हन्यो यमन अस कटिगो शीशा * सब यमनन विमान नभ दीशा ॥
घनआनँद तनु कढ्यो न लोहू * सो चरित्र लखि पर्‌यो न कोहू ॥
ब्रजमें विदित कथा यह सारी * संक्षेपहि इत लिख्यो विचारी ॥
घनआनँदके विपुल कवित्ता * अबलों हरत कविनके चित्ता ॥
घनआनँदकी कथा अनेका * ब्रजमें विदित अहै सविवेका ॥
जाहि सुननको होय हुलासा * करै सो जाय विमल ब्रजवासा ॥
दोहा-यह घन आनँदकी कथा, वर्णन कियो समास॥
औरहु भक्तनकी कथा, नेसुक करौं प्रकाश ॥३॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरचारित्रे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दोहा-विदित जासु जगमें सुयश, परमहंस अवतंस ॥
जेहि मुख ज्ञान उदोत रवि, किय अज्ञान तम ध्वंस १
चित्रकूटते रामप्रसादा * परमहंस जिनकी मर्यादा ॥
रामप्रेम मद मत्त सदाहीं * रहै जगत जानै कछु नाहीं ॥
पूरबके राजा कोउ आहीं * लहि सत्संग तज्यो जगकाहीं ॥

चित्रकूट महँ करहिं निवासा * पंडित बडे शास्त्र सब श्वासा ॥
तुलसीकृत रामायण देखी * कियो तासु अभ्यास विशेखी ॥
और सकल पुस्तक दै डारे * तुलसीकृत महँ प्रीति पसारे ॥
नीचहुँ जाति जो बांचै कोई * बैठें जाय अवशि मुदमोई ॥
यहि विधि कालक्षेपको करते * चित्रकूट निवसे सुख भरते ॥
रहे शिष्य यक नरहरिदासा * चुटकी मांगे भोजन आसा ॥
चुटकी मांगि मांग नित लावै * रामप्रसाद सुसाधु खपावै ॥
अन्न भवन महँ बचै न बासी * जो आवै तेहिं देहि हुलासी ॥
सावन मास कबहुँ अधराता * वर्षि रहे घन घेरि अघाता ॥

दोहा—कुटी निकट अवसर तहीं, आये संत पचास ॥
जय जय सीताराम अस, बोले भोजन आस ॥२॥

परमहंस सुनि संतन वानी * नरहरिसों बोल्यो मतिखानी ॥
ढूंढि भवन महँ भोजन देहू * संत निराश फिरैं नहिं केहू ॥
नरहरि कह्यो कछू घर नाहीं * भीतर का ढूंढन हम जाहीं ॥
रामप्रसाद कह्यो तू जावै * जो पावै सु ढूंढि लै आवै ॥
नरहरि कह्यो कहहु तुम कैसो * होय न देहु होय कहुँ ऐसो ॥
रामप्रसाद कह्यो तू जावै * कछु नहिं पावै तो फिरि आवै ॥
तब नरहरि उठि भीतर गयऊ * अन्न विविध विधि देखत भयऊ ॥
बनी मिठाई विविध प्रकारा * पय दधि साकहु अन्न अपारा ॥
सीता लवण घृत ईंधन ढेरी * लखि विस्मित मति भइ तेहि केरी
लौटि परयो पद बोल्यो बैना * नाथ उतै कमती कछु हैना ॥
रामप्रसाद साधु सब बोली * दियो केंवार कोठरी खोली ॥
संतन कह्यो लेहु मन जोई * रामप्रताप कमी नहिं होई ॥

दोहा—साधु सबै परिचरण युत, लिय जितनो मनकीन ॥
भोजन करि मोदित भये, पथ हित औरहु लीन ॥३॥

कमी कोठरी मै नहिं साजू * भोर संत गे सहित समाजू ॥
कोऊ तासु भेद नहिं जाने * सुनि सुनि सब अचरज मनमाने ॥
एक दिवस श्रीरामप्रसादा * जानन हित कामद मर्य्यादा ॥

उपर गवनहित गिरि चढि चलेऊ ❀ बीचहिं संतरूप हरि मिलेऊ ॥
कह्यो कवन हित उपर सिधारो ❀ क्यों गिरिकी मर्य्याद बिगारो ॥
रामप्रसाद कह्यो नहिं मानो ❀ चल्यो शैलके उपर तुरानो ॥
गयो एक तरुवरके मूला ❀ गिऱ्यो पषाणहि उखरी कूला ॥
चलन समर्थ रह्यो कछु नाहीं ❀ तब संशय उपजी मनमाहीं ॥
तब सोइ साधु फेर प्रगटाना ❀ कहत भयो कछु कहो न माना ॥
रामप्रसाद बिलखि अस गायो ❀ नहिं मान्यो ताको फल पायो ॥
तब सो आषधि दियो लगाई ❀ जसकी तस समरथ ह्वै आई ॥
फेर साधु भो अंतर्धाना ❀ रामप्रसाद गन्यो भगवाना ॥
दोहा-आय मिले हरि मोहिं इत, जान्यो नाहिं अयान ॥
अस कहि रामप्रसाद तहँ, कीन्ह्यो रुदन महान ॥ ४ ॥
तब पुनि साधुरूप हरि आये ❀ रामप्रसाद कह्यो परि पाये ॥
तुम हो राम मिले करि दाया ❀ हरहु मोर ममता मद माया ॥
तब प्रभु लीन्ह्यो अंक लगाई ❀ तै हसि मोर परम प्रिय भाई ॥
अब कछुक दिन जनन उधारो ❀ अंतकाल मम धाम सिधारो ॥
अस कहि हरि निज रूप छिपायो ❀ रामप्रसाद धाम निज आयो ॥
चित्रकूट महँ कियो निवासा ❀ रामभक्तिको करत प्रकाशा ॥
कराह अर्थ रामायण केरे ❀ जुरहिं सुनन हित संत घनेरे ॥
रामभक्तिकर करि उपदेशा ❀ करवावहिं दृढ भक्ति प्रवेशा ॥
मज्जाह मंदाकिनि नित जाई ❀ निज कर करि कैंकर्य सदाई ॥
करहिं रामरस रोजहि पाना ❀ यहि विधि नियरायो निरजाना ॥
जब कछु रोग शरीरहि आयो ❀ तब चढि ऊंच गेह गोहरायो ॥
जय जय सीताराम सुशोरा ❀ छायो चित्रकूट चहुँ ओरा ॥
दोहा-फूटिगयो ब्रह्मांडतेहिं, गयो रामके धाम ॥
वरण्यो रामप्रसादको, यह मैं चरित ललाम ॥ ५ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां
कलियुगखंडे उत्तरचरित्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दोहा—दूजे रामप्रसादको, कहौं सुभग इतिहास ॥
रामायण नैष्ठिक रहे, रह्यो अवधमें वास ॥ १ ॥

रहे उपासक जनकललीके ❀ ध्यान करैं नित तापद हीके ॥
बीतिगयो यहिविधि कछु काला ❀ बसत अवधमें प्रेम विशाला ॥
इक दिन सीता दर्शन आसा ❀ सरयूके तट कियो उपासा ॥
भये निरंबु तहँ व्रत साता ❀ प्रगटी जनकलली विख्याता ॥
निज कर बिंदु दियो तेहिं भाला ❀ सो नाहिं मिट्यो पर जलजाला ॥
तासु संपदा महँ अवलोहूं ❀ भाल बिंदु जाहिर सब कोहूं ॥
जेहिं क्षण सीता दर्शन पाये ❀ तेहिं क्षण उठि आसन कहँ आये ॥
भये तासु पद सत्य सनेही ❀ तन मन अर्पि दियो वैदेही ॥
यक दिन सरयू बाढन लागी ❀ उठे न सीयचरण अनुरागी ॥
तहँते कोशन जल बाढिगयऊ ❀ रामप्रसाद परश नहिं भयऊ ॥
देखि सबै अति अचरज माने ❀ सीय अनन्यभक्त पहिचाने ॥

दोहा—सुनहु और गाथा विमल, जेहि विधि रामप्रसाद ॥
हनुमतसों रामायणहि, पढ्यो सहित अह्लाद ॥ २ ॥

बाई इक दक्षिणते आई ❀ रामप्रसाद चरण शिर नाई ॥
कै शंका पूछ्यो यहि भांती ❀ लिखी जो सुंदर कांडहि पाती ॥
श्याम सरोज दाम सम सुंदर ❀ प्रभुभुज करिकर समदशकंधर ॥
इहां वीरताको नहिं साजू ❀ कौन हेतु कह श्यामसरोजू ॥
भवन, एक अति दीख सुहावा ❀ हरिमंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥

दोहा—रामनाम अंकित गृह, शोभा वरणि न जाय ॥
नवतुलसीके वृंद तहँ, देखि हर्षि कपिराय ॥ ३ ॥

रह्यो शपथ रावणको ऐसो ❀ रहै जगतमें धर्म न कैसो ॥
लंका मध्य बिभीषण मंदिर ❀ राम नाम अंकित किमि सुंदर ॥
कियो युगल शंका जब बाई ❀ रामप्रसाद सके न बताई ॥
राजापुरकहँ सो चलि आये ❀ संकटमोचन पद शिर नाये ॥

कियो तीनि व्रत हनुमत नेरे ✱ अंतर्ध्यान पवनसुत हेरे ॥
कहहु कवन हित करौ उपासा ✱ रामप्रसाद कह्यो सहुलासा ॥
समाधान कै शंका केरो ✱ अबहीं देव बताय निबेरो ॥
दोहा-तुलसी कृत रामायणौ, तुम सब देहु पढाय ॥
तो जनु दीन्ह्यो दान जिय, पवनपूत कपिराय ॥ ४ ॥
पवनपूत तब बचन बखाना ✱ समाधान सुनिये मतिवाना ॥
मानसरोवर रावण आयो ✱ दुर्वासा तहँ ध्यान लगायो ॥
रावण इंदीवर्ण उखारयो ✱ दुर्वासा तब नयन उघारयो ॥
कह सकोप रावणसों बानी ✱ वृथा बिगार्यो उत्पल खानी ॥
मानसरोवर मुनिन विहारा ✱ इंदीवर है मीचु तुम्हारा ॥
विदित सीय कह यह सब हेतू ✱ ताते भुज उपमा कहिहेतू ॥
दूसर समाधान अब सुनिये ✱ यामें कछु संदेह न गुनिये ॥
रावण जीत्यो इंद्रहि जाई ✱ लूटि भंडार लंक महँ आई ॥
नाना सुतन वस्तु सब दीन्ह्यो ✱ प्रभु वराह मूरति यक चीन्ह्यो ॥
दियो विभीषणकाहिँ बोलाई ✱ कह्यो विभीषण तब शिर नाई ॥
जो मोहिँ देहु तो अस कहिदीजै ✱ अपने मनकी सब करि लीजै ॥
रावण कह्यो करहु चितचाहा ✱ तुम्हैं न होई कछु दुख दाहा ॥
दोहा-तबहिं विभीषण मुदित है, नव मंदिर बनवाय ॥
राम नाम अङ्कित भवन, दिय वराह पधराय ॥ ५ ॥
धर्म अनेक करन सो लाग्यो ✱ रह्यो न रावणके भय पाग्यो ॥
समाधान ये युगल प्रधाना ✱ विदित सो सरस्वति वायु पुराना ॥
कांडन प्रति बाइस चौपाई ✱ तुलसी काठिन रमायण गाई ॥
सो सब तुमको देब पढाई ✱ राम कृपा औरहु लगिजाई ॥
रामप्रसाद सुनत चितचायन ✱ पवनपूतसों पढि रामायण ॥
आये अवध बहोरि सुखारी ✱ बाईकी शंका निर्वारी ॥
विरच्यो रामायणको टीका ✱ अवध माहँ अबलों है नीका ॥
अवध माहँ वसिकै बहुकाला ✱ गावत राम नाम गुण माला ॥

काल पाय ध्यावत रघुबीरा * गो वैकुंठहि त्यागि शरीरा ॥
रघुपति रसिक धन्य जग प्रानी * गावत जासु सुयश सुखदानी ॥
धन्य धन्य संतन गुणगाथा * जेहिं गावत जन होत सनाथा ॥
श्रोता तुम्हहु धन्य सब कोऊ * संत कथा जाकी रुचि होऊ ॥
दोहा-संत रामपरसादके, अहैं अमित इतिहास ॥
मैं समास वर्णौं इतै, सुनहु सबै सहुलास ॥ ६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां
कलियुगखंडे उत्तरचरित्रे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

दोहा-अब श्रीहरिगुरु नाम जेहिं, नाथ मुकुंदाचार्य ॥
तासु चरित वर्णन करौं, साधक सिगरो कार्य ॥ १ ॥
श्रीहरिगुरु मुकुंद मम स्वामी * कृपापात्र विनतासुत गामी ॥
जगजीवन लखि परम अनाथा * प्रगटे कनउज देशहि नाथा ॥
कछुक कालमें भयो विरागा * हरिपदमें उपज्यो अनुरागा ॥
कुल परिवार गेह तजि दीन्ह्यो * कछु दिन गंगा सेवन कीन्ह्यो ॥
पुनि अस मन विचार किय नाथा * दरश करहुँ नीलाचल नाथा ॥
करत पर्यटन देशनमाहीं * देत ज्ञान बहु लोगन काहीं ॥
नीलाचल कहँ गये कृपाला * दरशन लै जन भये निहाला ॥
लै दरशन जगदीशहिं केरो * बसे सहित आनंद घनेरो ॥
दोहा-तहं श्रीराज गोपाल गुरु, निज ढिग प्रभुको आनि ॥
कियो समाश्रय मुदित मन, महत पुरुष पहिचानि ॥ २ ॥
तहां नाथ कछु कालहि माहीं * पढ्यो निखिल वेदांतन काहीं ॥
इतिहासन पुराण प्राचीने * औरहु भक्ति ग्रंथ पढि लीने ॥
सेवन करहिं सो महाप्रसादा * रहहिं यकांत सहित आह्लादा ॥
हरिविमुखिन कहँ करि उपदेशा * दियो प्राप्ति करि श्रीपति देशा ॥
सिखवत जनन भक्तिकी रीती * यहि विधि गयो काल कछु बीती
श्रीगुरुराज गोपाल विज्ञानी * यह अपने मनमें अनुमानी ॥

सब आचार्यन निकट बोलायो * सभा मध्य अस वचन सुनायो ॥
मम सुस्थान अधिपके लायक * कियो मुकुंदहि श्रीरघुनायक ॥
दोहा—कृपापात्र जगदीशके, ये हैं ज्ञान अगार ॥
इन्हैं सौंपि दीबो उचित, और न कछू विचार ॥ ३ ॥
सो सुनि सब सम्मत यह कीन्हे * पदवी आचारजकी दीन्हे ॥
कह्यो बहुरि तिनको गुरु ज्ञानी * यह ऐश्वर्य लेहु गुणखानी ॥
सो न लियो गुरु आयसु मांगी * ह्वांते चले कृष्ण अनुरागी ॥
आये तीर्थराज महँ नाथा * तहां कियो बहु जनन सनाथा ॥
पुनि बदरीवन कहँ प्रभु जाई * रहे तहां कछु दिन चित लाई ॥
हरिद्वार लोहितपुर ह्वैके * नैमिष कुरुक्षेत्र थल ज्वैके ॥
अवधपुरी औ जनकनगरमहँ * कियो वास एकांत सो थलमहँ ॥
पुनि मथुरा कहँ गये कृपाला * तहां कियो सत्संग विशाला ॥
दोहा—तहँ मम पितु गुरु नाम जेहिं, प्रियादास मुनिराज॥
ब्रजमंडल विचरत मिले, ले सँग संत समाज॥४॥
प्रियादास बोले वरज्ञानी * तुम हो सकल ज्ञानके खानी ॥
सुनहु भागवत कर सप्ताहा * सब संतन मधि होय उछाहा ॥
सो सुनि मुदित कीन आरम्भा * रचि तहँ सतलोकको खम्भा ॥
तामें शुक यक बैठ्यो आई * अरु यक अहि तहँ परचो दिखाई॥
तिन लखि प्रियादास कह वानी * कथा सुनन आये दोउ ज्ञानी ॥
तब अहि आय खम्भपै लपट्यो * यदपि भक्ष पै शुकहि न झपट्यो ॥
होत अरंभ नितै दोउ आवै * कथा समाप्त भये दोउ जावैं ॥
जब सप्ताह समापत भयऊ * तेहिं दिन दोऊ तनु तजि दयऊ ॥
दोहा—यह अचरज लखि संत सब, मुक्त गुण्यो दोउ काहिं
हरिगुरुकी प्रियदासकी, सुस्तुति करी तहांहि॥५॥
कछु दिन वसि तहँ फेरि कृपाला * गंगातट कहँ चले उताला ॥
यक थल ब्रह्मशिला जेहिं नामा * गंगातट सुंदर सुखधामा ॥

ताके निकट बसे प्रभु आई ❀ पुरवासी सब खबरिहि पाई ॥
आये सकल किये परणामा ❀ दरस पाय पूजे मन कामा ॥
कह्यो न यह थल निवसन योगू ❀ इहां न आवहिं दिवसहु लोगू ॥
रहत ब्रह्मराक्षस यहि ठामा ❀ महा भयानक तनु कुत छामा ॥
जो कोउ बसत इहां दिन राती ❀ मारत तेहि प्रत्यक्ष चढि छाती ॥
चलहु वेगि बसिये यहि ग्रामा ❀ करहु पवित्र सकल जन धामा ॥

दोहा–विहँसि कह्यो प्रभु अब अवसि, करिहौं यहीं निवास ।
सब थलमें निवसत सदा, रघुपतिरमानिवास ॥ ६ ॥

ब्रह्मशिला माधि अयन पुरानो ❀ रहत रह्यो तहँ ब्रह्म महानो ॥
तहँ वास कीन्ह्यो प्रभु जाई ❀ अतिरमणीय देखि सुखपाई ॥
तहां ब्रह्मराक्षस निशि आयो ❀ प्रभुहिं निरखि हर्षित गोहरायो ॥
कियो कृतारथ मोहिं कृपाला ❀ वसहु नाथ यहि धाम विशाला ॥
यहि थलमहँ बांचहु सप्ताहा ❀ मोहिं तारि दीजै मुनिनाहा ॥
सुनत वचन दाया उर आई ❀ दियो ताहि सप्ताह सुनाई ॥
सुनत ब्रह्मराक्षस गति पाई ❀ पुरवासिन उर विस्मय आई ॥
शरणागत भे सब जन आई ❀ लहे अंत ते पद यदुराई ॥

दोहा–यहि विधि प्रभुके बसत तहँ, सूर्यप्रसादहि नाम ॥
आयो प्रभुके निकट सो, जान चहत हरिधाम ॥ ७ ॥

कह्यो नाथ सो मोहिं गत देहू ❀ बांचि भागवत यह यश लेहू ॥
प्रभु कह श्रम ह्वैहै अति मोको ❀ कौन प्रकार सुनैहौं तोको ॥
द्विज कह तुम्हें श्रमै भरि ह्वैहै ❀ मेरो तो सब विधि बनि जैहै ॥
सो सुनि करुणा करि मम नाथा ❀ किय अरंभ सप्ताह सुगाथा ॥
रह्यो सात दिन निर्जल द्विजवर ❀ ह्वै यकाग्र ध्यायो पद यदुवर ॥
सतये दिन शरीर तजि दीन्ह्यो ❀ द्विजको मुक्ति जानि जन लीन्ह्यो ॥
कबहु गंग मज्जन हित स्वामी ❀ गमने ध्यावत अंतर्यामी ॥
तहं मृतक यक बालक लीन्हे ❀ तासु जनक जननी दुख भीने ॥

दोहा-देखि नाथको रुदन करि, गहे कमल पद जाय ॥
कह्यो राखिये वंश मम, दीजे याहि जिआय ॥८॥

प्रभुकह मृतक न है यह बालक * ह्वैहै यह तुव कुलको पालक ॥
देख्यो वसन टारि मुख ताको * रोवत लखि फल गुन्यो कृपाको ॥
सुतको ले जननी गृह आई * बजन लगी आनंद बधाई ॥
ऐसे चरितन करत अपारा * ब्रह्मशिला महँ बसे उदारा ॥
तहँ लक्ष्मीप्रपन्न विज्ञानी * भयो समाश्रित प्रभु पहिचानी ॥
प्रभु पढाय भागवत पुराना * दीन्ह्यो ताहिं विमल विज्ञाना ॥
सो विचरत विचरत महिमाहीं * आयो रीवां नगरहि काहीं ॥
सो सुनि मो पितु आदर करिके * राख्यो निज भवनहिं मुदभरिके ॥

दोहा-सो प्रभुके सब चरित वर, दीन्ह्यो पितहिं सुनाय ॥
सो सुनि तिनके दरशको, कीन्ह्यो मन हरषाय ॥९॥

मम पितु कह लक्ष्मीप्रपन्नसो * आवहिं केहि विधि ह्वै प्रसन्न सो ॥
जबलगि वैनहिं मम पुर आवहिं * तबलगि केहिं विधिसुतहरिध्यावहिं
सो कह तबलगि मैं उपदेशू * करिहौं रावर मानि निदेशू ॥
इमि कहि मोहिं दैकै कछु ज्ञाना * गमन कियो पुनि पुर भगवाना ॥
द्विज रघुवर प्रपन्न मतिधामा * यथा लाभ महँ पूरण कामा ॥
ताको मम पितु दीन निदेशू * स्वामी कहँ आनहु मम देशू ॥
सो कह मैं अवश्य लै ऐहों * तुव मन कामहि पूर करैहों ॥
अस कहि द्विज गमनेउ हर्षाई * प्रभुसों कह दीनता देखाई ॥

दोहा-रीवां नगर नरेश प्रभु, नाम जासु विशुनाथ ॥
सो चाहत दर्शन करन, चलि तहँ करिय सनाथ १०

सुनि रघुवर प्रपन्नके बयना * आयसु दियो नाथ मुद अयना ॥
नृपति नगर गमनहुँ मैं नाहीं * पै नृप प्रेम सोच मन माहीं ॥
रीवां नगर विशेष छिपैहौं * भक्त भूपको दर्शन दैहौं ॥
अस कहि करि दाया मम नाथा * आय सबन दीन्ह्यो मुदगाथा ॥

वर हरिमंदिर लक्ष्मण बागा ❀ बसे तहां युत हरि अनुरागा ॥
पितु मम जाय दरश तहँ लीन्हे ❀ ममहित विनय वचन कहि दीन्हे ॥
प्रभु प्रसन्न ह्वै कह शुभ बानी ❀ तुम सुत कह यहि थल मख ठानी
विधिपूर्वक चक्रांकित करिहौं ❀ दै हरिमंत्र मोद उर भरिहौं ॥

दोहा-संवत अष्टादश शतै, अठानवहिको साल ॥
कातिक सित एकादशी, दिय मोहिं मंत्र विशाल ११

औरहु जे मम बंधु अपारा ❀ करिकै कृपा तिनहिं उद्धारा ॥
मंत्री सुभट आदि मम जेते ❀ प्रभुके शरणागत भे तेते ॥
सोनभद्र तट देश नवेला ❀ तहां बसैं बहु अबुध बघेला ॥
तिनके गृहमें यह कुलरीती ❀ हरि तजि करहिं प्रेतसो प्रीती ॥
सुत व्रत बंधन करहिं निकेतू ❀ मानहिं यही मरणकर हेतू ॥
तुलसी पूजहिं विधवा नारी ❀ सधवा डारहिं वेगि उखारी ॥
तहां गांव यक देउरा नामा ❀ बहु गिरि मधि दुर्गम वह ठामा ॥
तहां नाथ यक समय पधारे ❀ तिन पर कृपा करन चित धारे ॥

दोहा-तहँ प्रभुके दरशन लिये, आये सब यक साथ ॥
पाय दरश सुख छायकै, ह्वैगे सबै सनाथ ॥ १२ ॥

गई कुमति भइ शुभमति भारी ❀ प्रेमबीज उर बयो मुरारी ॥
होन समाश्रयको चित दीन्हे ❀ प्रभुसों विनय वार बहु कीन्हे ॥
तिनकी लखि दीनता महाई ❀ भई दया दिय मंत्र सुनाई ॥
तबते तहँके लोग लोगाई ❀ करनलगे हरिभक्ति सुहाई ॥
अनाचार सब तजि तिन दीन्हे ❀ ज्ञानवान ह्वै हरिकहँ चीन्हे ॥
पुनि देवराधिप सुवन बोलाई ❀ दै शासन व्रतबंध कराई ॥
मेटी मरण भीति तिनकेरी ❀ तिनपै कीन्ही कृपा घनेरी ॥
पुनि रीवां नगरहि प्रभु आये ❀ बसत तहां कछु काल बिताये ॥

दोहा-यक दिन मज्जन करन सरि, गयो पुजारी प्रांत ॥
अति कराल तहँ व्याल बड, डस्यो करन जिय घात १३

गिरयो आय सो प्रभुपद पाहीं * कह्यो नाथ रक्षहु मोहिं काहीं ॥
प्रभु कह यहि हरिमंदिर माहीं * सोचहि मति लगिहै विष नाहीं ॥
नेकहुं विष नाहिं तेहि सरसानो * हरिपूजन लाग्यो हरषानो ॥
लिय बचाय द्विजके इमि प्राना * यहि विधि चरित कियो प्रभुनाना ॥
पुनि जगदीश पुरी कहँ जाई * हरिदर्शन किय आनँद छाई ॥
पुनि दक्षिण यात्रा प्रभु कीन्ह्यो * दिव्य मूर्तिके दर्शन लीन्ह्यो ॥
रंगनाथ प्रभु प्रथम पधारयो * पुनि तोताद्रिक जान निहारयो ॥
करत करत तीरथ बहुतेरे * पहुँचे पद्मनाभके नेरे ॥

दोहा—तहां रह्यो यक देशमें, रामराज जेहिं नाम ॥
सो प्रभुपदहि प्रणाम करि, मांगी भक्ति ललाम १४

ताहि भक्ति शिक्षा दै स्वामी * तहँते चले सुमिरि खगगामी ॥
विचरत विचरत पुनि यहि देशू * आये करत ज्ञान उपदेशू ॥
ग्राम अमर पाटन जेहिं नामा * तहँ जब आये पूरण कामा ॥
तहँ मैं जाय विनय बहु करिके * लायो निज पर प्रभु पद परिके ॥
विनय करी कर जोरि बहोरी * राज्य करनकी नहिं मति मोरी ॥
तब प्रभु कह छोंडहु दुचिताई * श्रीपति कृपा सबै बनिजाई ॥
सोहुसम लहि प्रभु कृपा महाई * राज्य भार शिर लियो उठाई ॥
मोपर करिके कृपा कृपाला * लक्ष्मणबाग रहे कछु काला ॥

दोहा—तुलसीरामहि वैद्य सुत, राधेकृष्णहि नाम ॥
तेहि सुत रघुनंदन भये, बालहि ते मतिधाम १५॥

भयो समाश्रित प्रभुपद जाई * पढ्यो भक्ति मारग सुखदाई ॥
एक समय तेहिं रोग सतायो * सन्निपात भो बोलि न आयो ॥
तब स्वप्नहिं द्वै पुरुष बताये * बाचिहैं नाहिं बिन गुरु ढिग जाये ॥
तेहिं घरके तेहिको धारि याना * प्रभु समीपको किये पयाना ॥
ताको प्रभु समीप धार दीन्हे * करि रोदन विनती बहु कीन्हे ॥
प्रभुके दरशन पावत सोई * उठि कह अब मोहिं कछू न होई ॥
गई व्याधि मिटि रही न थोरी * लहि आयसु गृह जैहौं दोरी ॥
अस कहि रघुनंदन घर आयो * तेहिं परिवार लोग सुख पायो ॥

दोहा-पुनि मम अंतःपुर महल, होत रहै यह लाल ॥
प्रसव भये दिन चारिमें,नारि होहिं वश काल १६॥
यहि विधि भई मृतक त्रय नारी * तब प्रभु दासन आरतहारी ॥
जानि समय निज निकट बोलाई * राख्यो लक्ष्मण बाग टिकाई ॥
नाथ कृपा प्रसवहिके काला * ग्रस्यो न तियको काल कराला ॥
आनँद सहित नारि गृह आई * मेरे गृहमें बजी बधाई ॥
पुनि कछु काल बसे पुरमाहीं * करत कृतारथ मम कुल काहीं ॥
रामायण भागवत सुनाई * दीन्ही भक्ति राह दरशाई ॥
रामकृष्णको कीर्त्तन शोरा * मच्यो बघेल खंड चहुँ ओरा ॥
पुनि हरिगुरु कछु काल बिताई * गमने ब्रह्मशिला सुख छाई ॥
दोहा-कछुक काल लगि नाथ मम, ब्रह्मशिला सुखधाम॥
सुरसरि तट निवसत भये,सब विधि पूरण काम १७॥
मैं पुनि गयो विते कछु काला * प्रभुदर्शन करि भयो निहाला ॥
प्रभुसों विनय करी कर जोरी * पुरी पुनीत करहु चलि मोरी ॥
सुनि मम विनय दियो मुसकाई * कह्यो यकांतहिं मोहिं बोलाई ॥
करिहौं मैं उत अवशि पयाना * हरि दासन सब ठौर समाना ॥
अस कहि प्रभु रीवां पगु धारे * हमहुँ नाथके साथ सिधारे ॥
बोनइससे गेरहि कर साला * मधुशित एकादशी विशाला ॥
कृष्णप्रपन्न शिष्य कहँ बोली * कह्यो आपनी आशय खोली ॥
रामानुज स्वामी निशि आई * मोहिं अस शासन दियो सुनाई ॥
दोहा-लीला वैभवमें बसत, बीति गयो बहु काल ॥
चलहु त्रिपाद विभूतिको, बोल्यो त्रिभुवनपाल १८
मैं करिहौं वैकुंठ पयाना * विते बहुत दिन बिन भगवाना ॥
कृष्णप्रपन्न कह्यो कर जोरी * यह प्रार्थना सुनहु प्रभु मोरी ॥
चित्रकूटकी तीर्थ प्रयागा * अथवा ब्रह्मशिला बडभागा ॥
जहां आपुको आयसु होई * तहँ पहुँचै हैं हम सब कोई ॥
तब बोले हरि गुरु मुसक्याई * कोहिं थल हैं नाहिं श्रीयदुराई ॥

अपरिछिन्न जो हरि कहँ मानहु ❀ मम पयान तो अनत न ठानहु ॥
कृष्ण प्रसन्न फेरि करजोरी ❀ कह्यो सुनहु विनती यह मोरी ॥
केहि दिन आप विकुंठ सिधरिहैं ❀ तहँके वासिनको सुख भरिहैं ॥

दोहा–तब कह कृष्णप्रपन्नसों, श्रीहरि गुरु मुसकाय ॥
अक्षय तृतियाको अवशि, हम देखब यदुराय १९

सोइ जब अक्षय तृतिया आई ❀ तब हरि गुरु वैष्णवन बोलाई ॥
झांझ आदि बाजन बजवाई ❀ रामकृष्ण कीर्त्तन करवाई ॥
एक मुहूरत लग कर जोरी ❀ नयन मूंदि श्रीपतिहिं निहोरी ॥
करि मुद्रा संहार तहांहीं ❀ आतम अर्पण करि हरिकाहीं ॥
पुनि दोऊ कर नाथ उठाई ❀ कृष्णदूत निज निकट बोलाई ॥
अर्चा विग्रह निज शिर धारी ❀ ऊर्ध्व पुंड्र दै प्रभा अमापी ॥
शुद्ध कुशासन महँ थिर ह्वैकै ❀ कृपादीठि दासन पर ज्वैकै ॥
द्वितिया तिथिको नाथ बिताई ❀ उत्तर दिशि पग करि सुखछाई ॥

दोहा–रुद्रखंड शशि संवते, माधव मास अकुंठ ॥
अक्षय तृतियाको गये, श्रीहरिगुरु वैकुंठ ॥ २० ॥

तिनको लहि परताप प्रचंडा ❀ रामानुज सिद्धांत अखंडा ॥
यहू देशमें प्रचरो पूरो ❀ नास्तिक वाद भयो सब दूरो ॥
प्रभु दासनकी भवकी भीती ❀ मिटी सकल भै हरिपद प्रीती ॥
को कृपालु ऐसो जगमाहीं ❀ भवसागर तार्‌यो गहि बाहीं ॥
यहि विधि प्रभुके चरित अपारा ❀ वरणि सकहि नहिं मुखहु हजारा ॥
प्रभु पद पोत पाय मुदमाहीं ❀ तरिहौं मैं भवसागर काहीं ॥
श्रीप्रभु पद प्रताप बल पाई ❀ आनँद अंबुनिधे सुखछाई ॥
बिन श्रम मैं विरच्यो सुखसारा ❀ हरियश सहित सुमति विस्तारा ॥

सो०–जय प्रभुपद अरविंद, हरन कठिन त्रयतापके ॥
निज जन मनहि मिलिंद, नित अनंद मकरंदप्रद ॥ १ ॥

श्रीहरिगुरुको चरित बनाई ❀ दियो कछुक संक्षेप जनाई ॥
लघु मति मम प्रभु चरित अपारा ❀ किमि वरणौं संयुत विस्तारा ॥

जग मंडल जिन सुयश अखंडा ❀ जासु शरण महँ नहिं यमदंडा ॥
भक्ति शास्त्र आचारज सोई ❀ निज गुरु इव मान्यो सब कोई ॥
जिनको सुयश गाय संक्षेपा ❀ धोयो तनु कलिकल्मष लेपा ॥
यह संप्रदा सदा चलि आवै ❀ निज गुरु चरित अंत महँ गावै ॥
रच्यों यथामति मैं यह ग्रंथा ❀ नहिं दूषिहैं जे थिति सत्पंथा ॥
मैं नहिं कछू काव्य गति जानौं ❀ निज गति लखि मूरख अतिमानौं
पै सज्जन कीन्हे अति दाया ❀ निज पद रज दै किय शुचि काया
दीन्ह्यो मोहिं निदेश यह नीको ❀ संत सुयश तजि वर्णन फीको ॥
ताते संत सुयश निर्माना ❀ कीन्ह्यो कछुक रह्यो जस जाना ॥
मैं जो निज अघ करौं बडाई ❀ बितैं जन्म बहु तउ न सिराई ॥
दोहा-भयो राजकुल जन्म मम, धन यौवन मद घोर ॥
अस पांवर पावन करत, यक वसुदेव किशोर ॥ २१ ॥
सो वसुदेवतनय पद कंजा ❀ जिनको मन मलिंद मनरंजा ॥
तिनके पद भवसागर माहीं ❀ तरणिसम मत तारन काहीं ॥
कोन संत सम दीनदयाला ❀ सहिं दुखदाहि दीन दुख माला ॥
तिनको यश वर्णन न अघाऊं ❀ कलि दव जरत सुधा सर पाऊं ॥
अबै और सज्जन वर जेते ❀ देखे सुने मोरहू तेते ॥
तिनको सुयश कह्यो नहिं भाई ❀ तासु हेतु मैं देहुँ सुनाई ॥
हरिगुरु चरित समापत करिकै ❀ वर्णव और चरित श्रम भरिकै ॥
कवि संप्रदा रीति यह नाहीं ❀ ताते ग्रंथहु अंत यहांहीं ॥
बांकी चरित जे संतन केरे ❀ अतिशय विमल दीख श्रुत मेरे ॥
कहिहौं तिनके चरित सुहावन ❀ वर्त्तमान रसिकावलि पावन ॥
श्रोता तुम सब मोहिं पियारे ❀ जे मम ग्रंथ सुनन पगु धारे ॥
तुम कीन्ह्यो उपकार हमारा ❀ सुन्यो ग्रंथ गुणि शुद्ध अपारा ॥
दोहा-बार बार कर जोरिकै, तुमको करौं प्रणाम ॥
का दीबेके योग्य मैं, राम करै मन काम ॥ २२ ॥
बांचि बांचि जो ग्रंथ सुनावै ❀ ताहि प्रणाम मोरि मन भावै ॥

सो मम सुत बंधहु ते प्यारो * सोई भ्राता गुरु सखा हमारो ॥
तेहि सम कौन मोर उपकारी * कहै ग्रंथ मम दोष विसारी ॥
जग महँ कौन दोष अस होई * मम करणीते भिन्नहि जोई ॥
पै अस मानस करौं विचारा * सज्जन करत अधम उद्धारा ॥
और चरित संतनके जेते * प्रतिज्ञात हैं मोरहु तेते ॥
तिनको उत्तर संत चरितमें * विरचत हौं विस्तार भरितमें ॥
संत समागम जहँ जहँ होई * तहँ तहँ ग्रंथ कहै सब कोई ॥
मोरे मन अतिशय विश्वासा * कियो ग्रंथमहँ संत प्रकाशा ॥
ताते सादर सुनि है संता * जे अनन्यजन हैं भगवंता ॥
करिहैं सादर गान सुजाना * जिनकी प्रीति संत रस पाना ॥
ते संतन पद रज शिर धरिकै * विनय करौं शिर अंजलि करिकै

दोहा—दयासिंधु जगबंधु हरि, करुणाकर यदुराज ॥
करहु आपनो जानिकै, शरणागत रघुराज ॥२३॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजुदेवकृते
श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

दोहा—सादर अवनि उदंड अति, लषण उपासक जोय ॥
दास उर्मिलाकी कथा, कहत अहौं मुदमोय ॥ १ ॥

प्रथम जन्म ब्राह्मण कुल भयऊ * ग्यारह वर्ष बीति जब गयऊ ॥
तबते उपज्यो महाविरागा * कीन्ह्यो गृह कुल संपति त्यागा ॥
लषण उर्मिला पद अनुरागा * अतिहिं अनन्य निरंतर जागा ॥
रह्यो भवन पंजाबहि देशा * विचर्यो तहँ कछु काल विशेशा ॥
तहँते चल्यो अवधपुर आयो * लषण उर्मिलाके रँग छायो ॥
द्वादश वर्ष कियो तहँ वासा * लषण उर्मिला दर्शन आसा ॥
जबते अवधनगर महँ आये * श्रीकंगालदास सँग पाये ॥
भो कंगालदास कर संगा * तेहि प्रभाव भो भाव अभंगा ॥
यक दिन कियो विनय तिन पाहीं * देति उर्मिला दर्शन नाहीं ॥
हे कंगालदास करु दाया * मिलै दरश अस करहु उपाया ॥

तब कंगालदास मुसकयाई * कह्यो ऊर्मिलादास बुझाई ॥
रचहु विनय पद त्यागहु लाजा * गावहु जहँ तहँ संत समाजा ॥
दोहा—जनकलली करुणावती, दर्शन देहै तोहिं ॥
मूसानगर विशेषिकै, पुनि तुम मिलिहौ मोहिं ॥ २ ॥
अस कहिकै कंगाल प्रिय, चल्यो अवधपुर त्यागि ॥
आगे ताको चरित मैं, रचिहौं अति अनुरागि ॥ ३ ॥
लहि शासन कंगालको, दास ऊर्मिला हर्षि ॥
यह पद रचि गावनलग्यो, अवध गलिन उत्कर्षि॥४॥
पद—ऊर्मिलादर्शन माई दे ॥ लषण सहित सियश्यामलि मूरति ॥
गौर विशाल माधुरी मूरति जानकी पूजन दे ॥
लक्ष्मण नारि स्वभाव कृपाले निज पद सेवन दे ॥
परमउदार हृदयते स्वामिनि भक्ति सनातन दे ॥
दास ऊर्मिलाकी विनय सुनीजे शरण सुहावन दे ॥ १ ॥
दोहा—यह पद गावै लाज तजि, वागै गलिन विहाल ॥
लगी आश उर मिलहिं कब, दंपति लक्षणलाल ॥ ५ ॥
यक दिन रामघाट महँ आये * सोइ पद गावत सरयु नहाये ॥
कनक भवन कहँ चले नहाई * बीच मिली तिय सहित कसाई ॥
राम राम कहि लखि मुख फेरा * भयो अशुभ मोहिं आजु सबेरा ॥
लियो कसाई तेहि पछिआई * पाछू पति आगू तिय आई ॥
दूरि दूरि रहु अस मुख भाषै * मोहिं पति छुवै ताहि अति माषै॥
तब तिय कह्यो कौन तैं अहई * का गावै का मनमहँ चहई ॥
जो तोहिं कह्यो दास कंगाला * ताको फल पायो यहि काला ॥
तब प्रभुके उपज्यो उर ज्ञाना * लषण ऊर्मिला दोहुन जाना ॥
पर्‌यो चरणमहँ रोय पुकारी * हाय नाथ सुधि कियो हमारी ॥
पुनि सँभारि बोल्यो कर जोरी * सुनहु नाथ विनती असि मोरी ॥
रही भावना अस मम नाहीं * युगलरूप जस लख्यों इहांहीं ॥
पुरवहु नाथ मोरि अस आशा * राज माधुरी वेष प्रकाशा ॥

दोहा—लषण सहित सिय ऊर्मिला, भरत शत्रुहन वीर ॥
राजसिंहासन बैठिकै, दरश दीहँ रघुवीर ॥६॥

तब मुसक्याय कह्यो यह नारी * यह दुर्लभ तैं बात उचारी ॥
पै तैं मोर अनन्य उपासी * ताते हैहै पूरण आसी ॥
चित्रकूट कहँ चलहु सिधारी * तहँ पूजी अभिलाष तिहारी ॥
अस कहि भे दोउ अन्तर्ध्याना * दास ऊर्मिला अति सुख माना ॥
चल्यो चित्रकूटहि द्रुत आयो * मंदाकिनि महँ हर्षि नहायो ॥
कामद कियो प्रदक्षिण जाई * फटिकशिला अधरातहि आई ॥
तहँ सुमिरयो हे राजकुमारा * करहु सत्य जो वचन उचारा ॥
तेहिं क्षण मंदाकिनिके तीरा * प्रगटे लषण सहित रघुवीरा ॥
सिय ऊर्मिला सखीन समाजा * राजमाधुरी वेष विराजा ॥
कोटि भानु सम भयो प्रकाशा * बिजुरी सम चमक्यो दश आशा॥
दास ऊर्मिला पूरण कामा * भयो तेहिक्षण लखि छबिधामा ॥
क्षणमें भे प्रभु अंतर्ध्याना * दास ऊर्मिला भान भुलाना ॥

दोहा—चारि दंड भरि बेखबरि, परो रहो ते ठाम ॥
तब अकाशवाणी भई, जिमि चातक घनश्याम ॥७॥

ध्यानमाहँ नित दरशन होई * मृषा वचन मम होय न कोई ॥
सो सुनि उठ्यो पाय आधारा * कीन्ह्यो चित्रकूट संचारा ॥
तहँ यक मंदिर विमल बनायो * सीता राम रूप पधरायो ॥
कालक्षेप तहँ कछु दिन करिकै * मूशानगर गयो सुख भरिकै ॥
तहँ कंगालदास मिलि गयऊ * तब सो वचन विहँसि कहि दयऊ॥
मरयो साहुको सुत यक राती * डारि दियो महि रोय सजाती ॥
तासु कायमें करहुँ प्रवेशा * तोर महत्व होय यहि देशा॥
अस कहि किय प्रवेश तेहिं काया * भयो भोर प्रगटे दिनराया ॥
तब सो बालक उठि सहुलासा * बैठ्यो दास ऊर्मिला पासा ॥
देखि लोग सब किये उचारा * दिय जियाय यक साधु कुमारा॥
साहु कुटुंब सहित तहँ आयो * बहु संपति चढाय शिरनायो ॥

लै कुमार गमन्यो निज गेहा ❀ प्रभु तहँ रहे किहे अति नेहा ॥

दोहा–दास उर्मिलासों कह्यो, सो कुमार निशि आय ॥
तीनि वर्षमें आइयो, अबै रहो कहुँ जाय ॥ ८ ॥

तब गुरु बदरी विपिन सिधायो ❀ पुनि जगदीश पुरी कहँ आयो ॥
वृंदावन मथुरा सुख भरिकै ❀ मूसानगर गयो सुधि करिकै ॥
तबलों तासु पिता अरु माता ❀ गे सुरधाम रहे तोहिं नाता ॥
सो कुमार एकांतहिं टारी ❀ दास उर्मिला गिरा उचारी ॥
है कछु सुधि जो कियो चरित्रा ❀ अब का सीख देहु मोहिं मित्रा ॥
तब कुमार बोल्यो अस वाचा ❀ मैं कंगालदास हौं सांचा ॥
चलहु भजन कीजै कहुँ भाई ❀ तहां कहब कछु तोहिं बुझाई ॥
अस कहि दोउ गिरिनार सिधारे ❀ तहां भजन किय वर्ष अठारे ॥
तहँ जानकी दरश फिरि पाये ❀ तब कंगालदास अस गाये ॥
मैं तो सखी विदेहललीकी ❀ सखा लषणको तैं मति नीकी ॥
देवर कहौं आजुते तोको ❀ तैं जस चाह कहै तस मोको ॥
तब उर्मिलादास कह वाचा ❀ मोर बडा भाई तैं सांचा ॥

दोहा–तब बोल्यो कंगाल प्रिय, जीवत करौ उधार ॥
विना भावना भेट नहिं, होय हमार तुम्हार ॥ ९ ॥

चलहु बघेलखण्ड यक देशा ❀ तहँहि बसब हम विरचि निवेशा॥
कहि कंगालदास असि वानी ❀ आय बस्यो यहि देश विज्ञानी ॥
पुनि उर्मिलादास सुख पाई ❀ तारन लग्यो जीव सुखदाई ॥
करत षडक्षरको उपदेशा ❀ आये एक समय यहि देशा ॥
कछियाटोला रह यक ग्रामा ❀ तहँ निपुनाथ सिंह अस नामा ॥
ठाकुर रह्यो ताहि अतिघोरा ❀ लग्यो खवीस महा वरजोरा ॥
तीनि पुत्र डारयो द्रुत मारी ❀ बचे पुत्र द्वै रहे दुखारी ॥
सो निपुनाथ सिंह प्रभु नेरे ❀ गिरचो जाय ढिग चरणनकेरे ॥
जानि दशा गुरु गिरा उचारी ❀ करी खवीस दुर्दशा भारी ॥
अब नहिं ऐहै निकट खवीसा ❀ रक्षक तोर कौशलाधीशा ॥

है ते पांच पुत्र तुव ह्वैहैं * मान और दल जीत कहै हैं ॥
लहि शासन निपुनाथ बघेला * बस्यो भवन महँ वीर नवेला ॥
दोहा–तेहिं खवीस आकर्षिकै, प्रभु दिय मंत्र सुनाय ॥
भयो मुक्त सो वेगहीं, छुटी प्रेतकी काय ॥ १० ॥
विचरन लागे पुनि बहु देशा * जीवन करत ज्ञान उपदेशा ॥
पुनि निपुनाथ पंच भे नाती * प्रभु शरणागत भे सब भांती ॥
प्रभु कहुँ चित्रकूट पगु धारे * कबहुँक करे अवध संचारे ॥
चरित अनंत कहे किमि जाहीं * दील सुने वरणौं तिनकाहीं ॥
सो निपुनाथ सिंहको नाती * धीर सिंह यक रह मम जाती ॥
सो मम हेतु कियो कछु विनती * प्रभु कह तासु दासमहँ गिनती ॥
अबै जो मम शरणागत होई * करै उपद्रव तहँ सब कोई ॥
वैष्णव संस्कार कछु करिहौं * ताके हेतु यतन निरधरिहौं ॥
अष्टादशहिं वर्ष जब वीती * होई तासु साधु महँ प्रीती ॥
तब यक पुरुष प्रचंड प्रभाऊ * ऐहै रीवां मृदुल सुभाऊ ॥
ताको नाम मुकुंदाचारी * सो सिगरो बघेल कुल तारी ॥
पुनि प्रभु मम सुमिरत धनुधारी * काछिया टोला बसे सुखारी ॥
दोहा–आकस्मातहिं एक दिन, सिंहपहार बोलाय ॥
कह्यो आवती गांव तुव, हुलकी जोर जनाय ॥ ११ ॥
कह्यो पहारसिंह तब बानी * नाथ करहु बाधाकी हानी ॥
प्रभु कह एक नारि मरिजैहै * पुनि नहिं मारी काहु सतैहै ॥
दिवस तीसरे मरिगे नारी * और सबै तहँ रहे सुखारी ॥
तासु निकट माधवगढ ग्रामा * मरनलगे तहँ जन दुखछामा ॥
आय गिरे पग तहँके वासी * त्राहि त्राहि रक्षहु दुखनाशी ॥
प्रभु कह गयो जबै बँगाला * मंत्र सिख्यो चेटकी विशाला ॥
तीन मंत्र मैं देत बताई * मारी मिटिहै करहु उपाई ॥
रामानुज लघु रेख खचाई * सो नहिं नांघ्या आसि मनुसाई ॥
गेहू दूध डारि घट माहीं * आगे करिकै सुरभी काहीं ॥

करिहौ जहँ जहँ ताकरि धारा * हुलकी तहँ नहिं करी प्रचारा ॥
तैसहिं किये अर्द्ध पुर वासी * भये न कोउ हुलकीते त्रासी ॥
अर्द्ध गांवके पुनि प्रभु पाहीं * गिरे आय व्याकुल पद माहीं ॥
दोहा—प्रभु कह मैं वैदी नहीं, जानहुँ नाशक शोक ॥
हुलकी रोगहि नाशि है, यह तरुराज अशोक १२॥
यहि अशोकके पत्र खवाई * मारीकी भय देहु मिटाई ॥
सुनि जन लै अशोक दल काहीं * डारनलगे स्वजिन मुख माहीं ॥
जे रोगी अशोक दल खाये * ते तुरतहि अरोग ह्वै आये ॥
तहँ यक ब्रह्म लग्यो द्विज काहीं * लै आयो प्रभुके शरणाहीं ॥
ताहि षडक्षर मंत्र सुनायो * तरयो ब्रह्मनभ शोरहि छायो ॥
तासु देखि हरिपर अनुरागा * दियो मंत्र कीन्ह्यो बडभागा ॥
रामगुलेला नाम धरायो * कछु दिन प्रभुनिज निकटटिकायो॥
तासु पिता तेहिं घर लै गयऊ * कियो विवाह सुखित अतिभयऊ॥
प्रभु इत चित्रकूट पग धार्‍यो * गमन लेन द्विज सुतहिं विचार्‍यो॥
जा दिन तासु नारि घर आई * मारी वश सुत मर्‍यो तहाईं ॥
दोहा—जेहिं दिन सो द्विजसुत मर्‍यो, रामगुलेला नाम॥
दास उर्मिला ताहि दिन, आय गये तेहि ग्राम १३॥
तासु धाम यक साधु पठायो * निज आगमकी खबरि जनायो ॥
साधु गयो देख्यो तहँ भोरा * मच्यो तासु घर आरत शोरा ॥
तेहिं कुलके मर्घट लै गमने * लोट्यो साधु गयो नहिं भवने ॥
सब वृत्तांत कह्यो प्रभु पाहीं * प्रभु कह सत्य लगत मोहिं नाहीं॥
चलहु तहां जहँ लावहिं ताको * जीवत दाहत शोक न काको ॥
अस कहि गे प्रभु मर्घट माहीं * धरयो चिता पर सब तेहिं काहीं॥
प्रभु कह जीवत कीजत दाहा * देहैं दंड तुम्हैं नरनाहा ॥
प्रभुको देखि महादुख छायो * राम गुलेलाको पितु धायो ॥
प्रभु पद परयो पुकारि पुकारी * प्रभु कह तोरि गई मति मारी ॥
लेहु चिताते सुतहि उतारी * चलहु भवन मूर्च्छा भै भारी ॥

तेहिं पितु गुणि गुरु वचन विश्वासा ❀ लै आयो सुत मृतक अवासा ॥
धरवायो इक कोठरी माहीं ❀ जुरे बहुत जन लखन तहांहीं ॥
दोहा–तेहि सुतके पितुको दियो, प्रभु शासन यहि भांति ॥
व्यंजन विरचहु विविध विधि, जेवहिं संत जमाति १४ ॥
विप्र तुरत प्रभु वचन सुनि, व्यंजन रच्यो अनंत ॥
खबरि दियो प्रभुके निकट, चलि जेवहिं सब संत १५ ॥
खसि कहे सब संत तब, परो लहाश दुवार ॥
नाथ कौन विधि जायकै, हम सब करब अहार ॥ १६ ॥
तब प्रभु कह सबसों विहँसि, चलहु अनत इत खाय ॥
यंत्र मंत्र जानौं नहीं, ताको कवन उपाय ॥ १७ ॥
यत्न एक आवत हमैं, करहु जो यह सप्ताह ॥
लषणलाल करिहैं कृपा, का संशय यहि माह ॥ १८ ॥
संत सबै बोले बिलखि, क्यों बीते दिन सात ॥
घरी माहँ घरही जरे, कह भद्राकर घात ॥ १९ ॥
प्रभु कह सो सप्ताह नहिं, मम विरचित पद सात ॥
गावहु बाज मिलायकै, मुदित सात क्षण जात ॥ २० ॥
सबै संत गावन लगे, यही मधुर पद सात ॥
सो आगे लिखि देतहों, अति विचित्र अवदात २१ ॥
गायचुके जब सात पद, सात क्षणे सब संत ॥
गोहरायो प्रभु आपहीं, बार बार विहसंत ॥ २२ ॥
रामगुलेला क्यों नहिं आवै ❀ कत भोजन विलंब दरशावै ॥
इतनी सुनत नाथकी बानी ❀ कढि आयो द्विजसुत सुखदानी ॥
प्रभु पद परि बोल्यो असि बाता ❀ नींद लागिगै मोहिं अघाता ॥
प्रभु तेहिं कर गहि भोजन हेतू ❀ गये संत युत विप्र निकेतू ॥
जयजयकार मच्यो चहुँ ओरा ❀ गिरे नाथ पद मनुज करोरा ॥
प्रभु भोजन करि संत जेंवाई ❀ गमने ओर गावँ अतुराई ॥
अबलों जीवत रामगुलेला ❀ बसत पुत्र अरु पौत्रनमेला ॥

मैं अस सुनि प्रभाव प्रभुकेरो * चाह्यो नाथ कमलपद हेरो ॥
पठै विनय पत्रिका बनाई * चह्यो भवन निज नाथ अवाई ॥
तब पठयो उत्तर प्रभु मोको * नहिं संहार भीति कछु तोको ॥
और रूपते दरशन देहौं * अबै न अपने निकट बोलैहौं ॥
भूप गोरैयाको मुख जोई * तुव पितृव्यको पुत्रहु सोई ॥
दोहा—खंड तपस्या दोउ किये, रहिहैं ये दोउ नाहिं ॥
दोहूके सुत होहिं दोउ, तब सुधरी दोउ काहिं॥२३॥
प्रभुके वचन भये परमाना * दोउ किये दिवि लोक पयाना ॥
यक यक सुत भे दोहुँन केरे * अब हैं बंधु प्रगट जग मेरे ॥
कहँलों कहौं नाथ प्रभुताई * रसना एक सकै नहिं गाई ॥
यहि विधि करत अनेक चरित्रा * करत अपावन अमित पवित्रा ॥
बीति गयो विहरत बहुकाला * तब प्रभु कह सुनु दशरथ लाला ॥
अब कलिकाल जगत् महँ छायो * नाथ तिहारो विरह सतायो ॥
अब नहिं रहिहौं यहि संसारा * लखौं निरंतर चरण तिहारा ॥
एवमस्तु लक्ष्मण मुख भाषे * तब प्रभु देह तजन अभिलाषे ॥
महाकालको रूप बनाई * पूजि सविधि नैवेद्य लगाई ॥
कह्यो डरहु नहिं मोकहँ काला * अब निदेश दिय दशरथ लाला ॥
अस कहि अर्द्ध रात्रि पर्य्यंका * बैठे पद्मासनहिं निशंका ॥
सब संतनको निकट बोलाई * यहि दोहाको दियो सुनाई ॥
दोहा—जा मरिबेको सब डरै, हमरे परमअनंद ॥
कब मरबी कब भेटबी, पूरण करुणाकंद ॥ २४ ॥
अस कहिकै पुनि मौन ह्वै, लीन्ह्यो श्वास चढाय ॥
तजि शरीर पहुँचे जहां, रघुपति चारों भाय ॥ २५ ॥
अमित चरित महराजके, कहँलों करों बखान ॥
विस्तर भय संक्षेपहीं, कीन्ह्यों सकल विधान ॥ २६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरचरित्रे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

दोहा-अब चरित्र बरणौं बिमल, कियो दास कंगाल॥
सुनत जाहि श्रोता सकल, नित नित होत निहाल॥१॥

जबते त्यागि दियो गिरिनाला * बसे बघेल खंड तेहि काला॥
तबते एक ग्राम गडवारा * तहँ रहे नहिं किय संचारा॥
कुटी तहां यक बिमल बनाई * बसे परमहंसी दरशाई॥
दास उर्मिले देवर कहहीं * कबहुं न तासु दरश मन चहहीं॥
दास उर्मिला तेहि प्रति वर्षा * पठवहिं नारि वसन युत हर्षा॥
एक समय कछु भइ तनु व्याधी * दास उर्मिलो जानि समाधी॥
पठयो डोरिया तरकी आपा * दास उर्मिला लै शिर थापा॥
कह्यो बडा आई तव बीरा * जो रोकैं अब काल गँभीरा॥
सुनि कंगाल दास असि बानी * पठयो कछुक मिठाई आनी॥
तब उर्मिलादास कह बाता * रोक्यो काल वर्ष अब साता॥
चारि दंड बाकी निशि माहीं * चलि वापी महँ नितहिं नहाहीं॥
पुनि कछु नित्यकृत्य करिलेहीं * दास कँगालकुटी चलि तेहीं॥

दोहा-करहिं कोठरी बंदकरि, डेढ पहरलगिध्यान॥
हरिप्रसाद भोजन करहिं, पुनि बहु बचन बखान॥२॥

कोठी एक ग्राम जन कहहीं * तहँ बघेल दुनिया पति रहहीं॥
तिनके ढिग चेटकी सिधारा * पत्थर गिरि अस नाम उचारा॥
जौन कहै सो सत्य देखावै * व्याघ्र वृषभ निज रूप बनावै॥
दै कपाट कोठरी घुसि जावै * और ठौरते तुरतहि आवै॥
महाचेटकी चरित अपारा * बरणि सकै को विविध प्रकारा॥
सुन्यो चरित्र दास कंगाला * दीनादासहिं कह तत्काला॥
पत्थर गिरिके निकट सिधाई * यह पषाण तुम दियो देखाई॥
महाचेटकी यहू बखाना * यह लखि होई अवशि अयाना॥
अस कहि पाथर दियो उठाई * दीनादास चल्यो शिर नाई॥
गयो जबै पत्थरगिरि नेरे * जान न पाये मनुज घनेरे॥
तब चढि यक ऊंचे थल माहीं * दरशायो पाषाणहिं काहीं॥

पुनि पत्थर गिरिको गोहरायो * मोहिं कंगाल दास पठवायो ॥
दोहा–पत्थरगिरि पत्थर लखत, पत्थर भयो तुरंत ॥
दीनादास यकांत लहि, भन्यो वचन भयवंत ॥ ३॥
मैं करि चेटक पेट चलाऊं * प्रभुको कछु न प्रभाव जनाऊं ॥
कियो मोर वदि प्रभुहिं प्रणामा * विनती कियो दासकी आमा ॥
यह पषाण लखि चेटकताई * मोर गई अब सबै बिलाई ॥
पुनि पत्थर गिरि दीनादासै * दिय मुद्रा शत सहित हुलासै ॥
दीनादास आय प्रभु पाहीं * कहन न पायो कछु मुख माहीं ॥
वर्णि गये प्रभु सबै हवाला * जस कीन्ह्यो चेटकी कराला ॥
गांव सोहावल बसे बघेला * पृथ्वीपति अस नाम नवेला ॥
ताहि प्रत्यक्ष रही निज देवी * रह्यो अनन्य कालिका सेवी ॥
पीवत सुरा दूध है जाई * ब्रह्मचर्य महँ रहे सदाई ॥
बाँधे आयुध सुरिद सदाई * माहि पर पटकत अरि मरि जाई ॥
सो कोठी पर कियो चढाई * दशहजार सेना सँग धाई ॥
तब कोठीको ठाकुर भाग्यो * दासकंगाल चरण अनुराग्यो ॥
दोहा–कियो विनय परि चरणमें, अति दीनतादिखाय ॥
पृथ्वीपति मारत हमैं, करिये कौन उपाय ॥ ४ ॥
प्रभु कह कहिहौं ताहि बुझाई * जो न मानि है तो फल पाई ॥
कहि कंगाल दास असि बानी * पृथ्वीपति ढिग गयो विज्ञानी ॥
करत रहे देवी कर पूजा * तासु समीप रहे नहिं दूजा ॥
कह्यो नाथ दुनियापति काहीं * पृथ्वीपति मारे अब नाहीं ॥
सेवक तोर करी सेवकाई * यहि वारहिं अब देहु बचाई ॥
सुनत वचन पृथ्वीपति कोपा * प्रभुके सन्मुख अस प्रण रोपा ॥
दुनियापति पग वेरी डारी * लेब छुडाय राज्य हम सारी ॥
सन्मुखते टरिजा वैरागी * नातो पीठि कशा अब लागी ॥
सुनि प्रभु कह्यो कुपित असि बानी * देवीबल मति तोरि भुलानी ॥
देवी राखिसकी तोहिं नाहीं * लगी खड्ग तेरे शिरमाहीं ॥

फौज फूंकसी यह उडिजैहै * राज्य अबहि दुनियापति पैहै ॥
अस कहि नाथ लौटि पुनि आये * दुनियापतिको वचन सुनाये ॥
दोहा-पृथ्वीपति बिन शीशको, आवत है तुव पास ॥
हठै सहित मारो शठै, पठै फौज अनयास ॥ ५ ॥
तब गजराजसिंहके साथा * पठयो हैशत कोठीनाथा ॥
पैदर हैशत लै गजराजा * सन्मुख भयो युद्धके काजा ॥
नदी एक सेमरावलि जोई * रातिहि लागि गये सब कोई ॥
भोर खबरि पृथ्वीपति पायो * दशहजार दल लै सँग धायो ॥
हने बँदूक युगल शत बीरा * बडे बडे गिरिगे रणधीरा ॥
भागी सेना दशौ हजारा * पृथ्वीपति किय कोप अपारा ॥
लैकर गुरिदा कोपित धायो * गजराजहिंके सन्मुख आयो ॥
हन्यो भूमि गुरिदा त्रयबारा * पावक ज्वाल कढी विकराला ॥
सो गजराज समीप न आई * भभकि भभाकि तहँ गई बुताई ॥
तब गजराज खड्ग चलि मारयो * पृथ्वीपति शिर कंध उतारयो ॥
सो कंगालदास परतापा * कियो न कछुक यज्ञ तप जापा ॥
दुनियापति कोठीकी राजू * पायो भयो सकल कृत काजू ॥
दोहा-दिखितगोरैयाको रह्यो, भूप नाम पृथिपाल ॥
तापर श्रीकंगालप्रिय, अतिशयरहे दयाल ॥ ६ ॥
यक दिन सो रीवांते गमनो * जानचह्यो निशिमें निजभवनो ॥
वर्षन लगो महा घनघोरा * दामिनि दमकि रही चहुँओरा ॥
सलिल प्रवाह सूझ नाहिं पंथा * कौन कहै चलिवेकी संथा ॥
अश्व चढो राजा पृथिपाला * गयो नाथढिग अतिहिं बिहाला ॥
कह कंगालदास तेहिकाहीं * आजु गोरैये जैयो नाहीं ॥
कह पृथिपाल करहु अशिदाया * जाहु भवन रोगित मम जाया ॥
प्रभु कह चाहसि लखन तमासा * सो देखै बैठे मम पासा ॥
अस कहि निकसि कुटीते आये * फजिल फजिल अस शोरसुनाये ॥
फजिल कहत फूटे घन कारे * निकसे विमलचंद्र अरु तारे ॥

मम मातामह नृप पृथिवपाला ❋ हय चढि पहुँच्यो घर तत्काला ॥
पहुँचिगयो जब घरमहँ जाई ❋ होनलगी पुनि वृष्टि महाई ॥
पूछे पुरवासी चलि ओरा ❋ किमि उतरयो बाढो सरि घोरा॥
दोहा–तीनि दिवसते नाव नहिं, लागी टमस मझार॥
तीनि दिवसते जल बह्यो, ऊपर रह्यो करार ॥ ७ ॥
तब पृथिवपाल कह्यो अस बानी ❋ आवत मोहिं परयो नहिं जानी ॥
अश्व जानुलों सरि जल भयऊ ❋ विषय पंथ कछु है नहिं गयऊ ॥
यह कंगालदास परभाऊ ❋ काहेको शंका उर लाऊ ॥
यक दिन विप्र गयो उरसांचो ❋ सुता विवाह हेतु धन यांचो ॥
प्रभु कह मेरे संपति नाहीं ❋ देहैं बदरीतरु तोहिं काहीं ॥
बदरीतरुतर सो द्विज जाई ❋ यांच्यो नाथ सुनाय रजाई ॥
सहस तीनि मुद्रा तरु तरमें ❋ लागि गये अवनीसुर करमें ॥
ले संपति द्विज सुता विवाहा ❋ और कियो सब घर निर्वाहा ॥
यकदिन कह पृथिवपालहि बानी ❋ मनुज वृथा अतिशय अभिमानी॥
जानत मीच नगीचहिं नाहीं ❋ श्वान सरिस बागत चहुँघाहीं ॥
देखहु यह जो आवत श्वाना ❋ तासु आयुषा दण्ड प्रमाना ॥
यह सुनि सबको अचरज लाग्यो ❋ नृप पृथिवपाल वचन अनुराग्यो ॥
दोहा–देखन लग्यो श्वानको, मरण कौन विधि होय ॥
दण्ड विते मरिगो तहां, यह देख्यो सब कोय॥८॥
एक समय पृथिवपालहि काहीं ❋ कढीं भवानी सब तनुमाहीं ॥
लग्यो मरण जीवन गे आशा ❋ लैगे सब तुरंत प्रभु पाशा ॥
देखि दयालु दंड ले दौरे ❋ मारयो शिबिका महँ अति जोरे॥
दंड लगत मिटिगई भवानी ❋ उठि पृथिवपाल गह्यो पदपानी ॥
मातामह द्रुत भयो निरोगा ❋ प्रभु दीन्हो तेहिं बहुरि नियोगा ॥
विद्यमान है जो सुत तेरा ❋ ताके ऊपर काल कर फेरा ॥
मेघवा बाबा शिष्य हमारा ❋ तोन चलाई वंश तुम्हारा ॥
तोन काल अचरज सब माना ❋ अब प्रभु वचन सत्य प्रगटाना ॥

जेठ सुवन नृपको मरिगयऊ * मेघवा नावा तनु तजिदयऊ ॥
द्वितिय पुत्र पायो पृथिवपाला * विद्यमान सो है यहि काला ॥
अहैं अनंत चरित्र नाथके * किमि वरणौं सब मोद गाथके ॥
एक दिन लीन्ह्यो जननि बोलाई * सबसों कह्यो भजहु हरि भाई ॥
दोहा-पद्मासन करि श्वासको, लीन्ह्यो सहज चढाय ॥
पंचभूत तनु त्यागिकै, गे जहँ रघुकुल राय ॥ ९ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

दोहा-अब बरणों सुंदर चरित, कियो जो दास मलूक ॥
अबलों पुरी प्रभाव है, खात जासु सब टूक ॥ १ ॥
दास मलूक सो ज्ञाननिधाना * कबहूं सुन्यो आपने काना ॥
बादशाह गहि साधुन काहीं * बेरी डारतहै पग माहीं ॥
यह सुनि दिल्लीको चलि आये * बादशाह भट चलि गहि लाये ॥
आयस बेरी पगमहँ डारयो * दास मलूक चरण झिटिकारयो ॥
पग झिझकारत आयसबेरी * टूटिगई लागी नहिं देरी ॥
परी रहीं साधुन पग जेती * टूटतभई तुरंतहि तेती ॥
यह अचरज लखि परिकर धाये * बादशाहको खबरि जनाये ॥
बादशाह आयो द्रुत धाई * दास मलूक चरण शिर नाई ॥
युगल जोरि कर वचन उचारा * जानन हेतु प्रभाव अपारा ॥
मैं साधुन बेरी पग डारा * लख्यो प्रत्यक्ष प्रभाव तुम्हारा ॥
देहु नाथ अब मोहिं प्रसादा * दास मलूक कियो अस वादा ॥
भोजन करि मांगतो प्रसादा * शाह कह्यो यह मृषा विवादा ॥
दोहा-दास मलूक कह्यो तबै, वीहीके फल खाय ॥
मृषा कहै मोसो वचन, शाह सुचेत गवाय ॥ २ ॥
वीही फल जेते तुव बागा * तिन सब फलन मोर मुँहलागा ॥
खायो मोर जूंठ तैं शाहा * सुनि अस शाह गुण्यो मनमाहा ॥
मृषा कहत यह दास मलूका * लख्यो मांगि फलते सब टूका ॥

तहँते दास मलूक सिधारा ❀ आयो जहँ जगदीश अगारा ॥
बैठजाय मंदिर पिछवाई ❀ द्विज वपु धरिगे हरि तहँ धाई ॥
कह्यो चलहु दरशन अब लेहू ❀ दास मलूक कह्यो करि नेहू ॥
जगन्नाथ बकसत जस टूका ❀ तस नहिं लेइँ दास मलूका ॥
जो मलूक टूका सब खावै ❀ तौ मलूक दर्शन हित जावै ॥
प्रभु कह जैसो महाप्रसादा ❀ तस मलूक टूका मर्यादा ॥
अस कहि अपनो रूप देखायो ❀ तब मलूक चरणन शिर नायो ॥
पुनि मलूक दर्शन चलि लीन्ह्यो ❀ निज टूका दीबो थिर कीन्ह्यो ॥
तबते पुरी माहँ मर्यादा ❀ अबलों बनी अहै अविवादा ॥

दोहा—पुरी जाय जो जन कोऊ, पावै महाप्रसाद ॥
टुकडा दास मलूकको, लेइ विहाय प्रसाद ॥ ३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

दोहा—चित्रकूटमें बसतथे, श्यामदास यक संत ॥
तासु चरित वर्णन करौं, महिमा जासु अनंत ॥ १ ॥

योग निधान ज्ञानके सागर ❀ प्रेमभक्ति महँ महाउजागर ॥
सीतापतिके दर्शन पाये ❀ मो पितुको उपदेश सुनाये ॥
यक दिन मम पितु काहिं बोलाई ❀ सीताराम मूर्ति मन भाई ॥
देत भये कहिकै असि वानी ❀ पूजौ तुम ह्वैहौ निर्वाणी ॥
जबलों तुव घर मूरति रहिहै ❀ तबलों कछु अनर्थ नहिं ह्वैहै ॥
अस कहि बैठ भुँइहरा माहीं ❀ कियो समाधि तीनि दिन काहीं ॥
तीजे दिन तनु सकल सुखाना ❀ आप गये समीप भगवाना ॥
सो मूरति पूज्यो पितु मोरा ❀ पुनि दीन्ह्यो मोहिं सहित निहोरा ॥
मम पितु पूजित मूरति सोई ❀ दीन्ही श्यामदासकी जोई ॥
कबहुँ न मूर्ति विलग होउ होती ❀ दिन दिन करतीं कलाउदोती ॥
जो कछु अनरथ होय होवैया ❀ सुमिरत सो मिटि जात सदैया ॥
श्यामदासकी कथा अनेका ❀ इत लिखि दिय विस्तर भय एका ॥

दोहा-चित्रकूटमें आजुलों, तिनको प्रगट प्रभाव ॥
जानत सिगरे संतजन, काहुको नहीं दुराव ॥ २ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां
उत्तरचरित्रे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

दोहा-चरणदास यक नाम जिन, रहे संत पंजाब ॥
तिनको हरिको दरश भो, श्रोता सुनहु स्वभाव ॥ १ ॥

छंद-यक चरणदास महातमा हरिमें करी परतीति ॥
हरि दियो शासन प्रगटिके कीजे सुरोदय रीति ॥
राची सुरोदय रीतिसो जाने सकल विधि जौन ॥
आगम निगम जानत सकल छिपि जाय जन अस कौन ॥ १ ॥

दोहा-तौन सुरोदय रीति अब, जगमें अहै विख्यात ॥
पढत सुनत समुझत गुणत, प्रगट होत सब बात ॥ २ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां
उत्तरचारित्रे एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

दोहा-भये एक पंजाबमें, साधू मंगलदास ॥
तिनको जो कछु मैं सुन्यो, सो वरणौं इतिहास ॥ १ ॥

महा प्रभाव सुमंगल दासा ❁ रामतीर्थ महँ करै निवासा ॥
रघुपति मंत्र पचास हजारा ❁ जपै षडक्षर राम अधारा ॥
संत सहस नित संगहिं रहहीं ❁ राम कृपावश भोजन लहहीं ॥
नहिं बंधेज न कछु बंधाना ❁ मिलहि वस्तु अनयासहि नाना ॥
एक समय दिन सात व्यतीते ❁ सबै संत भोजनते रीते ॥
सतये दिन जो रह्यो पुजारी ❁ आई ताको महातमारी ॥
गिरयो भूमि लै ठाकुर काहीं ❁ आप कह्यो चेतैं कस नाहीं ॥
कह्यो पुजारी तब अनखायो ❁ सात दिवस भोजन नहिं पायो ॥
कैसे साबित रहै शरीरै ❁ तुम नहिं कहौ कछू रघुबीरै ॥
मंगलदास कह्यो तब वानी ❁ लेत परीक्षा प्रभु मैं जानी ॥

शालग्राम शिलाहैं जेते ❀ फेंकहु जलमहँ राखु न तेते ॥
सहस्र शिला लै गयो पुजारी ❀ फेंकि दियो गम्भीरहि वारी ॥
दोहा-सांझ समय कहुँते तुरत, दश वृष लदो पिसान ॥
आय गयो साधू सबै, जय जय किये महान ॥२॥
संतनकी जब भई रसोई ❀ मंगलदासे कह तब कोई ॥
ठाकुर सिगरे नीर डुबायो ❀ चहौ कौन विधि भोग लगायो ॥
मंगलदास कह्यो नाहिं जैहैं ❀ दशरथलाल क्षुधावश ऐहैं ॥
जाहु मूर्तिको लै सब आवहु ❀ फेंकेहु पुनि जो एक न पावहु ॥
गयो पुजारी सरिके तीरा ❀ रह्यो सलिल अतिशय गम्भीरा ॥
सिगरी मूर्ति लख्यो सरितारा ❀ लै आयो मिटिगै सब पीरा ॥
नौसे निन्यानबे गनायो ❀ एक मूर्तिको खोज न पायो ॥
मंगल दास कह्यो मन बिगरे ❀ लै आवहु की फेंकहु सिगरे ॥
गयो पुजारी पुनि सरि तीरा ❀ निरख्यो तहां मूर्ति रघुबीरा ॥
लै आयो तब भोग लगायो ❀ सिगरे साधुन सुखद जेंवायो ॥
करत रहे यक दिन जप स्वामी ❀ बैठे संत मुक्तपद गामी ॥
राम कहत ऐंच्यो सो श्वासा ❀ उठ्यो धूम तनुते चहुँ पासा ॥
दोहा-धूम मात्र देखो परचो, लख्यो न परो शरीर ॥
सकल संत बिस्मित भये, कियो काह मतिधीर ॥३॥
दंड द्वैकमें पुनि सबै, देख्यो मंगलदास ॥
पूछनलागे संत सब, गये कौनके पास ॥ ४ ॥
मंगलदास कह्यो विहँसि, गये जहां रघुबीर ॥
कछु चाकरी बजायकै, पुनि आये सरि तीर ॥ ५ ॥
औरहु कथा अनेक हैं, कहँलों करों उचार ॥
वरण्यो इत संक्षेपते, कियो न बहु विस्तार ॥ ६ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजुदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

दोहा-रामदास यक साधुवर, रहे बदनपुर माहिं ॥
सेवन संतन धर्म लिय, सम देख्यो सबकाहिं ॥ १ ॥

जो कोउ संत दुवारे आवे * सो विन भोजन जान न पावे ॥
गंगातटमें कुटी बनाई * बसे करे संतन सेवकाई ॥
औरो चरित अनेकन तिनके * वर्णन शक्ति कहाहै किनके ॥
तीन कुटी देख्यो मैं जाई * विस्मित भयो देखि प्रभुताई ॥
एक ओर आचारिन डेरा * एक ओर सब द्विजन बसेरा ॥
अंधर बधिर पंगु यक ओरा * बसहिं संत औरहु यक ठोरा ॥
सहसन मनुज बसैं चहु पासा * भोजन होहिं सबन अनयासा ॥
नहिं बंधेज न कहुँ बंधाना * पूरण करहिं सदा भगवाना ॥
यक दिन संत भीर भै भारी * वर्षन लागे बहु घन वारी ॥
जाय भँडारी प्रभुहि जनायो * आजु अन्न कहुँते नहिं आयो ॥
रामदास बोले तब बानी * पूरण करिहैं जानकिजानी ॥
अस कहि यक कुंडरा मँगवायो * निज तुंबा तेहि औंध करायो ॥
वचन कह्यो जय जनककिशोरी * जो सति आश मोहिं यकतोरी ॥

दोहा-तौ घृत चिनी पिसान बहु, ईंधन साज समेत ॥
तुंबाते निकसै सकल, लखै साधु कर नेत ॥ २ ॥

इतना भाषत तुम्बा तेरे * कढे सकल वस्तुनके ढेरे ॥
सहसन साधु सुभोजन कीन्हे * तुंबा रीत न प्रभु करि लीन्हे ॥
सकल संत कीन्हे जयकारा * आप कह्यो जय राजकुमारा ॥
औरो चरित अनेकन तिनके * वर्णत शक्ति कहो है किनके ॥
पुनि जब छोंडनलगे शरीरा * नाव चढे गंगाके तीरा ॥
छीतूदास आदि सब भक्ता * बैठ सबै राम अनुरक्ता ॥
तब प्रत्यक्ष यक सुंदरि नारी * आई नभते भास पसारी ॥
सब कोउ लखत चकित भे साधू * कहि न सके कछु गिरा अगाधू ॥
रामदाससों सुंदरि बोली * बैठे कहँ चिता कहँ तोली ॥
तोहिं बोलायो राजकुमारा * रहे बहुत इत चलहु अगारा ॥

रामदास बोले मुसकाई ❀ क्यों नहिं खबरि करै तू माई ॥
लागिरहीथी यह मन आशा ❀ सो तू दरश दियो अनयासा ॥
अस कहि पुनि कहि जय रघुवीरा ❀ रामदासजी तज्यो शरीरा ॥
दोहा-सो तिय अंतर्ध्यानभै, जान्यो चरित न कोय ॥
चमकी चपलासी गगन, मेघ विना क्षण दोय ॥ ३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

दोहा-महामनोहर अब कथा, कहौं संतकी एक ॥
जो मम देशहिंमें भयो, कीन्ह्यो चरित अनेक ॥ १ ॥

बरदाडीह ग्राम यक मेरा ❀ सोई तासु जन्मकर खेरा ॥
नाम अनंतदास है ताको ❀ अबलों मंडित करत क्षमाको ॥
रहे गृहस्थ महा धनहीना ❀ निकरि भवनते पंथहिं लीना ॥
नीमच शहर गये यक बारा ❀ तहँको सुनिये चरित अपारा ॥
राख्यो तेहिं नोकर अंगरेजा ❀ वसे करत भोजन बंधेजा ॥
हाकिम घरते जो कछु पावै ❀ सो नहिं राखैं संत खवावैं ॥
यहि विधि बीति गयो कछु काला ❀ यक दिनको अस भयो हवाला ॥
पहरा जब अनंतको आयो ❀ तेहिं क्षण साधू एक सिधायो ॥
उत अँगरेज केर भय भारी ❀ साधु जेवावन करी तयारी ॥
जो नहिं जैहौं पहरा माहीं ❀ देहैं अवशि दंड मोहिं काहीं ॥
साधु प्रीति वश भे नहिं गयऊ ❀ पहराकाल व्यतीतत भयऊ ॥
जब पहरा अनंतको आयो ❀ हरि अनंत वपु धारि सिधायो ॥
दोहा-टोपी कुरती पहिरिकै, हाथे धरि संगीन ॥
दीनदयालु गोविंद प्रभु, पहरा दियो नवीन ॥ २ ॥

टहलैं चहुँदिशि सोरठ गावैं ❀ सूर पदनमें सुरन मिलावैं ॥
महा माधुरो यह पद गावै ❀ सो अस हम लिखिकै दरशावैं ॥

पद-हमारे प्रभु अवगुण चित न धरो ॥
समदरशी प्रभु नाम तिहारो वेगहि पार करो ॥

यक लोहा पूजामें रहतो यक घर वधिक परो ॥
सो दुविधा पारस नाहिं जानत कंचन करत खरो ॥
यक नदिया यक नार कहावत मैलो नीर भरो ॥
सो जब जाय मिलत गंगामें सुरसरि नाम परो ॥
यक माया यक जीव कहावत सूरश्याम झगरो ॥
की याको निरवार करो प्रभुकी प्रण जात टरो ॥

जब पहरा तिनको ह्वै गयऊ ❀ द्वितिय संतरी आवत भयऊ ॥
तब प्रभु भे तहँ अंतर्ध्याना ❀ दास अनंत कछू नहिं जाना ॥
मान्यो मनमहँ भीति महाई ❀ कालिह पाइहों अवशि सजाई ॥
अस विचारि जो कछु धन रहेऊ ❀ सो सब संतनके कर दयऊ ॥
गये प्रभात डेरात डेराता ❀ जमादारके ढिग अकुलता ॥
गयो भवन बैठ्यो बहु दूरी ❀ जमादार चितयो सुखपूरी ॥
चकत अनतहिं निकट बोलायो ❀ बडे हेतुसों वचन सुनायो ॥
गावहु जो कीन्ह्यो निशि गाना ❀ कबहुँ न सुन्यो गान अस काना ॥
तब अनंत बोल्यो भय पाई ❀ मृषा दोष कत देहु लगाई ॥
आयो मैं नाहिं पहरा हेतू ❀ किय कसूर मैं महा अचेतू ॥

दोहा–जमादार बोल्यो विहँसि, काहे मृषा बताहु ॥
पहरा दीन्ह्यो दंड षट, गायो सहित उछाहु ॥ ३ ॥

तब अनत जान्यो मनमाहीं ❀ हैं प्रभु और होयगो नाहीं ॥
मेरे हित पहरा प्रभु दीन्ह्यो ❀ यह अपराध हाय मैं कीन्ह्यो ॥
अस कहि तुरतहि डेरहिं आयो ❀ रंकन संपति सकल लुटायो ॥
कस्यो लंगोटी लैकरि तुंबा ❀ मानहु लियो भक्ति कर तुंबा ॥
चल्यो रँग्यो रघुनायक रंगा ❀ आगे पाछे कोउ नहिं संगा ॥
सात दिवस व्रत भे पथमाहीं ❀ अन्न सलिलकी रुचि कछु नाहीं ॥
निशिमें प्रगट भये सिय रामा ❀ कह्यो जाहु अपने अब, धामा ॥
दास अनंत भवन चलि आयो ❀ मैंहूं ताको दर्शन पायो ॥
जब तब आवहिं भवन हमारे ❀ कृपा करहिं निज दास विचारे ॥

मम शरीरमें भो कछु रोगू * सो लखि दीन्ह्यो मोहिं नियोगू ॥
कबहुँ न याकी ओषधि कीजै * याको गुरू मानि निज लीजै ॥
यह विरागको बीज उदंडा * पैहौ नहिं कबहूं यमदंडा ॥
दोहा–जगते होय विराग अति, उपजै तब विज्ञान ॥
तब उपजैं सिय पिय चरण, प्रेम भक्ति परधान ४॥
अस निदेश प्रभु मोहिं करि, विचरतहैं सब देश ॥
रँगे हमेश रमेश रँग, हरैं अशेश कलेश ॥ ५ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

दोहा–रामदासको कहत हौं, अब सुंदर इतिहास ॥
चित्रकूटमें बास करि, रहे रामकी आस ॥ १ ॥
ताको नेम रह्यो यहि भांती * बांचे रामायण दिन राती ॥
पहर निशा बाकी उठि बैठे * मज्जन हित मंदाकिनि पैठे ॥
करिकै नित्यकृत्य मठ आमे * चारिदंड जब रहे त्रियामे ॥
तबते लै रामायण काहीं * पाठ करै यहि रीति सदाहीं ॥
रहे दंड बाकी दिन चारी * तौ कछु पयके होहिं अहारी ॥
सांझ भये दै युगल कपाटा * ध्यान करैं रोके मन बाटा ॥
असी वर्ष यहि रीति चलायो * कबहुँ न तिनको विघ्न सतायो ॥
एक दिवस निशि ध्यानहि माहीं * भयो विरह प्रभुको तिन काहीं ॥
भलो होय जो छुटै शरीरा * मिलिहौं जाय कबै रघुबीरा ॥
तहँ प्रत्यक्ष भये रघुनाथा * दीन्ह्यो रामदास शिर हाथा ॥
मुक्त जीव तुमहो अस भाष्यो * तुमहिं सखा अपनो गुणि राख्यो ॥
अबै कछुक दिन जीवन तारी * पुनि ऐहौ मम धाम सिधारी ॥
दोहा–रामदास परि कमलपद, धार्‍यो शीश रचाय ॥
रहे जगतमें काल कछु, उधरत जीवनिकाय ॥२॥

मम पितु औ मैं हूं गयो, तिनके दर्शन पाय ॥
पुरश्चरणके समयमें, चित्रकूटमें जाय ॥ ३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

दोहा-अब श्रोता सुनिये सबै, सेवक रामचरित्र ॥
जाको वपु रघुपति धरचो, मान्यो अपनो मित्र १॥

अहै एक मेरो गुरु ग्रामा * रह्यो ताहि महँ ताकर धामा ॥
करै सदा संतन सेवकाई * रहै दीन धनहीन महाई ॥
प्रति अगहन सियराम विवाहा * करै मांगिकै महाउछाहा ॥
एक समय अगहन जब आयो * मांग्यो बहु घर धन नहिं पायो ॥
तब तियकी नथुनी लैलीन्ह्यो * दश मुद्रा लै वणिजहिं दीन्ह्यो ॥
दश मुद्रा महँ राम विवाहा * होत न लख्यो भयो दुखदाहा ॥
उतरि गयो पर्वत दुख पाई * बसौं भवन किमि वदन देखाई ॥
देखि तासु संकट रघुराई * तासु रूप लिय तुरत बनाई ॥
लै मुद्रा शत पंच सिधारे * आये सेवक रामदुवारे ॥
तुरतै तासु तिये गोहरायो * मांगि पंचशत मुद्रा लायो ॥
प्रभु विवाहको योग लगायो * धरहु भवनमहँ चित्त चोरायो ॥
सोइ नथुनी दीन्हो पुनि ल्याई * यह वणिकसों लिय मुकताई ॥

दोहा-मैं अब गमनहुँ अनत कहुँ, औरहु संपति हेत ॥
पांच सात दिनमें अवशि, ऐहौं बहुरि निकेत ॥२॥

अस कहि चलिभे अंतर्ध्याना * तिय अपने पतिहींको जाना ॥
दुसरे दिन बीते युग यामा * आयो सेवकरामहुँ धामा ॥
बैठगयो घर शीश नवाई * तियसों कह संपति नहिं पाई ॥
तिय कह कहहु कहा बोराई * तुमहिं पंचशत मुद्रा लाई ॥
दीन्ह्यो म्वहिं नथुनी मुकताई * अब कत कहत न संपतिपाई ॥
सेवक राम जके सुनि बानी * कब मैं दियो तोहिं नथ आनी ॥

अस कहि पुनि किय मनहिं विचारा * बिन हरिको अस कृपाअगारा ॥
कियो जन्म भरि मैं सेवकाई * नारि गई सिगरो फल पाई ॥
अस कहि तियहिं प्रदक्षिण दीन्ह्यो * परि पुहुमी प्रणाम पुनि कीन्ह्यो ॥
कीन्ह्यो राम विवाह उछाहा * मिट्यो सकल मनको दुख दाहा ॥
तिनके पुत्र पौत्र हरिदासा * राखहिं एक रामकी आशा ॥

दोहा–अबलौं करैं विवाह सुख, संत समाज बोलाय ॥
गहे अकिंचन वृत्ति सब, पूग करै रघुराय ॥ ३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

दोहा–सीवादास चरित्र अब, कहौं कछुक विस्तार ॥
जिनको रीवांनगरमें, सब दिन रह्यो अगार ॥ १ ॥

वृत्ति परमहंसी तिनकेरी * राजा रंक रहैं सम हेरी ॥
जो कोउ भोजन हेतु बोलावै * तिनके घर प्रसादको पावै ॥
यहि विधि बीति गयो कछुकाला * छके प्रेम महँ दशरथ लाला ॥
हिरदेशाह बुँदेल प्रधाना * ते रीवांको कियो पयाना ॥
सीवादास कुटीमहँ आयो * बार बार तिनको शिरनायो ॥
यक दोनियामहँ दियो बतासा * कह्यो देहु यक यक सब पासा ॥
राजा मन विस्मित अति भयऊ * किमि पूजिहै सबन जो दयऊ ॥
दियो बताशा सबको बांटी * पाये सब जेहिं जस परिपाटी ॥
रहे द्रोन उतनई बतासा * जाने सब महिमा हरिदासा ॥
हिरदेशाह कही असि बानी * मोहिं अचल दीजे रजधानी ॥
सीवादास कह्यो मुसक्याई * राज्य तो अवधूतै यह पाई ॥
हिरदेशाह बहुरि अस भाखै * हम इत रहैं बावरे राखै ॥

दोहा–सीवादास कह्यो वचन, अबते छटयें मास ॥
राज्य करै अवधूतई, तुम्हरो विफल प्रयास ॥ २ ॥

तब दिवान राजै समुझाये * चलो भवन यतने भरि पाये ॥
जो दैहैं औरहु कछु शापा * तौ पैहो अतिशय परितापा ॥

राजा बहुरि भवनकहँ आई * छठयें मासहिं गयो पराई ॥
तब अवधूत भूप पुनि आई * सीवादास चरण शिर नाई ॥
कीन्हें विनय राज्य प्रभु दीन्हा * सीवादास शीश कर कीन्हा ॥
कह्यो अटल कीजै अब राजू * भाइन भृत्यन सहित समाजू ॥
अंतदशा रही कछु काला * सो मेटी सब दशरथलाला ॥
राज्य कबहुँ नाहिं खंडित होई * तुम्हरो यश बरणी सब कोई ॥
तब अवधूत महल महँ आयो * राज्य कियो अति आनँद पायो ॥
ऐसे सीवादास महाना * भये सकल भागवत प्रधाना ॥
तिनके और चरित्र अपारा * मैं बरण्यों नहिं भय विस्तारा ॥
औरहु जानलेहु यहि भांती * सीवादास सिद्ध विख्याती ॥

दोहा-सुत अवधूत अजीत भो, भोजयासह सुत तासु ॥
विश्वनाथ सुत तासु भो, तासुत मैं तेहिं दासु॥३॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरचरित्रे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

दोहा-श्रीपंडित वर भागवत, तुलाराम जेहिं नाम ॥
तासु चरित वर्णन करौं, सुनहु सकल मतिधाम ॥१॥

महाभागवत महाउदारा * तज्यो सकल सुत धन परिवारा ॥
बांचहिं नगरहि नगर पुराना * पावहिं धन पट भूषण नाना ॥
लाखन द्रव्य चढै तहँ जोरे * देहिं साधु विप्रन कहँ सोरे ॥
मकर राशि आवै रवि जबहीं * बसैं प्रयाग जायकै तबहीं ॥
मास प्रयंत करहिं तहँ वासा * पूरहिं सब विप्रनकी आसा ॥
द्विज साधुन कहँ कौनेहु साला * देहिं सहस्रन बांटि दुशाला ॥
लाखन साधुन विप्रन काहीं * भोजन देहिं यथेष्ट सदाहीं ॥
नहिं कहुँ राज्य न धन बहुताई * पूर करहिं तिनको यदुराई ॥
कहैं भागवत जेहिं पुरमाहीं * जुरैं सहस्रन यूह तहांहीं ॥
कहि सुश्लोक करहिं उपदेशा * रहै न पुनि अज्ञानको लेशा ॥
कहैं निशंक रंक नृप काहीं * हियते कोमल उपर रुखाहीं ॥

तजन लगे जब तनुहिं प्रयागा * तब बोले भरिकै अनुरागा ॥

दोहा-साधु पांवरी लाय अब, धरहु हमारे शीश ॥
इष्टदेव जो साधु मम, तौ प्रसन्न जगदीश ॥ २ ॥
असकहि साधुन पद सुमिरि, वेणीतज्यो शरीर ॥
तिनकी कथा अपारहै, को कहि लागे तीर ॥ ३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरचरित्रे अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

दोहा-एक साधु गोपीचरण, कियो सोन तट वास ॥
देवक्षेत्र है नाम जेहिं, मज्जन पाप विनास ॥ १ ॥

रहहि यकांत सुमिरि हरिकाहीं * कोहुकर संग करहिं कहुँ नाहीं ॥
पहिरि पादुका शैल उतंगा * उतरहि तुरत न डोलहि अंगा ॥
कोहुसों कबहुँ भेंट है जाई * ताहि देहिं द्रुत साधु बनाई ॥
भोजन करत कोउ नहिं जानै * रहैं गुप्त कोउ नहिं पहिंचानै ॥
पहिरि पादुका जल महँ जाहीं * बूड़हिं तासु पादुका नाहीं ॥
देउराको दलजीत बघेला * तासों परयो एक दिन मेला ॥
कह्यो देहु बाछी हमकाहीं * कबहु तोहि बिगरिहै नाहीं ॥
वर्ष दिवसकी सो दिय बाछी * रही साधु आश्रम सो आछी ॥
दूध देइ सो विना वियाने * यह प्रसिद्ध सिगरे जन जाने ॥
एक दिना दलजीत बोलायो * सेवक एक बोलावन आयो ॥
आप कह्यो मैं तहँ है आयो * पूंछ्यो जाय मृषा जो भायो ॥
सो पूंछ्यो चलिकै तिन पाहीं * कह्यो आइयो नाथ यहांहीं ॥

दोहा-ऐसे चरित अनेकहैं, कहँलों करौं बखान ॥
अबलों तेहिं गिरिपर रहत, करि वपु अंतर्ध्यान २ ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

दोहा–कृष्णदासको कहतहौं, अब रमणीय चरित्र ॥
शरभंगाश्रममें रहे, तिनकी कथा विचित्र ॥ १ ॥

अतिशय कृष्णचरण अनुरागी * निशि दिन नाम जपत सुखपागी ॥
कृष्ण अनन्य उपासक सांचे * निशि दिन कृष्ण प्रेम रसराचे ॥
बराग्राम यक रह्यो बघेला * नाम जासु शिरनेत नवेला ॥
भाग्यविवश सो तेहिं शिषभयऊ * तबते तासु सुधरि सब गयऊ ॥
गुरुनिकेत शिरनेत सिधारयो * यक दिन ऐसो वचन उचारयो ॥
नाथ होत पारस केहिं देशा * तब बोले प्रभु है सब देशा ॥
लहै न पारस जन बिन भागा * पारस सत्य कृष्ण अनुरागा ॥
असकहि लाये एक पषानो * ताहि कह्यो यहि पारस जानो ॥
लै शिरनेत केरि तरवारी * दियो छुवाय पषाण निहारी ॥
भै तुरंत तरवारि कनककी * कुंदनकी द्युति भई चमककी ॥
कृष्णदास बोले तब बानी * यामें तेरी है कछु हानी ॥
तेरी भाग्य सोन यक सेरा * सो लै कह्यो मानि अब मेरा ॥

दोहा–अस कहि सोना सेर भरि, शिरनेतहिंको दीन ॥
और भूमिमें फेंकिकै, पुनि लोहा तेहिं कीन ॥ २ ॥

सोई सोन लख्यो मैं नयना * अबलों बनो अहै तेहि अयना ॥
पुनि प्रभु कह्यो सुनो शिरनेता * यक पारस पषाणके हेता ॥
अस कहि उठि लै एक पषाना * दियो छुवाय पषाण चटाना ॥
तुरत चटान सोनकी ह्वैगे * सहसन मनुष नयनते ज्वैगे ॥
ऐसे चरित अनेकन तिनके * नाहिं रसना कहि जात कविनके ॥
मरणलगी भेरी पितृव्यानी * तब प्रभु ऐसी गिरा बखानी ॥
देखो कृष्ण मंत्र परभाऊ * सो चढिकै विमान भरि चाऊ ॥
सुखी शुद्ध गोलोक सिधारी * करि प्रणाम मम ओर निहारी ॥
सुनत वचन जन कौतुक माने * प्रभुके वचन सत्य सब जाने ॥
यक दिन कह्यो जाहुँ गोलोका * लाख कालिकाल [illegible] उर शोका ॥
अस कहि भविशे गुहा मँझारी * पुनि नाहिं तबत [illegible] है सुखारी ॥

अबलों है सो गुहा प्रभाऊ ❀ नमै सनेम होत तेहिं चाऊ॥
दोहा-कृष्णदासके और हैं, चरित विचित्र अपार॥
कहँलों मैं वर्णन करों, मानि भीति विस्तार॥ ३॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखडे उत्तरचरित्रे विंशोऽध्यायः॥ २०॥

दोहा-परमहंस रीवां रहे, चतुरदास जेहिं नाम॥
तासु चरित श्रोता सुनहु, वर्णहुँ परमललाम॥ १॥
रीवांपुर महँ वर्ष पचीशा ❀ बसत भये ध्यावत जगदीशा॥
शीत घाम वर्षा सम जाने ❀ राजा रंक एक सम माने॥
तिनके चरित अनेकन अहहीं ❀ लघु मतिकवि कहँलों सब कहहीं॥
रह्यो एक पुरमें हलवाई ❀ यक दिन मरयो मीचु तेहिं आई॥
कुलके ताहि जरावन लाये ❀ दाहन हित जब चिता चढाये॥
चतुरदास आये तेहिं ठामा ❀ कियो कोप तिनपै हित कामा॥
तासु लोथि लै सरिमहँ धोये ❀ मासे तिन पर जे तहँ रोये॥
सोवतहीं बहुरे तेहि प्राना ❀ उठिबैठ्यो सो लग्यो बताना॥
हँसत हँसत आयो निज अयना ❀ सब लोगनके भो चित चयना॥
मेरा भ्रात प्रथम यक भयऊ ❀ चतुरदास कह्यो कहि दयऊ॥
जियो बंधु मम दिवस अढाई ❀ लह्यो मातु पितु शोक महाई॥
मेरो जन्म भयो जेहिं काला ❀ दियो दुंदुभी आय उताला॥
दोहा-कह्यो पुत्र पक्को भयो, यह संशय कछु नाहिं॥
मातु पिता अरु पितामह, मुदित भये मनमाहिं २
चलि यकांतमहँ तनु तज्यो, चौरा भयो तहांहिं॥
ताको अस परभावहै, मेटत ज्वर सब जाहिं॥ ३॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे एकविंशोऽध्यायः॥ २१॥

दोहा–औरहु साधुनको कहौं, अति सुंदर इतिहास ॥
श्रोता सुनहु सचेत सब, सुमति सरति सहुलास ॥ १ ॥
वेदांताचारज यक भयऊ * द्राविड देश माहँ सो ठयऊ ॥
हयग्रीवका भयो उपासी * सिगरे तंत्र स्वतंत्र विलासी ॥
परमत खंडि स्वमत किय थापन * वादिनको द्रुत थपन उथापन ॥
सब विद्या महँ सूर्य समाना * तिनको जगत विदित आख्याना ॥
दाशरथी यक भयो उदारा * जानहु ताहि राम अवतारा ॥
शिष्य यतींद्र प्राण प्रिय सोई * जानत तासु चरित सबकोई ॥
सूरकिशोर भयो मिथिलामें * तिनको चरित विदित वसुधामें ॥
आये अवध नगर यक काला * छके प्रेममहँ बुद्धि विशाला ॥
सरयू मज्जन करि मतिकेतू * यक मंदिर गे दर्शन हेतू ॥
लखे न तहँ नथ सियकी नासा * तिहि क्षण भयो सकल सुख नासा ॥
डेरा आय कह्यो तिय पाहीं * नाहक व्याह्यो हम सिय काहीं ॥
राजा रंक अहै रघुवंसी * कुल प्रभावते है अलमंसी ॥
दोहा–भूप चक्रवर्ती सुन्यो, तब दीन्ह्यो सिय व्याहिं ॥
भवन भूतिकी का चली, भूषणहूं कछु नाहिं ॥ २ ॥
लली नाकमें नयहु न देखी * कहो व्याहको का सुख लेखी ॥
तब बोली तिनको अस नारी * मैं तो सियकी हौं महतारी ॥
कछुक अहै मेरेहु नहिं पासा * केहि विधि पूर करौं तुव आसा ॥
ले नथिया मेरी यह जाहू * सिय पहिराय यही क्षण आहू ॥
सूरकिशोर नारि नथ लीने * पहिराये चलिकै सुख भीने ॥
हिये उछ्वास लहत परितापा * इत व्याही सिय किय बड पापा ॥
अर्द्धनिशा तब जनककुमारी * लिये सहस्रन सखी सुखारी ॥
दिव्य विभूषण वसन शृंगारे * सोइ नथिया नासामहँ धारे ॥
महा विभूति सहित छबि छाई * सूर किशोर निकट चलि आई ॥
पितु कहि पद परि रोवन लागी * कह्यो पिता तुमहो बडभागी ॥
मोहिं न कछु संपतिकी हानी * लीजै सहस शक्र सम जानी ॥

दम्पति देख अनूप विभूती * मान्यो वृथा न निज करतूती ॥

दोहा-पुनि सिय मंदिरको गये, दम्पति लहि सुख भौन ॥
रहे अवध कछु काल पुनि, किय मिथिलाको गौन ३ ॥

एक संतकी कहौं कहानी * देवादास नाम जेहिं जानी ॥
चित्रकूट वासी हरि प्यारो * सकल शास्त्रको सत्य भँडारो ॥
चित्रकूट महँ तासु चरित्रा * जानत सिगरे संत पवित्रा ॥
युगलानन्य शरन यक संता * अबलों अवध माहिं बिलसंता ॥
तिनको चरित जगत् सब जानै * सिगरे सज्जन करत बखानै ॥
रामप्रेम वारिधिमहँ मगना * सिय सहचरी भाव चित लगना ॥
सरयू तीर अनन्य निवासी * दम्पति रास रुचिर रस रासी ॥
आश्रम वास करहिं सब काला * रचहिं अनेकन ग्रंथ विशाला ॥
सब विद्या महँ परम प्रवीना * लोभ मोह मद मत्सर हीना ॥
मोपर कृपा करहिं अति भारी * जगत् मित्र विज्ञान विचारी ॥
भाषा पारसि आदिक केरे * रचहिं रामपद सुभग घनेरे ॥
चित्रकूटमें जब मैं आयो * प्रभुके चरण जाय शिर नायो ॥

दोहा-मोको दिय उपदेश अस, भजु अनन्य रघुवीर ॥
सीतापति करुणाउदधि, हरहिं सकल भवपीर ॥ ४ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीराम-
रसिकावल्यां उत्तरचरित्रे द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

दोहा-अब हिम्मति हियमें किये, हिम्मतिदास चरित्र ॥
नेसुक मैं वर्णन करौं, जानि विशेषि विचित्र ॥ १ ॥

पंनानगर नगीचहि ग्रामा * रह्यो वरारिच अस तेहिं नामा ॥
हिम्मति दास रह्यो तेहि माहीं * बालहिते विषयनि वश नाहीं ॥
लेकर झांझ कृष्ण पद गावै * प्रेम मग्न तनु भानु भुलावै ॥
गयो एक कोउ शिष्य लेवाई * सुन्यो भागवत धनहुँ चढाई ॥
कछु संपति लै विप्रन दीन्हे * कछु लै गवन भवन कहँ कीन्हे ॥
मारगमें लूट्यो जब चोरा * हिम्मत ध्यायो नंदकिशोरा ॥

झांझ बजाय सुनावन लागे * चोर वित्त लै नेसुक भागे ॥
भये सबै आंधर तेहिं ठाहीं * गिरे आय तिनके पदमाहीं ॥
धन दै घरभरि तेहि पहुँचायो * तस्कर चैन पाय शिर नायो ॥
तेऊ लहि तिनके उपदेशा * भजनलगे सब त्यागि रमेशा ॥
यक दिन मंदिर केरि उघारी * मिली न हिम्मति भये दुखारी ॥
गावनलागे झांझ बजाई * तारा टूटि गिरचो महि आई ॥

दोहा–यक दिन हिम्मतिदास गृह, बैठ रहे युग याम ॥
स्यंदन चढि आवत भये, रघुनंदन तेहिं धाम ॥ २ ॥

रहे नारि हिम्मति गृह नेरे * सो दोउ बंधुनको जब हेरे ॥
द्वै बालक सुंदर मनहारे * हिम्मतिदासहिं भवन सिधारे ॥
अस कहि देखनहित सो आई * हिम्मतिदासहि गिरा सुनाई ॥
द्वै बालक तुम्हरे गृह आये * देहु देखाय कहां बैठाये ॥
हिम्मति कह्यो न मैं इत देखे * तू केहि ठौर कौन विधि पेखे ॥
सो करि शपथ कह्यो असि बानी * मैं देखे बालक छबिखानी ॥
तब हिम्मति परदक्षिण कीन्ह्यो * कह्यो जन्मफल तैं लै लीन्ह्यो ॥
एक समय महँ हिम्मतिदासा * युगलकिशोर दरशकी आसा ॥
आये मंदिरमहँ अधराता * बंद कपाट सुनी असि बाता ॥
तब यह दोहा पढ्यो पुकारी * सो मैं इतही लिखौं विचारी ॥

दोहा–कपटिनके लागे रहैं, निशि दिन वज्र कपाट ॥
प्रेमिनके पद परतहीं, खुलत कपाट झपाट ॥ ३ ॥

जब अस हिम्मतिदास उचारा * अनायास खुलिगये केंवारा ॥
हिम्मति युगलकिशोर विलोकी * फिरि आये निज भवन अशोकी ॥

दोहा–एक समय तुलसी विपिन, गमने हिम्मतिदास ॥
तहँ राधा माधव दरश, करन भई उर आश ॥ ४ ॥
तब बैठे शृंगार वट, तरु तर द्वै व्रत कीन ॥
स्वप्न माहँ राधा रमण, ऐसो शासन दीन ॥ ५ ॥
तुमको तो दीन्ह्यो दरश, मैं चलिकै बहु बार ॥

जहां जहां दीन्हें दरश, सो सब किये उचार॥६॥
तब हिम्मति विश्वास करि, प्रेम मगन मन कीन॥
वृंदावनके कुंजमें, यह दोहा पढि दीन ॥ ७ ॥
घर घर गोपी गोप हैं, घर घर गौवें ग्वाल ॥
घर घर हिम्मतिदासको, मिलत लाडिली लाल८॥
तब राधा माधव युगल, प्रेम मगन तेहिं जानि ॥
मोरमुकुट मुरली लिये, दियो दरश छविखानि९॥
तब हिम्मति दोहा पढ्यो, राखी जनकी लाज ॥
ऐसे प्रभुको ध्याइये, हिम्मति सहित समाज१०॥

कवित्त—ताके भाग्य जागे जाके नयननमें लाल लागे, ललित त्रिभंगी देखि रंक निधि पाईसी ॥ कहत न बनै बयन सुने मनमोहनके, भूली कुलकानि भई अकह कहाईसी ॥ लोक गुरुलोक अवलोकहूंकी सुधि नाहिं, युगल स्वरूप सिंधु लाय डुबकाईसी ॥ साहेब शरण पाय हिम्मत विलासी भये, तीनि लोक साहिबीहू लागे लघु राईसी ॥ १ ॥

दोहा—पुनि हिम्मति यात्रा कियो, वृंदावनकी सर्व ॥
आये अपने भवनमें, माने मोद अखर्व ॥ ११ ॥
शरदपूर्णिमाको रहै, उत्सव यक दिन माहिं ॥
श्रीमूरति अंगन विषे, दिय पधराय तहाहिं ॥१२॥
हिम्मति तहँ गावनलगे, मध्य संतकी भीर ॥
प्रेम मगन तनु भान तब, ढारत आंखिन नीर१३॥
जस जस हिम्मति डोलते, तस तस मूरतिडोल ॥
यह कौतुक सब साधु लखि, बोले ऐसो बोल॥१४॥
मति नाचहु हिम्मतिहुलसि, प्रभुको परत प्रयास॥
हिम्मति लजि बैठे तबै, सब साधुनके पास ॥ १५॥

ऐसे हिम्मतिदासके, जानहु चरित अनेक ॥
कहँलों मैं वर्णन करों, कह्यो यथामति नेक ॥ १६॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

दोहा-एक अपूरव साधु भे, नाम सुपर्वतदास ॥
तिनको अब श्रोता सुनहु, अतिसुंदर इतिहास॥१॥
छप्पय-धमना नामक ग्राम रहै यक परम सुहावन ॥
पर्वतदास सुसंत तहां निवसे जगपावन ॥
तहँ कोऊ यक संत आइ मांग्यो जलपाने ॥
लागे पर्वतदास देन तब कह्यो सुजाने ॥
निगुरा कर जल हम लेत नाहिं, मंत्र लिहे जो होहु तुम ॥
तो देहु सलिल पीवैं तुरत, बिन गुरुजग जालिम जुलुम ॥१ ॥
बोले पर्वतदास मंत्र हम अब बिनु लीन्हे ॥
कैसे तुमको जानदेहिं बिन पानहिं कीन्हे ॥
यह सुनि साधू उठ्यो गह्यो मग अति अतुराई ॥
पर्वत मानि गलानि लियो ताको पछिआई ॥
तब साधु कह्यो तेहिं मुसकिकै, मंत्र लेहु घर जायकै ॥
पर्वत कह तुमहीं देहु अब, काहि कहौं गोहरायकै ॥ २ ॥
दै साधू उपदेश गयो कहुँ देशन काहीं ॥
पर्वत लागे करन संत सेवन घरमाहीं ॥
एक समय जगदीश चले पथि खर्च चुकयो जब ॥
कोउ साधू चलि आय तमाखू मांगतभो तब ॥
तेहि कर प्रभु थैली देतभे, खाय तमाखू सो दियो ॥
तहँ लै थैली पर्वत चले, खान तमाखू चित कियो ॥ ३ ॥
खोले थैली लखे रुपैया द्वै तेहिं माहीं ॥
तब विस्मित ह्वै लिय भजाइ भो खर्च तहांहीं ॥
मिले रुपैया युगल जबै तेहि दिनते तामें ।

पर्वत गुणि हरिकृपा गये जगदीशहि धामै ॥
करिकै दरशन जगदीशको, आये जब निज ऐनमें ॥
तब यह दोहा लागे पढन, साधु समाजहि चैनमें ॥ ४ ॥

दोहा–बहु पर्वत रघुनाथ पहँ, पहुँचायो हनुमान ॥
जब पर्वत पहुँचाइहौ, तब बदिहौं बलवान ॥ २ ॥
पर्वत मन कहँ रैनि दिन, हरि कर मन अटकाव ॥
क्षणसरतार अनर्थ कृत, वैश्य भूतकर न्याव ॥३॥
कोउ साधू पूंछयो तहां, वैश्य भूतकस न्याव ॥
तब पर्वत बोल्यो हुलसि, सुनहु संत भरि चाव॥४॥
यक बानी पूरब धनी, भयो निर्धनी फेरि ॥
कह्यो साधु पहँ असि कृपा, करहु होय धन ढेरि ॥५
साधु कह्यो जो प्रेत यक, तुरत सिद्ध है जाय ॥
तौ जो धन माँगिहौ अवशि,तुमको देहै आय ॥६॥
वणिक प्रेतको सिद्ध किय, प्रेत कह्यो अनखाय ॥
काम रीति करिहौ हमैं, तौ हम पटकब आय ॥७॥
कहै वणिक सो लायकै, देतो प्रेत तुरंत ॥
सांस न पावै वणिक क्षण, भयो तबै भयवंत ॥ ८ ॥
कह्यो साधुसों प्रेत मोहिं, मारन चहत तुरंत ॥
देहु उपाय बताय अब, तुम करुणाकरसंत ॥ ९ ॥
साधु कह्यो सोंपोरको, देहु बाँस यक फोरि ॥
द्वार गाडि तासों कहहु, उतरहु चढहु बहोरि॥१०॥
सो उपाय बानी कियो, प्रेत रह्यो तेहि वंस ॥
प्रेत वणिकको न्याव अस,भजै जो अस सोइ हंस ११

इति सिद्धिश्रीमहाराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरचरित्रे चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

दोहा—एक ब्रह्मचारी रहे, मम ताता गुरु सोय ॥
तासु कथा वर्णन करौं, सुनहु सबै मुदमोय ॥ १ ॥

हरि आशी काशीके वासी * महा विरक्त विश्व भय नाशी ॥
हनुमत कवच वज्र पंजरको * महान्यास कीन्हे तप बरको ॥
हरि व्यतिरिक्त जाहि शिर नावै * मूरति तुरत फूटि सो जावै ॥
रह्यो एक पूनाको राजा * चिमनाआपा नाम दराजा ॥
भाग्यविवश सोऊ शिषि भयऊ * तेहिं प्रभाव हानी ह्वै गयऊ ॥
रहे ब्रह्मचारी यक ठामा * मिली न भिक्षा मांगे ग्रामा ॥
नाहिं आई पूजनकी साजू * उपज्यो मनमहँ शोक दराजू ॥
कह्यो शिष्यको ग्रामहिं जाई * देहु अन्न कौनहुँ तुम लाई ॥
शिष्य मांगि सामा कछु लायो * पात्र मृत्तिका ताहि चुरायो ॥
पुनि कांटा यक कूपहि डारयो * कनकपात्र बहुभांति निकारयो ॥
पूजहिं जो मूरति जगदीशा * तासों कह्यो नाय पद शीशा ॥
नाथ नेम मम अहै महाना * खाहुँ महापरसाद न आना ॥

दोहा—जो अनन्य मैं दास तुव, मोपर दाया होय ॥
महाप्रसाद तुरंतहीं, अब मँगाइये सोय ॥ २ ॥

अस कहि जब नैवेद्य लगायो * महाप्रसाद तुरंतहि आयो ॥
देखि सकल कौतुक जनमाने * प्रभुहिं प्रणाम कियो सुखसाने ॥
एक समय गवने बंगाला * उत्सव तहां रह्यो तेहि काला ॥
रही तहां लाखन जन भीरा * कोउ बंगाली यक मतिधीरा ॥
लियो ब्रह्मचारी बोलवाई * गये नाथ गुणि आदरताई ॥
तहँ मृत्तिका मूर्ति कालीकी * विरची जन शोभा शालीकी ॥
तेहि चढाय लै चले विमाना * जय जय माच्यो शोर महाना ॥
कीन्हे सब प्रणाम मतिधामा * प्रभुसों कह्यो करहु परणामा ॥
प्रभु कह मोहिं न प्रणाम करावहु * काहे अपयश शीश चढावहु ॥
तब रोषित भे सब बंगाली * बोले वचन अहै यह जाली ॥
नाहिं नावै अंबाकहँ शीशा * माने कौन काहि निज ईशा ॥

कह्यो ब्रह्मचारी तब वाणी * मेरो प्रभु है शारंगपाणी ॥

दोहा–जो मैं शीश नवाइहौं, तुम्हरी देवी काहिं ॥
सहस टूक ह्वै मूर्ति यह, फूटि जाइ क्षणमाहिं ॥ ३ ॥

तब बोले सब वचन प्रचंडा * करै ब्रह्मचारी पाखंडा ॥
पकरि शीश सब देहु नवाई * याकी सब कलई खुलि जाई ॥
दौरे सकल नवावन शीशा * तब सुमिरयो प्रभु श्रीजगदीशा ॥
हँसत हँसत जोरे युग हाथा * कालीको नायो निज माथा ॥
माथ नवावत मूर्त्ति उदारा * भई तुरंतहि टूक हजारा ॥
बंगाली मारन हित धाये * तब तिनको प्रभु वचन सुनाये ॥
नहिं आयुध गडिहै तनुमाहीं * हौं पकरे रहिहौं इतनाहीं ॥
अस कहि पहिरि पादुका दायन * उतरि गये गंगा अति चायन ॥
भये चकित सिगरे बंगाली * सबकी मिटी गर्वकी लाली ॥
गये ब्रह्मचारी यक काला * जगन्नाथकी पुरी विशाला ॥
अरुण खम्भ यक तहँ रचवायो * अति लंबो द्वारे धरवायो ॥
सिंह पौरि महँ चहे गडावन * लगे बहुत जन समिटि उठावन ॥

दोहा–उठो उठायो खम्भ नहिं, गये सकल जन हारि ॥
गये ब्रह्मचारी तहां, श्रीजगदीश सँभारि ॥ ४ ॥

अरुण खम्भ यक हाथ उठाई * कीन्ह्यो ठाढ प्रयास न पाई ॥
पेखि पुरी जन अचरज माने * महापुरुष प्रभुको पहिचाने ॥
यहि विधि कथा अनेकनि ताकी * कहँलो कहों रही बहु बाकी ॥
मातामह जे रहे हमारे * तिनसों अस प्रभु वचन उचारे ॥
कबहूं तोरि राज्य नहिं छूटी * जो तुव वंश प्रजा नहिं लूटी ॥
कियो विनय मातामह मोरा * कछु प्रसाद चाहौं प्रभु तोरा ॥
तब प्रभु कह्यो जो तोरि कुमारी * ताहि शिष्य तू करै हमारी ॥
तब मम मातहिं शिष्य करायो * सब कुटुंब धनि जन्म गमायो ॥
कबहुँ कबहुँ मातामह गेहू * आये नाथ किये अति नेहू ॥
सकल जगतमें विदित प्रभाऊ * धन्य धरा जहँ धार्‍यो पाऊ ॥

अरुण खम्भ जगदीश दुवारे * अबलौं देखहिं मनुज अपारे ॥
प्रभु जगदीश पुरीमहँ जाई * सन्मुख पद्मासनहि लगाई ॥
दोहा-सबसों कह अब तनु तजहुँ,अनमिष दृग करिदीन
सबके देखन वपुष तजि, भे जगदीशहिं लीन ॥९॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

दोहा-और भक्तकी एक अब, गाथा सुनहु सुजान ॥
अबते द्वादश वर्ष भे, तबको चरित महान ॥ १ ॥
मेरी राज्य माहँ यक ग्रामा * प्राग पंथ महँ है गढ नामा ॥
तहँ यक काछी रह्यो सुजाना * ताको नाम दास भगवाना ॥
बानि परी बालहिंते ताकी * करै साधु सेवा सुख छाकी ॥
सेवत साधु वित्यो बहु काला * अति निर्धनी दरिद्र कराला ॥
मम यक बाग रहै तेहिं ग्रामा * वसै तहां रचिके निज धामा ॥
यक दिन रह्यो महाघन घोरा * वर्षन लागे देन झकोरा ॥
चपला चमकि रही चहुँ घाई * करहु पसारे सूजत नाहिं ॥
नदी नार सब तजे करारा * धरणि महा धावत जलधारा ॥
ताही दिवस मध्य अधराता * चारि साधु आये अघघाता ॥
द्वारहिंते यहि विधि गोहराये * सुनु भगवानदास हम आये ॥
भींजत खडे कलेश अपारा * गये तीनि दिन बिना अहारा ॥
तब भगवानदास उठि धायो * चारिहुं साधु सदन पधरायो ॥
दोहा-घरके बांसि निकारिकै, दीन्ह्यो धूनी बारि ॥
लग्यो अन्न खोजन भवन, कछु नहिं परचो निहारि २
मान्यो अति मनमाहँ गलानी * काह करौं अब सारँगपानी ॥
तब द्वारे यक वणिक पुकान्यो * सुनै आय इत कह्यो हमान्यो ॥
तब भगवानदास तहँ गयऊ * वणिक ताहि यहि विधि कहि दयऊ ॥
आये साधु भवन तुव चारी * मैं सुनि लीन्ह्यो ग्राम मँझारी ॥
वर्षावात जानि अति जोरा * मैंही लायों साजु अथोरा ॥

असकहि सघृत अन्न बहु साजू * वणिक दियो तेहिं गुणि अतिकाजू
तब भगवानदास अस भाखा * याको मोल काहि करि राखा ॥
बोल्यो वणिक मोल वसु आना * दियो काल्हि पहुँचाय मकाना ॥
लै भगवानदास सब साजू * मान्यो अपनेको कृतकाजू ॥
चारिहु साधुन निशा जेंवायो * तिनको झूंठ आपहूं पायो ॥
निशा सिरानि भयो परभाता * गमने साधु रहे जहँ जाता ॥
लै भगवानदास वसु आना * गयो वणिकके द्रुतहिं दुकाना ॥

दोहा—गोहराये तेहिं नाम लै, दियो निशा जो साजु ॥
लीजै ताको मोल यह, कियो मोहिं कृत काजु ॥३॥

वणिक नारि तब तहँ कढि आई * बोली कोपि गयो बौराई ॥
दश दिनभे पति गयो प्रयागा * मैं जानौं नाहिं को केहिं मांगा ॥
जब पति ऐहैं तब तुम दीजे * विन जाने कैसे हम लीजै ॥
नारि वचन सुनि विस्मित भयऊ * तब भगवानदास घर गयऊ ॥
दश दिन बीते वणिक सिधारा * नारि सकल वृत्तांत उचारा ॥
तब भगवान गये घर माहीं * आयो विस्मित वणिक तहांहीं ॥
कह भगवानदास सुनु भाई * दियो साजु जो निशि महँ आई॥
तुमहिं मोल भाष्यो वसु आना * सो लीजै किय काज महाना ॥
वणिक कह्यो हौं गयों प्रयागा * कहत कहा तोको कोउ लागा ॥
विंशत दिन वीते घर आयों * तेरे पास साजु कब लायों ॥
सुनि भगवानदास भरि लाजू * जान्यो सत्य अहै यदुराजू ॥
दीनदयालु दीन सुधि लीन्ह्यो * मम हित हाय महाश्रम कीन्ह्यो ॥

दोहा—अस विचारि तुरतहिं तज्यो, गोत्र कलत्र कुटुम्ब॥
भो विरक्त अति भवनते, विचर्‌यो लैकर तुम्ब ॥४॥

मैं जब यह सिगरी सुधि पायों * तुरत साधुको खोज करायों ॥
ईश्वरजीत एक मम सरदारा * धीर वीर हरिदास उदारा ॥
तासों कह्यों तुरंत बोलाई * तुम भगवानदास लै आई ॥
राखहु अपने अयन मझारी * करहु तासु सेवा सुखकारी ॥

ईश्वरजी तुरंतहि धायो ❀ सादर साधु चरण शिर नायो ॥
पुर वैकुंठ नाम तेहि ग्रामा ❀ लायो ताहि मानि सुखधामा ॥
तबते अचल दास भगवाना ❀ वसि वैकुंठ पुरै मतिवाना ॥
अबलों करै साधु सेवकाई ❀ रमे रामके रंग महाई ॥
काम क्रोध मद लोभहुँ मोहू ❀ कबहुँ न परशत गुणे हरिछोहू ॥
जब मम भवनमाहँ सुख चाहा ❀ होत जानकी ब्याह उछाहा ॥
तब मोहिं करन,सकल कृतकाजू ❀ पगु धारत माधे संत समाजू ॥
जितने साधु तासु गृह आवैं ❀ जबलों रहैं सुभोजन पावैं ॥

सो०-साधु दासभगवान, अबलों अछत विकुंठपुर ॥
भाव सहित भगवान, भजै भीति भव भानि भल ॥ १॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

दोहा-एक साधुको चरित अब, श्रोता सुनहु अनूप ॥
रह्यो देश पंजाबमें, एक नगरको भूप ॥ १ ॥

खेलन हेतु अखेट अपारा ❀ गयो उत्तराखंड पहारा ॥
तहँ यक साधु मिल्यो वनमाहीं ❀ भयो तासु सत्संग तहांहीं ॥
तबते नगर कोश परिवारा ❀ तज्यो धाम धन वाम कुमारा ॥
कृष्णदास निज नाम धराई ❀ वागन लग्यो मही सुखछाई ॥
करमें लीन्हें विमल सितारा ❀ जय जय कृष्णहिं करत उचारा ॥
नाचत गावत कांपत अंगा ❀ क्षण क्षण रँगत कृष्णके रंगा ॥
संवत उनइससे अरु बीसा ❀ काशी गयो सुमिरि जगदीशा ॥
समला शिर जामा तनुमाहीं ❀ जय जय कृष्ण कहत चहुँ घाहीं ॥
क्षुधा पियास नींद बिसराये ❀ विचरन लग्यो प्रेम रस छाये ॥
पग घूंघुरू होत झनकारी ❀ गावहिं सूर सुपद मनहारी ॥
सो विचरत विचरत एक साला ❀ मणिकर्णिका गयो यक काला ॥
तेहि क्षण लोथि जरावन हेतू ❀ लाय चिताको किय कोउ नेतू ॥

दोहा–बिरचि चिता तेहिं मृतकको, दीन्ह्यो आसु चढाय
पावक दियो लगाय पुनि, बढी ज्वाल समुदाय॥२॥

कृष्णदास निर्तत चहुँ घाहीं ❀ चिता समीप गये क्षण माहीं ॥
तेहिं घरके बारण तेहिं कीन्हे ❀ बचिहौ नाहिं चिता छुइ दीन्हे ॥
कृष्णदास तब कह मुसक्याई ❀ दीजै याको नाम बताई ॥
कृष्ण चरण याको है नामा ❀ दियो बताय कौन है कामा ॥
यह सुनि जयजयकृष्ण उचारी ❀ कूदिपरे तेहिं चिता मँझारी ॥
नाचन लगे लोथि पर जाई ❀ सक्यो न पावक नेकु जराई ॥
नचे दंड दुइ लगि तेहि माहीं ❀ लै सितार गावत पदकाहीं ॥
कूदिचले पुनि औरी ओरा ❀ देखत भे जन सबै करोरा ॥
सबै परे पांयन प्रभु केरे ❀ निज अभिलाष कहे बहुतेरे ॥
जानि उपद्रव तहँ अति भारी ❀ चले पराय तुरत तपधारी ॥
मिरजापुर आये तेहिं राता ❀ विचरत पद गावत अवदाता ॥
जैपुरको राजा तेहिं काला ❀ मेरो भाम विभूति विशाला ॥

दोहा–सो विंध्याचल अंबिका, आयो दरशन हेत ॥
तासु मिलन हित मैं गयों, विंध्याचल सुखसेत॥३॥

मिरजापुर महँ परम सुजाना ❀ महिसुर एक दास भगवाना ॥
नाम भक्त माली विख्याता ❀ राम अनन्यदास अवदाता ॥
सदा सकल देशन महँ जावै ❀ भक्तमाल सब भांति सुनावै ॥
करि करि रामतत्त्व उपदेशा ❀ हरहि महाभव भीति कलेशा ॥
रामरसिक परमारथ पूरे ❀ चतुर उदार शील रस रूरे ॥
मेरे नगर रहैं बहुधांई ❀ मानहिं मोहिं बंधुकी नाँई ॥
तिनहिं भक्तमालीके आले ❀ आये कृष्णदास यक काले ॥
कियो भक्तमाली सत्कारा ❀ आसु मोहिं चालि वचन उचारा ॥
महानुभाव भागवत पूरे ❀ आये एक साधु अति रूरे ॥
भाग्य विवश तिन दर्शन कीजे ❀ अपनो जन्म धन्य गनि लीजे ॥
मैं कह केहि विधि दर्शन पाऊं ❀ सो कह विनती करि इत लाऊं ॥

अस कहि करि विनती बहुतेरी * अभिलाषा पूरी किय मेरी ॥
दोहा–कृष्णदासको दरश करि, मैंहूं भयो सनाथ ॥
विनय कियो रीवां चलहु, धरहु हाथ मम माथ॥४॥
सो कह तैं सांचो मम दासा * कबहुंक ऐहौं मैं तुव बासा ॥
अबै गंगसागर कहँ जाऊं * तहँते पलटि पुरी तव आऊं ॥
अस कहि हरिपद गावत धीरा * विचरन लागे गंगा तीरा ॥
यक दिन एक महाजन सूना * मरिगो किय अपनो घर सूना ॥
घरमें रही तासु यक माता * तीनि लाख सम्पति अवदाता ॥
भऱ्यो निशा जब भयो प्रभाता * चले जरावन लै सब भ्राता ॥
कृष्णदास गंगाके तीरा * लखे सकल जन महा अधीरा ॥
लागि दया बोले असि बानी * मति मानहु अब मनहिं गलानी ॥
हम आधी जो सम्पति पैहैं * तौ याको जिआय इत दैहैं ॥
कह्यो मातु तेहिं परि पद माहीं * सिगरी सम्पति लेहु यहांहीं ॥
कृष्णदास तब लोथि धराई * नाचनलगे सितार बजाई ॥
मिरजापुरके मनुज हजारन * खडे तमाशा लगे निहारन ॥
दोहा–कृष्णदास गावत भये, निरम्यो जो पद सूर ॥
सो मैं इत लिखिदेतहौं, मानि महामुद पूर ॥ ५ ॥
पद–हमारे प्रभु अवगुण चित न धरो ॥
समदरशी है नाम तिहारो ऐसहिं पार करो ॥
यक लोहा पूजामें रहतो यक घर बधिक परो ॥
यह दुविधा पारस नहिं जानत कंचन करत खरो ॥
यक नदिया यक नार कहावत मैलो नीर भरो ॥
जब मिलिगो तब एक बरण भो सुरसरि नाम परो ॥
यक माया यक ब्रह्म कहावत सूरस्याम झगरो ॥
की याको निरवार करो प्रभु नहिं प्रण जात टरो ॥
दोहा–यह पद गायो प्रेम भरि, नयनन आंसु बहाय ॥
उठ्यो कुमार तुरंत जनु, सोवत दियो जगाय ॥६॥

मिरजापुर बासी जन जेते * अति अचरज माने मन तेते ॥
रही जो तासु सुवनकी माई * तीनि लाख धन दियो मँगाई ॥
कृष्णदास आधो लै लीन्ह्यो * तुरतहिं साधुन विप्रन दीन्ह्यो ॥
आधो ताको दियो उदारा * करन हेतु पूंजी रोजगारा ॥
गंगासागर आप सिधारे * गावत कृष्णचरित्र खितारे ॥
मिल्यो एक साहेब मग माहीं * सो कह मग छोंडत कत नाहीं ॥
अस कहि कोडा हनन उचायो * हाथ उठावत भूमिहिं आयो ॥
भयो शोर कोउ यक वैरागी * गयो मारि साहेबको भागी ॥
जज्ज कलट्टर खोज करायो * कृष्णदासको कतहुँ न पायो ॥
साहेब रुधिर वमत अति सोई * मगमहँ मऱ्यो लख्यो सब कोई ॥
तिनके और चरित्र अपारा * मैं नहिं लिख्यो मानि विस्तारा ॥
यह चरित्र बहु दिनको नाहीं * वीत्यो संवत एक यहांहीं ॥
दोहा—यह मेरो देखो सुनो, मानहु मृषा न कोय ॥
भगवत अरु भागवतको, चरित मृषा नहिं होय॥७॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

दोहा—रामसखेको चरित अब, वर्णन करों अपार ॥
अहै विदित सब जगतमें, को कहि पावै पार ॥ १ ॥
जैपुरदेश जन्म प्रभु लीना * बालहिंते रघुपति रस भीना ॥
तजे भवन धन कुल परिवारा * आये अवध अनंद अपारा ॥
कछु दिन कियो अवधपुर वासा * आये चित्रकूट सहुलासा ॥
रहे शिष्य यक तिनके संगा * लावे भोजन मांगि असंगा ॥
दश मूरतिकी बनै रसोई * आय परैं वैष्णव बहुतोई ॥
रघुपति कृपा करैं सब भोजू * रहै कारखानो यह रोजू ॥
राम उपासक द्वितिय न ऐसो * रामसखे प्रगटे जग जैसो ॥
चित्रकूट करि कछु दिन वासा * मैहर आये सियवर आशा ॥
अति रमणीय तौन थल भायो * रहन हेतु तहँ कुटी बनायो ॥

करहिं ध्यानमहँ विपुल भावना * जैसी छविकी होय कामना ॥
ध्यानहिमहँ यक दिन रस रांचे * राम भोग बनवत चित सांचे ॥
जो व्यंजन मनमाहँ बनायो * सो तेहिं समय प्रगट ह्वै आयो ॥

दोहा–यक साधू आयो हुतो, तहँ दरशनके हेत ॥
सो सांचो व्यंजन निरखि, बोल्यो विस्मित चेत ॥ २ ॥

ध्यान करत व्यंजन कहँ पायो * रामसखे तब वचन सुनायो ॥
तुम कहियो कोहुसों यह नाहीं * जानै कोन ईशगति काहीं ॥
यक दिन यक आई तहँ बाई * भई शिष्य सुंदरि मति पाई ॥
शीलमती तेहिं नाम धरायो * ताको अस वरदान सुनायो ॥
बांचै भक्तमाल भरि प्रेमा * ह्वैहै तेरो सब विधि क्षेमा ॥
साधु समाज उजागर ह्वैहै * जहँ जैहै सुंदर यश पैहै ॥
तैसहि भई शीलमति बाई * रामसखीसी सत्य सुहाई ॥
मैहूं ताको दर्शन पायों * तेहि आचरण यथाश्रुति गायों ॥
यक कायथ आयो इक काला * हाथ कटे अति रह्यो बिहाला ॥
ताहि दुखी लखि दिय वरदाना * लिखु सिगरो तैं ग्रंथ प्रमाना ॥
होऊ ठूंठे हाथनमाहीं * लै लिखनी लिखु ग्रंथन काहीं ॥
ठूंठे हाथन लै लिखनीको * लिखन लग्यो सो अक्षर नीको ॥

दोहा–दियो चित्रनिधि नाम तेहिं, भयो चित्रनिधि सत्ति॥
विदित चित्रनिधिकी अहै, जगमें जाहिरवृत्ति ॥ ३ ॥

गनीवेग सूबा यक रहेऊ * सो चलि रामसखे पद गहेऊ ॥
षट सहस्र अरप्यो सो मुद्रा * ग्रहण कियो नहिं गनि अतिक्षुद्रा ॥
विनय कियो दीनता देखाई * पांचहिं रुपया लियो उठाई ॥
एक साधुको हुत दे राख्यो * घरको जाहु ताहि अस भाख्यो ॥
जानहिं राग रागिनी भेदा * गान करहिं जस विधि कह वेदा ॥
ध्रुपद ख्याल टप्पा पद रूरे * रचहिं रामके प्रेमहिं पूरे ॥
एक समय यक पदहिं बनायो * आयो गायक ताहि सिखायो ॥
गायक सो लखनऊ सिधारा * गायो सो नवाब दरबारा ॥

सुनत नवाब रीझि अति गयऊ * पूछ्यो केहिं मुख निर्मितभयऊ ॥
गायक कह्यो साधु यक अहहीं * रामसखे मेहरमहँ रहहीं ॥
ते अस अस पद बहुत बनाये * अगणित गायक बोलि सिखाये ॥
सो पद मैं इत देहुँ लिखाई * रसिकनको अतिशय सुखदाई ॥

राग कान्हरा बड़ो ताल–प्यारे तेरी छवि पर वारियां ॥ छूटि वदन कुँवर दशरथके मारत जुल्फैं कारियां ॥ तीखी सजल लाल अंजनयुत लागत आँखें प्यारियां ॥ रामसखे दृग ओढन हमको करो न क्षण भरि न्यारियां ॥ १ ॥ येरी कोऊ मोहिं बताओ देखे कहूं राम सुजान ॥ नृत्यत हँसत रासमंडलमें ह्वैगे अंतर्ध्यान ॥ मणि विन नाग मीन ज्यों जल विन तलफत त्यों मम प्रान ॥ रामसखे जो आनि मिलावै देहि सो अब जियदान ॥ २ ॥

दोहा–तब नवाब निज नाजिरै, पठयो प्रभुके पास ॥
यहि विधि विनती करतहौं, मोको देहु हुलास ॥ ४ ॥

रामसखे लखनऊ जो रहहीं * मुद्रा लाख वर्षप्रति लहहीं ॥
नाजिर आय कह्यो परि पांयन * जस नवाब विनती किय चायन ॥
कह्यो सखेजू तब हँसि बानी * कोशलनाथभंडार न हानी ॥
देखहु तुम सियनाथ भंडारा * कमती नहीं कौनहू प्रकारा ॥
नाजिर चलि भंडार तब पेख्यो * कोटिनकी सम्पति तहँ देख्यो ॥
विस्मित भयो चरण शिर नायो * जाय नवाबहि सकल सुनायो ॥
रामसखे अस विदित प्रभाऊ * गाय चरित को करै अघाऊ ॥
मैं यक सूचन भरि लिखिदीन्हा * सब चरित्र वर्णन नहिं कीन्हा ॥
शंकरमाधव सुमत विस्तारा * रामानुज मत विदित अपारा ॥
गौडेश्वर आदिक मत केते * तिनके शाख प्रशाखहुँ जेते ॥
श्रुति सम्मत तिनके मधिमाहीं * फैलायो निज मत चहुँघाहीं ॥
भये शीलनिधिरामसखे शिषि * द्वितिय चित्रनिधि भयो मनो ऋषि

दोहा–तीजो शिष्य सुजान भो, नाम सुशीलादास ॥
तिनके शिषि जानकिशरण, जेहिंयश जगत प्रकाश ५

अवधशरण तिनके शिषिभयऊ * बुध विरक्त ज्ञानी जग ठयऊ ॥
भयो शीलनिधि शिष्य सुजाना * रघुबरशरण नाम जग जाना ॥
तिनके शिष्य प्रशिष्यनमाहीं * सहसन हैं सब देशन पाहीं ॥
यकते एक अधिक परवीना * राम उपासक हरि रस भीना ॥
कहँलो कहों चरित तिनकेरे * मैं लघुमति परभाव घनेरे ॥
श्रोता तुमहु सुने सब हैहौ * पूछि सकल संतनसों लैहौ ॥
दम्पति रघुपति सीयउपासी * रुचिर रीति रासहिं रसआसी ॥
रामसखे संप्रदा प्रभाऊ * को अस जगमहँ जाहि दुराऊ ॥
महानुभाव रामके प्यारे * होहिं संत मतिमान उदारे ॥
सखी सखाके सदा उपासी * रामरूप पाणिपके आसी ॥
अबलों मैहर माहँ अखारा * तासु प्रभाव विदित संसारा ॥
तासु सम्प्रदाके बहु संता * राम उपासक अवधवसंता ॥

दोहा-है अबलौं देखो सुनो, तिनके अमित प्रभाव ॥
रसिक संत मतिवंत सब, जानहिं सकल स्वभाव॥६॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजुदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां कलियुगखंडे उत्तरार्धे उत्तरचरित्रे अष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८॥

दोहा-औरहु संतनकी कथा, वर्णहु परम विचित्र ॥
जाहि सुनत सब जनन हिय, होते परमपवित्र ॥ १॥

शहर लखनऊ परम ललामा * तहँ रघुनाथदास सुखधामा ॥
करहिं चाकरी साहेब केरी * रामनाम पर प्रीति घनेरी ॥
पहर एक बाकी निशि जानी * उठि सुमिरहिं नित सारँगपानी ॥
यहि विधि विपुल काल चलिगयऊ * साहेब पहरा बदलत भयऊ ॥
इनको कह्यो हुकुम सुनि लेहू * शेष राति पहरा तुम देहू ॥
तब रघुनाथहि संकट गयऊ * भजन समय पहरा अब भयऊ ॥
तब यक मित्रहि कह्यो बुझाई * तुम हमरी बद पहरे जाई ॥
आठ दंड निशि रहे प्रवीना * ठाढ रहहु गहिकै संगीना ॥
जो यहि विधि उपाय तुम साधा * तौ मम भजन होय नहिं बाधा ॥

तब सो सीख मानि मुदमाहीं ❀ पहरा देन गयो तेहि ठाहीं ॥
कछुक दिवस बीते यहि भांती ❀ चुगुल बुझायो साहेब राती ॥
सो सुनि साहेब अति मनमाषा ❀ पहरा देखन किय अभिलाषा ॥
पहरावारेहु यह सुधि पायो ❀ साहेब डर तेहि राति न आयो ॥
दोहा–पति राखन निज दासकी, पथरकला गहि हाथ ॥
धारि रूप रघुनाथको, आयगये रघुनाथ ॥ २ ॥
रुचिर तिलंगाहि वेष बनाये ❀ पहरा हित संगीन चढाये ॥
नेति नेति जेहि वेदन गायो ❀ पहरा देन नाथ सो आयो ॥
मंद मंद टहलत तेहि ठाहीं ❀ आय गयो साहिबहु तहांहीं ॥
रघुनाथहि लखि अति मुदबाढो ❀ चुप है साहेब रहिगो ठाढो ॥
तब प्रभु साहेबको गोहरायो ❀ नहिं बोल्यो तब तुपक चलायो ॥
साहेब लौटिगयो गृह माहीं ❀ भोर बोलि रघुनाथहि काहीं ॥
निशिको सब वृत्तांत सुनायो ❀ तब रघुनाथदास अस गायो ॥
मैं तो पहरा हित नहिं आयो ❀ नहिं जानो को तुपक चलायो ॥
साहेब मन अति विस्मय पायो ❀ को तुव रूप धारि निशि आयो ॥
तब इन जान्यो ममहित लागे ❀ धारि सँगीन राम अनुरागे ॥
त्यागि चाकरी सुत वित बामा ❀ अवधवास कीन्हो अभिरामा ॥
रामघाटमहँ कुटी बनाई ❀ सेवत संतन अति सुखछाई ॥
सहसन संत कुटीमहँ आवैं ❀ मनवांछित भोजन सब पावैं ॥
मेरेहु मन अभिलाष सदाहीं ❀ कब देखौं प्रभु दर्शन काहीं ॥
दोहा–मैं कहँलों वर्णन करहुँ, चरित दास रघुनाथ ॥
जेहिके हित अवधेशसुत, लियो तुपक निज हाथ॥ ३ ॥
रामदास तपसी सुखरासी ❀ अवध वास किय जगत निरासी॥
सरयुतीरके भय निवासी ❀ भजन कियो सरयू हित खासी ॥
भक्त जानि झाकी तिन्ह दीन्ही ❀ विनती रामदरश इन्ह कीन्ही ॥
राम दरश दुर्लभ कलिमाहीं ❀ मातु कही तोहिं दुर्लभ नाहीं ॥
नौमी कहँ दरशन तुम पैहौ ❀ परम अलभ्य लाभ जग लैहौ ॥

जबहिं रामनौमी दिन आयो * दश दिश धुंधुकार नभ छायो ॥
सहसन हय गय सजे शृंगारा * तिन्हपर रघुवंशी सरदारा ॥
सरहु भाय परम छवि छावत * आये सन्मुख वाजि नचावत ॥
कोउ भूपतिकी सैन्य अपारा * नेकु चितै पुनि दियो केंवारा ॥
सरहु वचन गुणि करत विचारा * पुनि जब देख्यो खोलि किंवारा ॥
एको जन नहिं तहां निहार्यो * तब अति अचरज उरमहँ धार्यो ॥
पुनि सरयूके निकट सिधाये * सरयू कह्यो दरश तुम पाये ॥
दोहा-अब संतन सेवहु मुदित, पैहो सब मन काम ॥
इनकह कैसे सेइहौं, धन नाहिं मेरे धाम ॥ ४ ॥
दैहैं धन सरयू अस कहेऊ * संतसेव मारग इन लहेऊ ॥
सेवत संतन बढ्यो प्रभावा * सहसन जन नित द्रव्य चढावा ॥
यक दिन संत गये अधराता * साजु सबै घृत नाहिं लखाता ॥
तब सरयूपहँ गिरा सुनाई * घृत दीजै संतन हित आई ॥
अस कहि गगरा भरि जल लाये * डारि कराहीं घृत सब पाये ॥
एक दिवस बैठे निज आसन * आये संत कछू धन पास न ॥
सहसन संत देखि सुख पाये * तुरत धाय सरयू पहँ आये ॥
भरि तुंबा सरयू रज आनी * सब्दत मुहरैं सब कोउ जानी ॥
यक दिन बैठे रज महँ जाई * सरयु बाढि चहुँदिशिते आई ॥
जहँ बैठे तहँ जल नहिं आयो * देखत सब जन विस्मय पायो ॥
ऐसे चरित अमित तिन केरे * दयाहष्टि जीवन पर हेरे ॥
अंत समय चढि विमल विमाना * प्रमुदित गये लोक भगवाना ॥
दोहा-संत सेव परभाव अस, जानहु जन सब कोइ ॥
शम दमादि साधन विना, राम धाम पथ होय ॥ ५ ॥
मनीराम तजि सुत वित धामा * अवध वास कीन्ह्यो अभिरामा ॥
संतन सेवन रीति गह लीन्ह्यो * यह उपदेश शिष्यहुन कीन्ह्यो ॥
छत्तिस पाठ रमायण केरे * करहिं सालभाति सरयू नेरे ॥
सेवत सेवत संतन काहीं * पंद्राशै ऋण भयो तहांहीं ॥

तब सरयूके निकट सिधाई ॥ ऋणकी बात गये सब गाई ॥
तब सरयू अस युक्ति बताई ॥ युग मटुका कुठरी महँ लाई ॥
तिन्ह मटुकनते द्रव्य निकारहु ॥ अपनो ऋण सिगरो देडारहु ॥
शासन सुनत तो सही कीन्ह्यो ॥ लाखन संतन भोजन दीन्ह्यो ॥
तिन्हके शिष्य वैष्णवदासा ॥ वही रीति अब करत प्रकासा ॥
शीलमणी भे संत प्रधाना ॥ कनक भुवन तिनको सुस्थाना ॥
रामसखेके शिष्य सुजाना ॥ दिनप्रति करहिं मानसी ध्याना ॥
यक दिन ध्यान मानसी माहीं ॥ कछुक हासरस भयो तहांहीं ॥
भागि नाथ कढिगये दुवारा ॥ अरझ्यो पाग निंबुकी डारा ॥

दोहा—लगे करन पोशाक तब, शिर पगडी नहिं पेखि ॥
मंदिरके बाहेर निकसि, निंबूके तरु देखि ॥ ६ ॥
ऐसहि मांडविशरण भे, कनकभवन सुस्थान ॥
संत सेइ हरिदरश लहि, लीनभये भगवान ॥ ७ ॥

ऐसे तिन्हके भाव न गुनहूं ॥ कृपानिवास चरित अब सुनहूं ॥
दक्षिणके भूपतिके भाई ॥ प्रीति परस्पर अति सुखदाई ॥
यक दिन गे भाभीके गेहू ॥ तासों मानत रहे सनेहूं ॥
सिखवत रहे भजनकी रीती ॥ राजहु आय कह्यो असि नीती ॥
नारिनसों एकांतहि माहीं ॥ कबहूं वचन बोलिये नाहीं ॥
कृपानिवास कही तब बाता ॥ नारि नारि ढिग दोष न आता ॥
भूप कोपि तब वचन सुनायो ॥ नारिवेष इन प्रगट देखायो ॥
तब राजा बोल्यो शिर नाई ॥ तुव महिमा अब जान्यों भाई ॥
कृपानिवास भजन जे गाये ॥ रूपासक्त रीति दरशाये ॥
फैलिरहे जिन्ह भजन अपारे ॥ रसिक जनन सुनि लागत प्यारे ॥
रूप सखी भे भक्त महाना ॥ दिल्ली तासु रह्यो सुस्थाना ॥
दिल्लीके दिवानके बेटा ॥ काहूसों न करैं कहुँ भेंटा ॥
दशषट्वर्ष वचन नहिं बोले ॥ बादशाह कह वचन अमोले ॥

दोहा-वचन उचारहु भांति जेहिं, सो तुम कहहु सुजान
जो न कहहु तो देहु लिखि, सो हम करब निदान ८

मम बोलन उपाय तुम पूंछे * लिखे देंत सुनि परेहु न छूंछे ॥
दश करोरि मुद्रा तुम लावहु * नारायण उत्सव करवावहु ॥
बांचि शाह दश कोटि मँगाई * रूपसखी ढिग दियो धराई ॥
तब प्रभु होरी समय विचारी * मौन रीति करि दीन्ही न्यारी ॥
नृत्य वाद्य अरु गानहु माहीं * जे जे गुणी सुने सुविमाहीं ॥
तिन सबको तुरंत बोलवायो * दशहजार बालकन सिखायो ॥
वर्षरोजभर लीला भयऊ * पूरण भये त्यागि तनु दयऊ ॥
प्रेमसखी भे गंगापारे * तिनके चरित अमित सुख सारे ॥
एक समय श्रीरामप्रसादे * शाह कह्यो मन अति अहलादे ॥
जस तुम तस कोउ द्वितिय बतावहु * मेरे मन अति मोद बढावहु ॥
तब इन प्रेमसखीको भाष्यो * पारिख लेन शाह अभिलाष्यो ॥
सवालाखकी खिलत पठाई * प्रेमसखी लखि तुरत फिराई ॥
मेरे ठाकुर अवधबिहारी * ठकुराइनि मिथिलेशकुमारी ॥

दोहा-तिनको तू देखरावतो, तुच्छ विभव अधिकार ॥
रवि सन्मुख कहँ सोहतो, उडुगण तेज प्रकार ॥ ९ ॥

पुनि तिन यक कवित्त कहँ कीन्ह्यो * सो कवित्त मैं इत लिखिदीन्ह्यो॥

कवित्त-चंचलता सिगरी तजिके थिर ह्वै न रहो यह बात भली है ॥ सेव सियापदपंकजधूरि सजीवनमूर विहार थली है ॥ बारहिंबार पुकार कहै अपने मनकी अब प्रेम अली है ॥ ठाकुर रामलला हमरे ठकुराइनि श्रीमिथिलेशलली है ॥ १ ॥

फत्तेपुर यक ग्राम सुहायो * तहँ बलरामदास सुख छायो ॥
यक दिन युगल साधु गृह आये * तिनको सादर अशन कराये ॥
जात समय तिन किय उपदेशा * संतन सेव किहेहु तुम वेशा ॥
सेवत सेवत संतन गाढो * तिनके गृहमें धन बहु बाढो ॥
सदावर्त्त तिन तीनि चलाये * राम भरोस सदा उर लाये ॥

चित्रकूट अति रुचिर ललामा * तहँ घनश्यामदास सुखधामा ॥
संत जनन सेवन परिपाटी * करहिं सदा कछु परै न घाटी ॥
दिन प्रति संत तहां चलि आवैं * करि भोजन अति आनँद पावैं ॥
आठ दंड बाकी निशिमाहीं * जागि भजन करते सुखमाहीं ॥
श्रीमन्नारायण उच्चारन * होत रहत मंदिर प्रति वारन ॥
श्रीभागवत और रामायण * होत त्रिकाल तासु पारायण ॥
दोहा-राखत नेह गरीबसों, तुरत उठत मिलि धाय ॥
तातें श्रीघनश्यामको, रह्यो विमल यश छाय ॥ १० ॥
नागाबाबा हरि उर ध्याये * रहैं कडे महँ कुटी बनाये ॥
योगाभ्यास रीति सब जाने * संतसेवमहँ परम सयाने ॥
कडे शहरवासी नित आवैं * ते प्रभुके परचै बहु पावैं ॥
संध्यातक दर्शन सब लेहीं * राति हरन काहू नहिं देहीं ॥
एक दिन कोउ देखनके हेतू * आधीराति गयो मतिसेतू ॥
बाबाके कर पद अरु शीशा * कटे परे अवनी त्यहिं दीशा ॥
तब गोहारि मारत सो भयऊ * बाबाको कोउ वध करि गयऊ ॥
बाबा उठे अंग सब जोरी * कहियो कहुँ न बात यह मोरी ॥
रामसनेही अति अभिरामा * येऊ किये कडे महँ धामा ॥
संतन सेव रीति गहि लीन्ही * याचन वृत्ति त्यागि सब दीन्ही ॥
तब सब लोग दरशहित जाहीं * पूजा भेट देहिं तेहि ठाहीं ॥
जो गुरुमुख पूजा तेहि लेहीं * गुरुते विमुख त्यागि तेहि देहीं ॥
दोहा-झूंठ वचन बोले नहीं, करैं सदा हरिध्यान ॥
आप अमानी औरको, देते मान महान ॥ ११ ॥
पश्चिम देशहिमें भये, लाला भक्त सुजान ॥
मैलाग्राम निवास जिन्ह, जानत सकल जहान १२ ॥
एक समय शुभ कातिक मासा * निज गृह बैठेहुते हुलासा ॥
पिता वचन अस कह्यो तहांहीं * साधुन कियो दंडवत् नाहीं ॥
कहि पितु गो यक ग्राम सिधाई * संत समाज खाविनकी आई ॥

लाला भक्त दंडवत् कीन्ह्यो * संतन संतसेवि लखि लीन्ह्यो ॥
इन कह तुमहिं न शीत सतावै * उन कह् अस्सको वसन उढावै ॥
तब ये तुरत धाम महँ धाये * शत लोई शत संत उढाये ॥
राग भोग हित अति सुख भीने * चालिस मुद्रा तिन्हको दीने ॥
कह्यो शहर बाहेर यक बागा * पाक करहु तहँ युत अनुरागा ॥
पिता मोर जो यह सुधि पावै * तो मोकहँ बहु त्रास दिखावै ॥
संत गये उत इत पितु आयो * सुनि हवाल मारनको धायो ॥
लाला भागि विपिन महँ आये * संतवेष हरि वचन सुनाये ॥
कहो पितासों अस तुम भाई * गनिलीजै लोई गृह जाई ॥
जेहि भुसुंडि निज मानस ध्यायो * भक्तकाज सिखवन वन आयो ॥
दोहा-लाला सुनि साधू वचन, दृढ विश्वास हिय लेखि ॥
आय पितासों कहत भो, लोई लेहु सरेखि ॥ १३ ॥
कम तो दंड मोहिं पितु दीजै * पूर भये कत रोषहि कीजै ॥
पिता जाय गृह सरखत कीन्ह्यो * लोई एक अधिक गनि लीन्ह्यो ॥
लखि अचरज सबहिन शिरनायो * संत प्रभाव देश दरशायो ॥
संत अनंत तहां चलि आवैं * पूरी सब भोजनको पावैं ॥
एक समय तहँ संत जमाती * भूंखे हम अस टेर्यो राती ॥
दुइ दिनते हम अन्न न पायो * तब इनके संतन अस गायो ॥
आसन कीजै पाक बनावहिं * तब तुमको हम अशन करावहिं ॥
तब तिन्ह बार बार गोहराई * प्राण हमार कढत अब भाई ॥
लालाभक्त सुनत उठिधायो * निज साधुनसों वचन सुनायो ॥
व्यारी हित पेरा जे आये * देहु सबै संतन सुख छाये ॥
सात सेर पेरा कछु घाटी * कहहु देहुँ सब संतन बांटी ॥
आपुहि चलि दीजै सबकाहीं * हमसों बांटत बनिहै नाहीं ॥
दोहा-तब लाला उठिके तुरत, सब संतन दिये बांटि ॥
सेर सेर पेरा दिये, काहुहि पर्यो न घाटि ॥ १४ ॥
गंगा गऊ मरी केहु काला * दिय जियाय सुमिरत नँदलाला ॥

बसइ एक वाणीको मरेऊ ❀ अति ममत्व ताके पर रहेऊ ॥
लालाभक्त पास सो जाई ❀ अति विनीत है गिरा सुनाई ॥
बैल विहीन देह नित छीजै ❀ बसह जिआय नाथ यश लीजै ॥
लाला कह मोसों धन लेहू ❀ और बैल तामें लैलेहू ॥
सो हठि परयो न मानत बाता ❀ दोउ कर गहे चरण जलजाता ॥
तब करि दया राम उर ध्याई ❀ बैलहि दीन्ह्यों तुरत जियाई ॥
जय जय शब्द सभामहँ छायो ❀ संत महंत सबन शिर नायो ॥
एक समय रामतके काजा ❀ चले आप सँग संत समाजा ॥
एक ग्राम आये सुख छाई ❀ तहँके जन आये सब धाई ॥
करि सत्कार बागमहँ लाये ❀ राग भोग संतन करवाये ॥
एक चेटकी तेहि पुर गयऊ ❀ प्रेत सिद्ध कीन्हे सो रहेऊ ॥
नारायणको रूप बनावै ❀ प्रेतहि प्रेरि रूप बोलवावै ॥
लालाभक्तहि सभा मँझारी ❀ कोउ जन तहँ अस गिरा उचारी ॥

दोहा—एक साधु आये इतै, महिमा कही न जात ॥
नारायणको रूप प्रभु, है प्रत्यक्ष बतरात ॥ १९ ॥

तहां भीर होती अतिभारी ❀ शिषि है इतके सब नर नारी ॥
लाला भक्त सुनत दुख माने ❀ जानि चेटकी अति पछिताने ॥
यदुनंदन ध्यावहुँ दुखमोचन ❀ दरश हेतु ललकत दोउ लोचन ॥
वेद भेद जाको नहिं पावै ❀ सो प्रत्यक्ष कैसे बतरावै ॥
चेटकि चेटक करत कराला ❀ देहुँ छुडाय सुमिरि नँदलाला ॥
करत विचार नाथ मनमाहीं ❀ मरयो सेठको पुत्र तहांहीं ॥
सरित तीर ताको लैआये ❀ लालाभक्त तुरत उठि धाये ॥
तिन सब ठगन तुरत बोलवायो ❀ सहसन जन मधि वचन सुनायो ॥
जो सतिनारायण बतवावहु ❀ सेठ पुत्र तौ तुरत जियावहु ॥
सेठ पुत्र जो देहु जियाई ❀ हम सब शिष्य होब तुव आई ॥
नहिं जीवै तो प्रण सुनिलेहू ❀ सहित समाज शिष्य तुम होहू ॥
तब चेटकी कह्यो दुखमाहीं ❀ पुत्र जियावन मम गति नाहीं ॥

दोहा—आप जियावहु पुत्र जो, तौ हम सेवक होव ॥
सकल सभाके लखत तुव, जूता शिरधरि सेव ॥ १६ ॥

नाथ ध्याय उर दशरथलाला * दियो जियाय सेठको बाला ॥
सेठ आय धन विपुल चढायो * पुरवासिन सब शिष्य करायो ॥
पुनि चेटकिको दै उपदेशा * कियो भक्त यदुपतिको वेशा ॥
एक समय इक साखी आयो * सो तौ ऐसो बचन सुनायो ॥
सब संतन दै धड़ यश लेहू * कछुक वस्तु हमहूंको देहू ॥
लालाभक्त कह्यो मुसक्याई * होहि सो देहुँ तुमहिं जो भाई ॥
कठिन बात तब साधु सुनाई * आपनि भगिनि देहु मोहिं लाई ॥
भक्तराज तब भगिनि बोलायो * ताको बहु प्रकार समझायो ॥
रुचिर पालकी तुरत सजाई * गहना बहुत दियो पहराई ॥
वसन अमोल भगिनि कहँ दीन्हे * नेहरीत सब भेटहि कीन्हे ॥
सब तिय मिलि पालकी चढाई * बिदा कियो दृग वारि बहाई ॥
पुनि साखीको पूजन करिकै * दैशत मुद्रा दिय सुख भरिकै ॥

दोहा—बहुत प्रशंसत साधुसों, कन्यहि चल्यो लेवाय ॥
बाहर ग्रामहि जायकै, दिय पालकी धराय ॥ १७ ॥

कन्यासों बोले सुख बोरी * तू तो भगिनि अहै अब मोरी ॥
तुव भ्राता मम भक्त सुहायो * तासु परीक्षा हित मैं आयो ॥
अब तैं भवन जाहि सुखमाहीं * मम प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं ॥
बोली कन्या बचन सुहाये * तुम सँग मोहि भ्रात पठवाये ॥
तुमहिं छांडि जैहौं कहुँ नाहीं * तब बोले प्रभु अति सुख माहीं ॥
युग शत मुद्रा तुम लैलेहू * दिनप्रति संतन भोजन देहू ॥
कामिहै नाहिं यह कृत्य सुहाई * बचन मानि मम अब घर जाई ॥
सो जकि रही न बचन बखाना * साधु भये तब अंतर्ध्याना ॥
कन्या बहुरि भ्रात गृह आई * साधु कही सब बात सुनाई ॥
लालाभक्त परम सुख पायो * संतन टहल माहिं लगवायो ॥
अंत समय हरिलोक सिधायो * लालाभक्त जगत यश छायो ॥

शैलाग्राम अबहुँ सुख छाई ❀ भगिनी करत साधु सेवकाई ॥

दोहा–तीनि वर्ष मे तनु तजे, तिनकी कथा अनंत ॥
मैं कहँलों वर्णन करौं, कह्यो सुन्यो सुख संत॥१८॥

चित्रकूटमें सरयूदासा ❀ मंदाकिनितट हरिकी आशा ॥
परम रुचिर यक गुफा बनाये ❀ बैठे रहत राम उर ध्याये ॥
इनकी कथा विचित्र अनेका ❀ विस्तर भय कहिदिय मैं एका ॥
एक दिवस तहँ छीतूदासा ❀ गये दरशहित परमहुलासा ॥
दरश परस करि दोउ अनुरागे ❀ सरयूदास हँसन तब लागे ॥
ताकि ताकि आकाशहि ओरे ❀ मगन होत आनँद रस बोरे ॥
पूछे कह्यो लखहु परकासा ❀ लालाभक्त जात हरि पासा ॥
यह जो महाप्रकाश देखाई ❀ हरि पार्षदन केर सुनु भाई ॥
अचरज मानि भक्तमन भारी ❀ तहँते चले चरण रज धारी ॥
उनइससै बाइस ऊर साला ❀ मारग कृष्ण पंचमी हाला ॥
याहिदिन कागजपर लिखिराख्यो ❀ पूछे संतन सोउ अस भाख्यो ॥
ताकी भगिनि अहै यहि काला ❀ चरणन परत आय नरपाला ॥

दोहा–सरयूदास प्रभाव इमि, जानहु जन सबकोय ॥
बन प्रमोद अबहूं लसत, मंदाकिनितट सोय॥१९॥

कुंजा नाम साहु गुणराशी ❀ शहर आगरेको है बासी ॥
तापर परी विपत्ति घनेरी ❀ नाश भयो घरको धन ढेरी ॥
छीतूदास तहां पगु धारे ❀ कुंजा पद गहि वचन उचारे ॥
चलिये प्रभु अब मम गृह माहीं ❀ डेरा कीजे अति मुदमाहीं ॥
अस कहि जनकनंदनी काहीं ❀ कांधे धरि लायो गृह माहीं ॥
भक्तराज लखि प्रेम विशेषी ❀ कृपापात्र रघुवरको देखी ॥
ताकहँ प्रभु निजसेवक कीन्हा ❀ उभयलोक सुख ताकहँ दीन्हा ॥
पुनि बोले प्रभु वचन सुहाये ❀ संतन सेव करहु मन लाये ॥
धनी होहुगे थोरहि काला ❀ लाखन लहिहौ विभव विशाला ॥
जस जस विभव बढत तुव जाई ❀ तस तस संत सेव अधिकाई ॥

संतसेर कुमती मन धरिहै * तबहीं जनकललो धन हरिहै ॥
जस जस सो भक्तन अनुराग्यो * तस तस तासु बढन धन लाग्यो ॥

दोहा—लाखन धन जब घर भयो, तब झूसीमहँ आय ॥
भक्तराजके हुकुमते, दीन्ही कुटी बनाय ॥ २० ॥

तेहि कोठी महँ और न काजा * धरी जात संतन हित साजा ॥
दिनप्रति अमित संत तहँ आवैं * भोजन सादर सब कोउ पावैं ॥
ऐसो कुंजा भक्त सुहायो * जाको सुयश जगतमें छायो ॥
तिलापुरहु यक ग्राम महाना * साधोसिंह तहां मतिमाना ॥
संत चरणरज शिरमहँ धारी * सेवन करि किय संत सुखारी ॥
सेवा कीन्हे साधुन केरी * कीरति बढी तासु जग ढेरी ॥
पयहारी लक्ष्मीपरसादा * चित्रकूट महँ अति अहलादा ॥
भंडारा दीन्ह्यो अति भारी * बनी बहुत पूरी तरकारी ॥
घीउ कम्यो तब सेवक धाये * पयहारीको आय सुनाये ॥
तब उठि गये कराही पासा * घिउ लखि बोले सहित हुलासा ॥
करी कराह साज सब पूरा * काढहु पूरी घरी न झूरा ॥
पूरी कढीं चह्यो जितनोई * घीउ रह्यो जितनो तितनोई ॥

दोहा—संगहिमहँ तिनके रहे, छीतूदास सुजान ॥
तिन अपने नयनन लख्यो, यह सब चरित महान ॥ २१ ॥

एक साधु भंडारा पाहीं * भोजन करन लग्यो मुदमाहीं ॥
तब सब साधुन वचन उचारे * एक संत सब साजु जुठारे ॥
विन यदुपतिके अर्पण कीन्हे * धाय तुरत भोजन करिलीन्हे ॥
छीतूदासहु यह सुख गायो * भो अनर्थ विन भोगहि खायो ॥
पयहारीजी यह सुधि पाई * आये तुरत साधुपहँ धाई ॥
पूजन करि अतिशय सुख मानी * सबन सुनाय कही असि बानी ॥
जिन प्रभुको नित भोग लगावहिं * ते प्रत्यक्ष कबहुं नहिं आवहिं ॥
साधु रूप अवधेश कुमारा * आये इत करि कृपा अपारा ॥
प्रकट वचन कहँ रूप देखायो * साजु खैंचि निज करसों पायो ॥

पावहु ले प्रसाद सब भाई * रघुपति शंका दियो बिहाई ॥
अस कहिके बहु द्रव्य चढायो * रुचिर दुशाला एक ओढायो ॥

दोहा–साधू अंतर्ध्यान भे, भेद न जान्यो कोय ॥
द्रव्य दुशाला जो दियो, परे रहे तहँ सोय ॥२२॥
पातर कनकन बीनिके, लीन्हे सब कोउ खाय ॥
पयहारी चरणन गिरे, आनँद अंबु बहाय ॥२३॥
तैसहि तिनके शिष्य भे, सियाराम मतिधाम ॥
संत सेइ हरिभजन करि, सिद्धकिये मन काम२४

भये भक्तवर चेतनदासा * राठ ग्राम महँ रह्यो निवासा ॥
संतन सेव रीति गहिलीन्ह्यो * कृष्णभजन निशिवासर कीन्ह्यो ॥
यक दिन साधु अपूरब आये * कृष्ण भजन बहुविधि तिन गाये॥
तब चेतन पूंछयो तिय पाहीं * पाक बनावहु संतन काहीं ॥
नारि कह्यो मेरी नथ लेहू * भोजन साज लाय मोहिं देहू ॥
तियहि सराहि लाय सब साजू * दिय जेवाय सब साधु समाजू ॥
पुनि बैठे साधुन ढिग जाई * तिन बहु यदुपति कथा सुनाई ॥
इत नथ लै वसुदेवकुमारा * चेतनदास रूप कहँ धारा ॥
लीपत तिय लखि कह मृदुबानी * नथिया पहिरिलेहु सुखदानी ॥
तिय कह नथ कैसे मुकताये * इनकह यदुपति तार लगाये ॥
तिय कह गृह लीपहुँ इत आई * तुमहीं नाथ देहु पहिराई ॥
नारि वचन सुनि प्रभु सुख पाई * दियो नाक नथिया पहिराई ॥

दोहा–चेतन आये सुनि कथा, प्रमुदित अपने भौन ॥
विस्मित है तियसों कह्यो, नथिया लायो कौन ॥२५॥

सो०–तुमहिं गये पहिराय, कैसे अब पूंछत अहौ ॥
इन जान्यो यदुराय, आय धाय दरशन दियो॥१॥

दोहा–चरणदास ऐसहि भये, तिनकी कथा अपार ॥
दिल्लीजन आनँद दियो, जपतराम सुखसार॥२६॥

रामदास मे रामप्रिय, तिन्ह शिषि योधादास ॥
विचरत अबहूं अवनि महँ, किये अवधपति आस२७
विंध्याचलमें होतभे, झामदास सुखरूप ॥
रामरूप झांकी लही, हनुमत कृपा अनूप ॥ २८ ॥
लक्ष्मणदास गया भये, हंसदास इंदौर ॥
वेदान्तीहरि भक्तभे, सुखद नर्मदाठौर ॥ २९ ॥
कंद्रापाली ग्राम अनूपा ❀ राधाश्याम कृष्णवर रूपा ॥
ग्राम जरौली जन सुखदाई ❀ प्रियादास जहँ कुटी बनाई ॥
तिनको चरित श्रवण सुखदाई ❀ सो मैं प्रथमहि दियो सुनाई ॥
केशवदास वास तहँ लीन्ह्यो ❀ निशि दिन भजन कृष्णको कीन्ह्यो
मे हरि वंशदास तिनके शिषि ❀ संत सेव करिबो लीन्ही सिषि ॥
युगल याम भरि पूजन करहीं ❀ अवै जरौली जन सुख भरहीं ॥
जितने संत कुटी महँ आवै ❀ ते सुखयुत सब भोजन पावै ॥
प्रियादास यश विमल यमंका ❀ तामें विचरि रहे विन शंका ॥
राधाकृष्णचरण रति गाढी ❀ संतन कृपा हृदय तिन्ह बाढी ॥
गंगातीर वदनपुर ग्रामा ❀ रामदासकी कुटी ललामा ॥
तिनके शिषि रामानुज नामा ❀ जिनते संत लहत सुखधामा ॥
संत सेव गुरु रीति चलाई ❀ सोइ करते नहिं नेकु घटाई ॥
मैं शिर धरि संतन रजकाहीं ❀ कह्यो सुन्यों जो संतन पाहीं ॥
दोहा-संतन यश वर्णन करत, सुधरत सब निज काज॥
यह भरोस दृढ जानिकै, चरण परत रघुराज ॥ ३० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

दोहा-भक्तराजको अब चरित, वरणौं विमल विशाल ॥
जाको छीतूदास अस, नाम अहै यहि काल ॥ १ ॥
राजापुर यमुनातट ग्रामा ❀ तहां जन्म लीन्ह्यो मतिधामा ॥

बालकालते बुद्धि विशाला * त्यागिदियो जगको जंजाला ॥
राम रंग लाग्यो मनमाहीं * विचरैं अति निशंक जगमाहीं ॥
करैं सदा साधुन सत्कारा * विना वृत्ति रघुनाथ अधारा ॥
एक समय बहु साधु ज़माती * आय अचानक टेन्यो राती ॥
तुरताहिं तिनके भोजन हेतू * आप गये चलि वणिक निकेतू ॥
मुद्रा लिये पंचशत ताते * साधुन दिये जेंवाय मजाते ॥
दिनप्रति साधु तहां घर आवैं * भिक्षा करिके तिनहिं जेंवावैं ॥
पटे वणिकके रुपया नाहीं * लैगो धरि बनिया तिन्ह काहीं ॥
तब यक साधु अचानक आयो * दै मुद्रा तुरतहीं छुडायो ॥
कह्यो भक्तजीते तब साहू * मुद्रा पटे द्रुतहि घर जाहू ॥
कह्यो भक्तजीको धन दीन्ह्यो * बनिया कह्यो साधु नहिं चीन्ह्यो॥

दोहा–साधू आयो एक इत, दियो पांचसै मोहिं ॥
कह्यो छोडिये भक्तको, नहिं ह्वैहै दुख तोहिं ॥ २ ॥

किय विचार तब छीतूदासा * को अस है विन रमानिवासा ॥
तबते ह्वै अति दृढ विश्वासो * लागे भजन कोशलावासी ॥
एक समय नागा बहु आये * भक्तराज तिनकाहँ टिकाये ॥
सराजाम सब भांति समेटे * मिली न लकरी एकहु जेटे ॥
अँगरेजी लकरी यक ठामा * रही यत्नसों धरी ललामा ॥
नागा कह्यो कहहु लैआवैं * रामदूत हम नाहिं डेरावैं ॥
यदपि भक्त वरज्यो तिन काहीं * लैआये लकरी भय नाहीं ॥
वरज्यो साहेबके चपरासी * नागा दीन्ह्यो मारि निकासी ॥
चपरासी साहेब फिरियादे * दौरे पकरनहेतु पयादे ॥
भक्तहि पकरि गये लै बांदा * बोल्यो साहेब अति मदमादा ॥
चपरासी मारयो केहि हेतू * खनिजैहै तुव सकल निकेतू ॥
भक्त कह्यो हम कछु नाहिं जानैं * रघुपति शासन सब थल मानैं ॥

दोहा–तब कुरसीते तुरत उठि, साहेब क्रोध अचेत ॥
मारण धायो भक्तको, लै करमें यक बेत ॥ ३ ॥

तेहि क्षण ताहि पटकि कोउ दीना * परयोविसंज्ञ भूमि दुख भीना ॥
बीबी रोवन लगी पुकारी * हाय हाय भो सभा मँझारी ॥
परी भागवत पग तब बीबी * रह्यो न होस सम्हारन नीबी ॥
भक्त कह्यो साहेब नहिं मरिहै * जो प्रतिपाल साधुको करिहै ॥
साहेब उठ्यो दंड दुइमाहीं * दौड कर गह्यो भक्त पद काहीं ॥
पुनि कीन्हो अतिशय सत्कारा * चंदाकरि धन दियो अपारा ॥
भक्त लौटि राजपुर आये * साधुनके उर आनँद छाये ॥
वसु दशशत चौरासी साला * धनुषयज्ञ तब कियो विशाला ॥
तामें अनुभव कियो महाना * मुकुट तेज तिनको दरशाना ॥
तबते राम रूप नित करहीं * करि झांकी आनँद उर भरहीं ॥
एक समय ध्यावत जगदीशा * गमन कियो नगरी जगदीशा ॥
दर्शन करि मन कियो विचारा * इतते अब न टरहुँ कहुँ टारा ॥

दोहा—और संत सब संगके, चलेगये यह जान ॥
तब स्वप्नमें भगतको, कह्यो जानकीजान ॥ ४ ॥

तुम करि पुहुमी महँ संचारा * कीजे अधमन केर उधारा ॥
भक्त कह्यो अब हम नहिं जैहैं * जबलग तनु तबलग इत रैहैं ॥
तब शासन दीन्हो जगदीशा * मानि रजाय शपथ मम शीशा ॥
जो न मानिहै शासन मोरा * तो पैहै शरीर दुख तोरा ॥
भक्त कह्यो चाहै दुख होई * नहिं जैहै औरे थल कोई ॥
तबते दस्त होन बहु लागे * सिगरे साधु संगके त्यागे ॥
भक्त सिंधुके तीर विहाला * परेरहै सुमिरत रघुलाला ॥
छीतूदासहि लियो उठाई * कह्यो वचन यहि भांति बुझाई ॥
प्रभुको शासन जो नहिं मानी * ताको उभयलोककी हानी ॥
प्रभुको शासन शिर धरि जाहू * हरहु जगत जीवनदुख दाहू ॥
भक्त कह्यो न शक्ति तनुमाहीं * केहि विधि पुरी छोंडि हम जाहीं ॥
साधु कह्यो जो यहि क्षण जाहू * तो अरोग्य तुरताहि है जाहू ॥
सुनत साधु मुखकी असि वानी * भक्तराज मति अति हुलसानी ॥

दोहा–भक्त कह्यो जगदीशको, हौं शासन धरि शीश ॥
विचरन करिहौं जगतमें, को दयालु अस ईश ॥५॥

इतना कहत रोग भे दूरी ❀ भई शरीर शक्ति भरिपूरी ॥
भक्त नाय जगदीशहि शीशा ❀ सुमिरत चले अवध अवनीशा ॥
जब साखीगोपाल पहँ आये ❀ सँगके साधु समिटि सुख छाये ॥
तहँते चले पंथ वन घोरा ❀ मिलै न भोजन हैगो भोरा ॥
चलि नहिं सकैं साधु मगमाहीं ❀ क्षुधा विवश पग पग मुरझाहीं ॥
तब यक साधु अपूरव आयो ❀ बहुरी भोजन सबहिं करायो ॥
भक्तराज पुनि पथ गहिलीन्हे ❀ मिले संत पूरव तजिदीन्हे ॥
तिनते सहित दूरि कछु आये ❀ महाविपिन भोजन नहिं पाये ॥
करत भजन तहँ बसे निशामें ❀ आयो एक साहु डेरामें ॥
सो कह मोहिं लुटै पथ चोरा ❀ साधुन हाथ बचब अब मोरा ॥
भक्त तासु धन यत करायो ❀ साधुन आसन तर धरवायो ॥
पुनि साहुहि निज निकट लुकाई ❀ डांकू आय कह्यो गोहराई ॥

दोहा–डेरा काको साहु कहँ, दीजै वेगि बताय ॥
भक्त कह्यो इत साधु है, साहु न परै जनाय ॥ ६ ॥

चलेगये सिगरे तब चोरा ❀ साहु जानि जिय दान निहोरा ॥
बहुत द्रव्य तब दियो चढाई ❀ मिटिगै सकल खर्च दुचिताई ॥
कछुक दूरि चलि तेइ ढिग धाई ❀ मारयो और साहु यक जाई ॥
लूटिगई ताकी सब साजू ❀ तस्कर गमने सहित समाजू ॥
भक्त कृपाते यह बचि गयऊ ❀ संत संग पुनि मारग लयऊ ॥
सरित एक अति महा भयावनि ❀ निरखत महाभीति उपजावनि ॥
भक्तराज पहुँचे तहँ भारी ❀ छायगई निशिकी अंधियारी ॥
सावन मास मेघ झुकिआये ❀ सरित देखि सब भान भुलाये ॥
तब यक फरसा गहे हाथमें ❀ आयगयो मनु रह्यो साथमें ॥
तासों भक्त कही असि बाता ❀ सरित उतारिदेहु तुम भ्राता ॥
मुद्रा युग करार ह्वै गयऊ ❀ सरित उतारि तुरत तेहि दयऊ ॥

आप गयो जब चलि कछु दूरी * भक्त लख्यो सरिता जलपूरी ॥
दोहा–घोर धार चलती प्रबल, लखि न परत कहुँ घाट ॥
साहहु मन विस्मित भयो, लायो यह केहि बाट ७
भक्त उठाय कह्यो यक बाहू * मुद्रा लये विना कस जाहू ॥
सो कह आगे द्वीप लखाई * तहँ यक चट्टी परम सुहाई ॥
अस कहि सो तहँते द्रुत धायो * भक्तराज तेहि खोज न पायो ॥
तब लख मनमें कियो विचारा * रक्षण किय रघुवंशकुमारा ॥
वसि निशि तहँ पुनि चले प्रभाता * सहित साहु पुलकित अतिगाता ॥
आनंद सहित गया कहँ आये * तहां साहु सब साजु मँगाये ॥
खान पान सन्मान सुधारचो * संतनकेर कलेश निवारचो ॥
यहि विधि करत चरित्र अनेका * गयाश्राद्ध करि सहित विवेका ॥
आये राजापुर कहँ जबहीं * अतिशय मुदित भये सब तबहीं ॥
रामभक्त सुनि मम पितुकाहीं * आये प्रभु रीवांपुर माहीं ॥
मम पितु कियो बहुत सत्कारा * उभयओर सुख भयो अपारा ॥
तबते भक्तराज प्रतिसाला * आवत मारग भास उताला ॥
दोहा–और चरित वर्णन करौं, भक्तराजको तौन ॥
गोविंदगढमें मैं लख्यों, अति अचरजमय जौन ८
मेरे शहर निकट सर भारी * जलविहार हित करी तयारी ॥
सिय रघुनंदन रूप सुहावन * भक्तराज राजत अतिपावन ॥
मधुर अली सँग संत सुहाये * मांगि तरणिमें सबनि चढाये ॥
मैंहूं चढि अति आनँद पायो * जलविहार हित तरणि चलायो ॥
सरवर मधि नौका जब आयो * तब तामें बहु जल भरि आयो ॥
बूडत सरमहँ नाव निहारी * संकट भयो सबनको भारी ॥
तब मैं विनय कियो कर जोरी * नाथ हाथ अब है पति मोरी ॥
भक्तराज कह जलभय नाहीं * कछु न सोच कीजे मनमाहीं ॥
राम लषण सिय करहु उचारा * पार करहिंगे पवनकुमारा ॥
जब सब राम नाम मुख गायो * नौका तुरत तीरमहँ आयो ॥

भक्तराज सबको उतराये ❀ पाछे आप उतरि जब आये ॥
तब नौका बूड्यो जल माहीं ❀ सब जन चकृत भे तेहि ठाहीं ॥
दोहा—यह सब निज नयनन लख्यों, भक्तराज परभाव॥
बार बार करि दंडवत, मान्यो परम उराव ॥ ९ ॥
रामभक्त सज्जन सुखद, सूपकार मम प्यार ॥
मोहनजी गोविंदगढ़, निवसत परम उदार ॥ १० ॥
दिय निदेश तेहि भक्तजी, संत महल बनवाव ॥
बसैं संत जन आय तहँ, हमहूँ रहब सचाव ॥ ११ ॥
संत महल बनवाय दिय, मोहन आयसु पाय ॥
तहां संत निवसंतहैं, बसत भक्तजी आय ॥ १२ ॥
मधुर अलीहू बसत तहँ, राम लषण सिय संग ॥
देत जनन दरशाय शुचि, परमानंद उमंग ॥ १३ ॥
जबहीं ते अति करि कृपा, बसे भक्त तेहि धाम ॥
तबहींते रघुराज किय, मोहन पूरण काम ॥ १४ ॥
एक समयकी कहतहौं, कथा भक्तवर केरि ॥
रामभक्त कायस्थ यक, दौलति नाम निबेरि ॥ १५ ॥
गयो दरशहित सो यक काला ❀ दौलतिको लखि बुद्धि विशाला॥
भक्तराज कह तुम कछु बांचो ❀ सब सन्तनको चित हित रांचो ॥
दौलति कह्यो भक्तवर माला ❀ मैं बांचो हे दीनदयाला ॥
भक्तराज संमत करिदीना ❀ दौलत बांचन लग्यो प्रवीना ॥
बांचत बीतगयो कछुकाला ❀ घरते आया लिख्यो हवाला ॥
संनिपात तुव सुतको भयऊ ❀ अब तौ मरण योग्य है गयऊ ॥
भक्तराजके ढिग तब जाई ❀ दौलतिगो वृत्तान्त सुनाई ॥
भक्तराज कह तुम हरिदासा ❀ हरिदासन कहँ देहु हुलासा ॥
तुम्हरे भवन विघ्न नहिं होई ❀ रामदास छुइ सकै न कोई ॥
मम विभूति दीजे सुत काहीं ❀ आवहु तुरतै बहुरि इहांहीं ॥

दौलतिले विभूति घर आये * नेसुकहीं सुतके सुख नाये ॥
परत विभूत पूत उठि बैठ्यो * मानहुँ सुधा सिंधु महँ पैठ्यो ॥

दोहा-दौलति आयो बहुरिकै, भक्तराजके पास ॥
बार बार पद वंदिकै, पायो परमहुलास ॥ १६ ॥

जबते भक्तराज किय दाया * तबते दौलति शुभ मति पाया ॥
यही रामरासिकावलिकेरी * किय सहाय खरां लिखि हेरी ॥
मऱ्यो एकको सुत यक काला * घरके सब ह्वैगये विहाला ॥
तेहि लावन लै गये मशाना * उपज्यो तासु पिताके ज्ञाना ॥
भक्तराजकी सुधि जब आई * तब बालकको लियो उठाई ॥
भक्तराज सन्मुख धरि दीन्ह्यो * जुरि कुटुंब विनती बहु कीन्ह्यो ॥
तब भक्तहि अति संकट गयऊ * संकट मोचन सुमिरण कयऊ ॥
सुमिरि पवनसुत दियो विभूती * उठ्यो बाल गै यम करतूती ॥
एक समय संतनके संगा * रँगे राम रस रासहिं रंगा ॥
बींडा ग्राम एक मम देशा * मोर बंधु कुल जानहु वेशा ॥
तहँ बघेल यक रह अघधामा * रामसिंह ताको अस नामा ॥
पूर्व पुण्य किय तासु प्रकासा * भक्तराज किय आगम वासा ॥

दोहा-यथा कथंचित् सो कियो, भक्तराज सत्कार ॥
एक मास भर होतभो, संतन भजन विहार ॥ १७ ॥

भक्तराज लखि ताकहँ दीना * तापर कछुक अनुग्रह कीना ॥
हनुमत पूजन मंत्र बतायो * राम नाम उपदेश सुनायो ॥
सकल संत सेवनकी रीती * दियो बताय कराय प्रतीती ॥
तबते रामसिंह बघेला * भयो रामको भक्त नवेला ॥
याम युगल लगि भरि अनुरागा * बैठि भजन करने सो लागा ॥
यद्यपि तापर विपति घनेरी * तदपि न भजन तजै सुख हेरी ॥
कायथ एक रह्यो तेहि ग्रामा * आयो भक्तराजके धामा ॥
भक्तराज नेउता लिय मानी * कायथ गयो सदन धनि जानी ॥
भै विषूचिका निशि तेहि नारी * घरके रोवन लगे पुकारी ॥

कायथ दौरि भक्त पहँ आयो ❋ घर वृत्तान्त कहन नहिं पायो ॥
रामरूप दीन्ह्यो तेहि बीरा ❋ भक्तराज पूंछयो तब पीरा ॥
दोहा-तब कायथ वृत्तांत सब, घरको दियो सुनाय ॥
भक्तराज बोले वचन, नेसुकही मुसकाय ॥ १८ ॥
अब शंका कीजैं कछु नाहीं ❋ रघुपति कृपा विपति मिटिजाहीं॥
कायथ लौटिगयो निज अपना ❋ लख्यो नारि रुजाविन निज नयना
मान्यो भक्तराज परभाऊ ❋ कियो निमंत्रण सहित उराऊ ॥
यहि विधि भक्तराज प्रभुताई ❋ कहँलों कहौं महामुददाई ॥
एक समय वृंदावन काहीं ❋ गमने भक्तराज सुखमाहीं ॥
तहँ अस सुन्यो निशा जब होई ❋ सेवा कुंज रहै नहिं कोई ॥
सांझहिं सेवा कुंज पधारे ❋ सबके कहे टरे नहिं टारे ॥
बीति गई जब आधी राता ❋ आयो एक संत अवदाता ॥
कह्यो चलहु इतते नहिं रहियो ❋ हारिसों हठ कबहूं नहिं गहियो ॥
भक्त कह्यो कैसहु नहिं जैहौं ❋ आजु राति इतहीं बसिरैहौं ॥
साधु भयो तब अंतर्ध्याना ❋ रहे भक्त तेहि निशि सुस्थाना ॥
भोर भयो जब नयन उघारे ❋ निरखे परे कुंजके द्वारे ॥
दोहा-भक्तराज मनमें कियो, ऐसो ठीक विचार ॥
इतै रहनको हुकुम नहिं, संध्या लगि भिनुसार १९
शहर आगरे कहँ सुखदाई ❋ भक्त चले सुमिरत रघुराई ॥
परयो अकाल देश तेहि माहीं ❋ पति तिय तिय सुत बेंचि पराहीं॥
भक्तराज यह दशा निहारी ❋ मनमें सोच कियो तहँ भारी ॥
धनुषयज्ञको नेमहिं जोई ❋ सो अब पूर कौन विधि होई ॥
यतनो मनमें करत विचारा ❋ भे सहाय तब पवनकुमारा ॥
एक धनी शिर व्यथा घनेरी ❋ सो कह हरहु पीर जो मेरी ॥
दैशत मुद्रा तुरत चढाऊं ❋ देखि रामलीला सुख पाऊं ॥
भक्त विभूति दियो सुख छाकी ❋ शिरकी व्यथा गई सब ताकी ॥
दैशत मुद्रा साहु चढाया ❋ बारंबार चरण शिर नाया ॥

भक्तराज सब साजु हँकारी * धनुषयज्ञकी करी तयारी ॥
उत्सव देखि सकल अनुरागे * निज निज भाग्य सराहन लागे ॥
तहां सेठ यक लक्ष्मीनाथा * धरचो भक्त चरणनमहँ माथा ॥
तुरत पंचशत मुद्रा लाई * भक्तराज कहँ दियो चढाई ॥
दोहा-पुनि रघुनंदन चरणमें, शिर धारि अति सुख पाय॥
भेटकियो मुद्रा सहस, संतन शीश नवाय ॥२० ॥
सो उत्सव लखि परम रसाला * जय ध्वनि छायरही तेहि काला ॥
भक्तराज संतन बोलवाई * सो धन दीन्ह्यो तहँ लुटाई ॥
सहस एक ऋण भयो तहांहीं * चले मुदित शंका कछु नाहीं ॥
अमरैया यक ग्राम महाना * तहँको भूप महा मतिमाना ॥
तासुत कहँ देवी कढि आई * जियन आश सब दियो विहाई ॥
भक्तराजकी सुधि तब आई * चरण वंदि निज विपति सुनाई ॥
दे विभूति नृपसुतहि जियायो * भजन प्रभाव देश दरशायो ॥
द्वै सहस्र नृप द्रव्य चढायो * करि पूजन चरणन शिर नायो ॥
शहर कालपी महँ पुनि आये * तहँके वासी अति सुख पाये ॥
तहां अजार परचो अति भारी * शोकितभे तहँके नर नारी ॥
एक साहुकी नारि तहांहीं * विह्वल भई रोगवश माहीं ॥
मरण काल ताको लखि साहू * पकरचो भक्त चरण दोउ बाहू ॥
दोहा-भक्तराज करिके कृपा, दियो पुनीत विभूति ॥
मुख डारत मिटिगै सबै, काल कर्म करतूति॥२१॥
निरुज नारि लखि तेहि सुख पायो * धन दे बार बार शिर नायो ॥
पुनि यक उच्च निशान गडायो * महावीरको कहि गोहरायो ॥
याहि तरते कढिहै जो आई * ताको मारी नाहिं सताई ॥
तहँ कालपी जनन कहँ भूरी * भयो निसान सजीवनमूरी ॥
मारी भय काहुहि नहिं व्यापी * जेहि व्यापी ते भे न सतापी ॥
अबलों गडो निसान तहांहीं * सूचन करत भक्त यश काहीं ॥
रहे साहु यक तेहि पुरमाहीं * प्रेत एक पीडै तेहि काहीं ॥

एको क्षण न साहु कल पावै ❀ जिद कोपि तेहि अवनि गिरावै ॥
पूरुब साहु बधन तेहि कीन्ह्यो ❀ ताको द्रव्य सबै लै लीन्ह्यो ॥
भयो जिंद सो परम कराला ❀ गुणिन पछारत अवनि उताला ॥
भक्तराजकी सुनत अवाई ❀ साहु विपति अपनी सब गाई ॥
भक्तराज दाया उर धारी ❀ भीति साहुकी दियो निवारी ॥

दोहा—चरणामृत दिय प्रेतको, सो बैकुंठ गो धाय ॥
तेहि देशहिमें अति विमल, रह्यो भक्त यश छाय २२
यक दिन साधू एक बर, जगत् रीति हिय मेटि ॥
आये राजापुर हरषि, भई भक्तसों भेटि ॥ २३ ॥
भयो समागम्म तिन कह्यो, लीजै द्रव्य महान ॥
भक्त कह्यो नहिं लेउगो, राम करहिं कल्यान ॥ २४ ॥
तब साधू बोले वचन, मांगिहौ द्वारहि द्वार ॥
संतसेव परभावते, हैहै सुयश अपार ॥ २५ ॥
आजुहिंते षटमास भरि, यहि कालिंदी माहिं ॥
कढिहै जलते अमित धन, झूंठ मोर प्रण नाहिं ॥ २६ ॥
यमुनामें बहु धन कढ्यो, जानत सकल जहान ॥
भक्तराज शिक्षा गही, साधू वचन प्रमान ॥ २७ ॥

भक्तराजके प्रिय अधिकारी ❀ तीनि भक्त भे जग भयहारी ॥
लक्ष्मणदास अयोध्यादासा ❀ आशाराम रामकी आसा ॥
छीतूदास कृपाबल पाई ❀ निज महिमा जग प्रगट देखाई ॥
राजापुरको रह्यो भँडारी ❀ नाम अयोध्या जन सुखकारी ॥
सब संतन कहँ भोजन देहीं ❀ मानुष जन्म लाभ नित लेहीं ॥
यक दिन भक्तराज कह भाई ❀ पूरी साजु देहु सुखदाई ॥
जेहि साधुन कलेश नहिं होई ❀ अग्नि तापते तपै न कोई ॥
यह सुनि तुरत अयोध्यादासू ❀ संकटमोचन सुमिरेउ आसू ॥
सीधापूरी तिन नहिं कीन्हे ❀ संतन अशन मिठाई दीन्हे ॥

सहसन संत तहां चलि आवैं * भोजन सबै मिठाई पावैं ॥
वर्ष अठारह भरि यहि भांती * दियो मिठाई जनन जमाती ॥
हनुमत कृपा कमी कछु काज न * भई कुटी द्रोपदि कर भाजन ॥
दोहा–संतसेव परभाव अरु, भक्त अनुग्रह पाय ॥
रामधामको जातभो, चढि विमान सुखपाय ॥२८॥
लक्ष्मणदास परम विज्ञानी * कथा सुनहु तिनकी सुखदानी ॥
सेवत सेवत संत सुजाना * बाढ्यो प्रेम दरश भगवाना ॥
स्वप्न माहँ हरिरूप देखायो * मंद मंद अस वचन सुनायो ॥
मेरे निकट रहहु अब प्यारे * मेटहु जगके सकल खँभारे ॥
इन कह भक्तराज लखि आऊं * बिना लखे प्रभु सुख नहिं पाऊं ॥
छीतूदास पास महँ आयो * स्वप्न केरि वृत्तांत सुनायो ॥
पुनि पद वंदि रजायसु पाई * चित्रकूट पहुँच्यो सुख छाई ॥
बैठि माधुरी कुंज विशाला * सोहत उर तुलसीकर माला ॥
संत सभामधि आसन कीन्ह्यो * रामधामको पंथहि लीन्ह्यो ॥
तासु लासको खोज न पायो * सहित शरीर राम अपनायो ॥
रहे भक्त जे आज्ञारामा * तिनको चरित कहौं सुखधामा ॥
भक्तराजको शासन पाई * मिथिलापुरको चले तुराई ॥
रामरूप झांकी तेउ करहीं * देखि देखि आनँद नित भरहीं ॥
दोहा–मिथिलापुर पहुँचे जबहिं, तब अति आनँदपाय ॥
संतसभा अनुपम भई, सो सुखवरणि न जाय ॥२९॥
यक दिन रघुवर रूप प्रभु, चढि घोडा अतुराय ॥
चले तहां वनते तुरत, बाघ आयगो धाय ॥३०॥
उतरि अश्वते हनतभे, एक दंड शिर तासु ॥
दंड घात शिर लगतहीं, प्राण छूटिगे आसु ॥३१॥
जनकसुताके दरशभे, तहँ यक कुंड बनाय ॥
सीताकुंडहि नाम तेहि, न्हात कुष्ठ सब जाय ॥३२॥

सुनहु एक सुंदर इतिहासा * जो यहि देशहि कियो प्रकाशा ॥
मैं यक शरीर नवीन बसायो * तेहि गोविंदगढ नाम धरायो ॥
तहँ यक समय भक्त पगुधारा * मोपर करिकै कृपा अपारा ॥
मोहिं निदेशहि दियो बोलाई * धनुषयज्ञ कीजै सुखदाई ॥
मैं कह धनुषयज्ञ कर काजा * होत विना नाहिं साधु समाजा ॥
तब प्रभु कह्यो संत सब ऐहैं * सब विधि पूरण राम करैहैं ॥
तब मैं प्रभु शासन धरि शीशा * विरच्यो धनुषयज्ञ सब दीशा ॥
देश देशकी संत समाजा * आई सकल मानि कृतकाजा ॥
जुरे सहस्रन द्विज अरु संता * अन्न रह्यो नहिं पूर करंता ॥
मैं विनती कीन्ह्यो तब जाई * संत बहुत लघु अन्न देखाई ॥
पूर अन्न करि देहु कृपाला * कह्यो नाथ तब वचन विशाला ॥
करिहैं पूर कोशलाधीशा * संतन देहु नाय पद शीशा ॥

दोहा—लग्यो देन मैं अन्न तब, विप्रन साधु समाज ॥
भक्त अनुग्रह विभव वश, कमी न एको साज ॥ ३३ ॥

अन्न वसन धन विविध देखाने * विप्रहु साधु समाज अघाने ॥
तबते धनुषयज्ञ उत्साहू * होत वर्ष प्रति रामविवाहू ॥
और कहौं कहँलों इतिहासा * भक्तराज यश जगत प्रकाशा ॥
मैं कहिकै पाऊं किमि पारा * भक्तराज यश पारावारा ॥
मोहिं जानि सेवक निज दीना * मो शिर चरण कमल धरि दीन्हा ॥
मोरे और न कछू अधारा * वंदौं पद रज बारहिबारा ॥
जौन काल महँ तुलसीदासा * रामतत्त्व कीन्ह्यो परकासा ॥
तौने कालहि रहे गोसांई * रह्यो न दूसर तिनकी नांई ॥
तैसहि अबहुँ गुणहु यहि काला * भक्त सरिस नहिं भक्त विशाला ॥
जो भ्रम मानहु लिखी हमारी * जाय भक्त ढिग लेहु निहारी ॥
चहो जो रघुपति चरण सनेहू * भक्तराज पद महँ मन देहू ॥
विन हरि भक्तन सेवन भाई * मिलत राम नहिं राम दोहाई ॥

दोहा—पारावार अपार यह, अति कराल संसार ॥
भजहु रामभक्तन चरण, चहहु जान जो पार ॥ ३४ ॥

मैं यह अतिशय कियो ढिठाई ❀ रघुवर रसिकावली बनाई ॥
गुनि गुनि कहौं कविन जन पाहीं ❀ दीजै दोष कछू मन माहीं ॥
रच्यो रामरसिकावलि जो मैं ❀ कियो संत सेवन यह सो मैं ॥
हरिभक्तनको चरित सुहावन ❀ कहत सुनत कलि कलुष नशावन ॥
जो कछु सुन्यो कह्यो अनुरागे ❀ बांचे बूझेहु जन बडभागे ॥
श्रोता सुनहु बात यक मोरी ❀ भक्तावली जौनि मैं जोरी ॥
तामें किहेहु न मोरि ढिठाई ❀ जानहु सकल संत प्रभुताई ॥
होहु प्रसन्न जो सुनि यह ग्रंथा ❀ तौ करि कृपा बतावहु पंथा ॥
जौनि भांति श्रीयदुकुलराई ❀ मोहिं लेहिं जेहि विधि अपनाई ॥
मोहिं यक संतन चरण भरोसू ❀ सज्जन गनहिं न दुर्जन दोसू ॥
हरिविमुखिन हरिसन्मुखकरहीं ❀ सुमति देहिं दुर्मति हठि हरहीं ॥
जय जय संतन चरण सरोजू ❀ जौन विश्वास दासकर रोजू ॥

दोहा—उनइससे यक विंशती, संतन आश्विनमास ॥
शुक्र सप्तमी वार गुरु, कीन्ह्यो विमल प्रकाश ॥ ३५ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रे त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

कवित्त घनाक्षरी—मंगल सदाही करैं राम है प्रसन्न सदा रामरसिकावली या ग्रंथ बनवैयाको ॥ मंगल सदाही करैं राम है प्रसन्न सदा रामरसिकावली या ग्रंथ छपवैयाको ॥ मंगल सदाही करैं राम है प्रसन्न सदा रामरसिकावली सुनैया सुनवैया को ॥ मंगल सदाही करैं राम युगलेश कहैं रामरसिकावली शोधैया औ बोधैयाको ॥ १ ॥

दोहा—नाम रामरसिकावली, भक्तमाल अभिराम ॥
रामरसिक जन सर्वदा, करैं कंठ वसुयाम ॥ ३६ ॥
महाराज रघुराजहैं, ग्रंथकार सरनाम ॥
तिनको मंगल सर्वदा, करहिंजानकीराम ॥ ३७ ॥
लिखनहार अब ग्रंथको, युगलदास विख्यात ॥
आगे लिखत कबीर जो, लिख्यो भविष अवदात ॥ ३८

इति उत्तरचरित्र समाप्त ।

श्रीगणेशाय नमः।

श्रीयुगलदासकृत-

श्रीबघेलवंशागमनिर्देशग्रंथप्रारम्भः।

दोहा-बंदौं वाणी वीण कर, विधिरानी विख्यात॥
वरदानी ज्ञानी सुयश, हरि गानी दिन रात॥१॥
मदनकदनसुत मुदसदन, वारणवदन गणेश॥
वंदतहौं अरविंद पद, प्रद उर बुद्धि विशेश॥२॥

सवैया-श्रीरघुनंदन श्रीयदुनंदन औध द्वारकाधीशविलासी॥
रावणकंस विध्वंस किये जिन अंश भये अवतारप्रकाशी॥
पारक या भवसिंधु अपारको बोहितनामजासंतसुपासी॥
वंदत हौं तिनके पद द्वंद्व सुभें अरविंद अनंदके रासी॥

दोहा-शंकर शंकरपद कमल, वंदन करौं निशंक॥
शिर मयंक शुचि वंक जेहिं, लसति शैलजा अंक३
प्रियादास पद पद्म युग, पुनि पुनि करहुँ प्रणाम॥
विश्वनाथ नरनाथ गुरु, हरि स्वरूप सुखधाम॥४
सांच मुकुंद स्वरूपजे, नाम मुकुंदाचार्य॥
वंदौं नृप रघुराज गुरु, करन सिद्धि सब कार्य॥५॥
रामभक्त शिरताज जे, महाराज विश्वनाथ॥
करन अनाथ सनाथ पद, पुनिपुनि नाऊं माथ॥६॥

सवैया-भूपशिरोमणिश्रीविश्वनाथतनैरघुराज अनाथनि नाथैं॥
श्रीयदुनाथको भक्त अनूपमसेवी सदा द्विजसाधुन गाथैं॥
तेज तपै दिननाथसों जासु यशो निशि नाथ दिपै महिमाथैं॥
तापद पाथ नमें सुख साथ ह्वै जोरिकै हाथ नवावतमाथैं॥१॥

दोहा-पवनपूत जय दुखदवन, राम दूत सुखधाम॥
शमन धूत सुकृपाभवन, बल अकूत सब ठाम॥७॥

जय कबीर मति धीर अति, रति जोहिं पद रघुबीर ॥
क्षीर नीर सत असत कर, विवरण हंस शरीर ॥ ८ ॥
जय हरि गुरुहरि दास पद, पंकज मोहिं भरोस ॥
जाकी कृपाकटाक्षते, मिटत सकल अफसोस ॥ ९ ॥
संतत संतन भूसुरन, चरण कमल शिरनाय ॥
बार बार बिनती करौं, सब मिलि करो सहाय ॥ १० ॥
रच्यो रामरसिकावली, ग्रंथ भूप रघुराज ॥
तामें बहु भक्तन कथा, वरण्यो भारि सुखसाज ॥ ११ ॥
भक्तमाल नाभाजुकृत, ताहीके अनुसार ॥
श्रीकबीरहूकी कथा, तामें रची उदार ॥ १२ ॥

छप्पय–जो कबीर बांधव नरेश वंशावली भाखी ॥
अरु आगमनिर्देश भविष्यहु जो रचि राखी ॥
सोउ समास सहुलास तासु मैं वर्णन कीनो ॥
सुनत गुणत जेहिं सुकवि संत संतत सुख भीनो ॥
तेहि तुम वरणौ विस्तारयुत, शासन नृप रघुराज दिय ॥
कह युगलदास धरि शीश सो, वर्णन हों आरंभकिय ॥ १ ॥

घनाक्षरी–प्रथम कबीरजी सिधारि पुरी मथुरामें संतन सहित अति हरष बढायके ॥ तहां धर्मदास आय प्रभु पद पंकजमें बैठो बार बार शीश सादर नवायकै ॥ ज्ञान उपदेश ताको कीन्ह्यो श्रीकबीर तहां सो न इते भीति विस्तर बुझायकै ॥ मानिके यथारथ कृता-रथ है धर्मदास चालि मथुराते पथ गौन्यो चित चायकै ॥ १ ॥

दोहा–धर्मदास आवत भये, बांधौ गढ सहुलास ॥
गुरु विश्वास हृढ वास किय, जासु हिये आवास १३॥

पुनि कछु दिन बीते सुख छाये ❀ श्रीकबीर बांधव गढ आये ॥
तहँ चौहट बजार माधि माहीं ❀ निरखि एक सेमर तरु काहीं ॥
तहां आठ दिन आसन कीन्ह्यो ❀ सेमर तरु उडाय पुनि दीन्ह्यो ॥

निरखि लोग सब अजरज माने * भूपतिसों सब जाय बखाने ॥
महाराज साधू यक आई * सेमरतरुको दियो उडाई ॥
सुणि अचरज भूपति अतुराई * प्रभु पद किय दंडवत सिधाई ॥
सादर नृप कर जोरि सुहाये * पूंछ्यो नाथ कहांसे आये ॥
तब प्रभु वचन कह्यो अभिरामा * हम कबीर निवसे यहि ठामा ॥
दोहा-तब राजा पूंछत भयो, कैसे जानैं नाथ ॥
देहु परीक्षा हमहिं जो, तौ लखि होयँ सनाथ ॥ १४ ॥
होत अज्ञान नाश जेहिं तेरे * कहिय नाथ सो ज्ञान निवेरे ॥
देवी आदि देवकी जोई * आदि निरंकारहु जो होई ॥
सादर पूंछत भयो भुआला * दियो बताय कबीरकृपाला ॥
राजाराम कह्यो पुनि वैना * कहिय जो आहि वघेल सचैना ॥
तब तुमको कबीर हम जानैं * अपनो जन्म सफल करि मानैं ॥
सुनि कबीर तब मृदु मुसकयाई * उत्पति जौन वघेल सोहाई ॥
लागे कहन भूपसो सो सब * हम साकेत रहे निवसे जब ॥
तब मोसों कह श्री रघुराई * तुम कबीर संसारहि जाई ॥
दोहा-जीवनको उपदेश करि, मेरो ज्ञान अशोक ॥
हमरे लोकपठावहू, जो प्रद आनँद थोक ॥ १५ ॥
छंद-द्वापर अंत आदि कलियुगमें कृष्ण प्रकाश अनूपा ॥
पूरुब दिशि सागरके तटमें धरिहै बोध स्वरूपा ॥
तहां जाय तुम प्रगट होउ यह रघुवर आयसु पाई ॥
प्रगटि वोडैसा जगपतिकेरो दरशन लीन्ह्यों जाई ॥ १ ॥
सागर तीर गाडि कुबरी पुनि बांधि तासु मर्यादा ॥
पुनि परबोधि सिंधुको बहु विधि गमन्यो युत आह्लादा ॥
चलत चलत गुजरात आयकै नगर विलोक्यो जाई ॥
जहां सुलंक भूप बहु साधन राखे रहो टिकाई ॥ २ ॥
भक्तिवान अति रही रानि अति नित सब साधुन केरो ॥
दर्शन करिलै तिन चरणामृत निज घर करै बसेरो ॥

ते साधुनको दर्शन करिके एक वृक्षतर जाई ॥
वसि आसन बिछायकै बैठ्यो हरिको ध्यान लगाई ॥ ३ ॥
यक दिन रानी सब साधुनको भोजन हित बोलवाई ॥
पंगति दिय बैठाय गयो मैं नहिं तहँवां हरषाई ॥
रानी तब मेरे आश्रममें आवतभै अतुराई ॥
महि तजि अंतरिक्ष आसन मम निरखि परम सुख पाई ॥ ४ ॥
विनती किय प्रभु आपहु चलिकै मम घर भोजन कीजै ॥
मैं तब कह्यो नहिं भूख प्यास मोहिं हरि अधार गुणि लीजै ॥
रानी कह यक तो सुत विन मैं दुखित राज्य सब सूनी ॥
दूजे जो न आप पगुधारे तपी ताप तो दूनी ॥ ५ ॥
मैं कह सोच करै नहिं राजा द्वै सुत हैहैं तेरे ॥
संतनको चरणामृत अबहीं लै आवे ढिग मेरे ॥
साधुन चरण धोय चरणोदक लैआई जब रानी ॥
दियो पियाय रानिको तब मैं निज चरणोदक सानी ॥ ६ ॥
लहि मेरो वर साधुनकेरो बहु विधि करि सत्कारा ॥
परम प्रमोद पाय उर रानी गमनत भई अगारा ॥
कह्यो हवाल भूपसों सो सब सुनि नृप अति सुख पाई ॥
लै फल फूल द्रव्य बहु सादर मम समीप द्रुत आई ॥ ७ ॥
करि दंडवत प्रणाम विनय किय नाथ दया उर धारी ॥
कछु दिन आप वास इत कीजे तौ मैं होहुँ सुखारी ॥
कुटी दियो बनवाय भूप तहँ करत भयो मैं वासा ॥
कछु वासरमें गर्भवती भै रानी सहित हुलासा ॥ ८ ॥

दोहा–ज्यों ज्यों रानीके उदर, बढ्यो गर्भ करि वास ॥
त्यों त्यों रानीके वपुष, बाढ्यो परम प्रकाश ॥ १६ ॥

कछु दिन बिते सुदिन जब आयो ❋ तब रानी दुइ सुत उपजायो ॥
भयो जो जेठ पुत्र तेहि आनन ❋ होत भयो सम मुख पंचानन ॥
लहुरो तनय होत जो भयऊ ❋ तेहि नर तनु अति सुंदर ठयऊ ॥
लखि रानी अति अचरज मानी ❋ दिय देखाय भूपतिकहँ आनी ॥

मानि शंक भूपाल उदासा ❀ कह कबीर आयो मम पासा ॥
सादर करि दंडवत प्रणामा ❀ कीन्ही विनय भूप मतिधामा ॥
नाथ भये मेरे सुत दोई ❀ है अति कृपा आपकी सोई ॥
पै जो भयो जेठ सुत स्वामी ❀ व्याघ्र वदन सो यह बदनामी ॥

दोहा-सो सुनि मैं वाणी कही, करिकै बहुत प्रशंस ॥
यह सुत वंश वतंस भो, रामलोकको हंस ॥१७॥

व्याघ्र वदन परतो दृग जोई ❀ नाम बघेल ख्याति जग होई ॥
याते वंश बयालिस ताई ❀ अटल राज्य रहिहै महि ठाई ॥
तेजवान यह होय महाना ❀ पूरण भक्तिवान भगवाना ॥
वंश बयालिसलों अभिरामा ❀ चलिहै तुव बघेल कुल नामा ॥
यह वर लहि सो मेरे मुखते ❀ भूपति आय महल अति सुखते ॥
द्विजन दान दै तोपन काहीं ❀ दगवायो बहु बार तहांहीं ॥
पुनि मोकहँसो नृपति सुजाना ❀ करि बहु विनय लाय निजथाना ॥
ऊंचे आसन पर बैठाई ❀ पूजन किय अति आनँद छाई ॥

दोहा-रानी लै दोउ पुत्रको, मेरे पग दिय डारि ॥
तब मैं पुनि देतो भयों, बहु अशीश चित धारि ॥१८॥

बढिहै तोरि राज्य नरनाहा ❀ ह्वैहै बांधवगढको शाहा ॥
लहि वरदान भूपयुत रानी ❀ निवस्यो महल मोद अतिमानी ॥
मेरे कहे फेरि सो भुआरा ❀ पूज्यो हरि षोडश उपचारा ॥
तब पुत्रनयुत नृप रानी कहँ ❀ शिष्य कियो मैं अति आनँदमहँ॥
करि आरती फेरि परसादा ❀ दीन्ह्यो सबको युत आल्हादा ॥
बहु विधि करी प्रशंसा राजा ❀ मैं कह भो सिधि तुव सबकाजा ॥
अब मैं कहुं तीरथको जैहौं ❀ तहां भजन करि राम रिझैहौं ॥
सुनि नृप यह मेरे मुख वानी ❀ सादर विनय कियो युतरानी ॥

दोहा-इत कबीर साहेब करिय, कछु वासरलों वास ॥
वचन सुनन कछु आप मुख, हमको परमहुलास १९

व्याघ्रदेवको होत भो, कछु दिन माहँ विवाह ॥
तब सुलंक नरनाह मन, मान्यो परमउछाह ॥२०॥

हरिगीतिकाछंद–पुनि ध्यानमें मैं इकसमय कीन्ही विनय रघुवीरसों ॥
निज अंशते युग हंस दीजे कृपा करि मन धीरसों ॥
प्रगटैं बघेले वंश महँ जेहिते बयालिस वंशलों ॥
करि अचल राज्य बघेल राजा लहैं गति तुव अंशलों ॥ १ ॥
तव ध्यानहींमें कह्यो रघुवर हंस जे द्वै द्वापरै ॥
मम लोक तुम लाये अहो गिरिनारके अति आदरै ॥
ते भूप रानी दोउको जगतीतले प्रगटाइये ॥
मम ज्ञान करि उपदेश जिय हिय भक्ति मेरी छाइये ॥ २ ॥
सुनि ध्यानमें यह राम सुख नृप व्याघ्रदेव सुरानिको ॥
सब संत चरणोदक पिआयो होय सुत कहि वानिको ॥
पुनि वैश्य क्षत्री जाति कोउ तेहि तीयको सुख छाइके ॥
सब संत चरणोदक पिआयो गर्भ युत भइ जायके ॥ ३ ॥
जब समय आयो सुत जनम भो शुभ मुहूरत तेहि दिनै ॥
तब व्याघ्रदेव भुवाल तिय जनम्यो अनूपम यकतनै ॥
तेहि नाम मैं जयसिद्ध कीन्ह्यो भयो मोद अपार है ॥
दै दान बहु सन्मान किय द्विज व्याघ्रदेव उदार है ॥ ४ ॥
कछु दिवस बीते वैश्य तियके यक सुता प्रगटत भई ॥
अति सुभग अतिहि सुशील मानहु रमा जगमें निर्मई ॥
तब भये दोउ सयान कछु तब होत भयो विवाह है ॥
नित नयो दिन प्रति भूप उर अति बढत भयो उछाह है ॥५॥

दोहा–कह मैं आदि बघेलकी, सुनिये राजाराम ॥
जिमि नभरवि तिमि वंश तुव, जग प्रगटेहि अभिराम ॥
सुनिकै मूल बघेलको, अति सुखपाय नरेश ॥
पुनि पूछ्यो प्रभु भांतिकेहिं, ते आये यहि देश॥२२॥

कवित्त–कह्यो श्रीकबीर सुनो राजाराम वैन मेरो जय सिद्ध भयो

जब कछुक सयान है ॥ साधु संगहीमें निज मनको लगाय करि सुनि सुनि मानै मेरो वचन प्रमान है ॥ मोसों कह्यो नाथ मोहिं शिष्य कीजे दीजे मन्त्र कह्यो तब मैंहूं तू तो भूप बडो जानहै ॥ नृपतिसुलंक ज्यों समाज जोऱ्यो त्यों समाज जोरै करौ शिष्य जानै सकल जहान है ॥ १ ॥ आयसुको मानि संत पण्डित समाज जोऱ्यो सकल मँगाई साज महा मोद छायके ॥ सवासेर मोतिनकी चौक पुरवाय नीकी पितामहत्योहीं पितै सभामें बोलायकै ॥ आरती सँवारि कियो जयसिद्ध भूपकाहि कीन्हो तब शिष्य कह्यो वचन सुनायकै ॥ भूप जयसिद्ध तुम पूर्व गिरिनारके हौ हंसराम लोकहीके प्रगटे ह्यां आयके ॥ २ ॥

दोहा-वंश बयालिस चलेगो, तुमते नृप जयसिद्ध ॥
बांधोगढ तुव वंशके, ह्वैहैं साह प्रसिद्ध ॥ २३ ॥

छत्र मुकुटधारी नृप ह्वैकै ❀ सुयश प्रताप पुहुमि अतिछैकै ॥
द्वितिय जन्म बांधव गढ तेरो ❀ ह्वै है पैहै दर्शन मेरो ॥
दै ताको यह आशीर्वादा ❀ विदा कियो दै कारि परसादा ॥
पुनि सब साधुन विप्रन काहीं ❀ दै प्रसाद किय विदा तहाहीं ॥
नृप जयसिद्ध धाम निज जाई ❀ यक दिन पौढे सेज सोहाई ॥
कियो शंक नहिं कोषन देशू ❀ नहिं चाकर यह बडो अँदेशू ॥
चलि है किमि जग नाम हमारो ❀ नाहिं कबीर वर मृषा विचारो ॥
करत करत यहि भांति विचारा ❀ होतभयो जबहीं भिनसारा ॥

दोहा-सपदि भूप जयसिद्ध तब, जाय जनकके पास ॥
विनय कियो करजोरिके, मोहिं यह परमहुलास२४॥

करि महिअटन तीर्थ सब करहूं ❀ परमप्रमोद हिये महँ भरहूं ॥
करै न धर्म धरै धन जोरी ❀ क्षत्री ह्वै करतो धन चोरी ॥
तेहि नृप तेजअंश घटिजाई ❀ ताते धर्म करै मनलाई ॥
करै नीति रण पीठि न देई ❀ सो नृप अनुपम यश महि लेई ॥
यह सुनि सब बघेल सुख पायो ❀ पितु प्रसन्न है वचन सुनायो ॥
जाहु हमारे पितुके पासा ❀ कहो करै जस हुकुम प्रकासा ॥

यह सुनिकै जयसिंह भुवाला ❀ जाय पितामह निकट उताला ॥
शीश नवाय उभय कर जोरी ❀ विनय कियो यह इच्छा मोरी ॥

दोहा—जात अहौं तीरथ करन, दीजै नाथ रजाय ॥
तब सुलंक नृप पौत्रसों, कह्यो गोद बैठाय ॥ २५ ॥

कौन कलेश परयो तुमकाहीं ❀ जो निज राज्य रहतहौ नाहीं ॥
यह तुव सिगरी राज्य ललामा ❀ का परदेश जानको कामा ॥
सुनि जयसिंह कही तब बाता ❀ देहु राज्य दोउ पुत्रन ताता ॥
काम न मम तुव राज्यहि तेरे ❀ करिये विदा यही मन मेरे ॥
तिहरो यश जगमें अति होई ❀ नहिं निंदा करिहै जन कोई ॥
तब कबीर वरदान प्रभाऊ ❀ गुणि सुलंक नृप भरि अतिचाऊ ॥
युगल उतंग मतंग निबेरे ❀ तीस तुरंग तबेले केरे ॥
तिनको नीकी भांति सजाई ❀ द्रव्य ऊंट द्वै तुरत भराई ॥

दोहा—वीर महारणधीर जे, काल सरित सरदार ॥
तिनको तिन संग करत भे, औरहु चमू अपार ॥२६॥

सुदिन शोधि जयसिंह नरेशा ❀ पितु मातहिं किय खातिर वेशा ॥
पुनि रानी अतिशय बिलखानी ❀ महूं संग चलिहौं कह बानी ॥
जहां धर्म रहती तह माया ❀ जहां रूप रहती तहँ छाया ॥
लै तिय संग मोहिं शीश नवाई ❀ मोसों बहुत आशिषा पाई ॥
दशराके दिन किये प्रस्थाना ❀ पुरलोगनको करि सन्माना ॥
कह कबीर पुनि मो ढिग आई ❀ कीन्ही विनय प्रमोद बढाई ॥
प्रभु मोहिं जिमि दीन्ह्यो वरदाना ❀ तिमि मम संग कीजिये पयाना ॥
तब मैं सुनि यह ताकरि वानी ❀ हँसिकै वचन कह्यो सुखमानी ॥

दोहा—तुम सेवा अति मम करी, दोउ जन्मके मोर ॥
भक्त अहौं ताते चलहु, संत तजौं नहिं तोर ॥ २७ ॥
विजय मुहूरत अबहिं नृप, गुनि मम वचन प्रमान ॥
मुदित निसान बजायकै, वेगिहिं करहु पयान ॥ २८ ॥

छंद—वर मानि मोर निदेश, जयसिद्ध नाम नरेश ॥
पितु पितामह ढिग जाय, बहु भांति शीश नवाय ॥ १ ॥
स्वर दाहिनो नृप साधि, चढि चल्यो हय सुख कांधि ॥
तेहिं समय पुरजन यूह, जुरि दिय अशीश समूह ॥ २ ॥
जस देश यह गुजरात, तस देश लहो विख्यात ॥
तुव उपर देवी मात, रक्षक रहै दिन रात ॥ ३ ॥
तिमि रानि भरि अति चाउ, परि सासु ससुरहिं पाउ ॥
कह छोडियो नहिं छोह, नहिं कियो कबहूं कोह ॥ ४ ॥
पुनि रानि युत जयसिद्ध, यश जासु जगत् प्रसिद्ध ॥
मोहिं सहित साधु समाज, संग लै चमू छबि छाज ॥ ५ ॥
किय गवन मग रणधीर, तनुधरे मनु रसवीर ॥
बिच बीच पथ करि वास, पुरगढा कोसहुलास ॥ ६ ॥
पहुंच्यो महीश सुजान, लिय भूप तहँ अगवान ॥
निज महल गयो लेवाय, दिय नजर बहु सुख छाय ॥ ७ ॥
जयसिद्ध पुनि नरराय, सरि नर्मदामें जाय ॥
तिय सहित करि सुस्नान, धन अमित दीन्ह्यो दान ॥ ८ ॥

दोहा—चक्करनको दै चाकरी, कछु दिन सहित हुलास ॥
तीर नर्मदा शर्मदा, करत भयो नृपवास ॥ २९ ॥
तहँ जयसिद्ध भुवालके, कर्णदेव भो सून ॥
सबके उर आनँद उदधि, अधिकानो तब दून ३०
सेवक द्विज गण साधुको, भयो सो अति मतिमान
नीतिवान सब प्रजनको, पाल्यो प्राण समान ॥ ३१ ॥

कछु दिनमें जयसिद्ध भुवाला ❋ कूच कियो लै सैन्य विशाला ॥
तीरथ चित्रकूटमें आई ❋ पयस्विनीमें सविधि नहाई ॥
विविध प्रकार दान तहँ दीनो ❋ सुत कलत्र युत अति मुद भीनो ॥
तहँते चलि नृप सुख छायो ❋ कहुँ थल भल लखि नगर बसायो
कछुक दिवस तहँ कियो निवासा ❋ साधुन विप्रन देत हुलासा ॥

बेस बैसवारेके देसे * बसे डोंरिय: खेराहिं बेसे ॥
पुरी गौर तिनके घर माहा * कर्णदेवको कियो विवाहा ॥
परमानंद मानि तहँ राजा * विप्रनको दिय दान दराजा ॥
दोहा-जय जय जय ध्वनि है रही, पुहुमीमें सब द्वीप ॥
कर्णदेवके होतभो, हलकेहरी महीप ॥ ३२ ॥
कछुक दिवस तहँ कियो निवासा * दिन दिन बढो प्रताप प्रकासा ॥
कर्णदेवको देकर राजू * नृपजयसिंह छोंडि जग काजू ॥
तीरथवासि ब्रह्माण्डहिं फोरी * देह छोंडि दै दान करोरी ॥
हरिके लोक जाय किय वासा * तनु तजि गई रानि तेहिं पासा ॥
मृतकक्रिया करि विविध प्रकारा * कर्णदेव दिय दान अपारा ॥
हलकेहरी तनय पुनि जायो * नाम केहरी तासु धरायो ॥
तिनको कियो विवाह सप्रीती * जीति देश बहु मेटि अनीती ॥
निज पितु कर्णदेव नृपकाही * राखि चित्रकूटहि सुखमाही ॥
दोहा-राज्यगहोराको कियो, हलकेहरी सुजान ॥
तनय केहरीसिंह तेही, तहँते कियो पयान ॥ ३३ ॥
गयो कालिंजरदेश मँझारा * तहँको कियो मिलाप भुवारा ॥
पुनि केहरीसिंह बलवाना * उत्तर दिशिकहँ कियो पयाना ॥
विदित पठान राज जहँ रहई * रहे पठान प्रबल तहँ महँई ॥
ते हरिदेको कियो विचारा * कुपित जननसों वचन उचारा ॥
कहो कहांके को ये आही * आवत सदल पुरी मम काहीं ॥
ते सब कहे जोरि युग हाथा * जो हम सुनत सुनावत नाथा ॥
ये बघेल गुजरातहि केरे * भूप प्रतापी अहैं बडेरे ॥
सुनि पठान अतिकोपहि छायो * फौज जोरि बहु हुकुम जनायो ॥
दोहा-लूटि लेहु रिपु सैन्य पुर, आवन पावै नाह ॥
नाकन दिय लगवाय बहु, तुरतहि तोपन काहिं ३४
सो०-यह हवाल सुनि कान, कह्यो केहरीसिंह हँसि ॥
नाहक किय रणठान, जान न पावैं जानले ॥ १ ॥

दोहा-वीरनको दीन्हो हुकुम, ते अति क्रोधहि छाय ॥
धाय जाय चहुँ ओरते, हने पठानन काय ॥ ३५ ॥
परें बाघ जिमि गाय समूहा * भागें तिमि भागे रिपुयूहा ॥
तोपनको द्रुत लियो छँडाई * हनिगे बहु पठान समुदाई ॥
हाहाकार करत बहु भारी * बार बार यह कहत पुकारी ॥
होहु पनाह खुदा अल्लाहा * खात बघेल सरिस वननाहा ॥
आरत वचन सुनत तिनकेरो * लहि नवाब उर शोक घनेरो ॥
द्रुत केहरीसिंह ढिग आयो * बहु सलाम करि शीश नवायो ॥
विनती कियो हाथ पुनि जोरी * आधी राज्य लेहु प्रभु मोरी ॥
कह केहरीसिंह तिन पाहीं * हम तुव राज्य लेतुहैं नाहीं ॥
दोहा-लिख्यो विधाता होयगो, राज्य हमारे भाल ॥
साहेब हमको देइगो, तौ करि कृपा विशाल ॥ ३६ ॥
सुनि नवाब तिनका यह बानी * दिय बैठाय राज्य सुख मानी ॥
कह्यो देश सब कोष तुम्हारा * हम चाकर है रहन विचारा ॥
तुमही राजा अहो हमारे * निशि दिन सेवन करब तिहारे ॥
भये खुशी केहरीसिंह सुनि * करि नवाबको अति खातिर पुनि ॥
भवन जानकी दई बिदाई * गयो सो बार बार शिर नाई ॥
नृप केहरीसिंह सहुलासा * कछु वासर तहँ कियो निवासा ॥
सरदारनको करि सन्माना * सब चकरनको सहित विधाना ॥
दिय चिट्ठी चाकरी चुकाई * बसे सबै सेवा मनलाई ॥
दोहा-तहां केहरी सिंहके, मालकेसरी पूत ॥
होत भयो जाके वदन, वसी सरस्वता पूत ॥ ३७ ॥
उभय मल्लको जोर तनु, सुंदर तेज विधान ॥
कछु दिनमें तेहि व्याहकरि, दीन्ह्यो दान महान ३८ ॥
फेरि व्यतीत भये कछुकाला * तनु तजि करि केहरी भुवाला ॥
वास कियो वासवपुर माहीं * मालकेसरी सपदि तहांहीं ॥

विधि युत मृतकक्रिया पितुकेरो * करि दीन्ह्यो तहँ दान घनेरो ॥
मालकेसरी कछु दिन माहीं * उपजायो सुंदर सुत काहीं ॥
सारंग देव नाम तेहि भयऊ * सुयश प्रताप नाम तेहि ठयऊ ॥
भीमल्लदेव भयो सुत तासू * फैलि रह्यो जगमें यश जासू ॥
हरिगुरुको भो भक्त महाना * पाल्यो परजन प्राण समाना ॥
ब्रह्मदेव ताके सुत जायो * सो निज पितुसों वचन सुनायो ॥
दोहा–आपकीजिये भजन हरि, सुचित मौन करि वास॥
मोहिं दीजिये फौज सब, करि उर कृपा प्रकाश॥३९॥
कछु दिन सैर करौं महि माहीं * प्रगटहुँ नाम रावरे काहीं ॥
सुनि नृप भीमल्लदेव उदारा * ब्रह्मसूनुसों वचन उचारा ॥
मनमें यह विचार किय नीको * करै सुपूती सोइ सुत टीको ॥
जगमें नहिं कुपूत कहवायो * अस करतूति करन मन लायो ॥
ब्रह्मदेव सुनि ये पितु वैना * करी तयारी भारि अतिचैना ॥
चतुरंगिनी चमू सँग लैकै * कियो पयान वीररस ग्वैकै ॥
राज्य गहरवान्के आये * कछु वासर तहँ वसि सुख छाये ॥
पुनि सिधाय शिरनेतन देशू * तहँ विवाह किय ब्रह्म नरेशू ॥
दोहा–कछुक दिवस शिरनेतनृप, सेवा करि युत प्रीति ॥
ब्रह्मदेवसों समय गुणि, कह्यो विनयकी रीति ॥४०॥
यक मम भाई देश हमारे * गनत न हमहिं भये बलवारे ॥
तिनको दंड दीजिये नाथा * तौ हम वसैं राज्य सुख साथा ॥
ब्रह्मदेव यह सुनि तेहि बानी * कह नर पठे लेहिं हम जानी ॥
पुनि नृप ब्रह्मदेव रिस छायो * पाती यक ऐसी लिखवायो ॥
ग्यारहसै नेजा सँग लीन्हे * आवत तुम दरशन मन दीन्हे ॥
हैं बघेल हम विदित जहाना * तुम शिरनेत अनुज बलवाना ॥
यह हवाल लिखि पत्री काहीं * दै पठयो यक मनुज तहांहीं ॥
सो पाती दिय तिन कर जाई * बाचत गयो कोपमें छाई ॥
दोहा–तुरत जवाब लिखायकै, दीन्ह्यो तेहि कर धारि ॥
आप दरश पावें जो हम, धनि धनि भाग्य हमारि ॥४१॥

सुन्यो न हम बघेलको नामा ❀ निरखि होहिं अब पूरण कामा ॥
पाती असि लिखाय शिरनेता ❀ बांध्यो युद्ध करनको नेता ॥
फौज जोरि आगे कछु जाई ❀ ठाढे भये रोष अति छाई ॥
इतते ब्रह्मदेवकी सैना ❀ काल समान गई कछु भैना ॥
भगी फौज शिरनेतन केरी ❀ नृप शिरनेत बंधु तहँ घेरी ॥
पकरि भूप शिरनेतहिं काढी ❀ सौंप्यो सो आतिहीं सुख माहीं ॥
ब्रह्मदेवको निज सब देशू ❀ सौंपिदियो शिरनेत नरेशू ॥
तहँ नृप ब्रह्मदेव सहुलासा ❀ करत भये कछु वासर वासा ॥

दोहा—ब्रह्मदेवके होतभो, तनय सिंह जेहिं नाम ॥
सिंहदेवके पुनि भये, वेणीसिंह ललाम ॥ ४२ ॥
भूपति वेणीसिंहक, नरहरिसिंह सुजान ॥
नरहरि हरिके होतभे, भैददेव मतिवान ॥ ४३ ॥

शिरनेतनके सहित उछाहा ❀ भैददेवको कियो विवाहा ॥
भैददेवको परम प्रतापा ❀ बाढ्यो रिपुन देत अति तापा ॥
भैददेव पुनि पितु ढिग जाई ❀ सादर विनती कियो सुहाई ॥
कछु दिन आप करे इत वासा ❀ सैल करों मैं सहित हुलासा ॥
अस कहि वंदि चरण युत चैना ❀ गोरखपुर आयो युत सैना ॥
तहँको भूपति मिलि सुख माहीं ❀ कछु दिन राखत भयो तहांहीं ॥
भैददेवको तहँ सुत भयऊ ❀ नाम शालिवाहन तेहिं ठयऊ ॥
सुवन शालिवाहन पुनि जायो ❀ विरसिंह देव नाम सो पायो ॥

दोहा—भ अति विरसिंहदेवकी, द्विज साधुनमें प्रीति ॥
नीति रीति प्रगट्यो पुहुमि, त्यागि अनयकी रीति ४४

भैददेव नृप सहित उछाहा ❀ तनयकेर कीन्ह्यो सुविवाहा ॥
दीन्ह्यो अमित द्विजनको दाना ❀ पूज्यो सुयश महान जहाना ॥
विरसिंहदेव सुयश जग छायो ❀ होत भयो हरिभक्त सोहायो ॥
बडे भक्त जे जक्त कहाये ❀ नामदेव आदिकन टिकाये ॥
हमहुं जाय तहँ अति सुख भरिकै ❀ नामदेवसों चरचा करिकै ॥

रामभंत्र भूपति कहँ दीन्ह्यो ❋ वरवश वश नरेश करिलीन्ह्यो ॥

दोहा-भूपति विरसिंहके भयो, वीरभानु सुतजान ॥

भानु समान उदोत भो, तेज अमान जहान ॥ ४५ ॥

कछु दिन बीते विरसिंह देवा ❋ पितुसों विनय कियो करि सेवा ॥
सुचित आप इत भजन करीजै ❋ सादर म्वहिं निदेश प्रभु कीजै ॥
मकर प्रयाग करहुँ सुस्नाना ❋ प्रगटहुँ तुव यश अमित जहाना ॥
सुनत शालिवाहन सुत वैना ❋ आयसु दियो जाहु युत चैना ॥
सुनि विरसिंहदेव भूपाला ❋ लै सँग सुत बहु सैन्य उताला ॥
आय प्राग करिकै सुस्नाना ❋ दान द्विजन दिय विविध विधाना ॥
विविध भांति पकवान सुहायो ❋ विप्रनको भोजन करवायो ॥
पुनि करिकै छावनी सभागा ❋ वस्यो कछुक दिन मध्य प्रयागा ॥

दोहा-बोले जमींदारन सकल, पत्री तुरत पठाय ॥

आपनकै तिनको दियो, निज निज थलन टिकाय ४६

जे नहिं आये तिनहुँसों, पठै सैन्य लै दंड ॥

निज वदि करि राख्यो तिनहिं, प्रगटत तेज अखंड ४७

कोउ कोउ अपडरगये भगाई ❋ ते सभीत दिल्लीमें जाई ॥
बादशाहसों कियो पुकारा ❋ पृथ्वीनाथ यक शत्रु अपारा ॥
आय प्राग लिय अमलि उदंडा ❋ वरियाई लिय सबसों दंडा ॥
सुनि कह शाह कौनसो क्षत्री ❋ कहँते आवतभो वरअत्री ॥
शासन सुनत शाहको तेजन ❋ हाथ जोरि विनती की तेहिक्षन ॥
सो सूबा है जाति बघेला ❋ कानन सुन्यो महीप नवेला ॥
शाह कह्यो बघेल क्षत्री कहँ ❋ सुन्यो आजुलों नहिं कानन महँ
अस कहि बडी सैन्य लै शाहा ❋ गमनत भयो भरे उत्साहा ॥

दोहा-बीच बीच मग वास करि, चित्रकूटमें आय ॥

शाह कियो डेरा सुन्यो, सो विरसिंह नृपराय ॥ ४८ ॥

छंद-सुत वीरभानु बोलाय, कह सकल सैन्य सजाय ॥

चलि लेइ आगू ताहि, चख लखै को धौं आहि ॥ १ ॥

सुनि वीरभानु सुबैन, कह तात तुम युत चैन ॥
बसि करहु सेवन प्राग, हरिभजहु युत अनुराग ॥ २ ॥
तब कह्यो बिरसिंह देव, चलि हमहुँ लेबै भेव ॥
अस भाषि सोये दोउ, निज शिबिर गे सब कोउ ॥ ३ ॥
पुनि प्रात सूर उदोत, करि मज्जनै सुख सोत ॥
हरि पूजि दै बहु दान, सुत सहित कियो पयान ॥ ४ ॥
सँग सवा लाख सवार, गज त्योंहि अमित तयार ॥
बहु सुतर प्यादे यूह, कवि को कहै करि ऊह ॥ ५ ॥
हय तुरंग ह्वै असवार, बिरसिंह भूप कुमार ॥
शिर कूंड कवचे धारि, कर कुंतलै तरवारि ॥ ६ ॥
इमि वीरभानु तयार, ह्वै चल्यो सैन्य मँझार ॥
बजि रहे वृंद निशान, रहे फहरि बिपुल निशान ॥ ७ ॥
बिरसिंह भूप अनूप, मनु वीररसको रूप ॥
चढिकै उतंग मतंग, द्रुत चल्यो त्यों सउमंग ॥ ८ ॥
सँग चली सैन्य बिशाल, सेनप लसे सम काल ॥
सुत सहित सैन समेत, बिरसिंह नृप सुख सेत ॥ ९ ॥
नियरान चित्रहिकूट, तब सुन्यो शाह अटूट ॥
निज फौज दियो निदेश, तहँ भै तयारी वेश ॥ १० ॥
पयस्विनी सरिके पार, बिरसिंह भूप उदार ॥
जब गयो हलकारान, किय बिनय जोरे पान ॥ ११ ॥
सुनु खोदावंद हवाल, बडी सैन्य आवति हाल ॥
सुनि बादशाह उमाह, अरिबैठ तख्तहिं माह ॥ १२ ॥
बिरसिंहदेव भुवाल, गजते उतरि तेहि काल ॥
ढिग शाह चलि अभिराम, बहुभांति कियो सलाम ॥ १३ ॥
समभानु पुनि बिरभान, हयको उघाटि महान ॥
गजमस्तके परजाय, बैठत भयो सुख छाय ॥ १४ ॥
लखि शाह तब हरषाय, तेहि तुरत निकट बोलाय ॥
लिय तख्तमें बैठाय, बहु बिधि सराहि सुभाय ॥ १५ ॥

पुनि कह्यो थांके वीर, तुम सम न निडर सुधीर ॥
तुम कहँके अहो नरेश, काहे चल्यो परदेश ॥ १६ ॥
सो०—केहि कारण मम देश, लूट्यो सो नहिं नीक किय ॥
शाह वचन सुनि वेश, वीरभानु बोलत भयो ॥२॥
हम क्षत्री बघेल हैं हरे * वासी थल गुजरातहि केरे ॥
आप हमारे हैं अति स्वामी * हम चाकर रावर अनुगामी ॥
निज करतब देखायबे खाहीं * आये हम यहि देशहिं माहीं ॥
जो रिपुता करि हमको मारयो * ताको हमहूं सपदि सँहारयो ॥
तुव देशहिको द्रव्य न खायो * निज कोषहिको वित्त उठायो ॥
जो नृप हमको तेज देखायो * ताहि दंड दै फेरि बसायो ॥
सो आपहिकी बदिकारि दीन्ह्यो * वृथा कोप हमपर प्रभु कीन्ह्यो ॥
यह सुनि बादशाह कह बानी * यहि बालककी बुद्धि महानी ॥
दोहा—पुनि कह विरसिंह देवसों, तुव सुत बडो निशंक ॥
रणरिपुगण जीतन प्रबल, वीर धीर अतिवंक ॥४१॥
छंदहरिगीतिका—तुव पूत बडो सुपूत हैहै वंश तिहरे माहिं ॥
नृप द्वादशैको भूप होई अचल भूमि सदाहिं ॥
यह भाषि शाह उछाह भरि बारहों नृपकी राजि ॥
दिय बखाशि सादर नानकारहि कह्यो भाई आजि ॥ १ ॥
गिरि विंधि बांधव दुर्गके तुम ईश होहु प्रसिद्ध ॥
नृप सकल साहिके करहिं सेवा होय सिद्धि समृद्ध ॥
लिखिदियो विरसिंहदेवको पुनि भूप शाहसमेत ॥
चलि प्राग करि स्नान दिय बहुदान द्विजन सचेत ॥ २ ॥
तहँ भूप बहु सन्मानकारि कीन्ह्यो निमंत्रिण शाह ॥
पुनि साह दिल्लीको गयो प्रागहिं बस्यो नरनाह ॥
विरसिंहदेव विवाह किय सुत वीरभानुहिं केर ॥
सब जमीदारनको निमंत्रण दियो आये ढेर ॥ ३ ॥
दिय दान द्विजन महानयुत सन्मान मोद अमान ॥

सरसान सकल जहान बिच किय गायकन बहुगान ॥
गज वाजि धन मणिमाल वसन विशाल दे सब काह ॥
करि मान किय सबकी बिदा विरसिंह सहित उछाह ॥ ४ ॥

दोहा–जमीदार निज निज सदन, जातभये हर्षाय ॥
त्योंहीं याचक गुणीजन, गये अमित धन पाय॥५०॥

करिकै सविधि किया पितु केरी * विरसिंहदेव द्विजन बहु टेरी ॥
विविध विधान दान बहु दीन्ह्यो * युत सन्मान विदा बहु कीन्ह्यो ॥
कछु वासर करि वास प्रयागा * विरसिंहदेव भूप बड भागा ॥
बोलि ज्योतिषिन सुदिन शोधाई * चकरनको चोकरी देवाई ॥
करि खातिरी कह्यो तिनपाहीं * कालिह सुदिन हमरो सुखमाहीं ॥
चलो सबै बांधव गढ देखी * सुनत वीर है सगुग विशेखी ॥
कहे नाथ भल कीन सहाला * हमरे उर महान उत्साहा ॥
पुनि विरसिंहदेव मुद भरिके * वीरभानु युत मज्जन करिके ॥

दोहा–वेणीमें बहु दान दै, युत सन्मान द्विजान ॥
लै सँग सैन्य पयान किय,विपुल बजाय निसान५१॥

कवित्त–सोहत सवार लाख संगमें सवार लोने युग लाख पैदरहु गोने जासु साथमें ॥ बेशुमार गज त्योंही सुतर अपार राजे योंहीं कूंच करि भरे आनँदके गाथमें ॥ बिच बिच पथ वास करि बांधवदुर्ग पास आय नीचे डेरा कियो धारे अस्त्र हाथमें ॥ विरसिंहदेव जाय लषणकी पूजा तहां करि सविधान धाऱ्यो पद जल माथमें ॥ १ ॥

सवैया–सादर साधुन विप्रनको नृप छिप्र भली विधि बोलिजेवा-यो ॥ फेरिसबै जमीदारन औ भुमियानको आपने पास बोलायो ॥ ते सब आय सलाम किये दिये भेट कह्यो नृप वैन सुहायो ॥ डेरा करो सब जाय सुखी दियो दण्ड तेहीं जो बोलाये न आयो ॥ २ ॥

दोहा–सांझ समय दरबारको, सादर सबहिं बोलाय ॥
कहरैयत तुम शाहकै, सुनहु सबै चित लाय॥५२॥

कवित्त–शाह यह राज्य हमैं दियो है उछाह भरि प्रथम समीति

बैन सबसों बखाने हैं ॥ रीति या बघेलवंशकी है क्रोध ठाने नाहिं येते हुंपे कोई जो न हुकुमको माने हैं ॥ युद्ध करिबेको जो तयार होत ताको हम साथही है क्रुद्ध ह्वैके आसनको ठाने हैं ॥ ऐसे अवनीश बैन सुनि सुनि शीश नाय कहे हम रावरेके रैयत प्रमाने हैं ॥ १ ॥

सो०–ईश्वर आप हमार, हम सेवक हैं रावरे ॥
सुनि गढभूप उदार, आयो विरसिंहदेव ढिग ॥ २ ॥

कवित्त–तेग धरि आगे विनय कियो अहे बाल हम आप हैं हमारे पिता पालैं प्रीति ठानिकै ॥ सुनि विरसिंहदेव बाहँ गहि पुत्र कहि लीन्यो बैठाय उर महामोद मानिकै ॥ कह्यो पुनि तू तो वीरभानुके समान मेरे कह्यो पुनि सोऊ पाणि जोरि सुख सानिकै ॥ महाराज किला चलि बैठैं राज्य आसनमें करों सोई दीजिये दिनेश हाल जानिकै ॥ १ ॥

दोहा–सुनत वचन विरसिंह नृप, बोलि ज्योतिषिन काह
सुदिन शोधि गुरु साधु द्विज, आगेकरि सउछाह ९३
चल्यो निसान बजायकरि, जायदुर्ग भरि चाय ॥
द्वारपालको देतभो, बहु इनाम बोलवाय ॥ ९४ ॥
पूजा करि सब सुरनकी, अति आदर युत भूप ॥
विप्रन साधुनको कियो, निवता महाअनूप ॥ ९५ ॥

बाजन बाजे विविध प्रकारा ❀ तोपैं छूटत भई अपारा ॥
सुदिन शोधि सिंहासन पाहीं ❀ विरसिंह भूप बैठ सुखमाहीं ॥
जमीदार भूमियन बोलाई ❀ बिदा कियो दै तिन्हैं बिदाई ॥
रैयत साहु महाजन जेते ❀ आयभेंट दिय नति करि तेते ॥
शिरोपाउ दै तिन सब काहीं ❀ खातिर करि किय बिदा तहांहीं ॥
राज्य करत बहु वर्ष बिताये ❀ वीरभानु सुतयुत अति चाये ॥
नृप विरसिंहदेव यक वासर ❀ कीन्ह्यो मन विचार यह सुखकर॥
सुतहिं समर्पि राज्य यह सिगरी ❀ भजन करों चलि नाहिं अब बिगरी

दोहा-बोलि साधु गुरुको सपदि, सुदिन शोधि नरराय॥
वीरभानुको शुभ दिवस, दिय गद्दी बैठाय ॥ ५६॥

आप भजन करिबेके हेतू ❀ मणिदे रानी सहित सचेतू ॥
विरसिंहदेव प्रागमें आई ❀ वास कियो तिरवेणि नहाई ॥
दिनप्रति ब्राह्मण साधुन काहीं ❀ भोजन करवावें सुखमाहीं ॥
आनंद मग्न रहे वसुयामा ❀ सुमिरण करत जानकी रामा ॥
वीरभानु बांधवगढमें इत ❀ पैठि राज्य आसन मन प्रमुदित ॥
राज्य कियो बहु दिवस समाजा ❀ तासु सुवन तुमराज विराजा ॥
करहु निशंक राज्य सब काला ❀ यह सुनि राजाराम निहाला ॥
बहु विधि सुस्तुति करिके मेरी ❀ मोसों विनती करि बहुतेरी ॥

दोहा-कह कबीर साहेब गुरू, तुम हमरे कुलकेर ॥
शिष्य कीजिये मोहिं प्रभु, अब न कीजिये देर ॥५७॥

यह सुनि तब अति हर्षाई ❀ राजारामहिं कह्यो बुझाई ॥
ह्वैहै तुम्हरे दशये वंशा ❀ परमप्रकाशमान यक हंसा ॥
कथिहै सो तुव अनुभव बानी ❀ मोर शब्द गहिहै सुखमानी ॥
सोई तुव कुलको अवतंसा ❀ बिजक ग्रंथको करी प्रशंसा ॥
ताको अर्थ अनूपम करिहै ❀ मम आश्रमहिं आय सुख भरिहै॥
यह सुनि राम भूप शिरनाई ❀ करि प्रशंसा जनन सुनाई ॥
नंदपुराणिक तहँ सुख भीनी ❀ करि दंडवत्त वंदना कीनी ॥
राजाराम महलमें जाई ❀ रानीसों सब गयो जनाई ॥

दोहा-रानी सुवचन कुवँरिसों, किय यह विनय ललाम॥
श्रीगुरुको लै आइये, महाराज निज धाम ॥ ५८ ॥
श्रीकबीर गुरुको मुदित, सादर रामभुवाल ॥
लेआये निज भवनमें, करि बहु विनय रसाल ॥ ५९ ॥

कवित्त-रहे जहां आसन तहांई श्रीकबीरजीको गुफा बनवायो प्रीतियुत राजाराम है । साज मँगवाय सब चौका के कबीर शिष्य

राजा अरु रानिहूको कीन्ह्यो तेहिं ठाम है ॥ औरो सब भूपके समीपी भये शिष्य सुखी पूजा जौन चढ्यो तहां अगणित दाम है । दियो भंडारा श्रीकबीरजी बोलि साधुनको जय जय रह्यो पूरि बांधवगढ धाम धाम है ॥

दोहा-युगल गांउ अरु गांउ प्रति, रुपया एक चढाइ ॥
हिय कागज लिखवायकै, राम भूप हर्षाय ॥ ६० ॥
होय जो हमरे वंशमें, भूपति कोउ उदार ॥
लेय न कबहूं शपथ तेहि, अर्पन कियो हमार ॥ ६१ ॥

श्रीकबीरजी है प्रसन्न अति * त्रिकालज्ञ पुनि कह्यो महामति ॥
औरहु कछु भविष्य मैं भाखौं * सो तुम मति निज मन गुणिराखो
दशयें वंश हंसको रूपा * तुमहीं प्रगट होहुगे भूपा ॥
सुवचन कुवँरि रानि तुव जोई * सो परिहार भूप घर होई ॥
तोसों तासु होयगो व्याहा * हरिपद रति अति करी उछाहा ॥
ताके वीरभद्र सुत तेरो * जन्मि देयगो मोद घनेरो ॥
सो तेहिते इग्यरहो वंशा * होइहै नृपनमाहँ अवतंशा ॥
बिच बिच और भूप जे हैहैं * ते हरिभक्ति हीन ह्वै जैहैं ॥

दोहा-ब्रह्मतेजते तपित अति, हैहै कोउ नरेश ॥
तजि यह बांधव दुर्गको, वसि है और देश ॥ ६२ ॥

ते सब भूपनको जस नामा * शिष्य मोर लिखि हैं अभिरामा ॥
दशो वंश तुव अंतहि काला * संत वेष दे दरश विशाला ॥
तोको रामधाम लैजैहौं * आवागमन रहित करिदैहौं ॥
अस कहि श्रीकबीर भगवाना * परमधामको कियो पयाना ॥
श्रीकबीरके शिष्य सुजाना * धर्मदास भे विदित जहाना ॥
तिनके शिष्य प्रशिष्य घनेरे * लिखे जे औरहु भूप बडेरे ॥
तिनको नाम सुयश परतापा * कहिहौं मैं सुख मानि अमापा ॥
कह्यो पूर्व जो संत कबीरा * वीरभानु नृप भो मति धीरा ॥

दोहा-राम भूप सुत तासु भो, इन दूनों करतूति ॥
प्रथम कछुक वर्णन करौं, जग प्रसिद्धमजबूति ॥ ६३ ॥

दिल्ली रह्यो हुमायूं शाहा * मान्यो हुकुम सकल नरनाहा ॥
शेरशाह दिल्लीमें आई * दियो हुमायूं शाह भगाई ॥
दिल्लीमें करि अमल सुहायो * सदल आपनो अदल चलायो ॥
शाह हुमायूं बेगमकाहीं * गर्भवती सुनिकै श्रुतिमाहीं ॥
नरहरि महापात्र लिय मांगी * सब भूपन ढिग गे सुख पागी ॥
राख्यो नहिं कोउ भूपति ताहीं * आयो वीरभानु ढिग माहीं ॥
वीरभानु तेहिं भगिनी भाखी * पाटन शहर देतभा राखी ॥
बेगम सो दिल्लीपति जायो * अकबर शाह नाम सो पायो ॥

दोहा-आई बाघा नगरमें, शेरशाहकी सैन ॥
वीरभानु नृपसों कहे, लखि आये जे नैन ॥ ६४॥
तहँते नृपति पयान करि, बांधवगढ गो धाय ॥
शेरशाह लिय छेंकि तेहिं,अमित सैन्य लै आय६५

छेंके रह्यो वर्ष सो बारा * खायो बोयो आम अपारा ॥
दुर्ग अटूट मानि सो हारा * लै सब सैना सपदि सिधारा ॥
वीरभानु नरवीर नरेशा * छीनिलियो दल लै निज देशा ॥
लै विलायती दल निज संगा * चलो हुमायूं सहित उमंगा ॥
इक अकबर यक दिवस उचारा * सुनिये बांधवनाह उदारा ॥
भाई रामसिंह सँग माहीं * बैठतहो नित भोजन काहीं ॥
हमको क्यों बैठावत नाहीं * नृप कह आप खामि है आहीं ॥
पूंछिलेहु मातासों जाई * पूंछ्यो सो सब दियो बताई ॥

दोहा-खड्गचर्म लै हाथमें, सुनि अकबर सो हाल ॥
चल्यो कियो तिन संगमें, वीरभानु निज बाल॥६६ ॥
अकबरसों तहँ राम कह, कोस कोस करि वास ॥
चलिये दिल्लीनगरको, जुरै फौज अनयास ॥ ६७ ॥
जुरी चमू चतुरंग संग, अमित तुरंग मतंग ॥
रँगो रामसिंह जंगके, रंग अभंग उमंग ॥ ६८ ॥

नातनको लिखवायो पाती * चारो नृप आये मुदमाती ॥
तिन संग रामसिंह यशवाला * जातभयो भो जंग विशाला ॥
हन्यो शेरको तहां हुमाऊ * दिल्ली तख्त बैठ युत चाऊ ॥
इते सुछेमैं राम सहारी * दिल्लीको द्रुत गयो सिधारी ॥
ताकन तनय हेतु सुखधारी * चढ्यो हुमायूं ऊंचे अटारी ॥
मोह मगनसों गिरिगो नीचे * होत भयो तुरंत वश मीचे ॥
तनय हुमायूं अकबर याहीं * बैठायो तब तख्तहिं माहीं ॥
वीरभानु जब तज्यो शरीरा * रामसिंह नृप भो मतिधीरा ॥

दोहा-दिल्लीको पुनि राम नृप, गये अकब्बर शाह ॥
कीन्ह्यो अति सन्मानसों, अकस मानि नरनाह ॥ ६९ ॥
औचक मारनको गये, ते नृप रामहिं काहँ ॥
फिरे मानि विस्मय सबै, निरखि चारु चौबाहँ ॥ ७० ॥
नापितसेन स्वरूप धरि, हरि जिनके तनु माहिं ॥
तेल लगायो राम सो, कहियेकेहिं नृप काहिं ॥ ७१ ॥
वीरभद्र तेहि सुत भयो, वीरभद्र कर संत ॥
आगे वर्णों औरहू, भये जे नृप मतिवंत ॥ ७२ ॥
वीरभद्र सुत विक्रमा, दित्य भयो अवदात ॥
नामहिंके अनुगुन भयो, जेहिं गुण जग विख्यात ७३
लीन्ह्यो जायरिझाय जो, निज करतूतिहिमाहिं ॥
ब्रह्मके मारे मरिलह्यो, सोन देव पुर काहिं ॥ ७४ ॥
अमरसिंह ताको सुवन, सरिस अमरपति भोज ॥
रीवां रजधानी करी, सींवा यश अरु वोज ॥ ७५ ॥
दिल्लीको गमनत भयो, चुक्यो खर्च मगमाहिं ॥
लूटि दौलताबादको, गयो शाह ढिग पाहिं ॥ ७६ ॥
उमरावन चुगुली करी, शाह निकट द्रुत जाय ॥
बादशाह मान्यो नहीं, नृप पै खुशी बनाय ॥ ७७ ॥

अमरसिंह भूपालके, भो अनूपसिंह भूप ॥
भूपर जासु प्रताप यश, छायो परमअनूप ॥ ७८ ॥
भावसिंह ताको तनय, भयो भानु सम भास ॥
दाता ज्ञाता वीरवर, ज्ञाता बुद्धि विलास ॥ ७९ ॥
जगन्नाथजी जायकै, मूर्त्ति लाय जगनाथ ॥
थापिव्यासके ग्रंथको, संच्यो भरि सुख गाथ ॥ ८० ॥
राना घरमें ब्याहभो, तहँते मूरति होय ॥
लाये सरस्वति गरुडकी, थापित किय मुदमोय॥८१॥
विप्रन दान महान दै, कीन्हे बहु सन्मान ॥
तिनके भे अनिरुद्ध सिंह, भूपति परम सुजान ॥८२॥
ताके भो अवधूतसिंह, जाहिर दान जहान ॥
ताके सुवन अजीतसिंह, दुवन अजीत महान ॥८३॥
जाके गोहरशाह बसि, जायो अकबर शाह ॥
सैन्य साजि जेहिं तख्तमें, बैठावत नरनाह ॥ ८४ ॥
जाजमऊलों जायकै, दिल्ली दियो पठाय ॥
अँगरेजहुँ अठवर्नको, दीन्ह्यो जंग भगाय ॥ ८५ ॥
तासु तनय जयसिंह भो, जयमें सिंह समान ॥
जाहिर दान कृपानमें, भक्तिवान भगवान ॥ ८६ ॥
दशहजार असवार लै, पूनाको हारोल ॥
आवतभो यशवंत तेहिं, हत्यो प्रताप अतोल ॥८७॥
गहरवार करि गर्व बहु, लीन्हे देश दबाय ॥
तिनको मारि भगाय दिय,बचे ते गिरिन लुकाय८८
देश आपने अमल करि, दै विप्रन बहु दान ॥
अंत समय तनु प्राग तजि,हरिपुर कियो पयान८९॥

विश्वनाथ नरनाथभो, तासु तनय यशगाथ ॥
रति अनन्य सियनाथपै, भई जासु महिमाथ ॥ ९० ॥
सरि सर घर घर पुर पथन, छयो राम गुणगाथ ॥
कितो परिक्षित कै कियो, कलि कृतयुग विश्वनाथ९१
तासु तनय रघुराज भो, महाराज शिरताज ॥
राजत राजसमाज मधि, जाको सुयश दराज ॥९२ ॥
श्रीकबीरजी कथित यह, है विचित्र नृप वंश ॥
नहिं असत्य मानै कोऊ, जानि संत अवतंश ॥ ९३ ॥
सतयुगमें सत नाम रह, अरु मुनीन्द्र त्रेताहिं ॥
करुणामय द्वापर रह्यो, अब कबीर कलि माहिं॥९४॥

कवित्त–नृपति उदार केते भये अनुसार मति तिनके अपार गुण यश कियो गानहे ॥ जनम करम भूप रघुराजको अनूप धरमको जूप दिव्य जाहिर जहानहे ॥ देख्यो निज नैन ताते भरो अति चैन उर करतहौं निज बैन सविधि बखानहे ॥ कहै युगलेश अहै झूठको न लेश कहूं मानिहै विशेष सांच सोई बडो जानहे ॥ १ ॥

छंद–कह्यो कबीर भविष्य राम नृप सुनि सुखरासी ॥
हंसिनि सुवचन कुँवरि रानि तू हंस प्रकाशी ॥
वीरभद्र तुव सुतहु हंस नित हरि ढिग वासी ॥
गुणगंभीर अति वीर धीर यश सुयश विलासी ॥
जब दशै वंश अवतंश नृप, प्रगट होयहै तू अवशि ॥
तब सति परिहार नरेशकुल, जनमीयहतुवतियहुलसि ॥ १ ॥

दोहा–तासों तेरो होयगो, सुखप्रद प्रथम विवाह ॥
वीरभद्र यह तेहि उदर, वंश इग्यरहे आह ॥ ९५ ॥
जनमि देगयो तुमहि अति, परमप्रमोद विख्यात ॥
तेजवंत क्षिति छाय है, यश अनंत अवदात ॥ ९६ ॥
समय विजय करसिंहतो, भो जयसिंह भुआल ॥
गंगलियो अगवान जेहि, तनु त्यागनके काल ॥९७॥

प्रगट भयो ताके तनय, हंस जो कह्यो कबीर ॥
विश्वनाथ तेहि नाम भो, परमयशी रणधीर ॥ ९८ ॥
रघुपति भक्त अनन्य अति, अरु ब्रह्मण्य शरन्य ॥
अब्रह्मण्य क्षिति नृपनमें, तेग त्याग जेहिं धन्य ॥९९॥
तेहि आह्निक गुण तेज यश, औरहु अमित चरित्र॥
मैं विचित्र वर्णन कियो, ग्रंथ सोपरमपवित्र ॥ १०० ॥
देखहिं श्रद्धावान जे, होवैं मनुज सुजान ॥
औरहु करहुँ बखान कछु, निजमतिके अनुमान ॥१॥
रानी सुवच्चन कुँवरिभै, पुरी उचहरा माहिं ॥
सुता भई शिवराज नृप, ब्याहिगई तेहि काहिं ॥ २ ॥
पढ्यो भागवत ताहिमें, दृढ भो तेहिं विश्वास ॥
गुण यश अनुपम तासुभे, किय जो कबीर प्रकाश ॥३
विश्वनाथ नरनाथकी, तिय सो अति अभिराम ॥
कुँवरि सुभद्र सुनाम जेहिं, सरिस सुभद्रा आम ॥ ४ ॥

छप्पय—बीरभद्र सुत रामभूपको हंस सुहायो ॥
श्रीकबीर आगम निदेश निजग्रंथहिं गायो ॥
विश्वनाथ तेहिं तीय गर्भ जबते सो आयो ॥
तबते बांधवदेश धर्म परमानंद छायो ॥
कहुँ रह्यो न अधरम लेश क्षिति बिन कलेश पुरजन भयो ॥
कलि वेश छयो कृतयुतधरम क्षतयुगलेशसो कहि दयो ॥ १ ॥

दोहा—रीवां घर घर सब प्रजा, सुखभरि करत उचार ॥
विश्वनाथके होय सुत, तौ धनि जन्म हमार ॥ ५ ॥

परमहंस जो ऋषभदेवसम ❀ चतुरदास जेहि नाम शमनभ्रम ॥
फिरत रहे रीवांपुरमाहीं ❀ रामभजनमें मग्न सदाहीं ॥
डोलत मग औरहि हुल बोलैं ❀ निज हियको अंतर नहिं खोलैं ॥
वर्षाऋतु धारैं शिर वर्षा ❀ जाडे जलमें बसैं सहर्षा ॥

ग्रीष्म तपत कुण्डमें सोवैं * प्रेमते हँसें कहुं क्षण रोवैं ॥
नृप रघुराज सुलाए चरित्रा * भक्तमालमें रच्यो पवित्रा ॥
परमहंस सो सहज सुभाये * सुविश्वनाथ जन्मदिन आये ॥
लगे बजावन मुदित नगारा * कहि सुख हंस लेतु अवतारा ॥

दोहा—यह हवाल जयसिंह नृप, सुनि सुनि त्यों पितु मात
क्षण क्षण अति हरषावये हियमें सो न समात ॥ ६ ॥
अष्टादशशै असीको, साल सुकातिक मास ॥
कृष्णपक्ष तिथि चौथ शुभ, वासरदानि हुलास ॥ ७ ॥

वीरभद्र नृप हंसस्वरूपा * भयो भूप रघुराज अनूपा ॥
कृष्णचन्द्रको प्रिय अधिकारी * शर्मद धरा धर्म धुरधारी ॥
नाम भागवतदास दुलारा * करहिं मातु पितु सदा उचारा ॥
बालहिते भो ज्ञाननिधाना * भक्तिवान पूजक भगवाना ॥
कछु दिनमें जननी मतिवारी * तनु तजि सुरवैकुं सिधारी ॥
पिता पितामह निकट सकारे * लै नित जाहिं खेलावन वारे ॥
तिनसों कहि कहि सुन्दर बानी * कथै ज्ञान मानहु बड ज्ञानी ॥
जगत शरीर अनित्यहि जानो * मरत सो जीव नित्य ध्रुव मानो ॥
अजर अमर तेहि गावत वेदा * वृथा करत तेहि हित नरखेदा ॥

दोहा—सुनि सुनि कहे प्रसन्न मन, ते अति हिय हर्षात ॥
हैं ये पुरुष पुरानकोउ, बाल रूप दर्शात ॥ ८ ॥

कछु दिनमें पुनि जाय प्रयागा * नृप जयसिंह तुरत तनु त्यागा ॥
श्रीविश्वनाथ राज पद पायो * रघुराजहु युवराज कहायो ॥
रहे उर्मिलादास सुसंता * भक्त अनन्य उर्मिलाकंता ॥
चलि चलि तिनके आश्रम माहीं * दर्शन तिनको करै सदाहीं ॥
मंत्र लेनको बडे उमाहा * विनय कियो तिनसों सउछाहा ॥
प्रभु मोहिं मंत्र कृपाकरि दीजै * मेरो जन्म सफल जग कीजै ॥
नाथ कह्यो तब अति हरषाई * मेरे रूप संत यक आई ॥
देहैं तोहिं मन्त्र सहुलासा * ह्वैहै सिगरे जगत् प्रकासा ॥

दोहा-तोहिं देनको मंत्र मोहिं, है नहिं लखन नियोग ॥
मेटिहै तुव भव सोग सोइ, ध्रुव लखिहै सब लोग॥९॥

छन्द-स्वामि मुकुंदाचार्य्य शिष्य यक संत रह्यो अभिरामा ॥
नाम जासु लक्ष्मीप्रपन्न ढिग विश्वनाथ निहकामा ॥
मंत्र लेनकी इच्छा गुणि मन श्रीरघुराजहि केरो ॥
भाषि गयो भूपतिसों निज गुरु भक्ति प्रभाव घनेरो ॥ १ ॥
आश्रम परम मनोहर तिनके ब्रह्मशिला तट गंगा ॥
प्रियादास जे गुरू आपके तिनको रह सतसंगा ॥
भक्ति ग्रन्थ पठे तिनके बहु वाल्मीकि रामायण ॥
श्रीभागवत भागवत धूरे पठत निरंतर चायन ॥ २ ॥
लायक गुरू विशेष होनते नरनायक सुत केरे ॥
आयसु होय बोलिलै आऊं ऐहैं विनती मेरे ॥
विश्वनाथ कह आप सरिस शिष जिनके जगत सोहाहीं ॥
जो कहिसकै महामहिमा तिन कोई अस महि माहीं ॥ ३ ॥
श्रीराना जमानसिंह जासों लियो मन्त्र उपदेशू ॥
ऐसे शिष्य आप जिनके हैं ते तो संत विशेशू ॥
जौलौं स्वामिहिं इतै न लावो तौलौं मम सुतकाहीं ॥
भक्तिभेद तुमहीं दरशावो करि सुकृपा उरमाहीं ॥ ४ ॥
पुनि सुत श्रीरघुराज नामको एक बाग लगवायो ॥
लक्ष्मण बाग सुनाम तासुको युत अनुराग धरायो ॥
अति उतंग आयत विचित्र हरि मंदिरयक अभिरामा ॥
निरखत प्रद मुद दाम जननको बनवायो तेहिं ठामा ॥ ५ ॥
श्रीरघुराज सुदिवस माहँ पुनि उर उछाह अति धारी ॥
थापित किय सिय राम लषणकी मूरति तहँ मनमारी ॥
औरहु अमित देवको प्रमुदित सादर तहँ बैठायो ॥
दान महान द्विजन दै संतन करि सत्कार सोहायो ॥ ६ ॥
विश्वनाथ पितु पद शिरधरि पुनि विनय कियो कर जोरी ॥
पूरण भो प्रसाद यह तिहरे अब यह इच्छा मोरी ॥

पठइय प्रभु लक्ष्मीप्रपन्नको ब्रह्मशिलामें जाई ॥
बोलिके आवें सपदि स्वामिको लेहु मंत्र हरषाई ॥ ७ ॥
बैन सुनत सुतके सचैन है विश्वनाथ नरनाथा ॥
कह लक्ष्मीप्रपन्नसों सादर जोरे दोऊ हाथा ॥
ब्रह्मशिला सुरसरि समीप जहँ स्वामि मुकुंदाचारी ॥
वास करत तुम जाय आशु तहँ लावहु तिन्हें सुखारी ॥ ८ ॥

दोहा-महाराजविश्वनाथके, सुनत वचन सुख पाय ॥
इत लक्ष्मीपरपन्न तब, ब्रह्मशिला गो धाय॥ १० ॥

प्रभु ढिग चलि करि दंड प्रणामा * कुशल पूंछि पायो सुखधामा ॥
विनय कियो पुनि दोउ करजोरी * पुरवहु नाथ कामना मोरी ॥
बांधवेश विश्वनाथ नरेशा * रीवां रजधानी जेहि वेशा ॥
राम अनन्य भक्त जगवीनो * राम परतु ग्रन्थ बहु कीन्हो ॥
प्रियादास भे संत महाना * तासु शिष्य सो विदित जहाना ॥
भक्ति ग्रन्थ ते बहुत बनाये * ते सब आप वदन निज गाये ॥
सो विश्वनाथ तनय मतिवाना * है रघुराजसिंह जग जाना ॥
आपसों मन्त्र लेनके हेतू * कीन्हे प्रण मन कृपानिकेतू ॥

दोहा-ताहि समाश्रय कीजिये, चलि रीवांमें नाथ ॥
प्रभु कह मैं नहिं जाहुँ कहुँ,तजि तट सुरसरिपाथ॥ ११ ॥

यह थल जो विहाय उत जैहों * तो अब परममोद नहिं पैहों ॥
किय पुनि विनय सेव बहु ठानी * नाथ कह्यो पुनि सोई बानी ॥
सुनिलक्ष्मीप्रपन्न पुनि बोल्यो * निज अंतरको अंतर खोल्यो ॥
जो प्रभु रीवांनगर न जैहैं * तो सति मोहिं जिवत नहिं पैहैं ॥
सुनि हँसिके कह दीनदयाला * जो अस तेरो अहै हवाला ॥
तो अब आशु सुदिवस विचारी * तहां जानकी करैं तयारी ॥
सुनि लक्ष्मीप्रसन्न हरषाई * गणक बोलि द्रुत सुदिन शोधाई ॥
सादर प्रभुसों वचन बखाना * सुदिन आजु भल करियपयाना ॥

दोहा-सुनत बयन प्रिय शिष्य बहु, ले संग संत अपार ॥
रीवांको गमनत भये, प्रभुहरि प्रेम अगार ॥ १२ ॥

म्यानामें प्रभु मध्य सोहाहीं ❀ संत अनंत लसैं चहुं पाहीं ॥
रामकृष्ण हरिसुख उच्चारत ❀ चहूं ओरसों सोर पसारत ॥
जात जहां जहँ प्रभु पुर ग्रामा ❀ होत तहां तहँ शुचिजन ग्रामा ॥
यहि विधि आय स्वामि सुख छाकी ❀ रीवां रह्यो कोस त्रय बाकी ॥
सुनि सुत युत नृप आगू लीन्ह्यो ❀ हरिसम बहु सत्कारहि कीन्ह्यो ॥
पुनि रीवाहिं लायो युत रागा ❀ बास देवायो लछिमन बागा ॥
मंदिर निरखि मुकुंदाचारी ❀ कह्यो रच्यो भल मंदिर भारी ॥
कछु वासर करिके सुख वासा ❀ पुनि मष ठान्यो कृपानिवासा ॥
दोहा-रंभ खम्भ गडवाय करि, हरिमनु द्विजनजपाय ॥
सुदिन सोधाय सचाय प्रभु, अति उत्सव सरसाय १३ ॥
विश्वनाथ नरनाथ समेतू ❀ बोलि कुँवर रघुराज सचेतू ॥
नारायण मनु किय उपदेशा ❀ हरचो सकल कलिकलुषकलेशा ॥
भई समाश्रय तासु तिया सब ❀ पूरि रह्यो पुरपर प्रमोद तब ॥
तीरथ चित्रकूट जे नाना ❀ तहां पठै करि द्रव्य महाना ॥
सविधि कियो साधुन सत्कारा ❀ ते सब जय जय किये अपारा ॥
लियो मंत्र जबते युत प्रीती ❀ तबते चलन लाग्यो यह रीती ॥
दोहा-पाठ गजेंद्रहि मोक्ष अरु, मूल रमायण ख्यात ॥
करि नारायण कवचको, पाठ उठैं परभात ॥ १४ ॥
पंडित जे नव कृष्ण निरेरे ❀ बसनहार कलकत्ता केरे ॥
तिनहिं ललाटसों कहि बोलवायो ❀ विश्वनाथ नरनाथ सोहायो ॥
सौंपि दियो निज सुत रघुराजे ❀ विद्या सुखद पढावन काजे ॥
तिनसों श्रीरघुराज सुजाना ❀ अंगरेजी पढि बहु सुख माना ॥
मुग्धबोध व्याकरण विशाला ❀ पुनि पढि लियो थोरहीं काला ॥
फेरि अयोध्यावासि महंता ❀ जग जाहिर रामानुज संता ॥
सौंप्यो तिन्हैं पढावन हेतू ❀ नृप विश्वनाथ धर्मको सेतू ॥
तिनसों वाल्मीकि रामायन ❀ श्रीरघुराज पढ्यो अति चायन ॥

दोहा-सवालाख सुश्लोक जेहिं, महाभातं विख्यात ॥
दिन श्रम ताको पढ़ि लियो, कहि सबसों हरषात १५
करि मज्जन विधियुत श्रीकंता ❁ पूजन ठानि रोज सुखवंता ॥
वाल्मीकि रामायण चातुर ❁ श्रीभागवत सुनावत सुखकर ॥
वाल्मीकि भागवत विश्लोका ❁ प्रति अध्याय जिते सुश्लोका ॥
जेहिं आगे श्लोक जो होई ❁ पूंछे सुधाहि बतावत सोई ॥
महाभारतमें जे इतिहासा ❁ ते पुस्तक बिन करत प्रकासा ॥
अस सब भांति अलौकिक करणी ❁ श्रीरघुराज केरि कवि बरणी ॥
याते जो कविता रचन नवीनी ❁ बालहिते विरंचि तेहिं दीनी ॥
संस्कृत और भाषहू केरी ❁ कविता बहुविधि रची घनेरी ॥
दोहा-विनयमालको प्रथम रचि, रुक्मिणिपरिनय फेरि ॥
पितुहि सुनायो ते भये, अति प्रसन्न सुख टेरि ॥ १६ ॥
चित्रकूट गमनत भये, एक समय रघुराज ॥
रच्यो तहां सुंदर शतक, हनुमतचरित दराज ॥ १७ ॥
जो कोउ बांचत पत्रिका, देखि पिठौता तासु ॥
बांचि आसु सबसों कहत, सुनि सब लहत हुलासु १८ ॥
लिखन शक्ति लखनाथकी, विदित लिखारी जोउ ॥
दीखन नृप अस चलन कहि, सिखन चहत है सोउ १९
कहूं चढैती तुरंगकी, दरशावत सबकाहिं ॥
कहूं मतंग सवारह्वै, सुरपति सरिस सोहाहिं ॥ १२० ॥
कहूं दुनाली धनुष लै, गोली तीर चलाय ॥
हनै निसाना रोपिकै, तुरतहि देहिंगिराय ॥ २१ ॥
कहूं तेगको घालिकै, करहिं टूक चौरंग ॥
सुनि लखि पितु बिसुनाथ नृप, होत मनहिं मन दंग २२
कहुँ बन जाय अहेरको, मारिशेर बनजीव ॥
देखरावहिं निज तातको, होहिं ते खुशी अतीव ॥ २३ ॥

बहु मनराजनको हन्यो, बनहिं सिंह रघुराज ॥
ते दराज विस्तर भयहि, वरण्यो नहीं समाज ॥ २४ ॥

कवित्त—एक समय राना श्रीजमानसिंह हिंद भान गया कारिवेको कीन्ह्यो देश या पयान है ॥ जाय विश्वनाथ चित्रकूट मुलाकात करि रींवहि लेवायलाये करि सन्मान है ॥ भाई लछिमनसिंह कन्या तिन्हैं व्याहि दीन्ह्यो चीन्ह्यो विश्वनाथै भलो भक्त भगवान है ॥ तासु सुत रघुराज तिलक चढाय आसु जातभे हुलास भरि उदैपुर थानहै ॥ १ ॥

दोहा—कछु दिन माहि जमानसिंह, गे वैकुंठ सिधारि ॥
रानाभो सरदारसिंह, तेउगे स्वर्ग पधारि ॥ २५ ॥
भूपति भयो स्वरूपसिंह, तेग त्याग समरथ्य ॥
राज काजमें निपुण अति, चल्यो सुनीति सुपथ्य २६
निज भगिनिनिके व्याह हित, करि सँदेह मनमाह ॥
श्रीरघुराज सलाह करि, चलि ढिग पितु नरनाह २७॥
महापात्र अजवेशको, खतलिखाय यहि भांति ॥
पठयो वेगि उदयपुरै, नृप सुत अति मुदमाति ॥२८॥
आपसथान सुजान सुठि, को करिसकै बखान ॥
जहँ कीजै अनुमान तहँ, हमहिं प्रमाण न आन २९
विश्वनाथ नरनाथ अरु, युवराजहु रघुराज ॥
बरनिदेश अजवेश लहि, सुकविनको शिरताज १३०

सवैया—चैन भरो चल्यो ऐनते वेगि गयो अजवेश उदैपुरमाहीं ॥
राना स्वरूप अनूप जो भूप सुन्यो श्रुति आयो इते तोंहि काहीं ॥
सादर बोलि सुप्रेमते क्षेमको पूंछि कह्यो ढिग बैठो इहांहीं ॥
दैठि स्वनाथको पत्रसो हाथ दियो लिय माथते धारि तहांहीं ॥ १ ॥

दोहा—श्रीस्वरूप राना सुघर, सुनि हवाल खत केर ॥
कह्यो सुकवि अजवेशसों, लहि प्रमोद उर ढेर ॥ ३१

लिख्यो जो सुता व्याहके हेतू ❀ सो हम अवशि बाँधि हैं नेतू ॥
पै राना जमानसिंह रूपे ❀ गया करन गे जब सुख पूरे ॥
तब रीवाँ गवने सउछाहा ❀ तिनको तहां होत भो व्याहा ॥
राजकुँवर रघुराज सुहायो ❀ ताको तहँते तिलक चढ़ायो ॥
बीतिगये बहु दिवस सुजाना ❀ इतको ते नहिं कियो पयाना ॥
सो अब ऐसी करहु उपाई ❀ जाते इहो वहो सधिजाई ॥
महापात्र आपहु लिखि पाती ❀ पठवहु द्रुत आवहिं जेहिं भांती ॥
हमहु लिखावत हैं खत आसू ❀ आवहिं राजकुँवर सहुलासू ॥

दोहा—काज होय रघुराज इत, हमरहु कारज होय ॥
जहँ को संमत देहिंगे, तहँको करवै सोय ॥ ३२ ॥

महापात्र सुनि भल कहि दीन्ह्यो ❀ नाथ विचार भलो यह कीन्ह्यो ॥
अस कहि वेगि सुकवि अजवेशा ❀ पत्र लिखतभो इतको वेशा ॥
रानहु इतको खत लिखवायो ❀ बोलि पठायोओ इत आयो ॥
खत सुनि विश्वनाथ नरनाथा ❀ सुतसों कह्यो मानि सुख गाथा ॥
रानाको यह खत सुनिलेहू ❀ लिख्यो सो करहु वेगि सुत नेहू ॥
तब रघुराजहु खत सुनि सोई ❀ कहत भयो पितुसों मुद मोई ॥
यह हवाल मैं सब सुनि लीन्ह्यो ❀ मोहिं बोलावनको लिखि दीन्ह्यो ॥
सो जस प्रभु मोहिं देहिं रजाई ❀ सोइ करौं सोइ नीक जनाई ॥

दोहा—विश्वनाथ नरनाथ तब, कह्यो भरे उत्साह ॥
जाहु उदयपुर व्याह हित, मेरो इहै सलाह ॥ ३३ ॥
बोलि ज्योतिषिन तुरत पुनि, गमनन सुदिन बनाय ॥
कह्यो सुवनसों यह भली, साइत दियो बताय ॥ ३४ ॥

सुनि रघुराज कह्यो हर्षाई ❀ दीजै सब तदबीर कराई ॥
कौन देवान जान सँग योगू ❀ ताकहँ दीजै नाथ नियोगू ॥
कौन कौन सरदार सुजाना ❀ मेरे सँगमें करहिं पयाना ॥
नाथ कृपा करि सादर सोई ❀ देहिं बताय सिद्धि सब होई ॥
भाष्यो महाराज सुख पाई ❀ सभा सदनको सपदि सुनाई ॥

वीर धीर अरु होय उदारा ❀ राज काजमें चतुर अपारा ॥
धर्मवान पूजक भगवाना ❀ द्विज साधुनमें प्रीति महाना ॥
स्वामिहि मानै प्राण समाना ❀ ये लक्षण हैं विदित देवाना ॥

दोहा-ते लक्षणयुत सांच अब, दीनबंधु तुव पास ॥
लेहुसाथ तिनको अवशि, तिनते सकल सुपास ॥३५॥
हैं सरदार सुजान सब, सावधान तुव सेव ॥
तिनको सबको लेहु सँग, जे जानत रणभेव ॥ ३६ ॥

सुनि रघुराज जनकके बैना ❀ दीनबंधु कहँ बोलि सचैना ॥
पुनि सरदारन निकट बोलाई ❀ चतुरंगिणी चमू सजवाई ॥
सैनप दीनबंधुको करिकै ❀ ब्याह पोशाक किये सुखभरिकै ॥
बाजि रहे चहुँ ओर नगारा ❀ बंदीजन वर विरद उचारा ॥
लहि रघुराज प्रमोद अपारा ❀ भयो उतंग मतंग सवारा ॥
औरहु सखा वृद्ध सरदारा ❀ चढि चढि हय गय रथन सँझारा ॥
हरि गुरु गणपति हनुमतकाहीं ❀ सुमिरिसुमिरि सब निज मनमाहीं ॥
गहि गहि अस्त्र शस्त्र निजहाथा ❀ गमनत भये सबै यक साथा ॥

दोहा-जे मगमें भूपति परे, तिनसों लहि सत्कार ॥
निकट उदैपुर जब गये, राना सुन्यो उदार ॥ ३७ ॥

कवित्त-करिकै पेलवाई महाराना श्रीस्वरूपसिंह उदैपुर आनि छुदै उरकै दराजको ॥ सकल सुपास जहां दीन्ह्यो जनवास तहां कीन्ह्यो सन्मान दे हुलास त्यों समाजको ॥ लखि लखि नारी नयन नृपति किशोर सारी मैनवश भई छोंडी ऐन काज लाजको ॥ कहैं ठाम ठाम केधौं काम सुखधाम धाम काम त्यागि जोहैं जन ग्राम रघुराजको ॥ १ ॥ लगन विचारि कह्यो जादिन गणक गण तादिन पधारयो रघुराज द्वारमाह है ॥ देखिकै वरात शोभा पुरजनबातलोभा रानहूको भा अथाह भारी उत्साह है ॥ ब्याय भयो छोनीमें उछाह छायो जहां तहां याचक उमाह भरो यांचिभो अचाह है ॥ राह राह कहत न ऐसो नरनाह कहूं सुन्यो सांच शाहनको करन पनाहहै ॥ २ ॥

दोहा—रहस बहस सुत होत भो, पुनि उदार जेवनार ॥
सरदारन सुत फेरि भो, दरबारहुँ दरबार ॥ ३८ ॥

कवित्त—जेते ऐंडदार राजा राजत पछाह माहिं शाहनसों अकस दे कीनी है बजायके ॥ कसल विनाही लिखे हिम्मति न रही काहू महाराना सुता जो विवाहै सुख छायकै ॥ महाराज विश्वनाथ सुत रघुराजसिंह अचरज कीनी करतूति तेज छायकै ॥ सुनि सुनि ते बैन नरराय पछितायमहा हाथ मीजिरहे शरमाय शीश नाइकै ॥

दोहा—शिव एकलिंग प्रसिद्ध तहँ, तिनके दर्शन हेत ॥
जातभयो रघुराज पुनि, मन्त्री सैन्य समेत ॥ ३९ ॥
हय गय अरु मुद्रा सहस, सादर तिनहिं चढाय ॥
दर्शन लीन्ह्यो सरस उर, सरसहरस सरसाय ॥ १४० ॥
महाराज विश्वनाथ सुत, श्रीरघुराज उदार ॥
फेरि नाथजी दरशहित, गये साथ सरदार ॥ ४१ ॥
साजि बाजि गज बसन बर, मोहर शत सुख साथ ॥
साथनाथ अर्पण कियो, पद पाथज श्रीनाथ ॥ ४२ ॥

घनाक्षरी—सन्मुख बैठि छवि निरखन लागे सब अंग अंग केरी उर हरष बढायके ॥ ताही समै नाथजीको हाथ लै पुजारी ऐसा लख्यो दरशावै मोद गाथ हिये पाइकै ॥ शीश नाय हरि तब बदन लखन लागे ललि रघुराजसिंह अचरज छायकै ॥ रणदवनसिंहसों कह्यो या तू देखी कला भाष्यो तिन होंहू लख्यो नैन टक लायकै ॥ १ ॥

दोहा—कृपानाथजी आपकै, ऊपर करी महान ॥
सुनत पुजारीहुं कह्यो, यहाँ प्रगट भगवान ॥ ४३ ॥
राम सागरादिक अहै, विश्वनाथ कृत जौन ॥
बखतावर गायक लगे, गावन तिन छिन तौन ॥ ४४ ॥
गावत सन्मुख निरखिकै, तहाँ पुजारी कोइ ॥
आयकह्यो अस बैठिबो, रानहुको नहिं होय ॥ ४५ ॥

कवित्त–दीन्ह्यो सो उठाय बखतावर विचारि यह हरि सर्वत्र अहैं ओर ठौर जाइके ॥ प्रेम पूर पागे लागे गावै राग सागरको प्रभुको रिझाय लियो सुरनको छायकै ॥ उघरे कपाट सबै आपहीसों ताही समै टेरिकै पुजारी कह्यो बाहेराहि आइकै ॥ नाथको निदेश अहै लेहु वह गायकको इतही बोलाय बैठि गावै हरषाइकै ॥ १ ॥

दोहा–कह पुजारी तुम्हरे उपर, रीझे हैं ब्रजराज ॥
सुनि बखतावर कह्यो सति, यह प्रभाव रघुराज॥४६॥

सहितचमू चतुरंगिनि भाई ❋ पुनि रघुराज शिविर निजआई ॥
कछु वासर किय सुख युतवासा ❋ राना मान्यो परम हुलासा ॥
सीख देन अवसर जब आयो ❋ तब राना निज निकट बोलायो ॥
श्रीरघुराज समाज समेतू ❋ गमनत भयो तहां मतिसेतू ॥
लै आगू राना चलि धामै ❋ बैठायो गद्दी अभिरामै ॥
कीन्ह्यो सकल भांति सत्कारा ❋ दीन्ह्यो हय गय वसन अपारा ॥
भूषण बहु पुनि दिये अमोले ❋ ज्योतिवान मणि मोतिननोले ॥
विश्वनाथ नरनाथ कुमारा ❋ रानासों पुनि वचन उचारा ॥

दोहा–आप सुजान सयान हैं, मेरे पिता समान ॥
दीजे संमत तासु प्रभु, जो मैं करौं बखान ॥ ४७ ॥

स०–द्वैभगिनी मम ब्याहन योग्य जहां नित ब्याहन योग्य उचारी ॥
होय विवाह तहां तिनको ध्रुव जानत आप सबै बडवारी ॥
राना स्वरूप सराहि कह्यो सुति है हमहूंको सँभार या भारी ॥
सो सम्बंध कियो इम ठीक हियो महँ जयपुर नाह विचारी ॥ १॥

घनाक्षरी–नाम जाहि रामसिंह रूप अभिराम जाको तिलक चढायो जोधपुर नाह सुता ब्याह ॥ पठवै वकील हमो ढील नाहिं ह्वैहै काज आपहूको रीवां जात जयपुर परैगो राह ॥ महाराज विश्वनाथसिंहको कुमार रघुराजासिंह बोल्यो सुनि भलो या कियो सलाह ॥ सहित उछाय कृपा कारिकै अथाह अब दीजै सीख काह यही है उमाह मनमाह ॥ १ ॥

दोहा-सुनि राना सुख पायकै, सुन्दर दिवस शोधाय ॥
सीख दियो रघुराजको, दै बहु धन समुदाय ॥ ४८ ॥
भूप स्वरूप अनूप सुनि, निज भगिनी हर्षाय ॥
विदा कियो धन अमित दै, शिबिका रुचिर चढाय ४९
संग रहे सरदार जे, औ जे बन्धु अपार ॥
यथा उचित सब फौजको, कीन्ह्यो अति सत्कार ५०

महाराज विश्वनाथ किशोरा ❁ अति प्रसन्न युत चमू अथोरा ॥
विजय मुहूरतमें सुख छाई ❁ हरि गुरु गणपति पद शिरनाई ॥
सैन्य सहित द्रुत कियो पयाना ❁ बाजे बहु गहगहे निसाना ॥
चलत चलत जैपुर नियरान्यो ❁ महाराज जयपुरको जान्यो ॥
कोस भरेते लै अगुवाई ❁ डेरा दिय देवाय पुर लाई ॥
सैन्य समेत शिबिर पुनि आये ❁ रामसिंह भूपति सुखछाये ॥
श्रीरघुराज उदार अपारा ❁ विविध भांति कीन्ह्यो सत्कारा ॥
सो लहि जयपुरको नरनाहा ❁ लह्यो ससैन्य परम उत्साहा ॥

दोहा-फौज साजि पुनि मौज भरि, युत समाज रघुराज
जयपुरके महाराजपै, गमन्यो प्रभा दराज ॥ ५१ ॥

निरखि निरखि जयपुर नर नारी ❁ पावत भे उर आनँद भारी ॥
कछु दूरिते जयपुर राजा ❁ आगू लै आवत रघुराजा ॥
महल जाय गद्दी बैठायो ❁ आपहुँ बैठि परमसुख पायो ॥
विविध भांति सत्कारहि कीन्यो ❁ पाय सो येऊ अतिसुख भीन्यो ॥
सैन्यसहित पुनि शिबिर सिधाई ❁ बात होन सम्बन्ध चलाई ॥
ठहरिगयो सो विनहिं प्रयासा ❁ गुन्यो कृपा यह रमानिवासा ॥
रसम व्याह पूरब जो होई ❁ सो है करि सादर मुदमोई ॥
वृन्दावन तीरथ करिबेको ❁ बढी लालसा वसु दीबेको ॥

दोहा-सादर सब सरदारसों, अरु देवानहु पाहिं ॥
कहहिं सफल होतो जनम, लखि वृन्दावन काहिं ॥ ५२ ॥

सुदिन शोधाय ज्योतिषिन तेरे ❀ श्रीरघुराज मोद लहि हेरे ॥
श्रीहरि गुरुपदपंकज सोरी ❀ सैन्यसहित वृन्दावन ओरी ॥
कीन्ह्यो होत प्रभात पयाना ❀ बजे फौजमें अमित निसाना ॥
बीच बीच बीथिन करि वासा ❀ पहुँचत भये बेजे व्रज पासा ॥
सादर करिकै दण्ड प्रणामा ❀ जातभये तुलसीवन ठामा ॥
वृन्दावन मधुपुर दर्शाना ❀ नंदगांव जो विदित जहाना ॥
मुख्य चारि तीरथ ये करिकै ❀ दर्शन करि साधुन मुद भरिकै ॥
पुनि चौरासी कोसहु केरी ❀ किय प्रदक्षिणा लहि मुद ढेरी ॥

दोहा–हरिमंदिर जेते रहे, दर्शन किय पद जाय ॥
हय गय वसन अमोल अरु, मोहर अमित चढाय ९३
राधा राधारमणकी, मूरति पुनि पधराय ॥
रागभोग हित गांव यक, दीन्ह्यो तहां चढाय ॥ ९४ ॥

पुनि विश्रांतघाटमें जाई ❀ सुवरण तुला चढ्यो सुख छाई ॥
सो सुवरण व्रजमंडल वासी ❀ जेते रहे विप्र सुखरासी ॥
तिनको दै कीन्ह्यो अति तोषू ❀ ते माने सब भांति समोषू ॥
तिमि याचक जे रहे घनेरे ❀ तिन्हें हेम बहु दिये निबेरे ॥
नारी रोंकि रोंकि मगमाहीं ❀ कहि कहि लला लेहिं गहि बाहीं ॥
तिनको मनवांछित्त धन दीन्हे ❀ शीश नाय बहु मानहिं कीन्हे ॥
देशै देशके याचक आये ❀ भये प्रसन्न हेम बहु पाये ॥
व्रजमंडलमें नर औ नारी ❀ सब थल ऐसो परचो निहारी ॥

दोहा–लहि लहि अमित हिरण्यको, भाषहिं ते कहि धन्य
यह नवीन पर्जन्य नृप, बरस्यो व्रजहि हिरन्य ॥९५॥

कवित्त–दीन्हेहैं द्विजान पंडितान हेम महादान रघुराजसिंह वृन्दा कानन मँझारी है। सुयश महान शीत भानुसों प्रकाशमान सुकवि प्रधानमें बखान जासु भारी है॥ मानिन अमानद अमानिनको मानदान ज्ञानिन प्रदान ज्ञान दीन त्राणकारी है। दान

सनमानमें जहानमें न आन ऐसो भानुवंशमें निशान ज्ञान ध्यान धारी है ॥ १ ॥

दोहा—सुदिवस ब्रजते कूच करि, चलि मगमें दरकूच ॥
रीवांनगर पहूंचिगो, संयुत सैन्य समूच ॥९६ ॥

सो०—उदधि बंध यक चित्र, जामें यही चरित्र सब ॥
सो रचि चात विचित्र, लिखे देत चरचै सुकवि ॥४॥

पारसीके बैतका अर्थ तनूसरा कहे तन उसके तईं पैरहन जो कपरा सोभी उरियां कहे नंगा नहीं देखताहै ताते जो कपरे उसके अंगको नहीं देखताहै तो और कोई उसके अंगको नहीं देखताहै यह कहा कहिबेको यह काव्यार्थापत्ति अलंकार व्यंजित भयो कपरो उसके अंगको कैसे नहीं देखताहै चुजां दरतन् कहे जैसे जान जो है जीव सो बीचतनके है व तन दरकहे तनके बीच रहिहू के जान जो है जीव सो नहीं देखता है यह उपमालंकारते स्वकीया नायिका व्यंजित भई ॥

अंगरेजीके दोहा का अर्थ—दी कहे प्रसिद्ध अमनि प्रीजंट कहे सर्वव्यापी जो है गाड कहे ईश्वर ताकी अन कहे पृथ्वी अर्थ कहे ताके ऊपर आई कहे हम प्रे कहे प्रार्थना करे हैं न्यारो कहे सूक्ष्म माई कहे हमार जो है हरट कहे चित्त ताके अन कहे ऊपर डीवाइन कहे दिव्य मर्थ कहे आनंद टूं कहे ल्यावनेको अर्थात् जामें दिव्य आनंद जो है ब्रह्मानंद सो मेरे चित्तमें होय याके लिये मैं प्रार्थना करोहौं इहां सर्वव्यापि ईश्वरको कह्यो ताते ईश्वरहीके भरोसे सर्वदा रहोहौं यह मेरे मनकी जानतई होयँगे यह व्यंजित कियो ॥

कछु दिनमें आवत भयो, जयपुरको नरनाह ॥
शाहन करन पनाहमे, भूपति जोहिं कुलमाह ॥ ९७ ॥
भगिनी उभय रह जानकी, कृष्ण कुँवरि जिन नाम॥
ब्याहि बिदा कीन्ह्यो तिन्है, दै बहु धनअभिराम॥९८॥
पुनि बीते कछु कालश्री, विश्वनाथ नरपाल ॥
है वश काल निवास किय, पास अवधपति लाल ९९॥

श्रीरघुराज तनय तेहिं केरो ❋ हरिइच्छा गुणि बिन अवसेरो ॥
मानि राज्य सब यदुपति केरी ❋ कामदारसों कह्यो निवेरी ॥
राजाराम राज्यके एकू ❋ तिनकी कृपा न भय मोहिं नेकू ॥
स्वामि धर्मरत जन हितकारी ❋ करिहैं कबहुँ न काम बिगारी ॥
सुदिन अबै न राज अभिषेकू ❋ कह्यो ज्योतिषी सहित विवेकू ॥
ताते भो मन भावत येहू ❋ करो यज्ञ संवत् करिदेहू ॥
सुनि दिवान कह बहुत सराही ❋ प्रभु भल कह्यो ऐसहीं चाही ॥
तब रघुराज परम सुख पाईं ❋ आशु बनारस मनुज पठाईं ॥

दोहा—विप्र वेद वित छिप्र बहु, रीवां नगर बोलाय ॥
सुदिन शोधाय सचाय गो, लछिमनबाग सिधाय ६० ॥

तहँ किय कठिन कायको नेमा ❋ पगो परम यदुपति पद प्रेमा ॥
मज्जन करि गायत्री जापा ❋ प्रथम करै नित हरै जो पापा ॥
पुनि षोडश प्रकार भरि चायन ❋ पूजन करैं रमा नारायन ॥
पुनि नारायण अष्टाक्षर मनु ❋ बीसहजार जपैं निश्चल मनु ॥
यही भांति विप्रनहुँ जपावै ❋ रहै यकांत अनत नहिं जावै ॥
पुरश्चरण सो दिन करि यहि विधि ❋ कृष्ण कृपा पात्रता लही सिधि ॥
कह्यो स्वप्नमें आय मुरारी ❋ राज्य करै है मम अधिकारी ॥
लहत मनहिं मन परमहुलासा ❋ कोहुसों कबहुँ न कियो प्रकाशा ॥

दोहा—जप अष्टाक्षर मंत्रको, बीसहजारहिं केर ॥
जौलौं रहै शरीर जग, किय संकल्प करेर ॥ ६१ ॥
रमा द्वारकाधीशकी, त्यों बलकी करि मूर्ति ॥
हेमरजत रचवायकै, परम मनोहर मूर्ति ॥ ६२ ॥
वेद विहित करवायकै, आशु प्रतिष्ठा वेश ॥
बांधवेश विश्वनाथ सुत, पूजन करत हमेश ॥ ६३ ॥
करन लगे जप जेहिं समय, तब भरि मोद अनंत ॥
भजन सुनै भजनीनसों, निमित निज बहु संत ६४ ॥

सुदिन राज्य अभिषेकको, आयो जब सुदवान ॥
सब तदबीर महान भै, वेद विधान प्रमान ॥ ६५ ॥
श्रीरघुनाथ जाय मखशाला * वसु मंत्रिनते सहित उताला ॥
रघुपति यदुपति मूरति काहीं * थिति कै हेमासिंहासन माहीं ॥
महाराज अभिषेक कराई * अभिषेकित भो आप सोहाई ॥
श्रीकृष्णादिके कृपापात्र कर * अधिकारी भो विदित अवनिपर ॥
कर परताप छयो परतापा * सज्जन सुखप्रद सुयश अमापा ॥
पितु सम पालत प्रजन सप्रीती * नीति रीति करि मेटि अनीती ॥
सुनि सुनि शाहहु जाहि सराह्यो * आय अजंट लाट भल चाह्यो ॥
राज्य करत बीत्यो कछु काला * दर्शन हित जगदीश कृपाला ॥
दोहा-करि लालसा विशाल लै, संग चमू चतुरंग ॥
रानिन युत जगपति पुरी, गमन्यो सहित उमंग ॥ ६६ ॥
बीच बीच बीथिन करि वासा * श्रीरघुराज राज सहुलासा ॥
शतक संस्कृत यक जगदीशा * विरच्यो मैं निज आंखिन दीसा ॥
भाषा शतक कवितमें दूजो * विरचन लग्यो सोउ मग पूज्यो ॥
पर्यो अमरकंटक मग माहीं * गमनत भयो नाथ तहँ काहीं ॥
मेकल गिरते कढि तहँ प्रगटी * शिवप्रिय रेवा सरि अघनिघटी ॥
तहँ मज्जन करि दे बहु दाना * रेवा अष्टक रच्यो सुजाना ॥
शिव अष्टक पुनि रच्यो तहांहीं * सिंहवलोकन छदहिं माहीं ॥
रहे जे संत विप्र तहँ वासी * तिनको देत भयो धनराशी ॥
दोहा-सहित सैन्य चतुरंगिणी, तहँते करि सु पयान ॥
सेवरी नारायण निकट, जातभयो मतिवान ॥ ६७ ॥
सेवरीनारायण करि दर्शन * किय सहस्र मुद्रा कहँ अर्पन ॥
तहँते प्रभु पयान करि आसू * पहुँच्यो साखिगोपालहि पासू ॥
मुद्रा सहस गयंद सुहायो * दर्शन लैकै तिन्हैं चढायो ॥
दै सबको तिमि द्रव्य महाना * सादर चढवायो भगवाना ॥
पंडा गाडिन लादि प्रसादा * लाय दिये लै युत अहलादा ॥

महाराज सबको बिरताई ❀ खायो स्वाद अपूर्व सुनाई ॥
श्रीरघुराज परमसुख भीनो ❀ तहँते पुनि पयान द्रुत कीनो ॥
जगन्नाथ मंदिरके ऊपर ❀ नीलचक्र दरश्यो जब अघहर ॥

सोरठा–करि दंडवत प्रणाम, कीन्ह्यो पुरी प्रवेश प्रभु ॥
डेरा किय गुरुधाम, रानिन सहित हुलास भरि ६॥

दोहा–तहँते गमनतभो तुरत, दर्शन हित जगदीश ॥
अरुण खम्भ ढिग द्वारमें, जात भयो अवनीश॥६८॥
रकबा चारयो दिशि बन्यो, मंदिर मध्य उतंग ॥
लसत दुर्गसो उदधि तट, तकत करत अघ भंग ६९
प्रथम अकेले आपही, युत भाइन सरदार ॥
सादर भीतर द्वारके, जाय नरेश उदार ॥ १७० ॥

घनाक्षरी–जगपति मंदिरके चारों ओर देवनके मंदिर सुखद तिन दरशके सुखकारी ॥ सहित समाज परदक्षिणके चारि फेरि मंदिर सिधारि शिरनाय खम्भ पन्नगारि ॥ जाय कछु निकट सुभद्रा बलभद्र युत सुछवि मुरारि बार बार नैनसों निहारि ॥ वारि मन प्रथम सँभारि तनु सुधि फेरि पलक नेवारि हेरि रहे धन वारि वारि ॥ १ ॥

स०–आजु भयो सफलो मम जन्म गुन्यो यह जन्ममें पुण्य बढायो ॥
जानि लियो कियो पूरव जन्महुँ पुण्य महान विशेषि सुहायो ॥
सत्य कहै रघुराज हौं आज अनेकन जन्मके पाप नशायो ॥
जो बलभद्र सुभद्रा सुदर्शन औ जगनाथको दर्शन पायो ॥ २ ॥
लोचन लाखुहै होत जवै तब देखनकी नहिं चाह सिराती ॥
आनँद बाढे जितो उरमें मिति तासु न मोसों कछू कहि जाती ॥
को रघुराज बखानि सकै जगदीशकी शोभा त्रिलोक बिजाती ॥
ज्यों ज्यों समीप ह्वै हेरै त्यों त्यों क्षणहीं क्षणमें सरसै दरशाती ॥ ३ ॥

घनाक्षरी–कंचनको छत्र उभय चौर विजनादिनोक भूषण वसन त्यों अमोल मोतीमालको ॥ मोहर अमित मुद्रा द्वै गयंद त्यों

तुरंग प्रभुहिं समर्पि पायो परम निहालको ॥ भूप रघुराज त्यों-हीं दैके सबहीको वसु नजर देवायो तहां देवकीके लालको ॥ पंडा औ पुरीके भये परमसुखारी पाय पाय धन भारी गाये सुयश विशालको ॥ ४ ॥

सोरठा—कहत मनहिं मन नाथ, सो मैं करौं प्रकाशअब ॥
को समान जगनाथ, है कृपालु यहि जगतमें ॥ ६ ॥
विविर जाय सुख पाय, पायो महाप्रसादपुनि ॥
तहँके तीर्थ निकाय, जाय जाय सादर कियो ॥ ७ ॥
रानिहु सब सुखपाय, त्योंहीं नजर निकाइकै ॥
जगपति दरश सोहाय, करि मान्यो सफलै जनम॥८॥

दोहा—खटका अटका अमित, चटकै दियो चढाय ॥
मटका मटका लै गये, कोऊ सटका खाय ॥ ७१॥

महाराज रघुराज उदारा * अरुणखम्भ ढिग पुनि पगु धारा॥
देश देशके जन बहु आई * जुरे पुरीके जन समुदाई ॥
पेखि अनूप भूपकी शोभा * सबहीको बरबस मन लोभा ॥
तहँ नृप नायक परम सुजाना * हेम तुला चढि वेद विधाना ॥
सुवरण वृष्टि करी मन भाई * मानो मघा मेघ झरिलाई ॥
रह्यो न पुरी कोउ द्विज बाकी * जो न सुवर्ण लहै सुख छाकी ॥
रानिहुँ त्यों सिगरी तहँ आई * रजत तुला चढि चढि सुख छाई ॥

दोहा—भये अयाचक पुरीके, रहे जे याचकवृंद ॥
पाय पाय सुवरण रजत, गाय सुयश मुदकंद ॥ ७२ ॥

घनाक्षरी—शतक बनायो जाय आपहि सुनायो सुनि जगदीश बलहु सुभद्रा मोद भीने हैं ॥ शिरते सुमनमाल तुरत खसाय रीझि अभिराम सादर इनाम करिदीन्हें हैं ॥ कहै युगलेश वेश दौरि बांधवेश तब संभृत कलेशहरी धन्य मानि लीनेहैं ॥ महाराज रघुराज भक्तिको प्रभावपुरी प्रगट देखानो जानो भक्त राज चीनेहैं ॥ १ ॥

दोहा—लखि प्रभाव तेहि ठांव यह, कहैं लोग भरिजाय ॥
भक्ति भाव रघुरावसति, कस न द्रवैं यदुराय ॥ ७३ ॥
श्रीरघुराज मोद भो जेतो ❀ यक मुखसों कहिसकत न तेतो ॥
माने सब जन अरु सरदारा ❀ पूर्व पुण्य कछु कियो अपारा ॥
जाते वश अस नृप ढिग माहीं ❀ हरि प्रभाव निरखे चख माहीं ॥
परदेशी अरु पुरी निवासी ❀ अरु जे रहे भूप सँग वासी ॥
चढ्यो रोज नृप अटका जोई ❀ ताते सबको भोजन होई ॥
एक गांव जगदीश चढायो ❀ पंडा पाय परमसुख पायो ॥
पुरी सवाउमास किय वासा ❀ सबको सब विधि देत हुलासा ॥
युत समाज हरिमंदिर जाई ❀ लिय त्रिकाल दर्शन नृपराई ॥
दोहा—अर्द्धरात्रिनित जाय नृप, त्योंहीं दर्शन लेय ॥
पाय सुमहाप्रसादको, सबको सादर देय ॥ ७४ ॥
फागुनकी पूर्णिमाको, फूलडोल गोपाल ॥
झूलत निरखि निहाल है, कोन तज्यो जगजाल ७५
छंद—शुभदिवस तहँते गौन करिकै गया तीरथको गयो ॥
करि श्राद्ध वेद विधानसों बहु दान विप्रनको दयो ॥
द्विज पाय धन समुदाय वांछित करत भये बखानहैं ॥
जस गया कीन्ह्यो बांधवेश न नरेश कीन्ह्यो आनहै ॥ १ ॥
तहँ सुन्यो नौकरहूनके गे बिगरि कारण पायके ॥
अँगरेजके सब देश लूटे हनेगो रण धायके ॥
ढिग वेगि बहु बागीन काहँ नरेश आसु मँगायके ॥
यकमें चढायो द्वारकेशहि वेश प्रीति बढायकै ॥ २ ॥
पुनि नाथ सहित समाज है असवार बहुबागीनमें ॥
चलिदियो परम निशंक परम प्रवीन परम प्रवीनमें ॥
मिरजापुरै ढिग भूप आयो आय बागी वे तबै ॥
बहु विनय कीनी आप करहिं सहाय तो सुधरै सबै ॥ ३ ॥
तब नाथ ऐसो कह्यो तिनसों हाथ यह यदुनाथ है ॥

सब भाँति मोहिं भरोस जाको जो अनाथन नाथ है ॥
सुनि गये ते सब महाराजहुँ आय रीवांपुर बसे ॥
यक रच्यो नगर गोविंदगढ तहँ जायके कबहूं लसे ॥ ४ ॥
अँगरेजके बागी तिलंगा बागि बिगरे देशको ॥
बश कियो कोहु नरेशको रहे डरत कोहुँ नरेशको ॥
मैहर बिजय राघवहुके गे बिगरि तिनके दावते ॥
मग रोंकि गोरनको हने बहु जोर जुलुम जनावते ॥ ५ ॥
तब आय बहु अँगरेज रीवां नगर कियो निवासहै ॥
महाराज श्रीरघुराज तिनको कियो परम सुपासहै ॥
डर मानि रीवां नगरको नहिं आय बागी कोउ सके ॥
मतिवंत अति श्रीवंत गुणि सब संत नृपको सुखछके ॥ ६ ॥
अंगरेज लखि बर तेज भाष्यो बांधवेश नरेशसों ॥
लै खर्च हमसों राखि लीजै और सैना वेशसों ॥
मैहर विजय राघवहुके बागी उपद्रव करत हैं ॥
चलि मारि तिन्हैं निकारि दीजै दुरग लीजै हम कहैं ॥ ७ ॥
सुनि भूप तैसहि कियो सैनप दीनबंधु दिवानके ॥
लिय घेरि मैहर प्रथम तोप लगाय आसु पयानके ॥
भगि गये तहँके यूह योगी वेगि करि तहँ थान हैं ॥
पुनि विजयराघव घेरि लीन्हो संग सैन्य महान हैं ॥ ८ ॥
तेउ भगे बांदा करत भे करी थान तहँक्क करि लियो ॥
महराज श्रीरघुराज सुख भरि सौंपि अंगरेजहि दियो ॥
यह कृपा गुणि यदुराजकी रघुराज परम उदार है ॥
निज राजधानी आय कछु दिन वस्यो सुखित अपार है ॥ ९ ॥

दोहा—रीवांते जे कढि गये, बहु सरदार सुखारि ॥
बागी भे रण रारि कर, तिन मिसि नृपहुँ विचारि ७६॥
कोपित ह्वै जरनैल बहु, लै सँग सैन्य अपार ॥
चढि आयो रीवांनगर, गोरा कइक हजार ॥ ७७ ॥

हुकुम दियो महाराजको, करि दुष्टता विचार ॥
देखन हेतु कवाइदै, आवै आजु हमार ॥ ७८ ॥
सुनत कह्यो रघुराज उदारा * देखन चलिहैं कछु न खँभारा ॥
हमरे सति सहाय यदुराई * का करिहैं अरि सैन्य महाई ॥
तब रीवांके लोग सुजाना * रह्यो जो और देवान पुराना ॥
वरज्यो विनती करि बहु भांती * उचित न जाब प्रबल आराती ॥
तहँ यक दीनबंधु जेहि नामा * रह्यो दिवान वीर मतिधामा ॥
कहत भयो सो प्रण करि भारी * चलिये आप न कछू विचारी ॥
क्षत्री है जो समर सकानो * कुलकलंक तेहि पावर जानो ॥
यह रिपु करिहै कहा हमारो * करिहै रोष जायगो मारो ॥
दोहा–दीनबंधु दीवानके, वचन सुनत नरनाथ ॥
जात भयो रणसाज साजि, लिये सैन्य बहु साथ ॥ ७९ ॥
भूप संग बहु सैन्य करेरी * सो जरनैल नयन निज हेरी ॥
भय अति मानि देखाय कवाइत * गमन्यो हारि मानिकै निजचित ॥
महाराज रघुराज सचैनै * कृपा कृष्ण गुणि आयो ऐनै ॥
सुधि करि दीनबंधुकी वानी * है प्रसन्न बहु बिधि सन्मानी ॥
दीन्ह्यो गांव अनेक इनामा * गुणि मतिवान दिवान ललामा ॥
सुखयुत वीतिगये कछु काला * लाट हूनपति जौन विशाला ॥
लै बहु सैन्य कानपुर आयो * सब राजनको खत लिखवायो ॥
आवहिं इतै भेटके हेतू * सुनि सुनि सब नृप गये सचेतू ॥
दोहा–महाराज रघुराजको, लिखत भयो खत सोइ ॥
मुलाकात मम करनको, आवै इत मुद मोइ ॥ १८० ॥
तहां चलन नृप कियो तयारी * वरजे तबहु इतै नर नारी ॥
दीनबंधु तबहूं मतिवाना * कह्यो पैज करि वचन प्रमाना ॥
चलिये भूप संदेह न कीजै * विना चलेहीं भय गुणि लीजै ॥
सत्य विचारि वचन तिनकेरे * काहूके दिशि तनक न हेरे ॥
लै कछु सैन्य चैन भरि भूरी * चल्यो कानपुर यद्यपि दूरी ॥

मगमें बहु जन किये निवारण * लाट बोलाये है कछु कारण ॥
पुनि हरि उर भरोस नृप भारी * काहू बोर न नेकु निहारी ॥
दीनबंधुके मग ज्वर भयऊ * सो न मानि कछु नृपसँग गयऊ ॥
दोहा–जाय सैन्य युत कानपुर, डेरा सुरसरि तीर ॥
करत भयो सुनि हूनपति, भयो मुदित मतिधीर॥८१॥
दगी सुकामी फेरि सलामी * बँधी पंचदश जौन सलामी ॥
पैदर अरु असवारन काहीं * दिय नृप अरुण पोशाक तहांहीं ॥
फूलसिरी अरुणै गज भासी * सूही साज बाजिगण गासी ॥
सरिस वसंत सैन्य सुठि सोही * लखि लखि भूपहु गे मन मोही ॥
लाट लखनऊ है जब आयो * मुलाकात हित नृपहि बोलायो ॥
मुख्य अमात्य जौन अभिरामा * दीनबंधु है जाको नामा ॥
श्रीरघुराज ताहि लै संगै * गये सैन्य युत भेट उमंगै ॥
एक साहेब लैके अगवाई * सादर भूपहि गयो लेवाई ॥
दोहा–शिबिर हूँनपतिके निकट, पहुँचे जब रघुराज ॥
पाय लाट साहेब खबरि, आगू लै महराज ॥ ८२ ॥
करि सलाम दोउ परस्पर, पूंछतभे कुशलात ॥
कहे कुशल सब भांति दोउ, बार बार हरषात ॥ ८३ ॥
वाम हाथ गहि दहिने हाथै * गयो लेवाय लाट सुख साथै ॥
तख्त उपर द्वै कंचन कुरसी * धरवायो जु हूँनपति हुलसी ॥
तामें अपने दहिने ओरै * नृप बैठाय बैठ सुख बोरै ॥
नीचे तख्त सैकरन कुरसी * धरवावत भो साहेब बिलसी ॥
तिनमें काशी चरकहरीके * रहे जे और भूप अवनीके ॥
औरहु जमींदार सरदारन * बोलि पठायो आये तेहिं छन ॥
तिनको तुरत तहां बोलवाई * दै ताजीम सबै सुखदाई ॥
क्रम क्रमते दीन्हो बैठाई * बैठे ते सब शीश नवाई ॥
दोहा–मंत्री मुख सरदार जेहिं, दियो अजंट लिखाय ॥
नृप सँग चालि तेहिं क्रमहिते, कुरसी बैठे जाय॥८४॥

निकट हूँनपतिके जबै, भई सभा यहि भांति ॥
अति प्रसन्न रघुराज पै, भयो लाट मुदमाति ॥ ८५ ॥
तेहि पितु किस्ती जे लगि आईं * तिनते अधिक तीनि लगवाईं ॥
भूषण वसन विचित्र अमोले * तिनमें धरि धरि दियो अतोले ॥
पूर्व सलामी पंद्रह जोई * लाट हुकुम दिय दशवसु होई ॥
साजु नवीन भांति बहु साजी * दीन्ह्यो यक गयंद वियवाजी ॥
परगन दिय सोहागपुर नामा * होत लाख मुद्रा जेहिं ठामा ॥
जानि भूपको मुख्य सचिव चित * कियो पराक्रम गुनि हमरे हित ॥
दीनबंधु पै ह्वै प्रसन्न अति * खिलत तोपयुत दियो हूँनपति ॥
पद दीवान बहादुर केरो * दियो लाट करि मान घनेरो ॥
दोहा-पुनि नृप सँग सरदार जे, गये तासु दरबार ॥
यथा उचित तिन सबनको, दीन्ह्यो खिलत अपार ८६
क्रमते पुनि सब नृपनको, दीन्ह्यो खिलत सराहि ॥
ते शिर धारि धारि लेत भे, ह्वै मन परम उछाहि ॥ ८७ ॥
पुनि रघुराज भूप मतिवाना * मुदित लाटसों वचन बखाना ॥
हम अस जहँ जहँ सुन्यो हवाला * लेन हेतु सबको करवाला ॥
आवत साठसो हम पहिलेहीं * सोहीं देहिं आप लैलेहीं ॥
सुनि सोहीं लै लाट उछाही * देखि भली विधि कह्यो सराही ॥
यह सोहीं केहि देशहि केरी * कह नृप अहै फिरंग करेरी ॥
सुनत हूँनपति मन मुसक्याई * सोहीं दै वाणी यह गाई ॥
तुव हाथियारहि केवल तेरे * सदा रहैं हम बिन अवसेरे ॥
पुनि भूपति रघुराज उदारा * करि सलाम डेरै पगु धारा ॥
दोहा-सब भूपहु पुनि नाय शिर, गमने शिबिर मझार॥
इतै हूँनपति सैन्य युत, ह्वै करि सपदि तयार ॥ ८८ ॥
महाराज रघुराजके, आये शिबिर सिधारि ॥
होत भयो जेहिं विधि सदा, तेहिते अधिक विचारि८९

करत भये सत्कार नृप, भो खुश लाट अपार ॥
वरण्यो इस संक्षेपते, भीति ग्रंथ विस्तार ॥ १९० ॥
महाराज रघुराज पुनि, कूच तहांते कीन ॥
सैन्य सहित रीवां नगर, आय सबै सुख दीन ॥९१॥
बाढ अठारहको दियो, लाट विशेष निदेश ॥
दगै सलामि हमेश सो, आवत जात नरेश ॥ ९२ ॥
कछु दिनमें अरजंट पुनि, चलि सोहागपुर काहिं ॥
भूपहि अमल कराय दिय, सुयश छाय जगमाहिं९३

सवैया-एक समय पगमें व्रण भो न अधीर भयो भई पीर महाई॥ जाप करै मनु बीस हजार करै तिमि राजको काज सदाई ॥ हारि गये सब देश विदेशके वैद्य हकीम मिटो न मिटाई ॥ दूरि व्यथा भै जबै रघुराज दियो शतकै रचि शम्भु सुनाई ॥ १ ॥

दोहा-औषध किय प्रहलाद द्विज, तासु अयोध्या सून॥
पायो मुद्रा शतसहस, गांव उभय नहिं ऊन ॥ ९४ ॥
ज्वर विकारते यक समय, नृप किय विपुल उपास ॥
तज्यो न तबहूं जप करब, पूजन रमानिवास ॥ ९५॥

बालहिते कविता मन लायो ❀ चित्रकूट अष्टकहि बनायो ॥
ग्रंथ रच्यो रघुनंद विलासा ❀ हनुमत शतक कियो सहुलासा ॥
लीन्ह्यो मंत्र केर उपदेशू ❀ तब जे ग्रंथ रच्योहै वेशू ॥
तिनको अब मैं देत सुनाई ❀ विनयमाल दिय प्रथम बनाई ॥
रुक्मिणिपरिणय विरच्यो ग्रंथा ❀ जामें विदित काव्यकी पंथा ॥
व्यासदेव जो रच्यो पुराना ❀ श्रीभागवत प्रसिद्ध जहाना ॥
भाषा विरच्यो नृप उदारा ❀ अहै बयालिस जौन हजारा ॥
पुनि जगदीश शतक किय भाषा ❀ जामें कवित्त विचित्र सुराषा ॥

दोहा-रच्यो संस्कृत ग्रंथ विय, एक शतक जगदीश ॥
कियो सुधर्म विलास यक, श्रीरघुराज महीश ॥९६॥

तिलक बनायो तासु बुध, रंगाचारी वेश ॥
भजन कवित औरहु अमित,सादर रच्यो नरेश ९७

सो०—कानन जात शिकार, खेलत मारत शेरको ॥
और जे जीव अपार,तिनहिं बचावत करि दया ॥९॥

कवित्त घनाक्षरी—फेरत न आनन जो ऐसे उच्च वारनपै है कारि सवार जाय नेर बेर बेरहै ॥ ढेर सरदार पै न सकत उठाय कोऊ ऐसो लै रफलछ घालि करै दाघ जेरहैं ॥ कहै युगलेश गेर गेर कहूं टेर टेर ह्वांई ठहराय जहां हौंकत करेरहै ॥ हेर हेर मारै लगे देर नाहिं दौरि-सेर भूप रघुराजसिंह शेरनपै शेरहै ॥ १ ॥

सो०—चलि पहाड महराज, बागि बागि जेहिं बारिमें ॥
हने जिते मृगराज, ते गोकुल बुध पहँ लिखे ॥ १०॥

दोहा—महाराज रघुराजको, औरहु चारु चरित्र ॥
युगलदास वर्णन करत, जेहि यश छयो विचित्र ९८
शाह विलायतको दियो, सुका यक पठवाय ॥
लाट वजीर हमारसो, तकमा दैहै आय ॥ ९९ ॥
सांधौगढ मे यक समय, तहँते आगू लाय ॥
सुनि हवाल भे अति खुशी, सभा मध्य बँचवाय१००
खत लिखि पठयो लाट पुनि, जहां आप मन होय ॥
चलि लीजे तकमा तहां, बडी बडाई जोय ॥ १ ॥
नृप लिखि पठयो काशिका, सोउ लिख्यो है वेश ॥
बांधवेश वर सैन्य युत, गो महेशपुर देश ॥ २ ॥
मुलाकात दरबार जस, भयो कानपुर माहिं ॥
तस भो काशी लाट दिये, कहौं सो तकमा काहिं॥३॥

छन्द—भूपग सितारेहिंदको दीन्ह्यो कितावी एक है ॥
बहादुरी भूषण दियो यक जटित रतन अनेक है ॥

अति है प्रसन्न सुशाहजादी दियो रत्ननहार है ॥
सो दियो नृप रघुराजको वरहूंनपति करि प्यार है ॥ १ ॥
किय कूच फेरि परेटते रघुराज भूप उदार है ॥
जन यूह भये प्रसन्न अति लखि सैन्य तासु अपार है ॥
चलि असी सुरसरी संगमें तट वास करि सुखछायके ॥
मणिकर्णिका अरु गंगमें सउमंग जाय नहायके ॥ २ ॥
यक गांउ औ गो सहस भूषण वसन मोल अमोल है ॥
उपरोहितै दिय दान करि सन्मान प्रीति अतोल है ॥
पुनि दरश किय विश्वेशको दिय गांव एक चढाइहै ॥
अरु सहस मुद्रा वसन भूषण अर्पणै किय चाइहै ॥ ३ ॥
अन्नपूरणा अरु बिंदुमाधव जाय निकट गोपाल है ॥
पद पंचशत शत आर्पि मुद्रा लियो दरश विशाल है ॥
पुनि कालभैरव ढुंढिपाणिहिं और सिगरे देवको ॥
शत शत सुमुद्रा आर्पिके दरशन लियो करि सेवको ॥ ४ ॥
पुनि पंचगंगा आदि जेते घाट रहे महान है ॥
करिमज्जनै तिनमें कियो जो दान करो बखानहै ॥
गज तुरंग गोशत वसन भूषण अन्नकी बहु राशि है ॥
लहि विप्र काशि निवासि सब दिय आशिशै सहुलासि है ॥५॥

दोहा—महाराज रघुराज पुनि, दारु तुला मँगवाय ॥
यक पलरामें देतभे, सुवरण मनन धराय ॥ ४ ॥

ढाल कृपाण पाणि निज लैकै * तिज भूषण वसनहुँ ढिग धैकै ॥
यक पलरामें सहित उछाहा * बैठ्यो बांधवेश नरनाहा ॥
सुवरण पलरा नीच लख्यो जब * दिय नरेश सुनिदेश आसुतब ॥
अपनो गरू रफलल मँगाई * निज समीपहि लियो धराई ॥
तबहुँ सो पलरा नीच लखाना * तबहुँ नृपति अस वचन बखाना ॥
द्वै थैली ये मोहरन केरी * डारहि देहु न करहु अब देरी ॥
कामदार ते सुनि सहुलासा * डारि दियो मोहर अनयासा ॥
सुवरण पलरा महि लगि गयऊ * पलरा ऊंच भूपको भयऊ ॥

तुला चढे अस लखि नृपकाहीं * किये प्रशंसा लोग तहांहीं ॥
उतरि तुलाते नृप हरषाई * दशहजार मुद्रा मँगवाई ॥
दीनबंधु दीवानहु भूपा * यक पलरा बैठाय अनूपा ॥
यक पलराते रुपयन हूरे * दियो धराय मोदसों पूरे ॥

दोहा—भयो न ऐसो नृपति कोउ, कामदारको जोइ ॥
तुला चढावै रजतमें, चढै हेममें सोइ ॥ ५ ॥
बढ्यो शोर सुनि जननको, तहां भूप शिरमोर ॥
कह्यो करै नहिं शोर कोउ, कहो वचन यह मोर६॥
पांडे नंदकिशोर कह, सो सुनि भरि मुद थोक ॥
बंद न हल्ला होत यह, छयो तीनिहूं लोक ॥ ७ ॥

राज राज पुनि श्रीरघुराजा * मानि मोद उरमाहिं दराजा ॥
निज नामहिं सुश्लोक बनाई * सो द्वै सहस आसु छपवाई ॥
प्रथम पंडितनको विरताई * भोर कमक्षा सपदि सिधाई ॥
काशिराजको तहां मकाना * अति आयत रह विहित जहाना ॥
तहँ मज्जन करि पूजन नीके * बोलि सहस द्वै विप्रन जीके ॥
द्वै द्वै मोहर दिय सबकाहीं * विविध भांति सन्मानि तहांहीं ॥
ते सब सुयश भूपको गावत * निज निज गृह गवने सुख छावत ॥
फेरि आपने शिबिर सिधारी * महाराज रघुराज सुखारी ॥
रहे जे बाकी औरहु पंडित * सकल शास्त्रमें अतिही मंडित ॥
सादर तिनको निकट बोलाई * करि सन्मान सभा बैठाई ॥
दुइ दुइ मोहर और दुशाले * देतभयो युत प्रीति विशाले ॥
त्यउ सब गावत सुयश भुआला * दै अशीश गृह गये उताला ॥

दोहा—कहत परस्पर बात यह, जात पंथ हरषाय ॥
सभा न किय अवदात असि,कोउ नृप व्रात विख्यात
रहे घाटिया विप्रजे, काशी कइक हजार ॥
सुबरण तनु तिनके किये, सुवरण वितरि अपार ॥ ९ ॥

हाट हाट हाटक विपुल, भयो बनारस सस्त ॥
रस्तन रस्तन बागते, पंडित मोहर मस्त ॥ १० ॥
रहे जे संत महंत तहँ, संन्यासी विख्यात ॥
सादर तिनको दरश लिय, दे धन बहु सहुलास ॥ ११ ॥
देहरी बीस हजार हैं, काशी विप्रन केरि ॥
नृप तिनके सत्कार हित, नीके मनहिं निबेरि ॥ १२ ॥
पांडे नंदकिशोर सिंह, ईश्वरजीत बघेल ॥
तिमि शाहिजादहु सिंहसों, कह्यो धर्मको बेल ॥ १३ ॥
हम अब रींवहिं जातहैं, रुपया बीसहजार ॥
लै देहरी सब द्विजन दै, अइयो निजहिं अगार ॥ १४ ॥
अस कहि भूपति भोरही, तहँते तुरत पधारि ॥
निज पुरको आवतभयो, करि दरकूंच सुखारि ॥ १५ ॥
उत तीनों जन काशि वसि, विप्रन सहित विवेक ॥
दीन्ह्यो गनि देहरीनको, फरक पर्‌यो नाहिं नेक ॥ १६ ॥

कवित्त–राना राठि हरहाडा बडे कछवाह राजा आय आय कीन्ही सभा दैकै धन राशी है ॥ दक्षिणके सूबा जे करोरिनके राज्यवारे आय तेऊ सभाके सुकीरति प्रकाशीहै ॥ सुवरण वृष्टि पै न कीनी कोऊ आजुतक जैसे करे वारि वृष्टि भादौं मेघ खासी है ॥ भूप विश्वनाथको अनूप तनय रघुराज जैसी जातरूप वृष्टि कीनी पुरी काशी है ॥ १ ॥ घर घर वाट वाट गंगाजूके घाट घाट हाट हाट भाटहींसों भाषैं जन राशीहै ॥ पंडित अखंडितकी कीनी सभा मंडित ना ऐसी कोऊ भूपति उदंडित विकाशीहै ॥ कहैं युगलेश रहि गयो ना कलेशलेश याचक अशेषको विदेश देश वासीहै ॥ हम तुला भासी महाराज रघुराज यशी खासा कीर्ति अतुला प्रकाशी पुरी काशी है ॥ २ ॥ भूपर घनेरे एक एकते बडेरे भूप भयेहैं अनूप पै न ऐसी कोउ कीनीहै जैसी करी· महाराज विश्वनाथ तनय यह महाराज रघुराज मोद उर

भीनीहै ॥ काशीपुरी असी गंग संगम निकट तट चढिकै हिरण्य तुला पुण्यके अक्षीनीहै ॥ कहै युगलेश देश देशके नरेशनकी जाइबो महेशपुरी राह रोंकि दीनीहै ॥ ३ ॥ केते भूमिपाल भये भारी राज्यवारे भूमि केतको दिवान बडे दानी सत्यसंधु हैं ॥ आय आय काशीपुरी लाय लाय द्रव्य भरि दैकै विप्रवृंदनको पोष्यो पंगु अंधुहै ॥ पै न ऐसो भयो जौन हेम रौप्य तुला चढि दान अतुलाकै छावै सुयश सुगंधुहै ॥ राजा रघुराज राजै कीतो या जमाने मध्य को देवान ताको श्रीदिवान दीनबंधु है ॥ ४ ॥

कुंडलिया–सुवरण वृष्टि करी उतै काशी नृप रघुराज ॥
तेहि प्रभाव तिहिं देश घन बरसे वारिदराज ॥
बरसे वारिदराज सकलमें भयो सुभिक्षै ॥
रह्यो न लेस कलेशावेश मिटिगो दुर्भिक्षै ॥
भिक्षै मांगत रहे रंक जे घर घर कुवरन ॥
तेऊ पाय अनाज भूरि ह्वैगे तनु सुवरन ॥ १ ॥

दोहा–महाराज रघुराजको, दृढ विश्वास यदुराज ॥
तेहि प्रभाव सुखसाज सज,सुकर दराजहु काज १७॥

कवित्त–जोधपुर महाराज राज्य है दराज जाहि राज काज ऐशहीमें बीतै दिनरैन है ॥ साहिबी सुरेशसी धनेश ऐसी मौज समै तेजमें दिनेश वेश विलसति झैनहै ॥ मैनकीसी मूरति मनोहर तखतसिंह बखत बुलंद निरखत करै चैनहै ॥ जाके उर ऐन युगलेशकहूं लेस भै न देखे बनै नैन बैन कहत बनैनहै ॥ १ ॥

दोहा–राना नृप कछवाह अरु, हाडा भूप विहाय ॥
जेती लसत पछाहमें, भूपनकी समुदाय ॥ १८ ॥
तिनके भेजि कटारजो, करत आपनो ब्याह ॥
ऐसो प्रथित पछाहमें, जोधपुरी नरनाह ॥ १९ ॥
पुरुषनते संबंध गुणि, तख्तसिंह नरनाह ॥
रींवा करन विवाहको, कीन्ह्यो परम उछाह ॥२०॥

रानिन सुतन समेत सुवाला * निजपुरते किय गमन उताला ॥
जेठो कुँवर तासु रह जोई * चतुरंगिनी फौज लै सोई ॥
आवत भयो आगरे जबहीं * मिल्यो नृपति जयपुरको तबहीं ॥
ताकी तासु मित्रता भारी * तासों ऐसी गिरा उचारी ॥
जेहिं कन्याको तिलक चढो तुव * सो ह्वैगई कालके वश ध्रुव ॥
जो रघुराजसुता अब अहई * सो तुव भयऊ नृप घर रहई ॥
तासों तुव नहिं उचित विवाहा * रीवां जान न करहु उछाहा ॥
हमरे संग जयपुर पगु धारो * सुनि सो कह यह भलो उचारो ॥

दोहा–ह्वै सवार बग्घी तुरत, जयपुरको नरनाह ॥
ताको संगै चढायकै, लैगो जयपुरकाह ॥ २१ ॥
महाराज रघुराजकी, जेठि सुता वश काल ॥
होत भई तब इतहिते, सुमति दिवान उताल ॥ २२ ॥

लिख्यो जोधपुरको यह पाती * जहँ अजवेश रहै विख्याती ॥
जासु तिलक जेठेको चढेऊ * सो नृपकी दुहिता जिय कढेऊ ॥
ताते यह नृपसुता जो अहई * तासु व्याह जेठेको चहई ॥
तामें पक्का इत करिलीन्ह्यो * तव तुम इतै पयानहि कीन्ह्यो ॥
यह पाती लहि कवि अजवेशा * सो पक्का इन करि लिय वेशा ॥
नृप दिवान कहँ पत्र पठायो * हम यह पक्का इत करि भायो ॥
सो आगरे सुरति बिसरायो * जेठ कुँवरको नहिं लै आयो ॥
तख्तसिंह नृप रेल चढाई * सबको तीरथपति नहवाई ॥

दोहा–सबको करिदीन्ह्यो बिदा, ते ह्वै रेल सवार ॥
रानी सुत सब सैन्यगे, निजपुरको बिनवार ॥ २३ ॥
छरे संग सरदार लै, युग रानी सुत होय ॥
तख्तसिंह आवतभये, रींवाको मुदमोय ॥ २४ ॥

नृप रघुराज मोद उर छाई * शिबिर करायो लै अगुवाई ॥
सुदिवसमें त्रय भयो विवाहा * छायो घर घर परम उछाहा ॥
जो पितृव्यकी सुता सयानी * तख्तसिंह व्याह्यो सुखमानी ॥

तख्तसिंह ल्याये सुत दोई ❋ तिनमें जेठ कुँवर रह जोई ॥
ताको सुता आपनी व्याही ❋ महाराज रघुराज उछाही ॥
तेहिते लहुरे कुँवरहिं काही ❋ सुता विमातृ भगिनि कहँ व्याही॥
दायज देन जु रह्यो करारा ❋ पंचलक्ष दिय द्रव्य उदारा ॥
हय गय भूषण वसन अमोले ❋ दियो तिन्हें रघुराज अतोले ॥

दोहा–मेवा सकल मँगायकै, अरु मिठाइ बहु भांति ॥
कयो दिन सादर दियो, ऊंच नीच सबजाति ॥ २५ ॥
चारि रोजको नेम जग, रखि मासलों बरात ॥
पूरी साज सबै जनन, पूरी सुख सरसात ॥ २६ ॥
रत्न जटित सुवरण कटक, अरु बहु मोती माल ॥
निज सरदारनको दियो, छायो सुयश विशाल ॥२७॥

कवित्त–एक समै बांधवेश महाराज रघुराज छरे सरदारन औ संग ले देवानहै ॥ रेलमें सवार कलकत्ताको पयान कीनो हरिहर क्षेत्र आदि तीरथ महान है ॥ परे मग तहांके नहान दै द्विजान दान तीजे रोज जब कलकत्ता नगिचानहै ॥ हूनपति आज्ञा पाय हून मुख्य आगू आय लै गयो लेवाय डेरा देतभो मकान है ॥ १ ॥

दोहा–डेरा आयो लाट पुनि, देखि भूपको रूप ॥
रूप न अस कोहु भूपको, भूपर गन्यो अनूप ॥ २८ ॥

मुद्रा सहस्र रसोंई काहीं ❋ शिबिर जाय पठयो सुखमाहीं ॥
दूजे दिन पुनि नृपति उदारा ❋ सादर लाट शिबिर पगुधारा ॥
सो आगू लै उच्च जो कुरसी ❋ बैठायो तामें अति हुलसी ॥
विविध भांति कीन्ह्यो सत्कारा ❋ सो कहँलों कवि करै उचारा ॥
बड कीमतिकी उभय दुनाली ❋ देत भयो शत्रुनको शाली ॥
फेरि लाट असि गिरा उचारी ❋ ईजा लही आप मग भारी ॥
यहि पुर होत कलेते कामा ❋ याते कलकत्ता है नामा ॥
है चारिक चालि ठौर विशेषी ❋ लेहिं आपहू आखिन देखी ॥

दोहा-पांच लाख मुद्रा नितहिं, बनत कलैते ख्यात ॥
तूल सूत बिनिबो वसन, होत कलैते ब्रात ॥ २९ ॥
शहर फनूस बरै बुतै, निशि कलते यक साथ ॥
इत्यादिक बहु औरऊ, निरखि नंद विश्वनाथ ३०

कह्यो लाट साहेबसों जाई ❀ यहि पुर कला अपूर्व लखाई ॥
तऊन तोपखानै पुनि भूपा ❀ गये लखे शुग तोप अनूपा ॥
रहैं अठारे पंनी केरी ❀ तिनहि सराहतभो नृप हेरी ॥
सो यक मनुज लाटसों कहेऊ ❀ लाट खुसी ह्वै हुकुमहि दयऊ ॥
महाराज ऐसी शुग तोपा ❀ तुमहिं देतहैं हम भरि चोपा ॥
अहैं प्राग सो लेव मँगाई ❀ दिये देत हम अहैं रजाई ॥
देशत फेरि तिलंगन काहीं ❀ पथरकला दीन्ह्यो सुखमाहीं ॥
पुनि कह तुव दिवान सरदारा ❀ वीर बडे अरु सुघर अपारा ॥

दोहा-बहुत रोज आये भये, अहै रुजी यह देश ॥
याते अब निज पुरीको, कीजै गमन नरेश ॥ ३१ ॥
लाट वचन तब भूप सुनि, ह्वै द्रुत रेल सवार ॥
मग नृप बहु सन्मान लहि, आयो पुरी मँझार ३२॥
दंडहु भरको हुकुम नहिं, तहँ आसि लै सब ठाम ॥
इनके जग बागें बचैं, और कसूरी नाम ॥ ३३ ॥
अरज कियो जो लाटसों, सो सब पूरण कीन ॥
कह्यो आपनी राज्यमें, करो जो चहो प्रवीन॥३४॥
चारि अश्व बग्घीनमें, चढत लाट नहिं कोय ॥
चढे जो कोऊ धोखेहू, देइ दंड ध्रुव सोइ ॥ ३५ ॥
सो पठयो महाराज पै, गुणि सो निजहिं समान ॥
चढिभूपति रघुराज तब, गुन्यो कृपा भगवान ॥३६
मान्यो यह रघुराज नृप, सब यदुराज प्रभाव ॥
और एक आगे चरित, वरणों भरि चित चाव॥३७

विजयनगर है नामजोहिं, ईजानगर विख्यात ॥
तहँको गजपतिसिंहहै, भूपति मति अवदात ३८॥
सादर सहित कुटुंब सो, बस्यो बनारस आय ॥
ताके भै यक कन्यका, रति सम सुंदर काय॥३९
तेहि ब्याहन हित सो उत्साहन * भेज्यो जन पछाह नरनाहन ॥
ते सब दूरि देश बहु मानी * अपनो जाब अगम मन जानी ॥
ताते ते न कबूलहि कीने * मुद्रा लाखनहूंके दीने ॥
तब सो ईजानगर भुवाला * मनमें कीन्ह्यो शोच विशाला ॥
पुनि कीन्ह्यो अस मनहिं विचारा * रीवांको है बडो भुवाला ॥
तेहिते जो मम सुता विवाहू * होय तो होवै महाउछाहू ॥
एक समय रघुराज उदारा * भेंट करन जयपुरहिं भुवारा ॥
मिरजापुरको कियो पयाना * तहँ नृप ईजानगर सुजाना ॥
दोहा-मुलाकात करि नजरदै, बहु विधि कीन्ह्यो सेव ॥
पुनि जब तकमा लेनको, गयो काशि नरदेव ॥४०॥
तबहूं बहुविधि सेव करि, सुता व्याहके हेत ॥
विनयकियो बहुभांति सों, सो नृप बडो सचेत ॥४१॥
नाथ कह्यो वकील करिदीजे * ज्वाब स्वाल तेहि मुख नृप कीजे ॥
सुनि प्रसन्न गजपति नृप भयऊ * सादरनिजवकील करि दयऊ ॥
भयो जवाब स्वाल युगवरषा * पारिनयको टीको कछुनरषा ॥
पूंछ्यो प्रभु तेहि नृपकी आदी * भाषतभे वकील अहलादी ॥
राना विदित उदयपुर केरे * तिन भाई करि लेहिं निवेरे ॥
सुनत उदयपुर खत लिखवायो * रानाजी लिखि तुरत पठायो ॥
ईजानगर भूप जो रहई * सो हमरो भाई सति अहई ॥
सुनि खत बांधवेश महराजा * कह वकीलसों वयन दराजा ॥
दोहा-लै आवहु इत तिलक इत, लै आये ते जाय ॥
टिके रहे बहु मासलों, तिलक न चढत जनाय ॥४२

रामराजासिंहको तिलक, चढनको कहे वकील ॥
भूप कहैं नहिं बनत उन, कहैं ज्योतिषी ढील॥४३
कतहुँ न तुव संबंध तेहिं, तुव संबंधी माहिं ॥
याते इत सब जन कहैं, व्याह योग उत नाहिं ४४॥

अति मतिवंत भूप रघुराजू * गुन्यो वृथा सब करत अकाजू ॥
पांचलाख मुद्रा यह देईं * तिलक माहिं अतिआनंद लेईं ॥
उभय लाख द्वारे महँ देहैं * उभयलाख सँग सुता पठैहैं ॥
हय गय भूषण वसनअमोला * और उपरते देइ अतोला ॥
दोषहु यामें कछु न जनाई * रानाको प्रसिद्ध है भाई ॥
यक करि ठीक मनाहिं मतिवाना * कलकत्ता जब कियो पयाना ॥
तहँ किय लाट अग्रते ठीको * रामराजसिंह परिनय नीको ॥
लाइन लेन रही जो चाहा * ताहूको करि दियो निवाहा ॥

दोहा–रीवांमें द्रुत आय प्रभु, कह पितृव्य सुत पाहिं ॥
साहेब ढिग सिद्धांत भो, तिहरो व्याह तहांहिं॥४५॥

कहत रहे जे होवे नाहीं * तेउ चुपभये न कछु बतराहीं ॥
नृप वकील ते कहि घर शाहू * पांच लाख धरवाय उछाहू ॥
रामराजसिंहको ले संगे * साजि बरात चल्यो सउमंगे ॥
काशीको जब गये निराई * डेरा दिय सो ले अगुवाई ॥
तहँईसो पुनि तिलक चढायो * हय गय भूषण वसन मँगायो ॥
मुद्रा सहस पचास मँगाई * गजपति सिंह दियो सुख छाई ॥
होत भयो पुनि सविधि विवाहा * पूरि रह्यो काशी उत्साहा ॥
तहँ जगपति नरेशकी रानी * रूप भूप रघुराज लोभानी ॥

दोहा–कहत भई निजनाहसों, सो उर भरी उछाह ॥
महाराज रघुराजको, कस नहिं कियो विवाह ॥४६
सो कह जब तुमसों कह्यो, तब तुम मान्यो नाहिं ॥
अब न सोच संबंध जेहिं, पूरब होत तहांहिं ॥४७॥

चारि राज तहँ रही बराता * कीन्ह्यो सो सत्कार अघाता ॥
पुनि सरदार जब कियो बिदाई * मुद्रा दिय द्वै लाख मँगाई ॥
हय गय भूषण वसन जमाती * बडे मोलके दिय बहु भांती ॥
पुनि सरदारन और वकीलन * मुद्रा दिय पठाय घरि पीलन ॥
नृप रघुराज फेरि सुख छाई * रुपया मोहर अमित मँगाई ॥
सादर रामराजसिंह काहीं * तुला चढाय गंग तटमाहीं ॥
सब विप्रनको दियो देवाई * जय जय ध्वनि काशी महँ छाई ॥
राम निरंजन संत महाना * बसे बनारस विदित जहाना ॥
दोहा-सकल शास्त्रमें निपुण अरु, कामादिकते हीन ॥
राम निरंजन सो न अब, कतहूं संत प्रवीन ॥ ४८ ॥
महाराज रघुराज उदारा * तिनके दरश हेतु पगु धारा ॥
भूपहि आवत जानि दुवारा * चलि सेवक अस वचन उचारा ॥
नाथ दरशहित बहु नृप आवैं * दरशि दूरिते सपदि सिधावैं ॥
सो आपहु दर्शन करि आवैं * बैठन कहैं बैठि तो जावैं ॥
सुनि बोल्यो रघुराज नरेशा * बैठब तबहिं जो होइ निदेशा ॥
अस कहि प्रभु ढिग चलि सुखधामा * वार वार किय दंडप्रणामा ॥
दै अशीश बहु बैठन कहेऊ * बैठि यामलों नृप सुख लहेऊ ॥
कह प्रभु नृप विशुनाथ समाना * रामभक्त नहिं भयो जहाना ॥
दोहा-सब विद्यनिमें निपुण तिमि, दानी विदित महान ॥
तासु तनयतैसहि तुमहुँ, सम अबहूं ना आन ॥४९॥
शम्भुशतक जगदीशहु शतके * विरच्यो तुमसुनि जेहिंबुधसुछके ॥
जस तुम भक्त अहौ नारायण * तस ईश्वरी प्रसाद नारायण ॥
जस पूरण सुख तुमते भयऊ * तैसहि उनहूं ते सुख ठयऊ ॥
नृप पछाहियनमें कछु रूरो * बूंदी नृपति ज्ञानसे पूरो ॥
तेहिंके आये भो सुख आधो * तुम सम कोउ न कृष्ण अवधारो ॥
अति प्रसन्न करि दण्ड प्रणामा * गमन्यो पुनि भूपति सुखधामा ॥
सकल देव संतन गृह जाई * यथा योग बहु द्रव्य चढाई ॥
रामनगर गो सुरसरि पारा * गो लेवाय सो नृपति उदारा ॥

दोहा-रामराजासिंहको सतिय, घर दिय पठै ससैन ॥
आप रेल चढ़ि आयकै,मिरजापुरहि सचैन९० ॥
पुनि बग्घी असवार ह्वै, सैन्य सहित सुख पाय ॥
रीवांको आवत भयो, लै संपति समुदाय ॥ ९१ ॥
बंधु कसौटाको विदित, वंशपती महराव ॥
महाराजसों यक समय,विनय वचन सुखगाव९२
नाहक हमें अशुद्ध जग, कहत अहैं सब लोग ॥
विमुख आपते जो भये, यहां बडो उर सोग९३॥

सवैया-आपहिके हम हैं करुणानिधि आप जो लीजिये सो गहि पानी ॥ तौ अहिती हमरे जे अहैं जे असत्य बतात तिन्हैं परे जानी ॥ दीजिये भात कृपाकरिकै सुधरै मम लीजिये सत्य या मानी ॥ श्रीरघुराज कह्यो हँसिकै यदुराज सुधारिहैं है सति बानी ॥ १ ॥

दोहा-भात देत सुनि नृपहिको, बरजे बहु जन वृंद ॥
महाराज कह मानिहैं, कहिहैं जस गोविंद ॥ ९४ ॥
अस कहि यक कागज लिख्यो, यह अशुद्ध है नाहिं ॥
अशुद्ध अहै यह यक लिख्यो, धरि दीन्ह्यो हरि पाहिं९५
नयन मूंदि जगदीश ढिग, पंडा तुरतहिंजाय ॥
लै आयो कागज सोई, यह अशुद्ध नहिं आय ॥ ९६ ॥
नृप जगदीश निदेश लहि, शुद्ध मानि विख्यात ॥
वंशपतीको करिलियो, भातहिमें अवदात ॥ ९७ ॥
पंडा तुलसीरामको, अग्निहोत्र करवाय ॥
कियो अग्निहोत्री विदित, रह्यो सुयश जग छाय ॥ ९८ ॥
दशहजार मुद्रा अउर, दो हजारको ग्राम ॥
दै गोविंदगढ वास दिय, दै शुभ धाम अराम ॥ ९९ ॥

छप्पय-श्रीरघुराज सुवाजपेयि किय रह यश छाई ॥

याचक सोइ सोइ वस्तु लही जोई सुख गाई ॥
विप्र जे याज्ञक रहे लहे ते द्रव्य हजारन ॥
भूषण वसन अमोल हेत असवारी वारन ॥
कवि वेश कहे युगलेश चलि देश देश नरेश मधि ॥
है बिन कलेश सुख गाय यश भये धनेश सुरेश सधि ॥ १ ॥

कुंडलिया—सब नरनाहनते अधिक, बादशाह कियमान ॥
महाराज रघुराजसों, कौन सुजान जहान ॥
कौन सुजान जहान सुकवि करि सकै बखानै ॥
जो बखश्यो वसु वसन जननकहँ दे परमानै ॥
मानै निज लखि तजे भूप कलकत्ते महँ तब ॥
युगलदास यह कृपा जानि लीजै सतिके सब ॥ १ ॥

कवित्तघनाक्षरी—वाजिन सवार राज राजिन कराय तहां निज असवारी साथ शाह सोधवायो है ॥ लाट कोठी कुरसीमें बांधवेशको बैठाय निज असवारीको जलूस दरशायो है ॥ देखि सब भूप लेखि निजते अधिक मान शरमाय शीशते विशेषिहीं नवायोहै ॥ सांच यदुराज कृपा जानै रघुराज पर जौन सब राजनते अधिक बनायो है ॥१॥

दोहा—लाख लाय मुद्रा नजर, देनचहे नरनाह ॥
तिनको लियो न मानि तृण,शाह सहित उत्साह॥६०
मुद्रा सहस पचासकी, दियो अँगूठी नाथ ॥
लै सराहि रघुराजको, पहिरिलियो निज हाथ ॥ ६१ ॥

कवित्त—महादेवजीके सम देव नर दानवमें भयो ना त्रिलोकि माहीं राम भक्ति धारीहै ॥ सीय वेष कीन्हीं सती ताहि त्यागि दीन्ह्यो जौन दक्षकी सुता जो रही प्राणनते प्यारी है ॥ अब कलिकालतो कराल या कलुषमयो तामें वैसा होय नहिं परत निहारीहै ॥ महाराज विश्वनाथ तने रघुराज वैसो भयो युगलेश कछु कहत उचारी है ॥ १ ॥ छीतूदास भगत पधारे एक समै रीवां कातिकते फागुनलों

रहे सुख छायके ॥ फगुवाके रोज रैन निकसे बजार मग राम सिय लखणको गजमें चढायके ॥ दीनबंधु धाम ढिग एक बनियाको घर रह्यो तासु सुत ले खेलौनादी चलायके ॥ चौंकि उठयो गज झूल जरी डोलि उठे द्रुत कोऊ जन जाय कह्यो नृपको सुनायके ॥२॥

दोहा–भोर होत तेहिं वणिकको, भूपति लियो लुटाय ॥
द्वै हजारको वसनतेहिं, लीन्ह्यो तुरत मँगाय ॥ ६२ ॥
आधे आधे सो दियो, मोहन दशरथ काहिं ॥
दीनबंधु सो सुनि कियो, वणिक सहाय तहांहिं ॥६३॥
वणिक पुत्र भगिजातभो, छीतूदासहि पास ॥
आय भक्त महराज ढिग, शासन दिय सहुलास॥६४॥
क्षमि आगस यहि वणिकको, दीजै लूटि देवाय ॥
कुटी सिधारब कालिह हम, सुनि बोल्यो नरराय॥६५॥
वह भगवत भागवतको, कियो महा अपराध ॥
याको देन न कहिय प्रभु, और न होई बाध ॥ ६६ ॥
याहि अपराधी वणिकको, कीन्ह्यो जौन सहाय ॥
उचित दंड सोउ पाय है, यह प्रभु देहिं सुनाय ॥ ६७ ॥

पुनि निज कुटी भक्त पगु धारे ❋ महाराज उर अति मुद धारे ॥
परममित्र मंत्री यशवारा ❋ रह्यो जौन प्राणनको प्यारा ॥
मुख्य देवान कह्यो जेहिं काहीं ❋ लाट खिलत दीन्ह्यो मुदमाहीं ॥
ताहूको गुणि वणिक सहाई ❋ कामकाजते दियो छोडाई ॥
रहे जे कामकाजि तेहि संगा ❋ तिनहुँ छोंडाय दियो सउमंगा ॥
दक्षिण देउरा नगर ललामा ❋ तहँ जेहिं थान अहै सरनामा ॥
लालशिवबकशसिंह तेहिं नामा ❋ धीर वीर अतिहीं मतिधामा ॥
तासु अनुज भगवतसिंह तैसे ❋ वचन जासु अंगद पग कैसे ॥
तेहिं शिवबकश सिंह सुत रूरो ❋ लालचरणदवनसिंह गुण पूरो ॥
केयक अनुज तासुके जानो ❋ तिनमें दिगगजसिंह सुजानो ॥

लालरणदवनसिंह पर प्रीती ❁ करि रघुराज मीत गुणि नीती ॥
सकल बघेलखंड जो राजी ❁ किय मुखतार परम ह्वै राजी ॥

दोहा–माधवगढ ढिग पार सरि, कछिया टोला गावँ ॥
नावँ जासु दिलराजसिंह, मालिकहै तेहिं ठावँ ॥६८॥
अमरसिंह कल्याणसिंह, तासु सुवन गुणग्राम ॥
महाराज परसन्न ह्वै, तिनहूंको दिय काम ॥ ६९ ॥
बांकेघोबा सिंहको, कोष काम करिदीन ॥
देशी परदेशी बहुत, काम दियो सुखभीन ॥२७०॥
तिन सबको मुखतारके, भूपति किय आधीन ॥
ते सब अबलों करतहैं, काम लोभते हीन ॥ ७१ ॥

छंद–यक काल अकाल कराल पऱ्यो ॥
बिन अन्न दुखी बहु जीव मऱ्यो ॥
महिमें कँगला सहसान जुरे ॥
सरि औसर राहन रोज फिरे ॥ १ ॥
बहु पर्गन बांधवदेश ठये ॥
बिन अन्न दुखी सब जीव भये ॥
रघुराज गरीबनेवाज महा ॥
दिय अन्न तिन्हैं सुदमें उमहा ॥ २ ॥
अंगरेजहु जौन निदेश कियो ॥
रुपया तेहिं पंचसहस्र दियो ॥
जोहिं औरहु देशनके कँगला ॥
बिन अन्न न शोक लहैं अचला ॥ ३ ॥

दोहा–झूर अन्न केतेन दियो, केतेन दै पक्वान ॥
केतनको पैसा दियो, केतेन मुद्रादान ॥ ७२ ॥

सोरठा–जौलौं रह्यो अकाल, लाखन रुपया खर्च करि ॥
किय दीनन प्रतिपाल, को कृपालु रघुराज सम ॥ ११ ॥

कौन गरीबनेवाज, महाराज रघुराज सम ॥
छायो सुयश दराज, समुद्रांतलौं अवनितल ॥ १२ ॥

सवैया—तीक्षण जासु प्रताप दिनेशको आतप तेज प्रदीप करै ॥
तापित है रिपु तासु कलेश कलेशित वासु अरण्य करै ॥
सापतहै गुणलेश सही यह मानै उरैमें विशेष नरै ॥
श्रीरघुराज नरेशके देखन शीलको पेल करै पलरै ॥ १ ॥

महाराज रघुराज सपूती * है अपूर्व जिनकी करतूती ॥
पितुते अधिके राज्य बढायो * पितुते अधिकै द्रव्य कमायो ॥
पितुते अधिक कोष किय भारी * भूपति श्रीरघुराज सुखारी ॥
एक अनूपम शहर बसायो * गोविंदगढ तेहिं नाम धरायो ॥
रीवांमें जस रहे मकाना * तिनते अधिक तहां निरमाना ॥
ताल विशाल एक बनवायो * विश्वनाथ नृप नाम सुहायो ॥
जाके तीर तीर तरमाहीं * विरचायो बहु मंदिर काहीं ॥
तिनमें रघुपति यदुपति मूरति * पधरायो परिकर युत अति रति ॥

दोहा—प्रति उत्सव जो करतहैं, साधुन सेवा वेश ॥
सीयव्याह उत्सव तहां, करत नरेश हमेश ॥ ७३ ॥
छीतूदास सुसंत यक, सादर तिनहिं बोलाय ॥
करत व्याह उत्सव सुखद, अगहनमास सोहाय ॥ ७४ ॥

संत महंतहुँ विप्र अपारा * जुरैं नारि नर कइक हजारा ॥
तिनको विविध भांति सन्मानी * वांछित अशन देत रति ठानी ॥
मांडव रुचिर रचाय उछाहा * सीय रामको करत विवाहा ॥
सबको मंडप तर बोलवाइ * सादर विदा करत हरषाई ॥
रुक्मा अमित दुशालन जोरी * कोहुको देत हाथ युग जोरी ॥
कोहूको पट और बनाता * मुद्रन सहित देत हरषाता ॥
कोहुको लोइया और रजाई * देत रुपैयन युत सुखदाई ॥
टपिया और उपरना राती * कोहुको भूपति देत हुलासी ॥

दोहा—देत रुपैया सबनको, बचै न कोउ नर नारि ॥
सुख छावत गावत सुयश, जात अयन पशु धारि ॥७६॥
भरत लषण रिपुदवन युत, सीय रामको फेरि ॥
भूषण वसन अमोल दै, विदा करत छवि हेरि ॥ ७७ ॥
छीतूदास सुसंतको, साधुन सेवा हेत ॥
द्वादशसै मुद्रा वसन, अमित मोद युत देत ॥७७॥
जनकपुरी सम सो पुरी, समय सो जनक प्रमोद ॥
जनक सरिस नृप जनकहैं, चलि चलि मग चहुँ कोद७८

सवैया—औधपुरी शुद औध किधौं, किधौं वृंदावने दिपै मंदिर भारी ॥
जानकीरामकी झांकी कहूं कहूं राधिका माधवकी मनहारी ॥
झालरी शंख बजैं चहुं ओर बसैं जहँ संत अनंत सुखारी ॥
भूप रच्यो है गोविंदगढै सो अनूपम मैं निज नैन निहारी ॥ १ ॥

दोहा—छन छन छन घन ध्यान मन, तन कन तन धन भान
धन धन धन जन ज्ञान पन, कन कन वनक नसान॥७९॥

छ	छ	छ	घ	ध्या	म	त	क	त	ध	भा
न	न	न	न	न	न	न	न	न	न	न
ध	ध	ध	ज	ज्ञा	प	क	क	व	क	सा

सो०—जेहिं गोविंद गढमाहिं, दुखहीको दुखदेखिये ॥
डर परलोक सदाहिं, जहँ सब लोगनको अहै ॥ १३ ॥

दंडनीय जहँ एक निसाना ❀ रागरागिणीभेद विधाना ॥
क्रोध जहां क्रोधहिं पर होई ❀ लोभ करै यशको सब कोई ॥
जहां अधर्मीहिंको है त्यागा ❀ निज तियसों ठानत अनुरागा ॥
जहँ गृह चित्र करैं चित चोरी ❀ बंधन जहां पशुनको जोरी ॥
वचन असत्य कहत रोजगारी ❀ सुताव्याह गावहिं तिय गारी ॥
चलत कुपंथ जहां गज माते ❀ कुटिल धनुष जहँ दृग दरशाते ॥

सुभटनके अंग जहां कठोरा ❀ कर्कश जहँ झिल्ली गण शोरा ॥
जहां निर्द्धना यती निहारी ❀ वारि नीचि गति जहां निहारी ॥
दोहा—कंपध्वजामें देखिये, बँधे धौरहर धौल ॥
शोभा सब संसारते, वसी भूप पुर नौल ॥ २८० ॥
सो०—कहुँ गोविंदगढ माहिं, कबहूं रीवां नगरमें ॥
श्रीरघुराज सोहाहिं, सब राजनके मुकुट मणि ॥ १३ ॥

कवित्त घनाक्षरी—बंदी जे न ताकत मुसद्दी कामकाजी सबै बैठे दुहूं ओर दर्दी दीननको दिलराज ॥ कद्दी दीहवारे औ असद्दी सरदार आगे बैठे अरिकरन गरद्दी रणके गराज ॥ देवनद्दी कैसी किति दिपति विसद्दी जासु युगलेश साहिबी बिहद्दी मनो देवराज ॥ रद्दी कर दुर्जन अनंदी कर सज्जनको राजै राजगद्दी पर महाराज रघुराज ॥ १ ॥ देन समै जोई जोई याचि राख्यो याचकहै सोई सोई देत सांच लगत न वार है ॥ भूषणअमोल गांव वसन अमोल थाना बाजि गज नोल मुद्रा कैयक हजार है ॥ कहै युगलेश ऐसी रीति है हमेश केरी देवत न देश कोष नेकुकै विचार है ॥ राजनके राज महाराज रघुराज ऐसो आजु तौन दूजो राजा राजत उदार है ॥ २ ॥ पटु सब विद्यनमें हटत न काहूसों है निपट निशंक बुद्धि नेकु न हलतिहै ॥ चटपट जानिलेत अटपट बात सब बात कपटीनकी न कैसहू चलतिहै ॥ महाराज रघुराज निकट पखंडी कोटि कुटिलऊ खटपटे थिति उसलतिहै ॥ कवि नटखटनकी कूर बहुकटलनकी चुगल चवाइनकी दाल ना गलतिहै ॥ ३ ॥ सुमति गणेश लसै साहिबीमें त्यों सुरेश धनमें धनेश शत्रु नाशन महेश हैं ॥ तेजमें दिनेश मुदजनन प्रजेश प्रजापालनमें वेश सम राजत रमेश हैं ॥ गावत नरेश दीह निजहिं निवेश सभा सुयश विशेष जासु छाजे देश देशहै ॥ भनै युगलेश रघुराजसे सुमतधारी सुत बांधवेश औ परेस सेवा पेसहै ॥ ४ ॥ करयुग जोरि कमलापतिसों कमलाजी कहै युगलेश बार बार कहैं बैन कल ॥ रावरो भगत विश्वनाथ तनै रघुराज जन्यो

जग तन्यो जासु यश चारु स्वच्छभल ॥ असित पदारथ ते सित ह्वैगयो हैं सबै परत पिछानि नाहिं जाय जहां जौने थल ॥ वसिये निरंतरकी ताहि ऐके अंतरकी उदधिको अंतर न छोंडि जैये छोनी तल ॥ ५ ॥ भागवत पढ्यो भागवतको विश्वास मान्यो जननि सुभद्रा श्रीसुभद्रा रूप जानिये ॥ रामभक्त परमअनन्य महा भागवत विश्वनाथसिंह जासु जनक बखानिये ॥ भागवतदास नाम तिनहिंसों पायो भयो भागवत रूप कंठ भागवत गानिये ॥ भागवत सेवी रघुराजसिंह भागवत जाके उर भौन भगवंत भौन मानिये ॥ ६ ॥

सवैया–याचक वृंद मलिंदनको गण पाय सुपाय अनंदित हीमें ॥ आय मनोरथ पूरणके यश गान करैं चहुं ओर महीमें ॥ भाषतहैं कवि देशनि जाय नरेशनके दरबारनहीमें ॥ दान करीके कपोलनमें कीदरि रघुराजके हाथनहीमें ॥ ७ ॥

दोहा–महाराज रानी सबै, गौरी सम महिमाथ ॥
लसैं पतिव्रत धर्मरत, तजै न कबहूं साथ ॥ ८१ ॥
महाराज रघुराजके, अमित चरित्र अनूप ॥
युगलदास बरण्यो कछुक, निजमतिके अनुरूप ८२
जामें सूचित चरित सब, ऐसो अष्टक वेश ॥
विरचतहै युगलेश यह, सुखप्रद सुकवि विशेश ॥८३
अष्टक नृप रघुराजकृते, युगलदास मुदकंद ॥
सार्थं गतागत चंद्र ऋषि, सिंहवलोकन छंद ॥८४ ॥

गतागत सवैया–तो यश शीशमही सरसाय यसारस हीम शशी सजतो ॥ तोमह तेज भयो विरमाहि हिमा रवि सो भजते हमतो ॥ तो जग मैरव रोदत चारु रुचा तहँ सो वरणै गजतो ॥ तो रघुराज भजे नहिं लोग गलोहिनजे भज राघुरतो ॥ १ ॥

अर्थ–हे रघुराजसिंह! तिहारो श्रीवृंदावन अरु श्रीजगन्नाथपुरीमें सुवर्णतुलादि महादान रूप जो यह यश है शीश

मही कहे महीके शीशमें अथवा सब राजनके यशते शीश कहे शिरा मही पृथ्वीमें सरसाय कहे अधिकायके, सारस हीम शशी लजतो. कहे सारस जो है कमल अरु हिम जो है पाला अरु शशी जो है चंद्रमा ताको लजतो कहे अपनी शोभाते लाजैहै कहे शोभित करैहै यह प्रतीपालंकारते सारस अरु हिम अरु शशीकी शोभा सब ऋतुमें सब कालमें एकरस नहीं रहे है कमल झरिजाय है हिम गलिजाइहै शशी क्षीण ह्वै जाइहै अरु सकलंक है अरु तिहारो यश सब कालमें एकरस रहैहै अरु निष्कलंक है याते इन सबनते अधिक है यह व्यतिरेकालंकार व्यंजित भयो, अरु तो मह तेज भसो विरमाहि. कहे तिहारो जो महातेज है सो वीर जे हैं बडे २ राजा तिनमें भसो कहे भासितहै ताते तिहारे तेजते तेऊ शंकित रहैहैं कि हमारो राज्य न लेलें यह सूचित भयो अथवा विरमाहि कहे सब जगमें तिहारो तेज विशेषके रमैहै ताते तुम्हारे तेज करिके सब राजा निस्तेज ह्वैगये यह ध्वनित भयो याहीते, हिमा रविसों भजते हम तो कहे अपने हियमें हम तो तुम्हारे तेजको रविसों कहे सूर्यसे भजैहैं कहे भजन करैहैं अर्थात् वर्णन करैहैं यह उपमालंकारते सूर्य कमलनको आनंद देइहैं अरु तम नाश करैहैं अरु सबको सुधर्ममें प्रवृत्त करैहैं अरु आपको तेज सज्जनके हृदयकमलको आनंद देइहैं और सब राजनके वीरताके, मदको अज्ञानको नाश करैहैं अरु सबके अधर्म नाश करि सबको धर्ममें प्रवृत्त करैहै यह अनुभयाभेदरूपकालंकार ध्वनित भयो अरु, तो जग नै रव सोहत चारु. कहे जगमें तिहारो जो है नै कहे नीति ताको जो रव कहे शोर कि रघुराजसिंह बडे नीतिवान् हैं सो चारु कहे सुंदर सोहतहै अरु रुचा तहँ सो वरनै गजतो, तहां कहे तौने जगमें सो नीतिको रव सबको रुचाहै कहे सबको नीक लगैहै अर्थात् नीतिको बखान जो कोई करत सुनैहै सो तहँ खडो रहिजाइहै अरु वरनै गजतो कहे सोऊ जन गर्जत कहे गर्जनाको करत अर्थात् बडो शोर करत सर्वत्र वर्णन करै हैं कि रघुराजसिंह बडे नीतिवान् हैं॥ ताते आपके नीतिके सुनिबेते सबको उत्कंठा

अतिशयरूप वस्तु व्यंजित भयो इससे जैसी आपकी नीति है तैसी आपहीकी नीति है यह अनन्वयालंकार ध्वनित भयो ताते आपकी राज्यमें अनीति नहीं है यह वस्तु सूचित भयो अरु गर्जत वर्णन करे है ताते इनके बराबर ऐसो नीतिवारो पृथ्वीमें कोई नहीं है याते निःशंक है यह हेतु व्यंजित भयो ताते, रघुराज भजै नाहिं लोग गलोहि. कहे या भांतिके जे तुम रघुराजसिंह हो तिनको जो कोई लोग गलोहि कहे गलते अरु हियते नहीं भजैहैं कहे नहीं भजन करैहैं अर्थात् तुम्हारे नामको मुखते उच्चारण करत जाको गल नहीं चलहै अरु जो तुम्हारे नामको हियमें नहीं धारण करैहैं ॥ न जे भ जरा कहे ताको जरा कहे नेक कबहूं जै नहीं भयो, अर्थात् वह सबसों हारिही गयोहै अरु मुरतो कहे मुरिजातहै अर्थात् वह नाश ह्वैजाइहै यहां प्रस्तुत करि प्रस्तुत प्रगट प्रस्तुत अंकुर नाम यह प्रमाण करिके प्रथम प्रस्तुत कहे वर्णनीय जेहैं आप तिनते दूजे प्रस्तुत जे हैं श्रीरघुनाथजी तिनको वर्णन कवित्तके चारिहूं तुकमें विदितइ है यह प्रस्तुतांकुर अलंकारते आपकी श्रीरघुनाथजीकी उपमा व्यंजित भई ॥ १ ॥

दोहा—जन्मअष्टमी आदिदै, उत्सव जे भगवान ॥
तिनमें वितरत जननको, मुद्रा पट सहसान ॥ ८५ ॥

अथ सिंहावलोकनके उदाहरण ॥

सवैया—बीरनमें जे गने अवनी अवनीके गुनेते चुने रणधीरन ॥
धीरनमें जस है तुलसी लसीसो तस है जगमें जनभीरन ॥
भीरनते युगलेश सुनै सुनै प्रीति जगी नहिं दान अजीरन ॥
जीरनसों नहिं भीते भजै भजै जोहि जरे नित श्रीरघुबीरन १ ॥

जाकर जागे प्रताप दिवाकर वा करतो प्रतिपाल प्रजाकर ॥
जाकर तेज सरुगो सुधाकर धाकरमाये मने वसुधाकर ॥
धाकरहूं वसु पाइके ताकर ताकर आनन ताके सुखाकर ॥
खाक रहै दुखको कहै काकर काकर तार करै घर जाकर ॥ २ ॥

कामनमें अहे आलसमान नामनमें चहतो पर वामन ॥

वामन बोलत बैनन सामन सामनरैसो तजै केहुँ जामन ॥
जा मनमें बसतो अभिराम नरामन सो तेहिं मानो सादामन ॥
दामन है रघुराजके ठामन ठामन सेवत संत अकामन ॥ ३ ॥
कीरतिरंभा किधौं है शची शची जामें अछेह कविंदनकी रति ॥
कीरति तौ तिन्होंकी इति द्युति कौनि अहै मति मेरी ऊंची रती ॥
चीरति थासिल धारे खरी खरी गर्व भरी चहूं छाचि खहीरति ॥
हीरति पूरतिहै महि माहिमें जानि परे रघुराजकी कीरति ॥ ४ ॥
शाह सराहत भोजहि भूपर भूप रहो कितहूं अब ना अस ॥
ना अस ते सुख भाषत बैनहू बैनहूं नाशन तामस राजस ॥
राजसमान विराजत वासव वासव सो निगुणी गुणी पारस ॥
पार सबै करतो जु भवै भवै सो रघुराज भजो कर साहस ॥ ५ ॥
सोहत भावसो कोट शिरै हिये दीपत जासु शिवत्तु विमोहत ॥
मोह तमे को विनाश करै करै कांति भूनाय हगानिसों जोहत ॥
जोहत भाग है जात सभाग सभागतसों सब सोच बिछोहत ॥
छोहत तापै सबै जगहै गहजो रघुराजपगै अजसोहत ॥ ६ ॥

घनाक्षरी–शारद शशीसों कोई शारद पयोदहींसों हीसो गुने कहै कोई हस्यो सम पारद ॥ पार दरशाति नहीं कहि कहि काहु माति माति कहै कोई घनसारहुकी पारद ॥ भार दरशात पैन्है भूप मोती हीरा हार हार गई द्युति भाषे कविवृंद मारद ॥ नारदकोहुते है बेहद रघुराज जस जस मही तस स्वर्ग गावती है शारद ॥ १ ॥

दोहा–अष्टक कष्ट करै न जग, जगत् पार धन नष्ट ॥
नष्ट नहीं चित पुष्ट कवि, कवित तुष्टकर अष्ट ॥८६

सवैया–भूप अजीत अजीत भयो लियो जीत रिपून नहीं कोउ बाचो ॥ तासु तनय नृप जयसिंह जयसिंह होत भयो रणरंगमें राचो ॥ तासु श्रीविश्वनाथ भयो विश्वनाथहू दान कृपानमें साचो ॥ तासुत जो रघुराज सबै रघुराज भो तौन अचंभव सांचो ॥ १ ॥

कवित्त–जाहि जपि पतितहू पावन परम होत होंहिंगे भये

हैं गये केते हरिधामको ॥ जाको यश गावत न पावत सुकवि पार सबको अधार जो दैवैया मन कामको ॥ जाके बल शंकर विरंचि सनकादि ऋषि जागत रहत जग यामिनि त्रियामको ॥ चिरंजीव होवै महाराज रघुराज सदा याचै युगलेश वेश सोई राम नामको ॥ १ ॥ अंगनि सुछबिकोटि वारिये अनंग जासु कालको विहाल करै शर धनु घोरको ॥ मार्तंड पावको प्रताप जासु ताप करै शशिहूको शीतल करत यश ठोकरको ॥ चरित अशेश जासु शेषहु न अशेष लहै नाम कहै पामर पुनीत होत जोरको ॥ चिरंजीव होवै महाराज रघुराज सदा याचै युगलेश सोई कोशलकिशोरको ॥ २ ॥ जौलौं राम निज नाम धाम गुण ग्राम राखो कीनो काल कर्मदु प्रपंच पंच भाषिये ॥ जौलौं विधि आदि शिपि देवनको अधिकार नित प्रीतिको विचार कीबे अवला-खिये ॥ जौलौं दीनबंधु हग देखो दाया दीह दास तौलौं युगलेश विनय मोरि यश साखिये ॥ राज्यश्रीअखंड सुखयुत संयुत सुधर्मसाज भूप रघुराज महाराज आप राखिये ॥ ३ ॥

सोरठा-ग्रंथ भयो जब पूर, उचित मंगलाचरणपर ॥
श्रीहरि गुरु सुख पूर, चरणकमल वंदन करहु १४

कवित्त-निरत जासु नाम हरिदास हरिरूप सीय राम सेवहीमें जिन्हें जात रैन दिन ॥ काहूसों न कहै देखि संत निज आश्रमे सादर करत सत्कार आये छिन छिन ॥ कहैं युगलेश नाम रजोगुणि वाहनि चढें नहिं कबों या स्वभाव रह्यो सब दिन ॥ कहों हरिरूप पर हरिते सरसरूप लिये है अनूप श्रीहै येतो रहैं तहि बिन ॥ १ ॥

दोहा-धरयो सर्प यकको बिछी, यकको दुःखित कीन्ह ॥
हरिचरणामृत पाय तहँ, द्रुत निर्विश करिदीन॥८७॥
ऐसे चरित अनेक हैं, को कह आनन एक ॥
नेक कृपा लहि नाथ मैं, वरण्यों है सविवेक ॥ ८८ ॥
जोकरता है ग्रंथको, सोउ वरणै निज वंश ॥
युगलदास याते करत,कछु निज मुख परशंस॥८९॥

कवित्त-देश गुजराततें नरेश संग आये यहां पुरुषबहु तिन्हें कहांलौं गिनाइये ॥ चैनसिंह भे दिवान अति मतिमान खास कलम सुवंश राय तिनको सुनाइये ॥ लल्लू खास कलम कहाये नाम मंशा राम भूपति अजीत बहु मान्यो सो जनाइये ॥ कायत प्रसिद्ध साधु सुमति अगाध तासु वंश गिरिधारी लाल नाम जासु गाइये ॥ १ ॥

दोहा-महाराज विश्वनाथ तहि, मान्यो करि अति प्यार ॥
सोय खास कलमहि कियो, लखि तिहि बुद्धि अपार२९०

मोदूलाल दिवान सुजाना ❀ रहेते अस मन किये अमाना ॥
यह संकोच पुरुषते भारी ❀ करो न हमरो हुकुम सुखारी ॥
अस विचारि नरनाथहिं पाहीं ❀ कह्यो सुघर इनही सुख माहीं ॥
इन्हे खास कलमी रघुनाथी ❀ है राखिये निकट कर साथी ॥
सुनि विश्वनाथ हियेकी जानी ❀ राख्यो अपने ढिग सुखमानी ॥
ग्रंथ अनूपम अमित बनायो ❀ सादर तासों मुदित लिखायो ॥
तेहि सुत युगलदास मम नामा ❀ विश्वनाथ नृप ढिग अभिरामा ॥
रह्यो बालते जे किय ग्रंथा ❀ लिख्यो अहै जिनमें हरिपंथा ॥

दोहा-महाराज रघुराजके, अब निवसो नित पास ॥
तासु हुकुम लहि ग्रंथ यह, विरच्यों सहित हुलास९१
नृपचारित्र यह ग्रंथको, कियो नाम अभिराम ॥
बांचि सुकवि सज्जन सुमति, लहै सदा सुखधाम ९२
ग्रंथ रामरसिकावली, रच्यो जो नृप रघुराज ॥
तहँ कबीर इतिहासमें, यहै ग्रंथ है स्राज ॥ २९३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारी श्रीरघुराजसिंहजूदवेकृते श्रीरामरसिकावल्यां ग्रंथान्तर्गतश्रीयुगलदासकृत-बघेलवंशवर्णनं नाम आगमनिर्देशग्रंथः समाप्तः । १९।१२।१४.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना, कल्याण-मुंबई.

श्रीमहर्षिपतञ्जलिप्रणीत
योगदर्शन ।

श्रीमत्पंडित-रामभक्तरचित-छन्दोबद्ध देशभाषाकृत व्यास भाष्यछायाऽनुरूप वार्तिक तिलकसमेत.

यह योगदर्शन श्रीमत् महर्षि पतञ्जलिने सर्व जगतमात्रके सुखके निमित्त संस्कृत सूत्रोंमें निर्मित किया परंतु इस समयमें बहुधा लोग संस्कृत विद्यासे शून्य होनेके कारण इससे लाभ नहीं उठा सक्ते इसलिये पं० रामभक्त आगरानिवासीसे सर्वसाधारणके समझने और लाभ उठानेके अर्थ श्रीमत् महर्षि व्यासभाष्यानुसार छन्दोबद्ध दोहा, चौपाई, छन्द, सोरठामें रचना कर उसका तिलकभी वार्तिक सरल देशभाषामें तैयार किया है । यह पुस्तक सर्व साधारण और साधुमहात्माओंके परमोपयोगी है इसके दृढ साधन और अभ्यास करनेसे प्राणीको सर्व सुखोंका मूल जो मोक्षसुख है वह प्राप्त हो सक्ता है फिर अणिमादि सिद्धि तो कुछ दुर्लभही नहीं. मूल्य केवल१ रुपया.

विक्रयार्थ नूतन पुस्तकें.

काव्यमंजरी (पदुमनदासकृत) दाम १ रु.
सनातनधर्मभजनमाला दाम ६ आना.
गोपालविलास (श्रीकृष्णजीके विचित्र चरित्र) दाम .... १॥ रु.
धन्वंतरी वैद्यक ग्रन्थ भा. टी. दाम ९ रु.
स्मृतिरत्नाकर (धर्मशास्त्रका प्रामाणिक ग्रन्थ) दाम .... २ रु.
बृहद्दैवज्ञरंजन (ज्योतिषके मुहूर्त, जन्मपत्र, संस्कार, वास्तुप्रकरण, यात्रा, विवाह, प्रतिष्ठा आदि ६०० विषयोंका संग्रह.) दाम .... २॥ रु.
श्रीकृष्ण क्रीडाकासार (दस लीला हैं.) दाम .... ८ आना.
हनुमन्नाटक भाषाटीका दाम .... १। रु.
सांवत्सरीपद्धति भाषाटीका दाम १ रु.
सिद्धांतचंद्रिका उत्तरार्ध भा. टी. दाम ३॥ रु.
कर्मविपाकव्याध्यनुसार (नवीन) दाम १। रु.
काव्यप्रभाकर सटीक (नूतन) दाम ६ रु.
हिन्दी इंग्रेजी डिक्सनरी दाम .... १॥। रु.
संस्कृत धातुकोष भा. टी. दाम.... १ रु.
रामगुलाम शब्दकोष (हिंदी) दाम १॥ रु.
मुहूर्तसंग्रहदर्पण भा. टी. दाम .... १॥ रु.
अनर्घनलचारित्र (महानाटक) दाम १ रु.
जातकसंग्रह भा. टी. (ज्योतिष) दाम २॥ रु.
विवाहवृंदावन भा. टी. (ज्योतिष) दाम १ रु.
रामरसोदधि सुंदरकांड (दोहा-चौपाई) दाम .... १ रु.
नूरजहाँ उपन्यास दाम .... १२ आना.

प्रथम परीक्षार्थ-रघुवंशके द्वितीयादि चार सर्ग सटीक.

विदित हो कि गवर्नमेंट संस्कृत कालेज बनारसकी प्रथम परीक्षामें उपस्थितहोनेवाले विद्यार्थियोंके उपकारके लिये हमने मुरादाबादके अनुवादकलाप्रवीण पं. व्रजरत्न भट्टाचार्यसे परीक्षामें नियत हुए रघुवंशके द्वितीयादि चार सर्गोंका परीक्षाकी शैलीपर सरल संस्कृतमें व्याख्यान कराके सुवाच्य अक्षरोंमें मुद्रित किया है. परीक्षाके प्रश्नपत्रोंके उत्तर जिस प्रकार लिखे जाते हैं उसी प्रकार यह व्याख्या बनाई गई है, आवश्यकतानुसार कोशके प्रमाण और व्याकरणके द्वारा शब्दसिद्धिभी दीगई है, समुचित स्थानोंमें टिप्पणीयेंभी दीगई है, जिससे ग्रन्थ सभीके लिये उपादेय हो गया है. हम साहसके साथ विश्वास दिलाते हैं इसके अनुसार अभ्यास करनेवाले विद्यार्थी अवश्यही परीक्षामें उत्तीर्ण होंगे मूल्य ८ आना.

सांवत्सरीपद्धति भाषाटीकासहित.

यह ज्योतिषग्रन्थ संवत्सरपर्यंत फल कहनेमें परमोपयोगी है, इसमें चतुर्युगी, साठ संवत्सरोंका पूर्ण फल तथा राजा, मंत्री, मेघाधिप, धान्याधिप, सस्याधिप, रसाधिप, नीरसाधिप आदि जाननेकी रीति और उनका फल, आर्द्राप्रवेशफल रोहिणीवासफल, संवत्सरवाहनज्ञान तथा फल, संवत्सरवास, फलसहित तथा संवत्सर और वर्षा आदि जाननेकी रीति गुरुराशिफल, शनिराशिफल, वर्षभरमें प्रत्येक वस्तुके महर्घ (महँगे) समर्घ (भद्दे) के जानकेकी रीति भली भांति वर्णित है यह ग्रन्थ जगन्मोहन, मेघमाला आदि ग्रन्थोंके आधारसे निर्माण किया गया है, केवल इस एकही ग्रन्थसे संवत्सरका फल और वर्षा आदिका ज्ञान पूर्ण रीतिसे जाना जा सकता है. बहुत दिनोंके परिश्रमसे खोजकर और शुद्ध करके देशभाषामें इसकी टीका ज्योतिर्वित्पंडित नारायणप्रसादमिश्र लखीमपुरखीरीनिवासीने लिखकर प्रकाशित किया है. इसको बहुत शुद्धतापूर्वक छापकर सबके सुगमार्थ इसका मूल्यभी केवल १ रु. रखा है.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, 'लक्ष्मीवेंकटेश्वर' छापाखाना,

कल्याण—मुंबई.

जाहिरात ।

सनातनधर्मभजनमाला

प्रथम भाग

कलिमलग्रसित मनुष्योंका चपल चित्त भगवदाराधनमें नहीं लगता क्योंकि-इसका स्थिर और एकाग्र होना निपट असंभव है । भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं "तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करं" अर्थात् पवन और मन दोनोंहीकी गतिका अवरोध करना बडा कठिन है । परन्तु गानविद्यामें कुछ ऐसा जादू है कि मनुष्यके चित्तपै ठगौरीसी पड जाती है । भगवान् श्रीमुखसे कहते हैं "मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद" अर्थात् गायनसमाजमें स्वयं श्रीभगवान् उपस्थित रहते हैं इसीसे हमने सनातनधर्मकी उत्कृष्ट शिक्षाद्वारा भगवद्भक्तिको उत्पन्न करने वाले अनूठे रागरागिनी भजन गजल आदिका संग्रह कराके ये उत्तम ग्रन्थ छापा है। भजन मंडलियों और सनातनधर्मसभा ओंमें इसकी हाथोंहाथ खूब बिक्री होरही है। इसके सभी पद बडे मार्केके हुए हैं । मू० ६ आना द्वितीय भागभी छपता है.

रामरसोदधि [सुन्दरकांड].

अर्थात्

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणका हिन्दीपद्यमें भावानुवाद ।

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणके अमृतमयी कथाका रसास्वादन संस्कृतज्ञ विद्वानोंहीको सुखसाध्य था परंतु रामरसोदधिके तैयार होनेसे वह अनुपम चरित्र अब हिन्दी जाननेवाले कथारसिक सज्जनोंकोभी सुगम होगया है । इसकी रचना दोहा चौपाई आदि छंदोंमें अत्यंत सरलता और सर सतापूर्वक हुई है । किसीभी अध्यायका पढना आरंभ कर उसे समाप्त किये विना छोडनेकोभी जी नहीं चाहता। इसमें महर्षि वाल्मीकिजीने हनूमान्जीका लंका निरीक्षण बहुतही विलक्षणताके साथ वर्णन किया है । इसलिये हम हिन्दीप्रेमीपाठकोंसे आग्रहपूर्वक निवेदन करते हैं कि वे एक बार इस अनुपम ग्रंथका अवश्यही अवलोकन करें फिर तो आपही प्रशंसा करने लगेंगे सर्व साधारणके सुभीतेके लिये मूल्यभी केवल १ रुपैया मात्र लिया जाता है ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापखाना, कल्याण-मुंबई.